बराहीन अहमदिया

प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ भाग

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

(मसीह मौऊद व महदी-ए-मा'हूद[अ.])

नाम किताब	बराहीन अहमदिया (प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ भाग)
Name of Book	BARĀHEEN AHMADIYYA (PART I, II, III, IV)
लेखक	हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी (मसीह मौऊद व महदी-ए-मा'हूद)
Writer	Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani The Promised Massih & Mahadi a.s
अनुवादक	अन्सार अहमद, बी.ए.बी.एड, मौलवी फ़ाज़िल
Translator	Ansār Ahmad, B.A.B.Ed, Moulvi Fāzil
प्रकाशन वर्ष	मार्च-2013
Year	March-2013
संस्करण	प्रथम हिन्दी संस्करण
Year	1st Hindi Edition-2013
संख्या	1000
Number of Copy	1000
मुद्रक	फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान
Press	Fazle-Umar Printing Press, Qadian Distt, Gurdaspur, Punjab.
प्रकाशक	नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान
Printer	©Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian Mohalla Ahmadiyya, Qadian Distt, Gurdaspur, Punjab, PIN:143516.
आई.एस.बी.एन.	
ISBN	978-81-7912-360-7

©Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian

NOTE:- NO PART OF THIS BOOK MAY BE REPRODUCED OR TRANSMITTED IN ANY FROM OR BY ANY MEANS, ELECTRONIC OR MECHANICAL INCLUDING PHOTOCOPY, RECORDING OR ANY INFORMATION STORAGE AND RETRIEVAL SYSTEM, WITHOUT PRIOR WRITTEN PERMISSION FROM THE PUBLISHER.

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

विभाग नूरुलइस्लाम

TOLL FREE - 18001802131, 180030102131

प्रकाशक की ओर से

इस्लाम एक जीवित धर्म है उसकी शिक्षा पूर्ण और सार्वभौमिक है। अल्लाह तआला ने इस्लाम को अपनी प्रसन्नता का धर्म ठहराया है। उसकी शिक्षा का पालन करके हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सानिध्य का उच्चतम स्थान प्राप्त किया। आप ने फ़रमाया कि मैं भी तुम्हारे समान ही एक मनुष्य हूँ तथा एक ख़ुदा की उपासना के फलस्वरूप मुझे उस से परस्पर वार्तालाप का सम्मान प्राप्त हुआ है। भविष्य में जो व्यक्ति ख़ुदा का मिलन प्राप्त करना चाहता है वह मेरे समान शुभ कर्म करे, ख़ुदा के साथ किसी को भागीदार न बनाए। आप की इबादतें, क़ुर्बानियां आपका जीवन, आपकी मृत्यु अल्लाह तआला के लिए विशेष्य थी जो समस्त लोकों का प्रतिपालक है। एक स्थान पर अल्लाह तआला ने आपके द्वारा यह घोषणा की कि قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ अर्थात् तू उन से कह दे कि यदि तुम परमेश्वर के प्रिय बनना चाहते हो तो मेरा अनुसरण करो परमेश्वर तुम से प्रेम करने लगेगा तथा यह मार्ग कभी बन्द होने वाला नहीं। इस्लाम का इतिहास साक्षी है कि आपके अनुसरण में ऐसे असंख्य लोग पैदा हुए जिन्हें परमेश्वर की भेंट और मिलन इस जीवन में भी प्राप्त हुआ तथा मृत्योपरान्त भी परमेश्वर की प्रसन्नता के स्वर्गों में प्रविष्ट हुए।

परन्तु जब मुसलमानों ने इस्लाम की इस सुन्दर और पूर्ण शिक्षा को भुला दिया और क़ुर्आनी आदेशों का परित्याग कर दिया तो उनके भाग्य में असफलता, निराशा, अपमान और अवनति लिखी गई यहाँ तक कि एक समय वह भी आया कि मुसलमान प्रत्येक स्थान पर पराजित होने लगे तथा इस्लाम पर चहुंमुखी प्रहार होने लगे, नाना प्रकार के आरोपों का लक्ष्य बनाया जाने लगा।

परमेश्वर का वादा था कि हमने ही इस ज़िक्र (क़ुर्आन) को उतारा है और हम ही इसकी रक्षा करेंगे। अत: परमेश्वर ने चौदहवीं सदी हिज्री के प्रारम्भ में एक ऐसे व्यक्ति को अवतरित किया जो न केवल मुसलमानों के सुधार के लिए महदी बनकर आया अपितु अन्य समस्त धर्मों के लिए भी सुधारक बनकर आया अर्थात् हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम।

आपने देखा कि उस समय समस्त धर्मावलम्बी इस्लाम को एक निष्प्राण धर्म समझकर चील-कौवों के समान उसका मांस खाने के लिए टूट पड़े हैं और इस्लाम नितान्त दयनीय अवस्था में है तो आप एक योद्धा की भांति मैदान में खड़े हो गए। आपने सन् 1880 ई. में बराहीन

अहमदिया नामक पुस्तक का लिखना प्रारम्भ किया जो 1884 ई. तक चार भागों में लिखी गई। यह ज़बरदस्त और महान पुस्तक इस्लाम की विजय के रूप में एक शक्तिशाली प्रमाण सिद्ध हुई। इस पुस्तक में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी ने क़ुर्आन करीम के जीवित किताब होने, आंहज़रत (स.अ.व.) के जीवित रसूल होने तथा इस्लाम के एक जीवित और पूर्णतम धर्म होने के तीन सौ अखंडनीय और अकाट्य तर्क प्रस्तुत किए तथा समस्त धर्मों के नेताओं और प्रमुखों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि यदि कोई वे विशेषताएं जो मैंने क़ुर्आन करीम से लेकर प्रस्तुत की हैं ये विशेषताएं अपनी धार्मिक पुस्तक से सिद्ध करके दिखा दे तो मैं उसे दस हज़ार रुपए पुरस्कार स्वरूप दूँगा, परन्तु आज तक इन विशेषताओं को कोई भी अपनी धार्मिक पुस्तक से सिद्ध न कर सका और न ही उन का खण्डन कर सका। इस पर परमेश्वर का आभार।

इस कथित पुस्तक के उर्दू भाषा में अब तक अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आज्ञा और अनुमति से नज़ारत नश्र-व-इशाअत को जन-हित में इसका हिन्दी अनुवाद प्रथम बार प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। इसका हिन्दी अनुवाद जनाब अन्सार अहमद ने किया है। इन्हें और इस संबंध में समस्त सहयोग करने वालों को ख़ुदा उत्तम प्रतिफल प्रदान करे यह सभी दुआ के पात्र हैं। यह हिन्दी संस्करण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम (लेखक) के प्रथम उर्दू संस्करण को दृष्टिगत रखते हुए तैयार किया गया है। इस संस्करण में प्रथम संस्करण उर्दू के पृष्ठों के अनुसार पृष्ठों का अनुक्रम पृष्ठों की साइड, पर दिया गया है। पुस्तक में दिए गए फारसी शे'रों का भी अनुवाद किया गया है ताकि अध्ययनकर्ता हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उन हृदयंगम भावनाओं से परिचित हो सकें जो आपके हृदय में क़ुर्आन करीम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) की सच्चाई के लिए विद्यमान थीं। आपने अपनी इन अलौकिक भावनाओं की अभिव्यक्ति काव्य शैली में इस प्रकार की है जैसे आप ने सागर को गागर में भर दिया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह इस पुस्तक को सभी अध्ययन कर्ताओं के लिए पथ-प्रदर्शक और लाभप्रद बनाए।

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़
नाज़िर नश्र-व-इशाअत
क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर

सूची

बराहीन अहमदिया चार भाग

भाग-1 1

भाग-2 53

भाग-3 141

भाग-4 363

संकेत :- Ⓟ लेखक द्वारा प्रकाशित पुस्तक के प्रथम संस्करण के पृष्ठों की स्थिति को सुरक्षित रखने के लिए किया गया है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
इस्तिक़रा	उपपादन (Induction) विशिष्ट तथ्यों और उदाहरणों द्वारा सामान्य नियमों और सिद्धान्तों से निर्धारण करना		
इन्नी तर्क	कर्म से कारण को सिद्ध करने वाला तर्क, जैसे एक व्यक्ति को अत्यधिक ज्वर में देखा तो हमें ज्ञात हुआ कि उस में पित्त-दोष की तीव्रता है।		
इल्का	वह बात जो ख़ुदा हृदय में डाल दे	**इल्हाम**	ईशवाणी
क़ुतुब	इस्लाम में वलियों की एक श्रेणी	**तौहीद**	ऐकेश्वरवाद, ख़ुदा को एक अकेला समझना
फ़र्मा	पुस्तक के आकार की दृष्टि से प्रकाशन हेतु तैयार की जाने वाली एक प्लेट		
बलअम बऊर	मूसा के युग का एक आध्यात्मिक ज्ञान रखने वाला मनुष्य जो अन्त में पथ-भ्रष्ट हो गया		
मा'रिफ़त	पहचानना, ख़ुदा को पहचानना		
मुश्रिक	ख़ुदा का भागीदार बनाने वाला, अनेकेश्वरवाद की विचाधारा रखने वाला		
लिम्मी तर्क	कारण से कर्म को सिद्ध करने वाला तर्क, जैसे किसी स्थान पर धुआं देखकर अग्नि का पता लगा लेना।		
शिर्क	ख़ुदा के साथ किसी अन्य को भागीदार बनाना (अनुवादक)		

परिचय

बराहीन अहमदिया

(हज़रत मौलाना जलालुद्दीन साहिब शम्स की ओर से)

बराहीन अहमदिया का प्रथम और द्वितीय भाग सन् 1880 ई. में तथा तृतीय भाग 1882 ई. में और चतुर्थ भाग 1884 ई. में प्रथम बार प्रकाशित हुआ। यह वह समय था जबकि अंग्रेज़ी शासन पूर्ण उत्कर्ष पर था तथा ईसाई प्रचारक पूरी शक्ति के साथ ईसाइयत के प्रचार में व्यस्त थे। स्थान-स्थान पर बाइबल सोसाइटीज़ स्थापित की गईं तथा इस्लाम और इस्लाम के प्रवर्तक के विरुद्ध सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की गईं तथा करोड़ों की संख्या में पम्फलट मुफ्त बांटे गए। उनकी उन्नति की गति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि 1851 ई. में हिन्दुतस्तान में ईसाइयों की संख्या इक्यानवै हज़ार थी तथा 188 1 ई. में चार लाख सत्तर हज़ार तक पहुँच गई।

दूसरी ओर आर्य समाज तथा ब्रह्म समाज के आन्दोलनों ने जो अपने चरमोत्कर्ष पर थे, इस्लाम को अपने आरोपों का लक्ष्य बनाया हुआ था जैसे इस्लाम शत्रुओं के घेरे में घिर कर रह रह गया था। इन समस्त आन्दोलनों का एकमात्र उद्देश्य इस्लाम को कुचलना तथा क़ुर्आन करीम और इस्लाम के प्रवर्तक की सच्चाई को संसार की दृष्टि में संदिग्ध करना था। आर्य समाज वेदों के पश्चात् किसी भी ख़ुदाई इल्हाम को नहीं मानते थे तथा ब्रह्म समाजी सिरे से ही ख़ुदाई इल्हाम के इन्कारी थे तथा एकांकी बुद्धि को मुक्ति की प्राप्ति के लिए पर्याप्त समझते थे तथा शिक्षित मुसलमान यूरोप के गुमराह करने वाले दर्शन शास्त्र से प्रभावित होकर और ईसाई देशों की प्रत्यक्ष तथा भौतिक उन्नति को देखकर ख़ुदा के इल्हाम के इन्कारी हो रहे थे, विद्वानों का समूह परस्पर एक दूसरे को काफ़िर कहने का युद्ध लड़ रहा था। इस्लाम की इस विवशता और असहाय होने का चित्रण स्वर्गीय मौलना 'हाली' ने 1879 ई॰ में अपनी मुसद्दस※ में इस प्रकार किया है:-

रहा दीन बाक़ी न इस्लाम बाक़ी
इक इस्लाम का रह गया नाम बाक़ी।

※ कविता का वह प्रकार जिसमें छ: पंक्तियाँ हों (अनुवादक)

फिर इस्लामी उम्मत की एक उद्यान से उपमा देते हुए फ़रमाते हैं-

फिर इक बाग़ देखेगा उजड़ा सरासर
जहां खाक़ उड़ती है हरसू[1] बराबर
नहीं ताज़गी का कहीं नाम जिस पर,
हरी टहनियाँ झड़ गईं जिसकी जलकर
नहीं फूल-फल जिसमें आने के क़ाबिल[2]
यह आवाज़ पैहम[3] वहाँ आ रही है
कि इस्लाम का बाग़ वीरां[4] यही है।

इस वातावरण में जबकि क़ुर्आन करीम की सच्चाई तथा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चा होना स्वयं मुसलमान कहलाने वालों पर भी संदिग्ध हो रहा था तथा उनमें से अनेक ईसाइयत की गोद में आ गिरे थे। आप ने बराहीन अहमदिया लिखी जिसमें आपने क़ुर्आन करीम का ख़ुदाई कलाम, पूर्ण किताब, अद्वितीयता तथा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपनी नुबुव्वत और रिसालत के दावे में सच्चा होना अटूट तर्कों द्वारा सिद्ध किया तथा उन तर्कों के मुकाबले पर किसी इस्लाम के शत्रु के ऐसे तर्क तिहाई, चौथाई अथवा उन तर्कों का पाँचवां भाग प्रस्तुत करने वाले के लिए दस हज़ार रुपये के पुरस्कार की घोषणा की तथा प्रत्येक इस्लाम के विरोधी को मुकाबले के लिए निमंत्रण दिया।

बराहीन अहमदिया का प्रभाव

इस पुस्तक से मुसलमानों का साहस बढ़ गया। अतः मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी ने जो अहले हदीस के प्रमुख समझे जाते थे, इस पुस्तक के उद्देश्यों का सारांश लिखने के पश्चात् अपनी राय को इन शब्दों में व्यक्त किया:-

''अब हम अपनी राय नितान्त संक्षेप और अतिशयोक्ति रहित शब्दों में व्यक्त करते हैं। हमारी राय में यह पुस्तक इस युग में और वर्तमान स्थिति की दृष्टि

①-हरसू = हर ओर ②-योग्य ③-निरन्तर ④-उजड़ा हुआ। (अनुवादक)

से ऐसी पुस्तक है जिस के सदृश इस्लाम में आज तक प्रकाशित नहीं हुई और भविष्य की ख़बर नहीं لَعَلَّ اللّٰهَ یُحۡدِثُ بَعۡدَ ذٰلِکَ اَمۡرًا तथा इसका लेखक भी इस्लाम की माल द्वारा, जान द्वारा, क़लम और भाषा द्वारा आधुनिक तथा तर्कयुक्त सहायता में ऐसा सुदृढ़ निकला है, जिसका उदाहरण पूर्वकालीन मुसलमानों में बहुत ही कम पाया गया है। हमारे इन शब्दों को कोई एशियाई अतिशयोक्ति समझे तो हम को कम से कम एक ऐसी पुस्तक बता दे जिसमें समस्त इस्लाम विरोधी समूहों और सम्प्रदायों विशेषकर आर्य सम्प्रदाय और ब्रह्म समाज से इस बल और दृढ़ता से मुक़ाबला पाया जाता हो तथा दो चार इस्लाम के ऐसे सहायक व्यक्तियों का पता बता दे जिन्होंने इस्लाम की माल से, प्राण से, क़लम से, भाषा से सहायता के अतिरिक्त सामयिक सहायता का भी दायित्व ले लिया हो तथा इस्लाम के विरोधियों और इल्हाम के इन्कार करने वालों के मुक़ाबले में मर्दाना ललकार के साथ यह दावा किया हो कि जिसको इल्हाम के अस्तित्व का सन्देह हो वह हमारे पास आकर उसका अनुभव और अवलोकन कर ले तथा इस अनुभव और अवलोकन का अन्य क़ौमों को स्वाद भी चखा दिया हो। ''

(इशाअतुस्सुन्नह, जिल्द:7, नं:6, पृष्ठ:169, 170)

यह वह वैभवशाली पुस्तक है जो अपने समय की आवश्यकतानुसार अद्वितीय पुस्तक सिद्ध हुई, जिसका मुकाबला करने से इस्लाम के इन्कार करने वाले असमर्थ और विवश हो गए तथा इस्लाम को महान विजय प्राप्त हुई। ऐसी पुस्तक की छपाई और प्रकाशन में सहयोग हेतु मुसलमान धनवानों तथा विशेष और सामान्य लोगों से याचनाएँ की गईं परन्तु कुछ मुसलमानों ने सहायतार्थ तथा पुस्तक का मूल्य अग्रिम तौर पर भेजा। बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 10, 12 पर हज़रत लेखक बराहीन अहमदिया ने उन सहयोगियों के नाम उनकी राशि सहित जिन का कुल योग पांच सौ रुपए से भी कम है लिखे हैं, जिन में नवाबों तथा रियासतों के मंत्रियों के भी नाम हैं। आपने उनका आभार प्रकट करते हुए उनके नामों की चर्चा का यह कारण लिखा है:-

''ताकि जब तक समस्त संसार में इस पुस्तक के हित और लाभ का प्रतीक शेष रहे प्रत्येक लाभान्वित को कि जिसका इस पुस्तक से हृदय प्रसन्न हो मुझ को तथा मेरे सहयोगियों को नेक दुआ से याद करे। ''

(बराहीन अहमदिया चारों भाग रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द:1, पृष्ठ:5)

ख़ाकसार

जलालुद्दीन शम्स

جاء الحق وزهق الباطل ان الباطل كان زهوقا

بفضلِ عظیم حضرتِ ہادیٔ عالم و عالمیان و رحمتِ عمیم رہنمائے گمگشتگان کتابِ لاجواب موسوم بہ

براہینِ احمدیّہ

ملقّب بہ

البراہین الاحمدیّہ علی حقیّت کتاب اللّٰہ القرآن و النبوّة المحمدیّہ

جسکو فخرِ اہلِ اسلام پنجاب جناب میرزا غلام احمد صاحب رئیسِ اعظم قادیان ضلع گورداسپور پنجاب دام اقبالہم نے
کمال تحقیق اور تدقیق سے تالیف کر کے منکرین اسلام پر حجت اسلام پوری کرنیکے لئے بر عوض انعام دس ہزار روپیہ شایع کیا

امرتسر پنجاب

سفیر ہند پریس میں ۱۸۸۰ء طبع ہوئی

جاء الحق و زهق الباطل ان الباطل كان زهوقا

बराहीन अहमदिया

भाग-प्रथम

ख़ुदाई किताब क़ुर्आन और मुहम्मदी नुबुव्वत की सच्चाई पर अहमदियत द्वारा तर्कों पर आधारित

जिसे पंजाब के मुसलमानों के गौरव जनाब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब महान रईस क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर, पंजाब ने अपने महान कौशलपूर्ण अन्वेषण के पश्चात इस्लाम पर इन्कार करने वालों पर इस्लाम के समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने हेतु दस हज़ार रुपए की इनामी राशि के आश्वासन के साथ सफीरे हिन्द प्रेस अमृतसर से सन् 1880 ई. में प्रकाशित किया।

घोषणा①

किताब बराहीन अहमदिया का मूल्य तथा अन्य आवश्यक निवेदन

समस्त सम्माननीय और माननीय **बराहीन अहमदिया** के क्रेताओं (ख़रीदारों) की सेवा में निवेदन है कि यह किताब बहुत विस्तृत किताब है यहां तक कि इसकी विशालता सौ भागों से कुछ अधिक होगी और प्रकाशन के अन्त तक कहीं-कहीं हाशिए लिखने के कारण और भी अधिक हो जाएगी और कागज़ की ऐसी उत्तमता, लेखन की शुद्धता तथा अन्य सुसज्जित और अनुकूल संसाधनों से छप रही है कि जिसके व्यय का हिसाब लगाया गया तो ज्ञात हुआ कि इसका वास्तविक मूल्य अर्थात् इस पर जो अपना खर्च आता है प्रति जिल्द पच्चीस रुपए है, परन्तु प्रारम्भ में इसका मूल्य पाँच रुपए इस उद्देश्य से निर्धारित किया गया था और यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि किसी प्रकार से यह किताब सामान्यतया मुसलमानों में प्रसारित हो जाए तथा इसका खरीदना किसी मुसलमान पर भारी न हो तथा यह आशा की गई थी कि मुसलमानों के समृद्धिशाली लोग जो साहसी और दृढ़ संकल्प हैं इतनी आवश्यक किताब के प्रकाशन में हार्दिक निष्ठा से सहायता करेंगे तो इस की क्षतिपूर्ति हो जाएगी परन्तु संयोग है कि अब तक वह आशा पूर्ण नहीं हुई अपितु केवल आदरणीय जनाब हज़रत ख़लीफ़ा **सय्यद मुहम्मद हसन ख़ान साहिब बहादुर** प्रधानमंत्री एवं कानून मंत्री रियासत पटियाला, पंजाब कि जिन्होंने असहाय और निर्धन विद्यार्थियों में वितरण हेतु इस किताब की पचास प्रतियाँ खरीदीं तथा जो मूल्य विज्ञापन द्वारा छप चुका था वह सारा भेज दिया तथा क्रेताओं को प्रेरित करके उपलब्ध कराने में बड़ी सहायता की और अन्य कई प्रकार से सहायता का आश्वासन दिया। (ख़ुदा उन्हें इस शुभ कार्य का पुण्य प्रदान करे और महान प्रतिफल दे) और अधिकांश सज्जनों ने एक या दो प्रतियों से अधिक नहीं ख़रीदीं। अब स्थिति यह है कि यद्यपि हम ने विज्ञापन के अनुसार जो कि 3, दिसम्बर 1879 ई. पाँच रुपए के स्थान पर किताब का मूल्य दस रुपए निर्धारित कर दिया, परन्तु तब भी वह मूल्य वास्तविक (लागत) मूल्य से डेढ़ भाग कम है। इसके अतिरिक्त इस द्वितीय निर्धारित मूल्य से वे समस्त सज्जन पृथक हैं जो इस विज्ञापन से पूर्व मूल्य अदा कर चुके हैं। अत: इस

①-यह घोषणा द्वितीय प्रकाशन में नहीं है परन्तु प्रथम तथा तृतीय प्रकाशन में है।

घोषणा द्वारा आदरणीय उन क्रेताओं के, कि जिन के नाम हाशिए में बड़े गर्व के साथ लिखे हैं और अन्य साहसी और समृद्धिशाली लोगों के जो इस्लाम धर्म के समर्थन में व्यस्त हो रहे हैं विनती की जाती है कि वे ऐसे पुण्य कार्य में कि जिस से इस्लाम का नाम ऊँचा होता है और जिस का लाभ केवल स्वयं अपने लिए ही सीमित नहीं अपितु सहस्त्रों ख़ुदा के बन्दों को पहुँचता रहेगा सहायता करने में संकोच न करें कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथनानुसार इससे महान् कोई अन्य शुभ कार्य नहीं कि मनुष्य अपनी शक्तियों को इन कार्यों में व्यय करे कि जिन से ख़ुदा के बन्दों को उस संसार (परलोक) का सौभाग्य प्राप्त हो। यदि सम्बोधित सज्जन इस ओर ध्यान देंगे तो यह कार्य कि जिस की पूर्णता अत्यधिक धन को चाहती है और जिस की वर्तमान स्थिति पर दृष्टि डाल कर कई प्रकार की दैनदारियां दिखाई देती हैं नितान्त सरलता से सम्पन्न हो जाएगीं और आशा तो है कि ख़ुदा हमारे इस कार्य को जो नितान्त आवश्यक है व्यर्थ नहीं होने देगा और जैसा कि इस धर्म के कार्य हमेशा चमत्कार स्वरूप सम्पन्न होते रहे हैं। इसी प्रकार परोक्ष से कोई मनुष्य खड़ा हो जाएगा। हम अल्लाह ही पर भरोसा करते हैं वह हमारा बहुत अच्छा स्वामी और अच्छा सहायक है।

विज्ञापन दाता
मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद रईस क़ादियान
ज़िला गुरदासपुर, पंजाब। लेखक-पुस्तक

---

1. जनाब नवाब शाहजहां बेग़म साहिबा उर्फ हाकिम-ए-भोपाल
2. जनाब नवाब अलाउद्दीन अहमद ख़ान बहादुर-हाकिम-लोहारो
3. जनाब मौलवी चिराग़ अली ख़ान साहिब नाइब मो'तमिद दौलत आसफ़िया, हैदराबाद, दक्कन
4. जनाब ग़ुलाम कादिर ख़ान साहिब मन्त्री रियासत नालागढ़, पंजाब
5. जनाब नवाब मुकर्रमुद्दौला बहादुर, भोपाल
6. जनाब नवाब ज़हीरुद्दौला बहादुर भोपाल
7. जनाब नवाब सुल्तानुद्दौला, भोपाल
8. जनाब नवाब अली मुहम्मद ख़ान साहिब बहादुर, लुधियाना, पंजाब
9. जनाब नवाब ग़ुलाम महबूब सुब्हानी ख़ान साहिब बहादुर रईस आज़म, लाहौर
10. जनाब सरदार ग़ुलाम मुहम्मद ख़ान साहिब रईस-वाह
11. जनाब मिर्ज़ा सईदुद्दीन अहमद ख़ान साहिब बहादुर अतिरिक्त सहायक कमिश्नर फ़ीरोज़पुर

खेद

यह पुस्तक अब तक आधी के लगभग छप चुकी होती परन्तु सफ़ीर हिन्द प्रेस अमृतसर, पंजाब के प्रबन्धक की बीमारी के कारण कि जिन के प्रेस में यह पुस्तक प्रकाशित हो रही है तथा कई अन्य प्रकार की विवशताओं के कारण जो संयोगवश सामने आ गईं सात आठ महीने का विलम्ब हो गया अब ख़ुदा ने चाहा तो भविष्य में ऐसा विलम्ब नहीं होगा।

ग़ुलाम अहमद

लेखक की ओर से आवश्यक निवेदन

जगत के उस ख़ुदा का क्या-क्या धन्यवाद किया जाए कि जिस ने प्रथम मुझ ख़ाकसार को मात्र अपनी कृपा और दया और परोक्ष की मेहरबानी से इस पुस्तक के लेखन और सम्पादन करने की सामर्थ्य प्रदान की और फिर इस रचना को प्रकाशित और प्रसारित करने के लिए इस्लाम के समृद्धशाली लोगों, बुज़ुर्गों, बड़ों और धनवान तथा अन्य भाइयों, मौमिनों तथा मुसलमानों को अभिलाषी, प्रेरक और ध्यान देने वाला बना दिया। अत: यहाँ उन समस्त सहायक सज्जनों का आभार प्रकट करना भी अनिवार्यताओं में से है कि जिनकी कृपा-दृष्टि से मेरे **धार्मिक उद्देश्य** नष्ट होने से सुरक्षित रहे और मेरे परिश्रम और प्रयास बरबाद होने से बचे रहे। मैं उन सज्जनों की सहायता से ऐसा कृतज्ञ हूँ कि मेरे पास वे शब्द नहीं कि जिन से मैं उन का धन्यवाद अदा कर सकूँ। विशेषत: जब मैं देखता हूँ कि कुछ लोगों ने शुभ कर्म के समर्थन में बढ़-चढ़ कर क़दम रखे हैं और कुछ ने कुछ अतिरिक्त सहायता हेतु और भी आश्वासन दिए हैं तो मेरी यह कृतज्ञता और आभार प्रकटन और भी अधिक हो जाता है।

मैंने इसी भाषण के अन्तर्गत समस्त उन समस्त साहसी और दृढ़ संकल्प लोगों के शुभ नाम कि जिन्होंने खरीदारी और इस पुस्तक के प्रकाशन की सहायता में कुछ-कुछ भाग लिया उनकी प्रदान की हुई राशि सहित लिखे हैं और ऐसा ही भविष्य में भी पुस्तक के प्रकाशन के अन्त तक यह कार्य होता रहेगा ताकि जब तक संसार में इस पुस्तक के लाभ और हित का अंश शेष रहे प्रत्येक लाभान्वित कि जिसका इस पुस्तक से हृदय प्रसन्न हो मुझे और मेरे सहायकों को अच्छी दुआ से स्मरण करे। यहाँ विशेष तौर इस बात का प्रकट करना भी आवश्यक है कि इस शुभ कर्म में आज तक सब से अधिक **हज़रत ख़लीफ़ा सय्यद मुहम्मद हसन ख़ान साहिब बहादुर प्रधानमंत्री तथा कानून मंत्री** रियासत पटियाला से सहायता प्रकटन में आई अर्थात् माननीय महोदय ने अपने उच्च साहस और अत्यधिक धार्मिक प्रेम के कारण दो सौ पचास रुपए की धन-राशि अपनी ओर से और पचहत्तर रुपए अपने अन्य मित्रों की ओर से प्राप्त करके तीन सौ पच्चीस रुपए किताबों की खरीदारी के लिए प्रदान किए। सम्माननीय मंत्री जी ने अपने पत्र में

यह भी आश्वस्त किया है कि पुस्तक के अन्त तक चन्दे की उपलब्धता और खरीदारों को प्रेरित करने का प्रयास करते रहेंगे तथा इसी प्रकार **हज़रत फ़ख़्रुद्दौला नवाब मिर्ज़ा मुहम्मद अलाउद्दीन अहमद ख़ान बहादुर** हाकिम रियासत लोहारो ने चालीस रुपए की राशि कि जिन में से बीस रुपए मात्र पुस्तक की सहायता के तौर पर प्रदान किए और भविष्य में इस संबंध में सहायता करने का और भी आश्वासन दिया। इसी प्रकार विशेष ध्यान **जनाब शाहजहाँ बेग़म साहिबा क्राउन ऑफ इण्डिया रईस दिलावर आज़म तबक़ा उच्च सितारा हिन्द तथा रईस भोपाल** (जिनका प्रताप श्रेष्ठ रहे) का भी बड़ा आभारी हूँ कि जिन्होंने ख़ुदा की प्रजा के लिए अपनी स्वाभाविक सहानुभूति के अन्तर्गत पुस्तकों की ख़रीदारी का आश्वासन दिया और मुझे बहुत आशा है कि हज़रत गौरवान्वित इस महान् कार्य के समर्थन में जिस से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई, शान और वैभव प्रकट होता है, इस्लाम की सच्चाई प्रकाशमय दिवस की भांति प्रकट होती है तथा ख़ुदा की प्रजा को अत्यन्त लाभ पहुँचता है पूर्ण ध्यान देंगी।

अब मैं यहाँ अन्य महान् अमीरों और रईसों से भी कि जिन्हें अब तक इस पुस्तक की कोई सूचना नहीं इतना निवेदन करना आवश्यक समझता हूँ कि वे भी इस पुस्तक के प्रकाशन के उद्देश्य से कुछ सहायता प्रदान करेंगे तो उनके तुच्छ ध्यान से इस पुस्तक का प्रसारण और प्रकाशन जो मेरा हार्दिक उद्देश्य और अभिलाषा है नितान्त सरलता से पूर्ण हो जाएगी। हे बुज़ुर्गो और इस्लाम के दीपको ! आप समस्त सज्जन भली-भांति जानते होंगे कि आजकल इस्लाम की सच्चाई के तर्कों के प्रकाशन की अत्यन्त आवश्यकता है तथा शिक्षा प्रदान करना और सिखाना तथा इस स्थायी धर्म के तर्क और प्रमाणों का अपनी सन्तान और परिजनों को सिखाना इतना अनिवार्य कर्तव्य हो गया है कि जिसमें कुछ संकेत करने की भी आवश्यकता नहीं। इन दिनों लोगों की आस्था जितनी अस्त-व्यस्त हो रही हैं और अधिकांश लोगों के स्वभावों की स्थिति ख़राब अवस्था में है किसी से गुप्त नहीं। क्या-क्या विचार हैं जो निकल कर सामने आ रहे हैं और क्या-क्या हवाएँ हैं जो चल रही हैं और क्या-क्या भापें हैं जो उठ रही हैं। अत: जिन-जिन सज्जनों को इन आंधियों की जो बड़े-बड़े वृक्षों को जड़ से उखेड़ती जाती हैं कुछ ख़बर है वे भली भांति समझते होंगे कि इस किताब का लेखन अनावश्यक नहीं। प्रत्येक युग की मिथ्या

आस्थाएँ और दूषित विचार पृथक-पृथक रूपों और बनावट में प्रकट होते हैं और ख़ुदा ने उन के मिथ्या होने और निवारण हेतु यही उपचार रखा हुआ है कि उसी युग में ऐसी पुस्तक उपलब्ध कर देता है जो उसके पवित्र कलाम से प्रकाश लेकर पूरी-पूरी शक्ति से उन दूषित विचारों के निवारण हेतु खड़ी हो जाती है तथा शत्रुओं को अपने अनुपम तर्कों से खामोश और आरोपित करती है। अत: ऐसे प्रबन्ध से इस्लाम का पौधा सदैव हरा-भरा और ताज़ा रहता है।

हे आदरणीय इस्लाम के बुज़ुर्गो ! मुझे इस बात पर पूर्ण विश्वास है कि आप समस्त सज्जन पहले से अपने व्यक्तिगत अनुभव और सामान्य परिचय से वर्तमान युग की खराबियों को कि जिनका वर्णन एक हृदय विदारक कहानी है भली-भांति जानते होंगे कि स्वभावों में जो विचार जन्म ले रहे हैं और जिस प्रकार से लोग सन्देह उत्पन्न करने वालों के बहकाने और पथ-भ्रष्ट करने का कारण बिगड़ते जा रहे हैं आप पर गुप्त न होगा। अतएव ये समस्त परिणाम इस बात के हैं कि अधिकांश लोग इस्लाम की सच्चाई के तर्कों से अज्ञान हैं और यदि कुछ लोग शिक्षित भी हैं तो ऐसे स्कूलों और मदरसों से कि जहाँ धार्मिक शिक्षा बिल्कुल नहीं सिखाई जाती तथा समस्त उत्तम समय उनके बोध, अनुभूति, चिन्तन और विचार का अन्य-अन्य शिक्षाओं में व्यर्थ जाता है और धर्म के कूचे से अपरिचित और अनभिज्ञ मात्र रहते हैं। अत: यदि उन्हें इस्लाम की सच्चाई के तर्कों से शीघ्र से शीघ्र परिचित न किया जाए तो अन्तत: ऐसे लोग या तो मात्र संसार के कीड़े हो जाते हैं कि जिन्हें धर्म की कोई परवाह नहीं रहती और या नास्तिकता और धर्मांतरण का मार्ग अपना लेते हैं। मेरा यह कथन मात्र अनुमान पर आधारित नहीं, बड़े-बड़े शिष्ट लोगों के बेटे मैंने अपनी आँखों से देखे हैं जो धार्मिक अनभिज्ञता के कारण वपतस्मा पाए हुए गिरजाघरों में बैठे हैं। यदि इस्लाम के सहायक और समर्थक ख़ुदा की असीम कृपा न होती और वह अपने विद्वानों और दक्ष ज्ञानियों के बड़े ज़ोरदार भाषणों और लेखों द्वारा अपने इस सच्चे धर्म की देख-रेख न करता तो थोड़ा समय भी व्यतीत न होने पाता कि संसार के पुजारियों को यह ज्ञान भी न होने पाता कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किस देश में जन्म लिया था, विशेषतया इस अंधकारमय युग में कि चारों ओर दूषित विचारों का बाहुल्य है। यदि इस्लाम धर्म के अन्वेषक जो बड़ी बहादुरी और दृढ़ता के साथ प्रत्येक इन्कारी और नास्तिक के साथ शास्त्रार्थ और बहस कर रहे हैं अपनी इस

सेवा और कर्म से खामोश रहें तो थोड़े ही समय में इस्लाम का निशान इतना अनुपलब्ध हो जाएगा कि सलाम मसनून के स्थान पर गुड मार्निंग और गुड बाय की आवाज़ सुनी जाए। अत: ऐसे समय में इस्लाम की सच्चाई के तर्कों के प्रकाशन में हार्दिक तौर पर व्यस्त रहना वास्तव में अपनी ही सन्तान और अपनी ही नस्ल पर दया करना है, क्योंकि जब संक्रामक रोग के दिनों में विषाक्त वायु चलती है तो उसके प्रभाव से प्रत्येक को ख़तरा होता है।

कदाचित कुछ लोगों के हृदय में इस पुस्तक के सन्दर्भ में यह संशय स्थान ले कि अब तक जो पुस्तकें धार्मिक शास्त्रार्थों के संबंध में लिखी जा चुकी हैं क्या वे आरोप और ऐतिराज़ प्रतिद्वन्द्वियों के लिए पर्याप्त नहीं हैं कि इसकी आवश्यकता है। अत: मैं इस बात को भली-भांति हृदय में बैठाना चाहता हूँ कि इस पुस्तक और उन पुस्तकों के लाभों में बड़ा ही अन्तर है। वे पुस्तकें विशेष सम्प्रदायों के मुक़ाबले पर रची गई हैं तथा उनके तर्क और कारण वहाँ तक ही सीमित हैं जो उस सम्प्रदाय विशेष को आरोपित करने के लिए पर्याप्त है और यद्यपि वे पुस्तकें कैसी ही उत्तम और अच्छी हों परन्तु उन से वही विशेष कौम लाभ उठा सकती है कि जिन के मुक़ाबले पर वे लिखी गई हैं, परन्तु यह पुस्तक समस्त सम्प्रदायों के मुक़ाबले पर इस्लाम की सच्चाई और इस्लामी आस्थाओं की सत्यता सिद्ध करती है तथा सामान्य छान-बीन और खोज से क़ुर्आन करीम की सच्चाई को प्रमाण तक पहुँचाती है। स्पष्ट है कि जो वास्तविकताएँ और सूक्ष्मताएँ सामान्य खोज द्वारा प्रकट होती हैं विशेष शास्त्रार्थों में उन का प्रकटन कदापि संभव नहीं। किसी विशेष क़ौम के साथ जो व्यक्ति शास्त्रार्थ करता है उसे ऐसी आवश्यकताएँ कहाँ पड़ती हैं कि जिन बातों को उस क़ौम ने स्वीकार किया हुआ है उन्हें भी अपनी गहरी और सुदृढ़ खोज द्वारा सिद्ध करे अपितु विशेष शास्त्रार्थों में अधिकांश तौर पर प्रतिद्वन्द्वी को दोषी ठहराने वाले उत्तरों से काम निकाला जाता है तो उचित तर्कों की ओर बहुत कम ध्यान जाता है, विशेष बहसों की कुछ मांग ही ऐसी होती है कि दार्शनिकता के तौर पर खोज करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती तथा पूर्ण तर्कों की तो चर्चा ही क्या है बौद्धिक तर्कों का बीसवां भाग भी नहीं लिखा जाता। उदाहरणतया जब हम ऐसे व्यक्ति से बहस करते हैं जो सृष्टि के रचयिता को स्वीकार करता है, इल्हाम का इक़रार करता है, ख़ुदा को स्रष्टा मानता है, तो हमें क्या आवश्यकता है कि हम बौद्धिक तर्कों से उसके समक्ष

स्रष्टि के रचयिता के अस्तित्व को सिद्ध करें या इल्हाम की आवश्यकता के कारण दिखाएँ या ख़ुदा के स्रष्टा होने के तर्क लिखें अपितु बिल्कुल व्यर्थ होगा कि जिस बात का कुछ विवाद ही नहीं उसको विवादित बना बैठें, परन्तु जिस व्यक्ति को भिन्न-भिन्न आस्थाओं, भिन्न-भिन्न विचारधाराओं, भिन्न-भिन्न बहानों, भिन्न-भिन्न सन्देहों का मुकाबला करना पड़ता है उसकी खोजों में किसी प्रकार की भूल-चूक शेष नहीं रहती।

इसके अतिरिक्त किसी विशेष क़ौम के मुक़ाबले पर जो कुछ लिखा जाता है वे अधिकतर इस प्रकार के तर्क होते हैं जो अन्य क़ौम के लिए प्रमाण नहीं हो सकते। उदाहरणतया जब हम बाइबल शरीफ़ से कुछ भाविष्यवाणियाँ निकालकर उनके द्वारा हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत की सच्चाई सिद्ध करें तो यद्यपि हम उस प्रमाण से ईसाइयों और यहूदियों को आरोपित कर दें परन्तु जब हम वह प्रमाण किसी हिन्दू, पारसी दार्शनिक अथवा ब्रह्म समाजी के समक्ष प्रस्तुत करेंगे तो वह यही कहेगा कि जिस स्थिति में मैं इन पुस्तकों को ही नहीं मानता तो फिर ऐसा प्रमाण जो उन्हीं से लिया गया है क्योंकर स्वीकार कर लूँ। इसी प्रकार जो बात अपने उद्देश्य को पूर्ण करने वाली हम वेद से निकालकर ईसाइयों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे तो वे भी यही उत्तर देंगे। अतः बहरहाल ऐसी पुस्तक की नितान्त आवश्यकता थी कि जो प्रत्येक सम्प्रदाय के मुक़ाबले पर इस्लाम की सच्चाई को बौद्धिक तर्कों द्वारा सिद्ध करे कि जिन के स्वीकार करने से किसी मनुष्य को चारा नहीं। अतः ख़ुदा का आभार और धन्यवाद कि इन समस्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह पुस्तक तैयार हुई। दूसरे इस पुस्तक में यह भी विशेषता है कि इसमें शत्रुओं के निरर्थक बहानों के निवारण हेतु तथा उनपर अपनी ओर से समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए भली-भांति व्यवस्था की गई है अर्थात् एक विज्ञापन इस में दस हज़ार रुपए की धन-राशि का इसी उद्देश्य से सम्मिलित किया गया है ताकि इन्कार करने वालों का कोई हीला-बहाना शेष न रहे और यह विज्ञापन विरोधियों पर एक ऐसा भारी बोझ है कि जिस से प्राण-छुड़ाना उन्हें प्रलय तक प्राप्त नहीं हो सकता तथा यह उनके इन्कार वाले जीवन को ऐसा कटु करता है कि उन्हीं का हृदय जानता होगा। अतः यह पुस्तक अत्यन्त आवश्यक और सत्य के अभिलाषियों के लिए नितान्त ही मुबारक है कि जिससे इस्लाम की सच्चाई सूर्य की भांति स्पष्ट, उज्जवल और प्रकाशमान होती है तथा

उस पवित्र किताब (क़ुर्आन करीम) की शान-शौकत (वैभव) प्रकट होती है कि जिसके साथ सम्मान और श्रेष्ठता तथा इस्लाम की सच्चाई सम्बद्ध है।

सहायकों की सूची कि जिन्होंने धार्मिक सहानुभूति से पुस्तक बराहीन अहमदिया में सहायता की तथा किताबों की ख़रीदारी से कृतज्ञ और धन्यवादी बनाया।

क्रम संख्या	नाम उन सहायक का जिन्होनें पुस्तक की खरीदारी से या यों ही सहायता की	राशि	विवरण
(1) हज़रत ख़लीफ़ा सय्यद मुहम्मद हसन ख़ान साहिब बहादुर प्रधानमंत्री दस्तूरे मुअज़्ज़म रियासत पटियाला 150.00 स्यवं 75.00 अन्य मित्रों से कुल 225.00			
माननीय उपरोक्त ख़लीफ़ा साहिब के माध्यम से			
क	मौलवी फ़ज़्ल हकीम साहिब	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
ख	ख़ुदाबख़्श ख़ान साहिब मास्टर	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
ग	सय्यद मुहम्मद अली साहिब प्रबन्धक निर्माण छावनी	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
घ	मौलवी अहमद हसन साहिब पुत्र मौलवी अली अहमद साहिब	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
च	ग़ुलाम नबी ख़ान साहिब क्लर्क निज़ामत करमगढ़	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
छ	काले ख़ान साहिब नाज़िम करमगढ़	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
ज	शेख़ करीमुल्लाह साहिब डाक्टर नाज़िम स्वास्थ्य रक्षा	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
झ	शेख़ फ़ख़रुद्दीन साहिब सिविल जज	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
ट	सय्यद इनायत अली साहिब जरनैल	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
ठ	बिल्लू ख़ान साहिब जमादार जेलख़ाना	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
ड	मीर सदरुद्दीन साहिब हैडक्लर्क निज़ामत करमगढ़	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
ढ	मीर हिदायत हुसैन साहिब निवासी बस्सी निज़ामत	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
न	सय्यद नियाज़ अली साहिब प्रबन्धक सरहिन्द नहर	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
त	सय्यद निसार अली साहिब वकील कमिश्नरी अम्बाला	5.00	पुस्तक के क्रय हेतु
2	हज़रत फ़ख़रुद्दौला नवाब मिर्ज़ा मुहम्मद अलाउद्दीन अहमद ख़ान साहिब व बहादुर हाकिम रियासत लोहारो	20.00 20.00	मात्र सहायतार्थ पुस्तक के क्रय हेतु

क्रम संख्या	नाम उन सहायक का जिन्होनें पुस्तक की खरीदारी से या यों ही सहायता की	राशि	विवरण
3	मौलवी मुहम्मद चिराग़ अली ख़ान साहिब बहादुर विश्वस्त प्रधानमंत्री हैदराबाद- दक्कन	10.00	पुस्तक के प्रकाशन हेतु
4	जनाब नवाब ग़ुलाम महबूब सुब्हानी साहिब बहादुर रईस आज़म-लाहौर	5.00	पुस्तक के प्रकाशन हेतु
5	मुहम्मद अब्दुल्लाह साहिब बिहारी रईस कलकत्ता	5.00	हर्ष से
6	जनाब मुकर्रमुद्दौला साहिब सदर मुहाम मालगुज़ारी सरकार हैदराबाद	10.00	हर्ष से
7	जनाब नवाब अली मुहम्मद ख़ां साहिब बहादुर पूर्व रईस झज्जर	5.00	हर्ष से
8	वज़ीर ग़ुलाम क़ादिर ख़ान साहिब बहादुर रियासत नालागढ़	5.00	हर्ष से
9	मलिक यारख़ान साहिब थानेदार बटाला	2.00	सहायतार्थ
10	अज़ीमुल्लाह ख़ान साहिब रसालदार तुरप पाँचवी रजमेण्ट प्रथम छावनी मोमिनाबाद, हैदराबाद	5.00	खरीदारी पुस्तक
11	मौलवी अब्दुल हमीद साहिब क़ाज़ी जलालाबाद ज़िला फ़ीरोज़पुर	2.50	हर्ष से
12	मियाँ जान मुहम्मद साहिब क़ादियान		सहायतार्थ
13	मियाँ ग़ुलाम क़ादिर साहिब क़ादियान	5.00 5.00	खरीदारी पुस्तक सहायतार्थ
14	जनाब अहमद अली खान साहिब बहादुर-भोपाल	5.00	खरीदारी पुस्तक
15	मौलवी ग़ुलाम अली साहिब डिप्टी एस.पी. तहसील मुज़फ़्फ़रगढ़	5.00	हर्ष से
16	मियाँ करम बख़्श साहिब नाइब प्रबन्धक तहसील मुजफ़्फ़रगढ़	5.00	हर्ष से
17	काज़ी महफ़ूज़ हुसैन साहिब प्रबन्धक, तहसील मुज़फ़्फ़रगढ़	5.00	हर्ष से
18	क़ाज़ी महफ़ूज़ हुसैन साहिब प्रबन्धक, तहसील मुज़फ़्फ़रगढ़	5.00	हर्ष से
19	शैख़ अब्दुल करीम साहिब क्लर्क जूडिशियल मुज़फ़्फ़रगढ़	5.00	हर्ष से
20	मियाँ अकबर निवासी बल्होवाल ज़िला गुरदासपर	2आना	सहायतार्थ

ⓟ3 بسم الله الرحمٰن الرحیمⓟ

سبحانک ما اقوی برھانک العظمة کلھالک والقدرة کلھا لک العالم کلہٗ ضعیف و القوة کلھا لک انت الاحد الصمد الذی توحدفی وجوب و جوده و تفردفی فضله و جوده جلت حکمتک وَتجلت حجتک و تمت نعمتک و عمت رحمتک و تنزه ذاتک عن کل منقصة و نقصان و تعالیٰ شانک من جمیع مایشان انت المتوحد المتفردبجلال ذاته و کمال صفاته المنزه عن شوائب النقص و سماته نحمدک علیٰ ما تفضلت علینا بتنزیل کتاب لا ریب فیه ولا خطاء ولا نسیان و کشفت به علی نفوسنا الخاطئة المخطئة سبیل الحق و العرفان فانت ھدیتنا بالفضل والجود والاحسان وما کنا لنھتدی لو لا ھداک یا رحمٰن۔

ونسئلک ان تصلی علی رسولک النبی الامی الذی نجیتنا به من سُبُل الضلالة و الطغیان و اخرجتنا به من ظلمات العمی والحرمان الذی ظھر دینه الحق علی کل دین من الادیان و تقدست ملته عن کلّ شرک و بد عة و عدوان و سبقت شریعته فی کل معرفة و حکمة و برھان ⓟھو العبد المخلص الذی اصطنعته ⓟ4
لمجتک و توحیدک و جعلت احب الیه من نفسه ذکر تقدیسک و تمجیدک ارسلته رحمته للعالمین وحجة علی المنکرین و سراجًا منیراً للسالکین و داعیًا الی اللّٰه للطالبین و بشیراً و مبشرًا للمؤمنین و انسانًا کا ملًا للناظرین جاء بکتاب یحیط علی القوانین الحکمیة و یھدی الی جمیع السعادات الدینیة اکمل کثیرا من الناس فی القوی النظریة و العملیة فجعلھم المتحلین بالا خلاق المرضیة الالھیة والمتخلین عن الادناس البشریة السفلیة فاصبحوا بتعلیمه المترقین فی العلوم الحقیقیة الیقینیة والمتلذذین بالمحبة الربانیة الا حدیة والمستعدّین لحظیرة القُدس والتجلّیات القدّوسیة۔ اللّٰھم فصلّ علیه و علیٰ جمیع اخوانه من الرسل و النبیین واٰله الطیبین الطاھرین و اصحابه الصالحین الصدّیقین۔

अनुवाद:- (हे अल्लाह) तू पवित्र है, तेरे समस्त श्रेष्ठ तर्क कितने सुदृढ़ हैं सब तेरे हैं, समस्त शक्तियाँ तेरे लिए हैं, समस्त संसार कमज़ोर है और समस्त शक्ति तेरी है, तू एक है बिना किसी की आवश्यकता के, तू अपने अनिवार्य अस्तित्व में अकेला है, तू अपनी कृपा और दानशीलता में इकलौता है, तेरी नीति प्रकाशमान है, तेरा तर्क (हुज्जत) प्रकट है, तेरी नैमत पूर्ण हो चुकी है तथा तेरी दया सामान्य रूप से (सब पर) है, तेरी हस्ती प्रत्येक अपूर्णता और क्षति से पवित्र है, तेरी शान और प्रतिष्ठा समस्त शानों और प्रतिष्ठाओं से श्रेष्ठतम है, तू अपने अस्तित्व में अपने प्रताप तथा अपनी पावन विशेषताओं के कमाल के साथ जो दोष और विकार की मिलौनी से पावन हैं अनुपम और अद्वितीय है। हम तेरी प्रशंसा करते हैं कि तू ने हम पर ऐसी किताब (क़ुर्आन) उतार कर हमें गौरवान्वित किया जिसमें किसी प्रकार का कोई सन्देह नहीं, कोई दोष नहीं, कोई भूल

नहीं और जिसके माध्यम से तूने हमारे दोषयुक्त और दोष करने वाले अस्तित्वों पर सत्य और ज्ञान का मार्ग स्पष्ट किया, तूने ही अपनी कृपा और दानशीलता, और उपकार से हमारा पथ-प्रदर्शन किया। हे रहमान (असीम कृपालु) हम तेरे पथ-प्रदर्शन के बिना कभी पथ-प्रदर्शन प्राप्त नहीं कर सकते थे।

हम तुझ से दुआ करते हैं कि तू अपने उस अनपढ़ नबी पर रहमत उतार जिसके द्वारा तूने हमें पथ-भ्रष्टता, और उपद्रव के मार्गों से मुक्ति प्रदान की और हमें घोर अंधकारों तथा निराशाओं से बाहर निकाला, जिसका सच्चा धर्म समस्त धर्मों पर प्रकट हो गया, जिसकी मिल्लत (क़ौम) प्रत्येक शिर्क (ख़ुदा का भागीदार बनाना) बिदअत और शत्रुता से पवित्र हो गई, जिसके द्वारा लाई गई शरीअत (धार्मिक विधान) प्रत्येक ख़ुदाई ज्ञान, नीति और तर्क में श्रेष्ठता ले गई, वह निस्वार्थ और निष्कपट मनुष्य जिसका तूने अपने प्रेम और एकत्व के लिए चयन किया तथा तूने अपनी पवित्रता और श्रेष्ठता की स्तुति हेतु उसके हृदय में उसके स्वयं के प्राणों से भी अधिक प्रेम डाल दिया, तूने उसे समस्त संसारों के लिए रहमत बना कर भेजा तथा इन्कार करने वालों के लिए हुज्जत, और उसे अपने अभिलाषियों के लिए चमकता हुआ सूर्य बनाया और तेरे जिज्ञासुओं के लिए ख़ुदा की ओर बुलाने वाला तथा मौमिनों के लिए ख़ुशख़बरी और शुभ संदेश देने वाला और आँखें रखने वालों के लिए पूर्ण मानव। वह ऐसी कामिल पुस्तक लेकर आया जो समस्त नीतिगत नियमों को अपनी परिधि में लिए हुए है जो समस्त धार्मिक सौभाग्यों की ओर पथ-प्रदर्शन करती है, और बहुत से लोगों ने उसके द्वारा अपने काल्पनिक और वास्तविक ज्ञान की शक्ति को पूर्ण किया। उन्हें सुमधुर ख़ुदाई सदाचारों से संवारा और सुसज्जित किया तथा मानवीय अधमता की गन्दगियों से बाहर निकाला और वे उसकी शिक्षा द्वारा वास्तविक, विश्वसनीय ज्ञानों में उन्नति कर गए तथा एक ख़ुदा के प्रेम में आनन्द लेने लगे और पवित्र ख़ुदा के भय और उसकी पवित्र झलकियों के लिए तैयार हो गए। हे अल्लाह! तू उस पर दरूद और रहमत उतार और उसके समस्त भाई नबियों और रसूलों पर और उसकी पवित्र और पावन सन्तान पर तथा उसके नेक और सदमार्गी साथियों पर।

(अनुवादक)

ہر دم از کاخِ عالم آوازیست ٭ کہ یکش بانی و بنا سازیست

यह संसार की व्यवस्था इस बात की साक्ष्य दे रही है कि इस स्रष्टि का
कोई रचयिता और प्रवर्तक अवश्य है। ☆

نہ کس او را شریک و انبازیست ٭ نے بکارش دخیل و ہمرازیست

न उसका कोई भागीदार है न साथी, और न ही उसके कार्य में कोई
हस्तक्षेप करने वाला, न ही कोई मर्मज्ञ है। ☆

ایں جہاں را عمارت اندازیست ٭ واز جہاں برتر است و ممتازیست

वह इस संसार का स्रष्टा है तथा वह स्वयं इस संसार से उच्चतम और
यशस्वी है। ☆

وحدہٗ لا شریک حی و قدیر ٭ لم یزل لایزال فرد و بصیر

वह अकेला, अद्वितीय, जीवित और पूर्ण शक्तिमान है, वह अनादि है,
हमेशा रहेगा, अकेला और दृष्टा है। ☆

کارسازِ جہان و پاک و قدیم ٭ خالق و رازق و کریم و رحیم

वह समस्त संसार का कार्य चलाने वाला, पवित्र और अनादि है, वह स्रष्टा,
अन्नदाता, कृपालु और दयालु है। ☆

رہنماء و معلم رہِ دین ٭ ہادی و ملہمِ علومِ یقین

वह पथ-प्रदर्शक तथा धार्मिक शिक्षक है, मार्ग-दर्शन करने वाला तथा
वास्तविक ज्ञानों का इल्हाम करने वाला है। ☆

متصف باہمہ صفاتِ کمال ٭ برتر از احتیاجِ آل و عیال

वह सम्पूर्ण विशेषताओं से विभूषित है, परन्तु पारिवारिक रिश्तों की
आवश्यकताओं से स्वच्छंद है। ☆

بریکے حال ہست درہمہ حال ٭ رہ نیابد بدو فنا و زوال

वह प्रत्येक युग में एक ही स्थिति पर क़ायम रहता है विनाश और पतन
उसके निकट नहीं आते। ☆

نیست از حکم او بروں چیزے ٭ نہ ز چیزیست او نہ چوں چیزے

कोई वस्तु उसके आदेश से बाहर नहीं है, वह स्वयं भू है तथा वह किसी
के समान नहीं है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

Ⓟنتواں گفت لامس اشیاست ؂ نے تواں گفتن ایں کہ دور ازماست Ⓟ5

नहीं कहा जा सकता कि वह वस्तुओं को छूता है तथा नहीं कह सकते कि
वह हम से दूर है। ☆

ذات او گرچہ ہست بالاتر ؂ نتواں گفت زیر اوست دگر

उसकी हस्ती यद्यपि कि बहुत बुलन्द है, नहीं कह सकते कि उसके नीचे
कोई और वस्तु भी है। ☆

ہرچہ آید بفہم و عقل و قیاس ؂ ذاتِ او برترست زاں و سواس

जो कुछ बोध, बुद्धि और कल्पना में आ सकता है उसका अस्तित्व हर उस
विचार से परे है। ☆

ذاتِ بے چون و چند افتادست ؂ واز حدود و قیود آزاد ست

उसका अस्तित्व अद्वितीय और अनुपम है, वह समस्त सीमाओं और बंधनों
से स्वतंत्र है। ☆

نہ وجودے بذاتِ او انباز ؂ نہ کسے در صفات او انباز

उसके अस्तित्व में कोई भागीदार नहीं है और न ही कोई उसकी
विशेषताओं में उसके समान है। ☆

ہمہ پیدا ز دست قدرتِ او ؂ کثرت شان گواہ وحدت او

प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति उसकी शक्ति से है। उनकी अधिकता उसके
एकेश्वरवाद (तौहीद) पर साक्षी है। ☆

گر شریکش بُدی ز خلق دگر ؂ گشتی ایں جملہ خلق زیر و زبر

यदि सृष्टि में से कोई दूसरा उसका भागीदार होता तो यह सम्पूर्ण सृष्टि
अस्त-व्यस्त हो जाती। ☆

ہرچہ از وصف خاکی و خاک ست ؂ ذاتِ بیچون او ازاں پاک ست

मिट्टी और मिट्टी से बनी सृष्टि की जो विशेषताएं हैं उसका अद्वितीय
अस्तित्व उससे पवित्र है। ☆

بند بر پائے ہر وجود نہاد ؂ خود زہر قید و بند ہست آزاد

उसने प्रत्येक अस्तित्व पर पाबन्दियां लगा रखी हैं तथा वह स्वयं प्रत्येक
बाधा और बंधन से स्वतंत्र है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

آدمی بندہ ہست و نفسش بند ٭ در دو صد حرص و آز و سربکمند

मनुष्य दास है, उसकी आत्मा बन्दी है और सैकड़ों लालसाओं तथा इच्छाओं में लिप्त है। ☆

ہمچنیں بندہ آفتاب و قمر ٭ بند در سیرگاہِ خویش و مقر

इसी प्रकार सूर्य और चन्द्रमा उसके मजबूर हैं वे अपने मार्गों पर चलने के लिए विवश हैं। ☆

ماہ را نیست طاقت ایں کار ٭ کہ بتابد بروز چوں احرار

चन्द्रमा को इस कार्य की शक्ति प्राप्त नहीं कि वह दिन को स्वतंत्रतापूर्वक चमक सके। ☆

نیز خورشید را نہ یارائے ٭ کہ نہد بر سریر شب پائے

इसी प्रकार सूर्य को भी यह शक्ति प्राप्त नहीं कि वह रात के बिछौने पर पैर रखे। ☆

آب ہم بندہ ہست زیں کہ مدام ٭ بند در سروے است نے خود کام

जल भी मजबूर है, क्योंकि सर्दी में हमेशा जम जाता है वह इच्छा का मालिक नहीं। ☆

آتشے تیز نیز بندۂ او ٭ در چنیں سوزشے فگندۂ او

भीषण अग्नि भी उसकी आज्ञाकारी है तथा ऐसी ज्वाला में उसी की डाली हुई है। ☆

گر برآری بہ پیش او فریاد ٭ گرمیش کم نہ گردد اے استاد

यदि तू उस अग्नि से फ़रियाद करे तब भी हे मनुष्य! गर्मी कम न होगी। ☆

پائے اشجار در زمیں بندست ٭ سخت درپا سلاسل افگندست

वृक्षों के तने पृथ्वी के अन्दर गड़े हुए हैं उनके पैरों में मज़बूत ज़ंजीरें डाल दी हैं। ☆

ⓅⅥ Ⓟایں ہمہ بستگان آں یک ذات ٭ بروجودش دلائل و آیات

ये समस्त वस्तुएँ उसी हस्ती से संलग्न हैं तथा उसके अस्तित्व पर तर्क और प्रतीक हैं। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

اے خداوند خلق و عالمیان ؛ خلق و عالم ز قدرتت حیراں

हे समस्त सृष्टियों और सृष्टि के स्वामी! सृष्टि और संसार तेरी क़ुदरत के कारण आश्चर्य चकित हैं। ☆

چہ مہیب ست شان و شوکت تو ؛ چہ عجیب ست کار و صنعت تو

तेरी प्रतिष्ठा और प्रताप कितना श्रेष्ठ है तथा तेरी कारीगरी और कार्य क्या ही अद्‌भुत है। ☆

حمد را باتو نسبت از آغاز ؛ نے دراں کس شریک نے انباز

प्रारम्भ से ही प्रशंसा का तुझ से संबंध है उसमें न कोई तेरा भागीदार है और न साथी। ☆

تو وحیدی و بے نظیر و قدیم ؛ متنزہ ز ہر قسیم و سہیم

तू अकेला, अद्वितीय और अनादि है तथा तू प्रत्येक भागीदार और साझेदार से पवित्र है। ☆

کس نظیر تو نیست در دو جہان ؛ بر دو عالم توئی خدائے یگان

दोनों जहान (लोक-परलोक) में तेरा कोई सदृश नहीं है और दोनों जहान में तू ही अकेला ख़ुदा है। ☆

زور تو غالب است برہمہ چیز ؛ ہمہ چیزے بہ جنب تو ناچیز

प्रत्येक वस्तु पर तेरी शक्ति का आधिपत्य है और प्रत्येक वस्तु तेरे मुकाबले पर तुच्छ है। ☆

ترست ایمن کند ز ترس و خطر ؛ ہر کہ عارف ترست ترساں تر

तेरा भय प्रत्येक डर और ख़तरे से सुरक्षित कर देता है, क्योंकि जो तेरा अधिक ज्ञान रखता है वही भयभीत रहता है। ☆

خلق جوید پناہ و سایہ کس ؛ واں پناہِ ہمہ تو ہستی وبس

सृष्टि (मख़लूक़) किसी की छांव और शरण तलाश करती है और सब की शरण केवल तेरी हस्ती है। ☆

ہست یادت کلید ہر کارے ؛ خاطرے بے تو خاطر آزارے

तेरी याद प्रत्येक कठिनाई की कुंजी है, कोई भी विचार तेरे बिना हृदय की पीड़ा है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

ہر کہ نالد بدر گہت بہ نیاز ٭ بخت گم کردہ را بیابد باز

जो व्यक्ति विनम्रतापूर्वक तेरी चौखट पर विलाप करता है वह अपना खोया हुआ भाग्य पुन: प्राप्त कर लेता है। ☆

لطف تو ترکِ طالبان نکند ٭ کس بکارِ رہت زیان نکند

तेरे उपकार और कृपा अभिलाषियों को नहीं छोड़तीं और कोई तेरे मार्ग में हानि नहीं उठाता। ☆

ہر کہ باذات تو سرے دارد ٭ پشت بر روئے دیگرے دارد

जो व्यक्ति केवल तुझ से संबंध रखता है वह दूसरे की ओर पीठ फेर लेता है। ☆

زینکہ چوں کار بر تو بگذارد ٭ رو بہ اغیار ازچہ رو آرد

क्योंकि जब अपना मामला तेरे सुपुर्द कर देता है तो वह दूसरों की ओर मुख क्यों कर सकता है। ☆

ذاتِ پاکت بس ست یارِ یکے ٭ دل یکے جان یکے نگار یکے

तेरे पवित्र अस्तित्व का हमारे लिए मित्र होना पर्याप्त है। हृदय भी एक है, प्राण भी एक है, और प्रियतम भी एक होना चाहिए। ☆

ہر کہ پوشیدہ با تو در سازد ٭ رحمت آشکار بنوازد

जो व्यक्ति गुप्त तौर पर तेरी स्तुति करता है तेरी दया प्रत्यक्ष तौर पर उसे सम्मानित करती है। ☆

ہر کہ گیرد درت بصدق و حضور ٭ از در و بام او ببارد نور

और जो व्यक्ति हृदय की शुद्धता और सच्चाई के साथ तेरी चौखट पकड़ता है तो उसके द्वार और दीवारों से प्रकाश की वर्षा बरसाता है। ☆

℗7 ℗ہر کہ راحتؔ ل گرفت کارش شد ٭ صد امیدے بروز گارش شد

जो व्यक्ति तेरे मार्ग पर चला उसका कार्य बन गया और उसकी सौ आशाएं बंध गईं। ☆

ہر کہ راہ تو جُست یافتہ است ٭ تافت آں رو کہ سرنتافتہ است

जिस व्यक्ति ने तेरा मार्ग तलाश किया उसने प्राप्त कर लिया और वह चेहरा प्रकाशमान हो गया जिसने तुझ से उपद्रव न किया। ☆

ل-नक़ल मूल के अनुसार है। शायद कातिब (लिपिक) की भूल है। सही शब्द "राहत" मालूम होता है। (प्रकाशक)

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

وانکہ از ظل قربت تو رمید ﴿ بردر ہر کہ رفت ذلت دید

परन्तु जो व्यक्ति जो तेरे सानिध्य की छाया से पलायन कर गया, वह जिस द्वार पर भी गया, अपमान देखा। ☆

اے خداوندِ من گناہم بخش ﴿ سوئے درگاہِ خویش راہم بخش

हे मेरे ख़ुदा! तू मेरे पाप क्षमा कर दे तथा अपने दरबार की ओर जाने के लिए पथ-प्रदर्शन कर। ☆

روشنی بخش در دل و جانم ﴿ پاک کُن از گناہِ پنہانم

मेरे हृदय और प्राण में प्रकाश डाल दे तथा मुझे मेरे गुप्त पापों से पवित्र कर दे। ☆

دلستانی و دلربائی کن ﴿ بہ نگاہے گرہ کشائی کن

तू मेरे साथ प्रेम और मुहब्बत का व्यवहार कर और अपनी एक कृपा-दृष्टि से मेरी कठिनाइयों को दूर कर। ☆

در دو عالم مرا عزیز توئی ﴿ و آنچہ میخواہم از تو نیز توئی

दोनों जहान (लोक और परलोक) में तू ही मुझे प्रिय है और जो कुछ मैं तुझ से याचना करता हूँ वह तू ही है। ☆

लाख-लाख प्रशंसा और स्तुति उस सर्वशक्तिमान हस्ती के योग्य है कि जिसने समस्त आत्माओं और शरीरों को बिना किसी तत्व तथा बिना किसी ढांचे के अपने ही आदेश और आज्ञा से उत्पन्न करके अपनी महान् क़ुदरत का नमूना दिखाया और समस्त पवित्र आत्मा रखने वाले नबियों को बिना किसी शिक्षक और शिष्टाचार सिखाने वाले के स्वयं ही शिक्षा-दीक्षा देकर अपनी अनादि दानशीलता का निशान प्रकट किया। अल्लाह की हस्ती प्रत्येक दोष से पवित्र है। कितनी रहमान (असीम कृपालु) और परोपकारी वह हस्ती है कि जिसने हमारी बिना किसी पात्रता के हम निर्बलों का समस्त कार्य स्वयं बनाया। हमारे शारीरिक स्थायित्व के लिए सूर्य, चन्द्रमा, बादलों और हवाओं को काम में लगाया और हमारी आध्यात्मिक व्यवस्था के लिए तौरात, इन्जील, क़ुर्आन और समस्त आकाशीय पुस्तकों को यथासमय पर पहुँचाया।

हे ख़ुदा ! तेरे सहस्त्रों बार धन्यवाद कि तूने अपनी पहचान का मार्ग स्वयं बताया

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

और अपनी पवित्र पुस्तकों को उतार कर विचार और बुद्धि के दोषों और त्रुटियों से बचाया तथा दरूद और सलाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनकी सन्तान और साथियों पर कि जिस से ख़ुदा ने एक भूले भटके संसार को सदमार्ग पर चलाया तथा अभिभावक और लाभ पहुँचाने वाला कि जो भूली हुई प्रजा को पुनः सदमार्ग पर लाया, वह परोपकारी और उपकारी कि जिसने लोगों को शिर्क और मूर्तियों की विपत्ति से ℗हटाया, वह प्रकाश और प्रकाश फैलाने वाला कि जिसने तौहीद (एकेश्वरवाद) के ℗8
प्रकाश को संसार में फैलाया या वह समय का हकीम और उपचारक कि जिसने बिगड़े हुए हृदयों का क़दम सच्चाई पर जमाया, वह दया करने वाला और चमत्कार का निशान कि जिसने लोगों को जीवन का पानी पिलाया, वह दयालु और मेहरबान कि जिसने उम्मत (क़ौम) के लिए शोक-संताप किया और पीड़ा को सहन किया, वह बहादुर और पहलवान जो हमें मृत्यु के मुख से निकाल कर लाया, वह सहनशील और अहंरहित मनुष्य कि जिस ने बन्दगी में सर झुकाया तथा अपनी हस्ती को धूल से मिलाया, वह पूर्ण एकत्व वाला और ज्ञान का समुद्र कि जिसे केवल ख़ुदा का प्रताप अच्छा लगा तथा अन्य को अपनी दृष्टि से गिराया, वह असीम दयालु ख़ुदा की क़ुदरत का चमत्कार कि जो अनपढ़ होकर सब पर सच्चे और ख़ुदाई ज्ञानों में विजयी हुआ तथा प्रत्येक क़ौम को ग़लतियों और दोषों का दोषी ठहराया।

در دلم جوشد ثنائے سرورے ۞ آنکہ در خوبی ندارد ہمسرے

मेरे हृदय में उस सरदार की प्रशंसा जोश मार रही है जो विशेषता में अपना
सदृश नहीं रखता। ☆

آنکہ جانش عاشق یارِ ازل ۞ آنکہ روحش واصل آں دلبرے

जिस के प्राण अनादि प्रियतम पर मोहित हैं तथा जिसकी रूह (आत्मा)
उस प्रियतम से मिली हुई है। ☆

آنکہ مجذوب عنایات حقست ۞ ہمچو طفلے پر وریدہ در برے

वह जो परमेश्वर की अनुकम्पाओं से उसकी ओर खींचा गया है, वह एक
बच्चे की भांति परमेश्वर की गोद में पला है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

آنکہ در برّ و کرم بحرِ عظیم ٭ آنکہ در لطب اتم یکتا دُرے

जो नेकी और दया में एक महासागर है तथा पूर्ण विशेषता में अद्वितीय रत्न है। ☆

آنکہ در جود و سخا ابر بہار ٭ آنکہ در فیض و عطا یک خاورے

जो दानशीलता और उपकार में बसन्त ऋतु का बादल है तथा वरदान और अनुदान में एक सूर्य है। ☆

آں رحیم و رحم حق را آیتے ٭ آں کریم و جود حق را مظہرے

वह कृपालु है तथा उस की रहमत का एक प्रतीक है तथा दयालु है और परमेश्वर की अनुकम्पा अस्तित्व का द्योतक है। ☆

آں رخِ فرخ کہ یک دیدار او ٭ زشت رو را میکند خوش منظرے

उसका मुबारक चेहरा ऐसा है कि जिसका एक दर्शन कुरूप को रूपवान बना देती है। ☆

آں دل روشن کہ روشن کردہ است ٭ صد درون تیرہ را چوں اخترے

उसकी अन्तरात्मा प्रकाशित है कि जिसने सैकड़ों अंधकारमय हृदयों को नक्षत्र की भांति प्रकाशमान कर दिया। ☆

آں مبارک کہ آمد ذات او ٭ رحمتے زاں ذات عالم پرورے

उसका आगमन मुबारक है समस्त संसार के प्रतिपालक की ओर से एक महान् नैमत है। ☆

احمدِ آخر زماں کز نور او ٭ شد دل مردم زخور تاباں ترے

उस अन्तिम युग के अहमद के प्रकाश से लोगों को हृदय सूर्य से अधिक प्रकाशमान हो गए। ☆

Ⓟاز بنی آدم فزوں تر در جمال ٭ وازلالے پاک تر در گوہرے Ⓟ8

वह सुन्दरता में समस्त लोगों से श्रेष्ठ है तथा चमक-दमक में बहुमूल्य रत्नों से भी अधिक चमकदार है। ☆

برلبش جاری زحکمت چشمہ ٭ در دلش پُر از معارف کوثرے

जिस के मुख पर नीति का झरना जारी है और हृदय में ख़ुदाई ज्ञानों से भरपूर एक कौसर (स्वर्ग का कौसर नाम का जलाशय) है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

بہر حق داماں ز غیرش برفشاند ॥ ثانی او نیست در بحر و برے

जिसने परमेश्वर के लिए प्रत्येक अस्तित्व से दामन झाड़ दिया जल और थल में उसके समान कोई नहीं है। ☆

آں چراغش دادِ حق کش تا ابد ॥ نے خطر نے غم ز بادِ صرصرے

परमेश्वर ने उसे हमेशा के लिए ऐसा दीपक प्रदान किया जिसे भीषण आंधी से कोई भय और ख़तरा नहीं। ☆

پہلوان حضرتِ ربِ جلیل ॥ بر میاں بستہ ز شوکت خنجرے

वह प्रतापी परमेश्वर के दरबार का पहलवान है जिसने बड़ी शान से कमर में ख़ंजर बांध रखा है। ☆

تیرِ او تیزی بہر میدان نمود ॥ تیغِ او ہرجا نمودہ جوہرے

उसके तीर ने प्रत्येक मैदान में तेज़ी दिखाई है तथा उसकी तलवार ने प्रत्येक स्थान पर चारों ओर अपना कौशल दिखाया है। ☆

کرد ثابت بر جہاں عجز بتاں ॥ وانمودہ زور آں یک قادرے

उसने संसार पर मूर्तियों की विवशता को सिद्ध कर दिया तथा एक ख़ुदा की शक्ति को स्पष्ट तौर पर प्रदर्शित कर दिया। ☆

تا نماند بے خبر از زور حق ॥ بت ستاؤ بت پرست و بت گرے

ताकि मूर्ति का क्रेता, पुजारी और बनाने वाला परमेश्वर की शक्ति से अपरिचित न रहे। ☆

عاشق صدق و سداد و راستی ॥ دشمنِ کذب و فساد و ہر شرے

वह सत्य, सच्चाई और ईमानदारी से प्रेम करने वाला है परन्तु झूठ, उपद्रव और बुराई का शत्रु है। ☆

خواجہ و مر عاجزاں را بندہ ॥ بادشاہ و بے کساں را چاکرے

वह यद्यपि स्वामी है परन्तु निर्बलों का दास है, वह बादशाह है परन्तु असहायों का नौकर है। ☆

آں ترحمہا کہ خلق ازوے بدید ॥ کس ندیدہ در جہاں از مادرے

वह मेहरबानियाँ जो लोगों ने उस से देखीं वे किसी ने अपनी मां में भी नहीं पाईं। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

از شرابِ شوق جاناں بیخودی ٭ در سرش برخاک بنہادہ سرے

वह अपने प्रियतम की प्रेम-मदिरा से मस्त है तथा उसके प्रेम में उसने अपना सर मिट्टी पर रखा हुआ है। ☆

روشنی از وے بہر قومے رسید ٭ نورِ او رخشید بر ہر کشورے

उसका प्रकाश प्रत्येक क़ौम तक पहुँचा और उसका प्रकाश प्रत्येक देश पर चमका। ☆

آیت رحمٰن برائے ہر بصیر ٭ حجت حق بہرِ ہر دیدہ ورے

वह प्रत्येक विवेकशील मनुष्य के लिए ख़ुदा का प्रतीक और प्रत्येक समीक्षक के लिए अल्लाह का प्रमाण। ☆

ناتوانان را برحمت دستگیر ٭ خستہ جاناں را بہ شفقت غمخورے

अपनी दया द्वारा निर्बलों का सहायक और निराश लोगों का दया के साथ हमदर्द। ☆

Ⓟحسنؔ رویش بہ زماہ و آفتاب ٭ خاک کویش بہ زمشک و عنبرے Ⓟ10

उसके चेहरे का सौन्दर्य चन्द्रमा और सूर्य से भी अधिक है तथा उसके कूचे की धूल कस्तूरी और अम्बर से उत्तम है। ☆

آفتاب و مہ چہ میماند بدو ٭ در دلش از نور حق صد نیرے

सूर्य और चन्द्रमा उसके समक्ष कहां ठहर सकता, उसके हृदय में तो ख़ुदा के प्रकाश से सौ सूर्य प्रकाशित हैं। ☆

یک نظر بہتر زعمر جاودان ٭ گرفتد کس را برآن خوش پیکرے

उसकी एक ही झलक शाश्वत जीवन से उत्तम है यदि उस सुन्दर चेहरे पर पड़ जाए। ☆

منکہ از حسنش ہمی دارم خبر ٭ جان فشانم گر دہد دل دیگرے

मैं जो उसके सौन्दर्य से परिचित हूँ मैं उस पर अपनी जान बलिदान करता हूँ जबकि दूसरा केवल दिल देता है। ☆

یاد آن صورت مرا از خود برد ٭ ہر زمان مستم کند از ساغرے

उस की याद मुझे दीवाना बना देती है वह हर समय मुझे एक जाम से मस्त रखता है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

می پریدم سوئے کوئے او مدام ؎ من اگر میداشتم بال و پرے

मैं हमेशा उसके कूचे में उड़ता फिरता यदि मैं बाल और पंख रखता। ☆

لالہ و ریحان چہ کار آید مرا ؎ من سرے دارم بآں روے وسرے

रैहान और लाला के फूल मेरे किस काम के हैं ? मैं तो उस चेहरे और सर से संबंध रखता हूँ। ☆

خوبیٔ او دامن دل می کشد ؎ موکشانم می برد زور آورے

उसकी विशेषता मेरे हृदय रूपी दामन को खींच के तथा एक शक्तिशाली हस्ती मुझे ज़बरदस्ती ले जा रही है। ☆

دیدہ ام کوہست نور دیدہ ہا ؎ در اثر مہرش چو مہر انورے

मैंने देखा कि वह आँखों का प्रकाश है और उसके प्रेम का प्रभाव प्रकाशमान सूर्य के समान है। ☆

تافت آں روئے کزاں روسر نتافت ؎ یافت آں درمان کہ بگزیدآں درے

वह चेहरा प्रकाशमान हो गया जो उससे विमुख नहीं हुआ और वह सफल हो गया जिसने उसकी चौखट को पकड़ लिया। ☆

ہر کہ بے او زد قدم در بحرِ دین ؎ کرد در اول قدم گم معبرے

जिस व्यक्ति ने अपने प्रियतम के बिना धार्मिक समुद्र में क़दम रखा तो उसने पहले ही क़दम में घाट को खो दिया। ☆

امی و در علم و حکمت بے نظیر ؎ زیں چہ باشد حجتی روشن ترے

वह अनपढ़ है परन्तु ज्ञान तथा नीति में अनुपम है इससे अधिक उसकी सच्चाई पर और क्या सबूत होगा ? ☆

آں شراب معرفت دادش خدا ؎ کزشعاعش خیرہ شد ہر اخترے

परमेश्वर ने उसे अध्यात्म ज्ञान की ऐसी मदिरा प्रदान की कि उसकी किरणों से प्रत्येक नक्षत्र धूमिल पड़ गया। ☆

شدعیاں ازوے علی الوجہ الاتم ؎ جوہر انسان کہ بود آں مضمرے

उसके कारण मनुष्य का वह जौहर पूर्ण रूप से प्रकट हो गया जो गुप्त था। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

ختم شد برنفس پاکش ہر کمال ؛ لا جرم شد ختم ہر پیغمبرے

उस की पवित्र हस्ती पर प्रत्येक विशेषता समाप्त हो गई इसलिए उस पर नबियों का अन्त हो गया। ☆

آفتاب ہر زمین و ہر زمان ؛ رہبر ہر اسود و ہر احمرے

वह प्रत्येक देश और प्रत्येक युग के लिए सूर्य है और प्रत्येक काले और प्रत्येक गोरे का मार्ग-दर्शक है। ☆

Ⓟمجمع البحرین علم و معرفت ؛ جامع الاسمین ابرو خاورے Ⓟ11

वह ज्ञान और मारिफ़त के दो समुद्रों का संगम हैं तथा बादल और सूर्य दोनों नामों का संग्रहीता है। ☆

چشم من بسیار گردید و ندید ؛ چشمہ چون دین او صافے ترے

मैंने बहुत ढूंढा परन्तु उस के धर्म की भांति निर्मल और उज्जवल झरना कहीं नहीं देखा। ☆

سالکاں را نیست غیر ازوے امام ؛ رہرواں را نیست جزوے رہبرے

साधकों के लिए उसके अतिरिक्त कोई पेशवा नहीं और न सत्याभिलाषियों के लिए कोई पथ-प्रदर्शक। ☆

جائے او جائے کہ طیر قدس را ؛ سوزد از انوار آں بال و پرے

उसका पद वह है जहां के प्रकाशों से जिबराईल के बाल और पंख जलते हैं। ☆

آں خداوندش بداداں شرع و دین ؛ کان نگردد تا ابد متغیرے

उस परमेश्वर ने वह शरीअत और धर्म प्रदान किया जिसमें प्रलय तक कोई परिवर्तन नहीं होगा। ☆

تافت اول بر دیار تازیان ؛ تازیانش را شود درمان گرے

सर्वप्रथम वह अरब देशों पर उदय हुआ ताकि उस देश की ख़राबियों को दूर करे। ☆

بعد زاں آن نور دین و شرع پاک ؛ شد محیط عالمے چوں چنبرے

तत्पश्चात प्रकाश और पवित्र शरीअत समस्त संसार पर एक आकाश की भांति छा गई। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

خلق را بخشید از حق کام جان ؏ وارہانیدہ ز کام اژدرے

उसने प्रजा को परमेश्वर की ओर से जीवन का उद्देश्य प्रदान किया और
एक अजगर के मुख से मुक्ति दिलाई। ☆

یک طرف حیران از و شاہان وقت ؏ یک طرف مبہوت ہر دانشورے

एक ओर वर्तमान समय के शासक उससे हैरान थे और दूसरी ओर प्रत्येक
बुद्धिमान स्तब्ध था। ☆

نے بعلمش کس رسید و نے بزور ؏ در شکستہ کبر ہر متکبرے

न उसके ज्ञान तक कोई पहुँच न उसकी शक्ति तक, उस ने प्रत्येक
अभिमानी का अभिमान खंडित कर दिया। ☆

اوچہ میدارد بمدح کس نیاز ؏ مدح او خود فخر ہر مدحت گرے

उसे किसी की प्रशंसा की क्या आवश्यकता है उस की प्रशंसा स्वयं हर
प्रशंसा करने वाले के लिए गर्व का कारण है। ☆

ہست او در روضۂ قدس و جلال ؏ واز خیال مادحان بالاترے

वह पवित्रता और प्रताप के चमन में आसीन है तथा प्रशंसकों की कल्पना
से श्रेष्ठतम है। ☆

اے خدا بروے سلام مارسان ؏ ہم برا خوانش زہر پیغمبرے

हे ख़ुदा हमारा सलाम उस तक पहुँचा दे तथा उस के हर भ्राता पैग़म्बर पर। ☆

ہر رسولے آفتاب صدق بود ؏ ہر رسولے بود مہر انورے

प्रत्येक रसूल सत्य का सूर्य था और हर रसूल प्रकाशमय सूरज था। ☆

ہر رسولے بود ظلے دین پناہ ؏ ہر رسولے بود باغے مثمرے

प्रत्येक रसूल धर्म को शरण देने वाली छाया थी और हर रसूल एक फ़लदार
बाग़ था। ☆

Ⓟ گر بدنیا نامدے ایں خیل پاک ؏ کار دین ماندے سراسر ابترے Ⓟ12

यदि इस संसार में यह पवित्र वर्ग न आता तो धर्म का कार्य सरासर अस्त-
व्यस्त रहता। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

ہر کہ شکر بعث شان نارد بجا ؎ ہست او آلائے حق را کافرے

जो व्यक्ति उनके आगमन पर धन्यवाद नहीं करता तो वह अल्लाह तआला की नैमतों का इन्कारी है। ☆

آں ہمہ از یک صدف صد گوہراند ؎ متحد در ذات و اصل و گوہرے

ये सब के सब एक ही सीप के सौ मोती हैं जो कि अपनी हस्ती, वास्तविकता और चमक में एक समान हैं। ☆

امتے ہرگز نبودہ در جہان ؎ کاندران نامد بوقتے منذرے

संसार में कोई भी उम्मत ऐसी नहीं हुई जिस में किसी समय कोई डराने वाला न आया हो। ☆

اول آدم آخرِ شان احمدست ؎ اے خنک آنکس کہ بیند آخرے

प्रथम आदम अन्तिम अहमद (स.अ.व) है और मुबारक वह व्यक्ति जो अन्तिम को देख ले। ☆

انبیا روشن گہر ہستند لیک ؎ ہست احمد زان ہمہ روشن ترے

सब के सब नबी प्रकाशमान स्वभाव रखने वाले हैं परन्तु अहमद (स.अ.व) उन सब से अधिक प्रकाशमान है। ☆

آن ہمہ کان معارف بودہ اند ؎ ہر یکے از راہ مولیٰ مخبرے

वे सब अध्यात्म ज्ञान की खान थे और सारे के सारे ख़ुदा के मार्ग के पथ-प्रदर्शक थे। ☆

ہر کہ راعلمے ز توحید حق ست ؎ ہست اصل علمش از پیغمبرے

जिस किसी को ख़ुदा के एकेश्वरवाद का ज्ञान है उसके ज्ञान का मूल पैग़म्बर से है। ☆

آن رسیدش از رہ تعلیم ہا ؎ گو شود اکنوں زنخوت منکرے

वह ज्ञान उसे उसकी शिक्षा से ही पहुँचा है यद्यपि वह अब अहंकार के कारण इन्कारी हो जाए। ☆

ہست قومے کج رو و ناپاک رائے ؎ آنکہ زین پاکان ہمہ پیچد سرے

एक पथ-भ्रष्ट और अपवित्र क़ौम ऐसी भी है जो इन पवित्रात्माओं का इन्कार करती है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

دیدۂ شان روئے حق ہرگز ندید ؎ بس سیہ کردند روئے دفترے

उनकी आँखों ने सत्य का मुख कभी नहीं देखा इसलिए उन्होंने इस बहस में रजिस्टर काले कर डाले। ☆

شور بختے ہائے بختِ شان بہ بین ؎ ناز برچشم و گریزاں از خورے

उनके दुर्भाग्य को देख कि अपनी आँख पर गर्व करते हैं तथा सूर्य से भागते हैं। ☆

چشم گر بودے غنی از آفتاب ؎ کس نبودے تیز بین چوں شپرے

आँख को यदि सूर्य सी आवश्यकता न होती तो कोई भी चमगादड़ से अधिक तीव्र दृष्टि वाला न होता। ☆

ہر کہ کورست و براہش صد مغاک ؎ وائے بروے گر ندارد رہبرے

जो आदमी अंधा है और उसके मार्ग में सौ गढ़े हैं खेद है उस पर यदि उसका कोई पथ-प्रदर्शक नहीं। ☆

قوم دیگر را چنیں رائے رکیک ؎ در نشستہ از جہالت در سرے

एक अन्य क़ौम की ऐसी ही कमज़ोर राय है जो मूर्खता के कारण उसके सर में समा गई है। ☆

کان خدا ملکے دگر اندر جہان ؎ از دیارِ شان ندیدہ خوشترے

वह यह कि परमेश्वर ने संसार में किसी अन्य देश को उन के देश से अधिक अच्छा नहीं बनाया। ☆

℗13 ہمدگر روئے چو روئے خوب شان ؎ نامدش مرغوب طبع و خاطرے ℗

तथा उनके सुन्दर चेहरे से अधिक कोई चेहरा उसकी तबियत और हृदय को पसन्द नहीं आया। ☆

لاجرم از ابتدائش تا ابد ؎ ماند و خواہد ماند آنجا بسترے

इस लिए आदि से अन्त तक उस का स्थान इसी देश में रहा और रहेगा। ☆

ملک دیگرگرچہ میرد در ضلال ؎ مے نگردد زو گہے مستفسرے

कोई दूसरा देश चाहे पथ-भ्रष्टता में मर-जाए परन्तु वह कभी उसको नहीं पूछता। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

داد مَریک ذرہ قومے را کتاب ؏ ترک کردہ صد ہزاران معشرے

केवल एक छोटी सी क़ौम को किताब प्रदान कर दी और लाखों लोगों को उसने छोड़ दिया। ☆

چون بروز ابتدا تقسیم کرد ؏ درمیانِ خلق از خیر وشرے

उसने उत्पत्ति के प्रथम दिवस से सृष्टि के मध्य नेकी और बदी को बांटा। ☆

راستی در حصہ او شان فتاد ؏ دیگراں را کذب شد آبشخورے

तो उनके भाग में सत्य और दूसरों के भाग में असत्य ही आया। ☆

قول شان این ست کاندر غیر شان ؏ آمدہ صد کاذب و حیلت گرے

उनका कथन यह है कि उनके अतिरिक्त अन्य लोगों में सैकड़ों झूठ और धोखेबाज़ आए हैं। ☆

لیک نامد نزد شاں یک نیز ہم ؏ آنکہ بودے از خدا دین گُسترے

और उनके पास कोई एक भी ऐसा नहीं आया जो ख़ुदा की ओर से धर्म का प्रचार करने वाला होता। ☆

آنکہ ایشاں را نمودے راہ حق ؏ درکشودے کذب ہر کذب آورے

और परमेश्वर की ओर मार्ग-दर्शन करता और हर झूठे के झूठ को प्रकट कर देता। ☆

تاشدے دادار را حجت تمام ؏ برسر ہر مسلم و متنصرے

ताकि न्यायवान परमेश्वर का सबूत हर मुसलमान और हर ईसाई पर पूर्ण हो जाता। ☆

الغرض نزدیک شان دادارِ پاک ؏ ہست ظالم تر ز ہر ظالم ترے

सारांश यह कि उनके निकट परमेश्वर प्रत्येक अत्याचारी से बड़ा अत्याचारी है। ☆

کو گزارد عالمے را در ضلال ؏ مبتلا در پنجہ ہر ماکرے

क्योंकि वह एक संसार को पथ-भ्रष्टता की स्थिति में हर धोखेबाज़ के चंगुल में फंसा हुआ छोड़ देता है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

خود ہمی دارد بیک قومے مدام ٭ ہمچو شیدائے کسے میل و سرے

और वह स्वयं किसी प्रेमी की भांति केवल एक ही क़ौम से हमेशा प्रेम और संबंध रखता है। ☆

آنچنیں پر حمق رائے ایں قوم را ٭ حمق دیگر این کہ بروے فاخرے

उस क़ौम की ऐसी मूर्खतापूर्ण राय है दूसरे यह कि उस मूर्खतापूर्णराय पर गर्व करती है। ☆

عاقبت این رائے زشت و بد خیال ٭ کرد ایشاں را عجب کور و کرے

अन्ततः इस बुरे विचार और बुरी धारणा ने उन्हें विचित्र प्रकार का अंधा और बहरा बना दिया। ☆

℗ چشم پوشیدند از صد چشمۂ ٭ سرنگوں گشتند بریک آخورے ℗14

उन्होंने सौ झरनों से तो अपनी आँख बन्द कर ली है और एक खुरली पर जा गिरे। ☆

سخت ور زیدند کیں بانبیا ٭ الامان از کینِ ہر متکبرے

उन्होंने नबियों से शत्रुता धारण कर ली। ऐसे हर अहंकारी की शत्रुता से ख़ुदा की शरण ☆

آنچہ کین شان بپا کان ثابت ست ٭ از شیاطین کس ندارد باورے

पवित्रात्माओं से जितनी उनकी शत्रुता प्रमाणित है इतनी शत्रुता की तो कोई शैतानों से भी आशा नहीं रखता। ☆

خربود اندر حماقت بے نظیر ٭ لیکن ایشان را بہر موصد خرے

गधा तो मूर्खता में अद्वितीय होता है परन्तु उनके एक-एक बाल में सौ गधे हैं। ☆

نے سرِ تحقیق دارند و ثبوت ٭ نے زنند از صدق پا بر معبرے

न तो उनको जांच-पड़ताल और प्रमाण से कोई मतलब है और न ही वे हार्दिक निष्ठा से नौका पर चढ़ते हैं। ☆

نے دوائے را شناسند از اثر ٭ نے درختے را شناسند از برے

और न ही वे किसी औषधि को उसके प्रभाव से पहचानते हैं और न किसी वृक्ष को उसका फल देखकर पहचानते हैं। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

نے زکس پُر سند از روئے نیاز ❊ نے بصرفِ فکرِ خود متفکرے

और न वे विनम्रतापूर्वक किसी से पूछते हैं और न वे स्वयं विचार से काम लेते हैं। ☆

نے بدل پروائے این تفتیش ہا ❊ کزہمہ دین ہاکدا مین بہترے

तो उनके हृदय न इस जांच-पड़ताल की परवाह रखते हैं कि समस्त धर्मों में से कौन सा धर्म उत्तम है। ☆

بریکے مائل عدو صد ہزار ❊ فارغ از فرق اقل و اکثرے

केवल एक (धर्म) पर आसक्त और लाखों के विरोधी हैं तथा कम या अधिक में अन्तर से लापरवाह हैं। ☆

نے بدل خوف خدائے کردگار ❊ نے بخاطر بیم روزِ محشرے

न उनके हृदयों में ख़ुदा का भय है और न प्रलय के दिवस का डर। ☆

تیرہ جانان دیدہ ہا را دوختہ ❊ سوختہ درکین وری چوں اژ درے

उन काले हृदय वालों ने अपनी आँखों को सी लिया है तथा द्वेष और शत्रुता में अजगर की भांति जल-भुन रहे हैं। ☆

دیدہ و دانستہ از حق قاصر اند ❊ دل نہادہ در جہان غادرے

जान-बूझ कर सत्य-बोध से विमुख हैं और ग़द्दार संसार से हृदय लगाए हुए हैं। ☆

از برائے حق تراشیدہ زجہل ❊ دائما درخانہ خود منبرے

वास्तविकताओं, अध्यात्म ज्ञानों और सच्चाइयों का धर्मोपदेश देने के लिए अपनी मूर्खता के कारण अपने ही घर में एक स्थायी धर्ममंच बना लिया है। ☆

آن خدائے شان عجب باشد خدا ❊ کو تغافل داشت از ہر کشورے

उनका ख़ुदा भी विचित्र ख़ुदा है जिसे प्रत्येक देश से लापरवाही रही। ☆

بہر الہام آمدش دایم پسند ❊ یک زبان یک خطہ کوتہ ترے

उसे अपने इल्हाम (ईशवाणी) के लिए हमेशा एक भाषा और एक छोटा सा देश पसन्द आए। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

ⓟ15 ⓟاینچنیں رائے کجا باشد درست ؛ کے خرد گردد بسوئیش رہبرے

ऐसा विचार कैसे उचित हो सकता है ? तथा बुद्धि कैसे उसकी ओर पथ-
प्रदर्शन कर सकती है ? ☆

کے گمان بد کند بر نیکوان ؛ آنکہ باشد نیک و نیکو محضرے

ऐसा व्यक्ति सदाचारी लोगों पर कुधारणा क्योंकर कर सकता है जबकि
स्वयं नेक और सुशील स्वभाव रखता हो। ☆

ماہ راگفتن کہ چیزے نیست این ؛ ہست دشنامے نہ زین افزون ترے

चन्द्रमा के सन्दर्भ में यह कहना कि कुछ भी नहीं इससे बढ़कर अन्य कोई
गाली नहीं। ☆

کور گر گوید کجا ہست آفتاب ؛ میشود در کوری اش رسوا ترے

नेत्रहीन व्यक्ति कहे कि सूर्य कहां है तो वह अपनी नेत्रहीनता में और
अधिक लज्जित होगा। ☆

در خور تابان مکن شک و گمان ؛ تا ملامت رانہ گردی در خورے

तू प्रकाशमान सूर्य के संबंध में सन्देह और संशय न कर ताकि तू निन्दनीय
न ठहरे। ☆

گر خدا خواہی چرا کج میروی ؛ چوں نمی ترسی ز قہر قاہرے

यदि तू ख़ुदा का अभिलाषी है तो टेढ़ा न चल और अत्यन्त प्रकोपी
परमेश्वर से क्यों नहीं डरता। ☆

چوں نمی ترسی ز روزِ باز پرس ؛ چون نہ ترسی از حضورِ داورے

तू प्रलय के दिन से क्यों नहीं डरता और न्यायवान परमेश्वर से क्यों
भयभीत नहीं होता। ☆

افترائے شاں چسان گشتت یقین ؛ یا خدائت وانمودہ دفترے

उन के झूठ घड़ने पर तुझे कैसे विश्वास आ गया या परमेश्वर ने तेरे सामने
कोई रजिस्टर खोल दिया है। ☆

نور شان یک عالمے را در گرفت ؛ توہنوز اے کور در شور و شرے

उन (नबियों) के प्रकाश ने एक संसार को घेर लिया परन्तु हे मूर्ख तू अभी
तक उपद्रव में ग्रस्त है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

لعل تابان را اگر گوئی کثیف ؏ زین چہ کاہد قدر روشن جوہرے

यदि तू प्रकाशमान रत्न को ख़राब कह दे तो उससे प्रकाशमान रत्न का मूल्य क्योंकर कम हो सकता है। ☆

طعنہ برپا کان نہ برپا کان بود ؏ خود کنی ثابت کہ ہستی فاجرے

पवित्रात्मा लोगों पर दोषारोपण पवित्रात्माओं पर नहीं पड़ता अपितु उस से तो यह सिद्ध होता है कि तू स्वयं दुराचारी है। ☆

بغض بامردانِ حق نامردیست ؏ آن بشر باشد کہ باشد بے شرے

सदात्माओं से शत्रुता रखना कायरता है। मनुष्य तो वह है जो उपद्रव रहित हो। ☆

وانکہ درکین و کراہت سوخت ست ؏ نفس دون راہست صید لاغرے

तथा वह व्यक्ति जो द्वेष और घृणा की अग्नि में जल रहा है वह अपनी तामसिक वृत्ति के लिए एक कमज़ोर शिकार है। ☆

صد مراتب بہ زچشم اہل کین ؏ چشم نابینا و کور و اعورے

द्वेष रखने वाली आँख से हज़ार गुना उत्तम हैं वे आँखें जो अंधी, देखने से असमर्थ और कानी हों। ☆

برسرکین و تعصب خاک باد ؏ ہم بفرقِ کین وران خاکسترے

शत्रुता और पक्षपात पर लानत भेज और शत्रुओं के सर पर धूल डाल। ☆

Ⓟ جز بہ پابندی حق بند دگر ؏ ورنہ گیرد با خدائے اکبرے Ⓟ16

सत्य की पाबन्दी के अतिरिक्त कोई दूसरी कला महानतम परमेश्वर से नहीं मिलाती। ☆

ماہمہ پیغمبران را چاکریم ؏ ہمچو خاکے اوفتادہ بر درے

हम तो समस्त नबियों के नौकर हैं और धूल की तरह उन की चौखट पर पड़े हैं। ☆

ہر رسولے کو طریق حق نمود ؏ جانِ ما قربان بر آن حق پورے

हर वह रसूल जिसने परमेश्वर की ओर मार्ग-दर्शन किया हमारे प्राण उस सदात्मा पर न्यौछावर हैं। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

اے خداوندم بہ نخیل انبیا ؎ کش فرستادے بفضل اوفرے

हे मेरे ख़ुदा उन नबियों के कारण जिन्हें तूने बड़ी भारी कृपाओं के साथ भेजा है। ☆

معرفت ہم دہ چوں بخشیدی دلم ؎ مے بدہ زان سان کہ دادی ساغرے

मुझे मारिफ़त प्रदान कर या जैसे तूने हृदय दिया है शराब भी प्रदान कर जबकि तू ने जाम दिया है। ☆

اے خداوندم بنام مصطفیٰ ؎ کش شدے در ہر مقامے ناصرے

हे मेरे ख़ुदा मुहम्मद (स.अ.व) के नाम पर जिसका तू प्रत्येक स्थान पर सहायक रहा है। ☆

دست من گیر از رہ لطف و کرم ؎ در مہم باش یارو یاورے

और तू अपनी कृपा और दया से मेरी सहायता कर और मेरे कामों में कठिनाइयों में मेरा मित्र और सहायक बन जा। ☆

تکیہ بر زورِ تو دارم گرچہ من ؎ ہمچو خاکم بلکہ زاں ہم کمترے

मैं तेरी शक्ति पर भरोसा रखता हूँ यद्यपि कि मैं मिट्टी की तरह हूँ अपितु उस से भी निकृष्ट। ☆

तत्पश्चात् समस्त सत्य के अभिलाषियों पर स्पष्ट हो कि इस पुस्तक के लिखने का उद्देश्य जिसका नाम **बराहीन अहमदिया अला हक़्क़ियत किताबिल्लाहिल क़ुर्आन वन्नुबुव्वतिल मुहम्मदिया** है। यह है कि इस्लाम धर्म की सच्चाई के सबूत तथा क़ुर्आन करीम की सच्चाई के तर्कों और हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिसालत की सच्चाई के कारणों को समस्त लोगों पर पूर्ण स्पष्टता के साथ प्रकट किया जाए तथा उन सब को जो इस शांतिप्रिय धर्म और पवित्र पुस्तक और महान् नबी से इन्कारी हैं ऐसे पूर्ण और उचित ढंग से दोषी और निरुत्तर किया जाए कि भविष्य में उन को इस्लाम के मुक़ाबले में दम मारने का स्थान शेष न रहे।

यह पुस्तक संकलित है एक विज्ञापन तथा एक भूमिका और चार अध्यायों और एक अन्त पर। ख़ुदा इसे सत्य के अभिलाषियों के ⓟलिए शुभ करे और अधिकांश लोगों का ⓟ17
इस के अध्ययन से अपने सच्चे धर्म की ओर मार्ग-दर्शन करे। तथास्तु।

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

विज्ञापन

दस हज़ार रुपए की राशि बतौर इनाम उन लोगों के लिए जो क़ुर्आन मजीद के मुकाबले में जो तर्क और सच्चे प्रमाण हम ने क़ुर्आन करीम की पुस्तक से ही प्रस्तुत किए हैं वे उसकी तुलना में अपनी धार्मिक पुस्तक से सिद्ध कर दिखाएं या यदि उनकी इल्हामी पुस्तक उन तर्कों और प्रमाणों को प्रस्तुत करने में असमर्थ हो तो इस असमर्थता का अपनी पुस्तक में इक़रार करके हमारे ही तर्कों का क्रमशः खण्डन कर दें।

मैं जो लेखक इस पुस्तक बराहीन अहमदिया
℗18 **का हूँ यह विज्ञापन ℗अपनी ओर से दस हज़ार की**
राशि बतौर इनाम के आश्वासन के साथ समस्त
धर्मावलम्बियों और जातियों के जो क़ुर्आन करीम की
℗19 **सच्चाई और हज़रत ℗मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो**
अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत के इन्कारी हैं समझाने
के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने हेतु प्रकाशित करके
उचित तौर पर कानूनी इक़रार और धार्मिक विधान
℗20 **के अनुसार वैध वचन देता हूँ कि यदि कोई ℗सज्जन**
इन्कार करने वालों में से अपनी (धार्मिक) **किताब**

की तुलना क़ुर्आन करीम से उन समस्त प्रमाणों और
तर्कों में जो ℗हम ने क़ुर्आन करीम की सत्यता और ℗21
यथार्थता तथा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो
अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत तथा अवतारवाद उसी
पुनीत किताब से ℗लेकर लिखे① हैं अपनी इल्हामी ℗22
पुस्तक में से सिद्ध करके दिखाए या संख्या में
उन के बराबर प्रस्तुत न कर सके तो उन के ℗आधे ℗23
या उनके तिहाई या चौथाई या उनका पाँचवा (1/5)
भाग ही निकाल कर प्रस्तुत करे या यदि पूर्णरूप से
प्रस्तुत करने से असमर्थ हो तो हमारे ℗ही तर्कों का ℗24
क्रमशः खण्डन कर दे तो इन समस्त परिस्थितियों
में इस शर्त पर कि तीन न्यायकर्ता दोनों सदस्यों की
सहमति से मान्य यह राय प्रकट कर दें ℗कि शर्त- ℗25

①-यह शब्द हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी क़लम से प्रथम संस्करण में प्रकाशित होने पर इस स्थान पर लिखा है। (शम्स)

पूर्ति यथातथ्य हो गई। मैं विज्ञापनदाता ऐसे उत्तर देने वाले को किसी बहाने या आपत्ति के बिना अपनी
℗26 **दस हज़ार ℗रुपए की सम्पत्ति पर अधिकार और दख़ल दे दूँगा परन्तु स्पष्ट रहे कि यदि अपनी पुस्तक के उचित तर्क प्रस्तुत करने से विवश और असमर्थ**
℗27 **रहें या विज्ञापन की ℗शर्त के अनुसार पाँचवां (1/5) भाग भी प्रस्तुत न कर सकें तो ऐसी अवस्था में स्पष्ट तौर पर लिखना होगा कि जो अपूर्ण अथवा**
℗28 ℗**किताब के असंगत होने के कारण इस खँड** (पक्ष) **को पूर्ण करने से विवश और असमर्थ रहे और यदि वांछित तर्क प्रस्तुत करें तो इस बात को स्मरण रखना**
℗29 ℗**चाहिए कि हम ने जो पाँचवें भाग (1/5) तक तर्क प्रस्तुत करने की अनुमति और छूट दी है उस से**
℗30 **हमारा यह अभिप्राय नहीं है कि इन ℗समस्त तर्कों के**

संकलन का बिना किसी भेद और अन्तर के आधा
या तिहाई या चौथाई या पाँचवां भाग (⅕) प्रस्तुत
कर दिया जाए अपितु यह शर्त प्रत्येक प्रकार के
तर्कों से सम्बद्ध है तथा हर प्रकार ℗के तर्कों में से ℗31
आधा या तिहाई या चौथाई या पाँचवां भाग प्रस्तुत
करना होगा।

℗कदाचित किसी सज्जन की बुद्धि इस बात को ℗32
समझने से असमर्थ रहे कि उपर्युक्त लेख में तर्कों
के प्रकार से क्या अभिप्राय है। ℗अतः व्याख्या के ℗33
उद्देश्य से इस वाक्य का उल्लेख किया जाता
है कि तर्क और प्रमाण क़ुर्आन करीम के कि
जिन से इस पवित्र कलाम (वाणी) ℗की सच्चाई और ℗34
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की
नुबुव्वत और रिसालत का सत्य सिद्ध होता है दो

ⓟ35 प्रकार के हैं। प्रथम वे तर्क जो इस ⓟपवित्र पुस्तक
और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि
वसल्लम की सच्चाई पर आन्तरिक और व्यक्तिगत
साक्ष्य हैं अर्थात् ऐसे तर्क जो उसी पवित्र पुस्तक
ⓟ36 के ⓟवैयक्तिक कौशल और स्वयं हज़रत मुहम्मद
मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र
स्वभाव और मान्य तथा उत्तम शिष्टाचार और पूर्ण
ⓟ37 विशेषताओं से प्राप्त होते हैं। द्वितीय ⓟवे तर्क जो
बाह्य तौर पर क़ुर्आन करीम और हज़रत मुहम्मद
मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई
पर ठोस तौर पर साक्षी हैं अर्थात् ऐसे तर्क जो बाह्य
ⓟ38 ⓟघटनाओं और निरन्तर प्रमाणित घटनाओं से लिए
गए हैं।

फिर इन दोनों प्रकारों के तर्कों के दो प्रकार हैं।

तर्के बसीत (अमिश्रित तर्क) **तथा तर्के मुरक्कब**
(मिश्रित तर्क) **बसीत तर्क वे तर्क है जिसमें क़ुर्आन**
करीम की सत्यता सिद्ध करने और ℗हज़रत मुहम्मद ℗40
मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत
की सच्चाई के लिए किसी अन्य बात के मिलाने
और जोड़ने की आवश्यकता नहीं और मुरक्कब
(मिश्रित) **तर्क वह तर्क है कि ℗उस तर्क की पुष्टि के** ℗41
लिए एक ऐसे सामूहिक संकलन की आवश्यकता है
कि यदि सामूहिक तौर पर उस पर ℗दृष्टि डाली जाए ℗42
अर्थात् एक ही दृष्टि से उसके समस्त सदस्यों को
देखा जाए तो वह समस्त संकलन एक ऐसी उच्च
अवस्था में ℗हो कि उस अवस्था का प्रमाण क़ुर्आन ℗43
करीम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो
अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत की प्रामाणिकता

℗44 के लिए अनिवार्य हो और जब ℗उसके भागों को
अलग-अलग देखा जाए तो तर्कों की यह श्रेणी
यथातथ्य उन्हें प्राप्त न हो और इस अन्तर का कारण
℗45 ℗यह है कि पूर्ण रूप से सामूहिक तथा पूर्ण रूप से
एक-एक सदैव विपरीत होते हैं। जैसे एक भार को
℗46 दस मनुष्य ℗एकत्र होकर उठा सकते हैं और यदि
वे ही दस मनुष्य एक-एक होकर उठाना चाहें तो
℗47 यह बात असंभव हो जाती है ℗और प्रत्येक अकेला
इन दोनों प्रकार के बसीत और मुरक्कब तर्कों की
जब उनके अपने विशेष-विशेष, रूपों, शक्लों और
℗48 ℗प्रकृतियों की दृष्टि से कल्पना की जाए तो उनका
℗49 नाम इस किताब में तर्कों के प्रकार ℗हैं और ये वही
प्रकार हैं कि जिनकी पाबन्दी के लिए हमने इस
मुख्य विज्ञापन में यह पाबन्दी लगा दी है कि प्रत्येक

प्रकार के तर्कों ℗में से क़ुर्आन करीम का मुकाबला ℗50
करने वाला उत्तरदायी मनुष्य उसका आधा, तिहाई,
चौथाई या पाँचवां भाग (⅕) प्रस्तुत करे अर्थात्
इस अवस्था ℗में कि जब उन समस्त तर्कों के प्रस्तुत ℗51
करने से असमर्थ हो जो एक प्रकार के अन्तर्गत हैं
℗और यहां यह बात अधिक प्रकटन योग्य है कि ℗52
जो सज्जन किसी मिश्रित तर्क का कि जिस की
℗परिभाषा अभी हम वर्णन कर चुके हैं अपनी पुस्तक ℗53
में से नमूना दिखाना चाहें उन पर अनिवार्य होगा कि
यदि वह ℗मिश्रित तर्क (मुरक्कब तर्क) ऐसे सामूहिक ℗54
भागों से मिश्रित हो जो उसके प्रत्येक भाग का स्वयं
किसी बात पर प्रमाण हो तो इन समस्त आंशिक
प्रमाणों ℗का भी कम से कम एक-एक नमूना प्रस्तुत ℗55
करना होगा।

चूँकि इस शर्त को समझने के लिए उदाहरण की
℗56 आवश्यकता है इस लिए ℗हम यहां उदाहरण के तौर
पर क़ुर्आन करीम की सच्चाई के प्रमाणित मिश्रित
तर्कों में से इस प्रकार के एक तर्क का उल्लेख
℗57 करते हैं ℗और वह यह है, कि क़ुर्आन करीम की
सैद्धान्तिक शिक्षा युक्ति संगत तर्कों पर आधारित है
℗58 अर्थात क़ुर्आन करीम प्रत्येक ℗आस्थागत सिद्धान्त
को जो मुक्ति का आधार है अन्वेषण द्वारा सिद्ध
करता है तथा ठोस और प्रबल दर्शनशास्त्रीय तर्कों
℗59 द्वारा ℗सत्य तक पहुँचाता है जैसे सृष्टि के रचयिता
के अस्तित्व का सिद्ध करना, एकेश्वरवाद को
प्रमाण तक पहुँचाना, इल्हाम की आवश्यकता
℗60 पर ठोस तर्कों ℗का उल्लेख और किसी सत्य को
प्रमाणित करने और असत्य का खण्डन करने से

असमर्थ न रहना। अतः यह बात क़ुर्आन करीम के
ख़ुदा की ओर से होने पर Ⓟएक महान् तर्क है जिस Ⓟ61
से उसकी सच्चाई और श्रेष्ठता पूर्ण रूप से सिद्ध
होती है, क्योंकि संसार की समस्त व्यर्थ आस्थाओं
Ⓟको प्रत्येक प्रकार से तथा प्रत्येक प्रकार के दोषों Ⓟ62
से स्पष्ट तर्कों द्वारा पवित्र करना और प्रत्येक प्रकार
के सन्देहों एवं भ्रमों को जो लोगों के Ⓟहृदयों में Ⓟ63
समा गए हों, ठोस तर्कों द्वारा मिटा देना और ऐसे
प्रमाणित सत्य और सामूहिक तार्किक सिद्धान्त का
अपनी पुस्तक में Ⓟउल्लेख करना कि इससे पूर्व न Ⓟ64
उस संकलन का किसी इल्हामी पुस्तक में उल्लेख
हुआ और न किसी ऐसे दार्शनिक या फ़्लास्फ़र का
परिचय Ⓟउपलब्ध हो कि जो कभी किसी युग में Ⓟ65
अपनी दृष्टि, विचार, बुद्धि, अनुमान, समझ तथा

Ⓟ66 बोध के बल पर इस संकलन की Ⓟवास्तविक सच्चाई का अन्वेषक हो चुका हो और न कभी किसी सुशील व्यक्ति ने इस बात का लेशमात्र प्रमाण
Ⓟ67 दिया हो Ⓟकि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कभी कोई एक-आधा दिन किसी पाठशाला या स्कूल में पढ़ने बैठे थे या किसी से
Ⓟ68 कुछ Ⓟमा'क़ूल विद्या (विज्ञान, तर्क और दर्शन शास्त्र इत्यादि) या मनक़ूल (दूसरों द्वारा बताई गई या नक़ल की गई) विद्या सीखी थी या कभी किसी दार्शनिक और तर्कशास्त्री से उन की संगत और मेल-जोल
Ⓟ69 रहा था कि जिस के प्रभाव से Ⓟउन्होंने प्रत्येक सच्चे सिद्धान्त पर दर्शन शास्त्रीय तर्कों द्वारा मोक्ष प्राप्ति की समस्त आस्थाओं के वास्तविक सत्य को ऐसा स्पष्ट
Ⓟ70 कर दिया कि जिस Ⓟका उदाहरण सम्पूर्ण जगत में

कहीं नहीं पाया जाता। यह ऐसा कार्य है कि ख़ुदाई
समर्थन, सहायता, तथा उस के इल्हाम के अभाव
में किसी ℗से कदापि सम्पन्न नहीं हो सकता। अत: ℗71
विवश बुद्धि इस बात को निश्चित तौर पर अनिवार्य
करती है कि क़ुर्आन करीम उस ℗भागीदार रहित ℗72
एक ख़ुदा की वाणी है कि जिस के ज्ञान की तुलना
में किसी मनुष्य का ज्ञान समान नहीं। यह तर्क है
जिसे हम ने बतौर ℗नमूना उन मिश्रित तर्कों में से ℗73
उल्लेख किया है कि जिन के भागों का संकलन
समस्त ऐसे भागों से मिश्रित है कि वे समस्त भाग
तर्क ℗ही हैं। अत: इस तर्क के समस्त भाग वे तर्क ℗74
हैं जो सच्ची आस्थाओं पर स्थापित किए गए हैं
और चूँकि यह तर्क ℗भी तर्कों के प्रकारों में से एक ℗75
प्रकार है इसलिए जैसा कि प्रतिद्वन्द्वी पर समस्त

प्रकार के तर्कों का प्रस्तुत करना अनिवार्य है,
Ⓟ76 इसलिए Ⓟइस तर्क का भी प्रस्तुत करना अनिवार्य है
परन्तु इस तर्क को दिखाने के लिए उन समस्त तर्कों
Ⓟ76 का दिखाना भी आवश्यक है कि जिन के Ⓟसंमिश्रण
से यह तर्क बना है तथा जिन की सामूहिक स्थिति से
उसका अस्तित्व तैयार होता है जैसा प्रमाण सृष्टि के
Ⓟ76 रचयिता के अस्तित्व, Ⓟएकेश्वरवाद तथा परमेश्वर के
स्रष्टा होने को प्रमाणित करने का इत्यादि, इत्यादि।
क्योंकि यही तर्क उस तर्क① के भाग हैं और पूर्ण
Ⓟ76 का अस्तित्व भागों के अस्तित्व के अभाव में Ⓟसंभव
नहीं और न किसी वास्तविकता की प्राप्ति उसके
भागों के अभाव में हो सकती है। अतः प्रतिद्वन्द्वी
Ⓟ76 पर अनिवार्य है कि इन समस्त आंशिक Ⓟतर्कों को

---

①-हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रयोग में आने वाले प्रथम संस्करण की प्रति में यहाँ "इस दलील" के शब्द क़लम से लिखे हुए हैं। (शम्स)

भी[1] प्रस्तुत करे। हाँ यह अधिकार है कि जहां हम ने उदाहरणतया किसी सिद्धान्त के प्रमाण पर पाँच तर्कों का उल्लेख किया हो प्रतिद्वन्द्वी ℗सज्जन उसके ℗81
प्रमाण पर या उसके खण्डन पर अर्थात् जैसी कि राय या आस्था हो केवल एक ही तर्क उन्हीं शर्तों तथा उन्हीं ℗सीमाओं की पाबन्दी के साथ जिनकी ℗82
इस विज्ञापन में हम चर्चा कर चुके हैं अपनी इल्हामी किताब से निकाल कर दिखाएँ।

विज्ञापन देने वाला

विनीत

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, स्थान-क़ादियान

ज़िला-गुरदासपुर, पंजाब

---

①-''भी'' का शब्द हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी क़लम से यहां लिखा है। (शम्स)

THE

BARÁHÍN-I-AHMADÍYAH,

ENTITLED

AL-BARÁHÍN-UL-AHMADÍYAH ALA-HAQQÍYÁT KITÁB-ULLAH-UL-QURÁN WAL NABUWAT-UL-MAHAMADIAH.

(DISCOURSES ON THE DIVINE ORIGIN OF THE HOLY QURAN, AND APOSTLESHIP OF MAHAMAD, THE PROPHET OF ISLAM,)

BY

MIRZÁ GULÁM AHMAD SÁHÍB, CHIEF OF QÁDÍÁN,

GURDASPORE DISTRICT, PUNJAB.

Umritsur:

PRINTED AT THE SAFÍR-I-HIND PRESS,

AMÍR ALI DÚLÁH PRINTER.

1880.

V. P. L.

This Book which is compiled after a most careful and elaborate investigation for the benefit and conviction of those dissenters, who deny the veracity of Islamism, is published with an offer of Rs. 10,000/- for its refutation, subject to the conditions contained in the preface. *Author.*

حصہ دوم

جاء الحق و زھق الباطل ان الباطل کان زھوقا

بفضلِ عظیم حضرتِ ہادیٔ عالم و عالمیان و رحمتِ عمیم رہنمائے گمگشتگان کتابِ لاجواب موسوم بہ

براہینِ احمدیہ

ملقّب بہ

البراہین الاحمدیّہ علی حقیّت کتاب اللّٰہ القرآن و النبوّۃ المحمدیّہ

جسکو فخرِ اہلِ اسلام نجابت مآب جناب میرزا غلام احمد صاحب رئیسِ اعظم قادیان ضلع گورداسپور پنجاب دام اقبالہم نے
کمال تحقیق اور تدقیق سے تالیف کر کے منکرینِ اسلام پر حجتِ اسلام پوری کرنیکے لئے بوعدۂ انعام دس ہزار روپیہ شایع کیا

امرتسر پنجاب

سفیر ہند پریس میں در سنہ ۱۸۸۰ء طبع ہوئی

جاء الحق و زهق الباطل ان الباطل كان زهوقا

बराहीन अहमदिया

भाग-द्वितीय

ख़ुदाई किताब क़ुर्आन और मुहम्मदी नुबुव्वत की सच्चाई पर अहमदियत द्वारा तर्कों पर आधारित

जिसे पंजाब के मुसलमानों के गौरव जनाब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब महान रईस क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर, पंजाब ने अपने महान कौशलपूर्ण अन्वेषण के पश्चात इस्लाम पर इन्कार करने वालों पर इस्लाम के समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने हेतु दस हज़ार रुपए की इनामी राशि के आश्वासन के साथ सफ़ीरे हिन्द प्रेस अमृतसर से सन् 1880 ई. में प्रकाशित किया।

سَاُورِيۡكُمۡ اٰيٰتِىۡ فَلَا تَسۡتَعۡجِلُوۡنِ

(भाग-17, सूरह-अलअंबिया)

①

बराहीन अहमदिया के विरोधियों की शीघ्रता

कई एक पादरी और हिन्दू सज्जनों ने आवेग में आकर अख़बार 'सफ़ीर हिन्द' और 'नूर अफ़शां' और पत्रिका 'विद्या प्रकाशन' में हमारे नाम भिन्न-भिन्न प्रकार की घोषणाएं छपवाई हैं, जिनमें वे दावा करते हैं कि वे इस पुस्तक का खण्डन अवश्य लिखेंगे और कुछ सज्जन डोमों की भांति ऐसे-ऐसे स्पष्ट निन्दाजनक शब्द प्रयोग में लाए हैं कि जिन से उनके स्वभाव की पवित्रता भली-भांति प्रकट होती है जैसे वे अपने अधम भाषणों से हमें भयभीत करते और धमकाते हैं, परन्तु उन्हें ज्ञात नहीं कि हम तो उन की तह से परिचित हैं तथा उनके मिथ्या और अपमान और अधम विचार हम पर गुप्त नहीं। अत: उन से हम क्या डरेंगे और वे क्या डराएंगे।

کرمک پروانہ راچوں موت می آید فراز　　می فتد بر شمع سوزاں ازرہِ شوخی و ناز

परवाने की जब मौत आती है तो वह जलती हुई शमां पर चंचलता और गर्व से गिरता है।☆

बहरहाल हम उनकी सेवा में निवेदन करते हैं कि तनिक धैर्य से काम लें और जब कोई भाग पुस्तक के अध्यायों में से छप चुके तब जितना चाहें ज़ोर लगा ले। एक सामान्य कहावत प्रसिद्ध है कि सांच को आंच नहीं। अत: हम सत्य पर हैं। हमारे सामने किसी पादरी या पंडित की क्या पेश जा सकती है तथा किसी के मुख की बेहूदा बातों से हमारा क्या बिगड़ सकता है अपितु ऐसी बातों से स्वयं पादरियों और पंडितों की ईमानदारी प्रकट होती जाती है क्योंकि जिस पुस्तक को अभी न देखा न विचार किया

①-यह विज्ञापन प्रथम और तृतीय संस्करण में मौजूद है परन्तु द्वितीय संस्करण में नहीं। (शम्स)

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

न उसके तर्कों की कोई सूचना, न उसकी खोज के स्तर की कोई ख़बर उसके संदर्भ में झटपट मुख खोल कर खण्डन लिखने का दावा कर देना क्या यही इन लोगों की ईमानदारी और सच्चाई है ? हे सज्जनो ! जब आप लोगों ने अभी मेरे तर्कों को ही नहीं देखा तो फिर आपको कैसे ज्ञात हुआ कि आप उन समस्त तर्कों का उत्तर लिख सकेंगे ? जब तक किसी का कोई निकाला हुआ तर्क या कोई स्थापित किया हुआ प्रमाण या कोई लिखित सबूत ज्ञात न हो फिर उसे परखा न जाए कि विश्वसनीय है या काल्पनिक, सही भूमिका पर आधारित है या धोखों पर, तब तक उसके सन्दर्भ में कोई विरोधात्मक राय प्रकट करना और अकारण उस का खण्डन लिखने के लिए दम भरना यदि द्वेष नहीं तो और क्या है ? और जब आप लोगों ने मूल वास्तविकता को जाने बिना खण्डन लिखने का पहले ही इरादा कर लिया तो आप का नफ़्से अम्मारा (तामसिक वृत्ति) इस बात से कब रुकने वाला है, कि बात-बात में छल, कपट, बेईमानी और विश्वासघात को काम में लाया जाए ताकि किसी प्रकार ये गर्व प्राप्त करें कि हमने उत्तर लिख दिया।

यदि आप लोगों की नीयत में कुछ निष्कपटता और हृदय में कुछ न्याय होता तो आप लोग इस प्रकार घोषणा करते कि यदि पुस्तक के तर्क वास्तव में उचित और सत्य पर आधारित होंगे तो हम पूर्णरूप से उन्हें स्वीकार करेंगे अन्यथा सत्य के प्रकटन के उद्देश्य से उनका खण्डन लिखेंगे। यदि आप ऐसा करते तो नि:सन्देह न्यायप्रिय लोगों के निकट न्यायकर्ता ठहरते और शुद्ध अन्त:करण वाले कहलाते, परन्तु ख़ुदा न करे कि ऐसे लोगों के हृदयों में न्याय हो जो ख़ुदा के साथ भी अन्याय करते हुए नहीं डरते और कुछ ने तो उसे स्रष्टा होने से ही इन्कार कर रखा है, और कुछ लोग एक के तीन बनाए बैठे हैं, तथा किसी ने उसे नासिरा में ला डाला है, और कोई उसे अयोध्या की ओर खींच लाया है।

अब साराँश यह है कि आप समस्त सज्जनों को सौगन्ध है कि हमारे मुक़ाबले पर थोड़ा सा भी विलम्ब न करें, अफ़लातून बन जाएँ, बैकन का अवतार धारण कर लें, अरस्तू की दृष्टि और विचार लाएँ, अपने बनावटी ख़ुदाओं के आगे सहायतार्थ हाथ ज़ोड़ें, फिर देखें कि हमारा ख़ुदा विजयी होता है या आप लोगों के मिथ्या ख़ुदा। जब तक इस पुस्तक का उत्तर न दें तब तक बाज़ारों में सामान्य और अनपढ़ लोगों के सामने इस्लाम को झूठा कहना या हिन्दुओं के मन्दिरों में बैठकर एक वेद को ईश्वरकृत और सत्यविद्या और शेष समस्त पैग़म्बरों (नबियों) को झूठा बताना लज्जा और शर्म की विशेषता से दूर समझें।

यारो ख़ुदी से बाज़ भी आओगे या नहीं?
ख़ू अपनी पाक साफ़ बनाओगे या नहीं?
बातिल से मैल दिल की हटाओगे या नहीं?
हक़ की तरफ रूजू भी लाओगे या नहीं?
कब तक रहोगे ज़िद व तअस्सुब में डूबते?
आख़िर क़दम बसिद्क़ उठाओगे या नहीं?
क्योंकर करोगे रद्द जो मुहक़्क़क है एक बात?
कुछ होश करके उज़्र सुनाओगे या नहीं?
सच-सच कहो, अगर न बना तुझ से कुछ जवाब
फिर भी यह मुँह जहां को दिखाओगे या नहीं?

आवश्यक विज्ञापन

पुस्तक "बराहीन अहमदिया" का मूल्य जो व्यावहारिक तौर पर दस रुपए नियुक्त हुआ है, वह केवल मुसलमानों के लिए नितान्त श्रेणी की रियायत और छूट है कि जिन्हें समृद्धता और आर्थिक सामर्थ्य के अनुसार स्थायी धर्म की सहायता में किसी प्रकार का संकोच नहीं, परन्तु जो सज्जन किसी अन्य धर्म या क़ौम के पाबन्द होकर इस पुस्तक को खरीदना चाहें तो चूँकि उनसे सहायता की कुछ आशा नहीं। अतः उनसे वह पूरा मूल्य लिया जाएगा जो प्रथम भाग की घोषणा में प्रकाशित हो चुका है।

विज्ञापन देने वाला
लेखक-बराहीन अहमदिया

Ⓟअ

Ⓟविशता की परिस्थिति में एक आवश्यक निवेदन

मनुष्य की कमज़ोरियां जो हमेशा उसके स्वभाव के साथ संलग्न हैं उसे हमेशा सभ्यता और सहायता का मुहताज रखती हैं और यह सभ्यता और सहायता की आवश्यकता एक ऐसी निर्विवाद और स्पष्ट बात है कि जिस में किसी बुद्धिमान को आपत्ति नहीं। स्वयं हमारे अस्तित्व की ही बनावट ऐसी है जो सहायता की आवश्यकता पर प्रथम प्रमाण है। हमारे हाथ, पैर, कान, नाक और आँख इत्यादि अंग और हमारी समस्त आन्तरिक और बाह्य शक्तियाँ ऐसी पद्धति पर बनी हैं कि जब तक वे परस्पर मिल कर एक दूसरे की सहायता न करें तब तक हमारे अस्तित्व के कार्य सुचारु रूप से कदापि जारी नहीं हो सकते, तथा मानवता की मशीन ही निलंबित पड़ी रहती है। जो कार्य दो हाथों के मिलने से होना चाहिए वह मात्र एक हाथ से परिणाम को नहीं पहुँच सकता, तथा जिस मार्ग को दो पैर मिलकर तय करते हैं वह मात्र एक ही पैर से तय नहीं हो सकता। इस प्रकार समस्त सफलता हमारी जीवन शैली और आख़िरत की सहायता पर ही निर्भर हो रही है। क्या कोई अकेला मनुष्य किसी दीन (धर्म) या दुनिया के कार्य को पूर्ण कर सकता है। कदापि नहीं। कोई कार्य धार्मिक है या भौतिक बिना परस्पर सहायता के चल ही नहीं सकता। प्रत्येक गिरोह कि जिसका उद्देश्य और आशय अंगों के समान एक पृथक बात है तथा संभव नहीं कि उस समूह के सामूहिक उद्देश्य से संबंधित कोई कार्य परस्पर सहायता के बिना भली-भांति और सुचारु रूप से हो सके, विशेषकर जितने महान् कार्य जिन का मुख्य उद्देश्य कोई सार्वजनिक महान् लाभ है वे तो सार्वजनिक सहायता के अभाव में किसी भी प्रकार से सम्पन्न हो नहीं सकते और मात्र एक ही मनुष्य उनके करने पर सामर्थ्यवान कदापि नहीं हो सकता और न कभी हुआ। अंबिया अलैहिमुस्सलाम शुभ कार्यों में निर्भरता, समर्पण, सहनशीलता और पराक्रम में सब से अग्रसर हैं उन्हें भी भौतिक संसाधनों को उपयोग में लाने के लिए مَنۡ اَنۡصَارِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ[1] (ख़ुदा के कामों में मेरा कौन सहायक है) कहना पड़ा। ख़ुदा ने भी अपने धार्मिक विधान में अपने प्रकृति के नियमानुसार सत्यापन के साथ تَعَاوَنُوۡا عَلَی الۡبِرِّ وَ التَّقۡوٰی[2] (तुम नेकी और संयम के कार्यों में

---

①-सूरह अस्सफ़्फ़ :15, ②-अलमाइदह:3

परस्पर सहायता करो) का आदेश दिया।

परन्तु खेद कि मुसलमानों में से अधिकांश ने इस पुनीत सिद्धान्त को भुला दिया है तथा ऐसा महान् उद्देश्य जो उन्नति और धर्म की प्रतिष्ठा का सम्पूर्ण आधार था बिल्कुल त्याग बैठे हैं और अन्य क़ौमें कि जिनकी इल्हामी पुस्तकों में इस संबंध में कुछ आग्रह भी न था वे अपने सच्चे उपाय द्वारा अपनी धर्म-प्रचार की रुचि से تَعَاوَنُوْا (सहयोग करो) के विषय पर कार्य करती जाती हैं और उनके धार्मिक विचार क़ौमी सहयोग के कारण दिन-प्रतिदिन अधिक से अधिक फैलते चले जाते हैं। आजकल ईसाईयों की क़ौम को ही देखो जो अपने धर्म के प्रसारण में कितना हार्दिक जोश रखती है और कितना परिश्रम और पराक्रम कर रही है। लाखों रुपए अपितु उनका करोड़ों रुपया केवल नवीन पुस्तकों के प्रकाशन और प्रसारण के उद्देश्य से एकत्र रहता है। एक यूरोप या अमरीका का मध्यम श्रेणी का धनवान इन्जील की शिक्षा के प्रकाशन करने के लिए अपने पास से इतना रुपया व्यय कर देता है जो मुसलमानों के श्रेष्ठ से श्रेष्ठ समृद्धिशाली लोग सामूहिक तौर पर भी उसकी बराबरी नहीं कर सकते। यों तो मुसलमानों का इस देश हिन्दुस्तान में एक बड़ा वर्ग है और कुछ-कुछ धनवान और समृद्ध भी हैं परन्तु शुभ कर्मों के करने में (एक छोटी जमाअत धनवानों, मंत्रियों और पदाधिकारियों को छोड़कर) अधिकांश लोग नितान्त कम हिम्मत, संकीर्ण हृदय, संकोच करने वाले हैं कि जिन के विचार मात्र भोग-विलास की इच्छाओं में सीमित हैं और जिन के मस्तिष्क लापरवाही के दूषित तत्त्वों से दुर्गंधयुक्त हो रहे हैं। ये लोग धर्म और धार्मिक आवश्यकताओं को तो कुछ वस्तु ही नहीं समझते। हाँ सम्मान और नाम के अवसर पर समस्त घरबार लुटाने को भी उपस्थित हैं। शुद्ध रूप से धर्म हेतु साहसी मुसलमान (जैसे ℗एक हमारे बुज़ुर्ग तथा हमारे सम्माननीय हज़रत खलीफ़ा सय्यद मुहम्मद हसन ख़ान ℗ब साहिब बहादुर प्रधानमंत्री पटियाला) इतने कम हैं कि जिन्हें उंगलियों पर भी गिनने की आवश्यकता नहीं, अतिरिक्त इसके कि कुछ लोग थोड़ा बहुत धर्म के मामले में व्यय भी करते हैं तो एक रस्म के रंग में न कि वास्तविक आवश्यकता की पूर्ति की नीयत से। जैसे एक को मस्जिद बनवाते देखकर दूसरा भी जो उसका प्रतिद्वन्द्वी है अकारण उसके मुकाबले पर मस्जिद बनवाता है चाहे वास्तव में आवश्यकता हो या न हो, परन्तु सहस्त्रों रुपया व्यय कर डालता है। किसी को यह विचार नहीं आता कि इस युग में सर्वप्रथम धार्मिक ज्ञान

का प्रसार है और नहीं समझते कि यदि लोग धार्मिक ही नहीं रहेंगे तो फिर उन मस्जिदों में कौन नमाज़ पढ़ेगा, केवल पत्थरों के दृढ़ और बुलन्द मीनारों से धर्म की दृढ़ता और बुलन्दी चाहते हैं और मात्र संगमरमर के सुन्दर टुकड़ों से धर्म की सुन्दरता के इच्छुक हैं, परन्तु जिस आध्यात्मिक, दृढ़ता, बुलन्दी और सुन्दरता को क़ुर्आन करीम प्रस्तुत करता है और जो اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ[1] का चरितार्थ है उसकी ओर दृष्टि उठाकर भी नहीं देखते और पवित्र वृक्ष को छायादार दिखाने की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देते तथा यहूदियों की भांति केवल प्रत्यक्ष के पुजारी बन रहे हैं न धार्मिक कर्त्तव्यों को यथोचित अदा करते हैं और न अदा करना जानते हैं और न जानने की कुछ परवाह करते हैं।

यद्यपि यह बात स्वीकारणीय है कि प्रतिवर्ष हमारी क़ौम के हाथ से असंख्य रुपया दान-पुण्य के नाम पर व्यर्थ निकल जाता है परन्तु खेद कि अधिकांश लोग उनमें से नहीं जानते कि **वास्तविक नेकी** क्या वस्तु है और माल खर्च करने में उचित और सही ढंगों को दृष्टिगत नहीं रखते तथा आँख बन्द करके अनुचित व्यय करते चले जाते हैं और फिर जब समस्त हार्दिक रुचि इसी व्यर्थ व्यय करने में समाप्त हो जाती है तो अवसर पड़ने पर मूल कर्त्तव्य के अदा करने से बिल्कुल असमर्थ रह जाते हैं और अपने पहले अपव्यय और अधिकता का निवारण बतौर कमी और कर्त्तव्य-परायणता का त्याग करके करना चाहते हैं। यह उन लोगों का चरित्र है कि जिन में आत्मा की सच्चाई से वरदान और लाभ पहुँचाने की शक्ति जोश नहीं मारती अपितु केवल अपने विशेष लालच से उदाहरणतया वृद्ध हो कर वृद्धावस्था में आख़िरत की सुविधा का एक बहाना सोच कर मस्जिद बनवाने और स्वर्ग में बना बनाया घर लेने का लालच उत्पन्न हो जाता है और वास्तविक नेकी पर उन की सहानुभूति की यह स्थिति है कि उनकी दृष्टि के सामने धर्म की **नौका** सारी की सारी डूब जाए या सम्पूर्ण धर्म एक बार में ही मिट जाए तब भी उनका हृदय थोड़ा सा भी कम्पित नहीं और धर्म के रहने या जाने की कुछ भी परवाह नहीं रखते। यदि दर्द है तो संसार का, यदि चिन्ता है तो संसार की, यदि प्रेम है तो संसार का, यदि दीवानगी है तो संसार की और फिर संसार भी जैसा कि अन्य क़ौमों को प्राप्त है प्राप्त नहीं। प्रत्येक मनुष्य जो क़ौम के सुधार का प्रयास कर रहा है वह उन लोगों की लापरवाही से दुखी और रुदन करता ही दिखाई देता है और प्रत्येक ओर से हाय इस क़ौम पर अफसोस का

①-इब्राहीम :25

ही स्वर सुनाई देता है। अन्य का क्या कहें हम स्वयं ही सुनाते हैं।

हमने सैकड़ों प्रकार की ख़राबियाँ और बिगाड़ देख कर पुस्तक **बराहीन अहमदिया** को लिखा था और उपर्युक्त पुस्तक में **तीन सौ** दृढ़ और ठोस बुद्धिसंगत तर्कों द्वारा इस्लाम की सच्चाई को वास्तव में सूर्य से भी अधिक प्रकाशमान दिखाया गया। चूँकि यह विरोधियों पर **महान विजय** और मौमिनों की हार्दिक अभिलाषा थी। इसलिए इस्लाम के समृद्धिशाली लोगों के उच्च साहस पर बड़ा भरोसा था कि वे ऐसी अनुपम और अद्वितीय पुस्तक को अत्यन्त महत्व देंगे और इसके प्रकाशन में जो कठिनाइयाँ सामने आ रही हैं उनके निवारण में हृदय और प्राणों के साथ ध्यान देंगे, परन्तु क्या कहें और क्या लिखें और क्या लिखित रूप में लाएँ। अल्लाह ही सहायता करने वाला और अल्लाह ही उत्तम और शेष रहने वाला है।

कुछ सज्जनों ने सहायता से विमुख होते हुए हमें अत्यन्त चिन्ता और असमंजस में डाल दिया है। हमने प्रथम भाग जो प्रकाशित हो चुका था, उसमें से लगभग एक सौ पचास प्रतियां बड़े-बड़े समृद्धिशाली और धनवानों और रईसों की सेवा में भेजी थीं और यह आशा की गई थी कि जो आदरणीय धनवान ®पुस्तक की खरीदारी को स्वीकार करके ®ज पुस्तक का मूल्य जो एक मामूली राशि है बतौर अग्रिम राशि भेज देंगे तथा उन की इस ढंग की सहायता से धार्मिक कार्य सरलतापूर्वक सम्पन्न हो जाएगा और ख़ुदा के सहस्त्रों लोगों को लाभ पहुँचेगा, इसी आशा पर हमने लगभग डेढ़ सौ पत्र और पर्चे भी लिखे और बड़ी विनम्रता से वास्तविक स्थिति से सूचित किया, परन्तु दो तीन साहसी लोगों को छोड़कर शेष सभी की ओर से ख़ामोशी रही, न पत्रों का उत्तर आया न ही पुस्तकें वापस आईं। डाक व्यय तो सब व्यर्थ हुए परन्तु यदि ख़ुदा न करे पुस्तकें भी वापस न मिलीं तो बहुत बड़ा संकट सामने आएगा तथा बहुत हानि उठाना पड़ेगी। खेद कि हमें अपने आदरणीय भाइयों से सहायता के स्थान पर कष्ट पहुंच गया यदि यही इस्लाम का समर्थन है तो धर्म का काम समाप्त है। हम बड़ी विनम्रता के साथ निवेदन करते हैं कि पुस्तकों के मूल्य को अग्रिम तौर पर भेजना स्वीकार नहीं तो पुस्तकों को डाक द्वारा वापस भेज दें हम उसी को महान उपहार समझेंगे तथा महान् उपकार विचार करेंगे अन्यथा हमारी बड़ी भारी हानि होगी और लुप्त तथा खोए हुए भागों को पुनः छपवाना पड़ेगा, क्योंकि यह अख़बार का

पर्चा नहीं कि जिसके नष्ट होने में कुछ हानि न हो। पुस्तक का प्रत्येक भाग ऐसा आवश्यक है कि जिसके नष्ट होने से समस्त पुस्तक अपूर्ण रह जाती है। ख़ुदा के लिए हमारे आदरणीय भाई असहानुभूति और लापरवाही से काम न लें तथा सांसारिक अचेतना को धर्म में प्रयोग न करें तथा हमारी इस कठिनाई पर विचार कर लें कि यदि हमारे पास पुस्तक के ही भाग नहीं होंगे तो हम खरीदारों को क्या देंगे और उन से अग्रिम राशि बतौर, कि जिस पर पुस्तक का छपना निर्भर है क्योंकर लेंगे। कार्य अस्त-व्यस्त हो जाएगा और धर्म के मामले में जो सब का सामूहिक है अकारण कठिनाई सामने आ जाएगी।

اُمیدوار بود آدمی بخیر کساں　　　مرا بخیر تو امید نیست بدمرساں

(मनुष्य लोगों के हित के लिए आशान्वित रहता है। मुझे तुझ से हित की कोई आशा नहीं है, तू मुझे कष्ट न दे।)☆

एक और बड़ा कष्ट है जो कुछ धूर्त लोगों के मुख से हमें पहुँच रहा है और वह यह है कि कुछ सज्जन कि जिनकी राय ध्यान की कमी के कारण धार्मिक मामलों में उचित नहीं है वे इस वास्तविक परिस्थिति से अवगत होकर जो पुस्तक बराहीन अहमदिया की तैयारी पर नौ हज़ार रुपया खर्च आता है बजाए इसके कि जो हार्दिक सहानुभूति से किसी प्रकार की सहायता की ओर ध्यान देते और जो दैनदारियाँ पुस्तक का मूल्य कम लेने तथा छपाई के खर्चों की अधिकता के कारण साथ लगी हैं उनकी क्षति पूर्ति हेतु ख़ुदा के लिए कुछ साहस जुटाते। दोमुखी बातें करने से हमारे कार्य बाधित हो रहे हैं और लोगों को यह उपदेश सुनाते हैं कि क्या पहली किताबें कम हैं जो अब इसकी आवश्यकता है। यद्यपि हमें इन के आरोपों से कुछ लेना-देना नहीं। हम जानते हैं कि संसार के पुजारियों की प्रत्येक बात में कोई उद्देश्य होता है और वे हमेशा इसी प्रकार धार्मिक विधान के कर्त्तव्यों को अपने सर से टालते रहते हैं ताकि किसी धार्मिक कार्यवाही की आवश्यकता को स्वीकार करके कोई कौड़ी हाथ से न छोड़नी पड़े, परन्तु चूँकि वे हमारे इस अथक प्रयास का तिरस्कार करके लोगों को उसके महान् लाभों से वंचित रखना चाहते हैं जब कि हम ने प्रथम भाग के सम्पादित पर्चे में उपर्युक्त किताब की आवश्यकता के कारणों का उल्लेख कर दिया था, फिर भी अपनी स्वाभाविक विशेषता के अन्तर्गत डंक मार रहे हैं। विवश होकर इस शंका से कि कदाचित कोई मनुष्य उनकी बेहूदा बातों से धोखा न

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

खाए पुनः स्पष्ट तौर पर वर्णन किया जाता है कि पुस्तक बराहीन अहमदिया बिना अत्यन्त आवश्यकता के नहीं लिखी गई। जिस उद्देश्य और आशय की पूर्ति के लिए हम ने इस पुस्तक को लिखा है यदि वह उद्देश्य किसी पूर्व पुस्तक से प्राप्त हो सकता तो हम उसी पुस्तक को पर्याप्त समझते और उसी के प्रकाशन के लिए अपने तन-मन से व्यस्त हो जाते और कुछ आवश्यक न था कि हम वर्षों तक अपने प्राणों को कठिन परिश्रम में डाल कर और अपनी प्रिय आयु का भाग व्यय करके फिर अन्ततः ऐसा कार्य करते जो मात्र प्राप्त वस्तु को प्राप्त करना था, परन्तु जहाँ तक हमने दृष्टि डाली हमें ऐसी कोई पुस्तक प्राप्त नहीं हुई जो इन समस्त प्रमाणों और तर्कों का संग्रह होती कि जिन्हें हम ने इस पुस्तक में एकत्र किया है और जिनका प्रकाशित करना इस्लाम धर्म की सच्चाई को प्रमाणित करने के उद्देश्य से इस युग में नितान्त आवश्यक है। अतः विवश होकर अनिवार्यता देखते हुए हमने इसे लिखा। यदि किसी को हमारे इस वर्णन में सन्देह हो तो ऐसी पुस्तक कहीं से निकाल कर हमें दिखा दे ताकि हमे भी ज्ञात हो अन्यथा निरर्थक और बेहूदा बातें करना और अकारण ख़ुदा की जनता को एक लाभप्रद झरने से रोकना बड़ा दोष है।

परन्तु स्मरण रहे कि इस कहावत से किसी प्रकार की अपनी प्रशंसा हमारा उद्देश्य नहीं। जो खोज-बीन हमने की और पूर्वकालीन प्रकाण्ड विद्वानों ने न की अथवा जो तर्क हम ने ®लिखे और उन्होंने न लिखे, यह एक ऐसी बात है जो सामयिक परिस्थितियों से®द सम्बद्ध है, न इस से हमारी तुच्छ हैसियत बढ़ती है और न उन की प्रतिष्ठा में कुछ अन्तर आता है। उन्होंने ऐसा युग पाया कि जिसमें अभी दूषित विचारधारा कम फैली थी और केवल लापरवाही के तौर पर बाप-दादों के अनुसरण का बाज़ार गर्म था। अतः उन बुज़ुर्गों ने अपनी पुस्तकों में वह शैली धारण की जो उन के युग के सुधार के लिए पर्याप्त थी। हमने ऐसा युग पाया कि जिसमें दूषित विचारधारा के ज़ोर के कारण वह पूर्व शैली पर्याप्त न रही अपितु एक शक्तिशाली खोज की आवश्यकता पड़ी, जो इस समय के अत्यन्त विकारों का पूर्ण रूपेण सुधार करे। यह बात स्मरण रखना चाहिए कि क्यों भिन्न-भिन्न युगों में नवीन पुस्तकों की आवश्यकता पड़ती है। इसका कारण यही है जिसका हम ने ऊपर उल्लेख किया है अर्थात् किसी युग में बुराइयाँ कम और किसी में अधिक हो जाती हैं और किसी समय किसी रूप में तो किसी समय किसी अन्य रूप में फैलती है। अब किसी पुस्तक का लेखक जो इन विचारों को मिटाना चाहता है उसके लिए अनिवार्य होता है कि किसी

कुशल चिकित्सक की भांति प्रकृति, स्वभाव और विकार की मात्रा और विकार के प्रकार पर दृष्टि डाल कर अपनी युक्ति को आवश्यकतानुसार और परिस्थिति के अनुकूल काम में लाए और जितना और जिस प्रकार का विकार हो गया है उसी तौर पर उसके सुधार की व्यवस्था करे और वही ढंग अपनाए जिस से सुचारु रूप और सरलता के साथ उस बीमारी का निदान होता हो, क्योंकि यदि किसी पुस्तक में श्रोताओं की परिस्थिति के अनुसार निवारण न किया जाए तो वह पुस्तक नितान्त व्यर्थ अलाभकारी और निरर्थक होती है और ऐसी पुस्तक के वर्णनों में यह बल कदापि नहीं होता जो इन्कारी की पूर्ण गहराई तक डूब कर उसकी हार्दिक आशंका को पूर्णरूपेण नष्ट करे। अतः हमारे आरोप करने वाले थोड़ा विचार करके देखेंगे तो उन पर पूर्ण विश्वास के साथ स्पष्ट हो जाएगा कि आजतक जिन भिन्न-भिन्न प्रकार के विकारों ने दामन फैला रखा है उन का रूप पूर्व विकारों से बिल्कुल भिन्न है। वह युग जो इससे कुछ समय पूर्व गुज़र गया है वह मूर्खतापूर्ण अनुसरण का युग था और जिसे हम देख रहे हैं यह बुद्धि के दुरुपयोग का युग है। इससे पूर्व अधिकांश लोगों को मूर्खतापूर्ण अनुसरण ने खराब कर रखा था और अब विचार और दृष्टि की गलती ने अधिकांश को लज्जित और दुर्दशाग्रस्त कर दिया है। यही कारण है कि जिन गंभीर तर्कों और ठोस सबूतों के लिखने की हमें आवश्यकताएँ पड़ीं वे उन नेक और बुजुर्ग विद्वानों को कि जिन्होंने केवल मूर्खतापूर्ण अनुसरण का प्रभुत्व देख कर पुस्तकें लिखी थीं के सामने नहीं आई थीं। हमारे युग का नवीन प्रकाश (कि ख़ाक बर फ़र्क़ ईं रौशनी) नव शिक्षितों की आध्यात्मिक शक्तियों को मलिन कर रहा है। उनके हृदयों में ख़ुदा के सम्मान के स्थान पर आत्मसम्मान समा गया है और ख़ुदा के पथ-प्रदर्शन के स्थान पर स्वयं ही पथ-प्रदर्शक बन बैठे हैं। यद्यपि आजकल लगभग समस्त नवशिक्षितों का स्वाभाविक झुकाव बौद्धिक कारणों की ओर हो गया है, परन्तु अफ़सोस कि यही झुकाव बुद्धि की अपूर्णता और दोषपूर्ण ज्ञान के कारण पथ-प्रदर्शक होने के स्थान पर मार्ग का लुटेरा होता जा रहा है। चिन्तन और दृष्टि के टेढ़ेपन ने लोगों की कल्पनाओं में बड़े-बड़े दोष उत्पन्न कर दिए हैं और भिन्न-भिन्न रायों और भांति-भांति के विचारों के प्रसारण के कारण अज्ञान लोगों के लिए बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ सामने आ गई हैं। सोफ़िस्ताई※ भाषणों ने नवशिक्षितों के स्वभाव में भिन्न-भिन्न प्रकार की जटिलताएं उत्पन्न कर दी हैं। जो बातें

※-दार्शनिकों का वह वर्ग जिन के सिद्धान्त भ्रम पर आधारित हैं तथा ये वास्तविकता के इन्कारी हैं।-अनुवादक)

नितान्त बुद्धि-संगत थीं वे उनकी दृष्टि से ओझल हो गई हैं, जो बातें नितान्त मूर्खतापूर्ण हैं उन्हें वे श्रेष्ठ श्रेणी की सच्चाइयां समझ रहे हैं, वे गतिविधियाँ जो मानवीय स्वभाव से विपरीत हैं उन्हें वे सभ्यता समझ बैठे हैं और जो वास्तविक सभ्यता है उसे वे तिरस्कार और अनादर की दृष्टि से देखते हैं। अत: ऐसे समय में और इन लोगों के इलाज के लिए जो अपने ही घर में अन्वेषक बन बैठे हैं और अपने ही मुख से मियाँ मिट्ठू कहलाते हैं हमने पुस्तक बराहीन अहमदिया को जो तीन सौ विश्वसनीय और बुद्धि-संगत तर्कों पर आधारित है क़ुर्आन करीम की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिए जिस से ये लोग अत्यन्त अहंकार से विमुख हो रहे हैं लिखा है क्योंकि यह बात बहुत शुद्ध, स्पष्ट और असंदिग्ध बातों में से है कि बुद्धि के भटके हुए को बुद्धि ही से सन्तुष्टि हो सकती है और जो बुद्धि के मार्ग का भटका हुआ है वह बुद्धि ही के द्वारा मार्ग पर आ सकता है।

अब प्रत्येक मौमिन के लिए विचारणीय है कि जिस पुस्तक के द्वारा तीन सौ बुद्धि-संगत तर्क क़ुर्आन करीम की सच्चाई पर प्रकाशित हो गए और समस्त ⓟविरोधियों के ⓟह सन्देहों का निवारण तथा उन्हें दूर किया जाएगा, वह पुस्तक ख़ुदा की प्रजा को क्या कुछ न लाभ पहुँचाएगी और उसके प्रकाशित होने से इस्लाम की कैसी उन्नति, वैभव, प्रताप, और तेज चमकेगा। ऐसे आवश्यक मामले की सहायता से वे ही लोग लापरवाह रहते हैं जो वर्तमान युग की स्थिति पर दृष्टि नहीं डालते तथा फैली हुई ख़राबियों को नहीं देखते तथा मामलों के परिणाम पर विचार नहीं करते या वे लोग कि जिन्हें धर्म से कोई मतलब ही नहीं और न ख़ुदा और रसूल से कुछ प्रेम।

हे प्रियजनो !!! इस अंधकारमय युग में धर्म इसी से स्थापित रह सकता है कि पथ-भ्रष्टता के तूफान के बल और वेग के मुकाबले में धर्म की सच्चाई का बल और वेग भी दिखाया जाए और उन बाहरी आक्रमणों से जो चारों ओर से हो रहे हैं सच्चाई की सुदृढ़ शक्ति से सुरक्षा की जाए। यह घोर अंधकार जो समय के मुख-मंडल पर छा गया है यह तब ही दूर होगा जब धर्म की सच्चाई के तर्क संसार में बाहुल्य के साथ चमकें और उसकी सत्यता की किरणें चारों ओर से प्रस्फुटित होती दिखाई दें। इस अस्त-व्यस्त समय में वही शास्त्रार्थ की पुस्तक आध्यात्मिक एकता प्रदान कर सकती है जो गहन खोज-बीन के द्वारा मूल-तत्व के सूक्ष्म रहस्य की तह को खोलती हो और उस वास्तविकता के मूल ठिकाने तक पहुँचाती हो कि जिसके ज्ञान पर हृदयों की सन्तुष्टि निर्भर है।

हे बुज़ुर्गो !!! अब यह वह युग आ गया है कि जो व्यक्ति श्रेष्ठ श्रेणी के बुद्धि-संगत प्रमाणों के अभाव में अपने धर्म की भलाई चाहे तो यह विचार दुर्लभ और व्यर्थ लालच है। तुम स्वयं ही दृष्टि उठा कर देखो कि तबियतें कैसी स्वेच्छाचारी होती जा रही हैं और विचार कैसे बिगड़ते जा रहे हैं। इस युग के बौद्धिक ज्ञानों (शिक्षाओं) की उन्नति ने यही विपरीत प्रभाव किया है। वर्तमान युग के शिक्षित लोगों के स्वभावों में एक विचित्र प्रकार की विचित्र स्वच्छन्द विचारधारा बढ़ती जाती है और वह सौभाग्य जो सादगी, निर्धनता, निश्छलता में हैं वह उनके अभिमानी हृदयों से बिल्कुल जाता रहा है और जिन-जिन विचारों को वे सीखते हैं वे अधिकांश ऐसे हैं कि जिन से नास्तिकता के भ्रमों को उत्पन्न करने वाला एक प्रभाव उनके हृदयों पर पड़ता जाता है और अधिकाँश लोग इसके पूर्व कि उन्हें किसी पूर्ण खोज का पद प्राप्त हो केवल मिश्रित मूर्खता के प्रभुत्व से दार्शनिक स्वभाव के मनुष्य बनते जाते हैं। आओ अपनी सन्तान और अपनी क़ौम और अपने देशवासियों पर दया करो और पूर्व इसके कि ये मिथ्या और झूठ की ओर खींचे जाएँ, उनको सत्य और सच्चाई की ओर खींच लाओ ताकि तुम्हारा और तुम्हारी नस्ल का भला हो और ताकि सब को ज्ञात हो कि इस्लाम धर्म के अलावा अन्य समस्त धर्म बेकार मात्र हैं जिनमें कोई वास्तविकता नहीं। संसार में ख़ुदा की प्रकृति का नियम यही है कि प्रयास और परिश्रम अधिकतर उद्देश्य प्राप्ति का माध्यम हो जाते हैं और जो व्यक्ति आलसी और लापरवाह होकर बैठ जाता है वह प्राय: वंचित और दुर्भाग्यशाली रहता है। अत: आप लोग यदि इस्लाम धर्म की सच्चाई के प्रसारण के लिए जो वास्तव में सत्य है प्रयास करेंगे तो ख़ुदा उस प्रयास को व्यर्थ नहीं जाने देगा। ख़ुदा तआला ने हमें इस्लाम की सच्चाई पर सैकड़ों ठोस तर्क प्रदान किए और हमारे विरोधियों को उनमें से एक भी प्राप्त नहीं। ख़ुदा ने हमें केवल सत्य ही प्रदान किया और हमारे विरोधी असत्य पर हैं और जो सदात्माओं के हृदयों में ख़ुदा के प्रताप को प्रकट करने के लिए सच्चा जोश होता है हमारे विरोधियों को उसकी गंध भी नहीं पहुँची परन्तु तब भी दिन-रात का प्रयास एक ऐसी प्रभावशाली वस्तु है कि असत्य के पुजारी लोग भी उस से लाभ अर्जित कर लेते हैं और चोरों की भांति कहीं न कहीं उनकी सेंध भी लगती ही रहती है। ईसाइयों का धर्म देखो कि जिनका सिद्धान्त اَوّل الدّن درد (प्रथम जाम ही गाद है) पादरियों के निरन्तर प्रयासों से कैसा उन्नति पर है और प्रति वर्ष उनकी ओर से कैसे गर्वपूर्ण लेख छपते रहते हैं कि इस वर्ष चार हज़ार ईसाई

हुए और इस वर्ष आठ हज़ार पर ख़ुदावन्द मसीह की कृपा हो गई। अभी कलकत्ता में जो पादरी हैकर साहिब ने ईसाई होने वालों का अनुमान प्रस्तुत किया है उससे एक नितान्त खेदजनक ख़बर प्रकट होती है। पादरी साहिब फ़रमाते हैं कि पचास वर्ष पूर्व सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में ईसाई होने वाले लोगों की संख्या केवल सत्ताईस हज़ार थी। इन पचास वर्षों में यह कार्यवाही हुई कि सत्ताईस हज़ार से पाँच लाख तक ईसाईयों की संख्या पहुँच गई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलयहे राजिऊन !! हे बुज़ुर्गो ! यद्यपि इस से अधिक और कौन सा समय गुमराही फैलने का है कि जिसके आगमन की आप प्रतीक्षा कर रहे हैं। एक समय था जो इस्लाम धर्म يَدۡخُلُوۡنَ فِیۡ دِیۡنِ اللّٰہِ اَفۡوَاجًا① (लोग अल्लाह के धर्म में समूह के समूह प्रवेश करेंगे) का चरितार्थ था और अब यह युग !!! ®क्या आप लोगों का हृदय ®व इस विपत्ति को सुन कर नहीं जलता ? क्या इस संक्रामक जैसे रोग को देखकर आपकी सहानुभूति जोश नहीं मारती ? हे बुद्धिमानो और प्रतिभाशाली लोगो ! इस बात का समझना कुछ कठिन नहीं कि जो विकार धर्म की अज्ञानता से फैला है उस का सुधार धार्मिक ज्ञान के प्रसार पर ही निर्भर है। अतः इसी उद्देश्य को पूर्णरूप से पूरा करने के लिए मैंने पुस्तक बराहीन अहमदिया को लिखा है और इस पुस्तक में ऐसी धूम-धाम से इस्लाम की सच्चाई का सबूत दिखाया गया है जिससे हमेशा के विवादों का अन्त महान विजय के साथ हो जाएगा। इस पुस्तक के प्रकाशन में सहायतार्थ जितना हमने लिखा है वह मात्र मुसलमानों की हमदर्दी से लिखा गया है क्योंकि ऐसी किताब के खर्चे जो हज़ारों रुपयों का मामला है और जिसका मूल्य भी मुसलमानों के सामान्य हित में आधे से भी कम कर दिया गया है अर्थात् पच्चीस में से केवल दस रुपए रखे गए हैं जो साहसी मुसलमानों की आर्थिक सहायता के बिना किस प्रकार सम्पन्न हो।

कुछ लोगों की समझ पर रोना आता है कि वे यथासमय सहायतार्थ विनती के यह उत्तर देते हैं कि हम पुस्तक को पुस्तक की तैयारी के पश्चात् ख़रीद लेंगे पहले नहीं। उन्हें समझना चाहिए कि यह कुछ व्यापार का मामला नहीं और लेखक को धर्म के समर्थन के अतिरिक्त किसी के धन से कोई मतलब नहीं। सहायता का समय तो यही है कि जब किताब के प्रकाशन में कठिनाइयां आ रही हैं अन्यथा प्रकाशन के पश्चात सहायता करना ऐसा है कि जैसे स्वस्थ हो जाने के पश्चात् दवा देना। अतः ऐसी न प्राप्त होने वाली

①-सूरह: अन्नस्र :3

सहायता से किस पुण्य की आशा होगी। ख़ुदा ने लोगों के हृदयों से धार्मिक प्रेम कैसा मिटा दिया कि अपनी मान-मर्यादा के कार्यों में हज़ारों रुपए आँख बन्द करके व्यय करते चले जाते हैं, परन्तु धार्मिक कार्यों के संबंध में जो इस नश्वर जीवन के मुख्य उद्देश्य हैं लम्बे-लम्बे संकोचों में पड़ जाते हैं। मुख से तो कहते हैं कि हम ख़ुदा और आख़िरत (प्रलय) पर ईमान रखते हैं परन्तु वास्तव में न उन्हें ख़ुदा पर ईमान है न आख़िरत पर। यदि एक पल अपने मालों के खर्च करने के विवरण पर दृष्टि डालें जो ईश्वर प्रदत्त नै'मतों को अपनी तामसिक वृत्ति को विकसित करने के लिए एक वर्ष में कितना खर्च कर डालते हैं और फिर विचार करें कि ख़ुदा की प्रजा की भलाई और हित के लिए समस्त आयु में शुद्ध रूप से ख़ुदा के लिए कितने कार्य किए हैं तो अपने बेईमानी के कृत्य पर स्वयं ही रो पड़ें, परन्तु इन बातों को कौन सोचे और वे आवरण जो हृदय पर हैं क्यों कर दूर हों। وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ① (और जिसे अल्लाह तआला तबाह करे उसे मार्ग दिखाने वाला कोई नहीं (मिल सकता)) इन्हीं लोगों के साहस की कमी और उनके भौतिकवाद पर विचार करके कुछ हमारे सम्माननीय मित्रों ने जो धर्म के प्रेम में मुग्ध प्रेमियों की भांति पाए जाते हैं इन्सान होने के नाते हम पर यह ऐतिराज़ किया है कि जिस स्थिति में लोगों की यह दशा है तो इतनी बड़ी पुस्तक लिखना कि जिस के प्रकाशन पर हज़ारों रुपया खर्च आता है उचित न था। अतः उनकी सेवा में सादर निवेदन है कि यदि हम उन सैकड़ों सूक्ष्मताओं और तथ्यों को न लिखते कि जो वास्तव में पुस्तक की मोटाई बढ़ जाने का कारण हैं तो फिर स्वयं किताब का लिखना ही व्यर्थ होता। रही यह चिन्ता कि इतना रुपया क्योंकर प्राप्त होगा तो इस से हमारे मित्र हमें न डराएँ और विश्वास करके समझें कि हमें अपने सर्वशक्तिमान ख़ुदा और अपने दयालु स्वामी (ख़ुदा) पर इस से भी कहीं अधिक भरोसा है कि जितना बन्द हाथ और कंजूस लोगों को अपनी दौलत के उन सन्दूकों पर होता है कि जिनकी चाबी हर समय उन की जेब में रहती है। अतः वही शक्तिमान और सामर्थ्यवान अपने धर्म और अपनी तौहीद (एकेश्वरवाद) और अपने दास के समर्थन हेतु स्वयं सहायता करेगा।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ②

①-अर्रअद :34, ②-सूरह: अलबक़रह :107

(क्या तुझे ज्ञात नहीं कि अल्लाह प्रत्येक बात पर (जिसका वह इरादा करे) पूरा (पूरा) क़ादिर है।)

پناہم آں توانائیست ہر آن   ز بخل ناتوانانم مترساں

अनुवाद- मेरी शरण सदैव वही शक्ति है। अत: मुझे कमज़ोर लोगों की कंजूसी से भयभीत न कर।

सफ़ीरे हिन्द प्रेस अमृतसर से प्रकाशित

भूमिका

इसमें कई उद्देश्य प्रकट करने योग्य हैं जो निम्नलिखित हैं

प्रथम प्रत्येक सज्जन की सेवा में जो आस्था और धर्म में हम से विपरीत हैं बड़े सम्मान और विनम्रता के साथ विनती की जाती है कि इस पुस्तक के लिखने से हमारा कदापि यह आशय और उद्देश्य नहीं कि किसी हृदय को दुखी किया जाए या किसी प्रकार का निराधार विवाद उठाया जाए अपितु केवल सत्य और ईमानदारी का प्रकटन हमारी हार्दिक अभिलाषा है और हमें कदापि स्वीकार न था कि इस पुस्तक में अपने किसी विरोधी के विचारों और दृष्टिकोणों की चर्चा मुख पर लाते अपितु अपने काम से काम था और मतलब से मतलब, परन्तु क्या कीजिए कि पूर्ण खोज-बीन और समस्त सत्य सिद्धान्तों और पूर्ण तर्कों का पूर्णतया वर्णन करना इसी पर निर्भर है कि उन समस्त धर्मावलम्बियों का जो सच्चे सिद्धान्तों के विपरीत राय और विचार रखते हैं ग़लती पर होना दिखाया जाए। अत: इस दृष्टि से उनकी चर्चा करना तथा उनके सन्देहों को दूर करना आवश्यक और अनिवार्य हुआ और स्वयं स्पष्ट है कि कोई प्रमाण दूसरे सदस्य की आपत्तियों को दूर किए बिना पूर्णरूप से अपनी सच्चाई को नहीं पहुँचता। उदाहरणतया जब हम सृष्टि के रचयिता के अस्तित्व के सबूत की बहस लिखें तो उस बहस की पूर्णता इस बात पर निर्भर होगी कि नास्तिक अर्थात् समस्त सृष्टि के स्रष्टा के अस्तित्व के इन्कार करने वालों के व्यर्थ भ्रमों को दूर किया जाए और जब हम ख़ुदा तआला के आत्माओं और शरीरों के स्रष्टा होने पर तर्क स्थापित करें तो हम पर न्याय की दृष्टि

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

Ⓟ84 से अनिवार्य है कि आर्य समाज [1] Ⓟवालों के भ्रमों और भ्रान्तियों को भी जो ख़ुदा तआला के स्रष्टा (ख़ालिक़) होने के इन्कारी हैं मिटा दें तथा जब हम इल्हाम की आवश्यकता के तर्क लिखें तो हम पर उन सन्देहों का निवारण करना भी अनिवार्य होगा जो ब्रह्म समाज वालों के हृदयों में जमे हुए हैं। इसके अतिरिक्त यह बात भी अत्यन्त ठोस अनुभव से सिद्ध है कि इस युग के इस्लाम विरोधियों की यह आदत हो रही है कि जब तक अपने मान्य सिद्धान्त को मिथ्या और सत्य के विरुद्ध नहीं देखते और अपने धर्म के बिगाड़ पर सूचित नहीं होते तब तक इस्लाम धर्म की सच्चाई और ईमानदारी की कुछ भी परवाह नहीं करते और यद्यपि ख़ुदाई धर्म की सच्चाई का सूर्य उन को कैसा ही चमकता हुआ दिखाई दे तब भी उस सूर्य से दूसरी ओर मुख फेर लेते हैं। अत: जब कि स्थिति यह है तो ऐसी स्थिति

हाशिया न. (1) यह एक नया सम्प्रदाय है जो हिन्दुओं में उत्पन्न हुआ है जो अपनी धार्मिक सभा को आर्य समाज से नामित करते हैं। इन दिनों में अभिभावक अपितु इस

Ⓟ84 सम्प्रदाय के प्रवर्तक एक पंडित साहिब हैं नाम Ⓟदयानन्द है और हम इस सम्प्रदाय को नया सम्प्रदाय इस कारण कहते हैं कि समस्त सिद्धान्त जिनका यह सम्प्रदाय पाबन्द है और वे समस्त विचार और कल्पनाएँ वेद के संबंध में इस सम्प्रदाय ने पैदा की हैं वे सामूहिक रूप में किसी प्राचीन हिन्दू सम्प्रदाय में नहीं पाई जातीं और न किसी वेदभाष्य और न किसी शास्त्र में सामूहिक रूप से कहीं उनका पता मिलता है अपितु इस विभिन्न विचारों के समस्त संग्रह में से कुछ तो पंडित दयानन्द साहिब के अपने ही हृदय की भड़ास हैं और कुछ ऐसे व्यर्थ परिवर्तन हैं कि किसी स्थान से सर और किसी स्थान से पैर लिया गया। अत: इसी प्रकार की कार्यवाहियों से इस सम्प्रदाय का ढांचा तैयार किया गया। प्रथम सिद्धान्त इस सम्प्रदाय का यही है कि जो परमेश्वर आत्माओं और शरीरों का स्रष्टा नहीं अपितु ये सब वस्तुएँ परमेश्वर की भांति अनादि और अपने अस्तित्व की स्वयं ही परमेश्वर हैं और परमेश्वर उनके निकट एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी बहादुरी से या संयोग से शासन तक पहुँच गया है और अपनी जैसी वस्तुओं पर शासन करता है तथा उन्हीं के सहारे और भरोसे पर उसकी परमेश्वरी बनी हुई है अन्यथा यदि वे वस्तुएँ न होतीं तो फिर बचाव न था और वे सब वस्तुएं अर्थात् आत्माएँ और शरीरों के छोटे पिण्डों के अपने अस्तित्व और अनश्वरता में परमेश्वर से बिल्कुल असंबंधित हैं। यहां तक कि यदि परमेश्वर का मरना भी मान लिया जाए तो उनकी कुछ भी हानि नहीं। इस प्रकार की बेहूदा बातों से हम ख़ुदा से क्षमायाचक हैं। इति.

में अन्य धर्मों की चर्चा करना न केवल उचित अपितु सच्चाई और ईमानदारी और पूरी सहानुभूति की यही मांग है कि अवश्य चर्चा की जाए तथा उनके भ्रमों को दूर करने तथा उनकी आस्थाओं के मिथ्या होने को प्रकट करने में किसी प्रकार की भूल-चूक और किसी तरह की गोपनीयता न रखी जाए, विशेष तौर पर जबकि वे लोग हमारी समझ में सदमार्ग से दूर और पृथक हैं। ℗हम अपने सच्चे हृदय से उन्हें ग़लती पर समझते हैं और उनके ℗85
सिद्धान्त को सत्य के विरुद्ध जानते हैं तथा उनका इन्हीं आस्थाओं पर इस नश्वर संसार से चले जाना महान् प्रकोप का कारण विश्वास करते हैं। अत: फिर इस स्थिति में यदि हम उन के सुधार से जान-बूझ कर आँखें बन्द कर लें और उन का पथ-भ्रष्ट होना और अन्य लोगों को पथ-भ्रष्टता में डालना आँखों से देखते हुए सहन करें तो फिर हमारा क्या ईमान और धर्म होगा और हम अपने ख़ुदा को क्या उत्तर देंगे और यद्यपि यह भी ज्ञात होता है कि कुछ संसार की पूजा करने वाले लोगों का जिन्हें ख़ुदा और उसके सच्चे धर्म की कुछ भी परवाह नहीं उन्हें अपने धर्म की ख़राबियाँ या इस्लाम की विशेषताएँ सुन कर हृदय बड़ा शोक ग्रस्त होगा और मुख बिगाड़ेंगे और कुछ का कुछ बोलेंगे, परन्तु हम आशा करते हैं कि ऐसे कई सत्य के अभिलाषी भी निकलेंगे जो इस पुस्तक के अध्ययन से सद्मार्ग को पाकर ख़ुदा के आगे धन्यवाद के सज्दे अदा करेंगे। ख़ुदा ने जो हमें सुझाया है वह उन्हें भी सुझा देगा और जो कुछ हम पर प्रकट किया है वह उन पर भी प्रकट कर देगा। वास्तव में यह पुस्तक उन्हीं के लिए लिखी गई है और यह सारा बोझ हमने उन्हीं के लिए उठाया है, वे ही हमारे वास्तविक सम्बोधित हैं तथा उन की भलाई और हमदर्दी हमारे हृदय में इतनी भरी हुई है कि न तो जीभ में शक्ति है कि वर्णन करे और न क़लम में शक्ति है कि लिखित में लाए।

بدل دردے کہ دارم از برائے طالبان حق   نمے گردد بیاں آں درد از تقریر کوتاہم

मैं सत्याभिलाषियों के लिए अपने हृदय में जो दर्द रखता हूँ उसे मैं अपने इस
संक्षिप्त लेख में वर्णन नहीं कर सकता। ☆

دل و جانم چناں مستغرق اندر فکر اوشان ست   کہ نے از دل خبر دارم نہ از جان خود آ گاہم

मेरे प्राण और मेरा हृदय उनकी चिन्ता में इस प्रकार तल्लीन है कि मैं अपने हृदय
और प्राणों से खोया हुआ हूँ। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

بدیں شادم کہ غم از بہر مخلوقِ خدا دارم   ازیں درلذتم کز دردے خیزد زدل آہم

मैं इस बात से प्रसन्न हूँ कि मैं ख़ुदा की प्रजा का दर्द रखता हूँ उस दर्द के कारण जो मेरे हृदय से उठता है मैं आनन्द विभोर हो जाता हूँ। ☆

مرا مقصود و مطلوب و تمنا خدمت خلق است   ہمیں کارم ہمیں بارم ہمیں رسم ہمیں راہم

मेरा उद्देश्य, मेरा आशय, मेरी अभिलाषा प्रजा की सेवा है यही मेरा कार्य, यही मेरा दायित्व, यही मेरी परम्परा, यही मेरा मार्ग है। ☆

نہ من از خود نہم در کوچۂ پند و نصیحت پا   کہ ہمدردی برد آنجا بہ جبر و زور و اکراہم

मैं प्रवचन और सदुपदेश के कूचे में स्वयं नहीं जाता अपितु प्रजा की हमदर्दी बलपूर्वक, और बलात मुझे ले जाती है। ☆

غم خلق خدا صرف از زباں خوردن چہ کارست ایں   گرش صد جاں بہ پا ریزم ہنوزش عذر میخواہم

प्रजा का शोक केवल मौखिक रूप से प्रदर्शित करना, यह भी कोई कार्य है यदि मैं उसके लिए सैकड़ों प्राणों को भी न्यौछावर कर दूँ तब भी मैं क्षमा चाहूँगा। ☆

Ⓟ86 Ⓟ چو شام پر غبار و تیرہ حال عالمے بینم   خدا بروے فرود آرد دعا ہائے سحرگاہم

धूमिल और अंधकारमय सायं की भांति मैं संसार की दशा देख रहा हूँ। अल्लाह मेरी प्रात:काल की दुआ को अपनी स्वीकारिता से अवश्य सम्मानित करेगा। ☆

अत: अब समस्त सदात्मा लोगों की सेवा में निवेदन है कि मुझ ख़ाकसार को एक वास्तविक शुभचिन्तक और हार्दिक हमदर्द समझ कर मेरी इस पुस्तक का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें और जैसा कि मनुष्य अपने मित्र की बात पर बहुत विचार करता है और जहां तक संभव हो उसकी हमदर्दी से भरी नसीहतों को दुर्भावना की दृष्टि से नहीं देखता और यदि वास्तव में वे नसीहतें उसके पक्ष में अच्छी और लाभप्रद हों तो अपनी हठ त्याग कर उन्हें स्वीकार कर लेता है अपितु उस मित्र का कृतज्ञ और आभारी होता है जो हार्दिक प्रेम और सच्चाई से उस का उपदेष्टा (नसीहत करने वाला) बना और जिन बातों में उसकी भलाई और हित था उनसे उसे अवगत कराया। इसी प्रकार मैं भी प्रत्येक क़ौम के बुज़ुर्गों, बुद्धिमानों और विद्वानों से आशान्वित हूँ कि इस्लाम की सच्चाई के संबंध में मैंने जो-जो तर्क और सबूत लिखे हैं या जिन-जिन कारणों से मैंने क़ुर्आन करीम का ख़ुदा

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

की वाणी होना, श्रेष्ठ और उच्चतम होना दूसरी इल्हामी पुस्तकों से सिद्ध किया है, यदि उन प्रमाणों को पूर्ण और अद्वितीय पाएँ तो न्याय और ख़ुदा के भय से स्वीकार करें तथा यों ही लापरवाही और दुर्भावना से विमुख न हों। (2)

خاکساریم وسخن از رہ غربت گوئم   یعلم اللہ کہ بکس نیست غبارے مارا

Ⓟمانہ بیہودہ پے ایں سروکارے برویم   جلوۂ حسن کشد جانب یارے مارا   Ⓟ87

(अनुवाद :-हम तो ख़ाकसार हैं और अनोखी शैली में अपनी बात व्यक्त कर रहे हैं। निश्चय ही ख़ुदा तआला जानता है कि हमारे अन्दर किसी के प्रति द्वेषभाव नहीं है। हम इन कार्यों हेतु व्यर्थ में नहीं जाते,प्रियतम की सुन्दरता की झलक हमें उसकी ओर आकर्षित करके ले जाती है। *अनुवादक*)

हाशिया न. (2) Ⓟयदि इस्लाम के विरोधियों में से कोई यह ऐतिराज़ करे कि क़ुर्आन Ⓟ86 करीम को समस्त इल्हामी किताबों से श्रेष्ठ और उच्चतम ठहराने में यह अनिवार्य हो जाता है कि दूसरी किताबें निम्न स्तर की हों जबकि वह एक ख़ुदा का कलाम है। इसमें निम्न और उच्च क्यों कर प्रस्तावित हो सकता है। इसका उत्तर यह है कि नि:सन्देह इल्हाम की दृष्टि से सब किताबें समान हैं परन्तु धर्म की पूर्णता के मामलों में अधिकता की दृष्टि से कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता है। अत: इसी दृष्टि से क़ुर्आन करीम को समस्त किताबों पर श्रेष्ठता प्राप्त है क्योंकि धर्म की पूर्णता के जितने मामले क़ुर्आन करीम में जैसे एकेश्वरवाद, प्रत्येक प्रकार के शिर्क का निषेध, अध्यात्मिक रोगों का इलाज, मिथ्या धर्मों के मिथ्या होने पर तर्क, सच्ची आस्थाओं को प्रमाणित करने वाले तर्क इत्यादि बड़े ज़ोर और प्रबलता के साथ वर्णन किए गए हैं जो अन्य पुस्तकों में नहीं हैं। जैसा कि हम इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में इस दावे के सबूत में विस्तार पूर्वक चर्चा करेंगे।

यदि यह सन्देह उत्पन्न हो कि ख़ुदा तआला ने धार्मिक वास्तविकताओं और अध्यात्म ज्ञानों को समस्त पुस्तकों में समान रूप से क्यों नहीं लिखा तथा क़ुर्आन करीम को सर्वाधिक विशेषताओं से परिपूर्ण संकलनकर्ता क्यों रखा। तो ऐसा सन्देह भी केवल उस व्यक्ति के हृदय में गुज़रेगा कि जो वह्यी की Ⓟवास्तविकता को नहीं Ⓟ87 जानता और इस बात का ज्ञान नहीं रखता कि किन प्रेरणाओं और किस प्रकार से वह्यी उतरती है। अत: ऐसे व्यक्ति पर स्पष्ट रहे कि वह्यी की मूल वास्तविकता

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

सज्जनो ! मनुष्य की बुद्धिमत्ता और चतुराई सब इसी में है कि वह इन सिद्धान्तों और आस्थाओं को जो मृत्यु के पश्चात् हमेशा के सौभाग्य या दुर्भाग्य का कारण ठहरेंगे इसी जीवन में भली-भांति ज्ञात करके सत्य पर स्थापित और असत्य से विरक्त हो और अपनी उन संवेदनशील आस्थाओं का आधार जिन्हें वह मुक्ति का आश्रय जानता है और अन्तिम समृद्धि का कारण समझता है, पूर्ण और दृढ़ सबूत पर रखे और ऐसी बातों पर जो बचपन में किसी पालने वाली आया ने सिखाई थीं अभिमानी और मुग्ध न रहे क्योंकि केवल उन भ्रमों और विचारों पर भरोसा करके बैठे रहना कि जिनकी सच्चाई का अपने हाथ में एक भी तर्क नहीं वास्तव में स्वयं को धोखा देना है। प्रत्येक बुद्धिमान जानता और समझता है कि ऐसी पुस्तकें या पुस्तकों के ऐसे सिद्धान्त कि जिन्हें विभिन्न जातियों ने परमेश्वर की प्रसन्नता और अपनी आज़ादी का माध्यम समझ रखा है तथा जिसके न मानने से एक जाति दूसरी जाति को नर्क की ओर भेज रही है, इल्हामी साक्ष्य के अतिरिक्त बौद्धिक
Ⓟ88 तर्कों से भी सिद्ध करना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि Ⓟयद्यपि इल्हामी साक्ष्य बड़ी

शेष हाशिया न. ②

यह है कि वह्यी का उतरना किसी ऐसे कारण के बिना जो वह्यी के उतरने का अभियाचक हो कदापि नहीं होता अपितु आवश्यकता पड़ जाने के पश्चात् होता है और जैसी-जैसी आवश्यकताएं सामने आती हैं उनके अनुसार वह्यी भी उतरती है, क्योंकि वह्यी के अध्याय में परमेश्वर का यही नियम जारी है कि जब तक वह्यी का प्रेरक कारण उत्पन्न न हो तब तक वह्यी नहीं उतरती। स्वयं प्रकट भी है कि बिना किसी कारण की उपस्थिति के जो वह्यी का प्रेरक हो यों ही अकारण वह्यी का उतरना एक अलाभकारी कार्य है जो परमेश्वर की ओर जो स्वच्छंद नीतिवान है और प्रत्येक कार्य नीति और हित को दृष्टि में रखते हुए समयानुसार करता है सम्बद्ध नहीं हो सकता। अत: समझना चाहिए कि क़ुर्आन करीम में जो सच्ची और ख़ुदाई शिक्षा पूर्ण और विस्तार पूर्वक वर्णन की गई तथा अन्य किताबों में वर्णन न हुई या धर्म की पूर्णता के जो-जो मामले इस में लिखे गए, अन्य किताबों में नहीं लिखे गए तो इसका यही कारण है कि पूर्वकालीन किताबों को वह्यी के वे समस्त प्रेरक कारण सामने न आए और क़ुर्आन करीम के सामने आ गए और क़ुर्आन करीम के युग से पूर्वकालीन युग में वह्यी के समस्त प्रेरक कारणों का स्वयं प्रकट हो जाना एक दुर्लभ और असंभव बात थी। अत: इस बात का प्रमाण भी प्रथम अध्याय में पूर्ण तर्कों के साथ दिया जाएगा। इसी से।

विश्वसनीय ख़बर है और विश्वास की श्रेणियों की पूर्णता इसी पर निर्भर है, परन्तु इल्हाम के दावेदार की कोई पुस्तक किसी ऐसी बात की शिक्षा दे कि जिसके निषिद्धीकरण पर स्पष्ट रूप से बौद्धिक तर्क स्थापित होते हैं तो वह बात कदापि उचित नहीं ठहर सकती अपितु वह पुस्तक ही मिथ्या, अक्षरांतरित अथवा अर्थान्तरित कहलाएगी कि जिसमें बुद्धि के विरुद्ध कोई ऐसी बात लिखी गई। अतः जबकि प्रत्येक बात के वैध या अवैध होने का निर्णय बुद्धि के आदेश पर ही निर्भर है और संभव तथा असंभव (दुर्लभ) की पहचान करने के लिए बुद्धि ही मापदण्ड है तो इस से अनिवार्य हुआ कि मुक्ति के सिद्धान्त की सत्यता को भी बुद्धि द्वारा ही सिद्ध किया जाए, क्योंकि यदि विभिन्न धर्मों के सिद्धान्त बौद्धिक तर्कों द्वारा सिद्ध न हों अपितु उनका मिथ्या, निषेध और दुर्लभ होना सिद्ध हो तो हमें क्यों कर ज्ञात हो कि ज़ैद (काल्पनिक नाम) के सिद्धान्त सच्चे और बकर (काल्पनिक नाम) के सिद्धान्त झूठे हैं या हिन्दुओं की पुस्तक ग़लत और बनी इस्राईल की पुस्तकें सही हैं तथा यदि सच और झूठ में बुद्धि द्वारा कुछ अन्तर स्थापित न हो तो फिर इस परिस्थिति में एक सत्य का अभिलाषी झूठ और सत्य में अन्तर करके झूठ का क्योंकर परित्याग करे और सत्य को धारण करे और क्योंकर ऐसे सिद्धान्तों के स्वीकार न करने से कोई व्यक्ति ख़ुदा तआला के समक्ष दोषी ठहरे[3] और जबकि हम वास्तव में अपनी मुक्ति के लिए ऐसी आस्थाओं के मुहताज हैं कि जिनका सच्चा होना बौद्धिक तर्कों से सिद्ध होता, फिर यह प्रश्न होगा कि वे सच्ची आस्थाएँ हमें क्योंकर ज्ञात हों और किसी निश्चय, पूर्ण और सरल माध्यम Ⓟसे हम समस्त आस्थाओं को उन के तर्कों Ⓟ89
सहित सरलता पूर्वक ज्ञात कर लें और वास्तविक विश्वास (जो अनुभव द्वारा प्राप्त हो) तक पहुँच जाएं। अतः इसके उत्तर में उल्लेख किया जाता है कि वह निश्चय, पूर्ण और सरल माध्यम कि जिस से बिना किसी कष्ट, परिश्रम, बाधा, सन्देहों, भ्रमों, ग़लती और भूल के सही सिद्धान्त बौद्धिक तर्कों सहित ज्ञात हो जाएँ और पूर्ण विश्वास के साथ ज्ञात हों वह क़ुर्आन करीम है इसके अतिरिक्त संसार में कोई ऐसी पुस्तक नहीं और न कोई

हाशिया न. 3 Ⓟअनुचित सिद्धान्त जिन के प्रतिबंध पर बुद्धि स्पष्ट तर्क प्रस्तुत करती Ⓟ88
है कदापि सच्चे नहीं हो सकते क्योंकि यदि वे सच्चे हों तो फिर प्रत्येक बात में वास्तविक बौद्धिक तर्कों का विश्वास उठ जाएगा। अतः जब वही सिद्धान्त जो मुक्ति के आधार समझे गए थे सच्चे न हुए तो फिर निश्चय ही ऐसे लोग जो उन

ऐसा दूसरा साधन है जिससे यह हमारा महान् उद्देश्य पूर्ण हो सके। (4)

सज्जनो! मैंने पूरे विश्वास के साथ ज्ञात कर लिया है और जो व्यक्ति इन बातों पर
Ⓟ90 विचार करेगा Ⓟकि जिन पर मैंने विचार किया है वह भी पूर्ण विश्वास के साथ ज्ञात कर लेगा कि वे समस्त सिद्धान्त जिन पर ईमान लाना प्रत्येक सौभाग्य के अभिलाषी पर अनिवार्य है और जिन पर हम सब की मुक्ति निर्भर है जिससे मनुष्य की परलोक की सारी समृद्धि सम्बद्ध है वह केवल क़ुर्आन करीम ही में सुरक्षित हैं और शेष समस्त किताबों के सिद्धान्त बिगड़ गए हैं और ऐसे कृत्रिम और बनावटी और नीतिगत सदमार्ग तथा स्वाभाविक स्रोत से दूर जा पड़े हैं कि उनके लिखने से भी हमें लज्जा आती है और हमारा यह कथन बिना खोज के नहीं। मैं सच-सच कहता हूँ कि इस पुस्तक
Ⓟ91 के लिखने से पूर्व एक बड़ी खोज की गई तथा Ⓟप्रत्येक धर्म की पुस्तक ईमानदारी, अमानतदारी, विचार और चिन्तन द्वारा देखी गई तथा क़ुर्आन करीम और उन किताबों

शेष हाशिया न. (3)

पर भरोसा किए बैठे थे बिना मुक्ति के रह जाएँगे तथा हमेशा के प्रकोप और सदा के लिए दण्ड के पात्र ठहरेंगे क्योंकि उनके अपने घर के सिद्धान्त तो झूठे निकले और सच्चे सिद्धान्तों को जो बुद्धि-संगत थे उन्होंने पहले ही स्वीकार न किया और यह बात इसी संसार में प्रकट है कि जो व्यक्ति किसी प्रतिबंधित, दुर्लभ, असत्य या मिथ्या बात को अपनी आस्था ठहराता है और तार्किक तथा प्रमाणित बातों को स्वीकार नहीं करता उसे कैसी-कैसी लज्जाएं उठानी पड़ती हैं और अन्वेषकों के मुख से क्या कुछ न सुनना पड़ता है अपितु उसका अपना ही हृदय स्वयं उसे हर समय आरोपी ठहराता है और कभी घबराकर स्वयं ही अपने हृदय को सम्बोधित करता है कि क्या व्यर्थ आस्था है जो मैंने धारण कर रखी है। अत: यह भी एक आध्यात्मिक प्रकोप है जो इसी संसार में उस पर उतरना आरम्भ हो जाता है। इति

Ⓟ89 **हाशिया न. (4)** Ⓟहमारा यह कथन कि सच्ची आस्थाओं की पहचान का निश्चित, पूर्ण और सरल माध्यम क़ुर्आन करीम के अलावा अन्य कोई नहीं यथास्थान पूर्ण तर्कों के साथ सिद्ध किया गया है और जो लोग अन्य पुस्तकों के पाबन्द हैं उन के सिद्धान्तों का ग़लत, असत्य और अनुचित होना पूर्ण खोज करने के

की परस्पर तुलना भी की और अधिकांश क़ौमों के प्रकाण्ड विद्वानों से शास्त्रार्थ भी होते रहे। अतएव जहां तक मानव शक्ति है सत्य के प्रकटन के लिए प्रत्येक प्रकार का प्रयास और परिश्रम किया गया। अन्ततः इन समस्त अन्वेषणों से यह बात प्रमाणित हो गई कि आज पृथ्वी पर समस्त इल्हामी किताबों में से एक क़ुर्आन करीम ही है जिस का ख़ुदा का कलाम (वाणी) होना ठोस तर्कों से प्रमाणित है, जिसके मुक्ति के सिद्धान्त बिल्कुल सच्चाई और स्वाभाविक प्रकृति पर आधारित हैं, जिसकी आस्थाएँ ऐसी Ⓟपूर्ण और Ⓟ92
सुदृढ़ हैं कि शक्तिशाली तर्क उनकी सच्चाई पर मुँह बोलते साक्षी हैं, जिस के आदेश मात्र सत्य पर स्थापित हैं, जिस की शिक्षाएँ प्रत्येक प्रकार के शिर्क के मिश्रण, बिदअत और सृष्टि-पूजा से पवित्र हैं, जिसमें एकेश्वरवाद, परमेश्वरीय श्रेष्ठता और परमेश्वर की विशेषताएँ प्रकट करने के लिए असीम जोश है, जिसमें यह विशेषता है कि सरासर परमेश्वर की एकेश्वरवाद से भरा हुआ है परमेश्वर के पवित्र अस्तित्व पर किसी प्रकार

शेष हाशिया न. (4) →

पश्चात दिखाया गया है, परन्तु कदाचित यहाँ ब्रह्म समाजी जो किसी इल्हामी किताब के पाबन्द नहीं और सच्चे सिद्धान्तों के जानने में केवल अपनी ही बुद्धि को पर्याप्त समझते हैं इस भ्रम को हृदय में स्थान दें कि क्यों मनुष्य की अकेली बुद्धि सच्चे सिद्धान्तों को जानने के लिए निश्चित, पूर्ण और सरल माध्यम नहीं यद्यपि उनका यह भ्रम इल्हाम की बहस में जो ख़ुदा ने चाहा तो शीघ्र ही जिसका उल्लेख विस्तार पूर्वक इसी पुस्तक में किया जाएगा तथा यथोचित दूर किया जाएगा, परन्तु इस स्थान पर भी उपर्युक्त भ्रम का निवारण आवश्यक है। अतः स्पष्ट हो कि यद्यपि यह सत्य है कि ख़ुदा ने मनुष्य को बुद्धि भी एक दीपक प्रदान किया है जिसका प्रकाश उसे सत्य और ईमानदारी की ओर आकर्षित करता है और कई प्रकार के सन्देह और आशंकाओं से सुरक्षित रखता है तथा भांति-भांति के निराधार विचारों और व्यर्थ भ्रमों को दूर करता है नितान्त लाभप्रद है, बहुत आवश्यक है, बड़ी नै'मत है परन्तु फिर भी बावजूद इन समस्त बातों और इन समस्त विशेषताओं के इस में यह हानि है कि केवल वही अकेला वस्तुओं की वास्तविकता को पहचानने में पूर्ण विश्वास की श्रेणी तक नहीं पहुँचा सकता क्योंकि पूर्ण विश्वास का पद यह है कि जैसा कि वस्तुओं की वास्तविकता की घटना में विद्यमान है मनुष्य को भी उन पर ऐसा ही विश्वास हो जाए कि हां

की क्षति, दोष और अयोग्य विशेषताओं का धब्बा नहीं लगाता और किसी आस्था को ज़बरदस्ती स्वीकार कराना नहीं चाहता अपितु जो शिक्षा देता है उसकी सच्चाई के कारण पहले दिखा देता है और प्रत्येक मतलब और उद्देश्य को सबूतों और तर्कों से सिद्ध करता है तथा प्रत्येक सिद्धान्त की सच्चाई पर स्पष्ट तर्क वर्णन करके पूर्ण विश्वास की श्रेणी और पूर्ण मारिफ़त (ख़ुदा को पहचानने का ज्ञान) तक पहुँचाता है और जो जो ख़राबियाँ और अपवित्रताएँ, बाधाएँ और बिगाड़ लोगों की आस्थाओं, कर्मों, कथनों और कार्यों में पड़े हुए हैं उन समस्त ख़राबियों को प्रकाशमान तर्कों द्वारा दूर करता है और वे समस्त शिष्टाचार सिखाता है जिनका ज्ञान मनुष्य को मनुष्य बनने के लिए नितान्त आवश्यक है और प्रत्येक बिगाड़ को उसी शक्ति से दूर करता है कि जिस शक्ति से वह आजकल फैला हुआ है, उसकी शिक्षा नितान्त सीधी, दृढ़ और उचित है जैसे क़ुदरती आदेशों का एक दर्पण है तथा स्वाभाविक कानून का एक प्रतिबिम्बित चित्र है और हार्दिक दृष्टि और

शेष हाशिया न. (4) ⟶

वास्तव में विद्यमान हैं, परन्तु अकेली बुद्धि मनुष्य को उस श्रेष्ठ श्रेणी के विश्वास का स्वामी नहीं बना सकती क्योंकि बुद्धि का अन्तिम श्रेणी का आदेश यह है कि वह किसी वस्तु के विद्यमान होने की आवश्यकता को सिद्ध करे जैसा किसी वस्तु के संबंध में यह आदेश दे कि इस वस्तु का होना आवश्यक है या इस वस्तु को होना चाहिए परन्तु ऐसा आदेश कदापि नहीं दे सकती कि निश्चय ही यह वस्तु है भी और यह पूर्ण विश्वास कि मनुष्य का ज्ञान किसी बात के संबंध में **होना चाहिए** की श्रेणी से उन्नति करके **है** के पद तक पहुँच जाए तब प्राप्त होता है जब बुद्धि के साथ कोई दूसरा ऐसा साथी मिल जाता है कि जो उस के काल्पनिक कारणों की पुष्टि करके देखी हुई घटनाओं का लिबास पहनाता है अर्थात् जिस बात के संदर्भ में बुद्धि कहती है कि होना चाहिए वह साथी उस बात के सन्दर्भ में यह सूचना दे देता है कि वास्तव में वह बात मौजूद भी है
Ⓟ७० क्योंकि जैसा हम अभी वर्णन कर चुके Ⓟहैं कि बुद्धि केवल वस्तु की आवश्यकता को सिद्ध करती है स्वयं वस्तु को सिद्ध नहीं कर सकती। स्पष्ट है किसी वस्तु की आवश्यकता का सिद्ध होना पृथक बात है और स्वयं उस वस्तु का सिद्ध हो जाना पृथक बात। बहरहाल बुद्धि के लिए एक साथी की आवश्यकता हुई ताकि वह साथी बुद्धि के इस काल्पनिक और अपूर्ण कथन का जो **होना चाहिए** के

बुद्धिमत्ता के लिए आँखों को प्रकाशमान करने वाला एक सूर्य है तथा बुद्धि के संक्षेप को विस्तार देने वाला और उनकी क्षतिपूर्ति करने वाला है, परन्तु अन्य किताबें जो इल्हामी कहलाती हैं जब उनकी वर्तमान स्थिति को देखा गया तो भली-भांति सिद्ध हो गया कि वे सब किताबें इन पूर्ण विशेषताओं से बिल्कुल खाली और रिक्त हैं तथा ख़ुदा की हस्ती और विशेषताओं के संदर्भ में उनमें भांति-भांति की दुर्भावनाएँ पाई जाती हैं और
उन ℗किताबों के अनुयायी बड़ी विचित्र आस्थाओं के पाबन्द हो रहे हैं उनमें से कोई ℗93
सम्प्रदाय ख़ुदा के स्रष्टा और सर्वशक्तिमान होने से इन्कार कर रहा है और अनादि तथा स्वयंभू होने में उसका भाई और भागीदार बन बैठा है, कोई मूर्तियों, चित्रों और देवताओं को उसके कार्यों में हस्तक्षेपी और उसकी बादशाहत का प्रधानमंत्री समझ रहा है, कोई उसके लिए, बेटे, बेटियाँ, पोते, पोतियाँ घड़ रहा है तो कोई स्वयं उसी को मगरमच्छ और कछवे का जन्म दे रहा है। अतएव एक दूसरे से बढ़कर उस पूर्ण हस्ती को ऐसा सोच रहे

शेष हाशिया न. 4 →

शब्द से बोला जाता है। मौजूद और पूर्ण कथन से जो **है** के शब्द से अभिप्राय किया जाता है जो हानि करे और घटनाओं से जैसा कि वह वास्तव में घटित हैं अवगत कराए। अत: ख़ुदा ने जो बड़ा दयालु और कृपालु है और मनुष्य को विश्वास तक पहुंचाना चाहता है इस आवश्यकता को पूर्ण किया है और बुद्धि के लिए कई साथी नियुक्त करके पूर्णविश्वास का मार्ग उस पर खोल दिया है ताकि मनुष्य का हृदय जिस का समस्त सौभाग्य और मुक्ति पूर्ण विश्वास पर निर्भर है अपने वांछित सौभाग्य से वंचित न रहे और **होना चाहिए** के जटिल और ख़तरनाक पुल को कि बुद्धि ने सन्देहों और आशंकाओं के दरिया पर बांधा है बहुत शीघ्र आगे पार करके **है** के भव्य महल में जो शान्ति और संतोष गृह है प्रवेश कर जाए और वे बुद्धि के साथी जो उसके मित्र और सहायक हैं प्रत्येक स्थान और अवसर में अलग-अलग हैं परन्तु बौद्धिक निर्भरता की दृष्टि से तीन से अधिक नहीं और तीनों का विवरण इस प्रकार है कि यदि बुद्धि का आदेश संसार की अनुभूतियों (महसूसात) और मौजूद वस्तुओं (मशहूदात) से संबंधित हो जो प्रतिदिन देखे जाते या सुने जाते या सूँघे जाते या टटोले जाते हैं तो उस समय उसका साथी जो उसके आदेश को पूर्ण विश्वास तक पहुँचाए सही अवलोकन (मुशाहिदा) है जिसका नाम अनुभव है और यदि बुद्धि का आदेश

हैं कि जैसे वह नितान्त दुर्भाग्यशाली है कि जिस के लिए बुद्धि जिस पूर्ण विशेषता को चाहती थी वह उसे उपलब्ध न हुआ। अब हे भाइयो ! कहने का सारांश यह है कि जब मैंने ऐसी-ऐसी मिथ्या आस्थाओं में लोगों को ग्रसित देखा और इस श्रेणी की पथ-भ्रष्टता में पाया, जिसे देखकर हृदय पिघल उठा तथा हृदय और शरीर कांप उठा तो मैंने उनके पथ-प्रदर्शन हेतु इस पुस्तक का लिखना स्वयं पर अनिवार्य कर्तव्य और अनिवार्य ऋण देखा जो अदा किए बिना उतर नहीं सकता। अतः इस पुस्तक का मसौदा ख़ुदा की कृपा और दया से थोड़े ही दिनों में एक थोड़ी अपितु बहुत थोड़ी अवधि में जो स्वभाव विपरीत एक चमत्कार था तैयार हो गया और वास्तव में यह पुस्तक सत्य के अभिलाषियों को एक शुभ संदेश और इस्लाम धर्म के इन्कार करने वालों पर एक ख़ुदाई सबूत है जिस का उत्तर उन्हें प्रलय तक उपलब्ध नहीं हो सकता। इसी कारण इस के साथ एक दस हज़ार रुपए का विज्ञापन भी सम्मिलित किया गया ताकि प्रत्येक इन्कारी और शत्रु पर जो इस्लाम की

शेष हाशिया न. (4) ⟶

उन घटनाओं से संबंधित हो जो विभिन्न युगों और स्थानों में घटित होती रही हैं तो उस समय उसका एक और मित्र (साथी) बनता है जिसका नाम इतिहास, अख़बार, पत्र और पत्राचार है और वह भी अनुभव की तरह बुद्धि के धुंधले प्रकाश को ऐसा उज्ज्वल कर देता है कि फिर उसमें सन्देह करना एक मूर्खता, उन्माद और पागलपन होता है यदि बुद्धि का आदेश उन घटनाओं से संबंधित हो जो अनुभूतियों (महसूसात) से परे हैं जिन्हें न हम आँख से देख सकते हैं, न कान से सुन सकते हैं और न हाथ से टटोल सकते हैं और न इस संसार के इतिहास से ज्ञात कर सकते हैं तो उस समय उसका तीसरा मित्र बनता है जिस का नाम इल्हाम और वह्यी है और प्रकृति का नियम भी यही चाहता है कि जैसे पहले दो स्थानों में अपूर्ण बुद्धि को दो मित्र प्राप्त हो गए हैं तीसरे स्थान में भी प्राप्त हुआ हो,
Ⓟ91 Ⓟक्योंकि स्वाभाविक नियमों में मतभेद नहीं हो सकता विशेषकर जब ख़ुदा ने संसार के ज्ञानों और कलाओं में जिन की क्षति, भूल और त्रुटि में इतनी हानि भी नहीं मनुष्य को अपूर्ण रखना नहीं चाहा तो इस स्थिति में ख़ुदा के सन्दर्भ में यह बड़ी दुर्भावना होगी कि ऐसा विचार किया जाए कि उस ने इन मामलों की पूर्ण पहचान के संबंध में कि जिन पर पूर्ण विश्वास रखना परलोक में मुक्ति की शर्त है तथा जिनके संबंध में सन्देह रखने से हमेशा का नरक तैयार है मनुष्य को अपूर्ण

सच्चाई का इन्कारी है समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा हो और अपने मिथ्या विचार और झूठी आस्था पर अहंकारी और मुग्ध न रहे।

بیا اے طلبگارِ صدق و صواب بخواں از سر خوض و فکر ایں کتاب

हे सत्य और उचित के अभिलाषी इस पुस्तक को ध्यानपूर्वक अध्ययन कर। ☆

گرت بر کتابم فتد یک نگاہ بدانی کہ تا جنت این ست راہ

यदि तेरी एक दृष्टि मेरी इस पुस्तक पर पड़ जाए तो तू निश्चय ही जान लेगा कि स्वर्ग का यही मार्ग है। ☆

مگر شرطِ انصاف و حق پروریست کہ انصاف مفتاح دانشوریست

परन्तु न्याय और सत्य की शर्त आवश्यक है क्योंकि न्याय ही बुद्धिमत्ता की कुंजी है। ☆

शेष हाशिया न. (4) ⟶

रखना चाहा है और उसके परलोक के ज्ञान को केवल ऐसे-ऐसे अपूर्ण विचारों पर समाप्त कर दिया है जिनका समस्त आधार मात्र अटकलों पर है और उसके लिए ऐसा कोई माध्यम नियुक्त नहीं किया जो निश्चत साक्ष्य प्रदान करके उसके हृदय को यह सांत्वना और धैर्य प्रदान करे कि वह मुक्ति के सिद्धान्तों कि जिनका होना बुद्धि बतौर अनुमान और अटकल के प्रस्तावित करती है वे वास्तव में मौजूद ही हैं तथा जिस आवश्यकता को बुद्धि स्थापित करती है वह काल्पनिक आवश्यकता नहीं अपितु निश्चित और वास्तविक आवश्यकता है। अब जबकि यह सिद्ध हुआ कि अध्यात्म ज्ञान में पूर्ण विश्वास केवल इल्हाम ही के माध्यम से प्राप्त होता है और मनुष्य को अपनी मुक्ति के लिए पूर्ण विश्वास की आवश्यकता है और स्वयं पूर्ण विश्वास के बिना ईमान सुरक्षित ले जाना कठिन। अतः परिणाम प्रकट है कि मनुष्य को इल्हाम की आवश्यकता है। यहां यह भी जानना चाहिए कि यद्यपि परमेश्वर का प्रत्येक इल्हाम विश्वास दिलाने के लिए ही आया था, परन्तु क़ुर्आन करीम ने इस श्रेष्ठ श्रेणी के विश्वास की बुनियाद डाली कि बस अन्त ही कर दिया। इस सूक्ष्मता का विवरण यह है कि पूर्व में जितने इल्हाम ख़ुदा की ओर से उतरे वे केवल घटना की साक्ष्य अदा करते रहे और उनकी सारी शैली मनक़ूलात (वह ज्ञान जिसमें दूसरों की कही हुई बातें वर्णन की जाएँ) की शैली थी और इसी कारण वे अन्त में बिगड़ गए और स्वार्थियों तथा अहंकारियों ने कुछ का कुछ समझ लिया, परन्तु

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

Ⓟ94 Ⓟدو چیز ست چوبان دنیا و دیں دلِ روشن و دیدۂ دُور بیں

दो वस्तुएं धर्म और संसार की रक्षक हैं प्रथम प्रकाशमान हृदय द्वितीय दूरदर्शिता। ☆

کسے کو خرد دارد و نیز داد نخواہد مگر راہِ صدق و سداد

जिस व्यक्ति में बुद्धि और न्याय है वह व्यक्ति केवल सत्य का मार्ग चाहता है। ☆

نہ پیچد سراز آنچہ پاک ست وراست نتابد رُخ از آنچہ حق و بجاست

वह सत्य और ईमानदारी से विमुख नहीं होता इसी प्रकार वह सच्चाई और उचित बातों से मुख नहीं मोड़ता। ☆

शेष हाशिया न. (4)

क़ुर्आन करीम की शिक्षा ने बुद्धि का भी सारा भार स्वयं उठा लिया। मनुष्य को प्रत्येक प्रकार की कठिनाइयों से छुटकारा दिलाया। स्वयं ही सच्चा संदेशवाहक बन कर आध्यात्म ज्ञानों की घटनाओं की ख़बर दी, फिर स्वयं ही बौद्धिक तौर पर इस ख़बर को प्रमाण तक पहुँचाया। जो व्यक्ति देखे उसे ज्ञात हो कि क़ुर्आन करीम में दो बातों की निरन्तरता प्रारम्भ से अन्त तक पाई जाती है। एक बौद्धिक कारण, दूसरे इल्हामी साक्ष्य। ये दोनों बातें क़ुर्आन करीम में दो बड़ी नहरों की तरह जारी हैं, जो एक दूसरे के समानान्तर और एक दूसरे पर प्रभाव डालती चली जाती हैं। बौद्धिक कारणों की नहर यह प्रकट करती गई है कि मामला ऐसा होना चाहिए और उसके मुकाबले पर जो इल्हामी साक्ष्य की नहर है वह बुज़ुर्ग और सच्चे संदेशवाहक की
Ⓟ92 भांति Ⓟयह हृदयों को सांत्वना देती गई है कि वास्तव में भी ऐसा ही है तथा क़ुर्आनी शैली से सत्याभिलाषी को सत्य के ज्ञात करने में जो आसानी है वह भी प्रकट है क्योंकि क़ुर्आन करीम का अध्ययनकर्ता साथ-साथ बौद्धिक तर्कों को भी ज्ञात करता जाता है। ऐसे तर्क कि जिस से अधिक ठोस तर्क किसी दार्शनिक के रजिस्टर में लिखित नहीं, जैसा कि हम इस दावे को इसी पुस्तक के प्रथम अध्याय में सिद्ध करेंगे और फिर दूसरी ओर ख़ुदा के इल्हाम से वास्तविक साक्ष्य पाकर श्रेष्ठ श्रेणी के विश्वास को पहुँच जाता है और यह सब कुछ उसे मुफ़्त प्राप्त होता है जो अन्य व्यक्ति को जीवन पर्यन्त कठोर परिश्रम और पराक्रम से भी प्राप्त नहीं हो सकता। अत: सिद्ध हुआ कि निश्चित, पूर्ण और सरल माध्यम सत्य के सिद्धान्तों और उन आस्थाओं का पहचानना जिन के विश्वसनीय ज्ञान पर हमारी मुक्ति निर्भर है, केवल क़ुर्आन करीम है और यही सिद्ध करना था। इसी से।

☆-प्रस्तुत अनुवाद अनुवादक की ओर से है।

چو بیند سخن راز حق پرورے دِگر در سخن کم کند داورے

जब वह न्याय की दृष्टि से बात को देखता है तो वह अकारण हठधर्मी नहीं करता। ☆

الا ایکہ خواہی نجات از خدا بقصر نجات از درِ حق در آ

हे ख़ुदा से मुक्ति प्राप्ति के अभिलाषी सतर्क हो जा और मुक्ति गृह में सत्य के द्वार से प्रवेश कर। ☆

بحق گرد و حق را بخاطر نشاں منہ دل بباطل جو کژ خاطراں

सत्य के साथ रह और सत्य को ही हृदय में बैठा, पापियों की तरह झूठ से हृदय न लगा। ☆

مشو عاشق زشت رُو زینہار وگر خوب گم گردد از روزگار

तू कुरूप का कदापि प्रेमी न बन यद्यपि संसार से सुन्दरता दुर्लभ हो जाए। ☆

زمین از زراعت تہی داشتن بہ از تخم خار و خسک کاشتن

धरती को खेती से रिक्त रखना उसमें कांटों और घास-फूस बोने से उत्तम है। ☆

اگر گرددت دیدۂ عقل باز بجوئی رہِ حق زِ عجز و نیاز

यदि तेरा विवेक जागृत हो जाए तो तू विनम्रता और ख़ाकसारी से सद्मार्ग ढूँढे। ☆

طلبگار گردی بصدقِ دلی بخواب اندر اندیشہ ہم نگسلی

यदि तू हार्दिक सत्य के साथ उसका अभिलाषी बन जाए और स्वप्न में भी लापरवाह न रहे। ☆

نگیری دمے استراحت ازاں مگر چوں زحق بازیابی نشاں

तो उसके कारण तू थोड़ी देर के लिए भी आराम प्राप्त न कर सके यहाँ तक कि ख़ुदा का निशान प्राप्त कर ले। ☆

اجل برسرت ہستی ات چوں حباب توزیں ساں سر اندر نہادہ بخواب

मृत्यु तेरे सर पर है और तेरी हस्ती बुलबुले के समान है और तू निश्चिन्त होकर सोया हुआ है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

بآباء و اجداد پیشیں نگر کہ چوں در گذشتند زیں رہگذر

अपने पहले बाप-दादों को देख कि वे इस संसार से कैसे कूच कर गए। ☆

بیادت نماندست انجامِ شاں فراموش کردی در اندک زماں

उनका परिणाम क्या तुझे स्मरण नहीं रहा तूने थोड़े समय में ही उसे भी भुला दिया। ☆

خودت با اجل چیست از مکر و بند چہ دیوار داری کشیدہ بلند

मृत्यु के लिए तेरे पास स्वयं क्या बहाने हैं, क्या तूने कोई ऊँची दीवार बना रखी है। ☆

چو ناگہ نہنگ اجل درکشد چرا آدمی ایں چنیں سرکشد

जब सहसा मृत्यु रूपी मगरमच्छ (मनुष्य को) खींच ले जाता है तो फिर मनुष्य इतना अभिमान क्यों करे। ☆

بدنیائے دوں دِل مبند اے جواں تماشائے آں بگذرد ناگہاں

हे युवक! इस तिरस्कृत संसार से हृदय न लगा क्योंकि इसका तमाशा अचानक समाप्त हो जाता है। ☆

Ⓟبدنیا کسے جاودانہ نماند بہ یک رنگ وضع زمانہ نماند Ⓟ95

इस संसार में कोई सदैव नहीं रहा और समय भी एक स्थिति पर नहीं रहता। ☆

بدست خود از حالت دردناک سپردیم بسیار کس را بہ خاک

हम ने अपने हाथों से दुखदायी स्थिति में बहुत से लोगों को मिट्टी में दफ़्न किया है। ☆

چو خود دفن کردیم خلقے کثیر چرا یاد ناریم روز اخیر

जब हमने स्वयं बहुत से लोगों को दफ़्न कर दिया है तो हम अपनी मृत्यु का दिन क्यों स्मरण न रखें। ☆

ز خاطر چرا یادشاں افگنیم نہ ما آہن جسم و روئیں تنیم

हम अपने हृदयों से उन की यादें क्यों मिटा दें। हम लोहे और कांसे के बने हुए तो नहीं हैं। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

بترس اے معاند ز قہر خدا کہ سخت ست قہر خداوند ما

हे शत्रु! ख़ुदा के प्रकोप से भयभीत रह क्योंकि हमारे ख़ुदा का प्रकोप नितान्त कठोर है। ☆

بہ ناکردنِ ترس پروردگار بسا شہر وِیراں شدند و دیار

अल्लाह तआला का भय न करने के कारण बहुत से नगर और बहुत से देश उजड़ गए। ☆

ازاں بے ہراساں نشانے نماند نشانے چہ یک استخوانے نماند

उन निडर लोगों का कोई पता-ठिकाना तक नहीं रहा, निशान तो निशान एक अस्थि भी शेष नहीं रही। ☆

ہمہ زیرکی در ہراسیدن ست وگرنہ بلا بر بلا دیدن ست

बद्धिमता ख़ुदा से डरने में है अन्यथा तो कष्ट ही कष्ट देखने पड़ेंगे। ☆

بہ ناپاکی و خبث ہا زیستن بہ از این چنیں زیست نازیستن

मलिनता और अपवित्रता में जीवन व्यतीत करना। ऐसे जीवन से तो मृत्यु उत्तम है। ☆

بیاؤ بنہ سوئے انصاف گام زکیں توبہ کردن چرا شد حرام

आ और न्याय की ओर अग्रसर हो ईर्ष्या के कारण पश्चाताप करना अवैध कैसे हो सकता है। ☆

یقیں داں کہ قولم زحق پروریست نہ لاف وگزاف ست ونے سرسریست

निश्चय ही जान ले कि मेरी यह बात न्याय पर आधारित है सरसरी डींगें नहीं। ☆

بہر مذہبے غور کردم بسے شنیدم بدل حجت ہر کسے

प्रत्येक धर्म पर मैंने अत्यन्त छान-बीन की है और मैंने प्रत्येक का तर्क ध्यानपूर्वक सुना। ☆

بخواندم ز ہر ملتے دفترے بدیدم ز ہر قوم دانشورے

मैंने हर मिल्लत की पुस्तकों का अध्ययन किया है और मैंने प्रत्येक क़ौम के बुद्धिमानों को देखा। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

ہم از کودکی سوئے ایں تاختم دریں شغل خود را بینداختم

बचपन से ही इस मार्ग की ओर भाग-दौड़ करता रह और इसी कार्य में स्वयं को व्यस्त रख। ☆

جوانی ہمہ اندریں باختم دل از غیر ایں کار پرداختم

मैंने अपनी पूर्ण जवानी इसी में झोंक दी मैंने अपने हृदय को अन्य कामों से अलग कर लिया। ☆

بماندم دریں غم زمان دراز نخفتم ز فکرش شبان دراز

मैं एक लम्बे समय तक इसी चिन्ता में लगा रहा और इसी कारण लम्बी-लम्बी रातें जागते हुए व्यतीत कीं। ☆

نگہ کردم از روئے صدق و سداد بہ ترس خدا و بعدل و بداد

और मैंने सत्य, ईमानदारी को दृष्टिगत रखकर ख़ुदा के भय के साथ न्याय और इन्साफ़ के साथ भली-भांति विचार किया। ☆

Ⓟ چو اسلام دینے قوی و متیں ندیدم کہ بر منبعش آفریں Ⓟ96

तो मैंने इस्लाम के सदृश कोई सुदृढ़ और शक्तिशाली धर्म नहीं देखा। निश्चय ही उसके उदगम् को मुबारकबाद। ☆

چناں دارد ایں دیں صفا بیش بیش کہ حاسد بہ بیند درو روئے خویش

यह धर्म (इस्लाम) अपने अन्दर ऐसी-ऐसी विशेषताएं रखता है कि ईर्ष्यालु व्यक्ति उसमें अपना चेहरा देख सकता है। ☆

نماید ازاں گونہ راہِ صفا کہ گردد بصدقش خرد رہنما

यह धर्म इस प्रकार सद्मार्ग की ओर मार्ग दर्शन करता है कि उसकी बुद्धि उसके सत्य पर गवाही देती है। ☆

ہمہ حکمت آموزد و عقل و داد رہاند ز ہر نوعِ جہل و فساد

यह सरासर दर्शन, बुद्धि और न्याय की शिक्षा देता है तथा हर प्रकार की असभ्यता और विकार से मुक्त करता है। ☆

ندارد دگر مثل خود در بلاد خلافش طریقے کہ مثلش مباد

संसार में उसके सदृश कोई अन्य धर्म नहीं और इसके विपरीत जो भी मार्ग है ख़ुदा करे उसका विनाश हो जाए। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

اصولش کہ ہست آں مدارِ نجات چہ خورشید تابد بصدق و ثبات

उसके सिद्धान्त जो मुक्ति के आधार हैं, और वे सिद्धान्त दृढ़ता और सत्य में सूर्य के समान चमकते हैं। ☆

اصول دگر کیش ہا ہم عیاں نہ چیزے کہ پوشیدنش مے تواں

और अन्य धर्मों के सिद्धान्त भी प्रकट हैं ये ऐसे सिद्धान्त हैं कि कोई प्रयास उन्हें गुप्त नहीं रख सकता। ☆

اگر نا مسلماں خبرداشتے بجاں جنس اسلام نگذاشتے

अगर काफ़िर कुछ भी बुद्धि रखता तो प्राण दे देता परन्तु इस्लाम के मूल को न छोड़ता। ☆

محمد مہین نقش نور خداست کہ ہرگز چنوئے بگیتی نخاست

मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) ख़ुदा तआला के प्रकाश का महानतम प्रतिबिम्ब हैं इन के समान मनुष्य संसार में कभी पैदा नहीं हुआ। ☆

تہی بود از راستی ہر دیار بکردار آں شب کہ تاریک و تار

प्रत्येक देश सत्य से रिक्त था उस रात के समान जो घोर अन्धकारमय हो। ☆

خدایش فرستاد و حق گسترید زمیں را بداں مقدمے جاں دمید

अल्लाह तआला ने उसे अवतरित किया और सत्य को फैला दिया उसके आगमन से धरती में प्राण आ गए। ☆

نہالیست از باغِ قدس و کمال ہمہ آلِ او ہمچو گل ہائے آل

वह (मुहम्मद स.) पवित्रता और कमाल के उद्यान का ताज़ा पौधा है और उसकी समस्त सन्तान गुलाब के फूलों के समान (लाल) है। ☆

द्वितीय:- यह बात भी निवेदन योग्य है कि यदि कोई सज्जन विज्ञापन में लिखित शर्तों के अनुसार इस पुस्तक का उत्तर लिखना चाहे तो उन पर अनिवार्य है कि जैसा विज्ञापन में तय हो चुका है कि दोनों प्रकार से उत्तर लिखें अर्थात् क़ुर्आन करीम के तर्कों की तुलना के उद्देश्य से अपनी पुस्तक के तर्कों को भी प्रस्तुत करें और हमारे तर्कों का खण्डन कर के भी दिखाएँ और यदि अपनी पुस्तक के तुलनात्मक तर्कों को प्रस्तुत नहीं

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

करेंगे और केवल हमारे तर्कों पर बहस और दोषारोपण की ओर ध्यान देंगे तो इस से यह
℗97 ℗समझा जाएगा कि वह अपनी पुस्तक की सच्चाई के तर्कों को प्रस्तुत करने से पूर्णरूप
से असमर्थ हैं। यह बात स्पष्ट रहे कि हम हार्दिक तौर पर अभिलाषी हैं कि यदि किसी
सज्जन को इस बात में हम से राय में सहमति न हो कि क़ुर्आन करीम वास्तव में ख़ुदा की
पुस्तक तथा समस्त ख़ुदाई पुस्तकों से स्पष्ट और उच्चतम है और अपनी सच्चाई के प्रमाण
में अद्वितीय और अनुपम है तो वे अपने इस विचार के समर्थन में अवश्य कुछ लिखें। हम
सच-सच कहते हैं कि हम उन के कष्ट उठाने से नितान्त कृतज्ञ होंगे, क्योंकि हम प्राय:
सोचते हैं कि सामान्य जनता पर यह बात क्योंकर प्रकट कर दें कि जो-जो श्रेष्ठताएँ और
विशेषताएँ क़ुर्आन करीम को प्राप्त हैं या जिन-जिन तर्कों और ठोस सबूतों से क़ुर्आन करीम
का ख़ुदा का कलाम होना प्रमाणित है वे श्रेष्ठताएँ तथा वे प्रमाण दूसरी पुस्तक को कदापि
प्राप्त नहीं। अत: बहुत चिन्तन-मनन करने के पश्चात हमें इस से उत्तम और कोई युक्ति
प्रतीत नहीं होती कि कोई सज्जन इन कारणों और इन प्रमाणों को जो हम ने क़ुर्आन करीम
की सच्चाई और श्रेष्ठता पर लिखे हैं अपनी पुस्तक के सम्बंध में दावा करके कोई पत्रिका
प्रकाशित करें और यदि ऐसा हुआ और ख़ुदा करे कि ऐसा ही हो तो फिर क़ुर्आन करीम की
श्रेष्ठता और सच्चाई का सूर्य प्रत्येक कमज़ोर आँख वाले पर भी प्रकट हो जाएगा और भविष्य
में कोई सरल स्वभाव व्यक्ति विरोधियों के बहकाने में नहीं आएगा। यदि इस पुस्तक का
खण्डन लिखने वाला कोई ऐसा व्यक्ति हो जो किसी इल्हामी किताब का पाबन्द नहीं जैसे
ब्रह्म समाजी हैं, तो उस पर केवल यही अनिवार्य होगा कि हमारे समस्त तर्कों का क्रमश:
खण्डन करके दिखाए और अपने विरोधात्मक विचारों को हमारी आस्थाओं के मुकाबले
पर बौद्धिक तर्कों द्वारा सिद्ध करके दिखाए। अत: यदि कोई ऐसा व्यक्ति भी खड़ा हुआ
तो उस के शिक्षाप्रद लेखों से भी लोगों को बड़ा लाभ होगा, और जो ब्रह्म समाजी सज्जन
हमेशा बुद्धि-बुद्धि करते हैं उनकी बुद्धि की कहानी साफ़ हो जाएगी। अत: हम निश्चय ही
जानते हैं कि हमारी पुस्तक का पूर्ण प्रभाव उसी दिन होगा और उसी समय उसका उचित
और ठीक महत्व भी ज्ञात होगा कि जब उस के सत्य के तर्कों के मुकाबले पर कोई सज्जन
अपनी पुस्तक के तर्कों को भी प्रस्तुत करेंगे अथवा इस युग के स्वतंत्र विचार रखने वालों की
℗98 भांति केवल अपनी स्वयंनिर्मित आस्थाओं के कारण दिखाएँगे क्योंकि प्रत्येक वस्तु ℗का

महत्व और स्थान तुलना से ही ज्ञात होता है तथा पुष्प की विशेषता और कोमलता तब ही प्रकट होती है जब उसके पहलू में कांटा भी हो।

گر نہ بودے در مقابل روئے مکروہ وسیہ   کس چہ دانستے جمال شاہد گلفام را

यदि तुलना में कुरुप और काले चेहरे वाला न होता तो कोई क्यों कर पुष्परूपी शरीर वाले प्रियतम का सौन्दर्य पहचान सकता। ☆

گر نیفتادے بخصمے کار در جنگ و نبرد   کے شدے جوہر عیاں شمشیر خوں آشام را

यदि शत्रु से लड़ाई और युद्ध न होता तो रक्त पीने वाली तलवार का जौहर कैसे प्रकट होता। ☆

روشنی را قدر از تاریکی است و تیرگی   واز جہالت ہاست عزو وقر عقل تام را

अंधकार के कारण ही प्रकाश का महत्व है और अज्ञानता के कारण ही बुद्धि का सम्मान स्थापित है। ☆

حجت صادق زنقض وقدح روشن تر شود   عذر نامعقول ثابت مے کند الزام را

सच्चा सबूत दोषारोपण और बहस के कारण अधिक स्पष्ट हो जाता है और अनुचित बहाना तो आरोप को ही प्रकट करता है। ☆

यहां यह भी निवेदन है कि जो सज्जन खण्डन लिखने की ओर ध्यान दें वे इस बात को स्मरण रखें कि यदि सत्य का प्रकटन स्वीकार है और न्याय दृष्टिगत है तथा विज्ञापन की शर्त का पूरा करना हार्दिक उद्देश्य है तो हमारे तर्कों को अपनी पुस्तक में पूर्णरूपेण नक़ल करें और क्रमानुसार उत्तर दें इस प्रकार कि प्रथम हमारे तर्क को अक्षरश: लिखें और फिर उसका उत्तर विवरण सहित लिखें कि जिस में किसी प्रकार का संक्षेप और लापरवाही न हो ताकि प्रत्येक न्यायप्रिय पर दृष्टि डालते ही स्पष्ट हो जाए कि उत्तर पूर्ण हो गया अथवा नहीं क्योंकि सारांशों में सबूतों का पूरा-पूरा विवरण ज्ञात नहीं हो सकता। बहुत से ऐसे अर्थ होते हैं जो यथावश्यक संक्षेप रूप देने से विरोधियों के कलुषित प्रक्षेपात्मक व्यवहार से उनकी क्षुद्र वृद्धि अथवा अज्ञानता से लुप्त हो जाते हैं अपितु प्राय: कुछ छोड़ देने से लेखक के वास्तविक अभिप्राय का कुछ का कुछ रूप बन जाता है फिर ऐसी स्थिति में यह बात असंभव हो जाती है कि इस पुस्तक के देखने वाले जिनके

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

पास दूसरे सदस्य की पुस्तक मौजूद नहीं किसी बात को उचित तौर पर समझ सकें अथवा किसी राय को प्रकट करने का अवसर पाएँ। अत: चूँकि यह पुस्तक श्रेष्ठ श्रेणी की पुस्तक है जिसमें विवाद को पूरा करने की नीयत में पूरा-पूरा उत्तर देने वाले को अत्यधिक इनाम देने का आश्वासन दिया गया है तो ऐसी पुस्तक के मुकाबले पर छल कपट को प्रयोग में
Ⓟ९९ लाना एक व्यर्थ और अलाभकारी Ⓟचतुराई है। अत: पूर्ण चेतावनी के साथ उल्लेख किया जाता है कि शुद्धता इसी में है और केवल इसी स्थिति में खण्डन लिखने वाला विज्ञापन की शर्तों से लाभ उठा सकता है कि जो भाषण हमारे मुख से निकला है और इबारत की जो शैली हमारी पुस्तक में प्रयोग की गई है वह पूर्ण रूप से क्रमानुसार और शब्दानुसार वर्णन करे।

तृतीय :- यह बात भी प्रत्येक सज्जन पर स्पष्ट रहे कि हमने इस पुस्तक में क़ुर्आन करीम की सच्चाई और हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिसालत (नुबुव्वत) के सत्य पर जितने तर्क और प्रमाणों का उल्लेख किया है अथवा क़ुर्आन करीम के ख़ुदा की ओर से होने के सन्दर्भ में जिन-जिन श्रेष्ठताओं, विशेषताओं और स्पष्ट आयतों का (अपनी) इस पुस्तक में उल्लेख किया है और उसके संदर्भ में जिस प्रकार का कोई दावा किया है वे सब तर्क इत्यादि इसी पवित्र किताब (क़ुर्आन करीम) से लिए गए और निकाले गए हैं। अर्थात् दावा भी वही लिखा है जो प्रशंसनीय किताब ने किया है और तर्क भी वही लिखा है जिसकी ओर इसी पवित्र किताब (क़ुर्आन करीम) ने संकेत किया है, न हमने मात्र अपने ही अनुमान से कोई तर्क लिखा है और न कोई दावा किया है। अतएव भिन्न-भिन्न स्थानों पर वे समस्त आयतें जिन से हमारे तर्क और दावे लिए गए हैं उल्लेख करते गए हैं। अत: जो सज्जन हमारे तर्कों के मुकाबले पर कुछ अपनी पुस्तक के सम्बंध में लिखना चाहें या कोई दावा करें तो उन पर भी अनिवार्य है कि इसी हमारे निर्धारित नियम के पाबन्द हों अर्थात् मूल पुस्तक और उसके सिद्धान्त को प्रमाणित करने के सन्दर्भ में वही दावा और वही तर्क प्रस्तुत करें जो उनकी पुस्तक में लिखा हो। यहां यह भी स्मरण रखें कि तर्क से हमारा अभिप्राय बौद्धिक तर्क है जिसे बुद्धिजीवी लोग अपने उद्देश्यों के प्रमाण में प्रस्तुत किया करते हैं। कोई किस्सा, कहानी या कथा अभिप्राय नहीं है। अत: प्रत्येक अध्याय में बौद्धिक तर्क इल्हामी पुस्तक में लिखा हो दिखा दें और मात्र अपने ही विचार से कोई काल्पनिक बात वर्णन करना जिस का कोई

मूल सही पुस्तक में नहीं पाया जाता प्रयोग में न लाएँ, क्योंकि प्रत्येक बुद्धिमान जानता है कि ख़ुदाई किताब का यह स्वयं दायित्व है कि अपने इल्हामी होने के सन्दर्भ में जो-जो दावा करना अनिवार्य है वह स्वयं करे और उसके तर्क भी स्वयं लिखे और ⓟऐसा ही ⓟ100
अपने सिद्धान्तों की सत्यता को स्वयं स्पष्ट तर्कों के माध्यम से पूर्ण सत्यता तक पहुँचा दे न यह कि इल्हामी किताब अपना दावा प्रस्तुत करने और उसका प्रमाण देने से बिल्कुल मौन हो तथा अपने सिद्धान्तों की सच्चाई के कारण प्रस्तुत करने से भी पूर्ण रूप से मौन धारण करे तथा कोई अन्य खड़ा होकर वकालत करना चाहे⑤। अतः भली-भांति स्मरण रहे कि जो सज्जन अपनी किताब और अपने सिद्धान्त की सच्चाई को सिद्ध करने के उद्देश्य से कोई ऐसा दावा या तर्क प्रस्तुत करेंगे जिसे उनकी इल्हामी पुस्तक ने प्रस्तुत नहीं किया तो उनका यह कृत्य इस बात पर ठोस सबूत होगा कि उनकी मान्य पुस्तक जिसे वे इल्हामी समझ रहे हैं ⓟलेख की पूर्णता इस शर्त से असमर्थ है। ⓟ101

हाशिया न. ⑤ ⓟइल्हामी किताब का अपने सिद्धान्त की सच्चाई पर स्वयं तर्क वर्णन ⓟ97
करना इस कारण से भी आवश्यक है कि इल्हामी किताब को केवल यह अधिकार नहीं है कि इस से कोई व्यक्ति तोते की भांति कुछ व्यर्थ और निरर्थक बातें सीख कर अपने हृदय में समझ बैठे कि बस अब मैं मुक्ति पा गया अपितु इल्हामी पुस्तक का उत्तम कार्य तो यही है कि बौद्धिक तर्क बता कर उस विश्वास की श्रेणी तक पहुँचा दे जो किसी भ्रम डालने वाले के भ्रम डालने से न मिट सके, ताकि उस पूर्ण विश्वास की बरकत से ईमानदार के समस्त कर्म और कथन और आस्थाएं ठीक हो जाएं, और ताकि सच्चाई को वास्तव में सच्चाई समझकर और कुटिलता को वास्तव में कुटिलता समझकर संयम की विशेषता से विशेष्य हो जाए, क्योंकि जब तक मनुष्य मूर्खता के नर्क में पड़ा हुआ है और अनुसरणात्मक ईमान के अतिरिक्त जिस पर लापरवाही, अचेतना के कारण और संसार-प्रेम के प्रभुत्व के कारण उसे पूर्णरूप से विश्वास भी नहीं रहा तथा किसी प्रकार की बौद्धिक योग्यता भी प्राप्त नहीं तो वह बड़े ख़तरे की स्थिति में होता है। उसकी स्थिति के अनुसार क़ुर्आन करीम की यह आयत है مَنْ كَانَ فِىْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا① (सूरह बनी इस्राईल, भाग:15) अर्थात जो व्यक्ति इस संसार (लोक) में अन्धा है वह उस दूसरे संसार (परलोक) में भी अन्धा ही होगा, अपितु अन्धों से भी निकृष्ट (बुरा)

①-बनी इस्राईल :73

चतुर्थ- समस्त सज्जनों की सेवा में यह भी निवेदन है कि यह पुस्तक पूर्ण सभ्यता और सम्मान को दृष्टिगत रखते हुए लिखी गई है और इसमें कोई ऐसा शब्द नहीं कि जिस में किसी बुज़ुर्ग या किसी सम्प्रदाय के पेशवा का अनादर अनिवार्य आता है तथा हम ऐसे शब्दों को प्रत्यक्ष या सांकेतिक तौर पर धारण करना महान् नीचता समझते हैं तथा ऐसा कृत्य करने वाले को अधम श्रेणी का उपद्रवी समझते हैं। अतः इसी प्रकार अपने प्रत्येक सज्जन जिनको मैं सम्बोधन कर रहा हूँ उन से अपेक्षा की जाती है कि वे भी इस
Ⓟ102 दिशा Ⓟमें प्रयत्नशील रहें कि उनकी समस्त कृति, यदि वे कुछ लिखे सभ्य समाज के यथायोग्य सर्वथा सभ्यता की भूमि पर आधारित हो तथा पवित्रात्माओं, अवतारों और पैग़म्बरों के प्रति प्रयुक्त होने वाली भाषा की शैली अपशब्दों, मानहानि तथा प्रतिष्ठा भंग करने वाले दोषों से सर्वथा पवित्र हो। धार्मिक कृतियों का स्थान बड़ा ही सूक्ष्म और कोमल स्थान है इसकी सत्ता का नियंत्रण केवल एक ही व्यक्ति के हाथ में नहीं

शेष हाशिया न. (5) →

अतः जो किताब अपनी वास्तविकता और अपने सिद्धान्त की सच्चाई को सिद्ध करके नहीं दिखाती, वह मनुष्य पर वास्तविक सौभाग्य का द्वार नहीं खोलती तथा न उसे बुद्धि और ज्ञान में उन्नति प्रदान करती है अपितु उन्नति से रोकती है और मुर्दे की भांति केवल अनुसरण के गढ़े में डालना चाहती है जिसमें वह न देखे, न सुने, न समझे। जो व्यक्ति ऐसी किताबों का अनुयायी होता है वह बुद्धि, अनुमान, दृष्टि और चिन्तन से कोई मतलब नहीं रखता अपितु मात्र किस्सों और कहानियों पर भरोसा कर बैठता है तथा बातों के मर्म की तह तक नहीं पहुँचता तथा चिन्तन-मनन की शक्ति को बिल्कुल बेकार छोड़कर और उन समस्त योग्यताओं को जो उसके अन्दर संग्रहीत और प्रदत्त हैं जान बूझ कर नष्ट करके शनैः शनैः बुद्धिहीन जानवरों से भी आगे निकल जाता है और अन्ततः बुद्धि, अनुमान, चिन्तन और अनुभूति तथा बोध से कि जिस से मनुष्य की सम्पूर्ण मानवता सम्बद्ध है बिल्कुल अजनबी और अपरिचित होकर एक ऐसा संवेदनरहित हो जाता है कि फिर इस
Ⓟ101 Ⓟयोग्य ही नहीं रहता कि उसे मनुष्य कहा जाए तथा उसमें यह योग्यता ही नहीं रहती जो बौद्धिक तौर पर सत्य और असत्य में अन्तर कर सके। उस पर वह उदाहरण भली-प्रकार चरितार्थ होता है जो क़ुर्आन करीम में वर्णित है-

①-बनी इस्राईल-73

होता अपितु प्रत्येक सुन्दरता और असुन्दरता में अन्तर करने वाले और न्यायप्रिय एवं वैमनस्य वृत्ति रखने वाले तथा दंभी और सत्यवादी को पहचानने वाले पीछे लगे हुए हैं। ऐसे सुशील और सभ्य लोग थोड़े बहुत प्रत्येक जाति में मौजूद होते हैं जो उपद्रवपूर्ण तथा असभ्यतापूर्ण भाषणों को पसन्द नहीं करते तथा विभिन्न सम्प्रदायों के बुज़ुर्ग पथ-प्रदर्शकों को बुराई और निरादर से स्मरण करना निचले स्तर का दुष्कृत्य और उद्दण्डता समझते हैं और वास्तव में सत्य भी है कि जिन पवित्रात्माओं को ख़ुदा ने अपने विशेष हित और अपनी इच्छा से क़ौमों का अनुकरणीय और पेशवा बनाया तथा उसने जिन प्रकाशमान अनुपम पुरुषों को संसार पर आभामय कर एक जगत को उनके द्वारा परमेश्वर की उपासना और एकेश्वरवाद का प्रकाश प्रदान किया, जिन की शक्तिशाली शिक्षाओं से द्वैतवाद और सृष्टि-पूजा जो समस्त बुराइयों की जड़ है पृथ्वी के अधिकांश भू-भागों से समाप्त हो गई तथा ख़ुदा तआला के एकत्व की चर्चा का जो वृक्ष सूख गया था फिर हरा-भरा और फल फूल गया और ख़ुदा की उपासना की इमारत जो गिर गई थी पुनः ऐसी सुदृढ़ चट्टान पर निर्मित की गई। जिन मान्य लोगों को ख़ुदा ने अपनी विशेष छत्र

शेष हाशिया न. 5 ⟶

لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ① (सूरह आराफ़ सीपारह-9)

अर्थात वे लोग जो केवल बाप-दादों का अनुसरण करते हैं वे हृदय तो रखते हैं पर हृदयों से समझने का कार्य नहीं लेते तथा उनकी आँखें भी हैं, परन्तु आँखों को देखने से निलंबित कर रखा है और कान भी रखते हैं परन्तु वे भी बेकार पड़े हुए हैं। ये लोग चौपायों की भांति हैं अपितु उन से भी गए गुज़रे। अतः ख़ुदा के कलाम का यह नितान्त उत्तम कार्य है कि मनुष्य के स्वभाव में जो-जो शक्तियाँ और ताक़तें डाली गई हैं उन्हें सही और उचित तौर पर प्रयोग में लाने की चेतावनी दे ताकि कोई शक्ति और ताकत जो बिल्कुल नीति और हित की दृष्टि से मनुष्य को प्रदान की गई थी नष्ट न हो जाए या असंतुलित स्थिति में प्रयोग में न लाई जाए तथा इन समस्त शक्तियों के अतिरिक्त एक बुद्धि भी शक्ति है जिसकी पूर्णता में मनुष्य की प्रतिष्ठा है और जिसे उचित प्रकार से प्रयोग में लाने से मनुष्य वास्तविक तौर पर मनुष्य बनता है और अपने गन्तव्य तक पहुँचता

①-अलआराफ़-180

छाया में लेकर ऐसा चमत्कारिक समर्थन किया कि वे करोड़ों विरोधियों से भयभीत न हुए और न थके और न घटे और न उन की कार्यवाहियों में कुछ अवनति हुई, न उन पर कोई विपत्ति आई जब तक कि उन्होंने प्रत्येक अत्याचारी से सुरक्षित रह कर पृथ्वी पर सत्य को स्थापित न कर लिया। ख़ुदा के ऐसे मान्य पुरुषों के संबंध में अपशब्दों का प्रयोग करना नितान्त दुष्टता, घ्रष्टता और अयोग्यता तथा हठधर्मी है।

ہر کہ تف افگند بہ مہر منیر ہم بروئش فتد تف تحقیر
تا قیامت تف ست بر روئش قدسیاں دور تر ز بدبوئش

अनुवाद- जो व्यक्ति प्रकाशमान सूर्य के ऊपर थूकता है तो तिरस्कार का वह थूक उसके ही मुख पर पड़ता है प्रलय तक उसके चेहरे पर फटकार है, मासूम लोग उसकी दुर्गन्ध से बहुत दूर हैं। ☆

और जो कुछ मैं इस स्थान पर सभ्यता और जीभ को सुरक्षित रखने के संबंध में
Ⓟ103 नसीहत कर रहा हूँ यह अकारण और निरुद्देश्य Ⓟनहीं। इस समय मेरे मस्तिष्क में अनेक

शेष हाशिया न. (5)

है और मनुष्य के हाथ में वही एक उपकरण है जो असीम उन्नति की प्राप्ति हेतु समान्यतया उसे प्रदान किया गया है। अत: स्पष्ट है कि यदि इल्हामी किताब इस उपकरण की सहायक, सहयोगी और संरक्षक न हो अपितु यह शिक्षा प्रदान करे कि उस उपकरण को बिल्कुल निलंबित करके छोड़ देना चाहिए तो ऐसी किताब कि मनुष्य की स्वाभाविक शक्तियों को स्थायित्व की शैली पर चलाने के स्थान पर स्वयं उसे स्थायित्व की शैली पर चलने से रोकेगी और सहयोग और सहायता के स्थान पर स्वयं मार्ग में लूटने वाली तथा पथ-भ्रष्ट करने वाली बन जाएगी और जो कुछ उसके द्वारा सीखा और समझा जाएगा वह ऐसी वस्तु न होगी कि जिसे ज्ञान और नीति कहा जाए, अपितु केवल व्यर्थ लालच और निरर्थक आस्थाओं तथा व्यर्थ लिप्साओं, किस्सों और कहानियों का भण्डार होगा तथा उसका अनुसरणकर्ता पागलों और भ्रमियों की भांति बोए बिना काटने की आशा रखेगा। अत: स्पष्ट है कि ऐसी पुस्तक जिस के सिद्धान्तों का फलना-फूलना बुद्धि के समूल नष्ट करने पर निर्भर है मनुष्य को किसी भी प्रकार की भलाई नहीं पहुँचा सकती। इसी से।

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

ऐसे लोग विद्यमान हैं कि जो नबियों और रसूलों का निरादर करके ऐसा विचार करते हैं कि जैसे एक महान् पुण्य का कार्य कर रहे हैं और ऐसे सभ्यतापूर्ण वाक्य लिखते हैं कि जिन से उनके अन्त:करण की पवित्रता भली-भांति प्रकट होती है। मैंने भली-भांति छान-बीन की है कि इन असभ्यतापूर्ण गतिविधियों के भी दो कारण हैं कि जब कुछ लोग नीति-संगत और उचित कलाम करने का तत्व नहीं रखते या जब किसी सदात्मा के आरोपों और निरुत्तर कर देने वाले तर्कों से तंग आ जाते हैं और रुक जाते हैं तो फिर वे अपने दोषों को छुपाने के लिए यही उत्तम समझते हैं कि ज्ञानपूर्ण बहस को हंसी-ठट्ठे की ओर हस्तांरित कर दें और यदि किसी अन्य ढंग से नहीं तो इसी प्रकार अपने साथियों में प्रतिष्ठा प्राप्त करें। अत: ऐसे लोगों को जो अपनी क़ौम के शिक्षक और शिष्टाचार सिखाने वाले बन बैठे हैं अपनी प्रतिष्ठा के मुकुट की सुरक्षा हेतु बात-बात पर हठधर्मी से काम लेना पड़ता है और जन साधारण से कुछ अधिक द्वेष-भाव दिखाना पड़ता है और यदि सच पूछो तो ऐसे लोगों पर कुछ अफ़सोस भी नहीं क्योंकि मूर्खता और द्वेष ने उन्हें चारों और से घेरा होता है। न ख़ुदा का कुछ भय होता है न ईमान, सच्चाई और सत्यवादिता की कुछ परवाह होती है तथा संसार की सड़ी-गली लाश पर मरे जाते हैं। जब उन्हें ख़ुदा से कोई मतलब ही नहीं तथा लज्जा और शर्म से कोई संबंध ही नहीं और सत्य को स्वीकार करना किसी तौर से स्वीकार ही नहीं तो ऐसी स्थिति में यदि वे अधमतापूर्ण बातें न करें तो और क्या करें और यदि गाली-गलौज प्रकट न करें तो उनके अन्त:करण में और क्या है जो प्रकट करें, यदि बोलें तो क्या बोलें, यदि लिखें तो क्या लिखें। ईसाइयों में उन लोगों को छोड़ कर जिन्हें सभ्यता और छान-बीन से कुछ मतलब नहीं[6] इस समय सहस्त्रों ऐसे सभ्य स्वभाव और न्याय-प्रिय स्वभाव रखने वाले उत्पन्न होते जाते हैं जिन्होंने ℗हार्दिक न्याय से इस्लाम की श्रेष्ठता को स्वीकार किया है। तथा ℗104

हाशिया न. (6) ℗इस आरोप से ईसाई जनसाधारण भी रिक्त नहीं कि उस व्यक्तिगत द्वेष ℗103 के अतिरिक्त जो हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के संबंध में उनके हृदयों में भरा हुआ है शेष समस्त नबियों का सम्मान और आदर भी हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की एक हस्ती के अलावा यथायोग्य कदापि नहीं करते अपितु जब ईसा को ख़ुदा का विशेष बेटा समझता है उसी क्षण से अन्य नबियों के सन्दर्भ में उसका मुख खुल जाता है। विशेषत: ऐसे-ऐसे

तीन ख़ुदाओं के नियम का ग़लत होना तथा ईसाई धर्म में बहुत सी बिदअतों※ का मिश्रित हो जाना अपनी पुस्तकों में बड़ी उग्रता से वर्णन किया है, परन्तु खेद कि यह न्याय हमारी देशवासी आर्य जाति से मिटा जाता है। इस जाति को द्वेष ने इतना घेरा हुआ है कि नबियों

शेष हाशिया न. 6 ⟶

वाक्यों ने उन्हें बहुत ख़राब कर रखा है कि जैसे यह लिखा गया है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से पूर्व जितने भी नबी आए वे समस्त चोर और डाकू थे, परन्तु ये अभिमानपूर्ण शब्द किसी परिस्थिति में किसी नेक, पवित्र मनुष्य से सम्बद्ध नहीं हो सकते। हज़रत मसीह तो ख़ुदा के ऐसे, विनम्र, सुशील, सहिष्णु, विनीत और ख़ाकसार बन्दे थे कि उन्होंने यह भी सहन नहीं किया कि कोई उन्हें नेक मनुष्य भी कहे फिर कोई क्योंकर उनकी ओर अभिमानपूर्ण शब्दों को कि जिन में अपनी श्रेष्ठता तथा दूसरे का अपमान पाया जाता है सम्बद्ध किया जाए। नि:सन्देह यदि हम ख़ुदा के पवित्र नबियों को चोर और डाकू कहें तो हम चोर-डाकुओं से सहस्त्रों गुना निकृष्ट हैं। जिन हृदयों पर ख़ुदा का पवित्र कलाम उतरता रहा है यदि वे हृदय पुनीत नहीं थे तो अपवित्र की पवित्र से क्या तुलना थी। यह नितान्त कुटिलता है कि लोग ख़ुदा के सदात्मा लोगों की प्रतिष्ठा में अनुचित शब्दों का प्रयोग करें। क्या अफ़सोस का स्थान है कि लोग अपने अहंवाद से बाहर नहीं निकलते तथा जिन्होंने संसार से ऐसा संबंध बढ़ाया और रिश्ते उत्पन्न किए कि उनके हृदयों में हर समय संसार ही संसार है, वे ख़ुदा के पवित्र लोगों को तिरस्कार से स्मरण करें। हे भाइयो ! नबियों का पवित्र और पूर्ण और सच्चा होना स्वीकार करो ताकि वे किताबें भी पवित्र ठहरें जो उन पर उतरीं अन्यथा जिन हृदयों से वे किताबें निकली हैं यदि वे हृदय ही पवित्र नहीं तो फिर किताबें क्यों कर पवित्र हो सकती हैं। क्या सम्भव है कि धतूरे के पौधे को अंगूर का फल लगे या आक को अंजीर का। जब झरने का जल स्वच्छ है तो झरना भी स्वच्छ ही समझो। यदि वे लोग चयन किए हुए उसके भेजे हुए और ख़ुदा के पूर्णरूप से वफ़ादार बन्दे नहीं थे तो जैसा यह ख़ुदा पर भी आरोप ठहरा कि उसे योग्य जौहर की पहचान नहीं और 'हम ख़ुदा की शरण के अभिलाषी', यह स्वीकार करना पड़ा कि ख़ुदा भी दुष्ट लोगों की भांति चोरों-डाकुओं से ही मेल-जोल रखता है। तुम स्वयं ही सोचो कि जो लोग स्रष्ठा (ख़ुदा) और सृष्टि में माध्यम हैं और जो आकाशीय प्रकाशों को पृथ्वी पर प्रसारित करने वाले हैं

※-नवीन बातें जो धार्मिक विधान में पहले न हों सम्मिलित कर दी जाएँ। अनुवादक

का सम्मानपूर्वक नाम लेना भी एक पाप समझते हैं तथा समस्त नबियों का अनादर करके तथा सभी को झूठा और धोखेबाज़ ठहरा कर यह दावा बिना प्रमाण के प्रस्तुत करते हैं कि एक वेद ही ख़ुदा की वाणी है जो हमारे बुज़ुर्गों पर उतरी थी और शेष समस्त इल्हामी किताबें ℗जिनके द्वारा समस्त संसार को सहस्त्रों प्रकार का ख़ुदा के एकेश्वरवाद तथा ℗105
परमेश्वर को पहचानने के ज्ञान का लाभ पहुँचा है वे लोगों ने स्वयं ही बना ली हैं। अत: यद्यपि यह दावा तो इस पुस्तक में इस प्रकार खण्डित किया गया है कि वर्तमान वेद का

शेष हाशिया न. 6 ⟶

वे पूर्ण चाहिए अथवा अपूर्ण तथा सच्चे चाहिए या झूठे। जब रिसालत के मूल उद्देश्य पर नबी लोग स्वयं ही स्थापित न हों तो उन की कौन सुन सकता है और उनकी बात ℗क्योंकर प्रभावशाली होगी। उनको तो अनपढ़ लोग अवश्य कहेंगे ℗105
कि हे उपचारको ! पहले तुम अपना ही इलाज कराओ। अतिरिक्त इसके क्या यह न्याय है अथवा सभ्यता है या ख़ुदा के भय में शामिल है कि ख़ुदा के पवित्र नबियों का नाम ऐसे निरादर और तिरस्कृत तौर पर लें कि जैसे किसी निम्न स्तर के सिपाही या चौकीदार का और यदि किसी सांसारिक व्यक्ति का नाम लिखें तो लम्बी चौड़ी उपाधियां लिखते ही चले जाएँ इस से कम नहीं। क्या यह वैध है कि एक धनवान किरयाना वाले (आटा-दाल विक्रेता) के सम्मान हेतु पूरे के पूरे खड़े हों और जिन लोगों को ख़ुदा से वार्तालाप का सम्मान प्राप्त है और उनमें वे विशेषताएँ हैं जो ख़ुदा को प्रिय हो गई हैं वे ऐसी दृष्टि में तिरस्कृत मालूम हों कि मुख से भी उनका सम्मान न किया जाए। यदि वे तुम्हारे विचार में तिरस्कृत हैं तो फिर उन्हें नबी क्यों मानते हो सीधे तौर पर यही क्यों नहीं कहते कि हमें उनकी नुबुव्वत से ही इन्कार है। इन समस्त दुर्भावनाओं का कारण यह है कि आप लोगों को ख़ुदा के इल्हाम की वास्तविकता ज्ञात नहीं और आप लोग ऐसा समझ रहे हैं कि इल्हाम भी एक शारीरिक सेवा है कि जैसे किसी सरकार के कुप्रबन्धन से कोई पद उदाहरणतया जज होने, तहसीलदारी या रिसालदारी (सौ सवारों की सेना का अफसर) कुछ दे दिलाकर बिना छान-बीन चरित्र और योग्यता के प्राप्त हो जाता है अथवा जिसमें अफ़सरों को केवल कार्य लेने से मतलब होता है और कुछ साधारण सा अच्छा चरित्र और योग्यता देखी जाती है, क्योंकि वह पद ही ऐसा निम्न स्तरीय और तुच्छ होता है कि जिस में पूर्ण ईमानदारी और अच्छे चरित्र और व्यवहार कुशलता की आवश्यकता नहीं होती,

किस्सा ही समाप्त हो गया है, परन्तु यहां हमें यह प्रकट करना आवश्यक है कि इन लोगों के विचार सद्‌भावना के सिद्धान्त और सभ्यता और हार्दिक पवित्रता से कितने दूर पड़े हुए हैं और ये लोग कैसे पुरातन द्वेष के दण्डस्वरूप जो इनके स्नायु-तंत्र और बुनियाद में प्रभाव कर गया है, उन सदभावनाओं की शक्तियों को जो मनुष्य की सुशीलता,
ⓟ106 कुलीनता और सौभाग्य का मापदण्ड थीं तथा मानवता की ⓟसुन्दरता और सौन्दर्य थीं। एक ही बार में खो बैठे हैं[7] कि उनके देश के अतिरिक्त अन्य जितने देशों में नबी और

शेष हाशिया न. (6) ⟶

परन्तु हे भाइयो! यह आप लोगों की बहुत बड़ी भूल है। ख़ुदा की वह्यी ख़ुदा तआला की वह पवित्र वाणी है जिस में वह्यी उतरने वाले की पूर्ण पवित्रता और पूर्ण योग्यता शर्त है, क्योंकि जो व्यक्ति भांति-भांति के शारीरिक विकारों तथा काम-भावनाओं से लज्जित है, उसमें और पवित्र उदगम में बहुत अधिक दूरी है कि जिनके कारण में वह ख़ुदा के इल्हाम से लाभ-प्राप्ति के योग्य कदापि नहीं ठहर सकता। अत: जब तक एक हृदय को प्रत्येक प्रकार की बेहूदा और व्यर्थ बातों से पूर्णरूप से पवित्रता प्राप्त न हो जाए तब तक वह हृदय वह्यी के लाभ की पात्रता उत्पन्न नहीं करता तथा यदि पूर्ण पवित्रता की शर्त न होती तथा योग्य और अयोग्य समान होता तो समस्त संसार नबी हो जाता। जब पूर्ण पवित्रता शर्त
ⓟ106 है तो फिर नबियों को श्रेष्ठ श्रेणी का पवित्र विश्वास ⓟकरना चाहिए जिस से अधिक पवित्रता की मनुष्य के लिए कल्पना नहीं की जा सकती। यदि हज़रत दाऊद ऐसे ही पवित्र न होते जैसे हज़रत मसीह पवित्र थे तो कदापि नबी होने के योग्य न ठहरते। मसीह को दाऊद से अधिक पवित्र और उत्तम समझना यही एक ग़लत विचार है जो इल्हाम और रिसालत की वास्तविकता से अत्यंत अज्ञानता के कारण ईसाइयों के हृदयों में घर कर गया। अत: हम इसके विवरण का समस्त तर्कों सहित यथास्थान उल्लेख करेंगे. इन्शाअल्लाह। यहां यह भी स्मरण रहे कि ऐसे ईसाई जिन की इस हाशिए में चर्चा कर रहे हैं, एक ओर तो ख़ुदा के पवित्र पैग़म्बरों से उपहास करते हैं और दूसरी और हज़रत मसीह को ख़ुदा तो बना ही रखा है परन्तु इस ख़ुदाई के अतिरिक्त नुबुव्वत में भी समस्त नबियों से श्रेष्ठ और उच्चतम समझते हैं। अत: स्पष्ट रहे कि यह भी उन की दूसरी ग़लती है, अपितु वास्तविकता यह है कि समस्त नबियों से श्रेष्ट वह नबी है जो संसार का महान् शिक्षक और संरक्षक है अर्थात् वह मनुष्य जिसके द्वारा संसार के

रसूल आए जिन्होंने बहुत से लोगों को द्वैतवाद के अंधकार और सृष्टि (मख़लूक़) पूजा से बाहर ℗निकाला तथा अधिकांश देशों को ईमान और एकेश्वरवाद से प्रकाशमान ℗107
किया, वे समस्त नऊज़ुबिल्लाह (हम ख़ुदा से क्षमा चाहते हैं) झूठे और कुटिल थे। सच्ची रिसालत और पैग़म्बरी केवल ब्राह्मणों का उत्तराधिकार तथा उन्हीं के बुज़ुर्गों की विशेष जागीर है तथा इस संबंध में ख़ुदा ने सदा के लिए उन्हीं को ठेका दे रखा है और

शेष हाशिया न. 6 महान् उपद्रव का सुधार हुआ जिसने लुप्त और गुप्त एकेश्वरवाद को पुनः पृथ्वी पर स्थापित किया, जिसने समस्त मिथ्या धर्मों को सबूत और तर्कों से परास्त करके प्रत्येक पथ-भ्रष्ट के सन्देहों का निवारण किया, जिसने प्रत्येक नास्तिक के भ्रमों को दूर किया तथा मुक्ति के सच्चे साधन जिसके लिए किसी निर्दोष को फांसी देना आवश्यक नहीं तथा ख़ुदा को उसके अनादि स्थान से खिसका कर किसी स्त्री के पेट में डालने की कोई आवश्यकता नहीं। सच्चे सिद्धान्तों की शिक्षा द्वारा नए सिरे से प्रदान किया। अतः इस तर्क से कि इसका लाभ और हित सर्वाधिक है। अब इतिहास बताता है, आकाशीय किताब साक्षी है तथा जिनकी आँखें हैं वे स्वयं भी देखते हैं कि वह नबी जो इस नियमानुसार सब नबियों से श्रेष्ठ ठहरता है वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं जैसा कि शीघ्र ही इसी किताब में यह प्रमाण सूर्य की भांति प्रकाशमान हो जाएगा। इति.

हाशिया न. 7 ℗मनुष्य में सद्भावना एक स्वाभाविक शक्ति है और जब तक दुर्भावना ℗106
का कोई कारण उत्पन्न न हो तब तक उस शक्ति को प्रयोग में लाना मनुष्य की एक स्वाभाविक विशेषता है और यदि कोई व्यक्ति अकारण इस शक्ति का प्रयोग करना त्याग कर दुर्भावना की आदत धारण कर ले तो ऐसा मनुष्य पागल या भ्रमी या दीवाना या विक्षिप्त कहलाता है। उदाहरणतया जैसे कोई बाज़ार की मिठाई या रोटी इत्यादि को इस भ्रम से खाना छोड़ दे कि कहीं हलवाइयों अथवा रोटी पकाने वालों इत्यादि ने इन वस्तुओं में विष न मिला रखा हो या यात्रा की स्थिति में प्रत्येक मार्ग बताने वाले पर सन्देह करे कि शायद यह मुझे धोका ही न दे रहा हो या बाल बनवाते समय नाई (हज्जाम) से भयभीत हो कि कहीं उस्तरा मार कर मेरा वध ही न कर दे। ये समस्त विचार पागलपन और दीवानगी के प्रारम्भिक लक्षण हैं ℗और जब कोई दीवाना होने लगता है तो पहले ऐसे दूषित ℗107

अपने पथ-प्रदर्शन और हिदायत की विशाल सरिता को उन्हीं के छोटे से देश में दाखिल कर दिया है तथा उसे हमेशा उन्हीं का देश उन्हीं की भाषा और उन्हीं में से पैग़म्बर
Ⓟ108 (रसूल) पसन्द आ गए हैं[8] और वे Ⓟभी केवल तीन या चार कि जिनसे इल्हाम और रिसालत की समस्या का प्रकृति के सामान्य नियमों तथा ख़ुदा के अनादि स्वभाव में प्रवेश भी नहीं कर सकता तथा नुबुव्वत और वह्यी का मामला इल्हाम प्राप्त लोगों की कमी के कारण कमज़ोर, अविश्वसनीय, सन्देहात्मक और संदिग्ध ठहर जाता है तथा करोड़ों ख़ुदा

शेष हाशिया न. (7)

विचार हृदय में उठा करते हैं फिर शनैः शनैः पूर्ण दीवाना हो जाता है। अतः इस से सिद्ध है कि उचित कारणों के बिना दुर्भावना रखना दीवानगी का एक भाग है जिस से एक बुद्धिमान व्यक्ति अवश्य बचेगा और ख़ुदा ने मनुष्य के स्वभाव में सद्‌भावना की जो शक्ति डाल दी तो उसमें नीति यह है कि मनुष्य में सत्यवादिता और सदाचरण भी एक स्वाभाविक शक्ति है। जब तक मनुष्य किसी ज़बरदस्ती करने वाले से विवश न हो न झूठ बोलना चाहता है न किसी अन्य प्रकार की बुराई करने को उचित समझता है और यदि मनुष्य को सदभावना की शक्ति प्रदान न की जाती तो वह समस्त लाभ जो सत्यवादिता और सदाचार की शक्ति के माध्यम से एक से दूसरे को पहुँचते हैं, जिन पर समस्त सांस्कृतिक, समाजिक जटिल कार्य निर्भर हैं नष्ट हो जाते तथा प्रजा इन समस्त लाभों से जो उपर्युक्त शक्ति के प्रयोग पर व्यवस्थित होते हैं वंचित रह जाती। उदाहरणतया बोलना और बातें करना सीख लेते हैं तथा माँ-बाप को माँ-बाप करके जानते हैं यदि दुर्भावना करते तो कुछ भी न सीखते तथा हृदय में कहते कि शायद इन सिखाने वालों का कुछ अपना ही उद्देश्य होगा। कुधारणा से गूंगे ही रह जाते तथा माँ-बाप के माँ-बाप होने में भी सन्देह ही रहता। इसी से।

Ⓟ107 **हाशिया न. (8)** Ⓟवर्तमान युग में हिन्दू सज्जनों के हाथ में जो वेद हैं जिन्हें वे ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्वेद से नामित करते हैं तथा ऋष, यजुशा, सामन और अथ्रोना भी कहते हैं। इनका सही वृत्तांत कुछ ज्ञात नहीं होता कि वे किन सज्जनों पर उतरे थे। कोई कहता है अग्नि, वायु और सूर्य को यह इल्हाम हुआ था जो बिल्कुल व्यर्थ बात है। किसी का यह दावा है कि ब्रह्मा के चार

के बन्दे जो इस देश से अज्ञान रहे अथवा यह देश उन के देशों से अज्ञान रहा, ख़ुदा की कृपा, दया और मार्गदर्शन तथा मुक्ति से से वंचित रह जाते हैं फिर आश्चर्य यह कि आर्य सज्जनों की शुभ आस्थाओं के अनुसार वे तीन या चार भी ख़ुदा तआला के इरादे और विशेष नीति में नुबुव्वत के पद पर आदिष्ट (मामूर) नहीं हुए अपितु स्वयं किसी अज्ञात जन्म के शुभ कर्मों के कारण इस पद-प्राप्ति के पात्र हो गए और ख़ुदा को विवश हो कर उन्हें पैग़म्बर बनाना ही पड़ा और शेष समस्त लोगों को इस उच्च पद से पृथक कर दिया गया तथा कोई किसी आरोप से, कोई किसी दोष से, कोई आर्य क़ौम और आर्य देश से बाहर निवास रखने के दण्डस्वरूप इल्हाम पाने से वंचित रहा। अब देखना चाहिए कि इस अपवित्र धारणा में ख़ुदा के मान्य बन्दों पर जिन्होंने सूर्य की भांति प्रकटन करके उस अंधकार को दूर किया जो उनके समय में संसार पर छा रहा था, कितनी असत्य और

शेष हाशिया न. 8

मुखों से ये चारों वेद निकले थे तथा किसी की राय यह है कि ये अलग-अलग ऋषियों के अपने ही वचन हैं। अब इन वर्णनों में यहां तक सन्देह है कि कुछ ज्ञात नहीं होता कि क्या इन सज्जनों का प्रत्यक्ष तौर पर कोई अस्तित्व भी था या मात्र काल्पनिक नाम हैं । वेद पर दृष्टि डालने से तीसरी राय उचित विदित होती है क्योंकि अब भी वेद के पृथक-पृथक मंत्रों पर पृथक-पृथक ऋषियों के नाम लिखे हुए पाए जाते हैं तथा अथर्ववेद के संदर्भ में तो अधिक अन्वेषक पंडितों की इसी पर सहमति है कि वह एक जाली वेद या ब्राह्मण पुस्तक Ⓟहै जिसे बाद में वेदों Ⓟ108
के साथ मिलाया गया है और यह राय सत्य भी विदित होती है, क्योंकि ऋग्वेद में जो समस्त वेदों के सिद्धान्तों का मूल है तथा सर्वाधिक विश्वसनीय समझा जाता है, केवल ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद की चर्चा है और अथर्ववेद का नाम तक नहीं लिखा। यदि वह वेद होता तो उसकी भी अवश्य चर्चा होती। यजुर्वेद के अध्याय :26 में भी स्पष्ट लिखा है कि वेद केवल तीन ही हैं और ऐसा ही सामवेद में भी वेदों का तीन होना ही वर्णन किया है तथा मनु जी भी अपनी पुस्तक के अध्याय :7, श्लोक :42 में तीन वेदों को ही स्वीकार करते हैं तथा 'योग वशिष्ठ' में जो इन शिक्षाओं का संग्रह है विशेष तौर पर राजा रामचन्द्र जी को उनके महान् गुरू ने प्रदान की थी चारों वेदों के सन्दर्भ में ऐसा स्पष्ट वर्णन किया है कि मानो फैसला ही कर दिया है, जिसका सारांश यह है कि केवल अथर्ववेद के वेद होने में बहस नहीं अपितु समस्त वेदों की स्थिति यही है, उनमें से कोई भी ऐसा नहीं जो परिवर्तन, बदलाव, तथा कमी-बेशी से खाली हो। इति.

प्रतिकूल दुर्भावना की गई है फिर अपने परमेश्वर पर भी यह दुर्भावना जो उसे लापरवाह,
℗109 अचेतन या संवेदनहीन समझा है, जो इतना ℗अज्ञान है कि यद्यपि वेद के पश्चात सहस्त्रों
प्रकार की नई-नई बिदअतें निकलीं, लाखों प्रकार के तूफ़ान और आंधियाँ चलीं, भांति-
भांति के उपद्रव उठे, उसके राज्य में एक बुरे प्रकार की उथल-पुथल मच गई तथा संसार
को नवीन सुधार की नितान्त आवश्यकताएँ पड़ीं परन्तु वह कुछ ऐसा सोया कि फिर न
जागा और कुछ ऐसा खिसका कि फिर न आया जैसे कि उसके पास इतना ही इल्हाम था
जो वेद में व्यय कर बैठा और वही पूंजी थी जो पहले ही वितरित कर चुका और फिर
सदा के लिए खाली हाथ रह गया और मुख पर मुहर (सील) लग गई और समस्त
विशेषताएँ अब तक बनी रहीं परन्तु बोलने की विशेषता केवल वेद के युग तक रही फिर
बेकार हो गई और परमेश्वर बोलने और बातें करने और इल्हाम भेजने से सदा के लिए
℗110 असमर्थ हो गया। [9] यह आस्था आर्य जाति की है जिस पर ℗प्रत्येक हिन्दू को प्रेरणा
दिलाई जाती है कि उसी को अपना धर्म बनाए, परन्तु आश्चर्य है कि इस आस्था की वेद
में कहीं चर्चा तक नहीं तथा इसमें कोई श्रुति ऐसी नहीं कि इस द्वेषपूर्ण कुधारणा की शिक्षा
देती हो। ज्ञात होता है कि ये श्लोक उन्हीं दिनों में घड़ा गया है कि जब आर्य जाति के
विद्वानों ने अपनी पुस्तकों और शास्त्रों में भी लिख दिया था जो हिमालय पर्वत और एशिया
के कुछ भाग के आगे कोई देश ही नहीं और इसी प्रकार अन्य भी सैकड़ों व्यर्थ और
निराधार विचारधाराएं जिनकी इस समय चर्चा करना ही व्यर्थ है और जो अब दिन-
℗111 प्रतिदिन संसार से समाप्त हुई जाती हैं तथा ज्ञान और ℗बुद्धि के प्राप्त करने वाले स्वयं

℗109 **हाशिया न. 9** ℗कदाचित इस स्थान पर किसी के हृदय में यह भ्रम उत्पन्न हो कि मुसलमानों की भी यही आस्था है कि वह्यी हज़रत आदम से आरम्भ हुई और आँहज़रत सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम पर समाप्त हो गई। अतः इस आस्था की दृष्टि से भी हज़रत ख़ातमुल अंबिया के युग के पश्चात वह्यी का समाप्त होना अनिवार्य हुआ। अतः इसके उत्तर में स्मरण रखना चाहिए कि हमारी हिन्दुओं की भांति कदापि यह आस्था नहीं कि ख़ुदा के पास इतनी ही वाणी थी जितनी वह प्रकट कर चुका अपितु इस्लामी धारणा और आस्थानुसार ख़ुदा की वाणी, उसका ज्ञान और नीति उसकी हस्ती की तरह असीमित है। अतः इस संबंध में अल्लाह तआला ने स्वयं फरमाया है:-

उनका परित्याग करते जाते हैं उन्हीं दिनों में निकली थीं। अत: बड़े आश्चर्य की बात है कि जो लोग इस जांच-पड़ताल और अनुसंधान के करने वाले हैं जिनके पवित्र वेद में अग्नि, वायु, सूर्य और चन्द्रमा इत्यादि सृष्टि की गई वस्तुओं के अतिरिक्त ख़ुदा का पता भी कठिनाई से मिलता है, वे हज़रत मूसा, हज़रत ईसा और हज़रत ख़ातमुलअंबिया को भी कुटिल ठहराएं तथा उनके मुबारक युगों को छल-कपट के युग ठहराएँ तथा उनकी सफलताओं को जो ख़ुदा के समर्थन के बड़े उदाहरण हैं भाग्य और संयोग पर चरितार्थ करें तथा उनकी पवित्र पुस्तकें जो उन्हें ख़ुदा की ओर से ⓅयथासमयⓅ संसार की Ⓟ112
आवश्यकताओं के अनुसार प्राप्त हुईं, जिनके माध्यम से संसार का बहुत बड़ा सुधार हुआ वे वेद के चोरी किए लेख समझे जाएँ और विचित्र बात यह कि अब तक यह पता नहीं दिया गया कि किस प्रकार की चोरी का अपराध हुआ। क्या किसी स्थान पर क़ुर्आन करीम, इंजील या तौरात में वेद की भांति अग्नि की उपासना का आदेश पाया जाता है या कहीं वायु और जल की गुण-गाथा लिख दी है या किसी स्थान पर आकाश, चन्द्रमा और सूर्य की स्तुति और महिमा की गई है या किसी आयत में इन्द्र की महिमा का वर्णन

शेष हाशिया न. (9) ⟶

قُل لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ

وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ① (भाग-16 सूरह क़हफ़)

अर्थात् यदि ख़ुदा की वाणी को लिखने के लिए समुद्र को स्याही बनाया जाए तो लिखते-लिखते समुद्र समाप्त हो जाए और वाणी में कुछ कमी न हो यद्यपि उसी प्रकार के अन्य समुद्र बतौर सहायता के कार्य में लाए जाएँ। रही यह बात कि हम लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वह्यी का समाप्त होना किन अर्थों में मानते हैं। अत: इस संबंध में मूल वास्तविकता यह है कि यद्यपि ख़ुदा की वाणी स्वयं में असीमित है परन्तु चूंकि वे ख़राबियां जिनके सुधार हेतु ख़ुदा की वाणी उतरती रही या वे आवश्यकताएँ जिन्हें ख़ुदा का इल्हाम पूर्ण करता रहा है वे सीमित मात्रा से अधिक नहीं हैं इसलिए ख़ुदा की वाणी भी उतनी ही उतरी है जितनी प्रजा को उसकी आवश्यकता थी तथा क़ुर्आन करीम ऐसे समय में आया था जिसमें प्रत्येक प्रकार की आवश्यकताएँ जिन का सामने आना संभव है सामने आ गई थीं अर्थात् समस्त नैतिकता, आस्थाजनित, कथनीय, और व्यवहार संबंधी समस्याएँ अस्त-व्यस्त हो गई थीं तथा प्रत्येक प्रकार, का असंतुलन तथा

①-अलकहफ़-10

करके उससे बहुत सी गउएं और असीमित धन माँगा गया है। यदि इन वस्तुओं में से जो वेद का आशय और उसकी समस्त शिक्षाओं का सार हैं कुछ भी नहीं लिया गया तो फिर वेद में से क्या चुराया। इस स्थान पर हमें पंडित दयानन्द साहिब पर बड़ा खेद है कि उन्होंने तौरात और इंजील तथा क़ुर्आन करीम के संबंध में अपनी कुछ पत्रिकाओं तथा अपने वेदभाष्य की भूमिका में बड़े कठोर शब्दों का प्रयोग किया है और (ख़ुदा की पनाह) वेद को शुद्ध सोना और ख़ुदा की शेष समस्त किताबों को खोटा सोना ठहराया है। इन बेहूदा बातों और चतुराइयों का समस्त कारण यह है कि पंडित जी न अरबी जानते हैं, न फारसी और न संस्कृत के अतिरिक्त कोई अन्य भाषा अपितु उर्दू पढ़ने से भी बिल्कुल अनभिज्ञ और वंचित हैं एक अन्य कारण भी है जो उनकी नवीन लिखी पुस्तकों के अध्ययन से प्रकट होता है और वह यह है कि अनाड़ीपन, अज्ञानता और द्वेष के अलावा उनकी स्वभाविक बुद्धि भी उन्मादियों और भ्रमितों की भांति स्थायित्व की शैली पर स्थापित होने और सदमार्ग पर स्थिर होने से नितान्त विवश है तथा शुभ को अशुभ विचार करना तथा अशुभ को शुभ विचार करना तथा खरे को खोटा और खोटे को खरा

शेष हाशिया न. 9 →

प्रत्येक प्रकार का उपद्रव और विकार अपनी चरम सीमा को पहुँच गया था, इसलिए क़ुर्आन करीम की शिक्षा भी श्रेष्ठम श्रेणी पर उतरी। अत: इन्हीं अर्थों में क़ुर्आनी शरीअत समाप्त करने वाली और पूर्ण ठहरी और पूर्वकालीन शरीअतें अपूर्ण रहीं क्योंकि पूर्वकालीन युगों में वे विकार भी जिनके सुधार हेतु इल्हामी
ⓟ110 किताबें आईं चरम सीमा तक ⓟनहीं पहुँचे थे तथा क़ुर्आन करीम के समय में वे समस्त अपनी चरम सीमा को पहुँच गए थे। अत: अब क़ुर्आन करीम और अन्य इल्हामी किताबों में अन्तर यह है कि पहली किताबें यदि प्रत्येक प्रकार के हस्तक्षेप से सुरक्षित भी रहीं तब भी शिक्षा की अपूर्णता के कारण आवश्यक था कि किसी समय पूर्ण शिक्षा अर्थात् क़ुर्आन करीम का प्रकटीकरण होता, परन्तु क़ुर्आन करीम के लिए अब यह आवश्यकता नहीं कि उसके पश्चात कोई अन्य किताब भी आए, क्योंकि कमाल (पूर्णता) के पश्चात अन्य कोई श्रेणी शेष नहीं। हां यदि यह मान लिया जाए कि किसी समय क़ुर्आन करीम के सत्य सिद्धान्त वेद और इंजील की भांति शिर्क के सिद्धान्त बनाए जाएँगे तथा एकेश्वरवाद की शिक्षा में परिवर्तन और शब्दों का उलट फेर व्यवहार में आएगा या यदि

समझना तथा उल्टे को सीधा और सीधे को उलटा समझना उन का एक सामान्य स्वभाव हो गया है जो प्रत्येक स्थान पर उन से बिना सोचे समझे तुरन्त प्रकटन में आता है और इसी कारण से वेद की वे कल्पनाएँ जो कभी किसी के स्वप्न में भी नहीं आई थीं वह करते जाते हैं और फिर उन निराधार विचारों और कल्पनाओं को प्रकाशित कराके लोगों

शेष हाशिया न. (9) ⟶

उसके साथ यह भी कल्पना कर ली कि किसी समय में करोड़ों मुसलमान जो एकेश्वरवाद पर स्थापित हैं वे भी पुनः शिर्क और सृष्टि पूजा का मार्ग धारण कर लेंगे तो निःसन्देह ऐसी परिस्थितियों में दूसरी शरीअत तथा दूसरे रसूल का आना आवश्यक होगा, परन्तु दोनों प्रकार की कल्पनाएँ दुर्लभ और असंभव हैं। क़ुर्आन करीम की शिक्षा में शब्दों का उलट फेर और परिवर्तन होना इसलिए असंभव है कि अल्लाह तआला ने स्वयं फ़रमाया है-

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ ① (भाग-14 सूरह अलहजर)

अर्थात् "इस किताब को हम ने ही उतारा है और हम ही इसके रक्षक रहेंगे।" अतः तेरह सौ वर्ष से इस भविष्यवाणी की सच्चाई सिद्ध हो रही है। अब तक क़ुर्आन करीम में पूर्वकालीन किताबों की भांति कोई अनेकश्वरवादी शिक्षा नहीं मिलने पाई और भविष्य में भी बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती कि इसमें किसी प्रकार की अनेकश्वरवादी शिक्षा मिश्रित हो सके, क्योंकि लाखों मुसलमान इस के कंठस्थकर्ता हैं, सहस्त्रों इसकी व्याख्याएँ हैं, पाँच समय इसकी आयतें नमाज़ों में पढ़ी जाती हैं, प्रतिदिन इसकी तिलावत (ऊँचे स्वर में पढ़ना) की जाती है। इसी प्रकार समस्त देशों में इसका फैल जाना, उसकी करोड़ों प्रतियों का संसार में मौजूद होना प्रत्येक जाति का उसकी शिक्षा से अवगत हो जाना। ये सब बातें ऐसी हैं कि जिनकी दृष्टि से बुद्धि इस बात पर बिल्कुल अनिवार्य करती है कि भविष्य में भी क़ुर्आन करीम में किसी प्रकार का परिवर्तन और बदलाव होना दुर्लभ और असंभव है तथा मुसलमानों का पुनः शिर्क धारण करना इस दृष्टि से असंभव और दुर्लभ है कि ख़ुदा तआला ने इस संबंध में भी भविष्यवाणी करके स्वयं फ़रमा दिया है:

مَا یُبۡدِئُ الۡبَاطِلُ وَمَا یُعِیۡدُ ② (भाग-22 सूरह सबा)

Ⓟअर्थात् "शिर्क और सृष्टि पूजा जितनी दूर हो चुकी है फिर न वह अपनी नवीन Ⓟ111
शाखा निकालेगी और न उसी पूर्व स्थिति पर लौटेगी।"

①-सूरह अलहजर :10, ②-सूरह सबा :50

Ⓟ113 से अपना अपमान कराते हैं। यद्यपि कि सम्पूर्ण हिन्दुस्तान के Ⓟपंडित शोर मचा रहे हैं कि हमारे वेद में एकेश्वरवाद का पता निशान नहीं तथा हमारे बाप-दादों ने यह पाठ कभी पढ़ा ही नहीं और वेद ने हमें किसी स्थान पर सृष्टि-पूजा से रोका ही नहीं, परन्तु पंडित जी फिर भी अपने ख़्याली पुलाव पकाने से नहीं रुकते और उन सैकड़ों देवताओं को जो

शेष हाशिया न. (9)

अत: इस भविष्यवाणी की सच्चाई सूर्य से भी अधिक प्रकाशमान है, क्योंकि बावजूद एक दीर्घ अवधि के गुज़रने के अब तक उन जातियों और देशों में जिन से सृष्टि-पूजा समाप्त की गई थी पुन: शिर्क और मूर्ति-पूजा ने एकेश्वरवाद का स्थान नहीं लिया और भविष्य में भी बुद्धि इस भविष्यवाणी की सत्यता पर पूर्ण विश्वास रखती है, क्योंकि जब प्रारम्भिक दिनों में मुसलमानों की संख्या भी कम थी, एकेश्वरवाद की शिक्षा में कुछ हलचल घटित नहीं हुई अपितु दिन प्रतिदिन उन्नति होती गई। अब इस शिर्क की पुजारी जाति की संख्या बीस करोड़ से भी कुछ अधिक है हलचल क्योंकर संभव है। इसके अतिरिक्त वह युग भी आ गया है कि मुश्रिकों के स्वभाव क़ुर्आनी शिक्षा के निरन्तर सुनने और एकेश्वरवादियों के साथ हमेशा की संगत के कारण एकेश्वरवाद की ओर झुकते जाते हैं। जिस ओर देखो एकत्व के तर्क बहादुर योद्धाओं की भांति शिर्क के काल्पनिक और भ्रमयुक्त गुम्बदों पर गोले बरसा रहे हैं तथा एकेश्वरवाद के स्वाभाविक जोश ने द्वैतवादियों के हृदयों पर एक हलचल मचा रखी है तथा सृष्टि पूजा का जीर्ण होना विशाल विचारधारा रखने वाले लोगों पर प्रकट होता जाता है और ख़ुदा के एकत्व की शक्तिशाली बन्दूकें द्वैतवाद के कुरूप झोंपड़ों को उड़ाती जाती हैं। अत: इन समस्त लक्षणों से प्रकट है कि अब द्वैतवाद का अंधकार पूर्वकालीन दिनों की भांति फैलना जब के समस्त संसार ने निर्मित वस्तुओं की टांग स्रष्टा के अस्तित्व और विशेषताओं में फंसा रखी थी, दुर्लभ और असंभव है और जब कि क़ुर्आन करीम के सत्य सिद्धान्त का शाब्दिक हेर-फेर और परिवर्तित हो जाना या फिर उसके साथ समस्त सृष्टि पर शिर्क का अंधकार और सृष्टि-पूजा का भी व्यापत होना बुद्धि के निकट दुर्लभ और असंभव हुआ तो नवीन शरीअत और नवीन इल्हाम के उतरने में भी बौद्धिक दुर्लभता अनिवार्य हुई, क्योंकि जो बात दुर्लभ को अनिवार्य हो वह भी दुर्लभ होती है। अत: सिद्ध हुआ कि आँहज़रत वास्तव में ख़ातमुर्रुसुल हैं। इसी से।

वेद के विभिन्न उपास्य हैं केवल एक ही ख़ुदा बनाना चाहते हैं ताकि वेद के इल्हामी होने में कुछ अन्तर न आ जाए। बहरहाल उन्होंने जो कुछ वेद पर अत्याचार किया और कर रहे हैं यह तो उनका अधिकार है परन्तु क़ुर्आन करीम के सन्दर्भ में अकारण अपमान और अनादर करना यह वह कार्य है जिस से उनका अत्यन्त अपमान होगा। अत: इस पुस्तक के लिखने से वह दिन आ भी गया है तथा हमें ज्ञात नहीं कि अब पंडित जी क़ुर्आन करीम की सत्यता और श्रेष्ठता के सैकड़ों तर्क तथा वेद के सिद्धान्तों के मिथ्या होने के सैकड़ों प्रमाण इसी पुस्तक से किसी शिक्षित व्यक्ति द्वारा ज्ञात करके फिर भी जीवित रहेंगे या आत्महत्या की इच्छा जोश मारेगी। क्या अद्भुत बात है कि क़ुर्आन करीम जैसी उच्च, श्रेष्ठ, और पूर्णतम, अत्युत्तम किताब का अपमान करके न परलोक के परिणाम से डरते हैं और न इस लोक (संसार) की भर्त्सना और निन्दा की कुछ चिन्ता रखते हैं। शायद उनको दोनों लोकों की कुछ भी परवाह नहीं रही। यदि ख़ुदा का कुछ भय नहीं था तो संसार की बदनामी का ही कुछ भय करते और यदि लज्जा-शर्म उठ गई थी तो काश लोगों की ही लानत और फटकार का भय शेष रहता। यदि पंडित जी का कुछ तत्व ही ऐसा है कि वह अकारण ख़ुदा के पवित्र रसूलों का अपमान करके ही प्रसन्न होते हैं और कुछ स्वभाव ही ऐसा है कि संभलता नहीं तो इस से भी वह ख़ुदा के पवित्र लोगों का क्या बिगाड़ सकते हैं। इस से पूर्व नबियों के शत्रुओं ने इन प्रकाशमान दीपकों को बुझाने के लिए क्या-क्या न किया तथा कौन सी युक्ति है जो नहीं अपनाई, परन्तु चूँकि वे ईमानदारी और सत्यता के पेड़ थे इसलिए वे परोक्ष की सहायता से पल-पल बढ़ते गए तथा शत्रुओं की विरोधात्मक युक्तियों से उनकी कोई क्षति नहीं हुई अपितु वे उन कोमल और सुन्दर पौधों की भांति जो स्वामी के हृदय को Ⓟमनोरम लगते हैं और भी फूलते और फलते गए, यहां तक कि वे Ⓟ114
बड़े-बड़े छायादार और फलदार पेड़ों के समान हो गए तथा दूर-दूर के अध्यात्मिक पक्षियों ने आकर उन में बसेरा कर लिया और विरोधियों का कोई बस न चला और यद्यपि इन अशुभचिन्तकों ने बहुत हाथ-पैर मारे, एड़ियाँ रगड़ीं, मक्कारियां और कुटिलताएं दिखाईं और अन्तत: गिरफ़्तार पक्षी की भांति फड़फड़ा कर रह गए। अत: जबकि हाथों से इन पवित्र लोगों को हानि न पहुँच सकी तो केवल मुख के निन्दनीय शब्दों से कब हो सकती है। यह वह ख़ुदा की भेजी हुई क़ौम है जिन के प्रताप की उन्हीं के युग में परीक्षा हो चुकी है वह प्रताप और प्रतिष्ठा न मूर्ति- पूजकों के रोकने से रुकी और न किसी अन्य

सृष्टि पूजक के बाधा डालने से बन्द रही, न तलवारों की धार उस वैभव और प्रतिष्ठा को काट सकी, न तीरों की तेज़ी उसमें कुछ विघ्न डाल सकी। वह प्रताप ऐसा चमका कि उसकी ईर्ष्या कितनों का रक्त पी गई, वह तीर ऐसा बरसा कि उसका छूटना कई कलेजों को खा गया, वह आकाशीय पत्थर जिस पर पड़ा पीस डालता रहा, तथा जो व्यक्ति उस पर पड़ा वह स्वयं ही पिस गया।

ख़ुदा के पाक लोगों को ख़ुदा से नुसरत आती है
जब आती है तो फिर आलम को इक आलम दिखाती है
वह बनती है हवा और हर ख़से रह को उड़ाती है
वह हो जाती है आग और हर मुख़ालिफ़ को जलाती है
कभी वह ख़ाक़ हो कर दुश्मनों के सर पै पड़ती है
कभी होकर वह पानी उन पै इक तूफ़ान लाती है
ग़र्ज़ रुकते नहीं हरगिज़ ख़ुदा के काम बन्दों से
भला ख़ालिक़ के आगे ख़ल्क़ की कुछ पेश जाती है।

इस कथन का सारांश यह है कि यदि पंडित जी इत्यादि शत्रुओं और विरोधियों को संसार और क़ौम के प्रेम के कारण या मर्यादा के कारण अथवा लज्जा-शर्म की विशेषता की कमज़ोरी के कारण ख़ुदा की सच्ची किताबों पर ईमान लाना स्वीकार न हो तो ठीक है यह उन की ख़ुशी, परन्तु हम उन्हें नसीहत करते हैं कि गाली-गलौज से रुकें कि इस का
Ⓟ115 परिणाम अच्छा नहीं होता तथा Ⓟअसंभव की कल्पना करते हुए यदि हमने यह स्वीकार भी किया कि ख़ुदा के पवित्र पैग़म्बरों की सच्चाई उनकी विचित्र बुद्धि के निकट सिद्ध नहीं, परन्तु फिर भी वह व्यक्ति जिसके हृदय में ख़ुदा का कुछ भय या लोगों की फटकार से ही कुछ भय है वह इस बात को अवश्य स्वीकार करेगा कि सच्चाई के प्रमाण के अभाव से झूठ (असत्य) का प्रमाणित हो जाना अनिवार्य नहीं होता, क्योंकि इस इबारत का आशय कि ज़ैद (एक काल्पनिक नाम) का सच्चा होना सिद्ध नहीं। इस इबारत के आशय से कदापि समान नहीं हो सकता कि ज़ैद का झूठा होना सिद्ध है। अत: जिस स्थिति में किसी व्यक्ति का झूठ सिद्ध नहीं तो उस पर झूठ के आदेश करना तथा झूठा-झूठा करके पुकारना वास्तव में उन्हीं लोगों का कार्य है जिनका धर्म और ईमान तथा परमेश्वर और भगवान केवल मुरदार संसार का लालच या मूर्खतापूर्ण मर्यादा अथवा क़ौम और बिरादरी

है। यदि वे सत्य को स्वीकार करें और प्रत्येक प्रकार का हठ छोड़ दें तो फिर एक निर्धन भिक्षु की भांति सब कुछ त्याग कर ख़ुदा के धर्म में प्रवेश करना पड़े तो फिर पंडित जी, गुरू जी और स्वामी जी उन्हें कौन कहे। अत: यदि ऐसे लोग सत्य और ईमानदारी के बाधक न हों तो अन्य कौन हो और यदि उनका क्रोध और ग़ुस्सा न भड़के तो और किसका भड़के। उन्हें तो इस्लाम का सम्मान स्वीकार करने से उनके अपने सम्मान में अन्तर आता है जीविका के तरह-तरह के साधन बन्द हो जाते हैं तो फिर क्योंकर एक इस्लाम को स्वीकार करके सहस्त्रों विपत्तियाँ खरीद लें। यही कारण है कि जिस सच्चाई पर विश्वास करने के लिए सहस्त्रों साधन मौजूद हैं उसको तो स्वीकार नहीं करते तथा जिन किताबों की शिक्षा एक-एक अक्षर में शिर्क का पाठ पढ़ाती है उन पर ईमान लाए बैठे हैं तथा उनका अन्याय इस से प्रकट है कि यदि उदाहरणतया कोई स्त्री जिसकी पवित्रता (सतीत्व) भी कुछ ऐसी-वैसी ही सिद्ध हो किसी अकरणीय कृत्य से आरोपित की जाए तो तुरन्त कहेंगे किस ने पकड़ी, किसने देखा, तथा घटना के अवसर का कौन साक्षी है, परन्तु उन पवित्रात्माओं के सन्दर्भ में जिनकी सच्चाई पर एक, दो नहीं अपितु करोड़ों लोग साक्ष्य देते चले आए हैं। इस बात के विश्वसनीय प्रमाण के बिना उन्होंने किसी के सामने झूठ का मसौदा बनाया या इस योजना में किसी दूसरे से परामर्श लिया या वह रहस्य किसी व्यक्ति को अपने नौकरों, या Ⓟमित्रोंमित्रों या स्त्रियों में से बताया अथवा किसी Ⓟ116
अन्य व्यक्ति ने परामर्श करते या रहस्य बताते पकड़ा या स्वयं ही मृत्यु का मुख देखकर अपने झूठे होने का इक़रार कर दिया, यों ही झूठा आरोप लगाने पर तैयार हो जाते हैं। अत: यही तो अन्त:करण के काले होने का लक्षण है और इसी से उनकी आन्तरिक ख़राबी ज्ञात हो रही है। पैग़म्बर वे लोग हैं जिन्होंने अपनी पूर्ण सच्चाई का ठोस प्रमाण प्रस्तुत करके अपने शत्रुओं को भी आरोपित किया। जैसा कि यह आरोप क़ुर्आन करीम में है। हज़रत ख़ातमुलअंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से मौजूद है जहां फरमाया है:-

فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ①

अर्थात् ''मैं ऐसा नहीं कि झूठ बोलूं तथा झूठ बनाऊँ देखो मैं इस से पूर्व चालीस वर्ष तुम में ही रहता रहा हूँ क्या कभी तुमने मेरा कोई झूठ या मिथ्या होना सिद्ध किया फिर क्या तुम्हें इतनी समझ नहीं।'' अर्थात् यह समझ कि जिसने कभी आज तक किसी

①-सूरह यूनुस :17, भाग-11

प्रकार का झूठ नहीं बोला वह अब ख़ुदा पर क्यों झूठ बोलने लगा। अत: नबियों के जीवन की घटनाएँ तथा उनका सदाचार ऐसा बदीही (जिस पर चिन्तन-मनन की आवश्यकता न हो) और प्रमाणित है कि यदि समस्त बातों को छोड़ कर उन की घटनाओं को ही देखा जाए तो उनकी सच्चाई उनकी घटनाओं से ही प्रकाशमान हो रही है। उदाहरणतया यदि कोई न्यायकर्ता या बुद्धिमान हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत की सच्चाई के उन समस्त सबूतों और तर्कों से, जिनका इस पुस्तक में उल्लेख किया जाएगा दृष्टि हटा कर मात्र उनकी परिस्थितियों पर ही विचार करे तो नि:सन्देह उनके सच्चे नबी होने पर हार्दिक विश्वास करेगा और क्योंकर विश्वास न करे वे घटनाएँ ही ऐसी पूर्ण सच्चाई और स्पष्टता से सुगन्धयुक्त हैं कि सत्याभिलाषियों के हृदय सहसा उनकी ओर आकर्षित हो जाते हैं। विचार करना चाहिए कि किस दृढ़ता से आँहज़रत (स.अ.व.) अपने नुबुव्वत के दावे पर सहस्त्रों संकट उत्पन्न हो जाने तथा लाखों शत्रुओं, बाधकों तथा भयभीत करने वालों के खड़े हो जाने के बावजूद आरम्भ से अन्तिम सांस तक स्थापित रहे तथा जमे रहे, वर्षों तक वे संकट देखे और वे कष्ट सहन करने पड़े जो सफलता से पूर्णरूप से निराश करते थे और दिन प्रतिदिन अधिक होते जाते थे कि जिन पर धैर्य करने से किसी सांसारिक उद्देश्य की प्राप्ति
Ⓟ117 हो जाने का भ्रम भी नहीं Ⓟगुज़रता था, अपितु नुबुव्वत का दावा करने से अपने पहले जन समूह को भी हाथ से खो बैठे तथा एक बात कह कर लाख विरोधों को खरीद लिया तथा सहस्त्रों विपत्तियों को अपने ऊपर आने का निमंत्रण दे दिया, देश से निष्कासित किए गए, वध करने के लिए अनुधावन (पीछा करना) किये गए, घर और सामान बरबाद हो गया, अनेकों बार विष दिया गया और जो शुभचिन्तक थे वे अशुभचिन्तक बन गए, जो मित्र थे वे शत्रुता करने लगे तथा एक दीर्घ युग तक वे कष्ट सहन करने पड़े कि जिन पर दृढ़ता से स्थापित रहना किसी मक्कार या कुटिल का कार्य नहीं। फिर जब दीर्घ समयोपरान्त इस्लाम की विजय हुई तो उन धन और समृद्धि के दिनों में कोई ख़ज़ाना एकत्र न किया, कोई इमारत न बनाई कोई राज भवन तैयार न हुआ, कोई बादशाहों वाला भोग-विलास का समान व्यवस्थित न किया गया, कोई व्यक्तिगत लाभ न उठाया अपितु जो कुछ आया वह सब अनाथों, असहायों, विधवाओं और कर्ज़दारों की देख-भाल में व्यय होता रहा, कभी एक समय भी पेट भर भोजन न किया। फिर स्पष्टवादिता इतनी

कि एकेश्ववाद का उपदेश देकर समस्त जातियों, सम्प्रदायों तथा सम्पूर्ण संसार के लोगों को जो शिर्क में डूबे हुए थे विरोधी बना लिया, जो अपने थे उन्हें मूर्तिपूजा से मना करके सर्वप्रथम शत्रु बनाया, यहूदियों से भी बात बिगाड़ ली, क्योंकि उन्हें तरह-तरह की सृष्टि-पूजा, पीरों की पूजा तथा दुष्कर्मों से रोका, हज़रत मसीह अलैहिस्लाम को झूठा कहने और उनका अपमान करने से रोका, जिससे उनका हृदय नितान्त रूप से जल गया तथा अत्यन्त शत्रुता पर उद्यत हो गए और प्रति क्षण वध करने की घात (युक्ति) में रहने लगे। इसी प्रकार ईसाइयों को भी रुष्ट कर दिया क्योंकि जैसी कि उनकी आस्था थी, हज़रत ईसा को न ख़ुदा न ख़ुदा का बेटा ठहराया और न उन्हें फांसी पर चढ़कर दूसरों को बचाने वाला स्वीकार किया, अग्नि-पूजक तथा नक्षत्र-पूजक भी नाराज़ हो गए, क्योंकि उन्हें भी उन के देवताओं की उपासना से रोका गया तथा मुक्ति का आधार केवल एकेश्वरवाद को ठहराया गया। अब न्याय का स्थान है कि क्या संसार प्राप्ति की यही युक्ति थी कि प्रत्येक सम्प्रदाय को ऐसी-ऐसी स्पष्ट और दुखदायी बातें सुनाई गईं कि जिससे सबने विरोध पर कमर कस ली और सब के हृदय टूट गए और पूर्व इसके कि अपना कुछ Ⓟथोड़ा सा भी जन समूह बना होता या किसी का आक्रमण रोकने के लिए Ⓟ118
कुछ शक्ति प्राप्त हो जाती सब की तबियत को इतना उत्तेजित कर दिया कि वे ख़ून के प्यासे हो गए, समय को अपने पक्ष में करने की युक्ति तो यह थी कि जैसे कुछ लोगों को झूठा कहा था वैसा ही कुछ लोगों को सच्चा भी कहा जाता ताकि यदि कुछ विरोधी होते तो कुछ सहमत भी होते, अपितु यदि अरबों को कहा जाता कि तुम्हारे ही लात[※] और उज़्ज़ा[※] सच्चे हैं तो वे उसी क्षण पैरों पर गिर पड़ते और उनसे जो चाहते कराते, क्योंकि वे समस्त अपने और परिजन जातिगत स्वाभिमान में अद्वितीय थे तथा सारी बात स्वीकार की हुई थी केवल मूर्ति-पूजा की शिक्षा से प्रसन्न हो जाते और हृदय और प्राणों से आज्ञा-पालन करते, परन्तु विचार करना चाहिए कि आँहज़रत का पूर्णतया प्रत्येक अपने और बेगाने से बिगाड़ लेना और केवल एकेश्वरवाद को जो उन दिनों संसार के लिए इस से अधिक घृणित वस्तु कोई और न थी जिसके कारण सैकड़ों कठिनाइयां पड़ती जाती थीं अपितु जान से मारा जाना दिखाई देता था दृढ़ता से पकड़ लेना यह किस सांसारिक हित की मांग थी, जबकि पूर्व में इसी के कारण अपना समस्त संसार और जन-समूह बरबाद

※-मूर्तियों के नाम हैं। अनुवादक

कर चुके थे तो फिर उसी आपत्तिजनक आस्था पर आग्रह करने से जिसे प्रकट करते ही नवीन मुसलमानों को क़ैद और कठोर मारें पड़ीं किस उद्देश्य को प्राप्त करना अभिप्राय था। क्या संसार-प्राप्ति का यही ढंग था कि प्रत्येक को कटुता भरी वाणी जो उसके स्वभाव, आदत, इच्छा और आस्था के विरुद्ध थी सुना कर सब को क्षण भर में प्राणों का शत्रु बना दिया तथा किसी एक आधी क़ौम से नाता न रखा। जो लोग लालची और कुटिल होते हैं क्या वे ऐसी ही युक्तियां किया करते हैं जिस से मित्र भी शत्रु हो जाएं, जो लोग किसी छल से संसार की प्राप्ति चाहते हैं क्या उनका यही सिद्धान्त हुआ करता है कि एक ही बार में समस्त संसार को शत्रुता करने के लिए उत्तेजित कर दें तथा अपने प्राणों को हर समय की चिन्ता में डाल लें। वे तो अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सब से संधि करने का मार्ग धारण करते हैं तथा प्रत्येक सम्प्रदाय को सच्चाई का ही प्रमाण-पत्र प्रदान करते हैं। ख़ुदा के लिए एक समान हो जाना उन की आदत कहां हुआ करती है,
Ⓟ119 ख़ुदा Ⓟके एकत्व और श्रेष्ठता का वे कब कुछ ध्यान रखा करते हैं, उन्हें इस से क्या मतलब कि व्यर्थ में ख़ुदा के लिए कष्ट उठाते फिरें वे तो शिकारी की भांति वहीं जाल बिछाते हैं जो शिकार करने का अत्यन्त सरल मार्ग होता है तथा वही मार्ग अपनाते हैं जिस में परिश्रम कम तथा सांसारिक लाभ अधिक हो, वैमनस्य उनका व्यवसाय तथा चाटुकारिता उनका चरित्र होता है। सब से मीठी-मीठी बातें करना तथा प्रत्येक चोर और साधू से सम्पर्क रखना उनका एक विशेष सिद्धान्त होता है, मुसलमानों से अल्लाह-अल्लाह और हिन्दुओं से राम-राम कहने को हर समय तत्पर रहते हैं तथा प्रत्येक सभा में हाँ में हाँ और नहीं में नहीं मिलाते रहते हैं और यदि कोई सभापति दिन को रात कहे तो चाँद और गिट्टियाँ दिखाने को भी तैयार हो जाते हैं। उन का ख़ुदा से क्या संबंध तथा उसके साथ वफ़ादारी करने से क्या लगाव तथा अपने प्रसन्नतापूर्ण प्राण को मुफ्त में इधर-उधर का शोक लगा लेने की उन्हें क्या आवश्यकता, शिक्षक ने उन्हें पाठ ही एक पढ़ाया होता है कि प्रत्येक को यही बात कहना चाहिए कि जो तेरा मार्ग है वही सीधा है और जो तेरी राय है वही ठीक है और जो तूने समझा है वही उचित। अतएव उन की उचित और अनुचित सत्य और असत्य, शुभ और अशुभ पर कुछ दृष्टि ही नहीं होती अपितु जिसके हाथ से उन का मुख कुछ मीठा हो जाए वही उनकी दृष्टि में भक्त, सिद्ध और सुशील होता है और जिसकी प्रशंसा से पेट का नर्क कुछ भरता दिखाई दे उसी को

मुक्ति प्राप्त करने वाला तथा स्वर्ग का उत्तराधिकारी और अमर जीवन का स्वामी बना देते हैं, परन्तु हज़रत ख़ातमुलअंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दृष्टि डालने से यह बात अत्यन्त स्पष्ट, प्रत्यक्ष और प्रकाशमान है कि आँहज़रत उच्चतम श्रेणी के एक वर्ण, निश्छल, ख़ुदा के लिए उत्साही और जान पर खेलने वाले प्रजा की उम्मीद और आशा से बिल्कुल विमुख तथा ख़ुदा पर भरोसा करने वाले थे, जिन्होंने ख़ुदा की इच्छा और इरादे में आसक्त और फ़ना होकर इस बात की कुछ भी परवाह न की कि एकेश्वरवाद की घोषणा करने से मेरे सर पर क्या-क्या विपत्ति आएगी तथा मुश्रिकों के हाथ से क्या कुछ कष्ट और दुख उठाना होगा अपितु समस्त ℗कठिनाइयों, कठोरताओं ℗120
तथा विपत्तियों को अपने ऊपर लेकर अपने स्वामी (ख़ुदा) की आज्ञा का पालन किया तथा जो-जो शर्त तपस्या, उपदेश और नसीहत की होती है वह सब पूरी की और किसी डराने वाले को कुछ भी महत्त्व न दिया। हम सच-सच कहते हैं कि समस्त नबियों की घटनाओं में ऐसे भयंकर स्थान और अवसर और फिर ख़ुदा पर ऐसा भरोसा करके शिर्क और सृष्टि-पूजा से प्रत्यक्ष और स्पष्ट तौर पर मना करने वाला, इतना प्रकाशमान, और फिर कोई ऐसा दृढ़ प्रतिज्ञ और साहसी एक भी सिद्ध नहीं। अत: थोड़ी ईमानदारी से विचार करना चाहिए कि ये समस्त परिस्थितियां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आन्तरिक सच्चाई को सिद्ध कर रही है सिवाए इसके कि जब बुद्धिमान व्यक्ति इन परिस्थितियों पर और भी विचार करे कि **वह युग कि जिसमें आँहज़रत अवतरित हुए वास्तव में ऐसा युग था कि जिसकी वर्तमान स्थिति एक बुज़ुर्ग और अत्यन्त महत्वपूर्ण ख़ुदाई सुधारक और आकाशीय पथ-प्रदर्शक की नितान्त मुहताज थी।** (10) **तथा जो-जो शिक्षा दी गई वह भी वास्तव में सच्ची ℗और ऐसी थी कि जिसकी** ℗121
अत्यन्त आवश्यकता थी, और उन समस्त मामलों की संग्रहीता थी कि जिस से युग की समस्त आवश्यकताएँ पूर्ण होती थीं फिर उस शिक्षा ने प्रभाव भी ऐसा कर दिखाया कि लाखों हृदयों को सत्य और ईमानदारी की ओर खींच लाई और

हाशिया न. (10) ℗इतिहास स्पष्ट बताता है तथा क़ुर्आन करीम के अनेकों स्थानों में ℗120
जिनकी चर्चा ख़ुदा ने चाहा तो **प्रथम अध्याय** में होगी। पूर्ण विवरण के साथ आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस युग में अवतीर्ण हुए थे कि जब समस्त संसार में शिर्क, पथ-भ्रष्टता और सृष्टि-पूजा फैल चुकी

लाखों सीनों पर لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ (ला इलाहा इल्लल्लाह) का निशान अंकित कर दिया और नुबुव्वत का मूल उद्देश्य होता है अर्थात् मुक्ति के सिद्धान्तों की शिक्षा को ऐसे कमाल तक पहुँचाया जो किसी अन्य नबी के हाथ से किसी युग में नहीं हुआ। इन घटनाओं पर दृष्टि डालने पर हृदय से सहसा यह साक्ष्य जोश के साथ निकलेगी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अवश्य ख़ुदा की ओर से सच्चे पथ-प्रदर्शक हैं।
Ⓟ122 जो व्यक्ति द्वेष और हठधर्मी से इन्कारी हो उस का रोग तो असाध्य है Ⓟचाहे वह ख़ुदा

शेष हाशिया न. (10) ⟶

थी और समस्त लोगों ने सच्चे सिद्धान्तों को त्याग दिया था तथा सदमार्ग को भुला कर प्रत्येक सम्प्रदाय ने पृथक-पृथक बिदअतों का मार्ग धारण कर लिया था, अरब में मूर्ति पूजा का नितान्त ज़ोर था, फारस में अग्नि पूजा का बाज़ार गर्म था, हिन्दुस्तान में मूर्ति-पूजा के अलावा अन्य सैकड़ों प्रकार की सृष्टि-पूजा फैल गई थी तथा उन्हीं दिनों में कई पुराण और पुस्तकें जिनकी दृष्टि से बीसियों ख़ुदा के बन्दे ख़ुदा बनाए गए तथा अवतारों की उपासना की आधारशिला रखी गई लिखी जा चुकी थीं। पादरी बोर्ट[1] साहिब और कई अंग्रेज़ विद्वानों के कथनानुसार उन दिनों में ईसाई धर्म से अधिक और कोई धर्म ख़राब न था तथा पादरी लोगों की दुष्चरित्रता तथा बुरी धारणाओं से ईसाई धर्म पर एक बड़ा धब्बा लग चुका था। मसीही आस्थाओं में एक-दो ने नहीं अपितु कई वस्तुओं ने ख़ुदाई का स्थान ले लिया था। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ऐसी समान्य पथ-भ्रष्टता के समय में अवतरित होना जब कि स्वयं वर्तमान युग की स्थिति एक महान उपचारक और सुधारक को चाहती थी तथा ख़ुदाई पथ-प्रदर्शन की नितान्त आवश्यकता थी, प्रकटन करके एक संसार को तौहीद और शुभ कर्मों से प्रकाशमान करना तथा शिर्क और सृष्टि-पूजा का जो समस्त उपद्रवों की जननी है का विध्वंस करना इस बात पर स्पष्ट प्रमाण है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा के सच्चे रसूल और समस्त रसूलों से श्रेष्ठतम थे। उन का सच्चा होना तो इस से सिद्ध है कि इस सामान्य पथ-भ्रष्टता के युग में प्रकृति का नियम एक सच्चे पथ-प्रदर्शक (हादी) की मांग कर रहा था तथा ख़ुदाई नियम एक सच्चे पथ-प्रदर्शक का अभियाचक था, क्योंकि समस्त लोकों के पालनहार का अनादि नियम यही है कि जब संसार में किसी प्रकार का अत्याचार और कष्ट अपनी चरमसीमा को पहुँच जाता है तो ख़ुदा की दया उसे दूर करने की ओर

[1]-लिपिक की भूल से बोर्ट लिखा गया। सही पोर्ट (JOHN DAVENPORT, जान डेविन पोर्ट) है। (प्रकाशक)

का भी इन्कारी हो जाए, अन्यथा ये समस्त सच्चाई के लक्षण जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में पूर्ण तौर पर संग्रहीत हैं किसी अन्य नबी में कोई सिद्ध करके तो दिखाए ताकि हमें भी ज्ञात हो। मुख से व्यर्थ बातें बकना कोई बड़ी बात नहीं जो इच्छा हुई बक लिया कौन रोकता है परन्तु उचित तौर पर तर्क-संगत बात का तर्क-संगत उत्तर देना न्याय की शर्त है। यों तो हमारे समस्त विरोधीगण गालियाँ देने और अपमान करने के लिए बड़े चतुर हैं तथा निन्दा और अपमान करना किसी शिक्षक से ख़ूब सीखा है। हिन्दू दूसरे समस्त पैग़म्बरों और किताबों को झूठा कह कर केवल वेद का भजन गा रहे

शेष हाशिया न. (10) ⟶

ध्यान देती है। उदाहरणतया जब वर्षा के अभाव से अत्यन्त भीषण अकाल पड़ कर प्रजा का अन्त होने लगता है तो अन्ततः दयालु ख़ुदा वर्षा बरसा देता है और जब संक्रामक रोग से लाखों लोग मरने लगते हैं तो वायु के सुधार का कोई साधन निकल आता है अथवा कोई दवा ही पैदा हो जाती है और जब किसी अत्याचारी के पंजे में कोई जाति फंस जाती है तो अन्ततः कोई न्यायवान और आर्तनाद सुनने वाला उत्पन्न हो जाता है। अतः इसी प्रकार लोग जब ख़ुदा का मार्ग भूल जाते हैं तथा एकेश्वरवाद और सत्य की स्वीकारिता का परित्याग कर देते हैं तो ख़ुदा तआला अपनी ओर से किसी मनुष्य को पूर्ण बुद्धिमत्ता प्रदान करके तथा अपनी वाणी और इल्हाम से सम्मानित करके प्रजा के पथ-प्रदर्शन हेतु भेजता है ताकि जितना बिगाड़ हो गया है उसका सुधार करे। इसमें वास्तविकता यह है कि प्रतिपालक जो संसार का स्थापित करने वाला और स्थापित रखने वाला है तथा संसार की अनश्वरता और अस्तित्व उसी के सहारे और भरोसे से है। अपनी किसी दानशीलता और विशेषता का प्रजा से संकोच नहीं करता और न बेकार और निलंबित छोड़ता है अपितु उसकी प्रत्येक विशेषता यथा-अवसर तुरन्त प्रकट हो जाती है। अतः जबकि बौद्धिक प्रस्ताव की दृष्टि से इस बात पर निश्चय ही अनिवार्य हुआ कि प्रत्येक आपदा के प्रभुत्व को खण्डित करने के लिए ख़ुदा तआला की वह विशेषता जो इसके मुकाबले पर है प्रकट होती है और यह बात इतिहास से और स्वयं विरोधियों के स्वीकृति से और क़ुर्आन करीम के विशेष स्पष्ट वर्णन से सिद्ध हो चुकी है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रकटन के समय यह आपदा प्रभुत्व जमा रही थी कि संसार की समस्त जातियों ने एकेश्वरवाद, निःस्वार्थता, और सत्य को स्वीकार करने

हैं कि जो है वह वेद ही है, ईसाई समस्त ख़ुदाई शिक्षा का अन्त इन्जील पर किए बैठे हैं, यह नहीं समझते कि प्रत्येक किताब का स्थान और महत्व किताब के एकेश्वरवाद की उपादेयता से आंका जाता है और जो किताब एकेश्वरवाद का लाभ पहुँचाने में अधिक हो वही पद में अधिक होती है। यही कारण है कि यदि ख़ुदा के एकत्व का इन्कारी कैसा ही सदाचार का संग्रहकर्ता क्यों न हो परन्तु तब भी मुक्ति नहीं पा
Ⓟ123 सकता। अब उन सज्जनों को विचार करना Ⓟचाहिए कि एकेश्वरवाद जो मुक्ति का आधार है किस किताब के माध्यम से संसार में सर्वाधिक प्रकाशित हुई। भला कोई

शेष हाशिया न. (10) ⟶

का मार्ग त्याग दिया था, तथा यह बात भी प्रत्येक को ज्ञात है कि इस वर्तमान बिगाड़ का सुधार करने वाले और एक संसार को शिर्क के अंधकारों और सृष्टि-पूजा से निकाल कर एकेश्वरवाद पर स्थापित करने वाले केवल आँहज़रत ही हैं कोई अन्य नहीं। अत: इन समस्त भूमिकाओं से परिणाम यह निकला कि आँहज़रत ख़ुदा की ओर से सच्चे पथ-प्रदर्शक हैं। अत: इस प्रमाण की ओर अल्लाह तआला ने अपने पवित्र कलाम (क़ुर्आन) में स्वयं प्रवचन फ़रमाया है और वह यह है:-

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَوَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ① (भाग :14 सूरह: अन्नहल)

अर्थात् हमें अपनी ख़ुदावन्दी की हस्ती की क़सम है जो पथ-प्रदर्शन के वरदान के उदगम और प्रतिपालन और समस्त विशेषताओं का संकलनकर्ता है कि हम ने तुझ से पूर्व संसार के कई सम्प्रदायों और जातियों में पैग़म्बर भेजे। अत: वे लोग शैतान के धोखा देने से बिगड़ गए जबकि वही शैतान आज उनका मित्र है और यह किताब इसलिए उतारी गई ताकि उन लोगों के मतभेदों का निवारण किया जाए और जो बात सत्य है उसे स्पष्ट तौर पर सुनाया जाए और वास्तविक स्थिति यह है कि पृथ्वी सारी की सारी मर गई थी, ख़ुदा ने आकाश से पानी

①-अन्नहल :64 से 66

बताए तो सही कि किस देश में वेद के द्वारा ख़ुदा का एकत्व फैली हुआ है अथवा **वह संसार पृथ्वी के किस भू-भाग में निवास करता है कि जहां ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ने ख़ुदा की एकेश्वरवाद का ढोल बजा रखा है। हिन्दुस्तान में वेद के द्वारा फैला हुआ जो कुछ दिखाई देता है वह तो यही अग्नि-पूजा, सूर्य की उपासना तथा विष्णु की उपासना इत्यादि भांति-भांति की सृष्टि-उपासनाएँ हैं**

शेष हाशिया न. (10) ⟶

उतारा और नए सिरे से उस मुर्दा पृथ्वी को जीवित किया। यह इस किताब की सच्चाई का एक प्रतीक है परन्तु उन लोगों के लिए जो सुनते हैं अर्थात सत्य के अभिलाषी हैं।

अब ध्यान से देखना चाहिए कि वे तीनों उपर्युक्त भूमिकाएँ जिन से अभी हमने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे पथ-प्रदर्शक होने का परिणाम निकाला था, प्रशंसित आयत में किस ख़ूबी और सूक्ष्मता से लिखी हैं। प्रथम पथ-भ्रष्टों के हृदयों को जो सैकड़ों वर्षों की पथ-भ्रष्टता में पड़े हुए थे शुष्क और मुर्दा पृथ्वी से उपमा देकर तथा ख़ुदा की वाणी को वर्षा का पानी जो आकाश की ओर से आता है बता कर उस अनादि नियम की ओर संकेत किया जो वर्षा के नितान्त अभाव के समय में ख़ुदा की दया हमेशा प्रजा को बरबाद होने से बचा लेती है तथा यह बात बता दी कि यह प्रकृति का नियम केवल शारीरिक पानी में सीमित नहीं अपितु आध्यात्मिक पानी भी अत्याचार और कष्ट के समय में जो सामान्य पथ-भ्रष्टता का फैल जाना है अवश्य उतरता है और यहां भी ख़ुदा की दया हृदयों की आपदा के प्रभुत्व को खण्डित करने के लिए अवश्य प्रकटन करती है। फिर इन्हीं आयतों में यह दूसरी बात भी बता दी कि आँहज़रत के प्रकटन से पूर्व समस्त पृथ्वी पथ-भ्रष्ट हो चुकी थी और इसी प्रकार यह बात कह कर कि इसमें इस किताब की सच्चाई का प्रतीक है, सत्य के अभिलाषियों का इस परिणाम के निकालने की ओर ध्यान दिलाया कि क़ुर्आन करीम ख़ुदा की किताब है।

जैसा कि इस तर्क से हज़रत ख़ातमुलअंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चा नबी होना सिद्ध होता है ऐसा ही इससे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस्ल्लम का अन्य नबियों से श्रेष्ठतम होना भी सिद्ध होता है क्योंकि आँहज़रत को समस्त संसार का मुक़ाबला करना पड़ा और जो कार्य आंहज़रत[स.] प्रशंसित के सुपुर्द हुआ वह वास्तव में हज़ार, दो हज़ार नबियों का कार्य था, परन्तु चूँकि

जिनके लिखने से भी घृणा आती है। हिन्दुस्तान के इस कोने से उस कोने तक
Ⓟ124 **दृष्टि डाल कर देखें जितने हिन्दू हैं सब सृष्टि-पूजा में डूबे Ⓟहुए दिखाई देंगे। कोई महादेव का उपासक, कोई कृष्ण जी का भजन गाने वाला, कोई मूर्तियों के आगे हाथ जोड़ने वाला।** ऐसा ही हाल इंजील का है। कोई देश दिखाई नहीं देता कि जहां इंजील द्वारा एकेश्वरवाद का प्रसारण हुआ हो अपितु इन्जील के अनुयायी

शेष हाशिया न. (10) ⟶

ख़ुदा को स्वीकार था कि प्रजा एक ही जाति और एक ही क़बीले की भांति हो जाए तथा अपरिचय और अजनबियत जाती रहे और जैसे यह सिलसिला एकत्व से आरम्भ हुआ है वहदत पर ही समाप्त हो। इसलिए उसने अन्तिम पथ-प्रदर्शन को समस्त संसार के लिए सामूहिक तौर पर भेजा तथा उस समय युग भी वह आ पहुँचा था कि मार्गों के खुल जाने तथा एक जाति के दूसरी जाति से परिचित होने तथा एक देश की दूसरे देश से एकता तथा एक ही प्रकार के क्रम की कार्यवाही आरम्भ हो गई थी और हमेशा के मेल-जोल के कारण कुछ देशों की विचार-धारा अन्य देशों की विचार-धारा को प्रभावित करने लगी थी। अत: यह कार्यवाही अब तक उन्नति पर है और सारे संसाधन जैसे रेलगाड़ी, तार, जहाज़ इत्यादि ऐसे ही दिन-प्रतिदिन निकल रहे हैं जिन से निश्चय ही यह विदित होता है कि उस सर्वशक्तिमान का यही इरादा है कि किसी दिन समस्त संसार को एक जाति की तरह बना दे। बहरहाल पूर्वकालीन नबियों का प्रयास सीमित था, क्योंकि उनकी रिसालत भी एक जाति में सीमित होती थी तथा आँहज़रत[स] का प्रयास विशाल और असीमित था क्योंकि उनकी रिसालत सार्वजनिक थी। यही कारण है कि क़ुर्आन करीम में संसार के समस्त मिथ्या धर्मों का खण्डन विद्यमान है तथा इंजील में केवल यहूदियों की दुष्चरित्रता की चर्चा है। अत: आँहज़रत[स] का अन्य नबियों से श्रेष्टतम होना ऐसे असीमित प्रयास से सिद्ध है। अतिरिक्त इस के कि यह बात आभामय स्पष्ट बातों में से है कि शिर्क और सृष्टि-पूजन को दूर करना तथा एकेश्वरवाद और ख़ुदा के प्रताप को हृदयों में बैठाना समस्त नेकियों से श्रेष्ठ और उच्चतम नेकी है। अत: क्या कोई इस से इन्कार कर सकता है कि यह नेकी जैसी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रकटन में आई है किसी अन्य नबी से प्रकटन में नहीं आई। आज संसार में क़ुर्आन करीम के अतिरिक्त और क़ौन सी किताब है जिसने करोड़ों लोगों को एकेश्वरवाद पर

एकेश्वरवादी को मुक्ति पाने वाला ही नहीं समझते । पादरी लोग एकेश्वरवादियों को एक अंधकारमय अग्नि में भेज रहे हैं जहाँ रोना और दांत-पीसना होगा। उनके कथनानुसार उस काली अग्नि से वही सुरक्षित रहेगा जो ख़ुदा पर मृत्यु, कष्ट, भूख, प्यास, दुख, दर्द, शरीर धारण करना तथा किसी शरीर में प्रवेश कर जाना हमेशा के

शेष हाशिया न. (10) ⟶

स्थापित कर रखा है। स्पष्ट है कि जिसके हाथ से बड़ा सुधार हुआ वही सबसे महान् और बड़ा है।

इस स्थान पर पादरी फन्डर साहिब लेखक 'मीज़ानुलहक़' अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि वास्तव में उस युग के ईसाई कि जब इस्लाम धर्म प्रारम्भ हुआ था अत्यधिक बिदअतों में ग्रसित थे तथा इंजील पर से उनका अमल जाता रहा था। तत्पश्चात हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चर्चा करके लिखते हैं कि यही कारण था कि ख़ुदा ने उन्हें धर्म फैलाने से न रोका क्योंकि उस समय ख़ुदा को भी स्वीकार था कि ईसाइयों को जिन्होंने इन्जील पर अमल करना त्याग दिया था चेतावनी और दण्ड दे।

अब पादरी साहिब की बुद्धिमत्ता, न्याय और ईमानदारी को देखिए कि बात को कहां से कहां घसीट कर ले गए, अपने ईसाई भाइयों पर ख़ुदा का प्रकोप उतार दिया, परन्तु आँहज़रत की रिसालत स्वीकार करना तबियत को सहन न हुआ। वाह रे तेरा द्वेष और ईर्ष्या, दण्ड देने का खूब कहा। खेद कि पादरी साहिब को ऐसी द्वेषपूर्ण राय प्रकट करते हुए ख़ुदा का कुछ भय न आया। अन्यथा विदित है कि ख़ुदा तआला के सन्दर्भ में यह बात मुख पर लाना कि वह एक संसार को पथ-भ्रष्ट और ग़लती पर पाकर उनके लिए ऐसा सामान नियुक्त करता है, जिस से वे और भी पथ-भ्रष्टता में पड़े अत्यन्त क़ुफ़्र, नितान्त निर्लज्जता और हठधर्मी है। यह पादरी सज्जनों का ही सौभाग्य और धार्मिकता है कि आँहज़रत की शत्रुता के लिए ख़ुदा को भी पथ-प्रदर्शक होने की विशेषता से वंचित करते हैं, अन्यथा कौन बुद्धिमान और ईमानदार इस कृत्य को ख़ुदा से सम्बद्ध कर सकता है कि ख़ुदा को उस युग में कि जब पथ-भ्रष्टता और बुरी धारणा चरम सीमा को पहुँच गई थी और लोग सरासर शिर्क और सृष्टि-पूजा में तल्लीन थे, यही युक्ति सूझी और हृदय को यही उपचार रुचिकर लगा जो पादरी साहिब के कथनानुसार प्रजा को पहले से अधिक निकृष्ट कर दे तथा एक सुधारक को उत्पन्न करने के स्थान पर एक ऐसे

लिए स्वीकार करता हो अन्यथा बचने का कोई उपाय नहीं, जैसे वह काल्पनिक स्वर्ग यूरोप की दो बड़ी जातियों अंग्रेज़ों और रूस वालों को आधा-आधा बांट कर दिया जाएगा तथा शेष समस्त एकेश्वरवादी उस अपराध से कि ख़ुदा को प्रत्येक प्रकार की क्षति से जो उसके पूर्ण कमाल के विपरीत है पवित्र समझते थे

शेष हाशिया न. (10)

व्यक्ति को प्रजा के सर पर सवार कर दे जो पादरियों के विचारानुसार रही सही योग्यता को भी दूर करे अर्थात् ख़ुदा को खेल-कूद और गन्दगी में प्रवेश से पवित्र समझे तथा जन्म, मरण, दुख-दर्द से पावन ठहराए। क्या किसी के विचार का हार्दिक न्याय यह फ़त्वा देता है कि दयालु और कृपालु ख़ुदा में ऐसी ही आदतें हैं और वह संसार को पथ-भ्रष्ट देख कर ऐसी ही व्यवस्था किया करता है कि पहले से सैकड़ों गुना अधिक पथ-भ्रष्टता में डालता है। किसी न्यायवान पर इस बात का समझना कुछ कठिन नहीं कि संसार में सामान्य बिगाड़ का फैल जाना एक सुधारक को चाहता है तथा प्रत्येक बुद्धिमान को स्पष्ट दिखाई देता है कि मूर्खता और पथ-प्रदर्शन की विशेषता प्रजा पर प्रकट होना चाहिए, परन्तु जो व्यक्ति द्वेष भावना से प्रेरित होकर अन्धा हो जाए उसे क्योंकर दिखाई दे। क्या कभी अंधे ने कुछ देखा है कि वोह ही देखे। खेद कि पादरी लोग इस प्रकार की हठधर्मी करके फिर हिसाब (प्रलय) के दिन से डरते नहीं। क्योंकर डरें मसीह के कफ़्फ़ारा[m] पर भरोसा जो ठहरा अन्यथा बुद्धि कदापि स्वीकार नहीं कर सकती कि पादरियों की ऐसी दोषपूर्ण बुद्धि है कि वे अब तक ख़ुदा के अनादि नियम से भी अपरिचित हैं और वह ख़ुदा जिसने मूसा के समय में एक क़ौम को लापरवाह और अत्याचारी के हाथ में गिरफ़्तार देखकर अपना पैग़म्बर भेजा और फिर ईसा के समय में यहूदियों की थोड़ी सी दुष्चरित्रता पर तुरन्त हज़रत मसीह को भेज दिया। वह अन्तिम युग में ऐसा निष्ठुर और कठोर हृदयी हो गया यह जानते हुए कि समस्त संसार शिर्क और सृष्टि पूजा में डूब गया, परन्तु उसे पथ-प्रदर्शन उतारने का कोई विचार न आया अपितु इसके विपरीत पथ-भ्रष्टों का और भी सत्यानाश करने लगा मानो पूर्वकालीन युगों में तो पथ-भ्रष्टता उसे बुरी मालूम होती थी और अब अच्छी मालूम होने लगी। इति.

---

m प्रायश्चित, पापों से पवित्र होने की वह प्रक्रिया कि ईसा मसीह प्रजा के पापों की पवित्रता हेतु सलीब पर मृत्यु को प्राप्त हुए, जो इस आस्था पर पूर्ण विश्वास करे तो ईसाइयों के निकट उसके पाप समाप्त हो गए। (अनुवादक)

नर्क ℗में डाले जाएँगे। हमारे इस लेख का उद्देश्य यह है कि आज समस्त पृथ्वी पर वह ℗125
वस्तु जिसका नाम एकेश्वरवाद है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत (जाति) के अतिरिक्त अन्य किसी सम्प्रदाय में नहीं पाई जाती और क़ुर्आन करीम के अतिरिक्त अन्य किसी किताब का निशान नहीं मिलता जो करोड़ों की जनसंख्या को ख़ुदा के एकत्व पर स्थापित करती हो और अत्यन्त सम्मान के साथ उस सच्चे ख़ुदा की ओर पथ-प्रदर्शक हो। **प्रत्येक जाति ने अपना-अपना काल्पनिक ख़ुदा बना लिया तथा मुसलमानों का वही ख़ुदा है जो हमेशा से अनश्वर, अविनाशी, अपरिवर्तनीय तथा अपनी अनादि विशेषताओं में ऐसा ही है जैसा पहले था।** अतः ये समस्त घटनाएँ ऐसी हैं जिन से इस्लाम के पथ-प्रदर्शक की नुबुव्वत की सच्चाई सूर्य से भी अधिक प्रकाशमान है, क्योंकि नुबुव्वत का अर्थ और उस का मूल उद्देश्य उन्हीं के मुबारक अस्तित्व में सिद्ध और प्रमाणित हो रहा है और जैसा कि निर्मित वस्तुओं से निर्माणकर्ता पहचाना जाता है
उसी प्रकार बुद्धिमान लोग वर्तमान सुधार से उस ख़ुदाई सुधारक ℗को पहचान रहे हैं। ℗126
इसी प्रकार सहस्त्रों ऐसी घटनाएँ हैं जिन से आँहज़रत का ख़ुदा की सहायता और समर्थन से समर्थित होना सिद्ध होता है। उदाहरणतया क्या यह आश्चर्यजनक वृत्तान्त नहीं कि एक निर्धन, निर्बल, असहाय,अनपढ़, अनाथ अकेला, बेचारा ऐसे समय में जिसमें प्रत्येक जाति पूरी-पूरी आर्थिक, सैनिक, और ज्ञान की शक्ति रखती थी ऐसी प्रकाशमान शिक्षा लाया कि अपने विच्छेदक तर्कों और स्पष्ट सबूतों से सभी का मुख बन्द कर दिया तथा बड़े-बड़े लोगों की जो दार्शनिक बने फिरते थे और फ्लास्फ़र कहलाते थे प्रत्यक्ष ग़लतियाँ निकालीं और फिर बावजूद विवशता और निर्धनता के, बल भी ऐसा दिखाया कि बादशाहों को सिंहासनों से गिरा दिया तथा उन्हीं सिंहासनों पर निर्धनों को बैठाया। यदि यह ख़ुदा का समर्थन और सहायता नहीं थी तो और क्या था, क्या समस्त संसार पर बुद्धि, ज्ञान, शक्ति और बल में विजयी हो जाना ख़ुदा की सहायता के अभाव में भी हुआ करता है। विचार करना चाहिए कि जब आँहज़रत ने आरम्भ में मक्का के लोगों में घोषणा की कि मैं नबी हूँ उस समय उनके साथ कौन था, किस बादशाह का ख़ज़ाना
उन के अधिकार में आ गया था जिस पर विश्वास और भरोसा ℗करके समस्त संसार ℗127
से मुकाबला करने का निर्णय हो गया या कौन सी सेना एकत्र कर ली थी जिस पर भरोसा करके समस्त बादशाहों के आक्रमणों से शान्ति हो गई थी। हमारे विरोधी भी

जानते हैं कि उस समय आँहज़रत धरती पर अकेले, असहाय और निर्धन तथा खाली हाथ थे, उनके साथ केवल ख़ुदा था जिसने उन्हें एक महान् उद्देश्य के लिए उत्पन्न किया था। तत्पश्चात तनिक इस ओर भी विचार करना चाहिए कि वह किस पाठशाला में पढ़े थे और किस स्कूल से प्रमाण-पत्र प्राप्त किया था तथा कब उन्होंने ईसाइयों यहूदियों और आर्य लोगों इत्यादि संसार के सम्प्रदायों की पवित्र किताबों का अध्ययन किया था। अत: यदि क़ुर्आन करीम का उतारने वाला ख़ुदा नहीं है तो इसमें समस्त संसार के सत्य ज्ञान क्योंकर लिखे गए और आध्यात्म ज्ञान क्योंकर लिखे गए और अध्यात्म ज्ञान के वे सर्वांगपूर्ण प्रमाण पूर्णता और दुरुस्ती के साथ लिखने से समस्त तर्क शास्त्री, बुद्धिजीवी और दार्शनिक असमर्थ रहे और हमेशा ग़लतियों में डूबते-डूबते मर गए वे किस अद्धितीय और अनुपम दार्शनिक ने क़ुर्आन करीम में लिख दिए और क्यों कर वे श्रेष्ठ
®128 श्रेणी की तर्कपूर्ण इबारतें जिनके पवित्र और ®स्पष्ट तर्कों को देखकर अहंकारी यूनानी और हिन्दुस्तान के दार्शनिक यदि कुछ शर्म हो तो जीवित ही मर जाएं, एक बेचारे अनपढ़ के होठों से निकलीं सच्चाई के इतने सबूत पूर्वकालीन नबियों में कहां मौजूद हैं। आज संसार में वह कौन सी किताब है जो इन समस्त बातों में क़ुर्आन करीम का मुकाबला कर सकती है। किसी नबी पर वे समस्त घटनाएं जिनका हमने उल्लेख किया आंहज़रत (स.अ.व.) के समान गुज़री हैं। विशेषकर जो वेद के इल्हाम प्राप्त ऋषि माने जाते हैं उनका तो स्वयं अस्तित्व ही सिद्ध नहीं होता इस से दृष्टि हटाते हुए कि कोई सत्य का प्रभाव सिद्ध हो। सज्जनो ! यदि आप लोगों के निकट न्याय भी कोई वस्तु है और बुद्धि भी कुछ महत्वपूर्ण वस्तु है तो या तो सत्य और ईमानदारी के ऐसे तर्कों को कि जिन का क़ुर्आन करीम में समावेश है जिन्हें हम **प्रथम अध्याय** से लिखना आरम्भ करेंगे किसी अपनी पुस्तक से निकाल कर दिखाएं अन्यथा लज्जित होते हुए गालियाँ देना त्याग दें। यदि ख़ुदा का कुछ भय है और मुक्ति की कुछ अभिलाषा है तो ईमान लाओ। अब यह भूमिका समाप्त हो गई और हमने जितने ऊपरी उद्देश्य लिखने थे सब लिख चुके। तदोपरान्त पुस्तक का मूल उद्देश्य आरम्भ होगा तथा क़ुर्आन करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत की सच्चाई के तर्कों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाएगा और वे समस्त प्रमाण कि जिनकी सच्चाई की श्रेष्ठ श्रेणी पर दृष्टि डाल कर दस हज़ार रुपए का विज्ञापन इस पुस्तक के साथ संलग्न किया गया है स्वयं

Ⓟकुर्आन करीम में से निकाल कर दिखाए जाएंगे और बौद्धिक तर्कों को प्रस्तुत करने का Ⓟ129
यह ढंग जिसे विशेष तौर पर ख़ुदाई कलाम के वर्णन पर निर्भर रखा गया है यह हम और हमारे विरोधियों में एक ऐसा स्पष्ट निर्णय है जो प्रत्येक बुद्धिमान की आँख खोल देने के लिए पर्याप्त है तथा एक ऐसा पथ-प्रदर्शक प्रकाश है जिस से झूठों और सच्चों में नितान्त सरलता से अन्तर स्पष्ट हो जाएगा। अत: अब हे इस्लाम का इन्कार करने वाले सज्जनो ! यदि आप लोगों को क़ुर्आन करीम की सच्चाई में कोई आपत्ति है या उसकी श्रेष्ठता स्वीकार करने में कुछ संकोच है तो आप पर अनिवार्य हो चुका है कि उन प्रमाणों और तर्कों का अपनी-अपनी पुस्तकों में बौद्धिक तौर पर उत्तर दें अन्यथा आप लोग जानते हैं तथा प्रत्येक न्यायवान जानता है कि जिस किताब की सच्चाई और श्रेष्ठता सैकड़ों तर्कों द्वारा सिद्ध हो चुकी हो तो उस के तर्कों का खण्डन किए बिना तथा ऐसी पुस्तक के जो चमत्कारों में उसके समान हो प्रस्तुत किए बिना मनुष्य का बनाया हुआ झूठ समझना तथा अपमान करना एक ऐसा अन्यायपूर्ण कृत्य है जो लज्जा और शर्म के गुण तथा पवित्र नैतिकता के बिल्कुल विपरीत है। यहाँ हम इस बात का भी स्पष्ट तौर पर वर्णन कर देते हैं कि जो सज्जन इस पुस्तक के प्रकाशित होने के पश्चात् सच्चों की भांति उसके तर्कों के खण्डन की ओर ध्यान न दें तथा यों ही अपनी पत्रिकाओं, अख़बारों, भाषणों और लेखों में जनसाधारण को धोखा देने हेतु इस्लाम के पवित्र झरने का दूषित होना वर्णन करें या अपने घर में ही क़ुर्आनी शिक्षा को आरोप-योग्य ठहराएं तो ऐसे सज्जन चाहे ईसाई हों, हिन्दू हों या ब्रह्म समाजी या कोई अन्य हों, बहरहाल उनका यह कृत्य ईमानदारी और स्वभाव की पवित्रता के विपरीत समझा जाएगा, क्योंकि जिस स्थिति में हम ठोस तर्कों द्वारा क़ुर्आन करीम का सत्य और सच्चाई भली-भांति सिद्ध कर चुके तथा अदूरदर्शी और मन्द बुद्धि रखने वालों के समस्त आरोप दूर किए गए तथा विवाद की पूर्णता हेतु उत्तर देने वालों को पर्याप्त धन-राशि देने का आश्वासन भी दिया गया कि यदि चाहें तो अपनी हार्दिक सन्तुष्टि हेतु सरकारी रजिस्ट्री द्वारा दस्तावेज़ लिखवा लें तो फिर बावजूद हमारी ऐसी सच्चाई और इस स्तर की निश्छलता के यदि अब भी कोई व्यक्ति विवाद और शास्त्रार्थ के इस सदमार्ग को जिसमें विजयी होने पर
इतनी राशि मुफ़्त प्राप्त हो रही है Ⓟन अपनाए और इस पुस्तक के मुक़ाबले से पलायन Ⓟ130
करके मूर्खों, लड़कों तथा जन साधारण को बहकाने के लिए इस्लाम पर मिथ्या आरोप

लगाता रहे तो इसके अतिरिक्त और क्या समझें कि उसकी नीयत में ही ख़राबी और उसके स्वभाव में ही विकार है। सज्जनो ईर्ष्या का त्याग करो और सत्य को स्वीकार करो, आओ कुछ ख़ुदा से डरो, यह संसार हमेशा रहने का स्थान नहीं, इस पर मुग्ध न हो, यह कुछ दिनों का जीवन प्रलय की खेती है इसे मिथ्या आस्थाओं तथा झूठे विचारों में नष्ट न करो, यह बड़े काम की वस्तु है इसे हाथ से यों ही न जाने दो, यह यात्री-निवास कुछ दिन की बात है इससे हृदय मत लगाओ, यह भोग-विलास शाश्वत नहीं है इस पर मत फूलो।

عیش دنیائے دوں دمے چند ست آخرش کار باخداوند ست

इस तिरस्कृत संसार का भोग-विलास अस्थायी है, अन्ततः ख़ुदा तआला से ही काम पड़ता है। ☆

ایں سرائے زوال و موت و فناست ہر کہ بنشست اندریں برخاست

यह संसार मृत्यु, नश्वरता और अवनति का स्थल है जो भी यहां रहा अन्ततः उसने कूच किया। ☆

یک دمے رو بسوئے گورستان واز خموشان آں بہ پرس نشاں

थोड़ी देर के लिए कब्रस्तान में जा और वहां के मुर्दों से उनका हाल पूछ। ☆

کہ مآل حیاتِ دنیا چیست ہر کہ پیدا شدست تا کے زیست

कि भौतिक जीवन का परिणाम क्या है तथा जिसने यहां जन्म लिया वह कब तक जीवित रहा है। ☆

ترک کن کین و کبر و ناز و دلال تانہ کارت کشد بسوئے ضلال

द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार और गर्व करना त्याग दे ताकि तेरा अन्त पथभ्रष्टता पर न हो। ☆

چوں ازیں کار گہ بہ بندی بار باز نائی دریں بلاد و دیار

जब तू इस भौतिक संसार से अपना बोरिया-बिस्तर बांध लेगा तो पुनः इन शहरों और देशों में वापस नहीं आ सकेगा। ☆

اے زدیں بے خبر بخور غم دیں کہ نجاتت معلق ست بدیں

हे धर्म से अज्ञान! तू धर्म की चिन्ता कर क्योंकि तेरी मुक्ति इसी पर निर्भर है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

ہاں تغافل مکن ازیں غم خویش   کہ ترا کار مشکل ست بہ پیش

ख़बरदार अपनी इस चिन्ता से लापरवाही न करो क्योंकि तुम्हारे समक्ष कठिन कार्य है। ☆

دل ازیں درد و غم فگار بکن   دل چہ جاں نیز ہم نثار بکن

हृदय को इस कष्ट और चिन्ता से घायल कर, हृदय क्या वस्तु है प्राण भी न्यौछावर कर। ☆

ہست کارت ہمہ بآں یک ذات   چوں صبوری کنی ازو ہیہات

तेरे समस्त कार्य उसी एक हस्ती पर आधारित हैं। खेद है कि कि उसके बिना तुझे कैसे धैर्य आता है। ☆

بخت گردد چو زو بگردی باز   دولت آید ز آمدن بہ نیاز

जब तू उस से विमुख होता है तो तेरा भाग्य ख़राब होता है और विनीतता के साथ उस की ओर आने से समृद्धि प्राप्त होती है। ☆

ⓟچوں بری ز ایں چنیں یارے   چوں بدیں ابلہی کنی کارے ⓟ131

तो तू ऐसे मित्र से किस प्रकार सम्बन्ध विच्छेद कर सकता है और किस प्रकार ऐसा मूर्खतापूर्ण कार्य कर सकता है। ☆

ایں جہان ست مثل مردارے   چوں سگے ہر طرف طلب گارے

यह संसार एक मुरदार की भांति है और उसके इच्छुक उसे कुत्तों की तरह चिपटे हुए हैं। ☆

خنک آں مرد کو ازیں مردار   روئے آرد بسوئے آں دادار

भाग्यशाली है वह व्यक्ति जो इस मुरदार संसार को त्याग कर अपना ध्यान ख़ुदा की ओर लगाता है। ☆

چشم بندد زغیر و داد دہد   در سر یار سر بباد دہد

और मिथ्या उपास्यों से विमुख हो गया तथा न्याय करता है और प्रियतम के ध्यान में अपना सर बलिदान कर देता है। ☆

ایں ہمہ جوش حرص و آز و ہوا   ہست تا ہست مردِ نابینا

ये समस्त बातें लोभ, लालच और इच्छाओं का तूफ़ान उसी समय तक है जब तक कि मनुष्य नेत्रहीन है। ☆

☆ -डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

چشم دل اندکے چو گردد باز سرد گردد بر آدمی ہمہ آز

परन्तु जब हृदय की आँख थोड़ी सी भी खुल जाए तो मनुष्य का समस्त लोभ-लालच ठंडा पड़ जाता है। ☆

اے رسن ہائے آز کردہ دراز زیں ہوس ہا چرا نیائی باز

हे वह व्यक्ति जिसने लोभ की रस्सियाँ लम्बी कर रखी हैं, तू इस लोभ-लालसा से क्यों अलग नहीं होता। ☆

دولت عمر دمبدم بزوال تو پریشاں بفکر دولت و مال

आयु की दौलत हर समय घाटे में है और तू धन-दौलत की चिन्ता में व्याकुल है। ☆

خویش و قوم و قبیلہ پر ز دغا تو بریدہ برائے شاں ز خدا

परिजन, क़ौम, स्वजन सब के सब धोखेबाज़ हैं और तूने उनके लिए ख़ुदा से संबंध तोड़ रखा है। ☆

ایں ہمہ را بکشتنت آہنگ گہ بصلحت کشند و گاہ بہ جنگ

ये समस्त तेरी हिंसा के अभिलाषी हैं ये कभी संधि से मारते हैं तो कभी लड़ कर। ☆

خاک بر رشتہ کہ پیوندت بگسلاند ز یار دل بندت

उस संबंध पर मिट्टी पड़े जो वास्तविक और हार्दिक प्रियतम से तेरे सम्बन्ध को तुड़वाए। ☆

ہست آخر بآں خدا کارت نہ تو یارِ کسے نہ کس یارت

अन्ततः तेरा गन्तव्य भी वही ख़ुदा है और न तो तू किसी का मित्र है और न कोई तेरा। ☆

قدمِ خود بنہ بخوفِ اتم تا روی از جہاں بصدق قدم

अत्यन्त भय और डर के साथ तू अपना क़दम रख ताकि तू सच्चाई के साथ इस संसार से जा सके। ☆

تا خدا ات محبّ خود سازد نظر لطف بر تو اندازد

ताकि अल्लाह तआला तुझे अपना प्रेमी बना ले और तुझ पर मेहरबानी की दृष्टि डाले। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

باده نوشی زعشق و زاں بادہ مست باشی و بے خود افتادہ

और तू उसकी प्रेम रूपी मदिरा का रसपान करे और तू उसके नशे से मस्त और निश्चेष्ट पड़ा रहे। ☆

نیست ایں جائے گہ مقام مدام ہوش کن تا نہ بد شود انجام

यह संसार अस्थायी है अनश्वर नहीं। सतर्क रह कहीं तेरा अन्त बुरा न हो। ☆

مہر آں زندہ نورت افزاید مہر ایں مردگان چہ کار آید

उस जीवित का प्रेम तेरे प्रकश को बढ़ाएगा तथा इन मुर्दों का प्रेम तेरे किस काम आएगा। ☆

Ⓟلقمہ و معدہ و سر و دستار سربسر ہست بخشش دادار Ⓟ132

भोजन, आमाशय, सर और पगड़ी ये सब की सब ख़ुदा की अनुकम्पाएं हैं। ☆

حق باری شناس و شرم بدار پیش زاں کز جہاں بہ بندی بار

अल्लाह तआला के अधिकार को पहचान तथा शर्म और लज्जा से काम ले इससे पूर्व कि तू इस संसार से कूच करे। ☆

رو ازو ازچہ رو بگردانی سگ وفا مے کند تو انسانی

तू उससे विमुख होता है। कुत्ता वफ़ादारी करता है तू तो मनुष्य है। ☆

ترس باید ز قادرے اکبر ہر کہ عارف ترست ترساں تر

सर्वशक्तिमान प्रतापी अल्लाह से भयभीत रहना चाहिए। अत: जो ख़ुदा को अधिक जानता है वही अधिक भयभीत रहता है। ☆

فاسقاں در سیاہ کاری اند عارفاں در دعا وٗ زاری اند

दुराचारी लोग पापों में लिप्त हैं और ख़दा को पहचानने वाले लोग दुआ और रोने-धोने में लीन हैं। ☆

اے خنک دیدۂ کہ گریانش اے ہمایوں دلے کہ بریانش

शीतल रहे वह आँख जो उसके लिए रोती है और मुबारक है वह हृदय जो उसके लिए जलता है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

اے مبارک کسیکہ طالب اوست فارغ از عمر و زید با رُخِ دوست

मुबारक है वह व्यक्ति जो उसका अभिलाषी है तथा अपने वास्तविक प्रियतम के सामने उमर और ज़ैद (के प्रेम) से पृथक होकर उसके दरबार में रहता है। ☆

ہر کہ گیرد رہِ خدائے یگاں آں خدایش بس ست در دو جہاں

जो व्यक्ति भी एक ख़ुदा के मार्ग को धारण करेगा तो अल्लाह तआला उसके लिए दोनों लोकों में पर्याप्त है।

لاجرم طالب رضائے خدا بگسلد از ہمہ برائے خدا

निश्चय ही ख़ुदा की प्रसन्नता का अभिलाषी ख़ुदा के लिए प्रत्येक से संबंध विच्छेद कर लेता है। ☆

شیوہ اش مے شود فدا گشتن بہرحق ہم زجاں جدا گشتن

उसका धर्म तो यार पर बलिदान हो जाना और ख़ुदा के लिए अपने प्राण से पृथक होना है। ☆

در رضائے خدا شدن چوں خاک نیستی و فنا و استہلاک

ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए धूल में मिलना, नास्ति, नश्वरता और विनाश का अभिलाषी होना। ☆

دل نہادن در آنچہ مرضی یار صبر زیر مجارئی اقدار

जो प्रियतम की इच्छा उस पर प्रसन्न रहना और जारी किए गए प्रारब्ध पर सब्र करना। ☆

تو بحق نیز دیگرے خواہی ایں خیال ست اصل گمراہی

तू ख़ुदा के साथ अन्य को भी चाहता है और यही विचार पथभ्रष्टता का मूल है। ☆

گر دہندت بصیرت و مردی ازہمہ خلق سوئے حق گردی

यदि तुझ में बुद्धि और साहस हो तो तू सम्पूर्ण सृष्टि को त्याग कर ख़ुदा की ओर ही ध्यान लगाए रहे। ☆

درحقیقت بس ست یار یکے دل یکے جاں یکے نگار یکے

नि:सन्देह एक ही प्रियतम पर्याप्त है क्योंकि हृदय भी एक होता है और प्राण भी एक इसलिए प्रियतम भी एक ही होना चाहिए। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

ہر کہ او عاشق یکے باشد ترکِ جاں پیشش اند کے باشد

जो व्यक्ति किसी एक से प्रेम करता है उसके लिए प्राण देना साधारण बात होगी। ☆

کوئے او باشدش ز بستاں بہ روئے او باشدش ز ریحاں بہ

उसका कूचा उसके लिए उद्यान से उत्तम है और उसका चेहरा न्याज़बू से भी अधिक रुचिकर होता है। ☆

Ⓟہرچہ دلبر بدوکند آں بہ دیدنِ دلبرش ز صدجاں بہ Ⓟ133

उस का प्रियतम उसके साथ जो भी व्यवहार करता है वह उचित होता है तथा उसके प्रियतम का दर्शन सौ प्रियतमों के दर्शन से भी उत्तम है। ☆

پا بہ زنجیر پیش دلدارے بہ ز ہجراں و سیر گلزارے

प्रियतम के पास बंदी बन कर रहना उसके लिए उस वियोग से उत्तम है जिसमें उद्यान की सैर हो। ☆

ہر کہ دارد یکے دلآرامے جز بوصلش نیابد آرامے

जिस व्यक्ति के हृदय का एक ही चैन (प्रियतम) है उसे उसके मिलन के अभाव में सन्तोष ही नहीं आता। ☆

شب بہ بستر تپد ز فرقت یار ہمہ عالم بخواب و او بیدار

प्रियतम के वियोग के कारण रात भर बिस्तर पर तड़पता है। समस्त संसार सुप्तास्था में होता है परन्तु वह जाग रहा होता है। ☆

تا نہ بیند صبوری اش ناید ہر دمش سیل عشق بر باید

जब तक वह उसके दर्शन न कर ले उसे शान्ति प्राप्त नहीं होती उसे प्रेम का सैलाब प्रतिपल बहाए लिए जाता है। ☆

در دلِ عاشقاں قرار کجا توبہ کردن ز روئے یار کجا

प्रेमियों के हृदय में चैन कहां तथा प्रियतम के दर्शन से तौबा का क्या मतलब? ☆

حسن جاناں بگوشِ خاطر شاں گفت رازے کہ گفتنش نتواں

प्रियतम के सौन्दर्य ने उसके हृदय के कान में ऐसा रहस्य कह दिया है। जिसका वर्णन असम्भव है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

ہم چنیں ست سیرتِ عشاق صدق ورزاں بایزد خلاق

ख़ुदा के साथ सच्चे प्रेमियों की अदा यही है कि वे ख़ुदा के साथ सच्चाई का मामला रखते हैं। ☆

جاں منور بشمع صدق و یقیں نور حق تافتہ بہ لوح جبیں

निष्ठा और सत्य के दीपक से उनका प्राण प्रकाशित रहता है तथा सत्य का प्रकाश उनके मस्तक से फूट-फूट कर निकलता है। ☆

کامیابان و زیں جہاں ناکام زیرکاں دُور تر پریدہ ز دام

वे सफल हैं परन्तु संसार से असफल, बहुत बुद्धिमान हैं क्योंकि संसार के जाल से उड़कर दूर चले गए हैं। ☆

از خود و نفس خود خلاص شدہ مہبط فیض نورِ خاص شدہ

स्वयं से तथा अपनी तामसिक वृत्ति से मुक्त हो गए तथा वह विशेष प्रकाश के वरदान उतरने का केन्द्र बन गए। ☆

در خداوند خویش دل بستہ باطن از غیر یار بگسستہ

अपने ख़ुदा से हृदय लगा लिया तथा ख़ुदा के अतिरिक्त से हृदय को अलग कर लिया। ☆

پاک از دخل غیر منزلِ دل یار کردہ بجان و دل منزل

उसका हृदय अन्य के हस्तक्षेप से सुरक्षित पवित्र है। प्रियतम तन-मन से उसके अन्दर समा गया है। ☆

دین و دنیا بکار او کردند بر درش اوفتادہ چو گردند

उन्होंने अपने धर्म और संसार यार के लिए समर्पित कर दिए और धूल की तरह उसकी चौखट पर पड़े रहते हैं। ☆

ریزہ ریزہ شد آبگینۂ شاں بوئے دلبر دمد ز سینۂ شاں

उसका दर्पण रूपी हृदय चकनाचूर हो चुका है और उसके प्रियतम की सुगन्ध उसके सीने से प्रस्फुटित हो रही है। ☆

نقش ہستی بشست جلوۂ یار سرزد آخر زِجَیبِ دلِ دلدار

प्रियतम की झलक ने उनके अस्तित्व को फ़ना कर दिया है अन्ततः हृदय के गले से प्रियतम ने सर निकाला। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

گر برآرند شعلہ ہائے دروں دود خیزد ز تربت مجنوں

यदि अपने आन्तरिक शोलों को प्रकट कर दें तो मजनूं की क़ब्र से धुआं निकलने लगे। ☆

Ⓟنے ز سرہوش نے ز پا خبرے در سر دلستاں بخاک سرے Ⓟ134

ऐसी परिस्थिति में वह स्वयं से बेसुध हो कर प्रियतम के ध्यान में मिट्टी पर सर रखे हुए हैं। ☆

ہر کسے را بخود سروکارے کار دل دادگاں بدلدارے

प्रत्येक व्यक्ति को अपने काम से काम होता है परन्तु प्रेमियों का उद्देश्य केवल प्रियतम होता है। ☆

ہر کسے را بعزتِ خود کار فکر ایشاں ہمہ بعزتِ یار

प्रत्येक व्यक्ति को अपने मान-सम्मान की चिन्ता है परन्तु उनकी सम्पूर्ण चिन्ता का केन्द्र प्रियतम का आदर-सम्मान है। ☆

تو سرِ خویش تافتہ از دیں حاصل روزگار تو ہمہ کیں

तू इस धर्म से विमुख हो गया है और तेरे जीवन का मुख्य उद्देश्य केवल शत्रुता है। ☆

در عناد و فساد افتادہ داد و دانش ز دست خود دادہ

तू उपद्रव और झगड़े में ग्रस्त है तथा तू न्याय और बुद्धिमत्ता को नष्ट कर चुका है। ☆

سرکشیدہ بناز و کبر و ریا و از تدین نہادہ بیروں پا

तू अहंकार, अभिमान और दिखावा के कारण अकड़ रहा है तथा धार्मिक सीमा से बाहर निकल गया है। ☆

چوں خدا ات نداد نور دروں عقل و ہوشِ تو جملہ گشت نگوں

जब ख़ुदा ने तुझे आन्तरिक प्रकाश प्रदान ही नहीं किया इसलिए तेरी बुद्धि और चेतना भ्रमित हो गई। ☆

کفر گوئی عبادت انگاری فسق ورزی ثواب پنداری

तू निरर्थक और कुफ़्र बोलने को उपासना समझता है और दुष्कृत्य करने को पुण्य-कार्य समझता है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

Ⓟ135 Ⓟصد حجابت بچشم خویش فرا باز گوئی کہ آفتاب کجا

तेरी दृष्टि के सामने सौ पर्दे पड़े हैं फिर पूछता है कि सूर्य कहाँ है। ☆

پردہ بردار تا بہ بینی پیش جانِ ما سوختی بکوریٔ خویش

तू पर्दा हटा ताकि तुझे सामने की वस्तु दिखाई दे तूने अपनी नेत्रहीनता के कारण हमारा हृदय जला दिया। ☆

تافتی سر ز منعم منان ایں بود شکر نعمت اے نادان

तूने उपकारी और भलाई करने वाले ख़ुदा से विमुखता धारण कर ली। हे मूर्ख! क्या उपकार का धन्यवाद यही है। ☆

دل نہادن دریں سرا چہ دوں عاقبت مے کند ز دیں بیروں

इस तिरस्कृत संसार से दिल लगाना अन्ततः मनुष्य को धर्म से विमुख कर देता है। ☆

ترک کوئے حق از وفا دورست دل بغیرے مدہِ کہ غیورست

ख़ुदा के कूचे का परित्याग वे वफ़ाई है हृदय किसी और से न लगा क्योंकि ख़ुदा बहुत स्वाभिमानी है। ☆

دانی و باز سرکشی از وے ایں چہ برخود ستم کنی ہے ہے

तू जानता है फिर भी तू उससे विमुख होता है। अत्यन्त खेद! यह तू स्वयं पर कैसा अन्याय कर रहा है। ☆

ہرچہ غیرے خدا بخاطر تست آں بت تست اے بایماں سست

हे कमज़ोर ईमान वाले! ख़ुदा के अतिरिक्त तेरे हृदय में जो कुछ भी है वही तेरा उपास्य है। ☆

پُر حذر باش زیں بتان نہاں دامن دل ز دست شاں برہاں

तू हृदय में बैठे इन मिथ्या उपास्यों से भयभीत रह और हृदय को इन के जाल से मुक्त कर ले। ☆

چیست قدر کسے کہ شرکش کار چوں زن زانیہ ہزارش یار

एक दुराचारी व्यक्ति का क्या महत्व है वह तो उस वैश्या की भांति है जिसके सहस्त्रों यार हों। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

صدق ے ورزد صدق پیشہ بگیر جانب صدق را ہمیشہ بگیر

तू सच्चाई को अपना ले और सच्चाई को अपना व्यवसाय बना ले और सत्य को सदा दृष्टिगत रख। ☆

دیدہ تو بصدق بکشاید یارِ رفتہ بصدق باز آید

तेरी दृष्टि सत्य के कारण प्रकाशमान हो जाएगी और तेरा खोया हुआ मित्र सत्य के कारण वापस आ जाएगा। ☆

صادق آن ست کو بقلب سلیم گیردآں دیں کہ ہست پاک وقویم

ईमानदार वह होता है जो सद्‌बुद्धि द्वारा ऐसे धर्म को अपनाता है जो पवित्र और सुदृढ़ है। ☆

دین پاک ست ملت اسلام از خدائے کہ ہست علمش تام

पवित्र धर्म केवल इस्लाम धर्म है और यह उस ख़ुदा की ओर से है जो ज्ञान से भरपूर है। ☆

زیں کہ دیں از برائے آں باشد کہ ز باطل بحق کشاں باشد

अत: धर्म तो इसलिए होता है कि असत्य से सत्य की ओर खींच कर लाए। ☆

ویں صفت ہست خاصۂ فرقاں ہر اصولش موثق از برہاں

अत: यह विशेषता तो क़ुर्आन की है जिसके समस्त सिद्धान्त प्रमाण द्वारा सिद्ध हैं। ☆

با براہین روشن و تاباں مے نماید رہِ خدائے یگاں

वह अपने प्रकाशमान तर्कों द्वारा एक ख़ुदा के मार्ग का मार्ग-दर्शन करता है। ☆

من گر امروز سیم داشتمے آں براہین بزر نگاشتمے

यदि आज मेरे पास दौलत होती तो मैं इन तर्कों को सोने से लिखता। ☆

اللہ اللہ چہ پاک دین ست ایں رحمت رب عالمین ست ایں

अल्लाह-अल्लाह यह क्या ही पवित्र धर्म है यह तो सरासर संसारों के प्रतिपालक की दया है। ☆

آفتاب رہ صواب ست ایں بخدا بہ ز آفتاب ست ایں

और यह सद्‌मार्ग का सूर्य है, ख़ुदा की क़सम यह तो सूर्य से भी श्रेष्ठतम है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

مے برآرد ز جہل و تاریکی سوئے انوار قرب و نزدیکی

यह धर्म अज्ञानता और अंधकार से निकाल कर ख़ुदाई सानिध्य और मिलन के प्रकाशों की ओर ले जाता है। ☆

مے نماید بطالبان رہ راست راستی موجب رضائے خداست

यह सत्याभिलाषियों को सद्मार्ग दिखाता है और सत्य ख़ुदा की प्रसन्नता का कारण है। ☆

گر ترا ہست بیم آں دادار بہ پذیر و ز خلق بیم مدار

यदि तुझे ख़ुदा का भय है तो इस्लाम धर्म को स्वीकार कर और प्रजा की परवाह न कर। ☆

چوں بود بر تو رحمت آں پاک دیگر از لعن و طعن خلق چہ باک

जब तुझ पर उस ख़ुदा की दया हो रही है तो प्रजा की भर्त्सना और आलोचना की तुझे परवाह क्यों है। ☆

لعنت خلق سہل و آسان ست لعنت آن ست کو ز رحمان ست

प्रजा की भर्त्सना को सहन करना सरल है परन्तु वास्तविक ला'नत वह है जो ख़ुदा की ओर से पड़ती है। ☆

अन्ततः समस्त आवश्यक श्रेणियों के लिखने के पश्चात इस बात का स्पष्ट करना
Ⓟ136 भी इसी भूमिका में हित में है Ⓟकि किस-किस प्रकार के **लाभों** का इस पुस्तक में समावेश है ताकि वे लोग जो ख़ुदाई सच्चाईयों का ज्ञान होने पर प्राण देते हैं कि अपने अध्यात्मिक प्रियतम का शुभ सन्देश पाएँ और ताकि उन पर जो सच्चाई के भूखे और प्यासे हैं अपनी हार्दिक मनोकामना का मार्ग प्रकट हो जाए। अतः वे लाभ **छः** प्रकार के हैं। जो निम्नलिखित हैं:-

प्रथम इस पुस्तक में यह **लाभ** है कि यह पुस्तक धार्मिक महत्व के कार्यों के लिखने में अपूर्ण नहीं अपितु वे समस्त **सच्चाइयाँ** जिन पर धर्म के सिद्धान्त आधारित हैं और वे समस्त श्रेष्ठ वास्तविकताएँ जिन की सामूहिक बनावट का नाम इस्लाम है वे सब इस में लिखी हुई हैं। यह ऐसा लाभ है जिस से अध्ययन-कर्ताओं को धार्मिक आवश्यकताओं पर पूर्ण निपुणता प्राप्त हो जाएगी और किसी गुमराह करने वाले और धोखा देने वाले के धोखे में नहीं आएंगे अपितु दूसरों को उपदेश और नसीहत तथा पथ-

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

प्रदर्शन करने के लिए एक पूर्ण शिक्षक और एक चतुर पथ-प्रदर्शक बन जाएँगे।

दूसरा लाभ - यह पुस्तक इस्लाम की सच्चाई के **तीन सौ** ठोस और शक्तिशाली तर्कों पर आधारित है जिन्हें देखने से इस सुदृढ़ धर्म की सच्चाई प्रत्येक सत्याभिलाषी पर प्रकट होगी सिवाए उस व्यक्ति के कि जो बिल्कुल अन्धा और द्वेष के घोर अंधकार में ग्रस्त हो।

तीसरा लाभ- हमारे जितने विरोधी हैं, यहूदी, ईसाई, पारसी (अग्नि पूजक), आर्य, ब्रह्म, मूर्ति पूजक, नास्तिक, नेचरी, अवैध को वैध समझने वाले तथा अधर्मी सब के सन्देहों और भ्रमों का इसमें उत्तर है और उत्तर भी ऐसा कि झूठे को उसके घर तक पहुँचाया गया है और फिर आरोप के निवारण पर ही सन्तोष नहीं किया गया अपितु यह सिद्ध करके दिखाया गया है कि जिस बात को मुर्ख विरोधी ने आरोप का स्थान समझा है वास्तव में वह ऐसी समस्या है जिससे क़ुर्आनी शिक्षा की अन्य किताबों पर श्रेष्ठता और प्रमुखता सिद्ध होती है न कि आरोप का स्थान और फिर वह श्रेष्ठता भी ऐसे स्पष्ट तर्कों से प्रमाणित की गई है कि जिस से आरोपी स्वयं आरोपित हो गया है।

Ⓟ**चौथा लाभ**- इस पुस्तक में इस्लामी सिद्धान्तों की तुलना में विरोधियों के सिद्धान्तों Ⓟ137 पर भी पूर्ण खोज, छान-बीन द्वारा बौद्धिक तौर पर बहस की गई है और उनके समस्त वे सिद्धान्त और आस्थाएँ जो सच्चाई से बाहर हैं क़ुर्आन करीम के सच्चे और वास्तविक सिद्धान्त की तुलना में उनकी मिथ्या वास्तविकता को दिखाया गया है क्योंकि प्रत्येक बहुमूल्य जौहर का महत्व तुलना करके ही ज्ञात होता है।

पांचवां लाभ- इस पुस्तक का यह है कि इसके अध्ययन से ख़ुदाई कलाम की वास्तविकताएँ और अध्यात्म ज्ञान ज्ञात हो जाएँगे तथा उस पवित्र किताब (क़ुर्आन करीम) की नीति और मा'रिफ़त जिस के आत्मा को प्रकाशित करने वाले प्रकाश से इस्लाम का प्रकाश है सब पर प्रकट हो जाएगी क्योंकि समस्त वे सबूत और तर्क जो इस में लिखे गए हैं और वे समस्त पूर्णतम सच्चाइयां जो इसमें दिखाई गई हैं वे सब क़ुर्आन करीम की अत्यन्त स्पष्ट आयतों से ही ली गई हैं और प्रत्येक बौद्धिक तर्क वही प्रस्तुत किया गया है जो ख़ुदा ने अपने कलाम (वाणी) में स्वयं प्रस्तुत किया है और इसी निरन्तरता के कारण इस पुस्तक में लगभग बारह सिपारे (भाग) क़ुआन करीम के लिख गए हैं। अत: वास्तव में यह पुस्तक क़ुर्आन करीम की बारीकियों और वास्तविकताओं और उसके श्रेष्ठ रहस्यों और उसके दार्शनिकतापूर्ण ज्ञान और उसका उच्च दर्शन प्रकट करने के लिए एक श्रेष्ठ भाष्य है जिसके अध्ययन से प्रत्येक सच्चे अभिलाषी पर अपने दयालु स्वामी (ख़ुदा) की

अद्वितीय और अनुपम किताब का उच्च पद संसार को प्रकाशित करने वाले सूर्य के समान प्रकाशमान होगा।

छठा लाभ- यह है कि इस पुस्तक के विषयों को नितान्त गंभीरता और उत्तमता से प्रमाणित करने के नियमों की सरल, संतुलित और अपूर्व शैली में बड़ी सुन्दरता के साथ वर्णन किया गया है और यह एक ऐसा ढंग है जो ज्ञानों की उन्नति, विचारों की दृढ़ता और सोच-विचार का एक श्रेष्ठ माध्यम होगा क्योंकि उचित तर्कों की लगन और प्रयोग से मानसिक शक्ति विकसित होती है तथा जटिल और गंभीर मामलों की पड़ताल में बौद्धिक-शक्ति तीव्र हो जाती है और वास्तविक तर्कों के अभ्यास के कारण बुद्धि सच्चाई पर स्थापित हो जाती है और प्रत्येक विवादास्पद बात की वास्तविकता और यथार्थ ज्ञात
Ⓟ138 करने के लिए एक Ⓟऐसी पूर्ण योग्यता और महारत उत्पन्न हो जाती है जो काल्पनिक शक्तियों की पूर्णता का कारण और मनुष्य की आत्मा के लिए एक दूरगामी लक्ष्य की विशेषता है कि जिस पर समस्त सौभाग्य और मानव अस्तित्व की गरिमा निर्भर है। यह हमारी इच्छा का अन्त है जिसे हमने इस भूमिका में वर्णन किया और प्रत्येक प्रकार की प्रशंसा उस ख़ुदा के लिए है जिस ने इस के लिए हमारा मार्ग-दर्शन किया यदि अल्लाह तआला हमारा मार्ग-दर्शन न करता तो हम मार्ग-दर्शन नहीं पा सकते थे।

भूमिका समाप्त हुई।

THE

BARÁHÍN-I-AHMADÍYAH,

ENTITLED

AL-BARÁHÍN-UL-AHMADÍYAH ALA-HAQQÍYÁT KITÁB-ULLAH-UL-QURÁN WAL NABUWAT-UL-MAHAMADIAH.

(DISCOURSES ON THE DIVINE ORIGIN OF THE HOLY QURAN, AND APOSTLESHIP OF MAHAMAD, THE PROPHET OF ISLAM,)

BY

MIRZÁ GULÁM AHMAD SÁHÍB, CHIEF OF QÁDÍÁN,

GURDASPORE DISTRICT, PUNJAB.

Umritsur:

PRINTED AT THE SAFÍR-I-HIND PRESS,

AMÍR ALI DÚLÁH PRINTER.

1880.

V. P. L.

This Book which is compiled after a most careful and elaborate investigation for the benefit and conviction of those dissenters, who deny the veracity of Islamism, is published with an offer of Rs. 10,000/- for its refutation, subject to the conditions contained in the preface.

Author.

حصہ سوم

جاء الحق وزھق الباطل ان الباطل کان زھوقا

بفضلِ عظیم حضرت ہادیٔ عالم و عالمیان و رحمتِ عمیم رہنائے گمگشتگان کتاب لاجواب موسوم بہ

براھینِ احمدیہ

ملقّب بہ

البراھین الاحمدیہ علی حقیّت کتاب اللہ القرآن و النبوّۃ المحمدیہ

جسکو فخر اہل اسلام پنجاب جناب میرزا غلام احمد صاحب رئیس اعظم قادیان ضلع گورداسپور پنجاب دام اقبالہم نے کمال تحقیق اور تدقیق سے تالیف کر کے منکرین اسلام پر حجت اسلام پوری کرنیکے لئے بوعدہ انعام دس ہزار روپیہ شائع کیا

امرتسر پنجاب

سفیر ہند پریس میں در ۱۸۸۲ء طبع ہوا

جاء الحق و زهق الباطل ان الباطل كان زهوقا

बराहीन अहमदिया

भाग-तृतीय

ख़ुदाई किताब क़ुर्आन और मुहम्मदी नुबुव्वत की सच्चाई पर अहमदियत द्वारा तर्कों पर आधारित

जिसे पंजाब के मुसलमानों के गौरव जनाब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब महान रईस क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर, पंजाब ने अपने महान कौशलपूर्ण अन्वेषण के पश्चात इस्लाम पर इन्कार करने वालों पर इस्लाम के समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने हेतु दस हज़ार रुपए की इनामी राशि के आश्वासन के साथ सफ़ीरे हिन्द प्रेस अमृतसर से सन् 1882 ई. में प्रकाशित किया।

हे अल्लाह①

मुसलमानों की दशा और इस्लाम की निर्धनता तथा कुछ आवश्यक बातों की सूचना

आजकल इस्लाम की निर्धनता के लक्षण तथा सुदृढ़ मुहम्मदी धर्म पर ऐसे संकट छाए हुए हैं कि जहां तक हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अवतरित होने के युग के बाद में हम देखते हैं कि किसी शताब्दी में उसका उदाहरण नहीं मिलता। इस से अधिक और क्या संकट होगा कि मुसलमान लोग धार्मिक हमदर्दी में नितान्त आलसी तथा विरोधी जन अपनी आस्थाओं के प्रचलन और प्रचार में चारों ओर से कटिबद्ध और तत्पर दिखाई देते हैं। जिससे दिन-प्रतिदिन धर्मांतरण तथा बुरी आस्थाओं का द्वार खुलता जाता है और लोग बड़ी निरन्तरता के साथ अपने धर्म को छोड़ कर अपवित्र आस्थाओं को धारण करते जा रहे हैं। कितना खेद का स्थान है कि कि हमारे विरोधी जिन की दूषित आस्थाएँ अत्यन्त स्पष्ट तौर पर मिथ्या हैं, दिन-रात अपने अपने धर्म की सहायता में कार्यरत हैं। यहां तक कि यूरोप और अमरीका में ईसाई धर्म के प्रचार हेतु विधवाएँ भी चन्दा देती हैं तथा अधिकांश लोग मरते समय वसीयत कर जाते हैं कि हमारी मृत्योपरांत इतनी संपत्ति शुद्धरूप से ईसाई धर्म को प्रचलित रखने हेतु व्यय हो, परन्तु मुसलमानों का हाल क्या कहें और क्या लिखें कि उनकी लापरवाही उस सीमा तक पहुँच गई है कि न वे स्वयं धर्म की कुछ हमदर्दी करते हैं और न किसी हमदर्द को सद्भावना की दृष्टि से देखते हैं। विचार करना चाहिए कि धार्मिक हमदर्दी का कैसा अवसर तथा सेवा करने का कैसा उचित अवसर और स्थान था कि पुस्तक बराहीन अहमदिया कि जिसमें तीन सौ ठोस तर्कों द्वारा इस्लाम की सच्चाई को सिद्ध किया गया है तथा प्रत्येक विरोधी की मिथ्या आस्थाओं का ऐसा उन्मूलन किया गया है मानो उस धर्म का आलंभन किया गया कि फिर जीवित नहीं होगा। इस पुस्तक के सन्दर्भ में कुछ

①-यह विज्ञापन प्रथम संस्करण 1882 ई. तथा द्वितीय संस्करण 1900 ई. में नहीं है, केवल तृतीय संस्करण 1905 ई. में है। (शम्स)

साहसी मुसलमानों के अतिरिक्त जिन के ध्यान देने के कारण दो भाग और कुछ तीसरा भाग प्रकाशित हो गया। अन्य लोगों ने जो कुछ सहायता की वह ऐसी है कि यदि विवरण के स्थान पर केवल इसी को पर्याप्त समझें कि इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलयहे राजिऊन तो उचित होगा। हे मुसलमान बन्धुओ! तुम्हें क्या हो गया है कि तुम ध्यान नहीं देते, हमने तुम्हें प्रेरित किया परन्तु तुम में प्रेरणा उत्पन्न नहीं हुई, हम ने तुम्हें सचेत किया परन्तु तुम में चेतना पैदा नहीं हुई। सुनो हे ख़ुदा के बन्दो सुनो तुम सहायता करो तुम्हें प्रतिफल प्राप्त होगा तथा ख़ुदा के सहायकों में उठाए जाओगे तथा दोनों लोकों में दया के पात्र होगे तथा सत्य का स्थान प्राप्त होगा। अल्लाह तआला हम पर दया करे और तुम पर भी, वह हमारा स्वामी है, वह बहुत उत्तम स्वामी **और सहायक है**। यदि कोई अब भी ध्यान न दे तो कोई बात नहीं। हम भी सर्वाधिक दया करने वाले (ख़ुदा) से कहते हैं तथा उसके पवित्र वादे हम निर्धनों के लिए उत्साहवर्धक हैं। यहां इस बात से भी अवगत कराना आवश्यक है कि पहले यह पुस्तक पैंतीस-छत्तीस फ़र्मों तक बढ़ा दी गई तथा इसका मूल्य दस रुपया सामान्य मुसलमानों के लिए तथा पच्चीस रुपया अन्य क़ौमों तथा विशेष लोगों के लिए निर्धारित किया गया था, परन्तु अब यह पुस्तक छान-बीन, सोच-विचार करने और समझाने के अन्तिम प्रयास की पूर्णता संबंधी समस्त आवश्यकताओं को अपनी परिधि में लेने के कारण सौ फ़र्मों तक पहुँच गई है। जिसके खर्चों पर दृष्टि डाल कर यह आवश्यक प्रतीत होता था कि अब पुस्तक का मूल्य सौ रुपए रखा जाए, परन्तु अधिकांश लोगों के हतोत्साहित होने के कारण यही युक्ति-संगत लगा कि अब वही पूर्व निर्धारित मूल्य जो मानो कुछ भी नहीं एक हमेशा रहने वाला मूल्य नियुक्त हो तथा लोगों को उनके साहस से अधिक कष्ट देकर हृदय दुखी न किया जाए, परन्तु क्रेताओं को यह अधिकार नहीं होगा कि अपना अधिकार समझकर इतने भागों की मांग करें अपितु जो भाग उन्हें अपने अधिकार से बढ़ कर पहुँचेंगे वे मात्र ख़ुदा के लिए होंगे तथा उन का पुण्य उन लोगों को पहुँचेगा जो इस कार्य को सम्पन्न करने हेतु शुद्ध रूप से ख़ुदा के लिए सहायता करेंगे। स्पष्ट रहे कि अब यह कार्य केवल उन लोगों के साहस से पूर्ण नहीं हो सकता जो केवल क्रेता होने के कारण एक अस्थायी जोश रखते हैं अपितु इस समय ऐसे अनेक साहसी लोगों को ध्यान देने की आवश्यकता है जिनके हृदयों में ईमानी स्वाभिमान के कारण वास्तविक जोश है, जिनका अमूल्य ईमान केवल

क्रय-विक्रय के संकीर्ण पात्र में समा नहीं सकता अपितु अपने मालों के बदले में शाश्वत स्वर्ग खरीदना चाहते हैं यह अल्लाह तआला की कृपा है जिसे चाहता है प्रदान करता है। अन्ततः हम इस लेख को इस दुआ पर समाप्त करना चाहते हैं कि हे दयालु ख़ुदावन्द तू अपने निश्छल बन्दों का ध्यान पूर्णरूप से इस ओर आकर्षित कर। हे दयालु और कृपालु तू स्वयं उन्हें स्मरण करा, हे सर्वशक्तिमान तू उनके हृदयों में स्वयं इल्हाम कर। तथास्तु पुनः तथास्तु। हम भरोसा करते हैं अपने उस पालनहार पर जो आकाश, पृथ्वी तथा समस्त लोकों का पालनहार है।

घोषणाः- इस बार उन सज्जनों के नाम जिन्होंने पुस्तक खरीद कर मूल्य अग्रिम तौर पर भेजा या मात्र अल्लाह के लिए सहायता की स्थान के अभाव के कारण नहीं लिखे जा सके तथा कुछ सज्जनों की यह भी राय है कि नामों के लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं। बहरहाल चतुर्थ भाग में अधिकांश सज्जनों की दृष्टि में जो भी हित में होगा उस पर अमल किया जाएगा।

ख़ाकसार- मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद

खेदः- इस बार तृतीय भाग के निकलने में लगभग दो वर्ष का विलम्ब हो गया। कदाचित इस विलम्ब से अधिकांश खरीदार और दर्शकगण आश्यर्चचकित होंगे, परन्तु स्पष्ट रहे कि यह सम्पूर्ण विलम्ब सफ़ीर हिन्द प्रेस के प्रबन्धक की कुछ विवशताओं के कारण, जिन के प्रेस में पुस्तक छपती है प्रकटन में आया है।

ख़ाकसार

ग़ुलाम अहमद अफ़ल्लाहो अन्हो

आवश्यक निवेदन①

यह पुस्तक अब तीन सौ फ़र्मों तक बढ़ गई है अतः उन क्रेताओं की सेवा में जिन्होंने अब तक कोई मूल्य नहीं भेजा या पूरा मूल्य नहीं भेजा निवेदन है कि यदि कुछ नहीं तो केवल इतनी कृपा करें कि शेष मूल्य अविलम्ब भेज दें, क्योंकि जिस परिस्थिति में अब पुस्तक का वास्तविक मूल्य सौ रुपया है तथा इसके बदले में मात्र दस या पन्द्रह रुपया मूल्य निर्धारित हुआ। अतः यदि यह तुच्छ मूल्य भी मुसलमान लोग अग्रिम तौर पर अदा न करें तो मानो कार्य की सम्पन्नता में वे स्वयं बाधक होंगे तथा हमने इतना कम प्रकट किया है अन्यथा यदि कोई सहायता नहीं करेगा अथवा कम ध्यान देगा तो वास्तव में स्वयं ही एक महान् सौभाग्य से वंचित रहेगा। ख़ुदा के कार्य रुक नहीं सकते और न कभी रुके। सर्वशक्तिमान ख़ुदा जिन बातों को चाहता है वे किसी की लापरवाही से स्थगित नहीं रह सकतीं।

والسّلام عَلٰی مَنِ اتَّبَعَ الھُدٰی

ख़ाकसार - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद

①-यह विज्ञापन भाग तृतीय 1882 ई. के अन्त में लिखा है। (शम्स)

इस्लामी संस्थाओं की सेवा में आवश्यक निवेदन

एक पत्र अंजुमन इस्लामिया लाहौर के सेक्रेटरी की ओर से और ऐसी ही एक याचिका मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब की ओर से कि जो अन्जुमन हमदर्दी इस्लामी लाहौर के सेक्रेटरी हैं प्राप्त होकर इस ख़ाकसार के देखने में आए जिन का तात्पर्य यह था कि इन निवेदनों पर सम्माननीय मुसलमान भ्राताओं तथा न्यायप्रिय हिन्तुओं के हस्ताक्षर कराए जाएं कि जो मुसलमानों की शिक्षा में उन्नति, नौकरी में उन्नति तथा स्कूली शिक्षा में उर्दू भाषा स्थापित रखने हेतु सरकार में प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गई हैं, परन्तु खेद कि मैं प्रथम अपनी तबियत की ख़राबी के कारण तथा अमृतसर में आवश्यक तौर पर ठहरने के कारण इस सेवा को अदा नहीं कर सका परन्तु **अद्दीनुन्नसीहतः** के आदेशानुसार इतनी विनती करना अपने भाइयों की दीन-दुनिया की भलाई का कारण समझता हूँ यद्यपि सरकार की दया-दृष्टि में मुसलमानों की दुर्दशा निश्चय ही दयनीय ठहरेगी। जिस सरकार ने अपने कानूनों में चौपायों और जानवरों से भी हमदर्दी प्रकट की है वह क्योंकर मनुष्यों के इतने बड़े वर्ग की हमदर्दी से जो उसकी प्रजा तथा उनके अधीन है तथा निर्धनता और संकट की स्थिति में है लापरवाह रह सकती है, परन्तु हमारे आदरणीय भाइयों पर केवल यही अनिवार्य नहीं कि वे मुसलमानों को दरिद्रता, अवनति तथा अशिक्षित होने की स्थिति में देखकर हमेशा इसी बात पर बल दिया करें कि कोई स्मरण पत्र तैयार करके उस पर बहुत से हस्ताक्षर करवा कर सरकार में भेजा जाए। प्रत्येक कार्य धार्मिक हो अथवा सांसारिक, उसमें किसी से सहायता मांगने से पूर्व अपनी ख़ुदा द्वारा प्रदत्त शक्ति और साहस का व्यय करना आवश्यक है और फिर इस कार्य की सम्पन्नता हेतु सहायता मांगना। ख़ुदा ने हमें हमारी दैनिक उपासना में भी यही शिक्षा दी है तथा आदेश दिया है कि हम اِيَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاکَ نَسۡتَعِيۡنُ कहें न यह कि اِيَّاکَ نَسۡتَعِيۡنُ وَاِيَّاکَ نَعۡبُدُ मुसलमानों पर जिन बातों का अपनी स्थिति को सुधारने के लिए अपने साहस और प्रयास से काम लेना अनिवार्य है वे उन्हें सोच-विचार करते समय स्वयं ही ज्ञात हो जाएँगी, वर्णन और व्याख्या की आवश्यकता नहीं, परन्तु यहाँ इन बातों

में से यह बात चर्चा के योग्य है जिस पर अंग्रेज़ी सरकार की कृपाएँ और ध्यान निर्भर हैं कि प्रशंसनीय सरकार के हृदय में यह बात भली-भांति बैठाना चाहिए कि हिन्दुस्तान के मुसलमान एक वफ़ादार प्रजा हैं क्योंकि कुछ अज्ञानी अंग्रेज़ों ने विशेष तौर पर **डॉक्टर हन्टर साहिब** ने जो शिक्षा कमीशन के अब अध्यक्ष हैं अपनी एक प्रसिद्ध पुस्तक में इस दावे पर बहुत आग्रह किया है कि मुसलमान लोग अंग्रेज़ी सरकार के हार्दिक शुभ चिन्तक नहीं हैं तथा अंग्रेज़ों से जिहाद करना कर्तव्य समझते हैं। यद्यपि डॉक्टर साहिब का यह विचार इस्लामी शरीअत पर दृष्टि डालने के पश्चात् प्रत्येक व्यक्ति पर मात्र निराधार और घटना के विपरीत सिद्ध होगा, परन्तु खेद कि कुछ पर्वतीय और असभ्य मूर्खों की मूर्खतापूर्ण गतिविधियाँ इस विचार का समर्थन करती हैं और कदाचित इन्हीं संयोगवश अवलोकनों से आदरणीय डॉक्टर साहिब का भ्रम भी दृढ़ हो गया है, क्योंकि कभी-कभी मूर्ख लोगों की ओर से इस प्रकार की गतिविधियां होती रहती हैं परन्तु एक खोजी और जांच-पड़ताल करने वाले मनुष्य पर यह बात गुप्त नहीं रह सकती कि इस प्रकार के लोग इस्लामी शिक्षा से दूर और पृथक हैं और ऐसे ही मुसलमान हैं जैसा कि 'मिकलीन' ईसाई था। अत: स्पष्ट है कि उनकी ये व्यक्तिगत गतिविधियां हैं न कि धार्मिक विधान के आदेशानुसार। इनकी तुलना में उन सहस्त्रों मुसलमानों को देखना चाहिए जो हमेशा प्राण न्योछावर कर के अंग्रेज़ों सरकार की भलाई करते रहे हैं और करते हैं। सन् 1857 ई. में जो कुछ उपद्रव हुआ उसमें मूर्खों और दुष्चरित्र लोगों के अतिरिक्त कोई शिक्षित और नेक मुसलमान जो शिक्षित और सभ्य था उपद्रव में कदापि सम्मिलित नहीं हुआ, अपितु पंजाब में भी निर्धन, निर्धन मुसलमानों ने अंग्रेज़ी सरकार को अपनी सामर्थ्य से अधिक सहायता दी। हमारे स्वर्गीय पिताश्री ने अपनी सामर्थ्य की कमी के बावजूद अपनी निश्छलता और भलाई के आवेग से पचास घोड़े अपनी ओर से खरीद कर तथा पचास साहसी और योग्य सिपाही उपलब्ध कराके सरकार को सहायतार्थ भेंट किए तथा अपनी निर्धनतापूर्ण स्थिति से अधिक हमदर्दी दिखाई तथा जो मुसलान लोग समृद्धिशाली और धनवान थे उन्होंने तो बड़ी-बड़ी विशेष सेवाएँ अर्पित कीं। अब हम पुन: उस भाषण की ओर ध्यान देते हैं कि यद्यपि मुसलमानों की ओर से निश्छलता और वफ़ादारी के बड़े-बड़े उदाहरण प्रस्तुत हो चुके हैं, परन्तु डॉक्टर साहिब ने मुसलमानों

के दुर्भाग्यवश उन समस्त वफ़ादारियों को दृष्टि से ओझल कर दिया और परिणाम निकालते समय उन निष्कपट सेवाओं को न अपने अनुमान के सुग़रा① (प्रथम विवाद) में स्थान दिया न कुबरा① (अन्तिम विवाद) में। बहरहाल हमारे मुसलमान भाइयों पर अनिवार्य है कि सरकार पर उसके धोखों से प्रभावित होने से पूर्व नए सिरे से अपनी सहानुभूति प्रकट करें जिस स्थिति में इस्लामी शरीअत का यह स्पष्ट मामला है जिस पर समस्त मुसलमानों की सहमति है कि ऐसी सरकार से युद्ध और जिहाद करना जिसकी छत्र-छाया में मुसलमान लोग, शान्ति, अमन और स्वतंत्रतापूर्वक जीवन-यापन करते हों, जिसके अनुदानों से कृतज्ञ और आभारी हों, जिस का मुबारक शासन वास्तव में नेकी और हिदायत के प्रसारण हेतु पूर्ण सहायक हो बिल्कुल अवैध है। तो फिर बड़ी खेदजनक बात है कि इस्लाम के विद्वान अपनी सार्वजनिक सहमति से इस मामले को भली भांति प्रचारित न करके अज्ञान लोगों के मुख और लेखनी से आरोप का भाजन बनते रहें जिन आरोपों से उन के धर्म की शिथिलता पाई जाए तथा उन की दुनिया को अकारण आघात पहुँचे। अत: इस ख़ाकसार की समझ में युक्ति संगत यह है कि अंजुमन इस्लामिया लाहौर, कलकत्ता और बम्बई इत्यादि यह व्यवस्था करें कि कुछ सुप्रसिद्ध मौलवी सज्जन जिनकी पृतिष्ठा, ज्ञान, पवित्रता और संयम अधिकांश लोगों की दृष्टि में मान्य हो, इस बात के लिए चुन लिए जाएँ तथा विभिन्न क्षेत्रों के विद्वान जो अपने आस-पास में कुछ ख्याति रखते हों अपने-अपने विद्वतापूर्ण लेख जिसमें इस्लामी शरीअत (धार्मिक विद्यान) के अनुसार अंग्रेज़ी सरकार से जो हिन्दुस्तान के मुसलमानों की संरक्षक और हितैषी है जिहाद करने का स्पष्ट निषेध हो, उन विद्वानों की सेवा में मुहरें लगा कर भेज दें कि उपर्युक्त प्रस्ताव के अनुसार इस सेवा के लिए नियुक्त किए गए हैं और जब समस्त पत्र एकत्र हो जाएं तो इन समस्त पत्रों का संग्रह जो **हिन्द के विद्वानों के पत्र** की संज्ञा दी जा सकती है। किसी उत्तम लिखने वाले प्रेस में पूर्ण सुधार के साथ छापा जाए तत्पश्चात् उसकी दस-बीस प्रतियाँ सरकार को और शेष प्रतियां पंजाब तथा हिन्दुस्तान के भिन्न-भिन्न स्थानों विशेष तौर पर सीमावर्ती क्षेत्रों में वितरित की जाएं। यह सत्य है कि कुछ हमदर्द मुसलमानों ने डॉक्टर हन्टर साहिब के विचारों का खण्डन

①-तर्क शास्त्र (LOGIC) में मामले का प्रथम विवाद सुग़रा कहलाता है तथा अन्तिम विवाद कुबरा कहलाता है। (अनुवादक)

लिखा है, परन्तु यह दो चार मुसलानों का खण्डन सार्वजनिक खण्डन का स्थान कदापि नहीं ले सकता। नि:सन्देह सार्वजनिक खण्डन का प्रभाव ऐसा ठोस और शक्तिशाली होगा जिस से डॉक्टर साहिब के ग़लत लेख मिट्टी में मिल जाएँगे तथा कुछ अज्ञानी मुसलमान भी अपने सच्चे और पवित्र सिद्धान्त से भली-भांति परिचित हो जाएंगे तथा अंग्रेज़ी सरकार पर भी मुसलमानों की निश्छलता और इस प्रजा की भलाई यथोचित स्पष्ट हो जाएगी तथा कुछ पर्वतीय मूर्खों के विचारों का सुधार भी इसी पुस्तक के उपदेशों और नसीहतों के माध्यम से होता रहेगा। अन्ततः हम इस बात का प्रकटन भी अपना कर्तव्य समझते हैं यद्यपि सम्पूर्ण हिन्दुस्तान का यह कर्तव्य है कि उन उपकारों पर दृष्टि डालते हुए जो अंग्रेजी शासन से उनकी सरकार तथा आरामदायक नीति के अनुसार समस्त जनता को प्राप्त हैं प्रशंसनीय सरकार को ख़ुदा तआला की एक ने'मत समझें और ख़ुदा की ने'मतों तथा उसी के अनुरूप उस का धन्यवाद भी अदा करें, परन्तु पंजाब के मुसलमान बड़े कृतघ्न होंगे यदि वे इस प्रशासन की जो उन के पक्ष में ख़ुदा की एक महान दया है बहुत बड़ी ने'मत न समझें। उन्हें विचार करना चाहिए कि इस सरकार से पूर्व वे किस दयनीय स्थिति में थे तत्पश्चात कैसे अमन और शान्ति में आ गए। अत: वास्तव में यह सरकार उन के लिए एक आकाशीय बरकत का आदेश रखती है जिसके आगमन से उनके समस्त कष्ट दूर हुए तथा प्रत्येक प्रकार के अत्याचार और अन्याय से मुक्ति प्राप्त हुई तथा प्रत्येक अवैध बाधा और विघ्न से स्वतंत्रता प्राप्त हुई। कोई ऐसी बाधा नहीं जो हमें नेक कार्य करने से रोक सके या हमारे आराम में विघ्न डाल सके। अत: वास्तव में दयालु, कृपालु ख़ुदा ने इस सरकार को मुसलमानों के लिए एक दया-दृष्टि के तौर पर भेजा है जिससे इस्लाम का पौधा पुन: पंजाब में हरा-भरा होता जा रहा है तथा जिसके लाभों का इक़रार वास्तव में ख़ुदा के उपकारों का इक़रार है, यही सरकार है जिसकी स्वतंत्रता ऐसी स्पष्ट, व्यापक और प्रमाणित है कि कुछ अन्य देशों से मुसलमान पलायन कर के हार्दिक तौर पर इस देश में आना पसन्द करते हैं। जिस सफाई से इस सरकार की छत्र-छाया में मुसलमानों के सुधार तथा उनकी मिश्रित बिदअतों[1] के निवारण हेतु सदुपदेश दिया जा सकता है तथा आयोजनों से इस्लाम के विद्वानों को धर्म के प्रचलन के लिए इस शासन-काल में जोश उत्पन्न होते हैं तथा विचार और दृष्टि से

①-बिदअत:- धर्म में नई बात निकालना जो शरीअत में न हो। अनुवादक

उच्च स्तर का काम लेना पड़ता है और सघन खोजों से सुदृढ़ धर्म के समर्थन में पुस्तकें लिखकर विरोधियों पर इस्लाम के विवाद को पूर्ण किया जाता है वह मेरी राय में आजकल किसी अन्य देश में सम्भव नहीं. यही सरकार है जिसकी न्याय-संगत सहायता से विद्वानों को दीर्घ काल के उपरान्त मानो सैकड़ों वर्ष पश्चात यह अवसर प्राप्त हुआ कि निडर होकर विदअतों की गन्दगियों, शिर्क की ख़राबियों तथा सृष्टि-पूजा के विकारों से मूर्ख लोगों को सूचित करें और अपने मान्य रसूल के सदमार्ग को स्पष्टतापूर्वक बता दें। क्या ऐसी सरकार के लिए दुर्भावना रखना, जिसकी छत्र-छाया में समस्त मुसलमान अमन और आज़ादी में रहते है तथा धार्मिक कर्तव्यों का यथोचित पालन करते हैं तथा धर्म के प्रचलन हेतु समस्त देशों से अधिक व्यस्त हैं वैध हो सकती है। कभी नहीं, कदापि नहीं तथा न कोई नेक और धार्मिक व्यक्ति ऐसा बुरा विचार हृदय में ला सकता है। हम सच-सच कहते हैं कि संसार में आज यही एक सरकार है जिसकी कृपा की छाया में कुछ-कुछ ऐसे इस्लामी उद्देश्य प्राप्त होते हैं कि जिनकी प्राप्ति अन्य देशों में कदापि सम्भव नहीं। शियों के देश में जाओ तो वे सुन्नत जमाअत के उपदेशों से क्रोधित होते हैं तथा सुन्नत जमाअत के देशों में शिया अपनी राय प्रकट करने से भयभीत हैं, इसी प्रकार किसी के अनुकरणकर्ता अद्वैतवादियों के शहरों में तथा अद्वैतवादी (एकेश्वरवादी) अनुकरणकर्ताओं (मुक़ल्लिदीन) के देशों में दम नहीं मार सकते। यद्यपि किसी बिदअत को अपनी आँख से देख लें मुँह से बात निकालने का अवसर नहीं देते। अत: यही सरकार है जिसकी शरण में प्रत्येक सम्प्रदाय अमन और शान्ति से अपनी राय प्रकट करता है। यह बात सदात्माओं के लिए अत्यन्त लाभप्रद है क्योंकि जिस देश में बात करने की गुंजायश ही नहीं, नसीहत देने का साहस ही नहीं, उस देश में सच्चाई क्योंकर फैल सकती है। सच्चाई के प्रसारण के लिए वही देश उचित है जिसमें सदात्मा लोग स्वतंत्रतापूर्वक उपदेश दे सकते हैं। यह भी समझना चाहिए कि धार्मिक जिहादों का मूल उद्देश्य स्वतंत्रता की स्थापना तथा अन्याय का दूर करना था और धार्मिक जिहाद उन्हीं देशों के मुकाबले पर हुए थे जिनमें धर्मोपदेशकों को अपने धर्मोपदेश के समय प्राणों का खतरा था , जिन में शान्ति के साथ धर्मोपदेश का संचालन बिल्कुल असंभव था। कोई व्यक्ति सदमार्ग धारण करके अपनी क़ौम के अत्याचार से सुरक्षित नहीं रह सकता था, परन्तु अंग्रेज़ी सरकार की स्वतंत्रता न केवल उन ख़राबियों से रिक्त है अपितु इस्लामी

उन्नति की नितान्त सहायक और समर्थक है। मुसलमानों का कर्तव्य है कि इस ईश्वर प्रदत्त ने'मत के महत्त्व को समझें तथा उसके द्वारा अपनी धार्मिक उन्नति में क़दम बढ़ाएँ तथा उस ओर भी ध्यान दें कि इस अभिभावक सरकार का धन्यवाद करने के लिए यह भी आवश्यक है कि जिस प्रकार उन की प्रत्यक्ष सरकार की भलाई की जाए इसी प्रकार अपने धर्मोपदेशों, उचित वर्णन, उत्तम पुस्तकों द्वारा यह प्रयास किया जाए कि किसी प्रकार इस्लाम धर्म की बरकतें भी इस क़ौम के भाग्य में आ जाएं। यह बात मैत्री, आदर, प्रेम और सहिष्णुता के बिना सम्पन्न नहीं हो सकती। ख़ुदा के बन्दों पर दया करना, तथा अरब और इंगलिस्तान इत्यादि देशों का एक ही स्रष्टा समझना तथा उसकी निर्बल प्रजा की हृदय और प्राणों से हमदर्दी करना धर्म और ईमान का मूल है। अतः सर्वप्रथम कुछ उन अज्ञानी अंग्रेज़ों के इस भ्रम को दूर करना चाहिए जो अपनी अज्ञानता के कारण यह समझ रहे हैं कि जैसे मुसलमान क़ौम एक ऐसी क़ौम है जो नेकी करने वालों से बुराई करती है तथा अपने उपकारियों से कष्टदायक व्यवहार करती है तथा अपनी अभिभावक सरकार की शुभचिन्तक नहीं है, हालांकि अपने उपकारी के साथ उपकार के साथ व्यवहार करने की चेतावनी जितनी क़ुर्आन करीम में है अन्य किसी किताब में उसका नाम तथा निशान तक नहीं पाया जाता। अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِى الْقُرْبٰى ①

तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:-

مَنِ اصْطَنَعَ اِلَيْكُمْ مَعْرُوْفًا فَجَازُوْهُ فَاِنْ عَجَزْتُمْ عَنْ مُجَازَاتِهٖ فَادْعُوْا لَهٗ حَتّٰى يَعْلَمَ اَنَّكُمْ قَدْ شَكَرْتُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ يُّحِبُّ الشَّاكِرِيْنَ

निवेदक

ख़ाकसार

ग़ुलाम अहमद उफ़िया अन्हो

①-अन्नहल-91

प्रथम अध्याय

क़ुर्आन करीम की सच्चाई तथा श्रेष्ठता पर बाह्य और आन्तरिक साक्ष्यों से संबंधित तर्कों का वर्णन

बराहीन के इस अध्याय के लिखने से पूर्व बतौर भूमिका कुछ ऐसी बातों का वर्णन आवश्यक है जो आने वाले तर्कों के अधिकांश अर्थ ज्ञात करने, उन का विवरण तथा मर्म समझने के लिए सामान्य नियम हैं। अत: वे सब भूमिकाएँ निम्नलिखित हैं:

प्रथम भूमिका:- बाह्य साक्ष्यों से अभिप्राय वे बाहरी घटनाएँ हैं जो एक ऐसी स्थिति पर घटित हों कि जिस पर दृष्टि डालने से किसी किताब का ख़ुदा की ओर से होना सिद्ध होता है अथवा उसके ख़ुदा की ओर से होने की आवश्यकता सिद्ध होती हो तथा आन्तरिक साक्ष्यों से अभिप्राय किसी किताब के वे व्यक्तिगत चमत्कार और कलाएँ हैं जो स्वयं उसी किताब में मौजूद हों जिन पर दृष्टि डालने से बुद्धि इस बात पर अनिवार्य रूप से निर्णय करती हो कि वह ख़ुदा का कलाम (वाणी) है तथा मनुष्य उसके बनाने पर समर्थ नहीं।

द्वितीय भूमिका:- वे तर्क जो क़ुर्आन करीम की सच्चाई और श्रेष्ठता पर बाहरी साक्ष्य हैं चार प्रकार के हैं। **प्रथम** वे जो ऐसे मामलों से लिए गए हैं जो सुधार के मुहताज हैं। **द्वितीय** - वे जो ऐसे मामलों से लिए गए हैं जो पूर्णता के मुहताज हैं। **तृतीय** - वे जो प्राकृतिक मामलों से लिए गए हैं। **चतुर्थ** - वे जो परोक्ष (ग़ैबी) के मामलों से लिए गए हैं परन्तु वे तर्क जो क़ुर्आन करीम की सच्चाई और श्रेष्ठता पर आन्तरिक साक्ष्य हैं वे समस्त मामले प्राकृतिक मामलों से ही लिए गए हैं। उपर्युक्त प्रकारों की परिभाषा निम्नलिखित है :-

सुधार योग्य मामलों से अभिप्राय वे मामले हैं जो कुफ़्र, बेईमानी, शिर्क तथा दुराचार से संबंधित हैं जिन्हें मनुष्यों ने सच्ची आस्थाओं और शुभ कर्मों के स्थान पर धारण कर रखा हो तथा जो सामान्यतया समस्त संसार में फैलने के कारण इस योग्य हो गए हों कि अनादि कृपा उनके सुधार की ओर ध्यान दे।

पूर्णता योग्य मामले से अभिप्राय वे शिक्षा संबंधी मामले हैं जो इल्हामी किताबों में अपूर्ण तौर पर पाए जाते हों तथा पूर्ण शिक्षा की स्थिति पर दृष्टि डालने से उन का अपूर्ण और अधूरा होना सिद्ध होता हो। इस कारण वे एक ऐसी इल्हामी किताब के मुहताज हों जो उन्हें पूर्णता के स्तर तक पहुँचा दे।

प्राकृतिक मामले:- दो प्रकार के हैं:-

(1) **बाह्य साक्ष्य:-** इन से वे मामले अभिप्राय हैं जो मानवीय युक्तियों के माध्यम के बिना ख़ुदा की ओर से उत्पन्न हो जाएं तथा प्रत्येक तुच्छ कण को वह प्रतिष्ठा, शान, श्रेष्ठता और महानता प्रदान करें जिस की प्राप्ति बुद्धि के निकट स्वाभाविक दुर्लभताओं में समझी जाए तथा जिसका उदाहरण सम्पूर्ण संसार में कहीं न पाया जाता हो।

(2) **आन्तरिक साक्ष्य** - इन से अभिप्राय इल्हामी किताब की वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष विशेषताएँ (गुण) हैं जिनका मुकाबला करने से मानवीय शक्तियां असमर्थ हों और जो वास्तव में अद्वितीय और अनुपम होकर एक अद्वितीय सर्वशक्तिमान को सिद्ध करती हों कि जैसे ख़ुदा की हस्ती को दिखाने वाला दर्पण हों।

परोक्ष के मामले - से अभिप्राय वे मामले हैं जो एक ऐसे मनुष्य के मुख से निकलें जिसके सन्दर्भ में यह विश्वास किया जाए कि इन बातों का वर्णन करना पूर्णरूप से उनकी शक्ति से बाहर है अर्थात उन मामलों पर दृष्टि डालने तथा उस व्यक्ति की स्थिति पर दृष्टि डालने पर यह बात नितान्त व्यापक तौर पर स्पष्ट हो कि न वे मामले उसके लिए बदीही① और मौजूद का आदेश रखते हैं और न दृष्टि और विचार के माध्यम से उसे प्राप्त हो सकते हैं और न उसके संबंध में बुद्धि की दृष्टि से यह अनुमान उचित है कि उसने किसी दूसरे परिचित द्वारा इन मामलों को प्राप्त कर लिया होगा। यद्यपि वही मामले किसी दूसरे व्यक्ति की शक्ति से बाहर न हों। अतः इस खोज से स्पष्ट है कि परोक्ष के मामले अतिरिक्त और सम्बद्ध मामले हैं अर्थात ऐसे मामले हैं कि जब कुछ विशिष्ट व्यक्तियों से उन्हें सम्बद्ध किया जाता है तो इस योग्य हो जाते हैं कि उन पर परोक्ष के मामले होना चरितार्थ हो और फिर जब वे ही मामले कुछ अन्य से सम्बद्ध किए जाएं तो उनमें यह योग्यता प्रमाणित नहीं होती।

---

①-बदीही - वह बात जो इतनी स्पष्ट हो कि जिसे जानने के लिए विचार और चिन्तन की आवश्यकता न पड़े। (अनुवादक)

उपमाएँ

(अ) ज़ैद एक व्यक्ति है जिसने हमारे इस युग में जन्म लिया तथा 'बकर' एक व्यक्ति है जिसका 'ज़ैद' से पचास वर्ष पश्चात जन्म हुआ। जिसका युग ज़ैद ने नहीं पाया और न ज़ैद को उस की घटनाओं से अवगत होने का कोई बाहरी माध्यम प्राप्त हुआ। अत: वे घटनाएँ जो बकर पर गुज़रीं यद्यपि कि वे बकर के सन्दर्भ में परोक्ष के मामले नहीं हैं, क्योंकि वे उसी की घटनाएं हैं तथा उसके लिए मौजूद और महसूस हैं, परन्तु यदि उन्हीं घटनाओं के सम्बंध में ज़ैद ठीक-ठीक सूचना दे ऐसी कि बिल्कुल अन्तर न हो तो कहा जाएगा कि ज़ैद ने परोक्ष के मामलों से सूचित किया क्योंकि वे मामले ज़ैद के लिए मौजूद और महसूस नहीं है और न सम्भव था कि उन की प्राप्ति के लिए ज़ैद को कोई बाहरी माध्यम प्राप्त होता।

(ब) बकर एक दार्शनिक है जिस ने दर्शन शास्त्र की पुस्तकों में एक दीर्घ काल तक पूर्ण रूप से ध्यानपूर्वक दृष्टि डालकर और चिन्तन-मनन करके दर्शन की सूक्ष्मताओं को ज्ञात करने में पूर्ण महारत (कौशल) प्राप्त की है तथा बौद्धिक ज्ञानों की प्राप्ति पूर्वजों की पुस्तकों के अध्ययन तथा पूर्वकालीन विद्वानों की खोजों के भण्डारों की प्राप्ति तथा हमेशा के चिन्तन, अभ्यास , घोर परिश्रम तथा तर्क शास्त्र के निर्धारित नियमों के प्रयोग के कारण बहुत सी ज्ञान संबंधी सच्चाइयां तथा निश्चय तर्क उसे स्मरण हो गए हैं तथा ज़ैद एक ℗व्यक्ति है जिस के सन्दर्भ में यह प्रमाणित है कि न उसने कुछ तर्कशास्त्र और ℗142
दर्शन-शास्त्र इत्यादि से कोई अक्षर पढ़ा है और न दर्शन की पुस्तकों से कुछ अवगत है और न ही दृष्टि और विचार की पद्धति में कुछ अभ्यास है, न किसी ज्ञानी, विद्वान और दार्शनिक से कुछ मेल-जोल और संगत है अपितु मात्र अनपढ़ है तथा अनपढ़ों में हमेशा रहता है। अत: वे ज्ञान जो बकर ने कठिन परिश्रम, कष्ट और अभ्यास द्वारा प्राप्त किए हैं वे बकर के सन्दर्भ में परोक्ष के मामले नहीं हैं क्योंकि बकर ने उन्हें एक दीर्घ काल तक कठिन परिश्रम से शिक्षा प्राप्त करके प्राप्त किया है, परन्तु ज़ैद जो बिल्कुल अनपढ़ है यदि दर्शन और विज्ञान के सूक्ष्म और जटिल ज्ञानों का ऐसा स्पष्ट और उचित वर्णन करे जिसमें बिल्कुल अन्तर न हो तथा उच्च-शिक्षा की गंभीर और श्रेष्ठ सच्चाइयों को ऐसा पूर्ण रूप से प्रकट करे जिसमें किसी प्रकार का दोष और क्षति न पाई जाए तथा

दर्शन की सूक्ष्मताओं का ऐसा पूर्ण भंडार प्रस्तुत करे जिन का पूर्णरूप से वर्णन करना उस से पूर्व किसी दार्शनिक को प्राप्त न हुआ हो तो उस का प्रत्येक बात के सन्दर्भ में पूर्ण वर्णन जिसमें उपर्युक्त शर्तें पाई जाएं, परोक्ष के मामलों में गिना जाएगा, क्योंकि उसने उन मामलों का वर्णन किया जिनका वर्णन करना उसकी शक्ति और योग्यता, ज्ञान के अनुमान और समझ से बाहर था तथा जिन्हें वर्णन करने में उसके पास स्वाभाविक साधनों में से कोई माध्यम मौजूद न था।

(ज) बकर एक पादरी, पंडित या किसी अन्य धर्म का विद्वान, ज्ञानी तथा पूर्णतया पारंगत है जिसने अपनी आयु का एक बड़ा भाग व्यय करके तथा बीसियों वर्ष परिश्रम और कष्ट उठाकर उस धर्म के संबंध में अत्यन्त जटिल बातें ज्ञात कीं तथा जो कुछ इस धर्म की किताब में उचित या अनुचित है जो उच्च श्रेणी की बारीक सच्चाइयाँ हैं वे सब दीर्घ काल के चिन्तन और विचार द्वारा ज्ञात कर लीं। ज़ैद एक व्यक्ति है जिसके सन्दर्भ में यह घटना प्रमाणित है कि अनपढ़ होने के कारण किसी पुस्तक को पढ़ नहीं सकता है।
Ⓟ143 अत: यदि बकर उन पुस्तकों Ⓟमें से कुछ बातें, समस्याएं या घटनाएं वर्णन करे तो वे परोक्ष के मामले नहीं हैं क्योंकि बकर पूर्ण शिक्षा द्वारा तथा दीर्घ काल के अभ्यास के पश्चात उन पुस्तकों के विषयों पर भली-भांति सूचित और पारंगत है, परन्तु यदि ज़ैद जो अनपढ़ मात्र है उन गहरी सच्चाइयों का वर्णन कर दे जिनका जानना पूर्ण ज्ञान और सूचना के अभाव में स्वाभाविक तौर पर दुर्लभ है, तथा उन पुस्तकों की ऐसी बारीक सच्चाइयों को स्पष्ट कर दे जो विशिष्ट विद्वानों के अतिरिक्त किसी पर प्रकट नहीं होतीं तथा उनके समस्त दोष और हानियां प्रकट कर दे जिनका प्रकट करना सिवाए नितान्त स्तर की दूरदर्शिता के स्वाभाविक तौर पर असंभव है और फिर इस सूक्ष्मता और खोज के कार्य में ऐसा पारंगत हो कि अपना उदाहरण न रखता हो। तो इस स्थिति में उसके सन्दर्भ में यह कहना सत्य और उचित होगा कि उसने परोक्ष के मामलों को वर्णन किया।

व्याख्या

शायद कोई आरोप लगाने वाला इस भूमिका पर आरोप लगाए कि उन सरल और आसान नक़ल की हुई बातों का वर्णन करना जो धार्मिक पुस्तकों में लिखी हैं सुनने के

द्वारा भी सम्भव है जिसमें पढ़ा-लिखा होना कुछ आवश्यक नहीं, क्योंकि अनपढ़ मनुष्य किसी घटना को किसी पढ़े-लिखे आदमी से सुनकर वर्णन कर सकता है। ये कुछ सूक्ष्म ज्ञान संबंधी समस्याएं नहीं हैं जिनका जानना नियमानुसार शिक्षा प्राप्त किए बिना दुर्लभ हो। ऐसे आरोपी से यह प्रश्न किया जाएगा कि तुम्हारी पुस्तकों में कोई ऐसी बारीक सच्चाइयाँ भी हैं या नहीं जिन्हें सिवाए उच्च श्रेणी के विद्वान और प्रकाण्ड विद्वान के प्रत्येक व्यक्ति का काम नहीं कि ज्ञात कर सके अपितु उन्हीं लोगों के मस्तिष्क उनकी ओर अग्रसर होने वाले हैं जिन्होंने दीर्घकाल तक उन पुस्तकों के अध्ययन में कठोर परिश्रम किया है तथा शिक्षा संस्थानों में प्रकाण्ड शिक्षकों से पढ़ा और सीखा है। अत: यदि इस प्रश्न का यह उत्तर दें कि ऐसी उच्च श्रेणी की बारीक सच्चाइयाँ हमारी पुस्तकों में मौजूद नहीं है अपितु उनमें समस्त मोटी और सरसरी और खोखली बातें भरी हुई हैं, जिन्हें ℗जनसाधारण भी थोड़े से ध्यान से ज्ञात कर सकते हैं और जिन पर एक मन्द ℗144
बुद्धि लड़का भी सरसरी दृष्टि डालकर उन की गहराई तक पहुँच सकता है तथा जिनका जानना कुछ ज्ञान संबंधी श्रेष्ठता में सम्मिलित नहीं अपितु अन्तत: उन किताबों के समान हैं जिनमें किस्से-कहानियां लिखी जाती हैं या जो केवल बच्चों और जनसाधारण के अध्ययन के लिए बनाए जाते हैं तो अफ़सोस ऐसी गई गुज़री किताबों पर, क्योंकि यह बात अत्यन्त साफ और स्पष्ट है कि यदि किसी पुस्तक के लेख केवल जन-साधारण की मोटी बुद्धि तक ही समाप्त हों तथा बारीक सच्चाईयों के स्तर से पूर्णतया गिरे हुए हों तो वह पुस्तक भी कोई उत्तम पुस्तक नहीं कहलाती अपितु वह भी बुद्धिमानों की दृष्टि में ऐसी ही मोटी और कम सम्मान वाली होती है, जैसे उनके लेख मोटे हैं और उसका विषय कोई ऐसी वस्तु नहीं होता जिसे दर्शन विज्ञान के सूत्र में संलग्न किया जाए या उच्च सच्चाइयों की श्रेणी में समझा जाए। अत: जो व्यक्ति ऐसी इल्हामी किताब के सन्दर्भ में दावा करता है कि उस की समस्त बातें मोटी और निम्न स्तर की हैं तथा उन समस्त सच्चाइयों से खाली और रिक्त हैं जो नितान्त सूक्ष्म और बारीक हैं, जिनका जानना विद्वानों, दार्शनिकों से विशेष्य है तो वह स्वयं ही अपनी पुस्तक का अपमान करता है और इस से उसका घमण्ड भी स्थापित नहीं रह सकता, क्योंकि जिस वस्तु की गहराई तक पहुंचने में जनसाधारण भी उसके साथ भागीदार और समान हैं उस वस्तु के प्राप्त करने से वह किसी ज्ञान की ऐसी श्रेष्ठता को प्राप्त नहीं कर सकता कि उसे जनसाधारण

से विशेषता प्रदान करे या उसे कोई विद्वान और ज्ञानी की उपाधि प्रदान करे अपितु वह भी नि:संदेह चौपायों की भांति जनसाधारण में से होगा क्योंकि उस के ज्ञान और अध्यात्म ज्ञान का अनुमान सामान्य लोगों से अधिक नहीं। नि:सन्देह ऐसी बेहूदा और व्यर्थ पुस्तकों का ज्ञान परोक्ष के मामलों में सम्मिलित नहीं होगा, परन्तु फिर भी यह शर्त है कि उन की शिक्षाएं ऐसी प्रचलित और परिचित हों जिन के सन्दर्भ में यह विश्वास करने का कारण
℗145 हो कि प्रत्येक अनपढ़ मनुष्य भी थोड़े से ध्यान से उनके विषयों से सूचित हो सकता ℗है, क्योंकि यदि उनके विषय प्रकाशित और प्रसिद्ध न हों तो यद्यपि वह कैसी ही खोखली और मोटी बातें हों तब भी उस व्यक्ति के लिए जो उस भाषा से अनभिज्ञ है जिस भाषा में उन किताबों के लेख लिखे गए हैं परोक्ष के मामले का आदेश रखते हैं। यह तो इस स्थिति में है कि जब कोई क़ौम अपनी इल्हामी किताबों के सन्दर्भ में स्वयं स्वीकार कर ले कि वे बारीक सच्चाइयों से खाली और वंचित हैं, परन्तु यदि किसी क़ौम की यह राय हो कि उनकी इल्हामी किताबों में बारीक सच्चाइयां भी हैं जिन को परिधि में लेना उन उच्च श्रेणी के विद्वानों के अलावा जिनकी आयु उन्हीं में सोच-विचार करते करते जर्जर हो गई है, और जिन में ऐसी सच्चाइयां भी हैं जिनकी गहराई और मर्म तक वे ही लोग पहुँचते हैं जो नितान्त दक्ष, गहरी सोच तथा ज्ञान में पारंगत हैं। अत: इस उत्तर से स्वयं हमारा मतलब सिद्ध है, क्योंकि यदि एक अनपढ़ और अशिक्षित व्यक्ति उन बारीक सच्चाइयों को उनकी पुस्तकों में से वर्णन करे जिन्हें उनके जनसाधारण की स्वीकारोक्ति के अनुसार विद्वान और शिक्षित भी वर्णन नहीं कर सकते, केवल विशिष्ट लोगों का कार्य है, तो नि:सन्देह उस अनपढ़ का वर्णन इस प्रमाण के पश्चात् कि वह अनपढ़ है, परोक्ष के मामलों में सम्मिलित होगा और यही तीसरे उदाहरण का आशय है।

चेतावनी

परोक्ष के मामलों का ख़ुदा की ओर से होना पूर्ण रूप से प्रमाणित है क्योंकि यह बात बुद्धि की स्पष्टता द्वारा सिद्ध है कि परोक्ष का ज्ञात करना सृष्टि (मख़लूक़) की शक्तियों से बाहर है और जो बात सृष्टि की शक्तियों से बाहर हो, वह ख़ुदा की ओर से होती हैं। अत: इस तर्क से स्पष्ट है कि परोक्ष के मामले ख़ुदा की ओर से प्रकटित होते हैं तथा उनका

ख़ुदा की ओर से होना निश्चित और यक़ीनी है।

तृतीय भूमिका:- जो वस्तु ख़ुदा तआला की पूर्ण शक्ति (क़ुदरत) मात्र से प्रकटित हो चाहे वह वस्तु उस की सृष्टियों में से कोई ℗सृष्टि हो, चाहे वह उसकी पवित्र ℗146
किताबों में से कोई किताब हो जो शाब्दिक और अर्थों की दृष्टि से उसी की ओर से जारी हो, उस का इस विशेषता से विशेष्य होना आवश्यक है कि कोई मख़लूक़ (सृष्टि) उस के समान बनाने पर सामर्थ्यवान न हो। यह सामान्य सिद्धान्त जो ख़ुदा की ओर से जारी होने वाली प्रत्येक बात से सम्बद्ध है दो प्रकार से सिद्ध है। **प्रथम-** अनुमान से, क्योंकि उचित और दृढ़ अनुमान की दृष्टि से ख़ुदा का अपने अस्तित्व और गुणों तथा कार्यों में एकमात्र और बिना भागीदार के होना आवश्यक है, उस की किसी कारीगरी, कथन और कार्य में सृष्टि की भागीदारी वैध नहीं। तर्क इस पर यह है कि यदि उसकी किसी कारीगरी या कथन(11) या कार्य में सृष्टि की भागीदारी वैध हो तो फिर सब गुणों और कार्यों ℗में वैध हो और यदि समस्त गुणों और कार्यों में वैध हो तो फिर कोई दूसरा ख़ुदा ℗147
भी पैदा होना वैध हो, क्योंकि जिस वस्तु में ख़ुदा के समस्त गुण पाए जाएँ उसी का नाम ख़ुदा है और यदि किसी वस्तु में ख़ुदा तआला के कुछ गुण ℗पाए जाएँ तब भी वे कुछ ℗148

हाशिया न. (11) ℗इस स्थान पर कुछ ना समझ (जिन्हें गहरे सोच-विचार की आदत ℗146
नहीं) यह भ्रम प्रस्तुत करते हैं कि नि:संदेह अकेले अक्षर और अकेले शब्द ख़ुदा के कलाम और मनुष्यों के कलाम में सम्मिलित हैं। अत: अकेले अक्षरों और अकेले शब्दों में मनुष्य की भागीदारी ख़ुदा के साथ अनिवार्य हुई। इसका उत्तर यह है कि जैसा पुस्तक की मूल इबारत में विस्तार पूर्वक लिखा गया है। भाषा की शिक्षा ख़ुदा की ओर से है। अत: अक्षर और अकेले शब्दों को भी ख़ुदा ही ने मनुष्यों को सिखाया है, मनुष्य ने उन्हें अपनी बुद्धि से आविष्कृत नहीं किया। मनुष्य जिस बात को अपनी बुद्धि से आविष्कार करता है वह केवल शब्दों का जोड़ना है अर्थात् मनुष्य की यह बात अधिकृत और जिसे परिश्रम द्वारा प्राप्त किया जा सकता है कि किसी लेख को प्रकट करने के लिए अपनी ओर से एक इबारत तैयार कर सकता है जिसमें कोई वाक्य किसी स्थान पर और कोई वाक्य किसी स्थान पर रखता है तथा किसी संमिश्रण (तरकीब) को किसी जगह पर और किसी संमिश्रण को किसी जगह पर रखता है। अत: यही

में ख़ुदा तआला के भागीदार हुए और ख़ुदा तआला का भागीदार होना बुद्धि की स्पष्टता द्वारा निषेध है। अत: इस तर्क से सिद्ध है कि ख़ुदा का अपने समस्त गुणों, कथनों और कार्यों

शेष हाशिया न. (11)

साहित्य की इबारत उसकी अपनी ओर से होती है और इसमें हम कहते हैं कि ख़ुदा के साहित्य की इबारत से मनुष्य के साहित्य की इबारत कदापि समान नहीं हो सकती और न समान होना वैध है, क्योंकि इससे स्रष्टा की सृष्टि से भागीदारी अनिवार्य होती है, परन्तु मनुष्य का उन्हीं अक्षर और अकेले शब्दों का बोलना जो ख़ुदा ने अपने कलाम में प्रयोग किए हैं यह भागीदारी नहीं अपितु यह तो बिल्कुल ऐसी बात है कि जैसे मनुष्य मिट्टी को जो ख़ुदा की पैदा की हुई है अपने प्रयोग में लाता है और तरह-तरह के बरतन इत्यादि बनाता है। अत: इस से यह तो सिद्ध नहीं होता कि मनुष्य ख़ुदा का भागीदार हो गया है, क्योंकि मिट्टी तो नि:संदेह ख़ुदा की सृष्टि है न कि मनुष्य की। भागीदारी तो तब सिद्ध हो, जब कोई मनुष्य ख़ुदा की तरह इस मिट्टी से जानवर तथा वनस्पतियाँ और तरह-तरह के रत्न बना के दिखाए। अत: स्पष्ट है कि मनुष्य में यह सामर्थ्य नहीं कि ख़ुदा ने जो काम
Ⓟ147 मिट्टी से पूरा किया है वह भी उसी मिट्टी से पूरा कर सके। यह बात तो Ⓟसत्य है कि आविष्कार और साहित्य की इबारत का तत्व मनुष्य के हाथ में भी वही है जिसे ख़ुदा अपने प्रकृति के नियमों की पाबन्दी से प्रयोग में लाता है परन्तु हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं, यह कब सत्य हो सकता है कि मनुष्य का आविष्कार और साहित्य की इबारत ख़ुदा के आविष्कार और साहित्य की इबारत के सदृश है। यदि मनुष्य ख़ुदा का मुकाबला करने में आसानी की चाल भी चले अर्थात् यह करे कि जिस सृष्टि (मख़लूक़) के अंग अलग-अलग हो चुके हों, उसी की अस्थियाँ और समस्त अंग एकत्र करके फिर वही जीवधारी बनाना चाहे या जीवधारी न सही वैसा ही ढांचा तैयार करना चाहे तो यह भी उसके लिए सम्भव नहीं। अत: बुनियादी तौर पर निर्बल मनुष्य ख़ुदा का मुकाबला क्योंकर कर सके, इस से तो जानवरों का मुकाबला भी नहीं हो सकता, अपितु छोटे-छोटे कीड़ों-मकोड़ों का मुकाबला करने से भी असमर्थ है तथा कुछ कीड़े अपनी कारीगरी में उस से कहीं अधिक हैं। कोई उसके लिए रेशम बनाता है, कोई उसे शहद का शरबत पिलाता है, इसी प्रकार कोई कुछ, कोई कुछ तैयार करता है तथा मनुष्य को उनमें से एक भी कला का ज्ञान नहीं। तो फिर देखिए मूर्खता है या नहीं कि इस मुख और इस

में एक और बिना ℗भागीदार के होना आवश्यक है तथा उसकी हस्ती इन समस्त अनुचित ℗149
और बेहूदा बातों से पवित्र है जो ख़ुदा के भागीदार पैदा होने के अन्त तक पहुँचे हों। इस

शेष हाशिया न. (11)

योग्यता से ख़ुदा के साथ मुकाबला।

چوں نیست بیک مگسے تاب ہمسری   پس چوں کنی بقادرِ مطلق برابری

(अनुवाद :- जब तुझ में एक मक्खी की बराबरी की भी ताकत नहीं, तो फिर उस सर्वशक्तिमान ख़ुदा की बराबरी किस प्रकार कर सकता है ?)

شرم آیدت زدم زنی خود بہ کردگار   رو قدرِ خود بہ بیں کہ زیک کرم کمتری

अनुवाद :-तुझे सामर्थ्यवान के मुक़ाबले में कुछ दावा करने से शर्म आनी चाहिए, जा अपनी हैसियत देख कि तू एक कीड़े से भी तुच्छ है।)

इस स्थान पर यह बात भी भली-भांति स्मरण रखना चाहिए कि जैसे मनुष्य के शरीर के तत्व ख़ुदा की ओर से हैं वैसे ही क़लाम के तत्व भी ख़ुदा की ओर से हैं और कलाम के तत्वों से अभिप्राय हमारे अक्षर, शब्द तथा छोटे-छोटे वाक्य हैं जिन पर भाषा की शिक्षा निर्भर है। जैसे **ख़ुदा** है **बन्दा नश्वर** है, **अलहम्दो लिल्लाह, रब्बुल आलमीन** इत्यादि, इत्यादि। ये सब कलाम के तत्व ही हैं जो ख़ुदा ने अपनी ओर से मनुष्य पर प्रकट किए हैं क्योंकि ख़ुदा का केवल इतना कार्य नहीं था कि वह केवल मिट्टी का एक पुतला बनाकर फिर अलग हो जाता अपितु स्पष्ट है कि मनुष्य ने अपने स्वभाव की पूर्णता के लिए जो कुछ पाया वह सब ख़ुदा ही से पाया, घर से तो कुछ न लाया। अत: सत्याभिलाषी को चाहिए कि इस से धोका न खाए कि अक्षर और अकेले शब्द या छोटे-छोटे वाक्य जो ख़ुदा के कलाम में मौजूद हैं वे मनुष्य के कलाम में भी मौजूद हैं और इस बात को भली-भांति स्मरण रखे कि ये कलाम के तत्व हैं जो ख़ुदा की ओर से हैं, मनुष्य भी उन्हें अपने प्रयोग में लाता है और ख़ुदा भी, परन्तु अन्तर यह है कि ख़ुदा के कलाम में जो शब्दों और अर्थों की दृष्टि से ख़ुदा का कलाम हैं वे शब्द और वाक्य ऐसे दृढ़ क्रम, नीतिसंगत, पूर्ण संतुलन और समान रूप से अपने-अपने स्थान पर रखे होते हैं जैसे ख़ुदा के समस्त कार्य जो संसार में पाए
℗जाते हैं पूर्ण अनुकूलता तथा नीतिगत हैं। मनुष्य को अपने लेख में वह ख़ुदाई ℗148

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

Ⓟ150 दावे का दूसरा प्रमाण पूर्ण उपपादन☆(Induction) से होता है जो ख़ुदा की ओर से Ⓟजारी समस्त वस्तुओं पर सोच-विचार करके उचित सिद्ध हो गया है, क्योंकि संसार के समस्त

शेष हाशिया न. (11)

का पद प्राप्त नहीं हो सकता जैसा दूसरे कार्यों में प्राप्त नहीं। यही कारण है कि समस्त काफ़िर क़ुर्आन करीम के मुकाबले पर सरस और सुबोध शैली के दावे तथा कवियों के बादशाह कहलाने के बावजूद मुख बन्द किए बैठे रहे, तथा अब भी खामोश और निरुत्तर बैठे हुए हैं। उन की यही खामोशी उनकी असमर्थता पर साक्ष्य प्रस्तुत कर रही है, क्योंकि असमर्थता और क्या होती है यही तो है कि प्रतिद्वन्द्वी के तर्क को सुनकर और समझ कर खण्डन करके न दिखा सकें।

यहाँ तक तो इस हाशिए में ख़ुदा के कलाम के अद्वितीय होने की आवश्यकता को हमने प्रकृति के नियम की दृष्टि से प्रमाणित किया है, परन्तु इस के अतिरिक्त ख़ुदा के कलाम का अद्वितीय होना एक और ढंग से भी अनिवार्य ठहरता है, जिसका इसी हाशिए में वर्णन करना युक्तिसंगत है, और वह यह है इसमें कुछ सन्देह नहीं कि मनुष्य का बिना भय के शुभ अन्त हो जाना जिस पर निश्चय ही मुक्ति की आशा हो इस बात पर निर्भर है कि उसे वास्तविक स्रष्टा के अस्तित्व और उसके सर्वशक्तिमान होने तथा उसके प्रतिफल प्रदान करने के संबंध में पूर्ण विश्वास का पद प्राप्त हो जाए और यह बात केवल सृष्टियों के अवलोकन से प्राप्त नहीं हो सकती अपितु इसे विश्वास के स्तर तक पहुंचाने के लिए एक ऐसी इल्हामी किताब की आवश्यकता है जिसका सदृश बनाना मानव शक्तियों से बाहर हो। अब इस भाषण को भली-भांति समझाने के लिए दो बातों का वर्णन करना आवश्यक है। **प्रथम** यह कि निश्चित तौर पर मुक्ति की आशा पूर्ण विश्वास से क्यों सम्बद्ध है। **द्वितीय** यह कि वह पूर्ण विश्वास केवल सृष्टियों के अवलोकन से क्यों प्राप्त नहीं हो सकता। अत: पहले यह समझना चाहिए कि पूर्ण विश्वास उस दृढ़ करने वाली सही आस्था का नाम है जिसमें सन्देह की कोई आशंका न रहे तथा खोजनीय बात के सन्दर्भ में हृदय को पूर्ण रूप से संतुष्टि और सांत्वना प्राप्त हो जाए तथा प्रत्येक आस्था जो इस सीमा से नीचे और कम हो वह पूर्ण विश्वास के स्तर पर नहीं है अपितु सन्देह या अन्ततः अनुमान का प्रभुत्व है।

निश्चित तौर पर मुक्ति की आशा पूर्ण विश्वास पर इसलिए निर्भर

☆-देखिए पुस्तक के आरम्भ में दी गई शब्दार्थ-तालिका (अनुवादक)

भाग जो ख़ुदा तआला की पूर्ण क़ुदरत से प्रकटित हैं। जब हम उनमें से प्रत्येक को गहरी दृष्टि से देखते हैं तथा उच्च से निम्न तक यहाँ तक कि ®तुच्छ से तुच्छ वस्तुओं को जैसे ®151

शेष हाशिया न. (11)

है कि मुक्ति का आधार इस बात पर है कि मनुष्य अपने दयालु-स्वामी को समस्त संसार, उसके भोग-विलास, उसके संसाधनों और उसके समस्त संबंधों पर, यहाँ तक कि स्वयं पर भी प्रमुख समझे तथा कोई प्रेम ख़ुदा के प्रेम पर प्रभुत्व न जमाने पाए, परन्तु मनुष्य पर यह विपत्ति आई हुई है कि वह इस मार्ग के विपरीत जिस पर उसकी मुक्ति निर्भर है ऐसी वस्तुओं से हृदय लगा रहा है जिनसे हृदय लगाना ®ख़ुदा से हृदय हटाने को अनिवार्य है और हृदय भी ऐसा लगाया हुआ है कि ®149 निश्चित तौर पर समझ रहा है कि मेरी सम्पूर्ण शान्ति और आराम इन्हीं संबंधों में है और न केवल समझ रहा है अपितु वे आनन्द पूरे विश्वास के साथ उसके लिए मौजूद और महसूस हैं जिनके अस्तित्व में उन्हें तनिक भी सन्देह नहीं। अतः स्पष्ट है कि जब तक मनुष्य को ख़ुदा तआला के अस्तित्व और उसके मिलन के आनन्द पर, उसके प्रतिफल प्रदान करने और दण्ड देने पर तथा उसकी ने'मतों के सन्दर्भ में ऐसा ही पूर्ण विश्वास न हो जैसा उसे अपने घर के धन पर तथा अपने सन्दूक के गिने हुए रुपयों पर और अपने हाथ के लगाए हुए बाग़ों पर अपनी धन से क्रय की गई अथवा पैतृक सम्पति पर, अपने जांचे हुए चखे हुए आनन्दों पर तथा अपने हार्दिक मित्रों पर प्राप्त है तब तक ख़ुदा की ओर हार्दिक उत्तेजना के साथ लौटना असंभव है, क्योंकि कमज़ोर विचार शक्तिशाली विचार पर विजयी नहीं हो सकता। निःसन्देह यह बात सत्य है कि जब ऐसा व्यक्ति जिस का विश्वास प्रलय की बातों की तुलना में संसार पर अधिक है इस यात्री-निवास (मुसाफिर ख़ाना) से कूच करने लगे और वह कमज़ोर समय जिसे मृत्यु के अन्तिम क्षण कहते हैं अचानक उस के सर पर प्रकट हो कर उसे उन निश्चित आनन्दों से दूर डालना चाहे जो उसे संसार में प्राप्त हैं तथा उसे उन प्रियजनों से पृथक करना चाहे जिन्हें वह प्रतिदिन निश्चय ही अपनी आँखों से देखता है, तथा उन मालों, देशों और धन से उसे अलग करने लगे जिन्हें निःसन्देह वह अपना स्वामित्व समझता है तो ऐसी परिस्थिति में संभव नहीं कि उस का ध्यान ख़ुदा तआला की ओर स्थिर रहे, परन्तु केवल इस परिस्थिति में कि जब उस पूर्ण विश्वास की तुलना में ख़ुदा तआला के अस्तित्व, उसके मिलन का आनन्द तथा

मक्खी, मच्छर और मकड़ी इत्यादि हैं को विचार में लाते हैं तो उन में से हमें ऐसी कोई भी वस्तु मालूम नहीं होती कि जिसके बनाने पर मनुष्य भी शक्ति रखता हो अपितु उन

शेष हाशिया न. (11)

उसके प्रतिफल और दण्ड देने के वादे पर ऐसा ही पूर्ण विश्वास अपितु इस से भी अधिक हो और यदि इस अन्तिम क्षण में इस स्तर का विश्वास जो सांसारिक विचारों को दूर कर सके उसे प्राप्त न हो तो यह बात शायद उसके लिए अशुभ अन्त का कारण होगा।

यह बात कि केवल सृष्टियों के अवलोकन से पूर्ण विश्वास प्राप्त नहीं हो सकता इस प्रकार से प्रमाणित है कि सृष्टियाँ कोई ऐसा धर्म-ग्रन्थ नहीं है कि मनुष्य जिस पर दृष्टि डाल कर यह लिखा हुआ पढ़ ले कि हाँ इस सृष्टि (मख़लूक़) को ख़ुदा ने उत्पन्न किया है और निश्चय ही ख़ुदा मौजूद है और उसी के मिलन का आनन्द वास्तविक शान्ति है, वही आज्ञाकारियों को प्रतिफल और अवज्ञाकारियों को दण्ड देगा अपितु सृष्टियों को देखकर तथा इस संसार को एक उत्तम और उचित क्रम पर सम्पादित पाकर मात्र काल्पनिक तौर पर यह विचार किया जाता है कि इन सृष्टियों का कोई स्रष्टा होना चाहिए और शब्द **होना चाहिए** और **है** के चरितार्थ में बड़ा अन्तर है। अर्थ **होना चाहिए** उस पूर्ण विश्वास तक नहीं पहुँचा सकता जिस तक अर्थ **है** का पहुँचाता है अपितु इस
Ⓟ150 में कुछ सन्देह का तत्व शेष रह Ⓟजाता है। जो व्यक्ति किसी बात के सन्दर्भ में बतौर अनुमान **होना चाहिए** कहता है। उसके कथन का केवल इतना आशय है कि मेरे अनुमान में तो होना अनिवार्य है तथा आगे की मुझे सूचना नहीं कि वास्तव में है भी या नहीं। यही कारण है जो लोग मात्र सृष्टियों पर दृष्टि डालने वाले गुज़रे हैं वे परिणाम निकालने में कभी सहमत नहीं हुए और न अब हैं, न भविष्य में सहमत होना संभव है। हाँ यदि आकाश के किसी कोने पर मोटी और स्पष्ट क़लम से यह लिखा हुआ होता कि मैं अद्वितीय और अनुपम ख़ुदा हूँ जिसने इन वस्तुओं को बनाया है तथा जो शुभ कर्मियों और अशुभ कर्मियों को उनकी नेकी और बदी (बुराई) का बदला देगा। तो फिर नि:सन्देह सृष्टियों के अवलोकन से ख़ुदा के अस्तित्व पर और उसके प्रतिफल और दण्ड पर पूर्ण विश्वास हो जाया करता तथा ऐसी स्थिति में कुछ आवश्यक न था कि ख़ुदा तआला पूर्ण विश्वास तक पहुँचाने का कोई अन्य साधन उत्पन्न करता, परन्तु

वस्तुओं की बनावट ℗और तरकीब पर विचार करने से उनके शरीर में प्रकृति के हाथ ℗152
के ऐसे अद्‌भुत कार्य उपस्थित और विद्यमान पाते हैं जो संसार के रचयिता के अस्तित्व

शेष हाशिया न. (11)

अब तो वह बात नहीं है और चाहे तुम पृथ्वी और आकाश पर कितने ही ध्यान से दृष्टि डालो कहीं उस लेख का पता नहीं मिलेगा केवल अपना अनुमान है और कुछ नहीं। इसी दृष्टि से समस्त दार्शनिक इस बात को स्वीकार करते हैं कि पृथ्वी और आकाश पर दृष्टि डालने से ख़ुदा की हस्ती के सन्दर्भ में निश्चय साक्ष्य प्राप्त नहीं होती, केवल एक काल्पनिक साक्ष्य प्राप्त होती है जिसका अर्थ केवल इतना है कि एक स्रष्टा का अस्तित्व चाहिए और वह भी उसकी दृष्टि में जो उन वस्तुओं के अस्तित्व का स्वयंभू होना दुर्लभ समझता हो, परन्तु नास्तिक की दृष्टि में वह साक्ष्य उचित नहीं क्योंकि वह संसार का अनादि होना स्वीकार करता है। इसी आधार पर उसका यह भाषण है कि यदि कोई अस्तित्व बिना आविष्कारक के वैध नहीं है तो फिर ख़ुदा का अस्तित्व बिना आविष्कारक के क्यों वैध है। यदि वैध है तो फिर उन्हीं वस्तुओं का अस्तित्व जिन्हें किसी ने अपनी आँखों से बनते हुए नहीं देखा, बिना आविष्कारक के क्यों न माना जाए। अब हम कहते हैं कि ख़ुदा तआला के अनादि अस्तित्व में एक नास्तिक को तब ही एक कल्पना के पुजारी के साथ विवाद करने की गुंजायश है कि सृष्टियों पर दृष्टि डालने से संसार के रचयिता पर निश्चित साक्ष्य उत्पन्न नहीं होती अर्थात यह स्पष्ट नहीं होता कि वास्तव में संसार का एक रचयिता विद्यमान है अपितु केवल इतना स्पष्ट होता है कि होना चाहिए। इसी कारण नास्तिक पर संसार के रचयिता को काल्पनिक तौर पर पहचानने की बात संदिग्ध हो जाती है। अत: हम इस आशय को कुछ हाशिया न.4 में वर्णन कर आए हैं जिसमें हमने इस बात का प्रमाण दिया है कि बुद्धि केवल मौजूद होने की आवश्यकता को सिद्ध करती है स्वयं मौजूद होना सिद्ध नहीं कर सकती तथा किसी अस्तित्व की आवश्यकता का सिद्ध होना पृथक बात है और स्वयं उस अस्तित्व ही का सिद्ध हो जाना यह और बात है। अत: जिसके निकट ख़ुदा की पहचान केवल
सृष्टियों के अवलोकन तक ℗ही समाप्त है, उनके पास इस के इक़रार करने ℗151
का कोई साधन मौजूद नहीं कि ख़ुदा वास्तव में मौजूद है, अपितु उसके ज्ञान की कल्पना केवल इतनी है कि होना चाहिए और वह भी तब जब कि नास्तिक

पर अटल सबूत तथा प्रकाशमान तर्क हैं। इन समस्त तर्कों के अतिरिक्त यह बात भी
Ⓟ153 प्रत्येक Ⓟबुद्धिमान पर स्पष्ट है कि यदि यह वैध होता कि जो वस्तु ख़ुदा की क़ुदरत के

शेष हाशिया न. (11)

धर्म की ओर न झुक जाए। यही कारण है कि पूर्वकालीन दार्शनिकों में से जो लोग मात्र काल्पनिक तर्कों के पाबन्द रहे, उन्होंने बड़ी-बड़ी गलतियां कीं और सैकड़ों प्रकार के मतभेद डालकर बिना निर्णय किए गुज़र गए तथा उनका अन्त ऐसी बेचैनी में हुआ कि सहस्त्रों सन्देहों और भ्रमों में पड़ कर अधिकांश उन में से नास्तिक, नेचरी और अधर्मी होकर मरे और दर्शनशास्त्र के कागज़ों की नौकाएं उन्हें किनारे तक न पहुँचा सकीं क्योंकि एक ओर तो उन्हें संसार के प्रेम ने दबाए रखा तो दूसरी ओर उन्हें निश्चित तौर पर ज्ञात न हुआ कि भावी समय में क्या होने वाला है। अतः उन्होंने बड़ी व्याकुलता की स्थिति में पूर्ण विश्वास से दूर और पृथक रह कर इस संसार से कूच किया इस सन्दर्भ में उनका स्वयं ही इक़रार है कि संसार के रचयिता तथा प्रलय संबंधी अन्य बातों के सन्दर्भ में हमारा ज्ञान यथायोग्य नहीं अपितु संदिग्ध के स्तर पर है अर्थात् इस प्रकार का बोध है जैसे कोई वास्तविक स्थिति पर सूचित हुए बिना यों ही अटकल से एक वस्तु के सम्बन्ध में कहे कि इस वस्तु की स्थिति के अनुसार यही उचित है कि यह ऐसी हो और वास्तव में न जानता हो कि वह ऐसी है या नहीं। दार्शनिकों ने अपनी राय में जिस वस्तु को देखा कि ऐसा होना उचित है उसे अपने घर में ही प्रस्तावित कर लिया कि ऐसा ही होगा, जैसे कोई कहे कि उदाहरणतया ज़ैद का इस समय हमारे पास आना उचित है फिर स्वयं ही अपने हृदय में सोच ले कि अवश्य आता होगा, फिर सोचे कि ज़ैद का घोड़े पर आना ही उचित है और फिर कल्पना कर ले कि घोड़े पर ही आया होगा। इसी प्रकार दार्शनिक लोग अटकलों पर अपना कार्य चलाते रहे तथा उन्हें ख़ुदा के वास्तव में मौजूद होने पर विश्वास करना प्राप्त न हुआ अपितु उन की बुद्धि ने यदि बहुत ही ठीक-ठीक दौड़ की तो मात्र इतनी कि एक रचयिता के मौजूद होने की आवश्यकता है। सत्य तो यह है कि इस निम्न स्तर के विचार में भी बेईमानों की भांति उन्हें सन्देह और भ्रम ही पड़ते रहे तथा सदमार्ग पर उनका क़दम नहीं पड़ा। कुछ लोग ख़ुदा के नीतिवान और इरादे द्वारा उत्पन्न होने के इन्कारी रहे, कुछ उसके साथ **ढांचा** ले बैठे, कुछ ने समस्त आत्माओं को ख़ुदा के अनादि होने में भाई-बन्धुओं की

हाथ से प्रकटन में हैं उनके बनाने पर कोई दूसरा व्यक्ति भी समर्थ हो सकता तो किसी रचना का उस वास्तविक रचयिता के अस्तित्व पर पूर्ण प्रमाण न रहता ℗तथा संसार के ℗154

शेष हाशिया न. (11)

तरह भागीदार ठहराया, जिन के उत्तराधिकारी अब तक आर्य समाजी चले आते हैं, कुछ ने मानव आत्माओं की अनश्वरता तथा प्रतिफल और दण्ड को स्वीकार न किया, कुछ ने समय को ही ख़ुदा की भांति वास्तविक प्रभावशाली ठहराया, कुछ ने परमेश्वर सर्वांगपूर्ण ज्ञाता होने से मुख फेर लिया, कुछ मूर्तियों पर ही भेटें चढ़ाते रहे और काल्पनिक देवताओं के सामने ℗हाथ जोड़ते रहे, बहुत से ℗152
बड़े-बड़े दार्शनिक ख़ुदा तआला के अस्तित्व का ही इन्कार करते रहे तथा उन में कोई ऐसा न हुआ कि इन समस्त ख़राबियों से सुरक्षित रहता।

अब हम मूल लेख की ओर लौटते हुए लिखते हैं कि केवल सृष्टियों के अवलोकन से कदापि पूर्ण विश्वास प्राप्त नहीं हो सकता और न कभी किसी को हुआ अपितु जितना प्राप्त हो सकता है और शायद कुछ को हुआ है वह इतना ही है कि जो **होना चाहिए** का चरितार्थ है तथा यह भी संसार के रचयिता के अस्तित्व के संबंध में है, प्रतिफल और दण्ड के संबंध में तो इतना भी नहीं जब सृष्टियों के अवलोकन से पूर्ण विश्वास न हो सका तो दो बातों में से एक बात स्वीकार करना पड़ी। या (1) तो यह कि ख़ुदा ने पूर्ण विश्वास तक पहुँचाने का इरादा ही नहीं किया और या (2) यह कि उसने पूर्ण विशवास तक पहुंचाने के लिए अवश्य कोई माध्यम रखा है, परन्तु उपर्युक्त प्रथम बात तो स्पष्ट तौर पर मिथ्या है तथा किसी बुद्धिमान को उसके मिथ्या होने में कोई आपत्ति नहीं। दूसरी बात को मानने की स्थिति में अर्थात् इस स्थिति में कि जब हम स्वीकार करें कि ख़ुदा ने सृष्टियों (मख़लूक़ात) की मुक्ति के लिए अवश्य कोई पूर्ण माध्यम ठहराया है, इस बात को स्वीकार करने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं कि वह पूर्ण माध्यम ऐसी कोई इल्हामी किताब होगी जो स्वयं में अद्वितीय और अनुपम हो तथा अपने वर्णन में प्रकृति के नियम के प्रत्येक संक्षेप को खोलती तथा स्पष्ट करती हो, क्योंकि जब पूर्ण माध्यम के लिए यह शर्त हुई कि वह वस्तु अद्वितीय और अनुपम हो तथा उसमें ख़ुदा की ओर से होने में और प्रत्येक धार्मिक बात के लिए लिखित साक्ष्य भी मौजूद हो तो यह समस्त विशेषताएं केवल इल्हामी किताब में जो अद्वितीय और अनुपम हो एकत्र होंगी किसी अन्य

रचयिता को पहचानने की बात बिल्कुल संदिग्ध हो जाती, क्योंकि जब कुछ उन वस्तुओं को जो ख़ुदा तआला की ओर से जारी हुई हैं ख़ुदा के अतिरिक्त कोई अन्य भी बना सकता

शेष हाशिया न. (11)

वस्तु में एकत्र नहीं हो सकतीं, क्योंकि यह विशेषता केवल इल्हामी किताब में प्राप्त हो सकती है कि अपने वर्णन और अपनी अद्वितीयता की स्थिति द्वारा पूर्ण विश्वास तथा पूर्ण मा'रिफ़त के स्तर तक पहुँचा दे। कारण यह कि आकाश और पृथ्वी के अस्तित्व पर यदि कोई दुर्भाग्यशाली नास्तिक सन्देह करे तो करे कि ये हमेशा (अनादि काल) से चले आते हैं प्रत्येक कलाम को मानव शक्तियों से श्रेष्ठतम स्वीकार करके फिर मनुष्य इस इक़रार करने से कहां भाग सकता है कि ख़ुदा वास्तव में मौजूद है जिसने इस किताब को उतारा। इसके अतिरिक्त यहां ख़ुदा के अस्तित्व को मानना केवल अपना ही अनुमान नहीं अपितु वही किताब घटना की सूचना देते हुए यह भी बताती है कि ख़ुदा मौजूद है तथा प्रतिफल और दण्ड सत्य है। अत: जिस पूर्ण विश्वास को सत्य का अभिलाषी पृथ्वी और आकाश में तलाश करता है और नहीं पाता, वह मनोकामना उसकी इस स्थान पर पूर्ण हो जाती है। अत: नास्तिक को ख़ुदा के अस्तित्व को स्वीकार कराने के लिए जैसे अद्वितीय कलाम की आवश्यकता है वैसा पृथ्वी और आकाश के
Ⓟ153 अवलोकन Ⓟसे कदापि संभव नहीं। यह बात स्मरण रखना चाहिए कि प्रत्येक मनुष्य में जो केवल कल्पना का पुजारी है नास्तिकता की एक नाड़ी है वही नाड़ी नास्तिक में कुछ अधिक फूल कर प्रकट हो जाती है तथा अन्य में गुप्त रहती है। इस नाड़ी को वही इल्हामी किताब काटती है जो वास्तव में मानव शक्तियों से बाहर हो, क्योंकि हम ने जैसा ऊपर वर्णन किया है आकाश और पृथ्वी से परिणाम निकालने में लोगों की समझ हमेशा भिन्न रही है। किसी ने इस तरह समझा, किसी ने उस तरह समझा परन्तु यह मतभेद अद्वितीय कलाम में नहीं हो सकता यद्यपि कोई नास्तिक ही हो, अद्वितीय कलाम के सन्दर्भ में यह राय प्रकट नहीं कर सकता कि वह किसी संवादी (बात करने वाला) के संवाद के बिना पृथ्वी और आकाश की भांति अनादि काल से स्वयंभू अस्तित्व रखता है अपितु अद्वितीय कलाम के संबंध में नास्तिक उसी समय तक तर्क-वितर्क करेगा जब तक उसके अद्वितीय होने में उसे आपत्ति रहेगी, जब उसने इस बात को स्वीकार कर लिया कि इसकी रचना वास्तव में अपौरुषैय (मानव शक्तियों से बाहर) है,

है तो फिर इस बात पर क्या तर्क है कि समस्त वस्तुओं को Ⓟकोई अन्य नहीं बना Ⓟ155
सकता। अब जबकि ठोस तर्कों द्वारा सिद्ध हो गया कि जो वस्तुएं ख़ुदा की ओर से हैं

शेष हाशिया न. (11)

परमेश्वर को मानने के लिए उसके हृदय-पटल में उसी समय से एक बीज बोया जाएगा, क्योंकि उसके लिए इस भ्रम की गुंजायश ही नहीं कि इस वाणी के वक्ता का अस्तित्व काल्पनिक है न कि वास्तव। यह इसलिए कि वाणी का अस्तित्व वक्ता के अस्तित्व के बिना हो ही नहीं सकता। इसके अतिरिक्त अद्वितीय वाणी में यह भी विशेषता है कि संसार में आगमन फिर प्रभु की ओर वापसी की आद्योपांत प्रक्रियाओं का ज्ञान जो जीवात्मा (मानव) की सम्पूर्ति के लिए अनिवार्य है वह सब तदवत् यथार्थ रूप में इसमें लिखा हुआ मौजूद है और पृथ्वी और आकाश में यह विशेषता भी मौजूद नहीं क्योंकि प्रथम तो उन के अवलोकन से धार्मिक रहस्य कुछ ज्ञात ही नहीं होते और यदि कुछ हों भी तो अधिकतर वही उदाहरण प्रसिद्ध है कि गूंगे के संकेत उसकी मां ही समझे। अब इस समस्त भाषण से स्पष्ट हो गया कि ख़ुदा के कलाम का अद्वितीय होना केवल इस दृष्टि से अनिवार्य नहीं कि प्रकृति के नियम के क्रम की सुरक्षा इसी पर निर्भर है अपितु इस दृष्टि से भी अनिवार्य है कि अद्वितीय कलाम के अभाव में मुक्ति की बात ही अधूरी रहती है, क्योंकि जब ख़ुदा पर ही पूर्ण विश्वास न हुआ तो फिर मुक्ति कैसी और कहाँ से। जो लोग ख़ुदा के कलाम का अद्वितीय और अनुपम होना आवश्यक नहीं समझते, उनकी कैसी मूर्खता है कि नितान्त नीतिवान (ख़ुदा) पर कुधारणा रखते हैं, यद्यपि कि उसने किताबें भेजीं परन्तु बात वही बनी बनाई रही जो पहले थी और वह कार्य न किया जिससे लोगों का ईमान अपनी पराकाष्ठा को पहुँचता। खेद है कि ये लोग सोचते नहीं कि ख़ुदा का प्रकृति का नियम ऐसा छाया हुआ है कि उसने कीड़ों-मकोड़ों को भी कि जिन से कुछ ऐसे बड़े लाभ की कल्पना नहीं अद्वितीय बनाने से संकोच नहीं किया तो क्या उसकी नीति पर यह आरोप न होगा कि उसे संकोच का स्थान कहाँ आकर सूझा जिस से समस्त मनुष्यों की नौका ही डूबती है
तथा जिससे यह विचार करना पड़ता है कि जैसे Ⓟख़ुदा को कदापि स्वीकार ही Ⓟ154
नहीं कि कोई मनुष्य मुक्ति प्राप्त करे, परन्तु जिस स्थिति में ख़ुदा तआला के सन्दर्भ में ऐसी भावना रखना महाकुफ़्र है। तो अन्ततः यह दूसरी बात जो ख़ुदा की शान के

उन का अद्वितीय होना और फिर उन की अद्वितीयता पर उनके ख़ुदा की ओर से होने पर Ⓟ156 अटल तर्क का Ⓟहोना उनके ख़ुदा की ओर से जारी होने के लिए आवश्यक शर्त है। इस

शेष हाशिया न. 11

योग्य तथा बन्दों की मुक्ति और ख़ुदा के अध्यात्मज्ञान की पूर्णता के लिए ऐसी किताब अवश्य भेजी है जो अनुपम होने के कारण आध्यात्मिकता की पराकाष्ठा तक पहुँचाती है तथा जो काम अकेली बुद्धि से नहीं हो सकता उसे पूर्ण करके दिखाती है। अत: वह किताब क़ुर्आन करीम है जिसने इस पूर्ण विशेषता का दावा किया है तथा उसे सच्चाई तक पहुँचाया है।

ہست فرقاں آفتاب علم و دین　　تابر ندت از گماں سوئے یقیں

क़ुर्आन करीम ज्ञान और धर्म का सूर्य है और वह तुझे सन्देह से विश्वास की ओर ले जाएगा।☆

ہست فرقاں از خدا حبل المتین　　تا کشندت سوئے رب العالمین

क़ुर्आन ख़ुदा की सुदृढ़ रस्सी है और वह तुझे समस्त लोकों के प्रतिपालक की ओर खींच कर ले जाएगी। ☆

ہست فرقاں روز روشن از خدا　　تا دہندت روشنئے دیدہ ہا

क़ुर्आन ख़ुदा की ओर से एक प्रकाशमान दिन है ताकि तुझे (आध्यात्मिक) आँखों का प्रकाश प्रदान करे। ☆

حق فرستاد این کلام بے مثال　　تا رسی در حضرت قدس و جلال

ख़ुदा ने इस अद्वितीय कलाम को इसलिए भेजा है ताकि तू उस पवित्र और प्रतापी ख़ुदा के दरबार में पहुँच जाए। ☆

داروئے شک است الہام خدائے　　کاں نماید قدرت تام خدائے

ख़ुदा तआला का इल्हाम सन्देह की दवा है क्योंकि वह ख़ुदा तआला की पूर्ण क़ुदरत को प्रकट करता है। ☆

ہر کہ روئے خود زِ فرقاں در کشید　　جان او روئے یقیں ہرگز نہ دید

जिसने क़ुर्आन से मुँह फेरा उसने विश्वास का मुख कदापि नहीं देखा। ☆

جان خود را مے کنی در خودروی　　بازمے مانی ہماں گول و غوی

तू अहंकार के कारण अपने प्राण को नष्ट करता है परन्तु फिर भी उसी प्रकार का मूर्ख और पथ-भ्रष्ट रहता है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

खोज और जांच पड़ताल से उन लोगों का झूठ स्पष्ट हो गया, जिन की यह राय है कि ख़ुदा के कलाम का अद्वितीय होना आवश्यक नहीं या उसके अद्वितीय होने से उसका

शेष हाशिया न. (11)

کاش جانت میل عرفان داشتے　　کاش سعیت تخم حق را کاشتے

काश! तेरा हृदय ख़ुदा को पहचानने का ज्ञान प्राप्त करने की रुचि रखता, काश! तेरा प्रयास सत्य का बीज बोता। ☆

خود نگہ کن از سر انصاف و دین　　از گمان ہا کے شود کار یقین

तू स्वयं न्याय और इन्साफ़ से विचार कर कि कल्पना विश्वास का काम कैसे दे सकती है। ☆

ہر کہ را سویش درے بکشودہ است　　از یقیں نے از گماں ہا بودہ است

जिस का द्वार ख़ुदा की ओर खुल गया वह विश्वास के कारण खुला है न कि सन्देहों के कारण। ☆

قدر فرقاں نزدت اے غدار نیست　　ایں ندانی کت جز ازوے یار نیست

हे ग़द्दार! तू क़ुर्आन के महत्व को नहीं जानता तुझे क्या पता कि उसके समान तेरा कोई प्रेमी नहीं। ☆

وحی فرقاں مردگاں را جاں دہد　　صد خبر از کوچۂ عرفاں دہد

क़ुर्आन की वह्यी मुर्दों में प्राण डालती है और ख़ुदा की मा'रिफ़त (अध्यात्म ज्ञान) की सैकड़ों बातें बताती है। ☆

از یقیں ہاے نماید عالمے　　کاں نہ بیند کس بصد عالم ہمے

और विश्वसनीय ज्ञानों का ऐसा संसार दिखाती है जो कोई सौ संसारों में भी नहीं देख सकता। ☆

इस स्थान पर ब्रह्म समाज वालों ने बड़े कठिन परिश्रम से कुछ भ्रम बना रखा है ताकि ख़ुदा की किताब को स्वीकार करने से बहाना बनाने का कोई कारण उत्पन्न हो जाए और किसी प्रकार से धर्म का प्रबन्ध अधूरा ही रहे अपनी पूर्णता को न पहुँचे तथा कहीं यह न कहना पड़े कि ख़ुदा वह दयालु और कृपालु है कि जिसने मनुष्य के शारीरिक प्रशिक्षण के लिए सूर्य और चन्द्रमा इत्यादि वस्तुएं बनाईं ताकि मनुष्य की आजीविका की व्यवस्था करे तथा आध्यात्मिक प्रशिक्षण के लिए अपनी किताबें भेजीं ताकि पथ-प्रदर्शन का प्रबन्ध करे. अत: चूँकि ये

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

Ⓟ157 ख़ुदा की ओर से होना सिद्ध नहीं हो सकता Ⓟपरन्तु इस स्थान पर समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए उनका एक भ्रम जो उनके हृदयों को पकड़ता है दूर करना

शेष हाशिया न. (11)

लोग ख़ुदावन्द दयालु और कृपालु पर कंजूसी, अनुदारता और कुप्रबन्धन का आरोप लगाना चाहते हैं तथा इनकी दूषित आस्थाओं में ख़ुदा तआला के सन्दर्भ में तरह-तरह की दुर्भावनाएँ, तिरस्कार और अपमान पाया जाता है इसलिए उचित है
Ⓟ155 Ⓟकि इस बहस से संबंधित जहां तक उन के भ्रम हैं वे वहाँ दूर किए जाएं। अत: उत्तर के साथ नीचे लिखे जाते हैं:-

प्रथम भ्रम:- यह बहस कि कोई इल्हामी किताब मानव शक्तियों से बाहर है मूल बहस इल्हाम की एक शाखा है तथा इल्हाम के सन्दर्भ में यह प्रमाणित है कि वह बुद्धि के निकट आवश्यक नहीं और जब इल्हाम की कुछ आवश्यकता नहीं तो फिर यह बहस करना ही व्यर्थ है कि किसी किताब के सदृश बनाने से मानव शक्तियाँ असमर्थ हैं या नहीं।

उत्तर:- इस का उतर अभी गुज़र चुका है कि बौद्धिक कल्पनाओं द्वारा ख़ुदा और आख़िरत (प्रलय) के मामलों के संबंध में जो कुछ सोचा और विचार किया जाता है उस से न पूर्ण विश्वास प्राप्त होता है और न ख़ुदा को पहचानने का पूर्ण ज्ञान। कल्पना के पुजारियों के जो-जो भ्रम हृदय में खटकते रहते हैं उनका निवारण इल्हाम के बिना हो ही नहीं सकता क्योंकि यदि प्रकृति से इतना समझा भी गया कि संसार का एक रचयिता अवश्य चाहिए, परन्तु इसका वर्णन करने वाला कौन है कि वह रचयिता है भी। हाँ यह सत्य है कि इमारत को देख कर उसके निर्माता (राज-मिस्त्रियों) पर विश्वास आ सकता है, परन्तु वह विश्वास हमें स्वाभाविक तौर पर प्राप्त है, क्योंकि जैसे हम इमारतों को देखते हैं साथ ही निर्माताओं (राजों) को देखते हैं परन्तु पृथ्वी और आकाश के निर्माता को कौन दिखाए। इनका तो पूरा-पूरा विश्वास तब ही आएगा जब भवन निर्माताओं की भांति उसका भी कुछ पता लगे। यदि बुद्धि गवाही भी दे कि इस संसार का कोई निर्माता चाहिए तो वही बुद्धि फिर स्वयं ही आश्चर्य के सागर में डूबेगी कि यदि यह विचार सच्चा है तो फिर उस निर्माता का आज तक पता भी तो लगा होता। अतएव यदि बुद्धि ने निर्माता के अस्तित्व की ओर कुछ पथ-प्रदर्शन किया तो फिर देखना चाहिए कि मार्ग में लूटने वाली भी तो वही बुद्धि हुई। किसी को

नीति संगत है और वह यह है कि उनकी अदूरदर्शिता के कारण यह दूषित विचार हृदय में बैठा हुआ है कि संसार ®में मनुष्य के ऐसे बहुत से कलाम मौजूद हैं जिनके समान ®158

शेष हाशिया न. (11)

नास्तिक बनाया, किसी को नेचरी, कोई किसी ओर झुका और कोई किसी ओर। भला केवल बौद्धिक विचार से कि जिसका सत्यापन कभी नहीं हुआ और न भविष्य में कभी होगा विश्वास क्यों कर आए। यदि बुद्धि ने अनुमान भी लगाया कि निर्माता अवश्य चाहिए। तो अब कौन है जो हमें पूरी-पूरी सांत्वना दे कि इस कल्पना और अनुमान में कुछ धोखा नहीं इस से अधिक यदि हम विचार भी करें तो क्या करें। यदि बुद्धि से ही पूरा-पूरा काम निकलता है तो फिर बुद्धि क्यों हमें मार्ग छोड़ कर आगे चलने से इन्कार करती है। क्या हमारी मारिफ़त और ख़ुदा को पहचानने की श्रेष्ठ श्रेणी यही है कि हम केवल इतने को ही पर्याप्त समझें कि कोई निर्माता चाहिए। क्या ऐसे अटकलपच्चू विचार से हम उस अनश्वर समृद्धि के उत्तराधिकारी हो सकते हैं कि जो पूर्ण विश्वास वालों और ख़ुदा का पूर्ण ज्ञान रखने वाले लोगों के लिए तैयार ®की गई है जिस पूर्ण विश्वास के लिए हमारी ®156 आत्मा तड़पती है, यदि वह केवल बुद्धि से हमें प्राप्त हो जाता तो फिर हमारा यह कथन भी उचित होता कि अब हमें इल्हाम की कुछ आवश्यकता नहीं, परन्तु जब हम बीमार होकर फिर भी इलाज के तलाश करने वाले न हों तथा पूर्ण स्वास्थ्य के साधनों की मांग न करें तो यह हमारे दुर्भाग्य का प्रतीक है।

اے در انکار ماندہ از الہام   کرد عقل تو عقل را بدنام

हे वह व्यक्ति जो इल्हाम का इन्कारी है तेरे बोध ने तो बुद्धि और विवेक को भी बदनाम कर दिया। ☆

از خدا رو بخویش آوردی   ایں چہ آئین و کیش آوردی

ख़ुदा को त्याग कर तू काम भावनाओं में लिप्त हो गया भला यह कौन धर्म और कौन सा मार्ग है। ☆

تانہ کس سرزخویشتن تابد   راز توحید راچہ ساں یابد

जब तक कोई व्यक्ति अहंकार का त्याग नहीं करता तब तक वह एकेश्वरवाद का रहस्य किस प्रकार प्राप्त कर सकता है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

आज तक दूसरा कलाम नहीं हुआ, परन्तु वह ख़ुदा का कलाम नहीं माना जा सकता। अत: स्पष्ट हो कि यह भ्रम सोच-विचार और दूरदर्शिता की कमी के कारण पैदा हुआ

शेष हाशिया न. (11)

تانہ برفرق نفس پا بزنی کے بہ پاک و پلید فرق کنی

जब तक तू अपनी तामसिकता को कुचल नहीं देता तब तक पवित्र और अपवित्र में किस प्रकार अन्तर कर सकता है। ☆

ہر کہ شد تابع کلام خدا رست از اتباع حرص و ہوا

जो मनुष्य ख़ुदा के कलाम का पालनकर्ता हो गया वह लोभ और लालच के अनुसरण से स्वतंत्र हो गया। ☆

ازخود و نفس خود خلاص شدہ مہبط فیض نور خاص شدہ

उसने स्वयं से और अपनी मनोवृत्ति से मुक्ति पाई और ख़ुदा के प्रकाश का पात्र बन गया। ☆

برتر از رنگ ایں جہاں گشتہ آنچہ ناید بوہم آں گشتہ

वह इस संसार के रंग से ऊँचा हो गया और ऐसा बन गया कि उस का पद कल्पना में भी नहीं आ सकता। ☆

ما اسیران نفس امارہ بے خدائیم سخت ناکارہ

हम जो तामसिक वृत्ति के बन्धक हैं ख़ुदा के बिना हम बिल्कुल ही व्यर्थ हैं। ☆

تا میاں بست وحی حق برشاد اے بسا عقد ہائے ما کہ کشاد

ख़ुदा की वह्यी जिस समय से हमारे मार्ग-दर्शन हेतु तैयार हुई हमारी बहुत सी समस्याओं का समाधान हो गया। ☆

نہ شود از تو کارِ ربانی آسیائے تہی چہ گردانی

जो ख़ुदा का कार्य है वह तुझ से नहीं हो सकता ख़ाली चक्की तू क्या घुमा रहा है।☆

تو و علم تو ما و علم خدا فرق بیّن از کجاست تا بکجا

तू और तेरा ज्ञान एक ओर है, हम और ख़ुदा का ज्ञान एक ओर। अब देख ले कि दोनों में क्या अन्तर है। ☆

آں یکے را نگار خویش بہ بر دیگرے چشم انتظار بہ در

एक वह है जिस का प्रियतम उसकी बग़ल में है दूसरा वह है जिसकी आँख दरवाज़े पर प्रतीक्षा में लगी हुई है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

है अन्यथा बिल्कुल स्पष्ट है कि यद्यपि किसी मनुष्य का कलाम कैसा ही स्वच्छ और
Ⓟपरिमार्जित हो परन्तु उसके सन्दर्भ में यह कहना वैध नहीं हो सकता कि वास्तव में Ⓟ159

शेष हाशिया न. (11)

آں یکے ہمنشیں بہ مہ روئے   دیگرے ہرزہ گرد در کوئے

एक वह व्यक्ति है जो अपने प्रियतम के पास बैठा है दूसरा वह है जो गली में आवारा फिर रहा है। ☆

آں یکے کام یافتہ بہ تمام   دیگرے سوختہ بفکرت کام

एक वह है जिसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया दूसरा वह है जो अपना लक्ष्य प्राप्त करने की चिन्ता में जल रहा है। ☆

عارت آیدز عالم اسرار   خود ز خود دم زنی زہے پندار

तुझे रहस्यों के संसार से लज्जा आनी चाहिए तू अपनी बुद्धि पर गर्व करता है, तेरे अहंकार पर खेद। ☆

ہمہ کار تو ناتمام افتاد   وہ چہ کارت بعقل خام افتاد

तेरा समस्त कार्य अपूर्ण रह गया अपूर्ण बुद्धि के साथ तेरा कैसा बुरा संबंध रहा।

अत: हे भाइयो! ब्रह्म समाज वालो !! जब आप लोगों को ख़ुदा तआला ने देखने के लिए आँखें दी हैं तो फिर तुम स्वयं ही तनिक आँख खोलकर देख लो कि इल्हाम की आवश्यकता है या नहीं। इसका अधिक विवरण क़ुर्आन करीम के बौद्धिक तर्कों के हवाले के साथ अपने स्थान पर लिखा है, वहां पढ़ लो। फिर यदि ख़ुदा से डर कर सदमार्ग स्वीकार कर लो तथा पथ-प्रदर्शन का पद ख़ुदा के लिए ही रहने दो तो यह बड़े सौभाग्य की बात है अन्यथा यदि कुछ बस चल सकता है तो उन तर्कों को तर्कयुक्त वर्णन से खण्डित करके दिखाओ, परन्तु पागलों की चाल तो न चलो कि जो किसी की सुनते नहीं और अपनी ही बकवास किए जाते हैं। क्या आश्चर्य करें या न करें कि तुम लोग बात-बात में कटते जाते हो और पग-पग पर रुकते जाते हो, फिर न जाने किस विपत्ति के पर्दे हैं कि वे उठते ही नहीं, कैसे हृदय हैं कि समझते ही नहीं, बुद्धि का मापदण्ड किस आले (ताक़) में रखकर भूल गए कि खरे को खोटा और खोटे को खरा समझने लगे। अपने विचार को सही और उचित समझना किसे नहीं आता। यह

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

उसकी पुस्तक मानव शक्तियों से बाहर है तथा लेखक ने एक ख़ुदाई का काम किया है, अपितु अल्प बुद्धि रखने वाला मनुष्य भी भली-भांति जानता है कि जिस वस्तु को मानव

शेष हाशिया न. 11

तुम कौन सा नया उपहार लाए कि जिस पर प्रसन्न होते हो, कोई कारण स्पष्ट नहीं होता कि क्यों तुम्हारे हृदय के द्वार नहीं खुलते, क्यों तुम्हारी आँखें देखने से
Ⓟ157 असमर्थ Ⓟहो रही हैं, तुम जैसे पुजारियों से दूर भाग गईं। सज्जनो ! तुम स्वयं विचार करके देख लो कि इल्हाम के बिना न पूर्ण विश्वास संभव है न गलती से बचना संभव, न शुद्ध तौहीद (एकेश्वरवाद) पर स्थापित होना सम्भव, न काम-भावनाओं पर विजयी होना तथा समस्त संसार उसे **हस्त-हस्त** (है, है) करके पुकार रहा है। वह इल्हाम ही है जो प्रारम्भ से हृदयों में जोश डालता आया है कि ख़ुदा मौजूद है। वही है जिस से उपासकों को उपासना का आनन्द आता है। ईमानदारों को ख़ुदा के अस्तित्व और प्रलय के दिन पर संतुष्टि मिलती है, वही है जिससे करोड़ों ख़ुदा का ज्ञान रखने वालों ने बड़े स्थायित्व और ईश्वर-प्रेम के आवेग से यह यात्री निवास छोड़ा, वही है जिसकी सच्चाई पर सहस्त्रों शहीदों ने अपने ख़ून से मुहरें लगा दीं, हाँ वही है जिसकी आकर्षण शक्ति से राजाओं ने फ़क़ीरी का लिबास पहन लिया, बड़े-बड़े धनवानों ने धनवानी पर दरवेशी (भिक्षु होना) धारण कर ली, उसी की बरकत से लाखों अनपढ़ और अशिक्षित तथा बूढ़ी स्त्रियों ने बड़े जोश से पूर्ण ईमान के साथ संसार से कूच किया, वही एक नौका है जिसने अधिकांश बार यह कार्य कर दिखाया कि असंख्य लोगों को सृष्टि-पूजा और कुधारणा के भंवर से निकाल कर एकेश्वरवाद के किनारे तथा पूर्ण विश्वास तक पहुँचा दिया, वही अन्तिम सांसों का मित्र और कठिन समय का सहायक है, परन्तु बुद्धि के परदे से संसार को जितनी क्षति पहुँची है वह कुछ गुप्त नहीं। भला तुम स्वयं ही बताओ किसने अफ़लातून और उसके अनुयायियों को ख़ुदा के स्रष्टा होने से इन्कारी बनाया? किस ने जालीनूम को आत्माओं के शेष रहने और प्रतिफल तथा दण्ड के संबंध में सन्देह में डाल दिया? किस ने समस्त दार्शनिकों को ख़ुदा का समस्त छोटी से छोटी वस्तुओं (शाखाओं) का ज्ञाता होने से इन्कारी रखा? किस ने बड़े-बड़े दार्शनिकों से मूर्ति-पूजा कराई? किसने मूर्तियों के आगे मुर्गों और अन्य जानवरों को भेंट चढ़वाया? क्या यही बुद्धि नहीं थी जिसके साथ इल्हाम न था यह सन्देह प्रस्तुत करना कि बहुत से

शक्तियों ने बनाया है ⓟउसका बनाना मानव शक्ति से बाहर नहीं अन्यथा कोई मानव ⓟ160
उसके बनाने पर समर्थ नहीं हो सकता। जब तुम ने एक कलाम को मानव कलाम कहा

शेष हाशिया न. (11)

लोग इल्हाम के अनुयायी हो कर भी मुश्रिक बन गए, नए-नए ख़ुदा बना लिए उचित नहीं, क्योंकि यह ख़ुदा के सच्चे इल्हाम का दोष नहीं अपितु उन लोगों का दोष है जिन्होंने सच के साथ झूठ मिला दिया तथा ख़ुदा की उपासना पर अवसरवादिता को धारण कर लिया। फिर भी ख़ुदा का इल्हाम उनके निवारण से लापरवाह नहीं रहा, उन्हें भुलाया नहीं अपितु जिन-जिन बातों में वे सच्चाई से दूर पड़े, दूसरे इल्हाम ने उन बातों का सुधार किया और यदि यह कहो कि बुद्धि की खराबी भी अपूर्ण बुद्धि वालों का दोष है न कि पूर्ण बुद्धि का दोष, तो यह कथन उचित नहीं। स्पष्ट है कि बुद्धि अपने चरितार्थ होने और पूर्णता की श्रेणी
में तो कोई कार्यवाही नहीं कर सकती क्योंकि इस श्रेणी में वह ⓟएक कुल्ली[1] ⓟ158
है तथा कुल्ली का अस्तित्व सदस्यों के अस्तित्व के बिना सिद्ध नहीं हो सकता अपितु उसका विवरण उसके सदस्यों के माध्यम से ज्ञात होता है, परन्तु ऐसे पूर्ण मनुष्य को कौन दिखा सकता है जिसने मात्र बुद्धि का आज्ञाकारी होकर अपनी स्वयं की बनाई हुई आस्थाओं में कभी ग़लती नहीं की, इलाहियात[2] (तर्क और दर्शनशास्त्र) के वर्णन में कभी ठोकर नहीं खाई ऐसा बुद्धिमान कहां है जिसका संसार के रचयिता के अस्तित्व तथा प्रतिफल और दण्ड इत्यादि आख़िरत (प्रलय) की समस्याओं पर विश्वास **है** की श्रेणी तक पहुँच गया हो, जिसके एकेश्वरवाद में शिर्क का कोई अंश शेष न रहा हो, जिस की काम-भावनाओं पर ख़ुदा की ओर लौटना विजय प्राप्त कर चुका हो। हम अभी इससे पूर्व उल्लेख कर चुके हैं कि स्वयं दार्शनिकों का इक़रार है कि मनुष्य अकेली बुद्धि के द्वारा ख़ुदाई ज्ञान तक नहीं पहुँच सकता अपितु एक संदिग्ध और काल्पनिक राय का स्वामी होता है। स्पष्ट है कि जब तक किसी का ज्ञान संदिग्ध और काल्पनिक

---

①-कुल्ली - तर्क शास्त्र में जिस के अर्थ में बहुत से सदस्य भागीदार हों जैसे - मनुष्य, जानवर। (अनुवादक)

②-इलाहियात - वह ज्ञान जिसमें ख़ुदा के अस्तित्व और उसकी विशेषताओं के संबंध में बहस की जाए। (अनुवादक)

तो इस सन्दर्भ में तुम ने स्वयं ही स्वीकार कर लिया कि मानव शक्तियां उस कलाम को
Ⓟ161 बना सकती हैं। Ⓟजिस स्थिति में मानव शक्तियां उसे बना सकती हैं तो वह अद्वितीय

शेष हाशिया न. (11)

है तथा विश्वास की श्रेणी से नीचे और कम, तब तक ग़लती करने से उसे सुरक्षा प्राप्त नहीं, जैसे अँधे को मार्ग भूलने से। यह विचार करना कि अकेली बुद्धि से ग़लतियाँ तो हो जाती हैं परन्तु वे दो तीन बार देखने से दूर भी हो जाती हैं। यह भी तुम्हारी विचित्र बुद्धि की एक ग़लती ही है जो इस से पूर्व भी वर्णन कर चुके हैं मानव बुद्धि से महसूसात से परे बातों में पूर्ण बुद्धिमत्ता की श्रेणी में कमी के कारण कभी न कभी, कहीं न कहीं ग़लती हो जाना एक अनिवार्य बात है जिस से किसी बुद्धिमान को इन्कार नहीं, परन्तु (तुम भली-भांति विचार करके देख लो) प्रत्येक ग़लती पर सतर्क हो जाना तथा उसका सुधार कर लेना अनिवार्य बात नहीं है। अत: इस स्थिति में स्पष्ट है कि अनिवार्य का निवारण बिना अनिवार्य से हमेशा और हर अवस्था में संभव नहीं अपितु अनिवार्य ग़लती का सुधार वही वस्तु कर सकती है जिसे उसके मुकाबले पर दुरुस्ती और सच्चाई अनिवार्य हो, जिस में ذٰلِكَ الۡكِتٰبُ لَا رَيۡبَ فِيۡهِ[1] का गुण पाया जाए और यह बात कि क्यों शुद्ध एकेश्वरवाद (तौहीद) ख़ुदा के इल्हाम के अभाव में प्राप्त नहीं हो सकता और क्यों इल्हाम का इन्कारी शिर्क की गन्दगी से पवित्र नहीं होता। स्वयं एकेश्वरवाद की वास्तविकता पर दृष्टि डालने से ज्ञात हो सकता है, क्योंकि एकेश्वरवाद इस बात का नाम है कि ख़ुदा की हस्ती और गुणों को अन्य की भागीदारी से पवित्र समझें तथा जो कार्य उस की शक्ति और बल से होना चाहिए उस कार्य का अन्य की शक्ति से पूर्ण हो जाना उचित न समझें इसी एकेश्वरवाद के त्यागने से अग्नि पूजक, सूर्य-उपासक, मूर्ति-उपासक इत्यादि मुश्रिक कहलाते हैं क्योंकि वे अपनी मूर्तियों और देवताओं से ऐसी-ऐसी मनोकामनाएँ माँगते हैं जिनका प्रदान करना केवल ख़ुदा के हाथ में है। अब स्पष्ट है कि जो लोग इल्हाम के इन्कारी हैं वे भी मूर्ति पूजकों
Ⓟ159 की भांति ख़ुदा के गुणों से सृष्टि (मख़लूक) के गुणयुक्त Ⓟहोने की आस्था रखते हैं तथा उस सर्वशक्तिमान की शक्तियों का बन्दों में पाया जाना मानते है, क्योंकि उनका यह विचार है कि हम ने अपनी ही बुद्धि के बल पर ख़ुदा का पता लगाया है और हम ही को मनुष्यों के प्रारम्भ में यह विचार आया था कि कोई ख़ुदा नियुक्त

①-अलबक़रह:3

कैसे हुई। अत: यह विचार तो सरासर पागलों और दीवानों का सा है कि पहले एक वस्तु को अपने मुख से मानव शक्तियों की बनाई हुई मान ℗लें और फिर स्वयं ही बड़बड़ाएँ ℗162

शेष हाशिया न. 11

करना चाहिए और हमारे ही प्रयासों से वह अप्रिसिद्धता के कोने से बाहर निकला, पहचाना गया, सृष्टियों का उपास्य हुआ, उपासना-योग्य ठहरा अन्यथा पहले उसे कौन जानता था, उसके अस्तित्व की किसे जानकारी थी। हम बुद्धिमान लोग पैदा हुए तब उस के भी भाग्य जागे। क्या यह आस्था मूर्ति-पूजकों की आस्था से कुछ कम है ? कदापि नहीं। यदि कुछ अन्तर है तो केवल इतना है कि मूर्ति पूजक लोग अन्य वस्तुओं को अपना वदान्य और उपकारी ठहराते हैं। ये लोग ख़ुदा को छोड़ कर अपनी ही धूमिल बुद्धि को अपना पथ-प्रदर्शक और उपकारी जानते हैं अपितु यदि विचार करें तो इनका पल्ला मूर्ति-पूजकों से भी भारी मालूम होता है, क्योंकि यद्यपि मूर्ति-पूजक इस बात को तो स्वीकार करते हैं कि ख़ुदा ने हमारे देवताओं को बड़ी-बड़ी शक्तियां दे रखी हैं और वे कुछ उपहार और भेंट इत्यादि लेकर अपने पुजारियों की मनोकामनाएँ पूर्ण कर दिया करते हैं, परन्तु अब तक उन्होंने यह राय प्रकट नहीं की कि ख़ुदा का पता इन्हीं देवताओं ने लगाया है तथा ख़ुदा के अस्तित्व की यह महान् ने'मत उन्हीं के बाहु-बल से ज्ञात हुई है। यह बात तो इन्हीं सज्जनों (इल्हाम के इन्कारी) को सूझी जिन्होंने ख़ुदा को भी अपने आविष्कारों की सूची में लिख लिया और पूर्ण मूर्खता के साथ उच्च स्वर से बोल उठे कि ख़ुदा की ओर से اَنَا الموجود (मैं मौजूद हूँ) होने की कभी आवाज़ नहीं आई। यह हमारी ही बहादुरी है कि जिन्होंने बिना जताए, बिना बताए उसे ज्ञात कर लिया। वह तो ऐसा ख़ामोश था जैसे कोई सोया हुआ या मरा हुआ होता है। हमने ही विचार करते-करते, खोदते-खोदते उसे खोज निकाला जैसे ख़ुदा का उपकार तो उन पर क्या होना था एक तौर से उन्हीं का ख़ुदा पर उपकार है कि इस बात की ठोस सूचना मिल जाने के बिना कि ख़ुदा भी है और इस बात के पूर्ण-विश्वास के बिना कि उसकी अवज्ञा से ऐसा-ऐसा अज़ाब और उसकी आज्ञाकारिता से ऐसा-ऐसा इनाम मिलेगा, यों ही बिना करे बिना सुने उस काल्पनिक ख़ुदा की आज्ञाकारिता का हार अपने गले में डाल लिया जैसे स्वयं ही पकाया स्वयं ही खाया, परन्तु ख़ुदा ऐसा निर्बल और कमज़ोर था कि उससे इतना न हो सका कि अपने अस्तित्व की

कि अब मानव शक्तियाँ उसके समान बनाने से असमर्थ और विवश हैं तथा इस दीवानगीपूर्ण कथन का सारांश यह होगा कि मानव शक्तियां एक वस्तु के बनाने की शक्ति

शेष हाशिया न. (11)

स्वयं सूचना देता तथा अपने वादों के सन्दर्भ में स्वयं धैर्य प्रदान करता अपितु वह छुपा हुआ था, उन्होंने प्रसिद्ध किया, वह ख़ामोश था, उन्होंने उसका कार्य स्वयं किया मानो वह थोड़े ही समय से अपनी ख़ुदाई में प्रसिद्ध हुआ है और वह भी उनके प्रयासों से। प्रत्येक बुद्धिमान जानता है कि यह कथन मूर्ति-उपासकों
Ⓟ160 से भी बढ़कर है, क्योंकि मूर्ति-उपासक लोग अपने देवताओं को Ⓟअपने लिए उपकारी और दानवीर मानते हैं परन्तु इल्हाम के इन्कार करने वालों ने तो सीमा पार कर दी कि उन के विचार में उनकी देवी का (कि बुद्धि है) न केवल लोगों पर अपितु ख़ुदा पर भी उपकार है कि जिसके द्वारा (उनके कथनानुसार) ख़ुदा ने ख्याति पाई। इस स्थिति में नितान्त स्पष्ट है कि इल्हाम के इन्कारी होने से उनमें केवल यही ख़राबी नहीं कि ख़ुदा के अस्तित्व पर संदिग्ध और काल्पनिक तौर पर ईमान लाते हैं और तरह-तरह की ग़लतियों में ग्रसित हैं अपितु यह ख़राबी भी है कि पूर्ण एकेश्वरवाद से भी वंचित और दुर्भाग्यशाली हैं और शिर्क में लिप्त हैं, क्योंकि शिर्क और क्या होता है यही तो शिर्क है कि ख़ुदा के उपकार और इनामों को दूसरे की ओर से समझा जाए। यहाँ शायद ब्रह्म समाज वाले यह उत्तर दें कि हम अपनी बुद्धि को ख़ुदा ही की ओर से समझते हैं तथा उसकी कृपा और उपकार को मानते हैं, परन्तु स्मरण रहे कि उनका यह उत्तर धोखा है। मनुष्य के स्वभाव में यह बात सम्मिलित है कि जिस वस्तु पर स्वयं को सामर्थ्यवान समझता है या जिस बात को अपने परिश्रम से उत्पन्न करता है उसे स्वयं की ओर सम्बद्ध करता है। संसार में जितने अधिकार पैदा होते हैं केवल इसी विचार से पैदा होते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति जिस वस्तु को अपने प्रयास से प्राप्त करता है उसको अपनी जागीर तथा अपना माल जानता है। घर का स्वामी यदि यह समझे कि जो कुछ मेरे पास है वह ख़ुदा का है उसमें मेरा अधिकार नहीं है तो फिर चोर को क्यों पकड़े, अपने कर्ज़दारों से कर्ज़ की मांग क्यों करे। नि:सन्देह मनुष्य अपनी शक्तियों से जो कुछ करता है उसे स्वयं से ही सम्बद्ध करता है। ख़ुदा ने भी संसार के प्रबन्ध के लिए प्रकृति का यही नियम रखा है, उसी पर प्रत्येक स्वभाव प्रवृत्त (झुका हुआ) है। श्रमिक परिश्रम करके पारिश्रमिक

रखती हैं और नहीं। Ⓟइसके अतिरिक्त आज तक किसी मनुष्य ने यह दावा भी नहीं किया Ⓟ163
कि मेरे वाक्य और रचनाएँ ख़ुदा के वाक्य और रचनाओं की तरह अद्वितीय और अनुपम

शेष हाशिया न. (11)

पाने का दावा रखता है, नौकर नौकरी करके अपना वेतन माँगता है। एक का अकारण हस्तक्षेप दूसरे के अधिकार पर उसे अपराधी ठहरा देता है। अतः यह बात कदपि सम्भव नहीं कि उदाहरणतया कोई व्यक्ति पूरी रात जागकर एक-एक क्षण को अपनी आँखों से निकाल कर जंगल में भूखा-प्यासा सा रहकर विकट सर्दी का कष्ट उठा कर अपने खेत की सिंचाई करे और प्रातः ख़ुदा का ऐसा ही धन्यवाद अदा करे जैसा उस स्थिति में अदा करता है कि वह सारी रात घर में आराम से सोया रहता। प्रातः काल खेत पर जाकर उसे ज्ञात होता कि रात बादल आया और खूब वर्षा होकर आवश्यकतानुसार उसके खेत को भर दिया। अतएव स्पष्ट है कि जो व्यक्ति इस बात को नहीं मानता कि ख़ुदा ने मनुष्य को असहाय कमज़ोर, अपूर्ण, अज्ञान और तामसिकवृत्ति से पराजित देखकर तथा भूल और विस्मृति में ग्रसित पाकर उस पर स्वयं दया करके इल्हाम द्वारा सदमार्ग दिखाया
है अपितु यह सोचता है कि हमने समस्त कार्य Ⓟख़ुदा का पता लगाने तथा उसे Ⓟ161
पहचानने का स्वयं ही अपने परिश्रम और पराक्रम से किया है वह कदापि, कदापि ख़ुदा की कृतज्ञता में उस व्यक्ति के समान नहीं हो सकता जो हार्दिक विश्वास से आस्था रखता है कि ख़ुदा ने सरासर कृपा और उपकार से मेरे किसी परिश्रम और प्रयास के बिना मुझे अपने कलाम से सदमार्ग का पथ-प्रदर्शन किया है। मैं सोया हुआ था, ख़ुदा ही ने मुझे जगाया, मैं मरा हुआ था, ख़ुदा ही ने मुझे जीवित किया, मैं मूर्ख था ख़ुदा ही ने मेरा हाथ पकड़ा। अतः इस समस्त भाषण से सिद्ध है कि इल्हाम के इन्कारी पूर्ण एकेश्वरवाद से वंचित हैं और कदापि सम्भव नहीं कि उनकी आत्मा (रूह) में से सच्चे ईमानदारों की तरह यह आवाज़ निकल सके कि

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ الَّذِیْ ھَدٰینَالِھٰذَاوَمَاکُنَّا لِنَھْتَدِیَ لَوْلَآ اَنْ ھَدٰینَا اللّٰہُ① भाग-8

समस्त प्रशंसाएँ ख़ुदा के लिए हैं जिसने स्वर्ग की ओर हमारा मार्ग-दर्शन किया तथा हम क्या वस्तु थे कि स्वयं वांछित लक्ष्य तक पहुँच जाते यदि ख़ुदा मार्ग-दर्शन न करता। इन लोगों ने ख़ुदा के महत्व को ख़ूब समझा कि जिन गुणों का उसकी ओर सम्बद्ध करना अनिवार्य था वे अपनी बुद्धि की ओर सम्बद्ध कर

①-अलआराफ़:44

Ⓟ164 हैं और यदि कोई मूर्ख, अभिमानी ऐसा दावा करता तो सहस्त्रों उस से Ⓟउत्तम किताबें लिखने वाले तथा उसके मुख में अपमान की धूल भरने वाले पैदा हो जाते। यह ख़ुदा ही

शेष हाशिया न. 11

दिए, जो प्रताप उसका प्रकट करना चाहिए था वह अपनी मनोवृत्ति का प्रकट किया और जो-जो शक्तियां उसके लिए विशेष थीं उन सब के स्वामी स्वयं बन बैठे। इनके पक्ष में ख़ुदा तआला ने सत्य फ़रमाया है :-

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ①

भाग-7

अर्थात् इल्हाम के इन्कार करने वालों ने अल्लाह तआला की बरकत वाली हस्ती के महत्व को यथोचित नहीं पहचाना तथा उसकी कृपा को जो बन्दों की प्रत्येक आवश्यकता के समय जोश मारती है नहीं पहचाना। तब ही उन्होंने कहा कि ख़ुदा ने कोई किताब किसी मनुष्य पर नहीं उतारी।

ترا عقل تو ہر دم پائے بند کبر میدارد   برو عقلے طلب کن کت زخود بینی بروں آرد

तेरी बुद्धि हर समय अहंकार में गिरफ़्तार रहती है। जा और ऐसी बुद्धि खोज जो तुझे अहंकार से मुक्ति दे। ☆

ہماں بہتر کہ ما آنِ علم حق از حق بیاموزیم   کہ ایں علمے کہ ماداریم صد سہو و خطا وارد

यही उचित है कि हम ख़ुदा के ज्ञान को ख़ुदा से ही सीखें क्योंकि जो ज्ञान हमारे पास है उसमें सैकड़ों दोष हैं। ☆

کہ گوید بہتر از قولش گراو خاموش بنشیند   کہ گیرد دستت اے ناداں گراو دست تو بگذارد

यदि ख़ुदा ख़ामोश रहे तो उस से उत्तम बात कौन कह सकता है यदि वह तुझे छोड़ दे तो फिर कौन तेरी सहायता कर सकता है। ☆

برو قدرش بہ بیں واز حجت بے اصل دم درکش   کہ ایں حجت کہ می آری بلاہا برسرت آرد

जा और उसके महत्व को पहचान तथा वाद-विवाद को त्याग दे क्योंकि जो बात तू प्रस्तुत करता है वह तेरे ऊपर कष्ट लाएगी। ☆

मैं गंभीरता और विश्वास के साथ कहता हूँ कि इल्हाम के बिना मात्र बुद्धि के अनुसरण में केवल एक हानि नहीं अपितु यह वह आपदा है कि जिस से कई आपदाएँ जन्म लेती हैं जिनका विवरण ख़ुदा ने चाहा तो यथास्थान लिखा

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

①-अलअनआम:92

की शान है कि समस्त संसार को अपने कलाम के सदृश प्रस्तुत करने से विवश और असमर्थ ठहराए तथा कठोर कठोर शब्दों ⓟबेईमान, मलऊन (धिक्कृत) और नारकी ⓟ165

शेष हाशिया न. 11

जाएगा। जैसा कि ख़ुदा तआला ने प्रत्येक वस्तु का परस्पर जोड़ बांध दिया है ऐसा ही इल्हाम और बुद्धि का परस्पर जोड़ निर्धारित किया है। उस स्वच्छंद दार्शनिक (ख़ुदा) का सामान्यतया प्रकृति का नियम भी यही है कि जब तक एक वस्तु अपने जोड़ से पृथक है तब तक उसके जौहर गुप्त रहते हैं अपितु प्राय: लाभ के स्थान पर हानि होती है, यही दशा बुद्धि की है कि धार्मिक ज्ञान में उसके शुभ लक्षण तब प्रकट होते हैं जब वह जोड़ अर्थात् इल्हाम उसके साथ सम्मिलित हो जाए अन्यथा ⓟअपने जोड़ के बिना डायन होकर मिलती ⓟ162
है, सारा घर निगलने को तैयार हो जाती है, सारा शहर निर्जन और वीरान करना चाहती है, परन्तु जब जोड़ प्राप्त हो गया तब तो बुरी दृष्टि दूर, क्या ही पवित्र रूप और पवित्र चरित्र वाली है जिस घर में रहे माला माल कर दे, जिसके पास जाए उसकी समस्त अनिष्टताएँ उतार दे। तुम स्वयं ही विचार करो कि जोड़ के बिना कोई अकेली वस्तु किस काम की? फिर तुम क्यों यह अपूर्ण बुद्धि इतने गर्व से लिए फिरते हो। क्या यह वही नहीं जो अनेक बार झूठ बोलने में लज्जित और अपमानित हो चुकी? क्या यह वही नहीं जिस के सर पर बार-बार गिरने से बड़े-बड़े धब्बे मौजूद हैं? मुझे बताइए तो सही कि आप का हृदय किस पर आसक्त हो गया, यह कहां की परी आ गई जिसे हृदय दे बैठे? क्या तुम्हें सूचना नहीं कि इसने तुम से पहले कितनों का रक्तपान किया, कितनों को पथ-भ्रष्टता के कुएँ में ढकेल कर मारा, तुम जैसे कई मित्रों को खा चुकी, सैकड़ों शव ठिकाने लगा चुकी। भला तुमने इस अकेली बुद्धि के द्वारा ऐसी कौन सी धार्मिक सच्चाइयाँ उत्पन्न की हैं जो क़ुर्आन करीम में पहले से मौजूद नहीं। अधिक नहीं दो-चार ही दिखाओ। यदि तुम मात्र बुद्धि द्वारा ऐसे श्रेष्ठ सच्चाइयाँ निकालते जिन की क़ुर्आन करीम में कुछ चर्चा न होती, तब भी एक बात थी। इस स्थिति में तुम बड़े गर्व से अपने समाज मैं बैठ कर कह सकते थे कि हाँ हम वे लोग हैं जिन्होंने वे सच्चाइयाँ निकालीं जो इल्हामी किताबों में मौजूद नहीं, परन्तु खेद कि तुम्हारी पत्रिकाओं में इन कुछ बातों के अतिरिक्त जो बतौर चोरी क़ुर्आन करीम से ली गई हैं और जो कुछ दिखाई देता है सरासर रद्दी माल है, जिस से

कहने से अपितु न बनाने वालों के लिए इन्कार की स्थिति में मृत्यु-दण्ड नियुक्त करने से स्वयं बार-बार इस बात की ओर उत्तेजित करे कि वह सदृश बनाने में प्रयास, प्रयत्न,

शेष हाशिया न. (11)

बुद्धिमत्ता के विपरीत आप लोगों की अज्ञानता, नादानी और गलती सिद्ध होती है। जिसकी वास्तविकता का ख़ुदा ने चाहा तो इसी पुस्तक में भली-भांति स्पष्ट करके उल्लेख किया जाएगा। फिर इस मुख और योग्यता के साथ ख़ुदा के इल्हाम से इन्कार करना तथा स्वयं ही ख़ुदा का प्रतिनिधि बन बैठना तथा आदरणीय पवित्र नबियों को स्वार्थी समझना यह आप लोगों की शुभ आदत है। इस से धोखा मत खाना कि बुद्धि एक उत्तम वस्तु है। हम प्रत्येक खोज और छान-बीन बुद्धि ही के द्वारा करते हैं। नि:सन्देह उत्तम वस्तु है परन्तु उसका जौहर तब ही प्रकट होता है जब वह अपने जोड़ के साथ संलग्न हो अन्यथा वह धोखा देने में शत्रुओं से अधिक ख़राब है, दो रंगापन दिखाने में द्वयमुखियों (मुनाफ़िकों)से बढ़कर है। अत: तुम्हारा दुर्भाग्य तुम उसके जोड़ के नाम से भी चिढ़ते हो। मित्रो! ख़ूब सोचो बिना जोड़ किसी बात का भी महत्व नहीं। ख़ुदा ने जोड़ भी एक विचित्र वस्तु बना दी है। जहां देखो जोड़ ही से काम निकलता है। हम तुम सब आँखों ही से देखते हैं परन्तु सूर्य की भी आवश्यकता है, कानों ही से सुनते हैं, परन्तु वायु की भी आवश्यकता है। सूर्य छुपा तो बस अंधे बने बैठे रहो, कानों को वायु आने से
Ⓟ163 बन्द कर लो तो बस सुनने से छुट्टी हुई, जिस स्त्री की Ⓟपति से कोई बात होने न पाए भला उसका गर्भ किस विधि से ठहरे, जिस खेती को पानी छू भी नहीं गया, उसे क्योंकर फल लगे। ये बातें ऐसी नहीं है कि तुम्हारी समझ से दूर हों यह वही प्रकृति का नियम है जिस पर चलने का तुम्हें दावा है। अत: इस दावे पर अमल भी करो ताकि मात्र दिखाने के ही दांत न रहे।

حاجت نورے بود ہر چشم را   ایں چنیں افتاد قانون خدا

प्रत्येक आँख को प्रकाश की आवश्यकता है ख़ुदा का नियम ऐसा ही है। ☆

چشم بینا بے خور تاباں کہ دید   کے چنیں چشمے خداوند آفرید

सूर्य के बिना देखने वाली आँख किसने देखी? ख़ुदा ने ऐसी आँख कब बनाई? ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

परस्पर सहमति ®में कोई कमी न छोड़ें तथा अपने प्राण बचाने के लिए कठिन परिश्रम ®166
के साथ मुकाबला करें अन्यथा यदि यों ही सदृश प्रस्तुत किए बिना इन्कार करते रहें तो

शेष हाशिया न. (11)

چوں تو خود قانونِ قدرت بشکنی   پس چرا بر دیگراں سر میزنی

जब तू स्वयं ही प्रकृति के नियम को तोड़ता है तो फिर तू दूसरों पर क्यों आरोप लगाता है? ☆

آنکہ در ہر کار شد حاجت روا   چوں روادارى کہ نبود رہنما

वह ख़ुदा जिसने मनुष्य की हर आवश्यकता को पूरा किया क्या वह धर्म के सम्बंध में तेरा पथ-प्रदर्शन न करता? ☆

آنکہ اسپ و گاؤ خر را آفرید   تا رہد پشت تو از بارِ شدید

वह जिसने घोड़े, गाय और गधे को पैदा किया ताकि तेरी पीठ को सख़्त भार से मुक्ति दे। ☆

چوں ترا حیراں گذارد در معاد   اے عجب تو عاقل و ایں اعتقاد

वह तुझे आख़िरत (प्रलय) के मामले में परेशान क्यों छोड़ दे, आश्चर्य है कि बुद्धिमान हो कर तू यह आस्था रखता है। ☆

چوں دو چشمت دادہ اندا اے بےخبر   پس چرا پوشی یکے وقت نظر

हे अज्ञान! जब तुझे दो आँखें दी गई हैं फिर देखने के समय एक को क्यों बन्द कर लेता है। ☆

آنکہ زو ہر قدرتے گشتہ عیاں   قدرت گفتار چوں ماندے نہاں

वह हस्ती जिससे प्रत्येक प्रकार की शक्ति प्रकट हुई तो बोलने की शक्ति किस प्रकार गुप्त रह सकती थी। ☆

آنکہ شد ہر وصف پاکش جلوہ گر   پس چرا ایں وصف ماندے مستتر

वह हस्ती जिसकी प्रत्येक पवित्र विशेषता प्रकट हो गई फिर उसकी यह विशेषता क्योंकर छुपी रह सकती थी। ☆

ہر کہ او غافل بود از یاد دوست   چارہ ساز غفلتش پیغام اوست

प्रत्येक व्यक्ति जो ख़ुदा की याद से लापरवाह हो तो ख़ुदा का संदेश ही उसकी लापरवाही का उपचारक होता है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

℗167 अपने घर को लुटा हुआ, अपनी स्त्रियों को दासियां ℗तथा स्वयं को वधित (क़त्ल किया हुआ) समझें। क्या ऐसा दावा और फिर इस उत्तेजना और दृढ़ता के साथ कभी किसी

शेष हाशिया न. (11)

تو عجب داری ز پیغام خدائے   ایں چہ عقل و فکرتست اے خودنمائے

तू ख़ुदा के संदेश पर आश्चर्य करता है हे अभिमानी! यह तेरी बुद्धि और बोध कैसा है। ☆

لطف او چوں خاکیاں را عشق داد   عاشقاں را چوں بیفگندے ز یاد

उसकी कृपा ने जब मिट्टी के पुतले को प्रेम प्रदान किया तो वह अपने प्रेमियों को क्योंकर भुला सकता। ☆

عشق چوں بخشید از لطف اَتم   چوں نہ بخشیدی دوائے آں الم

जब पूर्ण कृपा से उसने प्रेम दिया तो फिर क्यों इस कष्ट की दवा न देता। ☆

خود چو کرد از عشق خود دلہا کباب   چوں نہ کردے از سر رحمت خطاب

जब स्वयं ही उसने अपने प्रेम से हमारे हृदयों को कबाब कर दिया तो फिर दया के साथ हम से बात क्यों न करता। ☆

دل نیار آمد بجز گفتار یار   گرچہ پیش دیدہا باشد نگار

हृदय को प्रियतम से बात करने के अतिरिक्त आराम नहीं मिलता चाहे प्रियतम आँखों के सामने ही हो। ☆

پس چو خود دلبر بود اندر حجاب   کے تواں کردن صبوری از خطاب

परन्तु जब प्रियतम स्वयं ही पर्दे में हो तो बात करने के बिना धैर्य किस प्रकार आ सकता है।☆

لیک آں داند کہ او دلدادہ است   در طریق عاشقی افتادہ است

परन्तु इन बातों को केवल वह प्रेमी ही जानता है जो प्रेम-मार्ग से परिचित है।☆

حسن را با عاشقاں باشد سرے   بے نظر ور کے بود خوش منظرے

सौन्दर्य का प्रेमियों के साथ संबंध होता है और कोई रूपवान बिना गुणग्राही के नहीं होता। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

मनुष्य ने भी किया ? कदापि नहीं। अत: जिस स्थिति में किसी मनुष्य ने अपने कलाम के अद्वितीय होने में दम भी न मारा और न ℗अपनी शक्तियों को मानव शक्तियों से कुछ ℗168

शेष हाशिया न. (11)

عاشق آں باشد کہ اوگم از خوداست   در طریق عشق خود بینی بدست

प्रेमी वह होता है जो स्वयं को भूल जाए, क्योंकि प्रेम-मार्ग में अहंकार बुरी बात है। ☆

لیکن استیصال ایں کبر و خودی   نیست ممکن جز بوحی ایزدی

परन्तु इस अभिमान और अहंकार का उन्मूलन ख़ुदा तआला की वह्यी के अभाव में संभव नहीं। ☆

ہر کہ ذوق یارجانی یافت ست   آں ز وحی آسمانی یافت ست

जिसने इस हार्दिक मित्र के मिलन का आनन्द प्राप्त किया उसने केवल आकाशीय वह्यी के कारण प्राप्त किया। ☆

عشق از الہام آمد در جہاں   درد از الہام شد آتش فشاں

प्रेम इल्हाम ही के कारण संसार में आया और दर्द ने भी इल्हाम ही के कारण अग्नि को भड़काया। ☆

شوق و انس و الفت و مہر و وفا   جملہ از الہام مے دارد ضیا

प्रेम, अनुराग, कृपा और वफ़ा इन सब की शोभा इल्हाम के कारण है। ☆

ہر کہ حق را یافت از الہام یافت   ہر رخے کو تافت از الہام تافت

जिस किसी ने ख़ुदा को पाया, इल्हाम से पाया हर चेहरा जो चमका इल्हाम से चमका। ☆

تو نۂ اہل محبت زیں سبب   از کلام یار مے داری عجب

तू प्रेम के कूचे से परिचित नहीं इसलिए यार के कलाम पर आश्चर्य करता है। ☆

عشق می خواہد کلامِ یار را   رو بپرس از عاشق ایں اسرار را

प्रेम तो यार के कलाम को चाहता है जा और प्रेमी से इस रहस्य को मालूम कर। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

अधिक विचार किया अपितु सैकड़ों सुप्रसिद्ध कवियों ने लड़कर मरना स्वीकार किया परन्तु क़ुर्आन करीम जैसा कोई कलाम एक सूरह के बराबर भी न बना सके तो फिर

शेष हाशिया न. (11)

ایں مگو کز درگہش دُوریم ما ربط اُو با مشت خاکِ ما کجا

यह न कह कि हम उसके दरबार से दूर हैं इसलिए उसका संबंध हमारी मुट्ठी भर धूल से नहीं हो सकता। ☆

داند آں مردے کہ روشن جاں بود کیں طلب در فطرتِ انساں بود

इस बात को वही जानता है जो प्रतिभाशाली है कि ख़ुदा की अभिलाषा मनुष्य के स्वभाव में सम्मिलित है। ☆

دل نمی گیرد تسلی جز خدا ایں چنیں افتاد فطرت ز ابتدا

ख़ुदा के बिना मनुष्य का हृदय शान्ति नहीं पाता प्रारम्भ से मनुष्य का यही स्वभाव है। ☆

دل ندارد صبر از قول نگار کاشتند ایں تخم از آغاز کار

प्रियतम के कलाम के बिना हृदय को सब्र नहीं आता अनादिकाल से ख़ुदा ने यह बीज उसके स्वभाव में बोया है। ☆

آنکہ انساں را چنیں فطرت بداد چوں کمال فطرتش دادے بباد

वह ख़ुदा जिसने मनुष्य को ऐसा स्वभाव प्रदान किया वह किस प्रकार उसके स्वभाव की इस विशेषता को बरबाद कर देता। ☆

کار حق کے از بشر گردد ادا کے شود از کرمکے کار خدا

ख़ुदा का काम मनुष्य क्योंकर सम्पन्न कर सकता है। एक कीड़े से ख़ुदा के कार्य कब हो सकते हैं। ☆

ماہمہ جہلیم و او دانائے راز ماہمہ کوریم و او را دیدہ باز

हम सब मूर्ख मात्र हैं और रहस्यों का ज्ञाता वही है हम सब अन्धे हैं और वही एक दृष्टा है। ☆

باخدا ہم دعوئے فرزانگی سخت جہلست و رگ دیوانگی

ख़ुदा के मुक़ाबले पर बुद्धिमानी का दावा करना अत्यन्त मूर्खता और पागलपन है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

अकारण उन बेचारों के कच्चे कलाम को अद्वितीय ठहराना तथा पूर्णतम विशेषता जो ख़ुदा के लिए विशेष्य है में उन्हें भागीदार बनाना निम्न स्तर की मूर्खता और अंधापन है

शेष हाशिया न. (11)

تافتن رو از خورِ تاباں کہ من خود برارم روشنی از خویشتن

प्रकाशमान सूर्य से विमुख होना इस विचार से कि मैं अपने अन्दर से स्वयं ही प्रकाश निकाल लूँगा। ☆

عالمے را کور کردست ایں خیال سرنگوں افگند در چاہ ضلال

इस विचार ने एक संसार को अंधा और बहरा कर दिया है और उन्हें पथ-भ्रष्टता के कुएं में डाल दिया है। ☆

Ⓟ ناز برفطنت مکن گر فطنتے ست در رہ تو ایں خرد مندی بتے ست Ⓟ164

यदि कुछ बुद्धि है तो उस बुद्धि पर गर्व न कर तेरे मार्ग में यह बुद्धि एक मूर्ति (उपास्य) है। ☆

عقل کاں با کبر میدارند خلق ہست حمق و عقل پندارند خلق

अहंकार से मिली हुई वह बुद्धि जो लोग रखते हैं मात्र मूर्खता है फिर भी लोग उसे बुद्धि समझते हैं। ☆

کبر شہر عقل را ویراں کند عاقلاں را گم رہ و ناداں کند

अहंकार बुद्धि के शहर को उजाड़ देता है और बुद्धिमानों को पथ-भ्रष्ट और मूर्ख बना देता है। ☆

آنچہ افزاید غرور و معجبی چوں رساند تا خدایت اے غوی

जो वस्तु अभिमान और अहंकार को बढ़ाती है हे पथभ्रष्ट! वह तुझे ख़ुदा तक क्योंकर पहुँचा सकती है। ☆

خود روی در شرک اندازد ترا توبہ کن از خود روی اے خودنما

अहंकार तुझे शिर्क में डाल देगा, हे दिखावा करने वाले! अहंकार से तौबा कर। ☆

ہست مشرک از سعادت دور تر و از فیوض سرمدی مہجور تر

शिर्क सौभाग्य से बहुत दूर है और ख़ुदा की अनश्वर नै'मतों से बहुत दूर फेंका गया है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

क्योंकि जो मनुष्य इतने स्पष्ट तर्कों से ख़ुदा और मनुष्य के कार्यों में स्पष्ट अन्तर देखे, Ⓟ169 Ⓟऔर फिर न देखे वह अंधा और मूर्ख ही हुआ और क्या हुआ। अत: इस समस्त छान-

शेष हाशिया न. (11)

از خدا باشد خدا را یافتن نے بہ مکر و حیلہ و تدبیر و فن

ख़ुदा की सहायता से ही ख़ुदा को पा सकते हैं न कि चालाकी, युक्ति और कुटिलता के साथ। ☆

تا نیائی پیش حق چوں طفل خورد ہست جام تو سراسر پُر ز دُرد

जब तक तू छोटे बच्चे के समान ख़ुदा के सामने न आएगा तब तक तेरा जाम केवल तिलछट से भरा रहेगा। ☆

شرط فیض حق بود عجز و نیاز کس ندیدہ آب بر جائے فراز

ख़ुदा के वरदान के लिए विनय और श्रद्धा शर्त है किसी ने पानी को ऊँचे स्थान पर ठहरते हुए नहीं देखा। ☆

حق نیازی جوید آنجا ناز نیست از پر خود تا درش پرواز نیست

ख़ुदा को विनय पसन्द है वहाँ गर्व काम नहीं आता, अपने परों से उड़कर उस तक नहीं पहुँच सकते। ☆

عاجزاں را پرورد ذات اجل سرکشاں محروم و مردود ازل

वह महान हस्ती विनयकारों का पोषण करती है और उपद्रवी सदैव वंचित और बहिष्कृत रहते हैं। ☆

چوں نیائی زیر تاب آفتاب کے فتدبر تو شعاعے در حجاب

जब तक तू सूर्य के प्रकाश के सामने नहीं आता तो पर्दे के पीछे तुझ पर उसका प्रकाश क्योंकर पड़ सकता है। ☆

آب شور اندر کفت ہست اے عزیز نازہا کم کن اگر داری تمیز

हे प्रिय! तेरी हथेली में तो खारा पानी है यदि कुछ शिष्टता है तो उस गर्व न कर। ☆

آب جاں بخشی زجاناں آیدت رو طلب میکن اگر جاں بایدت

जीवन देने वाला पानी तो प्रियतम से मिलेगा यदि जीवन चाहता है तो जा और उस से मांग। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

बीन से स्पष्ट है कि अद्वितीय होने की वास्तविकता और विवरण ख़ुदाई काम और कलाम से विशेष्य है और प्रत्येक बुद्धिमान जानता है कि ख़ुदा की ख़ुदाई स्वीकार करने

शेष हाशिया न. (11)

ہست آں آب بقا بس ناپدید   کس بجز مصباح حق راہش ندید

वह अमृत बिल्कुल गुप्त है और उसका मार्ग ख़ुदाई दीपक के अभाव में किसी ने नहीं देखा। ☆

آں خیالاتے کہ بینی از خرد   پرتوَ آں ہم ز وحی حق رسد

वे विचार जो तू अपनी बुद्धि से ज्ञात कर लेता है उनका प्रकाश भी ख़ुदा की वह्यी से मिलता है। ☆

لیک چشم دیدنت چوں باز نیست   زیں دلِ تو محرم ایں راز نیست

परन्तु तेरी आध्यात्मिक आँख खुली हुई नहीं इसलिए तेरा हृदय उस रहस्य से परिचित नहीं। ☆

سرکشی از حق کہ من دانا دلم   حاجت وحیش ندارم عاقلم

तू ख़ुदा का अवज्ञाकारी है और यह सोचता है कि मैं बुद्धिमान हूँ तथा उसकी वह्यी की मुझे आवश्यकता नहीं, मैं बुद्धि रखता हूँ। ☆

لغزش تو حاجتے پیدا کند   در دمے عقل ترا رسوا کند

परन्तु तेरा डगमगाना तुझे मुहताज बना देगा और पल भर में तेरी बुद्धि की वास्तविकता खोल देगा। ☆

عقل تو گور مجصّص از بروں   واندرونش چیست؟ یک لاشے زبوں

तेरी बुद्धि बाहर से सुदृढ़ मज़ार के समान मनोरम है परन्तु उसके अन्दर क्या है? एक गन्दा शव। ☆

منتہائے عقل تعلیم خداست   ہر صداقت را ظہور از انبیاست

ख़ुदा की शिक्षा ही बुद्धि के कमाल को पहुँचती है तथा नबियों से हर सच्चाई का प्रकटन होता है। ☆

ہر کہ علمے یافت از تعلیم یافت   تافت آں روئے کز روئے نتافت

जिसने कुछ प्राप्त किया वह शिक्षा से प्राप्त किया वह मुख प्रकाशमान हो गया जो ख़ुदा से विमुख न हुआ। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

के लिए बड़ा भारी माध्यम जो कि बुद्धि के अधिकार में है वह यही है कि प्रत्येक ख़ुदा की ओर से जारी ऐसी अद्वितीयता की श्रेणी पर है कि जो उस एक रचयिता के अस्तित्व

शेष हाशिया न. (11)

با زبانِ حال گوید روزگار   اے قصیرالعمر گیر آموزگار

समय वर्तमानकाल के मुख से कह रहा है कि हे थोड़ी आयु वाले मनुष्य! किसी शिक्षक को अपना ले। ☆

طبع زاد ناقصاں ہم ناقص ست   گر ترا گوشے بود حرفے بس ست

अपूर्ण के विचार भी अपूर्ण ही होते हैं यदि तेरे कान हैं तो नसीहत के लिए यही एक शब्द पर्याप्त है। ☆

حق منزّہ از خطا تو پُر خطا   داوریہا کم کن و برحق بپا

ख़ुदा ग़लतियों से पवित्र और तू ग़लतियों से भरपूर है। झगड़ा न कर अपितु सत्य पर क़ायम रह। ☆

عقل تو مغلوب صد حرص و ہواست   تکیہ بر مغلوب کار اشقیاست

तेरी बुद्धि लोभ-लालसा से पराजित है और पराजित पर भरोसा करना दुर्भाग्यशालियों का काम है। ☆

ازکس و ناکس بیاموزی فنون   عار داری زاں حکیم بے چگون

तू प्रत्येक अच्छे-बुरे से ज्ञान सीखता रहता है परन्तु उस अद्वितीय दार्शनिक से सीखने में तुझे शर्म आती है। ☆

از تکبر راہ حق بگذاشتی   ایں چہ کردی ایں چہ تخمے کاشتی

तूने अभिमान के कारण सत्य का मार्ग त्याग दिया यह तूने क्या किया, यह तूने क्या बीज बोया। ☆

اے ستمگر ایں ہماں مولائے ماست   کز عطیاتش ہمہ ارض و سما ست

हे अन्यायी! यही तो वह हमारा स्वामी है जिसकी कृपा से आकाश और पृथ्वी की समस्त नेʼमतें हैं। ☆

ابر و باران و مہ و مہر آفرید   کرد تابستان و سرما را پدید

जिसने बादल, वर्षा, चन्द्रमा और सूर्य पैदा किए तथा गर्मी और सर्दी को प्रकट किया। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

को पूर्ण रूप से सिद्ध कर रहा है और यदि यह माध्यम न ℗होता तो फिर बुद्धि को ख़ुदा ℗170
तक पहुँचने का मार्ग बन्द था और जब कि ख़ुदा को पहचानना इसी सिद्धान्त से सम्बद्ध

शेष हाशिया न. (11)

تا بفضل او غذائے خود خوریم   زندہ مانیم و تن خود پروریم

ताकि हम उसकी कृपा से अपना आहार खाते रहें और जीवित रहें और अपना पोषण करें। ☆

آنکہ بَر تن کرد ایں لطف اتم   کے کند محروم جاں را از کرم

जिसने हमारे शरीर पर पूर्णतया मेहरबानी की है वह हमारे प्राण को कब अपनी कृपा से वंचित कर सकता है। ☆

وحی فرقان ست جذب ایزدی   تا برندت از خودی در بے خودی

क़ुर्आन की वह्यी ख़ुदा का एक आकर्षण है ताकि वह तुझे स्वार्थपरता और अहंवाद से आध्यात्मिकता की ओर ले जाए। ☆

ہست قرآں دافع شرک نہاں   تا مراد راہم ازو یابی نشاں

क़ुर्आन आन्तरिक शिर्क को दूर करता है ताकि तू ख़ुदा का निशान ख़ुदा की ओर से ही पाए। ☆

تا رہی از کبر و خود بینی و ناز   تاشوی ممنون فضل کارساز

ताकि तू अभिमान, अहंकार और गर्व से मुक्ति पाए और उस काम बनाने वाले की कृपा का ही आभारी हो। ☆

دور شو از کبر تا رحم آیدش   بندگی کن بندگی مے بایدش

अभिमान से दूर हो कि उसे तुझ पर दया आए उपासना कर कि उसे तो उपासना की आवश्यकता है। ☆

زندگی در مردن عجز و بکاست   ہر کہ افتادست او آخر بخاست

जीवन तो मृत्यु, विनय और रोने से है जो (उसके आगे) गिर गया वही मुक्ति पाएगा। ☆

ہست جام نیستی آب حیات   ہر کہ نوشید ست اُو رست از ممات

नास्ति का जाम ही (वास्तव में) अमृत है, जिसने वह पी लिया वह मृत्यु से मुक्त हो गया। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

है कि जो कुछ उस की ओर से है उसे अद्वितीय मान लें तो फिर मनुष्यों के लिए भी वही
Ⓟ171 Ⓟविशेषता प्रस्तावित करना जो कि ख़ुदा की विशिष्ट विशेषता है। बुद्धि और ईमान का

शेष हाशिया न. (11)

عاقل آں باشد کہ جوید یار را و از تذلل ہا برآرد کار را

बुद्धिमान वह है जो ख़ुदा को तलाश करता है और अपना सारा मामला विनय और श्रद्धा से निकालता है। ☆

ابلہی بہتر ازاں عقل و خرد کت بچاہ کبر و نخوت افگند

उस बुद्धि और विवेक से मूर्खता अच्छी जो तुझे अभिमान और अहंकार में डाल दे। ☆

طالب حق باش و بیروں از خود آ خود روی ہا ترک کن بہر خدا

ख़ुदा का अभिलाषी हो और अहंकार से बाहर आ तथा ख़ुदा के लिए अहंवाद का त्याग कर। ☆

من ندانم ایں چہ ایمان ست و دیں دم زدن در جنب رب العالمین

मैं नहीं जानता कि यह कौन सा धर्म और ईमान है कि अपवित्र मनुष्य ख़ुदा के मुक़ाबले में दावा करे। ☆

Ⓟ165 Ⓟ تو کجا و آنِ قادر مطلق کجا توبہ کن ایں ابلہی ہا کم نما

तू कहां और वह सर्वशक्तिमान कहां! तौबा कर और ऐसी मूर्खताएं प्रकट न कर। ☆

یک دمے گر رشحِ فیضش کم شود ایں ہمہ خلق و جہاں برہم شود

यदि ख़ुदा के वरदान का छींटा एक पल के लिए कम हो जाए, तो यह समस्त सृष्टि और संसार अस्त-व्यस्त हो जाए। ☆

پست ہستی لاف استعلا مزن و از گلیم خویش بیروں پا مزن

तू एक अधम सी हस्ती है। बड़ाई की डींग न मार तथा अपनी चादर से पैर न निकाल। ☆

عابد آں باشد کہ پیشش فانی است عارف آں کُو گویدش لاثانی است

बन्दा वह है जो ख़ुदा के सामने तुच्छ है अध्यात्म ज्ञानी वह है जो उसे अनुपम कहता है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

समूल विनाश है, जबकि यह बात नितान्त स्पष्ट ठोस तर्कों द्वारा सिद्ध होती है कि मनुष्यों का कोई कार्य अद्वितीय नहीं तथा ख़ुदा के समस्त कार्य और ®जो कुछ उस से जारी हुआ ®172

शेष हाशिया न. 11

خویشتن را نیک اندیشیدۂ اے ھداک اللّٰہ چہ بدفہمیدۂ

तूने स्वयं को सदाचारी समझ लिया है ख़ुदा तेरा मार्ग-दर्शन करे कैसा ग़लत समझा है।☆

ایں چنیں بالا ز بالا چوں پری یا مگر زاں ذات بیچوں منکری

तू इतना ऊँचा-ऊँचा क्यों उड़ता है ? कदाचित तू उस अद्वितीय हस्ती का इन्कारी है। ☆

کاخ دنیا را چہ دیدستی بنا کت خوش افتادست ایں فانی سرا

संसार के अस्तित्व के आधार को तूने क्या समझा है ? क्या तुझे यह नश्वर ठिकाना अच्छा लगने लगा। ☆

دل چرا عاقل بہ بندد اندریں ناگہاں باید شدن بیروں ازیں

बुद्धिमान इस से क्यों हृदय लगाए जबकि अचानक इस से निकलना पड़ेगा। ☆

ازپئے دنیا بریدن از خدا بس ہمیں باشد نشان اشقیا

संसार के लिए ख़ुदा से संबंध विच्छेद करना, दुर्भाग्यशालियों का यही लक्षण है। ☆

چوں شود بخشائش حق برکسے دل نمے ماند بہ دنیائش بسے

जब ख़ुदा की किसी पर कृपा होती है तो उसका हृदय संसार से उखड़ जाता है। ☆

ہوش کن کیں جائگہ جائے فناست باخدا میباش چوں آخر خداست

सावधान हो कि यह संसार तो नश्वर ठिकाना है ख़ुदा वाला बन जा क्योंकि अन्ततः ख़ुदा से मामला पड़ेगा। ☆

زہر قاتل گر بدست خود خوری من چہ ساں دانم کہ تو دانشوری

यदि तू अपने हाथ से ही हिंसक विष खाले तो मैं क्योंकर समझूं कि तू बुद्धिमान है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

अद्वितीय है तो फिर यदि तुम्हें ऐसे पूर्ण उपपादन पर भी विश्वास नहीं कि जिसे ख़ुदा के सम्पूर्ण प्रकृति के सम्पूर्ण नियमों पर दृष्टि डालकर बनाया गया है तो बुद्धि तथा

शेष हाशिया न. 11

آں گروہے بیں کہ از خود فانی اند جاں فشاں برگفتۂ ربانی اند

उन लोगों को देख जो नश्वर हैं और ख़ुदा के कलाम पर प्राण छिड़कते हैं। ☆

فارغ افتادہ ز نام و عز و جاہ دل ز کف و از فرق افتادہ کلاہ

प्रसिद्धि, मान, मर्यादा से पृथक हो गए, हृदय हाथ से जाता रहा और टोपी सर से गिर गई। ☆

دور تر از خود بہ یار آمیختہ آبرو از بہر روئے ریختہ

अहंकार से दूर होकर प्रियतम से मिल गए और उस (ख़ूबसूरत) चेहरे के लिए मान-सम्मान की परवाह न की। ☆

دیدن شاں میدہد یاد از خدا صدق ورزاں در جناب کبریا

उन्हें देखने से ख़ुदा याद आता है क्योंकि वे महात्मय ख़ुदा के दरबार में सदात्मा हैं। ☆

توز استکبار سر بر آسماں پازدہ بیروں زراہ بندگاں

तेरा सर तो अहंकार से आकाश तक पहुँचा है, और बन्दों के मार्ग को तूने छोड़ दिया है। ☆

تانگردد عجز در نفست عیاں نور حقانی چساں تابد برآں

जब तक तेरे हृदय में विनय उत्पन्न न होगी तब तक ख़ुदा का प्रकाश उस पर क्योंकर प्रकाश डालेगा। ☆

تانمیرد دانۂ اندر زمیں کے زیک صد میشود تو خود بہ بیں

जब तक दाना पृथ्वी में पड़कर मरेगा नहीं तब तक एक से सौ क्योंकर बनेगा। ☆

نیست شو تا بر تو فیضانے رسد جاں بیفشاں تادگر جانے رسد

नास्ति हो जा ताकि तुझ पर वरदान उतरे प्राण न्योछावर कर ताकि दूसरा जीवन मिले। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

प्रकृति के नियम का नाम न लो। तर्कशास्त्र और दर्शनशास्त्र की बेकार Ⓟपुस्तकों को Ⓟ173
फाड़कर दरिया में डुबो दो। क्या तुम्हें मुख से यह बात निकालते हुए लज्जा नहीं आती

शेष हाशिया न. (11)

تاتو زار و عاجز و مضطرۂ لائق فیضان آں رہبرۂ

जब तक तू कमज़ोर, विनीत और व्याकुल नहीं तब तक उस पथ-प्रदर्शक के वरदान के योग्य भी नहीं। ☆

چیست ایماں وحـــدۂ پنداشتن کار حق را باخدا بگذاشتن

ईमान क्या है ? ख़ुदा को एक मानना, और ख़ुदा के कार्य को ख़ुदा ही के सुपुर्द करना। ☆

چوں ز آموزش خرد را یافتی پس ز تعلیمش چرا سر تافتی

जब तूने उसी के सिखाए ज्ञान से बुद्धि को पाया फिर उसकी शिक्षा से क्यों विमुख है। ☆

اندرون خویش را روشن مداں آنچہ می تابد بتابد ز آسماں

अपने सीने को प्रकाशित न समझ जो कुछ भी प्रकाशित है वह आकाश ही के कारण है। ☆

کورہست آں دیدہ کش ایں نورنیست گورہست آں سینہ کز شک دورنیست

वह आँख अन्धी है जिसमें यह प्रकाश नहीं और वह सीना क़ब्र है जो सन्देह से ख़ाली नहीं। ☆

صالحین و صادقین و اتقیا جملہ رہ دیدند از وحیٔ خدا

नेक, सदात्मा और संयमी लोगों ने ख़ुदा की वह्यी से ही सद्मार्ग पाया। ☆

آں کجا عقلے کہ از خود دانَدش فہمد آں شخصے کہ او فہماندش

वह कौन सी बुद्धि है जो स्वयं उसकी मा'रिफ़त रखती है यह वही समझ सकता है जिसे ख़ुदा स्वयं समझाए। ☆

عقل بے وحیش بتے داری براہ بت پرستی ہاکنی شام و پگاہ

उसकी वह्यी के बिना बुद्धि तेरे मार्ग में एक मूर्ति की भांति है और तू सुबह-शाम मूर्ति-पूजा कर रहा है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

कि एक मक्खी जिसके देखने से भी तबियतें घृणा करती हैं वह अपनी प्रत्यक्ष आकृति और आन्तरिक बनावट में ऐसी अद्वितीय है कि उस पर दृष्टि डालने से उसका ख़ुदा की

शेष हाशिया न. (11)

پیش چشمت گر شدے ایں بت عیاں　　از سر شکِ تو شدے جوئے رواں

यदि तेरी आँखों के सामने यह मूर्ति प्रकट हो जाती तो तेरी आँखों से आंसुओं की नहर जारी हो जाती। ☆

لیک از بدقسمتی چشمت نماند　　بت پرستی آخرت چوں بت نشاند

परन्तु दुर्भाग्य है कि तेरी आँख ही न रही और मूर्ति पूजा ने परिणामस्वरूप तुझे भी मूर्ति के समान बैठा दिया। ☆

عقل در اسرارِ حق بس نارساست　　آنچہ گہ گہ می رسد ہم از خداست

ख़ुदा के रहस्य समझने में बुद्धि बहुत कमज़ोर है जो बात कभी-कभी उसे मिल जाती है वह भी ख़ुदा ही की ओर से है। ☆

گر خرد پاکیزہ رائے آورد　　آں نہ از خود ہم زجائے آورد

यदि बुद्धि (कभी) कोई अच्छी राय देती भी है तो वह उसका अपना गुण नहीं अपितु वहीं से लाती है। ☆

تو بہ عقل خویش در کبر شدید　　ما فدائے آنکہ او عقل آفرید

तू अपनी बुद्धि पर गर्व करके अत्यन्त अभिमानी हो गया है और हम उस पर मुग्ध हैं जिसने स्वयं बुद्धि को उत्पन्न किया। ☆

در قیاسات تہی جانت اسیر　　جان ما قربان علم آں بصیر

तेरे प्राण व्यर्थ कल्पनाओं में गिरफ़्तार हैं परन्तु हमारे प्राण उस दृष्टा ख़ुदा के ज्ञान पर न्योछावर हैं। ☆

نیک دل بانیکواں دارد سرے　　برگہر تف میزند بد گوہرے

शुद्ध हृदय रखने वाला मनुष्य सदात्मा लोगों से सम्बन्ध रखता है और अकुलीन व्यक्ति मोती पर थूकता है। ☆

ہست بر اسرار اسرار دگر　　تا کجا تازد خرِ فکر و نظر

इन रहस्यों पर अन्य रहस्य छाए हुए हैं बुद्धि और विचार का गधा कहां तक दौड़ेगा। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

ओर से होना प्रमाणित होता है, परन्तु ख़ुदा के कलाम की सरस और सुबोध शैली ऐसी अद्वितीय नहीं हो सकती जिस पर दृष्टि डालने से उसका ख़ुदा की ओर से होना सिद्ध

शेष हाशिया न. (11)

این چراغِ مردہ از زور ہوا   چوں رہ باریک بنماید ترا

लोभ की अधिकता से यह टिमटिमाता हुआ दीपक तुझे किस प्रकार बारीक मार्ग दिखा सकता है। ☆

وحی یزدانی ز رہ آگہ کند   تا بمنزل نور را ہمرہ کند

ख़ुदा की वह्यी तुझे मार्ग से अवगत करती है और लक्ष्य तक पहुँचने तक प्रकाश को तेरे साथ कर देती है। ☆

مافتادہ بے ہنر در جسم و جاں   حمق باشد دم زنی با آں یگاں

हमारे शरीर और प्राण में कोई कला नहीं है उस भागीदार रहित (ख़ुदा) के मुकाबले दम मारना मूर्खता है। ☆

چیست دیں خود را فنا انگاشتن   و از سر ہستی قدم برداشتن

धर्म क्या है ? स्वयं को फ़ना समझना और अपनी हस्ती से बिल्कुल पृथक हो जाना। ☆

چوں بیفتی با دوصد درد و نفیر   کس ہمی خیزد کہ گردد دست گیر

जब तू गिर पड़ता है और क्रन्दन करता है तो कोई न कोई अवश्य उठता है ताकि तेरा हाथ पकड़े। ☆

باخبر را دل تپد بر بے خبر   رحم بر کورے کند اہل بصر

अज्ञानी के लिए ज्ञानवान का हृदय तड़पता है और नेत्रवान नेत्रहीन पर दया करता है। ☆

ہمچنیں قانونِ قدرت اوفتاد   مر ضعیفاں را قوی آرد بیاد

प्रकृति का नियम इस प्रकार से जारी है कि शक्तिशाली कमज़ोरों का ध्यान रखते हैं। ☆

چوں ازیں قانوں شود رحماں بروں   رحم یزداں ازہمہ باید فزوں

तू दयालु ख़ुदा के उस नियम से बाहर कैसे रह सकता है ख़ुदा की दया को तो सब से अधिक होना चाहिए। ☆

☆ -डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

Ⓟ175 हो। हे लापरवाहो ! और Ⓟबुद्धि के अन्धो! क्या तुम्हारे निकट ख़ुदा के कलाम का सरस और सुबोध होना मक्खी के परों और पैरों से भी श्रेणी में कम तथा विशेषता में निम्नस्तर

शेष हाशिया न. (11)

آنکہ او ہر بار ما برداشت است   ہیچ رحمت را فرو نگذاشت است

वह ख़ुदा जिसने हमारे समस्त भार उठा रखे हैं और किसी कृपा की हमारे लिए कमी नहीं रखी। ☆

چوں زما غافل شود در امر دیں   شرمت آید از چنیں انکار وکیں

वह धर्म के मामले में हम से कैसे लापरवाह होगा तुझे इस इन्कार और बैर से लज्जित होना चाहिए। ☆

دل منہ در خاکدان بے وفا   یاد کن آخر وفاہائے خدا

बेवफ़ा संसार से हृदय न लगा कभी तो ख़ुदा तआला की वफ़ादारियां भी स्मरण कर। ☆

بارہاشد برتو ثابت کایں عقول   مبتلا ہستند در سہو و ذہول

तुझ पर अनेकों बार सिद्ध हो चुका है कि ये अक़्लें भूल-चूक में ग्रस्त रहती हैं। ☆

بارہا دیدی بعقل خود فساد   بارہا زیں عقل ماندی بے مراد

तूने बहुत बार अपनी बुद्धि की ख़राबी देखी है और अनेकों बार तू इस बुद्धि के कारण असफल रहा है। ☆

با ز نخوت میکنی برعقل خویش   و از دلیری میروی نادیدہ پیش

फिर भी तू अपनी बुद्धि पर गर्व करता है और बिना सोचे समझे निर्भीकता पूर्वक आगे बढ़ा जाता है। ☆

نفس خود را پاک کن از ہر فضول   ترک خود کن تا کند رحمت نزول

अपने हृदय को प्रत्येक अनावश्यक वस्तु से पवित्र कर तथा आत्मत्याग कर ताकि ख़ुदा की दया उतरे। ☆

لیک ترک نفس کے آساں بود   مردن و از خود شدن یکساں بود

परन्तु तामसिकता को मारना कौन सा सरल कार्य है मरना और तामसिकता मारना दोनों समान हैं। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

पर है। क्या खेद का स्थान है कि एक मच्छर की शारीरिक बनावट के सन्दर्भ में Ⓟतुम Ⓟ176
स्पष्ट इक़रार करते हो कि ऐसी बनावट मनुष्य से नहीं बन सकती और न भविष्य में

शेष हाशिया न. (11)

ایں چنیں دل کم بود در سینۂ   کاں بود پاک از غرور و کینۂ

ऐसा हृदय किसी सीने में बहुत कम ही होता है जो अहंकार और द्वेष से पवित्र हो। ☆

درحقیقت مردم معنی کم اند   گو ہمہ از روئے صورت مردم اند

मूल बात यह है कि वास्तविकता को जानने वाले लोग बहुत कम हैं यद्यपि आकृति के अनुसार सब मनुष्य ही हैं। ☆

ہوش کن اے در چہے افتادۂ   عقل و دیں از دست خود در دادہ

हे वह जो कुएं में पड़ा हुआ है तथा बुद्धि और धर्म दोनों को खो बैठा है सावधान हो। ☆

غیر محدودی بہ محدودی مجو   کارِ نورِ محض از دودی مجو

असीमित (ख़ुदा) को सीमित (बुद्धि) के द्वारा तलाश न कर और स्वच्छ प्रकाश का काम धुएँ से न ले। ☆

آنچہ باید جست باعجز و نیاز   تو مجو با کبر و خود بینی و ناز

जो बात विनय और श्रद्धा के साथ तलाश करना चाहिए उसे अभिमान, अहंकार और गर्व के साथ तलाश न कर। ☆

وہ چہ خوب ست ایں اصولِ رہروی   یادگار مولوی در مثنوی

क्या ख़ूब, साधना का यह नियम कैसा उत्तम है जो मस्नवी में मौलवी रूमी की स्मृति है।☆

زیرکی ضد شکست ست و نیاز   زیرکی بگذارد باکوئی[1] بساز

बुद्धिमत्ता, कमज़ोरी और विनय का विलोम है तू बुद्धिमत्ता को छोड़ और विनय धारण कर। ☆

زانکہ طفل خورد را مادر نہار   دست و پا باشد نہادہ درکنار

जिस प्रकार छोटे बच्चे को माँ दिन भर अपनी गोद में लिए फिरती है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

बनेगी, परन्तु ख़ुदा के कलाम के सन्दर्भ में कहते हो कि वह बन सकता है अपितु बतौर
Ⓟ177 बहस और विवाद यह तर्क प्रस्तुत करते हो कि यद्यपि अब तक कोई मनुष्य Ⓟउस के

शेष हाशिया न. (11)

द्वितीय भ्रम :- यदि यह भी स्वीकार कर लें कि अध्यात्म ज्ञान की पूर्णता के लिए एक ऐसे इल्हाम की आवश्यकता है जो पूर्ण और अद्वितीय हो, तब भी अनिवार्य नहीं कि ख़ुदा तआला ने अवश्य वह इल्हाम उतारा है, क्योंकि संसार में भी मनुष्य की बहुत सी वस्तुओं की आवश्यकताएँ पूर्ण नहीं की। उदाहरणतया मनुष्य की अभिलाषा है कि उसे मृत्यु न आए, कभी दरिद्र न हो, कभी रोगी न हो, परन्तु अपनी मनोकामना के विपरीत अन्ततः एक दिन मरता है तथा दरिद्रता और रोग आते ही रहते हैं।

उत्तर :- जिस स्थिति में वह पूर्ण और अद्वितीय इल्हाम जिसकी हमें आवश्यकता थी मौजूद है अर्थात् क़ुर्आन करीम जिसकी पूर्णता और अद्वितीयता के मुकाबले पर आज तक किसी ने दम भी नहीं मारा। तो फिर विद्यमान को अविद्यमान मानना और उसकी आवश्यकता को एक काल्पनिक आवश्यकता ठहराना उन लोगों का कार्य है जिनकी देखने की शक्ति जाती रही है। हां यदि कुछ वश चल सकता है तो क़ुर्आन करीम की अद्वितीयता और पूर्णता के तर्क जिनका हमने भी इस पुस्तक में उल्लेख किया है खण्डन करके दिखाएँ अन्यथा निरुत्तर रहकर भी बोलते रहना लज्जा के गुण के समाप्त होने का प्रतीक है। जिस परिस्थिति में ऐसा पूर्ण और अद्वितीय इल्हाम आ चुका जिसने अद्वितीयता का दावा करने से स्वयं ही निर्णय कर दिया है कि कोई उस की अद्वितीयता को खण्डित करे और फिर निःसंदेह इल्हाम का इन्कारी बना रहे तो इससे पूर्व कि उसका कोई उचित उत्तर दें, इल्हाम की आवश्यकता को काल्पनिक आवश्यकता ही कहते रहना, क्या यह ईमानदारी है अथवा हठधर्मी है तथा परलोक (दूसरे
Ⓟ167 संसार) की इस संसार पर कल्पना करना बड़ी भारी Ⓟभूल है। ख़ुदा तआला ने संसार को हमेशा के आराम के लिए नहीं बनाया है अपितु उसके सुख-दुख दोनों ग़ुज़रने वाली वस्तुएँ हैं तथा उसका प्रत्येक दौर (बारी) समाप्त होने वाला है, परन्तु आख़िरत (प्रलय) का गृह वह संसार है जो स्थायी आराम या स्थायी दण्ड का स्थान है जिसके लिए प्रत्येक दूरदर्शी मनुष्य स्वयं कष्ट उठाता है और बुरे अन्त से भयभीत होकर पूर्ण परिश्रम के साथ ख़ुदा की आज्ञाकारिता का पाबन्द

बनाने पर समर्थ नहीं हुआ, परन्तु इसका क्या प्रमाण है कि भविष्य में भी समर्थ न हो। मूर्खो! इसका वही प्रमाण है जिसे तुम मच्छर और मक्खी में तथा पेड़ों के प्रत्येक पत्ते में

शेष हाशिया न. 11

रहता है, भोग-विलास का प्ररित्याग करता है, कठिनाई और कष्ट को धारण करता है। अब आप ही बताइये कि इस शाश्वत संसार (लोक) की तुलना में उस नश्वर स्थान का उदाहरण प्रस्तुत करना दृष्टि की कमी है या नहीं।

तृतीय भ्रम :- यदि अकेली बुद्धि द्वारा पूर्ण अध्यात्म ज्ञान और पूर्ण विश्वास प्राप्त न हो तब भी कुछ अध्यात्म ज्ञान तो प्राप्त होता है, मुक्ति के लिए वही पर्याप्त है।

उत्तर :- यह भ्रम निश्चय ही द्वेषपूर्ण विचार है। हम पहले भी उल्लेख कर चुके हैं कि किसी भय के बिना शुभ अन्त हो जाना पूर्ण विश्वास पर निर्भर है और पूर्ण विश्वास ख़ुदा की अद्वितीय किताब के बिना प्राप्त नहीं हो सकता। इसी प्रकार ग़लतियों से सुरक्षित रहना पूर्ण अध्यात्म ज्ञान के अभाव में सम्भव नहीं और पूर्ण अध्यात्म ज्ञान भी पूर्ण इल्हाम के अभाव में संभव नहीं, फिर अकेली अपूर्ण बुद्धि मुक्ति के लिए क्योंकर पर्याप्त हो सकती है, विशेषकर ख़ुदा को पहचानने का वह मार्ग जिसे ब्रह्म समाज वालों की विचित्र बुद्धि ने कुछ यूरोपीय दार्शनिकों का अनुसरण करते हुए पसन्द किया है, ऐसा ख़राब और चिन्ताजनक है कि उस से अध्यात्म ज्ञान की किसी श्रेणी की प्राप्ति की तो क्या आशा की जाए, मनुष्य को वह स्वयं विभिन्न प्रकार के सन्देहों और शंकाओं में डालता है, क्योंकि उन्होंने ख़ुदा तआला को ऐसी निष्प्राण प्रतिमा समझ लिया है जिस से उसका समस्त सम्मान और श्रेष्ठता समाप्त होती है। उनका कथन है कि ख़ुदा के अस्तित्व का ज्ञान हो जाना ख़ुदा की ओर से नहीं है कि बुद्धिमानों के प्रयासों से प्रकटन में आया तथा यों वर्णन करते हैं कि शुरू-शुरू में जब मनुष्य उत्पन्न हुए मात्र बुद्धिहीन जानवरों की भांति थे, ख़ुदा ने अपने अस्तित्व की किसी को सूचना नहीं दी थी, फिर शनैः शनैः लोगों को स्वयं ही विचार आया कि कोई उपास्य नियुक्त करें। प्रथम पर्वत, वृक्ष, नदी इत्यादि को जो आस-पास और निकट की वस्तुएँ थीं अपना ख़ुदा ठहराया, फिर कुछ थोड़ा सा ऊपर चढ़े और वायु, तूफान इत्यादि को सर्वशक्तिमान समझ लिया, फिर और भी कदम बढ़ा कर सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्रों को अपना पालनहार समझ बैठे। इसी प्रकार धीरे-धीरे पूर्ण तौर पर विचार करने से वास्तविक ख़ुदा की ओर लौट आए। अब देखिए

Ⓟ178 ख़ूब देखते और स्वीकार करते हो, परन्तु इस ख़ुदाई प्रकाश Ⓟको देखते समय तुम्हारे नेत्र उल्लू की भांति अंधे हो जाते हैं या चुंधिया जाते हैं। इसलिए तुम मक्खी का स्वभाव

शेष हाशिया न. (11)

कि इस भाषण से ख़ुदा तआला की वास्तविक हस्ती पर कितना सन्देह होता है
Ⓟ168 तथा उसका हमेशा Ⓟजीवित रहने वाला और क़ायम रहने वाला तथा इच्छा मात्र से व्यवस्था करने वाला होने के सन्दर्भ में क्या-क्या कुधारणाएँ लागू होती हैं कि नऊज़ुबिल्लाह यह मानना पड़ता है कि ख़ुदा ने (जैसा कि एक मौजूद अन्तर्यामी तथा सर्व-शक्तिमान हस्ती की विशेषता का होना आवश्यक है) अपने अस्तित्व की स्वयं सूचना नहीं दी अपितु यह समस्त योजना मनुष्य ही की है। उसी के हृदय में बैठे-बैठे स्वयं यह बात उत्पन्न हुई कि कोई ख़ुदा नियुक्त करे। अत: उसने कभी जल को ख़ुदा बनाया, कभी वृक्षों को तो कभी पत्थरों को। अन्तत: हृदय में स्वयं ही यह विचार जमा लिया कि वे वस्तुएं ख़ुदा नहीं हैं ख़ुदा कोई और होगा जो हमें दिखाई नहीं देता। क्या यह आस्था मनुष्य को इस भ्रम में नहीं डालेगी कि यदि निश्चय तौर पर उस काल्पनिक ख़ुदा का कुछ अस्तित्व भी होता तो वह कभी तो उन लोगों की तरह जो जीवित और विद्यमान होते हैं अपने अस्तित्व से सूचित करता। विशेष तौर पर जब इस विचार का पाबन्द देखेगा कि ख़ुदा तआला को अधूरा, अपूर्ण या गूंगा समझना उचित नहीं बैठता अपितु जैसे उसके लिए देखना, सुनना जानना इत्यादि पूर्ण विशेषताएँ आवश्यक हैं ऐसे ही उस में वार्तालाप की शक्ति का पाया जाना भी आवश्यक मालूम होता है, तो फिर इस आश्चर्य में पड़ेगा कि यदि उसमें वार्तालाप करने की शक्ति भी पाई जाती है तो इस का प्रमाण कहां है और यदि नहीं पाई जाती तो फिर वह पूर्ण क्योंकर हुआ और यदि पूर्ण नहीं तो फिर ख़ुदा बनने योग्य क्योंकर ठहरा और यदि उसका गूँगा होना वैध है तो फिर क्या कारण है कि उसका बहरा-अन्धा होना वैध नहीं। अत: वह इन भ्रमों से केवल इल्हाम पर ईमान लाकर मुक्ति पाएगा अन्यथा जैसे सहस्त्रों दार्शनिक नास्तिकता के गढ़े में गिर कर मर गए ऐसा ही वह भी गिर कर मरेगा। अब प्रत्येक न्यायकर्ता स्वयं ही न्याय करे कि क्या यह आस्था ख़ुदा से इन्कार कराने की पटरी स्थापित कराने वाली है या नहीं, क्या जिस व्यक्ति की दृष्टि में ख़ुदा ऐसा निर्बल है कि यदि तर्कशास्त्री उत्पन्न न होते तो वह हाथ ही से गया था, उस के ईमान का भी कुछ

रखकर मक्खी ही की श्रेष्ठता को स्वीकार करते हो, ख़ुदाई प्रकाश की श्रेष्ठता को स्वीकार करने वाले नहीं। जिन शब्दों ®को कहते हो कि अर्थों की भांति वे भी ख़ुदा ही ®179

शेष हाशिया न. (11)

ठिकाना है? मूर्ख लोग नहीं समझते कि ख़ुदा तो अपनी समस्त विशेषताओं के साथ बन्दों का पालनहार है न कि कुछ विशेषताओं के साथ, फिर क्योंकर सम्भव है कि कुछ पूर्ण विशेषताएं उसके बन्दों के किसी काम न आएँ। क्या इससे अधिक कोई अन्य कुफ़्र होगा कि यह कहा जाए कि वह समस्त लोकों का पूर्ण पालनहार नहीं है अपितु आधा या तीसरा भाग है।

®**चतुर्थ भ्रम :**- यदि अध्यात्म ज्ञान की पूर्णता इल्हामी किताब पर ही निर्भर ®169
है तो इस परिस्थिति में उचित यह था कि समस्त मनुष्यों को इल्हाम होता ताकि सब लोग सीधे तौर पर पूर्ण मारिफ़त (ख़ुदा को पहचानने का ज्ञान) तक पहुंच जाते तथा ईश्वरीय वरदान को बिना किसी माध्यम के प्राप्त कर लेते, किसी दूसरे की आवश्यकता न होती, क्योंकि यदि इल्हाम स्वयं में एक वैध बात है तो फिर प्रत्येक मनुष्य का इल्हाम वाला होना वैध है और यदि नहीं तो फिर किसी मनुष्य का भी इल्हाम वाला होना वैध नहीं।

उत्तर :- इल्हाम वाला होने में पात्रता और योग्यता शर्त है। यह बात नहीं है कि प्रत्येक तुच्छ और उच्च ख़ुदा तआला का पैग़म्बर बन जाए तथा प्रत्येक पर ख़ुदा की सच्ची वह्यी उतर जाया करे। इस की ओर अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम में स्वयं ही संकेत किया है और वह यह है -

وَاِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ

يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ[1] (भाग-8)

अर्थात् "जिस समय काफिरों को क़ुर्आन करीम की सच्चाई प्रकट करने के लिए कोई निशानी दिखाई जाती है तो कहते हैं कि जब तक स्वयं हम पर ही ख़ुदा की किताब न उतरे तब तक हम कदापि ईमान न लाएंगे। ख़ुदा भली-भांति जानता है कि किस जगह और किस अवसर पर रिसालत को रखना चाहिए अर्थात् योग्य और अयोग्य उसे ज्ञात है तथा इल्हाम का वरदान उसी पर करता है कि जो योग्य जौहर है।

①-अलअनआम:125

के मुख से निकले हैं। उन्हें तुम उस मुखस्राव (लुआब) के बराबर नहीं समझते जो मक्खी के मुख से निकलता है। अर्थात् तुम्हारे निकट मनुष्य शहद बनाने पर तो समर्थ नहीं परन्तु ख़ुदा

शेष हाशिया न. (11)

इस संक्षेप का विवरण यह है कि युक्तिवान ख़ुदा ने मानव सदस्यों के भिन्न-भिन्न हितों को दृष्टिगत रखते हुए भिन्न-भिन्न प्रकारों पर उत्पन्न किया है तथा समस्त मनुष्यों के स्वभाव का सिलसिला एक ऐसी रेखा के समरूप रखा है, जिसका एक सिरा अत्यन्त ऊँचाई पर है और दूसरा सिरा अत्यन्त निचली सतह पर। ऊँचे सिरे पर वे शुद्धात्मा लोग हैं जिन की योग्यताएं विभिन्न श्रेणियों के अनुसार पूर्ण श्रेणी पर हैं और निचले सिरे पर वे लोग हैं जिन्हें इस सिलसिले में ऐसा स्थान प्राप्त हुआ है कि लगभग बुद्धिहीन जानवरों के निकट पहुँच गए हैं तथा मध्य में वे लोग हैं जो बुद्धि इत्यादि में मध्यम श्रेणी में हैं तथा इस के प्रमाण के लिए भिन्न-भिन्न योग्यता रखने वाले लोगों का अवलोकन पर्याप्त तर्क है, क्योंकि कोई बुद्धिमान इस से इन्कार नहीं कर सकता कि मानव सदस्य बुद्धि की दृष्टि से संयम और ख़ुदा के भय की दृष्टि से ख़ुदा से प्रेम के कारण भिन्न-भिन्न
Ⓟ170 पदों पर आसीन हैं जिस प्रकार प्राकृतिक घटनाओं से कोई रूपवान Ⓟपैदा होता है कोई कुरूप, कोई नेत्रवान उत्पन्न होता है तो कोई नेत्रहीन, कोई कमज़ोर दृष्टि वाला, कोई दृढ़ दृष्टि वाला, कोई पूर्ण प्रकृति वाला कोई अपूर्ण प्रकृति। इसी प्रकार मानसिक शक्तियों तथा हार्दिक प्रकाशों के पदों की भिन्नता भी मौजूद और महसूस है। हां यह बात सत्य है कि प्रत्येक मनुष्य बशर्ते कि बिल्कुल पागल और दीवाना न हो बुद्धि में, संयम में, ख़ुदा के प्रेम में उन्नति कर सकता है, परन्तु इस बात को भली-भांति स्मरण रखना चाहिए कि कोई मनुष्य अपनी क्षमता की परिधि से अधिक उन्नति कदापि नहीं कर सकता। एक व्यक्ति जो अपनी मानसिक शक्तियों में स्वभाव की दृष्टि से अत्यन्त कमज़ोर है, उदाहरणतया मान लो हमारे देश के जन-साधारण **दौले शाह का चूहा** कहा करते हैं। अब स्पष्ट है कि यद्यपि उस की शिक्षा-दीक्षा में कैसी ही कोशिश और परिश्रम किया जाए और चाहे कैसा ही कोई बड़ा दार्शनिक उसका शिक्षक बनाया जाए, परन्तु तब भी वह इस स्वाभाविक सीमा से जो ख़ुदा तआला ने उसके लिए नियुक्त कर दी है अधिक उन्नति करने पर सामर्थ्यवान नहीं होगा, क्योंकि वह योग्यता की परिधि के संकुचित और तंग होने के कारण उन उच्च पदों तक कदापि नहीं पहुँच सकता

के कलाम के बनाने पर समर्थ है। तुम्हारी दृष्टि में कीड़े-मकोड़े कैसे जच गए तथा हृदय को भा गए कि ख़ुदा का कलाम उनके सदृश भी नहीं। मूर्खो! यदि ख़ुदा का कलाम अद्वितीय नहीं

शेष हाशिया न. (11)

जिन तक एक विशाल शक्तियों वाला व्यक्ति पहुँच सकता है। यह ऐसा स्पष्ट मामला है कि मैं विश्वास ही नहीं कर सकता कि कोई बुद्धिमान इस पर विचार करके फिर इस से इन्कारी रहे। हाँ जो व्यक्ति बुद्धि से बिल्कुल रिक्त हो यदि वह इन्कारी हो तो कुछ आश्चर्य नहीं। स्पष्ट है कि यदि बुद्धियों में भिन्नता न हो तो ज्ञानों के समझने में क्यों मतभेद पाया जाए क्यों कुछ प्रतिभाएं कुछ पर प्रमुखता ले जाएं। हालांकि जो लोग शिक्षा-दीक्षा का व्यवसाय रखते हैं वे इस बात को भली-भांति समझते होंगे कि कुछ विद्यार्थी ऐसे प्रतिभाशाली होते हैं कि थोड़े से संकेत और इशारे से मतलब को समझ जाते हैं, कुछ ऐसे कुशाग्र-बुद्धि कि स्वयं अपने स्वभाव से अच्छी और उत्तम बातें निकालते हैं तथा कुछ की तबियतें मूल स्वभाव से कुछ ऐसी कुँठ और मंदबुद्धि होती हैं कि तुम उन से हज़ार सर खपाई करो, कैसा ही स्पष्ट करके समझाओ बात को नहीं समझते और कठिन परिश्रम के बाद कुछ समझे भी तो स्मरण-शक्ति नहीं, ऐसे शीघ्र भूलते हैं जैसे पानी का निशान मिट जाता है। इसी प्रकार शिष्टाचार की शक्तियां तथा हार्दिक प्रकाशों में नितान्त भिन्नता पाई जाती है। एक ही पिता के दो पुत्र होते हैं तथा एक ही शिक्षक से प्रशिक्षण पाते हैं, परन्तु कोई उन में से सुशील और नेक निकलता है तथा कोई दुष्ट और उपद्रवी स्वभाव रखने वाला, कोई डरपोक और कोई बहादुर, कोई स्वाभिमानी और कोई निर्लज्ज। कभी ऐसा भी होता है कि उपद्रवी स्वभाव वाला भी सदुपदेश और नसीहत से एक सीमा तक सुधार पर आ जाता है, कभी डरपोक भी कि स्वार्थपरता के कारण कुछ बहादुरी प्रकट करता है जिस से कम अनुभवी मनुष्य इस ग़लती में पड़ जाता है कि उन्होंने अपनी वास्तविकता ℗को त्याग दिया ℗171
है परन्तु हम बार-बार स्मरण कराते हैं कि कोई मनुष्य अपनी योग्यता की सीमा से आगे क़दम नहीं रखता, यदि कुछ उन्नति करता है तो उसी परिधि के अन्दर-अन्दर करता है जो उसकी स्वाभाविक शक्तियों की परिधि है। अधिकांश अज्ञानी लोगों ने यह धोखा खाया है कि स्वाभाविक शक्तियां अनुकूल अभ्यास द्वारा अपने जन्मजात अनुमान से आगे बढ़ जाती हैं। इससे भी अधिक निरर्थक और बुद्धि से

Ⓟ181 तो कीड़ों और पेड़ों के पत्तों के Ⓟअद्वितीय होने की ख़बर तुम्हें कहाँ से पहुँच गई। तुम तनिक सोचते नहीं कि यदि ख़ुदा के कलाम की युक्ति में एक कीड़े की युक्ति जितनी भी पूर्णता नहीं

शेष हाशिया न. (11)

दूर ईसाइयों का कथन है कि केवल मसीह को ख़ुदा मानने से मनुष्य का स्वभाव परिवर्तित हो जाता है और यद्यपि अपनी प्रकृति की दृष्टि से सातों शक्तियों या कामशक्तियों से कोई कैसा ही पराजित हो या बौद्धिक शक्ति में कमज़ोर हो, वह मात्र हज़रत ईसा को ख़ुदा तआला का इकलौता बेटा कहने से अपनी जन्मजात स्थिति को छोड़ देता है, परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि ऐसे विचार उन्हीं लोगों के हृदय में उठते हैं जिन्होंने भौतिकशास्त्र और चिकित्सा विज्ञान में कभी विचार नहीं किया जिनकी आँखें द्वेष-भावना की अधिकता तथा सृष्टि-पूजा से अंधी हो गई हैं, अन्यथा भिन्न-भिन्न स्वभावों का मामला यहाँ तक प्रमाणित है कि दार्शनिकों ने जब इस संबंध में खोज और जाँच-पड़ताल की तो निरन्तर अनुभवों से उन पर यह बात स्पष्ट हो गई कि डरपोक या बहादुर होना और स्वभाव से कंजूस या दानशील होना, कमज़ोर बुद्धि या दृढ़ बुद्धि होना, कम हिम्मत वाला या उच्च हिम्मत वाला, सहनशील या अत्यन्त क्रोधी होना और बुरे विचार या शुभ विचार वाला होना, ये इस प्रकार के रोग नहीं हैं कि सरसरी और संयोगवश हों अपितु अनादि रचयिता ने मनुष्य के तत्वों का विवरण, मिश्रण की मात्रा, सीना, हृदय, खोपड़ी की प्रकृति की रचना में विभिन्न तौर पर तरह-तरह के अन्तर रखे हैं। उन्हीं अन्तरों के कारण मनुष्यों की शिष्टाचार और बुद्धि संबंधी शक्तियों में स्पष्ट अन्तर दिखाई देता है। इस प्राचीन राय को डाक्टरों ने भी स्वीकार कर लिया है। उन का भी यह कथन है कि चोरों और डाकुओं की खोपड़ियों को जब ध्यानपूर्वक देखा गया तो उन की रचना ऐसी पाई गई जो उसी बुरे विचार वाले वर्ग से विशिष्ट है। कुछ यूनानियों ने इससे भी कुछ अधिक लिखा है। कुछ गर्दन और आँख, ललाट (माथा), नाक तथा दूसरे कई अंगों से भी आन्तरिक परिस्थितियों का परिणाम निकालते हैं। बहरहाल यह सिद्ध हो चुका है तथा इस को माने बिना कुछ चारा नहीं कि मनुष्य की जन्मजात और बौद्धिक योग्यताओं में स्वाभाविक भिन्नता पाई जाती है और प्रत्येक मनुष्य एक सीमा तक पात्रता की ओर क़दम तो रखता है परन्तु अपनी योग्यता की परिधि से अधिक नहीं।

कदाचित किसी हृदय में यह सन्देह उत्पन्न हो कि ख़ुदा ने एकेश्वरवाद

तो जैसे यह आरोप ख़ुदा पर ही लगा, जिसने तुच्छ को Ⓟउच्च से अधिक सम्मान दे दिया और Ⓟ182
तुच्छ को अपने अस्तित्व पर वे प्रमाण प्रदान किए कि जो उच्च को नहीं।

शेष हाशिया न. ⑪

की आस्था को समस्त मनुष्यों में स्वाभाविक बताया है और फ़रमाया है

فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِیْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَیْهَا لَا تَبْدِیْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ① (भाग-21)

अर्थात् एकेश्वरवाद (तौहीद) पर स्थापित होना मनुष्य के स्वभाव में सम्मिलित है जो मानव उत्पत्ति का आधार है। और फ़रमाया-

اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوْا بَلٰی② (भाग-9)

अर्थात् प्रत्येक आत्मा (रूह) ने ख़ुदा की Ⓟपरवरदिगारी (प्रतिपालन) का इक़रार Ⓟ172
किया किसी ने इन्कार न किया। यह भी स्वाभाविक इक़रार की ओर संकेत है। तथा फ़रमाया-

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ③ (भाग-27)

अर्थात् मैंने जिन्नों और मनुष्यों को इसलिए उत्पन्न किया है कि मेरी उपासना करें। यह भी उसी की ओर संकेत है कि ख़ुदा की उपासना एक स्वाभाविक बात है। अत: जब ख़ुदा की तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा ख़ुदा की उपासना समस्त लोगों के लिए स्वाभाविक बात हुई तथा कोई व्यक्ति उपद्रव और बेईमानी के लिए उत्पन्न न किया गया तो फिर जो बातें ख़ुदा को जानने तथा ख़ुदा के भय के विपरीत हैं स्वाभाविक बातें किस प्रकार हो सकती हैं। यह भ्रम केवल एक सच्चाई की भ्रान्ति है क्योंकि वह बात जो उपर्युक्त आयतों से सिद्ध होती है वह तो केवल इतनी है कि मनुष्य के स्वभाव में अल्लाह की ओर लौटने तथा एकत्व (एकेश्वरवाद) के इक़रार का बीज बोया गया। वर्णन की गई आयतों में यह कहां लिखा है कि वह बीज प्रत्येक स्वभाव में समान है अपितु क़ुर्आन करीम में भिन्न-भिन्न स्थानों में इसी बात की व्याख्या है कि वह बीज मनुष्य में पदों की दृष्टि से भिन्नता रखता है। किसी में अत्यन्त कम, किसी में मध्यम, किसी में अत्यन्त अधिक जैसा कि एक स्थान पर फरमाया है-

فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَیْرٰتِ④ (भाग-22)

अर्थात मनुष्यों के स्वभाव (फ़ितरत) भिन्न-भिन्न हैं। कुछ लोग अत्याचारी हैं जिनके स्वाभाविक प्रकाश को हैवानी शक्तियों या क्रोध वाली शक्तियों ने दबाया

①-अर्रूम:31 ②-अलआराफ़:173 ③-अज़्ज़ारियात:57 ④-फ़ातिर:33

Ⓟ183 Ⓟजमालो हुस्ने क़ुर्आं नूरे जाने हर मुसलमां है
क़मर है चाँद औरों का हमारा चाँद क़ुर्आं है

शेष हाशिया न. 11

हुआ है। कुछ मध्यम स्थिति में हैं, कुछ नेकी और ख़ुदा की ओर लौटने में प्रमुखता ले गए हैं। इसी प्रकार कुछ के सन्दर्भ में फ़रमाया(भाग:7) وَاجْتَبَيْنٰهُمْ① और हम ने उन्हें चुन लिया अर्थात् वे अपनी स्वाभाविक शक्तियों की दृष्टि से दूसरों में से चुने हुए और भेजे हुए थे इसलिए रिसालत और नुबुव्वत के योग्य ठहरे तथा कुछ के सन्दर्भ में फ़रमाया-

(भाग-9) اُولٰٓئِکَ کَالْاَنْعَامِ②

अर्थात् ऐसे हैं जैसे चौपाए तथा उन का स्वाभाविक प्रकाश इतना कम है कि उन में और चौपायों में कुछ थोड़ा ही अन्तर है। अतः देखना चाहिए कि यद्यपि ख़ुदा तआला ने यही कह दिया है कि एकेश्वरवाद का बीज प्रत्येक में मौजूद है, परन्तु उसके साथ ही यह भी कई स्थानों में स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि बीज सब में समान नहीं, अपितु कुछ की तबियतों पर कामभावना ऐसा प्रभुत्व जमा चुकी हैं कि वह प्रकाश दुर्लभ की भांति हो गया है। अतः स्पष्ट है कि हैवानी या आक्रोश वाली शक्तियों का स्वाभाविक होना ख़ुदा के एकेश्वरवाद के स्वाभाविक होने के विपरीत नहीं है, चाहे कोई कैसा ही इच्छाओं के पीछे चलने वाला और तामसिक वृत्ति से पराजित हो, फिर भी उस में कुछ न कुछ स्वाभाविक प्रकाश पाया जाता है। उदाहरणतया जो व्यक्ति काम या क्रोध की शक्तियों के आधिपत्य के कारण चोरी करता है या हत्या करता है या दुराचार में ग्रसित होता है तो यद्यपि यह कर्म
Ⓟ173 उसके स्वभाव की मांग है, परन्तु उसकी पात्रता का Ⓟप्रकाश जो उसके स्वभाव में रखा गया है वह उसे उसी समय जब उस से कोई अनुचित कार्य हो जाए आरोपित करता है जिसकी ओर अल्लाह तआला ने संकेत फरमाया है-

(भाग-30) فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا③

अर्थात प्रत्येक मनुष्य को ख़ुदा ने एक प्रकार का इल्हाम प्रदान कर रखा है, जिसे हृदय का प्रकाश कहते हैं और वह यह कि शुभ और अशुभ कार्य में अन्तर कर लेना जैसे कोई चोर या हत्यारा चोरी या हत्या करता है तो ख़ुदा उसके हृदय में

※-परोक्ष (ग़ैब) से ख़ुदा की ओर से दिल में किसी बात का डालना। -अनुवादक
①-अलअनआम :180 ②-अलआराफ़-180 ③-अश्शम्स :9

नज़ीर उसकी नहीं जमती नज़र में फ़िक्र कर देखा
भला क्योंकर न हो यकता कलामे पाक रहमां हैं।

शेष हाशिया न. (11)

उसी समय डाल देता है कि तूने यह काम बुरा किया, अच्छा नहीं किया, परन्तु वह ऐसे इल्क़ा※ की कुछ परवाह नहीं करता क्योंकि उस के हृदय का प्रकाश नितान्त कमज़ोर होता है तथा बुद्धि भी कमज़ोर और हैवानी शक्ति विजयी और मनोवृत्ति अभिलाषी। अत: संसार में इस प्रकार की तबियतें भी पाई जाती हैं जिन का अस्तित्व प्रतिदिन के अवलोकनों से सिद्ध होता है। उनकी मनोवृत्ति का विद्रोह और उत्तेजना जो स्वाभाविक है कम नहीं हो सकती क्योंकि जिसे ख़ुदा तआला ने लगा दिया उसे कौन दूर करे। हाँ ख़ुदा ने उनका एक इलाज भी रखा है। वह क्या है? **पश्चाताप, पापों से क्षमा-याचना और शर्मिन्दगी** अर्थात् जब कि दुष्कर्म जो उनके मनोवृत्ति की मांग है उन के द्वारा किया जाए अथवा स्वाभाविक विशेषता के अनुसार हृदय में कोई बुरा विचार आए तो यदि वह पश्चाताप और क्षमा-याचना से उसका निवारण चाहें तो ख़ुदा उस पाप को क्षमा कर देता है। जब वह बार-बार ठोकर खाने से बार-बार शर्मिन्दा और तौबा (पश्चाताप) करें तो वह शर्मिन्दगी और पश्चाताप उस गन्दगी को धो डालती है। यही वास्तविक क़फ़्फ़ारा (पश्चाताप) है जो इस स्वाभाविक पाप का इलाज है। इसी की ओर अल्लाह तआला ने संकेत किया है-

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا① (भाग-5)

अर्थात् जिस से कोई दुष्कर्म हो जाए या अपने प्राण पर किसी प्रकार का अन्याय करे और फिर लज्जित होकर ख़ुदा से क्षमा चाहे तो वह ख़ुदा को क्षमा करने वाला और अत्यन्त दयालु पाएगा। इस बारीक और युक्तिसंगत इबारत का अभिप्राय यह है कि जैसे भूल और पाप अपूर्ण लोगों की विशेषता है जो उन से हो जाता है उसके मुकाबले पर ख़ुदा की अनादि और शाश्वत विशिष्टता क्षमा और दया है तथा स्वयं में वह क्षमा करने वाला और बहुत दयालु है अर्थात् उसे क्षमा करना सरसरी और संयोगवश नहीं अपितु वह उसकी अनादि हस्ती की अनादि विशेषता है जिसे वह प्रिय रखता है और योग्य जौहर पर उसका वरदान चाहता है अर्थात जब कभी कोई मनुष्य भूल और पाप होने पर यथासमय लज्जा और पश्चाताप के साथ ख़ुदा की ओर लौटे तो वह ख़ुदा के निकट इस योग्य हो

①-अन्निसा:111 ※ ईश्वर द्वारा अनायास हृदय में कोई बात डालना तथा बोध कराना। (अनुवादक)

Ⓟ184 Ⓟबहारे जाविदां पैदा है उसकी हर इबारत में
न वह ख़ूबी चमन में है न उस सा कोई बुस्तां है।

शेष हाशिया न. 11

जाता है कि दया और क्षमा के साथ ख़ुदा उसकी ओर लौटे। ख़ुदा का यह लौटना अपने लज्जित और पश्चातापी की ओर एक या दो बार तक सीमित नहीं अपितु ख़ुदा तआला की हस्ती में शाश्वत विशिष्टता है। जब तक कोई पापी पश्चाताप की
Ⓟ174 स्थिति में उसकी ओर लौटता है तो उसकी वह विशिष्टता उस पर अवश्य Ⓟप्रकट होती रहती है। अत: ख़ुदा की प्रकृति का नियम यह नहीं है कि **जो ठोकर खाने वाली तबियतें हैं वे ठोकर न खाएँ** या जो लोग हैवानी और क्रोध वाली शक्तियों से पराजित हैं उनका स्वभाव परिवर्तित हो जाए अपितु उस का नियम जो अनादि काल से **बंधा चला आता है यही है कि अपूर्ण लोग अपनी व्यक्तिगत हानि के कारण पाप करें वे पश्चाताप और क्षमा याचना कर के क्षमा किए जाएं** परन्तु जो व्यक्ति कुछ शक्तियों में स्वाभाविक तौर पर निर्बल हैं वह सबल नहीं हो सकता, इसमें जन्म परिवर्तन अनिवार्य हो जाता है और वह स्पष्ट तौर पर दुर्लभ है तथा स्वयं मौजूद और महसूस है। उदाहरणतया जिस के स्वभाव में शीघ्र क्रोधित होने का स्वभाव पाया जाता है वह क्रोध में धीमा कदापि नहीं बन सकता अपितु हमेशा देखा जाता है कि ऐसा मनुष्य क्रोध के अवसर पर क्रोध के लक्षण अचानक प्रकट करता है या कोई अकथनीय बात मुख पर ले आता है । यदि किसी दृष्टि से कुछ धैर्य से भी काम ले तो हृदय में अवश्य मनस्ताप (क्रोध) करता है। अत: यह मूर्खतापूर्ण विचार है कि कोई यंत्र-मंत्र या कोई धर्म-विशेष धारण करना उस स्वभाव को परिवर्तित कर देगा। इसी दृष्टि से **उस मासूम नबी ने जिसके होठों पर नीति जारी थी** फ़रमाया-

خِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الْاِسْلَامِ

अर्थात् जो लोग अशिक्षित और असभ्य होने की दशा में कुलीन हैं वे ही इस्लाम में भी प्रवेश करके कुलीन होते हैं। अत: मानव स्वभाव खान से निकले रत्नों की भांति भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। कुछ स्वभाव **चांदी की तरह स्वच्छ और शुद्ध**, कुछ गंधक की तरह दुर्गन्धियुक्त और शीघ्र भड़कने वाले, कुछ पारे की तरह अस्थिर और बेक़रार, कुछ लोहे की तरह ठोस और मलिन। जिस प्रकार स्वभावों में यह भिन्नता स्पष्ट तौर पर प्रमाणित है इसी प्रकार ख़ुदाई व्यवस्था

कलामे पाके यज़्दां का कोई सानी नहीं हरगिज़
अगर लूलूए अम्मां है वगर ला'ले बदख़्शां है

शेष हाशिया न. (11)

के भी अनुकूल है कुछ अनियमित बात नहीं, कोई ऐसी बात नहीं जो सांसारिक अनुशासन के नियमों के विपरीत हो, अपितु संसार का आराम और आबादी इसी पर निर्भर है। स्पष्ट है कि यदि समस्त स्वभाव एक ही बार योग्यता पर होते तो फिर भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्य (जो भिन्न-भिन्न प्रकार की योग्यताओं पर निर्भर थे) जिन पर संसार की आबादी निर्भर थी स्थगन में रह जाते, क्योंकि अपवित्र कार्यों के लिए वे स्वभाव अनुकूल हैं जो अपवित्र हैं तथा पवित्र कार्यों के लिए वे स्वभाव अनुकूलता रखते हैं जो पवित्र हैं। यूनानी दार्शनिकों ने भी यही राय प्रकट की है कि जैसे कुछ मनुष्य जानवरों के करीब-करीब होते हैं। इसी प्रकार बुद्धि चाहती है कि कुछ मनुष्य ऐसे भी हों जिन की **आत्मा का जौहर** पूर्ण शुद्धता और उत्तमता **लिए हुए हो** ताकि जिस प्रकार मानव स्वभावों का क्रम नीचे की ओर इतना अवनत दिखाई देता है कि जानवरों से जा मिलता है। इसी प्रकार ऊपर की ओर भी ऐसा चढ़ने वाला हो कि आकाशीय संसार से जा मिले।

अब जब कि सिद्ध हो गया कि मनुष्य बुद्धि में, शिष्टाचार संबंधी शक्तियों में, हृदय के प्रकाश में भिन्न-भिन्न स्तरों पर हैं तो इसी से ख़ुदा की वह्यी का कुछ मनुष्यों से विशेष होना अर्थात उन से जो हर प्रकार से **पूर्ण हैं** पूर्ण तौर पर सिद्ध हो गया, क्योंकि यह बात तो स्वयं प्रत्येक बुद्धिमान पर स्पष्ट है कि प्रत्येक अपनी पात्रता और योग्यातानुसार ख़ुदा के प्रकाशों को स्वीकार करता है इस से अधिक नहीं। इसके समझने के लिए **सूर्य** अत्यन्त प्रकाशमान उदाहरण है, क्योंकि यद्यपि सूर्य अपनी किरणें चारों और छोड़ रहा है, परन्तु उसका प्रकाश स्वीकार करने में प्रत्येक मकान बराबर नहीं। जिस मकान के द्वार बन्द हैं उसमें कुछ प्रकाश नहीं पड़ सकता और जिस में सूर्य के सामने एक छोटा सा रोशनदान है उसमें प्रकाश तो पड़ता है परन्तु थोड़ा जो पूर्ण रूप से अन्धकार को दूर नहीं कर सकता परन्तु वह मकान जिसके सारे द्वार सूर्य के सामने खुले हैं और दीवारें भी किसी अपवित्र वस्तु से नहीं अपितु नितान्त स्वच्छ और चमकदार **शीशे** से बनी हैं, उसमें केवल यही विशेषता नहीं होगी कि पूर्ण रूप से प्रकाश स्वीकार करेगा अपितु अपना

Ⓟ185 Ⓟ ख़ुदा के क़ौल से क़ौले बशर क्योंकर बराबर हो
वहां क़ुदरत यहां दरमांदगी फ़र्क़े नुमायां है

शेष हाशिया न. 11

प्रकाश चारों ओर फैला देगा तथा दूसरों तक पहुँचा देगा। यही अन्तिम उदाहरण **नबियों की पवित्रात्माओं** की परिस्थिति के अनुकूल है। अर्थात जिन पवित्रात्माओं को ख़ुदा अपनी रिसालत के लिए चुन लेता है। वे भी आवरणों को दूर करने और पूर्ण पवित्रता में उस शीश-महल के समान होते हैं जिसमें न कोई मलिनता है न कोई आवरण शेष है। अत: स्पष्ट है कि जिन लोगों में वह पूर्णता पूर्णरूप से मौजूद नहीं, ऐसे लोग किसी स्थिति में ख़ुदा तआला की रिसालत (अवतारवाद)के पद को प्राप्त नहीं कर सकते अपितु यह पद ख़ुदा की ओर से उन्हीं को प्राप्त हुआ है जिनकी पवित्र आत्माएँ अंधकारमय आवरणों से पूर्णतया पवित्र हैं, जिनको शारीरिक आवरणों से नितान्त स्वच्छन्दता है, जिन की पवित्रता और शुद्धता इस स्तर पर है कि जिसके आगे विचार करने की आवश्यकता ही नहीं वे ही पूर्णतम और कामिल लोग समस्त सृष्टियों (मख़लूक़ात) के पथ-प्रदर्शन का माध्यम हैं। जैसे जीवन का लाभ समस्त अंगों को हृदय के माध्यम से होता है, इसी प्रकार ख़ुदा ने मार्ग-दर्शन का लाभ इन्हीं के माध्यम से निर्धारित किया है क्योंकि वह पूर्ण अनुकूलता जो लाभप्रद और लाभान्वित में चाहिए वह केवल उन्हीं को प्रदान की गई है और यह कदापि संभव नहीं कि ख़ुदा तआला जो नितान्त अकेला और पवित्र है। ऐसे लोगों को अपनी पवित्र वह्यी के प्रकाशों से लाभान्वित करे जिन के स्वभाव की परिधि का अधिकांश भाग अंधकारमय और धूमिल है तथा नितान्त संकीर्ण और संकुचित तथा जिन की कंजूस तबियतें निकृष्ट मलिनताओं से ओत-
Ⓟ176 प्रोत और लिप्त हैं। यदि हम स्वयं को स्वयं ही Ⓟधोखा न दें तो नि:सन्देह हमें इक़रार करना पड़ेगा कि अनादि उद्‌गम से पूर्ण संलग्नता प्राप्त करने के लिए तथा उस महानतम पुनीत (ख़ुदा) से परस्पर वार्तालापी के लिए एकऐसी विशेष योग्यता और प्रकाश शर्त है कि जो उस श्रेष्ठ पद के महत्व और प्रतिष्ठा के योग्य है। यह बात कदापि नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति जो बिल्कुल क्षति, अधमता और अपवित्रता की स्थिति में है तथा सैकड़ों अंधकारमय आवरणों में छुपा हुआ है वह अपने स्वभाव के पतन, साहस की कमी के साथ इस पद को प्राप्त कर सकता है। इस बात से

मलायक जिसकी हज़रत में करें इक़रारे ला इल्मी
सुख़न में उसके हमताई कहाँ मक़दूरे इन्सां है

शेष हाशिया न. ⁽11⁾

कोई धोखा न खाए कि समस्त अहले किताब (जिन्हें ख़ुदा की किताब दी गई) में से **ईसाइयों** का यह विचार है कि **नबियों के लिए जिन पर ख़ुदा तआला की वह्यी उतरती है** पवित्रता, शुद्धता संयम और ख़ुदा का पूर्ण प्रेम प्राप्त नहीं क्योंकि ईसाई लोग सच्चे सिद्धान्तों को खो बैठे हैं और समस्त सच्चाइयां केवल इस विचार पर बलिदान कर दी हैं कि किसी प्रकार हज़रत मसीह ख़ुदा बन जाएं और कफ़्फ़ार: का मामला दृढ़ हो जाए। अत: नबियों का मासूम और पवित्र होना उन की उस इमारत को गिराता है जो वे बना रहे हैं। इसलिए एक झूठ के लिए उन्हें दूसरा झूठ भी बनाना पड़ा तथा एक आँख लुप्त होने से दूसरी भी फोड़ना पड़ी। अत: विवश होकर उन्होंने झूठ से प्रेम करके सत्य को त्याग दिया, नबियों का अनादर वैध रखा, पवित्रों को अपवित्र बनाया और **उन हृदयों को जो वह्यी उतरने के पात्र थे** मलिन और समल ठहराया, ताकि उनके काल्पनिक ख़ुदा की कुछ श्रेष्ठता कम न हो जाए अथवा कफ़्फ़ार: की योजना में कुछ विघ्न न आ जाए। इसी स्वार्थ परायणता के जोश से उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि इससे केवल नबियों का ही अनादर नहीं होता अपितु ख़ुदा की पवित्रता पर भी आंच आती है, क्योंकि 'ख़ुदा की पनाह' जिसने अपवित्रों से प्रेम, मैत्री **और मेल-मिलाप रखा,** वह स्वयं भी काहे का पवित्र हुआ। कथन का सारांश यह है कि ईसाइयों का कथन असत्य की उपासना में दृढ़ता के कारण सत्य से अतिक्रमण कर गया है और अब वे व्यर्थ में उसी मिथ्या आस्था को हरा-भरा करना चाहते हैं जिस पर उनके सृष्टि उपासक बुज़ुर्गों ने कदम मारा है। यद्यपि इस से समस्त सच्चाइयाँ परिवर्तित हो जाएँ या सत्य और ईमानदारी के विपरीत कैसा ही चलना पड़े परन्तु सत्याभिलाषी को समझना चाहिए कि इस प्रकार के मिथ्या उपासकों के कथनों से वास्तविक सच्चाई की कोई क्षति नहीं तथा उनके बेहूदा बकने से जो सत्य स्वयं में स्पष्ट प्रमाण रखता है वह बदल नहीं सकता, अपितु वे ही लोग झूठ बोलकर तथा सत्य का मार्ग त्याग कर स्वयं बदनाम होते हैं और बुद्धिमानों की दृष्टि से गिर जाते हैं। अल्लाह की वह्यी की प्राप्ति के लिए पूर्ण पवित्रता की शर्त होना कुछ ऐसी बात नहीं है जिसके सबूत के तर्क कमज़ोर हों या जिसका

ⓟ186 ⓟबना सकता नहीं इक पांव कीड़े का बशर हरगिज़
तो फिर क्योंकर बनाना नूरे हक़ का उस पै आसां है

शेष हाशिया न. ⑪

समझना सद्बुद्धि रखने वाले व्यक्ति पर कुछ कठिन हो अपितु यह वह बात है
ⓟ177 ⓟजिसकी साक्ष्य समस्त पृथ्वी और आकाश में पाई जाती है, जिसका सत्यापन संसार का कण-कण करता है, जिस पर समस्त संसार का अनुशासन स्थापित है। क़ुर्आन करीम में इस बात को एक उत्तम उदाहरण में वर्णन किया है जो नीचे एक सूक्ष्म खोज और छान-बीन के साथ जो इसकी व्याख्या से संबंधित तथा इस विवाद की पूर्णता के लिए आवश्यक है उल्लेख किया जाता है और वह यह है:-

اَللّٰہُ نُوۡرُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ مَثَلُ نُوۡرِہٖ کَمِشۡکٰوۃٍ فِیۡہَا مِصۡبَاحٌ ؕ اَلۡمِصۡبَاحُ
فِیۡ زُجَاجَۃٍ ؕ اَلزُّجَاجَۃُ کَاَنَّہَا کَوۡکَبٌ دُرِّیٌّ یُّوۡقَدُ مِنۡ شَجَرَۃٍ مُّبٰرَکَۃٍ زَیۡتُوۡنَۃٍ لَّا شَرۡقِیَّۃٍ
وَّلَا غَرۡبِیَّۃٍ ۙ یَّکَادُ زَیۡتُہَا یُضِیۡٓءُ وَلَوۡ لَمۡ تَمۡسَسۡہُ نَارٌ ؕ نُوۡرٌ عَلٰی نُوۡرٍ ؕ یَہۡدِی اللّٰہُ
لِنُوۡرِہٖ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَیَضۡرِبُ اللّٰہُ الۡاَمۡثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰہُ بِکُلِّ شَیۡءٍ عَلِیۡمٌ ① (भाग-18)

खुदा आकाश तथा पृथ्वी का प्रकाश है अर्थात् प्रत्येक नूर (प्रकाश) जो बुलन्दी में और नीचे दिखाई देता है चाहे वह आत्माओं (रूहों) में है चाहे शरीरों में और चाहे व्यक्तिगत है, चाहे विनती किया गया है, चाहे प्रत्यक्ष है और चाहे आन्तरिक और चाहे मानसिक चाहे बाह्य उसी के वरदान का उपहार है। यह इस बात की ओर संकेत है कि समस्त संसारों के पालनहार का सामान्य वरदान प्रत्येक वस्तु पर व्याप्त हो रहा है तथा उसके वरदान से कोई ख़ाली नहीं। वही समस्त वरदानों का उदगम है और समस्त प्रकाशों का कारण तथा समस्त रहमतों का उदगम है उसी की वास्तविक हस्ती समस्त संसार को क़ायम रखने वाली और समस्त उथल-पुथल की शरण ही वही है जिसने प्रत्येक वस्तु को नास्ति के अंधकार-गृह से बाहर निकाला और मूल्यवान अस्तित्व प्रदान किया। उसके अलावा कोई ऐसा अस्तित्व नहीं है जो स्वयं में अनिवार्य और अनादि हो या उस से लाभन्वित न हो अपितु पृथ्वी और आकाश, इन्सान और हैवान, पत्थर और पेड़ आत्मा और शरीर सब उसी के वरदान से अस्तित्व धारण किए हुए हैं। यह तो

①-अन्नूर : 36

अरे लोगो करो कुछ पास शाने किब्रियाई का
जुबां को थाम लो अब भी अगर कुछ बूए ईमां है

शेष हाशिया न. 11

सामान्य वरदान है जिसका वर्णन आयत اَللّٰہُ نُوۡرُ السَّمٰوٰتِ والارض में प्रकट किया गया है यही वरदान है जिसने वृत्त की भांति प्रत्येक वस्तु को अपनी परिधि में लिया हुआ है जिस के लाभदायक होने के लिए कोई योग्यता शर्त नहीं, परन्तु इसके मुकाबले में एक विशेष वरदान भी है जो शर्तों के साथ बंधा हुआ है तथा उन्हीं विशेष लोगों पर लाभकारी होता है जिनमें उसके स्वीकार करने की योग्यता और पात्रता मौजूद है अर्थात् पूर्ण पवित्रात्मा अंबिया अलैहिमुस्सलाम पर जिनमें से सर्वश्रेष्ठ, उच्चतम और समस्त बरकतों का संग्रहीता हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अस्तित्व है दूसरों पर कदापि नहीं होता और चूंकि वह वरदान एक अत्यन्त सूक्ष्म सत्य है और दर्शन की सूक्ष्मताओं में से एक सूक्ष्म बात है। इसलिए ख़ुदा तआला ने सामान्य वरदान को (जो प्रकटन में स्पष्ट) वर्णन करके फिर उस विशेष वरदान को हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रकाश के विवरण को प्रकट करने के उद्देश्य से एक ®उदाहरण में वर्णन किया है कि जो इस आयत से प्रारम्भ होता है। ®178

مَثَلُ نُوۡرِہٖ کَمِشۡکٰوۃٍ فِیۡہَا مِصۡبَاحٌ..........अन्त तक

और उदाहरण स्वरूप इसलिए वर्णन किया ताकि जटिल बारीकी को समझने में अस्पष्टता और कठिनाई शेष न रहे, क्योंकि उचित अर्थों को महसूस किए गए रूपों में वर्णन करने से प्रत्येक कुंठ बुद्धि तथा मन्द बुद्धि वाला भी सरलतापूर्वक समझ सकता है। उपर्युक्त कथित आयतों का शेष अनुवाद यह है - **उस प्रकाश का उदाहरण** (पूर्ण मनुष्य में जो पैग़म्बर है) **यह है जैसे एक आला** (अर्थात हज़रत पैग़म्बर-ए-ख़ुदा (स.अ.व.) का प्रफुल्लित सीना) **और आले (ताक़) में एक दीपक** (अर्थात् ख़ुदा की वह्यी) और दीपक एक शीशे के **फानूस में अत्यन्त उज्ज्वल है** (अर्थात् नितान्त पुनीत और पवित्र हृदय में जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हृदय है जो अपने मूल स्वभाव में स्वच्छ और उज्ज्वल शीशे के समान हर प्रकार की मलिनता और गन्दगी से पवित्र और उज्ज्वल है और परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य के संबंधों से पूर्णतया पवित्र है) **और शीशा ऐसा स्वच्छ है कि जैसे उन नक्षत्रों में से एक महान् प्रकाश वाला**

Ⓟ187 Ⓟख़ुदा से ग़ैर को हम्ता बनाना सख़्त क़ुफ़्रां है
ख़ुदा से कुछ डरो यारो ये कैसा किज़्बो बुहतां है

शेष हाशिया न. (11)

नक्षत्र है जो आकाश पर बड़ी चमक-दमक के साथ चमकते हुए निकलते हैं जिन्हें चमकता हुआ नक्षत्र कहते हैं (अर्थात हज़रत ख़ातमुल अंबिया का हृदय ऐसा स्वच्छ कि चमकते हुए नक्षत्र के समान नितान्त प्रकाश और प्रभापूर्ण जिसका आन्तरिक प्रकाश उसके बाह्य ढांचे पर पानी की तरह बहता हुआ दिखाई देता है) **वह दीपक ज़ैतून के मुबारक वृक्ष से** (अर्थात् ज़ैतून के तेल से) **प्रकाशित किया गया है** (ज़ैतून के मुबारक वृक्ष से अभिप्राय मुहम्मद का मुबारक **अस्तित्व** है जो नितान्त व्यापकता, पूर्णता, और नाना प्रकार की बरकतों का संग्रह है जिसका लाभ किसी क्षेत्र, स्थान, और युग से विशेष्य नहीं अपितु समस्त लोगों के लिए सामान्य परन्तु शाश्वत है तथा हमेशा जारी है कभी समाप्त नहीं होगा) और **मुबारक वृक्ष न पूरबी है न पश्चिमी** (अर्थात् मुहम्मदी पवित्र स्वभाव में कमी- बेशी नहीं है अपितु नितान्त समन्वय और संतुलन पर बना है और संतुलित से संतुलित स्थिति पर पैदा किया गया है। यह जो फ़रमाया कि उस मुबारक वृक्ष के तेल से वह्यी का दीपक प्रकाशित किया गया है। अत: तेल से अभिप्राय वह अनुपम और प्रकाशमान मुहम्मदी बुद्धि है जो अपने सम्पूर्ण स्वाभाविक सदाचारों सहित है जो उस पूर्ण बुद्धि के स्वच्छ झरने से पोषित हैं तथा वह्यी का दीपक मुहम्मदी विलक्षणताओं से प्रकाशित होना इन अर्थों से है कि उन योग्य विलक्षणताओं पर वह्यी का वरदान हुआ तथा वही वह्यी के प्रकटीकरण का कारण बने। इस में यह भी संकेत है कि वह्यी का वरदान उन मुहम्मदी विलक्षणताओं के अनुकूल हुआ और उन्हीं संतुलनों
Ⓟ179 की स्थिति के अनुसार Ⓟप्रकटन में आया कि जो मुहम्मदी स्वभाव में विद्यमान था। इसका विवरण यह है कि प्रत्येक वह्यी जिस नबी पर वह उतरती है के स्वभाव के अनुकूल उतरती है। जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के स्वभाव में प्रताप और क्रोध था तौरात भी मूस्वी स्वभाव के अनुकूल एक प्रतापी शरीअत (धार्मिक विधान) उतरी। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के स्वभाव में शील (हिल्म) और विनम्रता थी। अत: इन्जील की शिक्षा भी शील, सहनशीलता और विनम्रता पर आधारित है, परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्वभाव नितान्त स्थायित्व

अगर इक़रार है तुम को ख़ुदा की ज़ाते वाहिद का
तो फिर क्यों इस क़दर दिल में तुम्हारे शिर्क पिन्हां है

शेष हाशिया न. 11

पर बना था, न प्रत्येक स्थान पर शील पसन्द था और न प्रत्येक स्थान पर क्रोध ही हृदय को रुचिकर था, अपितु नीतिगत पद्धति पर स्थान और अवसर को दृष्टिगत रखने वाला शुभ स्वभाव था। अतः क़ुर्आन करीम भी उसी समता और संतुलन की शैली पर उतरा जो कठोरता, दया, भय-रोब, सहानुभूति, विनम्रता और सख़्ती का संकलन है। अतएव यहां अल्लाह तआला ने स्पष्ट किया कि दीपक क़ुर्आन की वह्यी का दीपक उस मुबारक वृक्ष के तेल से प्रकाशित किया गया है जो न पूरबी है न पश्चिमी, अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के संतुलित स्वभाव के अनुकूल उतरा है, जिसमें न मूस्वी स्वभाव की भांति कठोरता है न ईस्वी स्वभाव की भांति विनम्रता, अपितु कठोरता, विनम्रता, आक्रोश और शालीनता का संकलन है और संतुलन के पूर्णरूप को दर्शाने वाला तथा प्रताप और शालीनता का संग्रहीता है तथा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के संतुलित सदाचार जो सूक्ष्म बुद्धि के माध्यम से वह्यी के प्रकाश के प्रकटन हेतु तेल ठहरे। इन के सन्दर्भ में एक अन्य स्थान में भी अल्लाह तआला ने आँहज़रत को सम्बोधित करके फ़रमाया है और वह यह है (भाग-29) ① اِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیۡمٍ अर्थात तू हे नबी एक श्रेष्ठ श्रेणी के सदाचारों (ख़ुलुके अज़ीम) पर पैदा किया गया है अर्थात् अपनी हस्ती में सम्पूर्ण उत्तम सदाचारों का पूरक और चरम सीमा तक पहुँचाने वाला है कि उस पर अधिकता की कल्पना नहीं की जा सकती, क्योंकि अरबों की बोलचाल में शब्द अज़ीम उस वस्तु की विशेषता में बोला जाता है जिसे अपने प्रकार पर पूर्ण कमाल प्राप्त हो। उदाहरणतया जब कहें कि यह वृक्ष अज़ीम है तो उसका अर्थ यह होगा कि वृक्ष में जितनी लम्बाई, चौड़ाई हो सकती है वह सब इसमें मौजूद है। कुछ ने कहा है कि अज़ीम वह वस्तु है, जिसकी श्रेष्ठता उस सीमा तक पहुँच जाए कि बोध की परिधि से बाहर हो तथा ख़ुलुक़ के शब्द से क़ुर्आन करीम और ऐसा ही अन्य दर्शन की पुस्तकों में केवल चुस्ती, मेल-मिलाप में शालीनता, नम्रता, दया, कोमलता (जैसा जन-साधारण समझते हैं) अभिप्राय

①-अलक़लम -5

Ⓟ188 Ⓟये कैसे पड़ गए दिल पर तुम्हारे जहल के परदे
ख़ता करते हो बाज़ आओ अगर कुछ ख़ौफ़े यज़्दां है

शेष हाशिया न. (11)

नहीं है अपितु ख़लक़ ख़ ज़बर के साथ और ख़ुलुक़ छोटे उ की मात्रा के साथ दो शब्द हैं जो एक दूसरे के सामने हैं। ख़लक़ से अभिप्राय वह बाह्य आकृति है जो मनुष्य को आकृतियां प्रदान करने वाले (ख़ुदा) की ओर से प्रदत्त है, जिस आकृति के साथ वह अन्य जीवधारियों की आकृतियों से पृथक है और ख़ुलुक़ से अभिप्राय वह आन्तरिक आकृति अर्थात आन्तरिक विशेषताएँ हैं जिनकी दृष्टि से मानवीय वास्तविकता अन्य जीवधारियों की वास्तविकता से पूर्णतया भिन्नता
Ⓟ180 रखती है। अत: मनुष्य में Ⓟमानवता की दृष्टि से जितनी आन्तरिक विशेषताएँ पाई जाती हैं और मानवता रूपी वृक्ष को निचोड़कर निकल सकती हैं जो कि मनुष्य और हैवान को आन्तरिकता की दृष्टि से पृथक करती हैं उन सब का नाम ख़ुलुक़ हैं। चूंकि मानव स्वभाव रूपी वृक्ष मूल रूप से समता और संतुलन पर बना है तथा प्रत्येक कमी-बेशी से जो कि हैवानी शक्तियों में पाई जाती है पवित्र है। जिसकी ओर अल्लाह तआला ने संकेत फ़रमाया है-

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِيْٓ أَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ① (भाग-30)

इसलिए ख़ुलुक़ के शब्द से जो किसी की क़ैद के बिना बोला जाए हमेशा सदाचार अभिप्राय होते हैं और वे सदाचार जो मानवता की वास्तविकता है, वे समस्त आन्तरिक विशेषताएं हैं जो मनुष्य की आत्मा में पाई जाती हैं। जैसे प्रतिभाशाली बुद्धि, शीघ्र बोध, मानसिक स्वच्छता, उत्तम सुरक्षा, उत्तम स्तुति, संयम, लज्जा, धैर्य, भरोसा, परहेज़गारी, ख़ुदा से भय, बहादुरी, स्थायित्व, न्याय, धरोहर, सत्यवादिता, यथास्थान दानशीलता, यथास्थान स्वार्थत्याग, यथास्थान दया, यथास्थान सहानुभूति, यथास्थान शूरता, यथास्थान उच्च साहस, यथास्थान शील, यथास्थान सहनशीलता, यथास्थान स्वाभिमान, यथास्थान आदर-सत्कार, यथास्थान सम्मान, यथास्थान हमदर्दी, यथास्थान अनुकम्पा, यथास्थान दया, ख़ुदा का भय, ख़ुदा से प्रेम, ख़ुदा से अनुराग, ख़ुदा की ओर विरक्तता इत्यादि, और **तेल ऐसा स्वच्छ और उत्तम कि अग्नि के बिना ही प्रकाशित होने पर तत्पर** (अर्थात् बुद्धि और सम्पूर्ण उत्तम सदाचार उस मासूम नबी के ऐसे कौशल, संतुलन,

①-अत्तीन -5

हमें कुछ कीं नहीं भाइयो ! नसीहत है ग़रीबाना
कोई जो पाक दिल होवे दिलो जां उस पै क़ुर्बां है

शेष हाशिया न. (11)

मृदुलता और प्रकाश पर बने कि इल्हाम से पूर्व ही स्वयं प्रकाशित होने पर तैयार थे) **प्रकाश पर प्रकाश। प्रकाश वदान्य हुआ प्रकाश पर** (अर्थात् जब कि हजरत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक अस्तित्व में कई प्रकाश एकत्र थे। अत: उन प्रकाशों पर एक और आकाशीय प्रकाश जो ख़ुदा की वह्यी है उतरा और उस प्रकाश के उतरने से ख़ातमुल अंबिया का मुबारक अस्तित्व प्रकाशों का संकलनकर्ता बन गया। अत: इसमें यह संकेत किया कि वह्यी के प्रकाश के उतरने का यही दर्शन है कि वह प्रकाश पर ही उतरता है, अंधकार पर नहीं उतरता, क्योंकि वरदान के लिए अनुकूलता शर्त है और अंधकार को प्रकाश से कुछ अनुकूलता नहीं अपितु प्रकाश को प्रकाश से अनुकूलता है और ख़ुदा तआला अनुकूलता को दृष्टिगत रखे बिना कोई कार्य नहीं करता। ऐसा ही प्रकाश के वरदान में भी उसका यही नियम है कि जिसके पास कुछ प्रकाश है उसी को और प्रकाश भी दिया जाता है तथा जिसके पास कुछ नहीं उसे कुछ नहीं दिया जाता। जो व्यक्ति आँखों का प्रकाश रखता है वही सूर्य का प्रकाश पाता है और जिसके पास आँखों का प्रकाश नहीं वह सूर्य के प्रकाश से भी वंचित है और जिसे स्वाभाविक प्रकाश कम मिला है उसे दूसरा प्रकाश भी कम ही मिलता है और जिसे स्वाभाविक प्रकाश अधिक मिला है उसे दूसरा प्रकाश भी अधिक ही
मिलता है। अंबिया मानव स्वभाव की भिन्नता के Ⓟसमस्त क्रम में से वे श्रेष्ठ लोग Ⓟ181
हैं जिन्हें इतनी अधिकता और पूर्णता के साथ आन्तरिक प्रकाश प्रदान किया गया है कि जैसे वे साक्षात प्रकाश हो गए हैं। इसी दृष्टि से क़ुर्आन करीम में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम नूर (प्रकाश) और प्रकाशमान दीपक रखा है। जैसा फ़रमाया है:-

قَدْ جَآءَکُمْ مِّنَ اللّٰہِ نُوْرٌ وَّکِتٰبٌ مُّبِیْنٌ ① (भाग-6)
وَدَاعِیًا اِلَی اللّٰہِ بِاِذْنِہٖ وَسِرَاجًا مُّنِیْرًا ② (भाग-22)

यही बुद्धिमत्ता है कि वह्यी का प्रकाश जिसके लिए स्वाभाविक प्रकाश का पूर्ण और

①-अलमाइदह :16 ②-अलअहज़ाब :47

Ⓟ189 Ⓟयद्यपि यहां तक ख़ुदा के कलाम की अद्वितीयता के सन्दर्भ में जो कुछ वर्णन किया गया है वह इस युग के कुछ मन्द बुद्धि तथा आज़ाद तबियत मुसलमानों के

शेष हाशिया न. (11)

वैभवशाली होना शर्त है केवल नबियों को प्राप्त हुआ तथा उन्हीं से विशिष्ट हुआ। अत: अब इस उत्तम तर्क से कि जिसे पहले वर्णन के प्रथम उदाहरण में अल्लाह तआला ने वर्णन किया इन लोगों के कथन का मिथ्या होना स्पष्ट है जिन्होंने इस वर्णन के साथ जो श्रेणियों की स्वाभाविक भिन्नता को मानते हैं फिर मात्र मूर्खता और अज्ञानता के कारण यह विचार कर लिया है कि जो प्रकाश स्वभाव की पूर्णता वाले मनुष्यों को प्राप्त होता है वही प्रकाश अपूर्ण लोगों को भी प्राप्त हो सकता है। उन्हें ईमानदारी और न्याय से विचार करना चाहिए कि वह्यी के वरदान के संबंध में वे कितनी ग़लती में ग्रस्त हो रहे हैं। स्पष्ट देखते हैं कि ख़ुदा की प्रकृति का नियम उनके मिथ्या विचार का सत्यापन नहीं करता, फिर अत्यन्त द्वेष और शत्रुता के कारण इसी दूषित विचार पर जमे हुए हैं। इसी प्रकार ईसाई लोग भी प्रकाश के वरदान के लिए स्वाभाविक प्रकाश का शर्त होना नहीं मानते तथा कहते हैं कि जिस हृदय पर वह्यी का प्रकाश उतरे उसके लिए अपनी किसी आन्तरिक विशिष्टता में प्रकाशमय होने की स्थिति आवश्यक नहीं अपितु यदि कोई सद्‌बुद्धि के स्थान पर अत्यन्त श्रेणी का अज्ञान और मूर्ख हो और वीरता की विशेषता के स्थान पर नितान्त डरपोक, और दानशीलता की विशेषता के स्थान पर अत्यन्त कंजूस और आत्म सम्मान की विशेषता के स्थान पर अत्यन्त निर्लज्ज और ख़ुदा के प्रेम की विशेषता के स्थान पर संसार का अत्यन्त प्रेमी और संयम, परहेज़गारी तथा अमानतदारी के स्थान पर महाचोर और डाकू और पवित्रता और लज्जा की विशेषता के स्थान पर नितान्त निर्लज्ज और कामुक और निरीहता※ की विशेषता के स्थान पर अत्यन्त लोलुप और लालची। तो ऐसा व्यक्ति भी ईसाई सज्जनों के कथनानुसार ऐसी वर्णित दुर्दशा के बावजूद ख़ुदा का नबी और सानिध्य प्राप्त हो सकता है अपितु एक मसीह को बाहर निकाल कर दूसरे समस्त नबीयों जिनकी नुबुव्वत को भी वे मानते हैं तथा उनकी इल्हामी किताबों को भी पवित्र-पवित्र करके पुकारते हैं वे 'ख़ुदा की पनाह' उनके कथनानुसार ऐसे ही थे और पवित्र कमालात से कि जो अस्मत और हार्दिक पवित्रता के लिए अनिवार्य हैं से वंचित थे। ईसाइयों की बुद्धि और ख़ुदा को पहचानने पर भी सहस्त्रों धन्यवाद। वह्यी के प्रकाश के उतरने की क्या अच्छी फ़्लासफ़ी वर्णन की, परन्तु ऐसी फ़्लासफ़ी के

※-जो मिल जाए उसी पर प्रसन्न रहना (अनुवादक)

लिए वर्णन हुआ है जिन्हें अंग्रज़ी की※ सोफ़िस्ताई ℗और मिथ्या शिक्षाओं ने अभिमानी ℗190
और मूर्ख करके क़ुर्आन करीम के अद्वितीय और अनुपम होने से जो उसके ख़ुदा की

शेष हाशिया न. 11

अनुयायी तथा उसे पसन्द करने वाले वही लोग हैं जो घोर अंधकार तथा आन्तरिक
नेत्रहीनता की स्थिति ℗में पड़े हुए हैं अन्यथा प्रकाश के वरदान के लिए प्रकाश का ℗182
आवश्यक होना ऐसी निर्विवाद असंदिग्ध सच्चाई है कि कोई मन्द बुद्धि वाला भी इस से इन्कार नहीं कर सकता परन्तु उनका क्या उपचार जिनका बुद्धि से कोई मतलब नहीं और जो प्रकाश से द्वेष और अंधकार से प्रेम करते हैं तथा चमगादड़ की भांति उनकी आँखें रात में ख़ूब खुलती है, परन्तु प्रकाशमय दिन में वे अंधे हो जाते हैं।) **ख़ुदा अपने प्रकाश की ओर** (अर्थात् क़ुर्आन करीम की ओर) **जिसको चाहता है मार्ग दर्शन करता है तथा लोगों के लिए उदाहरणों का वर्णन करता है और वह प्रत्येक वस्तु को भली-भांति जानता है** (अर्थात् मार्ग-दर्शन ख़ुदा की ओर से एक बात है उसी को होता है जिससे अनादि कृपा से सामर्थ्य प्राप्त हो अन्य को नहीं होता, परमेश्वर सूक्ष्म समस्याओं का उदाहरणों की शैली में वर्णन करता है ताकि जटिल सच्चाइयाँ समझने के निकट हो जाएं परन्तु वह अपने अनादि ज्ञान से भली-भांति जानता है कि कौन इन उदाहरणों को समझेगा तथा सत्य को धारण करेगा और कौन वंचित और अपमानित रहेगा।) अत: इस उदाहरण में जिस का यहाँ तक मोटे अक्षरों में अनुवाद किया गया; ख़ुदा तआला ने पैग़म्बर अलैहिस्सलाम के हृदय को उज्ज्वल शीशे से उपमा दी जिस में किसी प्रकार की अशुद्धता नहीं। यह **हृदय का प्रकाश** है। तत्पश्चात आँहज़रत के बोध, अनुभूति, सद्‌बुद्धि और सम्पूर्ण जन्मजात तथा स्वाभाविक सदाचारों को एक उत्तम तेल से उपमा दी जिसमें अत्यन्त चमक है और जो दीपक के प्रकाश का माध्यम है यह **प्रकाश, बुद्धि** है क्योंकि सम्पूर्ण आन्तरिक अलौकिक बातों का स्रोत और उद्देश्य बुद्धि रूपी शक्ति है फिर इन समस्त प्रकाशों पर एक आकाशीय प्रकाश का जो वह्यी है उतरना वर्णन किया। **यह वह्यी का प्रकाश** है तथा तीनों प्रकाश मिलकर लोगों के मार्ग-दर्शन का कारण बने। यही सच्चा सिद्धान्त है जो वह्यी के संबंध में पवित्र और अनादि (ख़ुदा) की ओर से अनादि क़ानून है तथा उसकी पवित्र हस्ती के अनुकूल। अत: इस समस्त अन्वेषण और छान-बीन से सिद्ध है कि जब तक हृदय का प्रकाश और बुद्धि का प्रकाश किसी मनुष्य में पूर्णता के साथ न पाए जाएं तब तक वह वह्यी का प्रकाश कदापि नहीं पाता। इस से पूर्व यह

※-दार्शनिकों का वह समूह जो सच्चाई का इन्कारी तथा जिनके सिद्धान्तों का आधार भ्रम पर है। (अनुवादक)

ओर से होने के लिए अनिवार्य विशेषता है से विमुख और इन्कारी कर दिया है तथा

ⓟ191 जिन्होंने ⓟमुसलमान कहला कर, क़ुर्आन करीम पर ईमान लाकर तथा कलिमा पढ़ने

शेष हाशिया न. (11)

सिद्ध हो चुका है कि बुद्धि की विशेषता और हृदय के प्रकाशमान होने की विशेषता केवल कुछ मनुष्यों में होती है सब में नहीं होती। अब इन दोनों प्रमाणों के मिलाने से यह बात पूर्णतया प्रमाणित हो गई कि वह्यी और रिसालत केवल कुछ कामिल (पूर्ण) मनुष्यों को प्राप्त होती है न कि प्रत्येक मनुष्य को। अत: इस निश्चित प्रमाण से ब्रह्म समाज वालों का दूषित विचार पूर्ण रूप से अस्त-व्यस्त हो गया और यही उद्देश्य था।

पांचवां भ्रम:- कुछ ब्रह्म समाजी यह भ्रम प्रस्तुत किया करते हैं कि यदि पूर्ण

ⓟ183 अध्यात्म ज्ञान क़ुर्आन पर ही निर्भर ⓟहै तो फिर ख़ुदा ने इन समस्त देशों में तथा समस्त प्राचीन और नवीन आबादियों में क्यों प्रचारित न किया और करोड़ों जनता को अपनी पूर्ण पहचान और उचित आस्था से वंचित रखा।

उत्तर:- यह भ्रम भी अदूरदर्शिता से उत्पन्न हुआ है क्योंकि जिस स्थिति में पूर्ण स्पष्टता से सिद्ध हो चुका है कि पूर्ण विश्वास और पूर्ण अध्यात्म ज्ञान की प्राप्ति अकेली बुद्धि के माध्यम से कदापि संभव नहीं अपितु वह श्रेष्ठ श्रेणी का विश्वास और ख़ुदा की पहचान का पूर्ण ज्ञान केवल ऐसे इल्हाम द्वारा प्राप्त होता है जो अपनी हस्ती और विशेषताओं में अद्वितीय और अनुपम हो और अद्वितीयता के कारण उसका ख़ुदा की ओर से होना स्पष्टतया प्रमाणित हो। हम ने इस पुस्तक में यह भी सिद्ध कर दिया है कि वह अद्वितीय किताब जो संसार में पाई जाती है केवल क़ुर्आन करीम है और बस। तो ऐसी परिस्थिति में सत्याभिलाषी के लिए सद्मार्ग यह है कि या तो हमारे तर्कों का खण्डन करके यह सिद्ध करके दिखाए कि मनुष्य की अकेली बुद्धि आख़िरत (प्रलय) की बातों में पूर्ण विश्वास और सही तथा विश्वसनीय अध्यात्म ज्ञान की श्रेणी तक पहुँचा सकती है और यदि यह सिद्ध न कर सके तो फिर क़ुर्आन करीम की सच्चाई को स्वीकार करे जिसके द्वारा पूर्ण अध्यात्म ज्ञान की श्रेणी प्राप्त होती है, और यदि यह भी मानना स्वीकार न हो तो फिर इस का कोई सदृश प्रस्तुत करे तथा उसके जो-जो विशेष गुण हैं किसी दूसरी किताब में निकाल कर दिखाए ताकि इतना सिद्ध हो जाए कि यद्यपि विश्वास और अध्यात्म ज्ञान की श्रेणी की पूर्णता के लिए इल्हामी किताब की

वाला बन कर फिर भी बेईमानों की तरह ख़ुदा के कलाम को एक तुच्छ मनुष्य के कलाम से, अपनी बाह्य और आन्तरिक विशेषताओं में समान समझता है وَمَاقَدَرُوااللّٰهَ حَقَّ قَدْرِه

शेष हाशिया न. (11)

नितान्त आवश्यकता है परन्तु ऐसी किताब संसार में उपलब्ध नहीं, परन्तु यदि कोई प्रतिद्वन्द्वी इन बातों में से किसी बात का उत्तर न दे अपितु दम भी न मार सके तो फिर आपको न्याय करना चाहिए कि जिस स्थिति में एक सच्चाई ठोस तर्कों द्वारा सिद्ध हो चुकी है जिस का खण्डन उस के पास मौजूद नहीं, न वह उसके तर्कों का खण्डन कर सकता है तो फिर निश्चित प्रमाण के सामने दूषित भ्रमों को प्रस्तुत करना सत्य और ईमानदारी से कितना दूर है। समस्त संसार जानता है कि जिस बात का औचित्य और सत्य आकाट्य तर्कों द्वारा प्रमाण तक पहुँच चुका हो जब तक उन तर्कों का खण्डन न किया जाए तब तक वह बात प्रमाणित सत्य है जो केवल अनर्गल विचारों से ग़लत नहीं ठहर सकता। क्या वह मकान जिसकी नींव और दीवारें और छत अत्यन्त सुदृढ़ है वह मात्र मुख की फूंक से गिर सकता है? फिर स्वयं यह सन्देह कि ख़ुदा ने अपनी किताब को समस्त देशों में क्यों प्रकाशित न किया और क्यों भिन्न-भिन्न तबियतें उससे लाभान्वित न हुईं केवल एक पागलों जैसा विचार है। यदि संसार को प्रकाशमान करने वाले सूर्य ℗का ℗184
प्रकाश कुछ अंधकारमय स्थानों तक नहीं पहुँचा या यदि कुछ ने उल्लू की भांति सूर्य को देखकर आँखें बन्द कर लीं तो क्या इससे यह अनिवार्य हो जाएगा कि सूर्य ख़ुदा की ओर से नहीं? यदि वर्षा किसी क्षारीय पृथ्वी पर नहीं पड़ी अथवा कोई बंजर धरती उससे लाभान्वित नहीं हुई तो क्या इससे वह कृपा-वृष्टि मनुष्य का कृत्य समझा जाएगा? ऐसे भ्रम दूर करने के लिए ख़ुदा तआला ने स्वयं ही क़ुर्आन करीम में पूर्ण स्पष्टता के साथ इस बात को खोल दिया है कि ख़ुदा के इल्हाम की हिदायत (मार्ग-दर्शन) प्रत्येक तबियत के लिए नहीं अपितु उन निर्मल तबियतों के लिए है जो संयम और योग्यता की विशेषता से विशेष्य हैं। इल्हाम के पूर्ण पथ-प्रदर्शन से वही लोग लाभान्वित होते हैं और फ़ायदा उठाते हैं तथा उन तक ख़ुदा का इल्हाम बहरहाल पहुंच जाता है अत: उनमें से कुछ आयतें निम्नलिखित हैं--

का चरितार्थ हो कर ख़ुदा की उन महान क़ुदरतों और बारीक नीतियों को भुला दिया है जिन्हें देखने के लिए ख़ुदा की ओर से जारी प्रत्येक दर्पण ख़ुदा का दर्शन कराने वाला

शेष हाशिया न. (11)

الٓمّٓ ۚ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ
يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ
مَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ؕ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ
رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ
ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○ خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى
سَمْعِهِمْ ؕ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ○ (भाग-1) ①

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۙ وَّاٰخَرِيْنَ
مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ
يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ○ (भाग-28) ②

उपर्युक्त आयतों में प्रथम इस आयत अर्थात

الٓمّٓ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ पर विचार करना चाहिए कि किस उत्तमता, ख़ूबी और संक्षेप को ध्यान में रखते हुए ख़ुदा तआला ने उपर्युक्त भ्रम का उत्तर दिया है। प्रथम क़ुर्आन करीम के उतरने की **इल्लते फाइली**※ वर्णन की तथा उसकी श्रेष्ठता और महानता की ओर संकेत किया और कहा الٓمّٓ मैं ख़ुदा हूँ जो सब से अधिक जानता हूँ **अर्थात इस किताब का उतारने वाला मैं हूँ जो बहुत जानने वाला और हिकमत वाला हूँ। जिसके ज्ञान के बराबर किसी का**
Ⓟ185 **ज्ञान Ⓟनहीं।** फिर इस का **भौतिक कारण** क़ुर्आन के वर्णन में किया तथा उसकी श्रेष्ठता की ओर संकेत किया और कहा ذَالِکَ الْکِتَابُ **वह** किताब है अर्थात् ऐसी

※-वह कारण जिससे कोई वस्तु बनाई गई हो या आविष्कार हुआ हो (अनुवादक)

①-अलबक़रह : 2 से 8 ②-अलजुमुअ: 3 से 5

होना चाहिए, परन्तु ये सच्चाइयां ऐसी प्रकाशमान ®और साफ हैं कि यद्यपि कोई व्यक्ति ®193
जिसने इस्लाम की जमाअत में प्रवेश न किया हो वह भी बतौर पूर्ण बोध समझ सकता

शेष हाशिया न. 11

सारगर्भित और श्रेष्ठ श्रेणी की किताब है जिसका भौतिक कारण ख़ुदा का ज्ञान है अर्थात **जिसके संबंध में सिद्ध है कि उसका स्रोत और झरना अनादि हस्ती हज़रत ख़ुदा है।** इस स्थान पर अल्लाह तआला ने **वह** का शब्द अपनाने से जो दूरी और फासले के लिए आता है, इस बात की ओर संकेत किया कि यह किताब उस श्रेष्ठतम विशेषताओं वाली हस्ती के ज्ञान से प्रकटित है जो अपनी हस्ती में अद्वितीय और अनुपम है जिसके पूर्ण ज्ञान और सूक्ष्म रहस्य मानव दृष्टि की पहुँच की सीमा से अत्यधिक दूर हैं। तत्पश्चात **आकार संबंधी** बाह्य कारण का प्रशंसनीय होना स्पष्ट किया और कहा لَا رَيْبَ فِيْهِ क़ुर्आन स्वयं में ऐसी प्रमाणित और उचित स्थिति पर बना है कि उसमें किसी भी प्रकार के सन्देह की गुंजायश नहीं अर्थात् वह दूसरी किताबों की भांति बतौर कथा या कहानी के नहीं अपितु विश्वसनीय प्रमाणों तथा ठोस तर्कों पर आधारित है और अपने उद्देश्यों पर स्पष्ट सबूतों तथा सन्देह निवारक तर्कों का वर्णन करता है तथा स्वयं एक **चमत्कार** है जो संदेह और शंकाओं के निवारण में काटने वाली तलवार का आदेश रखता है तथा ख़ुदा के पहचानने के संबंध में केवल **होना चाहिए** की काल्पनिक श्रेणी में नहीं छोड़ता अपितु **है** की वास्तविक और निश्चित श्रेणी तक पहुँचाता है। यह तो तीनों कारणों की श्रेष्ठता का वर्णन किया फिर इन तीनों कारणों के सारगर्भित होने के बावजूद जिनका प्रभाव और सुधार में बहुत बड़ा हस्तक्षेप है। क़ुर्आन करीम उतरने का चौथा मूल कारण (इल्लते ग़ाई) जो हिदायत और मार्ग-दर्शन है केवल **मुत्तक़ीन** (पापों से बचने वाले) में अवलंबित कर दिया और फ़रमाया هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ अर्थात यह किताब केवल उन योग्यता रखने वाले जौहरों, अमूल्य रत्नों (सदात्मा लोगों) के पथ-प्रदर्शन के लिए उतारी गई है जो **आन्तरिक पवित्रता, सद्बुद्धि, सत्य जानने की अभिलाषा और सही नीयत** रखने के परिणाम स्वरूप ईमान, ख़ुदा को पहचानने और संयम की पूर्ण श्रेणी पर **पहुँच जाएंगे** अर्थात् ख़ुदा तआला जिन्हें अपने अनादि ज्ञान से जानता है कि उनका स्वभाव इस हिदायत (पथ-प्रदर्शन) की **स्थिति के अनुकूल बना है** तथा वे ख़ुदाई ज्ञानों में उन्नति कर सकते हैं। वे

है कि जिस कलाम को ख़ुदा का कलाम कहा जाए उसका अद्वितीय और अनुपम होना
Ⓟ194 नितान्त आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक Ⓟविद्वान ख़ुदा के प्रकृति के नियम पर दृष्टि डाल

शेष हाशिया न. (11)

अन्ततः इस किताब से हिदायत (मार्ग दर्शन) पाएंगे और बहरहाल यह किताब उन को पहुँच कर रहेगी तथा पूर्व इसके कि वे मरें ख़ुदा उन्हें
Ⓟ186 **सद्मार्ग पर आने की सामर्थ्य दे देगा।** अब देखो Ⓟयहां ख़ुदा तआला ने स्पष्ट फ़रमाया है कि **जो लोग ख़ुदा तआला के ज्ञान में मार्ग-दर्शन प्राप्त करने के योग्य** हैं तथा अपने मूल स्वभाव में संयम की विशेषता से विशिष्ट हैं **वे अवश्य मार्ग दर्शन प्राप्त करेंगे** और फिर इन आयतों में जो इस आयत के पश्चात् लिखी गई हैं उसे विस्तारपूर्वक वर्णन कर दिया और फ़रमाया कि जितने लोग (ख़ुदा के ज्ञान में) ईमान लाने वाले हैं वे यद्यपि अब तक मुसलमानों में सम्मिलित नहीं हुए, परन्तु धीरे-धीरे सब सम्मिलित हो जाएँगे तथा वही लोग बाहर रह जाएँगे जिन्हें ख़ुदा भली-भांति जानता है कि इस्लाम के सत्य-मार्ग को स्वीकार नहीं करेंगे और यद्यपि उन्हें नसीहत की जाए या न की जाए ईमान नहीं लाएँगे या संयम और अध्यात्म ज्ञान की पूर्ण श्रेणियों तक नहीं पहुँचेंगे। अत: इन आयतों में ख़ुदा तआला ने स्पष्ट करके बता दिया कि क़ुर्आनी हिदायत (मार्ग-दर्शन) से केवल संयमी लाभान्वित हो सकते हैं जिनके मूल स्वभाव में किसी तामसिक अंधकार का प्रभुत्व नहीं तथा यह हिदायत उन तक अवश्य पहुँच कर रहेगी, परन्तु जो लोग संयमी नहीं हैं वे न क़ुर्आनी हिदायत से लाभ उठाते हैं और न यह आवश्यक है कि अकारण उन तक हिदायत पहुँच जाए। **उत्तर का सारांश** यह है कि जिस स्थिति में संसार में दो प्रकार के लोग पाए जाते हैं, कुछ संयमी और सत्याभिलाषी जो हिदायत (मार्ग-दर्शन) को स्वीकार कर लेते हैं तथा कुछ उपद्रवी स्वभाव रखने वाले लोग जिन्हें नसीहत करना या न करना समान होता है। हम अभी यह भी वर्णन कर चुके हैं कि क़ुर्आन करीम उन समस्त लोगों को जिन तक उसकी हिदायत मरते दम तक नहीं पहुँची अथवा भविष्य में न पहुँचे द्वितीय प्रकार में शामिल रखता है। तो इस परिस्थिति में क़ुर्आन करीम के मुकाबले पर यह दावा करना कि कदाचित वे लोग जिन्हें क़ुर्आनी हिदायत नहीं पहुँची प्रथम प्रकार में अर्थात् हिदायत पाने वालों के वर्ग में शामिल होंगे मूर्खतापूर्ण दावा है, क्योंकि कदाचित कोई निश्चित प्रमाण नहीं है, परन्तु क़ुर्आन

कर तथा प्रत्येक वस्तु को जो उसकी ओर से है चाहे वह कैसी ही तुच्छ से तुच्छ हो, उसकी सहस्त्रों दर्शनपूर्ण बारीकियों को देखकर तथा मानव शक्तियों के मुकाबले से श्रेष्ठ

शेष हाशिया न. (11)

करीम का किसी बात के संबंध में सूचना देना निश्चित प्रमाण है। कारण यह कि वह पूर्ण प्रमाणों द्वारा अपना ख़ुदा की ओर से होना तथा सच्चा सूचित करने वाला होना सिद्ध कर चुका है। अत: जो व्यक्ति उसकी सूचना को निश्चित प्रमाण नहीं समझता, उस पर अनिवार्य है कि उसकी सच्चाई के प्रमाण का जिन में से कुछ हमने भी इस पुस्तक में लिखे हैं खण्डन करके दिखाए, और जब तक खण्डन करने से असमर्थ और निरुत्तर है तब तक उसके लिए न्याय और ईमानदारी का मार्ग यह है कि इस बात को सही और उचित समझे जिसके उचित होने के सन्दर्भ में ऐसी किताब में सूचना मौजूद है जो स्वयं में प्रमाणित सत्य है, क्योंकि एक प्रमाणित किताब का ®किसी बात की संभावना के संदर्भ में सूचना देना उस बात के निश्चित ®187
अस्तित्व पर ठोस साक्ष्य है। स्पष्ट है कि एक ठोस साक्ष्य और निश्चित प्रमाण को छोड़ कर उस के मुक़ाबले पर निराधार भ्रमों को प्रस्तुत करना तथा बे बुनियाद विचारों को हृदय में स्थान देना मूर्खता और सरल स्वभाव होने का प्रतीक है।

यदि यह कहो कि जिन लोगों तक इल्हामी किताब नहीं पहुँची उन की मुक्ति का क्या हाल है। इसका उत्तर यह है कि यदि ऐसे लोग बिल्कुल असभ्य तथा मानव बुद्धि से वंचित हैं तो वे प्रत्येक पूछ-ताछ से स्वतंत्र और मुक्त हैं तथा पागलों और विक्षिप्त लोगों का आदेश रखते हैं, परन्तु जिनमें कुछ बुद्धि और चेतना है उन से उन की बुद्धि के अनुसार हिसाब लिया जाएगा।

यदि हृदय में यह भ्रम गुज़रता हो कि ख़ुदा तआला ने विभिन्न तबियतें क्यों उत्पन्न कीं और क्यों सब को ऐसी शक्तियां प्रदान न कीं जिन से वह पूर्ण अध्यात्म ज्ञान तथा पूर्ण प्रेम की श्रेणी तक पहुँच जातीं। तो यह कार्य भी ख़ुदा के कार्यों में व्यर्थ हस्तक्षेप है जो कदापि वैध नहीं। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि समस्त सृष्टि (मख़लूक) को एक ही श्रेणी पर रखना और सब को उच्च श्रेणी की शक्तियां प्रदान करना ख़ुदा पर कोई अधिकार अनिवार्य नहीं। यह तो केवल उसकी कृपा है। उसे अधिकार है जिस पर चाहे करे और जिस पर चाहे न करे। उदाहरणतया तुम्हें ख़ुदा ने मनुष्य बनाया और गधे को मनुष्य न बनाया,

Ⓟ195 और उच्च Ⓟपाकर वह स्वयं को इस इक़रार करने के लिए विवश पाता है कि कोई वस्तु जो ख़ुदा की ओर से जारी है ऐसी नहीं है जिसके सदृश बनाने पर मनुष्य सामर्थ्यवान

शेष हाशिया न. (11)

तुम्हें बुद्धि दी और उसे न दी या तुम्हारे लिए ज्ञान प्राप्त हुआ और उसके लिए न हुआ। यह सब मालिक की इच्छा की बात है, कोई ऐसा अधिकार नहीं कि तुम्हारा था और उसका न था। अत: जिस स्थिति में ख़ुदा की सृष्टियों में श्रेणियों की दृष्टि से स्पष्ट तौर पर भिन्नता पाई जाती है जिसे स्वीकार करने से किसी बुद्धिमान को चारा नहीं। तो क्या अधिकार रखने वाले स्वामी के सामने ऐसी सृष्टियां, जिन के मौजूद होने में भी कोई अधिकार नहीं, कहां यह कि श्रेष्ठ बनने में कोई अधिकार हो कुछ दम मार सकती हैं ख़ुदा तआला का बन्दों को अस्तित्व रूपी लिबास प्रदान करना एक दान और उपकार है और स्पष्ट है कि दानी तथा उपकारी अपने अनुदान और उपकार में कमी-बेशी का अधिकार रखता है और यदि उसे कम देने का अधिकार न हो तो फिर अधिक देने का भी अधिकार न हो तो ऐसी स्थिति में वे स्वामित्व के अधिकारों को कार्यान्वित करने से बिल्कुल असमर्थ रह जाए। स्वयं स्पष्ट है कि यदि सृष्टि का स्रष्टा पर अकारण ही कोई

Ⓟ188 स्वत्व स्वीकार किया जाए तो इस से सतत् निरन्तरता अनिवार्य होती है Ⓟक्योंकि जिस स्तर पर स्रष्टा किसी सृष्टि को बनाएगा उसी स्तर पर वह सृष्टि कह सकती है कि मेरा अधिकार इस से अधिक है और चूँकि ख़ुदा तआला असीमित श्रेणियों पर बना सकता है तथा उसकी असीम शक्ति के आगे केवल मनुष्य बनाने पर उत्पन्न करने की श्रेष्ठता का अन्त नहीं तो ऐसी परिस्थिति में सृष्टि के प्रश्नों के क्रम का भी अन्त न होगा और उत्पत्ति की प्रत्येक स्तर पर असीमित तक उसको अपने अधिकार के मांगने का अधिकार प्राप्त होगा और यही निरन्तरता है।

हां यदि यह जिज्ञासा है कि श्रेणियों में भिन्नता रखने में नीति क्या है तो समझना चाहिए कि इस सन्दर्भ में क़ुर्आन करीम ने तीन नीतियां वर्णन की हैं जो बुद्धि के निकट नितान्त व्यापक और प्रकाशमान हैं जिन का कोई बुद्धिमान इन्कार नहीं कर सकता और वे विवरण सहित निम्नलिखित हैं:-

प्रथम -यह कि संसार की जटिल समस्याओं तक अर्थात सामाजिक कार्य भली-भांति कार्यान्वित हों। जैसा कि फ़रमाया है-

हो और न किसी बुद्धिमान की बुद्धि यह कह सकती है कि ख़ुदा की हस्ती या गुणों
℗या कार्यों में सृष्टि (मख़लूक़) का भागीदार होना उचित है अपितु बुद्धिमान और दक्ष ℗196

शेष हाशिया न. (11)

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ نَحْنُ
قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ
بَعْضًا سُخْرِيًّا وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ[1] (भाग-25)

अर्थात् काफ़िर कहते हैं कि यह क़ुर्आन मक्का और तायफ के बड़े-बड़े धनवानों और समृद्ध लोगों में से किसी बड़े धनवान और धन सम्पन्न पर क्यों नहीं उतरा ताकि उसकी धनाढ्यता के यथायोग्य होता तथा उसके भय, नीति तथा धन व्यय करने से धर्म शीघ्र फैल जाता। एक निर्धन व्यक्ति जिसके पास सांसारिक सम्पत्ति में से कुछ भी नहीं, क्यों इस पद से विभूषित किया गया (फिर आगे बतौर उत्तर फ़रमाया) اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ क्या अल्लाह तआला की कृपाओं का वितरण करना उन का अधिकार है। अर्थात् यह स्वच्छंद युक्तिवान ख़ुदावन्द का कार्य है कि सामर्थ्य और कुछ की योग्यताएँ कम रखीं तथा वे दुनिया की असत्य और बनावटी बातों में फ़ंसे रहे तथा धनवान और समृद्ध कहलाने पर प्रसन्न होते रहे और मुख्य उद्देश्य को भूल गए। कुछ को अध्यात्मिक श्रेष्ठताएं तथा उज्ज्वल विशेषताएं प्रदान की गईं और वे उस वास्तविक प्रियतम के प्रेम में लीन होकर सानिध्य प्राप्त बन गए तथा ख़ुदा तआला के मान्य हो गए (तत्पश्चात इस युक्ति की ओर संकेत किया कि जो इस योग्यताओं की भिन्नता तथा विचारों के मतभेद में गुप्त हैं) अन्त
तक.... نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَعِيْشَتَهُمْ अर्थात् हमने ℗इसलिए कुछ को धनवान और कुछ ℗189
को भिक्षु, कुछ को मृदुल स्वभाव कुछ को मलिन स्वभाव, कुछ तबियतों का किसी व्यवसाय की ओर झुकाव और कुछ का किसी अन्य व्यवसाय की ओर झुकाव रखा है ताकि उन्हें यह आसानी हो जाए कि कुछ के लिए कुछ काम निकालने वाले और सेवक हों और केवल एक पर बोझ न पड़े और इस प्रकार मनुष्य के जटिल कार्य सरलतापूर्वक चलते रहें। फिर फ़रमाया कि इस सन्दर्भ में संसार के धन-दौलत के सन्दर्भ में ख़ुदा तआला की किताब का अस्तित्व अधिकतर लाभप्रद है। यह एक

[1]-अज़्ज़ुखरुफ़:32, 33

के लिए उपर्युक्त तर्कों के अतिरिक्त कई अन्य कारण भी हैं जिन से ख़ुदा के कलाम का
Ⓟ197 अद्वितीय होना उस पर और भी Ⓟअधिक स्पष्ट होता है तथा स्पष्ट और नितान्त स्पष्ट

शेष हाशिया न. (11)

सूक्ष्म संकेत है जो इल्हाम की आवश्यकता की ओर फ़रमाया। विवरण इसका यह है कि मनुष्य स्वभाव से सामाजिक प्राणी है। एक दूसरे की सहायता के बिना उसका कोई कार्य पूर्ण नहीं हो सकता। उदाहरणतया एक रोटी को देखिए जिस पर जीवन निर्भर है, उसके तैयार होने के लिए कितनी सभ्यता और सहयोग की आवश्यकता है। खेती की चिन्ता से लेकर उस समय तक कि रोटी पक कर खाने के योग्य हो जाए, बीसियों व्यवसायियों की सहायता की आवश्यकता है। इस से स्पष्ट है कि सामान्य सामाजिक बातों में कितने सहयोग और परस्पर सहायता की आवश्यकता होगी। इसी आवश्यकता के प्रबन्ध के लिए ख़ुदा तआला ने मनुष्य को भिन्न-भिन्न स्वभावों और योग्यताओं पर उत्पन्न किया, ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और स्वभाव के अनुसार किसी कार्य में प्रसन्नता पूर्वक व्यस्त हो। कोई खेती करे, कोई खेती के उपकरण बनाए, कोई आटा पीसे, कोई पानी लाए, कोई रोटी पकाए, कोई सूत काते, कोई कपड़ा बुने, कोई दूकान खोले, कोई व्यापार का सामान लाए, कोई नौकरी करे और इस प्रकार एक दूसरे के सहायक बन जाएँ और कुछ को कुछ सहायता पहुँचाते रहें। अत: जब सहायता आवश्यक हुई तो उनका परस्पर काम पड़ना भी आवश्यक हो गया और जब मामले और प्रतिफल में पड़ गए और उस पर लापरवाही भी जो सांसारिक मामलों में लीन हो जाने की विशिष्टता है उनके साथ शामिल हो गई तो उन के लिए एक ऐसे न्यायिक कानून की आवश्यकता पड़ी जो उन्हें अन्याय, अत्याचार, द्वेष, उपद्रव और ख़ुदा से लापरवाही से रोकता रहे ताकि संसार का अनुशासन अस्त-व्यस्त न हो, क्योंकि जीविका और आख़िरत (प्रलय) का समस्त आधार न्याय और ख़ुदा को पहचानने पर है तथा न्याय की अनिवार्यता तथा ख़ुदा का भय एक क़ानून पर आधारित है जिसमें न्याय संबंधी बारीकियां तथा ख़ुदा की पहचान संबंधी सच्चाइयां सही तौर पर लिखी हों और भूल से या जान-बूझ कर किसी प्रकार का अन्याय या किसी प्रकार का दोश न पाया जाए। ऐसा क़ानून उसी की ओर से जारी हो सकता है जिसकी हस्ती भूल, ग़लती, अन्याय और
Ⓟ190 अत्याचार से पूर्णतया पवित्र हो और स्वयं में अनुकरण और Ⓟसम्मान के योग्य भी
हो क्योंकि यद्यपि कोई उत्तम क़ानून हो परन्तु कानून का जारी करने वाला यदि ऐसा

बातों के समान दिखाई देता है। जैसे इन समस्त कारणों में एक वह कारण है जो उन विपरीत परिणामों से लिया जाता है जिन का विभिन्न प्रकार से व्यावहारिक रूप में जारी

शेष हाशिया न. (11)

न हो जिसे अपने पद की दृष्टि से सब पर श्रेष्ठता और शासन का अधिकार हो या यदि ऐसा न हो जिसका अस्तित्व लोगों की दृष्टि में हर प्रकार के अन्याय, अपवित्रता, भूल और ग़लती से पवित्र हो तो ऐसा कानून प्रथम तो चल ही नहीं सकता और यदि कुछ दिन चले भी तो कुछ ही दिनों में तरह-तरह की ख़राबियां उत्पन्न हो जाती हैं और भलाई के स्थान पर बुराई का कारण हो जाता है। इन समस्त कारणों से ख़ुदा की किताब की आवश्यकता हुई क्योंकि समस्त शुभ विशेषताएं तथा हर प्रकार की योग्यता और ख़ूबी केवल ख़ुदा ही की किताब में पाई जाती है और बस।

द्वितीय :-पदों में भिन्नता रखने में नीति यह है कि ताकि नेक और पवित्र लोगों की विशेषता प्रकट हो क्योंकि प्रत्येक विशेषता तुलना करने ही से ज्ञात होती है। जैसे फ़रमाया है-

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا[1] (भाग-15)

अर्थात हमने प्रत्येक वस्तु को जो पृथ्वी पर है पृथ्वी का सौन्दर्य बना दिया है ताकि सदात्मा लोगों की योग्यता दुष्टात्मा लोगों की तुलना में प्रकट हो जाए तथा मलिन के देखने से उत्तम की उत्तमता स्पष्ट हो जाए, क्योंकि विपरीत की वास्तविकता विपरीत ही से पहचानी जाती है और नेकों का महत्व दुष्टों से तुलना करने पर ही मालूम होता है।

तृतीय - पदों में भिन्नता रखने में नीति तरह-तरह की शक्तियों का प्रकट करना और अपनी श्रेष्ठता की ओर ध्यान दिलाना है। जैसा कि फ़रमाया -

مَالَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا[2] (भाग-29)

अर्थात् तुम्हें क्या हो गया कि तुम ख़ुदा की महानता को नहीं मानते हालांकि उसने अपनी महानता प्रकट करने के लिए तुम्हें भिन्न भिन्न रूपों और स्वभावों पर उत्पन्न किया अर्थात् ख़ुदा ने योग्यताओं और स्वभावों में भिन्नता इसी उद्देश्य से रखी ताकि उसकी महानता और शक्ति पहचानी जाए। जैसा कि एक अन्य स्थान पर भी फ़रमाया :-

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰى بَطْنِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰى رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰٓى
اَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ[3] (भाग-18)

---

① -अलकहफ:8 ② -नूह:14,15 ③ -अन्नूर:46

Ⓟ198 होना आवश्यक है। विवरण Ⓟइस का यह है कि प्रत्येक बुद्धिमान की दृष्टि में यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि जब कुछ मीमांसक साहित्यकार अपनी-अपनी ज्ञान-शक्ति के बल

शेष हाशिया न. (11)

अर्थात् ख़ुदा ने प्रत्येक प्राणी (जीवधारी) को पानी से उत्पन्न किया अतः कुछ प्राणी पेट पर चलते हैं, कुछ दो पैरों पर, कुछ चार पैरों पर। ख़ुदा जो चाहता है उत्पन्न करता है, ख़ुदा प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है। यह भी इस बात की ओर संकेत है कि ख़ुदा ने ये विभिन्न वस्तुएं इसलिए बनाईं ताकि उसकी भिन्न-भिन्न शक्तियाँ प्रकट हों। अतएव स्वभावों की भिन्नता जो सृष्टियों के स्वभाव में प्रदत्त
Ⓟ191 है इस में Ⓟख़ुदा की नीति इन्हीं तीन बातों पर निर्भर है, जिन्हें ख़ुदा तआला ने प्रशंसनीय आयतों में वर्णन कर दिया। अतः विचार करो।

छठा भ्रम – पूर्ण अध्यात्म ज्ञान का माध्यम वह वस्तु हो सकती है जो हर समय और हर युग में स्पष्ट तौर पर दिखाई देती हो। अतः यह प्रकृति के ग्रन्थ की विशेषता है जो कभी बन्द नहीं होता और हमेशा खुला रहता है तथा यही पथ-प्रदर्शक होने के योग्य है क्योंकि ऐसी वस्तु कभी पथ-प्रदर्शक नहीं हो सकती जिस का द्वार प्रायः बन्द रहता हो तथा किसी विशेष युग में खुलता हो।

उत्तर :– प्रकृति के ग्रन्थ को ख़ुदा के कलाम की तुलना में खुला हुआ विचार करना यही आँखों के बन्द होने का प्रतीक है। जिनकी बुद्धि और विवेक में कोई विकार नहीं वे भली-भांति जानते हैं कि उसी पुस्तक को खुला हुआ कहा जाता है जिसका लेख स्पष्ट दिखाई देता हो, जिसके पढ़ने में कोई सन्देह शेष न रहता हो, परन्तु कौन सिद्ध कर सकता है कि अकेली प्रकृति के ग्रन्थ पर दृष्टि डालने से कभी किसी का सन्देह दूर हुआ? किसे मालूम है कि इस प्रकृति के लेख ने कभी किसी गन्तव्य तक पहुँचाया है? कौन दावा कर सकता है कि मैंने प्रकृति के ग्रन्थ के समस्त सबूतों को भली-भांति समझ लिया है? यदि यह ग्रन्थ ख़ुला हुआ होता तो जो लोग उसी पर भरोसा करते थे वे क्यों इसी एक ग्रन्थ को पढ़ कर परस्पर विचारों में इतना मतभेद रखने वाले हो जाते कि कोई ख़ुदा के अस्तित्व का एक सीमा तक इक़रारी और कोई सिरे से इन्कारी। हमने दुर्लभ की कल्पना करते हुए यह भी स्वीकार किया कि जिस ने इस ग्रन्थ को पढ़कर ख़ुदा के अस्तित्व को आवश्यक नहीं समझा वह इतनी आयु पा लेगा कि कभी न कभी अपनी भूल पर अवगत हो जाएगा, परन्तु प्रश्न तो यह है कि यदि यह ग्रन्थ खुला हुआ था

पर एक ऐसा लेख लिखना चाहें जो व्यर्थ, मिथ्या, अनावश्यक, निरर्थक, Ⓟअश्लील, Ⓟ199
और प्रत्येक प्रकार की अनर्गल, उल्झी और ख़राब बातों तथा दूसरी समस्त बातों से जो

शेष हाशिया न. 11

तो इसे देखकर ऐसे बड़े-बड़े दोश क्यों पड़ गए। क्या आप के निकट खुली हुई किताब उसी को कहते हैं जिसे पढ़ने वाले ख़ुदा के अस्तित्व में ही मतभेद करें और आरम्भ ही ग़लत हो। क्या यह सत्य नहीं है कि इसी प्रकृति के ग्रन्थ को पढ़कर सहस्त्रों नीतिवान, दार्शनिक, नास्तिक और नेचरी होकर मरे या मूर्तियों के आगे हाथ जोड़ते रहे तथा उनमें से वही व्यक्ति सदमार्ग पर आया जो ख़ुदा के इल्हाम पर ईमान लाया। क्या इसमें कुछ असत्य भी है कि केवल इसी ग्रन्थ के पढ़ने वाले बड़े-बड़े दार्शनिक कहलाकर फिर ख़ुदा के नीतिवान, इरादे से उत्पन्न करने वाला तथा कण-कण का ज्ञाता होने के इन्कारी रहे और इन्कार ही की स्थिति में मर गए। क्या ख़ुदा ने तुम्हें इतनी भी बुद्धि नहीं दी कि जिस पत्र के विषय को उदाहरणतया ज़ैद (व्यक्ति का नाम) कुछ समझे और बकर (व्यक्ति का नाम) कुछ समझे तथा ख़ालिद (व्यक्ति का नाम) इन दोनों के विपरीत कुछ और कल्पना कर बैठे तो इस पत्र का लेख खुला हुआ और साफ नहीं कहलाता अपितु संशयात्मक, संदिग्ध और अस्पष्ट कहलाता है। यह कोई ऐसी सूक्ष्म बात नहीं जिसे समझने के लिए कुशाग्र बुद्धि की आवश्यकता हो अपितु नितान्त निर्विवाद सच्चाई है, परन्तु उन का क्या
Ⓟउपचार, जो सरासर ज़बरदस्ती अंधकार को प्रकाश तथा प्रकाश को अंधकार Ⓟ192
ठहराएं तथा दिन को रात और रात को दिन ठहराएं। एक बच्चा भी समझ सकता है कि हार्दिक उद्देश्यों को पूर्ण रूप से वर्णन करने के लिए ख़ुदा तआला की ओर से यही सदमार्ग निर्धारित है कि स्पष्ट कथन द्वारा अपने अन्त:करण की बात को प्रकट किया जाए, क्योंकि हार्दिक इच्छाओं को प्रकट करने के लिए केवल बोलने की शक्ति उपकरण है। इसी उपकरण के द्वारा एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की हार्दिक बातों से अवगत होता है तथा प्रत्येक बात इस उपकरण द्वारा समझाई न जाए वह पूर्ण बोध के स्तर से नीचे रहती है। सहस्त्रों बातें ऐसी हैं कि यदि हम स्वाभाविक प्रमाणों से उद्देश्य-पूर्ति चाहें तो यह बात हमारे लिए असम्भव हो जाती है और यदि विचार भी करें तो ग़लती में पड़ जाते हैं। उदाहरणतया स्पष्ट है कि ख़ुदा ने आँख देखने के लिए बनाई है और कान सुनने के लिए पैदा किए हैं, जीभ बोलने के लिए प्रदान की है। इतना तो हम ने उन अंगों के स्वभाव पर दृष्टि डाल कर तथा उनकी

नीति, यथास्थान वार्तालाप में बाधक तथा पूर्णता, योग्यता और व्यापकता के विपरीत संकटों से पूर्णतया पवित्र और पावन हो और सरासर सत्य, नीति, सरस और सुबोध,

शेष हाशिया न. (11)

विशेषताओं पर विचार करके ज्ञात कर लिया, परन्तु यदि हम इसी स्वाभाविक प्रमाण को पर्याप्त समझें तथा ख़ुदा के कलाम की व्याख्याओं की ओर ध्यान न दें तो स्वाभाविक प्रमाण के अनुसार हमारा यह सिद्धान्त होना चाहिए कि हम जिस वस्तु को चाहें सुन लें और जो बात हृदय में आए बोल उठें, क्योंकि प्रकृति का नियम हमें इतना समझाता है कि आँख देखने के लिए, कान सुनने के लिए, जीभ बोलने के लिए बनाई गई है और हमें स्पष्ट तौर पर इस धोखे में डालता है कि जैसे हम देखने, सुनने तथा बोलने की शक्ति प्रयोग करने में पूर्णरूप से स्वतंत्र और अज़ाद हैं। अब देखना चाहिए कि यदि ख़ुदा का कलाम प्रकृति के नियम के संक्षेप की व्याख्या न करे तथा उसकी अस्पष्टता को अपने स्पष्ट वर्णन और खुले हुए भाषण से दूर न करे तो कितने ख़तरे हैं कि मात्र प्रकृति के नियम के अधीन हो कर उनमें लिप्त हो जाने की आशंका है। यह ख़ुदा ही का कलाम है जिसने अपने खुले हुए और नितान्त स्पष्ट वर्णन द्वारा हमें हमारे प्रत्येक कथन, कर्म, गति और स्थिरता में प्रस्तावित -निर्धारित सीमाओं पर स्थापित किया तथा मानव सभ्यता और पवित्र प्रकाश का मार्ग सिखाया। वही है जिसने आँख, कान, और जीभ इत्यादि अंगों की सुरक्षा हेतु पूर्ण चेतावनी देते हुए फ़रमाया-

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ (भाग-18)①

अर्थात् मोमिनों को चाहिए कि वे अपनी आँखों, कानों और अपने गुप्तांगों की उन लोगों से सुरक्षा करें जिन से विवाह वैध है तथा प्रत्येक अदर्शनीय, अश्रवणीय, और अकरणीय बातों से बचें कि यह उपाय उनकी आन्तरिक पवित्रता का कारण होगा। अर्थात् उनके हृदय तरह-तरह की कामुक भावनाओं से सुरक्षित रहेंगे
Ⓟ193 क्योंकि Ⓟअधिकतर कामुक भावनाओं को उत्तेजित करने वाले तथा हैवानी※ शक्तियों को उपद्रव में डालने वाले ये ही अंग हैं। अब देखिए कि क़ुर्आन करीम ने उन लोगों से बचने के लिए जिन से विवाह वैध है कैसी चेतावनी दी है और किस प्रकार खोल कर वर्णन किया कि ईमानदार लोग अपनी आँखों, कानों तथा गुप्तांगों

※-इनका सम्बंध हृदय से होता है जैसे प्रसन्नता, क्रोध इत्यादि। (अनुवादक)

①-अन्नूर:31

[P]सच्चाइयों तथा अध्यात्म ज्ञान से भरपूर हो, तो ऐसे लेख के लिखने में वही व्यक्ति [P200] सर्वप्रथम रहेगा जो ज्ञान की शक्तियों तथा जानकारियों की विशालता, सामान्य ज्ञान तथा

शेष हाशिया न. (11)

को वश में रखें तथा अपवित्रता के अवसरों और स्थानों से रोकते रहें। इसी प्रकार जीभ को सत्य और यथार्थ पर स्थापित रखने के लिए चेतावनी दी और कहा (भाग-22) [1]قُوْلُوا قَوْلًا سَدِيْدًا अर्थात् मुख से वह बात करो जो बिल्कुल सत्य और नितान्त उचित में हो तथा बेहूदा, व्यर्थ और असत्य का उसमें बिल्कुल हस्तक्षेप न हो। तत्पश्चात समस्त अंगों को स्थायित्व की प्रकृति पर चलाने के लिए एक ऐसा सुसंगठित और धमकी भरा वाक्य बतौर चेतावनी और डराने के लिए कहा जो लापरवाहों को जागृत करने के लिए पर्याप्त है और कहा-

(भाग-15) [2]اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا

अर्थात् कान, आँख, हृदय और ऐसा ही समस्त अंग और शक्तियां जो मनुष्य में मौजूद हैं उन सब के अनुचित प्रयोग करने से पूछ-ताछ होगी तथा प्रत्येक कमी-बेशी के सम्बन्ध में प्रश्न किया जाएगा। अब देखो अंगों और समस्त शक्तियों को भलाई और योग्यता के मार्ग पर चलाने के लिए ख़ुदा के कलाम में कितनी व्याख्याएँ और चेतावनियां मौजूद हैं और कैसे प्रत्येक अंग को संतुलन के केन्द्र और सदमार्ग पर स्थापित रखने के लिए पूर्ण स्पष्टता के साथ वर्णन किया गया है, जिसमें किसी प्रकार की अस्पष्टता और संक्षेप शेष नहीं रहा। क्या यह व्याख्या और विवरण प्रकृति-ग्रन्थ के किसी पृष्ठ या पन्ने को पढ़ कर ज्ञात हो सकता है। कदापि नहीं। अत: अब तुम स्वयं ही विचार करो कि खुला हुआ और स्पष्ट ग्रन्थ यह है या वह, तथा प्राकृतिक प्रमाणों के हितों और सीमाओं का इस ने वर्णन किया या उसने। हे सज्जनो यदि संकेतों से कार्य सिद्ध होता तो फिर मनुष्य को जीभ क्यों दी जाती। जिसने तुम्हें जीभ प्रदान की क्या वह स्वयं बोलने की शक्ति नहीं रखता, जिसने तुम्हें बोलना सिखाया क्या वह स्वयं नहीं बोल सकता, जिसने अपने कार्य में यह शक्ति दिखाई कि इतना विशाल संसार किसी ढांचे और तत्व की सहायता के बिना तथा राजगीरों, मज़दूरों और काष्ठशिल्पियों के बिना अपने एकमात्र इरादे से सब कुछ बना डाला। क्या उसके संदर्भ में यह कहना उचित है कि वह बात करने पर सामर्थ्यवान नहीं या सामर्थ्यवान तो है परन्तु कंजूसी के कारण अपने कलाम के वरदान से वंचित रखा। क्या यह उचित

[1]-अलअहज़ाब:71 [2]-बनी इस्राईल:37

जटिल और सूक्ष्म ज्ञानों की महारत में सर्वश्रेष्ठ तथा साहित्यिक लेख लिखने में पारंगत हो और कदापि संभव न होगा कि जो व्यक्ति उससे योग्यता, ज्ञान, निपुणता, महारत में

शेष हाशिया न. (11)

है कि सर्वशक्तिमान के सन्दर्भ में ऐसा विचार किया जाए कि वह अपनी शक्तियों में जानवरों से भी कम है, क्योंकि एक तुच्छ जानवर अपनी आवाज़ द्वारा दूसरे जानवर को निश्चित तौर पर अपने अस्तित्व की ख़बर दे सकता है, एक मक्खी भी अपनी भिनभिनाहट से दूसरी मक्खियों को अपने आने से अवगत कर सकती है, परन्तु 'ख़ुदा की पनाह' तुम्हारे कथनानुसार उस सर्वशक्तिमान में एक मक्खी जितनी भी शक्ति नहीं। अत: जब उसके संदर्भ में तुम्हारा स्पष्ट वर्णन है कि

Ⓟ194 उसका मुख कभी नहीं खुला और कभी उसे Ⓟबोलने की शक्ति नहीं हुई तो तुम्हें तो यह कहना चाहिए कि वह अधूरा और अपूर्ण है जिस की और विशेषताएँ तो ज्ञात हो गईं परन्तु बोलने की विशेषता का कभी पता न मिला। उस के संदर्भ में तुम किस मुख से कह सकते हो कि उस ने कोई खुला हुआ ग्रन्थ जिसमें उसने अपने अन्त:करण की बात को भली-भांति प्रकट कर दिया हो तुम्हें प्रदान किया है अपितु तुम्हारी राय का तो सारांश ही यही है कि ख़ुदा तआला से मार्ग-दर्शन में कुछ नहीं हो सका, तुम ही ने अपनी योग्यता और विद्वता से पहचान लिया। इसके अतिरिक्त इल्हामी शिक्षा इन अर्थों में खुली हुई है कि उसका प्रभाव समान्यतया समस्त लोगों के हृदयों पर पड़ता है तथा प्रत्येक प्रकार की तबियत उस से लाभान्वित होती है और भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वभाव उस से लाभ प्राप्त करते हैं तथा प्रत्येक तरह के अभिलाषी को इस से सहायता प्राप्त होती है। यही कारण है कि ख़ुदाई कलाम के माध्यम से अधिकांश लोगों ने मार्ग-दर्शन प्राप्त किया है और करते हैं और मात्र बौद्धिक तर्कों द्वारा बहुत ही कम अपितु दुर्लभ। अनुमान भी यही चाहता है कि ऐसा ही हो, क्योंकि यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि जो व्यक्ति सच्चा संदेशक होने के रूप में लोगों की दृष्टि में सिद्ध होकर आख़िरत (प्रलय) की घटनाओं में अपना अनुभव, परीक्षा, अवलोकन, और निरीक्षण वर्णन करता है और साथ ही बौद्धिक तर्कों को भी समझाता है, वह वास्तव में एक दोगुनी शक्ति अपने पास रखता है, क्योंकि एक तो उसके सन्दर्भ में यह विश्वास किया गया है कि वह निश्चित तौर पर वस्तु-स्थिति का निरीक्षण करने वाला तथा सच्चाई को स्वयं अपनी आँखों से देखने वाला है, दूसरे वह बतौर औचित्य भी सच्चाई के

बुद्धि में कहीं अधम और अवनत है ℗वह अपने लेख में विशेषताओं की दृष्टि से उससे ℗202
बराबर हो जाए। उदाहरणतया एक निपुण चिकित्सक जो शारीरिक शिक्षा में पूर्ण महारत

शेष हाशिया न. (11)

प्रकाश को स्पष्ट तर्कों द्वारा प्रकट करता है। अत: इन दोनों सबूतों के मिलाने से उसके सदुपदेश और नसीहत एक ज़बरदस्त आकर्षण पैदा हो जाता है जो बड़े-बड़े पत्थर हृदयों को खींच लाता है तथा प्रत्येक प्रकार के मनुष्य पर प्रभावकारी भी होता है क्योंकि उसकी बात में विभिन्न प्रकार की समझाने की शक्ति होती है जिसे समझने के लिए एक विशेष योग्यता के लोग शर्त नहीं हैं अपितु प्रत्येक निम्न, उच्च, कुशाग्र, मूर्ख ऐसे व्यक्ति के अतिरिक्त जो पूर्ण रूप से पागल हो उसके भाषणों को समझ सकते हैं और वह तुरन्त हर प्रकार के व्यक्ति की उसी तौर पर सन्तुष्टि कर सकता है कि जिस तौर पर व्यक्ति का स्वभाव बना है या जिस श्रेणी पर उसकी योग्यता है। इसलिए उसका कलाम विचारों को ख़ुदा की ओर खींचने में तथा संसार के प्रेम के परित्याग में और प्रलय की परिस्थितियों को हृदय में बैठाने में बड़ी विशाल शक्ति रखता है और उन संकुचित और अन्धकारमय कल्पनाओं में सीमित नहीं होता जिनमें केवल बुद्धिजीवियों की बातें सीमित होती हैं। इसी दृष्टि से इस का प्रभाव सामान्य और इसका लाभ पूरा होता है तथा प्रत्येक पात्र अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार उससे भर जाता है। इसी की ओर अल्लाह तआला ने अपने पवित्र कलाम (क़ुर्आन) में संकेत℗ ℗195
फ़रमाया है:

اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتۡ اَوۡدِیَۃٌۢ بِقَدَرِهَا① (भाग-13)

ख़ुदा ने आकाश से पानी (अपनी वाणी) उतारा। अत: उस पानी से प्रत्येक घाटी अपनी क्षमता के अनुसार बह निकली अर्थात् प्रत्येक को उस में से अपनी प्रकृति, विचार और योग्यता के अनुसार भाग प्राप्त हुआ। उच्च स्वभाव नीतिगत रहस्यों से लाभान्वित हुए और जो उन से भी उच्च थे उन्होंने एक अद्‌भुत प्रकाश पाया कि जो लेख और भाषण की सीमा से बाहर है तथा जो निचले स्तर पर थे उन्होंने सच्चे संदेशक की श्रेष्ठता और व्यक्तिगत कुशलताओं को देखकर हार्दिक आस्था से उसकी सूचनाओं पर विश्वास कर लिया। इस प्रकार वे भी विश्वास की नौका में बैठ कर मुक्ति के तट तक जा पहुँचे और केवल वे ही लोग बाहर रह गए जिन्हें ख़ुदा से कोई मतलब न था और मात्र संसार के ही कीड़े थे।

①-अर्रअद:18

रखता हो, जिसे दीर्घ समय के अभ्यास के कारण रोग की पहचान और बीमारी की जांच ℗203 ℗का पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त और इसके अतिरिक्त वार्ता में भी अद्वितीय है, पद्य और गद्य

शेष हाशिया न. (11)

अतएव प्रभाव शक्ति पर दृष्टि डालने से भी इल्हाम के अनुसरण का मार्ग अत्यन्त खुला हुआ और विशाल मालूम होता है,क्योंकि जानने वाले इस बात को भली भांति जानते हैं कि भाषण में उतनी ही बरकत, जोश, शक्ति, श्रेष्ठता और मनोहरता उत्पन्न होती है जितना वक्ता का क़दम विश्वास, नि:स्वार्थता और वफ़ादारी की श्रेणियों में से सर्वोच्च श्रेणी पर पहुँचा हुआ होता है। अत: यह कुशलता भी उस व्यक्ति के भाषण में प्रमाणित हो सकती है जिसको दोहरे तौर पर अध्यात्म ज्ञान प्राप्त हो। यह स्वयं प्रत्येक बुद्धिमान पर स्पष्ट है कि जोशपूर्ण भाषण कि जिस पर प्रभाव का क्रम निर्भर है मनुष्य के मुख से तब ही निकलता है जब उस का हृदय विश्वास के जोश से भरा हुआ हो तथा वही बातें हृदयों पर प्रभाव डालती हैं जो पूर्ण विश्वास करने वाले हृदयों से जोश मार कर निकलती हैं। अत: यहां भी यही सिद्ध हुआ कि प्रभाव की अधिकता की दृष्टि से भी इल्हामी प्रशिक्षण ही द्वारों का खोलने वाला है। अत: प्रभाव के सामान्य होने तथा अधिक होने की दृष्टि से केवल वह्यी की पुस्तक का खुला हुआ होना सिद्ध होता है और बस। यह समस्या निर्विवाद और स्पष्ट बातों से कुछ कम नहीं है कि ख़ुदा के बन्दों को अधिकतर लाभ पहुँचाने वाला वही व्यक्ति होता है जो इल्हाम और बुद्धि का संग्रहीता हो और उसमें यह योग्यता होती है कि उससे प्रत्येक प्रकार की तबियत और प्रत्येक प्रकार का स्वभाव लाभान्वित हो सके, परन्तु जो व्यक्ति केवल तर्क शास्त्रीय तर्कों के बल पर सद्मार्ग की ओर खींचना चाहता है यदि उसके कठिन परिश्रम पर क्रम का कुछ प्रभाव भी हो तो केवल उन्हीं विशेष स्वभावों पर होगा जो शिक्षित, योग्य और श्रेष्ठ होने के कारण उसकी गहरी और सूक्ष्म बातों को समझते हैं, दूसरे तो ऐसा हृदय और मस्तिष्क ही नहीं रखते कि उसके दार्शनिकतापूर्ण भाषण को समझ सकें। अन्तत: उसके ज्ञान का लाभ केवल उन्हीं थोड़े लोगों में सीमित रहता है जो उसके तर्कशास्त्र से परिचित हैं
℗196 और उन्हीं को इसका लाभ पहुँचता है जो ℗उसकी भांति दर्शन और तर्क शास्त्रीय तर्कों में पैठ रखते हैं। इस स्थिति में इस बात का सबूत पूर्ण स्पष्टीकरण द्वारा हो सकता है कि जब अकेली बुद्धि और वास्तविक इल्हाम की कार्यवाहियों

में महारत रखता है। जैसे वह एक रोग के उत्पन्न होने का विवरण, उसके लक्षण तथा सरस-सुबोध और विशाल ®भाषण का पूर्ण शुद्धता और सच्चाई तथा नितान्त गंभीरता®204

शेष हाशिया न. (11)

को साथ-साथ रख कर आँकलन किया जाए। अत: जिन्हें पूर्वकालीन दार्शनिकों की परिस्थितियों का ज्ञान है वे भली भांति जानते हैं कि वे अपनी शिक्षा के सामान्य प्रचार से कैसे असफल रहे और क्योंकर उनके संकुचित और अपूर्ण वर्णन ने जन-सामान्य के हृदयों पर प्रभावकारी होने से अपना वंचित होना दिखाया। फिर उनकी इस अवनति की अवस्था की तुलना में क़ुर्आन करीम के सर्वश्रेष्ठ प्रभावों को भी देखिए कि उसने किस दृढ़ता से ख़ुदा के एकेश्वरवाद को अपने सच्चे अनुयायियों के हृदयों में भरा है और कितने विचित्र रूप से उसकी सर्वश्रेष्ट शिक्षाओं ने सैकड़ों वर्षों की दृढ़ आदतों तथा विकृत कौशलों को मिटाकर और ऐसी प्राचीन परम्पराओं को जो उनके स्वभाव में रच-बस कर उनके स्वभाव का दूसरा भाग ही बन गई थीं, हृदय के अन्दर से पूर्ण रूप से दूर करके ख़ुदा के एकेश्वरवाद के मधुर रस का करोड़ों लोगों को रसपान करा दिया है, वही है जिसने महत्वपूर्ण, नितान्त उत्तम और सुदृढ़ परिणाम दिखा कर अपने अद्वितीय प्रभाव की प्रत्यक्ष साक्ष्य द्वारा बड़े-बड़े शत्रुओं से अपनी अनुपम श्रेष्ठताओं को स्वीकार कराया, यहां तक कि अत्यन्त बेईमानों और उपद्रवियों के हृदयों पर भी इसका इतना प्रभाव पड़ा कि जिसे उन्होंने क़ुर्आन करीम के वैभव की श्रेष्ठता का एक प्रमाण समझा और बेईमानी पर आग्रह करते-करते अन्तत: उन्हें भी कहना पड़ा कि (भाग-23) إِنْ هٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ[1] हां वही है जिस के शक्तिशाली आकर्षणों ने स्वभाव से सहस्त्रों श्रेणी बढ़कर ख़ुदा का ऐसा ध्यान दिलाया कि ख़ुदा के लाखों बन्दों ने ख़ुदा के एकेश्वरवाद पर अपने रक्त से मुहरें लगा दीं। ऐसा ही हमेशा से इस कार्य का प्रवर्तक और पथ-प्रदर्शक इल्हाम ही चला आया है जिससे मानव बुद्धि ने विकास प्राप्त किया अन्यथा बड़े-बड़े मनीषियों और बुद्धिमानों के लिए भी यह बात अत्यन्त दुर्लभ रही है कि उन्हें महसूस किए जाने वाले मामलों के पीछे से पीछे प्रत्येक अंश (भाग) के ज्ञात करने के लिए ऐसा अवसर हमेशा प्राप्त हो जाए कि यह बात ज्ञात कर सकें कि किस-किस प्रकृति (बनावट) और गुण से वे अंश मौजूद हैं और जिन्हें मानव शक्ति तक बुद्धि प्राप्त ही नहीं या परिश्रम और प्रयास करने के साधन उपलब्ध

① -अस्साफ़्फ़ात:16

और सुगमता के साथ वर्णन कर सकता है, उसकी तुलना में कोई अन्य व्यक्ति जिसे चिकित्सा-विज्ञान का लेशमात्र भी ज्ञान नहीं तथा वार्ता और कविता की बारीकियों और

शेष हाशिया न. (11)

नहीं हुए, वे तो उन की अपेक्षा भी अधिक अज्ञानी और अनभिज्ञ हैं। अतः इस संदर्भ में जो-जो आसानियां ख़ुदा के सच्चे और पूर्ण इल्हाम ने कि जो क़ुर्आन करीम है बुद्धि को प्रदान की हैं तथा जिन-जिन प्रयत्नों से चिन्तन और दृष्टि की सुरक्षा की है, वह एक ऐसी बात है जिस का प्रत्येक बुद्धिमान पर धन्यवाद करना अनिवार्य है। अतः क्या इस दृष्टि से कि ख़ुदा को पहचानने की बात का प्रारम्भ इल्हाम ही के माध्यम से हुआ है, और क्या इस कारण से कि ख़ुदा को पहचानने

Ⓟ197 के ज्ञान का हमेशा नए सिरे से जीवित होना Ⓟइल्हाम ही के माध्यम से होता आया है, और क्या इस विचार से कि मार्ग की कठिनाइयों से मुक्ति पाना इल्हाम ही की सहायता पर निर्भर है प्रत्येक बुद्धिमान को स्वीकार करना पड़ता है कि वह मार्ग जो नितान्त स्वच्छ, सीधा और हमेशा से खुला हुआ और उद्देश्य तक पहुँचाता हुआ चला आया है वह ख़ुदा तआला की वह्यी है। यह समझना कि वह खुली हुई किताब नहीं मात्र व्यर्थ और सरासर मूर्खता है। इसके अतिरिक्त हम इस से पूर्व ब्रह्म समाज वालों के ख़ुदा को पहचानने के संबंध में विस्तारपूर्वक लिख चुके हैं कि उनका ईमान जो केवल बौद्धिक तर्कों पर आधारित है **होना चाहिए** के पद तक सीमित **है** का पूर्ण पद उन्हें प्राप्त नहीं। अतः इस खोज से भी यही सिद्ध है कि ख़ुदाई पहचान का खुला हुआ और स्पष्ट मार्ग केवल ख़ुदाई कलाम के द्वारा प्राप्त होता है, उसकी प्राप्ति और उस तक पहुँचने का अन्य कोई माध्यम नहीं। एक नवजात शिशु को शिक्षा से वंचित रख कर केवल प्रकृति के नियम पर छोड़ दो फिर देखो कि वह इस के द्वारा जिसे ब्रह्म समाज वाले खुला हुआ सोच रहे हैं, कौन सी मारिफ़त प्राप्त कर लेता है और ख़ुदा को पहचानने की किस श्रेणी पर पहुँच जाता है। बहुत से अनुभवों से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि यदि कोई सुनी बात के तौर पर जिसका मूल इल्हाम है ख़ुदा के अस्तित्व पर सूचना न पाए तो फिर उसे कुछ पता नहीं लगता कि इस संसार का कोई रचयिता है या नहीं और यदि कोई रचयिता की खोज में कुछ ध्यान भी दे तो केवल कुछ सृष्टियां जैसे पानी, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य इत्यादि को अपनी दृष्टि में स्रष्टा और पूज्यनीय बना लेता है, जैसा कि यह बात जंगली लोगों पर दृष्टि

कोमलताओं से ℗अपरिचित मात्र है संभव नहीं कि उसके समान वर्णन कर सके। बहुत ℗205
ही प्रकट, स्पष्ट और सब की समझ में आने वाली बात है कि मूर्ख और बुद्धिमान के

शेष हाशिया न. (11)

डालने से हमेशा ठोस सत्यापन तक पहुँचती रही है। अत: यह इल्हाम ही का वरदान है जिसकी बरकतों से मनुष्य ने उस अद्वितीय और अनुपम ख़ुदा को उसी प्रकार पहचान लिया जैसा कि उसकी पूर्ण और निर्विकार हस्ती के योग्य है। जो लोग इल्हाम से अपरिचित हो गए और उनमें कोई इल्हामी किताब मौजूद न रही तथा न उन्हें इल्हाम पर सूचना पाने का कोई माध्यम प्राप्त हुआ, बावजूद इसके कि आँखें भी रखते थे और हृदय भी, परन्तु उन्हें ख़ुदा की मारिफ़त बिल्कुल प्राप्त न हुई अपितु धीरे-धीरे मानवता से भी बाहर हो गए तथा लगभग-लगभग बुद्धिहीन जानवरों की अवस्था तक पहुँच गए और प्रकृति-ग्रन्थ ने उन्हें कुछ भी लाभ न पहुँचाया। अत: स्पष्ट है कि यदि वह ग्रन्थ खुला हुआ होता तो उससे जंगली लोग लाभ उठाकर मारिफ़त अैर ख़ुदा की पहचान में उन लोगों के समान हो जाते जिन्होंने ख़ुदाई इल्हाम के माध्यम से ख़ुदा की पहचान में उन्नति की। अत: प्रकृति-ग्रन्थ बन्द होने में इस से अधिक और क्या प्रमाण होगा कि जिस किसी का कार्य केवल उस ग्रन्थ से पड़ा तथा ख़ुदा के इल्हाम का उसने कभी नाम न सुना वह ख़ुदा की पहचान ℗से ℗198
बिल्कुल वंचित अपितु मानव शिष्टाचारों से भी दूर और पृथक रहा।

यदि प्रकृति के ग्रन्थ के खुले हुए होने से तात्पर्य यह है कि वह शारीरिक तौर पर दिखाई देता है तो यह व्यर्थ विचार है जिसका इस बहस से कोई संबंध नहीं, क्योंकि जिस स्थिति में कोई व्यक्ति केवल इस प्रकृति के ग्रन्थ पर दृष्टि डालकर धार्मिक ज्ञान का कोई लाभ प्राप्त नहीं कर सका तथा जब तक इल्हाम मार्ग- दर्शन न करे ख़ुदा को पा नहीं सकता, तो फिर हमें इस से क्या कि कोई वस्तु हर समय दिखाई दे रही है अथवा नहीं।

यह भ्रम कि ख़ुदाई इल्हाम का द्वार किसी युग में बन्द रहा था। इससे भी यदि कुछ सिद्ध हो तो यही सिद्ध होता है कि ब्रह्म समाज वालों को संसार के क्रम के इतिहास से कुछ भी परिचय नहीं और बिल्कुल उस अंधे की भांति हैं कि जो मार्ग छोड़ कर किसी गढ़े में गिर पड़े फिर शोर मचाए कि हाय-हाय किसी अत्याचारी ने मार्ग में गड्ढ़ा खोद रखा है और या ऐसे द्वेषपूर्ण विचारों से यह विदित होता है कि ब्रह्म समाजी जानबूझ कर सच्चाई पर पर्दा डालते हैं तथा

भाषण में कुछ न कुछ अन्तर अवश्य होता है तथा मनुष्य जितनी ज्ञान संबंधी विशेषताएं
Ⓟ206 रखता है वे विशेषताएं अवश्य Ⓟउसके ज्ञानयुक्त भाषण में इस प्रकार से दिखाई देती हैं

शेष हाशिया न. (11)

जानबूझकर ही एक प्रत्यक्ष और मौजूद बात से इन्कारी हैं अन्यथा क्यों कर विश्वास किया जाए कि वे एक छोटे बच्चे की भांति ऐसे अपरिचित और अनभिज्ञ हैं कि अब तक उन्हें इस असंदिग्ध सच्चाई की भी कुछ ख़बर नहीं कि ख़ुदा की एकेश्वरवाद हमेशा केवल इल्हाम ही के द्वारा फैलती रही है तथा अध्यात्म ज्ञान के अभिलाषियों के लिए अनादि काल से यही द्वारा खुला रहा है। हे सज्जनो!! कुछ ख़ुदा से डरो। विरोधात्मक बातें करने में बढ़ते न जाओ। यदि आपकी बुद्धिमत्ता में कुछ विकार है तो क्या दृष्टि भी जाती रही है। क्या आपको दिखाई नहीं देता कि करोड़ों-करोड़ों एकेश्वरवादी अर्थात् इस्लाम के अनुयायी जिनके हृदय एकेश्वरवाद के उज्ज्वल झरने से ओत-प्रोत हो रहे हैं जिनके शुद्ध एकेश्वरवाद के मुक़ाबले पर आप लोगों की आस्थाओं में अनेक प्रकार से शिर्क की गन्दगी और सैकड़ों प्रकार की ख़राबी और दोष पाया जाता है। वे वही लोग हैं जिन्होंने ख़ुदा के कलाम से लाभ प्राप्त किया। ख़ुदा के कलाम का वही झरना जोश मार कर दूर-दूर तक बह निकला, उसी ने हिन्दुस्तान के शुष्क हो चुके उद्यान के भी लगभग एक तिहाई भाग को हरा-भरा कर दिया और जो शेष रह गया उसमें से भी कई हृदयों पर इस उज्ज्वल झरने का प्रभाव जा पड़ा तथा कुछ न कुछ उन्हें भी एकेश्वरवाद की ओर खींच लाया। क़ुर्आन के पहुँचने से पूर्व हिन्दुओं की पथ-भ्रष्टता जिस दशा तक पहुँच गई थी वह दशा उन पुराणों और पुस्तकों को पढ़ कर ज्ञात करना चाहिए कि जो क़ुर्आन के आने से कुछ ही समय पूर्व लिखे जा चुके थे जिन की अनेकेश्वरवादी शिक्षाओं ने सम्पूर्ण हिन्दुस्तान को
Ⓟ199 एक वृत्त की तरह Ⓟघेर लिया था ताकि तुम्हें मालूम हो कि उस युग में तुम्हारे महान ऋषियों के कैसे विचार थे और तुम्हारे तपस्वी मुनि और ऋषि किन-किन मिथ्या भ्रमों में डूब गए थे और क्यों कर निष्प्राण मूर्तियों के समक्ष हाथ जोड़ते और आह्वान के मंत्रों का उच्चारण करते थे, इसके साथ ही उस युग में अधिकांश भाग उन्हें बौद्धिक ज्ञानों में से प्राप्त हो चुका था तथा वेद के युग के सन्दर्भ में विचार और दृष्टि के अभ्यास में बहुत कुछ उन्नति कर गए थे अपितु तर्कशास्त्र और दर्शनशास्त्र में यूनानियों से कुछ कम न थे, परन्तु आस्थाएँ ऐसी अपवित्र

जैसे एक स्वच्छ दर्पण में चेहरा दिखाई देता है तथा सत्य और नीति के वर्णन के समय वे शब्द जो उसके मुख से निकलते हैं उसके ज्ञान की योग्यता ®का अनुमान लगाने के ®207

शेष हाशिया न. (11)

और दूषित थीं कि जो प्रत्यक्ष और आन्तरिक तौर पर पूर्णत: शिर्क की गन्दगियों से लथड़े हुए थे और कोई वास्तविक सच्चाई जिनके पास से भी नहीं गुज़री थी तथा सर से पैर तक झूठे और निराधार, अधम और मिथ्या थे, जिन की प्रेरणा से समस्त संसार को आपके बुद्धिमान बुज़ुर्गों ने अपना उपास्य बना रखा था। यदि एक वृक्ष ताज़ा, हरा भरा और मनमोहक दिखाई दिया उसी को अपना उपास्य बनाया, यदि कोई अग्नि की ज्वाला पृथ्वी से निकलती देखी, उसी की उपासना प्रारम्भ कर दी, जिस वस्तु को अपने रूप और विशेषता में विचित्र देखा अथवा भयंकर मालूम किया उसी को अपना परमेश्वर बना लिया न पानी छोड़ा, न वायु, न अग्नि, न पत्थर, न चन्द्रमा, न सूर्य, न पक्षी, न पशु यहां तक कि सांपों तक की पूजा की, अपितु वेदों में तो कभी सृष्टि-पूजा की शिक्षा कुछ कम थी और मूर्ति पूजा की तो अभी कुछ चर्चा ही न थी, परन्तु जो सज्जन पीछे से बड़े-बड़े तर्क-शास्त्री बन कर उन पर हाशिए चढ़ाते गए, उन्होंने सैकड़ों बनावटी परमेश्वर बनाने या स्वयं ही परमेश्वर बन जाने में वह कौशल दिखाया जिस से उनकी दृष्टियों और विचारों का अन्तिम परिणाम यह हुआ कि वे तरह-तरह के दीवानगी भरे भ्रमों में पड़ कर संसार की प्रबंध कुशल हस्ती के वास्तविक अस्तित्व तथा उसकी समस्त विशेषताओं से इन्कारी हो गए और जो कुछ उनके उपनिषदों और पुराणों तथा पुस्तकों ने हिन्दुओ के हृदयों में प्रभाव डाल दिया और जिन मार्गों पर उन्हें स्थापित कर दिया और जिन वस्तुओं की उपासना की ओर उन्हें झुका दिया वह ऐसी बात नहीं है कि जो किसी पर गुप्त हो या किसी के छुपाने से छुप सके या किसी के इन्कार से संदिग्ध हो जाए। इसी प्रकार यूनानियों का भी यही हाल था। उन्होंने भी कौवे की भांति कुशाग्र कहला कर फिर शिर्क की गन्दगी खाई तथा अकेली बुद्धि ने किसी युग में कोई ऐसा सम्प्रदाय तैयार न किया जो शुद्ध एकेश्वरवाद पर स्थापित होता। मैंने भली-भांति छान-बीन की है कि ब्रह्म समाज वालों के एकेश्वरवाद की ओर झुकाव का भी यही मूल है जो इस धर्म का संस्थापक तथा प्रवर्तक था, उसने क़ुर्आन करीम ही से एकेश्वरवाद का कुछ भाग प्राप्त किया था, परन्तु अपने दुर्भाग्यवश पूर्ण एकेश्वरवाद प्राप्त न कर सका। फिर वही एकेश्वरवाद का बीज

लिए एक मापदण्ड समझे जाते हैं तथा जो बात ज्ञान की विशालता और बुद्धि के कौशल
Ⓟ208 से निकलती है तथा जो बात संकीर्ण और संकुचित, अंधकारमय और सीमित Ⓟविचार

शेष हाशिया न. (11)

जो ख़ुदा के कलाम से लिया गया था, ब्रह्म समाज वालों में फैलता गया यदि
Ⓟ200 ब्रह्म समाज के किसी Ⓟसज्जन को हमारी इस खोज में कुछ आपत्ति हो तो अनिवार्य है कि वह हमारे इस प्रश्न का तर्कपूर्ण ढंग से उत्तर दें कि उन्हें एकेश्वरवाद का मामला क्योंकर प्राप्त हुआ। क्या बतौर सुनने के पहुँचा या उनके किसी संस्थापक ने केवल अपनी बुद्धि से खोज निकाला। यदि बतौर सुनने के पहुँचा तो स्पष्ट तौर पर वर्णन करना चाहिए कि क़ुर्आन करीम के अलावा और कौन सी किताब थी जिसने ख़ुदा का बिना भागीदार के एक होना, पत्नी और बच्चों से पवित्र होना, आवागमन और ख़ुदा के साकार होने से उज्ज्वल रहना तथा अपने अस्तित्व और सम्पूर्ण विशेषताओं में पूर्ण और अद्वितीय होना उस युग में देश हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध कर रखा था, जिस से उन्हें यह एकेश्वरवाद का ज्ञान प्राप्त हुआ, उस किताब का नाम बताना चाहिए और यदि यह दावा है कि उस प्रवर्तक को एकेश्वरवाद की सूचना बतौर सुनने के नहीं पहुँची अपितु उसने केवल अपनी ही बुद्धि के बल से इस मामले को उत्पन्न किया, तो ऐसी स्थिति में यह सिद्ध करके दिखाना चाहिए कि उपर्युक्त प्रवर्तक के समय में अर्थात जिस युग में ब्रह्म धर्म का प्रवर्तक एक धर्म जारी करने लगा, उस समय हिन्दुस्तान में क़ुर्आन करीम द्वारा अभी एकेश्वरवाद नहीं फैला था, क्योंकि यदि फैल चुका था तो फिर एकेश्वरवाद का ज्ञात करना एक आविष्कार नहीं समझा जाएगा अपितु निश्चित तौर पर यही समझा जाएगा कि उस ब्रह्म धर्म के प्रवर्तक ने क़ुर्आन करीम से ही एकेश्वरवाद के मामले को प्राप्त किया था। बहरहाल जब तक आप लोग ठोस तर्कों द्वारा मेरी इस राय का खण्डन न करें तब तक यही प्रमाणित है कि आप लोगों ने ख़ुदा तआला के एकेश्वरवाद को क़ुर्आन करीम से ही ज्ञात किया परन्तु कृतघ्न मनुष्य की तरह ने'मत के इन्कारी रहे तथा अपने उपकारी और अभिभावक का धन्यवाद अदा न किया अपितु उन लोगों की तरह जिनके स्वभाव में अशुद्धता और विकार होता है धन्यवाद के स्थान पर निन्दा धारण की। इसके अतिरिक्त **समस्त इतिहासकार**

से उत्पन्न होती है, इन दोनों प्रकार की बातों में इतना स्पष्ट Ⓟअन्तर होता है कि जैसे Ⓟ209
सूंघने की शक्ति के आगे बशर्ते कि किसी स्वाभाविक या अस्थायी विपत्ति से विकृत न

शेष हाशिया न. (11)

भली-भांति जानते हैं कि पूर्वकालीन युगों में भी जब किसी ने ख़ुदा के नाम तथा समस्त गुणों का पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त किया तो इल्हाम ही के माध्यम से किया तथा बुद्धि द्वारा किसी युग में भी ख़ुदा का एकेश्वरवाद प्रसारित और प्रचारित न हुआ। यही कारण है कि जिस स्थान पर इल्हाम न पहुँचा उस स्थान के लोग ख़ुदा के नाम से अनभिज्ञ तथा जानवरों की भांति असभ्य और अशिष्ट रहे। कौन ऐसी किताब हमारे समक्ष प्रस्तुत कर सकता है कि जो पूर्वकालीन युगों में से किसी युग में अध्यात्म ज्ञान के वर्णन में लिखी गई हो तथा वास्तविक सच्चाइयों पर आधारित हो, जिसमें लेखक ने यह दावा किया हो कि उसने ख़ुदा की पहचान के सद्मार्ग को इल्हाम द्वारा प्राप्त नहीं किया और न एक ख़ुदा की हस्ती पर बतौर सुनने के सूचना प्राप्त की है अपितु ख़ुदा का पता लगाने और ख़ुदा के गुणों के जानने और मालूम करने में केवल अपनी ही बुद्धि और अपने ही विचार और अपनी ही तपस्या तथा अपने ही परिश्रम से सहायता मिली है और किसी
की ओर से शिक्षा लिए बिना स्वयं ही ख़ुदा के Ⓟएकेश्वरवाद की समस्या को Ⓟ201
मालूम कर लिया है तथा मस्तिष्क स्वयं ही परमेश्वर की सच्ची और पूर्ण पहचान तक पहुँच गया है। कौन हमें सिद्ध करके दिखा सकता है कि कोई ऐसा समय भी था कि संसार में ख़ुदा के इल्हाम का पता-ठिकाना न था तथा ख़ुदा की पवित्र किताबों का द्वार बन्द था और उस युग के लोग मात्र प्रकृति के ग्रन्थ के माध्यम से एकेश्वरवाद और ख़ुदा की पहचान पर स्थापित थे, कौन किसी ऐसे देश का निशान बता सकता है जिसके निवासी इल्हाम के अस्तित्व से अनभिज्ञ मात्र रह कर फिर केवल बुद्धि के माध्यम से ख़ुदा तक पहुँच गए और केवल अपने ही विचार और दृष्टि से ख़ुदा तआला के 'एक' होने पर ईमान ले आए। आप लोग क्यों अज्ञानियों को धोखा देते हैं और क्यों ख़ुदा से सरासर निर्भीक होकर तुरन्त छल-कपट की बातें मुख पर लाते हैं और जो खुला हुआ है उसे बन्द और जो बन्द है उसे खुला हुआ वर्णन करते हैं। क्या आपको उस सर्वशक्तिमान की हस्ती पर ईमान है या नहीं कि जो मनुष्य के अन्त:करण की वास्तविकता को भली-भांति जानता है और जिसकी सूक्ष्म दृष्टि से बेईमान लोग गुप्त नहीं रह सकते,

Ⓟ209 हो सुगन्ध और दुर्गन्ध में स्पष्ट Ⓟअन्तर है। तुम जहाँ तक चाहो विचार कर लो तथा जिस सीमा तक चाहो सोच लो, उस सच्चाई में कोई दोष नहीं पाओगे तथा किसी ओर

शेष हाशिया न. (11)

परन्तु यही तो कठिनाई है कि आपका ईमान ही तंग और अंधकारमय स्थान की भांति है, जिस तक साफ और धूम रहित प्रकाश का निशान नहीं पहुँचा। इसी कारण आप लोगों का धर्म सहस्त्रों प्रकार की संकीर्णताओं और अंधकारों का भंडार है और ऐसा संकुचित है कि उसका कोई कोना खुला हुआ दिखाई नहीं देता और कोई समस्या औचित्य और स्पष्टता के साथ समाधानपूर्ण मालूम नहीं होती। ख़ुदा के अस्तित्व के संबंध में तो तुम सुन ही चुके हो कि आप लोगों का ईमान कैसा और कितना है। रही यह बात कि प्रतिफल और दण्ड के मामले पर आप लोगों के विश्वास की क्या स्थिति है और प्रकृति के नियम ने इस संदर्भ में आप पर किन-किन अध्यात्म ज्ञानों का द्वार खोल रखा है। अत: इस बात में भी व्यर्थ विचारों और मूर्खतापूर्ण भ्रमों के अतिरिक्त आप लोगों के हाथ में और कुछ भी नहीं, प्रतिफल और दण्ड की सूक्ष्म बातें तो निश्चित तौर पर क्या मालूम होंगी। प्रथम यही बात आप लोगों पर वास्तविक तौर पर सिद्ध नहीं कि प्रतिफल और दण्ड वास्तव में होने वाली बात है और ख़ुदा मनुष्यों को उनके कर्मों का प्रतिफल प्रदान करेगा। हां यदि मालूम है तो आप थोड़ा बौद्धिक तौर पर सिद्ध करके दिखाइए कि ख़ुदा का क्यों यह कर्तव्य है कि मनुष्य को उनके संयम का अवश्य बदला दे और दुराचारियों से उनके दुराचार और पापों की गिरफ़्त करे। जिस स्थिति में ख़ुदा पर स्वयं यही कर्तव्य नहीं कि मनुष्य की आत्मा को समस्त जानवरों की आत्माओं के विपरीत हमेशा के लिए मौजूद रखे और दूसरे समस्त प्राणियों की आत्माओं को समाप्त कर दे। तत्पश्चात केवल मनुष्य को प्रतिफल और दण्ड देना और दूसरों को इस से वंचित रखना उस का क्योंकर कर्तव्य हो जाएगा। क्या तुम्हारी नेकियों (शुभ कर्म) से खुदा को कुछ लाभ पहुँचता है और
Ⓟ202 तुम्हारे दुष्कर्मों से उसे कुछ कष्ट मिलता है Ⓟताकि वह नेकियों से आराम पाकर उन्हें नेकी का बदला दे और दुष्कर्मियों से कष्ट उठाकर उनसे शत्रुता करे। यदि तुम्हारे शुभ कर्म-दुष्कर्म से उसका न कुछ व्यक्तिगत लाभ है न हानि तो फिर तुम्हारा आज्ञा पालन या अवज्ञा उसके लिए समान है। जब समान है तो इस स्थिति में कर्मों पर अकारण दण्ड का पात्र होना क्योंकर निश्चित तौर पर सिद्ध

से कोई विघ्न नहीं देखोगे। अतः जब प्रत्येक प्रकार से प्रमाणित है कि ®जो अन्तर ज्ञान ®210
और बुद्धि संबंधी शक्तियों में गुप्त होता है वह कलाम में अवश्य प्रकट हो जाता है तथा

शेष हाशिया न. (11)

हो। क्या यह न्याय-संगत है कि कोई व्यक्ति अपनी इच्छा मात्र से दूसरे के आदेश के बिना कोई कार्य करे और दूसरे पर अकारण उसका अधिकार ठहर जाए। कदापि नहीं। उदाहरणतया 'ज़ैद' 'बकर' के आदेश के बिना कोई गढ़ा खोदे या कोई इमारत बनाए तो यद्यपि यह भी स्वीकार कर लें कि इस गढ़े या इमारत में 'बकर' का लाभ है परन्तु तब भी न्यायिक कानून की दृष्टि से 'बकर' पर कदापि अनिवार्य नहीं होता कि ज़ैद के परिश्रम और प्रयास का प्रतिफल अदा करे, क्योंकि 'ज़ैद' का वह परिश्रम केवल अपने ही विचार से है न कि बकर के अनुरोध या आदेश से। फिर जिस स्थिति में हमारे शुभ कर्मों से ख़ुदा को कुछ लाभ भी नहीं पहुंचता अपितु समस्त संसार के संयमी और शुभकर्मी बन जाने से भी ख़ुदा की बादशाहत में लेशमात्र भी बढ़ोतरी नहीं होती और न उन सब के दुष्कर्मी और दुराचारी हो जाने से भी उसकी बादशाहत में लेशमात्र विघ्न आता है। तो फिर इस स्थिति में जब तक खुदा की ओर से कोई निश्चित आश्वासन न हो निश्चित तौर पर क्यों कर समझा जाए कि वह हमारे शुभ कर्मों या हमारे दुष्कर्मों का हमें अवश्य दण्ड देगा। हां यदि ख़ुदा की ओर से कोई आश्वासन हो तो इस स्थिति में प्रत्येक सद्बुद्धि पूरे विश्वास के साथ समझती है कि वह अपने आश्वासनों को अवश्य पूर्ण करेगा प्रत्येक व्यक्ति बशर्ते कि बिल्कुल मूर्ख न हो भली-भांति जानता है कि आश्वासन का होना और आश्वासन का न होना कदापि समान नहीं हो सकते। जो सन्तोष और सांत्वना आश्वासन से प्राप्त होती है वह स्वयं निर्मित विचारों से संभव नहीं। उदाहरणतया ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन करीम में ईमानदारों को यह आश्वासन दिया है-

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا وَعْدَ اللّٰهِ
حَقًّا وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ① (भाग-5)

अर्थात् ख़ुदा सदाचारी मोमिनों को हमेशा के स्वर्ग में दाख़िल करेगा। ख़ुदा की ओर से यह सच्चा आश्वासन है तथा अपनी बातों में ख़ुदा से अधिक सच्चा और कौन है। अब स्वयं न्यायकर्ता होकर बताओ कि क्या इस स्पष्ट आश्वासन

①-अन्निसाअ :123

कदापि संभव नहीं कि जो लोग बुद्धि और ज्ञान की दृष्टि से श्रेष्ठ से श्रेष्ठ और उच्चतम
Ⓟ211 हैं वे सरस-सुबोध वर्णन और Ⓟअर्थों की बुलन्दी में एक समान हो जाएं और उनके मध्य

शेष हाशिया न. (11)

से केवल अपने ही हृदय के विचार समान हो सकते हैं, क्या कभी ये दोनों परिस्थितियां समान हो सकती हैं कि एक को एक ईमानदार अपने मुख से कुछ माल देने का अपने मुख से आश्वासन दे तथा वह ईमानदार दूसरे को कोई आश्वासन न दे, क्या शुभ संदेश देने वाला तथा शुभ संदेश न देने वाला दोनों बराबर हो सकते हैं। कदापि नहीं। अब अपने ही हृदय में सोचो कि अधिक
Ⓟ203 शुद्ध स्पष्ट और संतोषजनक वह Ⓟकार्य है कि जिसमें ख़ुदा की ओर से अच्छा प्रतिफल देने का आश्वासन हो अथवा वह कार्य जो अपने ही हृदय की योजना हो तथा ख़ुदा की ओर से ख़ामोशी हो। कौन बुद्धिमान है कि जो आश्वासन को आश्वासन रहित से उत्तम नहीं जानता, कौन सा हृदय है जो आश्वासन के लिए नहीं तड़पता। यदि ख़ुदा की ओर से हमेशा ख़ामोशी ही हो तो फिर यदि कोई ख़ुदा के मार्ग में परिश्रम भी करे तो किस आशा पर। क्या वह अपनी ही कल्पनाओं को ख़ुदा का आश्वासन मान सकता है। कदापि नहीं। जिस का इरादा ही ज्ञात नहीं कि वह कौन सा प्रतिफल देगा, क्योंकर देगा, कब तक देगा, उसके कार्य पर कौन स्वयं दृढ़ आशा कर सकता है तथा निराशा की स्थिति में क्योंकर परिश्रमों और प्रयासों पर हृदय लगा सकता है। मानव प्रयासों को गतिशील बनाने वाले तथा मनुष्य के हृदय में पूर्ण उत्तेजना उत्पन्न करने वाले ख़ुदा के आश्वासन हैं, उन्हीं पर दृष्टि डालकर बुद्धिमान मनुष्य इस संसार के प्रेम का परित्याग करता है और सहस्त्रों नातों, संबंधों और बन्धनों से ख़ुदा के लिए अलग हो जाता है। वही आश्वासन हैं जो एक लालच और इच्छा में लिप्त मनुष्य को सहसा ख़ुदा की ओर खींच लाते हैं। जब एक व्यक्ति पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ख़ुदा का कलाम (वाणी) सत्य है तथा उसका प्रत्येक आश्वासन (वायदा) एक दिन अवश्य पूर्ण होने वाला है तो उसी समय उस पर सांसारिक प्रेम शिथिल पड़ जाता है, एक क्षण में वह कुछ और ही वस्तु हो जाता है तथा किसी और ही स्तर पर पहुँच जाता है। कथन का सारांश यह कि क्या ईमान की दृष्टि से और क्या कर्म की दृष्टि से और क्या प्रतिफल और दण्ड की आशा की दृष्टि से खुला हुआ द्वार ख़ुदा के सच्चे इल्हाम तथा पवित्र कलाम का द्वार है और बस।

कोई अन्तर न रहे। अत: इस सत्य का सिद्ध होना इस दूसरे सत्य के प्रमाण को अनिवार्य है कि जो कलाम ख़ुदा का कलाम हो, उसका मानव कलाम से ℗अपने प्रत्यक्ष और ℗212

शेष हाशिया न. (11)

کلام پاک آں بیچوں دہد صد جام عرفاں را   کسے کو بیخبر زاں می چہ داند ذوق ایماں را

अनुवाद - ख़ुदा का पवित्र कलाम अध्यात्म ज्ञान के सौ जाम देता है जो इस मदिरा से अज्ञात है वह ईमान का आनन्द क्या जाने। ☆

نہ چشم است آنکہ در کوری ہمہ عمرے بسر کرداست   نہ گوش است آنکہ نہ شنیدست گاہے قول جاناں را

उसे आँख नहीं कहना चाहिए जो जीवन पर्यन्त अन्धी रही हो, न वह कान कान है जिसने कभी प्रियतम की बात न सुनी हो। ☆

सातवां भ्रम:- किसी किताब पर ख़ुदा के ज्ञान की समस्त सच्चाइयां समाप्त नहीं हो सकतीं फिर क्योंकर आशा की जाए कि अपूर्ण किताबें ख़ुदा की पहचान के पूर्ण ज्ञान तक पहुँचा देंगी।

उत्तर:- यह भ्रम उस समय ध्यान देने योग्य होता जब कोई ब्रह्म समाजी सज्जन अपनी बुद्धि के बल पर ख़ुदा को पहचानने अथवा आख़िरत (प्रलय) की किसी अन्य बात के सन्दर्भ में कोई ऐसी नवीन सच्चाई निकालता जिसकी क़ुर्आन करीम में कहीं चर्चा न होती तथा ऐसी स्थिति में ब्रह्म समाजी सज्जन नि:सन्देह गर्व से कह सकते थे कि आख़िरत (प्रलय) और ख़ुदा की पहचान के ज्ञान की समस्त सच्चाइयां इल्हामी किताब में लिखी हुई नहीं अपितु अमुक-अमुक सच्चाई बाहर रह गई है जिसे हमने खोज निकाला है। यदि ऐसा करके दिखाते तब तो कदाचित किसी मूर्ख को कोई धोखा भी दे सकते परन्तु जिस स्थिति में क़ुर्आन करीम स्पष्ट तौर पर ℗दावा कर रहा है - ℗204

مَافَرَّطْنَا فِی الْکِتٰبِ مِنْ شَیْءٍ ① (भाग-7)

अर्थात् ख़ुदाई ज्ञान संबंधी कोई सच्चाई जो मनुष्य के लिए आवश्यक है इस किताब से बाहर नहीं। और फिर फरमाया-

يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ② (भाग-30)

अर्थात ख़ुदा का रसूल पवित्र किताबें पढ़ता है जिन में समस्त पूर्ण सच्चाइयां तथा पूर्वकालीन और बाद में आने वालों के ज्ञान लिखित हैं। फिर फ़रमाया-

كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ③ (भाग-11)

①-अलअन्आम :39 ②-अलबय्यिनह :3,4 ③-हूद :2

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

आन्तरिक कौशलों में श्रेष्ठ, उच्चतम और अद्वितीय होना आवश्यक है, क्योंकि ख़ुदा के पूर्णतम ज्ञान से किसी का ज्ञान बराबर नहीं हो सकता इसी की ओर

शेष हाशिया न. (11)

अर्थात् इस किताब में दो विशेषताएँ हैं एक तो यह कि ख़ुदा तआला ने सुदृढ़ और तार्किक तौर पर अर्थात् उसे दर्शन शास्त्रीय ज्ञानों की भांति वर्णन किया है बतौर कथा या कहानी के नहीं। दूसरी विशेषता यह कि इसमें आख़िरत के ज्ञान की समस्त आवश्यकताओं की व्याख्या की गई है। फिर फ़रमाया

اِنَّهٗ لَقَوۡلٌ فَصۡلٌ وَّ مَا ھُوَ بِالۡھَزۡلِ ① (भाग-30)

अर्थात् आख़िरत के ज्ञान में जितने विवाद खड़े हों यह किताब सब का फैसला करती है अलाभकारी और व्यर्थ नहीं है। और पुनः फरमाया-

وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكَ الۡكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخۡتَلَفُوۡا فِيۡهِ‌ۙ وَهُدًى وَّرَحۡمَةً لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ② (भाग-14)

अर्थात् हमने किताब को इसलिए उतारा है ताकि अपूर्ण अक़्लों के कारण जो मतभेद उत्पन्न हो गए हैं या जान-बूझ कर किसी कमी-बेशी करने से प्रकटन में आए हैं उन सब का निवारण किया जाए तथा ईमानदारों के लिए सद्मार्ग बताया जाए। यहां इस बात की ओर भी संकेत है कि जो खराबी मनुष्य के कलामों की भिन्नता के कारण फैली है उसका सुधार भी कलाम ही पर निर्भर है अर्थात् उस ख़राबी के सुधार हेतु जो निरर्थक और दोषपूर्ण कलामों से उत्पन्न हुई है ऐसे कलाम की आवश्यकता है कि जो समस्त दोषों से पवित्र हो, क्योंकि यह नितान्त स्पष्ट बात है कि कलाम द्वारा मार्ग से लुटा हुआ कलाम द्वारा ही मार्ग पर आ सकता है केवल प्रकृति के नियम के संकेत कलाम के विवादों का फैसला नहीं कर सकते और न पथ-भ्रष्ट को उसकी पथ-भ्रष्टता पर पूर्णतया अपराधी नहीं बना सकते हैं। जैसे यदि न्यायाधीश न वादी (दावेदार) के कारणों को विस्तारपूर्वक लिखे न प्रतिवादी (जिसके विरुद्ध दावा हो) की आपत्तियों को ठोस तर्कों द्वारा खण्डित करे तो फिर क्योंकर संभव है कि मात्र उसके संकेतों से दोनों सदस्य अपने-अपने प्रश्नों, आरोपों तथा कारणों का उत्तर पा लें और क्योंकर ऐसे अस्पष्ट संकेतों पर जिन से किसी सदस्य की आपत्ति का पूर्ण सन्तोषजनक निवारण नहीं हुआ अन्तिम आदेश पारित हो सकता है। इसी

①-अत्तारिक:14,15 ②-अन्नहल:65

ख़ुदा ने भी संकेत करते हुए कहा है

(भाग-12) ① فَاِلَّمْ یَسْتَجِیْبُوْا لَکُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰہِ

शेष हाशिया न. 11

प्रकार ख़ुदा का विवाद भी मनुष्यों पर तब ही पूर्ण होता है जब उसकी ओर से यह अनिवार्यता हो कि जो लोग ग़लत भाषणों के प्रभाव से भांति-भांति की बुरी आस्थाओं में पड़ गए है उन्हें अपने पूर्ण और उचित भाषण द्वारा उनकी ग़लती से परिचित करे तथा तर्कपूर्ण और स्पष्ट वर्णन से उन को पथ भ्रष्ट होने का आभास करा दे ताकि यदि सूचना पाकर भी वे न रुकें और ग़लती का परित्याग न करें तो दण्डनीय हों। ख़ुदा तआला एक को अपराधी घोषित कर पकड़ ले और दण्ड
Ⓟदेने को तैयार हो जाए परन्तु स्पष्ट बयान द्वारा उस के दोष मुक्त होने के तर्कों Ⓟ205
का ग़लत होना सिद्ध न करे तथा उसके हृदय के सन्देहों को अपने स्पष्ट कलाम द्वारा न मिटा दे। क्या यह उसका न्याय-संगत आदेश होगा? फिर इसी की ओर दूसरी आयत में भी संकेत फरमाया-

(भाग-14) ② هُدًی لِّلنَّاسِ وَبَیِّنٰتٍ مِّنَ الْھُدٰی وَالْفُرْقَانِ

अर्थात् क़ुर्आन में तीन विशेषताएं हैं। **प्रथम**- यह कि जो धार्मिक ज्ञान लोगों को ज्ञात नहीं रहे थे उनकी ओर मार्गदर्शन करता है। **द्वितीय** - जिन ज्ञानों में पहले कुछ संक्षेप चला आ रहा था उन की व्याख्या करता है। **तृतीय** - जिन बातों में मतभेद, विवाद, उत्पन्न हो गया था उन में न्याय-संगत बात वर्णन कर के सत्य और असत्य में अन्तर प्रकट करता है। पुन: उसी सम्पूर्णता के सन्दर्भ में फ़रमाया:- (भाग-15) ③ وَکُلَّ شَیْءٍ فَصَّلْنٰہُ تَفْصِیْلًا

अर्थात् इस किताब में प्रत्येक धार्मिक ज्ञान को विस्तारपूर्वक स्पष्ट कर दिया है और इस के द्वारा मनुष्य की आंशिक उन्नति नहीं अपितु यह वे माध्यम बताता है तथा ऐसे पूर्ण ज्ञानों की शिक्षा प्रदान करता है जिन के द्वारा पूर्ण उन्नति हो। पुनः फ़रमाया:-

(भाग-14) ④ وَنَزَّلْنَا عَلَیْکَ الْکِتٰبَ تِبْیَانًا لِّکُلِّ شَیْءٍ وَّ ھُدًی وَّرَحْمَۃً وَّبُشْرٰی لِلْمُسْلِمِیْنَ

अर्थात् हम ने यह किताब तुझ पर इसलिए उतारी ताकि प्रत्येक धार्मिक सच्चाई खोल कर वर्णन कर दे और ताकि हमारा यह पूर्ण वर्णन उन के लिए जो ख़ुदा की आज्ञा का पालन करते हैं हिदायत और दया का कारण हो। फिर फ़रमाया-

(भाग-13) ⑤ الٓرٰ کِتٰبٌ اَنْزَلْنٰہُ اِلَیْکَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ

①-हूद : 15 ②-अलबक़रह :186 ③-बनी इस्राईल :13 ④-अन्नहल :90 ⑤-इब्राहीम :2

अर्थात् यदि काफ़िर लोग इस क़ुर्आन का उदाहरण प्रस्तुत न कर सकें और मुकाबला करने से असमर्थ रहें तो तुम जान लो कि यह कलाम मनुष्य के ज्ञान से नहीं अपितु ख़ुदा

शेष हाशिया न. (11)

अर्थात् हम ने यह अनुपम ग्रन्थ तुझ पर उतारा ताकि तू लोगों को प्रत्येक प्रकार के अन्धकार से निकाल कर प्रकाश में लाए। यह इस ओर संकेत है कि मनुष्य के हृदय में जितने प्रकार के भ्रम और सन्देह उत्पन्न होते हैं क़ुर्आन करीम उन सब का निवारण करता है तथा हर प्रकार के दूषित विचारों को नष्ट करता है तथा पूर्ण अध्यात्म ज्ञान का प्रकाश प्रदान करता है अर्थात् ख़ुदा की ओर लौटने और उस पर विश्वास लाने के लिए जितने भी आध्यात्म ज्ञानों और सच्चाइयों की आवश्यकता है सब प्रदान करता है पुनः फरमाया-

مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَ تَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ
هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ① (भाग-13)

अर्थात् क़ुर्आन ऐसी किताब नहीं कि मनुष्य उसे बना सके अपितु उसकी सच्चाई के लक्षण प्रकट हैं क्योंकि वह पूर्वकालीन किताबों का सत्यापन करता है अर्थात् पूर्वकालीन नबियों की किताबों में जो उस के संबंध में भविष्यवाणीयां मौजूद थीं वह उस के प्रकटन से पूर्ण सच्चाई को पहुँच गईं तथा जिन सच्ची आस्थाओं के सम्बन्ध में उन किताबों में स्पष्ट सबूत मौजूद न थे उनके सबूत क़ुर्आन ने बताए तथा उनकी शिक्षा को पूर्णता के स्तर तक पहुंचाया इस ढंग से उन किताबों का सत्यापन किया, जिस से स्वयं उसकी सच्चाई सिद्ध होती है। दूसरे सच्चाई का
℗206 ℗प्रतीक यह कि वह प्रत्येक धार्मिक सच्चाई का वर्णन करता है और वे समस्त बातें बताता है जो पूर्ण मार्ग-दर्शन पाने के लिए आवश्यक हैं और यह सच्चाई का प्रतीक इसलिए ठहरा कि यह बात मनुष्य की शक्ति से बाहर है कि उसका ज्ञान इतना विशाल और व्याप्त हो कि जिस से कोई धार्मिक सच्चाई और बारीक वास्तविकताएं बाहर न रहें। अतः इन समस्त आयतों में ख़ुदा तआला ने स्पष्ट कह दिया कि क़ुर्आन करीम सम्पूर्ण सच्चाइयों का संकलन है। यही महान् सबूत उसकी सच्चाई पर है और इस दावे पर सैकड़ों वर्ष भी गुज़र गए, परन्तु आज तक किसी ब्रह्म समाजी इत्यादि ने इसके मुक़ाबले पर सांस भी नहीं ली। ऐसी स्थिति में स्पष्ट है कि किसी ऐसी नवीन सच्चाई के प्रस्तुत किए बिना जो क़ुर्आन करीम

①-यूसुफ :112

के ज्ञान से उतरा है, जिस के विशाल और पूर्ण ज्ञान की तुलना में मानव ज्ञान अवास्तविक और अधम हैं। इस आयत में इन्नी☆ तर्क की शैली पर प्रभाव के अस्तित्व को प्रभावकारी

शेष हाशिया न. (11)

से बाहर रह गई हो यों ही दीवानों और पागलों की भांति मिथ्या भ्रमों को प्रस्तुत करना जिन की कुछ भी वास्तविकता नहीं इस बात पर ठोस तर्क है कि ऐसे लोगों को सत्यवादियों की भांति सत्य की खोज स्वीकार ही नहीं अपितु तामसिक वृति की प्रसन्नता हेतु इस चिन्ता में पड़े हुए हैं कि किसी प्रकार ख़ुदा के पवित्र आदेशों से अपितु ख़ुदा ही से स्वतंत्रता प्राप्त कर लें। इसी स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य से ख़ुदा की सच्ची किताब से जिसकी सच्चाई सूर्य से भी अधिक प्रकाशमान है ऐसे विमुख हो रहे हैं कि न वक्ता बन कर सभ्यतापूर्वक बात करते हैं और न श्रोता होने की स्थिति में किसी दूसरे की बात सुनते हैं। भला कोई उन से पूछे कि किसी ने कब कोई धार्मिक सच्चाई क़ुर्आन के मुकाबले पर प्रस्तुत की जिसका क़ुर्आन ने कुछ उत्तर न दिया तथा खाली हाथ भेज दिया। जिस स्थिति में तेरह सौ वर्ष से क़ुर्आन करीम उच्च स्वर में दावा कर रहा है कि उसमें समस्त धार्मिक सच्चाइयां भरी हुई हैं तो यह स्वभाव की कैसी गन्दगी है कि परीक्षण के बिना ऐसे सारगर्भित अनुपम ग्रन्थ को अपूर्ण समझा जाए और यह किस प्रकार का बड़प्पन है कि न क़ुर्आन करीम के वर्णन को स्वीकार करें और न उसके दावे का खण्डन करके दिखाएं। सत्य तो यह है कि इन लोगों के मुखों पर तो ख़ुदा का नाम अवश्य आ जाता है परन्तु उनके हृदय सांसारिक प्रदूषण से भरे हुए हैं। यदि कोई धार्मिक विवाद आरम्भ भी करें तो उसे पूर्ण रूप से समाप्त करना नहीं चाहते अपितु अपूर्ण वाद-विवाद का ही शीघ्रता से गला घोंट देते हैं ताकि ऐसा न हो कि कोई सच्चाई प्रकट हो जाए, फिर निर्लज्जता यह कि घर में बैठ कर इस पूर्ण एवं अनुपम ग्रन्थ को अपूर्ण वर्णन करते हैं कि जिसने पूरी स्पष्टता के साथ वर्णन कर दिया

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ① (भाग-6)

अर्थात् आज मैंने इस किताब को उतारने से धार्मिक ज्ञान को पूर्णता की पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया और सम्पूर्ण ने'मतें ईमानदारों पर पूर्ण कर दीं। हे सज्जनो! क्या तुम्हें ख़ुदा का कुछ भी भय नहीं? क्या तुम हमेशा इसी प्रकार जीवित रहोगे? क्या एक दिन ख़ुदा के समक्ष इस झूठे मुख पर Ⓟलानतें (फटकारें) नहीं पड़ेंगी? यदि Ⓟ207

①-अलमाइदह :4 ☆-देखिए पुस्तक के आरम्भ में दी गई शब्दार्थ-तालिका (अनुवादक)

®215 के अस्तित्व का प्रमाण ठहराया है ®जिसका दूसरे शब्दों में सार यह है कि ख़ुदाई ज्ञान अपने कौशल और व्यापकता के कारण मनुष्य के अपूर्ण ज्ञान से सदृश कदापि नहीं हो

शेष हाशिया न. 11

आप लोग कोई ठोस सच्चाई लिए बैठे हैं जिसके संबंध में तुम्हारा यह विचार है कि हमने घोर परिश्रम, मेहनत और बड़बोलेपन से उसे उत्पन्न किया है और जो तुम्हारे मिथ्या विचार में क़ुर्आन करीम इस सच्चाई के वर्णन करने से असमर्थ है तो तुम्हें सौगन्ध है कि सब कारोबार छोड़ कर वह सच्चाई हमारे सामने प्रस्तुत करो ताकि हम तुम्हें क़ुर्आन करीम में से निकाल कर दिखा दें, परन्तु फिर मुसलमान होने के लिए तैयार रहो। यदि अब भी आप लोग दुर्भावना और बक-बक करना न छोड़ें तथा शास्त्रार्थ का सीधा मार्ग न अपनाएं तो इसके अतिरिक्त और क्या कहें कि झूठों पर ख़ुदा की फटकार हो।

الا اے کمر بستہ بر افترا مکش خویشتن را بہ ترک حیا

हे वह जो झूठ पर कटिबद्ध है (सावधान हो जा) स्वयं को निर्लज्ज बन कर नष्ट न कर। ☆

بخاصان حق کینہ ات تا کجا گہے شرمت آید ز گیہاں خدا

ख़ुदा के विशेष बन्दों से तू कब तक शत्रुता करता रहेगा तुझे कभी तो इस संसार के प्रतिपालक से लज्जा आनी चाहिए। ☆

چو چیزے بود روشن اندر بہی برو ہرچہ بندی بود ابلہی

यदि कोई वस्तु अपने गुण के कारण श्रेष्ठतम हो तो जो भी उस पर आरोप लगाएगा वह मूर्ख ही कहलाएगा। ☆

چو بر نیک گوہر گُماں بد بری بدانند مردم کہ بد گوہری

जब तू किसी नेक मनुष्य पर कुधारणा करेगा तो लोग समझ लेंगे कि तू स्वयं अकुलीन है। ☆

چو گوئی در پاک را پُرغبار غبار دو چشمت شود آشکار

जब तू आभामय मोती को धुंधला कहेगा तो उस से तेरी आँखों का धुंधलापन प्रकट होगा।☆

سخن ہائے پُرخبث و بےمغز و خام بود بر خبیثاں نشانے تمام

गन्दी, निरर्थक और व्यर्थ बातें पापियों के पापों को ही प्रकट करती हैं। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

सकता अपितु आवश्यक है कि जो कलाम इस पूर्ण और अद्वितीय ®ज्ञान से निकला है ®216
वह भी पूर्ण और अद्वितीय ही हो तथा मानव कलामों से पूर्णतया अन्तर रखता हो। यही

शेष हाशिया न. (11)

ندانید گفتن سخن جز دروغ برحق ندارد دروغے فروغ

तुम झूठ के अतिरिक्त और कुछ कहना नहीं जानते परन्तु सत्य के समक्ष झूठ उन्नति नहीं पा सकता। ☆

نیارید یاد از حق بیچگوں پسند اوفتاد ست دُنیائے دوں

तुम अद्वितीय ख़ुदा को स्मरण नहीं करते और यह अधम संसार तुम्हें रुचिकर लगता है। ☆

بہ دنیا کسے دل بہ بندد چرا کہ ناگاہ باید شدن زیں سرا

कोई इस संसार से क्यों हृदय लगाए जब कि अचानक एक दिन इस सराय से कूच करना है। ☆

سرانجام ایں خانہ رنج ست و درد بہ پیچش نیایند مردان مرد

इस घर का परिणाम शोक और पीड़ा है मर्द लोग इसकी चाल में नहीं आते। ☆

بدیں گل میالائے دل چوں خسے کہ عہد بقایش نماند بسے

इस कीचड़ से अधम लोगों की तरह अपवित्र न कर कि उसके निवास की अवधि अधिक देर तक नहीं रहती। ☆

زمان مکافات آید فراز تو برعیش دنیا بدیں ساں مناز

प्रतिफल का दिन आ रहा है अतः तू संसार के जीवन पर गर्व न कर। ☆

فریبے مخور از زر و سیم و مال کہ ہر مال را آخر آید زوال

सोने, चांदी और माल से धोखा न खा क्योंकि अन्ततः हर माल पर पतन आ जाता है। ☆

نہ آوردہ ایم و نہ باخود بریم تہی آمدیم و تہی بگذریم

न हम कुछ साथ लाए और न साथ ले जाएंगे, ख़ाली हाथ आए थे और ख़ाली हाथ चले जाएंगे। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

पूर्णता क़ुर्आन करीम में प्रमाणित है। अतः ख़ुदा के कलाम का मनुष्य के कलाम से ऐसा ℗217℗स्पष्ट अन्तर चाहिए जैसा ख़ुदा और मनुष्य के ज्ञान , बुद्धि और शक्ति में अन्तर है,

शेष हाशिया न. (11)

الا تا نہ تابی سر از روئے دوست　　جہانے نیرزد بیک موئے دوست

सावधान! मित्र की ओर से मुख न मोड़ समस्त संसार मित्र के एक बाल की बराबरी नहीं कर सकता। ☆

خدائے کہ جاں بر رہ او فدا　　نہ یابی رہش جز پئے مصطفیٰ

वह ख़ुदा जिसके मार्ग में हमारे प्राण न्योछावर हैं उसका मार्ग तुझे मुस्तफ़ा (स.अ.व.) के अनुकरण के बिना नहीं मिल सकता। ☆

ابوالقاسم آں آفتاب جہاں　　کہ روشن شد ازوے زمین و زماں

अबुलक़ासिम (स.अ.व.) संसार को प्रकाशित करने वाला वह सूर्य है जिसके कारण पृथ्वी और युग प्रकाशमान हो गए। ☆

بشر کی بدے از ملک نیک تر　　نہ بودی اگر چوں محمدؐ بشر

मनुष्य फ़रिश्ते से उत्तम क्योंकर सिद्ध होता यदि मुहम्मद (स.अ.व.) की तरह का मनुष्य पैदा न होता। ☆

نیاید ترا شرم از کردگار　　کہ اہل خرد باشی و باوقار

क्या तुझे ख़ुदा तआला से लज्जा नहीं आती कि बुद्धिमान और सम्माननीय होने के बावजूद। ☆

پس آنگہ شوی منکر آں رسول　　کہ یابد ازو نور چشم عقول

फिर भी तू उस रसूल का इन्कारी है जिस से बुद्धि रूपी आँखें स्वयं प्रकाश प्राप्त करती हैं। ☆

ز سہو و زغفلت رہیدہ نہ　　ز طور بشر پاکشیدہ نہ

तुझे भूल और लापरवाही से मुक्ति प्राप्त नहीं हुई और मानवीय विशेषताओं से स्वतंत्र है। ☆

نیاید ز تو کار رب العباد　　مکن داوریہا ز جہل و عناد

तुझ से प्रजा के प्रतिपालक का कार्य नहीं हो सकता इस से तू अज्ञानता और बैर के कारण झगड़ा न कर। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है। (अनुवादक)

जिस स्थिति में मनुष्य एक ही प्रकार में सम्मिलित होकर फिर भी ज्ञान, बुद्धि, अनुभव और अभ्यास में भिन्नता Ⓟके कारण वर्णनों में भिन्न पाए जाते हैं और विशाल ज्ञान वाले Ⓟ218

शेष हाशिया न. (11)

مداں ناقص و ابکمش چوں جماد   کمال خدا را میفگن زیاد

ख़ुदा को स्थूल पदार्थों के समान अपूर्ण और गूंगा न समझ, तथा उसकी विशेषता को न भूल। ☆

تو خود ناقصی و دنی الصفات   منہ تہمت نقص بر پاک ذات

तू तो स्वयं अपूर्ण है और अपवित्र गुण रखता है अत: पवित्र ख़ुदा की पवित्र हस्ती पर अपूर्णता का दोष न लगा। ☆

خیالات بیہودہ کردت تباہ   خود از پائے خود اوفتادی بچاہ

व्यर्थ विचारों ने तुझे बरबाद कर दिया और तू स्वयं अपने पैरों से चलकर कुएं में जा पड़ा। ☆

خیالت شبے ہست تاریک و تار   فزودہ برآں شب زکیں صد غبار

तेरे विचार रात्रि के समान घोर अन्धकारमय हैं जिस पर तेरे द्वेष के कारण सौ पर्दे पड़ गए हैं। ☆

نہ دل را چو دُزداں بشب شاد کن   بترس و ز روز سزا یاد کن

चोरों की भांति रात होने पर अपने हृदय को प्रसन्न न कर अपितु भय और दण्ड के दिन को स्मरण कर। ☆

اگر در ہوا ہمچو مرغاں پری   وگر برسرِ آب ہا بگذری

यदि तू पक्षियों की भांति वायु में उड़े और इसी प्रकार पानियों पर चले। ☆

Ⓟوگر ز آتش آئی سلامت بروں   وگر خاک را زرکنی از فسوں Ⓟ208

और अग्नि में से भी सुरक्षित निकल आए और जादू से मिट्टी को सोना भी बना दे। ☆

نیاری کہ حق را کنی زیر و پست   مکن ژاژ خائی چوں مجنوں و مست

फिर भी यह संभव नहीं कि तू सत्य को नष्ट कर सके अत: पागलों और बेसुध लोगों की तरह बकवास न कर। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

तथा कुशाग्र बुद्धि वालों के विचार की पहुँच तक सीमित ज्ञान रखने वाला तथा मन्द बुद्धि वाला कदापि नहीं पहुँच सकता तो फिर ख़ुदा जो किसी प्रकार में भागीदारी से पूर्णतया

शेष हाशिया न. 11

خدا ہر کہ را کرد مہر منیر نہ گردد ز دست تو خاک حقیر

जिसे ख़ुदा ने प्रकाशमान सूर्य बनाया है वह तेरे हाथों तुच्छ मिट्टी नहीं बन सकता। ☆

دل خود بہرزہ مسوز اے دنی نہ کاہد ز مکر تو افزودنی

हे अधम मनुष्य! अपने हृदय को व्यर्थ में न जला बढ़ने वाली वस्तु तेरी चतुराइयों से घट नहीं सकती। ☆

بہارست و باد صبا در چمن کند نازہا با گل و یاسمن

बसन्त ऋतु है और प्रात:काल की समीर उद्यान में गुलाब और चमेली के साथ अठखेलियां कर रही है। ☆

زنسرین و گلہائے فصل بہار نسیم صبا مے وزد عطر بار

सेवती और बसंत ऋतु के फूलों से सुगंधित वायु सुगंध उड़ाती हुई चल रही है। ☆

تو اے ابلہ افتادہ اندر خزاں ہمہ برگ افشاندہ چوں مفلساں

परन्तु हे मूर्ख! तू पतझड़ में पड़ा हुआ है और दरिद्रों के समान तेरे सब पत्ते झड़ गए हैं। ☆

بہ قرآں چرا برسرِکیں دوی نہ دیدی ز قرآں مگر نیکوی

क़ुर्आन पर शत्रुतापूर्वक क्यों प्रहार करता है तूने कदाचित क़ुर्आन में नेकी के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं देखा। ☆

اگر نامدے در جہاں ایں کلام نماندے بہ دنیا ز توحید نام

यदि संसार में यह कलाम न आता तो संसार में एकेश्वरवाद का नाम भी शेष न रहता। ☆

جہاں بود افتادہ تاریک و تار از و شد منوّر رخ ہر دیار

संसार घोर अंधकारमय होता इसके कारण प्रत्येक देश प्रकाशित हो गया। ☆

☆ -डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

पवित्र और नि:सन्देह पूर्ण ®विशेषताओं का संकलनकर्ता तथा अपनी समस्त विशेषताओं ®219
में किसी भागीदारी के बिना अकेला है उस से किसी की समानता की थोड़ी सी संभावना

शेष हाशिया न. (11)

بہ توحید را ہی ازو شد عیاں   ترا ہم خبر شد کہ ہست آں یگاں

इसके कारण एकेश्वरवाद का मार्ग प्रकट हो गया, और तुझे भी पता लग गया कि ख़ुदा है। ☆

وگرنہ بہ بیں حال آبائے خویش   بہ انصاف بنگر درآں دین و کیش

नहीं तो फिर अपने ही बुज़ुर्गों का हाल देख ले और उनके धर्म और सिद्धान्तों पर न्यायपूर्वक दृष्टि डाल। ☆

بود آں فرومایہ بدگوہرے   کہ از منعم خود بتابد سرے

वह व्यक्ति अधम और अकुलीन होता है जो अपने उपहारी से विद्रोह करता है। ☆

ز اندازۂ خویش برتر مپر   پزشکے مکن چوں ندانی ہنر

तू अपनी सामर्थ्य से अधिक न उड़, यदि तुझे ज्ञान नहीं है तो चिकित्सा न कर। ☆

یقیں داں کہ ایں کار یزدانی است   نہ از دخل و تدبیر انسانی است

विश्वास कर कि यह धर्म ख़ुदा की ओर से है तथा मानव युक्ति का इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं। ☆

شد ایں دیں بفضل خدا ارجمند   نہ کار فریب است و سالوس و بند

यह इस्लाम धर्म ईश्वर की कृपा से सम्मानित है छल, चापलूसी और फांसना इसका कार्य नहीं। ☆

درخشد درو نور چوں آفتاب   تو کوری نمی بینی اش زیں حجاب

इस से सूर्य के समान प्रकाश चमकता है तू अंधा है इसलिए वह तुझे दिखाई नहीं देता। ☆

بہ ناپاکی دل مشو بدگماں   وگر حجتے است بنما عیاں

अपने हृदय की अपवित्रता के कारण तू उस से कुधारणा न रख हां यदि कोई प्रमाण है तो प्रस्तुत कर । ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

क्योंकर उचित हो और क्योंकर कोई सृष्टि होकर स्रष्टा के असीम ज्ञानों से अपने तुच्छ
Ⓟ220 और क्षुद्र ज्ञानों को Ⓟसमान कर सके। क्या इस सत्य के सिद्ध होने में अभी कुछ कमी

शेष हाशिया न. (11)

به شوق دل آویختن را بساز   پس آنگہ بہ بیں قدرت کارساز

हार्दिक रुचि से उसके साथ संबंध पैदा कर फिर बिगड़े काम बनाने वाले ख़ुदा की शक्ति देख। ☆

گزیں کن زقومت یکے انجمن   کہ بایک تن از ماکند یک سخن

तू अपनी क़ौम में से एक कमेटी का चयन कर, ताकि वे सब मिलकर हम से एक फ़ैसला कर लें। ☆

بما ہست فضل خداوند پاک   ز باطل پرستاں نداریم باک

हम पर पवित्र ख़ुदा की कृपा है हम असत्य के पुजारियों से भयभीत नहीं होते। ☆

بجوش است فیض احد در دلم   کہ تا بندِ ہر طالبے بگسلم

एक ख़ुदा का वरदान मेरे हृदय में जोश पर है ताकि मैं प्रत्येक अभिलाषी के बन्धन तोड़ दूँ। ☆

خدا را درِ لطفہا ہست باز   نسیم عنایات در اہتزاز

ख़ुदा की कृपाओं के द्वार खुले हैं, और महरबानियों की वायु चल रही है। ☆

کسے کو بتابد سر از عدل و داد   کجا دم زند پیش صدق و سداد

जो व्यक्ति न्याय और इन्साफ से विमुख होता है वह सत्य और ईमानदारी के समक्ष कब दम मार सकता है। ☆

کلام خدا ہر دم از عز و جاہ   کند روئے ناشرم سارس سیاہ

ख़ुदा का कलाम हर समय बड़े तेज और प्रताप के साथ उसके निर्लज्ज मुख को काला करता रहता है। ☆

چساں رائے شخصے بگردد بلند   کہ طغیانِ نفسش بگردن فگند

उस व्यक्ति की राय क्योंकर मान्य होगी जिसे उसके अपने मनोवृत्ति के जोशों ने पछाड़ रखा हो। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

रह गई है कि कलाम का समस्त प्रत्यक्ष और आन्तरिक प्रताप और श्रेष्ठता ज्ञान संबंधी शक्तियों तथा व्यवहारिक शक्तियों के अधीन है। क्या कोई ऐसा मनुष्य भी है जिसने अपने

शेष हाशिया न. (11)

دل پاک و جولان فکر و نظر دو جوہر بود لازم یک دگر

पवित्र हृदय और सोच-विचार की तीव्रता ये दोनों बातें समवाय (परस्पर अनिवार्य) हैं।☆

چوصوف صفا در دل آمیختند مداد از سواد عیوں ریختند

जब लोग हृदय रूपी पवित्रता का कपड़े का टुकड़ा हृदय (की दवात) में डाल लेते हैं तो आँखों के स्याही रूपी काले भाग को उसमें डालते हैं। ☆

خدا آفریدت زیک مشت خاک خودت داد نان تا نگردی ہلاک

ख़ुदा ने तुझे ख़ाक की एक मुट्ठी से पैदा किया और स्वयं ही तुझे रोटी दी ताकि तू नष्ट न हो जाए। ☆

بہر حاجتت گشت حاجت روا کشود از ترحّم دو دست عطا

तेरी प्रत्येक आवश्यकता का वह स्वयं अभिभावक हुआ और दयापूर्वक अपनी दानशीलता के हाथ तेरे लिए खोल दिए। ☆

چہ پاداش جودش چنیں میدہی کہ در علم خود را نظیرش نہی

फिर तू उसकी कृपा का बदला क्या यही दे रहा है कि ज्ञान में स्वयं उसके समान बना फिरता है। ☆

چہ خود را برابر کنی باخدائے تفو برچنیں عقل و ادارک و رائے

क्या तू ख़ुदा के साथ स्वयं को बराबर समझता है ऐसी बुद्धि, बोध और राय पर हज़ार खेद। ☆

خدا چوں دلے را بہ پستی فگند بکوشش نیاریم کردن بلند

जब ख़ुदा किसी हृदय को अपमान की गहराई में गिराता है तो फिर हम उसे अपने प्रयास से ऊँचा नहीं कर सकते। ☆

بکوشیم و انجام کار آں بود کہ آں خواہش و رائے یزداں بود

हम तो केवल (समझाने का) प्रयत्न करते हैं परन्तु परिणाम वही होता है जो ख़ुदा की राय और इच्छा हो। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

Ⓟ221 Ⓟव्यक्तिगत अनुभव और अवलोकन से किसी भाग में इस सत्य को देख नहीं लिया? अतएव जबकि यह सत्य इतना ठोस, दृढ़, प्रकट और परिचित है कि किसी स्तर की

शेष हाशिया न. (11)

आठवां भ्रमः- मनुष्य को ख़ुदा तआला से वार्तालाप करने वाला मानना सभ्यता से दूर है। एक नश्वर की अनश्वर और अनादि से क्या तुलना तथा मुट्ठी पर धूल की प्रकाश की अनिवार्यता से क्या समरूपता।

उत्तरः- यह भ्रम भी सरासर निराधार और निरर्थक है तथा इसके उन्मूलन के
Ⓟ209 लिए मनुष्य को इसी बात का समझना Ⓟपर्याप्त है कि जिस दयालु और कृपालु ने मनुष्यों में से ख़ुदा का इरफ़ान रखने (वली लोग) वाले लोगों के हृदय में अपनी पहचान के लिए असीम जोश पैदा कर दिया तथा अपने प्रेम, अपने अनुराग तथा अपने लगाव की ओर ऐसा आकर्षित किया कि वे अपने अस्तित्व को भुला बैठे। ऐसी स्थिति में यह मानना कि ख़ुदा उन से परस्पर बात करना नहीं चाहता उस कथन के समान है कि जैसे उनका समस्त प्रेम और अनुराग ही व्यर्थ है तथा उनके सारे जोश एक पक्षीय विचार हैं, परन्तु विचार करना चाहिए कि ऐसा विचार कितना निरर्थक है। क्या जिसने मनुष्य को अपनी सानिध्यता की योग्यता प्रदान की तथा अपने प्रेम और अनुराग की भावनाओं से व्याकुल कर दिया, उस के कलाम के वरदान से उसका अभिलाषी वंचित रह सकता है? क्या यह उचित है कि ख़ुदा का प्रेम और ख़ुदा का प्यार तथा ख़ुदा के लिए आसक्त और लीन हो जाना यह सब संभव और उचित है तथा ख़ुदा की शान में कुछ बाधक नहीं, परन्तु अपने सच्चे प्रेमी के हृदय पर ख़ुदा का इल्हाम उतरना असंभव और अनुचित है तथा ख़ुदा की प्रतिष्ठा में बाधक है। मनुष्य का ख़ुदा के प्रेम रूपी अथाह सागर में डूबना और फिर किसी भी स्थान (श्रेणी) में न रुकना इस बात पर ठोस साक्ष्य है कि उनकी अद्‌भुत प्रकृति वाली आत्मा ख़ुदा को पहचानने के लिए बनाई गई है। अतः जो वस्तु ख़ुदा को पहचानने के लिए बनाई गई है यदि उसे मारिफ़त का पूर्ण माध्यम जो इल्हाम है प्राप्त न हो तो यह कहना पड़ेगा कि ख़ुदा ने उसे अपनी मारिफ़त के लिए नहीं बनाया। हालांकि इस बात से ब्रह्म समाज वालों को भी इन्कार नहीं कि सुशील मनुष्य की आत्मा ख़ुदा को पहचानने की भूखी और प्यासी है। अतः अब उन्हें स्वयं ही समझना चाहिए कि जिस स्थिति में सुशील व्यक्ति स्वयं स्वाभाविक

बुद्धि उसके समझने से असमर्थ नहीं, तो ®इस स्थिति में नितान्त मूर्ख वह व्यक्ति है कि ®222
जो अपूर्ण मनुष्यों में तो इस सत्य को मानता है परन्तु उस पूर्णतम हस्ती के पवित्र कलाम

शेष हाशिया न. (11)

तौर पर ख़ुदा के परिचय का अभिलाषी है तथा यह सिद्ध हो चुका है कि ख़ुदा की परिचय का पूर्ण माध्यम ख़ुदा के इल्हाम के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। ऐसी स्थिति में यदि वह पूर्ण परिचय के माध्यम की प्राप्ति असंभव, अपितु उसे खोजना सभ्यता से दूर है तो ख़ुदा की नीति पर बहुत बड़ा आरोप होगा कि उसने मनुष्य को अपने परिचय के लिए जोश तो दिया परन्तु परिचय का माध्यम प्रदान न किया मानो जितनी भूख दी उसी के अनुसार रोटी देना न चाही और जितनी प्यास लगा दी उतना पानी देना स्वीकार न हुआ परन्तु बुद्धिमान लोग इस बात को भली-भांति समझते हैं कि ऐसा विचार ख़ुदा की महान कृपाओं का सरासर तिरस्कार और अनादर है। जिस स्वच्छंद नीतिवान ने मनुष्य का समस्त सौभाग्य इस में रखा है कि वह इसी संसार में शाने ख़ुदावन्दी की किरणों को पूर्ण रूप से देखे ताकि इस शक्तिशाली आकर्षण से ख़ुदा की ओर खींचा जाए। फिर ऐसे कृपालु और दयालु
के संदर्भ में यह विचार करना कि वह ®मनुष्य को अपने इच्छित सौभाग्य तथा ®210
अपनी स्वाभाविक श्रेणी तक पहुँचाना नहीं चाहता। यह ब्रह्म समाजी सज्जनों की विचित्र बुद्धिमत्ता है।

नौवां भ्रम:- यह आस्था कि ख़ुदा आकाश से अपना कलाम उतारता है यह बिल्कुल उचित नहीं, क्योंकि प्रकृति के नियम इस की पुष्टि नहीं करते तथा ऊपर से नीचे आती हुई कोई आवाज़ हम कभी नहीं सुनते अपितु इल्हाम केवल उन विचारों का नाम है जो विचार और दृष्टि के प्रयोग से बुद्धिमान लोगों के हृदयों में उत्पन्न होते हैं और कुछ नहीं।

उत्तर:- जो सच्चाई स्वयं ही सिद्ध है जिसे ख़ुदा का ज्ञान रखने वाले असंख्य लोगों ने स्वयं अपनी आँखों से देख लिया है तथा जिस का प्रमाण प्रत्येक युग में सत्याभिलाषी को प्राप्त हो सकता है यदि उस से कोई ऐसा व्यक्ति इन्कारी हो जो आध्यात्मिक विवेक से अपरिचित है और या यदि उसके सत्यापन से किसी ऐसे व्यक्ति का विचार जिसके हृदय पर पर्दे पड़े हों असमर्थ और अपूर्ण ज्ञान असफल रहे तो उस सच्चाई की कुछ भी क्षति नहीं और न ऐसे लोगों के व्यर्थ बोलने से प्रकृति के नियमों से बाहर हो सकती है। उदाहरणतया तुम विचार करो

Ⓟ223 में जिसका अपने पूर्णतम ज्ञानों में अद्वितीय और अनुपम Ⓟहोना सबके निकट मान्य है उपर्युक्त सत्य के मानने से विमुख होता है। कुछ इस्लाम के विरोधी यह प्रमाण प्रस्तुत

शेष हाशिया न. (11)

कि यदि कोई उस आकर्षण शक्ति से जो चुम्बक में है अपरिचित हो तथा उसने कभी चुम्बक देखा ही न हो और यह दावा करे कि चुम्बक एक पत्थर है और जहां तक प्रकृति के नियमों का मुझे ज्ञान है इस प्रकार के आकर्षण को मैंने किसी पत्थर में देखा ही नहीं। इसलिए मेरी राय में चुम्बक के सन्दर्भ में आकर्षण की विशेषता विचार की गई है वह अनुचित है, क्योंकि वह प्रकृति के नियमों के विपरीत है। तो क्या उस की व्यर्थ बातों से चुम्बक की एक प्रमाणित विशेषता अविश्वसनीय और संदिग्ध हो जाएगी। कदापि नहीं। अपितु ऐसे मूर्ख की इन व्यर्थ बातों से यदि कुछ सिद्ध भी होगा तो यही सिद्ध होगा कि वह नितान्त मूर्ख और अनभिज्ञ है कि जो अपनी अज्ञानता को वस्तु की दुर्लभता का प्रमाण ठहराता है तथा सहस्त्रों अनुभवी लोगों की साक्ष्य को स्वीकार नहीं करता। भला यह क्योंकर हो सके कि प्रकृति के नियमों के लिए यह भी शर्त हो कि प्रत्येक व्यक्ति सामान्यतया स्वयं उनका परीक्षण करे। ख़ुदा ने मनुष्य को बाह्य और आन्तरिक शक्तियों में भिन्नता के साथ उत्पन्न किया है उदाहरणतया कुछ की देखने की शक्ति नितान्त तीव्र है, कुछ कमज़ोर दृष्टि वाले हैं, कुछ लोग अंधे भी हैं। जो कमज़ोर दृष्टि वाले हैं वे जब देखते हैं कि तीव्र दृष्टि वालों ने दूर से किसी बारीक वस्तु को जैसे शुक्ल पक्ष की प्रथम रात के चन्द्रमा को देख लिया तो वे इन्कार नहीं करते अपितु इन्कार करना अपने अपमान और दोष प्रकट हो जाने का कारण समझते हैं तथा बेचारे अंधे तो ऐसे मामले में दम भी नहीं मारते। इसी प्रकार जिन की सूँघने की शक्ति क्षीण हो चुकी है, वह सैकड़ों विश्वस्त और
Ⓟ211 सत्यवादी लोगों के मुख से जब सुगंध-दुर्गन्ध की ख़बरें सुनते हैं Ⓟतो विश्वास कर लेते हैं तथा लेशमात्र सन्देह नहीं करते और भली-भांति जानते हैं कि इतने लोग झूठ नहीं बोलते अवश्य सच्चे हैं और निःसन्देह हमारी ही सूंघने की शक्ति समाप्त हो चुकी है कि हम सूंघ कर ज्ञात करने वाली वस्तुओं को ज्ञात करने से वंचित हैं। इसी प्रकार आन्तरिक योग्यताओं की दृष्टि से मनुष्यों में भिन्नता है। कुछ निम्न स्तर के हैं तथा काम वासनाओं में लिप्त हैं और कुछ हमेशा से ऐसे श्रेष्ठ और शुद्धात्मा होते चले आए हैं जो ख़ुदा से इल्हाम पाते रहे हैं और

करते हैं कि यद्यपि बौद्धिक तौर पर यही अनिवार्य ज्ञात होता है कि ख़ुदा का कलाम
Ⓟअद्वितीय होना चाहिए, परन्तु ऐसा कलाम कहां है जिसका अद्वितीय होना किसी स्पष्ट Ⓟ224

शेष हाशिया न. 11

निम्न प्रकृति के लोग जो स्वयं को गुप्त रखते हैं उनका श्रेष्ठ और उज्ज्वल स्वभाव वाले लोगों की व्यक्तिगत विशेषताओं का इन्कार करना ऐसा ही है जैसे कोई अन्धा या कमज़ोर दृष्टि रखने वाला तीव्र दृष्टि वाले की देखी हुई वस्तुओं से इन्कार करे या जैसे एक **अख़शम** व्यक्ति जिस की जन्म से ही सूंघने की शक्ति न हो सूंघने की शक्ति रखने वाले व्यक्ति की सूंघकर ज्ञात की हुई वस्तुओं से इन्कारी हो।

फिर इन्कारी को दोषी करने के लिए भी जो प्रत्यक्ष युक्तियां हैं वही युक्तियां आन्तरिक तौर पर मौजूद हैं। उदाहरणतया जो जन्मजात घ्राण-शक्तिविहीन है यदि वह सुगन्ध और दुर्गन्ध के अस्तित्व से इन्कार कर बैठे और जितने भी घ्राण-शक्ति रखने वाले लोग हैं सब को झूठा और भ्रमी ठहराए तो उसे यों समझा सकते हैं कि उसे यह कहा जाए कि वह अधिकांश वस्तुओं जैसे वस्त्रों में से कुछ पर इत्र लगा कर तथा कुछ को खाली रखकर घ्राण-शक्ति रखने वाले व्यक्ति का परीक्षण कर ले ताकि अनुभव की पुनरावृति से उसे इस बात पर विश्वास हो जाए कि घ्राण-शक्ति का अस्तित्व भी निश्चित और वास्तविक है और ऐसे लोग वास्तव में पाए जाते हैं कि जो सुगंधित और असुगंधित में अन्तर कर लेते हैं। इस प्रकार अनुभव की पुनरावृति से सत्याभिलाषी पर इल्हाम का अस्तित्व सिद्ध हो जाता है, क्योंकि जब इल्हाम वाले पर वे परोक्ष की बातें तथा गुप्त सूक्ष्मताएँ प्रकट होती हैं जो मात्र बुद्धि से प्रकट नहीं हो सकतीं और इल्हामी किताब उन अद्भुत बातों पर आधारित होती है जिन पर कोई दूसरी किताब नहीं होती। तब सत्याभिलाषी उसी तर्क से समझ लेता है कि ख़ुदा का इल्हाम एक ऐसा सत्य है जिसका अस्तित्व प्रमाणित है और यदि शुद्धात्मा लोगों में से हो तो स्वयं सदमार्ग पर उचित ढंग से चलने से अपने हार्दिक प्रकाश की दृष्टि से एक सीमा तक अल्लाह के वलियों (ऋषियों) की तरह ख़ुदा के इल्हाम को प्राप्त भी कर लेता है जिससे उसे रिसालत की वह्यी पर पूर्ण विश्वास के तौर पर ज्ञान प्राप्त हो जाता है। अत: सत्याभिलाषी के लिए कि जो इस्लाम स्वीकार करने पर हार्दिक सत्य और आध्यात्मिक श्रद्धा तथा शुद्ध आज्ञाकारिता से रुचि प्रकट करे तो हम ही इस प्रकार से सन्तुष्ट करने का दायित्व लेते हैं।

तर्क से सिद्ध हो। यदि क़ुर्आन करीम अद्वितीय है तो उसकी अद्वितीयता किसी स्पष्ट
Ⓟ225 तर्क से सिद्ध करना चाहिए, क्योंकि Ⓟउसकी अद्वितीय सरसता तथा सुबोधता पर

शेष हाशिया न. 11

Ⓟ212 وان کان احد فی شک من قولی فلیر جع الینا بصدق Ⓟ القدم واللہ علی مانقول قدیر و ھو فی کل امر نصیر

(यदि कोई व्यक्ति मेरे कथन के संबंध में सन्देह में है तो सच्चाई के साथ हमारे पास आए। हम जो कह रहे हैं उस पर अल्लाह शक्तिमान है तथा वह प्रत्येक बात में सहायक है। अनुवादक)

यह विचार करना कि जो-जो सूक्ष्मताएँ विचार और दृष्टि के प्रयोग से लोगों पर प्रकट होती हैं वही इल्हाम हैं इनके अतिरिक्त और कोई वस्तु इल्हाम नहीं। यह भी एक ऐसा भ्रम है जिसका कारण आन्तरिक नेत्रहीनता और अज्ञानता मात्र है। यदि मानव विचार ही ख़ुदा का इल्हाम होते तो मनुष्य भी ख़ुदा की भांति अपनी विचार और चिन्तन शक्ति द्वारा परोक्ष की बातों को ज्ञात कर सकता, परन्तु स्पष्ट है कि यद्यपि मनुष्य कैसा ही बुद्धिमान हो विचार करके कोई परोक्ष की बात बता नहीं सकता तथा शाने ख़ुदावन्दी का कोई निशान प्रकट नहीं कर सकता तथा उसके कलाम में ख़ुदा की विशेष शक्ति का कोई लक्षण उत्पन्न नहीं होता, अपितु यदि वह विचार करते करते मर भी जाए तब भी उन गुप्त बातों को ज्ञात नहीं कर सकता कि जो उस की बुद्धि, दृष्टि और ज्ञानेन्द्रियों से बहुत दूर हैं और न उसका कलाम ऐसा श्रेष्ठ होता है कि जिसके मुकाबले से मानव शक्तियाँ असमर्थ हों। अतः इस कारण से बुद्धिमान को विश्वास हेतु पर्याप्त कारण हैं कि मनुष्य जो कुछ अपने विचार और चिन्तन से भले या बुरे विचार उत्पन्न करता है वे ख़ुदा का कलाम नहीं बन सकते। यदि वह ख़ुदा का कलाम होता तो मनुष्य पर परोक्ष के समस्त द्वार खुल ही जाते और वह वे बातें वर्णन कर सकता जिन का वर्णन ख़ुदावन्द की शक्ति पर निर्भर है, क्योंकि ख़ुदा के काम और कलाम में ख़ुदाई की झलकियों का होना आवश्यक है, परन्तु यदि किसी के हृदय में यह सन्देह उत्पन्न हो कि नेक और बद युक्तियां तथा प्रत्येक बुराई और अच्छाई के सन्दर्भ में नीतियाँ तथा तरह-तरह की छल-कपट की बातें जो विचार और चिन्तन के समय मनुष्य के हृदय में पड़ जाती हैं, वे किस ओर से तथा कहां से

केवल वही व्यक्ति सूचित हो सकता है जिसकी मूल भाषा अरबी हो तथा लोगों पर उसकी अद्वितीयता प्रमाण नहीं हो सकती कि आरोप की गुंजायश न रहे और न उससे

शेष हाशिया न. (11)

पड़ जाती हैं और सोचते-सोचते क्योंकर अचानक मतलब की बात सूझ जाती है। इसका उत्तर यह है कि समस्त विचार **ख़ल्क़ुलल्लाह** हैं (अल्लाह के पैदा किए हुए हैं) **अमरुल्लाह** नहीं (ख़ुदा के आदेश)। यहां ख़ल्क़ और अम्र में एक सूक्ष्म अन्तर है। **ख़ल्क** तो ख़ुदा के उस कर्म से अभिप्राय है कि जब ख़ुदा तआला संसार की किसी वस्तु को साधनों के माध्यम से उत्पन्न करके समस्त साधनों का कारण होने की दृष्टि से अपनी ओर सम्बद्ध करे। **अम्र** वह है जो साधनों के माध्यम के बिना शुद्ध रूप से ख़ुदा तआला की ओर से हो तथा उसमें किसी साधन की मिलावट न हो। अत: ख़ुदा का कलाम जो उस सर्वशक्तिमान की ओर से उतरता है उसका उतरना अम्र के संसार से है न कि ख़ल्क़ के संसार से और मनुष्यों के हृदयों में जो-जो विचार, चिन्तन और सोचने के समय उत्पन्न होते हैं वे सबके सब Ⓟख़ल्क़ के संसार से हैं कि जिनमें ख़ुदा की शक्ति साधनों Ⓟ213
के परिप्रेक्ष्य में तथा शक्तियों के अधीन कार्यरत होती है तथा उन के सन्दर्भ में कथन का विवरण यह है कि ख़ुदा ने मनुष्य को इस भौतिक संसार में तरह-तरह की शक्तियों और ताकतों के साथ उत्पन्न करके उन के स्वभावों को एक ऐसे प्रकृति के नियम पर आधारित कर दिया है अर्थात् उनकी उत्पत्ति में कुछ इस प्रकार की विशिष्टता रख दी है कि जब वे किसी अच्छे या बुरे कर्म में अपने विचार को गति दें तो उसी के अनुसार उन्हें युक्तियां भी सूझ जाया करें जैसे प्रत्यक्ष शक्तियों और ज्ञानेन्द्रियों में मनुष्य के लिए प्रकृति का यह नियम रखा गया है कि जब वह अपनी आँख खोले तो कुछ न कुछ देख लेता है और जब वह अपने कानों को किसी ध्वनि की ओर लगा दे तो कुछ न कुछ सुन लेता है। इसी प्रकार जब वह किसी शुभकर्म या दुष्कर्म में सफलता का कोई मार्ग सोचता है तो कोई न कोई युक्ति सूझ जाती है। नेक व्यक्ति सदमार्ग में विचार करके अच्छी बातें निकालता है तथा चोर सेंध लगाने के मार्ग में विचार करके सेंध लगाने का कोई उत्तम उपाय खोज निकालता है। अतएव जिस प्रकार दुष्कर्म के संदर्भ में मनुष्य को बुराई के बड़े-बड़े सूक्ष्म और बारीक उपाय सूझ जाते हैं, इसी प्रकार मनुष्य जब उसी समय को शुभ कार्य में उपयोग करता है तो भले कार्य के उत्तम

लाभान्वित हो सकते हैं। इसका उत्तर-स्पष्ट हो कि यह अपूर्ण बहाना उन्हीं लोगों का है जिन्होंने हार्दिक निष्ठा से इस ओर कभी ध्यान नहीं दिया कि क़ुर्आन की अद्वितीयता को

शेष हाशिया न. (11)

विचार भी सूझ जाते हैं। जिस प्रकार बुरे विचार यद्यपि कि कैसे ही सूक्ष्म और बारीक तथा जादू का सा प्रभाव रखने वाले ही क्यों न हों ख़ुदा का कलाम नहीं हो सकते इसी प्रकार मनुष्य के स्वयं उत्पन्न किए हुए विचार जिन्हें वह अपने विचार में अच्छा समझता है ख़ुदा का कलाम नहीं हैं। सारांश यह कि नेकों को जो अच्छी युक्तियाँ सूझती हैं तथा चोरों, डाकुओं, हत्यारों, व्यभिचारियों या कुटिल लोगों को विचार और चिन्तन के उपरान्त बुरी युक्तियां सूझती हैं वे स्वाभाविक लक्षण और विशेषताएं हैं तथा ख़ुदा तआला का समस्त साधनों का कारण होने के कारण उन्हें ख़ल्क़ुल्लाह (ख़ुदा के उत्पन्न किए हुए) कहा जाता है न कि अम्रुल्लाह। वे मनुष्य के लिए ऐसी ही स्वाभाविक विशेषताएं हैं जैसे वनस्पतियों के लिए रेचन (दस्त आना) या मलावरोध (क़ब्ज़) शक्ति अथवा अन्य शक्तियां स्वाभाविक गुण हैं। अतः जिस प्रकार अन्य वस्तुओं में अल्लाह तआला ने तरह-तरह के गुण रखे हैं उसी प्रकार मनुष्य की विचार और चिन्तन शक्ति में यह गुण रखा है कि मनुष्य जिस अच्छे या बुरे कार्य में उस से सहायता लेना चाहता है उस से उसी प्रकार की सहायता मिलती है। एक कवि किसी की निन्दा में कविता या पद बनाता है उसे चिन्तन द्वारा निन्दा के पद सूझते जाते हैं, दूसरा कवि उसी व्यक्ति की प्रशंसा करना चाहता है उसे प्रशंसा का ही विषय सूझता है। अतः इस प्रकार के अच्छे और बुरे विचार ख़ुदा की विशेष इच्छा का
Ⓟ214 Ⓟदर्पण नहीं हो सकते और न उसका कर्म और कथन कहला सकते हैं। ख़ुदा का पवित्र कलाम वह कलाम है कि जो मानव शक्तियों से पूर्णतया श्रेष्ठ और महानतम है तथा गुणवत्ता, शक्ति और पवित्रता से परिपूर्ण है, जिस के प्रकटन की प्रथम शर्त यही है कि मानव शक्तियां पूर्णतया निरस्त और बेकार हों, न विचार हो न चिन्तन अपितु मनुष्य मुर्दे के सदृश हो तथा समस्त साधन खण्डित हों तथा ख़ुदा जिस का अस्तित्व निश्चित और वास्तविक है स्वयं अपने कलाम को अपनी विशेष इच्छा से किसी के हृदय पर उतारे। अतः समझना चाहिए कि जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश केवल आकाश से आता है आंख के अन्दर से उत्पन्न नहीं हो सकता, इसी प्रकार इल्हाम का प्रकाश भी विशेष तौर पर ख़ुदा की ओर

किसी विद्वान से ज्ञात करें अपितु क़ुर्आनी प्रकाशों को देखकर ℗विमुख हो जाते हैं ताकि ℗227
ऐसा न हो कि उस प्रकाश की कुछ छाया उन पर पड़ जाए अन्यथा क़ुर्आन करीम की

शेष हाशिया न. (11)

से तथा उसकी इच्छानुसार उतरता है, यों ही अन्दर से जोश नहीं मारता, जबकि ख़ुदा वास्तव में मौजूद है और वह वास्तव में देखता सुनता, जानता और कलाम करता है तो फिर उसका कलाम उसी जीवित और स्थापित रहने और रखने वाले की ओर से होना चाहिए न यह कि मनुष्य के अपने ही विचार ख़ुदा का कलाम बन जाएं। हमारे अन्दर से वे ही अच्छे या बुरे विचार जोश मारते हैं कि जो हमारे स्वभाव के अनुमान के अनुसार हमारे अन्दर समाए हुए हैं, परन्तु वे असीमित ज्ञान और असीमित युक्तियां हमारे हृदय में क्योंकर समावेश कर सकें। इससे अधिकतम और क्या कुफ़्र होगा कि मनुष्य ऐसा विचार करे कि ख़ुदा के पास जितने ज्ञान, युक्ति और परोक्ष के रहस्यों के भण्डार हैं, वे सब हमारे ही हृदय में विद्यमान हैं तथा हमारे ही हृदय से जोश मारते हैं। अत: दूसरे शब्दों में इसका सारांश यही हुआ कि वास्तव में हम ही ख़ुदा हैं तथा हमारे अतिरिक्त अन्य कोई हस्ती स्वयं से स्थापित तथा स्वयं अपनी विशेषताओं से विशेष्य मौजूद नहीं जिसे ख़ुदा कहा जाए, क्योंकि यदि वास्तव में ख़ुदा मौजूद है तथा उसके असीमित ज्ञान उसी से विशिष्ट हैं जिनका मापदण्ड हमारा हृदय नहीं हो सकता तो ऐसी स्थिति में यह कथन कितना गलत तथा निरर्थक है कि ख़ुदा के असीमित ज्ञान हमारे ही हृदय में भरे पड़े हैं तथा ख़ुदा की नीति और युक्ति के समस्त भण्डार हमारे ही हृदय में समा रहे हैं, मानो ख़ुदा का ज्ञान उतना ही है जितना हमारे हृदय में मौजूद है। अत: विचार करो कि यदि यह ख़ुदा होने का दावा नहीं तो और क्या है, परन्तु क्या यह संभव है कि मनुष्य का हृदय ख़ुदा की सम्पूर्ण विशेषताओं और विलक्षणताओं का संग्रहीता हो जाए? क्या यह उचित है कि एक संभावित कण अनिवार्य तौर पर सूर्य बन जाए। कदापि नहीं, कदापि नहीं। हम पहले भी उल्लेख कर चुके हैं कि ख़ुदा के उपास्य होने की विशेषताएं जैसे परोक्ष-ज्ञान, नीति की बारीकियों का उसकी परिधि में होना तथा दूसरे प्राकृतिक निशान मनुष्य से कदापि प्रकटित नहीं हो सकते। ख़ुदा का कलाम वह है जिसमें ख़ुदा
की महानता, ख़ुदा की शक्ति, ख़ुदा की ℗बरकत, ख़ुदा की नीति, ख़ुदा की ℗215
अद्वितीयता पाई जाए। अत: वे समस्त शर्तें क़ुर्आन करीम में हैं जिसका प्रमाण

अद्वितीयता सत्य के जिज्ञासुओं के लिए ऐसी प्रत्यक्ष और प्रकाशमान है कि जो सूर्य की
Ⓟ228 भांति अपनी Ⓟकिरणों को हर ओर फैला रही है, जिसके समझने और जानने के लिए

शेष हाशिया न. (11)

ख़ुदा ने चाहा तो यथास्थान होगा। अतः यदि अब भी ब्रह्म समाज वालों को ऐसे इल्हाम के अस्तित्व से इन्कार हो कि जो परोक्ष की बातों तथा दूसरी प्राकृतिक बातों पर आधारित हो तो उन्हें अपनी आँख खोलने के लिए क़ुर्आन करीम को ध्यान पूर्वक देखना चाहिए ताकि उन्हें ज्ञात हो कि इस क़ुर्आन करीम में परोक्ष की ख़बरों का कैसा एक दरिया तथा उन समस्त प्राकृतिक बातों का कि जो मानव शक्तियों से बाहर हैं प्रवाहित है और यद्यपि विवेक और दृष्टि के अभाव के कारण उन क़ुर्आनी श्रेष्ठताओं को स्वयं ज्ञात न कर सकें तो हमारी इस पुस्तक को तनिक आँख खोलकर पढ़ें ताकि वे परोक्ष की बातों तथा प्रकृति के रहस्यों को कि जो क़ुर्आन करीम में भरे हुए हैं थोड़े नमूने के तौर पर ज्ञात हो जाएं। उन्हें यह भी ज्ञात रहे कि ख़ुदा के इल्हाम के अस्तित्व के प्रमाणित होने के लिए जो विशेष तौर पर ख़ुदा की ओर से उतरता है तथा परोक्ष की बातों पर आधारित होता है एक अन्य मार्ग भी खुला हुआ है और वह यह है कि ख़ुदा तआला मुहम्मद की उम्मत में कि जो सच्चे धर्म पर स्थापित और दृढ़ हैं हमेशा ऐसे लोग उत्पन्न करता है जो ख़ुदा की ओर से इल्हाम पाने वाले होकर परोक्ष की ऐसी बातें बताते हैं जिनका बताना ख़ुदा के अतिरिक्त जो अकेला और भागीदार रहित है किसी के अधिकार में नहीं। ख़ुदा तआला इस पवित्र इल्हाम को उन्हीं ईमानदारों को प्रदान करता है जो सच्चे हृदय से क़ुर्आन करीम को ख़ुदा का कलाम जानते हैं तथा निष्ठा और निष्कपटता से उस पर कार्यरत होते हैं तथा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा का सच्चा और कामिल पैग़म्बर तथा समस्त पैग़म्बरों से श्रेष्ठतम, उच्चतम, ख़ातमुन्नबिय्यीन, अपना पथ-प्रदर्शक और मार्ग-दर्शक समझते हैं। दूसरों को यह इल्हाम अर्थात् यहूदियों, ईसाइयों, आर्यों तथा ब्रह्म समाजियों इत्यादि को कदापि नहीं होता अपितु क़ुर्आन करीम के पूर्णरूप से अनुसरण करने वालों को होता रहा है और अब भी होता है और भविष्य में भी होगा। यद्यपि रिसालत की (नबी होने की) वह्यी आवश्यकता के अभाव की दृष्टि से समाप्त है परन्तु यह इल्हाम जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निष्कपट सेवकों को होता है यह

कोई कठिनाई और सन्देह नहीं। यदि द्वेष और शत्रुता का अंधकार मध्य में न हो तो वह पूर्ण प्रकाश थोड़ा सा ध्यान देने से ®ज्ञात हो सकता है। यह सत्य है कि क़ुर्आन करीम ®229

शेष हाशिया न. (11)

किसी युग में भी समाप्त नहीं होगा। यह इल्हाम रिसालत की वह्यी पर एक श्रेष्ठतम प्रमाण है जिसके सामने प्रत्येक इन्कारी तथा इस्लाम विरोधी अपमानित और बदनाम है और चूंकि यह मुबारक इल्हाम अपनी समस्त बरकत, सम्मान तथा प्रताप के साथ केवल उन सम्मानित लोगों में पाया जाता है जो उम्मते मुहम्मदिया (मुहम्मद की उम्मत) में सम्मिलित हैं तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सेवक हैं। दूसरे किसी सम्प्रदाय में यह पूर्ण प्रकाश जो ख़ुदा तआला के सानिध्य, स्वीकारिता और प्रसन्नता के शुभ संदेश प्रदान करता है, कदापि नहीं पाया जाता। इसलिए ®उस मुबारक इल्हाम का अस्तित्व केवल ®216 इल्हाम की सच्चाई को सिद्ध नहीं करता अपितु यह भी सिद्ध करता है कि संसार में मान्य और सद्मार्ग पर जो समुदाय है वह केवल इस्लाम का समुदाय है, शेष समस्त लोग मिथ्या के उपासक, कुटिल तथा ख़ुदा के प्रकोप के पात्र हैं। मूर्ख लोग मेरी इस बात को सुनते ही तरह-तरह की बातें बनाएंगे तथा इन्कार करते हुए सर हिलाएंगे अथवा बुद्धिहीनों और उपद्रवियों की भांति उपहास करेंगे, परन्तु उन्हें समझना चाहिए कि अकारण इन्कार तथा उपहास का व्यवहार करना सुशील लोगों तथा सत्याभिलाषियों का कार्य नहीं अपितु उन दुष्प्रकृति और उपद्रवी लोगों का कार्य है जिन्हें ख़ुदा और सत्य से कोई मतलब नहीं। संसार में सहस्त्रों वस्तुओं में ऐसी विशेषताएं हैं जो बौद्धिक तौर पर समझी नहीं जातीं, मनुष्य केवल अनुभव से उन्हें समझता है। इसी कारण सामान्य तौर पर समस्त बुद्धिमानों का यही नियम है कि जब अनुभव की पुनरावृत्ति से किसी वस्तु की विशेषता प्रकट हो जाती है तो फिर उस विशेषता के अस्तित्व के प्रमाण में किसी बुद्धिमान का कोई सन्देह शेष नहीं रहता तथा परीक्षण के पश्चात् वही व्यक्ति सन्देह करता है जो बिल्कुल गधा है। उदाहरणतया रसौत में जो रेचन (दस्त) शक्ति है या चुम्बक में जो आकर्षण शक्ति है। यद्यपि इस बात पर कोई तर्क स्थापित नहीं कि इनमें ये शक्तियां क्यों हैं। तो यद्यपि उन के अस्तित्व के विवरण पर बौद्धिक तौर पर कोई तर्क स्थापित न हो, परन्तु ठोस साक्ष्य की आवश्यकता, अनुभव और परीक्षण की आवश्यकता की दृष्टि से प्रत्येक बुद्धिमान को स्वीकार

की अद्वितीयता के कुछ कारण ऐसे हैं कि उन्हें ज्ञात करने के लिए कुछ अरबी भाषा का
Ⓟ230 ज्ञान आवश्यक है, परन्तु यह बड़ी भूल और मूर्खता है कि ऐसा विचार किया Ⓟजाए कि

शेष हाशिया न. (11)

करना पड़ता है कि वास्तव में रेचन-शक्ति तथा चुम्बक में आकर्षण-शक्ति मौजूद है। यदि कोई उनके अस्तित्व से इस आधार पर इन्कार करे कि मुझे बौद्धिक तौर पर कोई सबूत नहीं मिलता तो ऐसे व्यक्ति को प्रत्येक बुद्धिमान पागल और दीवाना समझता है तथा मूर्ख और बुद्धिहीन ठहराता है। अत: अब हम ब्रह्म समाज वालों और दूसरे विरोधियों की सेवा में अनुरोध करते हैं कि हम ने इल्हाम के सन्दर्भ में जो कुछ वर्णन किया है अर्थात् यह कि वह अब भी उम्मते मुहम्मदिया के लोगों में पाया जाता है तो उन्हीं से विशेष है उनके अतिरिक्त में कदापि नहीं पाया जाता। हमारा यह वर्णन बिना सबूत नहीं अपितु जैसा अनुभव द्वारा सहस्त्रों सच्चाइयाँ ज्ञात की जा रही है ऐसा ही यह भी अनुभव और परीक्षण द्वारा प्रत्येक अभिलाषी पर प्रकट हो सकता है और यदि किसी को सत्य की खोज हो तो उसका सिद्ध कर दिखाना भी हमारा दायित्व है इस शर्त पर कि कोई ब्रह्म समाजी अथवा अन्य कोई इस्लाम धर्म का विरोधी सत्य का अभिलाषी बन कर तथा हार्दिक निष्ठा के साथ इस्लाम धर्म स्वीकार करने का लिखित आश्वासन प्रकाशित करके निष्कपटता
Ⓟ217 और शुद्ध भावना तथा आज्ञा-पालन के साथ आए Ⓟ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ① कुछ लोग यह भ्रम भी प्रस्तुत करते हैं कि संसार में परोक्ष की बातें बताने वाले कई सम्प्रदाय पाए जाते हैं कि जो कभी न कभी तथा कुछ न कुछ बता देते हैं तथा कभी न कभी उन का कहा हुआ कुछ सच भी हो जाता है जैसे ज्योतिषी, नुजूमी, सामुद्रिक विद्वान, देवेज्ञ, रमलविद्या जानने वाला, शगुन देखने वाला तथा कुछ दीवाने और वर्तमान युग में मस्मरेज़्म की कुछ बातें उन से प्रकट होती रही हैं तो फिर परोक्ष के मामले इल्हाम की सच्चाई पर ठोस सबूत होंगे। इसके उत्तर में समझना चाहिए कि ये समस्त सम्प्रदाय जिनका ऊपर उल्लेख हुआ केवल कल्पना और अनुमान अपितु भ्रमों के सहारे बातें करते हैं। निश्चित और वास्तविक ज्ञान उन्हें कदापि नहीं होता और न उनका ऐसा दावा होता है। ये लोग कुछ सांसारिक घटनाओं की जो सूचना देते हैं तो उनकी भविष्यवाणियों का केन्द्र केवल लक्षण तथा काल्पनिक साधन और कारण होते हैं जिन्होंने निश्चित और विश्वास की श्रेणी

①-आले इमरान:64

क़ुर्आन के चमत्कार के समस्त कारण अरबी भाषा के ज्ञान पर ही निर्भर हैं या समस्त क़ुर्आनी चमत्कार तथा उसकी सम्पूर्ण महानतम विशेषताएँ केवल अरबों पर

शेष हाशिया न. (11)

को छुआ भी नहीं होता तथा उन से धोखे, आशंका और ग़लती का सन्देह दूर नहीं होता अपितु उनकी अधिकांश सूचनाएं सरासर निराधार, निर्मूल और केवल झूठी निकलती हैं। इस वर्णित सरासर झूठ और घटना के विपरीत निकलने के उन की भविष्यवाणियों में सम्मान, मान्यता, सहयोग और सफलता के प्रकाश नहीं पाए जाते। ऐसी सूचनाएँ बताने वाले अपनी व्यक्तिगत परिस्थितियों में अधिकांश, दरिद्र, दुर्भाग्यशाली, वंचित, अपमानित, हतोत्साहित, कमीने, असफल तथा निराश ही दिखाई देते हैं तथा परोक्ष के मामलों को अपनी इच्छानुसार कदापि नहीं कर सकते अपितु उनकी परिस्थितियों पर ख़ुदा के प्रकोप के लक्षण ही प्रकट होते हैं तथा ख़ुदा की ओर से उन्हें कोई बरकत, सम्मान और सहायता प्राप्त नहीं होती, परन्तु अंबिया (नबी का बहुवचन) और औलिया (वली का बहुवचन) केवल ज्योतिषियों की भांति परोक्ष के मामलों को प्रकट नहीं करते अपितु ख़ुदा की पूर्ण कृपा तथा अत्यन्त दया से जो प्रतिपल उनके साथ होती है, ऐसी श्रेष्ठतम भविष्यवाणियां बताते हैं जिनमें मान्यता के प्रकाश और सम्मान के सूर्य की भांति चमकती हुई दिखाई देती हैं जो सम्मान और सहायता के शुभ संदेश पर आधारित होती हैं न कि दुर्भाग्य और दरिद्रता पर(1) क़ुर्आन करीम की

हाशिए का हाशिया न. (1)

इन दिनों मौलवी अबू अब्दुल्लाह साहिब क़सूरी की एक पत्रिका जिसके अन्त में उन्होंने इल्हाम और वह्यी के सन्दर्भ में कुछ अपनी राय प्रकट की है संयोग से मेरी दृष्टि से गुज़री। यद्यपि सही और स्वच्छता के साथ भली-भांति स्पष्ट नहीं होता कि आदरणीय मौलवी साहिब के इस लेख का उद्देश्य क्या है। जो कुछ मैंने उन की पत्रिका को पढ़कर ज्ञात किया है वह संदेहात्मक तौर पर इस भ्रम में डालता है कि मौलवी साहिब को ख़ुदा के वलियों (ऋषियों) के इल्हाम से इन्कार है और जो कुछ उनके हृदय में है अल्लाह ही उसे अधिक जानता है।

बहरहाल मैंने जो कुछ उनकी पत्रिका से समझा है वह यह है कि प्रथम

℗231 ही खुल सकती हैं और दूसरों के लिए उन्हें ज्ञात करने के समस्त ℗मार्ग बन्द हैं।

शेष हाशिया न. (11)

℗ الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ
اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى
رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ
رَبِّهِمْ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا
لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ.① وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ
نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ.②
كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ
مَجْنُوْنٌ اَتَوَاصَوْا بِهٖ بَلْ هُمْ قَوْمٌ
طَاغُوْنَ.③ فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ
رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ.④
قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ

यह उस किताब की आयतें हैं जो नीतिशास्त्रों का
℗219 संकलन है। क्या लोगों को इस बात से आश्चर्य हुआ कि हम ने उन में से एक की ओर जो वह्यी भेजी कि तू लोगों को डरा तथा उन्हें जो ईमान लाए यह शुभ संदेश दे कि उनका क़दम उनके प्रतिपालक के निकट सत्य पर है। काफ़िरों ने उस रसूल के संबंध में कहा कि यह तो बिल्कुल जादूगर है तथा उन्होंने रसूल को सम्बोधित करके कहा कि हे वह व्यक्ति ! जिस पर ज़िक्र उतरा तू तो दीवाना है। इसी प्रकार उन से पहले लोगों के पास कोई ऐसा रसूल नहीं आया जिसे उन्होंने जादूगर या पागल नहीं कहा। क्या उन्होंने एक दूसरे को वसीयत कर रखी थी। नहीं अपितु यह क़ौम ही उपद्रवी है। अत: तू उन्हें सत्य का मार्ग स्मरण कराता रह तथा ख़ुदा की कृपा से न तू दैवज्ञ (काहिन) है और न तुझे किसी जिन्न की प्रेतबाधा और दीवानगी है। उन्हें कह कि यदि समस्त जिन्न और मनुष्य

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

महोदय ने एक शाब्दिक विवाद आरम्भ करके इल्हाम के सन्दर्भ में लिखा है कि शब्दकोश में इल्हाम के अर्थ ये हैं

الہام چیزے دردل انداختن وآنچہ خدادر دل اندازد۔

(ख़ुदा जो बात हृदय में डाल देता है वही इल्हाम है।☆)

तत्पश्चात तुरन्त उस पर यह राय प्रकट कर दी है कि जब कि इल्हाम केवल हृदय के विचार का नाम है चाहे अच्छा हो या बुरा। तो फिर इससे किसी वली, सदात्मा या ईमानदार की विशिष्टता नहीं क्योंकि प्रत्येक के हृदय में भांति-भांति के विचार गुज़रा करते हैं तथा संसार में कौन है जो विचारों से रिक्त हो। तत्पश्चात मौलवी साहिब ने कुछ संक्षिप्त और अस्पष्ट बातें लिखकर लेख का अन्त कर दिया है तथा कोई ऐसी इबारत विवरण और व्याख्यास्वरूप नहीं

①-यूनुस :2 ②-अलहिज्र:7 ③-अज़्ज़ारियात :53 ④-अत्तूर :30

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

कदापि नहीं, कदापि नहीं। यह बात प्रत्येक विद्वान पर स्पष्ट है कि क़ुर्आन करीम की

शेष हाशिया न. 11

ⓟ220 عَلٰۤی اَنۡ یَّاۡتُوۡا بِمِثۡلِ ہٰذَا الۡقُرۡاٰنِ لَا یَاۡتُوۡنَ بِمِثۡلِہٖ وَلَوۡ کَانَ بَعۡضُہُمۡ لِبَعۡضٍ ظَہِیۡرًا ۱ وَاِنۡ کُنۡتُمۡ فِیۡ رَیۡبٍ مِّمَّا نَزَّلۡنَا عَلٰی ... فَاۡتُوۡا بِسُوۡرَۃٍ مِّنۡ مِّثۡلِہٖ ۪ وَادۡعُوۡا شُہَدَآءَکُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ اِنۡ کُنۡتُمۡ صٰدِقِیۡنَ فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا وَلَنۡ تَفۡعَلُوۡا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیۡ وَقُوۡدُہَا النَّاسُ وَالۡحِجَارَۃُ ۚۖ اُعِدَّتۡ لِلۡکٰفِرِیۡنَ ۲ وَاَسَرُّوا النَّجۡوَی ٭ۖ الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا ٭ۖ ہَلۡ ہٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُکُمۡ ۚ

इस बात पर सहमत हो जाएं कि क़ुर्आन जैसी कोई अन्य किताब बना लाएं तो वे कभी बना नहीं सकेंगे यद्यपि कुछ उनके सहायक भी हों, और यदि तुम इस कलाम के सन्दर्भ में कि जो हम ने अपने बन्दे पर उतारा है किसी प्रकार के सन्देह में हो अर्थात् यदि तुम्हारे निकट उसने वह कलाम स्वयं बना लिया है या जिन्नों से सीखा है या जादू का कोई प्रकार है या कविता है या किसी अन्य प्रकार का सन्देह है तो तुम भी यदि सच्चे हो तो इसकी एक सूरह के बराबर उस जैसी बनाकर दिखाओ तथा अपने अन्य सहायकों अथवा उपास्यों से सहायता ले लो और यदि न बना सको और स्मरण रखो कि कदापि नहीं बना सकोगे तो उस अग्नि से डरो जिस का ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है, काफ़िर परस्पर ये बातें करते हैं कि यह जो पैग़म्बरी का दावा करता है इसमें क्या अधिकता है एक तुम जैसा आदमी है।

शेष हाशिए का हाशिया न. 1

लिखी जिस से ज्ञात होता कि मौलवी साहिब इस बात को मानने वाले और इक़रार करने वाले हैं कि ख़ुदा के वली और कामिल मौमिनीन ख़ुदा के दरबार में एक विशेष संबंध रखते हैं तथा ख़ुदा उन्हें ⓟअपने कलाम के द्वारा ⓟ219
जब चाहता है कुछ परोक्ष की बातों पर सूचित करता है तथा अपने पवित्र वाक्यों से उन्हें सम्मानित करता है तथा अन्य को वह पद इस ہَلْ یستوِی الاعمٰی والبصیر के आदेशानुसार प्राप्त नहीं हो सकता। अतः मौलवी साहिब की इस लेखन शैली से जो उनकी पत्रिका में लिखी है यह सन्देह अवश्य गुज़रता है कि उन्हें अल्लाह के वलियों के इल्हाम के सन्दर्भ में हृदय में कुछ आशंका है। ख़ुदा न करे यदि मौलवी साहिब का उद्देश्य यही है कि जो समझा जाता है तो निःसन्देह मौलवी साहिब ने बड़ी भारी ग़लती की है। अल्लाह के वलियों का ख़ुदा की ओर से इल्हाम वाले होने से इन्कार करना प्रत्येक मुसलमान

①-बनीइस्राईल :89 ②-अलबक़रह :24,25

अद्वितीयता के अधिकांश कारण ऐसे सरल और शीघ्र समझ आने वाले हैं कि जिन्हें

शेष हाशिया न. (11)

ⓟ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚۖ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۔① خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ۔② سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْۤ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ۔③ اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ۔④

ⓟ221 अतः क्या तुम जान बूझ कर जादू के बीच में आते हो। पैग़म्बर ने कहा कि मेरा ख़ुदा हर बात को जानता है चाहे आकाश में हो चाहे पृथ्वी पर वह अपनी हस्ती में बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है जिस से कोई बात छुप नहीं सकती, परन्तु काफ़िर पैग़म्बर की कब सुनते हैं। वे तो क़ुर्आन के सन्दर्भ में यह कहते हैं कि उसने स्वयं बना लिया है अपितु उनका यह भी कहना है कि यह कवि है भला यदि सच्चा है तो हमारे सम्मुख कोई निशान प्रस्तुत करे जैसे पहले नबी भेजे गए थे। मनुष्य के स्वभाव में शीघ्रता है, शीघ्र ही मैं तुम्हें अपने निशान दिखाऊँगा। अतः तुम मुझ से शीघ्रता तो न करो, शीघ्र ही हम उन्हें आबाद संसार के किनारों तक निशान दिखाएंगे और स्वयं उन्हीं में हमारे निशान प्रकट होंगे यहां तक कि सत्य उन पर खुल जाएगा। क्या वे कहते हैं कि इसे दीवानगी है, नहीं अपितु बात तो यह है कि ख़ुदा ने उनकी ओर सत्य भेजा और वे सत्य को स्वीकार करने से घृणा कर रहे हैं।

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

से दूर है तथा मौलवी सज्जनों से दूरतम। क्या मौलवी साहिब को ज्ञात नहीं कि हज़रत मूसा की माँ से बतौर इल्हाम ख़ुदा का कलाम करना, हवारियों से बतौर इल्हाम ख़ुदा का कलाम करना स्वयं क़ुर्आन करीम में लिखित रूप में है। हालांकि इन सब में से न कोई नबी था और न कोई रसूल था। यदि मौलवी साहिब यह उत्तर दें कि हम अल्लाह के वलियों के ख़ुदा की ओर से
ⓟ220 इल्हाम वाले होने के मानने वाले तो हैं परन्तु उसका अपितु ⓟनाम इल्हाम नहीं वह्यी रखते हैं तथा हमारे निकट इल्हाम केवल हृदय के विचार का नाम है जिसमें काफ़िर, मौमिन, दुराचारी और सदात्मा समान हैं, किसी को कोई विशेषता नहीं तो यह केवल शाब्दिक विवाद है तथा मौलवी साहिब इस में भी ग़लती पर हैं, क्योंकि इल्हाम शब्द जो अधिकांश स्थानों पर सामान्य तौर पर वह्यी के अर्थों में चरितार्थ होता है तथा शब्द-कोषीय अर्थों की दृष्टि से

①-अलअंबिया :4-6 ②-अलअंबिया :38 ③-हामीम सज्दह :54 ④-अलमोमिन :71

जानने और मालूम Ⓟकरने के लिए अरबी भाषा में योग्यता की कुछ भी आवश्यकता नहीं, Ⓟ232

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ Ⓟ222

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ
السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ بَلْ
اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ
مُّعْرِضُوْنَ ۱ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ
تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ
اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ
وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ وَالشُّعَرَآءُ
يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ
كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ
مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ۲ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ۳
وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۴

और यदि ख़ुदा उनकी इच्छाओं का अनुसरण करता तो पृथ्वी और आकाश और जो कुछ उन में है सब बिगड़ जाता अपितु हम उनके लिए वह हिदायत लाए हैं जिस के वे मुहताज हैं। अत: जिस हिदायत के वे मुहताज हैं उसी से पृथक हैं। क्या मैं तुम्हें यह सूचना दूँ कि जिन्न किन लोगों पर उतरते हैं कि जो झूठे और पापी हैं और उनकी भविष्यवाणियां झूठी होती हैं, और कवियों का अनुसरण तो वही लोग करते हैं जो गुमराह हैं। क्या तुम्हें ज्ञात नहीं कि कवि लोग तुकबन्दी और रदीफ़ के पीछे प्रत्येक जंगल में भटकते फिरते हैं अर्थात् ख़ुदाई सच्चाई के पाबन्द नहीं रहते तथा जो कुछ कहते हैं वे करते नहीं और अत्याचारियों को शीघ्र ही ज्ञात होगा कि उनके लौटने का कौन सा स्थान और शरणस्थली है। क़ुर्आन करीम को हम ने सच्ची आवश्यकता के अनुसार उतारा है तथा सच्चाई के साथ उतरा है।

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

चरितार्थ नहीं होता अपितु उसका चरितार्थ होना इस्लाम के विद्वानों के सामान्य प्रयोग की दृष्टि से है, क्योंकि हमेशा से विद्वानों की ऐसी ही परम्परा रही है कि वे हमेशा से वह्यी को चाहे वह रिसालत की वह्यी हो या किसी दूसरे मौमिन पर घोषणा की वह्यी हो उतरे इल्हाम से चरितार्थ करते हैं। इस उपनाम को वही व्यक्ति नहीं जानता होगा जिसे सत्य के स्वीकार करने से कोई विशेष उद्देश्य बाधक है, अन्यथा क़ुर्आन करीम की सैकड़ों व्याख्याओं में से और कई हज़ार धार्मिक पुस्तकों में से किसी एक पुस्तक को भी कोई प्रस्तुत नहीं कर सकता जिस में इस चरितार्थ से इन्कार किया गया हो अपितु व्याख्याकारों ने अनेकों स्थानों पर वह्यी के शब्द को इल्हाम ही से चरितार्थ किया है। कई हदीसों में भी यही अर्थ मिलते हैं जिस से मौलवी साहिब अपरिचित नहीं हैं। फिर न मालूम

①-अलमौमिनून :72 ②-अश्शौ'रा' :222-227 ③-अश्शौ'रा' :288 ④-बनीइस्राईल :106

अपितु इस सीमा तक निर्विवाद और स्पष्ट हैं कि थोड़ी बुद्धि जो मानवता के लिए आवश्यक

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ
وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ لَّا يَاْتِيْهِ
الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ
خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ
حَمِيْدٍ ۱ وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ
اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ
وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖۤ
اَوْلِيَآءُ ۲ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا
الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۳
قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ
الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ۴ وَقَالَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا
لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ
لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۵ وَقَالَتْ

Ⓟ223 और वह एक ऐसी किताब है कि जो हमेशा मिथ्या की मिलावट से पवित्र रहेगी और कोई मिथ्या उसका मुकाबला नहीं कर सका और न भविष्य में कभी किसी युग में मुकाबला करेगा अर्थात् उसकी पूर्ण सच्चाइयां जो प्रत्येक झूठ से उज्ज्वल हैं समस्त झूठ के अनुयायियों को जो इस से पूर्व उत्पन्न हुए या भविष्य में कभी उत्पन्न हों अपराधी और निरुत्तर करती रहेंगी तथा कोई विरोधात्मक विचार उसके सामने खड़े रहने की सामर्थ्य नहीं लाएगा और जो व्यक्ति उसे स्वीकार करने से इन्कार करे वह ख़ुदा को अपना प्रभुत्व प्रकट करने से रोक नहीं सकेगा तथा ख़ुदा के मुकाबले पर कोई उसका सहायक नहीं, हमने यह कलाम स्वयं उतारा है और हम स्वयं ही इसके संरक्षक रहेंगे। उन्हें कह कि सत्य आ गया और झूठ इसके पश्चात न अपनी कोई नवीन शाखा निकालेगा, जिस का खण्डन क़ुर्आन में मौजूद न हो और न अपनी पूर्व स्थिति पर लौटेगा और काफ़िरों ने कहा कि इस समय क़ुर्आन को मत सुनो तथा जब तुम्हें सुनाया जाए तो तुम अपनी निरर्थक बातों से एक कोलाहल डाल दिया करो, कदाचित इसी प्रकार तुम्हें विजय प्राप्त हो और

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

कि मौलवी साहिब ने कहां से और किस से सुन लिया कि इल्हाम शब्द के
Ⓟ221 धार्मिक पुस्तकों में वे ही अर्थ करने चाहिएं जो शब्दकोशों में लिखे Ⓟहैं, जब कि इल्हाम को वह्यी का पर्याय ठहराने में सहमत हैं तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इसे प्रयोग किया है तो फिर इस से विमुख होना सरासर धांधली है। क्या मौलवी साहिब को ज्ञात नहीं कि शरीअत (धार्मिक विधान) के ज्ञान में इसी प्रकार सैकड़ों परिभाषिक शब्द हैं जिनके भाव को शब्दकोशीय अर्थों में सीमित करना एक गुमराही (पथ-भ्रष्टता) है। स्वयं वह्यी के शब्द को देखिए कि उसने वे अर्थ जिनकी दृष्टि से ख़ुदा की किताबें रिसालत की वह्यी कहलाती हैं शब्दकोष से कहां सिद्ध

① -हा मीम अस्सज्दह :42,43 ② -अलअहक़ाफ़ :33 ③ -अलहिज्र :10 ④ -सबा :50 ⑤ -हाम्मीम अस्सज्दह :27

है उन्हें समझने के लिए पर्याप्त है। उदाहरणतया अद्वितीयता का ⓟएक यह कारण कि ⓟ233

शेष हाशिया न. (11)

ⓟ ⓟ224
طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا
بِالَّذِیْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا
وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُوْنَ ۱ فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
عَذَابًا شَدِيْدًا وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ
الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۲ يُرِيْدُوْنَ
اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ
وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ
وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ هُوَ الَّذِيْٓ
اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ
الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ
وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۳

कुछ यहूदियों और ईसाइयों ने कहा कि यों करो कि दिन के प्रथम काल में तो ईमान लाओ तथा दिन के अन्तिम काल में अर्थात् शाम को इस्लाम की सच्चाई से इन्कारी हो जाओ ताकि कदाचित इसी प्रकार से लोग इस्लाम की ओर जाने से हट जाएं। अतः हम निश्चय ही उन्हें एक कठोर आज़ाब का स्वाद चखाएंगे और उनके बुरे कर्मों का उन्हें वैसा ही बदला मिलगा। वे चाहते हैं कि ख़ुदा के प्रकाश को अपने मुख की फूँकों से बुझाएं, परन्तु ख़ुदा अपने कार्य से कादापि नहीं रुकेगा जब तक कि उस प्रकाश को पूर्ण न करे यद्यपि काफ़िर लोग घृणा ही करें। वह ख़ुदा शक्तिमान और प्रतापवान है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म के साथ इसलिए भेजा है ताकि संसार के समस्त धर्मों पर विजयी करे, यद्यपि मुश्रिक लोग इसे पसन्द न करें।

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

होते हैं तथा किस शब्दकोष में वह वह्यी के उतरने का विवरण लिखा है जिस प्रकार से ख़ुदा अपने नबियों से कलाम करता है तथा उन पर अपने आदेश उतारता है। इसी प्रकार इस्लाम के शब्द पर दृष्टि डालिए कि उसके शब्दकोशीय अर्थ तो केवल यही हैं कि जो कार्य किसी को सौंपा जाए या मुक़ाबले का परित्याग, भूल और आज्ञा पालन इसमें यह विषय कहाँ लिया गया है कि لا اله الا الله محمد رسول الله भी कहना। अतः यदि प्रत्येक शब्द का शब्दकोष द्वारा ही निर्णय करना चाहिए तो इस स्थिति में इस्लाम भी इल्हाम की तरह मौलवी साहिब के निकट केवल संधि या कार्य सौंपने का नाम होगा और अन्य समस्त अर्थ अवैध और अनुचित ठहरेंगे। हम इस तरह के विचार और चिन्तन की कमी से ख़ुदा से शरण चाहते हैं ⓟअतः यह किसी पर गुप्त नहीं कि प्रत्येक ज्ञान में चाहे वह ⓟ222

①-आले इमरान :73 ②-हामीम अस्सज्दह :28 ③-अत्तौबा :32,33

वह वाणी के इतने संक्षिप्त होने के बावजूद कि यदि उस की मध्यम स्तरीय व्याख्या मध्यम

शेष हाशिया न. ⑪

Ⓟ قُلۡ لِّلَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا سَتُغۡلَبُوۡنَ وَ تُحۡشَرُوۡنَ اِلٰی جَہَنَّمَ ؕ وَ بِئۡسَ الۡمِہَادُ ۔① اِنَّ مَا تُوۡعَدُوۡنَ لَاٰتٍ ۙ وَّ مَاۤ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِیۡنَ ② وَقَالَتِ الۡیَہُوۡدُ یَدُ اللّٰہِ مَغۡلُوۡلَۃٌ ؕ غُلَّتۡ اَیۡدِیۡہِمۡ ③ ضُرِبَتۡ عَلَیۡہِمُ الذِّلَّۃُ اَیۡنَ مَا ثُقِفُوۡۤا اِلَّا بِحَبۡلٍ مِّنَ اللّٰہِ وَ حَبۡلٍ مِّنَ النَّاسِ وَ بَآءُوۡ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰہِ وَ ضُرِبَتۡ عَلَیۡہِمُ الۡمَسۡکَنَۃُ ذٰلِکَ بِاَنَّہُمۡ کَانُوۡا یَکۡفُرُوۡنَ بِاٰیٰتِ اللّٰہِ وَ یَقۡتُلُوۡنَ الۡاَنۡۢبِیَآءَ بِغَیۡرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِکَ بِمَا عَصَوۡا وَّ کَانُوۡا یَعۡتَدُوۡنَ ۔④

Ⓟ225 काफ़िरों को कह दे कि तुम शीघ्र ही पराजित किए जाओगे और अन्ततः नरक में पड़ोगे। तुम्हें जो कुछ वादा दिया जाता है अर्थात् इस्लाम धर्म का सम्मानपूर्वक संसार में फैल जाना तथा उसे रोकने वालों का अपमानित और बदनाम होना। यह वादा शीघ्र ही पूर्ण होने वाला है और तुम उसे कदापि रोक नहीं सकोगे। यहूदियों ने कहा कि ख़ुदा का हाथ बांधा हुआ है अर्थात् जो कुछ है मनुष्य की युक्तियों से होता है तथा ख़ुदा अपने शक्तिपूर्ण अधिकारों से असमर्थ है। अतः ख़ुदा ने यहूदियों के हाथों को हमेशा के लिए बांध दिया है ताकि यदि उनके विचार और युक्ति कुछ वस्तु हैं तो उनके बल से संसार की सरकारें और बादशाहतें प्राप्त कर लें। उन पर अपमान की मार डाली गई है अर्थात् जहां रहेंगे अपमानित और पराधीन रहेंगे अपमानित बन कर रहेंगे तथा उन के लिए यह नियुक्त किया गया है कि किसी जाति के अधीन रहने के अतिरिक्त किसी के देश में स्वयं सम्मानपूर्वक नहीं रहेंगे। हमेशा कमज़ोरी, निर्बलता और दुर्भाग्य उनके साथ रहेंगे। यह इस कारण कि वे ख़ुदा के निशानों से इन्कार करते रहे हैं तथा ख़ुदा के नबियों की अकारण हत्या करते रहे हैं। यह इसलिए कि वे पाप और अवज्ञा में सीमा से अधिक बढ़ गए।

शेष हाशिए का हाशिया न. ①

धर्मशास्त्र हो और चाहे शारीरिक शिक्षा हो और चाहे कोई अन्य शिक्षा हो, ऐसे पारिभाषिक शब्द अवश्य प्रयोग होते हैं जिन से उस शिक्षा (ज्ञान) के पारिभाषिक उद्देश्य पूर्णरूप से स्पष्ट हो जाएं तथा विद्वानों को इस बात से कोई चारा और पलायन का स्थान नहीं कि उस ज्ञान के लाभ और फ़ायदे के उद्देश्य से कुछ शब्दों के अर्थों को अपनी परिभाषा में अपने आशय के अनुसार नियुक्त कर लें जो किसी देखने वाले पर गुप्त नहीं, परन्तु यदि मौलवी साहिब विद्वानों की परिभाषा को धारण करना नहीं चाहते तो उन्हें अधिकार है कि ख़ुदा के वलियों (ऋषियों) को ख़ुदा की

①-आले इमरान :13 ②-अलअन्आम :135 ③-अलमाइदह :65 ④-आलेइमरान :113

लेखनी द्वारा लिखी जाए तो चार-पांच भागों में आ सकती है। फिर समस्त धार्मिक

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ Ⓟ226

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ.① كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِىْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ عَزِيْزٌ .② وَيُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ③ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ اِنَّ وَلِیِّ َۧ اللّٰهُ الَّذِىْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ .④ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا⑤ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ .⑥

हमारी प्रकृति का नियम यही है कि हम अपने पैग़म्बरों और ईमानदारों को संसार और परलोक में सहायता दिया करते हैं। ख़ुदा ने यही लिखा है कि मैं और मेरे पैग़म्बर विजयी रहेंगे। ख़ुदा बड़ा शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है, और काफ़िर तुझे ख़ुदा के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं से डराते हैं। उन्हें कह कि तुम मुझे पराजित करने के लिए अपने उपास्यों से कि जो तुम्हारे विचार में ख़ुदा के भागीदार है मदद मांगो तथा मेरे असफल रहने के लिए प्रत्येक प्रकार का छल करो तथा मुझे तनिक भी ढील न दो। मेरा कार्य बनाने वाला वह ख़ुदा है जिसने अपनी किताब को उतारा है तथा उसकी प्रकृति का यही नियम है कि वह सदात्माओं के कार्यों को स्वयं करता है तथा अभिभावक होता है। अपने ख़ुदावन्द के आदेश पर धैर्य धारण कर और धैर्यपूर्वक उसके वादों की प्रतीक्षा कर, तू हमारी आँखों के सामने है। ख़ुदा तुझे उन लोगों के उपद्रव से सुरक्षित रखेगा जो तेरी हत्या करने की घात में हैं।

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

ओर से जो कोई परोक्ष की सूचना दी जाती है उसका नाम सूचना की वह्यी तथा ज्ञान की वह्यी रखें, परन्तु उचित है कि इतना अवश्य स्पष्ट कर दें कि हम में और दूसरे मुसलमानों की समस्त जमाअत में शाब्दिक विवाद है, अर्थात जिन ख़ुदाई लक्षणों का नाम हम वह्यी रखते हें उन्हीं को इस्लाम के विद्वान अपनी परिभाषा में इल्हाम भी कह दिया करते हैं, परन्तु मूल अर्थ में हमारी और उनकी पूर्ण सहमति है ताकि लोग उनके सन्दर्भ में आशंका और सन्देह में न रहें तथा उनका संदिग्ध कलाम उपद्रव का कारण न बने। यदि यह स्थिति है कि मौलवी साहिब को स्वयं इसी बात में सन्देह है कि ख़ुदा किसी मुसलमान Ⓟसे बतौर इल्हाम भी कलाम करता है तो Ⓟ223
यह ख़ाकसार ख़ुदा की कृपा, दया और इस आदेशानुसार واما بنعمة ربک فحدث कुछ ऐसे इल्हाम बतौर नमूना वर्णन कर सकता है जिन से स्वयं

①अलमौमिन :52 ②मुजादलह :22 ③-अज़्ज़ुमर :37 ④-अलआराफ़ :196,197 ⑤-अत्तूर :49 ⑥-अलमाइदह :68

Ⓟ234 सच्चाइयों पर कि जो बतौर विविधता पहली किताबों में तथा पूर्वकालीन Ⓟनबियों के धर्म

शेष हाशिया न. ⑪

Ⓟ227

Ⓟ
وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِکَ رُسُلًا اِلٰی قَوۡمِہِمۡ فَجَآءُوۡہُمۡ بِالۡبَیِّنٰتِ فَانۡتَقَمۡنَا مِنَ الَّذِیۡنَ اَجۡرَمُوۡا ؕ وَ کَانَ حَقًّا عَلَیۡنَا نَصۡرُ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ ۔① وَلَقَدِ اسۡتُہۡزِیٴَ بِرُسُلٍ مِّنۡ قَبۡلِکَ فَحَاقَ بِالَّذِیۡنَ سَخِرُوۡا مِنۡہُمۡ مَّا کَانُوۡا بِہٖ یَسۡتَہۡزِءُوۡنَ قُلۡ سِیۡرُوۡا فِی الۡاَرۡضِ ثُمَّ انۡظُرُوۡا کَیۡفَ کَانَ عَاقِبَۃُ الۡمُکَذِّبِیۡنَ ۔② وَ قَالُوۡا لَوۡلَا نُزِّلَ عَلَیۡہِ اٰیَۃٌ مِّنۡ رَّبِّہٖ ؕ قُلۡ اِنَّ اللّٰہَ قَادِرٌ عَلٰۤی اَنۡ یُّنَزِّلَ اٰیَۃً وَّلٰکِنَّ اَکۡثَرَہُمۡ

और हमने तुझ से पहले उनकी जाति की ओर कई पैग़म्बर भेजे और वे भी प्रकाशमान निशान लेकर आए। अन्ततः हमने उन अपराधी लोगों से बदला लिया जिन्होंने उन नबियों को स्वीकार नहीं किया था। प्रारम्भ से यही निश्चित है कि हम पर मौमिनों की सहायता करना एक अनिवार्य कर्तव्य है अर्थात् अनादि काल से ख़ुदा का स्वभाव इसी प्रकार से जारी है कि सच्चे नबी नष्ट नहीं किए जाते तथा उनकी जमाअत अस्त-व्यस्त और तितर-बितर नहीं होती अपितु उन्हें सहायता प्राप्त होती है और तुम से पूर्व भी पैग़म्बरों से हंसी ठट्ठा होता रहा है, परन्तु ठट्ठा करने वाले हमेशा अपने ठट्ठे का बदला पाते रहे हैं। उन्हें कह कि पृथ्वी का भ्रमण करके देखो कि जो लोग ख़ुदा के नबियों को झुठलाते रहे हैं उनका क्या परिणाम हुआ है। और काफ़िर कहते हैं कि इस पर अपने रब्ब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी। कह दे कि ख़ुदा निशानों के उतारने की शक्ति रखता है, परन्तु अधिकांश लोग

शेष हाशिए का हाशिया न. ①

यह ख़ाकसार सम्मानित हुआ तथा जिन से मौलवी साहिब को पूर्णरूप से सन्तुष्टि और सांत्वना प्राप्त हो जाए तथा जिन पर विचार करने से मौलवी साहिब को यह भी ज्ञात हो कि ये ख़ुदाई ज्ञान और आकाशीय रहस्य कि जो मुसलमानों पर इल्हाम के माध्यम से निश्चित और वास्तविक तौर पर प्रकट होते हैं ये इस्लाम के विरोधियों को कदापि प्राप्त नहीं हो सकते और न कभी हुए और न किसी इस्लाम विरोधी में शक्ति है कि उनके मुकाबले पर दम मार सके। अतः कुछ इल्हाम जिन्हें मैं यहां लिखना उचित समझता हूँ, निम्नलिखित हैंः-

प्रथम अवस्था - इल्हाम की उन कई अवस्थाओं में जब ख़ुदा तआला ने

①-अर्रूम :48 ②-अलअन्आम :11,12

ग्रन्थों में अस्त-व्यस्त और अव्यवस्थित थीं सम्मिलित किए हुए है तथा उसमें यह

शेष हाशिया न. 11

لَا یَعۡلَمُوۡنَ ۔۱ قُلۡ ھُوَ الۡقَادِرُ عَلٰۤی اَنۡ یَّبۡعَثَ عَلَیۡکُمۡ عَذَابًا مِّنۡ فَوۡقِکُمۡ اَوۡ مِنۡ تَحۡتِ اَرۡجُلِکُمۡ اَوۡ یَلۡبِسَکُمۡ شِیَعًا وَّ یُذِیۡقَ بَعۡضَکُمۡ بَاۡسَ بَعۡضٍ اُنۡظُرۡ کَیۡفَ نُصَرِّفُ الۡاٰیٰتِ لَعَلَّھُمۡ یَفۡقَھُوۡنَ ۔۲ وَ یَقُوۡلُوۡنَ مَتٰی ھٰذَا الۡوَعۡدُ اِنۡ کُنۡتُمۡ صٰدِقِیۡنَ قُلۡ لَّاۤ اَمۡلِکُ لِنَفۡسِیۡ ضَرًّا وَّ لَا نَفۡعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰہُ لِکُلِّ اُمَّۃٍ اَجَلٌ اِذَا جَآءَ اَجَلُھُمۡ فَلَا یَسۡتَاۡخِرُوۡنَ سَاعَۃً وَّ لَا یَسۡتَقۡدِمُوۡنَ ۔۳

नहीं जानते। कह वह इस बात पर समर्थ है कि तुम्हें निशान दिखाने के लिए ऊपर से कोई अज़ाब उतारे या तुम्हारे पैरों के नीचे से कोई अज़ाब प्रकट हो अथवा ईमानदारों की लड़ाई से तुम्हें अज़ाब का स्वाद चखाए देखो हम निशानियों को कैसे फेरते हैं ताकि वे समझ लें। और काफ़िर कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो बताओ कि यह वादा कब पूर्ण होगा। कह मुझे तो अपने प्राण के लाभ और हानि का भी अधिकार नहीं, परन्तु जो ख़ुदा चाहे वही होता है। प्रत्येक समूह के लिए एक समय निर्धारित है। जब उनका वह समय आ जाता है तो फिर वे न उस से एक पल पीछे हो सकते हैं और न एक क्षण आगे हो सकते हैं।

शेष हाशिए का हाशिया न. 1

मुझे सूचना दी है यह है कि जब ख़ुदा तआला अपने बन्दे पर कोई परोक्ष की बात प्रकट करता चाहता है तो कभी नम्रता और कभी कठोरता से जीभ पर कुछ वाक्य कुछ थोड़ी सी तन्द्रा (ऊँघ) की अवस्था में जारी कर देता है तथा जो वाक्य कठोरता और भारीपन से जारी होते हैं वे ऐसी कठोरतापूर्ण और सख़्ती की Ⓟअवस्था में जीभ पर जारी होते हैं जैसे Ⓟ224
गढ़े अर्थात् ओले अचानक एक सख़्त धरती पर गिरते हैं या जैसे तेज़ और तीव्र गति में घोड़े का खुर धरती पर पड़ता है। इस इल्हाम में एक अद्भुत तेज़ी, सख़्ती और रोब होता है जिससे सम्पूर्ण शरीर प्रभावित हो जाता है तथा जीभ ऐसी तीव्रता और रोबदार आवाज़ में स्वयं दौड़ती जाती है कि जैसे वह अपनी जीभ ही नहीं और इसके साथ जो एक थोड़ी सी तन्द्रा और ऊँघ होती है, वह इल्हाम के पूर्ण होने के पश्चात् तुरन्त दूर हो जाती है और जब तक इल्हाम के वाक्य पूर्ण न हों तब तक मनुष्य

①-अलअन्आम :38 ②-अलअन्आम :66 ③-यूनुस :49,50

विशेषता है कि मनुष्य जितना परिश्रम, प्रयास और कठिन पराक्रम से धार्मिक ज्ञान के

शेष हाशिया न. (11)

℗ قل يقوم اعملوا على مكانتكم اني عامل ج فسوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه و يحل عليه عذاب مقيم ۱ الذين كفروا و صدوا عن سبيل الله زدنهم عذابا فوق العذاب بما كانوا يفسدون ۲ و لا يحزنك الذين يسارعون في الكفر ج انهم لن يضروا الله شيئا ط و لهم عذاب عظيم ۳ كداب ال فرعون والذين من قبلهم ط كفروا بايت الله فاخذهم الله بذنوبهم ط

℗229 कह हे मेरी जाति! तुम अपने स्थान पर काम करो मैं अपने स्थान पर काम करता हूँ। अत: तुम्हें शीघ्र ही ज्ञात हो जाएगा कि इसी संसार में किस पर अज़ाब आता है जो उसे अपमानित कर दे तथा किस पर हमेशा रहने वाला अज़ाब उतरता है अर्थात् प्रलय का अज़ाब। जिन लोगों ने कुफ़्र धारण किया है तथा ख़ुदा के मार्ग से रोकते हैं उन पर हम प्रलय के अतिरिक्त इसी संसार में अज़ाब उतारेंगे तथा उनके उपद्रव का उन्हें बदला मिलेगा। तुझे काफ़िरों की दुर्भावनाओं से शोकग्रस्त नहीं होना चाहिए, वे ख़ुदा के धर्म का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगे तथा उनके लिए अल्लाह तआला ने एक बड़ा अज़ाब नियुक्त कर रखा है। जैसे फ़िरऔन के वंश और उस से पूर्व काफ़िरों का हाल हुआ कि जब उन्होंने ख़ुदा के निशानों से इन्कार किया तो ख़ुदा ने उन से उनके पापों की पकड़ की

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

एक मुर्दे की भांति अचेतन अवस्था में पड़ा होता है। यह इल्हाम प्रायः इन अवस्थाओं में उतरता है कि जब कृपालु और दयालु ख़ुदावन्द अपनी नीति और हित की दृष्टि से किसी विशेष दुआ को स्वीकार करना नहीं चाहता अथवा कुछ समय तक विलम्ब डालना चाहता है अथवा कोई अन्य सूचना पहुँचाना चाहता है कि जो मानव होने के नाते मनुष्य की तबियत पर भारी गुज़रती हो। उदाहरणतया जब मनुष्य शीघ्रता से किसी बात को प्राप्त कर लेना चाहता हो और उसकी प्राप्ति ख़ुदाई हित के अनुसार उसके लिए प्रारब्ध न हो या विलम्ब से प्रारब्ध हो। इस प्रकार के इल्हाम
℗225 भी अर्थात् जो सख़्त और भारी रूप के ℗शब्द ख़ुदा की ओर से जीभ पर जारी होते हैं कभी मुझे भी होते रहे हैं जिसका वर्णन करना विस्तार का कारण है, परन्तु एक संक्षिप्त वाक्य बतौर नमूना वर्णन करता हूँ, और

①-अज़्ज़ुमर :40,41 ②-अन्नहल :89 ③-आले इमरान :177

संबंध में अपने बोध और विवेक से कुछ सच्चाइयां निकाले या कोई सूक्ष्म रहस्य पैदा

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ Ⓟ230
اِنَّ اللّٰہَ قَوِیٌّ شَدِیۡدُ الۡعِقَابِ .①
فَسَیَکۡفِیۡکَھُمُ اللّٰہُ وَھُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ . ②
وَاِنَّا عَلٰۤی اَنۡ نُّرِیَکَ مَا نَعِدُھُمۡ
لَقٰدِرُوۡنَ . ③ وَیَقُوۡلُوۡنَ لَوۡلَاۤ اُنۡزِلَ عَلَیۡہِ
اٰیَۃٌ مِّنۡ رَّبِّہٖ ۚ فَقُلۡ اِنَّمَا الۡغَیۡبُ لِلّٰہِ فَانۡتَظِرُوۡا
اِنِّیۡ مَعَکُمۡ مِّنَ الۡمُنۡتَظِرِیۡنَ . ④ وَقُلِ الۡحَمۡدُ
لِلّٰہِ سَیُرِیۡکُمۡ اٰیٰتِہٖ فَتَعۡرِفُوۡنَہَا وَمَا
رَبُّکَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُوۡنَ . ⑤
اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَیۡکُمۡ رَسُوۡلًا ۬ۙ شَاھِدًا
عَلَیۡکُمۡ کَمَاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰی فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا .

और निश्चय ही ख़ुदा बहुत शक्तिशाली तथा दण्ड देने में कठोर है तथा ख़ुदा उनके उपद्रवों को दूर करने के लिए तेरे लिए पर्याप्त है तथा वह बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है। और हम इस बात पर समर्थ हैं कि हम उन के सन्दर्भ में जो कुछ वादा करते हैं वह तुझे दिखा दें। ये लोग कहते हैं कि उस पर उसके प्रतिपालक की ओर से धर्म के समर्थन में क्यों कोई निशान नहीं उतरा। अत: उन्हें कह दे कि परोक्ष का ज्ञान ख़ुदा की विशेषता है। अत: तुम निशान के प्रतीक्षक रहो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ और कह ख़ुदा सम्पूर्ण विशेषताओं का स्वामी है शीघ्र ही वह तुम्हें अपने निशान दिखाएगा ऐसे निशान कि तुम उन्हें पहचान लोगे तथा ख़ुदा तुम्हारे कर्मों से लापरवाह नहीं है। हम ने तुम्हारी ओर यह रसूल उसी रसूल के समान भेजा है कि जो फ़िरऔन की ओर भेजा गया था।

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

वह यह है कि शायद तीन वर्ष का समय हुआ होगा कि मैंने इसी पुस्तक के लिए दुआ की कि लोग इसकी सहायतार्थ ध्यान दें। तब यही इल्हाम सख़्त शब्दों में जिसकी अभी मैंने परिभाषा की है इन शब्दों में हुआ (क्रियात्मक रूप में नहीं) और यह इल्हाम जब इस ख़ाकसार को हुआ तो लगभग दस या पन्द्रह हिन्दू और मुसलमान लोग होंगे जो क़ादियान में अब तक मौजूद हैं, जिन्हें उसी समय इस इल्हाम से अवगत कराया गया। तत्पश्चात उसी के अनुसार जैसे लोगों की ओर से लापरवाही रही, वह हाल भी उन समस्त सज्जनों को भली-भांति ज्ञात है। **दूसरा प्रकार** इल्हाम का अर्थात् वह प्रकार जिसमें कुछ नम्रता के साथ वाक्य जीभ पर जारी होते हैं। इस प्रकार में से अपने व्यक्तिगत अवलोकनों में से मात्र इतना लिखना पर्याप्त है कि जब पहले इल्हाम के पश्चात जिसका

①-अलअन्फ़ाल :53 ②-अलबक़रह :138 ③-अलमौमिनून :96 ④-यूनुस :21 ⑤-अन्नम्ल :94

करे या उसी ज्ञान के बारे में किसी प्रकार की अन्य वास्तविकताएं और अध्यात्म ज्ञान या

शेष हाशिया न. (11)

℗ فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ ۔① اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ۔② وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۔③ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ۔

℗224 अत: जब फ़िरऔन ने उस रसूल की अवज्ञा की तो हमने उसकी ऐसी पकड़ की कि जिस का परिणाम दैवी कष्ट था अर्थात् उसी पकड़ से फ़िरऔन का नामो निशान मिटा दिया गया। अत: तुम जो फ़िरऔन के स्थान पर हो अवज्ञाकारी रहकर हमारी पकड़ से क्योंकर बच सकते हो। क्या तुम्हारे काफ़िर फ़िरऔनी समुदाय से कुछ उत्तम हैं या तुम ख़ुदा की क़िताबों में अज़ाब दिए जाने और पकड़ में आने से अपवादित और निर्दोष ठहराए गए हो। क्या ये लोग कहते हैं कि हमारा समूह बड़ा शक्तिशाली समूह है कि जो सुदृढ़ और विजय प्राप्त है। शीघ्र ही यह समस्त समूह पीठ दिखाते हुए भागेगा तथा उन काफ़िरों को कोई न कोई क्लेश पहुंचाता रहेगा यहां तक कि वह कथित समय आ जाएगा जिस का ख़ुदा ने वादा किया है। ख़ुदा अपने वादे को भंग नहीं करेगा तथा रसूलों के पक्ष में पहले से हमारी यह बात निश्चित हो चुकी है कि सहायता और विजय हमेशा उन्हें ही प्राप्त होगी

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

मैं अभी वर्णन कर चुका हूँ एक लम्बा समय व्यतीत हो गया तथा लोगों की लापरवाही से तरह-तरह की कठिनाइयां सामने आईं तथा कठिनाई सीमा से अधिक बढ़ गई तो एक दिन सूर्यास्त के समय ख़ुदा तआला ने
℗226 यह इल्हाम किया- ℗هزّالیک بِجذعِ النّخلۃ تُساقِطْ عَلَیْک رُطَباً جنِیًّا
अतः मैंने समझ लिया कि यह प्रेरणा और उत्तेजना की ओर संकेत है और यह आश्वासन दिया गया है कि प्रेरणा के माध्यम से पुस्तक के इस भाग के लिए पूंजी एकत्र होगी। इसकी सूचना भी नियमानुसार कई हिन्दू और मुसलमानों को दी गई और संयोगवश उसी दिन या दूसरे दिन हाफ़िज़ हिदायत अली खान साहिब कि जो उन दिनों इस ज़िले में 'अतिरिक्त सहायक' थे क़ादियान में आ गए, उन्हें भी इस इल्हाम की सूचना दी गई तथा मुझे भली-भांति स्मरण है कि उसी सप्ताह में मैंने आपके मित्र

①-अलमुज़्ज़म्मिल :16-18 ②-अलक़मर :44-46 ③-अर्रअद :32

किसी प्रकार के प्रमाण और तर्क अपनी बौद्धिक शक्ति द्वारा उत्पन्न करके दिखाए या

शेष हाशिया न. ⑪

ⓅⓅ232

اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ. ① وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰى اَتٰهُمْ نَصْرُنَا وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ. ② وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۭ قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ ۚ هٰذَا بَصَآئِرُ

तथा हमेशा हमारा ही दल विजयी रहेगा अत: उस समय तक कि वह वादा पूरा हो उनसे विमुख रह तथा उन्हें वह मार्ग दिखा। अत: शीघ्र ही वे स्वयं देख लेंगे। तुझ से पूर्व जो नबी आए उनको भी झूठा कहा गया था अत: उन्होंने झुठलाए जाने पर धैर्य से काम लिया तथा एक अवधि तक कष्ट दिए गए यहां तक कि उन्हें हमारी सहायता पहुँच गई। अत: पूर्वकालीन रसूलों के समाचार भी तुझे पहुँच चुके हैं और जिस दिन तू उन्हें कोई आयत नहीं सुनाता उस दिन कहते हैं कि आज तू ने कोई आयत क्यों न बनाई। उन्हें कह कि मैं तो उसी कलाम का अनुसरण करता हूँ कि जो मेरे-प्रतिपालक की ओर से मुझ पर उतर रहा है। अपने हृदय से बना लेना मेरा कार्य नहीं और न ये ऐसी बातें हैं कि जिन्हें मनुष्य अपने झूठ से घड़ सके। ये ज्ञानपूर्ण बातें तो मेरे प्रतिपालक की ओर से हैं।

शेष हाशिए का हाशिया न. ①

मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब को भी इस इल्हाम से सूचित किया था। अब कथन का सारांश यह कि इस इल्हाम के पश्चात् मैंने ख़ुदा के आदेशानुसार एक सीमा तक प्रेरित किया। तदोपरांत लाहौर, पेशावर, रावलपिण्डी, कोटला मालेर तथा कुछ अन्य स्थानों से जितने और जहां से ख़ुदा ने चाहा उस भाग के लिए जो छपता था सहायता पहुँच गई। इस पर ख़ुदा का धन्यवाद। इसी इल्हाम के प्रकार में और उन्हीं दिनों में एक विचित्र बात यह हुई कि एक दिन प्रातः काल कुछ थोड़ी ऊँघ में अचानक जीभ पर जारी हुआ - ''अब्दुल्लाह ख़ान डेरा इस्माईल ख़ान ''। अतः कुछ हिन्दू Ⓟजो उस समय मेरे पास थे, Ⓟ227
जो अभी तक यहां पर मौजूद हैं उन्हें भी इस से सूचित किया गया और उसी दिन शाम को जो संयोगवश उन्हीं हिन्दुओं में से एक व्यक्ति

①अस्साफ़्फ़ात :172-176 ②अलअन्आम :35 ③अलअन्कबूत :71 ④ताहा :115 ⑤अलकहफ़ :66

Ⓟ236ऐसा ही Ⓟकोई नितान्त सूक्ष्म सत्य जिसे पूर्वकालीन दार्शनिकों ने एक दीर्घ अवधि के

Ⓟ233 **शेष हाशिया न. (11)** Ⓟ

مِنۡ رَّبِّکُمۡ وَھُدًی وَّرَحۡمَۃٌ لِّقَوۡمٍ یُّؤۡمِنُوۡنَ ۱ وَ یُرِیۡدُ اللّٰہُ اَنۡ یُّحِقَّ الۡحَقَّ بِکَلِمٰتِہٖ وَیَقۡطَعَ دَابِرَ الۡکٰفِرِیۡنَ لِیُحِقَّ الۡحَقَّ وَیُبۡطِلَ الۡبَاطِلَ وَلَوۡکَرِہَ الۡمُجۡرِمُوۡنَ ۲ وَ اِذۡ یَمۡکُرُبِکَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا لِیُثۡبِتُوۡکَ اَوۡ یَقۡتُلُوۡکَ اَوۡ یُخۡرِجُوۡکَ ؕ وَ یَمۡکُرُوۡنَ وَیَمۡکُرُ اللّٰہُ ؕ وَاللّٰہُ خَیۡرُ الۡمٰکِرِیۡنَ. ۳ وَقَدۡمَکَرُوۡامَکۡرَھُمۡ وَعِنۡدَاللّٰہِ مَکۡرُھُمۡ وَاِنۡ کَانَ مَکۡرُھُمۡ لِتَزُوۡلَ مِنۡہُ الۡجِبَالُ فَلَا تَحۡسَبَنَّ اللّٰہَ

अर्थात् अपने ख़ुदा की ओर से होने पर स्वयं ही ठोस तर्क हैं तथा ईमानदारों के लिए मार्ग-दर्शन और दया है। ख़ुदा का यह इरादा हो रहा है कि अपने कलाम से सत्य को सिद्ध करे तथा काफ़िरों की मिथ्या आस्थाओं को समूल नष्ट कर दे ताकि सच्चे धर्म की सच्चाई तथा झूठे धर्मों का झूठ सिद्ध कर के दिखाए यद्यपि कि अपराधी लोग घृणा ही करें और तू वह समय स्मरण कर कि जब काफ़िर लोग तुझे बन्दी बनाने या हत्या करने या निकाल देने पर कपट करके योजनाएं बनाते थे और कपट कर रहे थे और ख़ुदा भी युक्ति कर रहा था तथा ख़ुदा समस्त युक्तिवानों से श्रेयष्कर है। अत: जहां तक उन की शक्ति चल सकी उन्होंने कपट किया तथा उनके समस्त कपट ख़ुदा के अधिकार में हैं और यद्यपि उनके कपट ऐसे हों कि जिन से पर्वत टल जाएं तब भी यह विचार मत कर कि उनसे ख़ुदा के

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

डाकखाने की ओर गया तो वह अब्दुल्लाह ख़ान नाम के एक व्यक्ति का पत्र लाया, जिसके साथ कुछ रुपया भी आया तथा इस घटना से कुछ दिन पूर्व ख़ुदा का एक अत्यन्त अद्‌भुत निशान प्रकटन में आया। उसका संक्षिप्त वर्णन यह है कि एक हिन्दू आर्य निवासी इसी स्थान पर मदरसा क़ादियान का विद्यार्थी जिस की आयु बीस या बाईस वर्ष की होगी, जो अभी तक इसी स्थान पर मौजूद है एक लम्बे समय से यक्ष्मा (तपेदिक) के रोग से रोगग्रस्त था। धीरे-धीरे उसका रोग चरम सीमा को पहुँच गया तथा निराशा के लक्षण प्रकट हो गए। एक दिन वह मेरे पास आकर तथा अपने जीवन से निराश हो कर बहुत व्याकुलता से रोया। मेरा हृदय उसकी विनम्र और दयनीय स्थिति देख कर द्रवित हो गया। मैंने ख़ुदा के आगे उसके लिए दुआ की। चूंकि ख़ुदा के ज्ञान में उसका स्वस्थ होना प्रारब्ध था, इसलिए दुआ करने के साथ ही यह इल्हाम हुआ।

①-अलआराफ़ :204 ②-अलअन्फ़ाल :8,9 ③-अलअन्फ़ाल :31 ④-इब्राहीम-47

कठिन परिश्रम और पराक्रम से निकाला हो मुक़ाबले के मैदान में लाए या जितने

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ Ⓟ234

مُخۡلِفَ وَعۡدِہٖ رُسُلَہٗ اِنَّ اللّٰہَ عَزِیۡزٌ ذُوانۡتِقَامٍ ۱ لَرَآدُّکَ اِلٰی مَعَادٍ ۲ اَلَاۤ اِنَّ نَصۡرَ اللّٰہِ قَرِیۡبٌ. ۳ یَاۤاَیُّھَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا ھَلۡ اَدُلُّکُمۡ عَلٰی تِجَارَۃٍ تُنۡجِیۡکُمۡ مِّنۡ عَذَابٍ اَلِیۡمٍ تُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰہِ وَ رَسُوۡلِہٖ وَ تُجَاھِدُوۡنَ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ بِاَمۡوَالِکُمۡ وَاَنۡفُسِکُمۡ ؕ ذٰلِکُمۡ خَیۡرٌ لَّکُمۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ یَغۡفِرۡلَکُمۡ ذُنُوۡبَکُمۡ وَ یُدۡخِلۡکُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِھَا الۡاَنۡھٰرُ

वे वादे टल जाएंगे कि जो उसने अपने रसूल को दिए हैं। ख़ुदा विजयी और प्रतिशोध लेने वाला है तथा तुझे उसी स्थान पर पुनः लाएगा जहां से तुझे निकाला गया है अर्थात् मक्का में जहां से काफ़िरों ने हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) को निकाल दिया था। स्मरण रखो कि ख़ुदा की सहायता अत्यन्त निकट है। हे वे लोगो ! जो ईमान लाए क्या मैं तुम्हारा एक ऐसे व्यापार की ओर मार्ग-दर्शन करूँ कि जो तुम्हें भयानक अज़ाब से मुक्ति प्रदान करे। ख़ुदा और उसके रसूल पर ईमान लाओ तथा ख़ुदा के मार्ग में अपने धन-सम्पत्तियों और प्राणों से प्रयास करो कि यही तुम्हारे लिए उत्तम है इस से ख़ुदा तुम्हारे पापों को क्षमा करेगा तथा उन स्वर्गों में दाख़िल करेगा जिन में नहरें बहती हैं।

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

قلنا یانارُ کونی بردًا وسلامًا④

अर्थात् हम ने तप की अग्नि को कहा कि तू शीतल और शान्त हो जा। अतः उसी समय उस हिन्दू और कई अन्य हिन्दुओं को जो अब तक इस क़स्बे में मौजूद हैं तथा इसी स्थान के निवासी हैं। इस Ⓟइल्हाम से Ⓟ228
सूचित किया गया तथा ख़ुदा पर पूर्ण भरोसा करके दावा किया गया कि वह हिन्दू अवश्य स्वस्थ हो जाएगा और इस रोग से कदापि नहीं मरेगा। अतः तत्पश्चात एक सप्ताह नहीं गुज़रा होगा कि उपर्युक्त हिन्दू उस प्राण लेवा रोग से पूर्णतया स्वस्थ हो गया। इस पर ख़ुदा का धन्यवाद और उसकी प्रशंसा। अब देखिए मौलवी साहिब !!! प्रमाण इसे कहते हैं कि धर्म के शत्रुओं का हवाला देकर तथा पंडित दयानन्द के अनुयायियों की गवाही डाल कर मुसलमानों के सच्चे और हितकारी इल्हाम का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है। क्या संसार में इस से अधिक दृढ़ कोई प्रमाण होगा कि स्वयं धर्म के विरोधियों को ही साक्षी बनाया जाए। मेरे मेहरबान !

①-इब्राहीम :47,48 ②-अलक़सस :86 ③-अलबक़रह :215 ④-अलअंबिया :70

℗237 आन्तरिक विकार तथा अध्यात्मिक रोग हैं जिनमें अधिकांश ℗लोग लिप्त होते हैं, उनमें

शेष हाशिया न. (11)

℗

وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ
ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ وَ اُخْرٰى
تُحِبُّوْنَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ
قَرِيْبٌ . ١ وَلَا تَهِنُوْا وَ لَا تَحْزَنُوْا
وَ اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ . ٢
وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى
كَثِيْرًا وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ
ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ٣ وَ اِنْ
تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ
شَيْـًٔا . ٤ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

℗235 और वह महल प्रदान करेगा कि जो पवित्र और शाश्वत स्वर्गों में हैं। यही मनुष्य के लिए महान् सौभाग्य है और दूसरी यह है जिसे तुम इसी संसार में चाहते हो कि ख़ुदा की ओर से सहायता है और विजय निकट है सुस्त मत हो तथा शोक मत करो और अन्ततः विजय तुम्हें ही प्राप्त होगी यदि तुम ईमान पर क़ायम रहोगे। तुम यहूदियों, ईसाइयों तथा अन्य मुश्रिकों से हृदय को कष्ट देने वाली बहुत सी बातें सुनोगे और यदि तुम धैर्य से काम लोगे और प्रत्येक प्रकार की अधीरता और व्याकुलता से बचोगे तो उन लोगों के कपट तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगे। ख़ुदा ने तुम में से कुछ सदात्मा ईमानदारों के लिए यह वादा कर रखा है कि वह उन्हें पृथ्वी पर

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

कहां और किस देश में आप ने देखा कि कभी इस प्रकार के सच्चे और हितकारी इल्हाम जिनमें एक निराश के जीवित रहने की सूचना दी गई जैसे मुर्दे के जीवन की ख़ुशख़बरी दी गई किसी अन्य सम्प्रदाय ईसाई, आर्य या ब्रह्म समाज में ऐसे घोर विरोधियों की साक्ष्य से सिद्ध हुए हों। यदि कोई आँखों देखा वृत्तान्त स्मरण है तो किसी एक आधे का नाम तो बताइए। अब कहिए कि यह शुभ इल्हाम उम्मते मुहम्मद[स] की विशेषता है या नहीं, इसी प्रकार ऐसे ही सैकड़ों उच्च श्रेणी के इल्हामों के सन्दर्भ में
℗229 हमारे पास इतने प्रमाण हैं कि जिन्हें ℗आप गिन न सकें। आप ने दिन को रात तो ठहराया, परन्तु अब सूर्य को कहां छुपाओगे। आप को इस्लाम धर्म के विरोधियों के घरों की भी कुछ सूचना है। ईमान का प्रकाश तो क्या वहां तो ईमान ही नहीं وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَه نُوْرًافَمَا لَه مِنْ نُّوْرٍ ⑤ और यदि आप यह कहें कि हम अल्लाह के वलियों के इल्हाम को मानते हैं तथा उसे उम्मते मुहम्मदिया की विशिष्टता भी जानते हैं परन्तु उस इल्हाम को जो

①-अस्सफ :11-14 ②-आले इमरान :140 ③-आले इमरान :187 ④-आले इमरान :121 ⑤-अन्नूर :41

से किसी का वर्णन या उपचार क़ुर्आन करीम से ज्ञात करना चाहे तो वह जिस प्रकार और

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ Ⓟ236

مِنۡکُمۡ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسۡتَخۡلِفَنَّہُمۡ فِی الۡاَرۡضِ کَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِہِمۡ وَ لَیُمَکِّنَنَّ لَہُمۡ دِیۡنَہُمُ الَّذِی ارۡتَضٰی لَہُمۡ وَلَیُبَدِّلَنَّہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ خَوۡفِہِمۡ اَمۡنًا ؕ یَعۡبُدُوۡنَنِیۡ لَا یُشۡرِکُوۡنَ بِیۡ شَیۡـًٔا ؕ① وَدَّتۡ طَّآئِفَۃٌ مِّنۡ اَہۡلِ الۡکِتٰبِ لَوۡ یُضِلُّوۡنَکُمۡ ؕ وَمَا یُضِلُّوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡفُسَہُمۡ وَمَا یَشۡعُرُوۡنَ ۔② وَّیُحِبُّوۡنَ اَنۡ یُّحۡمَدُوۡا بِمَا لَمۡ یَفۡعَلُوۡا فَلَا تَحۡسَبَنَّہُمۡ بِمَفَازَۃٍ

अपने मान्य रसूल के उत्तराधिकारी (ख़लीफ़े) बनाएगा उन्हीं के समान जो पहले करता रहा है और उनके धर्म को कि जो उनके लिए उस ने पसन्द कर लिया है अर्थात् इस्लाम धर्म को पृथ्वी पर स्थापित कर देगा तथा दृढ़ और क़ायम कर देगा। तत्पश्चात कि ईमानदार भय की स्थिति में होंगे अर्थात् उस समय के उपरान्त कि जब हज़रत ख़ातमुलअंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निधन के कारण यह भय लगा होगा कि कदाचित अब धर्म नष्ट न हो जाए तो इस भय और शंका की अवस्था में ख़ुदा तआला सच्ची ख़िलाफ़त (उत्तराधिकार) को स्थापित करके मुसलमानों को धर्म के अस्त-व्यस्त होने की आशंका से शोकरहित तथा शान्ति की अवस्था में कर देगा वे शुद्ध रूप से मेरी उपासना करेंगे तथा किसी वस्तु को मेरा भागीदार नहीं बनाएंगे। यह तो प्रत्यक्ष तौर पर शुभ संदेश है, परन्तु जैसा कि क़ुर्आन की आयतों में ख़ुदा का स्वभाव जारी है उसके अन्तर्गत एक आन्तरिक अर्थ भी हैं और वे ये हैं कि आन्तरिक तौर पर इन आयतों में अध्यात्मिक ख़िलाफ़त की ओर भी संकेत है जिसका आशय यह है कि भय की प्रत्येक अवस्था में कि जब ख़ुदा का प्रेम हृदयों से उठ जाए तथा विकृत धर्म चारों और फैल जाएँ और लोग संसार की ओर मुख कर लें तथा धर्म के लुप्त होने की आशंका हो तो ऐसे समयों में हमेशा अध्यात्मिक ख़लीफ़ों को पैदा करता रहेगा, जिन के हाथ पर आध्यात्मिक तौर पर धर्म की सहायता और विजय प्रकट हो तथा सत्य का सम्मान और असत्य का अपमान हो ताकि धर्म अपनी वास्तविक ताज़गी की ओर लौटता रहे तथा ईमानदार पथ-भ्रष्टता के फैल जाने और धर्म का अन्त हो जाने की आशंका से अमन की अवस्था में आ जाएं। तत्पश्चात फ़रमाया कि ईसाइयों और यहूदियों में से एक वर्ग ने यह चाहा है कि तुम्हें किसी प्रकार पथ-भ्रष्ट करें और वे तुम्हें तो क्या पथ-भ्रष्ट करेंगे वे स्वयं को ही पथ-भ्रष्टता में डाल रहे हैं, परन्तु अपनी ग़लती का उन्हें बोध नहीं और चाहते हैं कि उन कार्यों के साथ प्रशंसित हों जिन्हें वे करते नहीं अतः तू यह न सोच कि

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

वलियों को होता है निश्चित और यक़ीनी ज्ञान का कारण नहीं समझते अपितु काल्पनिक ज्ञान का कारण समझते हैं तो आप का यह कथन एक भ्रम है जिस पर कोई बौद्धिक या अनुकरणात्मक (नक़ली) तर्क स्थापित

①-अन्नूर :56 ②-आले इमरान :70

ⓟ238 जिस अध्याय में परखना चाहता है परख कर देख ले कि प्रत्येक धार्मिक सत्य ⓟऔर

शेष हाशिया न. (11)

ⓟ237 ये लोग अज़ाब से बच जाएंगे। उनके लिए एक भंयकर अज़ाब नियुक्त है तथा उससे अधिक अत्याचारी कौन है कि जो ख़ुदा की मस्जिदों को इस बात से रोके कि उनमें ख़ुदा की स्तुति की जाए तथा मस्जिदों को ख़राब और खण्डित करने की चेष्टा करे। यह ईसाइयों के दुराचार और उपद्रवी गतिविधियों का हाल बताया है, जिन्होंने बैतुल मुक़द्दस का ध्यान न किया तथा अहंकारपूर्ण उन्माद में आकर खण्डित किया और इस आयत के पश्चात फ़रमाया कि जिन ईसाइयों ने ऐसी शरारत की उन्हें संसार में अपमान का सामना है और प्रलय में बड़ा अज़ाब। हमने ज़बूर में ज़िक्र के बाद लिखा है कि जो नेक लोग हैं वे ही पृथ्वी के। उत्तराधिकारी होंगे अर्थात् सीरिया (शाम) की पृथ्वी के (ज़बूर:37) कह कि हे मेरे ख़ुदा, हे देश के स्वामी ! तू जिसे चाहता है देश प्रदान करता है और जिस से चाहता है देश छीन लेता है, जिसे चाहता है सम्मान देता है और जिसे चाहता है अपमान देता है। प्रत्येक भलाई कि जिसका मनुष्य अभिलाषी है तेरे ही हाथ में है तू प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है।

ⓟ
مِّنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۱ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ
يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا
اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا
خَآئِفِيْنَ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَّلَهُمْ
فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۲ وَلَقَدْ
كَتَبْنَا فِى الزَّبُوْرِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ
الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِىَ الصّٰلِحُوْنَ. ۳
قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ
تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ
وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ
الْخَيْرُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ . ۴

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

नहीं हो सकता अपितु उचित और निरन्तर अनुभव तथा क़ुर्आन की ठोस आयतें उसके खण्डन पर प्रमाण स्थापित करती हैं तथा ऐसे भ्रम उन्हीं लोगों के हृदय में उठते हैं जो ख़ुदा के इल्हाम के पूर्ण ज्ञान से अनभिज्ञ हैं तथा ईश्वर प्रदत्त ज्ञान के महत्व से अज्ञान हैं विश्वास और मा'रिफ़त की असीम श्रेणियों तक ख़ुदा तआला अपने अभिलाषियों को पहुँचा सकता है इन ख़ुदाई अनुकम्पाओं से अपरिचित हैं। उन्हें यह समझ नहीं कि जिस ख़ुदा ने अपने मनष्यों के हृदयों में ईश्वर प्रदत्त ज्ञान को विश्वस्त तौर पर प्राप्त करने के लिए नितान्त उत्तेजना उत्पन्न की है तथा उन्हें पूर्ण
ⓟ230 मा'रिफ़त, पूर्ण विवेक ⓟऔर पूर्ण ज्ञान तक पहुँचने के लिए अपनी परोक्ष

①-आले इमरान :189 ②-अलबक़रह :105 ③-अलअंबिया :106 ④-आले इमरान :27

नीति के वर्णन में क़ुर्आन करीम एक वृत्त की भांति घेरे हुए है, जिस से कोई धार्मिक

शेष हाशिया न. 11

ⓟ238 ⓟ
قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ
لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ
فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۔١
وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ
مُعْجِزِى اللّٰهِ وَاَنَّ اللّٰهَ
مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ ۔٢ اُذِنَ
لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ
ظُلِمُوْا وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى
نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ٣ هُوَ
الَّذِىْ بَعَثَ فِى الْاُمِّيّٖنَ
رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا
عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ
لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ
وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا
بِهِمْ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ٤

काफ़िरों को कह कि यदि तुम ख़ुदा की उपासना न करो तो वह तुम्हारी कुछ परवाह नहीं रखता। अत: तुम ने अनुसरण और उपासना के स्थान पर झुठलाना धारण किया, इसलिए तुम पर शीघ्र ही उस का दण्ड आने वाला है तथा तुम निश्चय ही जान लो कि तुम ख़ुदा को उसके कार्यों में कभी असमर्थ नहीं कर सकते तथा ख़ुदा तुम्हें अपमानित करेगा। वे लोग जो तुम्हारे व्यर्थ युद्धों और हत्याओं के इरादों से पीड़ित हैं उनके सम्बंध में सहायता प्रदान करने का आदेश हो चुका है तथा ख़ुदा उनकी सहायता करने पर समर्थ है। वह ख़ुदा जो कृपालु और दयालु है, जिसने अनपढ़ लोगों में उन्हीं में से एक ऐसा पूर्ण रसूल भेजा है कि जो बावजूद अनपढ़ होने के ख़ुदा की आयतें उन पर पढ़ता है तथा उन्हें पवित्र करता है तथा किताब और नीति सिखाता है यद्यपि कि वे लोग उस नबी के प्रकटन से पूर्व स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में लिप्त थे। उनके समुदाय में से अन्य देशों के लोग भी हैं जिनका इस्लाम में प्रवेश करना प्रारम्भ से तय हो चुका है और अभी वे मुसलमानों से नहीं मिले तथा ख़ुदा प्रभुत्वशाली और नीतिवान है जिसका कार्य नीति से खाली नहीं अर्थात् जब वह समय आ जाएगा कि जिसे ख़ुदा ने अपनी पूर्ण नीति के अनुसार दूसरे देशों के मुसलमान होने के लिए निर्धारित कर रखा है तब वे लोग इस्लाम धर्म में प्रवेश करेंगे।

शेष हाशिए का हाशिया न. 1

भावनाओं से व्याकुल कर दिया है, वह दयालु ख़ुदा ऐसा नहीं है कि उन की उत्तेजनाओं, उनकी संवेदनाओं उनकी प्रेमयुक्त चेष्टा और पराक्रम को नष्ट करे। यह संभव ही नहीं कि उसने जितनी भूख भड़का दी उतनी रोटी प्रदान न करे तथा जितनी प्यास लगा दी उतना पानी न पिलाए। एक उसके लिए मरता है तथा उसकी मारिफ़त को प्राण से अधिक प्रिय रखता है, अपने प्राण की सम्पूर्ण शक्तियों और अपने अस्तित्व की समस्त ताक़तों से उसकी ओर दौड़ता है, क्या ख़ुदा उस पर दया नहीं करता, क्या वह उसकी

①-अलफ़ुरक़ान :78 ②-अत्तौब:-2 ③-अलहज्ज :40 ④-सूरह अलजुमा :3,4

सत्य बाहर नहीं अपितु जिन सच्चाइयों को दार्शनिकों ने ज्ञान और बुद्धि की अपूर्णता

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَنۡ
يَّرۡتَدَّ مِنۡكُمۡ عَنۡ دِيۡنِهٖ
فَسَوۡفَ يَاۡتِى اللّٰهُ بِقَوۡمٍ
يُّحِبُّهُمۡ وَيُحِبُّوۡنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ
عَلَى الۡمُؤۡمِنِيۡنَ اَعِزَّةٍ
عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ ① اِنَّ
الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يُنۡفِقُوۡنَ
اَمۡوَالَهُمۡ لِيَصُدُّوۡا عَنۡ
سَبِيۡلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنۡفِقُوۡنَهَا
ثُمَّ تَكُوۡنُ عَلَيۡهِمۡ
حَسۡرَةً ثُمَّ يُغۡلَبُوۡنَ ②
وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ
كَثِيۡرَةً تَاۡخُذُوۡنَهَا فَعَجَّلَ
لَكُمۡ هٰذِهٖ وَكَفَّ
اَيۡدِىَ النَّاسِ عَنۡكُمۡ ۚ
وَلِتَكُوۡنَ اٰيَةً لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ③

Ⓟ239 हे ईमान लाने वालो ! तुम में से यदि कोई इस्लाम धर्म को त्याग देगा तो ख़ुदा उसके बदले में एक ऐसी क़ौम लाएगा जिस से वह प्रेम करेगा और वे उस से प्रेम करेंगे, वे मौमिनों के समक्ष विनम्रता धारण करेंगे तथा काफ़िरों पर प्रभुत्व जमाने वाले तथा भारी होंगे अर्थात् ख़ुदा की ओर से यह वादा है कि हमेशा यह हाल होता रहेगा कि यदि कोई मंदबुद्धि इस्लाम धर्म से विमुख (मुरतद) हो जाएगा तो उसके मुरतद होने से धर्म में कोई क्षति नहीं होगी अपितु उस एक व्यक्ति के बदले में ख़ुदा अनेक वफ़ादार लोगों को इस्लाम धर्म में दाखिल करेगा कि जो निष्कपट भाव से उस पर ईमान लाएँगे तथा ख़ुदा के मित्र और प्रेमपात्र ठहरेंगे और वे समस्त काफ़िर जो इस्लाम धर्म को रोकने और बन्द करने के लिए अपने माल व्यय करेंगे, परन्तु अन्ततः वह समस्त व्यय उन के लिए पश्चाताप और खेद का कारण होगा और फिर परास्त हो जाएंगे। ख़ुदा ने तुम से बहुत से देशों के परिहारों (ग़नीमतों) के प्रदान करने का वादा किया था अतः उनमें से प्रथम मामला यह हुआ कि ख़ुदा ने यहूदियों के क़िले समस्त धन-दौलत सहित तुम्हें दे दिए तथा विरोधियों के उपद्रव से तुम्हें अमन प्रदान किया ताकि मौमिनों के लिए एक निशान हो और ख़ुदा तुम्हें दूसरे देश भी अर्थात् फ़ारस और रोम इत्यादि प्रदान करेगा।

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

ओर दृष्टि उठाकर नहीं देखता, क्या उसकी प्रार्थनाएं (दुआएं) स्वीकार्य नहीं क्या उसके आर्तनाद (फ़रियादें) कभी ख़ुदा तक नहीं पहुँच सकते, क्या ख़ुदा उसे असफलता की स्थिति में नष्ट कर देगा, क्या वह सहस्त्रों कष्टों के साथ क़ब्र में उतरेगा और ख़ुदा उसका उपचार नहीं करेगा, क्या वह दयालु स्वामी उसे खण्डित कर देगा और छोड़ देगा, क्या ख़ुदा अपने सच्चे और आज्ञाकारी अभिलाषी को अपने नबियों का मार्ग नहीं दिखाएगा तथा अपनी विशेष नैमत से लाभान्वित नहीं करेगा। निःसन्देह वह अपने
Ⓟ231 अभिलाषियों की ओर ध्यान देता है। जो लोग उसकी Ⓟओर दौड़ते हैं वह उनकी ओर उन से अधिक तीव्रता से दौड़ता है, जो लोग उस का सानिध्य चाहते हैं वह उनसे अत्यन्त निकट हो जाता है, वह उनकी आँखें हो जाता

①-अलमाइदह:55 ②-अलअन्फ़ाल:37 ③-अलफ़त्ह:21

के कारण ग़लत तौर पर वर्णन किया है ®क़ुर्आन करीम उन्हें पूर्ण करता तथा सुधार®239

शेष हाशिया न. (11)

तुम्हारी शक्ति उन पर अधिकार करने से असमर्थ है, परन्तु ख़ुदा की शक्तियां उन पर व्याप्त हैं तथा ख़ुदा प्रत्येक वस्तु पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है। यहां तक तो वे भविष्यवाणियां हैं जिनमें प्रत्यक्ष शुभ संदेश हैं। तत्पश्चात् आन्तरिक शुभ संदेशों की ओर संकेत करते हुए कहा काफ़िर और मुश्रिक कि जो शिर्क और कुफ़्र पर मरे उनके पापों को क्षमा की अवस्था में अपनी पहचान के ज्ञान का मार्ग नहीं दिखाएगा, हां नरक का मार्ग दिखाएगा, जिसमें वे हमेशा रहेंगे, परन्तु जो लोग ख़ुदा और उसके रसूल पर ईमान लाए वे ही हैं कि जो ख़ुदा के निकट सदात्मा हैं उनके लिए प्रतिफल होगा, उन के लिए प्रकाश होगा, उन्हें अपने जीवन में शुभ संदेश प्राप्त होंगे अर्थात् वे ख़ुदा से इल्हाम का प्रकाश प्राप्त करेंगे और शुभ संदेश सुनेंगे जिन में उनकी भलाई, प्रशंसा और स्तुति होगी तथा ख़ुदा उनकी सच्चाइयों को प्रकाशित करेगा। ख़ुदा ने जो-जो वादा किया है वह सब पूर्ण होगा।

देखो हाशिए का हाशिया न. 1 कि यह भविष्यवाणी भी क्योंकर पूरी हो रही है।

® ®240

وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ①

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ②

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ③

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ؕ

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

है जिनसे वे देखते हैं और उनके कान हो जाता है जिनसे वे सुनते हैं। तब तुम स्वयं ही सोचो कि वह व्यक्ति जिसकी आँखें और कान हैं 'वह अन्तर्यामी है'। क्या ऐसा व्यक्ति अपने ख़ुदा-प्रदत्त ज्ञान में विश्वास के प्रकाश तक नहीं पहुँचेगा तथा भ्रमों में लिप्त रहेगा। तुम निश्चय ही समझो कि सच्चों के लिए उसके द्वार उतने ही खुल जाते हैं जितना उनकी श्रद्धा का अनुमान है। उसके ख़ज़ानों में कमी नहीं, उसकी हस्ती में कंजूसी नहीं, उसकी कृपाओं की कोई सीमा नहीं तथा मा'रिफ़त में उन्नति की कोई हद नहीं। हां पहले उसने परोक्ष के प्रकटन की ने'मत और निश्चित तथा यक़ीनी ईश्वर प्रदत्त ज्ञान की दौलत अपने सदात्मा

①-अलफ़त्ह :22 ②-अन्निसा :169 ③-अलहदीद :20

करता है और जिन बारीकियों को कोई दार्शनिक वर्णन नहीं कर सका तथा न कोई

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ لَا تَبۡدِیۡلَ لِکَلِمٰتِ اللّٰہِ ؕ ذٰلِکَ ہُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِیۡمُ ۔① اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوۡنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَیۡہِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِیۡمًا اِنَّ الَّذِیۡنَ یُؤۡذُوۡنَ اللّٰہَ وَرَسُوۡلَہٗ لَعَنَہُمُ اللّٰہُ فِی الدُّنۡیَا وَالۡاٰخِرَۃِ وَاَعَدَّ لَہُمۡ عَذَابًا مُّہِیۡنًا ۔②

Ⓟ241 तथा किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होगा यही महान सौभाग्य है जो उन लोगों को प्राप्त होता है जो मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए। ख़ुदा और उसके समस्त फ़रिश्ते उस नबी करीम पर दरूद (रहमतें) भेजते हैं। हे ईमानदारो ! तुम भी उस पर दरूद भेजो और नितान्त निष्कपटता और प्रेम से सलाम करो। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को कष्ट देते हैं उन पर संसार और आख़िरत (प्रलय) में ख़ुदा की फटकार है। संसार में यह कि वे अध्यात्मिक बरकतों (लाभों) से वंचित रहेंगे और आख़िरत में यह कि अपमान और अपयश के साथ नर्क के अज़ाब में डाले जाएंगे।

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

रसूलों को प्रदान की, परन्तु फिर शिक्षा देकर कि

اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡھِمۡ③

समस्त सत्याभिलाषियों को ख़ुशख़बरी दी कि वे अपने मान्य रसूल के अनुसरण से उस बाह्य और आन्तरिक ज्ञान तक पहुँच सकते हैं कि जो मूलरूप से ख़ुदा के नबियों को दिया गया। इन्हीं अर्थों के कारण तो विद्वान नबियों के उत्तराधिकारी कहलाते हैं। यदि आन्तरिक ज्ञान का उत्तराधिकार उन्हें प्राप्त नहीं हो सकता तो फिर वे उत्तराधिकारी क्योंकर और कैसे

Ⓟ232 हुए। क्या आंहज़रत[स] ने फ़रमाया नहीं Ⓟकि इस उम्मत में मुहद्दिस होंगे। अल्लाह तआला फ़रमाता हैः-

وَالَّذِیۡنَ جَاھَدُوۡا فِیۡنَا لَنَھۡدِیَنَّھُمۡ سُبُلَنَا④ وَقُلۡ رَّبِّ زِدۡنِیۡ عِلۡمًا⑤

अब तुम सोचो कि यदि ख़ुदा-प्रदत्त ज्ञान का समस्त आधार कल्पनाओं पर है तो फिर उसका नाम ज्ञान क्योंकर होगा। क्या कल्पनाएँ भी कोई वस्तु हैं जिनका नाम ज्ञान रखा जाए। अतः इस स्थिति में ⑥ وَعَلَّمۡنٰہُ مِنۡ لَّدُنَّا عِلۡمًا का क्या अर्थ होगा। अतः जानना चाहिए कि ख़ुदा के कलाम पर उचित तौर पर ध्यान

①-यूनुस:65 ②-अलअहज़ाब:57,58 ③-अलफ़ातिहा :6,7 ④-अन्कबूत:70 ⑤-ताहा :115 ⑥-अलकहफ़ :66

बुद्धि उन तक पहुँच सकी उन्हें क़ुर्आन करीम पूर्ण शुद्धता और ईमानदारी के साथ

शेष हाशिया न. 11

भविष्यवाणियों पर दृष्टि डालो तो ज्ञात हो कि वह ज्योतिषियों इत्यादि ®असहाय ®218
लोगों की तरह कदापि नहीं अपितु उन में स्पष्ट तौर पर एक प्रभुत्व, प्रताप जोश मारता हुआ दिखाई देता है तथा उसमें समस्त भविष्यवाणियों का यही नियम है कि अपना सम्मान और शत्रु का अपमान अपनी उन्नति और शत्रु की अवनति, अपनी सफलता तथा शत्रु की असफलता, अपनी विजय और शत्रु की पराजय, अपना हमेशा का विकास शत्रु का विनाश प्रकट किया है। क्या इस प्रकार की भविष्यवाणियां कोई ज्योतिषी भी कर सकता है या किसी नुजूमी या मस्मरेज़म के माध्यम से प्रकटित हो सकती हैं। कदापि नहीं। हमेशा अपनी ही सूचना प्रकट करना तथा विरोधी की अवनति और आपदा बताना और जो बात विरोधी मुख पर लाए उसी को खण्डित करना तथा जो बात अपने मतलब की हो उसके हो जाने का वादा करना। यह तो बिल्कुल ख़ुदाई है मनुष्य का कार्य नहीं। इसे भली-भांति समझाने के लिए हम कुछ क़ुर्आन करीम की आयतें जो परोक्ष के मामलों पर आधारित हैं बतौर नमूना नीचे अनुवाद सहित लिखते हैं ताकि बुद्धिमान लोग जो न्यायप्रिय और ख़ुदा से भयभीत रहने वाले हैं ध्यानपूर्वक

शेष हाशिए का हाशिया न. 1

करने से तथा सैकड़ों देखे हुए अनुभवों से यही सिद्ध होता है कि ख़ुदा तआला मुहम्मद(स.अ.व.) की उम्मत के विशेष लोगों को जब वे अपने मान्य रसूल के अनुसरण में आसक्त हो जाएं तथा बाह्य और आन्तरिक तौर पर उस का अनुसरण धारण करें तो उसी रसूल के अनुसरण के कारण उस की बरकतों में से प्रदान करता है, यह नहीं कि केवल शुष्क संयम तक रखना चाहता है। जब किसी हृदय पर नुबुव्वत की बरकतों का प्रतिबिम्ब पड़ेगा तो आवश्यक है कि उसे अपने अनुकरणीय व्यक्ति की भांति निश्चित और यक़ीनी ज्ञान प्राप्त हो, क्योंकि जिस झरने का उसे उत्तराधिकारी बनाया गया है वह सन्देहों और शंकाओं की मलिनता से पूर्णतया उज्ज्वल है तथा रसूल के उत्तराधिकारी होने का पद भी इसी बात को चाहता है कि उसका आन्तरिक ज्ञान निश्चित और यक़ीनी हो, क्योंकि

Ⓟ240 Ⓟस्पष्ट करता है तथा अध्यात्म ज्ञान की उन बारीकियों को जो सैकड़ों रजिस्टरों और

शेष हाशिया न. (11)

पढ़कर तथा उन समस्त भविष्यवाणियों को सामूहिक दृष्टि से देखकर स्वयं न्याय करें कि क्या ऐसी परोक्ष की ख़बरें वर्णन करना सर्वशक्तिमान ख़ुदा के अतिरिक्त किसी मनुष्य का कार्य है। और वे आयतें संक्षिप्त अनुवाद सहित ये हैं:-

उपर्युक्त आयतों में सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने समस्त संसार के मुकाबले पर, समस्त विरोधियों के मुकाबले पर, समस्त शत्रुओं के मुक़ाबले पर, समस्त इन्कारियों के मुकाबले पर, समस्त धनवानों के मुक़ाबले पर, समस्त बलवान लोगों के मुकाबले पर, समस्त बादशाहों के मुकाबले पर, समस्त कूटनीतिज्ञों के मुकाबले पर, समस्त दार्शनिकों के मुकाबले पर, समस्त धर्मावलम्बियों के मुकाबले पर, एक विवश, निर्बल, धनहीन, शक्तिहीन, एक अनपढ़, ज्ञानहीन, अशिक्षित को अपनी ख़ुदावन्दी के पूर्ण प्रताप से सफलता के वादे दिए हैं। क्या कोई ईमानदारों तथा सत्याभिलाषियों में से सन्देह कर सकता है कि ये समस्त वादे जो अपने समयों पर पूर्ण हो गए और होते जाते हैं यह किसी मनुष्य का कार्य है। देखो एक निर्धन, अकेला और असहाय ने अपने धर्म के प्रसारित होने और अपने धर्म

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

Ⓟ233 यदि उसके पास केवल कल्पनाओं का संग्रह Ⓟहै तो फिर वह क्योंकर इस अपूर्ण संग्रह से अल्लाह की सृष्टि को लाभ पहुंचा सकता है। ऐसी स्थिति में वह आधा उत्तराधिकारी हुआ न कि पूर्ण तथा एक आँख वाला हुआ न कि दोनों आँखों वाला। जिन पथ-भ्रष्टताओं के निवारण हेतु ख़ुदा ने उसे स्थापित किया है उन पथ-भ्रष्टताओं का अत्यन्त प्रबल होना और युग का अत्यन्त ख़राब होना तथा इन्कार करने वालों का अत्यन्त कपटी होना, लापरवाहों का नितान्त स्वपनिल होना, विरोधियों का कुफ़्र में अत्यधिक बढ़ना इस बात की अत्यन्त मांग करता है कि ऐसे व्यक्ति का ईश्वर प्रदत्त ज्ञान रसूलों के समान हो। यही लोग हैं जिन का नाम हदीसों में उत्तम और क़ुर्आन करीम में सत्यनिष्ठ (सिद्दीक़) आया है। उन लोगों का युग रसूलों के अवतरण के युग से बहुत ही अनुरूप होता है अर्थात् जैसे

विशाल किताबों में लिखे गए थे और फिर भी अधूरे और अपूर्ण थे उनका पूर्णरूप से

शेष हाशिया न. 11

के दृढ़ होने की सूचना उस समय दी कि जब उसके पास कुछ निर्धन भिक्षुओं के अतिरिक्त और कुछ न था और समस्त मुसलमान ℗केवल इतने थे कि एक ℗243
छोटी सी कुटिया में समा सकते थे तथा उनके नाम उँगलियों पर गिने जा सकते थे जिन्हें एक गांव के कुछ लोग तबाह कर सकते थे, जिन का मुकाबला उन लोगों से पड़ा था जो संसार के बादशाह और शासक थे और जिन्हें उन क़ौमों के साथ सामना करना था जो करोड़ों लोग होने के बावजूद उनके तबाह करने और मिटाने पर सहमत थे, परन्तु अब संसार के किनारों तक दृष्टि डाल कर देखो कि ख़ुदा ने उन्हीं निर्बल और थोड़े लोगों को संसार में कैसे फैला दिया तथा क्योंकर उन्हें शक्ति, धन और बादशाहत प्रदान कर दी और क्योंकर सहस्त्रों वर्ष के शासकों के मुकुट और तख़्त उनके सुपुर्द किए गए। एक दिन वह था कि वह जमाअत इतनी भी नहीं ℗थी कि जितने एक घर के लोग होते हैं और ℗244
अब वे ही लोग संसार में कई करोड़ दिखाई देते हैं। ख़ुदा तआला ने कहा था कि मैं अपने कलाम की स्वयं रक्षा करूँगा। अब देखो क्या यह सत्य है या नहीं कि वही शिक्षा जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुदा तआला की

शेष हाशिए का हाशिया न. 1

पैग़म्बर उस समय आते रहे हैं कि जब संसार में घोर पथ-भ्रष्टता और लापरवाही फैलती रही है ऐसे ही ये लोग भी उस समय आते हैं जब चारों ओर पथ-भ्रष्टता का अत्यन्त आधिपत्य होता है तथा सत्य से हँसी ठट्ठा किया जाता है और असत्य की प्रशंसा होती है, झूठों को सत्यवादी ठहराया जाता है, धोखेबाज़ों को महदी समझा जाता है, संसार अल्लाह की प्रजा की दृष्टि में बहुत प्रिय ℗मालूम होता है जिसकी प्राप्ति के लिए ℗234
परस्पर अग्रसर होने का प्रयास करते हैं, उनकी दृष्टि में धर्म अपमानित और तिरस्कृत हो जाता है। ऐसे समयों में वे ही लोग इस्लाम का प्रमाण ठहरते हैं जिनका इल्हाम निश्चित और यक़ीनी होता है तथा जो उन सिद्धहस्त लोगों के प्रतिनिधि होते हैं जो उन से पूर्व गुज़र चुके हैं। अब सारांश यह है कि इल्हाम एक निश्चित और यक़ीनी विश्वसनीय सच्चाई है

Ⓟ241 उल्लेख करता है और भविष्य में किसी बुद्धिमान Ⓟके लिए कोई नवीन बारीकी उत्पन्न

शेष हाशिया न. (11)

ओर से उसके कलाम द्वारा पहुँचाई थी, वह उसके कलाम में निरन्तर सुरक्षित चली आती है तथा क़ुर्आन करीम के लाखों कंटस्थ करने वाले हैं जो हमेशा से चले आते हैं ख़ुदा ने कहा था कि कोई व्यक्ति मेरी किताब का नीति में, मारिफ़त में, सरलता और सुगमता में, ख़ुदा के ज्ञानों की परिधि में, धार्मिक तर्कों के वर्णन में, मुक़ाबला नहीं कर सकेगा। अत: देखो किसी से मुक़ाबला नहीं हो सका और यदि कोई इस से इन्कारी है तो अब कर के दिखा दे। हम ने जो कुछ इस पुस्तक में जिस के साथ दस हज़ार रुपए का विज्ञापन भी संलग्न है। क़ुर्आन करीम की
Ⓟ245 सच्चाइयां, सूक्ष्मताएं तथा चमत्कार जो मानव Ⓟशक्तियों से बाहर हैं लिखे हैं, किसी अन्य किताब में से प्रस्तुत करे और जब तक प्रस्तुत न करे तब तक उस पर ख़ुदा का स्पष्ट सबूत क़ायम है। ख़ुदा ने कहा था कि मैं सीरिया की पृथ्वी को ईसाइयों के कब्ज़े से निकाल कर मुसलमानों को उस पृथ्वी का उत्तराधिकारी बनाऊँगा। अत: देखो अब तक मुसलमान ही उस पृथ्वी के उत्तराधिकारी हैं और यह समस्त सूचनाएं ऐसी हैं जिन के साथ अधिकार और अल्लाह तआला की क़ुदरत सम्मिलित है, यह नहीं कि ज्योतिषियों की भांति केवल ऐसी ही सूचनाएं

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

जिसका अस्तित्व उम्मते मुहम्मदिया के वली लोगों में प्रमाणित है तथा उन्हीं से विशेष है। हाँ यह बात सत्य है कि रसूलों का इल्हाम अत्यन्त प्रकाशमान, प्रभायुक्त, उज्ज्वल, शक्तिशाली, स्वच्छ तथा विश्वास की उच्च श्रेणियों की चरम सीमा पर होता है तथा सूर्य की भांति चमक कर प्रत्येक अंधकार को दूर कर देता है परन्तु वलियों के इल्हामों में से जब तक किसी इल्हामी इबारत का अर्थ संदिग्ध और गुप्त हो तब तक वह एक काल्पनिक मामला होगा तथा वली का इल्हाम उसी समय निश्चित और विश्वास की सीमा तक पहुँचेगा जब कमज़ोर इल्हामों के प्रकार में से न हो अपितु अपने पूर्ण प्रकाश सहित उतरे तथा वर्षा की भांति निरन्तर बरस कर तथा अपने प्रकाशों को दृढ़तापूर्वक दिखा कर इल्हाम
Ⓟ235 प्राप्त के Ⓟहृदय को पूर्ण विश्वास से भर दे तथा विभिन्न भाषणों और

करने की गुंजायश नहीं छोड़ता। हालांकि वह इतनी कम मोटाई वाली किताब है कि

शेष हाशिया न. (11)

हों कि भूकम्प आएंगे, अकाल पड़ेंगे, क़ौम पर क़ौम चढ़ाई करेगी, संक्रामक रोग फैलेंगे, मौतें होंगी इत्यादि, इत्यादि। ख़ुदा के कलाम के अनुसरण और उसी के प्रभाव और बरकत से वे लोग जो क़ुर्आन करीम का अनुसरण करते हैं तथा ख़ुदा के मान्य रसूल पर हार्दिक निष्ठा से ईमान लाते हैं और उस से प्रेम रखते हैं तथा उसे समस्त सृष्टियों, ®समस्त नबियों, समस्त रसूलों, समस्त सदात्माओं और ®246
समस्त उन वस्तुओं से जो प्रकट हुईं या भविष्य में हों उत्तम, पवित्रतम, पूर्णतम और उच्चतम समझते हैं वे भी उन ने'मतों से अब तक हिस्सा प्राप्त करते हैं। जो शरबत मूसा और मसीह को पिलाया गया वही शरबत नितान्त अधिकता से, नितान्त उत्तमता से नितान्त आनन्द से पीते हैं, और पी रहे हैं। इस्राईली प्रकाश उन में प्रकाशमान हैं, उनमें याक़ूब के वंश के पैग़म्बरों की बरकतें हैं। सुब्हान अल्लाह पुनः सुब्हान अल्लाह हज़रत ख़ातमुल अंबिया किस शान के नबी हैं। अल्लाह, अल्लाह क्या महानतम प्रकाश है जिसके तुच्छ सेवक जिसकी तुच्छ से तुच्छ उम्मत, जिसके छोटे से छोटे नौकर उपर्युक्त पदों तक पहुँच जाते हैं।

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

भिन्न-भिन्न शब्दों में उतर कर अर्थ और आशय को पूर्ण रूप से स्पष्ट कर दे और इबारत को भ्रमात्क बातों में से पूर्णरूपेण निकाल दे तथा निरन्तर दुआओं और प्रश्नों के समय ख़ुदा तआला स्वयं उन अर्थों का निश्चित और विश्वस्त होना दुआओं की स्वीकारिता और उत्तरों के द्वारा पूर्ण स्पष्टता के साथ वर्णन कर दे, जब कोई इल्हाम इस सीमा तक पहुँच जाए तो पूर्ण प्रकाशमान, निश्चित तथा विश्वसनीय है। जो लोग कहते हैं कि वलियों के इल्हाम को मूल रूप से निश्चय और विश्वास की ओर मार्ग नहीं वे पूर्ण मा'रिफ़त से नितान्त वंचित हैं। अतः उन्होंने अल्लाह तआला के महत्व को यथोचित नहीं पहचाना। हे अल्लाह! तू मुहम्मद (स.अ.व.) की उम्मत को सुधार दे। यह भ्रम कि वलियों का इल्हाम मुहम्मद (स.अ.व.) की सच्ची शरीअत (धार्मिक विधान) के विपरीत हो

मध्यम लिखाई के साथ चालीस पृष्ठों से अधिक नहीं। अब स्पष्ट है कि अद्वितीयता का

शेष हाशिया न. (11)

اللهم صل على نبيک وحبيبک سيّد الانبيآء وافضل الرسل وخير المرسلين وخاتم

Ⓟ247 النبيين® محمد واٰله واصحابه وبارک وسلّم

इस युग के पादरी, पंडित, ब्रह्म समाजी, आर्य तथा अन्य विरोधी स्तब्ध न रह जाएं कि वे बरकतें कहां हैं, वे आकाशीय प्रकाश किधर हैं जिनमें हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आध्यात्मिक तौर पर निष्प्राण उम्मत मसीह और मूसा की बरकतों में भागीदार है तथा उन प्रकाशों की उत्तराधिकारी है जिनसे अन्य समस्त क़ौमें तथा समस्त धर्मावलम्बी वंचित और दुर्भाग्यशाली हैं। इस भ्रम के निवारण हेतु हमने बारम्बार इसी हाशिए में लिख दिया है कि सत्य के अभिलाषी के लिए जो इस्लाम की विशिष्ट प्रतिष्ठाएं देखकर तुरन्त मुसलमान होने पर तत्पर हैं। इस धार्मिक प्रमाण के हम स्वयं ही उत्तरदायी हैं तथा हाशिया का हाशिया नं.2 में इसी की ओर स्पष्ट संकेत किया है अपितु ख़ुदा तआला जिस-जिस

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

तो फिर क्या करें। यह ऐसा ही कथन है जैसे कोई कहे यदि एक नबी का इल्हाम दूसरे नबी के इल्हाम से विपरीत हो तो फिर क्या करें। अतः ऐसे भ्रमों का उत्तर यह है कि ऐसा पूर्ण प्रकाशयुक्त इल्हाम जिस को हमने ऊपर परिभाषित किया है, संभव नहीं कि मुहम्मद[स] की सच्ची शरीअत से विपरीत हो। यदि कोई नादान कुछ विपरीत समझे तो उसकी समझ का दोष है।

दूसरा प्रकारः- इल्हाम के चमत्कारों की अधिकता की दृष्टि से मैं जिसका नाम पूर्ण इल्हाम रखता हूँ यह है कि जब ख़ुदा तआला बन्दे को उसकी दुआ के पश्चात अथवा स्वयं किसी परोक्ष की बात पर सूचित करना चाहता है तो उस पर अचानक एक बेहोशी और ऊँघ की स्थिति उत्पन्न कर देता है जिस से वह अपने अस्तित्व से बिल्कुल खोया जाता है तथा इस स्वयं को भूल जाने, ऊंघ और बेहोशी में ऐसा डूबता है जैसे कोई पानी में डुबकी लगाता है तथा पानी के नीचे चला जाता है। अतः जब बन्दा

एक ऐसा कारण है ®जिसकी सच्चाई में एक अल्प बुद्धि वाले मनुष्य को भी सन्देह नहीं ®242

शेष हाशिया न. (11)

प्रकार से ®अपनी ख़ुदावन्दी की शक्तियों, अनुकम्पाओं और बरकतों को ®248
मुसलमानों पर प्रकट करता है उन्हीं ख़ुदाई वादों और शुभसन्देशों में से कि जो मानव शक्तियों से बाहर है उक्त हाशिए में एक सीमा तक उल्लेख किया है। अतः यदि कोई पादरी, पंडित, अथवा ब्रह्म समाजी जो अपनी अन्तर्दृष्टि के अंधेपन के कारण इन्कारी हैं या कोई आर्य तथा अन्य सम्प्रदायों में से सच और ईमानदारी से ख़ुदा तआला का अभिलाषी है तो उस पर अनिवार्य है कि सत्याभिलाषियों की भांति अपने समस्त अभिमानों, अहंकारों, वैमनस्य, सृष्टि पूजन, हठधर्मी और शत्रुताओं से पूर्णरूप से पवित्र होकर और केवल सत्य का जिज्ञासु और अभिलाषी बन कर एक असहाय, विवश और तिरस्कृत व्यक्ति की भांति सीधा हमारी ओर चला आए और फिर धैर्य, सहनशीलता, आज्ञा-पालन और निष्कपटता को सच्चे लोगों की तरह धारण करे ताकि यदि अब भी कोई विमुख हो तो वह अपनी बेईमानी पर स्वयं साक्षी® है। कुछ अदूरदर्शी लोग ®249
जब देखते हैं कि ख़ुदा के नबियों और रसूलों को भी कष्ट पहुँचते रहे हैं कि यदि शाने ख़ुदावन्दी का आधिपत्य कि जो इल्हामी सूचनाओं का प्रतीक समझा

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

इस ऊँघ की अवस्था से कि जो डुबकी से नितान्त अनुरूप है बाहर आता है तो अपने अन्तःकरण में कुछ ऐसा महसूस करता है जैसे एक गूंज पड़ी होती है और वह गूंज कुछ कम होती है तो अचानक उसे अपने अन्दर से एक अनुकूल, मृदुल और आनंदमय कलाम (वाणी) महसूस हो जाती है। यह ऊँघ की डुबकी एक अत्यन्त अद्‌भुत बात है जिसके चमत्कार वर्णन करने के लिए शब्द पर्याप्त नहीं होते। यही स्थिति है जिस से मनुष्य पर अध्यात्म ज्ञान का एक दरिया खुल जाता है, क्योंकि जब बार-बार दुआ करने के समय ख़ुदा तआला उस ऊँघ और डुबकी की अवस्था को अपने बन्दे पर ला कर उसकी प्रत्येक दुआ का उसे एक मृदुल और आनंदमय कलाम में उत्तर देता है, तथा प्रश्न पूछने की प्रत्येक अवस्था में उस पर वे सच्चाइयां खोलता है, जिनका खुलना मनुष्य की शक्ति से बाहर है।

रह सकता, क्योंकि प्रत्येक सद्बुद्धि वाले मनुष्य पर स्पष्ट है कि हर प्रकार की धार्मिक

शेष हाशिया न. (11)

गया है नबियों के साथ होता तो उन्हें कष्ट क्यों पहुँचते और क्यों सर्वाधिक कष्ट उन्हीं पर आते, परन्तु यह भ्रम बिल्कुल निर्मूल है जो सरासर लापरवाही से उत्पन्न होता है। इल्हामी सूचनाओं का शक्तिशाली ढंग से वर्णन पृथक बात है तथा नबियों के कष्ट एक दूसरी बात है कि जो अनेकों प्रकार की नीतियों पर आधारित है। वास्तविक परिस्थितियों से अवगत होने पर तुम्हें ज्ञात होगा कि वे कष्ट वास्तव में कष्ट नहीं अपितु बड़ी-बड़ी नैमतें हैं, जो उन्हीं को दी
℗250 जाती हैं जिन पर ख़ुदा की कृपा और दया ℗होती है। ये ऐसी नैमतें हैं जिनमें नबियों तथा समस्त संसार का हित है। इस स्थान पर निश्चित बात यह है कि नबियों और वलियों का अस्तित्व इसलिए होता है ताकि लोग समस्त सदाचारों में उन का अनुसरण करें तथा जिन बातों में ख़ुदा तआला ने उन्हें दृढ़ता प्रदान की है उसी सदमार्ग पर समस्त सत्य के अभिलाषी चलें। यह बात नितान्त स्पष्ट है कि किसी मनुष्य के उत्तम सदाचार उसी समय सिद्ध होते हैं जब यथासमय प्रकट हों तथा उसी समय हृदयों पर उनके प्रभाव भी पड़ते हैं। उदाहरणतया क्षमा वह विश्वसनीय और प्रशंसनीय है जो प्रतिशोध की शक्ति रखने के समय

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

℗237 ℗अतः यह बात उसके लिए मारिफ़त में बढ़ोतरी तथा पूर्णता का कारण हो जाती है। बन्दे का दुआ करना तथा ख़ुदा का अपनी शानेख़ुदावन्दी की झलक से प्रत्येक दुआ का उत्तर देना यह एक ऐसी बात है कि जैसे इसी संसार में बन्दा अपने ख़ुदा को देख लेता है तथा दोनों संसार उस के लिए बिना अन्तर के एक समान हो जाते हैं। जब बन्दा अपनी किसी आवश्यकता के समय बार-बार अपने दयालु स्वामी से कोई सामने आई जटिलता पूछता है तथा अनुरोध के पश्चात दयालु ख़ुदावन्द से उत्तर पाता है। इसी प्रकार कि जैसे एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की बात का उत्तर देता है तथा उत्तर ऐसा होता है कि नितान्त सुगम और मृदुल शब्दों में अपितु कभी किसी ऐसी भाषा में होता है कि जिस से बन्दा अनभिज्ञ मात्र है तथा कभी परोक्ष के मामलों पर आधारित होता है कि जो सृष्टि की शक्तियों

सच्चाइयां और दर्शनशास्त्र की समस्त वास्तविकताएं तथा अध्यात्म ज्ञान और सच्चे

शेष हाशिया न. (11)

में हो तथा संयम वह विश्वसनीय है जो स्वयं को आराम पहुँचाने की सामर्थ्य होने के बावजूद फिर संयम पर क़ायम रहे। अत: ख़ुदा तआला ®का नबियों और ®251
वलियों के सन्दर्भ में इरादा यह होता कि उनके हर प्रकार के शिष्टाचार प्रकट हों और पूर्णरूप से सिद्ध हो जाएं। अत: ख़ुदा तआला इसी इरादे को पूर्ण करने के उद्देश्य से उन की प्रकाशमय आयु को दो भागों में विभाजित कर देता है। एक भाग दरिद्रता और कष्टों में व्यतीत होता है तथा प्रत्येक प्रकार से कष्ट दिए जाते हैं तथा यातनाएं दी जाती हैं ताकि उनके वे श्रेष्ठतम शिष्टाचार प्रकट हो जाएं कि जो कठोरतम कष्टों के अतिरिक्त कदापि प्रकट और सिद्ध नहीं हो सकते। यदि उन पर कठोर यातनाएं न आएं तो यह क्योंकर सिद्ध हो कि वह एक ऐसी जाति हैं जो कष्टों के आने से अपने स्वामी (ख़ुदा) से बेवफ़ाई नहीं करते अपितु और भी अग्रसर होते हैं और दयालु ख़ुदा का धन्यवाद करते हैं कि उस ने सब को

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

से बाहर हैं और कभी उस के द्वारा महान् अनुकम्पाओं की ख़ुशख़बरी प्राप्त होती है तथा उच्चतम श्रेणियों का शुभ संदेश सुनाया जाता है और ख़ुदा तआला के सानिध्य की बधाई दी जाती है और कभी सांसारिक बरकतों के संदर्भ में भविष्यवाणी होती है। इन मृदुल और सुगम वाक्यों के सुनने से जो सृष्टि की शक्तियों से नितान्त श्रेष्ठ और उच्चतम होते हैं। जितनी अभिरूचि और मारिफ़त प्राप्त होती है, उसे वही बन्दा जानता है जिसे यह ने'मत प्रदान की ®जाती है। वास्तव में वह ख़ुदा को ऐसा ही ®238
पहचान लेता है जैसे कोई व्यक्ति तुम में से अपने घनिष्ठ और पुराने मित्र को पहचान लेता है। यह इल्हाम अधिकांश महान् और महत्वपूर्ण मामलों में होता है। कभी उसमें ऐसे शब्द भी होते हैं जिनके अर्थ शब्दकोष की पुस्तकें देखकर करने पड़ते हैं अपितु कभी यह इल्हाम अपरिचित भाषा उदाहरणतया अंग्रेज़ी अथवा किसी ऐसी अन्य भाषा में हुआ है जिस भाषा से हम बिल्कुल अपरिचित हैं। इस इल्हाम के उदाहरण हमारे पास बहुत हैं, परन्तु वे जो इस समय हाशिए के लिखते समय अर्थात् मार्च 1882 ई. में हुआ है, जिसमें यह परोक्ष का मामला बतौर भविष्यवाणी प्रकट

सिद्धान्तों के सम्पूर्ण तर्क और माध्यम तथा समस्त पूर्वकालीन और बाद के युग में आने

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ252 छोड़ कर उन्हीं पर कृपा-दृष्टि की Ⓟतथा उन्हें ही इस योग्य समझा कि उसके लिए और उसके मार्ग में कष्ट दिए जाएं। अत: ख़ुदा तआला उन पर कष्ट उतारता है ताकि लोगों पर उनका धैर्य, उनकी निष्ठा, उन का पौरुष उनकी दृढ़ता उन की वफ़ादारी, उनकी सहानुभूति लोगों पर प्रकट करके उन्हें الاستقامة فوق الكرامه (दृढ़ता चमत्कार से श्रेष्ठ है) का चरितार्थ ठहराए, क्योंकि पूर्ण धैर्य पूर्ण कष्टों के अतिरिक्त प्रकट नहीं हो सकता तथा उच्च श्रेणी की दृढ़ता और स्थिरता उच्चश्रेणी के भूकम्प के बिना ज्ञात नहीं हो सकती। ये कष्ट वास्तव में नबियों और वलियों के लिए अध्यात्मिक ने'मतें हैं जिनके द्वारा संसार में उनके उत्तम शिष्टाचार जिन में वे अद्वितीय और अनुपम हैं प्रकट होते हैं तथा आख़िरत में उन की श्रेणियों में
Ⓟ253 उन्नति होती है। यदि ख़ुदा उन पर यह कष्ट न उतारता तो Ⓟउन्हें ये ने'मतें भी प्राप्त न होतीं और न जनसाधारण पर उनकी उत्तम आदतें प्रकट होतीं अपितु अन्य

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

किया गया है कि इस विज्ञापन द्वारा प्रसारित पुस्तक के द्वारा तथा उसके लेखों पर सूचित होने से अन्ततः विरोधियों की प्रत्यक्ष पराजय होगी, सत्याभिलाषियों को हिदायत (मार्ग-दर्शन) प्राप्त होगी, बुरी धारणा दूर होगी और लोग ख़ुदा तआला के इल्क़ा और ख़ुदा की ओर आने के लिए प्रेरित करने से सहायता करेंगे और ध्यान देंगे तथा आएंगे। इत्यादि। वे इल्हामी वाक्य ये हैं:-

يَا اَحْمَدُ بَارَكَ اللّٰهُ فِيكَ مَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۔ اَلرَّحْمٰنُ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ
لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّا اُنْذِرَ اٰبَاؤُ هُمْ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلَ الْمُجْرِمِيْنَ قُلْ اِنِّىْ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ
الْمُؤْمِنِيْنَ اَىْ اَوَّلُ تَائِبٍ اِلَى اللّٰهِ بِاَمْرِ اللّٰهِ فِى هٰذَا الزَّمَانِ اَوْ اَوَّلُ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٰذَا الْاَمْرِ
Ⓟ239 وَاللّٰهُ اَعْلَمُ Ⓟ قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَ زَهَقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا كُلُّ بَرَكَةٍ مِّنْ مُّحَمَّدٍ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَبَارَكَ مَنْ عَلَّمَ وَ تَعَلَّمَ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَىَّ اِجْرَامِىْ هُوَ الَّذِىْ
اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِ اللّٰهِ ظُلِمُوْا
وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرٌ اَىْ لِيُظْهِرَ دِيْنَ الْاِسْلَامِ بِالْحُجَجِ الْقَاطِعَةِ وَ الْبَرَاهِيْنِ

वालों का ज्ञान एक छोटी सी किताब में इस पूर्णता के साथ परिधि में लेते हुए उल्लेख

शेष हाशिया न. (11)

लोगों की भांति तथा उनके समान ठहरते। यद्यपि अपनी अस्थाई आयु को कैसे ही ऐश्वर्य और आनन्द में व्यतीत करते परन्तु अन्ततः एक दिन इस नश्वर संसार से कूच कर जाते। ऐसी स्थिति में न उनका वह सुख-चैन और ऐश्वर्य शेष रहता न आख़िरत (प्रलय) की श्रेष्ठ श्रेणियां प्राप्त होतीं न संसार में उनकी वे विजयें, साहस, वफ़ादारी और वीरता की ख्याति होती जिससे वे प्रतिष्ठित ठहरे, जिनका कोई समतुल्य नहीं तथा ऐसे अद्वितीय ठहरे जिनका कोई अनुरूप नहीं और ऐसे अतुलनीय ठहरे जिनका कोई सदृश नहीं तथा ऐसे अलौकिक ठहरे कि जिन तक
किसी बोध की पहुँच नहीं और ऐसे पूर्ण और योद्धा Ⓟठहरे कि जैसे सहस्त्रों शेर Ⓟ254
एक ढांचे में हैं और सहस्त्रों बाघ एक शरीर में जिन की शक्ति और ताक़त सब की दृष्टि से उच्चतम हो गई तथा जो सानिध्य की उच्चतम श्रेणियों तक पहुँच गई।

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

السَّاطِعَةِ عَلٰى كُلِّ دِيْنٍ مَاسِوَاهُ اَیْ يَنْصُرُ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْمَظْلُوْمِيْن بِاِشْرَاقِ دِيْنِهِمْ وَاِتْمَامِ حُجَتِهِمْ اِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ۔ يَقُوْلُوْنَ اَنّٰى لَكَ هٰذَا اَنّٰى لَكَ هٰذَا اِنْ هٰذَا اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ وَ اَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ مِنْ هٰذَا الَّذِىْ هُوَ مَهِيْنٌ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ۔ جَاهِلٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ۔ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صَادِقِيْنَ۔ هٰذَا مِنْ رَحْمَةِ رَبِّكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ لِيَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ اَنْتَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ فَبَشِّرْ وَمَا اَنْتَ بِنِعْمَةِ
Ⓟ240 رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ۔ قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ اِنَّاⓅ كَفَيْنَاكَ
الْمُسْتَهْزِئِيْنَ۔ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيَاطِيْنُ۔ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ۔ قُلْ عِنْدِىْ شَهَادَةٌ مِّنَ اللّٰهِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُؤْمِنُوْنَ قُلْ عِنْدِىْ شَهَادَةٌ مِّنَ اللّٰهِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ۔ اِنَّ مَعِىَ رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ۔ رَبِّ اَرِنِىْ كَيْفَ تُحْىِ الْمَوْتٰى۔ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ مِّنَ السَّمَآءِ رَبِّ لَا تَذَرْنِىْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِيْنَ۔ رَبِّ اَصْلِحْ اُمَّةَ مُحَمَّدٍ۔ رَبَّنَا افْتَحْ

Ⓟ244करना ,जिसकी तुलना में किसी ऐसी सच्चाई का प्रतीक न मिल सके कि जो Ⓟउससे

शेष हाशिया न. (11)

नबियों और वलियों की आयु का दूसरा भाग विजय, प्रताप, और शासन में अपनी पराकाष्ठा को पहुंचा होता है ताकि उनके वे शिष्टाचार प्रकट हो जाएं जिनके प्रकटीकरण के लिए विजयी होना, प्रतापी होना, सत्ताधारी होना, शक्तिशाली होना, सामर्थ्यवान होना, अधिकार प्राप्त होना तथा बलवान होना आवश्यक है क्योंकि अपने कष्ट देने वालों के पाप क्षमा करना, अपने यातना देने वालों को माफ़ करना, अपने शत्रुओं से प्रेम करना, अपने अशुभ चिन्तकों की
Ⓟ255 भलाई चाहना, Ⓟधन से हृदय न लगाना, सत्ता से अभिमानी न होना, समृद्धिशाली होने पर संकोच, कृपणता तथा अवरोध धारण न करना, दानशीलता और वरदान का द्वार खोलना तथा धन-सम्पत्ति को आराम और ऐश्वर्य का माध्यम न समझना तथा शासन को अत्याचार और अन्याय का साधन न बनाना। ये समस्त सदाचार ऐसे हैं कि जिनके प्रमाण के लिए धनवान और शक्तिशाली होना शर्त है और ये

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

بَيْنَنا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِيْنَ۔ وَقُلِ اعْمَلُوْا عَلٰی مَکَانَتِکُمْ اِنِّی
عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَیْءٍ اِنِّی فَاعِلٌ ذَالِکَ غَدًا۔ وَیُخَوِّفُوْنَکَ مِنْ دُوْنِہٖ
اِنَّکَ بِاَعْیُنِنَا سَمَّیْتُکَ الْمُتَوَکِّلُ۔ یَحْمَدُکَ اللّٰہُ مِنْ عَرْشِہٖ۔ نَحْمَدُکَ وَنُصَلِّیْ یُرِیْدُوْنَ
اَنْ یُّطْفِؤُا نُوْرَ اللّٰہِ بِاَفْوَاھِھِمْ وَاللّٰہُ مُتِمُّ نُوْرِہٖ وَلَوْ کَرِہَ الْکَافِرُوْنَ سَنُلْقِیْ فِیْ قُلُوْبِھِمُ
الرُّعْبَ۔ اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰہِ وَالْفَتْحُ وَانْتَھٰی اَمْرُ الزَّمَانِ اِلَیْنَا۔ اَلَیْسَ ھٰذَا بِالْحَقِّ ھٰذَا
Ⓟ241 تَاْوِیْلُ رُؤْیَایَ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَھَا رَبِّیْ حَقًّا۔ وَقَالُوْا اِنْ ھٰذَا اِلَّا اخْتِلَاقٌ۔Ⓟ قُلِ اللّٰہُ
ثُمَّ ذَرْھُمْ فِیْ خَوْضِھِمْ یَلْعَبُوْنَ قُلْ اِنِ افْتَرَیْتُہٗ فَعَلَیَّ اِجْرَامِیْ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی
عَلَی اللّٰہِ کَذِبًا۔ وَلَنْ تَرْضٰی عَنْکَ الْیَھُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰی وَخَرَقُوْا لَہٗ بَنِیْنَ ۔وَبَنَاتٍ
بِغَیْرِ عِلْمٍ۔ قُلْ ھُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ۔ اَللّٰہُ الصَّمَدُ۔ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ یَکُنْ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ۔
وَیَمْکُرُوْنَ وَ یَمْکُرُ اللّٰہ وَاللّٰہُ خَیْرُ الْمَاکِرِیْنَ۔ اَلْفِتْنَۃُ ھٰھُنَا فَاصْبِرْ کَمَا صَبَرَ
اُوْلُوا الْعَزْمِ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَاِمَّا نُرِیَنَّکَ بَعْضَ الَّذِیْ نَعِدُھُمْ اَوْ

बाहर रह गई हो। यह मनुष्य का कार्य नहीं तथा किसी सृष्टि की शक्ति-सीमा में

शेष हाशिया न. (11)

उसी समय प्रमाण तक पहुँचते हैं जब मनुष्य के लिए धन और सत्ता दोनों प्राप्त हों। अतः चूंकि कष्ट और दुर्दशा तथा धन और सत्ता के अभाव में ये दोनों प्रकार के व्यवहार प्रकट नहीं हो सकते। इसलिए ख़ुदा तआला की दूरदर्शिता ने चाहा कि नबियों और वलियों को इन दोनों प्रकार की परिस्थितियों से जिसमें सहस्त्रों नेमतें समाविष्ट हैं लाभान्वित करे, परन्तु इन दोनों परिस्थितियों के घटित होने का समय प्रत्येक के लिए एक क्रम पर नहीं होता अपितु ख़ुदा की नीति
कुछ ℗के लिए शान्ति और ऐश्वर्य का समय आयु के प्रथम भाग में उपलब्ध ℗256
करा देती है और कष्टों का समय बाद में तथा कुछ पर प्रथम समय में कष्ट आते हैं तत्पश्चात् अन्ततः ख़ुदा की सहायता सम्मिलित हो जाती है तथा कुछ में ये दोनों परिस्थितियां गुप्त होती हैं तथा कुछ में पूर्ण श्रेणी पर प्रकटन और प्रतिबिम्ब पकड़ती हैं। इस सन्दर्भ में सर्वप्रथम हज़रत ख़ातमुर्रुसुल मुहम्मद

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

نَتَوَفَّيَنَّكَ۔ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَ اَنْتَ فِيهِمْ (اَیْ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِعَذَابٍ كَامِلٍ وَاَنْتَ سَاكِنٌ فِيهِمْ) اِنِّیْ مَعَكَ وَكُنْ مَّعِیَ اَيْنَمَا كُنْتَ كُنْ مَعَ اللّٰهِ حَيْثُ مَا كُنْتَ۔ اَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ۔ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ وَافْتِخَارٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا تَيْئَسْ مِنْ رَوْحِ اللّٰهِ اَلَا اِنَّ رَوْحَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ اَلَا اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ۔ يَاْتِيْكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ يَاْتُوْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ۔ يَنْصُرُكَ اللّٰهُ مِنْ عِنْدِهٖ۔ يَنْصُرُكَ رِجَالٌ نُّوْحِیْ اِلَيْهِمْ مِنَ السَّمَآءِ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِ اللّٰهِ۔ اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا۔ فَتْحُ الْوَلِیِّ فَتْحٌ وَّقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا۔ اَشْجَعُ النَّاسِ وَلَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ مُعَلَّقًا بِالثُّرَيَّا لَنَالَهٗ اَنَارَ اللّٰهُ بُرْهَانَهٗ۔ يَا اَحْمَدُ فَاضَتِ الرَّحْمَةُ عَلٰى شَفَتَيْكَ اِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا يَرْفَعُ اللّٰهُ ذِكْرَكَ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ فِی
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَ وَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى وَ نَظَرْنَا اِلَيْكَ وَقُلْنَا ℗ يَا نَارُ كُوْنِیْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا ℗242
عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ۔ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ۔ يَا اَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَاَنْذِرْ وَ رَبَّكَ فَكَبِّرْ يَا اَحْمَدُ يُتِمُّ اسْمُكَ وَلَا يُتِمُّ اسْمِیْ (ای انت فان فينقطع تحميدك ولا ينتهی محامد الله فانها لا تعدو لا

Ⓟ245 सम्मिलित नहीं Ⓟतथा उस की परीक्षा के लिए भी प्रत्येक शिक्षित और अशिक्षित पर

शेष हाशिया न. (11)

मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं, क्योंकि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पूर्ण स्पष्टता से ये दोनों परिस्थितियों आ गईं और ऐसे क्रम से आईं जिस से आप के सम्पूर्ण उत्तम शिष्टाचार सूर्य की भांति प्रकाशमान हो गए और اِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیْمٍ① का विषय प्रमाणित हो गया। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शिष्टाचारों का दोनों प्रकार पर पूर्णतया सिद्ध होना समस्त नबियों के
Ⓟ257 शिष्टाचारों को Ⓟसिद्ध करता है, क्योंकि आंहज़रत ने उनकी नुबुव्वत और उनकी किताबों का सत्यापन किया तथा उनका ख़ुदा का सानिध्य प्राप्त होना प्रकट कर दिया है। अत: इस अनुसंधान (जांच-पड़ताल) से यह आरोप भी बिल्कुल दूर हो गया कि जो मसीह के शिष्टाचार के सन्दर्भ में हृदयों में आ सकता है अर्थात् यह कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के शिष्टाचार उपर्युक्त दोनों प्रकारों पर पूर्णता के साथ सिद्ध नहीं हो सकते अपितु प्रथम प्रकार की दृष्टि से भी सिद्ध नहीं हैं,

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

تحطی) كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيْبٌ اَوْ عَابِرُ سَبِيْلٍ۔ وَّكُنْ مِّنَ الصَّالِحِيْنَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَ أْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ۔ اَلصَّلٰوةُ هُوَ الْمُرَبِّيْ۔ اِنِّيْ رَافِعُكَ اِلَيَّ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّيْ۔ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ فَاكْتُبْ وَلْيُطْبَعْ وَلْيُرْسَلْ فِي الْاَرْضِ خُذُوا التَّوْحِيْدَ التَّوْحِيْدَ يَا اَبْنَاءَ الْفَارِسِ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ مَّا اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ وَلَا تُصَعِّرْ لِخَلْقِ اللّٰهِ وَلَا تَسْئَمْ مِّنَ النَّاسِ۔ اَصْحَابُ الصُّفَّةِ وَمَا اَدْرٰكَ مَا اَصْحَابُ الصُّفَّةِ تَرٰى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ۔ يُصَلُّوْنَ عَلَيْكَ رَبَّنَا اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ وَدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا۔ اَمْلُوْا

इस स्थान पर हृदय में यह भ्रम नहीं लाना चाहिए कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक तुच्छ उम्मती क्योंकर आप (स.अ.व) के नाम, गुण या शुभ गुणों में भागीदार हो सके। नि:सन्देह यह बात सत्य है कि

①-अलक़लम :5

साफ और ℗सीधा मार्ग खुला है, क्योंकि यदि इस बात में सन्देह हो कि क़ुर्आन करीम ℗246

शेष हाशिया न. 11

क्योंकि मसीह ने कष्टों के समय में जो धैर्य से काम लिया तो उस धैर्य की पूर्णता और शुद्धता तब सच्चाई तक पहुँच सकती थी कि जब मसीह अपने यातनाएं देने वालों पर अधिकार और विजय पाकर अपने यातनाएं देने वालों के पाप हार्दिक स्वच्छता के साथ क्षमा कर देते, जैसा कि हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का वालों ℗तथा अन्य लोगों पर पूर्णरूप से विजय ℗258
प्राप्त करके तथा उन्हें अपनी तलवार के नीचे देखकर फिर उनका पाप क्षमा कर दिया और केवल उन्हीं कुछ लोगों को दण्ड दिया जिन्हें दण्ड देने के लिए ख़ुदा तआला की ओर से निश्चित आदेश आ चुका था। उन अनादि धिक्कृतों (फटकार डाले गए लोग) के अतिरिक्त प्रत्येक शत्रु का पाप क्षमा कर दिया तथा विजय पाकर सब को لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ (आज के दिन तुम पर कोई डांट-डपट नहीं) कहा और उसी दोषों को क्षमा करने के कारण जो विरोधियों

शेष हाशिए का हाशिया न. 1

वास्तविक तौर पर कोई नबी भी आँहज़रत के पवित्र गुणों में समान रूप से ℗भागीदार नहीं हो सकता अपितु समस्त फ़रिश्तों को भी इस स्थान ℗243
पर समानता का दम मारने की गुंजायश नहीं कहां यह कि किसी अन्य की आँहज़रत के गुणों से कुछ तुलना हो, परन्तु सत्य के अभिलाषी 'अल्लाह तेरा मार्ग-दर्शन करे' तुम ध्यानपूर्वक इस बात को सुनो कि कृपालु ख़ुदा ने इस उद्देश्य से कि ताकि इस मान्य रसूल की बरकतें हमेशा प्रकट हों और ताकि उस से प्रकाश और उसकी स्वीकारिता की पूर्ण किरणें विरोधियों को हमेशा दोषी और निरुत्तर करती रहें। अपनी पूर्ण नीति और दया से इस प्रकार प्रबन्ध कर रखा है कि उम्मते मुहम्मदिया के कुछ लोग जो नितान्त विनय और विनम्रता से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण करते हैं तथा विनीतता और विनम्रता की चौखट पर पड़कर स्वयं से बिल्कुल गए गुज़रे होते हैं, ख़ुदा उन्हें नश्वर और एक उज्ज्वल शीशे की भांति पाकर अपने मान्य रसूल की बरकतें उनके आडम्बर से पवित्र अस्तित्व के माध्यम से प्रकट करता है और ख़ुदा की ओर से जो कुछ उनकी प्रशंसा की जाती है अथवा उनसे कुछ लक्षण, बरकतें

Ⓟ247 क्योंकर अध्यात्म ज्ञान की समस्त सच्चाइयों पर व्याप्त Ⓟहै तो इस बात का हम ही

शेष हाशिया न. (11)

की दृष्टि में एक दुर्लभ बात ज्ञात होती थी तथा अपने उपद्रवों पर दृष्टि डालने से वे स्वयं को अपने विरोधी के अधिकार में देखकर स्वयं को वधित विचार करते थे, सहस्त्रों लोगों ने क्षण भर में इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चा धैर्य जो एक लम्बी अवधि तक आप ने
Ⓟ259 उन की कठोर यातनाओं पर Ⓟकिया था उनके समक्ष सूर्य की भांति प्रकाशमान हो गया और चूंकि यह बात स्वाभाविक तौर पर मनुष्य के स्वभाव में सम्मिलित है कि मनुष्य पर उसी व्यक्ति के धैर्य की श्रेष्ठता और महानता पूर्ण रूप से प्रकाशित होती है कि जो यातानाओं के पश्चात अपने यातनाएं देने वाले पर प्रतिशोध की शक्ति पाकर उसके पाप को क्षमा कर दे। इस कारण से मसीह के शिष्टाचार जो धैर्य, सहिष्णुता, और सहनशीलता से सम्बद्ध थे भली-भांति सिद्ध नहीं हुए तथा यह बात उचित तौर पर स्पष्ट न हुई कि मसीह का धैर्य और सहिष्णुता अपने

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

और निशानियां प्रकट होती हैं, वास्तव में उन समस्त प्रशंसाओं का पूर्ण मवास (मरजअ) तथा उन समस्त बरकतों का पूर्ण उद्गम रसूले करीम (स.अ.व) ही होता है। वास्तविक और पूर्ण रूप से वे प्रशंसाएं उसी के योग्य होती हैं तथा वही उसका पूर्णतम चरितार्थ होता है, परन्तु चूँकि समस्त विश्व के अधिपति (आँज़रत स.अ.व) के नियमों के पालन की पराकाष्ठा की दृष्टि से उस प्रकाशमय मनुष्य के लिए कि जो प्रतिष्ठावान अस्तित्व नबी करीम (स.अ.व) का है प्रतिबिम्ब के समान हो जाता है। इसलिए उस पवित्र व्यक्ति में जो कुछ ख़ुदा के प्रकाश उत्पन्न और प्रकट हैं, उसके उस प्रतिबिम्ब में भी प्रत्यक्ष और प्रकट होते हैं और प्रतिबिम्ब में उस सम्पूर्ण रूप-रंग का प्रकट होना कि जो उसके मूल में हैं एक ऐसा मामला है
Ⓟ244 Ⓟजो किसी पर गुप्त नहीं। हां प्रतिबिम्ब अपने अस्तित्व में क़ायम नहीं और वास्तविक तौर पर उसमें कोई श्रेष्ठता विद्यमान नहीं अपितु जो कुछ उसमें विद्यमान है वह उसके मूल व्यक्ति का चित्र है जो उसमें प्रत्यक्ष और प्रकट है। अतः अनिवार्य है कि आप या कोई अन्य सज्जन इस बात को

दायित्व लेते हैं कि यदि कोई सज्जन सत्याभिलाषी बन कर अर्थात् इस्लाम स्वीकार करने

शेष हाशिया न. (11)

अधिकार में थी या विवशता थी, क्योंकि मसीह ने सत्ता और अधिकार का समय नहीं पाया ताकि देखा जाता कि उसने अपने कष्टदायिकों के पाप को क्षमा किया या प्रतिशोध लिया। इसके विपरीत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शिष्टाचार कि वे सैकड़ों अवसरों में भली प्रकार स्पष्ट हो गए और आज़माए गए तथा उनकी सच्चाई सूर्य की भांति Ⓟप्रकाशमान हो गई और जो Ⓟ260
शिष्टाचार करुणा (रहम), दानशीलता, दान, स्वार्थ त्याग, सहानुभूति, बहादुरी, संयम, निरीहता, संसार से विमुखता से सम्बद्ध थे वे भी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक अस्तित्व में ऐसे प्रकाशमान, प्रभावान, रौशन हुए कि मसीह क्या अपितु संसार में आंहज़रत से पूर्व कोई भी ऐसा नबी नहीं गुज़रा जिसके शिष्टाचार ऐसी पूर्ण स्पष्टता के साथ प्रकाशमान हो गए हों, क्यों कि ख़ुदा तआला ने आंहज़रत पर असंख्य ख़ज़ानों के द्वारा खोल दिए।

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

दोष की स्थिति न समझें कि क्यों आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आन्तरिक प्रकाश उन की उम्मत के पूर्ण अनुयायियों को प्राप्त हो जाते हैं। विचार करना चाहिए कि इस प्रकाशों का प्रतिबिम्बित होना कि जो उम्मते मुहम्मदिया के पवित्रात्मा लोगों पर शाश्वत वरदान की पद्धति पर होता है से दो महान् बातें जन्म लेती हैं। एक तो यह कि इस से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नितान्त कौशल प्रकट होता है, क्योंकि जिस दीपक से दूसरा दीपक प्रकाशित हो सकता है और हमेशा प्रकाशमान होता है वह ऐसे दीपक से उत्तम है जिस से दूसरा दीपक प्रकाशित न हो सके। दूसरे इस उम्मत की कमालियत तथा दूसरी उम्मतों पर इसकी श्रेष्ठता उस अनश्वर वरदान से सिद्ध होती है तथा इस्लाम धर्म की सच्चाई का प्रमाण हमेशा ताज़ा होता रहता है। केवल यही बात नहीं होती कि पूर्वकालीन युग का हवाला दिया जाए। यह एक ऐसी बात है कि जिस से क़ुर्आन करीम की सच्चाई के प्रकाश सूर्य की भांति प्रकट हो जाते हैं तथा इस्लाम धर्म के विरोधियों पर इस्लाम का समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो जाता है तथा इस्लाम के शत्रुओं का अपमान, अपयश और मुख

Ⓟ248 का Ⓟलिखित आश्वासन देकर किसी इबरानी, यूनानी, लातीनी,अंग्रेज़ी, संस्कृत इत्यादि

शेष हाशिया न. (11)

अतः आंहज़रत ने उन सब को ख़ुदा के मार्ग में व्यय किया तथा किसी प्रकार की विलासिता में थोड़ा सा भी व्यय न हुआ, न कोई इमारत बनाई, न कोई राजभवन तैयार हुआ अपितु एक छोटी सी कच्ची कुटिया में जिसे निर्धन लोगों के कमरों
Ⓟ261 पर कुछ भी अधिमान (एक को दूसरे पर प्रधानता देना) न था, Ⓟअपनी समस्त आयु व्यतीत की, बुराई करने वालों से भलाई करके दिखाई और वे जो दुखदायी थे उन्हें उन के दुख के समय अपने माल से प्रसन्नता पहुँचाई, सोने के लिए अधिकतर पृथ्वी पर बिछौना तथा रहने के लिए एक छोटी सी कुटिया, खाने के लिए जौ की रोटी अथवा अनाहार (फ़ाक़ा) धारण किया, सांसारिक समृद्धि के साधन उन्हें अधिकता के साथ दिए गए, परन्तु आंहज़रत ने अपने पवित्र हाथों को संसार से तनिक भी मलिन न किया और हमेशा दरिद्रता को समृद्धि पर तथा ग़रीबी को अमीरी पर अपनाए रखा और उस दिन से जो प्रकटन किया ताकि उस दिन तक कि अपने श्रेष्ठतम मित्र से जा मिले, अपने दयालु स्वामी के अतिरिक्त

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

काला होना पूर्ण रूप से प्रकट हो जाता है, क्योंकि वे इस्लाम में वे बरकतें और वे प्रकाश देखते हैं जिन के सदृश को वे अपनी क़ौम के पादरियों और पंडितों इत्यादि में सिद्ध नहीं कर सकते। अतः हे सत्याभिलाषी विचार कर अल्लाह तआला तेरी अभिलाषा में सहायता करे।

Ⓟ245 Ⓟयहां कुछ अपरिपक्व लोगों के हृदयों में यह भ्रम भी पैदा हो सकता है कि इसी उपर्युक्त इल्हामी इबारत में एक मुसलमान की प्रशंसाएं क्यों लिखी हैं। अतः समझना चाहिए कि इन प्रशंसाओं से दो लाभ निहित हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने प्रजा की भलाई हेतु दृष्टिगत रखकर उन का वर्णन किया है। एक यह कि ताकि अनुकरणीय नबी के अनुसरण के प्रभाव ज्ञात हों और ताकि समान्य प्रजा पर स्पष्ट हो कि हज़रत ख़ातमुलअंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान कितनी महान् है और उस सत्य के सूर्य के कैसे श्रेष्ठ श्रेणी के प्रकाशमान प्रभाव हैं जिस का अनुसरण किसी को पूर्ण मौमिन बनाता है। किसी को आरिफ़ (आत्मज्ञानी) की श्रेणी तक पहुँचाता है, किसी को अल्लाह का प्रतीक और हुज्जतुल्लाह (परमेश्वर के सत्य होने का प्रमाण) का पद

की किताब से कुछ धार्मिक ®सच्चाइयां निकाल कर प्रस्तुत करें या अपनी ही बुद्धि के ®249

शेष हाशिया न. (11)

किसी को कुछ वस्तु न समझा तथा सहस्त्रों शत्रुओं के मुकाबले पर युद्ध के मैदान में जहां क़त्ल किया जाना निश्चित था, निष्कपट भाव से ख़ुदा के लिए खड़े हो कर अपनी वीरता, वफ़ादारी और दृढ़ता दिखाई। अत: दानशीलता और उदारता, संयम और निरीहता शूरता और वीरता तथा ख़ुदा के प्रेम संबंधी में जो सदाचार हैं वे भी ख़ुदा तआला ने हज़रत ख़ातमुल अंबिया में ऐसे प्रकट किए कि जिनका उदाहरण न कभी संसार में प्रकट हुआ और न भविष्य में प्रकट होगा, परन्तु हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम में इस प्रकार के सदाचार भी ठीक प्रकार से सिद्ध नहीं हुए, क्योंकि ये समस्त सदाचार अधिकार और समृद्धि के समय के अतिरिक्त प्रमाण तक नहीं पहुँच सकते और मसीह ने अधिकार और समृद्धि का युग नहीं पाया। इसलिए दोनों प्रकार के सदाचार उसके पर्दे में रहे। जैसा कि शर्त ही प्रकटित नहीं हुईं। अत: यह उपर्युक्त आरोप जो मसीह की अपूर्ण अवस्था पर

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

प्रदान करता है तथा ख़ुदाई विशेषताओं का पात्र ठहराता है।

दूसरे यह लाभ कि नए की परिभाषा करने में बहुत सी आन्तरिक बिदअतों और ख़राबियों का सुधार निहित है क्यों कि जिस स्थिति में अधिकांश मूर्खों ने पूर्वकालीन वलियों और सदात्मा लोगों पर सैकड़ों मिथ्यारोप लगा रखे हैं कि जैसे उन्होंने स्वयं यह अनुरोध किया था कि हमें ख़ुदा का भागीदार बनाओ और हम से मनोकामनाएं मांगो और हमें ख़ुदा की भांति शक्तिमान और सृष्टि में अधिकार रखने वाला समझो। ऐसी स्थिति में यदि कोई नया सुधारक ऐसी प्रशंसाओं से सम्मानित न हो कि जो प्रशंसाएं अपने पीरों के सन्दर्भ में उनके मस्तिष्क मैं बैठी हुई हैं तब तक उस नए सुधारक का उपदेश और प्रवचन बहुत ही कम प्रभावी होगा, क्योंकि वे लोग हृदय में अवश्य कहेंगे कि यह तिरस्कृत व्यक्ति हमारे पीरों की महान प्रतिष्ठा को कब ®पहुँच सकता है। जब स्वयं हमारे ®246
बड़े पीरों ने मनोकामनाएं देने का वादा दे रखा है तो यह कौन है, और इसकी क्या हैसियत, और क्या संपत्ति, क्या महत्व और क्या सम्मान कि उन को छोड़कर इसकी सुनें। अतः ये दो बड़े लाभ हैं जिनके कारण उस

Ⓟ250 बल पर अध्यात्म ज्ञान का कोई अत्यन्त बारीक रहस्य पैदा Ⓟकरके दिखाएं तो हम उसे

शेष हाशिया न. (11)

आता है आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण अवस्था से पूर्ण रूपेण दूर
Ⓟ263 हो गया, क्योंकि Ⓟआंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुबारक अस्तित्व प्रत्येक नबी के लिए पूर्ण करने वाला तथा पूर्ण है तथा उस श्रेष्ठ हस्ती के माध्यम से जो कुछ मसीह और अन्य नबियों का मामला संदिग्ध और गुप्त रहा था वह चमक उठा। ख़ुदा ने उस पवित्र हस्ती पर उन्हीं अर्थों की दृष्टि से वह्यी और रिसालत को समाप्त किया कि समस्त कमाल उस मुबारक अस्तित्व पर समाप्त हो गए। यह अल्लाह की कृपा है जिसे चाहता है प्रदान करता है।

दसवां भ्रमः- कुछ संकुचित विचारधारा वाले लोग यह भ्रम प्रस्तुत करते हैं कि इल्हाम में यह ख़राबी और दोष है कि वह अध्यात्म ज्ञान की पराकाष्ठा तक पहुंचने से कि जो शाश्वत जीवन और अनश्वर सौभाग्य की प्राप्ति का आधार
Ⓟ264 है निषेधक Ⓟऔर बाधक है (2) और इस आरोप का वर्णन इस प्रकार करते हैं

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

कृपालु स्वामी (ख़ुदा) ने कि जो समस्त सम्मानों और प्रशंसाओं का स्वामी है, अपने एक निर्बल और तुच्छ धूल के समान बन्दे की प्रशंसाएं कीं अन्यथा वास्तव में तुच्छ धूल की क्या प्रशंसा। समस्त प्रशंसाएं और समस्त नेकियां उसी एक की ओर लौटती हैं कि जो समस्त संसार का प्रतिपालक, जीवित रहने वाला, क़ायम रहने और क़ायम रखने वाला है। जब ख़ुदा तआला जिसका नाम सर्वश्रेष्ठ है उपरोक्त हित के उद्देश्य से किसी बन्दे की जिस के द्वारा ख़ुदा की प्रजा का सुधार निहित है कुछ प्रशंसा करे तो उस बन्दे पर अनिवार्य है कि उस प्रशंसा को ख़ुदा की प्रजा

हाशिए का हाशिया न. (2) पूर्ण और वास्तविक इल्हाम कि जो ब्रह्म समाज वालों तथा अन्य मिथ्या धर्मों के प्रत्येक प्रकार भ्रमों को पूर्णरूप से दूर करता है तथा सत्याभिलाषी को पूर्ण विश्वास के पद तक पहुँचाता है वह केवल क़ुर्आन करीम है और संसार में उसके अतिरिक्त कोई ऐसी किताब नहीं कि जो समस्त सम्प्रदायों के मिथ्या भ्रमों को दूर कर सके और मनुष्य को वास्तविक विश्वास की श्रेणी तक पहुँचा सके परन्तु खेद कि इस नेत्रहीन और असभ्य संसार में ऐसे

क़ुर्आन करीम में से निकाल देंगे इस शर्त पर कि उसी किताब के छपने के मध्य हमारे

शेष हाशिया न. (11)

कि इल्हाम विचारों की उन्नति को रोकता है तथा जांच-पड़ताल और खोज के सिलसिले को आगे बढ़ने से बन्द करता है, क्योंकि इल्हाम के पाबन्द होने की स्थिति में प्रत्येक बात में यही उत्तर पर्याप्त समझा जाता है कि यह बात हमारी इल्हामी किताब में वैध या अवैध लिखी है ⓟतथा ⓟ265
बौद्धिक शक्तियों को ऐसा निलंबित और व्यर्थ छोड़ देते हैं कि जैसे ख़ुदा ने उन्हें वे शक्तियाँ प्रदान ही नहीं कीं। अत: अन्तत: प्रयोग में न लाने के कारण वे समस्त शक्तियां धीरे-धीरे कमज़ोर अपितु समाप्त होने के निकट होती जाती हैं और मानव स्वभाव में बिल्कुल परिवर्तन होकर जानवरों से अनुरूपता उत्पन्न हो जाती है तथा मानव हस्ती का उत्तम ⓟकौशल कि जो ⓟ266
बौद्धिक ज्ञानों (दर्शन, तर्क और नीति शास्त्र इत्यादि) में उन्नति है अकारण

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

को लाभ पहुंचाने की नीयत से उचित प्रकार से प्रसिद्धि करे तथा इस बात से कदापि भयभीत न हो कि जनसाधारण क्या कहेंगे। जनसाधारण तो जैसा कि उनकी मनोवृत्ति और समझ है कुछ न कुछ बकवास अवश्य करेंगे, क्योंकि दुर्भावना, कुधारणा रखना जनसाधारण की हमेशा से आदत चली आती है, अब किसी युग में कब परिवर्तित हो सकती है परन्तु वास्तव में ये प्रशंसाएं जनसाधारण के पक्ष में कल्याणकारी हैं यद्यपि प्रारम्भ में जनसाधारण को वे प्रशंसाएं अप्रिय और कुछ मिथ्या जैसी प्रतीत हों, परन्तु अन्ततः ख़ुदा तआला उन पर वास्तविकता प्रकट

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

लोग बहुत कम हैं जो ख़ुदा को अपना मूल उद्देश्य मान कर तथा धार्मिक और जातिगत द्वेष तथा अन्य सांसारिक लालसाओं से पृथक होकर उस प्रकाश और सच्चाई को स्वीकार करें जिसे ख़ुदा तआला ने विशेष तौर पर क़ुर्आन करीम में रखा है जो उसके अन्य में नहीं पाई जाती ⓟअपितु स्वीकार करना तो दूर ⓟ266
रहा हमारे विरोधियों में इतनी लज्जा भी शेष नहीं रही कि क़ुर्आन करीम की निर्विवाद श्रेष्ठताओं और सच्चाइयों को देखकर और अपने धर्म की ख़राबियों

Ⓟ252 पास भेज दें ताकि वह उसके किसी यथा-स्थान में बतौर हाशिया लिख कर छप Ⓟजाए

शेष हाशिया न. (11)

व्यर्थ जाता है और पूर्ण मारिफ़त के प्राप्त करने से मनुष्य रुक जाता है तथा जिस शाश्वत जीवन और अनश्वर सौभाग्य की प्राप्ति की मनुष्य को आवश्यकता है, उसकी प्राप्ति से इल्हामी किताबें मार्ग में बाधक हो जाती हैं।

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

कर देता है और जब उस निर्बल बन्दे का सच्चा होना तथा ख़ुदा की ओर से समर्थन प्राप्त होना जनसाधारण पर प्रकट हो जाता है तो ऐसे व्यक्ति की वे समस्त प्रशंसाएं कि जो युद्ध के मैदान में खड़ा है एक महान विजय का कारण हो जाती हैं तथा एक विचित्र प्रभाव उत्पन्न करके ख़ुदा के बहके हुए बन्दों को उसकी एकेश्वरवाद और एकत्व की ओर खींच लाती हैं। यदि
Ⓟ247 थोड़े Ⓟदिन अट्टहास और भर्त्सना का कारण बनें तो उन अट्टहासों और भर्त्सनाओं को सहन करना धर्म-सेवक के लिए बिल्कुल सौभाग्य और गर्व की बात है और जो लोग अपने रब्ब के संदेशों को पहुँचाते हैं वे भर्त्सना करने वाले की भर्त्सना से भयभीत नहीं होते।

तीसरा प्रकार इल्हाम का यह है कि बड़ी सहजता तथा सरलता के साथ और आहिस्ता तौर पर मनुष्य के हृदय पर इल्क़ा होता है अर्थात् एक बार हृदय में कोई वाक्य गुज़र जाता है जिसमें वे चमत्कार पूर्णता के साथ नहीं होते कि जो दूसरे प्रकार में वर्णन किए गए हैं अपितु इसमें ऊंघ और तन्द्रा भी शर्त नहीं। कभी-कभी बिल्कुल जागरूकता में हो

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

और पथ-भ्रष्टताओं से अवगत होकर असभ्यता से रुक जाएं और चोर होने के बावजूद फिर चतुराई न दिखाएं। उदाहरणतया विचार करना चाहिए कि
Ⓟ267 ईसाइयों की Ⓟआस्थाओं का मिथ्या होना कितना स्पष्ट है कि अकारण हठधर्मी से एक असहाय मनुष्य को ख़ुदा बना रखा है, परन्तु फिर भी उन सज्जनों को ख़ुदा तआला से ऐसी लापरवाही और निस्पृहता है कि प्रलय के दिन की पकड़ से नहीं डरते और कुछ ऐसे सोए हुए हैं कि सैकड़ों बड़े-बड़े विद्वान और ज्ञानी

परन्तु ऐसे प्रश्न के प्रस्तुत करने में यह शर्त भी भली-भांति स्मरण रहे कि जो सज्जन

शेष हाशिया न. (11)

उत्तर – स्पष्ट हो कि ऐसा समझना कि जैसे ख़ुदा की सच्ची किताब का पालन करने से ®बौद्धिक शक्तियों को बिल्कुल बेकार छोड़ा जाता है और जैसे इल्हाम ®267 और बुद्धि परस्पर विपरीत और प्रतिकूल हैं जो एक स्थान पर एकत्र नहीं हो सकते। यह ब्रह्म समाज वालों की अत्यन्त बुरी समझ, दुर्भावना और हठधर्मी है

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

जाता है तथा उसमें ऐसा महसूस होता है कि जैसे परोक्ष (ग़ैव) से वह वाक्य किसी ने हृदय में फूंक दिया है या फेंक दिया है। मनुष्य कुछ जागरूकता में एक तल्लीनता और तन्मयता की स्थिति में होता है और कभी बिल्कुल जागरूक होता है कि अचानक देखता है कि एक नया आया हुआ कलाम (वाणी) उसके सीने में दाख़िल है अथवा कभी ऐसा होता है कि वह कलाम हृदय में प्रवेश करते ही तुरन्त अपना प्रकाश प्रकट कर देता है और मनुष्य सतर्क हो जाता है कि यह ख़ुदा की ओर से इल्क़ा है तथा अभिरुचि रखने वाले को यह भी ज्ञात होता है कि जैसे श्वांस की वायु अन्दर जाती तथा हृदय इत्यादि समस्त अंगों को आराम पहुँचाती है, वैसा ही वह इल्हाम हृदय को धैर्य, चैन और आराम प्रदान करता है तथा व्याकुल तबियत पर उसकी प्रसन्नता और शीतलता प्रकट होती है। यह एक सूक्ष्म रहस्य है जो जन सामान्य से गुप्त है परन्तु आत्मज्ञानी और मारिफ़त रखने वाले लोग जिन्हें वास्तविक दाता (ख़ुदा) ने ख़ुदा के रहस्यों में अनुभवी कर दिया है वे उसे भली-भांति समझते और जानते

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

जगा-जगा कर थक गए, परन्तु उनकी आँख नहीं खुलती और हमेशा संसार की पूजा और ®लापरवाही के कारण इस मिथ्या कल्पना में बन्दी हैं कि जैसे ®268 इंजीली शिक्षा क़ुर्आनी शिक्षा से पूर्ण और उत्तम है। अत: अभी एक पादरी साहिब ने 3 मार्च, 1882 ई. के पर्चे 'नूर अफ़्शां' में यह प्रश्न प्रस्तुत कर दिया है कि अनश्वर जीवन के संदर्भ में मुक़द्दस किताब (बाइबल) में क्या न था कि क़ुर्आन या साहिबे क़ुर्आन लाए तथा क़ुर्आन किन-किन बातों और शिक्षाओं में

Ⓟ253 इस Ⓟबहस के प्रेरक हों वह प्रथम सत्य और स्पष्टता से किसी समाचार पत्र में प्रकाशित

शेष हाशिया न. (11)

और इस विचित्र भ्रम की विचित्र प्रकार की विधि है जिस के भागों में से कुछ
Ⓟ268 तो झूठ और कुछ द्वेष और कुछ मूर्खता है। झूठ यह कि Ⓟइस बात का वर्णन करते हुए कि उन्हें भली-भांति ज्ञात है कि ख़ुदाई सच्चाइयों की उन्नति हमेशा उन्हीं लोगों के द्वारा होती रही है कि जो इल्हाम के पाबन्द हुए हैं तथा ख़ुदा

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

हैं। इस प्रकार का इल्हाम भी इस ख़ाकसार को अनेकों बार हुआ है जिसका क्रियात्मक रूप में लिखना कुछ आवश्यक नहीं।

Ⓟ248 Ⓟ**चौथा प्रकार** इल्हाम का यह है कि सच्चे स्वप्न में ख़ुदा तआला की ओर से कोई बात प्रकट हो जाती है या कभी कोई फ़रिश्ता मनुष्य के रूप में आकर कोई परोक्ष की बात बताता है अथवा कोई लेख काग़ज़ या पत्थर इत्यादि पर प्रदर्शित हो जाता है जिस से कुछ परोक्ष के रहस्य प्रकट होते हैं, तथा इसके अलावा कुछ चित्र भी।

अतः ख़ाकसार अपने कुछ स्वप्नों में से जिन की सूचना अधिकांश इस्लाम के विरोधियों को उन्हीं दिनों में दी गई थी कि जब वे स्वप्न आए थे तथा जिनकी सच्चाई भी उन्हीं के समक्ष प्रकट हो गई बतौर नमूना वर्णन करता हूँ। उन समस्त स्वप्नों में से एक वह स्वप्न है जिस में इस ख़ाकसार को जनाब ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दर्शन हुए थे। उसका संक्षिप्त वर्णन यह है कि इस ख़ाकसार ने 1864 ई. या 1865 ई. में अर्थात् उसी समय

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

इंजील पर श्रेष्ठता रखता है ताकि यह सिद्ध हो कि इन्जील के उतरने के बाद क़ुर्आन के उतरने की भी आवश्यकता थी। ऐसा ही एक अरबी पत्रिका "रिसाला अब्दुल मसीह इब्ने इस्हाक़ अल्कुन्दी" इसी उद्देश्य से झूठे तौर पर बनाई गई है ताकि इंजील की अपूर्ण और दोषयुक्त शिक्षा को सरल स्वभाव लोगों की दृष्टि में किसी प्रकार प्रशंसनीय ठहराया जाए और क़ुर्आनी शिक्षा पर व्यर्थ आरोप लगाए जाएं, परन्तु मूर्ख ईसाई नहीं जानते कि बिना तर्क एक किताब की प्रशंसा

करा दें कि यह बहस मात्र सत्य ⓟके उद्देश्य से करते हैं और अपना पूरा-पूरा उत्तर पाने ⓟ254

शेष हाशिया न. (11)

के एकेश्वरवाद को प्रसारित करने वाले वही ख़ुदा की ओर से भेजे गए लोग हैं जो ख़ुदा के कलाम पर ईमान लाए, परन्तु फिर जान-बूझ कर इस मालूम घटना के विपरीत वर्णन किया है और द्वेष यह कि अपनी बात को अकारण ताज़ा करने के लिए इस निर्विवाद सच्चाई को छुपाया है कि अध्यात्म ज्ञानों में

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

के लगभग कि जब यह विनीत अपनी आयु के प्रथम भाग में अभी अपनी शिक्षा प्राप्ति में व्यस्त था, जनाब ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को स्वप्न में देखा तथा उस समय इस ख़ाकसार के हाथ में एक धार्मिक पुस्तक थी जो स्वयं इस ख़ाकसार की लिखी हुई मालूम होती थी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस पुस्तक को देखकर अरबी भाषा में पूछा कि तूने इस पुस्तक का क्या नाम रखा है। ख़ाकसार ने कहा कि मैंने इस का नाम '**क़ुतुबी**' रखा है जिस नाम की ताबीर (स्वप्नफल) अब इस इश्तिहारी पुस्तक के लिखे जाने पर यह खुली कि वह ऐसी पुस्तक है जो क़ुतुब (ध्रुवतारा) नक्षत्र की तरह स्थिर और सुदृढ़ है जिसकी पूर्ण दृढ़ता को प्रस्तुत करके दस हज़ार रुपए का पुरस्कार दिया गया है। अतः आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह पुस्तक मुझ से ले ली। जब वह पुस्तक हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ ⓟमें आई तो आप ⓟ249
का मुबारक हाथ लगते ही एक नितान्त रुचिकर रंग वाला मेवा बन गया

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

करना और एक की निन्दा करने रहना न किसी किताब को प्रशंसनीय ठहराता है न ही निन्दनीय। बेहूदा तौर पर मुख से बात निकालना कौन नहीं जानता, परन्तु जिस स्थिति में हम ने इस पुस्तक में इंजीली शिक्षा का सत्य से वंचित होना और क़ुर्आनी शिक्षा का प्रकाशों का भंडार होना सैकड़ों तर्कों से सिद्ध कर दिया है और उस पर न केवल दस हज़ार रुपए का विज्ञापन दिया अपितु हमारा ख़ुदा तआला जो हृदयों के गुप्त रहस्यों को भली-भांति जानता है, इस बात पर साक्षी

Ⓟ255 से मुसलमान होने पर तत्पर हैं क्योंकि Ⓟजिसकी नीयत में सत्य की अभिलाषा नहीं

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ269 एकांकी बुद्धि पूर्ण विश्वास की श्रेणी तक नहीं Ⓟपहुँचा सकती और मूर्खता यह कि इल्हाम और बुद्धि को दो विपरीत मामले समझ लिया है कि जो एक स्थान पर इकट्ठे नहीं हो सकते तथा इल्हाम को बुद्धि का हानिकारक और विरोधी ठहरा दिया है, हालांकि यह शंका सरासर निराधार है। स्पष्ट है कि सच्चे इल्हाम

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

जो अमरूद जैसा परन्तु तरबूज़ के बराबर था। आप[स.] ने जब उस मेवा को बांटने के लिए टुकड़े-टुकड़े करना चाहा तो उसमें इतना शहद निकला कि आप[स.] का मुबारक हाथ कुहनियों तक शहद से भर गया। तब एक मुरदा जो द्वार से बाहर पड़ा था, आप के चमत्कार से जीवित होकर इस ख़ाकसार के पीछे आ खड़ा हुआ तथा यह ख़ाकसार आप[स.] के सामने खड़ा था जैसे एक फ़रियादी शासक के सामने खड़ा होता है और आप[स.] बड़े प्रताप, तेज और शासकीय शान से एक शक्तिशाली योद्धा की भांति कुर्सी पर बिराजमान थे। सारांश यह कि एक फांक आप ने मुझे इस उद्देश्य से दी कि ताकि मैं उस व्यक्ति को दूं जो नए सिरे से जीवित हुआ और शेष समस्त फांकें मेरे दामन में डाल दीं और वह एक फांक मैंने उस नए जीवित होने वाले को दे दी, उसने वहीं खा ली। तत्पश्चात जब वह अपनी फांक खा चुका तो मैंने देखा कि आप की मुबारक कुर्सी अपने प्रथम स्थान से बहुत ऊँची हो गई तथा जैसे सूर्य की किरणें छूटती हैं ऐसा ही आप के मुबारक ललाट (पेशानी) से निरन्तर चमकने लगीं कि

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

है कि यदि कोई व्यक्ति एक कण का हज़ारवां भाग भी क़ुर्आन करीम में कुछ दोष निकाल सके या उसके मुक़ाबले में अपनी किसी किताब की एक कणभर कोई ऐसी विशेषता सिद्ध कर सके कि जो क़ुर्आनी शिक्षा के विपरीत हो और उससे उत्तम हो तो हम प्राण-दण्ड भी स्वीकार करने को तैयार हैं। अत: निर्णय और न्याय करने वालो !! विचार करो और ख़ुदा के लिए थोड़ा हृदय को स्वच्छ करके सोचो कि हमारे विरोधियों की ईमानदारी और ख़ुदा का भय किस प्रकार

तथा हृदय में ख़ुदा का भय नहीं और मात्र आन्तरिक दुष्टता से उपद्रवियों की

शेष हाशिया न. (11)

का अनुसरणकर्ता बौद्धिक जांच-पड़ताल तथा खोजों से रुक नहीं सकता अपितु वस्तुओं की वास्तविकता को उचित तौर पर देखने के लिए इल्हाम द्वारा सहायता पाता है तथा इल्हाम के समर्थन और उसके प्रकाश की बरकत से बौद्धिक कारणों में कोई धोखा उसके समक्ष नहीं आता और न अपराधी बुद्धिमानों की भांति

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

जो इस्लाम धर्म की ताज़गी और उन्नति की ओर संकेत था। तब उसी प्रकाश को देखते-देखते आँख खुल गई। ख़ुदा का धन्यवाद है इस पर। यह वह स्वप्न है कि लगभग दो सौ व्यक्तियों को उन्हीं दिनों में सुनाया गया था जिन में पचास या कुछ कम या अधिक हिन्दू भी हैं जो अधिकांश उन में से अभी तक ठीक-ठीक हैं और वे समस्त लोग भली-भांति जानते हैं कि इस युग में 'बराहीन अहमदिया' के लेखन का अभी पता-ठिकाना भी न था और न हृदय में यह बात जमी हुई थी कि कोई धार्मिक पुस्तक बना कर उसकी दृढ़ता और सच्चाई प्रकट करने के लिए ℗दस हज़ार ℗250
रुपए का विज्ञापन दिया जाए परन्तु स्पष्ट है कि अब वे बातें जिन्हें स्वप्न सिद्ध करता है एक सीमा तक पूर्ण हो गईं और जिस 'क़ुतुबियत' के नाम से उस समय के स्वप्न में पुस्तक को नामित किया था, उसी क़ुतुबियत को अब विरोधियों के मुकाबले पर बड़े इनाम के वादे के साथ प्रस्तुत करके उन पर इस्लाम के प्रमाण को पूर्ण किया गया है तथा इस स्वप्न के जितने भाग अभी तक प्रकटन में नहीं आए उनके प्रकटन का सभी को

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

का है कि निरुत्तर रहने के बावजूद फिर भी व्यर्थ बकने से नहीं रुकते।

आओ ईसाइयो इधर आओ ❖ नूरे हक़ देखो राहे हक़ पाओ
जिस क़दर ख़ूबियां है फ़ुरक़ां में ❖ कहीं इन्जील में तो दिखलाओ
℗सर पै ख़ालिक़ है उसको याद करो ❖ यूं ही मख़लूक़ को न बहकाओ ℗269
कब तलक झूठ से करोगे प्यार ❖ कुछ तो सच को भी काम फ़रमाओ
ऐश दुनिया सदा नहीं प्यारो ❖ जब जहां को बक़ा नहीं प्यारो

Ⓟ256 Ⓟभांति व्यर्थ बातें करता है उस की ओर ध्यान देना समय को नष्ट करना है। ऐसा ही

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ270 अनुचित तर्कों Ⓟके बनाने की आवश्यकता पड़ती है और न कुछ दिखावा करना पड़ता है अपितु जो बुद्धिमत्ता का उचित मार्ग है वही उसे दिखाई दे जाता है और जो वास्तविक सच्चाई है उसी पर उसकी दृष्टि जा ठहरती है। अत: बुद्धि का

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

प्रतीक्षक रहना चाहिए कि आकाशीय बातें कभी टल नहीं सकतीं।

अब एक दूसरी रोया (स्वप्न) सुनिए। समय लगभग बारह वर्ष का हुआ है कि एक हिन्दू सज्जन जो अब आर्य समाज क़ादियान के सदस्य और जीवित मौजूद हैं, हज़रत ख़ातमुर्रुसुल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कारों और आप की भविष्यवाणियों से सख़्त इन्कारी था, उसका पादरियों की भांति अत्यन्त शत्रुता से यह विचार था कि मुसलमानों ने ये समस्त भविष्यवाणियां स्वयं बना ली हैं अन्यथा आप[स.] पर ख़ुदा ने कोई परोक्ष की बात प्रकट नहीं की तथा उन में यह नुबुव्वत का लक्षण मौजूद ही नहीं था, परन्तु सुब्हान अल्लाह ख़ुदा की कैसी कृपा अपने नबी पर है और क्या श्रेष्ठ शान उस मासूम और पवित्र नबी की है कि जिसकी सच्चाई की किरणें अब भी ऐसी हो चमकती हैं कि जैसी हमेशा से चमकती आई हैं। कुछ थोड़े दिनों के पश्चात् ऐसा संयोग हुआ कि उस हिन्दू सज्जन का एक परिजन अचानक किसी चाल में आ कर क़ैद हो गया तथा उसके साथ एक और हिन्दू भी क़ैद हुआ। उन दोनों की अपील

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

यह तो रहने की जा नहीं प्यारो ❖ कोई इसमें रहा नहीं प्यारो
इस ख़राबे में क्यों लगाओ दिल ❖ हाथ में अपने क्यों जलाओ दिल
क्यों नहीं तुमको दीने हक़ का ख़्याल ❖ हाए सौ-सौ उठे है दिल में उबाल
क्यों नहीं देखते तरीक़े सवाब ❖ किस बला का पड़ा है दिल पै हिजाब
इस क़दर क्यों है कीनो इस्तिकबार ❖ क्यों ख़ुदा याद से गया यक बार
तुमने हक़ को भुला दिया हयहात ❖ दिल को पत्थर बना दिया हयहात

एक दूसरा कारण ®अद्वितीयता है कि जो प्रत्येक सत्याभिलाषी को आसानी से समझ आ ®257

शेष हाशिया न. (11)

कार्य यह है कि इल्हाम की घटनाओं को काल्पनिक तौर पर प्रदर्शित करती है और इल्हाम का कार्य यह है कि वह बुद्धि को तरह-तरह की उद्विग्नता से बचाता है। ऐसी स्थिति में स्पष्ट है कि बुद्धि और इल्हाम में कोई विवाद नहीं और परस्पर विपरीत और विरुद्ध नहीं और न वास्तविक इल्हाम अर्थात्

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

चीफ़ कोर्ट में गुज़री। इस हैरानी और परेशानी की स्थिति में उस आर्य सज्जन ने एक दिन मुझ से यह बात कही कि परोक्ष की ख़बर इसे कहते हैं कि आज कोई यह बता सके कि हमारे इस मुकद्दमे का अन्त क्या है। तब मैंने उत्तर दिया कि परोक्ष (ग़ैब) तो ख़ुदा की विशेषता है तथा ख़ुदा के गुप्त रहस्यों से न कोई नुजूमी परिचित® है, न कोई ज्योतिषी, न फाल ®251
बताने वाला (परोक्ष की बातें बताने वाला) न अन्य कोई प्राणी। हां ख़ुदा जो आकाश और पृथ्वी की प्रत्येक होने वाली बात से परिचित है अपने पूर्ण और पवित्र रसूलों को अपने इरादे और अधिकार से कुछ परोक्ष के रहस्यों पर सूचित करता है तथा कभी-कभी जब चाहता है तो अपने सच्चे रसूल के पूर्ण अनुयायियों पर जो मुसलमान हैं उनके अनुसरण के कारण तथा इस कारण से कि वे अपने रसूल के ज्ञानों के उत्तराधिकारी हैं, कुछ गुप्त रहस्य उन पर भी खोलता है ताकि उन के धर्म की सच्चाई पर एक प्रतीक हो परन्तु अन्य क़ौमें जो असत्य पर हैं, जैसे हिन्दू और उनके पंडित तथा ईसाई और पादरी वे समस्त उन पूर्ण बरकतों से वंचित

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

ऐ अज़ीज़ो सुनो कि बे क़ुर्आं ❖ हक़ को मिलता नहीं कभी इन्सां
जिनको इस नूर की ख़बर ही नहीं ❖ उन पै इस यार की नज़र ही नहीं
है ये फ़ुरक़ां में इक अजीब असर ❖ कि बनाता है आशिक़े दिलबर
जिसका है ना क़ादिरे अकबर ❖ उसकी हस्ती से दी है पुख़्ता ख़बर
कूए दिलबर में खींच लाता है ❖ फिर तो क्या-क्या निशां दिखाता है
दिल में हर वक्त नूर भरता है ❖ सीने को ख़ूब साफ़ करता है

Ⓟ258 सकती है अर्थात् यह कि क़ुर्आन करीम Ⓟ उस संक्षिप्त शैली के बावजूद जो सत्य और

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ271 Ⓟक़ुर्आन करीम बौद्धिक उन्नति के मार्ग में बाधक है अपितु बुद्धि को प्रकाश देने वाला, उसका महान् सहायक, समर्थक और अभिभावक है और किस प्रकार सूर्य का महत्व आँख ही से उत्पन्न होता है और प्रकाशमान दिन के लाभ आँख वालों पर ही प्रकट होते हैं। इसी प्रकार ख़ुदा के कलाम का पूर्ण महत्व उन्हीं को होता

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

हैं। मेरा यह कहना ही था कि वह व्यक्ति इस बात पर हठ करने लगा कि यदि इस्लाम के अनुयायियों को अन्य क़ौमों पर प्रमुखता है तो इसी अवसर पर इस प्रमुखता को प्रदर्शित करना चाहिए। इसके उत्तर में अधिकांश बार कहा गया कि इसमें ख़ुदा का अधिकार है मनुष्य का उस पर आदेश नहीं, परन्तु उस आर्य ने अपने इन्कार पर बहुत आग्रह किया। अतः जब मैंने देखा कि वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों तथा इस्लाम धर्म की श्रेष्ठताओ से सख्त इन्कारी है, तब मेरे हृदय में ख़ुदा की ओर से यही उत्तेजना डाली गई कि ख़ुदा उसे इसी मुकद्दमे में लज्जित और निरुत्तर करे। मैंने दुआ की कि हे दयालु ख़ुदा तेरे नबी करीम के सम्मान और श्रेष्ठता से यह व्यक्ति सख्त इन्कारी है और तेरे निशानों और भविष्यवाणियों से जो तूने अपने रसूल पर प्रकट कीं सख्त इन्कारी है और इस मुकद्दमे की अन्तिम वास्तविकता प्रकट होने से यह निरुतर हो सकता है और तू प्रत्येक बात को करने की शक्ति रखता है। जो चाहता है करता है और कोई बात तेरे ज्ञान की परिधि

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

उसके औसाफ़ क्या करूँ मैं बयां ❖ वह तो देता है जां को इदराके जां
वह तो चमका है नय्यरे अकबर ❖ उससे इन्कार हो सके क्यों कर
वह हमें दिलिस्तां तलक लाया ❖ उसके पाने से यार को पाया
बहरे हिकमत है वह कलाम तमाम ❖ इश्क़ हक़ का पिला रहा है जाम
बात जब उसकी याद आती है ❖ याद से सारी ख़ल्क़ जाती है
सीने में नक़्श हक़ जमाती है ❖ दिल से ग़ैर ख़ुदा उठाती है

सूक्ष्मता को अपनी परिधि में लिए हुए है, जिस का प्रथम कारण में वर्णन हो चुका है।

शेष हाशिया न. 11

है जो बुद्धिजीवी हैं जैसा कि ख़ुदा तआला ने स्वयं फ़रमाया-

وَتِلْکَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ وَمَا يَعْقِلُهَا اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ[1]

(भाग-21) अर्थात् ये उदाहरण हम लोगों के लिए वर्णन करते हैं परन्तु उन्हें उचित तौर पर वे ही समझते हैं जो ज्ञानवान और बुद्धिमान हैं। ®इसी प्रकार®272

शेष हाशिए का हाशिया न. 1

से गुप्त नहीं। तब ख़ुदा ने जो अपने सच्चे धर्म इस्लाम का समर्थक है और अपने रसूल का सम्मान और श्रेष्ठता चाहता है। रात के समय रोया (स्वप्न) में पूर्ण वास्तविकता प्रकट कर दी और बताया कि ख़ुदा के प्रारब्ध में यों निश्चित है कि उसकी फाइल चीफ़ कोर्ट से अधीनस्थ कोर्ट में पुनः वापस आएगी और फिर इस अधीनस्थ कोर्ट में उसकी आधी सज़ा माफ़ हो जाएगी, परन्तु मुक्ति नहीं पाएगा, और जो उसका साथी है वह पूर्ण दण्ड भुगत कर मुक्ति पाएगा तथा बरी वह भी नहीं होगा। अतएव मैंने उस स्वप्न से जागने पर अपने ख़ुदा तआला का धन्यवाद किया जिसने विरोधी के सामने मुझे विवश न होने दिया। मैंने उसी समय यह रोया (स्वप्न) एक बड़े समूह को सुना दिया और उस हिन्दू सज्जन को भी उसी दिन सूचना दे दी। अब मौलवी साहिब !! आप स्वयं यहां आकर और स्वयं यहां पहुँच कर जिस प्रकार हृदय चाहे उस हिन्दू सज्जन से जो यहां क़ादियान में मौजूद है तथा अन्य लोगों से पूछ सकते हैं कि यह सूचना जो मैंने वर्णन की है सही है या इसमें कुछ कमी या अधिकता है। ऐसे मामलों में धर्म के विरोधियों की साक्ष्य विशेषकर पंडित दयानन्द के अनुयायियों की साक्ष्य जितनी

शेष हाशिए का हाशिया न. 2

दर्दमन्दों की है दवा वही एक ∗ है ख़ुदा से ख़ुदानुमां वही एक
हमने पाया ख़ोरे हुदा वही एक ∗ हम ने देखा है दिलरुबा वही एक
उसके मुन्किर जो बात कहते हैं ∗ यूं ही इक वाहियात कहते हैं
बात जब हो मेरे पास आएं ∗ मेरे मुंह पर वह बात कह जावें
मुझ से उस दिलिस्तां का हाल सुनें ∗ मुझ से वह सूरतो जमाल सुनें

[1]-अलअन्कबूत-44

Ⓟ259 इबारत में इतनी Ⓟसरसता-सुबोधता, अनुकूलता, मृदुलता, विनम्रता और चमक-दमक

शेष हाशिया न. (11)

जिस प्रकार आँख के प्रकाश के लाभ केवल सूर्य ही से प्रकट होते हैं और यदि वह न हो तो फिर देखने और अंधेपन में कुछ अन्तर शेष नहीं रहता, इसी प्रकार बौद्धिक विवेक की विशेषताएं भी इल्हाम ही से प्रकट होती हैं क्योंकि वह बुद्धि को सहस्त्रों प्रकार की परेशानियों से बचा कर विचार करने के लिए निकटस्थ

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

विश्वसनीय है आप जानते ही होंगे। अब हम एक तीसरी रोया (स्वप्न) भी आपकी सेवा में भेंट करते हैं।

Ⓟ252 Ⓟसरदार मुहम्मद हयात खान का नाम आपने कभी सुना ही होगा जो सरकार की आज्ञा से एक दीर्घ समय तक निलंबित रहे। डेढ़ वर्ष का समय हुआ होगा या कदाचित इस से अधिक कुछ समय गुज़र गया होगा कि जब उस निलंबन की स्थिति में भांति-भांति के कष्ट, कठिनाइयां और दुख उन के समक्ष आए तथा सरकारी इच्छा भी कुछ विपरीत ही समझी जा रही थी। उन्हीं दिनों में उनके बरी होने की सूचना हमें स्वप्न में मिली और स्वप्न में मैंने उन्हें कहा कि तुम कुछ भय न करो, ख़ुदा प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है वह तुम्हें मुक्ति देगा। अतः यह सूचना उन्हीं दिनों में बीसियों हिन्दुओं, आर्यों और मुसलमानों को सुनाई गई। जिसने सुना कल्पना से बहुत दूर समझा और कुछ ने एक दुर्लभ बात समझी। मैंने सुना है कि इन्हीं दिनों में मुहम्मद हयात ख़ान साहिब को भी यह ख़बर किसी ने लाहौर में पहुँचा दी थी। अतः ख़ुदा का धन्यवाद है कि यह ख़ुशख़बरी जैसी देखी थी वैसे ही पूर्ण हुई। अब इस स्वप्न के गवाह भी साठ-सत्तर से कुछ कम न होंगे। यदि इसमें मुसलमानों की साक्ष्य

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

आँख फूटी तो ख़ैर कान सही ☆ न सही यूं ही इम्तिहान सही

और चूंकि 'नूर अफ़्शां' के लेखक ने अपने प्रश्न के उत्तर के लिए मुझे भी अन्य लोगों के साथ सम्बोधित किया है और यद्यपि इस पुस्तक में ऐसे समस्त भ्रमों को यथास्थान समूल नष्ट कर दिया गया है, परन्तु उपर्युक्त कारण को देखते हुए

रखता है कि यदि किसी सचेष्ट समीक्षक और इस्लाम के Ⓟकठोर विरोधी को कि जो Ⓟ260

शेष हाशिया न. (11)

मार्ग बता देता है तथा जिस मार्ग पर चलने से शीघ्र उद्देश्य प्राप्त हो जाए वह मार्ग दिखा देता है। प्रत्येक बुद्धिमान भली-भांति समझता है कि यदि किसी अध्याय में विचार करते समय इतनी सहायता प्राप्त हो जाए कि किसी विशेष ढंग पर सदमार्ग धारण करने के लिए ज्ञान प्राप्त हो जाए तो उस ज्ञान से बुद्धि

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

विश्वसनीय न हो और न मुहम्मद हयात ख़ान साहिब की तो आप को स्मरण रहे कि इसमें हिन्दू और आर्यों के दस बारह लोग आर्य समाज के सदस्य भी हैं जो वेद की रेखा पर चलने वाले और मुसलमानों के कट्टर विरोधी हैं। सरदार मुहम्मद हयात ख़ान साहिब से न हमारा पत्राचार, न कुछ मेल-मिलाप न कुछ ऐसा सम्बंध और परिचय है। हम आश्चर्य चकित थे कि उनकी अन्तिम स्थिति उनको व्यकुलता के दिनों में ख़ुदा ने हम पर क्यों प्रकट कर दी। अतः आज इसका कारण प्रकट हुआ कि यह कश्फ़ भी इसलिए हुआ ताकि आज धार्मिक कार्य जिसमें ख़ुदा ने हमें लगाया हुआ है काम आए। ख़ुदा का धन्यवाद पुनः उसका धन्यवाद।

अब एक चौथा स्वप्न भी आप की पूर्ण संतुष्टि के लिए वर्णन करता हूँ। लगभग दस वर्ष का समय हुआ है, Ⓟकि मैंने स्वप्न में हज़रत Ⓟ253
मसीह अलैहिस्सलाम को देखा। मसीह ने और मैंने एक स्थान पर एक ही बरतन में भोजन किया। भोजन करने में हम दोनों ऐसे निःसंकोच और प्रेम-पूर्वक थे कि जैसे दो सगे भाई होते हैं और जैसे हमेशा से दो मित्र और हार्दिक दोस्त होते हैं। तत्पश्चात उसी मकान में जहां अब यह

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

युक्ति संगत है कि इस स्थान पर भी संक्षिप्त रूप में उनके भ्रमों का निवारण किया जाए। अत: नीचे लिखा जाता है:-

ज्ञात होना चाहिए कि इंजील की शिक्षा को पूर्ण विचार करना सरासर बुद्धि की कमी और नादानी है। स्वयं हज़रत मसीह ने इंजील की शिक्षा को अपूर्णता से पवित्र नहीं समझा, जैसा कि उन्होंने स्वयं फ़रमाया है कि मेरी और बहुत सी बातें हैं कि मैं तुम्हें कहूं परन्तु तुम उनको सहन नहीं कर सकते

अरबी साहित्य की इबारत लिखने में पारंगत हो अधिकार रखने वाले शासक की ओर

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ273 को बड़ी सहायता Ⓟप्राप्त होती है और बहुत से अस्त-व्यस्त विचारों तथा बेकार के परिश्रम से मुक्ति हो जाती है। इल्हाम के अनुयायी न केवल अपने विचार से बुद्धि के उत्तम जौहर को पसन्द करते हैं अपितु स्वयं इल्हाम ही उन्हें बुद्धि

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

ख़ाकसार यह हाशिया लिख रहा है मैं और मसीह और एक अन्य कामिल और पूर्ण रसूल को वंश से सय्यद दालान में प्रसन्नतापूर्क खड़े रहे, सय्यद साहिब के हाथ में एक काग़ज़ था, उसमें उम्मते मुहम्मदिया के कुछ विशिष्ट लोगों के नाम लिखे हुए थे तथा हज़रत ख़ुदावन्द तआला की ओर से उन की कुछ प्रशंसाएं लिखी हुई थीं। अतः सय्यद साहिब ने उस काग़ज़ को पढ़ना आरम्भ किया जिससे यह विदित होता था कि वह मसीह को उम्मते मुहम्मदिया के उन पदों से परिचित करना चाहते हैं जो ख़ुदा के निकट उनके लिए निर्धारित हैं तथा उस काग़ज़ में समस्त प्रशंसायुक्त इबारत ऐसी थी कि जो शुद्धरूप से ख़ुदा तआला की ओर से थी। अतः जब पढ़ते-पढ़ते वह काग़ज़ अन्त तक पहुँच गया और कुछ थोड़ा सा शेष रहा तब इस ख़ाकसार का नाम आया, जिसमें ख़ुदा तआला की ओर से यह प्रशंसायुक्त इबारत अरबी भाषा में लिखी हुई थी

هُوَ مِنِّیْ بِمَنْزِلَۃ تَوْحِیْدِیْ وَتَفْرِیْدِیْ فَکَادَ أَن یّعرف بَیْنَ النَّاسِ

अर्थात् वह तुझ से ऐसा है जैसे मेरी तौहीद (एकेश्वरवाद) और तफ़रीद

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

परन्तु जब वह अर्थात् 'रूहुलहक़' आएगा तो वह तुम्हें समस्त सच्चाई का मार्ग दिखाएगा। इंजील यूहन्ना, बाब:16, आयत: 12,13,14। अब कहिए क्या यही इन्जील है जो समस्त धार्मिक सच्चाइयों पर व्याप्त है जिसके होते हुए क़ुर्आन करीम की आवश्यकता नहीं। हे सज्जनो !! जिस स्थिति में आप लोग हज़रत मसीह की वसीयत के अनुसार इन्जील को पूर्ण और समस्त सच्चाइयों का संग्रह कहने के अधिकृत ही नहीं हैं तो फिर आप का ईमान भी विचित्र ईमान है कि

से यह धमकी Ⓟभरा आदेश सुनाया जाए कि यदि तुम उदाहरणतया बीस वर्ष के समय Ⓟ261

शेष हाशिया न. ⑪

को सुदृढ़ करने के लिए आग्रह करता है। अत: उन्हें बौद्धिक उन्नति हेतु दोहरा आकर्षण आकर्षित करता है एक तो स्वाभाविक जोश जिस से मनुष्य प्रत्येक वस्तु के मर्म और वास्तविकता को तर्कपूर्ण और बौद्धिक तौर पर ज्ञात करना चाहता है। दूसरे इल्हामी आग्रह कि जो जिज्ञासा की अग्नि को दोगुना कर देते

शेष हाशिए का हाशिया न. ①

(अकेला होना) अतः शीघ्र ही लोगों में प्रसिद्ध किया जाएगा। यह अन्तिम वाक्य فَكَادَ أن يّعرف بَيْنَ النَّاسِ उसी समय बतौर इल्हाम भी इल्क़ा हुआ। चूंकि मुझे इस आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार की प्रारम्भ से रुचि है। इसलिए यह स्वप्न और यह इल्क़ा भी कई मुसलमानों और कई हिन्दुओं को जो अब तक Ⓟक़ादियान में मौजूद हैं उसी समय बताया गया। अब देखिए Ⓟ254
कि यह स्वप्न और यह इल्हाम भी कितना वैभवशाली और मानव शक्तियों से बाहर है और यद्यपि अभी तक यह भविष्यवाणी पूर्ण रूप से पूरी नहीं हुई परन्तु उसके अपने समय पर पूर्ण होने की भी प्रतीक्षा करना चाहिए, क्योंकि ख़ुदा के वादों में सम्भव नहीं कि वादों के विपरीत हो। यहां यह स्मरण रहे कि यद्यपि कभी-कभी ऐसे लोग भी कि जो इस्लाम धर्म से बाहर हैं, कोई-कोई सच्चा स्वप्न देख लेते हैं परन्तु उन में और मुसलमानों के स्वप्नों में कि जो ख़ुदा के मान्य रसूल का पूर्ण अनुसरण करते हैं अनेक प्रकार से स्पष्ट अन्तर है। उन समस्त अन्तरों में से एक यह है कि मुसलमानों को सच्चे स्वप्न बहुतात के साथ आते हैं जैसा कि

शेष हाशिए का हाशिया न. ②

अपने उस्ताद और रसूल के विपरीत चल रहे हैं और जिस किताब को हज़रत मसीह अपूर्ण कह चुके हैं उसे पूर्ण कहे जाते हैं। क्या आप की समझ मसीह की समझ से कुछ अधिक है या मसीह का कथन विश्वसनीय नहीं और यदि आप यह कहें कि यद्यपि इंजील मसीह के समय में अपूर्ण थी परन्तु मसीह ने यह भी बतौर भविष्यवाणी कह दिया था कि जो बातें मेरे वर्णन करने से रह गई हैं उन्हें सांत्वना देने वाला आकर वर्णन कर देगा तो नितांत उचित, परन्तु हम कहते हैं कि

①-यूनुस :65

Ⓟ262 में कि मानो एक आयु की अवधि है। क़ुर्आन करीम का सदृश Ⓟइस प्रकार प्रस्तुत करके

शेष हाशिया न. (11)

हैं। अतः जो लोग क़ुर्आन करीम को सरसरी दृष्टि से भी देखते हैं वे भी उस
Ⓟ274 निर्विवाद बात से Ⓟइन्कार नहीं कर सकते कि इस पवित्र कलाम में विचार और दृष्टि के अभ्यास हेतु बड़े-बड़े आग्रह हैं, यहां तक कि मोमिनों का लक्षण ही यही ठहरा दिया है कि वह हमेशा पृथ्वी और आकाश के चमत्कारों में विचार

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

उनके सन्दर्भ में ख़ुदा तआला ने स्वयं वादा दे रखा है और फ़रमायाः-

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا[1]

परन्तु काफ़िर और इस्लाम के इन्कार करने वालों को इतनी बहुतात के साथ सच्चे स्वप्न कदापि प्राप्त नहीं होते अपितु उनका हज़ारवां भाग भी प्राप्त नहीं होता। अतः इसका कारण हमारे उन सहस्त्रों सच्चे स्वप्नों के प्रमाण से हो सकता है जिन्हें हम ने घटना से पूर्व सैकड़ों मुसलमानों और हिन्दुओं को बता दिया है और जिन के मुकाबले से अन्य क़ौमों का असमर्थ होना हम प्रारम्भ से सिद्ध कर रहे हैं।

एक अन्तर यह है कि मुसलमान का स्वप्न प्रायः नितान्त श्रेष्ठ और महान् जटिल समस्याओं की ख़ुशख़बरी और शुभ संदेश पर आधारित होता है और काफ़िर का स्वप्न भी प्रायः अधम मामलों में तुच्छ और महत्वहीन होता है तथा उसके अपमान, असफलता के घृणित लक्षण प्रकट होते हैं और इसके सबूत के लिए भी हमारे ही स्वप्नों पर न्याय
Ⓟ255 की दृष्टि से विचार करना पर्याप्त है और Ⓟयदि कोई इन्कारी हो तो ऐसे

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

यदि वह सांत्वना देने वाला मसीह जिस के आगमन की इंजील में ख़ुशख़बरी दी है और जिसके सन्दर्भ में लिखा है कि वह धार्मिक सच्चाइयों को पूर्णता के स्तर पर पहुँचाएगा और भविष्य की परिस्थितियों अर्थात् प्रलय की ख़बरें इन्जील की अपेक्षा अधिक विस्तारपूर्वक वर्णन करेगा। आप के विचार में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त जिन पर क़ुर्आन करीम उतरा, जो समस्त पूर्वकालीन किताबों की अपेक्षा पूर्ण होने का दावा करता है तथा उसका

न दिखाओ कि क़ुर्आन के किसी स्थान में से केवल दो चार ®पंक्तियों का कोई लेख ®263

शेष हाशिया न. 11

करते रहते हैं तथा ख़ुदाई नीति के नियम पर विचार करते रहते हैं। जैसा कि एक स्थान पर फ़रमाया है-

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّھَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ الَّذِیْنَ یَذْکُرُوْنَ اللّٰہَ

शेष हाशिए का हाशिया न. 1

श्रेष्ठ स्वप्न किसी अन्य धर्म के हमारे समक्ष प्रस्तुत करके और सिद्ध करके दिखाए।

एक अन्तर यह है कि मुसलमान का स्वप्न नितान्त सच्चा और स्पष्ट होता है और पूर्ण मुसलमान को बहुत ही कम संयोग होता है कि उसके स्वप्न की निर्मूल और व्यर्थ स्वप्नों में गणना की जाए, क्योंकि वह शुद्ध हृदय और पवित्र धर्म वाला है और ख़ुदा तआला से सच्चा सम्बंध रखता है इस्लाम के इन्कारी के विपरीत जो अपवित्र हृदय और झूठे धर्म के कारण जैसे एक गन्दगी में पड़ा हुआ है उसे बहुत ही कम संयोग होता है कि उसका कोई स्वप्न सच्चा हो। फिर अनुभव से यह भी सिद्ध हुआ है कि यदि किसी इस्लाम के इन्कारी का कभी कोई स्वप्न सच्चा भी हो तो उसमें यह शर्त है कि वह इन्कारी कोई शत्रु पादरी या पंडित न हो अपितु कोई सरल स्वभाव हिन्दू या ग़रीब ईसाई हो, जिसे अपने धर्म पर कुछ ऐसी आस्था न हो, न इस्लाम से कुछ द्वेष और कपट हो। बहुत से अनुभवों से यह भी सिद्ध हुआ है कि जो किसी निर्धन हिन्दू या ईसाई का

शेष हाशिए का हाशिया न. 2

सबूत देता है, कोई और व्यक्ति है जिसने हज़रत मसीह के पश्चात् प्रकटन करके धार्मिक सच्चाइयों को पूर्णता के स्तर तक पहुँचाया ®और भविष्य की ख़बरें मसीह ®271
की अपेक्षा अधिक बताईं तो उसका नाम बताना चाहिए और ऐसी किताब को प्रस्तुत करना चाहिए कि जो मसीह के पश्चात् ईसाइयों को ख़ुदा की ओर से प्राप्त हुई, जिस ने अपनी वे सच्चाइयां प्रस्तुत कीं कि जो मसीह की वर्णित हैं मौजूद न थीं और परिस्थितियां तथा भविष्य की ख़बरें बताईं जिन्हें बताने से मसीह असमर्थ रहा

लेकर ही उसके समान या उससे उत्तम कोई नई इबारत बना लाओ जिसमें वह समस्त

शेष हाशिया न. (11)

قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا[1]

Ⓟ275 अर्थात् आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति और रात-दिन Ⓟकी भिन्नता में बुद्धिमानों के लिए सृष्टि के रचयिता की हस्ती और क़ुदरत पर कई निशान हैं। बुद्धिमान वे ही लोग होते हैं जो ख़ुदा को बैठे, खड़े और करवट पर पड़े होने की स्थिति

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

कभी किसी स्थिति में स्वप्न सच्चा हो जाए तो वह भूल और ग़लती की मिलावट से पूर्णतया पवित्र और शुद्ध नहीं होता अपितु उसमें कुछ न कुछ कमी या अधिकता, अस्त-व्यस्त होना और कमी-बेशी का होना अवश्य होता है। हमें स्मरण है कि मुहर्रम 1299 हिज्री की पहली या दूसरी तिथि में हमें स्वप्न में यह दिखाई दिया कि किसी सज्जन ने पुस्तक की सहायतार्थ पचास रुपए भेजे हैं। उसी रात एक आर्य सज्जन ने भी हमारे लिए स्वप्न देखा कि किसी ने पुस्तक की सहायता के लिए एक हज़ार रुपया भेजा है। जब उन्होंने स्वप्न वर्णन किया तो हमने उसी समय उन्हें अपना स्वप्न भी सुना दिया और यह भी कह दिया कि तुम्हारे स्वप्न में उन्नीस भाग झूठ सम्मिलित हो गया है और यह उसी का दण्ड है कि तुम हिन्दू हो और इस्लाम से बाहर हो। कदाचित उन्हें बुरा ही लगा होगा,
Ⓟ256 परन्तु बात सच्ची थी, जिसकी सच्चाई पांचवें Ⓟया छः मुहर्रम को प्रकट

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

ताकि उसी किताब को क़ुर्आन करीम के मुकाबले पर परखा जाए, परन्तु यह तो शोभनीय नहीं कि आप लोग मसीह के अनुयायी कहलाकर फिर इस वस्तु को पूर्ण कहें जिसे आप से अठारह सौ ब्यासी वर्ष पूर्व मसीह अपूर्ण ठहरा चुका है और यदि आप का मसीह के कथन पर ईमान ही नहीं तथा स्वयं चाहते हैं कि इन्जील का क़ुर्आन करीम से मुक़ाबला करें तो बिस्मिल्लाह आइए और इन्जील में से वे विशेषताएं निकाल कर दिखाइए कि जो हमने इसी पुस्तक में

---

①-आले इमरान :191,192

®विषय अपनी पूर्ण सूक्ष्मताओं और सच्चाइयों के साथ आ जाए तथा इबारत भी ऐसी®264

शेष हाशिया न. (11)

में स्मरण करते रहते हैं तथा पृथ्वी और आकाश तथा अन्य सृष्टियों की उत्पत्ति के सम्बंध में विचार और चिन्तन मनन करते रहते हैं तथा उनके हृदय और मुख पर ये ख़ुदा की गुण-गाथा जारी रहती है कि हे हमारे ख़ुदा तू ने इन वस्तुओं में से किसी वस्तु को व्यर्थ और निरर्थक तौर पर उत्पन्न नहीं किया अपितु प्रत्येक

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

हो गई अर्थात् मुहर्रमुलहराम की पाँचवीं या छठी तिथि में पचास रुपए की राशि जिसे जूनागढ़ से शैख़ बहाउद्दीन साहिब प्रधानमंत्री रियासत ने पुस्तक के लिए भेजी थी, कई लोगों तथा एक आर्य सज्जन के सामने पहुँच गई। इस पर ख़ुदा का धन्यवाद।

इसी प्रकार एक बार ख़ुदा ने हमें स्वप्न में एक राजा के मरने की सूचना दी। वह सूचना हमने एक हिन्दू सज्जन को जो अब वकालत का काम करते हैं बताई। जब वह ख़बर उसी दिन पूरी हुई तो वह हिन्दू सज्जन नितान्त आश्चर्यचकित हुए कि ऐसा स्वच्छ और ख़ुला हुआ परोक्ष का ज्ञान क्योंकर ज्ञात हो गया। फिर एक बार उन्हीं वकील साहिब ने अपनी वकालत के लिए परीक्षा दी तो उसी ज़िले में से उनके साथ उसी वर्ष में बहुत से अन्य लोगों ने भी परीक्षा दी। उस समय भी मुझे एक स्वप्न आया मैंने उस वकील साहिब तथा तीस, चालीस अन्य हिन्दुओं को जिनमें से कोई तहसीलदार, कोई हैडक्लर्क, कोई लिपिक है बताया कि उन सब में से केवल वर्णित प्रथम व्यक्ति सफल होगा शेष समस्त

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

क़ुर्आन करीम के सन्दर्भ में सिद्ध की हैं ताकि न्याय-प्रिय लोग स्वयं ही देख लें कि ख़ुदा को पहचानने के साधन क़ुर्आन करीम में उपलब्ध हैं या इन्जील में। जिस परिस्थिति में हमने इसी निर्णय के लिए कि ताकि इन्जील और क़ुर्आन के सन्दर्भ में अन्तर ज्ञात हो जाए दस हज़ार रुपए का विज्ञापन भी अपनी पुस्तक के साथ संलग्न कर दिया है तो फिर आप जब तक ईमानदारों की भांति अब हमारी पुस्तक के मुकाबले पर अपनी इंजील की श्रेष्ठताएं न दिखाएं तब तक

Ⓟ265सरस-सुबोध हो जैसी Ⓟक़ुर्आन की, तो तुम्हें इस असमर्थता के कारण मृत्यु-दण्ड दिया

शेष हाशिया न. (11)

वस्तु तेरी सृष्टियों में से प्रकृति के चमत्कारों और नीति से ओत-प्रोत है कि जो तेरी बरकतों वाली हस्ती पर तर्क स्थापित करती है। हां दूसरी इल्हामी किताबें कि जो अक्षरांतरित (मुहर्रफ) और परिवर्तित हैं उन में अनुचित और दुर्लभ बातों पर जमे रहने का आग्रह पाया जाता है जैसे ईसाइयों की इंजील मुबारक परन्तु

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

उम्मीदवार फेल हो जाएंगे। अतः अन्ततः ऐसा ही हुआ 1868 ई. में उस वकील साहिब के पत्र से यहां क़ादियान में यह सूचना हमें मिल गई। इस पर ख़ुदा का धन्यवाद है।

यहां यह भी स्मरण रहे कि जिस प्रकार हमारे विरोधियों के स्वप्न सांसारिक मामलों में अधिकतर निराधार और झूठे निकलते हैं वैसा ही धार्मिकता में उनका झूठा और बे सर पैर होना हमेशा सिद्ध होता है। पिछले दिनों में जिसे आठ या नौ वर्ष का समय हुआ होगा। हमने सुना था कि एक पादरी साहिब ने यह भविष्यवाणी की है कि अब तीन वर्ष के अन्दर-अन्दर हज़रत मसीह आकाश से पादरियों की सहायता के लिए
Ⓟ257 उतर आएंगे। फिर कदाचित एक बार हम ने 'मन्शूर मुहम्मदी' Ⓟया किसी अन्य अख़बार में पढ़ा है कि बंगलौर के एक पादरी ने भी कुछ ऐसा ही वादा किया था। बहरहाल एक अवधि हो गई कि वह तीन वर्ष का वादा गुज़र भी गया, परन्तु आज तक मसीह को आकाश से उतरता किसी ने नहीं देखा और पादरियों की यह भविष्यवाणी ऐसी झूठ निकली

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

कोई बुद्धिमान ईसाई भी आप के कलाम को अपने हृदय में उचित नहीं समझेगा, यद्यपि कि मुख से हां-हां करता रहे। सज्जनो!! आप भली-भांति स्मरण रखें कि इन्जील और तौरात का काम नहीं कि क़ुर्आनी विशेषताओं का मुक़ाबला कर सकें। दूर क्यों जाएं इन्हीं दो बातों में जो अभी तक इस पुस्तक में क़ुर्आनी श्रेष्ठताओं में से वर्णन हो चुकी हैं मुकाबला करके देख लें अर्थात् प्रथम वह बात कि जो मूल इबारत में लिखी जा चुकी है कि क़ुर्आन करीम समस्त ख़ुदाई

जाएगा, फिर भी वह घोर शत्रुता, बदनामी के भय और ®मृत्यु के डर के बावजूद उसका ®266

शेष हाशिया न. (11)

यह इल्हाम का दोष नहीं। यह भी वास्तव में अपूर्ण बुद्धि का ही दोष है। यदि मिथ्या के पुजारियों की बुद्धि सही होती और ज्ञानेन्द्रियां ठीक होतीं तो वे क्यों ऐसी अक्षरांतरित और परिवर्तित किताबों का अनुसरण करते और क्यों वे अपरिवर्तनीय, पूर्ण और अनादि ख़ुदा पर ये आपदाएं और कष्ट वैध रखते कि

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

जैसा कि कुछ ज्योतिषी नवम्बर 1981 ई. में प्रलय का क़ायम होना समझ बैठे थे। स्पष्ट रहे कि हम इस बात से इन्कार नहीं करते कि किसी पादरी को मसीह के उतरने के सन्दर्भ में स्वप्न आया हो, परन्तु हमारा तात्पर्य यह है कि पादरियों के स्वप्न हज़रत ख़ातमुल अंबिया से कुफ़्र और शत्रुता के कारण अधिकांश झूठे निकलते हैं और यदि कोई स्वप्न संयोग से कुछ सच्चा हो तो वह संदिग्ध और अस्पष्ट होता है । अतः यदि मसीह के सन्दर्भ में कि जो उन्हें स्वप्न आया उसकी गणना इसी दूसरे प्रकार में करें तो उसके यह अर्थ होंगे कि स्वप्न में मसीह से अभिप्राय उम्मते मुहम्मदिया का कोई कामिल सदस्य है, क्योंकि हमेशा से यह अनुभव होता चला आया है कि जब कोई ईसाई अपना स्वप्न देखता है कि अब मसीह आने वाला है जो धर्म को ताज़ा करेगा या यदि कोई बन्दा देखता है कि अब कोई अवतार आने वाला है जिस से धर्म की उन्नति होगी, तो उनके ऐसे स्वप्न प्रायः सच्चे भी हों तो उनकी ताबीर (स्वप्नफल) यह होती है कि उस मसीह और अवतार से

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

सच्चाइयों का संग्रह है और कोई अन्वेषक अध्यात्म ज्ञान की कोई बीरीकी प्रस्तुत नहीं कर सकता कि जो क़ुर्आन करीम में मौजूद न हो। ®अत: आप ®272
की इन्जील यदि कुछ वास्तविकता रखती है तो आप पर अनिवार्य है कि किसी विरोधी सदस्य के तर्कों और आस्थाओं को उदाहरणतया ब्रह्म समाज वालों, आर्य समाज वालों या नास्तिकों के सन्देहों को इन्जील द्वारा बौद्धिक तौर पर खण्डन करके दिखाओ और जो-जो विचार उन लोगों ने देश में फैला

सदृश बनाने पर कदापि समर्थ नहीं हो सकता, यद्यपि संसार के सैकड़ों साहित्यकारों

शेष हाशिया न. (11)

मानो वह एक निर्बल बालक होकर अपवित्र खाना खाता रहा तथा अपवित्र शरीर से साकार हुआ और अपवित्र मार्ग से निकला और नश्वर संसार में आया तथा भांति-भांति के कष्ट उठा कर अन्ततः बड़े ही दुर्भाग्य और असफल होने की स्थिति में ईली-ईली करता मर गया। यह इल्हाम ही था जिसने इस ग़लती का भी

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

अभिप्राय कोई मुहम्मदी व्यक्ति होता है जो धर्म की उन्नति और सुधार के लिए यथासमय आता है और चूंकि वह अपने प्रकाशमान होने में समस्त पवित्र लोगों का उत्तराधिकारी होता है, इसलिए संदिग्ध विचार रखने वाले लोगों की कल्पना में ऐसे रूप में दिखाई देता है अर्थात् उन्हें वह एक ऐसे व्यक्ति के रूप की कल्पना में दिखाई देता है जिसे वे अपनी आस्थानुसार बड़ा पवित्र, कामिल, सत्य का पेशवा और अपना पथ-प्रदर्शक समझते हैं। अतः ईसाइयों और हिन्दुओं के स्वप्न प्रायः निराधार और सरासर झूठ और संदिग्ध निकलते हैं। अतः इन समस्त कारणों पर दृष्टि डालते हुए यह बात भली भांति स्पष्ट तौर पर सिद्ध है कि सच्चे स्वप्नों का बहुतात के साथ आना, पूर्ण तौर पर आना, जटिल मामलों में आना तथा पूर्ण स्पष्टता से आना, यह उम्मते मुहम्मदिया की विशिष्टता है इसमें किसी दूसरे सम्प्रदाय की भागीदारी नहीं तथा भागीदारी न होने का कारण यही है कि वे समस्त लोग सद्मार्ग से दूर और पृथक हैं। उनके विचार संसार-पूजा, सृष्टि-पूजा तथा कामवासना में लगे हुए हैं और सदात्मा लोगों के प्रकाश

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

रखे हैं उन्हें अपनी इंजील के बुद्धि-संगत वर्णन से दूर करके प्रस्तुत करो। फिर क़ुर्आन करीम से इंजील की तुलना करके देख लो तथा किसी मध्यस्थ से पूछ लो कि सच्चाई की दृष्टि से इंजील संतुष्ट करती है या क़ुर्आन करीम संतुष्ट करता है। दूसरे वह बात जो हाशिए के हाशिया न. 1 में लिखी गई है अर्थात् यह कि क़ुर्आन करीम आन्तरिक तौर पर सच्चे अभिलाषी का वास्तविक उद्देश्य से नाता जोड़ देता है, फिर वह अभिलाषी ख़ुदा तआला के सानिध्य से सम्मानित होकर उस की ओर

लेखकों को अपना सहायक बना ले। ये उपर्युक्त उदाहरण कोई काल्पनिक या अनुमानित

शेष हाशिया न. (11)

निवारण किया। सुब्हान अल्लाह कितना महान और कृपा का सागर वह कलाम है जिसने सृष्टि के उपासकों को पुनः एकेश्वरवाद की ओर आकर्षित किया। वाह क्या प्यारा और मनोहर वह प्रकाश है जो एक संसार को अंधकारमय स्थान से बाहर लाया और इसे छोड़कर सहस्त्रों लोग बुद्धिमान कहला कर और

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

से जो उन्हें ख़ुदा की ओर से प्राप्त होता है पूर्णतया अनभिज्ञ और वंचित हैं। यह मात्र दावा नहीं, यह केवल मुख की बात नहीं, यह एक प्रमाणित सच्चाई है जिस से कोई बुद्धिमान यदि इन्कार करे तो उस पर अनिवार्य है कि मुकाबला करके दिखाए, क्योंकि जो बात पूर्ण प्रमाणों से तथा पूर्ण साक्ष्यों से स्पष्ट हो चुकी है वह केवल मुख की व्यर्थ और निरर्थक बातों से टूट नहीं सकती। अतः चिन्तन-मनन करो।

पाँचवां प्रकार इल्हाम का वह है जिस का मनुष्य के हृदय से कुछ संबंध नहीं अपितु बाहर से एक आवाज़ आती है और यह आवाज़ ऐसी मालूम होती है जैसे एक पर्दे के पीछे से कोई आदमी बोलता है परन्तु यह आवाज़ अत्यन्त आनन्दमय और प्रफुल्ल तथा कुछ शीघ्रता के साथ होती है तथा इससे हृदय को एक आनन्द प्राप्त होता है मनुष्य एक सीमा तक तन्मयता की स्थिति में होता है क्योंकि अचानक वह आवाज़ आ जाती है तथा आवाज़ सुनकर वह स्तब्ध रह जाता है कि यह आवाज़ कहां से आई और मुझ से किसने कलाम किया तथा आश्चर्यचकित हो

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

से इल्हाम पाता है, जिस इल्हाम में उस पर ख़ुदा तआला की अनुकम्पाएं होती हैं तथा ख़ुदा के मान्य लोगों में गिना जाता है और उस इल्हाम का सत्य उन भविष्यवाणियों के पूर्ण होने से सिद्ध होता है जो उसमें होती हैं। वास्तव में यही नाता जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है अनश्वर जीवन की वास्तविकता है क्योंकि जीवित से नाता जीवन का कारण है। जिस किताब के अनुसरण से उस नाते के लक्षण प्रकटन हो जाएं, उस किताब का सत्य प्रकट अपितु सूर्य से भी

Ⓟ268 बात नहीं है अपितु यह Ⓟसच्ची घटना है जिसकी क़ुर्आन करीम ही के समय में परीक्षा

शेष हाशिया न. 11

दार्शनिक बन कर इस ग़लती और इस प्रकार की असंख्य ग़लतियों में डूबे रहे और जब तक क़ुर्आन करीम न आया किसी दार्शनिक ने दृढ़तापूर्वक इस मिथ्या आस्था का खण्डन न लिखा और न उस नष्ट हो चुकी जाति का सुधार किया अपितु दार्शनिक स्वयं इस प्रकार की सैकड़ों अपवित्र आस्थाओं में लिप्त थे जैसा

शेष हाशिए का हाशिया न. 1

कर आगे-पीछे देखता है फिर समझ जाता है कि किसी फ़रिश्ते ने यह आवाज़ दी। यह बाहरी आवाज़ इस अवस्था में प्रायः बतौर ख़ुशख़बरी के आती है कि जब मनुष्य किसी मामले में नितान्त चिन्तित और संतप्त
Ⓟ259 Ⓟहोता है अथवा किसी अशुभ संदेश सुनने से जो वास्तव में मात्र झूठ था उसे कोई बड़ी शंका लग जाती है, परन्तु दूसरे प्रकार की तरह उसमें दुआओं की पुनरावृति पर उस आवाज़ का आना प्रकट नहीं हुआ अपितु एक उस समय कि जब ख़ुदा तआला चाहता है कोई फ़रिश्ता परोक्ष से अनायास ही आवाज़ करता है दूसरे प्रकार के विपरीत कि उसमें प्रायः कामिल दुआओं पर ख़ुदा तआला की ओर से उत्तर का आना प्रकट हुआ है और चाहे सौ बार दुआ और प्रश्न करने का संयोग हो उसका उत्तर नितांत वदान्य ख़ुदा की ओर से सौ बार ही जारी हो सकता है जैसा कि इस ख़ाकसार का निरन्तर अनुभव इस बात का साक्षी है। इल्हाम के इस प्रकार में भी ख़ाकसार को एक बड़ी भविष्यवाणी स्मरण है जिस से इस ख़ाकसार ने ख़ुदा तआला की ओर से सम्मानित होकर क़ादियान

शेष हाशिए का हाशिया न. 2

अधिक प्रकाशमान है क्योंकि उसमें केवल बातें ही बातें नहीं अपितु उसने उद्देश्य तक पहुँचा दिया है। अत: अब हम ईसाई सज्जनों से पूछते हैं कि यदि आप की इंजीली शिक्षा सत्य और उचित और ख़ुदा की ओर से है तो क़ुर्आन करीम के अध्यात्मिक प्रभावों के मुकाबले पर जिन का हमने प्रमाण दे दिया तथा जो कुछ ख़ुदा ने मुसलमानों पर क़ुर्आन करीम के अनुसरण की बरकत और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा समस्त नबियों में सर्वश्रेष्ठ और ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो

हो चुकी है और जिसकी सच्चाई आरम्भ से प्रत्येक सत्याभिलाषी पर आज तक सिद्ध

शेष हाशिया न. (11)

कि पादरी यूत[1] साहिब लिखते हैं कि वास्तव में ईसाइयों ने यह तसलीस (तीन ख़ुदाओं का होना) की आस्था अफ़लातून से ली है और उस मूर्ख यूनानी के ग़लत आधार पर एक दूसरा ग़लत आधार रख दिया है। अतः ख़ुदा का सच्चा और पूर्ण इल्हाम बुद्धि का शत्रु नहीं है Ⓟअपितु अपूर्ण बुद्धि आधे-अधूरे Ⓟ276

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

के एक आर्य समाज के सदस्य को जो अब भी यहां ठीक और सुरक्षित मौजूद है, भविष्यवाणी के पूर्ण होने पर आरोपित और निरुत्तर किया था। यह ऐसी कल्पना से दूर और प्रत्यक्षतः बिल्कुल दुर्लभ और घटित न हो सकने वाली बात विदित होती थी जिसे सुनकर उस आर्य ने सख़्त इन्कार किया और इस बात पर हठ कर बैठा कि कदापि सम्भव ही नहीं कि ऐसी अनुमान से दूर बात घटित हो जाए। अतः अन्त में वह बात बिल्कुल वैसी ही प्रकटन में आई जैसी पहले कही गई थी। यह भविष्यवाणी न केवल उस आर्य को बताई गई थी अपितु अन्य कई लोगों को बताई गई थी कि जो अब तक मौजूद है और किसी को इन्कार करने का स्थान शेष नहीं। चूंकि यह भविष्यवाणी एक विस्तृत घटना पर आधारित है इसलिए क्रियात्मक रूप में इस की व्याख्या की आवश्यकता नहीं। बहरहाल समझना चाहिए कि इल्हाम एक निश्चित और वास्तविक सच्चाई है जिसका उज्ज्वल और पवित्र झरना, इस्लाम धर्म है। ख़ुदा जो अनादिकाल से सदात्मा लोगों का मित्र है दूसरों पर यह प्रकाशमय द्वार

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

अलैहि वसल्लम के अनुकरण के सौजन्य से परोक्ष के मामले और आकाशीय बरकतें प्रकट कीं और करता है Ⓟवह आप भी प्रस्तुत कीजिए। Ⓟ273

ता स्याह रूए शबद हर कि दरोग़श बाशिद परन्तु आप याद रखें कि आप दोनों प्रकार की उपर्युक्त वर्णित बातों में से किसी बात में भी मुक़ाबला नहीं कर सकते। इंजील की शिक्षा का पूर्ण होना तो एक ओर वह तो सही भी नहीं रही, उसने तो अपनी पहली ही शिक्षा में इब्ने मरयम (मरयम का बेटा) को

①-लिपिक की भूल है। सही पोर्ट है (JOHN DAVENPORT जॉन डेविड पोर्ट) (प्रकाशक)

होती चली आई है और अब भी यदि कोई सत्याभिलाषी इस क़ुर्आनी चमत्कार को स्वयं

शेष हाशिया न. (11)

बुद्धिमानों की स्वयं शत्रु है। जैसा कि स्पष्ट है कि विषनाशक स्वयं में मनुष्य के शरीर के लिए कोई बुरी वस्तु नहीं है, परन्तु यदि कोई अपनी बुद्धि की कमी के कारण विष को विषनाशक समझ ले तो यह स्वयं उसकी बुद्धि का दोष है न कि विषनाशक का। अतः स्मरण रखना चाहिए कि यह भ्रम कि प्रत्येक बात की

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

कभी नहीं खोलता और अपनी विशेष नैमत अन्य को कदापि नहीं देता
Ⓟ260 और क्योंकर Ⓟदे। क्या यह संभव है कि जो व्यक्ति अपने घर के समस्त द्वार बन्द करके और आँखों पर पर्दा डालकर बैठा हुआ है वह प्रकाश को उसी प्रकार पाए जिस प्रकार वह व्यक्ति जिस के समस्त द्वार खुले हैं तथा जिसकी आँखों पर कोई पर्दा नहीं। क्या नेत्रहीन और नेत्रवान कभी समान हो सकते हैं, क्या अंधकार प्रकाश का मुक़ाबला कर सकता है, क्या सम्भव है कि कोढ़ी जिसका समस्त शरीर कोढ़ग्रस्त है, जिसके अंग दुर्गंधित होकर गिरते जाते है वह अपनी शारीरिक स्थिति में उस जमाअत से बराबरी कर सके जिसे ख़ुदा ने पूर्ण स्वास्थ्य और सुन्दरता प्रदान की है। हम हर समय सत्य के अभिलाषी को इस बात का प्रमाण देने के लिए मौजूद हैं कि वह आध्यात्मिक और वास्तविक तथा सच्ची बरकतें कि जो हज़रत ख़ैरुर्रुसुल (रसूलों में सर्वोत्तम) के अनुयायियों में पाई जाती हैं किसी अन्य सम्प्रदाय में कदापि मौजूद नहीं। जब हम ईसाइयों और आर्यों तथा दूसरी अन्य क़ौमों की अंधकारमय और गुप्त स्थिति पर

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

ख़ुदा का बेटा ठहराकर दिखा दिया। रही तौरात की शिक्षा तो वह भी अक्षरांतरित और अपूर्ण होने के कारण एक मोम की नाक※ हो रही है, जिसे ईसाई अपने तौर पर और यहूदी अपने तौर पर बना रहे हैं। यदि तौरात में अध्यात्म ज्ञान और आख़िरत के सन्दर्भ में वे विवरण होते जो क़ुर्आन करीम में हैं तो ईसाइयों और यहूदियों में इतने झगड़े क्यों होते। सत्य तो यह है कि जितना सूरह 'इख़्लास'

※-अस्थायी स्वभाव रखने वाली जिसे जिस ओर चाहे कर लो (एक मुहावरा है) अनुवादक

अपनी ⓟआँखों से देखना चाहता है तो इस बात का हम ही दायित्व लेते हैं कि यह ⓟ270

शेष हाशिया न. (11)

जांच-पड़ताल के लिए इल्हामी किताब की ओर लौटना ख़तरे का स्थान है। यह सरासर मूर्खता और बेवक़ूफ़ी है, क्योंकि जैसा कि हम उल्लेख कर चुके हैं कि इल्हाम बुद्धि के लिए एक सच्चाई को दिखाने वाला दर्पण है और उसकी सच्चाई पर भी यही महान् तर्क है कि वह ऐसी समस्त बातों से पूर्णरूप से पवित्र है कि

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

दृष्टि डालते हैं तथा उनके समस्त पंडितों, योगियों, वैरागियों, पादरियों और ईसाई प्रचारकों को आकाशीय प्रकाशों से पूर्णारूपेण वंचित और दुर्भाग्यशाली पाते हैं दूसरी ओर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में आकाशीय प्रकाशों और अध्यात्मिक बरकतों का एक दरिया बहता हुआ देखते हैं तथा ख़ुदाई प्रकाशों को वर्षा की भांति बरसते हुए देखते हैं तो फिर जिस वृत्तान्त को हम स्वयं अपनी आँखों से देख रहे हैं और जिसकी गवाहियाँ हमारी बुनियाद और समस्त अंगों में भरी हुई हैं जिस पर हमारे रक्त की एक-एक बूंद चश्मदीद गवाह है, उस से क्योंकर इन्कारी हो जाएं, क्या हम ज्ञात बात को अज्ञात मान लें या गोचर और प्रकट वस्तु को अगोचर और अप्रकटित ठहरा दें क्या करें। हम सच-सच कहते हैं और सच कहने से किसी भी स्थिति में रुक नहीं सकते। यदि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न आए होते और क़ुर्आन करीम जिसके प्रभाव हमारे इमाम और बुज़ुर्ग हमेशा से देखते आए और आज हम देख ⓟरहे हैं न उतरा होता तो हमारे लिए ⓟ261

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

की एक पंक्ति में तौहीद का विषय भरा हुआ है वह सम्पूर्ण तौरात अपितु समस्त बाइबल में नहीं पाया जाता और यदि है तो कोई ईसाई हमारे समक्ष प्रस्तुत करे। फिर जिस स्थिति में तौरात में अपितु समस्त बाइबल में शुद्धता, स्पष्टता और पूर्णता के साथ ख़ुदा तआला की एकेश्वरवाद की चर्चा ही नहीं। इसी कारण तौरात और इन्जील में यदि ख़राबी उत्पन्न हो गई और निश्चित तौर पर कुछ समझ न आया और स्वयं मूल में ही यहूदियों और ईसाइयों में तरह-तरह के

Ⓟ271 चमत्कार भी नितान्त Ⓟआसानी से उस पर सिद्ध कर देंगे। इस बात की परीक्षा कर लेना

शेष हाशिया न. (11)

जो ख़ुदा की क़ुदरत और पूर्णता तथा पवित्रता पर दृष्टि डालने के पश्चात् दुर्लभ सिद्ध हों अपितु अध्यात्म ज्ञानों की बारीकियों में जो नितान्त गुप्त और जटिल हैं, मानवीय निर्बल बुद्धि का वही एक पथ-प्रदर्शक और मार्ग-दर्शक है। अत: स्पष्ट है कि उसकी ओर लौटना बुद्धि को बेकार नहीं करता अपितु बुद्धि को उन

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

यह बात अत्यन्त कठिन होती कि हम जो केवल बाइबल के देखने से निश्चित तौर पर पहचान कर सकते कि हज़रत मूसा और हज़रत मसीह और अन्य पूर्वकालीन नबी वास्तव में उसी पवित्र और पुनीत जमाअत में से हैं जिन्हें ख़ुदा ने अपनी विशेष कृपा से अपनी रिसालत के लिए चुन लिया है। यह हमें क़ुर्आन करीम का उपकार मानना चाहिए जिसने अपना प्रकाश प्रत्येक युग में स्वयं दिखाया और फिर उस पूर्ण प्रकाश से पूर्वकालीन नबियों की सच्चाइयां भी हम पर प्रकट कर दीं और यह उपकार न केवल हम पर अपितु आदम से लेकर मसीह तक उन समस्त नबियों पर है जो क़ुर्आन करीम से पूर्व गुज़र चुके तथा प्रत्येक रसूल उस सर्वश्रेष्ठ के उपकार का आभारी है जिसे ख़ुदा ने वह पूर्ण और पुनीत किताब प्रदान की जिसके पूर्ण प्रभावों की बरकत से समस्त सच्चाइयां हमेशा के लिए जीवित हैं, जिन से उन नबियों की नुबुव्वत पर विश्वास करने के लिए एक मार्ग खुलता है और उन की नुबुव्वतें सन्देह और आशंकाओं से सुरक्षित रहती हैं।

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

विवाद उत्पन्न हो गए। इसी तौरात से यहूदियों ने कुछ समझा और ईसाइयों ने कुछ और विचार किया। इस स्थिति में कौन सत्य का अभिलाषी है जिसकी आत्मा इस बात को नहीं चाहती कि नि:सन्देह ख़ुदा तआला की सामान्य कृपा की यही मांग थी कि वह इन भूले-भटके सम्प्रदायों के विवादों का स्वयं फैसला करता और अपराधी को उसके अपराध पर चेतावनी देता। अत: समझना चाहिए कि क़ुर्आन करीम के उतरने की यही आवश्यकता थी ताकि वह मतभेदों का

तथा सत्य और असत्य में अन्तर ज्ञात ℗कर लेना कुछ कठिन बात नहीं। कोई ऐसा ℗272

शेष हाशिया न. (11)

बारीक रहस्यों तक पहुँचाता है, जिन तक स्वयं पहुँचना बुद्धि के लिए कठिन था। अत: वास्तविक इल्हाम से अर्थात् क़ुर्आन करीम से बुद्धि को सरासर फ़ायदा और लाभ पहुँचता है न कि क्षति और हानि तथा बुद्धि वास्तविक इल्हाम द्वारा ख़तरों से सुरक्षित हो जाती है न यह कि ख़तरों में पड़ती है, क्योंकि यह बात

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

स्पष्ट हो कि क़ुर्आन करीम में हमेशा के लिए दो प्रकार का चमत्कार रखा गया है। एक क़ुर्आन करीम के कलाम का चमत्कार दूसरा क़ुर्आन करीम के कलाम के प्रभाव का चमत्कार। ये दोनों चमत्कार ऐसे असंदिग्ध हैं कि यदि किसी का हृदय बाह्य या आन्तरिक विमुखता से संकीर्ण न हो तो वह तुरन्त उस सच्चाई के प्रकाश को स्वयं अपनी आँखों से देख लेगा। क़ुर्आन के कलाम के चमत्कार के वर्णन पर तो यह सारी किताब आधारित है और कुछ अन्य प्रकार के चमत्कार हाशिया न. 11 में लिखे भी गए हैं। क़ुर्आन के कलाम के प्रभाव के सन्दर्भ में हम यह सबूत रखते हैं कि आज तक कोई ऐसी शताब्दी नहीं गुज़री जिसमें ख़ुदा तआला ने तत्पर और सत्याभिलाषी लोगों को क़ुर्आन करीम का पूर्ण अनुसरण करने से पूर्ण प्रकाश तक नहीं पहुँचाया और ℗अब भी ℗262
अभिलाषियों के लिए इस प्रकाश का अत्यन्त विशाल द्वार खुला है, यह नहीं कि केवल किसी पूर्व शताब्दी का उदाहरण दिया जाए। जिस प्रकार सच्चे धर्म और ख़ुदाई किताब के वास्तविक अनुयायियों में अध्यात्मिक

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

निवारण करे तथा जिन सच्चाइयों के प्रकट होने का, दूषित विचारों के फैलने का समय आ गया था ℗उन सच्चाइयों को प्रकट कर दे तथा धार्मिक ज्ञान को ℗274
पूर्णता तक पहुँचा दे। अत: इस पवित्र कलाम ने आ कर इन सब स्तरों को पूर्ण किया और समस्त ख़राबियों का सुधार किया तथा शिक्षा को उसकी वास्तविक पूर्णता तक पहुँचाया। न दांत के बदले अकारण दांत निकालने का आदेश दिया और न अपराधी को हमेशा छोड़ने और क्षमा करने का आदेश जारी किया अपितु

मामला नहीं जिसमें कुछ व्यय होता है या किसी अन्य प्रकार की हानि सहन करना पड़ती

शेष हाशिया न. (11)

प्रत्येक बुद्धिमान के निकट मान्य अपितु स्पष्ट असंदिग्धताओं में से है कि मात्र बौद्धिक निदान में भूल और ग़लती की संभावना है, परन्तु अन्तर्यामी के कलाम में भूल और ग़लती सम्भव नहीं। अत: अब तुम स्वयं ही तनिक न्यायकर्ता बन कर विचार करो कि जिस वस्तु को कभी-कभी बहुत सारी

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

बरकतें होना चाहिएं और ख़ुदा के विशिष्ट रहस्यों से इल्हाम वाला होना चाहिए वही बरकतें अब भी अभिलाषियों के लिए प्रकट हो सकती हैं जिस की इच्छा हो निष्ठा के साथ ध्यान दे और देखे तथा अपने अन्त को सुधार ले। ख़ुदा ने चाहा तो प्रत्येक सच्चा अभिलाषी अपने उद्देश्य को प्राप्त करेगा और प्रत्येक विवेकशील इस धर्म की श्रेष्ठता को देखेगा, परन्तु हमारे समक्ष आकर कौन इस बात का प्रमाण दे सकता है कि वह आकाशीय प्रकाश हमारे किसी विरोधी में भी मौजूद है जिसने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिसालत और श्रेष्ठता तथा क़ुर्आन करीम के ख़ुदा की ओर से होने का इन्कार किया है वह भी कोई अध्यात्मिक बरकत और आकाशीय समर्थन अपने साथ रखता है, क्या कोई पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने तक ऐसा प्राणी है कि जो क़ुर्आन करीम के इन चमकते हुए प्रकाशों का मुक़ाबला कर सके। कोई नहीं, एक भी नहीं अपितु वे लोग जो 'अहले किताब' (यहूदी और ईसाई) कहलाते हैं उनके हाथ में भी बातों ही बातों के अतिरिक्त और कुछ भी

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

वास्तविक नेकी करने का आग्रह किया चाहे वह नेकी कभी कठोरता के भेष में हो चाहे कभी नम्रता के रूप में और चाहे कभी प्रतिशोध के रंग में हो चाहे कभी क्षमा के रूप में।

از نور پاک قرآں صبح صفا دمیدہ   بر غنچہائے دلہا باد صبا وزیدہ

अनुवाद :- क़ुर्आन करीम के पवित्र प्रकाश से प्रकाशित प्रात: का उदय हुआ और हृदय रूपी कली पर सुबह की शीतल समीर चल पड़ी। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

है ®केवल सत्याभिलाषी पर यह अनिवार्य है कि अपनी इच्छानुसार क़ुर्आन करीम के ®273

शेष हाशिया न. (11)

ग़लतियों का सामना होता है यदि उसके साथ एक ऐसा मित्र मिलाया गया कि जो उसे ग़लतियों से सुरक्षित रखे और पैर फ़िसलने के स्थान से संभाले रखे तो क्या उसके लिए अच्छा हुआ या बुरा हुआ और क्या उस मित्र ने उसे अपने पूर्ण गन्तव्य तक पहुँचाया या उस तक पहुँचने से रोक दिया। यह कैसा

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

नहीं। हज़रत मूसा के अनुयायी यह कहते हैं कि जब से हज़रत मूसा इस संसार से कूच कर गए तो साथ ही उनका 'असा' (डंडा) भी कूच कर गया, जो सांप बना करता था तथा जो लोग हज़रत ईसा के अनुसरण के दावेदार हैं उनका कथन यह है कि जब हज़रत ईसा आकाश पर उठाए गए तो उनके साथ ही वह बरकत भी उठाई गई जिससे मान्यवर मुर्दों को जीवित किया करते थे। हां ईसाई यह भी कहते हैं कि हज़रत ईसा
®के बारह हवारी (सहायक) भी कुछ-कुछ अध्यात्मिक बरकतों को प्रकट ®263
किया करते थे, परन्तु उन का यह भी तो कथन है कि ईसाई धर्म के वही बारह इमाम आकाशीय प्रकाशों और इल्हामों को अपने साथ ले गए और उनके पश्चात आकाश के द्वारों पर पक्के ताले लग गए और फिर किसी ईसाई पर वह कबूतर नहीं उतरा जो प्रथम हज़रत मसीह पर उतर कर फिर अग्नि की ज्वाला का भेष धारण करके हवारियों पर उतरा था जैसे ईमान का वह प्रकाशित दाना, जिस की जिज्ञासा में वह आकाशीय

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

ایں روشنی و لمعاں شمس الضحیٰ ندارد   وایں دلبری و خوبی کس در قمر ندیدہ

ऐसा प्रकाश और चमक तो दोपहर के सूर्य में भी नहीं तथा ऐसा आकर्षण और सौन्दर्य तो किसी चन्द्रमा में भी नहीं। ☆

یوسف بقعرِ چاہے محبوس ماند تنہا   وایں یوسفے کہ تن ہا از چاہ برکشیدہ

यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) तो एक कुएँ की तह में अकेले गिरा था परन्तु इस यूसुफ़ ने बहुत से लोगों को कुएं में से निकाला है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

Ⓟ274 किसी भी स्थान में से कोई विषय लेकर किसी Ⓟअरबी भाषा विशेषज्ञ को कि जो

शेष हाशिया न. (11)

आन्तरिक अंधापन है कि समर्थक और सहायक को विरोधी और बाधक समझा जाए तथा पूरक और पूर्णकर्ता को लुटेरा और हानिकारक ठहराया जाए। आप लोग जब अपनी ज्ञानेन्द्रियों में कायम हो कर और सत्य के अभिलाषी बन कर इस बात पर विचार करेंगे तो आप पर तुरन्त स्पष्ट हो

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

कबूतर उतरा करता था उन्हीं के हाथ में था और फिर उस दाने के स्थान पर ईसाइयों के हाथ में संसार कमाने की फाई रह गई, जिसे देखकर वह कबूतर आकाश की ओर उड़ गया। अतः क़ुर्आन करीम के अतिरिक्त आकाशीय प्रकाशों की प्राप्ति का अन्य कोई माध्यम उपलब्ध नहीं। ख़ुदा ने इसी उद्देश्य से कि सत्य और असत्य में सदा के लिए अन्तर स्थापित हो जाए और किसी युग में असत्य सत्य का मुक़ाबला न कर सके। उम्मते मुहम्मदिया को युगों के अन्त तक ये दो चमत्कार अर्थात् क़ुर्आन के कलाम का चमत्कार तथा क़ुर्आन के कलाम के प्रभाव का चमत्कार प्रदान किए हैं जिनके मुकाबले से असत्य और मिथ्या धर्म असमर्थ चले आते हैं। यदि केवल क़ुर्आन के कलाम का चमत्कार होता और क़ुर्आन के कलाम के प्रभाव का चमत्कार न होता तो दयनीय उम्मते मुहम्मदिया को ईमान के लक्षणों और प्रकाशों में क्या अधिकता होती क्योंकि एकांकी संयम और परहेज़गारी चमत्कार की सीमा तक नहीं पहुँच सकते। क्या सम्भव नहीं कि कोई पादरी, पंडित या ब्रह्म समाजी अपने स्वभाव से

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

از مشرقِ معانی صدہا دقائق آورد   قد ہلال نازک زاں نازکی خمیدہ

सच्चाइयों के उद्गम से ये सैकड़ों सच्चाइयां अपने साथ लाया है, कोमल हिलाल (चन्द्रमा) की कमर इन सच्चाइयों से झुक गई है। ☆

کیفیت علومش دانی چہ شان دارد   شہدیست آسمانی از وحی حق چکیدہ

तुझे क्या मालूम कि उसके ज्ञानों की वास्तविकता किस शान की है? वह आकाशीय शहद है जो ख़ुदा की वह्यी से टपका है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

आजकल इस देश में लाखों दिखाई देते है इस याचना के साथ दे कि वह इस लेख Ⓟको Ⓟ275

शेष हाशिया न. (11)

जाएगा कि ख़ुदा ने जो इल्हाम को बुद्धि का मित्र ठहरा दिया है, यह बुद्धि के पक्ष में कोई हानि की बात नहीं की अपितु उसे हैरान और परेशान देख कर सत्य को पहचानने के लिए एक वास्तविक उपकरण प्रदान किया है जिसके ज्ञात होने से बुद्धि को यह लाभ पहुँचता है कि वह सैकड़ों टेढ़े और अनुचित

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

ऐसा सुशील हो कि बाह्य तौर पर संयम और परहेज़गारी तथा ईमानदारी का मार्ग धारण करे फिर जिस स्थिति में शुष्क संयम प्रत्येक सम्प्रदाय में सम्भव है तो मोमिन और काफ़िर में लक्षणों की दृष्टि से अन्तर क्या रहा, हालांकि सच्चों और झूठों में लक्षणों के आधार पर Ⓟअन्तर होना Ⓟ264 नितान्त आवश्यक है, क्योंकि यदि मोमिन भी आकाशीय प्रकाशों से ऐसा ही वंचित हो जैसा एक बेईमान वंचित है तो उसके ईमान का कौन सा प्रकाश इस संसार में प्रकट हुआ तथा ईमान को बेईमानी पर क्या प्रमुखता हुई और स्वयं जिस स्थिति में क़ुर्आन के प्रभाव का चमत्कार प्रकट है जिस में संतुष्ट कर देने के लिए हम स्वयं ही ज़िम्मेदार हैं तो फिर बावजूद इस असंदिग्ध तर्क के कलाम के विस्तार की कुछ आवश्यकता नहीं। जिसे सन्देह हो वह आज़माए, जिसे आशंका हो वह अनुभव कर ले। यहां यह भी स्पष्ट रहे कि जो बात ख़ुदा के इल्हाम के माध्यम से किसी पर उतरे वह उसके लिए तथा प्रत्येक के लिए कि विश्वास करने का कोई कारण रखता है या ख़ुदा ने विश्वास करने का कोई प्रतीक उस

शेष हाशिए का हाशिया न.(2)

آں نیّر صداقت چوں رو بعالم آورد   ہر بوم شب پرستی در کنج خود خزیدہ

यह सच्चाई का सूर्य जब संसार पर उदय हुआ तो रात के पुजारी उल्लू अपने कोनों में जा घुसे। ☆

روئے یقیں نہ بیند ہرگز کسے بدنیا   اِلّا کسے کہ باشد بارُویش آرمیدہ

संसार में किसी को विश्वास का मुख देखना प्राप्त नहीं होता, परन्तु उस व्यक्ति को जो उसके मुख से प्रेम करता है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

उसकी सम्पूर्ण सूक्ष्मताओं और अनुपमताओं सहित अपनी इबारत में बना दे। अतः जब

शेष हाशिया न. (11)

Ⓟ277 मार्गों में भटकने से Ⓟबच जाती है तथा परेशान और आवारा नहीं होती तथा चारों ओर हैरान होकर भटकती नहीं फिरती अपितु अपने मूल उद्देश्य का विशेष मार्ग प्राप्त कर लेती है तथा अपने इच्छित गन्तव्य के उचित स्थान को देख लेती है और व्यर्थ के जानलेवा परिश्रम से अमन में रहती है। इसका उदाहरण ऐसा है

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

पर प्रकट कर दिया है पालन करने योग्य है। जो व्यक्ति जिसे उस इल्हाम के सन्दर्भ में स्वीकार कराया गया है उसका पालन करने से जान बूझ कर पृथक रहे वह ख़ुदा की यातना का पात्र होगा अपितु उस के अशुभ

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

آنکس کہ عالمش شد شد مخزنِ معارف وآن بے خبر ز عالم کیں عالمے ندیدہ

जो व्यक्ति उसका विद्वान बन गया वह स्वयं अध्यात्म ज्ञानों का भण्डार बन गया और
जिसने इस संसार को नहीं देखा उसे संसार की कुछ ख़बर ही नहीं। ☆

باران فضل رحماں آمد بہ مقدم او بدقسمت آنکہ ازوے سوئے دِگر دویدہ

अल्लाह तआला की कृपा-वृष्टि ऐसे मनुष्य के मार्ग-दर्शन के लिए आती है, वह
दुर्भाग्यशाली है जो उसे छोड़कर दूसरी ओर भागा। ☆

میل بدی نباشد اِلّا رگے زشیطاں آں را بشر بدانم کز ہر شرے رہیدہ

बुराई की इच्छा एक शैतानी प्रकृति है मैं तो ऐसे व्यक्ति को आदमी समझता हूँ जो
प्रत्येक बुराई से मुक्ति पाए। ☆

اے کان دلربائی دانم کہ از کجائی تو نور آں خدائی کیں خلق آفریدہ

हे सौन्दर्य की खान मैं जानता हूँ कि तू किस से संबंध रखती है। तू तो उस ख़ुदा का
प्रकाश है जिसने इस सृष्टि को उत्पन्न किया। ☆

میلم نماند باکس محبوب من توئی بس زیرا کہ زاں فغاں رس نورت بما رسیدہ

मुझे किसी से संबंध न रहा। मेरा प्रियतम तो केवल तू ही है क्योंकि उस न्यायकर्ता की
ओर से तेरा प्रकाश हमें पहुँचा है। ☆

☆-डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है।(अनुवादक)

ऐसा लेख बन कर तैयार हो जाए तो उसे हमारे पास भेज देना चाहिए और हम उस

शेष हाशिया न. (11)

जैसे कोई सच्चा संदेशक किसी खोए हुए व्यक्ति का ठीक प्रकार से पता लगा दे कि वह अमुक ओर गया है तथा अमुक शहर, अमुक मुहल्ले और अमुक स्थान में छुपा बैठा है। स्पष्ट है कि ऐसे संदेशक पर जो किसी खोए हुए व्यक्ति का ठीक प्रकार से पता लगा देता है तथा उस तक पहुँचने का सरल और आसान

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

अन्त होने की नितान्त आशंका है। बलअम बिन बऊर को ख़ुदा ने इल्हाम में لا تدع عَلَيْهِمْ कहा अर्थात् यह कि मूसा और उसकी सेना पर बद दुआ मत कर। उसने ख़ुदाई आदेश के विपरीत हज़रत मूसा की सेना पर बद्दुआ करने का इरादा किया अन्ततः उस का परिणाम यह हुआ

शेष हाशिए का हाशिया न. (2)

अन्य

नूरे फ़ुरकां है जो सब नूरों से अजला निकला
पाक वह जिस से यह अन्वार का दरिया निकला
हक़ की तौहीद का मुरझा ही चला था पौधा
नागहां ग़ैब से यह चश्म-ए-अस्फ़ा निकला
या इलाही तेरा फ़ुरकां है कि इक आलम है
जो ज़रूरी था वह सब इस में मुहय्या निकला
सब जहां छान चुके सारी दुकानें देखीं
मए इरफ़ां का यही एक ही शीशा निकला
किस से उस नूर की मुमकिन हो जहां में तशबीह
वह तो हर बात में हर वस्फ़ में यकता निकला
पहले समझे थे कि मूसा का असा है फ़ुरक़ां
फिर जो सोचा तो हर एक लफ़्ज़ मसीहा निकला
है क़सूर अपना ही अंधों का वगरना वह नूर
ऐसा चमका है कि सद् नय्यरे बैज़ा निकला
ज़िन्दगी ऐसों की क्या ख़ूब है इस दुनिया में
जिन का इस नूर के होते भी दिल आ'मा निकला
जलने से आगे ही ये लोग तो जल जाते हैं
जिन की हर बात फ़क़त झूठ का पुतला निकला

एक ईसाई वक्ता साहिब अर्थात् वही सज्जन ''नूर अफ़्शां'' के संवाद-दाता अपना रूप बदल कर इसी प्रश्न के अन्तर्गत कहते हैं अब तो वह वक्ता सांसारिक मामलों में तन्मय है अन्यथा यह सिद्ध कर दिखाता कि क़ुर्आन कहां-कहां से लिया गया। वाह सज्जनो! आप ने तो यह यहूदियों के पद-चिन्हों पर चलकर दिखा दिया और जो कुछ उन्होंने एक दीर्घ समय से इन्जील के सन्दर्भ में एक विचार कायम किया हुआ है वही विचार आप क़ुर्आन करीम के सन्दर्भ में घसीट लाए। इतना बड़ा झूठ आपने जीवन पर्यन्त बोला नहीं होगा कि जो अब ईसाइयों को प्रसन्न करने के लिए बोल उठे। बहर हाल यह कथन

(इस से आगे पृष्ठ 372 पर)

इबारत को क़ुर्आनी विशेषताओं से वंचित और दुर्भाग्यशाली होना ऐसे स्पष्ट भाषण से वर्णन कर देंगे जिस वर्णन को प्रत्येक उर्दू जानने वाला भली-भांति समझ सकेगा। यहाँ

शेष हाशिया न. (11)

मार्ग बता देता है कोई बुद्धिमान व्यक्ति यह आरोप नहीं करता कि वह हमारी कार्यवाही में बाधक हुआ है अपितु उसके नितान्त धन्यवादी और आभारी होते हैं कि हमें कोई सूचना न थी उसने हमें सूचित किया, हम चारों और भटकते फिर रहे थे उसने विशेष स्थान बता दिया, हम सरासर अटकलें लगा रहे थे उसने हम पर विश्वास का द्वार खोल दिया। ऐसा ही वे लोग जिन्हें ख़ुदा ने सद्बुद्धि

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

कि ख़ुदा ने उसे अपने दरबार से बहिष्कृत कर दिया तथा उसे कुत्ते से उपमा दी। वह इल्हाम ही था जिसके पालन करने से हज़रत मूसा की मां ने हज़रत मूसा को दुधमुहां होने की अवस्था में एक सन्दूक में डालकर दरिया में फेंक दिया, इल्हाम ही था जिसे देखने के लिए मूसा जैसे दृढ़ संकल्प पैग़म्बर को ख़ुदा ने अपने एक बन्दे ख़िज़्र के पास जिसका नाम
Ⓟ265 Ⓟबलिया बिन मल्कान था भेजा था, जिसके निश्चित और यक़ीनी ज्ञान के सन्दर्भ में अल्लाह तआला ने स्वयं फ़रमाया-

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا①

अतः इसी निश्चित और यक़ीनी ज्ञान का यह परिणाम था कि ख़िज़्र ने हज़रत मूसा के सामने ऐसे कार्य किए जो प्रत्यक्षतया धार्मिक विधान के विरुद्ध ज्ञात होते थे। नौका को तोड़ा, एक मासूम बच्चे का बध किया, एक अनावश्यक कार्य को किसी पारिश्रमिक (मज़दूरी) के बिना अपने गले डाल लिया और स्पष्ट है कि ख़िज़्र रसूल नहीं था अन्यथा वह अपनी उम्मत में होता न कि जंगलों और दरियाओं के किनारे पर। ख़ुदा ने भी उसे रसूल या नबी करके नहीं पुकारा, परन्तु उसे जो सूचना दी जाती थी उसका नाम यक़ीनी और निश्चित रखा है, क्योंकि क़ुर्आन की परिभाषा में ज्ञान उसी वस्तु का नाम है जो निश्चित और यक़ीनी हो तथा स्वयं स्पष्ट है कि यदि ख़िज़्र के पास केवल कल्पनाओं का भण्डार होता तो उसके लिए कब वैध था कि काल्पनिक बात पर भरोसा करके

①-अलफ़ातिह: :6,7

यह भी स्मरण रखना चाहिए जैसे अन्य वस्तुओं के गुण निरन्तर अनुभव और परीक्षा ही से ज्ञात होते हैं। Ⓟख़ुदा तआला ने वस्तुओं के गुणों की सच्चाई मालूम करने का यही Ⓟ276

शेष हाशिया न. ⑪

प्रदान की है वास्तविक इल्हाम के धन्यवादी, प्रशंसक, और तारीफ़ करने वाले हैं तथा भली-भांति जानते और समझते हैं कि वास्तविक इल्हाम उन्हें विचारों की उन्नति से नहीं रोकता अपितु विचारों के भटकने से रोकता है और भांति-भांति के जटिल और संदिग्ध मार्गों में से एक विशेष वांछित मार्ग दिखा देता है जिस पर चलना बुद्धि के लिए अत्यन्त सरल हो जाता है तथा मनुष्य को कम

शेष हाशिए का हाशिया न. ①

उन बातों को करता जो धार्मिक विधान के विपरीत और विरुद्ध अपितु समस्त पैग़म्बरों की सहमति के साथ बड़े पापों में सम्मिलित थीं। फिर इस स्थिति में हज़रत मूसा का उसके पास आना भी व्यर्थ था। अतः जब कि यह प्रमाणित है कि ख़िज़्र को ख़ुदा तआला की ओर से निश्चित और यक़ीनी ज्ञान दिया गया था तो फिर क्यों कोई व्यक्ति मुसलमान कहला कर तथा क़ुर्आन करीम पर ईमान लाकर इस बात से इन्कारी रहे कि उम्मते मुहम्मदिया में से कोई व्यक्ति आन्तरिक विशेषताओं में ख़िज़्र के सदृश नहीं हो सकता। निःसन्देह हो सकता है अपितु हमेशा जीवित रहने वाला तथा दूसरों को जीवन देने वाला ख़ुदा इस बात की शक्ति रखता है कि दयनीय उम्मते मुहम्मदिया के विशिष्ट लोगों को उस से भी उत्तम और अधिक आन्तरिक ने'मतें प्रदान Ⓟकर दे Ⓟ266

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

क्या उस दयालु ख़ुदा ने स्वयं ही इस उम्मत को इस दुआ की शिक्षा प्रदान नहीं की।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ①

क्या उसने स्वयं ही नहीं फ़रमाया-

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِیْنَ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِیْنَ②

तुम निश्चय ही समझो कि ख़ुदा तआला इस दयनीय उम्मत पर बहुत दयालु है और वह भी हमेशा से चाहता है कि इस उम्मत की अपनी

①-अलफ़ातिहः :6,7 ②-अलवाक़िअह :40,41

एक उपाय रखा है कि जिस किसी वस्तु के किसी गुण के अस्तित्व में कुछ सन्देह हो तो उसका इतना परीक्षण किया जाए जिस से हार्दिक संतुष्टि हो जाए और जो व्यक्ति एक

शेष हाशिया न. (11)

आयु, ज्ञान शक्ति और विवेक की कमी के कारण जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उन सब से मुक्ति प्रदान करता है। हम अनेक बार लिख चुके हैं कि मानव बुद्धि अपने स्वभाव में ऐसी अपूर्ण और अधूरी है कि किसी दूसरे मित्र के सहयोग के बिना उसका कार्य चल ही नहीं सकता और जब तक उसे चश्मदीद गवाही मिले तब तक कोई मुक़द्दमा चाहे धार्मिक हो या सांसारिक उस से पूरी शुद्धता और औचित्य के साथ निर्णय नहीं हो सकता जब तक कि चश्मदीद गवाही किसी विश्वसनीय सूत्र से न मिले। बुद्धि को तब ही ऐसी

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

अध्यात्मिक बरकतों और आकाशीय प्रकाशों के साथ अन्य क़ौमों पर असंदिग्ध प्रमुखता रहे ताकि शत्रु यह न कहे कि हम में और तुम में कौन सा अन्तर है, ताकि शत्रु कि ख़ुदा उस का मुख काला करे अपनी आन्तरिक नीचता और असत्य बोलने की आदत से यह न कह सके कि आंहज़रत जो समस्त पुनीत लोगों के सरदार तथा उसकी पवित्र और पावन सन्तान और उसकी प्रकाशमान जमाअत ने आकाशीय बरकतों को नहीं दिखाया। तुम विचार करो और सोचो, क्या तुम्हारे लिए यह उचित था कि तुम आकाशीय प्रकाशों से ऐसे वंचित रह कर पूर्वकालीन कहानियों के सहारे जीवनयापन करते जैसे तुम्हारे विरोधी अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं या तुम्हारे लिए यह उचित और धन्यवाद का स्थान है कि ख़ुदा तुम में से और तुम्हारी क़ौम में से कुछ लोगों को अपने प्रकाशों में से अधिकतर भाग देकर तुम सब के ईमान को पूर्णता के स्तर तक पहुँचाए और विरोधियों को आरोपित और अपमानित करे। दूसरी क़ौमों की ओर देखो कि वह क्योंकर डूबीं और बर्बाद हुईं। यही कारण था कि इन्जील इत्यादि पूर्वकालीन किताबें अपने अस्तित्व और अपनी विशेषताओं में ख़राबी और अक्षरांतरित होने के कारण किसी चमत्कार और अध्यात्मिक प्रभाव को प्रकट करने वाली न हो सकीं और केवल कथा और कहानी के प्राचीनकाल के चमत्कारों पर आधार रहा परन्तु

गुण के परीक्षण के पश्चात् जो एक वस्तु में पाया जाता है फिर भी यह भ्रम करे कि उस वस्तु में यह गुण क्यों पाया जाता है तो वह व्यक्ति वास्तव में पागल और दीवाना है।

शेष हाशिया न. (11)

आसानी हो जाती है कि जैसे एक कठिनाइयों का पर्वत सर से टल जाता है और जिस स्थिति में मानव बुद्धि स्वाभाविक तौर पर एक मित्र की मुहताज है तो वह स्वत: और अकेले ही विचारों में क्योंकर उन्नति कर लेगी। हम यह भी बार-बार लिख चुके हैं कि अध्यात्म ज्ञान और आख़िरत (प्रलय) के ज्ञान में बुद्धि की

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

क्योंकर सम्भव था कि ऐसे लोग जिन्होंने हज़रत मूसा के असा (डंडा)
को ®स्वयं अपनी आँखों से साँप बनते नहीं देखा और न हज़रत ईसा ®267
के हाथ से कोई मुर्दा क़ब्र से उठता देखा, वे केवल निराधार कहानियों को सुनकर पूर्ण विश्वास तक पहुँच जाते। बेचारे यहूदी और ईसाई संसार के हो गए और आख़िरत के दिन पर उन्हें कुछ विश्वास न रहा क्योंकि अपनी आँख से तो उन्होंने कुछ भी न देखा तथा किसी प्रकार की बरकत न देखी। अतः जिसका ईमान ईसाइयों, यहूदियों और हिन्दुओं की ओर केवल किस्सों और कहानियों के सहारे पर मौजूद हो उसके ईमान का कुछ भी ठिकाना नहीं और अन्ततः उसके लिए वही पथ-भ्रष्टता सामने है जिस पथःभ्रष्टता में यह दुर्भाग्यशाली क़ौम ईसाइयों इत्यादि की लिप्त हो गई जिन की कुल सम्पत्ति वही पुरानी कहानियां और सहस्त्रों वर्षों के घिसे-पिटे क़िस्से हैं, परन्तु ऐसे लोगों के ईमान की कोई दृढ़ता नहीं और उन्हें किसी प्रकार पता नहीं मिल सकता कि वह पुराना ख़ुदा जो पहले उनके महापुरुषों के साथ था अब कहां और किधर है तथा मौजूद है या नहीं। अतः भाइयो यदि तुम ख़ुदा के अभिलाषी हो, यदि तुम विश्वास के जिज्ञासु हो, यदि तुम्हारे हृदय में संसार का प्रेम नहीं तो उठो और धन्यवाद के सज्दे करो कि ख़ुदा तुम्हारी जमाअत को विस्मृत नहीं करता, वह तुम्हें नष्ट करना नहीं चाहता ताकि तुम उसके समक्ष कृतज्ञ ठहरो, ख़ुदा के निशानों को तिरस्कार की दृष्टि से मत देखो कि यह तुम्हारे लिए ख़तरनाक है, ख़ुदा की ने'मतों को रद्द मत करो कि यह उसके रोष का कारण है, संसार से हृदय मत लगाओ कि यही सब अहंकारों, द्वेषों तथा निरंकुशताओं का मूल है, ख़ुदा की निशानियों से

उदाहरणतया जब एक व्यक्ति ने अनेक बार परीक्षण करके देख लिया और बार-बार अनुभव करके ज्ञात कर लिया कि संखिया (एक विषाक्त पत्थर) अपने गुण की दृष्टि से क़ातिल (वध करने वाला) है। यदि वह फिर भी संखिये के इस गुण से इस विचार से
Ⓟ277 इन्कार करता रहे कि मुझे ज्ञात नहीं कि वह क्यों क़ातिल है तो Ⓟऐसा व्यक्ति बुद्धिमानों की दृष्टि में दीवाना अपितु दीवाने से भी बहुत बुरा है क्योंकि प्रथम तो यह सत्य स्वयं में निश्चित तौर पर उचित है कि विद्यमान वस्तुओं में तरह-तरह के गुण पाए जाते हैं

शेष हाशिया न. (11)

कमी को क़ुर्आन करीम पूर्ण करता है और न केवल इतना अपितु वह समस्त बौद्धिक तर्कों को भी स्वयं ही वर्णन करता है और समस्त धार्मिक सच्चाइयों की ओर स्वयं ही पथ-प्रदर्शक और मार्ग-दर्शक है तथा इस ओर भी अभी संकेत
Ⓟ278 Ⓟहो चुका है कि यदि किसी को इस बात का सत्यापन और जांच-पड़ताल स्वीकार हो तो उसके भी हम ही उत्तरदायी हैं तथा प्रत्येक सच्चा अभिलाषी परीक्षा के माध्यम से हम से अपनी सन्तुष्टि करा सकता है, तो फिर बावजूद इसके कि हर तरह से समस्या का निवारण करे विवाद को पूर्ण किया गया है क्योंकि ब्रह्म समाज वाले अपनी निरर्थक बातों से नहीं रुकते क्या किसी नशे से मदोन्मत और बेसुध हैं अथवा समस्त ज्ञानेन्द्रियां सहसा निलंबित और बेकार हो गई हैं कि सुनाया गया फिर और समझाया गया फिर नहीं समझते और दिखाया गया फिर नहीं देखते। स्मरण रखना चाहिए कि उनका यह भ्रम भी सरासर व्यर्थ

शेष हाशिए का हाशिया न. (1)

विमुख मत हो कि इसका परिणाम अच्छा नहीं।

وَقَالَ اللّٰہُ تعالیٰ وَاتۡلُ عَلَیۡهِمۡ نَبَاَ الَّذِیۡۤ اٰتَیۡنٰهُ اٰیٰتِنَا ① .....

مختصر پیش تو گفتم غم دل ترسیدم   کہ دل آزردہ شوی ورنہ سخن بسیاراست

अब हम इस भाषण को इस दुआ पर समाप्त करते हैं-

رَبَّنَا افۡتَحۡ بَیۡنَنَا وَبَیۡنَ قَوۡمِنَا بِالۡحَقِّ وَاَنۡتَ خَیۡرُ الۡفٰتِحِیۡنَ②

इसी से.

①-अलआराफ़ :176 ②-अलआराफ़ :90

और फिर जब एक निश्चित वस्तु का गुण निरन्तर अनुभवों द्वारा सिद्ध हो गया तो उस
से इन्कार करना यदि मूर्खता और पागलपन नहीं तो और क्या है तथा ℗सर्वाधिक मूर्खता ℗278
यह है कि ख़ुदा तआला के गुणों और कार्यों से इन्कार किया जाए, क्योंकि अन्य वस्तुओं का गुण जो उनके अन्य में नहीं पाया जाता मात्र अनुभव से सिद्ध होता है और उसकी आवश्यकता पर कोई बौद्धिक प्रमाण स्थापित नहीं होता, परन्तु जैसा कि हम इससे पूर्व वर्णन कर चुके हैं ख़ुदा की विशेषताओं का आवश्यक होना

शेष हाशिया न. (11)

और निरर्थक है कि जांच-पड़ताल तथा खोज का क्रम आगे से आगे ही चला जाता है और किसी सीमा पर आकर समाप्त नहीं होता। स्पष्ट है यदि ऐसा होता तो दुनिया और दीन (धर्म) का कोई कार्य अपने अन्त तक न पहुँचता तथा किसी न्यायकर्ता के लिए सम्भव न होता कि निश्चित तौर पर किसी मुक़द्दमे का फैसला कर सके तथा अदालत का आदेश स्थायी संदिग्धता के कारण असंभव और अवैध ठहर जाता, परन्तु क्या यह उचित है कि समस्त वस्तुओं की सच्चाइयां कभी और किसी प्रकार से स्पष्टता और औचित्य के साथ प्रकट नहीं होतीं और हमेशा आरोप और बहस की गुंजायश शेष रहती है। यह राय कभी भी और कदापि उचित नहीं, अपितु कोई घटना उसी समय तक संदिग्ध रहती है और स्पष्टता के साथ सिद्ध नहीं होती जब तक किसी बात को ज्ञात करने में कार्य की निर्भरता अकेली बुद्धि पर होती है और ज्यों ही कोई मित्र उन आवश्यक मित्रों में से जिनमें से एक रिसालत (रसूल होना) की वह्यी है कि जो महसूस की जाने वाली बातों से परे और आख़िरत (प्रलय) के संसार की सूचना देने वाली है बुद्धि को मिल जाती है तब बौद्धिक खोज पूर्ण विश्वास की श्रेणी तक पहुँच जाती है। अतः कभी बुद्धि पूर्ण इल्हाम के सहयोग से और कभी निरन्तर अनुभवों की साक्ष्य से, कभी दृढ़ और ठोस ऐतिहासिक गवाहों से अर्थात् यथाअवसर किसी मित्र के माध्यम से पूर्ण विश्वास प्राप्त कर लेती है। हां यदि बुद्धि को उस मार्ग का मित्र प्राप्त न हो जिस मार्ग पर वह चलना चाहती है तो तब वह पूर्ण विश्वास की श्रेणी तक निःसन्देह नहीं पहुँचती अपितु अन्ततः दृढ़ विचार तक पहुँचती है परन्तु जब वांछित मार्ग का मित्र मिल जाए तो निःसन्देह वह उसे पूर्ण विश्वास की श्रेणी तक पहुँचा देता है

(निरन्तरता के लिए देखें पृष्ठ 375 पर)

खेद एवं सूचना[1]

इस☆ बार भाग तृतीय के निकलने में जो अत्यधिक विलम्ब हुआ है, कदाचित इस विलम्ब से अधिकांश क्रेता और पाठक बहुत ही हैरान होंगे और आश्चर्य नहीं कि कुछ लोग भांति-भांति के सन्देह भी करते हों, परन्तु स्पष्ट रहे कि यह विलम्ब हमारी ओर से नहीं हुआ अपितु संयोग यह हुआ कि जब मई 1881 ई. के महीने में कुछ पूंजी एकत्र होने के पश्चात 'सफीरे-हिन्द' प्रेस अमृतसर में पुस्तक के भाग छपने के लिए दिए गए और आशा थी कि तृतीय भाग अधिक से अधिक दो माह में छप जाएगा परन्तु भाग्य के संयोगों से जिसमें कमज़ोर मनुष्य का कोई वश नहीं। सफ़ीरे हिन्द प्रेस के प्रबन्धक कई प्रकार की आपातकालीन विपत्तियों और विवशताओं में ग्रस्त हो गए, जिनके कारण एक लम्बे समय तक प्रेस बन्द रहा। चूंकि यह विलम्ब उनके अधिकार से बाहर था इसलिए उनके यथावत् होने तक धैर्य से प्रतीक्षा करना मानवीय कर्त्तव्य था। अतः ख़ुदा का आभार कि एक दीर्घ समय के पश्चात उनकी बाधाएं कुछ कम हो गईं और अब कुछ थोड़े समय से तृतीय भाग का छपना आरंभ हो गया, परन्तु इस भाग के छपने में यद्यपि कि कथित बाधाओं के कारण एक लम्बा समय व्यतीत हो गया। इसलिए हमने बड़े खेद के साथ इस बात को हित में समझते हुए उचित समझा कि इस भाग के छपने के पूर्ण होने की प्रतीक्षा न की जाए। अब तक जितना छप चुका है क्रेताओं को वही भेज दिया जाए ताकि उनके संतोष एवं सन्तुष्टि का कारण हो तथा शेष भाग ख़ुदा ने चाहा तो चतुर्थ भाग के साथ जो एक बड़ा भाग है छपवा दिया जाएगा।

कदाचित हम कुछ मित्रों की दृष्टि में इस कारण आरोप योग्य ठहरें कि ऐसे प्रेस में जिसमें हर बार लम्बा-लम्बा विलम्ब होता है किताब का छपवाना क्यों प्रस्तावित किया गया। अतः इस आरोप का उत्तर अभी दिया गया है कि यह प्रेस के प्रबंधक की ओर से उनकी विवशता के कारण विलम्ब है जिस पर उनका कोई वश न था। वह हमारे विचार में कथित विवशताओं की अवस्था में दयनीय हैं न कि आरोप के पात्र। इसके अतिरिक्त सफ़ीरे हिन्द प्रेस के प्रबंधक में एक उत्तम गुण यह है कि वह नितान्त शुद्धता, सफाई, परिश्रम और प्रयास से काम करते हैं और अपनी सेवा को बड़ी तन्मयता और परिश्रम से पूर्ण करते हैं। यह पादरी साहिब हैं। परन्तु धार्मिक भिन्नता के बावजूद ख़ुदा ने उनकी प्रकृति में यह डाला हुआ है कि अपने कर्त्तव्य में निष्कपटता और ईमानदारी में कोई कमी नहीं छोड़ते। उनको इस बात का एक जुनून है कि कार्य की उत्तमता और गुणवत्ता में कोई

(1) यह घोषणा द्वितीय संस्करण सन 1900 ई. में मौजूद नहीं है। प्रथम संस्करण 1884 ई. तथा तृतीय संस्करण 1905 ई. में मौजूद है। (*शम्स*) ☆ प्रथम संस्करण का वर्णन है।

कमी न रह जाए। इन्हीं कारणों को दृष्टिगत रखते हुए इस बात के बावजूद कि अन्य प्रेसों की तुलना में हमें इस प्रेस में प्रकाशन का व्यय बहुत अधिक देना पड़ता है तब भी इन्हीं का प्रेस पसन्द किया गया तथा भविष्य में ठोस आशा है कि इनकी ओर से चतुर्थ भाग के छपने में कोई विलम्ब न हो। केवल इतना विलम्ब होगा कि जब तक इस भाग के लिए पर्याप्त पूंजी एकत्र हो जाए। अत: उचित है कि हमारे कृपालु क्रेता पूर्व की भांति इस भाग की प्रतीक्षा में व्याकुल और असमंजस में न हों। ज्यों ही वह भाग छपेगा चाहे शीघ्र अथवा विलम्ब से जैसा ख़ुदा चाहेगा तुरन्त समस्त क्रेताओं की सेवा में भेजा जाएगा। यहां उन समस्त सज्जनों के ध्यान और सहायता का आभारी हूं जिन्होंने मात्र ख़ुदा के लिए तृतीय भाग के छपने हेतु सहायता दी। यह विनीत इस बार उन उच्च साहसी लोगों के शुभ नामों को लिखने से तथा अन्य क्रेताओं के नामों का उल्लेख करने से स्थान की कमी तथा कुछ विवशताओं के कारण असमर्थ है। परन्तु इसके पश्चात यदि ख़ुदा चाहेगा और उचित नीयत होगी तो किसी बाद के भाग में विस्तारपूर्वक समस्त नाम लिखे जाएंगे।

यहां यह भी प्रकट किया जाता है कि तृतीय भाग में वे समस्त भूमिका संबंधी बातें लिखी गई हैं जिनका ध्यानपूर्वक अध्ययन करना तथा स्मरण रखना पुस्तक के भविष्य में अर्थ समझने के लिए नितान्त आवश्यक है तथा इसके अध्ययन से यह भी स्पष्ट होगा कि ख़ुदा ने सच्चे धर्म इस्लाम में वह मान-सम्मान, श्रेष्ठता, बरकत तथा सच्चाई रखी है जिसका मुक़ाबला किसी युग में किसी अन्य जाति से कभी नहीं हो सका और न अब हो सकता है। इस बात को तार्किक तौर पर वर्णन करके समस्त विरोधियों पर समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण किया गया है और प्रत्येक सत्याभिलाषी के लिए पूर्ण प्रमाण प्राप्त करने का द्वार खोल दिया गया है ताकि सत्य के अभिलाषी अपने उद्देश्य और कामना को प्राप्त करें और ताकि समस्त विरोधी सच्चाई के पूर्ण प्रकाशों को देख कर लज्जित और निरुत्तर हों और ताकि वे लोग भी लज्जित और शर्मिंदा हों जिन्होंने यूरोप के झूठे प्रकाश को अपना देवता बना रखा है तथा आकाशीय बरकतों के स्वीकार करने वालों को मूर्ख, जंगली, असभ्य समझते हैं तथा आकाशीय निशानों के मानने वालों का नाम मूर्ख, धूर्त और अनाड़ी रखते हैं। जिनका यह विचार है कि यूरोप के ज्ञान का नया प्रकाश इस्लाम की अध्यात्मिक बरकतों को मिटा देगा और सृष्टि की कुटिलता स्रष्टा के प्रकाशों पर विजयी हो जाएगी। अत: अब प्रत्येक न्यायप्रिय देखेगा कि कौन विजयी हुआ और कौन निरुत्तर और विवश रहा तथा कौन सत्यनिष्ठ और मनीषी है तथा कौन झूठा और अज्ञानी! अल्लाह ही है जिससे सहायता मांगी जाती है और उसी पर भरोसा है।

विनीत **ग़ुलाम अहमद** अफ़ल्लाहो अन्हो

ٹائیٹل بار اوّل

جلد چہارم

جاء الحق وزھق الباطل ان الباطل کان زھوقا

براھین احمدیہ

ملقب بہ

البراھین الاحمدیہ علی حقیۃ کتاب اللہ القرآن والنبوۃ المحمدیہ

جسکو فخر اہل اسلام جناب میرزا غلام احمد صاحب رئیس اعظم قادیان ضلع گورداسپور پنجاب دام فیضہ نے کمال تحقیق اور تدقیق سے تالیف کرکے منکرین اسلام پر حجت اسلام پوری کرنیکے لئے بوعدہ انعام دس ہزار روپیہ شائع کیا

مطبع ریاض ہند امرتسر میں باہتمام کمترین محمد حسین مرادآبادی ۱۳۰۱ھ میں طبع ہوئی

جاء الحق و زهق الباطل ان الباطل كان زهوقا

भाग-चतुर्थ

ख़ुदाई किताब क़ुर्आन और मुहम्मदी नुबुव्वत की सच्चाई पर अहमदियत द्वारा तर्कों पर आधारित

जिसे पंजाब के मुसलमानों के गौरव जनाब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब महान रईस क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर, पंजाब ने अपने महान कौशलपूर्ण अन्वेषण के पश्चात इस्लाम पर इन्कार करने वालों पर इस्लाम के समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने हेतु दस हज़ार रुपए की इनामी राशि के आश्वासन के साथ सफ़ीरे हिन्द प्रेस अमृतसर से सन् 1884 ई. में प्रकाशित किया।

विषय सूची

बराहीन अहमदिया भाग चतुर्थ (1)

1. ख़ुदा तआला के कलाम की आवश्यकता तथा इस बात के प्रमाण में कि वास्तविक और पूर्ण ईमान एवं मारिफ़त जिसे अपनी मुक्ति के लिए इस संसार में प्राप्त करना चाहिए ख़ुदा की वाणी के अभाव में असंभव है तथा इसके सन्दर्भ में ब्रह्म समाजियों, दार्शनिकों और नेचरियों का खण्डन पृष्ठ 279 से 562 तक, हाशिया न. 11 तथा मूल पुस्तक का लेख (Text)
2. क़ुर्आन करीम की एक सूरह अर्थात् सूरह फ़ातिहः की अद्वितीय बारीकियां, सच्चाइयां तथा विशेषताओं का वर्णन पृष्ठ 339 से 527 तक
3. क़ुर्आन करीम की कुछ अन्य आयतों का वर्णन जो ख़ुदा की तौहीद (एकेश्वरवाद) के विषय पर आधारित हैं। पृष्ठ 247 से 562 तक, हाशिया नं. 11
4. इस बात का वर्णन कि वेद तौहीद की शिक्षा तथा लेख की सरस-सुबोध से रिक्त है तथा वेद की कुछ श्रुतियों की चर्चा पृष्ठ 397 से 468 तक हाशिए का हाशिया नं. 3
5. वेद की मिथ्या आस्थाओं की चर्चा पृष्ठ 392 से 433 तक हाशिया नं. 11
6. पंडित दयानन्द तथा उनके निरुत्तर रहने का वर्णन तथा उन प्रश्नों की चर्चा जिनमें वह निरुत्तर रहे तथा उनकी मृत्यु की भविष्यवाणी कि जो घटना-पूर्व कुछ आर्यों को बताई गई। पृष्ठ 531 से 536 तक, हाशिया नं. 11
7. इन्जील और क़ुर्आन करीम की शिक्षा की तुलना पृष्ठ 332 से 366 तक
8. उन समस्त भविष्यवाणियों की चर्चा जो कुछ आर्यों को बताई गईं पृष्ठ 468 से 514 तक, हाशिए का हाशिया नं. 3
9. भविष्य में घटित होने वाली भविष्यवाणियों का वर्णन पृष्ठ 514 से 562 तक, हाशिए का हाशिया नं. 3
10. मसीह से किसी चमत्कार का प्रकट होना अथवा उनका कोई भविष्यवाणी बताना सिद्ध नहीं, पृष्ठ 434 से 469 तक मूल लेख।
11. वास्तविक मुक्ति क्या वस्तु है तथा क्योंकर प्राप्त हो सकती है। पृष्ठ 293 से 306 तक हाशिए का हाशिया नं. 2

(1) यह सूची प्रथम संस्करण में लिखी है तथा इस सूची के पृष्ठ प्रथम संस्करण के अनुसार ही वर्तमान संस्करण के पृष्ठों के दायीं-बाईं ओर दिए गए हैं। (*शम्स*)

मुसलमानों की कमज़ोर स्थिति और अंग्रेज़ी सरकार

تَرسم نہ رسی بہ کعبہ اے اَعرابی   کیں رہ کہ تو مے روی بترکستان است

आजकल हमारे धार्मिक मुसलमान भाइयों ने धार्मिक कर्तव्यों का पालन करने तथा इस्लामी भाई-चारा निभाने तथा क़ौमी सहानुभूति को पूर्ण करने में इतना आलस्य और लापरवाही तथा असावधानी कर रखी है कि किसी जाति में उसका उदाहरण नहीं पाया जाता। अपितु सत्य तो यह है कि उनमें जातिगत और धार्मिक सहानुभूति की भावना ही नहीं रही, आन्तरिक ख़राबियों, शत्रुताओं और मतभेदों ने उन्हें लगभग विनाश के निकट पहुँचा दिया है तथा असमान परिस्थितियों के अनुचित कृत्यों ने उन्हें मूल उद्देश्य से बहुत दूर डाल दिया है जिस स्वार्थपरता की पद्धति से उनमें परस्पर झगड़े जन्म ले रहे हैं, उससे न केवल यही आशंका है कि उनका व्यर्थ का द्वेष दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाएगा तथा कीटाणुओं की भांति एक दूसरे को खाएंगे तथा अपने हाथ से अपने विनाश का कारण होंगे अपितु निश्चय ही यह भी विचार किया जाता है कि उनका कुछ दिन ऐसा ही हाल रहा तो उनके द्वारा इस्लाम को बड़ी हानि पहुँचेगी तथा उनके कारण बाहरी उपद्रवी विरोधियों को आलोचना तथा उपद्रव फैलाने का बहुत सा अवसर प्राप्त हो जाएगा। आजकल के कुछ विद्वानों पर एक यह भी अफ़सोस है कि वे अपने भाइयों पर आरोप लगाने में बड़ी शीघ्रता करते हैं और पूर्व इसके कि जो निश्चित और यक़ीनी ज्ञान उनके पास मौजूद हो अपने भाई पर आक्रमण करने के लिए तैयार हो जाते हैं और क्योंकर तैयार न हों स्वार्थपरता के प्रभुत्व के कारण यह भी तो दृष्टिगत होता है कि किसी प्रकार एक मुसलमान को जो मुक़ाबले पर दिखाई दे रहा है मिटा दिया जाए तथा उसे पराजय, अपमान और अनादर पहुंचे तथा हमारी विजय और श्रेष्ठता सिद्ध हो। यही कारण है कि बात-बात में उन्हें व्यर्थ झगड़े करने पड़ते हैं। ख़ुदा ने अचानक उन से विनम्रता, विनीतता, सद्भावना, तथा भ्रातृ-प्रेम को छीन लिया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलयहे राजिऊन।

कुछ ही समय हुआ कि मुसलमानों में से कुछ सज्जनों ने इस लेख के सन्दर्भ में कि जो भाग तृतीय के साथ अंग्रेज़ी सरकार के धन्यवाद के बारे में सम्मिलित

है ऐतिराज़ किया और कुछ ने पत्र भी भेजे और कुछ ने कठोर और असभ्य शब्द भी लिखे कि अंग्रेज़ी शासन को दूसरे शासनों पर क्यों प्रमुखता दी, परन्तु स्पष्ट है कि जिस शासन को अपनी शिष्टता और सुव्यवस्था की दृष्टि से प्रमुखता हो उसे कैसे छुपा सकते हैं। विशेषता अपने व्यक्तिगत विवरण की दृष्टि से विशेषता ही है यद्यपि वह किसी सरकार में पाई जाए اَلْحِكْمَةُ ضَالَّةُ الْمُؤْمِنِ और यह भी समझना चाहिए कि इस्लाम का कदापि यह सिद्धान्त नहीं है कि मुसलमानों की क़ौम जिस सरकार के अधीन रह कर उसका उपकार प्राप्त करे उस के समर्थन और सहयोग की छाया में शान्ति और अमन के साथ रहकर अपने भाग की जीविका प्राप्त करे, उसके निरन्तर अनुदानों से भरण-पोषण करे फिर उसी पर बिच्छू की भांति डंक मारे तथा उसके व्यवहार और हमदर्दी का लेशमात्र आभार प्रकट न करे अपितु हमें हमारे दयालु ख़ुदा ने अपने मान्य रसूल के माध्यम से यही शिक्षा दी है कि हम नेकी का बदला अत्यधिक नेकी के साथ दें और उपकारी का धन्यवाद अदा करें तथा हमें जब भी अवसर प्राप्त हो तो ऐसी सरकार से सच्चे हृदय के साथ पूर्ण सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करें और हृदय की प्रफुल्लता के साथ उचित और अनिवार्य तौर पर अनुसरण और आज्ञा-पालन करें। अत: इस ख़ाकसार ने तृतीय भाग के संलग्न पर्चे में जितना अंग्रेज़ी सरकार का धन्यवाद अदा किया है वह केवल अपने व्यक्तिगत विचार से अदा नहीं किया अपितु क़ुर्आन शरीफ और नबीकरीम(स.अ.व.) की हदीसों के उन सम्मानित आग्रहों ने जो इस ख़ाकसार की दृष्टि में हैं मुझे कृतज्ञ होने पर विवश किया है। अत: हमारे कुछ अल्प बुद्धि वाले भाइयों का अन्याय है जिसे वे अपनी अदूरदर्शिता और संकुचित विचारधारा के कारण इस्लाम का भाग समझ बैठे हैं।

اے جفاکش نہ عذرست طریق عشاق ہرزہ بدنام کنی چندنکونامے را

और जैसा कि हमने अभी सरकार का धन्यवाद करने पर अपने कुछ भाइयों की धर्मान्धता की सीमा के अतिक्रमण की चर्चा की है इसी प्रकार कुछ उन में से धर्म से विमुखता की सीमा में अतिक्रमण के रोग में भी ग्रस्त हैं तथा धर्म से उनका कोई मतलब और संबंध नहीं रहा अपितु उनके विचारों का समस्त ज़ोर संसार की ओर लग रहा है, परन्तु खेद कि संसार भी उन्हें प्राप्त नहीं होता خسر الدّنيا والعاقبة बन

रहे हैं और क्योंकर प्राप्त हो। धर्म तो हाथ से गया तथा संसार प्राप्ति के लिए जो योग्यताएं होना चाहिएं वे प्राप्त नहीं कीं केवल शेखचिल्ली की भांति हृदय में संसार के विचार भरे हैं, जिस लकीर पर चलने से संसार-प्राप्ति होती है उस पर क़दम न रखा तथा स्वयं को उसके अनुकूल न बनाया। अतः अब उनका हाल यह है कि न इधर के रहे न उधर के रहे। अंग्रेज़ जो इन्हें आधा जानवर कहते हैं यह भी उनका उपकार ही समझिए अन्यथा अधिकांश मुसलमान जानवरों से भी बुरी स्थिति में दिखाई देते हैं, न बुद्धि रही न साहस रहा, न स्वाभिमान रहा, न प्रेम रहा। वास्तव में यह सत्य है कि जितना उनके पड़ोसी आर्यों की दृष्टि में एक तुच्छ जानवर गाय का आदर और प्रतिष्ठा है, उनके हृदयों में अपनी जाति और अपने भाइयों तथा अपने सच्चे धर्म की समस्याओं का इतना भी सम्मान नहीं, क्योंकि हम हमेशा अपनी आंखों से देखते हैं कि दृढ़संकल्प जाति आर्य गाय का सम्मान स्थापित रखने के लिए इतने प्रयास करके लाखों रुपया एकत्र कर लेते हैं कि मुसलमान लोग अल्लाह और रसूल का सम्मान प्रकट करने के लिए उसका हज़ारवां भाग भी एकत्र नहीं कर सकते अपितु जहां कहीं धार्मिक सहायता की चर्चा हुई तो वहीं स्त्रियों की भांति अपना मुख छुपा लेते हैं। आर्य जाति के दृढ़ संकल्प होने पर विचार करने से यह बात और भी अधिक सिद्ध होती है, क्योंकि गाय के प्राण बचाने के लिए प्रयास करना वास्तव में उनके धर्मानुसार एक तुच्छ कार्य है जो धार्मिक ग्रन्थों से सिद्ध नहीं अपितु उनके अन्वेषक पंडितों को भली भांति ज्ञात है कि किसी वेद में गाय का अवैध होना नहीं पाया जाता अपितु ऋग्वेद के प्रथम भाग से ही सिद्ध होता है कि वेद के युग में गाय का मांस सामान्यतया बाज़ारों में बिकता था तथा आर्य लोग बड़ी प्रसन्नतापूर्वक उसे खाते थे। वर्तमान में एक बड़े अन्वेषक अर्थात् सम्माननीय मौन्ट स्टूअर्ट अल्फ़िन्स्टन साहिब बहादुर भूतपूर्व गवर्नर बम्बई ने आर्य क़ौम की घटनाओं की हिन्दुओं की मान्य और प्रमाणित पुस्तकों की दृष्टि से एक किताब लिखी है जिस का नाम 'हिन्दुस्तान का इतिहास' है उसके पृष्ठ नवासी में 'मनु' के संकलन के संदर्भ में मान्यवर लिखते हैं कि उसमें बड़े-बड़े पर्वों में बैल का मांस खाने के लिए ब्राह्मणों को बलपूर्वक आग्रह किया गया है अर्थात यदि न खाएं तो पापी हों तथा ऐसी ही एक अन्य पुस्तक उन्हीं दिनों में एक पंडित साहिब ने कलकत्ता में प्रकाशित की है, जिसमें लिखा है कि वेद के युग में हिन्दुओं के लिए गाय का खाना सिद्धान्तों

में से था तथा बड़े-बड़े और अच्छे-अच्छे टुकड़े ब्राह्मणों को खाने के लिए मिलते थे और इसी प्रकार महाभारत के तेरहवें पर्व में भी स्पष्ट व्याख्या है कि गाय का मांस न केवल वैध और पवित्र अपितु अपने पुरखों के लिए ब्राह्मणों को उस का भोजन कराना समस्त जानवरों में से अच्छा और उत्तम है तथा उसके खाने से पित्र (पुरखे) दस माह तक तृप्त रहते हैं। अत: वेद के समस्त ऋषियों और मनु जी तथा व्यास जी ने गाय के मांस का उपयोग करना धार्मिक कर्तव्यों में सम्मिलित किया है तथा पुण्य का कारण बताया है। इस स्थान पर हमारा वर्णन कुछ लोगों की दृष्टि में अपूर्ण रह जाता यदि हम पंडित दयानन्द साहिब को जो 30 अक्तूबर 1883 ई. में इस संसार को छोड़ गए उपर्युक्त सर्व सम्मति से पृथक रख लेते। अत: ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि सम्माननीय पंडित साहिब ने भी अपनी किसी पुस्तक में गाय का अवैध या अपवित्र होना नहीं लिखा और न वेद की दृष्टि से उसकी ज़िब्ह (आलंभन) की निषिद्धता और अवैधता को सिद्ध किया अपितु दूध और घी के अल्प मूल्य की दृष्टि से इस रीति का आधार वर्णन किया तथा कुछ आवश्यकताओं के अवसर पर गाय काटने को उचित भी ठहराया जो उनके सत्यार्थ प्रकाश और वेद भाष्य से प्रकट है।

अब इस समस्त भाषण से हमारा यह उद्देश्य कदापि नहीं कि आर्य लोग अपने पवित्र वेद और अपने पवित्र ऋषियों और व्यास जी तथा मनु जी के सम्माननीय आदेशों तथा अपने अन्वेषक और प्रकाण्ड पंडितों के कथन की अवज्ञा और अवहेलना करते हैं अपितु इस स्थान पर तात्पर्य यह है कि आर्य जाति कैसी दृढ़संकल्प, साहसी तथा एकमत वाली जाति है कि एक तुच्छ बात पर भी, जिसकी धार्मिक दृष्टि से कुछ भी आधार नहीं पाया जाता वे सहमति कर लेते हैं तथा सहस्त्रों रुपया चन्दा हाथों हाथ एकत्र हो जाता है। अत: जिस क़ौम (जाति) की व्यर्थ विचारों पर यह सहमति और जोश है। अत: महान समस्याओं पर उस जाति के उच्च साहस और हार्दिक उत्तेजना का स्वयं अनुमान लगा लेना चाहिए। हतोस्साहित मुसलमानों पर अनिवार्य है कि जीते ही मर जाएं। यदि ख़ुदा और रसूल का प्रेम नहीं तो इस्लाम का दावा क्यों करते हैं। क्या गन्दगी के कार्यों में, तामसिक वृत्ति के अनुसरण में तथा सम्मान
Ⓟ ज बढ़ाने की नीयत से Ⓟअकूत धन नष्ट करना तथा अल्लाह और रसूल के प्रेम तथा हमदर्दी के मार्ग में एक दाना हाथ से न छोड़ना, क्या यही इस्लाम है यह कदापि इस्लाम नहीं। यह एक आन्तरिक कोढ़ है, यही अवनति है कि मुसलमानों पर आ

रही है। अधिकांश धनवान मुसलमानों ने धर्म को एक ऐसी वस्तु समझ रखा है कि जिस की हमदर्दी निर्धनों पर ही अनिवार्य है तथा धनवान उससे पृथक हैं जिन्हें इस भार को हाथ लगाना भी मना है। इस ख़ाकसार को इस अनुभव का इसी पुस्तक के प्रकाशन के मध्य अच्छा अवसर मिला, हालांकि भली-भांति प्रसिद्ध किया गया था कि अब पुस्तक की मोटाई बढ़ जाने के कारण पुस्तक का वास्तविक मूल्य सौ रुपए ही उचित है कि सामर्थ्यवान लोग इसको ध्यान में रखें क्योंकि निर्धनों को यह केवल दस रुपए में दी जाती है। अत: क्षतिपूर्ति अनिवार्यताओं से है परन्तु सात आठ व्यक्तियों के अतिरिक्त सब लोग निर्धनों में सम्मिलित हो गए। ख़ूब क्षतिपूर्ति की। हमने जब किसी मनीआर्डर की जांच-पड़ताल की कि यह पांच रुपए पुस्तक के मूल्य के बतौर किसके आए हैं यह दस रुपए पुस्तक के मूल्य में किसने भेजे हैं तो प्राय: यही ज्ञात हुआ कि अमुक नवाब साहिब ने अथवा अमुक रईस आज़म ने। हां नवाब इक़्बालुद्दौला साहिब हैदराबाद ने तथा एक और रईस ने ज़िला बुलन्दशहर से जिसने अपना नाम प्रकट करने से मना किया है, एक प्रति के मूल्य में सौ-सौ रुपया भेजा है तथा एक पदाधिकारी **मुहम्मद अफ़ज़ल ख़ान** नाम ने एक सौ दस रुपए तथा **नवाब साहिब कोटला मालेर** ने तीन प्रतियों के मूल्य में सौ रुपया भेजा और **सरदार इतर सिंह साहिब रईस आज़म लुधियाना** ने कि जो एक हिन्दू रईस हैं अपने उच्च साहस और दानशीलता के कारण सहायतार्थ पच्चीस रुपए भेजे हैं। आदरणीय सरदार साहिब ने हिन्दू होते हुए इस्लाम से हमदर्दी प्रकट की। कंजूस संकुचित हृदय मुसलमानों को जो बड़ी-बड़ी उपाधियों और नामों से सम्बोधित किए जाते हैं तथा क़ारून की तरह बहुत सारा धन दबाए बैठे हैं। इस स्थान पर अपनी स्थिति को सरदार साहिब की तुलना में देख लेना चाहिए, जिस स्थिति में आर्यों में ऐसे लोग भी पाए गए हैं जो दूसरी जाति के साथ भी हमदर्दी करते हैं तथा मुसलमानों में ऐसे लोग भी कम हैं जो अपनी ही जाति से हमदर्दी कर सकें तो फिर कहो कि इस जाति की उन्नति क्योंकर हो

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ[1]

धार्मिक सहानुभूति मुसलमानों के अतिरिक्त प्रत्येक जाति के धनवानों में पाई जाती है। हां इस्लामी धनवानों में ऐसे लोग बहुत ही कम पाए जाएंगे जिन्हें अपने सच्चे और पवित्र धर्म का तनिक ध्यान हो। कुछ थोड़ा समय गुज़रा है कि इस ख़ाकसार

1 अर्र'द : 12

ने एक नवाब साहिब की सेवा में कि जो बहुत पवित्र स्वभाव, संयमी, ज्ञान में पारंगत तथा ख़ुदा और रसूल के आदेशों का पूर्णरूपेण ज्ञान रखते हैं पुस्तक बराहीन अहमदिया की सहायतार्थ लिखा था। अतः यदि आदरणीय नवाब साहिब उत्तर में लिखते कि हमारी राय में किताब ऐसी उत्तम नहीं जिसके लिए कुछ सहायता की जाए तो कुछ खेद का स्थान न था, परन्तु मान्यवर ने पहले तो यह लिखा कि पन्द्रह बीस पुस्तकें अवश्य ख़रीदेंगे, फिर पुनः स्मरण कराने पर यह उत्तर आया कि धार्मिक शास्त्राथों की पुस्तकों का ख़रीदना, उन में कुछ सहायता देना अंग्रेज़ी सरकार की इच्छा के विरुद्ध है, इसलिए इस रियासत से खरीद इत्यादि की कुछ आशा न रखें। अतः हम भी नवाब साहिब को आशा-स्थली नहीं बनाते अपितु आशा-स्थली दयालु ख़ुदा ही है और वही पर्याप्त है (ख़ुदा करे अंग्रेज़ी सरकार नवाब साहिब पर बहुत प्रसन्न रहे) परन्तु हम सादर विनती करते हैं कि ऐसे-ऐसे विचारों में सरकार की निन्दा उचित है। अंग्रेज़ी सरकार का यह सिद्धान्त नहीं है कि किसी जाति को अपने धर्म की सच्चाई सिद्ध करने से रोके या धार्मिक पुस्तकों की सहायता करने से मना करे। हां यदि कोई लेख शान्ति में बाधक या शासन के प्रबन्ध के विपरीत हो तो सरकार उसमें हस्तक्षेप करेगी, अन्यथा अपने-अपने धर्म की उन्नति के लिए वैध साधनों को उपयोग में लाना सरकार की ओर से प्रत्येक जाति को अनुमति है। फिर जिस जाति का धर्म वास्तव में सच्चा है तथा अत्यन्त पूर्ण तथा ठोस सबूतों द्वारा उसकी सच्चाई प्रमाणित है वह जाति यदि नेक नीयत, सत्कार और विनम्रता से ख़ुदा की प्रजा को लाभ पहुंचाने के लिए अपने सच्चे सबूतों को प्रकाशित करे तो न्यायप्रिय सरकार उस पर क्यों नाराज़ होगी। हमारे इस्लामी धनवानों को इस बात की बहुत कम सूचना है कि सरकार की न्यायसंगत नीति की यही मांग है कि वह हार्दिक प्रफुल्लता से स्वतंत्रता को स्थापित रखे और हमने स्वयं चशमदीद तौर पर
Ⓟद ऐसे योग्य और नेक स्वभाव कई Ⓟअंग्रेज़ देखे हैं कि जो चाटुकारिता तथा कपटपूर्ण चरित्र को पसन्द नहीं करते तथा संयम और ख़ुदा के भय और एकरूपता को अच्छा समझते हैं। वास्तव में समस्त बरकतें एकरूपता और ख़ुदा से डरने में ही हैं जिसका प्रतिबिम्ब कभी न कभी अपने और बेगाने पर पड़ जाता है। जिस पर ख़ुदा प्रसन्न है अन्ततः उस पर ख़ुदा की प्रजा भी प्रसन्न हो जाती है। अतः नेक नीयत और नेक क़दम से धार्मिक तथा क़ौमी हमदर्दी में व्यस्त होना और वास्तव में दीन (धर्म)

और दुनिया में हार्दिक जोश के साथ ख़ुदा की प्रजा का शुभचिन्तक बनना एक ऐसा शुभ गुण है कि इस प्रकार के लोगों का किसी सरकार में उपलब्ध होना उस सरकार का गर्व है तथा उस पृथ्वी पर आकाश से बरकतें उतरती हैं जिसमें ऐसे लोग पाए जाएं परन्तु नितान्त दुर्भाग्यशाली वह सरकार है जिसके अधनी सब कपटी ही हों कि जो घर में कुछ कहें और सामने कुछ कहें। अत: निश्चित ही समझना चाहिए कि लोगों का एकरूपता में उन्नति करते जाना तथा सरकार को एक उपकारी मित्र समझकर नि:संकोच उसके साथ व्यवहार करना अंग्रेज़ी सरकार का यही सौभाग्य है और यही कारण है कि हमारे पोषक शासक न केवल कथन से हमें स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाते हैं अपितु धार्मिक मामलों में स्वयं स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करके अपनी व्यवहारिक नसीहत से हमें स्वतंत्रता पर स्थापित करना चाहते हैं और उहाहरण के तौर पर यही पर्याप्त है कि कदाचित एक माह का समय हुआ है कि जब हमारे देश के नवाब लेफ़्टीनेन्ट गवर्नर पंजाब सर चार्ल्स एचीसन साहिब बहादुर बटाला, ज़िला गुरदासपुर में पधारे तो उन्होंने गिरजाघर की आधारशिला रखते समय नितान्त सरलता और बिना संकोच के ईसाई धर्म से अपनी सहानुभूति प्रकट करके कहा कि मुझे आशा थी कि कुछ ही दिनों में यह देश धार्मिकता और ईमानदारी में भलीभांति उन्नति करेगा, परन्तु अनुभव और अवलोकन से ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत ही कम उन्नति हुई (अर्थात अभी लोग बाहुल्य के साथ ईसाई नहीं हुए तथा ईसाइयों का पवित्र समूह अभी तक अल्प संख्या में है) तो भी हमें निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि पादरी सज्जनों का कार्य अलाभकारी नहीं तथा उनका परिश्रम कदापि व्यर्थ नहीं अपितु भलाई के अनुसार हृदयों में प्रभाव करता है तथा आन्तरिक तौर पर अधिकांश लोगों के हृदय तैयार होते जाते हैं। उदाहरणतया एक माह से कम समय हुआ होगा कि एक सम्मानित रईस मेरे पास आया और मुझ से एक घंटे तक धार्मिक वार्तालाप किया। विदित होता था कि उसका हृदय कुछ तैयारी चाहता है। उसने कहा कि मैंने धार्मिक पुस्तकें बहुत देखीं, परन्तु मेरे पापों का भार दूर नहीं हुआ और मैं भलीभांति जानता हूं कि मैं नेक कार्य नहीं कर सकता, मुझे अत्यन्त व्याकुलता है। मैंने उत्तर में अपनी टूटी-फूटी उर्दू भाषा में उसे इस लहू के सन्दर्भ में समझाया जो सारे पापों से पवित्र और स्वच्छ करता है और उस ईमानदारी के सन्दर्भ में समझाया कि जो कर्मों से प्राप्त नहीं हो सकती अपितु मुफ़्त मिलती है। उसने कहा कि मैंने

संस्कृत में इन्जील देखी है तथा एक दो बार यसू मसीह से दुआ मांगी है और अब मैं इन्जील को ख़ूब देखूंगा और ज़ोर-ज़ोर से ईसा मसीह से दुआ मांगूंगा (अर्थात् मैं आप के प्रवचन से बड़ा प्रभावित हुआ और ईसाई धर्म की पूर्ण प्रेरणा उत्पन्न हो गई) अब देखना चाहिए कि नवाब लेफ़्टीनेन्ट गवर्नर साहिब ने किस परिश्रम से हिन्दू रईस को अपने धर्म की ओर आकर्षित किया और यद्यपि ऐसे-ऐसे रईस अपना मतलब सिद्ध करने के लिए शासकों के समक्ष ऐसी ऐसी कपटपूर्ण बातें किया करते हैं ताकि शासक उनसे प्रसन्न हो जाएं तथा उन्हें अपना धार्मिक भाई भी समझ लें, परन्तु इस भाषण का आशय तो केवल इतना है कि मान्यवर की इस बातचीत से अंग्रेज़ी सरकार की स्वतंत्रता को समझ लेना चाहिए क्योंकि जब स्वयं नवाब लेफ़्टीनेन्ट गवर्नर बहादुर अपनी शुभ आस्था का हिन्दुस्तान में हार्दिक तौर पर प्रसार चाहते हैं अपितु उस के लिए कभी-कभी अवसर पाकर प्रेरित भी करते हैं तो फिर वे दूसरों पर अपने-अपने धर्म की हमदर्दी करने में क्यों नाराज़ होंगे और वास्तव में एकरूपता के साथ हमदर्दी करना एक शुभ गुण है जिस पर कपट के चरित्र को बलिदान कर देना चाहिए। इसी एकरूपता के जोश से बम्बई के भूतपूर्व गवर्नर सर रिचर्ड टेम्पिल साहिब ने मुसलमानों के सन्दर्भ में एक लेख लिखा है। अत: वह इंग्लैंड के एक ''ईवनिंग स्टेण्डर्ड'' नामक समाचारपत्र में प्रकाशित होकर उर्दू समाचार-पत्रों में भी प्रकाशित हो गया है। वह लिखते हैं कि खेद है कि मुसलमान लोग ईसाई नहीं होते और कारण यह है कि उनका धर्म उन असंभव बातों से भरा हुआ नहीं है जिनमें हिन्दू धर्म डूबा हुआ है। हिन्दू धर्म और बुद्ध धर्म वालों को स्वीकार कराने के लिए संभव है कि हंसी-हंसी में सामान्य तर्कों से मनवा कर उन्हें धर्म से हटाया जाए, परन्तु इस्लाम धर्म बुद्धि का मुकाबला भली-भांति करता है तथा सबूतों के माध्यम से नहीं टूट सकता है, ईसाई लोग अन्य धर्मों की असंभव बातों को प्रकट करके उनके अनुयायियों को सरलतापूर्वक धर्म से विचलित कर सकते हैं, परन्तु मुहम्मदियों के साथ ऐसा करना उनके लिए असाध्य है। अतएव यह एकरूपता मुसलमान धनवानों में नहीं पाई जाती कि वे इस लेख पर विचार करें।

ख़ाकसार ग़ुलाम अहमद

Ⓟअर्थात उसके अस्तित्व, विशेषताओं और कार्यों का अन्य की भागीदारी से Ⓟ279
पवित्र होना तथा पूर्ण क़ुदरत से भरा Ⓟहोना यह ऐसी बात नहीं है कि जो मात्र Ⓟ280

शेष हाशिया नं. (11)

(पृष्ठ 361 भाग तृतीय का शेष)

Ⓟऐसा कि फिर तनिक सन्देह करने की गुंजायश नहीं रहती तथा ऐसे Ⓟ279
प्रमाणित मामले पर सन्देह करना उन पागलों, भ्रमियों, और सूफ़िस्ताइयों (दार्शनिकों का एक वर्ग जिनके सिद्धान्तों का आधार भ्रम पर होता है) का कार्य है जिनके हृदय मूल स्वभाव से भ्रम के ऐसे चक्रवात में हैं कि किसी सच्चाई पर दृढ़तापूर्वक विश्वास करना भी उन्हें प्राप्त नहीं होता तथा हमेशा सन्देहों और शंकाओं में डूबे रहते हैं और यद्यपि प्रकाश कैसा भी अपनी पूर्णता को पहुंच जाए, परन्तु उनकी जन्मजात आन्तरिक नेत्रहीनता कि जो चमगादड़ की तरह उनकी पैदायश को व्यक्तिगत तौर पर अनिवार्य होती है कुछ कमी की ओर नहीं जाती, यहां तक कि ख़ुदा के अस्तित्व में भी उन्हें हमेशा दुविधा ही रहती है। अत: ऐसे अन्धों को रोग वास्तव में असाध्य है अन्यथा जिस व्यक्ति को थोड़ा सा भी विवेक प्राप्त है वह भी समझ सकता है कि जब जांच पड़ताल का सिलसिला इस सीमा तक पहुंच जाए कि निश्चित सच्चाई पूर्ण रूप से प्रकट हो जाए तथा चारों ओर से स्पष्ट तर्क तथा ठोस सबूत सूर्य की भांति चमकते हुए निकल आएं तो छानबीन और जांच पड़ताल की बात वहीं समाप्त हो जाती है तथा सत्य के

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

(पृष्ठ 355 भाग तृतीय का शेष)

Ⓟआपका इसी प्रकार का है जैसे समस्त यहूदी अब तक पूर्ण आग्रह के साथ Ⓟ279
कहते हैं कि मसीह ने इन्जील को हमारे नबियों की पवित्र किताबों से चुरा कर बना लिया है अपितु उन के विद्वान और अहबार (यहूदी विद्वान) तो किताबें खोल-खोल कर बताते हैं कि इस-इस स्थान से Ⓟचुराए गए हैं। इसी Ⓟ280
प्रकार दयानन्द पंडित भी अपनी पुस्तकों में शोर मचा रहा है कि तौरात हमारी पुस्तकों से काट-छांट कर बनाई गई है और अब तक 'हवन' इत्यादि की रस्म वेद की भांति इसमें पाई जाती हैं। अत: आप भी तो Ⓟस्वीकार करते Ⓟ281
हैं कि हिन्दुओं के नियमों से इन्जीली शिक्षा को बहुत कुछ समानता है।

Ⓟ281 अनुभव से सिद्ध हुई हो अपितु बौद्धिक तर्कों से भी ख़ुदा का अपने अस्तित्व Ⓟऔर सम्पूर्ण विशेषताओं और कार्यों में अकेला और भागीदार रहित होना आवश्यक और

शेष हाशिया नं. (11)

अभिलाषी को उसी स्थान पर दृढ़ता के साथ चलना पड़ता है तथा मनुष्य को उसे स्वीकार करने के अतिरिक्त कुछ बन नहीं पड़ता और स्वयं स्पष्ट है कि जब पूर्ण सबूत हाथ आ गया तथा बहस किए जा रहे मामले का प्रत्येक कोना पौ फटने की तरह प्रकट हो गया तथा सत्य का चेहरा पूर्ण स्वच्छता के साथ स्पष्ट हो गया तो फिर बुद्धिमान और होशियार मनुष्य उस में क्यों सन्देह करे और क्या कारण कि सद्बुद्धि मनुष्य का हृदय फिर भी उस पर सन्तुष्ट न हो। हां जब तक ग़लती की संभावना शेष है और पूर्ण स्पष्टता के साथ प्रकटन नहीं हुआ तब तक विचार और चिन्तन का घोड़ा आगे से आगे दौड़ सकता है तथा पुनर्विचार का पुनर्विचार हो सकता है न यह कि प्रमाणित सच्चाई में भी वहमियों की तरह सन्देह करके बेहूदा भ्रमों में पड़ते जाएं, इसका नाम विचारों की उन्नति नहीं यह तो पागलपन के तत्त्व की उन्नति है। जिस व्यक्ति पर एक बात के वैध या अवैध के सन्दर्भ में वास्तविकता सूर्य से भी अधिक स्पष्ट हो गई तो फिर क्या वह बेहोश या दीवाना है कि उस पूर्ण प्रकटन के वर्णन के होते हुए फिर भी अपने हृदय में यह प्रश्न करे कि कदाचित जिस बात को मैं अवैध समझता हूं वह वास्तव

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

अत: इस इक़रार से ही आप अपने मुख से हिन्दुओं के दावे का सत्यापन
Ⓟ282 कर रहे हैं, परन्तु क़ुर्आन करीम ऐसा नहीं जिस पर ये आरोप लगा Ⓟसकें या किसी अशुभचिन्तक की योजना सफल हो सके। आपने बुरा किया कि सूर्य पर थूकने का इरादा किया वह तो श्रीमान उलट कर आप ही के मुख पर
Ⓟ283 पड़ेगा। वक्ता जी कदाचित आप की डींगें मारने से उद्देश्य यह है ताकि Ⓟआप कुछ सरल स्वभाव ईसाइयों को प्रसन्न कर दें अन्यथा बुद्धिमान ईसाई आप की इस निरर्थक बात पर हंसेगा कि जिस स्थिति में आप को भलीभांति ज्ञात है कि क़ुर्आन कहां से एकत्र किया गया है तथा उसकी समस्त सच्चाइयां

अनिवार्य ठहराते हैं तथा उसकी Ⓟख़ुदाई के सत्यापन को उन्हीं विशेषताओं केⓅ[282] सत्यापन से प्रतिबंधित ठहराते हैं। अतः अब इन मूर्खों को Ⓟथोड़ी लज्जा और शर्मⓅ[283]

शेष हाशिया नं. (11)

में अवैध हो। यद्यपि ऐसे प्रश्न उस समय सामने आ सकते थे तथा ऐसे भ्रम इस स्थिति में हृदयों में उत्पन्न हो सकते थे जब कि सारा Ⓟआधार बौद्धिकⓅ[280] विचारों पर होता तथा मानवीय बुद्धि ब्रह्म समाज वालों की बुद्धि की तरह अपने दूसरे मित्र की सहमति और सम्मिलित करने से वंचित होती, परन्तु वास्तविक इल्हाम के अनुयायियों की बुद्धि ऐसी अजनबी और अकेली नहीं अपितु उस का सहायक और सहयोगी ख़ुदा का पूर्ण कलाम है जो जांच पड़ताल के सिलसिले को अपने मूल केन्द्र तक पहुंचाता है तथा विश्वास और मारिफत की वह श्रेणी प्रदान करता है कि जिसके आगे कदम रखने का स्थान ही नहीं, क्योंकि एक ओर तो बौद्धिक तर्कों को पूर्ण रूप से वर्णन करता है तथा दूसरी ओर स्वयं वह अद्वितीय और अनुपम होने के कारण ख़ुदा और उसके आदेशों पर विश्वास लाने के लिए ठोस तर्क है। अतः इस दोहरे सबूत से सत्याभिलाषी को सच्चे विश्वास की जितनी श्रेणी प्राप्त होती है उस श्रेणी का महत्व वही व्यक्ति जानता है जो सच्चे हृदय से ख़ुदा को तलाश करता है और वही उसे चाहता है जो आत्मा की सच्चाई से ख़ुदा का अभिलाषी है, परन्तु ब्रह्म समाज वाले जिनका यह नियम है कि ऐसी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

और बारीकियां Ⓟयहूद, ईसाई और अग्नि-पूजकों की किस-किस किताब सेⓅ[284] बतौर चोरी ली गई हैं, तो फिर क्यों आप ऐसे कार्य के दिखाने से जिसके करने से समस्त ईसाइयों का सम्मान बना रहे और उनके असमर्थ और निरुत्तर रहने का हमेशा का धब्बा आपके साहस से धोया जाए तथा ⓅइनⓅ[285] सबके अतिरिक्त दस हज़ार रुपया हाथ लगे अलग है। यदि आपके अस्तित्व को ऐसी कला प्राप्त है कि हज़रत मसीह को भी प्राप्त नहीं थी तो फिर यह जौहर (कौशल) किस दिन के लिए छुपा रखा है। जब आप ऐसे ही योग्य हैं Ⓟकि क़ुर्आन करीम का मुक़ाबला कर सकते हैं अपितु उसका स्रोत बताⓅ[286]

को काम में लाकर विचार करना चाहिए जिन्होंने ख़ुदा के कलाम की अद्वितीयता
Ⓟ284 को स्वीकार न करने Ⓟमें केवल यह आपत्ति कर रखी है कि जिस स्थिति में ख़ुदा

शेष हाशिया नं. 11

कोई किताब अथवा ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसमें गलती की संभावना न हो इस विश्वास की श्रेणी तक क्योंकर पहुंच सकते हैं, जब तक इस शैतानी नियम से तौबा करके निश्चित और विश्वसनीय मार्ग के अभिलाषी न हों, क्योंकि जिस स्थिति में अब तक ब्रह्म समाज वालों को स्वयं उन के इक़रार के अनुसार ऐसी कोई किताब नहीं मिली और न उन्होंने स्वयं बनाई कि जो ऐसे मामलों का संकलन हो कि जो दोष से रिक्त हों। अत: इस से स्पष्ट है कि अब तक उनका ईमान संदेहों के भंवर में डूबता फिरता है तथा उन का यह नियम स्पष्ट तौर पर सिद्ध करता हे कि उन्हें ख़ुदा को पहचानने के मामलों में से किसी मामले पर विश्वास प्राप्त नहीं तथा उनके निकट यह बात दुर्लभ बातों में से है कि धार्मिक ज्ञान में कोई किताब उचित मामलों का संकलन हो अपितु उन्होंने तो घोषणत्मक तौर पर यह राय प्रकट कर दी है कि यद्यपि कोई किताब ऐसी हो जो सरासर ख़ुदा के अस्तित्व को स्वीकार करने वाली तथा उसे अकेला, भागीदार रहित, शक्तिमान, स्रष्टा, अन्तर्यामी, मर्मज्ञ, दयालु तथा अन्य पूर्ण विशेषताओं के स्मरण करती हो तथा उत्पत्ति और विनाश, परिवर्तन और तब्दीली तथा किसी अन्य की भागीदारी इत्यादि अपूर्ण मामलों से पवित्र और श्रेष्ठतम समझती हो, परन्तु

शेष हाशिए का हाशिया नं. 2

सकते हैं, तो फिर आपके लिए बात ही सरल है तथा आप बड़ी आसानी से उन समस्त सच्चाइयों, बारीकियों, तर्कों तथा क़ुर्आनी बरकतों का मुक़ाबला
Ⓟ287 करके कि जो 'बराहीन अहमदिया' में Ⓟइसी उद्देश्य से लिखी हैं विज्ञापन की पूर्ण राशि ले सकते हैं विशेषकर जब आप के भाषण के सन्दर्भ में यह भी पाया जाता है कि आप संसार के संकटों में बुरी तरह ग्रस्त हैं तथा आपको
Ⓟ288 रुपयों की नितान्त आवश्यकता है, तो फिर ऐसी Ⓟस्थिति में संसार प्राप्ति की इससे उत्तम और क्या उपाय है कि आप सब काम छोड़कर यही कार्य अपना

का कलाम भी हमारे कलाम की श्रेणी ℗में से है तथा उन्हीं वाक्यों और शब्दों से℗[285] बना है जिनसे हमारा कलाम बना है तो फिर क्या कारण ℗कि उसके सदृश बनाने℗[286]

शेष हाशिया नं. (11)

तब भी वह किताब उनके निकट गलती की संभावना से रिक्त नहीं तथा इस योग्य नहीं कि उस पर विश्वास किया जाए और इसी कारण ये लोग क़ुर्आन करीम से भी इन्कार कर रहे हैं। अब देखो कि उनके धर्म और ईमान का उन्हीं के इक़रार से सारांश यह निकला कि उनके निकट ख़ुदा की हस्ती और ℗उस का एकेश्वरवाद तथा शक्तिमान होना भी ग़लती की संभावना℗[281] से रिक्त नहीं!! अतः जबकि उन्होंने स्वयं ही इक़रार कर लिया कि उनके पास कोई ऐसी किताब नहीं जिस का सही होना उनके निकट यक़ीनी हो। अतः इससे स्पष्ट हो गया कि उनके धर्म का आधार सरासर कल्पनाओं पर है तथा उनका ईमान विश्वसनीय श्रेणियों से पूर्ण रूप से दूर और पृथक है। अतः यह वही बात है जिसे हम अनेक बार इसी हाशिए में लिख चुके हैं कि एकांकी बौद्धिक भाषणों से अध्यात्म ज्ञान में पूर्ण सन्तुष्टि और संतोष संभव नहीं। ऐसी स्थिति में हमारा और ब्रह्म समाज वालों की इस बात पर तो सहमति हो चुकी कि एकांकी बुद्धि के मार्ग-दर्शन से कोई मनुष्य पूर्ण-विश्वास तक नहीं पहुंच सकता और विवादित केवल यही बात थी कि क्या ख़ुदा ने ब्रह्म समाज वालों के मतानुसार मनुष्य को इसीलिए उत्पन्न किया

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

लें तथा क़ुर्आन करीम के आध्यात्म ज्ञानों, बौद्धिक बारीकियों तथा आन्तरिक प्रभावों का अपनी किताब से मुक़ाबला दिखा कर इनाम की राशि प्राप्त कर लें, ℗इससे आपकी प्रसिद्धि हो जाएगी तथा जिस मैदान को विजय करने से℗[289] हज़रत मसीह असमर्थ रहे तथा अपनी अपूर्ण शिक्षा का स्वयं इक़रार करके इस संसार से कूच कर गए वह मैदान जैसे आप के द्वारा विजय हो जाएगा जैसे एक ℗प्रकार से आप ईसाइयों की दृष्टि में मसीह से उत्तम ठहर जाएंगे℗[290] कि जिस किताब को वह जीवन पर्यन्त अपूर्ण समझते रहे, आपने उसकी पूर्णता को कर दिखाया। संसार के अत्यन्त मुहताज होकर क्यों इतनी धन-राशि

पर हम समर्थ न हो सकें। ऐसे लोगों की स्थिति पर रोना आता है जिन्हें ऐसी सुदृढ़
Ⓟ287 और असंदिग्ध Ⓟसच्चाई कि जो ठोस सबूतों से सिद्ध है समझ आने से रह गई। यदि

शेष हाशिया नं. (11)

है कि बावजूद अभिलाषा के जोश के पूर्ण विश्वास और मात्र सच्चाई के जो उसके स्वभाव में डाली गई है फिर भी अपनी उस स्वाभाविक कामना में असफल और दुर्भाग्यशाली रहे और उसका ज्ञान केवल ऐसे विचारों तक सीमित रहे जो ग़लती की संभावना से रिक्त नहीं या ख़ुदा ने उसकी पूर्ण मारिफ़त तथा पूरी-पूरी सफलता के लिए कोई मार्ग भी नियुक्त कर रखा है और कोई ऐसी किताब भी प्रदान की है जो उस उपर्युक्त नियम से बाहर हो जिसमें ग़लती की संभावना का व्यापक नियम बना रखा है। अत: ख़ुदा का धन्यवाद है कि ख़ुदा की ओर से ऐसी किताब का उतरना निश्चित सबूतों से हम पर सिद्ध हो गया है तथा हम प्रशंसित किताब के माध्यम से उस विनाश के भंवर से बाहर निकल आए हैं। वह किताब वही प्रतिष्ठित और पवित्र किताब है जिसका नाम फ़ुर्क़ान जो सत्य और असत्य में स्पष्ट अंतर दिखाती है तथा प्रत्येक प्रकार के दोषों से पवित्र है, जिसकी प्रथम विशेषता यही है

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ ①

उसी ने हम पर प्रकट किया है कि ख़ुदा सत्य के अभिलाषियों को विश्वसनीय श्रेणियों से वंचित रख कर तबाह करना नहीं चाहता अपितु उस

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

Ⓟ291 व्यर्थ में छोड़ते हैं और यदि Ⓟअकेले उस कार्य को पूर्ण करना संभव नहीं तो
दो-चार या दस-बीस अन्य पादरी जो बेहूदा बाज़ारों और देहात में घूमते फिरते हैं को सम्मिलित कर लीजिए तथा ख़ुदा के साथ थोड़ा लड़ कर
Ⓟ292 दिखाइये अन्यथा जो लोग हमारा मर्दाना विज्ञापन Ⓟपढ़कर आप लोगों की यह
स्त्रियों वाली बातें सुनते हैं अब इन लोगों पर ईसाई सज्जनों की ईमानदारी
Ⓟ293 और ख़ुदा का भय जैसा कि है भली भांति प्रकट हो जाएगा। Ⓟएक और ईसाई
सज्जन 25, मई 1882 ई. के "नूर अफ़्शां" में यह प्रश्न करते हैं कि कौन-कौन

① अलबक़रह : 3

उनमें ख़ुदा की दी हुई थोड़ी सी भी बुद्धि होती तो ®इस बेहूदा आरोप के समय प्रथम®288 यही सोचते कि क्या ख़ुदा का अपने अस्तित्व; विशेषताओं और समस्त कार्यों में

शेष हाशिया नं. 11

दयालु और कृपालु अपने निर्बल और अपूर्ण बन्दों पर ऐसा उपकार किया है कि जिस कार्य को मनुष्य की अपूर्ण बुद्धि नहीं कर सकती थी उसने वह कार्य स्वयं कर दिखाया है तथा जिस ऊँचे पेड़ तक मानव का छोटा हाथ नहीं पहुंचता था उसके फलों को उसने अपने हाथ से नीचे गिराया है तथा सत्याभिलाषियों को और सत्य के भूखे-प्यासों को पूर्ण और निश्चित विश्वास का सामान प्रदान कर दिया है जो ®धार्मिक सच्चाईयों की सहस्त्रों बारीकियां®282 कणों की तरह अध्यात्मिक आकाश के दूरस्थ अन्तरिक्ष में बिखरी हुई थीं और जो जीवन का पानी ओस की तरह विभिन्न तौर पर मानव स्वभाव के अंधकारों में तथा उसकी गहन योग्यताओं में गुप्त और छुपा हुआ था, जिसे विश्व-रंगमंच पर प्रदर्शित करना तथा दुर्लभ किनारों वाले अन्तरिक्ष से एक स्थान पर एकत्र करना मानव बुद्धि की शक्तियों से बाहर था तथा मनुष्य की कमज़ोर शक्तियों के पास कोई ऐसा बारीक और परोक्ष को दिखाने वाला उपकरण न था कि जिसके द्वारा मनुष्य उन नितान्त सूक्ष्म और गुप्त वास्तविक कणों को जिन्हें पूर्ण रूप से देखने के लिए दृष्टि वफ़ा नहीं करती थी तथा एकत्र करने के लिए आयु फ़ुरसत नहीं देती थी आसानी

शेष हाशिए का हाशिया नं. 2

से लक्षण या शर्तें हैं जिन से सच्चे और झूठे मुक्तिदाता में अन्तर किया जा सके इसका उत्तर भी यही है कि ख़ुदा की ओर से सच्चा मुक्ति दाता ®वह®294 व्यक्ति है जिस के अनुसरण से सच्ची मुक्ति प्राप्त हो अर्थात ख़ुदा ने उसके प्रवचन में यह बरकत रखी हो कि उसका पूर्ण अनुयायी कामवासनाओं के अंधकारों तथा मानव अपवित्रताओं से मुक्ति पा जाए या उसमें वे प्रकाश उत्पन्न हो जाएं जिनका पवित्र ®हृदयों में उत्पन्न होना आवश्यक®295 है। हां जब तक अनुसरणकर्ता के अनुसरण में कमी हो तक तक कामवासनाओं के अंधकार दूर नहीं होंगे और न आन्तरिक प्रकाश प्रकट होंगे, परन्तु यह

®289®अकेला और भागीदार रहित होना आवश्यक है या नहीं? और यदि इस तर्क को ®290नहीं सोचा था तो काश इस दूसरे ®तर्क को ही सोचा होता कि जिस हस्ती को ज्ञान

शेष हाशिया नं. (11)

से ज्ञात और प्राप्त कर लेता। इस कामिल (पूर्ण) किताब ने ईश्वरीय की क़ुदरत और शक्ति तथा प्रतिपालन की ताकत और शासन द्वारा उन समस्त नीतियों और अध्यात्म ज्ञान की बारीकियों और विचित्रताओं को हमारे समक्ष ला रखा है, ताकि हम उस पानी को पीकर सुरक्षित हो जाएं तथा मृत्यु के गढ़े में न गिरें फिर विचित्र यह कि इस पूर्णता के साथ संकलित है कि सच्चाई की बारीकियों में से कोई सूक्ष्मता बाहर नहीं रही और न कोई ऐसी बात सम्मिलित हुई कि जो किसी सच्चाई के विपरीत और विरुद्ध हो। अत: हमने इन्कार करने वालों को अपराधी और अपमानित करने के लिए अनेकों स्थान पर विस्तारपूर्वक लिख दिया है और उच्च स्वर में सुना दिया है कि यदि कोई ब्रह्मसमाजी क़ुर्आन करीम के किसी वर्णन को सच्चाई के विरुद्ध समझता है अथवा किसी सच्चाई से रिक्त विचार करता है तो अपना आरोप प्रस्तुत करे। हम ख़ुदा की दया और कृपा से उसके भ्रम का ऐसा निवारण कर देंगे कि जिस बात को वह अपने मिथ्या और असत्य विचार में एक दोष समझता था उस पर उसका कौशल प्रकट हो जाएगा।

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

उस नबी का दोष नहीं जिसका कि अनुसरण किया जाता है अपितु वह स्वयं अनुसरण के दावेदार की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष उपेक्षा की आपदा में गिरफ़्तार है तथा इसी उपेक्षा के कारण वंचित और लज्जित है। यही वास्तविक लक्षण है जिस से मनुष्य पूर्व क़िस्सों और कहानियों का मुहताज नहीं होता अपितु
®296 स्वयं सत्य का अभिलाषी बन कर सच्चे पथ-प्रदर्शक और हितकारी ®को पहचान लेता है और उस पवित्रता तथा प्रकाश को कि जो कामिल और हितकारी हो के सन्दर्भ में निष्ठा रखी गई है, न केवल अपनी आंख से देखता है अपितु अपनी योग्यतानुसार उसका स्वाद भी चख लेता है तथा

संबंधी और स्वाभाविक शक्तियों में सब से अधिक और अद्वितीय तथा अनुपम स्वीकार ®करते हैं उन शक्तियों के लक्षणों को भी अद्वितीय और अनुपम स्वीकार®291

शेष हाशिया नं. (11)

यहां यह भी स्मरण रहे कि मात्र बौद्धिक विचारों में केवल इतना ही दोष नहीं कि वे विश्वसनीय पदों से असमर्थ हैं तथा अध्यात्म ज्ञान की बारीकियों के संकलन पर अधिकार नहीं कर सकते अपितु एक भी एक दोष है कि मात्र बौद्धिक भाषण हृदयों को प्रभावित करने में नितान्त निर्बल और निष्प्राण हैं। निर्बल और निष्प्राण होने का कारण यह है कि किसी कलाम (वाणी) का हृदय को प्रभावित करना इस बात पर निर्भर है कि उस कलाम की सच्चाई श्रोता के मस्तिष्क में ऐसी उपस्थित और प्रमाणित हो कि जिस में लेशमात्र भी सन्देह की गुंजायश न हो तथा हार्दिक विश्वास के साथ हृदय में यह बात बैठ जाए कि मुझे जिस घटना की ®सूचना दी गई है उसमें ग़लती की संभावना®283 नहीं। अभी प्रकट हो चुका है कि एकांकी बुद्धि पूर्ण-विश्वास तक पहुंचा ही नहीं सकती। अत: ऐसी स्थिति में यह बात व्यापक है कि वे लक्षण जो कि पूर्ण विश्वास पर सम्पादित होते हैं तथा विश्वसनीय कलाम के वे प्रभाव जो हृदयों पर प्रभाव डालते हैं वे एकांकी बुद्धि से कदापि अभीष्ट नहीं उसका सबूत नित्यप्रति के अनुभव से प्रकट है। उहाहरणतया एक व्यक्ति सुदूर देश का भ्रमण करने आता है, जब अपने देश में पहुंचता है तो प्रत्येक परिचित

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

युक्ति को न केवल काल्पनिक तौर पर एक ऐसा मामला ठहराता है कि जो प्रलय में प्रकट होगा अपितु मूर्खता, अंधकार, सन्देह, शंका और कामुक भावनाओं के प्रकोप से मुक्ति पाकर तथा आकाशीय प्रकाशों से प्रकाशमान होकर इसी संसार में मुक्ति की वास्तविकता पा लेता है। अब जबकि ®सच्चे®297 मुक्तिदाता का यह लक्षण ठहरा तथा यही सत्याभिलाषी का महान उद्देश्य है कि जो उसके जीवन का मूल उद्देश्य और उसके धर्म स्वीकार करने का मूल कारण है। अत: समझना चाहिए कि यह लक्षण केवल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में पाया जाता है और उन्हीं के

Ⓟ292 करना चाहिए, क्योंकि जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं कलाम Ⓟकी श्रेष्ठता और वैभव वक्ता की ज्ञान संबंधी शक्तियों के अधीन है, जो कोई ज्ञान-संबंधी शक्तियों

शेष हाशिया नं. (11)

और अपरिचित उससे उस विदेश के समाचार मालूम करता है तथा उसके चश्मदीद समचार बशर्ते कि वह झूठ की आदत से आरोपित न हो हृदयों पर बहुत प्रभाव डालते हैं तथा बिना किसी संकोच और संदेह के वास्तव में सत्य और उचित समझे जाते हैं, विशेषकर और नेक व्यक्ति हो। उसके कलाम में इतना प्रभाव क्यों होता है कि प्रथम उसे एक सुशील और सज्जन स्वीकार करके फिर उस के सन्दर्भ में यह विश्वास किया गया है कि वह उन देशों की जो-जो घटनाएं वर्णन करता है उन्हें उसने अपनी आँखों से देखा है तथा जो-जो समाचार बताता है वह सब उसका चश्मदीद वृत्तान्त है। अतः इसी कारण उसकी बातों का हृदयों पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है तथा उसकी बातें तबियतों में इस प्रकार घर कर जाती हैं कि जैसे उन घटनाओं का चित्रण दृष्टि के सामने उपस्थित हो गया है अपितु प्रायः जब वह अपनी यात्रा की एक दर्द भरी दास्तान सुनाता है अथवा किसी क़ौम की हृदय-विदारक घटना वर्णन करता है तो सुनते ही वह बात श्रोताओं के हृदय को ऐसा द्रवित कर देती है कि उनकी आंखों में आंसू भर आते हैं तथा उनकी एक ऐसी दशा हो जाती है कि जैसे वह उस अवसर पर मौजूद हैं

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

अनुसरण से कि जो क़ुर्आन करीम के अनुसरण पर आधारित है आन्तरिक प्रकाश और ख़ुदा का प्रेम प्राप्त होता है। क़ुर्आन करीम जो आप[स.] के अनुसरण का आधार है एक ऐसी किताब है जिसके अनुसरण से इसी
Ⓟ298 Ⓟसंसार में मुक्ति के लक्षण प्रकट हो जाते हैं क्योंकि वही किताब है कि जो दोनों ढंग, प्रत्यक्ष और आन्तरिक के माध्यम से अपूर्ण व्यक्तियों को पूर्ण श्रेणी तक पहुंचाती है तथा संदेह और शंकाओं से मुक्ति प्रदान करती है। प्रत्यक्ष ढंग से इस प्रकार कि उसका वर्णन सच्चाइयों और बारीकियों का ऐसा संग्रह है कि संसार में ऐसे सन्देह पाए जाते हैं कि जो ख़ुदा तक पहुंचाने

में अधिकतम है उसके ®भाषण की श्रेष्ठता और वैभव अधिकतम है और यदि इस®293 सबूत को भी दृष्टि से हटा दिया था तो काश 294पदार्थों के गुणों की वास्तविकता के

शेष हाशिया नं. 11

तथा उस घटना को स्वयं अपनी आंखों से देख रहे हैं।

परन्तु जो व्यक्ति अपने घर की चार दीवारी से बाहर नहीं निकला, न उस देश में कभी गया और न देखने वालों से कभी उस का हाल सुना यदि वह उठकर केवल अपनी अटकल से उस देश के समाचार वर्णन करने लगे तो उस की बक-बक (व्यर्थ बातें) से कोई प्रभाव नहीं होता अपितु लोग उसे कहते हैं कि क्या तू पागल और दीवाना है कि ऐसी बातें वर्णन करने लगा कि जो तेरे अवलोकन और अनुभव से बाहर हैं तो तेरे अपूर्ण ज्ञान से श्रेष्ठतर हैं और उस पर ऐसा ही कहते हैं जैसा एक बुज़ुर्ग ने एक मूर्ख का वृत्तान्त लिखा है कि वह एक स्थान पर गेहूं की रोटी की बहुत सी प्रशंसाएं कर रहा था कि वह बहुत ती स्वादिष्ट होती है। जब पूछा गया कि क्या तूने कभी खाई है तो उसने उत्तर दिया कि मैंने खाई तो कभी नहीं परन्तु मेरे दादा जी बात किया करते थे कि एक बार हमने किसी को खाते देखा है।

अत: जब तक कोई श्रोताओं की दृष्टि में किसी वृत्तान्त को पूर्णरूप से अपनी परिधि में लिए हुए न हो तब तक बजाए इसके कि उसका कलाम हृदयों पर कुछ प्रभाव करे व्यर्थ में उपहास कराने का कारण बनता है।

शेष हाशिए का हाशिया नं. 2

से रोकते हैं, जिनमें लिप्त होकर सैकड़ों झूठे सम्प्रदाय फैल रहे हैं और सैकड़ों प्रकार के झूठे ®विचार पथ-भ्रष्ट लोगों के हृदयों में घर कर रहे हैं। दर्शन और®299 तर्क शास्त्र की दृष्टि से इसमें सब का खण्डन मौजूद है और जो, सच्ची और पूर्ण शिक्षा का प्रकाश वर्तमान युग के अंधकार के लिए आवश्यक है वह सब सूर्य की भांति इसमें चमक रहा है तथा समस्त रोगों का उपचार इसमें लिखा है और समस्त सच्चाई का वर्णन इसमें भरा हुआ है तथा आध्यात्म ज्ञान की कोई बारीकी नहीं कि जो भविष्य में कभी प्रकट हो सकती है और इससे बाहर रह गई हो। आन्तरिक ढंग से इस तौर पर कि उसका पूर्ण अनुसरण हृदय को

मामले को स्मरण रखते। क्या उन्हें ज्ञात नहीं कि सैकड़ों वस्तुएं एक ही प्रकार की
Ⓟ295 होती Ⓟहैं अपितु एक ही प्रकार के अधीन होती हैं, परन्तु फिर भी ख़ुदा तआला ने

शेष हाशिया नं. 11

यही कारण है कि एकांकी बुद्धिमानों के नीरस भाषणों ने किसी को प्रलय लोक की ओर निश्चित तौर पर ध्यान नहीं दिलाया तथा लोग यही समझते रहे कि जिस प्रकार ये लोग अटकल से बातें करते हैं इसी प्रकार हम भी उनकी राय के विपरीत अटकलें (अनुमान) दौड़ा सकते हैं। न उन्होंने अवसर पर पहुंच कर वास्तविक स्थिति को देखा न हम ने। इसी कारण जब एक ओर कुछ बुद्धिमानों ने ख़ुदा के अस्तित्व पर राय प्रकट करना आरंभ किया तो दूसरे बुद्धिमानों ने उनके विरोधी हो कर नास्तिकता के समर्थन में किताबें लिखी। सत्य तो यह है कि उन बुद्धिजीवियों का वर्ग जो किसी सीमा तक ख़ुदा के अस्तित्व को मानते थे वे भी नास्तिकता की नस से कभी रिक्त नहीं हुआ और न अब रिक्त है। इन्हीं ब्रह्म समाज वालों को देखो कि वे ख़ुदा को कब पूर्ण विशेषताएं रखने वाला समझते हैं, उन्हें कब इक़रार है कि ख़ुदा गूंगा नहीं अपितु उसमें वास्तविक तौर पर वार्ता करने की विशेषता भी है जैसी एक जीवित और जागरूक में होना चाहिए, वे कब उसे सच्चे तौर पर पूरा-पूरा नीतिवान और अन्नदाता समझते हैं, उन्हें कब इस बात पर ईमान है कि वास्तव में ख़ुदा अपने अस्तित्व में पूर्ण जीवन वाला, स्थापित

शेष हाशिए का हाशिया नं. 2

ऐसा स्वच्छ कर देता है कि मनुष्य आन्तरिक पापों से बिल्कुल पवित्र होकर ख़ुदा तआला से मिलाप पैदा कर लेता है उस पर स्वीकारिता के प्रकाश आने आरंभ हो जाते हैं और उस पर ख़ुदा की कृपाएं इतनी छा जाती हैं कि जब वह कठिनाइयों के समय दुआ करता है तो पूर्ण दया और मेहरबानी से ख़ुदा तआला
Ⓟ300 उसका उत्तर देता है और प्राय: ऐसा संयोग होता Ⓟहै कि यदि वह सहस्त्रों बार ही अपनी कठिनाइयों तथा अत्यधिक चिन्ताओं के समय प्रश्न करे तो हज़ार बार ही अपने दयालु स्वामी (ख़ुदा) की ओर से नितान्त सुगम, आनंददायक तथा पवित्र कलाम में प्रेमयुक्त उत्तर पाता है तथा ख़ुदा का इल्हाम वर्षा की भांति

प्रत्येक वस्तु में ®पृथक-पृथक गुण रखे हैं। ®कुछ लोग इस धोखे में पड़े हुए हैं कि®297 ®296
भाषा मनुष्य का आविष्कार है और जबकि मनुष्य का आविष्कार हुआ ®तो फिर®298

शेष हाशिया नं. (11)

और सब को स्थापित करने वाला है तथा अपनी आवाज़ें सच्चे हृदयों तक पहुंचा सकता है अपितु वह तो उसके अस्तित्व को एक काल्पनिक और मुर्दा सा विचार करते हैं कि जिसे मानव बुद्धि केवल अपनी ही कल्पनाओं से एक काल्पनिक अस्तित्व बना लेती है तथा इस ओर से जीवितों की भांति कभी आवाज़ नहीं आती जैसे वह ख़ुदा नहीं एक मूर्ति ही है कि जो किसी कोने में पड़ी है। मैं आश्चर्य चकित हूं कि ऐसे अपरिपक्व और कमज़ोर विचारों से ये लोग क्योंकर प्रसन्न हुए बैठे हैं तथा ऐसी स्वयं निर्मित बातों से किन लाभों की आशा है, क्यों सत्याभिलाषियों की भांति उस ख़ुदा को तलाश नहीं करते कि जो शक्तिमान, बलवान और जीवित-जागरूक है तथा अपने अस्तित्व पर स्वयं सूचित करने की ®शक्ति रखता®285 है तथा إِنِّیْ أَنَا اللّٰهُ की आवाज़ से मुर्दों को पलभर में जीवित कर सकता है। जब ये लोग स्वयं जानते हैं कि बुद्धि का प्रकाश धूमिल है तो फिर पूर्ण प्रकाश के क्यों अभिलाषी नहीं होते। विचित्र मूर्ख हैं कि स्वयं के रोगी होने को तो स्वीकार करते हैं परन्तु इलाज की कुछ चिन्ता नहीं। नितान्त खेद, क्यों उनकी आंखें नहीं खुलतीं ताकि वह वस्तु-स्थिति को

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

उस पर बरसता है और वह अपने हृदय में ख़ुदा के प्रेम को ऐसा भरा हुआ पाता है कि जैसे एक अत्यन्त स्वच्छ बोतल एक उत्तम इत्र से भरी होती है तथा उसे प्रेम और रुचि का एक ऐसा पवित्र आनन्द प्रदान किया जाता है कि जो उस की ठोस अहंकार की ज़ंजीरों को तोड़कर और उस से बाहर निकाल कर वास्तविक प्रियतम की शीतल और हृदय को आराम देने वाली वायु उसे प्रतिपल, प्रतिक्षण ताज़ा जीवन प्रदान करती रहती है। अत: वह अपनी मृत्यु से पूर्व ही ख़ुदा की उन कृपाओं को स्वयं अपनी आंखों से देख लेता है जिन्हें देखने के लिए अन्य लोग मरने के बाद आशाएं बांधते हैं और ये समस्त ने 'मतें

Ⓟ299 सरस और सुबोध वाणी से संबंधित अन्य विशेषताओं में मनुष्य यथोचित Ⓟअग्रणी पदों तक पहुँच सकता है क्योंकि यह बात बिल्कुल अनुचित और कल्पना के

शेष हाशिया नं. (11)

देख लें, क्यों उनके कानों पर से पर्दा नहीं उठता ताकि वह सच्ची आवाज़ को सुन लें, क्यों उनके हृदय ऐसे टेढ़े चलने वाले तथा उनकी बुद्धि ऐसी उल्टी हो गई कि जो आरोप वास्तव में उन्हीं पर आता था वे सच्चे इल्हाम के अनुयायियों पर करने लगे। क्या अभी तक हम ने उन्हें यह सिद्ध करके नहीं दिखाया कि वे ख़ुदा की मारिफ़त में नितांत अपूर्ण और ख़तरे की अवस्था में हैं, क्या हमने अभी तक उन पर यह प्रकट नहीं किया कि पूर्ण और सम्पूर्ण मारिफ़त केवल क़ुर्आन करीम के माध्यम से प्राप्त हो सकती है और बस। फिर जब प्रत्येक प्रकार से उन्हीं का झूठा तथा ग़लती पर होना सिद्ध हो चुका है तो फिर यह कैसी ईमानदारी है कि अपने घर के शोक से अपिरिचित रह कर इस्लाम के अनुयायियों को रोगी ठहराते हैं तथा नीचता और उपद्रव की बातें मुख पर लाते हैं जिनसे निश्चय ही समझा जाता है कि उनका सत्य पर चलने से कोई मतलब और सम्बन्ध नहीं तथा ये बातें उनकी बातें नहीं हैं अपितु द्वेष और धार्मिक पक्षपात का दुर्गन्धयुक्त भोजन लगाई गई सीनी (स्थाल) है।

इसी युग का परिशिष्ट ब्रह्म समाज वालों का एक अन्य भ्रम भी है कि

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

किसी बैराग्य संबंधी परिश्रम और तपस्या पर निर्भर नहीं अपितु केवल क़ुर्आन करीम के पूर्ण अनुसरण से दी जाती हैं तथा प्रत्येक सच्चा अभिलाषी उन्हें प्राप्त कर सकता है। हां उनकी प्राप्ति में ख़ातमुर्रुसुल और रसूलों में सर्वोच्चतम का
Ⓟ301 पूर्ण प्रेम भी Ⓟशर्त है। तब अल्लाह के नबी से प्रेम के पश्चात मनुष्य उन प्रकाशों में से अपनी पात्रता के अनुसार स्वयं हिस्सा प्राप्त कर लेता है कि जो पूर्ण तौर पर अल्लाह के नबी को प्रदान की गई हैं। अत: सत्याभिलाषी के लिए इस से उत्तम कोई मार्ग नहीं कि वह किसी विवेकशील और ख़ुदा का ज्ञान रखने वाले मनुष्य के माध्यम से स्वयं उस दृढ़ धर्म में प्रवेश करके तथा

विपरीत है कि मनुष्य अपने आविष्कार में ®उन्नति करने में असमर्थ और विवश ®300 रहे और जब कलाम की सरलता और सुगमता में प्रत्येक प्रकार की उन्नति करना

शेष हाशिया नं. (11)

इल्हाम एक क़ैद है तथा हम प्रत्येक क़ैद से स्वतंत्र हैं अर्थात् हम अच्छे हैं क्योंकि स्वतंत्र क़ैदी से उत्तम होता है। हम उस आलोचना को स्वीकार करते और इक़रार करते हैं कि निसन्देह इल्हाम एक क़ैद है, परन्तु ऐसी क़ैद है कि जिस के अभाव में सच्ची स्वतंत्रता की प्राप्ति संभव नहीं, क्योंकि सच्ची स्वतंत्रता वह है कि मनुष्य को प्रत्येक प्रकार की ग़लती, सन्देहों और शंकाओं से मुक्ति पाकर पूर्ण विश्वास का पद प्राप्त हो जाए तथा अपने दयालु स्वामी (ख़ुदा) के इसी लोक में दर्शन कर ले। अत: जैसा कि हम इसी हाशिए में सिद्ध कर चुके हैं यह वास्तविक स्वतंत्रता संसार में कामिल और ख़ुदा के प्रिय मुसलमानों को क़ुर्आन करीम के माध्यम से प्राप्त है तथा उनके अतिरिक्त किसी ब्रह्म समाजी इत्यादि को प्राप्त नहीं। हां एक कारण से ब्रह्म समाज वालों का नाम भी स्वतंत्र और बन्धन मुक्त हो सकता है तथा इसी विचार से हमने भी इस पुस्तक के कुछ-कुछ स्थानों में इनका नाम स्वतंत्र पद्धति पर चलने वाले रखा है और वह यह है कुछ शराबी और आवारा लोग शराब पीकर या एक प्याला भांग का ®चढ़ाकर अथवा चरस इत्यादि ®286 नशे वाले पदार्थों का दम लगा कर प्रत्येक प्रकार की शर्म एवं लज्जा तथा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

ख़ुदा के कलाम का अनुसरण और मान्य रसूल का प्रेम धारण करके हमारे इन वर्णनों की सच्चाई को स्वयं अपनी आंखों से देख ले और यदि वह इस उद्देश्य प्राप्ति के लिए हमारी पूर्ण निष्ठा के साथ लौटे तो हम ख़ुदा की कृपा और मेहरबानी पर भरोसा करके उसको अनुसरण का मार्ग-दर्शन करने को तैयार हैं, परन्तु ख़ुदा की कृपा तथा व्यक्तिगत योग्यता की आवश्यकता है। यह स्मरण रखना चाहिए कि सच्ची मुक्ति सच्चे स्वास्थ्य की भांति है। अत: जैसा सच्चा स्वास्थ्य वह है कि जिसमें स्वास्थ्य के समस्त लक्षण प्रकट हों तथा स्वास्थ्य के विपरीत और विरुद्ध कोई रोग न लगा हो, इसी प्रकार

®301 तथा ®पूर्णता की श्रेणी तक पहुंच जाना बुद्धि के अनुसार निषेध नहीं है तो ऐसी
®302 स्थिति में क़ुर्आनी सुगमता का सदृश बनाना भी निषिद्ध न ®होगा। अत: स्पष्ट हो

शेष हाशिया नं. (11)

पदों की सुरक्षा और पाबंदी से अपितु ख़ुदा से भी स्वतंत्र बन बैठे हैं तथा हृदय में जिस प्रकार का ज्वर उठता है बोल उठते हैं और जो चाहते हैं बकते हैं। इन्हीं के अनुसार कुछ ब्रह्म समाज वालों ने हम पर सिद्ध कर दिया है कि वास्तव में बंधनमुक्त और स्वतंत्र होकर इस संसार का आराम तो इच्छानुसार प्राप्त कर लिया कि समस्त वैध-अवैध अपनी जीभ पर ही आ गया और धार्मिक आदेशों की चाबी अपने ही हाथ में आ गई अब तामसिक वृति के परामर्श से जिस द्वार को चाहें खोल दें और जिसे चाहें बन्द कर दें। स्वयं ही धर्म-कर्म के प्रवर्तक जो हुए, परन्तु इन स्वतंत्रताओं का स्वाद उस दिन चखेंगे जिस दिन ख़ुदा के समक्ष अपनी बेईमानियों का हिसाब देना पड़ेगा।

इसी भ्रम का परिशिष्ट ब्रह्म समाज वालों का एक और कथन है कि जैसे उन्होंने इसी प्रतिकूल शरीर को एक दूसरे लिबास में प्रकट किया है और वह यह है कि इल्हाम का अनुयायी होना दृढ़ता और स्वाभाविक शैली के विपरीत कृत्य है, क्योंकि प्रत्येक बात की वास्तविकता से परिचित होने के लिए स्पष्ट और सद्मार्ग कि जिसे प्रत्येक मनुष्य की आत्मा अपने स्वभाव की मांग के अनुसार चाहती है वह यही है कि बौद्धिक तर्कों द्वारा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

सच्ची मुक्ति भी वही है कि जिसमें मुक्ति प्राप्ति के लक्षण भी पाएं जाएं
®302 क्योंकि जिस वस्तु का ®अस्तित्व निश्चित तौर पर पाया जाता हो, उस मौजूद अस्तित्व के लिए लक्षणों और निशानियों का पाया जाना अनिवार्य होता है तथा उन लक्षणों और निशानियों के अस्तित्व के अभाव में उस वस्तु का अस्तित्व सिद्ध नहीं हो सकता और जैसा कि हम बारम्बार लिख चुके हैं कि मुक्ति के सत्यापन के लिए ये लक्षण विशेष हैं कि ख़ुदा की ओर तन्मय होना तथा ख़ुदा से प्रेम का प्रभुत्व इतना कि पूर्णता के स्तर तक पहुंच जाए कि उस व्यक्ति की संगत, ध्यान, और दुआ से भी यह बातें दूसरे

कि यह भ्रम प्रथम तो इस उपर्युक्त लेख से दूर होता है जिसमें हम ने Ⓟपूर्ण Ⓟ303 स्पष्टता के साथ लिख दिया है कि मनुष्य की ज्ञान-संबंधी शक्तियाँ ख़ुदा तआला

शेष हाशिया नं. (11)

उस वास्तविकता को प्रकट किया जाए जैसे उदाहरणतया चोरी के कृत्य के दूषित होने के लिए वास्तविक कारण जो अध्यात्मिक सन्तोष पर निर्भर है यही है कि वह एक अन्याय और अत्याचार है जो बुद्धि के निकट अनुचित और अवैध है यह कारण नहीं है कि जिसे किसी इल्हामी किताब में उसका करना पाप लिखा है या उदाहरणतया संखिया जो एक विष है, उसके खाने का निषेध वास्तविक तौर पर इसी आधार पर हो सकता है कि वह बधिर और घातक है न कि इस आधार पर कि ख़ुदा के कलाम ने उसके खाने-पीने का निषिद्धीकरण है। अत: सिद्ध है कि निश्चित और वास्तविक सच्चाई की मार्ग-दर्शक केवल बुद्धि है न कि इल्हाम, परन्तु उन सज्जनों को अभी तक यह भी ख़बर नहीं कि जब ठोस और दृढ़ सबूतों से उनकी बुद्धि का अपरिपक्व और अपूर्ण होना प्रमाणित हो गया। क्या यह बुद्धिमता है कि जिस भ्रम को शक्तिशाली तर्कों द्वारा बलशाली सेना ने पीस डाला है, उसी मुर्दा विचार को निर्लज्ज व्यक्ति की भांति बार-बार प्रस्तुत किया जाए। अफ़सोस, अफ़सोस!!! अरे बाबा क्या तुम बार-बार सुन नहीं चुके कि यद्यपि Ⓟवस्तुओं की सच्चाइयां बौद्धिक सबूतों द्वारा किसी सीमा तक Ⓟ287

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

पात्रता रखने वालों में उत्पन्न हो सकें और वह स्वयं अपनी व्यक्तिगत स्थिति में ऐसी आन्तरिक पवित्रता रखता हो कि सत्याभिलाषी की दृष्टि में उसकी बरकतें प्रकटन में स्पष्ट हों तथा उसमें ख़ुदा तआला की वे समस्त विशेषताएं और वार्तालाप पाए जाएं कि जो सानिध्य प्राप्त लोगों में पाए जाते हैं। यहां कोई व्यक्ति नुजूमियों और ज्योतिषियों इत्यादि परोक्ष की बातें बताने वालों की भविष्यवाणियों पर धोखा न खाए और उचित तौर पर स्मरण रखे कि ख़ुदा वालों के प्रकाशों और बरकतों से इन लोगों की कोई तुलना नहीं। हम पहले भी लिख चुके हैं कि शक्ति से भरपूर भविष्यवाणियों और कृपायुक्त

Ⓟ304की ज्ञान संबंधी शक्तियों से कदापि समान नहीं Ⓟहो सकतीं और जो ज्ञान-संबंधी शक्तियों में निम्न-उच्च, दृढ़ और कमज़ोर का अन्तर होता है आवश्यक है कि वह

शेष हाशिया नं. 11

प्रकट होती हैं परन्तु ऐसा तो नहीं कि विश्वास की समस्त श्रेणियों की पूर्णता बुद्धि पर ही निर्भर है। आप तो अपने ही प्रस्तुत किए हुए उदाहरण से दोषी हो सकते हैं, क्योंकि संखिये का बधिर और घातक होना एकांकी बुद्धि से सिद्ध नहीं हुआ अपितु निश्चित तौर पर उसकी यह विशेषता तब ज्ञात हुई जब बुद्धि ने उचित अनुभव को अपना सहयोगी बनाकर संखिये के गुप्त गुण का अवलोकन कर लिया है। अत: हम भी आपको यही समझाते हैं कि जैसा संखिये का गुण वास्तविक तौर पर ज्ञात करने के लिए बुद्धि को एक अन्य मित्र की आवश्यकता हुई अर्थात उचित अनुभव की आवश्यकता। इसी प्रकार अध्यात्म ज्ञान और आख़िरत (प्रलय) के संसार की सच्चाइयां विश्वसनीयता के साथ ज्ञात करने के लिए बुद्धि को ख़ुदा के इल्हाम की आवश्यकता है तथा इस सहयोगी के अभाव में बुद्धि का कार्य धार्मिक ज्ञान में नहीं चल सकता जिस प्रकार अन्य ज्ञानों में दूसरे सहयोगियों के अभाव में बुद्धि निष्क्रिय, दोषपूर्ण और अपूर्ण है। अत: बुद्धि व्यक्तिगत तौर पर स्थायी रूप से किसी कार्य को वास्तविक रंग में सम्पन्न नहीं कर सकती जब तक कोई दूसरा सहयोगी उसके साथ सम्मिलित न हो तथा सहयोगी के अभाव में संभव नहीं

शेष हाशिए का हाशिया नं. 2

Ⓟ303 वादे कि जो Ⓟबिल्कुल सच्चे हैं तथा जिनमें सरासर विजय और सहायता के शुभ-संदेश, प्रताप और सम्मान की सूचनाएं भरी हुई हैं उनसे मानव संसाधनों की कुछ भी तुलना नहीं। ख़ुदा तआला ने अल्लाह वालों (सदात्मा लोगों) को ऐसा स्वभाव प्रदान किया है कि उनकी दृष्टि और संगत, ध्यान और दुआ विषनाशक का आदेश रखती है बशर्ते कि लाभ प्राप्त करने वाले व्यक्ति में पात्रता और योग्यता विद्यमान हो तथा ऐसे लोग केवल भविष्यवाणियों से नहीं अपितु अपनी मारिफ़त के भण्डारों से, अपने अद्‌भुत भरोसे से, अपने पूर्ण प्रेम से, अपनी पूर्ण विरक्तता से, अपनी निष्ठा और

कलाम ℗में प्रकट हो अर्थात् जो कलाम उच्चतम शक्ति से जारी हुआ है वह ℗305
उच्चतम और जो निम्न स्तर की शक्ति से जारी हुआ है वह ℗निम्न स्तर का हो ℗306

शेष हाशिया नं. (11)

कि भूल और ग़लती से सुरक्षित और पवित्र रह सके, विशेषकर अध्यात्म ज्ञान में इस संसार के समस्त विवादों की वास्तविकता और सच्चाई दूर से दूर है, जिसका कोई उदाहरण इस संसार में विद्यमान नहीं। इन मामलों में मानवीय अपूर्ण बुद्धि ग़लती से क्या बचेगी मारिफ़त की पूर्ण श्रेणी तक भी नहीं पहुंचा सकती और अन्ततः जो बुद्धि के माध्यम से ज्ञात किया जाता है उसका लेख केवल इतना ही होता है कि अनुमान लगाने वाला अपने अनुमान में यद्यपि कि वह अनुमान वास्तविक हो या अवास्तविक किसी बात की आवश्यकता ठहरा लेता है, परन्तु यह सिद्ध नहीं कर सकता कि वह बात जो आवश्यक ठहराई गई है बाह्य तौर भी अपने अस्तित्व में मौजूद है। इसी दृष्टि से उसका ज्ञान एक ऐसी काल्पनिक आवश्कता पर आधारित होने के कारण जिस का बाह्य तौर पर कोई पता नहीं मिला, एक निराधार एकांकी विचार समझा जाता है तथा पूर्ण विश्वास की श्रेणी से उसे पूर्णतया निराशा और असफलता प्राप्त होती है। हम अनेक बार उल्लेख कर चुके हैं कि कदापि संभव ही नहीं कि मात्र काल्पनिक आवश्यक्ताओं तथा एकांकी विचारों के परिसीमन से बुद्धि को पूर्ण विश्वास की श्रेणी प्राप्त हो जाए अपितु उस पूर्ण

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

दृढ़ता से, अपने लगाव से, अपने अनुराग और ख़ुशी से, अपने विनय और गिड़गिड़ाने की अधिकता से, अपनी आत्मा की पवित्रता से, अपने सांसारिक प्रेम के त्याग से, अपनी अधिकांश बरकतों से कि जो वर्षा की तरह बरसती हैं, अपने ख़ुदा की ओर से समर्थित होने से और अपनी अद्वितीय दृढ़ता, उच्च स्तरीय वफ़ादारी, अनुपम परहेज़गारी (संयम), अद्वितीय संयम, पवित्रता, महान साहस, तथा हृदय की प्रफुल्लता से पहचाने जाते हैं तथा भविष्यवाणियां उनका मूल पद नहीं है अपितु वह इस उद्देश्य से है ताकि वह उन बरकतों को जो उन पर और उनके संबंधित लोगों पर होने वाली हैं

जैसा कि मनुष्य के भिन्न-भिन्न योग्यता रखने वाले सदस्यों पर दृष्टि करने से यह
Ⓟ307 अन्तर प्रकट और स्पष्ट है Ⓟतथा कमज़ोर योग्यता वाला दृढ़ योग्यता वाले का

शेष हाशिया नं. (11)

विश्वास की प्राप्ति के लिए समस्त सांसारिक और धार्मिक मामले एक ही
Ⓟ288 अटल नियम पर चलते हैं अर्थात प्रत्येक बात चाहे धार्मिक हो या Ⓟसांसारिक इसी दशा में पूर्ण विश्वास की श्रेणी तक पहुँच सकती है कि जब वस्तुओं की सच्चाई का ज्ञान मात्र काल्पनिक कारणों में सीमित न रहे तथा किसी वस्तु के अस्तित्व के प्रमाण का कारण मात्र इतना ही अपने हाथ में न रहे कि कल्पना उसके अस्तित्व को चाहती है अपितु किसी प्रकार से प्रत्यक्ष में उसके विद्यमान होने का भी ज्ञान हो जाए ताकि बांझ बुद्धि केवल विचारों के भंवर में डूबी न रहे तथा जिस बात का विद्यमान होना उसने काल्पनिक तौर पर मान लिया है उस के अस्तित्व पर निश्चित तौर पर परिचित भी हो जाए और जबकि विश्वास की पूर्णता का ज्ञान वास्तविकता पर निर्भर हुआ तथा स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष घटनाओं की ख़बर देना बुद्धि का कार्य तथा उसका कर्तव्य नहीं अपितु यह इतिहासकारों, संवाददाताओं तथा अनुभवी लोगों का कर्तव्य है जिन्होंने स्वयं अपनी आंखों से उन घटनाओं को देखा हो या उन परिस्थितियों को किसी देखने वाले के मुख से सुना हो। अतः ऐसी स्थिति में अपूर्ण बुद्धि मनुष्य के लिए संवाददाताओं, इतिहासकारों तथा अनुभवी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

घटित होने से पूर्व वर्णन करके ख़ुदा तआला की ओर से विशेष ध्यान रखने
Ⓟ304 पर विश्वास दिलाएं तथा वे वार्तालाप और Ⓟसंवाद जो ख़ुदा तआला की ओर से उनसे होते हैं उनकी सच्चाई तथा ख़ुदा की ओर से होने पर एक निश्चित और विश्वसनीय सबूत प्रस्तुत करें तथा ऐसे मनुष्य जिन्हें ये समस्त पवित्र बरकतें बहुलता के साथ प्रदान होती हैं उनके सन्दर्भ में ख़ुदा की क़ुदरत और अनादि नीति के नियम में यही तय हुआ है कि वे ऐसे लोग होते हैं जिनकी आस्थाएं सच्ची और पवित्र हों और जो सच्चे धर्म पर दृढ़ प्रतिज्ञ हों तथा ख़ुदा तआला से असीम स्तर का मिलाप तथा संसार और उसके

मुकाबला नहीं कर सकता, हालांकि समस्त मनुष्य एक ही ℗प्रकार में सम्मिलित हैं ℗308
इसके अतिरिक्त यह विचार भी उचित नहीं कि प्रत्येक भाषा मनुष्य का ही आविष्कार

शेष हाशिया नं. (11)

लोगों की आवश्यकता पड़ी। यही कारण है कि यद्यपि बात में लाख मुख खोलो परन्तु उसकी जो प्रतिष्ठा और शान अनुभव या इतिहास के सहयोग से प्रकट होती है वह बात एकांकी कल्पना से कदापि प्राप्त नहीं हो सकती तथा जिस स्थान पर किसी चश्मदीद साक्ष्य की आवश्यकता पड़ती है उस स्थान पर काल्पनिक अटकलें तीर चलाने वाला और मात्र मुख से बातें बनाने वाला अनुभवी और परीक्षण का प्रतिनिधि नहीं हो सकता और यदि हो सकता तो फिर इतिहासकारों, संवाददाताओं तथा अनुभवी लोगों की कुछ आवश्यकता न रहती और लोग केवल अपनी कल्पनाओं से संसार की विभिन्न परिस्थितियों जिनका जानना, इतिहास, अनुभव और घटना के ज्ञान पर निर्भर है ज्ञात कर लेते तथा संसार की व्यवस्था का समस्त कार्य मात्र काल्पनिक अटकलों से चला लेते इतिहासकारों, संवाददाताओं और अनुभवी लोगों की तब ही तो आवश्यकता पड़ी कि जब एकांकी बुद्धि तथा अकेली कल्पना से काम न चल सका और केवल कल्पना की नौका में बैठने से संसार के जटिल कार्य डूबते दिखाई दिए तथा केवल बुद्धि के आकाश पर चढ़ने से इस संसार का समस्त कार्य नष्ट होता दिखाई दिया।

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

संसाधनों में असीम त्याग रखते हों। ऐसे लोग दुर्लभ का आदेश रखते हैं तथा उनके स्वभाव को ख़ुदा का प्रकाश और सच्चा धर्म अनिवार्य है और उनकी उत्तम गुणों से परिपूर्ण हस्ती को, जो बरकतों का संग्रह है दुर्भाग्यशाली नुजूमियों और ज्योतिषियों से तुलना करना उच्च स्तर की बदगुमानी तथा नितान्त दुर्भाग्य है क्योंकि वे संसार के निर्ल्लज मुरदे खाने वालों के साथ कुछ भी समानता नहीं ℗रखते अपितु वे सूर्य और चन्द्रमा की भांति आकाशीय ℗305
प्रकाश हैं और ख़ुदा की नीति के अनादि नियम ने इसी उद्देश्य से उन्हें उत्पन्न किया है ताकि संसार में आकर उसे प्रकाशमान करें। यह बात

℗309 है अपितु ℗पूर्ण जांच-पड़ताल से सिद्ध है कि मनुष्य की भाषाओं का आविष्कारक
℗310 और स्रष्टा वही सर्वशक्तिमान ख़ुदा है जिसने ℗अपनी पूर्ण क़ुदरत से मनुष्य को

शेष हाशिया नं. (11)

हालांकि सांसारिक मामले कुछ इतने जटिल नहीं अपितु ऐसे साफ और स्पष्ट हैं कि जैसे हमारी आंख के सामने और दृष्टि के नीचे हैं और जो कठिनाइयां इस अनदेखे संसार की घटनाओं में सामने आती हैं और जिस प्रकार अनदेखी और परोक्ष से परोक्षतर संसार की कल्पना करने के समय में
℗289 अचंभे दृष्टिगोचर होते हैं तथा दृष्टि और विचार के सामने एक ℗ऐसा अपार दरिया दिखाई देता है, यहां उसका हज़ारवां भाग भी नहीं। तो ऐसी स्थिति में यदि हम जान बूझ कर कुमार्ग न अपनाएं तो नि:सन्देह यह इक़रार करने के लिए विवश हैं कि हमें इस संसार की परिस्थितियां और घटनाएं उचित तौर पर ज्ञात करने के लिए उन पर पूर्ण विश्वास करने के उद्देश्य से संसार की तुलना में सैकड़ों गुना अधिक इतिहासकारों, संवाददाताओं और अनुभवी लोगों की आवश्यकता है, जबकि इस संसार का इतिहासकार और संवाददाता ख़ुदा के कलाम के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं हो सकता तथा हमारे विश्वास का जहाज़ संवाददाता के अस्तित्व के अभाव में तबाह हुआ जाता है तथा भ्रमों की तीव्र आंधी ईमान की नौका को विनाश के भंवर में डालती जाती है तो ऐसी स्थिति में कौन बुद्धिमान है कि जो केवल अपूर्ण

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

ध्यानपूर्वक स्मरण रखना चाहिए कि जिस प्रकार ख़ुदा ने शारीरिक रोगों के लिए कुछ औषधियां (दवाएं) उत्पन्न की हैं तथा अच्छी-अच्छी वस्तुएं जैसे विषनाशक इत्यादि भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्टों और रोगों के लिए संसार में उपलब्ध की हैं उन औषधियों में प्रारंभ से यह विशेषता रखी है कि जब कोई रोगी बशर्ते कि उसका रोग असाध्य न हो चुका हो उन औषधियों को परहेज़ इत्यादि की शर्तों को ध्यान में रखते हुए प्रयोग करता है तो उस ख़ुदा की यही आदत जारी है कि उस रोगी को उसकी पात्रता और योग्यतानुसार एक सीमा तक स्वास्थ्य और तन्दुरुस्ती से भाग प्रदान करता है

उत्पन्न किया तथा उसे इसी उद्देश्य से जीभ प्रदान की ताकि वह कलाम करने पर ®समर्थ हो सके। यदि भाषा मनुष्य का आविष्कार होती तो इस स्थिति में नवजात ®311

शेष हाशिया नं. (11)

बुद्धि के मार्ग-दर्शन पर भरोसा करके ऐसे कलाम की आवश्यकता से मुख फेरे जिस पर उस के प्राण की सुरक्षा निर्भर है तथा जिसके लेख केवल काल्पनिक अटकलों में सीमित नहीं अपितु वे बौद्धिक तर्कों के अतिरिक्त एक सच्चे इतिहासकार की हैसियत से परलोक की उचित घटनाओं की सूचना भी देता है तथा चश्मदीद वृत्तान्त वर्णन करता है।

از وحی خدا صبح صداقت بدمیده   چشمے کہ ندید آں صحفِ پاک چہ دیده

अल्लाह तआला की वह्यी के परिणाम स्वरूप सत्य का सवेरा उदय हो गया
जिस दृष्टि ने उस पवित्र धर्म-ग्रन्थ को नहीं देखा तो उसने कुछ नहीं देखा।*

کاخِ دلِ ماشُد زہماں نافہ معطّر   و آں یار بیامد کہ زما بود رمیده

हमारा हृदय उसी कस्तूरी से सुगंधित हो चुका है तथा वह प्रियतम
हमारे पास आ गया जो हम से भागा हुआ था।*

آں دیده کہ نورے نگرفت ست زفرقاں   حقّا کہ ہمہ عمر زکوری نہ رہیده

जिस दृष्टि ने क़ुर्आन से किसी प्रकार का प्रकाश प्राप्त नहीं किया,
ख़ुदा की सौगंध वह जीवनपर्यन्त नेत्रहीनता से मुक्ति नहीं पाएगा।*

آں دل کہ جزازوے گل و گلزار خدا جُست   سوگند تواں خورد کہ بویش نشمیده

जिस हृदय ने उसे छोड़कर कोई ख़ुदाई उद्यान तलाश किया ख़ुदा की
सौगन्ध उसने उसकी सुगन्ध ही नहीं सूंघी।*

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

या पूर्णरूप से स्वास्थ्य प्रदान करता है, इसी प्रकार ख़ुदा तआला ने पवित्रात्मा लोगों में भी अनादिकाल से यह ®विशेषता पैदा कर रखी है कि उनका ®306 ध्यान, दुआ, संगत और साहस का प्रण योग्यता की शर्त पर अध्यात्मिक रोगों की दुआ है और उन के लोग ख़ुदा तआला से वार्तालाप और संवादों तथा अनेकों प्रकार के मुकाशिफ़ात (ख़ुदा के वलियों को ख़ुदा की ओर से अन्तर्ज्ञान होना) के माध्यम से लाभ प्राप्त करते रहते हैं फिर वे समस्त लाभ ख़ुदा की प्रजा के पथ-प्रदर्शन के लिए एक महान प्रभाव दिखाते हैं। अत:

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

Ⓟ312शिशु को शिक्षा की कुछ भी Ⓟआवश्यकता न होती अपितु वयस्क होकर स्वयं ही कोई भाषा आविष्कृत कर लेता, परन्तु बुद्धि की व्यापकता द्वारा स्पष्ट है कि यदि

शेष हाशिया नं. (11)

باخور نِدہم نسبت آں نور کہ بینم صد خور کہ بہ پیرامنِ اُو حلقہ کشیدہ

मैं सूर्य के साथ उस प्रकाश की तुलना नहीं कर सकता क्योंकि मैं
देखता हूँ कि सैकड़ों सूर्य उसके इर्द-गिर्द घेरा बनाए हुए हैं।*

بے دولت و بدبخت کسانیکہ ازاں نور سرتافتہ از نخوت و پیوند بُریدہ

दुर्भाग्यशाली और अभागे हैं वे लोग जो इस प्रकाश से अहंकार के
कारण विमुख तथा समबन्ध विच्छेद किए हुए हैं।*

हां सत्य बात है कि बुद्धि भी व्यर्थ और बेकार नहीं और हमने कब कहा कि अलाभकारी है परन्तु इस व्यापक सत्य को स्वीकार करने से हम किस ओर भाग सकते हैं कि एकांकी बुद्धि और कल्पना के द्वारा हमें वह पूर्ण विश्वास की पूंजी प्राप्त नहीं हो सकती कि जो बुद्धि और इल्हाम के सहयोग से प्राप्त होती है तथा न भूलों, ग़लतियों, अपराधों, पथ भ्रष्टताओं, निरंकुशताओं और अभिमानों से सुरक्षित रह सकते हैं तथा न हमारे स्वयं निर्मित विचार ख़ुदा के शक्तिशाली, प्रतापी तथा तेजस्वी आदेश की भांति काम-भावनाओं पर विजयी हो सकते हैं और न हमारी स्वाभाविक कल्पनाएं तथा नीरस विचार और निर्मूल भ्रम हमें वह आनन्द, प्रसन्नता, सन्तोष और

शेष हाशिए का हाशिया नं. (2)

ख़ुदा वालों (सदात्मा लोगों) का अस्तित्व जनता के लिए एक रहमत होता है और जिस प्रकार इस भौतिक स्थान में ख़ुदा तआला का प्रकृति का नियम यही है कि जो व्यक्ति पानी पीता है वही प्यास की पीड़ा से मुक्ति पाता है और जो व्यक्ति रोटी खाता है वही भूख के कष्ट से रिहाई प्राप्त करता है, ख़ुदा तआला का नियम इसी प्रकार से जारी है कि अध्यात्मिक रोगों के निवारण के लिए नबियों और उनके अनुयायियों को माध्यम बना रखा है उन्हीं की संगत में हृदय सन्तुष्टि प्राप्त करते हैं और मनुष्य होने की गन्दगियां कमी की ओर अग्रसर होती हैं तथा कामभावनाओं के अंधकार दूर होते हैं

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

ⓟकिसी बालक को भाषा न सिखाई जाए तो वह कुछ बोल नहीं सकता और चाहे ⓟ313
तुम उस बालक का यूनान के किसी जंगल ⓟमें पालन-पोषण करो या इंग्लैण्ड के ⓟ314

शेष हाशिया नं. 11

सन्तुष्टि पहुंचा सकते हैं कि जो वास्तविक प्रियतम का मनोरम कलाम पहुंचाता है। तो फिर क्या हम एकांकी और अकेली बुद्धि के अनुयायी हो कर उन समस्त हानियों, क्षतियों, दुर्भाग्यों और बद नसीबियों को ⓟअपने ⓟ290
लिए स्वीकार कर लें तथा सहस्त्रों विपत्तियों का द्वार अपने ऊपर खोल दें। बुद्धिमान मनुष्य किसी प्रकार इस निरर्थक बात को स्वीकार नहीं कर सकता कि जिसने पूर्ण मारिफ़त की प्यास लगा दी है उसने पूर्ण मारिफ़त का भरा प्याला देने से संकोच किया है, और जिसने स्वयं ही हृदयों को अपनी ओर आकर्षित किया है उसने वास्तविक इरफ़ान (ख़ुदा की पहचान) के द्वार बन्द कर रखे हैं तथा ख़ुदा को पहचानने के समस्त पदों को केवल काल्पनिक आवश्यकता पर विचार दौड़ाने में सीमित कर दिया है। क्या ख़ुदा ने मनुष्य को ऐसा ही दुर्भाग्यशाली और बेकार उत्पन्न किया है कि ख़ुदा की पहचान के मार्ग में आत्मा जिस पूर्ण सन्तुष्टि को चाहती है और हृदय तड़पता है तथा जिसकी प्राप्ति का जोश उस के हृदय में भरा हुआ है उसकी प्राप्ति से इस संसार में उसे पूर्णतया निराशा और नैराश्य है, क्या तुम सहस्त्रों लोगों में से कोई भी ऐसी आत्मा नहीं कि जो इस बात को समझे कि जो मारिफ़त के द्वार केवल ख़ुदा के खोलने से खुलते हैं वे मानव शक्तियों से खुल नहीं सकते और जो ख़ुदा का स्वयं कहना है कि मैं मौजूद हूं इससे मनुष्यों के केवल काल्पनिक विचार समान नहीं हो सकते। नि:सन्देह ख़ुदा का अपने अस्तित्व के सन्दर्भ में सूचना देना ऐसा है कि जैसे ख़ुदा को दिखा देता है

शेष हाशिए का हाशिया नं. 2

और ख़ुदा के प्रेम का शौक़ जोश मारता है और आकाशीय बरकतें अपनी झलक दिखाती हैं उनके अभाव में ये बातें कदापि प्राप्त नहीं होतीं। अत: यही बातें उनकी पहचान के विशेष लक्षण और निशानियां हैं। अत: विचार कर और आलस्य न कर।

Ⓟ315द्वीप में छोड़ दो, चाहे तुम उसे भूमध्य रेखा के नीचे ले जाओ Ⓟतब भी वह भाषा Ⓟ316सीखने में शिक्षा का मुहताज होगा और बिना सिखाने के गूंगा रहेगा Ⓟतथा इस

शेष हाशिया नं. (11)

परन्तु मनुष्य का केवल कल्पना स्वरूप कहना ऐसा नहीं है और जबकि ख़ुदा के कलाम से जो उसके विशेष अस्तित्व को सिद्ध करता है हमारे बौद्धिक विचार किसी प्रकार समान नहीं हो सकते तो फिर विश्वास की पूर्णता के लिए क्यों उसके कलाम की आवश्यकता नहीं। क्या इस स्पष्ट अन्तर को देखना तुम्हारे हृदय को तनिक भी जागरूक नहीं करता? क्या हमारे कलाम में कोई भी ऐसी बात नहीं कि जो तुम्हारे हृदय को प्रभावित करे? हे लोगो! इस बात के समझने में कुछ भी कठिनाई नहीं कि मानव बुद्धि परोक्ष की बातों को जानने का साधन नहीं हो सकती और तुम में से कौन इस बात का इन्कारी हो सकता है, मृत्योपरान्त जो कुछ सामने आने वाला है वह परोक्ष की बातों में ही सम्मिलित है। उदाहरणतया तुम विचार करो कि किसी को निश्चित तौर पर क्या ज्ञान है कि मृत्यु के समय मनुष्य का प्राण क्योंकर निकलता है और कहां जाता है और कौन साथ ले जाता है और किस स्थान में ठहराया जाता है तथा फिर उस पर क्या-क्या मामला गुज़रता है। इन समस्त बातों में मानव बुद्धि क्योंकर निश्चित निर्णय कर सके। निश्चित तौर पर तो मनुष्य तब निर्णय कर सकता है कि जब एक-दो बार पहले मर चुका होता और वे मार्ग उसे ज्ञात होते जिन मार्गों से ख़ुदा तक
Ⓟ291 पहुंचा था और वे Ⓟस्थान उसे स्मरण होते जिसमें एक अवधि तक उस का निवास रहा था, परन्तु अब तो समस्त अटकलें हैं यद्यपि सहस्त्र संभावनाएं निकालो अवसर पर जाकर तो किसी बुद्धिमान ने न देखा। इस स्थिति में स्पष्ट है कि ऐसे निराधार विचारों से स्वयं ही संतुष्टि धारण करना एक बच्चों जैसी संतुष्टि है वास्तविक सन्तुष्टि नहीं है। यदि तुम अनुसंधानात्मक दृष्टि से देखो तो स्वयं ही साक्ष्य दो कि मानव बुद्धि तथा उसका विवेक इन समस्त बातों को विश्वास की दृष्टि से कदापि ज्ञात नहीं कर सकता तथा प्रकृति के नियम का कोई पृष्ठ इन बातों को निश्चित तौर पर सिद्ध नहीं

विचार के समर्थन में यह भ्रम प्रस्तुत करना कि हम स्वयं अपनी आंखों से देखते हैं कि भाषाओं में ®हमेशा सैकड़ों प्रकार के परिवर्तन स्वयं होते रहते हैं जिनसे ®317

शेष हाशिया नं. 11

करता। दूर की बातें तो एक ओर रहीं प्रथम पग में ही बुद्धि को आश्चर्य है कि आत्मा (रूह) क्या वस्तु है और क्योंकर प्रवेश करती और क्योंकर निकलती है। प्रत्यक्षतया तो कुछ निकलता दिखाई नहीं देता और न प्रवेश करता दृष्टिगोचर होता है। यदि किसी प्राणी का प्राण निकलने के समय किसी शीशे में भी बन्द करो तब भी कोई वस्तु निकलती दिखाई नहीं देती और यदि बन्द शीशे के अन्दर किसी तत्त्व में कीटाणु पड़ जाएं तो उन आत्माओं के प्रवेश करने का भी कोई मार्ग दिखाई नहीं देता। अंडे में इससे अधिक आश्चर्य है किस मार्ग से आत्मा उड़कर आती है और यदि बच्चा अन्दर ही मर जाए तो किस मार्ग से निकल जाती है। क्या कोई बुद्धिमान इस पहेली को अपनी ही बुद्धि के बल पर खोल सकता है। भ्रम जितने चाहो दौड़ाओ परन्तु एकांकी बुद्धि द्वारा कोई निश्चित और वास्तविक बात तो ज्ञात नहीं होती फिर जबकि प्रथम पग में ही यह हाल है तो फिर यह अपूर्ण बुद्धि आख़िरत के मामलों में निश्चित तौर पर क्या ज्ञात कर लेगी? क्या आप लोगों में इस बात का समझने वाला कोई नहीं रहा? क्या तुम्हारी इस विपत्तिग्रस्त स्थिति पर तुम्हें स्वयं ही दया नहीं आती? जिस स्थिति में मुरदार और सड़े हुए संसार के लिए तुम्हारे पेट में इतनी खलबली मची हुई है कि उसकी प्राप्ति के जोश में सहस्त्रों कोस की जल-थल की यात्रा करते हो तो क्या आख़िरत (प्रलय) का संसार तुम्हारी दृष्टि में कुछ वस्तु नहीं। खेद आप लोगों को क्यों समझ नहीं आता कि आत्मा की प्रत्येक व्याकुलता का उपाय तथा तामसिक वृति के प्रत्येक रोग का इलाज केवल अपनी ही कल्पनाओं और विचारों से संभव नहीं। यह एक प्रकृति का नियम है कि जब मनुष्य किसी वासना की भावना या अध्यात्मिक आपदा में ग्रस्त हो, उदाहरणतया क्रोध-शक्ति आवेग में हो या काम-शक्ति उद्विग्न हो अथवा किसी कष्ट, शोक और संताप में ग्रस्त हो या किसी अन्य स्वार्थपरता या

ⓟ318 भाषाओं में मानव हस्तक्षेप ⓟका प्रमाण मिलता है। अतः स्पष्ट हो कि यह भ्रम
ⓟ319 सरासर धोखा है। परिवर्तन जो भाषाओं को हमेशा लगे हुए हैं ⓟये मनुष्य के इरादे

शेष हाशिया नं. (11)

अध्यात्मिक परिवर्तन से प्रकोप ग्रस्त हो तो वह उन रोगों और उद्देश्यों को कि जो
ⓟ292 उसके हृदय और आत्मा पर प्रभुत्व जमा रहे ⓟहैं केवल अपने प्रवचन और सदुपदेश से दूर नहीं कर सकता अपितु उन भावनाओं को कम करने के लिए एक ऐसे धर्मोपदेशक का मुहताज होता है कि जो श्रोता की दृष्टि में प्रतिष्ठित, महान और अपने कथन में सच्चा, अपने ज्ञान में पूर्ण तथा अपने पदों में वफ़ादार हो तथा इनके साथ-साथ इन बातों को पूर्ण करने की शक्ति भी रखता हो जिनसे श्रोता के हृदय में भय या आशा या सन्तोष उत्पन्न होता है क्योंकि यह बात नितान्त व्यापक और स्पष्ट है कि प्रायः मनुष्य की यह स्थिति होती है कि यद्यपि वह एक पाप को वास्तव में एक पाप समझता है अथवा एक बात दृढ़ता के विपरीत तथा धैर्य को दृढ़ता के विपरीत भी जानता है परन्तु लापरवाही का ऐसा पर्दा अथवा अचानक शोक का आघात उसके हृदय पर आ पड़ता है कि वह पर्दा तब ही उठता है कि जब दूसरा व्यक्ति जिसकी श्रेष्ठता, महानता और सच्चाई उसके हृदय में आसीन है उसे समझाता है तथा प्रेरणा या भय, या सन्तोष और सांत्वना अर्थात यथाअवसर उसे देता है तथा उसका कलाम प्रभाव में कुछ ऐसा अद्भुत होता है कि यद्यपि वह उन्हीं तर्कों को प्रस्तुत करे कि जो श्रोता को ज्ञात हैं, परन्तु वह अपाहिज को कटिबद्ध (तत्पर), सुस्त को चुस्त, निर्बल को सबल तथा व्याकुल को धैर्ययुक्त कर देता है और यह समस्त बातें ऐसी हैं जिनमें दक्ष मनुष्य स्वयं इक़रार करता है कि वह अपनी तामसिक वृत्ति के प्रभुत्व और व्यग्र होने की परिस्थितियों में उनका मुहताज है अपितु जिनकी रूहें नितान्त सूक्ष्म और सत्याभिलाषी और जिनके हृदय पापों की अपवित्रता और मलिनता से शीघ्र विमुख हो जाते हैं वे अपनी मनोवृत्ति के प्रभुत्व की अवस्थाओं में स्वयं रोगी की भांति उस उपचार के इच्छुक होते हैं ताकि किसी ख़ुदा के मनुष्य के मुख से प्रेरणा या भय या धैर्य और सांत्वना के शब्द सुन कर अपने आन्तरिक संकोच से मुक्ति प्राप्त करें। अतः निःसन्देह मनुष्य के स्वभाव में यह विशेषता है कि यद्यपि वह कैसा ही प्रकाण्ड विद्वान क्यों न हो परन्तु दुर्घटनाओं और काम-भावनाओं के समय

और अधिकार से प्रकटन में नहीं आते और न यह कुछ नियम निर्धारित ®हो सकता®320 है कि स्वयं मनुष्य का स्वभाव किन्हीं विशेष समयों में भाषाओं में तब्दीली और

शेष हाशिया नं. (11)

जैसा दूसरों की बातों से प्रभावित होता है केवल अपनी बातों से कदापि नहीं। उदाहरणतया जिस पर कोई घटना होती है या कोई मृत्यु का शोक आ जाता है वह स्वयं में इस बात से अपरिचित नहीं होता कि संसार ख़ुशी और अमन का स्थान नहीं, न हमेशा रहने का स्थान है, परन्तु आघात के समय उस निर्बल मनुष्य पर आतुरता और बेचैनी प्रभुत्व जमा लेती है तथा हृदय हाथ से निकलता जाता है, ऐसे समय में यदि कोई ऐसा व्यक्ति जो उसकी दृष्टि में नितान्त पवित्र, पूर्ण और महान है, उसे समझा जाता है कि धैर्य धारण कर, धैर्य धारण करने वालों के ख़ुदा के दरबार में बड़े-बड़े प्रतिफल हैं और यह संसार हमेशा रहने का स्थान नहीं। अतः ®यद्यपि यह बात उसे®293 पहले भी ज्ञात थी परन्तु उसके मुख से सुनकर एक विचित्र प्रकार का प्रभाव होता है कि जो गिरते हुए को थाम लेता है। सारांश यह कि हर समय और हर स्थान में अपने ही स्वयं निर्मित विचार अपने हृदय पर प्रभाव नहीं डाल सकते अपितु प्रायः काम-भावनाएं या अध्यात्मिक कष्टों से बुद्धि ऐसी दब जाती है कि मनुष्य में सोचने समझने की शक्ति ही नहीं रहती तथा उस समय वह स्वयं को इस स्थिति में पाता है कि उसके लिए किसी अन्य की ओर से प्रेरणा या भय या धैर्य और सांत्वना की बातें जारी हों। अतः इन समस्त बातों पर दृष्टि डालने से दक्ष मनुष्य इस परिणाम तक पहुंच सकता है कि ख़ुदा ने जो उस के स्वभाव को ऐसा बनाया है। यही स्वभाव की प्रकृति इस बात को सिद्ध करती है कि उस नीतिवान ख़ुदा ने निर्बल आधार वाले मनुष्य को अपनी ही राय और कल्पना पर छोड़ना नहीं चाहा अपितु जिस प्रकार के धर्मोपदेशकों और वक्ताओं से उस की संतुष्टि हो सकती है तथा उसकी काम-भावनाएं दब सकती हैं तथा उसकी अध्यात्मिक बेचैनियां दूर हो सकती हैं, उसके लिए वे समस्त वक्ता उत्पन्न किए हैं जिस कलाम से उसके रोग और बीमारियां दूर हो सकती हैं वह कलाम उसके लिए उपलब्ध किया है। इल्हाम की आवश्यकता का यह सबूत किसी अन्य

℗321 परिवर्तन करता रहता ℗है अपितु गहरी दृष्टि से ज्ञात होगा कि ये परिवर्तन भी उस
℗322 समस्त कारणों के कारण (ख़ुदा) के इरादे और अधिकार से ℗घटित होते रहते हैं,

शेष हाशिया नं. 11

प्रकार से नहीं अपितु ख़ुदा का ही प्रकृति का नियम इसे सिद्ध करता है। क्या यह सत्य नहीं कि संसार में करोड़ों लोग कि जो कष्ट में, पाप में, लापरवाही में ग्रस्त होते हैं वे हमेशा दूसरे धर्मोपदेशक और नसीहत करने वाले से प्रभावित हुआ करते हैं तथा प्रत्येक स्थान पर अपना ही ज्ञान और अपने ही विचार कदापि पर्याप्त नहीं होते और साथ ही यह बात भी है कि वक्ता की जितनी व्यक्तिगत श्रेष्ठता और प्रतिष्ठा श्रोता की दृष्टि में प्रमाणित हो उसका कलाम उतनी ही सांत्वना प्रदान करता है, उसी व्यक्ति का वादा हृदय की संतुष्टि का कारण होता है कि जो श्रोता की दृष्टि में वादे का सच्चा तथा आश्वासन को निभाने की शक्ति भी रखता हो। इस स्थिति में इस स्पष्ट बात में कौन आपत्ति कर सकता है कि प्रलय और महसूसात (महसूस की जाने वाली वस्तुएं) से परे मामलों में हृदय की सांत्वना, ढारस और धैर्य का श्रेष्ठ पद कि जो काम-भावनाओं और अध्यात्मिक कष्टों को दूर करने वाला हो केवल ख़ुदा के कलाम से प्राप्त हो सकता है तथा प्रकृति के नियम पर दृष्टि डालने से सांत्वना और ढारस का इससे उत्तम अन्य कोई कारण नहीं ठहराया जा सकता। जब कोई व्यक्ति ख़ुदा के कलाम पर पूरा-पूरा ईमान लाता है तथा मध्य में कोई प्रत्यक्ष या आन्तरिक विमुखता नहीं होती तो ख़ुदा का कलाम उसे बड़े-बड़े भंवरों से बचा लेता है तथा तीव्र से तीव्र
℗294 काम-भावनाओं का मुक़ाबला करता है और बड़ी-बड़ी ℗भयानक घटनाओं में धैर्य प्रदान करता है। जब दक्ष व्यक्ति किसी कठिनाई अथवा काम-भावना के समय ख़ुदा के कलाम में वचन और दण्ड का वादा पाता है अथवा कोई दूसरा उसे समझाता है कि ख़ुदा ने ऐसा फ़रमाया है तो अचानक उस से ऐसा प्रभावित हो जाता है कि तौबा पर तौबा (क्षमा-याचना) करता है। मनुष्य को ख़ुदा की ओर से सांत्वना पाने की नितान्त आवश्यकताएं पड़ती हैं, कभी-कभी वह ऐसी सख़्त मुसीबत में फंस जाता है कि यदि ख़ुदा का

जैसे समस्त आकाशीय और पार्थिव परिवर्तन उसके विशेष इरादे से प्रकटित ⓅहैंⓅ323 ।
यह बात कभी सिद्ध नहीं हो सकती कि कभी मनुष्यों ने एकमत होकर या पृथक-

शेष हाशिया नं. (11)

कलाम न आया होता और उसे अपनी इस शुभसूचना से सूचित न करता

وَلَنَبۡلُوَنَّكُمۡ بِشَیۡءٍ مِّنَ الۡخَوۡفِ وَالۡجُوۡعِ وَنَقۡصٍ مِّنَ الۡاَمۡوَالِ وَالۡاَنۡفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِیۡنَ - الَّذِیۡنَ اِذَاۤ اَصَابَتۡهُمۡ مُّصِیۡبَةٌ ۙ قَالُوۡۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیۡهِ رٰجِعُوۡنَ - اُولٰٓئِکَ عَلَیۡهِمۡ صَلَوٰتٌ مِّنۡ رَّبِّهِمۡ وَرَحۡمَةٌ ۟ وَاُولٰٓئِکَ هُمُ الۡمُهۡتَدُوۡنَ - ①

तो वह हतोत्साहित होकर कदाचित ख़ुदा के अस्तित्व से ही इन्कार करता और या निराशा की स्थिति में ख़ुदा से पूर्ण रूप से संबंध विच्छेद कर लेता और या चिन्ताओं और संतापों के आघात से तबाह हो जाता। इसी प्रकार काम-भावनाएं ऐसी हैं कि जिनकी तीव्रता तोड़ने के लिए ख़ुदा के कलाम की आवश्यकता थी तथा पग-पग पर मनुष्य को वे बातें समझ आती हैं जिनका निवारण केवल ख़ुदा का कलाम कर सकता है। जब मनुष्य ख़ुदा की ओर ध्यान देना चाहता है तो सैकड़ों बाधाएं उसे इस ध्यान से रोकती हैं, कभी इस संसार का आनन्द याद आता है, कभी सहधर्मियों की संगत दामन खींचती है, कभी उस मार्ग के कष्ट भयभीत करते हैं, कभी पुरानी आदतें और सुदृढ़ कौशल मार्ग का पत्थर हो जाते हैं, कभी लज्जा, कभी प्रतिष्ठा, कभी सत्ता, कभी शासन इस मार्ग से रोकना चाहता है और कभी ये समस्त एक सेना की भांति एक स्थान पर एकत्र होकर अपनी ओर आकर्षित करते हैं तथा अपने नक़द लाभों की विशेषताएं प्रस्तुत करते हैं। अतः उनकी एकता और भीड़ में एक ऐसी उत्तेजना उत्पन्न हो जाती है कि स्वयं निर्मित विचार उनका बचाव नहीं कर सकते अपितु उनके मुकाबले पर एक पल भी ठहर नहीं सकते। ऐसे युद्ध के अवसर पर ख़ुदा के कलाम की शक्तिशाली बन्दूकों की आवश्यकता है ताकि प्रतिद्वन्द्वियों की पंक्ति को एक ही फायर में उड़ा दें। क्या कोई कार्य एक पक्षीय भी हो सकता है। अतः यह क्योंकर संभव है कि ख़ुदा एक पत्थर की तरह हमेशा ख़ामोश रहे

① अलबक़रह : 156 से 158

®324पृथक उन समस्त ®भाषाओं का आविष्कार किया था जो संसार में बोली जाती हैं ®325और यदि कोई यह भ्रम प्रस्तुत करे कि जिस प्रकार ख़ुदा तआला स्वाभाविक ®तौर

शेष हाशिया नं. (11)

और बन्दा वफ़ादारी, निष्ठा और धैर्य में स्वयं बढ़ता जाए तथा यही एक
®295 विचार कि आकाश और पृथ्वी का यद्यपि कोई स्रष्टा होगा उसे ®हमेशा की शक्ति देकर प्रेम के मैदानों में आगे से आगे खींचता चला जाए। काल्पनिक बातें वास्तविक बातों की प्रतिनिधि कदापि नहीं हो सकतीं और न कभी हुईं। उदाहरणतया एक निर्धन कर्ज़दार ने किसी ईमानदार धनवान से आश्वासन पाया है कि यथा समय मैं तेरा कुल क़र्ज़ा अदा कर दूंगा तथा दूसरा एक और निर्धन क़र्ज़दार है उसे किसी ने अपने मुख से आश्वासन नहीं दिया वह अपने ही विचार दौड़ाता है कि कदाचित मुझे भी समय पर रुपया मिल जाए। क्या सांत्वना पाने में ये दोनों समान हो सकते हैं? कदापि नहीं, कदापि नहीं। ये सब प्रकृति के नियम ही हैं। प्रकृति के नियमों से कौन सी ख़ुदाई सच्चाई बाहर है, परन्तु खेद उन लोगों पर जो प्रकृति के नियमों के पालन का दावा करते-करते फिर उन्हें तोड़ कर दूसरी ओर भाग गए और जो कुछ कहा था उसके विपरीत कार्य में लाए। हे ब्रह्म समाज वालो! यदि तुम्हें धार्मिक मामलों में सहानुभूति की दृष्टि नहीं, यदि तुम्हें आख़िरत (प्रलय) की कुछ भी परवाह नहीं तो क्या अभी तक सांसारिक मामलों में तुम पर सिद्ध नहीं हो चुका कि बुद्धि ने अकेले ही तुम्हारे संसार का कोई कार्य कभी किनारे तक नहीं पहुँचाया, क्या तुम्हें इस सच्चाई के स्वीकार करने में अभी किसी बहाने की गुंजाइश है कि बुद्धि को कभी यह योग्यता प्राप्त नहीं हुई कि किसी दूसरे सहयोगी के सहयोग के बिना स्वयं किसी कार्य को उचित और पूर्ण रूप से सम्पन्न कर सके। सच कहो क्या तुम्हें अभी तक इस बात का परीक्षण नहीं हुआ कि जो कार्य मात्र बुद्धि पर पड़ा वही संदिग्ध, सन्देहात्मक और अपूर्ण रहा और जब तक घटनाओं की रूप-रेखा किसी संवाददाता के द्वारा तैयार होकर न आए तब तक बुद्धि और अनुमान का समस्त कार्य अधूरा और अपूर्ण रहा। अत: न्याय से कहो कि क्या तुम्हें आज

पर भाषाओं में हमेशा तब्दीली और परिवर्तन करता रहता है क्यों उचित नहीं कि प्रारंभ में भी उसी ®प्रकार से भाषाएं आविष्कृत हो गई हों तथा कोई विशेष इल्हाम®326

शेष हाशिया नं. (11)

तक इस बात का ज्ञान नहीं कि बुद्धिमान लोगों का हमेशा से यही आचरण है कि वे अपने काल्पनिक कारणों को कभी अनुभव से दृढ़ता दे लेते हैं, कभी इतिहास से और कभी घटना स्थल दर्शाने वाले नक्शों से, कभी खत-पत्रों से और कभी अपनी ही ज्ञानेन्द्रियों देखने, सुनने, सूंघने और स्पर्श करने की शक्ति इत्यादि की साक्ष्य से। अत: अब तुम स्वयं ही विचार करो तथा अपनी दृष्टि में स्वयं ही परख लो कि जिस परिस्थिति में सांसारिक मामलों के लिए कि जो मौजूद और ®महसूस हैं अन्य मित्रों की आवश्यकता पड़े®296 तो फिर उन मामलों के लिए जो इस संसार से पीछे से पीछे और परोक्ष से परोक्ष और गुप्त से गुप्ततम हैं कितनी अधिक आवश्यकता है और जिस स्थिति में एकांकी बुद्धि संसार के सरल और आसान मामलों के लिए भी पर्याप्त नहीं तो फिर प्रलय (आख़िरत) के मामले ज्ञात करने में कि जो अत्यन्त सूक्ष्म और बारीक हैं क्योंकर पर्याप्त हो सकती है और जब कि तुम रहन-सहन के अस्थायी और अधम कार्यों में जिन की लाभ-हानि एक गुज़र जाने वाली वस्तु है मात्र अनुमान, कल्पना और बुद्धि को सन्तोषजनक नहीं समझते तो फिर आप लोग आख़िरत के मामलों में जिनके लक्षण हमेशा रहने वाले तथा जिनके ख़तरे असाध्य हैं मात्र इसी अपूर्ण बुद्धि पर भरोसा करके क्योंकर बैठ रहे हैं, क्या यह इस बात का उत्तम सबूत नहीं कि आप लोगों ने आख़िरत की चिन्ता को पीठ पीछे डाल रखा है और मुरदार और सड़ा हुआ संसार बड़ा आनंददायक और भला ज्ञात हो रहा है अन्यथा क्योंकर माना जाए कि ख़ुदा ने तुम्हें इतनी भी समझ नहीं दी कि जिस स्थिति में उस स्वच्छन्द दयालु ने संसार के अस्थायी मामलों में मानव बुद्धि को अकेला नहीं छोड़ा अपितु कई सहयोगियों द्वारा दृढ़ता प्रदान की है। अत: आख़िरत के घर की सूक्ष्म और बारीक जटिल बातों में जो अमर और अनश्वर हैं उसकी महान कृपा की अजर और अमर विशेषता क्यों समाप्त हो गई कि यहां अजनबी और

Ⓟ327 न हुआ हो। तो इसका उत्तर यह है कि प्रारंभिक युग Ⓟके लिए प्रकृति का सामान्य नियम यही है कि ख़ुदा ने प्रत्येक वस्तु को अपनी शक्ति मात्र से उत्पन्न किया था।

शेष हाशिया नं. (11)

परेशान बुद्धि को पूर्ण सहयोगी के सहयोग से दृढ़ता प्रदान न की और उसे ऐसा साथी नहीं दिया जो इस देश के पूर्ण और आंशिक मामलों से व्यक्तिगत रूप से ज्ञान रखता और चश्मदीद साक्षी की भांति सूचना दे सकता ताकि अनुमान और अनुभव दोनों मिलकर भिन्न-भिन्न प्रकार की बरकतों का झरना ठहरते और सत्याभिलाषी को इस पूर्ण मारिफ़त के पद तक पहुंचा सकते जिसकी प्राप्ति का जोश उसके स्वभाव में डाला गया है। न मालूम आप लोगों को किसने बहका दिया कि यह समझ रहे हैं कि जैसे बुद्धि और इल्हाम परस्पर कुछ विपरीत हैं जिसके कारण वे परस्पर एक स्थान पर एकत्र नहीं हो सकते। ख़ुदा तुम्हारी आंखें खोले और तुम्हारे हृदयों के पर्दे उठा दे। क्या तुम इस सरल बात को समझ नहीं सकते कि जिस स्थिति में इल्हाम के कारण बुद्धि अपनी पूर्णता को पहुंचती है, अपनी गलतियों पर सतर्क होती है,
Ⓟ297 अपने गन्तव्य का विशेष मार्ग ज्ञात कर लेती है, Ⓟभटकने और हैरानी-परेशानी से बच जाती है, व्यर्थ परिश्रमों, बेकार प्रयासों और निरर्थक प्रयत्नों से मुक्ति पाती है, अपने संदिग्ध और संदेहात्मिक ज्ञान को निश्चित और विश्वसनीय कर लेती है, मात्र अटकलों से आगे बढ़कर वास्तविक अस्तित्व से अवगत हो जाती है, सन्तोष धारण करती है, आराम और इत्मीनान पाती है तो फिर इस स्थिति में इल्हाम उसका उपकारी, सहायक और अभिभावक हुआ या उसका शत्रु और विरोधी और हानिकारक हुआ। यह किस प्रकार का द्वेष और कैसा अंधापन है कि जो एक महान अभिभावक को स्पष्ट मार्ग-दर्शन और मार्ग दिखाने का कार्य दे रहा है, मार्ग का लुटेरा और बाधक समझा जाता है तथा जो गढ़े से बाहर निकालता है उसे गढ़े के अन्दर ढ़केलने वाला समझ रहे हैं। समस्त संसार जानता है और समस्त आंखों वाले देख रहे हैं तथा विचार करने वाली तबियतें अवलोकन कर रही हैं कि संसार में बुद्धि की विशेषता और श्रेष्ठता को मानने वाले ऐसे लाखों गुज़रे

℗आकाश, पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा तथा स्वयं मनुष्य के स्वभाव पर दृष्टि डालने से ज्ञात ℗328
होगा कि वह ℗प्रारंभिक युग मात्र शक्ति प्रदर्शन का युग था जिसमें संसाधनों की ℗329

शेष हाशिया नं. (11)

हैं तथा अब भी हैं जो बावजूद इसके कि बुद्धि के पैग़म्बर पर ईमान लाए और बुद्धिमान कहलाए तथा बुद्धि को उत्तम वस्तु और अपना पथ-प्रदर्शक समझते थे परन्तु इसके बावजूद ख़ुदा के अस्तित्व से इन्कारी ही रहे और इन्कारी ही मरे, परन्तु ऐसा मनुष्य कोई एक तो दिखाओ जो इल्हाम लाने के पश्चात भी ख़ुदा के अस्तित्व से इन्कारी रहा। अत: जिस स्थिति में ख़ुदा पर दृढ़ ईमान लाने के लिए इल्हाम ही शर्त है तो स्पष्ट है कि जिस स्थान पर शर्त का अभाव होगा उस स्थान पर मशरूत (शर्त किया गया) का भी अभाव होगा। अत: अब असंदिग्ध तौर पर सिद्ध है कि जो लोग इल्हाम के इन्कारी हो बैठे हैं उन्होंने जान-बूझकर बेईमानी के मार्गों से प्रेम किया है तथा नास्तिक धर्म के प्रचार-प्रसार को न्याय-संगत समझा है, ये मूर्ख नहीं सोचते कि जो अस्तित्व परोक्ष से परोक्ष न देखने में आ सकता है, न सूंघने में, न टटोलने में, यदि श्रवण शक्ति भी उस पूर्ण अस्तित्व के कलाम से वंचित और अज्ञान हो तो फिर इस दुर्लभ अस्तित्व पर क्योंकर विश्वास आए और यदि रचनाओं के अवलोकन से रचयिता का हृदय में कुछ विचार भी आया परन्तु जब सत्याभिलाषी ने जीवन-पर्यन्त प्रयास करके उस रचयिता (स्रष्टा) को न अपनी आंखों से देखा, न कभी उसके कलाम से परिचित हुआ न कभी उसके सन्दर्भ में कभी कोई ऐसा निशान पाया कि जो जीते-जागते
में होना ℗चाहिए तो क्या अन्तत: उसे यह भ्रम नहीं गुज़रेगा कि कदाचित ℗298
मेरे विचार ने ऐसे रचयिता (स्रष्टा) को मानने में भूल की हो और कदाचित नास्तिक और भौतिकवादी ही सच्चे हों जो संसार के कुछ भागों को कुछ का स्रष्टा मानते हैं तथा किसी अन्य स्रष्टा की आवश्यकता नहीं समझते। मैं जानता हूं कि जब कोरा बुद्धिजीवी इस अध्याय में अपने विचार को आगे से आगे दौड़ाएगा तो उपर्युक्त भ्रम उसे अवश्य पकड़ लेगा, क्योंकि संभव नहीं कि वह ख़ुदा के निजी निशान से बावजूद अत्यधिक जिज्ञासा और

℗330 मात्रा की लेशमात्र मिलौनी न थी तथा उस ℗युग में जो कुछ ख़ुदा ने उत्पन्न किया
℗331 वह ऐसी उच्चतम क़ुदरत से किया जिसमें मानव बुद्धि स्तब्ध है। ℗पृथ्वी, आकाश,

शेष हाशिया नं. (11)

दौड़-धूप के असफल रह कर फिर ऐसे भ्रमों से बच जाए। कारण यह कि मनुष्य में यह स्वाभाविक और नैसर्गिक आदत है कि जिस वस्तु के अस्तित्व को काल्पनिक अनुकूलता से अनिवार्य और आवश्यक समझे और फिर बावजूद नितान्त खोज और जिज्ञासा के बाह्य तौर पर उस वस्तु का कुछ पता न लगे तो उसे अपनी कल्पना के औचित्य में सन्देह अपितु इन्कार उत्पन्न हो जाता है और उस कल्पना के विपरीत और विरुद्ध हृदय में सैकड़ों आशंकाएं जन्म ले लेती हैं तथा हम-तुम अनेकों बार गुप्त मामले के सन्दर्भ में अनुमान लगाया करते हैं कि इस प्रकार होगा या उस प्रकार होगा और जब बात खुलती है तो वह और ही होती है। इन्हीं नित्यप्रति के अनुभवों ने मनुष्य को यह सीख दी है कि अकेले अनुमानों पर सन्तोष करके बैठना नितान्त मूर्खता है। अत: जब तक अनुमानित अटकलों के साथ वास्तविकता का पता न लगे तब तक बुद्धि का समस्त प्रदर्शन एक मृग-तृष्णा है इस से अधिक नहीं, जिसका अन्तिम परिणाम नास्तिकता है। अत: यदि नास्तिक बनने की इच्छा है तो तुम्हारी ख़ुशी अन्यथा भ्रान्तियों की तीव्र बाढ़ से कि जो तुम से उत्तम सहस्त्रों बुद्धिमानों को अपनी एक ही लहर से पाताल में ले गई है केवल उसी स्थिति में तुम सुरक्षित रह सकते हो कि जब सुदृढ़ कड़े अर्थात् वास्तविक इल्हाम को दृढ़ता से पकड़ लो अन्यथा यह तो कदापि नहीं होगा कि तुम मात्र बौद्धिक विचारों में उन्नति करते-करते अन्तत: ख़ुदा को किसी स्थान पर बैठा हुआ देख लोगे अपितु तुम्हारे विचारों की उन्नति का यदि कुछ परिणाम होगा तो अन्त में यही परिणाम होगा कि तुम ख़ुदा को बेनिशान तथा जीवितों के लक्षणों से रिक्त देखकर तथा उसका पता लगाने से असमर्थ और असहाय हो कर अपने नास्तिक बन्धुओं से हाथ
℗299 जा मिलाओगे। इस से ℗धोखा मत खाना कि यदि मात्र बुद्धि का परिणाम नास्तिकता है तो अब तक ब्रह्म समाज वाले किसी सीमा तक क्यों ख़ुदा के

सूर्य और चन्द्रमा इत्यादि ग्रहों पर दृष्टि डालकर देखो कि इतना बड़ा कार्य क्योंकर संसाधनों, भवन निर्माणकारों और श्रमिकों की सहायता के अभाव में मात्र इरादे से

शेष हाशिया नं. (11)

इक़रारी हैं और क्यों पूर्णतया इन्कारी नहीं हो जाते। इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि उन्हें अभी तक अपने विचारों में पूर्ण रूप से उन्नति प्राप्त नहीं हुई और जिस अस्तित्व को काल्पनिक तौर पर मान लिया है अभी तक उसी काल्पनिक विचार पर ठहरे हुए हैं और इस समय तक आगे कदम बढ़ाकर इस खोज में नहीं पड़े कि इस काल्पनिक अस्तित्व का बाह्य तौर पर कहीं पता लगाएं परन्तु यह बात स्मरण रखो कि वे ज्यों ही अपने विचारों में उन्नति करके कुछ आगे क़दम बढ़ाएंगे तो इस अग्रसर होने का प्रथम प्रभाव यही होगा कि उनके हृदयों में यह सन्देह उत्पन्न हो जाएगा कि जिस हस्ती को हम जीवित तथा अन्य को जीवित रखने वाला और शाश्वत स्वीकार कर रहे हैं वह कहां, किधर और किस ओर है यद्यपि वह वास्तविक तौर पर बाह्य अस्तित्व के साथ विद्यमान है तो फिर उसका पता क्यों नहीं मिलता और क्यों वह खोज करने वालों पर अपनी हस्ती को प्रकट नहीं करता। इस सन्देह के उत्पन्न होने से या तो अन्ततः वास्तविक इल्हाम पर ईमान लाएंगे और अपने हृदय को सन्देहों के भंवर से छुड़ा लेंगे और यदि यह नहीं तो फिर थोड़ी विचारों की उन्नति होने दीजिए फिर देखना कि पक्के नास्तिक हैं या नहीं। उन्हीं के लाखों बन्धु जो एकांकी बुद्धि के पाबन्द थे, जब उनके विचारों ने उन्नति की तो अन्ततः नेचरी और नास्तिक हो कर मरे। ये कुछ अनोखे बुद्धिजीवी नहीं हैं कि जो विचारों में उन्नति करके नास्तिक नहीं बनेंगे अपितु ख़ुदा के निवास के शीश महल उन्हें दिखाई दे जाएंगे। निःसन्देह विचारों की उन्नति से पूर्व जो प्रभाव बुद्धिमानों पर पड़ा वही प्रभाव किसी दिन उनके लिए भी आने वाला है, विलम्ब मात्र इतना है कि अभी वे ख़ुदा की ℗पूर्ण खोज और तलाश में बहुत पीछे हैं और अभी तक संसार ही प्रिय ℗300 और मधुर ज्ञात होता है और दिन-रात उसी की दीवानगी है और उसी के लिए समुद्र चीरते हुए सुदूर देशों में चले जाते हैं और अभी तक उन्हें

℗332 केवल एक आदेश द्वारा सम्पन्न कर दिया, फिर जिस अवस्था ℗में उस प्रारंभिक युग में ख़ुदा का समस्त कार्य क़ुदरती पाया जाता है कि जो स्वभाव के सम्मिश्रण और

शेष हाशिया नं. 11

आख़िरत (प्रलय) के देश का ध्यान ही नहीं और न उस देश के स्वामी का कुछ ध्यान है परन्तु ख़ुदा ने चाहा तो जब वे दिन आएंगे कि वे मात्र बुद्धि के द्वारा इस बात का निर्णय करना चाहेंगे कि यदि ख़ुदा मौजूद है तो कहां है और क्यों उसका अस्तित्व समस्त मौजूद वस्तुओं की तरह महसूस नहीं, तो फिर ऐसा निर्णय होगा कि या तो उस पुनीत हस्ती के कलाम पर ईमान लाना पड़ेगा और या यह काल्पनिक कथन भी हाथ से छोड़ना होगा कि रचनाओं के लिए एक रचयिता होना चाहिए। दूसरा कारण जिसकी दृढ़ता से मात्र बुद्धिजीवी शीघ्र ही नास्तिक बनने से रुक जाते हैं। ख़ुदा के इल्हाम की बरकतें और अल्लाह की वह्यी के सूर्य की किरणें हैं जिन्होंने ख़ुदा की हस्ती को विश्व-विख्यात कर दिया है और जिनकी निरन्तर वर्षाओं ने ख़ुदा की हस्ती के इक़रार को लाखों ख़ुदा से भयभीत आत्माओं में दृढ़तापूर्वक जमा दिया है और करोड़ों हृदयों पर एक महान प्रभाव डाल रखा है। अत: चूंकि उसी की सुदृढ़ और अनादि साक्ष्यों की उच्च स्वरों से प्रत्येक मनुष्य की श्रवण-शक्ति भर गई है और सुनने की प्रत्येक पेशी की सम्पूर्ण बुनियाद में वे मधुर स्वर ऐसे समा गए हैं कि एक मूर्ख और अनपढ़ व्यक्ति कि जो बुद्धि के नाम से भी परिचित नहीं और न यह जानता है कि तर्क क्या वस्तु हैं। यदि ख़ुदा की हस्ती के सन्दर्भ में प्रश्न किया जाए कि क्या वह मौजूद है या नहीं तो ऐसे प्रश्नकर्ता को अत्यन्त मूर्ख जानता है और ख़ुदा की हस्ती
℗301 पर ऐसा दृढ़ विश्वास रखता है कि यदि एकांकी बुद्धिजीवी एक ओर ℗रखे जाएं और दूसरी ओर उसे रखा जाए तो उसके विश्वास का पलड़ा भारी हो और मज़ेदार बात यह है कि यदि बुद्धिजीवियों और दार्शनिकों की भांति उसे एक तर्क भी याद नहीं होता अपितु उसे उसकी तनिक भी ख़बर नहीं होती कि युक्ति, तर्क, वाद-विवाद और अनुमान किसे कहते हैं। अत: इन्हीं बरकतों के उपलक्ष्य ब्रह्म-समाज वाले भी बावजूद अत्यन्त कुमार्ग धारण

कारण से उसने अपनी पूर्ण शक्ति का प्रमाण दे दिया है फिर भाषाओं के बारे में उसकी शक्ति को क्यों अपूर्ण समझा जाए पूर्णतया पवित्र और केवल ख़ुदाई इरादे

शेष हाशिया नं. (11)

करने के अब तक किसी सीमा तक ख़ुदा की हस्ती को मानते हैं तथा ख़ुदा के मौजूद होने की अत्यधिक प्रसिद्धि ने उनके विचारों को भी भटकने से रोक रखा है। अत: यद्यपि कोई अपनी आन्तरिक दुष्टता से ख़ुदा के इल्हाम का आभारी न हो, परन्तु वास्तव में उसी के दृढ़ हाथ और बलिष्ठ बाज़ू से विश्वास और निष्ठा की नौका चल रही है और वही ख़ुदा को जानने के दरिया का कर्णधार है। यदि नास्तिक उसकी दानशीलता के लक्षणों से अपरिचित रहे हैं तो यह उसका दोष नहीं अपितु नास्तिक उस व्यक्ति की भांति हैं जो अपने स्वभाव से अंधा और बहरा हो या उस अंग की भांति हैं जो दूषित और कोढ़ग्रस्त हो गया हो।

यहां यह भी स्मरण रहे कि अकेली बुद्धि को मानने वाले जैसे ज्ञान, मारिफ़त और विश्वास में अपूर्ण हैं वैसा ही व्यवहार, वफ़ादारी और सत्य पर चलने में भी अपूर्ण और असमर्थ हैं तथा उन की जमाअत ने कोई ऐसा उदाहरण स्थापित नहीं किया जिस से यह सबूत मिल सके कि वे भी उन करोड़ों पुनीत लोगों की तरह ख़ुदा के वफ़ादार और मान्य बन्दे हैं कि जिनकी बरकतें संसार में ऐसी प्रकट हुईं कि उनके सदुपदेश, नसीहत, दुआ, ध्यान तथा संगत के प्रभाव से सैकड़ों लोग पवित्र आचरण और ख़ुदा वाले होकर अपने स्वामी (ख़ुदा) की ओर ऐसे झुक गए कि संसार और संसार की वस्तुओं की कुछ परवाह न करते हुए इस संसार के Ⓟआनन्दों, Ⓟ302 आरामों, प्रसन्नताओं, प्रसिद्धियों, अभिमानों, मालों और मुल्कों (देशों) से पूर्ण रूप से दृष्टि हटाते हुए इस सत्य के मार्ग पर क़दम रखा जिस पर चलने से उनमें से सैकड़ों के प्राण नष्ट हुए, सहस्त्रों सर काटे गए, लाखों पुनीत लोगों के रक्त से पृथ्वी लाल हो गई, परन्तु बावजूद इन समस्त आपदाओं के उन्होंने ऐसी निष्ठा प्रदर्शित की कि एक आसक्त प्रेमी की भांति पैरों में बेड़ियां होते हुए भी हंसते रहे और कष्ट सहन करके प्रसन्न होते रहे तथा

Ⓟ333 से निकला हुआ है तो फिर क्योंकर बेईमानों की भांति भाषाओं के Ⓟसंबंध में ख़ुदा को इस बात से असमर्थ समझा जाए कि जिस प्रकार उसने समस्त वस्तुओं को मात्र

शेष हाशिया नं. 11

विपत्तियों में पड़कर धन्यवाद करते रहे और उसी एक के प्रेम में अपने देशों से देशविहीन हो गए, सम्मान से अपमान धारण किया, सुख से दुख सर पर ले लिया, समृद्धि से दरिद्रता स्वीकार कर ली प्रत्येक रिश्ता-नाता और अपनेपन से निर्धनता, एकान्त और दुर्दशा पर सन्तोष किया तथा अपना रक्त बहाने से, अपने सरों को कटाने से, अपने प्राणों को अर्पण करने से ख़ुदा की हस्ती पर मुहरें लगा दीं और ख़ुदा के कलाम के सच्चे अनुसरण की बरकत से उनमें वे विशेष प्रकाश उत्पन्न हो गए जो उनके अलावा में कभी नहीं पाए गए और ऐसे लोग न केवल पूर्वकालीन युगों में मौजूद थे अपितु यह सदात्मा जमाअत अहले इस्लाम में हमेशा उत्पन्न होती रहती है तथा हमेशा अपने प्रकाशमान अस्तित्व से अपने विरोधियों को आरोपित और निरुत्तर करती आई है। अत: इन्कार करने वालों पर हमारी यह बहस भी पूर्ण है कि क़ुर्आन करीम जैसे ज्ञान संबंधी श्रेणियों में कमाल की श्रेष्ठतम श्रेणी तक पहुंचाता है वैसा ही ज्ञान संबंधी श्रेणियों के कमाल भी उसी माध्यम से प्राप्त होते हैं और स्वीकारिता के लक्षण और प्रकाश ख़ुदा तआला के उन्हीं
Ⓟ303 लोगों में प्रकट होते रहे हैं और अब भी प्रकट होते Ⓟहैं जिन्होंने इस पवित्र कलाम का अनुसरण धारण किया है दूसरों में कदापि प्रकट नहीं होते। अत: सत्याभिलाषी के लिए यही सबूत जिसका वह स्वयं चश्मदीद निरीक्षण कर सकता है पर्याप्त है अर्थात यह कि आकाशीय बरकतें और ख़ुदाई निशान केवल क़ुर्आन करीम के अनुयायियों में पाए जाते हैं और अन्य समस्त सम्प्रदाय जो वास्तविक और पवित्र इल्हाम से विमुख हैं, क्या ब्रह्म समाजी और क्या आर्य तथा क्या ईसाई वे इस सत्य के प्रकाश से खाली और वंचित हैं। अत: प्रत्येक इन्कारी की संतुष्टि के लिए हम ही दायित्व लेते हैं बशर्ते कि वह सच्चे हृदय से इस्लाम स्वीकार करने पर उद्यत होकर पूरी-पूरी निष्ठा, स्थायित्व, धैर्य और सच्चाई से सत्य की खोज के लिए इस ओर

क़ुदरत से उत्पन्न किया था वह भाषाओं के उत्पन्न करने की शक्ति नहीं रखता था, जिसने स्वयं मनुष्य ®को बिना बाप और मां के उत्पन्न करके अपनी पूर्ण क़ुदरत®334

शेष हाशिया नं. (11)

कष्ट उठाए। यदि अब भी कोई इन्कार से न रुके तो उसका यह इन्कार इस बात का स्पष्ट सबूत है कि वह संसार के प्रेम के कारण सत्य को स्वीकार करना नहीं चाहता और उसका समस्त वार्तालाप शत्रुता और द्वेष के मार्ग से है न कि सत्य की खोज के मार्ग से। अब हे ब्रह्म समाजी सज्जनो !! तनिक आंख खोलकर देख लो कि हमारी इस खोज से पूर्ण प्रकटन के साथ सिद्ध हो गया कि ऐसा न असंभव है और न ग़ैर मौजूद अपितु एक असंदिग्ध और स्पष्ट सच्चाई है जो बुद्धि के निकट अनिवार्य, आवश्यक तथा जांच-पड़ताल की दृष्टि से उसका अस्तित्व प्रमाणित है जिसका विद्यमान होना हमने सिद्ध कर दिखाया है।

अत: हे सज्जनो! अब आप लोगों पर अनिवार्य है कि इस हाशिए को तथा हाशिया का हाशिया नं. 1, नं. 2 और नं. 3 को ध्यानपूर्वक पढ़ें और बार-बार पढ़ें और फिर ख़ुदा के भय के कारण मार्ग के प्रकाशमान दीपक को प्राप्त करके असत्य के अंधकारयुक्त विचारों को त्याग दें ®तथा इस®304 द्वेषपूर्ण लज्जा को हृदय में स्थान न दें कि अपना ही सिया हुआ क्योंकर उधेड़ें, अपितु अनिवार्य है कि जो व्यक्ति स्वयं को न्यायकर्ता समझता है वह अपना न्याय दिखाए और जो स्वयं को सत्य का अभिलाषी जानता है अब वह सत्य को स्वीकार करने में विलम्ब न करे। हां अभिमानी व्यक्ति को ऐसे सत्य का स्वीकार करना जिसे स्वीकार करने से उसकी शेखी में अन्तर आता है एक कठिन बात होगी परन्तु हे ऐसी तबियत के व्यक्ति!! तू भी उस सर्वशक्तिमान से डर जिस से अन्ततः तेरा मामला है और हृदय में भली भाति विचार कर ले कि जो व्यक्ति सत्य को पाकर फिर भी असत्य के मार्ग को नहीं छोड़ता तथा विरोध पर हठ करता है और ख़ुदा के पवित्र नबियों की पुनीत आत्माओं को अपनी तामसिक वृति पर अनुमान लगा कर संसार के लालचों से ग्रस्त समझता है, हालांकि ख़ुदा के कलाम की तुलना में स्वयं ही झूठा, अपमानित और लज्जित हो रहा है। ऐसे व्यक्ति की

का प्रमाण दे दिया है फिर भाषाओं के संदर्भ में क्यों उस की क़ुदरत को अपूर्ण
Ⓟ335 समझा जाए। अत: जब कि प्रत्येक बुद्धिमान को यह स्वीकार करना Ⓟपड़ता है कि

शेष हाशिया नं. (11)

निर्दयता और दुर्भाग्य पर स्वयं उसकी आत्मा साक्षी हो जाती है जो उसे हर समय आरोपित करती रहती है और नि:सन्देह वह ख़ुदा के समक्ष अपनी बेईमानी का दण्ड पाएगा, क्योंकि जो व्यक्ति अत्यन्त कठोर और जलने वाली धूप में खड़ा है वह घनी और सदा रहने वाली छाया का आराम नहीं पा सकता। अत: नसीहत ऐसा तीर नहीं है कि छूटते ही पार हो जाए परन्तु जिस कार्य को धारण करने में संसार का स्पष्ट अपमान दिखाई देता है और आख़िरत का दुर्भाग्य भी टलने वाली वस्तु नहीं, उस कार्य को ऐसे लोग क्यों अपनाएं जिनका दावा यह है कि हम बुद्धि के मार्गों पर चलना चाहते हैं विशेषकर ब्रह्म समाज के कुछ गंभीर और शिष्ट लोग जो ज्ञानवान और योग्य हैं उनके नीति-संगत स्वभाव से हमें पूरी आशा है कि वे हार्दिक निष्ठा के साथ उन समस्त सच्चाइयों को जिनकी सच्चाई इस हाशिए में सिद्ध हो चुकी है स्वीकार कर लेंगे, अपितु मैं यह आशा रखता हूँ कि पूर्व
Ⓟ305 इसके कि जो ऐसे लोग Ⓟपूर्ण रूप से यह हाशिया पढ़ें प्रभावित और हिदायत पाने वाले हो जाएंगे क्योंकि दक्ष और सुशील व्यक्ति स्वयं को किसी बहस में दोषी होते देखकर अपनी स्थिति को अपमान की दशा तक नहीं पहुंचाता और उस समय से पूर्व कि अपमान प्रकट हो सम्मानपूर्वक सत्य को स्वीकार करके सदात्माओं की दृष्टि में सम्माननीय हो जाता है, परन्तु जो व्यक्ति अपने स्वभाव से निर्ल्लज और बेशर्म है उसे अपमान और अनादर का थोड़ा सा भी विचार नहीं तथा अपमानित होने की कुछ भी चिन्ता नहीं रखता। वास्तव में इस प्रकार के लोग संसार में पाए जाते हैं जो लज्जा की विशेषता से पूर्णरूपेण पृथक हो कर पूरी निर्ल्लजता के साथ स्पष्ट तौर पर असत्य बात पर हठ करते रहते हैं तथा हज़ार समझाने पर भी अपने हठ को नहीं छोड़ते तथा अपने कुमार्ग से नहीं हटते तथा दिन को देख कर फिर भी उसे रात कहे जाते हैं तथा अल्लाह तआला से कुछ भय नहीं रखते कि लोग उन्हें

पहला युग शुद्ध रूप से क़ुदरत के प्रदर्शन का युग था तथा उसमें सामान्य तौर पर प्रकृति का नियम यही था कि प्रत्येक कार्य भौतिक साधनों के बिना किया जाए, तो

शेष हाशिया नं. (11)

अन्धा और नेत्रहीन कहेंगे। यही लोग हैं जो द्वेष की प्रचंडता तथा ज्ञान और योग्यता के अभाव के कारण मुर्दे की तरह पड़े हैं तथा सच्चाई की ओर थोड़ी सी भी गति नहीं करते और ईमानदारी और दृढ़ता का मार्ग धारण नहीं करते जो नख़रा देखो अनोखा, जो बात देखो टेढ़ी। उन्हीं के सन्दर्भ में हम बार-बार लिखते हैं कि होश संभालें और बुद्धि का दावा करते-करते बुद्धिहीन न बन जाएं। वह मनुष्य बड़ा मूर्ख और हतोत्साहित कहलाता है जिसकी जिह्वा पवित्र और पुनीत लोगों के तिरस्कार में तो बड़ी लम्बी हो परन्तु सत्य का वाक्य बोलते समय गूंगी हो जाए। यदि यह लोग किसी ऐसी बात के समझने से रुक जाते कि जो वास्तव में एक बारीक जटिलता होती तो मैं समझता कि उनको कोई दोष नहीं बात बारीक थी इसलिए समझ में आने से रह गई परन्तु इस द्वेष को देखो कि वे बातें जो निम्न योग्यता का व्यक्ति भी समझ सकता है उन्हीं के स्वीकार करने से उन्हें इन्कार है। ®भला®306 इल्हाम ही की बहस में कोई न्याय-प्रिय व्यक्ति विचार करे कि क्या इस बात का समझना कुछ कठिन है कि ख़ुदा जो समस्त पूर्ण विशेषताओं से विशिष्ट है गूंगा नहीं हो सकता अपितु अवश्य अनिवार्य है कि जैसे देखता है, सुनता है, जानता है ऐसा ही बोलता भी हो और जब बोलने की विशेषता पाई गई तो उस विशेषता का दान भी इस प्रकार के योग्य मनुष्यों पर होना चाहिए क्योंकि ख़ुदा की कोई विशेषता दानशीलता से रिक्त नहीं और वह अपनी सम्पूर्ण विशेषताओं में दानों का उद्गम है न कि कुछ विशेषताओं का, तथा सम्पूर्ण विशेषताओं की दृष्टि से मनुष्य के लिए दया है न कि कुछ विशेषताओं की दृष्टि से। क्या इस बात का समझना कुछ जटिल है कि मनुष्य जो भिन्न-भिन्न प्रकार की काम-भावनाओं में ग्रस्त है और प्रतिपल लोभ-लालच की ओर झुका जाता है ओर स्वयं ही शरीअत के नियमों का निर्माता और बनाने वाला नहीं हो सकता अपितु वह पवित्र नियम उसी की

Ⓟ336 फिर भाषाओं को इस सामान्य नियम से Ⓟबाहर निकाल कर प्रकृति के नियम को तोड़ना सरासर मूर्खता और धूर्त्तता है उस युग के उदाहरण में इस युग की परिस्थितियों

शेष हाशिया नं. (11)

ओर से जारी हो सकता है जो स्वयं में प्रत्येक काम-भावना, भूल-चूक से पवित्र है। क्या इस बात में कुछ सन्देह भी है कि एकांकी बुद्धि ख़ुदा को पहचानने के सन्दर्भ में है की श्रेणी तक कदापि नहीं पहुंचा सकती। क्या मनुष्यों के हृदयों में स्वाभाविक तौर पर इस इच्छा का अहसास पाया नहीं जाता कि वह ख़ुदा को ज्ञात करने के सन्दर्भ में बौद्धिक कल्पनाओं से आगे क़दम बढ़ाएं। क्या सच्चे अभिलाषियों की आत्मा ऐसे प्रकटन के लिए नहीं तड़पती जिस से उन्हें इस जीवित ख़ुदा के अस्तित्व तथा अवास्तविक संसार
Ⓟ307 पर पूर्ण सन्तोष और संतुष्टि प्राप्त हो और उसकी Ⓟहस्ती और उसके वादों को वास्तविक तौर पर ज्ञान हो जाए। क्या यह बात एक न्यायकर्ता पर गुप्त रह सकती है कि जो सैकड़ों धार्मिक विवाद लम्बे-लम्बे भाषणों से उत्पन्न हुए हैं जिनका मूल कारण ग़लत भाषणों का प्रभाव है, वे केवल प्रकृति के नियम के संकेतों तथा उसी संदिग्ध धर्म-ग्रन्थ के इशारों से तय नहीं हो सकते अपितु जो बात भाषणों ने बिगाड़ी है उसका निवारण भी भाषणों से ही हो सकता है और जो कलाम का मारा हुआ है वह कलाम ही से जीवित हो सकता है, परन्तु अपवित्र कलाम के मुकाबले सत्यमात्र और ख़ुदा के शुद्ध ज्ञान से निकला हो। फिर जबकि इल्हाम की आवश्यकता के मामले के व्यापक तौर पर सत्य होने के बावजूद फिर भी लोग इल्हाम से इन्कार किए जाते हैं और ख़ुदा की पवित्र किताब को मनुष्य का आविष्कार समझते हैं तो क्योंकर समझा जाए कि उन्हें कुछ ख़ुदा का भय भी है और क्योंकर आशा रखें कि उनके मुख से भी कोई न्याय का वाक्य निकलेगा। जो लोग किसी स्थिति में झूठ को छोड़ना नहीं चाहते, उन्हें हमारा कहना भी व्यर्थ है तथा उनका इस किताब को देखना भी व्यर्थ। खेद कि सैकड़ों लोग बुद्धिमान कहला कर फिर मूर्खता में गिरफ़्तार हैं। आंखें रखते हैं परन्तु देखते नहीं, कान भी हैं परन्तु सुनते नहीं, हृदय भी हैं परन्तु समझते नहीं।

को प्रस्तुत करना उचित नहीं है। उदाहरणतया अब कोई मनुष्य का बालक माता-पिता के माध्यम के बिना उत्पन्न नहीं ®होता, परन्तु यदि उस प्रारंभिक युग में भी ®337

शेष हाशिया नं. (11)

ऐसे लोग ब्रह्म समाज वालों में कुछ कम नहीं जिन्होंने अपनी बुद्धिमता भी दिखाई तो यह दिखाई कि ख़ुदा की अनादि विशेषताओं को उसकी हस्ती में से उधेड़ कर पृथक रख दिया तथा गूंगा, अपूर्ण दानशील और अपूर्ण शक्ति वाला नाम रखा। जब उनके बुद्धिमानों का यह हाल है तो क्या वे जिसकी बुद्धि उनमें से अपूर्ण है उन्हें देखकर ख़ुदा की विशेषताओं से इन्कारी नहीं हो जाएगा, क्योंकि यदि ख़ुदा बोलने पर क़ादिर नहीं तो फिर क्योंकर कोई समझे कि देखने, सुनने और जानने पर समर्थ है। यदि उसमें कलाम की विशेषता नहीं पाई जाती तो फिर इस पर क्या सबूत है कि और विशेषताएं तो उसे प्राप्त हैं और यदि बोलने की विशेषताएं पाई जाती हैं और यदि बोलने की विशेषता तो उसे प्राप्त है परन्तु इस विशेषता से किसी प्राणी को कोई लाभ नहीं पहुंचा तो क्या यह विचार नहीं किया जाएगा कि वह कृपा-वृक्ष अपनी समस्त शाखाओं के साथ जो पूर्ण विशेषताएं हैं अपनी सृष्टि पर छाया डालने वाला नहीं अपितु उसकी कुछ टहनियां शुष्क भी हैं जिनसे कभी किसी को लाभ नहीं पहुँचा। यह तो ब्रह्म समाज वालों की अच्छी धारणा है। फिर ऐसे लोग बावजूद इन अधम और असत्य आस्थाओं के क़ुर्आन करीम को कि जो सम्पूर्ण सच्चाइयों का झरना है ऐसा विचार कर रहे हैं कि 'ख़ुदा की पनाह' वह ख़ुदा का कलाम नहीं है अपितु स्वार्थपरता से लिखा गया है और चूंकि बुरे विचार अच्छे आचरणों से वंचित रखते हैं, इसलिए ये लोग भी क़ुर्आन करीम ®पर दुर्भावना रख कर भिन्न- ®308
भिन्न प्रकार के दुष्कृत्यों में पड़ गए तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की निन्दा को न्याय-संगत समझा, स्वस्थ को रोगी ठहरा दिया तथा अपने घर के मातम (शोक) से अनभिज्ञ रहे। खेद कि ये लोग विचार नहीं करते कि जो किताब स्वार्थपरता से लिखी जाती है क्या उसकी यही निशानियां होती हैं कि वह नीति में, मा'रिफ़त में, सच्चाइयों में और बारीकियों में समस्त किताबों से

मनुष्य का उत्पन्न होना माता-पिता के अस्तित्व पर ही निर्भर होता तो फिर क्योंकर यह संसार उत्पन्न हो सकता। इसके अतिरिक्त भाषाओं में जो परिवर्तन स्वाभाविक

शेष हाशिया नं. 11

श्रेष्ठतम और उच्चतम हो तथा मनुष्य उसके मुकाबले से असमर्थ हो। क्या ऐसी किताब को मनुष्य का झूठ घड़ना कहना चाहिए, जिसके मुकाबले पर यदि समस्त मनुष्य सोचते-सोचते मर भी जाएं तब भी उसके समक्ष कुछ बन न पड़े। क्या ऐसे पुनीत और मासूम, पवित्र तथा पूर्ण मनुष्य को स्वार्थी कहना चाहिए जिसने संसार की शिक्षाओं में से लेशमात्र भाग न पाया तथा अनपढ़ और अशिक्षित मात्र होकर दार्शनिकों को अपनी ज्ञान संबंधी अनुकम्पाओं से लज्जित किया, समस्त दार्शनिकों का अभिमान खंडित किया। मार्ग भटके हुए लोगों को ख़ुदा का मार्ग दिखाया। यदि इस कार्य को किसी मनुष्य ने किया है तो जैसे वह मनुष्य नहीं ख़ुदा ही हुआ जिसने ऐसा कार्य कर दिखाया, जिसका उदाहरण प्रस्तुत करने से मानव शक्तियां असमर्थ और वंचित हैं। यदि वह पवित्र नबी जो क़ुर्आन करीम लाया 'ख़ुदा की पनाह' वह स्वार्थी व्यक्ति है तो फिर उन लोगों का क्या नाम रखें जो बड़े-बड़े बुद्धिमान, नीतिवान और दार्शनिक अपितु ख़ुदा कहला कर तथा सृष्टि के पुजारियों की दृष्टि में समस्त लोकों के प्रतिपालक बन कर फिर भी ज्ञान संबंधी अनुकम्पाओं में उसके समान न हो सके तथा उनके कलाम ने क़ुर्आन करीम के समक्ष इतनी भी हैसियत उत्पन्न न की जैसी समुद्र के समक्ष एक आधी बूंद की होती है। खेद कि ये लोग आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रतिष्ठा का खंडन न्यायोचित समझ कर यह विचार नहीं करते कि इससे एक संसार की प्रतिष्ठा का खण्डन अनिवार्य होता है। यदि अपनी बुद्धि पर गर्व करे या अपने विचार में किसी अन्य नबी का अनुयायी बन बैठे, उसके लिए यही सद्मार्ग है कि प्रथम भरसक-प्रयत्न करके क़ुर्आन करीम की सच्चाइयों और अध्यात्म ज्ञानों की तुलना में अपनी बुद्धि या अपनी इल्हामी किताब में से वैसी ही नीतिगत सच्चाइयां निकाल कर दिखा दे फिर जो चाहे बखान करे परन्तु पूर्व इसके कि इस जटिल कार्य को

तौर पर होते रहते हैं, ®उन परिवर्तनों में और इस दूसरी स्थिति में कि जब भाषा ®338 नास्ति मात्र से उत्पन्न की जाए बड़ा अन्तर है। किसी वर्तमान भाषा में कुछ परिवर्तन

शेष हाशिया नं. 11

सम्पन्न कर सके वह जो कुछ क़ुर्आन करीम की प्रतिष्ठा का खंडन करता है या जो तिरस्कारयुक्त शब्द हज़रत ख़ातमुल अंबिया के पक्ष में बोलता है वे वास्तव में उसी अपूर्ण बुद्धि वाले मूर्ख पर या उसके किसी नबी तथा बुज़ुर्ग पर लागू होते हैं क्योंकि यदि सूर्य के प्रकाश को अंधकार बताया जाए तो इसके पश्चात और कौन सी वस्तु रहेगी जिसे हम प्रकाशमान कह सकते हैं।

اے سر خود کشیدہ از فرقان   پا نہادہ بہ لجۂ طغیاں

हे वह जिसने क़ुर्आन से मुंह फेर लिया है और उपद्रव के गढ़े में पैर रखा है।*

بانگ کم کن بہ پیش نور ہُدیٰ   توبہ کن از فسوس و بازیہا

हिदायत के प्रकाश के सामने इतनी शेखी न बघार, तथा उपहास और खेल तमाशे से तौबा कर।*

ایں چہ چشمے ست کور و سخت کبود   کافتابے درو چو ذرہ نمود

यह आंख कैसी अंधी और दुर्भाग्यशाली है जिसमें सूर्य एक कण के समान दिखाई देता है।*

تانگیری کنارہ زیں رہ و خو   ہست دور از کنار کشتی تو

जब तक तू इस मार्ग और स्वभाव का परित्याग नहीं करता तब तक तेरी नौका किनारे से दूर रहेगी।*

باخدایت عناد و کیں تاچند   خندہ و بازیت بدیں تاچند

तू कब तक अपने ख़ुदा से शत्रुता और द्वेष रखेगा तथा धर्म से तेरा हंसी ठट्ठा कब तक जारी रहेगा।*

خویشتن راُمکش بہ ترک حیا   جائے گریہ مشو باستہزا

निर्लज्ज बनकर स्वयं को नष्ट न कर और हंसी ठट्ठा करके स्वयं रोने का स्थल न बन।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

®339होना अलग वस्तु है तथा नास्ति मात्र से एक भाषा का पूर्णरूपेण ®उत्पन्न हो जाना यह और बात है। इन समस्त बातों के अतिरिक्त जबकि अब भी ख़ुदा तआला अपने

शेष हाशिया नं. 11

®309

®مہرِ تاباں چو برفلک رخشید چوں توانی بخاک و خس پوشید

जब आकाश पर चमकता हुआ सूर्य उदय हो गया फिर तू किस प्रकार उसे मिट्टी और घास से छुपा सकता है।*

شب تواں کرد صد فریب نہاں لک در روز روشن اس نتواں

रात के समय तो सौ कपट छुप सकते हैं परन्तु प्रकाशमान दिन में ऐसा संभव नहीं।*

نور فرقاں نہ تافت است چناں کو بماند نہاں زِ دیدہ وراں

क़ुर्आन का प्रकाश ऐसा नहीं चमकता है कि देखने वालों की दृष्टि से छुपा रह सके।*

آن چراغ ہدیٰ ست دنیا را رہبر و رہنما ست دنیا را

तू समस्त संसार के लिए मार्ग दर्शन करने वाला दीपक है और विश्व भर के लिए मार्ग दर्शक और पथ प्रदर्शक।*

رحمتے از خداست دنیا را نعمتے از سماست دنیا را

वह ख़ुदा की ओर से संसार के लिए एक रहमत (दया) है आकाश से धरती पर रहने वालों के लिए एक नै'मत*

مخزن راز ہائے ربّانی از خدا آلۂ خدا دانی

वह ख़ुदा तआला के रहस्यों का भण्डार है और ख़ुदा की ओर से ख़ुदा को पहचानने का उपकरण।*

برتر از پایہ بشر بکمال دستگیر قیاس و استدلال

वह अपनी विशेषताओं में मनुष्य की श्रेणी से श्रेष्ठतर है अनुमान तथा प्रमाण की सहायता करता है।*

کار سازِ اَتم بعلم و عمل حجتش اعظم و اثر اکمل

वह ज्ञान और कर्म में हमारे लिए बिगड़े काम के बनाने वाला है, उसका सबूत ठोस और उसका प्रभाव नितान्त पूर्ण है।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

इल्हाम द्वारा भिन्न-भिन्न भाषाओं को अपने बन्दों पर इल्क़ा करता है तथा ऐसी भाषाओं में इल्हाम कर सकता ®है कि जिन भाषाओं का उन बन्दों को बिल्कुल ज्ञान®340

शेष हाशिया नं. 11

ہر کہ بر عظمتش نظر بکشاد — بے توقّف خدایش آمد یاد

जो उसकी महानता को देख लेता है उसे तुरन्त ख़ुदा याद आ जाता है।*

واں کہ از کبر و کیں ندید آں نور — کور ماند و ز نور حق مہجور

और जो अभिमान और शत्रुता से उस प्रकाश को नहीं देखता वह अंधा और ख़ुदा के प्रकाश से दूर रहता है।*

وہ چہ دارد ازاں یگاں اسرار — دل و جانم فدائے آں اسرار

वाह, वाह उस ख़ुदा की ओर से, उसके पास कैसे-कैसे रहस्य हैं मेरे प्राण और हृदय उन रहस्यों पर न्यौछावर हों।*

پُر ز نور جلال حضرت پاک — خور تاباں ز اوج حق برخاک

वह उस पवित्र हस्ती के प्रतापी प्रकाशों से भरपूर है चमकदार सूर्य भी उसके समक्ष मिट्टी है।*

وہ چہ دارد خزائن اسرار — دل و جانم فدائے آں انوار

धन्य ! वह ख़ुदा के रहस्यों के क्या-क्या ख़ज़ाने रखता है मेरे प्राण और हृदय उन प्रकाशों पर बलिदान हों*

ہست آئینہ بہر روئے خدا — عالمے را کشید سوئے خدا

क़ुर्आन ख़ुदा के चेहरे का दर्पण है और उसने एक संसार को ख़ुदा की ओर खींचा है।*

بے زباناں از و فصیح شدند — زِشت رویاں از و صبیح شدند

गूंगे उसके कारण मधुर वक्ता बन गए और कुरूप लोग उसके कारण सुन्दर हो गए।*

میوہ از روضۂ فنا خوردند — واز خود و آرزوئے خود مُردند

उन्होंने विरक्तता के उद्यान का फल खाया और अपने अहंवाद और इच्छाओं की ओर से मर गए।*

دست غیبے کشید دامن دل — پا بر آورد جذب یار ز گِل

एक परोक्ष के हाथ ने उनके हृदय का दामन खींचा, और प्रियतम के आकर्षण ने उनका पैर दलदल से निकाल लिया।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

नहीं जैसा कि हम हाशिया का हाशिया नं. 1 में इस का प्रमाण प्रस्तुत कर चुके हैं, तो इस स्थिति में कितनी मूर्खता है कि यह विचार किया जाए कि प्रारंभिक युग में

शेष हाशिया नं. (11)

بود آں جذبۂ کلام خدا   کہ دل شاں ربود از دنیا

यह ख़ुदा के कलाम का आकर्षण ही तो था जिसने उनके हृदयों को संसार से विमुख कर दिया।*

سینۂ شاں ز غیر حق پرداخت   واز مئے عشق آں یگاں پُر ساخت

उनके सीने को ख़ुदा के अतिरिक्त से खाली कर दिया, तथा उस अनुपम हस्ती की प्रेम रूपी मदिरा से भर दिया।*

چوں شد آں نور پاک شامل شاں   تافت از پردہ بدرِ کامل شاں

जब वह पवित्र प्रकाश उनमें गया तो पर्दे में से पूर्ण चन्द्रमा चमका।*

دور شد ہر حجاب ظلمانی   شد سراسر وجود نورانی

वह अंधकार के पर्दों से दूर हो गया और सरासर प्रकाशमान अस्तित्व बन गया।*

خاطرِ شاں بجذب پنہانی   کرد مائل بعشق ربانی

उनके हृदय को एक गुप्त आकर्षण से ईश्वर-प्रेम की ओर झुका दिया।*

آں چناں عشق تیز مَرکَب راند   کہ ازاں مشت خاک ہیچ نماند

प्रेम ने ऐसा तीव्र घोड़ा दौड़ाया कि इस मुट्ठी भर मिट्टी में से कुछ भी शेष न रहा।*

نے خودی ماند نے ہوا و ہوس   اوفتادہ بخاک و خوں سرکس

न अहंकार रहा, न लालच न इच्छा रही ; जैसे किसी का सर मिट्टी और रक्त में पड़ा हो।*

عاشقان جلالِ روئے خدا   طالبانِ زلالِ جوئے خدا

वे ख़ुदा के प्रताप के प्रेमी हैं और ख़ुदा की नहर के शुद्ध पानी के अभिलाषी।*

پر زعشق و تہی ز ہر آزے   کشت وز ایشاں نخاست آوازے

प्रेम से भर गए और हर लालच से रिक्त हो गए। प्रेम ने उन्हें मार दिया और उनकी आवाज़ भी न निकली।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

ख़ुदा तआला को ®इस इल्क़ा की क़ुदरत प्राप्त नहीं थी, क्योंकि जिस स्थिति में ®341
उसकी असीमित क़ुदरत का अब भी स्पष्ट तौर पर सबूत मिलता है कि वह अपने

शेष हाशिया नं. (11)

پاک گشتہ زلوث ہستی خویش　　رَستہ از بند خود پرستی خویش

अपने अस्तित्व की अपवित्रता से पवित्र हो गए और अपने अभिमान के बन्धन से आज़ाद।*

آنچناں یار در کمند انداخت　　کہ نہ دانند بادگر پرداخت

प्रियतम ने उन्हें अपने पाश में जकड़ लिया कि किसी और से उनका सम्बन्ध नहीं रहा।*

قدم خود زدہ براہ عدم　　گم بیادش ز فرق تا بقدم

नास्ति के मार्ग पर चल पड़े और ख़ुदा की याद में सर से पैर तक तन्मय हो गए।*

ذکرِ دلبر غذائے نغز حیات　　حاصلِ روزگار و مغزِ حیات

प्रियतम का वर्णन उनके जीवन का आहार है, यही उनके जीवन का लक्ष्य और सार है।*

سوختہ ہر غرض بجز دلدار　　دوختہ چشم خود زغیر نگار

प्रियतम के अतिरिक्त उन्होंने हर उद्देश्य को भस्म कर दिया और प्रियतम के अलावा हर ओर से अपनी आंखें बन्द कर लीं।*

دل و جاں بر رخے فدا کردہ　　وصل او اصل مدعا کردہ

एक ही रूप पर अपना तन-मन न्यौछावर कर दिया और उसी के मिलन को अपना प्रमुख उद्देश्य बना लिया।*

مُردہ و خویشتن فنا کردہ　　عشق جوشید و کارہا کردہ

मर गए और स्वयं को फ़ना कर दिया। प्रेम में, जोश में आया और उसने बड़े-बड़े कार्य किए।*

از دیار خودی شدند جدا　　سیل پُرزور بود بُرَد ازجا

अभिमान के स्थान से पृथक हो गए प्रेम की लहर तीव्र थी बहा कर ले गई।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

℗342 बन्दों को ℗ऐसी भाषाओं का इल्हाम कर देता है कि जिन भाषाओं से वे बन्दे अपरिचित मात्र हैं और जिन्हें न उन्होंने अपने माता-पिता से सीखा और न किसी

शेष हाशिया नं. (11)

لا جرم یافتند نور خدا　　چوں خودی رفت شد ظہور خدا

परिणाम यह हुआ कि उन्होंने ख़ुदा के प्रकाश को पा लिया, जब अहंकार जाता रहा तो ख़ुदा प्रकट हो गया।*

تن چو فرسود دلستاں آمد　　دل چو ازدست رفت جاں آمد

जब शरीर निर्बल हो गया तो प्रियतम आ गया, जब हृदय हाथ से निकल गया तो प्राण अर्थात प्रियतम मिल गया।*

عشق دلبر بروئے شاں بارید　　ابر رحمت بکوئے شاں بارید

प्रियतम का प्रेम उनके चेहरे पर प्रकट हो गया और दया-वृष्टि उनके गली कूचों में हुई।*

ہست ایں قوم پاک را جاہے　　کہ ندارد جہاں بدو راہے

इस पवित्र क़ौम का वह सम्मान है कि समस्त संसार भी उस तक नहीं पहुंच सकता।*

دست بہر دعا چو بردارند　　مَوردِ فیض ہائے دادارند

जब वे दुआ के लिए हाथ उठाते हैं तो ख़ुदाई वरदानों के पात्र बन जाते हैं।*

کشف رازے گر از خدا خواہند　　ملہم از حضرت شہنشاہ اند

यदि ख़ुदा से किसी रहस्य का प्रकटन चाहते हैं तो अल्लाह तआला के दरबार से इल्हाम किए जाते हैं।*

کس بسر وقت شاں ندارد راہ　　کہ نہاں اند در قباب اللہ

कोई उनके स्थिति से अवगत नहीं हो पाता क्योंकि वे अल्लाह के गुम्बदों में छुपे हुए हैं।*

گر نماید خدا یکے زاناں　　برِکابش دوَند سلطاناں

यदि ख़ुदा तआला उनमें से किसी को प्रकट कर दे तो उसके साथ बादशाह दौड़ते हुए चलें।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

शिक्षक से शिक्षा प्राप्त की। तो फिर क्या कारण है कि प्रारंभिक ®उत्पत्ति में जो ®343
बिल्कुल आवश्यकता का युग है, मनुष्य को भाषाएं सिखाना ख़ुदा तआला की पूर्ण

शेष हाशिया नं. 11

ایں ہمہ عاشقان آں یکتا نور یابند از کلام خدا

ये सब उस ख़ुदा जिसका कोई भागीदार नहीं के प्रेमी, ख़ुदा के कलाम से ही प्रकाश प्राप्त करते हैं।*

گرچہ ہستند از جہاں پنہاں باز گہہ گہہ ہمی شوند عیاں

यद्यपि (सामान्यता) संसार से गुप्त हैं तथापि कभी-कभी प्रकट भी हो जाते हैं।*

®310 ®ہمچو خورشید و مہ بروں آیند غیر را چہرہ نیز بنمایند

सूर्य और चन्द्रमा की भांति बाहर निकलते हैं और दूसरों को भी अपना चेहरा दिखा देते हैं।*

بالخصوص آں زماں کہ باد خزاں باغ مہر و وفا کند ویراں

विशेषकर उस समय कि पतझड़ की वायु प्रेम और वफा रूपी उद्यान को उजाड़ दे।*

دل بہ بندد جہاں بدار فنا لب کشاید بمدحت دنیا

दुनिया वाले नश्वर संसार से हृदय लगा लें और उसकी प्रशंसाएं करने लगें।*

جیفہ را کنند مدح و ثنا واز خداوند جود استغنا

एक सड़ी गली लाश की तो स्तुति और प्रशंसा करें परन्तु दयालु ख़ुदा की ओर से लापरवाही करें।*

عاشق زر شوند و دولت و جاہ سرد گردد محبت آں شاہ

धन-दौलत, मान-सम्मान के प्रेमी बन जाएं और उस बादशाह से प्रेम ठंडा पड़ जाए।*

شوکت و شان ایں سرائے زوال خوش نماید بدیدہ جُہّال

इस नश्वर संसार का वैभव और प्रतिष्ठा मूर्खों की दृष्टि में अच्छी लगने लगे।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

क़ुदरत से दूर विचार किया जाए तथा क्यों ख़ुदा को असहाय और असमर्थ ठहरा कर Ⓟ344 मनुष्य पर इतने कष्ट डाले Ⓟजाएं जिन के विवरण में यह वर्णन किया जाए कि

शेष हाशिया नं. (11)

بر زبانہا شود مقام خدا   اندروں پُر شود ز حرص و ہوا

मात्र मुख पर ख़ुदा की याद रह जाए तथा उनका अन्त:करण
लालच और लोलुपता से भर जाए।*

اندریں روز ہائے چوں شب تار   دست گیرد عنایت دادار

ऐसे दिनों में जो अंधकारमय रात की भांति होते हैं न्यायवान ख़ुदा
की सहानुभूति लोगों का हाथ पकड़ती है।*

ے فرستد بخلق صاحب نور   تاشود تیرگی ز نورش دور

वह प्रजा की ओर एक प्रकाशयुक्त हस्ती को भेजता है ताकि
उसके प्रकाश से अंधेरा दूर हो*

تاز شور و فغان عاشق زار   خلق گردد ز خواب خود بیدار

ताकि उस मुग्ध प्रेमी के कृन्दन से प्रजा अपनी नींद से जाग उठे।*

تا شناسند مردمانِ رہ راست   تا بدانند منکراں کہ خداست

ताकि लोग सदमार्ग को पहचानें और इन्कारी जान लें कि ख़ुदा
विद्यमान है।*

ایں چنیں کس چو رُونہد بہ جہاں   بر جہاں عظمتش کنند عیاں

ऐसा व्यक्ति जब संसार में प्रकट होता है तो ख़ुदा उस की महानता
को संसार पर प्रकट कर देता है।*

چوں بیاید بہار باز آید   موسم لالہ زار باز آید

जब वह आता है तो वसंत ऋतु दोबारा आ जाती है और फूलों के
खिलने की ऋतु लौट आती है।*

وقت دیدار یار باز آید   بے دلاں را قرار باز آید

प्रियतम के दर्शन का समय लौट आता है और प्रेमियों को चैन आ
जाता है।*

ماہ روئے نگار باز آید   خور بہ نصف النّہار باز آید

प्रियतम का चन्द्रमा जैसा चेहरा दिखाई देने लगता है तथा सूर्य सर
पर आ जाता है।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

मनुष्य उत्पन्न हो कर फिर एक दीर्घ समय तक गूंगा और ख़ामोश रहा तथा उस दुर्भाग्य के युग में सैकड़ों परेशानियों और संकटों के साथ केवल संकेतों से काम

शेष हाशिया नं. (11)

باز خندد بہ ناز لالہ و گل   باز خیزد ز بلبلان غلغل

लाला और गुलाब फिर हंसने (खिलने) लगते हैं और बुलबुलें फिर चहचहाने लगती हैं।*

دست غیبش بہ پرؔورد ز کرم   صبح صدقش کند ظہور اتم

ख़ुदा का परोक्ष का हाथ कृपा करते हुए पोषण करता है और उसके सत्य का सवेरा पूर्ण तौर पर उदय होता है।*

نور الہام ہمچو باد صبا   نزدش آرد زغیب خوشبوہا

इल्हाम का प्रकाश प्रात:काल की समीर की भांति उसके पास परोक्ष से सुगन्धों को लाता है।*

مے شود ملہم از امور نہاں   زاں سرائیر کہ خاصۂ یزداں

वह गुप्त बातों का इल्हाम द्वारा ज्ञाता हो जाता है अर्थात उन रहस्यों का, जो केवल ख़ुदा की विशेषता है।*

تا نماید عیاں حقیقت کار   تا زند سنگ بر سر انکار

ताकि मूल वास्तविकता को स्पष्ट तौर पर प्रदर्शित कर दे और ताकि इन्कार करने वालों को नष्ट कर दे।*

ہمچنیں آں کریم و پاک و قدیر   مے کند روشنش چو مہر منیر

इस प्रकार वह दयालु, पवित्र और सामर्थ्यवान ख़ुदा उस व्यक्ति को प्रकाशमान सूर्य की भांति प्रकाशित कर देता है।*

دیدہا مے کند بدو بینا   گوشہا مے کند بدو شنوا

सृष्टि की आंखों को इस कारण दृष्टा बनाता है और उनके कानों को उसके द्वारा सुनने वाला बना देता है।*

ہر کہ آمد بد بصدق و صفا   یا بد از وے شفا بحکم خدا

जो व्यक्ति उसके पास श्रद्धा और निष्ठापूर्वक आता है वह ख़ुदा के आदेश से स्वस्थ हो जाता है।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

Ⓟ345Ⓟनिकालता रहा और जो लम्बे भाषण या बारीक बातें संकेतों से अदा न हो सकीं उनके अदा करने से असमर्थ रह कर उन हानियों को सहन करता रहा जो उन भाषणों

शेष हाशिया नं. (11)

گفت پیغمبر ستودہ صفات   از خدائے علیم مخفیات

उस प्रशंसनीय पैग़म्बर ने अन्तर्यामी ख़ुदा से ज्ञान पाकर कहा है।*

برسر ہر صدی بروں آید   آنکہ ایں کار را ہمی شاید

कि प्रत्येक सदी (शताब्दी) के सर पर ऐसा व्यक्ति प्रकट होता है जो उस कार्य के योग्य होता है।*

تا شود پاک ملت از بدعات   تا بیابند خلق زو برکات

ताकि धर्म बिदअतों से पवित्र हो जाए और सृष्टि उस से बरकतें प्राप्त करे।*

الغرض ذات اولیاء کرام   ہست مخصوص ملّت اسلام

सारांश यह कि आदरणीय वलियों का होना इस्लाम धर्म के साथ विशेष्य है।*

ایں مگو کیں گزاف و لغو و خطاست   تو طلب کن ثبوت آں برماست

तू यह न कह कि यह बात बेहूदा, निरर्थक और ग़लत है तू मांग, उसका प्रमाण हमारा दायित्व है।*

اے یکے ذرۂ ذلیل و خوار   چہ شود عاجز از تواں دادار

हे व्यक्ति जो एक तुच्छ और तिरस्कृत कण की भांति है तेरी तुलना में ख़ुदा किस प्रकार विवश हो सकता है।*

ہمہ ایں راست ست لافے نیست   امتحاں کن گر اعترافے نیست

यह सब सत्य है, अतिश्योक्ति नहीं है, यदि तुझे विश्वास नहीं तो परीक्षण कर ले।*

وعدۂ کج بہ طالبان ندہم   کاذبم گر ازو نشاں ندہم

मैं अभिलाषियों से ग़लत वादा नहीं करता, यदि उसका पता न बताऊं तो झूठा हूं।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

को समझने और समझाने के अभाव में ®होना आवश्यक था और बावजूद इन सब ®346 कष्टों के जो मनुष्य पर आते हैं आ गए, ख़ुदा ने उसके दुखों का कुछ उपचार न

शेष हाशिया नं. 11

من خود از بہر ایں نشاں زادم دیگر از ہر غمے دل آزادم

मैं स्वयं उस निशान की पूर्ति हेतु पैदा हुआ हूं दूसरी समस्त चिन्ताओं और विचारों से स्वतंत्र हूं।*

ایں سعادت چو بود قسمت ما رفتہ رفتہ رسید نوبت ما

अत: यह सौभाग्य हमारे प्रारब्ध में था, इसलिए शनै: शनै: हमारी बारी आ गई।*

نعرہ ہا میزنم برآب زلال ہمچو مادر دواں پئے اطفال

मैं शुद्ध पानी (के झरने) पर खड़ा बुला रहा हूं जिस प्रकार मां अपने बच्चों के पीछे दौड़ती है।*

تا مگر تشنگان بادیہ ہا گردم آیند زیں فغان و صلا

ताकि कदाचित जंगल के प्यासे इस शोर और बुलाने से मेरे पास आ जाएं।*

لیک شرط است عجز و صدق و صفا آمدن بانیاز و خوفِ خدا

परन्तु विनय, श्रद्धा और निष्ठा शर्त है एवं विनम्रता और ख़ुदा के भय के साथ आ।*

جستن از غربت و تذلّل دل وز خلوص و اطاعت کامل

विनय और हार्दिक विनम्रता के साथ तलाश करना एवं निष्कपटता और पूर्ण आज्ञाकारिता के साथ खोज करना।*

گر کنوں ہم کسے بتابد سر گیرد از راہ عدل راہ دگر

और यदि अब भी कोई विमुख होता है और न्याय-मार्ग छोड़कर कुमार्ग धारण करता है।*

نے ز ما پرسد و نہ خود دانَد نے ز کیں روئے خود بگرداند

और न हम से पूछे और न स्वयं जाने और न द्वेषभाव का परित्याग करे।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

किया तथा उसकी आवश्यकताओं को पूरा न कर सका और यद्यपि ख़ुदा ने अपनी ℗347℗पूर्ण क़ुदरत से मनुष्य को नास्ति से बनाया, फिर उसे जीभ प्रदान की, आंखें दीं,

शेष हाशिया नं. 11

آں نہ انساں کہ کرمکِ دون ست   راندۂ بارگاہ بے چون ست

तो वह इन्सान नहीं अपितु तुच्छ कीड़ा है। और ख़ुदा के दरबार से बहिष्कृत किया हुआ है।*

سروکارے بحق نمیدارد   لاجرم لعنتش برو بارد

उसे ख़ुदा से कुछ मतलब नहीं इसलिए आवश्यक है कि उस पर ख़ुदा की लानत बरसे।*

حجّت موموناں بر اوست تمام   کار ما پختہ عذر اُو ہمہ خام

मोमिनों के विवाद का उस पर अन्त हो गया, हमारी बात दृढ़ और उसका सारा बहाना कमजोर हो गया।*

اَیّھا الجامحون فی الشھوات   اَکثِرُوا ذکرَ ھادمِ اللّذّات

हे कामभावनाओं में लिप्त हो जाने वालो! मृत्यु को जो आनन्दों का विनाश कर देती है अधिकतर स्मरण किया करो।*

رفتنی است ایں مقام فنا   دل چہ بندی دریں دو روزہ سرا

यह नश्वर स्थान गुज़र जाने वाला है, दो दिन रहने वाले विश्रामगृह से अपना हृदय क्यों लगाता है।*

℗311 ℗عمرِ اول ببیں کجا رفت است   رفت و بنگر ز توچہ ہا رفت است

अपनी पहली आयु को देख कि कहां चली गई वह तो नष्ट हो गई परन्तु देख कि तेरे पास से क्या-क्या चला गया।*

پارۂ عمر رفت در خوردی   پارہ را بہ سرکشی بردی

आयु का एक भाग तो बचपन में चला गया और एक भाग तूने उपद्रवों में नष्ट कर दिया।*

تازہ رفت و بماند پس خوردہ   دشمناں شاد و یار آزردہ

उत्तम भाग चले गए अब बचा हुआ रह गया शत्रु प्रसन्न है और मित्र शोकाकुल हैं।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

कान दिए और तरह-तरह की उन्नति के लिए योग्यता प्रदान की, इसी प्रकार अपनी पूर्ण क़ुदरत से इतनी ने'मतें प्रदान कीं ®जिन्हें मनुष्य गिन नहीं सकता, परन्तु वही®348

शेष हाशिया नं. (11)

صد چو تو معجبے بخورد زمیں　　　سر ہنوزت بر آسماں ازکیں

तेरे समान सैकड़ों अभिमानियों को धरती खा गई परन्तु अभी तेरा सर शत्रुतावश आकाश पर है।*

بشنو از وضع عالم گذراں　　　چوں کند از زبانِ حال بیاں

इस अस्थायी संसार के आचरण से यह बात सुन कि वह किस प्रकार वर्तमान समय के मुख से वर्णन करता है।*

کیں جہاں باکسے وفا نکند　　　نکند صبر تا جدا نکند

कि यह संसार किसी के साथ वफ़ा नहीं करता और जब तक स्वयं से अलग न कर ले धैर्य नहीं आता।*

گر بود گوش بشنوی صد آہ　　　از دل مردۂ درون تباہ

यदि तेरे कान हों तो सैकड़ों आहें सुनेगा इस निष्प्राण हृदय से जिसका आन्तरिक भाग नष्ट हो चुका है।*

کہ چرا رُو بتافتم ز خدا　　　دل نہادم در آنچہ گشت جدا

कि मैं ख़ुदा से क्यों विमुख हुआ और उस वस्तु से हृदय लगाया जो मुझ से अलग हो गयी।*

قدر ایں راہ پرس از اموات　　　اے بسا گورہا پُر از حسرات

इस मार्ग के महत्व को मुर्दों से पूछ। बहुत सी क़ब्रें हैं जो पश्चाताप से भरी पड़ी हैं।*

جائے آنست کز چنیں جائے　　　از تورّع بروں نہی پائے

उचित यही है कि तू ऐसे स्थान से संयम और परहेज़गारी के साथ कूच कर जाए।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

शक्तिमान ख़ुदा भाषा को जो मनुष्य के लिए नितान्त आवश्यक थी मनुष्य को सिखा
Ⓟ349 न सका, यहां तक कि मनुष्य ने एक लम्बे समय तक गूंगेपन के कष्ट Ⓟसहन करके

शेष हाशिया नं. (11)

ہر چہ اندازدت ز یار جدا　　باش زاں جملہ کاروبار جدا

तुझे जो वस्तुएं प्रियतम से पृथक करती हैं तू उन सब से अलग हो जा।*

آخر اے خیرہ سرکشی تاچند　　کس ز دلدار بگسلد پیوند

अन्ततः तू हे दुष्चरित्र! तू कब तक उपद्रव करता रहेगा क्या कोई प्रियतम से भी सम्बन्ध विच्छेद करता है।*

روئے دل را بتاب از اغیار　　باش ہر دم بجستجوئے نگار

ख़ुदा के अतिरिक्त (ग़ैरों से) से अपना हृदय फेर ले और प्रतिपल प्रियतम की खोज में रह।*

رو بدوکن کہ رو رخ یارست　　ہمہ رو ہا فدائے دلدارست

उसकी ओर अपना मुख कर क्योंकि प्रियतम का चेहरा ही दर्शनीय है और उस प्रियतम पर समस्त चेहरे न्यौछावर हैं।*

تو بروں آزِ خود لقا این ست　　تو در و محو شو بقا این ست

तू अपने अहंकार से बाहर निकल कि यही भेंट है और उसमें विलीन हो जा कि यही अनश्वरता है।*

ہر کہ غافل ز ذات بیچون ست　　او نہ دانا کہ سخت مجنون ست

जो उस अद्वितीय हस्ती से लापरवाह है वह बुद्धिमान नहीं अपितु अत्यन्त मूर्ख है।*

تابکے رو بتابی از رخ دوست　　دیگرے رانشاں دہی کہ چو اوست

तू मित्र से कब तक विमुख रहेगा, किसी अन्य को पता बता जो उसके समान हो।*

در دو عالم نظیر یار کجا　　عاشقاں را بغیر کار کجا

दोनों लोकों में प्रियतम (मित्र) का सदृश उपलब्ध नहीं, उसके प्रेमियों को अन्य से क्या काम।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

स्वयं भाषा का आविष्कार किया। क्या यह ऐसी आस्था है जिससे ख़ुदा की शाने ख़ुदावन्दी की क़ुदरत प्रशंसनीय हो सकती है, क्या कोई ईमानदार इस पूर्ण और

शेष हाशिया नं. 11

چو بدل آتشے زعشق افروخت   دلستاں ماند و غیر او ہمہ سوخت

जब हृदय में प्रेमाग्नि भड़की तो प्रियतम रह गया और उसके अतिरिक्त सब कुछ भस्म हो गया।*

لیکن این ست بخششِ یزداں   تا نہ بخشند یافتن نتواں

परन्तु यह ख़ुदा की कृपा है। जब तक उधर से मेहरबानी न हो अपने प्रयास से यह बात प्राप्त नहीं होती।*

آں کساں را عطا شود ز خدا   کز کمند خودی شوند رہا

यह स्थान ख़ुदा की ओर से उन लोगों को दिया जाता है जो अहंकार के बन्धन से स्वतंत्र हो जाते हैं।*

زیر حکم کلام حق بَرَوَند   و زِ فرامین او بروں نشوند

ख़ुदा के आदेशानुसार चलते हैं तथा उसकी आज्ञाओं से बाहर नहीं होते।*

دیگرے را نمے دہند اینجا   دَر دہندش ثبوت آں بنما

अन्य लोगों को यह स्थान प्राप्त नहीं होता, यदि प्राप्त होता है तो प्रमाण प्रस्तुत कर।*

غیر را آں وفا و مہر کجا   زہد خشک ست غایت عقلا

ग़ैर (ख़ुदा के अतिरिक्त) में वह वफ़ा और प्रेम कहां हो सकता है। बुद्धिमानों का अन्तिम स्थान शुष्क संयम है।*

عاقلانے کہ برخرد نازاند   بے خبر از حقیقت و رازند

वे बुद्धिमान जो अपनी बुद्धि पर गर्व करते हैं वास्तव में वे सत्य और ख़ुदाई रहस्यों से अनभिज्ञ हैं।*

ہمچو گوری سپید کردہ بروں   اندروں پُر زخبث گوناگوں

उन्होंने क़ब्रों की तरह अपने प्रत्यक्ष को सफ़ेद कर रखा है और आन्तरिक नाना प्रकार की अपवित्रताओं से भरपूर हैं।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

Ⓟ350 सर्वशक्तिमान के सन्दर्भ में ऐसी दुर्भावना रख सकता Ⓟहै कि वह अपनी शक्ति-प्रदर्शन के पूर्व युग में है जबकि ख़ुदाई की शक्तियां अज्ञान बन्दों पर प्रकट करना

शेष हाशिया नं. (11)

مرخدا را چوسنگ دادہ قرار　　عاجز از نطق و ساکت از گفتار

ख़ुदा तआला को एक पत्थर के समान समझ रखा है जो बोलने से असमर्थ और वार्तालाप से वंचित है।*

آں خدائے کہ حیّ و قیّوم است　　نزدِ شاں یک وجودِ موہوم است

वह ख़ुदा जो जीवित और जीवित रहने वाला और जीवित रखने वाला है उनके निकट एक काल्पनिक अस्तित्व है।*

آں حفیظ و قدیر و ربّ عباد　　نزد شاں اوفتادہ ہمچو جماد

वह सुरक्षा करने वाला, शक्ति रखने वाला और बन्दों का प्रतिपालक उनके निकट स्थूल पदार्थों के समान निष्प्राण पड़ा है।*

خود پسنداں بعقل خویش اسیر　　فارغ از حضرت علیم و قدیر

अभिमानी और अपनी बुद्धि के बन्दी हैं वे बहुत ज्ञानी और शक्तिमान ख़ुदा से अपरिचित हैं।*

آنکہ خودبین و معجب افتاد است　　حضرت اقدسش کجا یاد است

वह व्यक्ति जो अभिमानी और अहंकारी है उसे पवित्र ख़ुदा कहां याद है।*

خوئے عشاق عجز ہست و نیاز　　نشنیدیم عشق و کبر انباز

प्रेमियों का आचरण तो विनय और श्रद्धा है, हमने कभी प्रेम और अभिमान को साथ-साथ नहीं पाया।*

گر بجوئی سوار ایں رہ راست　　اندر آنجا بجوکہ گرد بخاست

यदि तू इस सदमार्ग के सवार की तलाश में है तो वहां तलाश कर जहां धूल उड़ रही है।*

اندر آنجا بجوکہ زور نماند　　خود نمائی و کبر و شور نماند

उसे ऐसे स्थान पर ढूंढ जहां घमण्ड नहीं रहा, शेख़ी नहीं रही, अहंकार और उपद्रव नहीं रहा।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

निहित था, कुछ आवश्यक क़ुदरतों के प्रदर्शन से असमर्थ रहा। क्या अनुमान के अनुकूल है कि ®जिसने कुछ हज़ार सृष्टियों (मख़लूक़ात) को तत्त्व और ढांचे के ®351

शेष हाशिया नं. (11)

فانیاں را جہانیاں نرسند جانیاں را زبانیاں نرسند

इस संसार के लोग विरक्त लागों को नहीं पहुंच सकते और
मौखिक दावेदार सच्चे प्रेमियों को नहीं पहुंच सकते।*

خلق و عالم ہمہ بشور و شراند عشق بازاں بعالم دگر اند

समस्त सृष्टि और संसार कोलाहल और उपद्रव में ग्रसित है परन्तु
प्रेमी एक अन्य ही संसार में हैं।*

تا نہ کارِ دلت بجاں برسد چوں پیامت زدلستاں برسد

जब तक तेरी हृदयाग्नि मृत्यु की सीमा तक न पहुंच जाए तब तक
प्रियतम का सन्देश तुझे क्योंकर पहुंचेगा।*

تا نہ از خود روی جدا گردی تا نہ قربان آشنا گردی

जब तक तू अहंकार से पृथक न हो और जब तक तू प्रियतम पर
आसक्त न हो*

تا نیائی زنفس خود بیروں تا نہ گردی برائے او مجنوں

जब तक अपना अभिमान और स्वार्थपरता का त्याग न करे और
जब तक ख़ुदा के लिए उन्मत्त न हो जाए।*

تا نہ خاکت شود بسان غبار تا نہ گردد غبار تو خوں بار

तब तक तेरी मिट्टी धूल के समान न हो जाए और जब तक तेरी
धूल से रक्त न टपकने लगे।*

تا نہ خونت چکد برائے کسے تا نہ جانت شود فدائے کسے

जब तेरा रक्त किसी के लिए न बहे और जब तक तेरा प्राण किसी
पर न्यौछावर न हो।*

چوں دہنت بکوئے جاناں راہ خود کن از راہ صدق و سوز نگاہ

उस समय तक तुझे प्रियतम के कूचे में किस प्रकार मार्ग देंगे, तू
स्वयं ही श्रद्धा और लगन से विचार न कर ले।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

बिना एक आदेश से उत्पन्न कर दिखाया वह भाषाओं के आविष्कार पर समर्थ नहीं हो सकता था। क्या कोई बुद्धि इस बात को स्वीकार कर सकती है कि जिसने

शेष हाशिया नं. (11)

نیست ایں عقل مرکب آں راہ   ہوش کن ہوش کن مشو گمراہ

यह बुद्धि तो उस मार्ग की सवारी नहीं है, सतर्क हो सतर्क हो, पथ भ्रष्ट न हो।*

اصل طاعت بود فنا زِ ہوا   تو کجا و طریق عشق کجا

आज्ञाकारी होने का मूल यह है कि अपनी इच्छा जाती रहे अत: तू कहां और प्रेम का मार्ग कहां।*

℗312 ℗تو نشستہ بکبر از اصرار   کردہ ایماں فدائے استکبار

तू तो (ख़ुदा से) अभिमानी बन कर बैठा है तथा अपने ईमान को अभिमान पर न्यौछावर कर दिया है।*

ایں چہ عقل تو ایں چہ دانش ورائے   کہ کنی ہمسری باآں یکتائے

यह तेरी बुद्धि और विवेक कैसा है कि तू उस अद्वितीय ख़ुदा की बराबरी का दावा करता है।*

ایں چہ استاد ناقصت آموخت   ایں چہ قہر خدا دوچشمت دوخت

तेरे अयोग्य शिक्षक ने तुझे यह क्या सिखाया है और ख़ुदा के प्रकोप ने तेरी दोनों आंखें क्योंकर सी दी हैं।*

ایں چہ از فکر خود خطا خوردی   اوّل الدَّنّ دُردی آوردی

अपनी बुद्धि के कारण तू ने यह कैसी ग़लती की? तूने तो मदिरा के मटके में से पहला जाम ही गाद का निकाला*

چوں شود عقل ناقصت چو خدائے   خاک زادی چساں پرد بہ سما

तेरी अपूर्ण बुद्धि ख़ुदा के समान किस प्रकार हो सकती है एक मिट्टी से बना अस्तित्व उड़कर आकाश तक क्योंकर पहुंच सकता है।*

آنچہ صد سہو و صد خطا دارد   علم آں پاک از کجا آرد

बुद्धि जो स्वयं सैकड़ों भूल और ग़लती में लिप्त है वह उस पवित्र ख़ुदा का ज्ञान कहां से लाए।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

ⓟमनुष्य को एक बड़े हित के लिए उत्पन्न किया और अपनी विशेष इच्छा से उसे ⓟ352
समस्त सृष्टियों से अधिक उत्कृष्ट बनाया। वह उसकी उत्पत्ति को अधूरा छोड़ देता

शेष हाशिया नं. 11

سہو کن را ثنا کنی ہیہات ایں چہ سہو و خطا کنی ہیہات

खेद कि तू भूलने वाली बुद्धि की प्रशंसा करता है यह क्या भूल और ग़लती कर रहा है तुझ पर खेद।*

آں چہ لغزد بہر قدم صدبار چوں ز دریا رساندت بکنار

जो प्रत्येक पग पर सौ-सौ बार डगमगाती है वह तुझे दरिया में से किनारे तक क्योंकर पहुंचा सकती है।*

ایں سراب است سوئے آں مشتاب می نماید زِ دُور چشمۂ آب

यह (बुद्धि) तो मृग-तृष्णा है, इसकी ओर जाने में शीघ्रता न कर जो दूर से पानी का झरना दिखाई देती है।*

کشتی تو شکستہ است و خراب باز افتادہ در تگ گرداب

तेरी नौका तो दुर्दशाग्रस्त और ख़राब है फिर भंवर के चक्र में भी पड़ गई है।*

نازکم کن بریں چنیں کشتی کم خرام اے دنی بدیں زشتی

ऐसी नौका पर गर्व न कर। हे निर्ल्लज मनुष्य इस कुरूपता के बावजूद मटक-मटक कर न चल।*

نَرَسی تا یقیں ز راہِ قیاس ہمہ برظن و وہم ہست اساس

कल्पना के मार्ग से तू विश्वास तक नहीं पहुंचेगा उसका तो समस्त आधार सन्देह और भ्रम पर है।*

گر ز فکر و نظر گداز شوی ایں نہ ممکن کہ شک و ظن بِرَوَد

यदि सोच-विचार करते-करते तू पिघल भी जाए तब भी असंभव है कि रहस्यों का ज्ञाता हो जाए।*

گر دو صد جانِ تو ز تن برَوَد ایں نہ ممکن کہ شک و ظن برَوَد

यदि तेरे शरीर में दो सौ प्राण भी निकल जाएं तब भी संभव नहीं कि संदेह और भ्रम दूर हो।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

Ⓟ353 और फिर मनुष्य संयोगवश अपनी क्षति की स्वयं Ⓟभरपाई करता। क्या जिस हस्ती को इन समस्त भाषाओं का अनादिकाल से ज्ञान प्राप्त है तथा जिसकी गहरी दृष्टि

शेष हाशिया नं. (11)

ہست داروئے دل کلام خدا   کے شوی مست جز بجام خدا

हार्दिक सन्तोष का उपचार तो ख़ुदा का कलाम है ख़ुदा के जाम के अतिरिक्त तू मस्त कब हो सकता है।*

ہست برغیر راہ آں بستہ   ہمہ ابوابِ آسماں بستہ

उसका मार्ग ग़ैर के लिए बन्द है और आकाश के समस्त द्वार (ग़ैर के लिए) बन्द हैं।*

تانشد مشعلے ز غیب پدید   از شب تار جہل کس نرہید

जब तक परोक्ष से कोई दीपक पैदा न हो तब तक असभ्यता की अंधकारमय रात से कोई मुक्ति नहीं पाता।*

باید اینجا ز کبرہا دوری   تو بعقل و قیاس مغروری

यहां तो अहंकार से बचना चाहिए परन्तु तू बुद्धि और कल्पना पर अहंकारी है।*

ایں چہ غفلت کہ خوش بدیں کیشی   و از خدا ہیچ گہ نیندیشی

यह कैसी लापरवाही है कि तू अपने इस मार्ग पर प्रसन्न है और किसी समय भी ख़ुदा से नहीं डरता।*

رو طلب کن وصال یار ز یار   تکیہ بر زور خود مکن زنہار

और प्रियतम से उसके मिलन की याचना कर और अपनी सामर्थ्य पर कदापि भरोसा न कर।*

تانہ گردو نگوں سرت بہ نیاز   پردہ از نفس تو نہ گردو باز

जब तक विनय के साथ तेरा सर नीचा न होगा तब तक तेरे हृदय के पर्दे दूर न होंगे।*

تا نریزد ترا ہمہ پر و بال   اندر اینجا پریدن است محال

जब तक तेरे समस्त बाल और पर झड़ न जाएंगे तब तक उस स्थान पर उड़ना असंभव है।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

के आगे समस्त विद्यमान होने वाली वस्तुएं क्रियात्मक तौर पर विद्यमान होने का आदेश रखती हैं तथा जिसकी पूर्ण क़ुदरत प्रत्येक ®प्रकार की शिक्षा-दीक्षा कर®354

शेष हाशिया नं. (11)

ناتوانی ست قوت اینجا   ایں چنیں قوتے بیار و بیا

निर्बलता यहां की शक्ति है अत: ऐसी शक्ति पैदा कर और आ जा।*

پردۂ نیست بر رخ دلدار   تو ز خود پردہ خودی بردار

प्रियतम के चेहरे पर कोई पर्दा नहीं तू अपने ऊपर से अहंवाद का पर्दा उठा दे।*

ہر کہ را دولت ازل شد یار   کار او شد تذلل اندر کار

अनादि सौभाग्य जिस व्यक्ति का सहायक हो जाता है उसका काम अपने मामले में ख़ाकसारी हो जाता है।*

آں در آمد بہ حضرت بیچوں   کہ شد از تنگنائی کبر برون

वही व्यक्ति अद्वितीय ख़ुदा के दरबार में आ जाता है जो अभिमान के संकीर्ण कूचे से बाहर निकल जाता है।*

حق شناسی ز خود روی ناید   خود رَوی خود رَوی بیفزاید

अहंकार से सत्य की पहचान नहीं होती अपितु अहंकार तो अहंकार में बढ़ोतरी करता है।*

از خودی حالِ خود خراب مکن   شب پری کار آفتاب مکن

अहंकार से अपनी दशा बरबाद न कर तू तो चमगादड़ है, सूर्य का कार्य धारण न कर।*

تا بشر پُر بود باستکبار   اندرونش تہی بود از یار

जब तक मनुष्य अभिमान से भरा होता है उसका हृदय यार (प्रियतम) से खाली होता है।*

چوں رسد عجز کس بحدِّ تمام   شورشِ عشق را رسد ہنگام

जिस किसी की नम्रता पूर्ण कमाल तक पहुंच जाती है, उस समय प्रेम की क्रान्ति का समय आ पहुंचता है।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

सकती है वह इस योग्य है कि उसके सन्दर्भ में यह विचार किया जाए कि उसने जान-बूझ कर मनुष्य को गूंगेपन की स्थिति में देखकर फिर उन्हें भाषा सिखाने से

शेष हाशिया नं. (11)

اَے کہ چشمت ز کبر پوشیدہ   چہ کنم تا کشایدت دیدہ

हे वह व्यक्ति कि तेरी आंख पर अहंकार ने पर्दा डाल रखा है मैं क्या करूं कि तेरी आंख खुल जाए।*

گر ترا دل دل ست صدق طلب   خود روی ہا مکن ز ترک ادب

यदि तेरे हृदय में सच्ची अभिलाषा है तो असभ्यता से अभिमान न कर।*

راز راہ خدا بجو ز خدا   تو نۂ چوں خدا بجائے خود آ

ख़ुदा के मार्ग का रहस्य ख़ुदा से ही मालूम कर कि जब तू ख़ुदा नहीं है तो अपने स्थान पर आ जा।*

بندہ گانیم بندہ را باید   کہ کند ہرچہ خواجہ فرماید

हम तो बन्दे हैं और बन्दे के लिए उचित है कि स्वामी जो आदेश दे उसका पालन करे।*

منصب بندہ نیست خود رائی   خود نشستن بکار فرمائی

बन्दे का काम स्वेच्छा से कार्य करना नहीं और न स्वयं ही शासन करने बैठ जाना है।*

ہر کہ بر وَفق حکم مشغول است   بر سر اجرت است و مقبول است

जो व्यक्ति आदेश का पालन करने में व्यस्त है मज़दूरी उसे ही मिलेगी और वही मान्य है।*

وانکہ بے حکم خود تراشد کار   مزدِ واجب نمی شوَد زنہار

और जो व्यक्ति बिना आदेश स्वयं से काम करता है उसकी मज़दूरी कभी अनिवार्य नहीं होती।*

ما ضعیفم و اوفتادہ بخاک   خود چہ دانیم راز حضرت پاک

हम तो निर्बल हैं और मिट्टी पर गिरे हुए, हम पुनीत ख़ुदा का रहस्य किस प्रकार जान सकते हैं।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

संकोच ®किया, यहां तक कि मनुष्य उस की ध्यान की कमी के कारण दीर्घ समय ®355
तक जानवरों और दरिन्दों की भांति अपना जीवन-यापन करता रहा और फिर

शेष हाशिया नं. 11

ما ہمہ ہیچ اوست کامل ذات　　علم ما چوں شود چہ او ہیہات

हम सब की कोई वास्तविकता नहीं और वही पूर्ण अस्तित्व है। अफसोस हमारा ज्ञान उसके ज्ञान के समान क्योंकर हो सकता है।*

ذات بیچوں کہ نام اوست خدا　　کے خیال خرد رسد آنجا

अद्वितीय हस्ती जिसका नाम ख़ुदा है उस तक बुद्धि विचार क्योंकर पहुंच सकता है।*

آنکہ او آمدست ازبرِ یار　　او رساند زدلستاں اسرار

वह जो ख़ुदा के पास से आता है, वही इस मनमोहक (प्रियतम) के रहस्य लोगों तक पहुंचाता है।*

آنچہ ما فی الضمیر تُست نہاں　　کے چو تو داندش دگر انساں

जो बात तेरे हृदय में गुप्त है उसे दूसरा मनुष्य तेरे समान कैसे जान सकता है।*

پس تو ما فی الضمیر آں دادار　　مثل او چوں بدانی اے غدّار

फिर तू उस बात को जो ख़ुदा के विचार में है। हे बेवफ़ा! तू क्योंकर उस की तरह जान सकता है।*

آنکہ چشم آفرید نور دہَد　　آنکہ دل داد اُو سرور دہد

जिसने आंख पैदा की वही प्रकाश प्रदान करता है जिसने हृदय दिया वही आनन्द प्रदान करता है।*

®چشم ظاہر بہ بیں کہ چوں زکرم　　خالقش داد نیّرِ اعظم ®313

बाह्य आंख को देख कि स्रष्टा ने उसे अपनी महरबानी से किस प्रकार सूर्य प्रदान किया।*

وز برائے مصالح دوراں　　گاہ پیدا نمود و گاہ نہاں

और लोगों की भलाई के लिए कभी उस सूर्य को प्रकट किया और कभी छुपा दिया।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

Ⓟ356 अन्ततः उसे स्वयं ही विचार आया कि कोई भाषा आविष्कृत Ⓟकरना चाहिए। यह विचार ऐसा स्पष्ट तौर पर मिथ्या है कि ख़ुदा की वे पूर्ण क़ुदरतें, पूर्ण दया और पूर्ण

शेष हाशिया नं. (11)

ایں چنیں ست حال چشم دروں　　آفتابش کلام آں بے چوں

यही हाल आन्तरिक आंख का है उसका सूर्य इस अद्वितीय ख़ुदा का कलाम है।*

ہوش دار اے بشر کہ عقلِ بشر　　دارد اندر نظر ہزار خطر

हे मनुष्य! होश कर कि मानवीय बुद्धि की दृष्टि में सहस्त्रों खतरे हैं।*

سر کشیدن طریق شیطانی ست　　برخلاف سرشتِ انسانی ست

उपद्रव शैतान का मार्ग है तथा मानवीय स्वभाव के विपरीत है।*

تانہ فضلش رہ تو بکشاید　　صد فضولی بکن چہ کار آید

जब तक उसकी कृपा तेरे मार्ग को न खोले तू कितने ही व्यर्थ प्रयास करे समस्त बेकार हैं।*

در سرائر چہ جائے استنباط　　شترے چوں خزد بسَمِ خیاط

सूक्ष्म रहस्यों में कल्पना का स्थान नहीं, ऊंट सुई के नाके में क्योंकर घुस सकता है।*

تو نۂ باخبر ازاں کوئے　　تونہ دانی جمال آں روئے

तू उस कूचे से अज्ञान है, तू उस चेहरे की सुन्दरता को नहीं जानता।*

خبرے زو بمردماں چہ دہی　　ماہ نادیدہ را نشاں چہ دہی

फिर उसके सन्दर्भ में लोगों को क्या सूचना देता है जिस चन्द्रमा को तूने देखा नहीं उसका निशान क्या बताता है।*

سخن یار و سینۂ افسردہ　　جامۂ زندہ است بر مردہ

दोस्त की बातें करना और हृदय बुझा हुआ, यह तो ऐसी बात है जैसे मुर्दे पर जीवित का लिबास।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

प्रशिक्षण कि जो प्रत्येक युग में मौजूद चला आया है वे उसको झुठला रहे हैं। जिस ख़ुदा के ®अदभुत इल्हाम अब भी अज्ञात भाषाओं को अपने बन्दों पर प्रकट कर®357

शेष हाशिया नं. 11

گر بری ریگ را بزرگ و بلند　　جنبش باد خواہدش افگند

यदि रेत को तू कितने ही ऊंचे स्थान पर ले जाए वायु की थोड़ी सी गति वहां से गिरा देगी।*

ہست ما را یکے کہ ہر فیضاں　　میشود زاں محافظ تن و جاں

हमारा एक ख़ुदा है कि प्रत्येक वरदान जो उसकी ओर से है हमारे तन-मन का रक्षक होता है।*

آں خدائے کہ آفرید جہاں　　ہست ہر آفریدہ را نگراں

वह ख़ुदा जिसने संसार को पैदा किया वही प्रत्येक सृष्टि का संरक्षक है।*

ہرچہ باید برائے مخلوقات　　از لباس و خوراک و راہ نجات

सृष्टियों को जिस वस्तु की भी आवश्यकता है उदाहरणतया लिबास, आहार और मुक्ति का मार्ग।*

خود مہیا کند بمنت وجود　　کہ کریم است و قادر است و وَدود

इन समस्त को सहानुभूति और उपकार से वह स्वयं उपलब्ध करता है क्योंकि वह दयालु, सामर्थ्यवान और प्रेमी है।*

چشم خود کن بکشت صحرا باز　　خوشہ با خوشہ ایستادہ بناز

जंगल में खेतों की ओर आंखें खोलकर देख कि गुच्छे के साथ गुच्छा गर्व के साथ खड़ा है।*

ہمہ از بہر ماست تا بخورم　　درد و رنجِ گرسنگی نہ برم

यह सब हमारे लिए है कि हम उसे खाएं और भूख का कष्ट और तकलीफ न उठाएं।*

آنکہ از بہر چند روزہ حیات　　ایں قدر کردہ است تائیدات

वह जिसने अस्थायी जीवन के लिए इतनी सहायता की है।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

देते हैं, उसके संदर्भ में यह विचार कि ऐसे इल्हामों से प्रारंभिक युग में जबकि ®358उनकी नितान्त आवश्यकता थी, ख़ुदा ने संकोच ®किया अत्यन्त मूर्खता और

शेष हाशिया नं. 11

چوں نہ کردی برائے دار بقا نظرے کن بعقل و شرم و حیا

वह आख़िरत के लिए जो स्थायी घर है क्यों (सहायता) न करता।
बुद्धि, शर्म और लज्जापूर्वक इस बात पर विचार कर।*

سنگ افتد بر ایں چنیں فرہنگ کہ ز صدق است دور صد فرسنگ

ऐसी बुद्धि पर पत्थर पड़ें जो सत्य से सौ कोस दूर पड़ी है।*

گر کنی سوئے نفس خویش خطاب کہ چہ سانت گذر شود بجناب

यदि तू स्वयं से ही पूछे कि इस दरगाह में तेरा निर्वाह कैसे हो*

خود ندائے بیایدت ز دروں کہ ز تائید حضرت بیچوں

तो स्वयं तेरे अन्दर से ही यह आवाज़ आएगी कि अद्वितीय ख़ुदा
की सहायता से यह संभव है।*

ناید اندر قیاس و فہم کسے کہ شود کار پیل از مگسے

किसी व्यक्ति की बुद्धि और बोध में यह बात नहीं आ सकती कि
हाथों का काम एक मक्खी से हो।*

پس چہ ممکن کہ ذرۂ امکاں خود کند کار حق بزور و تواں

फिर यह क्योंकर संभव है कि सृष्टियों का एक कण स्वयं ही
अपने बल और शक्ति से ख़ुदा का काम करे।*

شان دادار پاک را بشناس و از چنیں کس شان او بہراس

पुनीत ख़ुदा की प्रतिष्ठा को समझ और उसकी ऐसी निन्दा से भय
कर।*

خویشتن را شریک او سازی پیش او دم زنی بانبازی

तू स्वयं को उस का भागीदार बनाता है और उसके समक्ष समानता
का दावा करता है।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

आन्तरिक अंधापन है यदि किसी के हृदय में यह भ्रम उत्पन्न हो कि अब जंगली आदमियों को जो गूंगेपन की स्थिति में मात्र संकेतों से काम चलाते हैं क्यों ®इल्हाम®359

शेष हाशिया नं. (11)

ایں چہ عقل است اے برز دواب   ایں چہ برفہم تو فتاد حجاب

हे जानवरों से भी अधम मनुष्य! यह क्या बुद्धि है ? तेरी समझ पर ये कैसे पर्दे पड़ गए।*

گر کسے گویدت باستحقار   کہ دریں شہر چوں تُو ہست ہزار

यदि कोई तुझे तिरस्कारपूर्वक यों कहे कि इस शहर में तेरे जैसे सहस्त्रों हैं।*

نیستی از کسے بعقل فزوں   باتو ہم پایہ ند مردم دوں

और तू बुद्धि में किसी से बढ़कर नहीं है और तुच्छ-तुच्छ मनुष्य भी तेरे समान हैं।*

مشتعل میشوی بہ کیں خیزی   در دل آری کہ خون او ریزی

तू (यह बात सुनकर) तो जोश में आ जाता है तथा लड़ने को तैयार हो जाता है तेरा हृदय चाहता है कि उस का वध कर दे।*

آنچہ برخود روا نمیداری   چوں پسندی بحضرت باری

अत: जो बात तू स्वयं के लिए वैध नहीं रखता वही ख़ुदा के लिए क्योंकर पसन्द करता है।*

چوں پسندی کہ کار ساز امور   ابکمے ہست و از سخن معذور

तू कैसे पसन्द करता है कि समस्त कार्यों का बनाने वाला गूंगा और बात करने से असमर्थ हो।*

چوں پسندی کہ واہب ہر نور   بخل ورزیدہ باشد است قصور

तू कैसे पसन्द करता है कि प्रत्येक प्रकाश के प्रदान करने वाले ने कृपणता धारण कर ली या उससे ग़लती हो गई।*

چوں پسندی کہ حضرت غیور   ہست عاجز چو مُردگان قبور

तू कैसे पसन्द करता है कि स्वाभिमानी ख़ुदा क़ब्रों के मुर्दों की भांति विवश है।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

के माध्यम से किसी भाषा से सूचित नहीं किया जाता तथा क्यों कोई नवजात शिशु जंगल में रखने से ख़ुदा की ओर से कोई इल्हाम नहीं पाता, तो ख़ुदा की विशेषताओं

शेष हाशिया नं. 11

بہر تعظیم ہست مذہب و دیں   تُف برآں دیں کہ میکند توہین

मज़्हब और धर्म तो ख़ुदा की श्रेष्ठता के लिए हैं ऐसे धर्म पर धिक्कार है जो उसका अनादर करता है।*

آنکہ او خلق را زبانہا داد   خاک را طاقت بیانہا داد

वह ख़ुदा जिसने प्रजा को जीभ दी और मिट्टी को बोलने की शक्ति प्रदान की।*

چوں بود گنگ و بے زباں ہیہات   شرمت آید زپاک و کامل ذات

वह स्वयं कैसे गूंगा और ख़ामोश हो सकता है तुझे उस पवित्र पूर्ण हस्ती से शर्म करना चाहिए।*

جامع ہر کمال و عز و جلال   چوں بود ناقص اے اسیرِ ضلال

वह समस्त विशेषताओं और ऐश्वर्य और प्रताप का संग्रहीता है। हे गुमराहों के बन्धक! वह अपूर्ण कैसे हो सकता है।*

ہمہ اوصاف او چو گشت عیاں   چوں بماندے تکلّمش پنہاں

जब उसकी सम्पूर्ण विशेषताएं प्रकट हो गईं तो फिर उसका बोलना गुप्त कैसे रह सकता था।*

دیدہ آخر برائے آں باشد   کہ بدو مَرد راہ داں باشد

आंखें आख़िर इसी काम के लिए होती हैं कि मनुष्य उन से मार्ग देखे।*

وہ چہ ایں چشم ہست و ایں دیدہ   کہ برو آفتاب پوشیدہ

यह तेरी आंख और दृष्टि भी खूब है कि उसे सूर्य दिखाई नहीं देता।*

گر بدل باشدت خیال خدا   ایں چنیں ناید از تو استغنا

यदि तेरे हृदय में ख़ुदा का विचार होता तो तुझ से इतनी लापरवाही प्रकट न होती।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

के बारे में यह एक बदगुमानी है, क्योंकि ®इल्क़ा और इल्हाम ऐसी बात नहीं है जो ®360
प्रत्येक स्थान पर उचित-अनुचित बिना योग्य तत्व के हो जाया करे अपितु इल्क़ा

शेष हाशिया नं. (11)

از دل و جاں طریق او جوئی　　و از سر صدق سوئے او پوئی

तू अपने तन-मन से उसका मार्ग ढूंढता और श्रद्धापूर्वक उसकी ओर दौड़ता।*

ہر کرا دل بود بہ دلدارے　　خبرش پرسد از خبردارے

जिसका हृदय किसी प्रियतम से लगा होता है वह तो किसी परिचित से उसका हाल मालूम करता रहता है।*

®گر نباشد لقائے محبوبے　　جوید از نزد یار مکتوبے ®314

यदि प्रियतम की भेंट उपलब्ध न हो तो यार (प्रियतम) के पत्र की ही इच्छा करता है।*

بے دلآرام نایدش آرام　　گہ برویش نظر گہے بکلام

उसे प्रियतम के बिना चैन नहीं आता, कभी उस के मुंह को देखता है कभी उसकी वाणी को।*

آنکہ داری بہ دل محبت او　　نایدت صبر جز بہ صحبت او

वह व्यक्ति जिसका प्रेम तेरे हृदय में है तुझे उस की भेंट के बिना धैर्य नहीं आता।*

فرقت او گر اتفاق افتد　　در تن و جانِ تو فراق افتد

यदि उस से संयोगवश जुदाई हो जाए तो तेरे शरीर से तेरे प्राण निकलने लगें।*

دولت از ہجر او کباب شود　　چشمت از رفتنش پُر آب شود

तेरा हृदय उसके वियोग से कबाब हो जाए तथा उसके जाने से तेरी आंखें आंसू बहाने लगें।*

باز چوں آں جمال و آں روئے　　شد نصیب دوچشم در کوئے

फिर जब वह सौन्दर्य और वह चेहरा किसी गली में तेरी आंखों के सामने आ जाए।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

और इल्हाम के लिए योग्य तत्व का होना नितान्त आवश्यक शर्त है तथा दूसरी शर्त ⓅPP361Ⓟयह भी है कि उस इल्हाम के लिए वास्तविक आवश्यकता भी पाई जाए। प्रारंभ

शेष हाशिया नं. (11)

دست در دامنش زنی بجنوں   کہ ز نادیدنت دلم شد خوں

तो तू पागलों के समान उसका दामन पकड़ कर कहता है कि तुझे न देखने के कारण मेरा हृदय ख़ून हो गया।*

ایں محبت بہ ذرۂ امکاں   واز دل افتندۂ خدائے یگاں

सृष्टियों में से एक कण के साथ तो ऐसा प्रेम परन्तु अद्वितीय ख़ुदा को तूने हृदय से उतार रखा है।*

لاابالی فتادہ زاں یار   فارغی زاں جمال و زاں گفتار

तू उस प्रियतम से बिल्कुल लापरवाह हो गया है उसके सौन्दर्य और वार्तालाप से अलगाव*

مُردگاں را ہمے کشی بہ کنار   و از دلآرام زندۂ بیزار

मुर्दों को तू गोद में लेता है परन्तु जीवित प्रियतम से विकल है।*

کس شنیدی کہ قانع ازیارست   عشق و صبر ایں دوکار دشوارست

क्या तूने कोई ऐसा प्रेमी सुना है जो प्रियतम से लापरवाह हो, प्रेम और धैर्य दोनों का इकट्ठा होना कठिन है।*

آنکہ در قعر دل فزود آید   دیدہ از دیدنش نیا ساید

जो हृदय की गहराइयों में उतर जाता है तो फिर आंख उसके देखने से तृप्त नहीं होती।*

تو دل خود بہ دیگراں دادہ   یکسر از یار فارغ افتادہ

तूने अपना हृदय दूसरों को दे रखा है और प्रियतम की ओर से बिल्कुल लापरवाह हो गया है।*

ایں بود حال و طور عاشق زار   ایں بود قدر دلبر اے مردار

क्या विक्षिप्त प्रेमी की दशा ऐसी ही होती है। हे मुरदार क्या यही प्रियतम का महत्व है।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

में जब ख़ुदा ने मनुष्य को उत्पन्न किया, उस समय इल्हाम द्वारा भाषाओं की शिक्षा देना ऐसी बात थी कि जिसमें दोनों प्रकार ®की शर्तें मौजूद थीं। प्रथम - पूर्व मानव®362

शेष हाशिया नं. (11)

عاشقاں را بود ز صدق آثار   اے سیہ دل ترا بعشق چہ کار

प्रेमियों में तो श्रद्धा के लक्षण पाए जाते हैं। हे निष्ठुर! भला तुझे प्रेम से क्या काम।*

تاز توہستی ات بدر نرَود   تخم شرک از دل تو بر نرَود

जब तक तेरा अहंकार तुझे से दूर न होगा तब तक द्वैतवाद का बीज तेरे हृदय में से नहीं निकलेगा।*

پائے سعیت بلند تر نرَود   تا ترا دودِ دل بسر نرَود

तेरे प्रयास का पग ऊंचा नहीं पड़ेगा जब तक तेरे हृदय का धुआं सर तक न पहुंच जाए।*

یار پیدا شود دراں ہنگام   کہ تو گردی نہاں زخود بہ تمام

यार (प्रियतम) उस समय प्रकट होगा जब तू स्वयं से पूर्णतया छुप जाए।*

تا نہ سوزی زسوز و غم نرہی   تانمیری ز موت ہم نرہی

जब तक तू नहीं चलेगा, शोक और चिन्ता से मुक्ति नहीं पाएगा, और जब तक तू मरेगा नहीं मृत्यु से भी मुक्ति नहीं पाएगा।*

چیست آں ہرزہ جان وتن کہ نسوخت   آتش اندر دلے بزن کہ نسوخت

वे तन-मन कैसे व्यर्थ हैं जो प्रेम में नहीं जलते ऐसे हृदय को आग लगा दे जो नहीं जलता।*

کلبۂ جسم خود بکُن برباد   چوں نمی گردد از خدا آباد

अपने शरीर की झोंपड़ी को नष्ट कर दे यदि वह ख़ुदा से आबाद नहीं होती।*

پائے خود را جدا کن از تن خویش   چوں نگیرد رہے صداقت پیش

अपने शरीर से अपने पैर को काट दे यदि वह सत्य-मार्ग नहीं अपनाता।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

में इल्हाम पाने के लिए यथायोग्य व्यक्तिगत योग्यता मौजूद थी दूसरे वास्तविक
Ⓟ363 आवश्यकता भी इल्हाम को चाहती थी, क्योंकि उस Ⓟसमय ख़ुदा तआला के

शेष हाशिया नं. (11)

ہیچ چیزے چو ذات بیچوں نیست جگرے خوں شود کزوخوں نیست

कोई वस्तु भी उस अनुपम हस्ती के समान नहीं वह हृदय नष्ट हो जाए जो उसके प्रेम में रक्त रंजित नहीं होता।*

گنجہائے جہاں فدائے نگار بہ ز صد گنج خاک پائے نگار

समस्त संसार के ख़ज़ाने उस प्रियतम पर न्यौछावर हैं तथा प्रियतम के चरणों की धूल सैकड़ों ख़ज़ानों से उत्तम है।*

ہر چہ از دست او رسد آں بہ خار او از ہزار بستاں بہ

जो कुछ उसके हाथ से पहुंचे वही अच्छा है उसका एक कांटा सहस्त्रों फूलों से उत्तम है।*

ذلّت از بہر او ز عزت بہ قلت از بہر او ز کثرت بہ

उसके लिए अपमान सहन करना सम्मान से उत्तम है, उसके लिए निर्धनता धारण करना समृद्धि से उत्तम है।*

مُردن از بہر او حیات مدام صد لذائذ فدائے آں آلام

उसके लिए मरना अनश्वर जीवन है उन कष्टों पर सैकड़ों आनन्द बलिहारी हैं।*

اے کہ در کوئے دلستاں گذری باوفا باش ور زجاں گذری

हे वह मनुष्य! जो प्रियतम के कूचे में से गुज़र रहा है तू वफ़ादार रह चाहे प्राण चले जाएं।*

صادقانے کہ طالب یار اند جانفشاناں ز بہر دلدار اند

वे सदात्मा लोग जो प्रियतम के अभिलाषी हैं वे तो प्रियतम के लिए प्राण नयौछावर कर देते हैं।*

گر نیابند راہ آں دلبر از غمش جاں کنند زیر و زبر

यदि वे उस प्रियतम तक पहुंचने का मार्ग खुला नहीं पाते तो उसकी चिन्ता में अपने प्राण उथल-पुथल कर देते हैं।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

अतिरिक्त आदम के लिए अन्य कोई मित्र हमदर्द न था कि जो उन्हें बोलना सिखाता फिर अपनी शिक्षा से शिष्टता और सभ्यता की श्रेणी तक पहुंचाता अपितु हज़रत

शेष हाशिया नं. (11)

از دلآرام رنگ میدارند و از رہ نام ننگ میدارند

वे प्रियतम के रंग में रंगीन होते हैं तथा प्रसिद्धि से उन्हें शर्म आती है।*

لذّت خود بدرد می بینند حسن در روئے زرد می بینند

वे अपना आनंद कष्ट में पाते हैं तथा पीले चेहरे में सौन्दर्य देखते हैं।*

تو کہ چوں خر بہ گِل فرومانی ہمت آں یلاں چہ میدانی

तू जो गधे की भांति कीचड़ में लिप्त है उन पहलवानों के साहस को कैसे जान सकता है।*

سہل باشد حکایت از غم ودرد داند آں کس کہ رو بغمہا کرد

चिन्ता और कष्ट की बातें करना आसान है परन्तु उनका स्वाद वही जानता है जिस पर चिन्ताएं आएं।*

آفرین خدا بر آں جانے کہ ز خود شد برائے جانانے

ख़ुदा की दया हो उस प्राण पर जिसने प्रियतम के लिए अहंकार छोड़ दिया।*

منزل یار خویش کرو بہ دل وہ از ہواہا رمید صد منزل

हृदय में प्रियतम का निवास बना लिया तथा स्वार्थपरता और लालच से कोसों दूर चला गया।*

از خودی در شد و خدا را یافت گم شد و دست رہنما را یافت

अहंकार से दूर हो गया और ख़ुदा को पा लिया, स्वयं को खोकर पथ-प्रदर्शक के हाथ को प्राप्त कर लिया।*

تُوچہ یابی کہ غافلے زیں راہ و از جلال خدا نۂ آگاہ

तू भला क्या पाएगा कि तू उस मार्ग से ही अनभिज्ञ है तथा ख़ुदा के प्रताप से भी परिचित नहीं।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

Ⓟ364 आदम के लिए केवल एक ख़ुदा तआला था Ⓟजिसने आदम की समस्त आवश्यकताओं को पूर्ण किया तथा उसे स्वयं उत्तम शिक्षा-दीक्षा से वास्तविक मानवता की श्रेणी

शेष हाशिया नं. 11

ہمہ کارت بعقل خام افتاد ہمہ سعی تو ناتمام افتاد

तेरे समस्त कार्य अपूर्ण बुद्धि से ही सम्बद्ध रहे और तेरे समस्त प्रयास असफल रहे।*

ہمچو طوطی ہمیں سخن یادست کہ بشر عاقلست و آزادست

तोते की तरह मात्र यही बात स्मरण है कि मनुष्य बुद्धिमान है और स्वतंत्र है।*

اے کہ دیوانۂ پئے اموال وہ کہ در کارِ دیں چنیں اہمال

हे वह जो कि धन-दौलत के पीछे पागल हो रहा है खेद धार्मिक कार्य में इतनी चूक।*

روئے دل را بجانب دیں کن فکر آخر غم نخستیں کن

अपने हृदय का ध्यान धर्म की ओर फेर दे और परलोक की चिन्ता को सर्वप्रमुख चिन्ता बना ले।*

حصر تو برقیاس در ہمہ حال ہست بر حُمقِ تو یک استدلال

तेरी प्रत्येक अवस्था में कल्पना ही पर निर्भर रहना तेरी मूर्खता का एक सबूत है।*

تا نہ فرماں رسد باعلانے چوں شد کس مطیع فرمانے

जब तक सार्वजनिक तौर पर कोई आदेश न पहुंचे तो क्यों कोई ऐसे आदेश का पालन करे।*

Ⓟ315 Ⓟتا نہ حکمے شود ظہور پذیر چوں توانی شدن مطیع امیر

जब तक शासक का आदेश प्रकट न हो तब तू शासक का आज्ञापालन किस प्रकार कर सकता है।*

تا نہ گردد کسے ز حق مامور کُفر و ایماں چساں کنند ظہور

जब तक कोई ख़ुदा की ओर से आदिष्ट न हो तो लोगों के कुफ़्र और ईमान क्योंकर प्रकट हों।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

तक पहुंचाया। हां तत्पश्चात् जब हज़रत आदम की सन्तान संसार में फैल ®गई तथा®365 ख़ुदा तआला ने जो ज्ञान आदम को सिखाए थे वह उसकी सन्तान में भली भांति

शेष हाशिया नं. 11

تا نیاید اشارتے زنگار چہ برآید زدست عاشق زار

जब तक उस प्रियतम की ओर से संकेत न हो तो मुग्ध प्रेमी के हाथों क्या कार्य हो सकता है।*

فرق در سرکش و مطیع خدا جز بحکمش چساں شود پیدا

ख़ुदा के उपद्रवी और आज्ञापालक का अन्तर उसके आदेश के बिना किस प्रकार प्रकट हो सकता है।*

شرط تعمیل حکم چوں حکم است پس وجودش بجو نخست اے مست

आज्ञापालन की शर्त चूंकि आदेश का विद्यमान होना है, इसलिए हे दीवाने पहले स्वयं उस शासक को तलाश कर।*

ورنہ ایں دعویٰ غلط بگذار کہ رَوَم زیر حکم آں دادار

अन्यथा इस ग़लत दावे को छोड़ दे कि मैं ख़ुदा के आदेशानुसार चल रहा हूं।*

خود تراشیدن از خودی فرماں آں نہ حکم خداست اے نادان

अपनी इच्छा से आदेश बना लेना। हे नादान! यह ख़ुदा का आदेश नहीं हो सकता।*

نہ بعُرف است و نے بعقل روا کہ شود ظنّ خویش حکم خدا

परम्परा और बुद्धि दोनों की दृष्टि से यह वैध नहीं कि अपनी कल्पना ख़ुदा का आदेश बन जाए।*

حکم او آں بود کہ او فرمود پس چو فرمود خود نگہ کُن زود

उसका आदेश तो वह है जो स्वयं उसने दिया और जब वह आदेश दे दे तो तुरन्त ध्यान दे।*

کہ ازیں شد ثبوت وحی خدا شد ضرورت مسلّمش زیں جا

क्योंकि इसी बात से ख़ुदा की वह्यी का सबूत मिलता है। इसी सबूत से स्वयं उसकी आवश्यकता भी सिद्ध होती है।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

प्रचलित हो गए, तब कुछ मनुष्य कुछ अन्य मनुष्यों के उस्ताद और शिक्षक बन बैठे ®366तथा प्रत्येक बच्चे के लिए ®उसके माता-पिता भाषा सिखाने के लिए मित्र-हमदर्द

शेष हाशिया नं. (11)

گر دہندت بصیرت دی　　در گمانہا ہلاک خود بی

यदि तुझे धार्मिक ज्ञान प्राप्त हो तो तू कल्पना में अपना विनाश देखे।*

بنگر آخر بعقل و فکر و قیاس　　کہ خرد را نہ محکم است اساس

बुद्धि, चिन्ता और कल्पना से देख तो सही कि बुद्धि का आधार दृढ़ नहीं है।*

تا نباشد رفیق او دگرے　　نایدش از رہ یقیں خبرے

जब तक दूसरा उस का सहयोगी न बने तब तक उसे विश्वास के मार्ग की सूचना नहीं मिलती।*

تا نہ بینی بدیدہا جائے　　یا نہ یابی خبر ز بینائے

जब तक तू किसी स्थान को चश्मदीद नहीं देख लेता या किसी दर्शक से उसका ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेता।*

خود نگوید ترا خرد زنہار　　کہ چنیں دارد آں مکاں آثار

तब तक बुद्धि स्वयं तुझे कदापि नहीं बताती कि अमुक मकान के ये ये निशान हैं।*

پس چہ ممکن کہ دم زند بمعاد　　کہ چنیں اند آں دیار و بلاد

फिर कैसे संभव है कि परलोक (आख़िरत) के सन्दर्भ में वह बुद्धि दम मार सके कि वे देश और स्थान ऐसे हैं।*

ایں چہ حمق ست و ایں چہ بے راہی　　کہ بجہل است لاف آگاہی

यह कैसी मूर्खता और पथ भ्रष्टता की बात है कि तू अशिक्षित होकर ज्ञान की डींगें मारता है।*

چوں روی از قیاس خود بر ہے　　کہ ندیدی بعمر خویش گہے

तू मात्र कल्पना के आधार पर ऐसे मार्ग पर किस प्रकार चल सकता है जिसे तूने जीवन-पर्यन्त कभी भी नहीं देखा।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

निकल आए, परन्तु आदम के लिए एक ख़ुदा के अतिरिक्त अन्य कोई न था जो उसे भाषा सिखाता और मानव सभ्यता से सभ्यता का शिक्षक बनाता। इसके लिए

शेष हाशिया नं. (11)

چوں شد از عالَم دگر خبرت مادرت دیدہ بود یا پدرت

तुझे परलोक का ज्ञान कैसे हो गया, क्या तेरी मां ने उसे देखा था या तेरे पिता ने।*

ور ندیداست کس چہ ساں دانی کم خرام اے دَنی بہ عریانی

यदि किसी ने नहीं देखा तो फिर तुझे क्योंकर ज्ञात हुआ हे अधम! नंगा होते हुए मटक कर न चल।*

توکہ داری زِ انبیاء انکار ایں ہمہ کوری است و استکبار

तू जो नबियों का इन्कारी है यह भी सब तेरा अन्धापन और अहंकार है।*

یک نظر کن بہ فطرت انساں کہ ندارند جوہرے یکساں

मनुष्यों के स्वभाव पर एक दृष्टि डाल कि वे सब समान योग्यता नहीं रखते।*

مختلف اوفتاد ہر بشرے کس بخیرے فزود کس بشرے

प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से भिन्न है। कोई नेकी में बढ़ जाता है तो कोई बदी (बुराई) में।*

پس چویک بیش و دیگر است کمی ہم چنیں در قبول فیض ہمی

अत: जब एक अधिक और एक कम है तो इसी प्रकार ख़ुदाई वरदान को स्वीकार करने में भी इनकी श्रेणियां हैं।*

خود نگہ کن کنوں ز صدق و صفا کہ چہ ثابت ہمیں شود زیں جا

अब श्रद्धा और निष्ठापूर्वक स्वयं देख ले कि इससे क्या सिद्ध होता है।*

شب تاراست و خوف بیش از بیش از سر خود روی مدہ سرِ خویش

अंधकारमय रात है और भय बहुत अधिक है। अहंकार के कारण कहीं अपना सर न दे देना।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

Ⓟ367 Ⓟउस्ताद, शिक्षक, मां और बाप के स्थान पर ख़ुदा ही था, जिसने उसे उत्पन्न करके उसे स्वयं सब कुछ सिखाया अत: आदम के लिए यह आवश्यकता अनिवार्य और

शेष हाशिया नं. (11)

پسِ دیوار چوں نمے دانی   چوں بدانی غیوبِ ربانی

जब तू दीवार के पीछे की वस्तु नहीं जानता फिर ख़ुदा की परोक्ष की बातों को कैसे जान सकता है।*

در شگفتم کہ باچنیں نقصاں   از چہ برعقل مے شوی نازاں

मैं आश्चर्यचकित हूं कि इतनी अपूर्णता के बावजूद तू बुद्धि पर किस कारण गर्वान्वित है।*

ایں چہ عقل است وایں چہ معرفت است   اینچہ قہر خدا دو چشمت بست

यह कैसी बुद्धि और कैसा अध्यात्म ज्ञान है, ख़ुदा का ये कैसा प्रकोप है कि जिसने तेरी आंखें बन्द कर दी हैं।*

ایں جہانت چو عید خوش افتاد   واں وعید خدا نداری یاد

तुझे यह संसार ईद की भांति पसन्द आ गया है और ख़ुदा तआला का दण्ड तुझे स्मरण नहीं रहा।*

بشنو از وحیٔ حق چہ گوید راز   از جناب وحید و بے انباز

ख़ुदा की वह्यी को सुन कि क्या रहस्य वर्णन करती है। भागीदाररहित एक ख़ुदा की ओर से*

کاں خرَدہا کہ در دل عُقلاست   ہمہ یک ذرۂ ز آتش ماست

परन्तु ये सब अक़्लें जो मनीषी लोगों के हृदयों में हैं ये सब हमारी अग्नि की एक चिन्गारी हैं।*

آں کلام خدا نہ برفلک است   تا بگوئی کہ ہست دور از دست

ख़ुदा की वाणी आकाश पर नहीं है ताकि तू यह कहे कि हमारी पहुंच से दूर है।*

یا بگوئی کہ کار ہست محال   برفلک رفتنم کدام مجال

या तू कहे कि काम बहुत कठिन है, मेरी क्या मजाल कि आकाश पर जा सकूं।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

कर्तव्य के तौर पर सामने आ गई थी कि ख़ुदा स्वयं उसे प्रशिक्षण देता और उसकी आवश्यकताओं की स्वयं व्यवस्था करता, परन्तु उसकी सन्तान के सामने ®यह ®368

शेष हाशिया नं. (11)

نے بزیر زمیں کلام خدا تابگوئی کہ چوں خزم آنجا

और न ख़ुदा का कलाम पृथ्वी के नीचे है ताकि तू कहे कि मैं वहां किस प्रकार प्रवेश करूं।*

چوں ز قعر زمیں بروں آرم خود چنیں طاقتے نمی دارم

उसे मैं पृथ्वी की गहराइयों में से कैसे बाहर निकालूं, मैं तो ऐसी शक्ति नहीं रखता।*

قطع عُذر تو کردہ داور پاک نورِ عرش آمداست برسر خاک

पुनीत ख़ुदा ने तेरा बहाना दूर कर दिया, आकाश का प्रकाश पृथ्वी पर आ गया है।*

گر ترا رحم آں یگاں بکشد دولتت سوئے او عنان بکشد

यदि उस एक ख़ुदा की दया तुझे खींच ले तो तेरा सौभाग्य तुझे उस प्रकाश की ओर ले जाए।*

اللہ اللہ چہ ریخت از انوار ہست رشح دگر در آں گفتار

अल्लाह, अल्लाह उसने कैसे-कैसे प्रकाश बिखेरे हैं इस वाणी में तो और ही प्रकार की वदान्यता है।*

جہل گردد زدیدنش یکسو رو عہد صد کشائشے زاں رو

उसके देखने से अज्ञानता दूर हो जाती है तथा उसके दर्शन से सैकड़ों समस्याओं का समाधान हो जाता है।*

نور بار آورد تلاوت او عالمے زیر بار منّت او

उसकी (क़ुर्आन) तिलावत (अध्ययन) प्रकाश रूपी फल लाती है, एक संसार उसके उपकारों के नीचे दबा हुआ है।*

چشم بد دور ایں چہ ہست جمال ہست یک چشمۂ ز آب زلال

बुरी नज़र न लगे यह सौन्दर्य कैसा अदभुत है यह तो मानो स्वच्छ पानी का एक झरना है।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

आवश्यकता नहीं आई क्योंकि अब करोड़ों लोग भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलते और अपने बच्चों को सिखाते हैं अतिरिक्त इसके कि जैसा हमने अभी ऊपर उल्लेख

शेष हाशिया नं. (11)

تا جہاں رسم دلبری بنہاد کس چو او دلبری ندارد یاد

संसार में जब से प्रीत की परम्परा का प्रचलन हुआ है किसी की
कल्पना में भी ऐसा प्रियतम नहीं आया।*

آں شعاعے کزو شداست عیاں کس ندیدہ ز مہر و مہ بجہاں

वह प्रकाश जो उससे प्रकट हुआ किसी ने इस संसार में सूर्य और
चन्द्रमा में भी नहीं देखा।*

Ⓟ چند بر عقل خام نازکنی چہ کنم تا تو دیدہ بازکنی Ⓟ316

तू अपूर्ण बुद्धि पर कहां तक अभिमान करता रहेगा, मैं क्या करूं
कि तू आंखें खोले।*

نقص خود بنگر و کمال خدا ذلّت خویشتن جلال خدا

तू अपनी अपूर्णता देख और ख़ुदा की पूर्णता देख, अपना अपमान
देख और ख़ुदा का प्रताप देख*

از رہ عقل راہ ربّ مجید کس ندید است و کس نخواہد دید

बुद्धि के माध्यम से श्रेष्ठतम ख़ुदा का मार्ग न किसी ने कभी देखा
और न कभी देखेगा।*

اندر آنجا کہ سوختن باید چوں رہے از قیاس بکشاید

ऐसा स्थान जहां जलने की आवश्यकता हो वहां मात्र अनुमान से
किस प्रकार मार्ग खुल सकता है।*

تا نشد وحی حق مدد فرما تا نیاوُرد بو نسیم صبا

जब तक ख़ुदा की वह्यी ने सहायता न की और जब तक वसन्त
की वायु सुगन्ध न लाई*

عقل را زاں چمن نہ بود خبر طائر فکر بود سوختہ پر

उस समय तक बुद्धि को इस तपन का ज्ञान न था और कल्पना
रूपी पक्षी के पर जले हुए थे।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

किया है। व्यक्तिगत योग्यता भी जो इल्हाम पाने के लिए आवश्यक शर्त है, प्रत्येक मनुष्य में नहीं पाई जाती। Ⓟयदि किसी में व्यक्तिगत योग्यता पाई जाए तो वह अब Ⓟ369

शेष हाशिया नं. (11)

آں صبا نکہتے زیار آوُرد   تا خرد نیز رو بکار آورد

वह वसन्त की वायु (वह्यी) यार की ओर से एक ख़ुशबू लाई यहां तक कि बुद्धि भी काम करने लगी।*

بارہا آب خود نگار آورد   تا نخیل قیاس بار آوُرد

कई बार वह प्रियतम स्वयं पानी लाया यहां तक बुद्धि का वृक्ष फलीभूत हो गया।*

وقت عیش است و موسم شادی   تو چہ در سوگ و ماتم افتادی

यह तो भोग-विलास का समय, और प्रसन्नता की ऋतु है, तू क्यों मातम और शोक में ग्रसित है।*

تند بادے بخواہ از دادار   تا خس و خار تو برد یک بار

ख़ुदा तआला से एक ऐसी आंधी मांग कि तेरा कूड़ा-करकट तुरन्त उड़ जाए।*

در خور و مہ شکے نگیرد راہ   تو ز دلدار خویش دیدہ بخواہ

सूर्य और चन्द्रमा के संबंध में कोई सन्देह नहीं हुआ करता, तू अपने प्रियतम से आंखें मांग।*

گمرہی تا دمے کہ سرتابی   چوں بجوئی ز صدق دل یابی

तू उस समय तक पथ-भ्रष्ट है जब तक कि तू उपद्रवी है, जब सच्चे हृदय से तलाश करेगा तो उसे पा लेगा।*

نیستی طالب حقیقت راز   بس ہمیں مشکل است اے ناساز

तू सत्य का अभिलाषी ही नहीं है। हे मूर्ख यही तो कठिनाई है।*

بروجودش ز صنعت استدلال   ایں مجاز است نے چو اصل وصال

ख़ुदा के अस्तित्व पर उसकी शिल्पकारियों से सिद्ध करना केवल कल्पना है न कि सच्चा मिलन।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

भी इल्हाम के माध्यम से अपनी आवश्यकताओं में ख़ुदा तआला से सूचना पा सकता है तथा ख़ुदा उसे कदापि व्यर्थ नहीं छोड़ता। ख़ुदा की गहरी दृष्टि प्रत्येक मनुष्य की

शेष हाशिया नं. (11)

وصلش از آلۂ مجازی نیست　　باز کن دیدہ جائے بازی نیست

उसका मिलन काल्पनिक माध्यम से नहीं हुआ करता, आंखें खोल यह मज़ाक नहीं है।*

گر بر آتش دو صد جگر سوزی　　نیستت از قیاس پیروزی

यदि तू अग्नि पर दो सौ कलेजे भी कबाब करे तब भी बुद्धि द्वारा सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।*

خبرے نیستت ز جانا نہ　　مے زنی ہرزہ گام کورانہ

तुझे तो प्रियतम की सूचना भी नहीं और अंधाधुंध व्यर्थ क़दम मार रहा है।*

آں یقینے کہ بخشدت دادار　　چوں قیاس خودت نہد بکنار

वह विश्वास जो ख़ुदा तुझे प्रदान करता है वैसा विश्वास तेरी अपनी बुद्धि तेरे पास कब ला सकती है।*

آں یکے از دہان دلدارے　　نکتہ ہائے شنید و اسرارے

एक तो वह है जिसने प्रियतम के अपने मुख से मर्म और रहस्य सुने*

و آں دگر از خیال خود بگماں　　پس کجا باشد ایں دو کس یکساں

और दूसरा वह जो सन्देह में गिरफ़्तार है। अत: ये दोनों समान किस प्रकार हो सकते हैं।*

اے کہ مغرور راہ مظنونی　　تو نہ عاقل کہ سخت مجنونی

हे वह व्यक्ति जो कल्पना और अनुमान के मार्ग पर अभिमानी है तू बुद्धिमान नहीं अपितु नितान्त पागल है।*

آں خدا را کزوست منت ہا　　بشمری زیر منّت عقلاء

वह ख़ुदा जो उपकार का उद्गम है तू उसे बुद्धिमानों का आभारी समझता है।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

योग्यता की गहराई तक पहुंची हुई है। वह योग्य को अपनी योग्यता प्रकट करने के लिए कभी ®वंचित नहीं रखता तथा ऐसा कभी नहीं होता कि एक व्यक्ति ख़ुदा के ®370

शेष हाशिया नं. (11)

ایں خدائی عجیب در دل تست　　　که چنیں است زار و مانده و سُست

यह अदभुत ख़ुदा तेरे हृदय में समाया हुआ है जो ऐसा निर्बल, लाचार और सुस्त है।*

تانہ از عاقلاں مدد ہا یافت　　　نتوانست سوئے خلق شتافت

कि जब तक बुद्धिमानों की ओर से उसे सहायता न मिली तब तक वह सृष्टि (मख़लूक़) की ओर न आ सका।*

کے پسند و خرَد کہ آں اکبر　　　شہرتے یافت از طُفیلِ بشر

बुद्धि इस बात को किस प्रकार स्वीकार कर सकती है कि ख़ुदा ने मनुष्य के कारण समस्त ख्याति प्राप्त की है।*

شبِ تارست و دشت و بیم دواں　　　چوں بخوابی بغفلت اے ناداں

अंधकारमय रात है, जंगल है और हिंसक जानवरों का भय है मूर्ख फिर तू क्यों असावधानी की नींद सो रहा है।*

خیز و برحال خود نگاہ بکن　　　خطر راہ بہ بیں و آہ بکن

उठ और अपनी दशा पर दृष्टि डाल, मार्ग के ख़तरों को देख और आहें भर।*

خیز و از نفس خود بپرس نشاں　　　کہ چہ خواہد مراتب عرفاں

उठ और अपनी आत्मा से ही यह बात पूछ कि वह मारिफ़त की कैसी-कैसी श्रेणियां मांगती है।*

مے تپد از برائے رفع حجاب　　　یا قیاسش بس است در ہر باب

क्या वह पर्दे दूर होने के लिए तड़प रहे हैं अथवा प्रत्येक बात में वह कल्पना को पर्याप्त समझता है।*

افلا تبصرون گفت خدا　　　خیز و در نفس چو تعطّش ہا

ख़ुदा ने 'अफ़ला तुबसिरून' (क्या तुम नहीं देखते) फ़रमाया है। उठ और अपनी आत्मा की प्यास की सच्चाई ज्ञात कर।*

☆ وفی انفسکم افلا تبصرون①

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

① अज़्ज़ारियात : 22

ज्ञान को ख़ुदा को पहचानने, वली (ऋषि) होने या नुबुव्वत तथा रसूल होने की योग्यता रखता है और फिर कुछ पार्थिव घटनाओं के कारण या जंगली पैदायश होने

शेष हाशिया नं. (11)

تو اسیری بصد ہزار خطا　　ہر خطائے بتر ز اژدرہا

तू लाखों गलतियों में लिप्त है और हर गलती अजगरों से भी अधिक ख़तरनाक है।*

عجب ایں کوری است و بے بصری　　کہ ازیں کار خام بے خبری

यह अंधापन और नेत्रहीनता विचित्र प्रकार की है कि इस कच्ची बात से भी अनजान है।*

سخن راست است نے ز خطاست　　تو نہ فہمی سخن خطا اینجاست

बात सच्ची है, ग़लत नहीं है। ग़लती यह है कि तू बात को नहीं समझता।*

سِرّ سربستہ و ورائے وراء　　کہ کشاید بدون وحی خدا

गुप्त और नितान्त छुपे हुए रहस्य ख़ुदा की वह्यी के अतिरिक्त कौन प्रकट कर सकता है।*

راز ذات نہاں کہ گوید باز　　جز خدائے کہ ہست مَحرم راز

उस गुप्त हस्ती का भेद कौन प्रकट कर सकता है उस ख़ुदा के सिवाए जो मर्मज्ञ है।*

مشت خاکے فتادہ است براہ　　تند بادے بجوید از درگاہ

मनुष्य एक मुट्ठी भर धूल है जो मार्ग में पड़ी हुई है वह ख़ुदा के दरबार से आंधी मांगता है।*

تو نہ فہمی ہنوز ایں سخنم　　در دلت چوں فرو شوم چہ کنم

तू अभी मेरी यह बात नहीं समझता, मैं तेरे हृदय में कैसे उतर जाऊं।*

اے دریغا کہ دل ز درد گداخت　　درد مارا مخاطبے نشناخت

अफ़सोस कि हमारा हृदय शोक के कारण पिघल गया है परन्तु हमारी पीड़ा को सम्बोधित ने फिर भी नहीं पहचाना।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

के कारण वह उसी स्थिति में मर जाए तथा ख़ुदा उसे उस श्रेष्ठ ®श्रेणी तक न ®371
पहुंचाए जिस तक पहुंचने के लिए उसे योग्यता दी गई थी अपितु जंगली और गूंगा,

शेष हाशिया नं. (11)

اے خورِ روئے یار زود برآ　　　که دل آزرد از شب یلدا

हे प्रियतम के मुख रूपी सूर्य शीघ्र उदय हो कि अंधकारमय रात के कारण हृदय शोक ग्रस्त है।*

یک نگاہے بس است در دیں ہا　　　کاش دیدے کسے ز خوف خدا

धार्मिक समस्याओं में एक दृष्टि ही पर्याप्त है काश कोई ख़ुदा के भय के साथ उन्हें देखता।*

آشکار است کفر و ایماں ہم　　　گفتمت آشکار و پنہاں ہم

कुफ्र भी प्रकट है और ईमान भी। यह बात मैंने तुझे प्रत्यक्ष तौर पर बताई और गुप्त तौर पर भी*

ترک خوف خدا و بدعملی　　　ایں دو چیز اند تخم تیرہ دلی

ख़ुदा के भय को छोड़ देना और दुष्कर्म करना यही दो बातें निष्ठुरता का कारण हैं।*

ورنہ روئے نگار نیست نہاں　　　ہر حجابے ز تست اے بیجاں

अन्यथा प्रियतम का चेहरा तो छुपा हुआ नहीं है हे मृतप्राय: हृदय पर जो भी पर्दा है वह स्वयं तेरी ओर से है।*

از رگ جاں قریب تر یارست　　　ہر زہ از تو درازی کار است

यार तू मुख्य धमनी (जीवन-नाड़ी) से भी अधिक निकट है। मात्र तेरी बेहूदगी ने बात को लम्बा कर दिया है।*

®ہر کہ برخواست از خودی یکبار　　　خود نشیند بکار او دادار ®317

जो अपने अहंकार से सहसा पृथक हो जाता है तो परमेश्वर उस का कार्य स्वयं संभाल लेता है।*

حیّ و قیّوم و قادر ست نگار　　　تو مپندار مردہ اے مردار

तथा प्रियतम तो जीवित, जीवित रखने वाला और शक्तिमान है। हे अधम मनुष्य तू उसे मुर्दा न समझ।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

असभ्य और मूर्ख वही रहता है जो अपनी आदत में अपूर्ण, बेकार और चौपायों की भांति है। अतिरिक्त इसके जबकि ख़ुदा ने करोड़ों लोगों को तरह तरह की भाषाएं

शेष हाशिया नं. (11)

میل رفتن گرست جانب یار جانب صدق را عزیز بدار

यदि तुझे प्रियतम की ओर जाने की रुचि है तो सत्य के पहलू को प्रमुख रख।*

در شکے ہست خیز و تجربہ کن تا شکوکت بر آورم از بُن

और यदि कुछ सन्देह है तो उठ और अनुभव कर ले ताकि मैं तेरे सन्देह समूल निकाल फेंकूं।*

گر خرد پاک از خطا بودے ہر خرد مند باخدا بودے

यदि बुद्धि त्रुटियों से सुरक्षित हुआ करती तो चाहिए था कि प्रत्येक बुद्धिमान ख़ुदा वाला होता।*

کس نرست از ذہول و سہو و خطا جز خداوند عالم الاشیاء

कोई भी भूल-चूक और त्रुटि से बचा हुआ नहीं सिवाए उस ख़ुदा के जो प्रत्येक वस्तु का ज्ञान रखता है।*

نظرے کن زروئے استقرا گر کسے رستہ است بازنما

तू खोज करने की दृष्टि से विचार कर, यदि कोई इन बातों से बचा है तो तू ही बता दे।*

ورنہ باز آز شورش و انکار جیفۂ کذب را مخور زنہار

अन्यथा उपद्रव और इन्कार से हट जा और झूठ की सड़ी हुई लाश को कदापि न खा।*

آخرت باخدا فتد سروکار خود نگہ کن بترس زاں دادار

अन्ततः तुझे ख़ुदा से ही काम पड़ेगा, तू स्वयं ही सोच ले और उस न्यायकर्ता से डर।*

در خرابات اوفتاد دلے خودبخود چوں بروں شود ز گلے

जो हृदय मदिरागृह में पड़ा हुआ है वह दलदल से स्वयं ही कैसे निकल सकता है।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

®प्रदान करके अन्य लोगों के लिए सामान्य शिक्षा का द्वार खोल दिया है, तो ऐसी ®372 स्थिति में इस विशेष स्थिति के अतिरिक्त कि जिसमें कोई निशान प्रकट करना

शेष हाशिया नं. (11)

رو بہ باطل نہادۂ باز آ   دل بہ بد روئے دادۂ باز آ

तू ने असत्य की ओर मुख फेर रखा है, हट जा। एक कुरूप पर मुग्ध हो गया है तू हट जा।*

در مزابل فتادۂ باز آ   ایں کجا ایستادۂ باز آ

तू अपवित्रता की कौड़ियों पर पड़ा हुआ है, हट जा, कहां खड़ा है, हट जा।*

آخر اے لافِ زن ز عقل و خرد   ہوش کُن پا مَنِہ بروں از حدّ

हे बुद्धि और बोध की शेखी बघारने वाले होश में आ तथा पैर सीमा से बाहर न रख।*

دم زدن در خیالہائے محال   ہست شوریدہ مَشرَبی و ضلال

असंभव बातों का दावा करना दुष्चरित्रता और पथ-भ्रष्टता है।*

ہر کہ رخت افگند بویرانہ   می نماید بتر زِ دیوانہ

जो व्यक्ति निर्जन स्थानों में अपना ठिकाना बनाता है वह पागलों से भी निकृष्ट है।*

چوں چنیں سرزنی ز راہ صواب   چہ نہ دانی کہ آخر است حساب

मार्ग से इस प्रकार क्यों इन्कार करता है क्या नहीं जानता कि अन्ततः हिसाब देना पड़ेगा।*

پائے تو لنگ منزل تو دراز   ترسَمَت چوں رَسی ازیں تگ و تاز

तेरा पैर लंगड़ा और लक्ष्य दूर है। मुझे भय है कि इस स्थिति में तू लक्ष्य तक कैसे पहुंचेगा।*

خود چنیں است فطرت انساں   کہ چو بیند کہ مشکل است گراں

मनुष्य का अपना स्वभाव भी यही है कि कठिनाई को कठिन देखता है।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

निहित हो तथा समस्त परिस्थितियों में बतौर इल्हाम भाषा सीखने की कुछ भी ®373 आवश्यकता नहीं। ख़ुदा तआला जो स्वच्छन्द नीतिवान है बिना ®आवश्यकता के

शेष हाशिया नं. 11

اول از زور و تاب و طاقت خویش　　　می کند سعی و جہد بیش از بیش

तो प्रथम अपने ही बल, शक्ति और ताक़त के साथ अधिक से अधिक परिश्रम और प्रयास करता है।*

تا مگر کار بستہ بکشاید　　　زیر بار سپاس کس ناید

ताकि रुका हुआ काम चल निकले और वह किसी के उपकार का कृतज्ञ न हो।*

چوں بہ بیند کہ کار رفت از دست　　　رسن اختیار رفت از دست

परन्तु जब देखता है कि कार्य उसकी सामर्थ्य से बाहर है और अधिकार की रस्सी उसके हाथ से निकल आई है।*

رو نہد سوئے کوچۂ یاراں　　　مددے جوید از مددگاراں

तो अपने मित्रों की गली की ओर जाता है और सहायकों से सहायता मांगता है।*

زور دست برادراں جوید　　　نزد ہر کارداں ہمی پوید

अपने भाइयों के हाथों का बल तलाश करता है तथा प्रत्येक परिचित के पास दौड़कर जाता है।*

چوں بماند زہر طرف ناچار　　　نالد آخر بدرگہِ دادار

फिर जब हर ओर से विवश हो जाता है जो अन्त में ख़ुदा के दरबार में रोता है।*

نعرہ ہا میزند بحضرت پاک　　　و از تضرّع جبیں نہد برخاک

उस पवित्र दरगाह के सामने चीखें मारता है और नम्रता पूर्वक नतमस्तक होता है।*

در خود بندو و بگرید زار　　　کاے کشائیندۂ رہِ دشوار

अपना द्वार बन्द करके रो-रो विनती करता है कि हे संकट मोचक !*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

कोई कार्य नहीं करता तथा निरर्थक और बेकार साधनों को व्यर्थ में अनिवार्य नहीं समझता। कुछ अज्ञान आर्य एक संस्कृत को परमेश्वर की भाषा ठहरा कर अन्य

शेष हाशिया नं. 11

گنہ من بہ بخش و پردہ بہ پوش تانہ دشمن زند بشادی جوش

मेरे पाप क्षमा कर और दोषों को गुप्त रख ताकि शत्रु प्रसन्नता से खिल न उठे।*

چوں چنیں فطرت بشر افتاد زاں سہ گونہ صفت کہ کردم یاد

जब मानव स्वभाव यही है अर्थात उसमें वे तीनों गुण विद्यमान हैं जिन का मैंने वर्णन किया है।*

آں حکیمش ز لطف بے پایاں حسب فطرت بداد ہم ساماں

तो उस हकीम ने भी असीम सहानुभूतिपूर्वक उसके स्वभाव के अनुसार साधन प्रदान किए।*

ازپئے جہد خویش عقلش داد راہ فکر و قیاس و خوض کشاد

परिश्रम और प्रयास हेतु ख़ुदा ने उसे बुद्धि प्रदान की। विचार, कल्पना और चिन्तन का मार्ग खोल दिया*

و از پئے کار با ہمیں امداد رحم در قلب یک دگر بنہاد

परस्पर सहायतार्थ उसने एक दूसरे के हृदय में दया डाल दी।*

از شعوب و قبائل و اقوام کرد کار نظام و ربط تمام

बिरादरी, सम्प्रदाय और जातियां बना कर उसने एक अनुशासन की स्थापना की और सम्बन्धों को पूर्ण कर दिया।*

و از پئے حاجت فیوض خدا کرد الہام را ز رحم عطا

और ईश्वरीय वरदान की आवश्यकतानुसार अपनी कृपा से इल्हाम प्रदान किया।*

تا رَسَد کار آدمی بکمال تا میسر شود ہمہ آمال

ताकि मनुष्य का कार्य अपनी पूर्णता को पहुंच जाए ताकि समस्त मनोकामनाएं पूर्ण हो जाएं।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

Ⓟ374समस्त भाषाएं जो ख़ुदा तआला की Ⓟसैकड़ों अद्भुत और विलक्षण शिल्पकारियों से भरी हुई हैं मनुष्यों का आविष्कार बताते हैं जैसे मनुष्य के हाथ में भी एक प्रकार

शेष हाशिया नं. (11)

تا بحدِّ یقین رسد تعلیم زاں دوگونہ شود رہ تفہیم

ताकि शिक्षा विश्वास की सीमा तक जा पहुंचे तथा बुद्धि का मार्ग दोगुना हो जाए।*

زاں دوگونہ مناہج تلقیں می کشاید رہ حصول یقیں

उपदेश के इन दो मार्गों से विश्वास प्राप्ति का मार्ग खुल जाता है।*

ہر طبیعت بحسب فہم و خیال می براید بداں زچاہ ضلال

प्रत्येक स्वभाव अपनी प्रतिभा और विचार के अनुसार इन संसाधनों द्वारा पथभ्रष्टता के कुएं से बाहर निकल आता है।*

غرض آں میل فطرتے کہ خدا کرد در فطرت بشر پیدا

निष्कर्ष यह वह स्वाभाविक अभिरुचि जो परमेश्वर ने मानव-स्वभाव में उत्पन्न की है*

آں ہمی خواست وحی ربّانی نظرے کن بغور تا دانی

वह भी ईश्वरीय इल्हाम का इच्छुक था। ध्यान से देख ताकि तू सत्य को समझे।*

فطرتت چوں فتادہ است چناں چوں کشی سر ز فطرت اے ناداں

जब तेरा स्वभाव ही ऐसा बना है फिर हे मूर्ख! इस स्वभाव से क्यों विमुख होता है।*

اقتضائے طبیعتِ انساں کہ نہاد ست ایزد منّان

मानव-स्वभाव की मांग जो उस उपकारी परमेश्वर ने उसमें प्रतिभूत की है।*

گہ بشر را کش بسوئے قیاس تا نہد کار را بعقل اساس

कभी मानव को कल्पना की ओर खींचता है ताकि अपने कार्य का आधार बुद्धि पर रखे।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

की ख़ुदाई है कि परमेश्वर ने तो केवल एक भाषा प्रकट की, परन्तु लोगों ने वह शक्ति दिखाई कि बीसियों भाषाएं उससे उत्तम आविष्कृत कर लीं। भला हम आर्यों

शेष हाशिया नं. 11

گاہ دیگر کشد بمنقولات — تا بیار آمد از بیان ثقات

फिर दूसरे समय वही मांग उसे रिवायत (कही हुई बात का वर्णन) की ओर लाती है ताकि विश्वसनीय लोगों के बयान से सन्तुष्टि धारण करे।*

زینکہ آرام قلب و اطمینان — جز باخبار صادقاں نتواں

क्योंकि हृदय की शान्ति और सन्तोष सदात्माओं की रिवायतों के अभाव में उत्पन्न नहीं हो सकता।*

®318 ®نیز چوں واجب است در تعلیم — کہ بقدر خرد بوَد تفہیم

एवं शिक्षा के लिए यह भी आवश्यक है कि (शिष्य) की बुद्धि के अनुसार समझाया जाए।*

لا جرم راہ کشادہ اند دوتا — تا رَسَد ہر طبیعتے بخدا

इसलिए दो मार्ग खोल दिए हैं ताकि हर स्वाभाव का व्यक्ति ख़ुदा तक पहुंच सके।*

تا ذکی و غبی و اشرف و دون — رہ بیابند سوئے آں بیچون

ताकि कुशाग्र बुद्धि और कुंठ बुद्धि, सुशील और नीच उस अद्वितीय परमेश्वर की ओर मार्ग पाएं।*

دیگر ایں است نیز ہم برہان — بر ضرورات وحی آں رحمان

उस दयालु ख़ुदा की वह्यी की आवश्यकता पर एक सबूत यह भी है*

کہ چنیں شہرت خدائے یگاں — ہرگز از جہد عقلہا نتواں

कि एक परमेश्वर की इतनी ख्याति मात्र अक़्लों के प्रयास से नहीं हो सकती थी।*

گر نہ گفتے خدا اَنَا الْمَوْجُوْد — چوں فتادے جہاں برش بسجود

यदि ख़ुदा स्वयं ही न कहता कि मैं मौजूद हूं तो समस्त संसार उसके सामने नत मस्तक क्यों होता*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

℗375℗से पूछते हैं कि यदि यही सत्य है कि संस्कृत ही परमेश्वर के मुख से निकली है और अन्य भाषाएं मनुष्यों की कारीगरी हैं और परमेश्वर के मुख से दूर रही हुई हैं

शेष हाशिया नं. (11)

ایں ہمہ شور ہستی آں یار   کہ ازو عالم ست عاشق زار

उस यार की हस्ती के बारे में इस शोर से विदित होता है कि समस्त जगत उसका*

خود بینداخت آں خدائے جہاں   نہ بشر کرد بر سرش احساں

यह (शोर) भी समस्त लोगों के प्रतिपालक ने स्वयं ही डाला है न कि मनुष्य ने उस पर उपकार किया है।*

اے دریغ ایں چہ آدمی زادند   کز خدا درخودی بیفتادند

अफ़सोस ये कैसे इन्सान हैं जो ख़ुदा को छोड़कर अहंवाद में पड़ गए।*

عقل چوں شد چو فیض وحی نہ بود   دیدہ را زِ آفتاب ہست وجود

जब वह्यी का वरदान ही न था तो बुद्धि कहां से आ गई, आंख का अस्तित्व तो सूर्य के कारण है*

او اگر نورِ خدا نہ بخشیدے   چشم ما خود بخود چساں دیدے

यदि सूर्य अपना प्रकाश न देता तो हमारी आंख स्वत: किस प्रकार देख सकती।*

بلبل از فیض گل سخن آموخت   منکر ازوے ہماں کہ چشم بدوخت

फूल के वरदान से बुलबुल ने बात करना सीखा इस बात का इन्कार वही व्यक्ति कर सकता है जो अपनी आंखें बन्द कर ले।*

ہمہ عالم گواہ آلائش   اَبلَہ منکر ز وحی و القائش

सम्पूर्ण विश्व ईश्वर की ने'मतों का साक्षी है परन्तु मूर्ख व्यक्ति ख़ुदा की वह्यी और इल्क़ा का इन्कारी है।*

مہر پاکاں بجان خود بنشاں   تا شوی جان من ہم از پاکاں

अपने हृदय में पवित्रात्मा लोगों के प्रेम को बैठा ताकि हे मेरे प्राण तू भी पवित्रात्माओं में सम्मिलित हो जाए।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

तो तनिक बताओ तो सही कि वे कौन से विशेष कौशल हैं जो संस्कृत में पाए जाते हैं तथा अन्य भाषाएं ®उनसे रिक्त हैं।क्योंकि मानव निर्मित कलाम पर परमेश्वर का®376

शेष हाशिया नं. 11

ایں خرد جملہ خلق میدارند   نازکم کن کہ چوں تو بسیار اند

यह बुद्धि तो समस्त सृष्टियों के पास है इस पर गर्व न कर क्योंकि तुझ जैसे बहुत हैं।*

چارۂ ما بغیر یار کجا   ما کجائیم و عقل زار کجا

प्रियतम के अतिरिक्त हमारा उपचार और कहां है, हमारी हस्ती क्या और हमारी कमज़ोर बुद्धि ही क्या।*

زہر فرقت چشی و ناکامی   باز منکر ز وحی و الہامی

तू जुदाई का विष चख रहा है और असफल है इस पर भी वह्यी और इल्हाम का इन्कारी है।*

جان تو برلب از نخوردن آب   باز از آبِ زندگی رو تاب

पानी न पीने के कारण तेरे प्राण होठों पर हैं फिर भी अमृत से मुख फेर रखा है।*

کور ہستی و کیں بدیدہ وراں   وہ چہ داری شقاوت و خسران

स्वयं तो अंधा है और आंख वालों से शत्रुता रखता है। तेरे दुर्भाग्य और क्षति पर खेद है।*

داروئے دردِ دِل نہ فطنتِ ماست   آں بدار الشفائے وحی خداست

हृदय के कष्ट की दवा हमारी बुद्धि नहीं है वह दवा तो ख़ुदा की वह्यी के चिकित्सालय में है।*

نشود عین زر تصور زر   زر ہمانست کوفتد بہ نظر

स्वर्ण की कल्पना स्वर्ण नहीं हुआ करती अपितु स्वर्ण वही है जो दिखाई दे जाए।*

ہست برعقل منّت الہام   کہ از پخت ہر تصوّر خام

बुद्धि पर इल्हाम का यह उपकार है कि उसके कारण हर अपूर्ण कल्पना दृढ़ हो गई।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

कलाम अवश्य श्रेष्ठ होना चाहिए, क्योंकि वह उसी से ख़ुदा कहलाता है कि अपने अस्तित्व में अपनी विशेषताओं में, अपने कार्यों में सर्वश्रेष्ठ अद्वितीय और अनुपम

शेष हाशिया नं. 11

آں گماں برد و ایں نمود فراز   آں نہاں گفت و ایں کشود آں راز

उसने तो विचार किया और उसने खुल्लम-खुल्ला प्रकट कर दिया। उसने गुप्त कहा और रहस्य को प्रकट कर दिया।*

آں فرو ریخت ایں بکف بسپرد   آں طمع داد و ایں بجا آورد

उसने गिरा दिया और उसने हाथ में दिया, उसने मात्र लालच दिया और उसने पूरा कर दिया।*

آنکہ بشکست ہر بُتِ دلِ ما   ہست وحیٔ خدائے بے ہمتا

वह वस्तु जिसने हमारे हृदय की हर मूर्ति को तोड़ दिया वह अद्वितीय ख़ुदा की वह्यी होती है।*

آنکہ مارا رُخِ نگار نمود   ہست الہام آں خدائے ودود

वह जिसने हमें प्रियतम का चेहरा दिखा दिया वह महरबान ख़ुदा का इल्हाम ही तो है।*

آنکہ داد از یقین دل جامے   ہست گفتار آں دلارامے

वह जिसने हमें हार्दिक विश्वास का प्याला दिया वह उस प्रियतम का वार्तालाप ही तो है।*

وصل دلدار و مستی از جامش   ہمہ حاصل شدہ ز الہامش

प्रियतम का मिलन तथा उसकी मदिरा के प्याले का नशा सब उसके इल्हाम से प्राप्त हुए।*

وصل آں یار اصل ہرکامیست   وانکہ زیں اصل غافل آں خامیست

प्रत्येक लक्ष्य का मूल उस प्रियतम का मिलन है तथा जो उस मूल से लापरवाह है वह कच्चा है।*

بے عطیّات ما ہمہ بے زاد   بے عنایات ما ہمہ برباد

उसकी ने'मतों के अभाव में हम सब ख़ाली हाथ हैं तथा उसकी अनुकम्पाओं के बिना हम सब बरबाद हैं। *

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

है। यदि हम यह मान लें कि संस्कृत परमेश्वर ®का कलाम है जो हिन्दुओं के पूर्वजों ®377 पर उतरा है तथा अन्य भाषाएं दूसरे लोगों के पूर्वजों ने इस कारण कि वे हिन्दुओं के

शेष हाशिया नं. (11)

यहां हम इस बात का लिखना भी उचित समझते हैं कि हमारे उपर्युक्त वर्णन पर जो कि ख़ुदा के कलाम की आवश्यकता हेतु लिखा गया है पंडित शिवनारायण साहिब अग्निहोत्री ने जो ब्रह्म समाज लाहौर के एक श्रेष्ठ सदस्य हैं अपनी राय में कुछ हस्तक्षेप करके यह चाहा है कि किसी प्रकार इस सत्य बात के प्रभाव को अपनी क़ौम तक पहुंचने से रोक दें। अत: उन्होंने इस सन्दर्भ में बहुत ही हाथ-पैर मारे हैं और नितान्त परिश्रम करके एक समीक्षा भी लिखी है, परन्तु चूंकि प्रसिद्ध कहावत 'सांच को आंच नहीं' सत्य का सूर्य किसी के छुपाने से छुप नहीं सकता। इसलिए पंडित जी ने जितना प्रयास किया उसका इसके अतिरिक्त और कोई परिणाम नहीं हुआ कि बुद्धिमानों पर स्पष्ट हो गया कि पंडित साहिब सत्य को स्वीकार करने से ®कितनी घृणा करते हैं। अत: यद्यपि पंडित साहिब का वह लेख ®319 इस योग्य कदापि नहीं कि उसके खंडन की ओर ध्यान दिया जाए अपितु स्वयं हमारे पूर्व लेख को ध्यानपूर्वक पढ़ना उसके खण्डन के लिए पर्याप्त और पूर्ण है, परन्तु इस दृष्टि से ताकि पंडित साहिब कुछ अफ़सोस न करें या उनके कुछ मित्र हमारी इस ख़ामोशी को अपनी सुधारणा से किसी प्रकार की विवशता न समझ बैठें। नीतिगत मालूम हुआ कि यद्यपि पंडित साहिब का लेख कैसा ही अवास्तविक है तब भी लेखकों पर उसकी वास्तविकता प्रकट की जाए। अत: स्पष्ट हो कि पंडित साहिब ने हमारे सबूत के मुक़ाबले पर अपनी समीक्षा में इस बात पर बल दिया है कि जिस ढंग से आकाशीय किताबों का इल्हामी होना स्वीकार किया जाता है वह ढंग बुद्धि की दृष्टि से निषिद्ध और दुर्लभ है और प्रकृति के नियमों के विपरीत होने के कारण कदापि उचित नहीं अर्थात पंडित साहिब की सुशील दृष्टि में उस इल्हाम के अस्तित्व की कदापि संभावना नहीं जिसे ख़ुदा का कलाम कहा जाता है और जो केवल नीतिवान और अन्तर्यामी ख़ुदा की ओर से उतरता है तथा उसके

पूर्वजों से अधिक निपुण और दक्ष थे स्वयं बना ली हैं, परन्तु क्या हम यह भी मान
ⓟ378 सकते हैं कि वे लोग हिन्दुओं ⓟके परमेश्वर से भी कुछ श्रेष्ठ थे जिनकी पूर्ण क़ुदरत

शेष हाशिया नं. (11)

पुनीत अस्तित्व की तरह प्रत्येक सन्देह, आशंका, ग़लती और भूल-चूक से पूर्णतया पवित्र होता है तथा ख़ुदा के कलाम में जो पूर्ण विशेषताएं चाहिए उन समस्त विशेषताओं से विशेष्य होता है अर्थात जैसे ख़ुदा अन्तर्यामी है वह कलाम भी परोक्ष के ज्ञान पर आधारित होता है और जैसे ख़ुदा नीतिवान और महान ज्ञाता है वह कलाम भी नीति और ज्ञान को मिलाता है और जैसे ख़ुदा ग़लती, झूठ, त्रुटि और भूल से पवित्र है, वह कलाम भी इन समस्त बातों से पवित्र होता है तथा मानवीय विचारों का उसमें कुछ भी हस्तक्षेप नहीं होता और न मनुष्य के अधिकार में है कि किसी प्रकार की पुनीतता और पवित्रता प्राप्त करके अथवा कोई और बहाना और युक्ति को काम में लाकर व्यर्थ में वह इल्हाम अपनी आत्मा पर स्वयं ही प्रकट कर दिया करे तथा परोक्ष के प्रकाशों, गुप्त बातों और आकाशीय रहस्यों पर जब चाहे स्वयं ही परिचित हो जाए क्योंकि यदि ऐसा हो सकता तो मनुष्य भी ख़ुदा की भांति कण-कण का ज्ञान रखता तथा उस पर कोई वस्तु गुप्त न रह सकती तथा जिन जानकारियों से उसका प्रताप चमकता और उसकी आपदाएं दूर होतीं वे समस्त जानकारियां अपनी पुनीतता और पवित्रता की दृष्टि से स्वयं ही प्राप्त कर लेता तथा उसे कभी किसी दृष्टि से कष्ट और दुख न पहुंचता, परन्तु आश्चर्य कि पंडित साहिब ने बावजूद इतने इन्कार और आग्रह के जो उन्हें ख़ुदा के कलाम के सन्दर्भ में है फिर भी उन्होंने हमारे उन तर्कों और सबूतों को जो ख़ुदा के कलाम की आवश्यकता पर बतौर वास्तविक और निश्चित और युक्ति संगत हैं खण्डन करके नहीं दिखाया अपितु उनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। स्पष्ट है कि जिस स्थिति में हम ने ख़ुदा के कलाम की आवश्यकता तथा उसके अस्तित्व के सत्यापन पर पूर्ण सबूत लिख दिए
ⓟ320 ⓟथे अपितु नमूने के तौर पर कुछ इल्हाम प्रस्तुत भी कर दिए थे। अत: इस स्थिति में यदि पंडित साहिब सत्य के अभिलाषी और वक्ता होकर बहस

(शक्ति) ने सैकड़ों उत्तम भाषाएं बना कर दिखा दीं और परमेश्वर मात्र एक ही भाषा बना कर रह गया। जिन लोगों की नस्लों में द्वैतवाद घुसा हुआ है उन्होंने अपने

शेष हाशिया नं. 11

करते तो उनके लिए इसके अलावा अन्य कोई उपाय नहीं था कि वह हमारे सबूतों का खण्डन करके दिखाते और हमने इल्हाम की आवश्यकता तथा इल्हाम के अस्तित्व के सबूत में जो कुछ अपनी पुस्तक में दिया है उस सबूत को अपने तुलनात्मक तर्कों द्वारा समाप्त और दूर करते, परन्तु पंडित साहिब को भली प्रकार मालूम है कि इस ख़ाकसार ने दो बार क्रमश: दो पत्र रजिस्ट्री द्वारा इस उद्देश्य से उनकी सेवा में भेजे कि यदि उन्हें ख़ुदा के इस स्वभाव में कुछ शंका है कि वह कुछ बन्दों से वार्तालाप, सम्बोधन और संवाद करता है तथा उन्हें ऐसी बातों और ऐसे ज्ञानों से अपने विशेष कलाम द्वारा सूचित करता है कि जिन की महान प्रतिष्ठा तक वे विचार नहीं पहुंच सकते कि जिनका उद्देश्य और उद्गम मनुष्य के केवल सीमित विचार हैं। अत: सच्चाई और धैर्य से कुछ दिन ख़ाकसार के पास ठहर कर उस सत्य को जो उनकी दृष्टि में निषिद्ध, दुर्लभ तथा प्रकृति के नियम के विपरीत है स्वयं अपनी आंखों से देख लें और फिर सच्चों की भांति वह मार्ग धारण करें जिसका धारण करना सच्चे व्यक्ति की सत्य की शर्त तथा उसके अन्त:करण की शुद्धता का लक्षण है, परन्तु खेद है कि पंडित साहिब ने बावजूद सन्यास धारण करने के इस बात को जो वास्तविक सन्यास का प्रथम लक्षण है सत्याभिलाषियों की भांति स्वीकार नहीं किया अपितु इस के उत्तर में क़ुर्आन करीम के सन्दर्भ में अपने पत्र में कुछ वाक्य ऐसे लिखे जो एक सच्चे ख़ुदा से डरने वाले की लेखनी से कदापि नहीं निकल सकते। ज्ञात होता है कि पंडित साहिब को ख़ुदा की सच्चाई से केवल इन्कार ही नहीं अपितु शत्रुता भी है अन्यथा जिस स्थिति में ख़ुदा के कलाम के अस्तित्व के सत्यापन पर बौद्धिक और प्रमाणित तौर पर एक भारी सबूत दिया गया है और हर प्रकार के भ्रमों को समूल नष्ट कर दिया गया है तथा हर प्रकार के सन्तोष और सन्तुष्टि के लिए यह ख़ाकसार हर समय तैयार

ⓟ379 परमेश्वर को बहुत सी बातों में एक समान श्रेणी का व्यक्ति समझ रखा है। ⓟक्यों न हो, अनादि जो हुए, ख़ुदा के भागीदार जो ठहरे। यदि किसी के हृदय में यह भ्रम

शेष हाशिया नं. (11)

ख़ड़ा है। तो फिर द्वेष और व्यक्तिगत शत्रुता के अतिरिक्त और कौन सा कारण है जो पंडित साहिब को सत्य की स्वीकारिता में बाधक है।

अब यह भी देखिए कि हमारी जांच-पड़ताल के मुक़ाबले में पंडित साहिब के क्या-क्या बहाने हैं। सर्वप्रथम आप यह कहते हैं ब्रह्मसमाजी लोग इल्हाम को मानते तो हैं परन्तु जहां तक वह अपने मूल अर्थों और स्वाभाविक नियम से सम्बद्ध है फिर स्वाभाविक नियम की यह व्याख्या करते हैं कि वह कोई निश्चित और निर्धारित कलाम नहीं कि जो स्वभाव से हटकर किसी के हृदय पर उतरता हो तथा ऐसी बातों पर आधारित हो कि जो मानवीय शक्तियों से श्रेष्ठतर हों अपितु वे सामान्य विचार हैं जो पदों के
ⓟ321 अनुसार प्रत्येक मनुष्य के हृदय में ख़ुदा की ओर से आते हैं ⓟक्योंकि ख़ुदा की रूह पूर्ण, मौजूद, दृष्टा तथा समस्त कारणों के कारण होने से प्रत्येक कण तथा प्रत्येक अध्यात्मिक मनुष्य में कार्यरत रहती है। अतः जो व्यक्ति जितनी अध्यात्मिक ने'मतों तथा ख़ुदा के सानिध्य का भूखा और प्यासा होता है, जिस सीमा तक आन्तरिक जीवन को पुनीत रखता है, जितना स्वयं को ख़ुदा के सुपुर्द करता है और जितना बोध और ईमान स्वच्छ रखता है, उतना ही वह उस स्वाभाविक वरदान से वरदान प्राप्त होता है इस वरदान का प्रारंभ उसी दिन से है जिस दिन से मनुष्य की उत्पत्ति है। यह इल्हाम आन्तरिक है कि जो मानव आत्मा में होता है। इसलिए मानव आत्मा ख़ुदा की जीवित इल्हामी किताब है तत्पश्चात् फ़रमाते हैं कि चूंकि मानवता में अहंवाद भी सम्मिलित है इसलिए मनुष्यों के हृदयों में उत्पन्न होने वाले विचार जिनका नाम ब्रह्म-समाज वालों के निकट इल्हाम या इल्क़ा है वह पूर्ण विश्वसनीय नहीं हैं अपितु ब्रह्म-समाजी उन विचारों के सत्यापन हेतु जो सत्य और असत्य दोनों की आशंका रखते हैं सदाचारयुक्त शक्तियों को माप-दण्ड ठहराते हैं तथा जिस शक्ति के द्वारा यह फैसला करते हैं उसे

उत्पन्न हो कि ख़ुदा एक ही भाषा पर सन्तुष्ट क्यों न हुआ। यह भ्रम भी विचार की कमी से उत्पन्न हुआ है। यदि कोई बुद्धिमान विभिन्न महाद्वीपों के भिन्न-भिन्न

शेष हाशिया नं. (11)

बुद्धि कहते हैं। यह सार पंडित साहिब के भाषण का है। अब स्पष्ट है कि पंडित साहिब के इन समस्त भाषणों से यह मतलब निकलता है कि जिन वस्तुओं का नाम पंडित साहिब तथा उनके बन्धु इल्हाम रखते हैं वे केवल साधारण विचार हैं कि जो सामान्य मनुष्यों के हृदयों में सामान्यतया उत्पन्न होते हैं तथा जो पंडित साहिब के कथनानुसार ग़लती और भूल की आशंका से रिक्त नहीं हैं, परन्तु ख़ुदा की किताबों में जिस इल्हाम को ख़ुदा का कलाम और ख़ुदा की वह्यी तथा ख़ुदा से सम्बोधन और संवाद बोला जाता है वह प्रकाश ही अलग है जो मानव विचारों और शक्तियों से श्रेष्ठतर तथा उच्चतम है। पंडित साहिब इस आकाशीय प्रकाश के सन्दर्भ में जो एक परोक्ष की आवाज़ है जिसमें मनुष्य के विचार तथा उसके स्वभाव का लेशमात्र हस्तक्षेप नहीं है यह धारणा रखते हैं कि वह इस कारण से कि प्रकृति के विपरीत है तथा एक ख़ारिक आदत (मानव सामर्थ्य से श्रेष्ठतर) बात है इसलिए निषिद्ध और दुर्लभ है तथा कदापि वैध नहीं कि ख़ुदा अपना कलाम किसी मनुष्य पर उतारे अपितु उन्हीं विचारों का नाम है जो सामान्यतया लोगों के हृदयों में सामान्य और जन्मजात तौर पर उठा करते हैं तथा कभी सत्य कभी असत्य, कभी उचित कभी अनुचित, कभी पवित्र कभी अपवित्र होते हैं तथा उनमें कोई ऐसी विशेषता नहीं होती जो मानव शक्तियों से श्रेष्ठतर हो अपितु वह समस्त मानव शक्तियों की सीमा में उत्पन्न होते हैं तथा मानव स्वभाव उसका उदगम है, परन्तु खेद है कि पंडित साहिब ने इन कुछ पंक्तियों के लिखने में अपना समय व्यर्थ में नष्ट किया। यदि पंडित साहिब अपने इस लेख से पूर्व इस पुस्तक के भाग तृतीय के पृष्ठ ®212, 213, 214, 215 को तनिक ध्यानपूर्वक पढ़ लेते तो ®322
उन पर स्पष्ट हो जाता कि इस प्रकार के विचार ख़ुदा का कलाम नहीं कहलाते। ये विचार अल्लाह के ख़ल्क़ हैं जो मनुष्य की तबियत की

स्थानों तथा विभिन्न तबियतों पर दृष्टि डाले तो पूर्ण विश्वास के साथ उसे ज्ञात होगा कि एक ही भाषा उन सब की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं थी। कुछ देशों के लोग

शेष हाशिया नं. 11

व्यक्तिगत अनिवार्यता है तथा ख़ुदा का कलाम जो ख़ुदा की ओर से उतरता है वह अल्लाह का अम्र है जो एक अनुदत्त और ईश्वर प्रदत्त है। ख़ुदा के कलाम के लिए यह शर्त आवश्यक है कि जैसे ख़ुदा अपनी हस्ती में भूल, गलती, झूठ, व्यर्थ तथा प्रत्येक हानि और अधम बात से पवित्र है। इसी प्रकार उसका कलाम★भी प्रत्येक त्रुटि, ग़लती, झूठ, व्यर्थ तथा हर प्रकार की हानि और अधम स्थिति से पुनीत और पवित्र चाहिए, क्योंकि जो कलाम पवित्र और कामिल झरने से निकला है। उस पर यह बात कदापि वैध नहीं कि उसमें किसी प्रकार की अपवित्रता अथवा क्षति पाई जाए और आवश्यक है कि वह कलाम उन समस्त पूर्णताओं से विशेष्य हो कि जो शक्तिमान, पूर्णतम, पुनीत तथा अन्तर्यामी ख़ुदा के कलाम में होना चाहिए, परन्तु पंडित साहिब स्वयं इक़रारी हैं कि जिस वस्तु का नाम उन्होंने इल्हाम रखा हुआ है वह सन्देह, आशंका, त्रुटि, ग़लती, क्षति तथा अयोग्यता से रिक्त नहीं अपितु उनके भाषण का सारांश यह है कि उनका इल्हाम लोगों को हमेशा कुफ्र और बेईमानी में डालता रहा है। अत: उसने प्रारंभिक युग के लोगों को कभी यह बताया कि जैसे उनका ख़ुदा वृक्ष हैं, कभी पर्वतों को ख़ुदा बना दिया, कभी तूफान को, कभी जल को, कभी अग्नि को, कभी नक्षत्रों को, कभी चन्द्रमा को, कभी सूर्य को। अत: इसी प्रकार उन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार के ख़ुदाओं की ओर फेरता रहा तथा बुद्धि भी उस इल्हाम का सत्यापन करती गई। अन्तत: दीर्घ समय के पश्चात् अब कुछ थोड़े ही समय से इल्हाम और बुद्धि को वास्तविक ख़ुदा का पता लगा परन्तु हम कहते हैं कि जिस स्थिति में इससे पूर्व सहस्त्रों बार पंडित साहिब के पूर्वजों के काल्पनिक इल्हाम तथा उनकी बुद्धि ने तरह तरह के धोखे खाए हैं तथा ख़ुदा को पहचानने में सर्वथा कुछ का कुछ समझते रहे तो अब क्योंकर पंडित साहिब सन्तोष कर सकते हैं कि उनका काल्पनिक इल्हाम और

★ कलाम का अर्थ वाणी है। (अनुवादक)

कुछ प्रकार के अक्षर और शब्दों को बोलने पर सरलतापूर्वक समर्थ हैं और कुछ देशों के लोगों को उन ®अक्षरों और शब्दों का बोलना एक संकट है। अतः क्योंकर संभव ®380

शेष हाशिया नं. (11)

काल्पनिक अटकलें भूल और ग़लती से सुरक्षित हैं। क्या संभव नहीं कि इसमें भी कुछ धोखा ही हो। जिस स्थिति में पंडित साहिब का काल्पनिक इल्हाम सर्वथा प्रारंभिक युग से भूल और ग़लती में डूबता आया है तो फिर उसका विश्वास क्या रहा। अतः पंडित साहिब के इल्हाम की वास्तविकता भली-भांति स्पष्ट हो गई तथा उन्हीं के इक़रार से सिद्ध हो गया कि उन्होंने केवल निराधार विचारों का नाम इल्हाम रखा हुआ है। अब स्पष्ट है कि जिस वस्तु पर झूठ का प्रभुत्व है वह सत्य की पहचान का साधन क्योंकर हो सके। मनुष्य के अपने ही विचार जिन का नाम पंडित साहिब के कथनानुसार ®इल्हाम है मनुष्य को ग़लती से क्योंकर सुरक्षित रख सकते हैं ®323 तथा उसे क्योंकर वे अंधकारपूर्ण विचार प्रत्येक अंधकार से बाहर निकाल कर पूर्ण विश्वास से प्रकाश तक पहुंचा सकते हैं। पंडित साहिब के कथनानुसार उन्हीं अस्त-व्यस्त विचारों ने जो उनके निकट इसी अस्त-व्यस्तता विचारधारा को इल्हाम की संज्ञा दी गई है आदिकालीन युग में जो एक पवित्र युग था ऐसे लोगों से पत्थरों की पूजा कराई, उनकी दृष्टि में चन्द्रमा तथा सूर्य को ख़ुदा ठहराया कि जो पंडित साहिब के कथनानुसार इल्हामी वरदान से पूर्व दान और इल्हाम प्राप्त करने वालों के अध्यक्ष थे तथा ख़ुदा की मारिफ़त के सर्वाधिक भूखे और प्यासे थे और हार्दिक निःस्वार्थता से अपने लिए कोई ख़ुदा नियुक्त करना चाहते थे तथा अपने आन्तरिक जीवन को बहुत पुनीत रखते थे क्योंकि संसार में अभी पाप नहीं फैला था तथा सतयुग का युग था और स्वयं को ख़ुदा को समर्पित करना चाहते थे। इसी उद्देश्य से तो स्वयं उनके हृदय में यह बात गुदगुदाई थी कि आओ अपने लिए कोई ख़ुदा नियुक्त करें, ख़ुदा के बिना ही न रहें। ईमान और बोध साफ रखते थे तब ही तो उन्हें एक बारीक बात सूझी और स्वयं बैठे-बिठाए ख़ुदा की तलाश में लग गए। अतः जिस स्थिति में पंडित साहिब के

था कि नीतिवान ख़ुदा केवल एक ही भाषा से प्रेम करके किसी वस्तु को यथास्थान रखने के नियम का ध्यान न रखता तथा भिन्न-भिन्न स्वभावों के लिए जो सामान्य

शेष हाशिया नं. (11)

कथनानुसार ऐसे पवित्र लोग जो परमेश्वर की युक्ति संगत उत्पत्ति का प्रथम नमूना था तथा वर्तमान युग के भिन्न-भिन्न प्रकार के द्वेषों और मलिनताओं से पवित्र तथा हार्दिक उत्तेजना से सृष्टि के रचयिता की खोज में व्यस्त थे तथा अपनी ताज़ा उत्पत्ति तथा उत्पत्तिकर्ता के ताज़ा कृत्य से व्यक्तिगत ज्ञान रखते थे, उनके इल्हाम और बुद्धि का यह हाल हो कि पत्थरों और पर्वतों की पूजा आरंभ कर दें तथा चन्द्रमा और सूर्य, अग्नि और वायु को अपना उत्पत्तिकर्ता (स्रष्टा) समझ बैठें, तो फिर पंडित साहिब का ऐसा इल्हाम और ऐसी बुद्धि जिसने पहली बार ही मार्ग में ऐसी लूटमार की कि दूसरे लोगों की तबियत को जो अज्ञानता के युगों में तथा सैकड़ों अंधकारों के समय में उत्पन्न हुए हैं क्योंकर सदमार्ग पर लाएगा, क्योंकि ये लोग तो अपनी रूप रेखा की उत्पत्ति से भी परिचित नहीं हैं तथा संसार-प्रेम के प्रभुत्व के कारण और भिन्न-भिन्न प्रकार की ख़राबियों का जीवन भी पुनीत नहीं रखते तथा ख़ुदा के सानिध्य के भूखे और प्यासे भी नहीं अपितु मानव शासन की निकटता के भूखे-प्यासे हैं। अत: जबकि पंडित साहिब के काल्पनिक इल्हाम का पवित्र युगों में वह प्रभाव हुआ कि सृष्टि (मख़लूक़) की हुई वस्तुओं को ख़ुदा समझ बैठे तो इस अंधकारयुक्त युग में ऐसे इल्हाम का यह प्रभाव होना चाहिए कि लोग ख़ुदा का ही इन्कार करें। अत: पंडित साहिब जो ऐसे विचारों का नाम इल्हाम रखते हैं जिन से उनके कथनानुसार प्रारंभ से ग़लती होती चली आई है। पंडित साहिब का
Ⓟ324 यह Ⓟविचार अथवा यों कहो कि उनका काल्पनिक इल्हाम सरासर मिथ्या और झूठ है यद्यपि मानव विचारों के कारणों का कारण भी ख़ुदा है और ख़ुदा ही हृदयों में डालता है तथा अक़्लों का मार्ग-दर्शन करता है, परन्तु वह इल्हाम को जो वास्तव में ख़ुदा का पवित्र कलाम, उसकी आवाज़ और उसकी वह्यी है वह मनुष्य के स्वाभाविक विचारों से श्रेष्ठ और उच्चतम है

हित था उसे त्याग देता। क्या उचित था कि वह पृथक-पृथक स्वभाव के लोगों को ®एक ही भाषा के संकुचित पिंजरे में क़ैद कर देता। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार की ®381

शेष हाशिया नं. (11)

वह ख़ुदा तआला की ओर से तथा उसके इरादे से वलियों (ऋषियों) के हृदयों पर उतरती है और ख़ुदा का कलाम होने के कारण ख़ुदा की बरकतों, क़ुदरतों तथा उसकी पवित्र सच्चाइयों को अपने साथ रखती है तथा असंदिग्ध होना उसकी व्यक्तिगत विशेषता है। जिस प्रकार सुगन्ध इत्र के अस्तित्व को सिद्ध करती है इसी प्रकार वह ख़ुदा और उसकी विशेषताओं के अस्तित्व को निश्चित और अटल तौर पर सिद्ध करती है, परन्तु मनुष्य के अपने ही विचार यह पद प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि जिस प्रकार मनुष्य पर सृष्टि होने की कमज़ोरी है उसी प्रकार मानव विचारों पर उस कमज़ोरी का प्रभुत्व है। जो कुछ सर्वशक्तिमान के झरने से निकलता है वह अलग वस्तु है और जो कुछ मानव स्वभाव से उत्पन्न होता है वह अलग है। उचित है कि पंडित साहिब भाग तृतीय के पृष्ठ 212 से 215 तक पुनः देखें ताकि उन्हें ख़ुदा के कलाम तथा मानव विचारों में अन्तर ज्ञात हो। पंडित साहिब बार-बार बुद्धि पर जो गर्व करते हैं उनका यह गर्व भी सरासर अनुचित है। हमने उसी भाग तृतीय में विस्तारपूर्वक लिख दिया है। रचनाएं रचयिता के अस्तित्व को उसके विद्यमान होने की दृष्टि से कदापि सिद्ध नहीं करतीं अपितु उसके अस्तित्व की आवश्यकता को सिद्ध करती हैं और वह भी बतौर काल्पनिक, परन्तु ख़ुदा का कलाम उसके विद्यमान होने को निश्चित और अटल तौर पर सिद्ध करता है न यह कि केवल उसकी आवश्यकता को सिद्ध करे। इसी प्रकार रचनाओं के निरीक्षण से ख़ुदा का अनादि और अनश्वर होना सिद्ध नहीं होता क्योंकि रचनाएं (निर्मित वस्तुएं) स्वयं अनादि और अनश्वर नहीं फिर दूसरे का अनश्वर होना क्योंकर सिद्ध कर सकें। नई पैदा होने वाली वस्तु जो अपने अस्तित्व में नवजात और नवीन है, ख़ुदा तआला के अस्तित्व की आवश्यकता को केवल उसी सीमा तक सिद्ध करेगी जिस सीमा तक उस नई पैदा होने वाली वस्तु का अन्त है अर्थात् जो उसके प्रकटन और

भाषाओं के बनाने में ख़ुदा तआला की क़ुदरत की बढ़ोतरी सिद्ध होती है तथा कमज़ोर बन्दों का पृथक-पृथक भाषाओं में उसकी प्रशंसा करना उपासना के बाज़ार

शेष हाशिया नं. (11)

नवीनता की सीमा है। तत्पश्चात् हादिस (नई वस्तु) द्वारा सिद्ध नहीं होता कि विश्व के अस्तित्व से पूर्व ख़ुदा तआला अनादि तौर पर हमेशा से मौजूद था या नहीं। अत: ख़ुदा तआला के अस्तित्व का जो ज्ञान नवीन उत्पन्न होने वाली वस्तुओं के माध्यम से प्राप्त किया जाता है नितान्त संकुचित, तंग और अपूर्ण ज्ञान है जो मनुष्य को सन्देहों और आशंकाओं के भंवर से कदापि नहीं निकालता तथा अज्ञानता के अन्धकार और अंधेरे से बाहर नहीं लाता अपितु भिन्न-भिन्न प्रकार के असमंजसों में डालता है। इसी कारण जिन लोगों की मारिफ़त का आधार केवल बुद्धिगत ज्ञान पर था उन का अन्त
Ⓟ325 अच्छा नहीं हुआ तथा अपनी आस्थाओं में Ⓟबहुत से अन्धकार और अन्धेरों को साथ ले गए। मनुष्य यदि द्वेष और हठ से पूर्ण रूप से पृथक होकर, स्वयं को एक सच्चा सत्याभिलाषी बना कर तथा वास्तव में ख़ुदा की मारिफ़त का भूखा और प्यासा बन कर अपने हृदय में स्वयं ही विचार करे कि मुझे ख़ुदा के अस्तित्व, उसके शक्तिशाली होने तथा समस्त कामिल विशेषताओं पर विश्वास प्राप्त करने के लिए तथा परलोक के संसार और प्रतिफल तथा दण्ड के मामले को बतौर निश्चित और आवश्यक ज्ञान प्राप्त करने के लिए मारिफ़त के किस-किस भण्डार की आवश्यकता है। क्या मैं अपनी अनश्वर समृद्धि को केवल इसी ज्ञान की श्रेणी से प्राप्त कर सकता हूं कि जो काल्पनिक तौर पर बुद्धि द्वारा प्राप्त होती है या दयालु-कृपालु ख़ुदा ने मेरे लिए कोई अन्य मार्ग भी रखा है, क्या उसने मारिफ़त की पूर्णता के लिए कोई अन्य मार्ग नहीं रखा और मुझे केवल मेरे ही विचारों पर छोड़ दिया है, क्या उसने इतनी कृपा करने से संकोच किया है कि जिस स्थान पर मैं अपने निर्बल पैरों से पहुंच नहीं सकता उस स्थान पर अब वह अपनी ख़ुदाई शक्ति से पहुंचा दे तथा जिन बारीक वस्तुओं को मैं अपनी कमज़ोर आंख से देख नहीं सकता वह अपनी गहरी दृष्टि की सहायता से स्वयं दिखा दे, क्या यह

की एक शोभा है।

चौथी भूमिका :- ख़ुदा तआला की समस्त निर्मित वस्तुओं पर दृष्टि करने से

शेष हाशिया नं. (11)

संभव है कि वह मेरे हृदय को एक दरिया की प्यास लगा कर फिर मुझे एक तुच्छ बूंद पर जो मारिफ़त की कमी की दुर्गन्ध से भरा हुआ है रोक रखे, क्या उसकी दानशीलता, पुरस्कार, कृपा और क़ुदरत की यही इच्छा है? क्या उसका शक्तिशाली होना यहीं तक है कि एक विनीत बन्दा अपने तौर पर जो कुछ हाथ-पैर मार कर ख़ुदा के अस्तित्व के सन्दर्भ में कोई ढ़कोसला अपने हृदय में स्थापित करे, उसी पर उसकी मारिफ़त का अन्त कर दे तथा अपनी ख़ुदावन्दी की विशेष शक्तियों से उसे ख़ुदा की मारिफ़त के संसार का भ्रमण न करा दे तो जब सत्याभिलाषी अपने हृदय से ऐसे प्रश्न करेगा तो वह अपने हृदय से यही ठोस उत्तर पाएगा कि निःसन्देह ख़ुदा तआला की असीम अनुकम्पाओं की यही मांग होना चाहिए कि वह अपने विनीत बन्दे की स्वयं सहायता करे, भटके हुए का स्वयं मार्ग-दर्शन करे, कमज़ोर का स्वयं हाथ पकड़े। क्या संभव है कि ख़ुदा तआला शक्तिमान, बलवान, कृपालु, दयालु, जीवित, दूसरों को स्थापित रखने वाला होते हुए अपनी ओर से हमेशा मौन धारण करे तथा अज्ञान और अंधा बन्दा उसकी खोज में स्वयं टक्करें मारता फिरे।

ناتواں را کجا تاب و تواں تا نشاں یابند خود زاں بے نشاں

निर्बल लोगों में यह शक्ति कहां कि वे स्वयं ही इस बे निशान अस्तित्व का पता लगा लें।*

عقلِ کوراں رہنما جوید براہ رہبری از دانشِ کوراں مخواہ

अंधों की बुद्धि तो स्वयं ही मार्ग पर चलने हेतु पथ-प्रदर्शक तलाश करती है। तू अंधों की बुद्धि से मार्ग-दर्शन की इच्छा न कर।*

عقلِ ما از بہرِ زاری و بکاست دفعِ آزار جہالت از خداست

हमारी बुद्धि तो केवल रोने और क्रन्दन करने के लिए है अज्ञानता रूपी कष्ट का निवारण तो ख़ुदा की ओर से है।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

℗382 यह सिद्धान्त सिद्ध ℗होता है कि उसने अपनी निर्मित वस्तुओं में जो अद्भुत और आश्चर्यजनक बातें रखी हैं वे दो प्रकार की हैं। प्रथम तो सामान्य समझ वाली हैं।

शेष हाशिया नं. (11)

عقلِ طفل است ایں کہ گرید زار زار   شیر جز مادر نیاید زینہار

बच्चे की बुद्धि तो मात्र यह है कि ख़ूब रोए परन्तु दूध तो मां के
अतिरिक्त कदापि नहीं मिल सकता।*

अत: हे सज्जनो!! इस लेख पर न्यायपूर्वक दृष्टि डालो तथा ध्यानपूर्वक गंभीरता से सोच-विचार करो, होशियार रहो तथा किसी धोखेबाज़ के धोखे
℗326 में मत आओ, अपने हृदयों से स्वयं ही पूछ लो कि तुम्हारे हृदय ℗विश्वास के कितने अभिलाषी हैं। क्या केवल तुम्हारे अपने ही शोकग्रस्त विचार तुम्हारे हृदयों को पूर्ण सांत्वना दे सकते हैं, क्या तुम्हारी आत्माएं इस बात की इच्छुक नहीं हैं कि तुम इस संसार में पूर्ण विश्वास तक पहुंच जाओ और अंधेपन से मुक्ति पाओ। तुम सच-सच कहो कि क्या तुम्हें इस बात की अभिलाषा नहीं कि तुम्हारा अन्धकार और अचंभा दूर हो, वे सन्देह जो तुम्हारे हृदयों में छुपे हुए हैं जिन्हें तुम प्रकट भी नहीं कर सकते दूर हो जाएं। अत: यदि ख़ुदाई मारिफ़त का कुछ जोश है तो निश्चय समझो कि इस संसार में ख़ुदा की प्रकृति का नियम यही है कि उसने प्रत्येक वस्तु को ज्ञात करने के लिए या प्राप्त करने के लिए किसी न किसी वस्तु को साधन बना दिया है तथा बुद्धि का केवल यही कार्य है कि उस साधन की आवश्यकता को सिद्ध करती है परन्तु स्वयं उस साधन का काम नहीं दे सकती। उदाहरणतया आटा पीसने के लिए चक्की की आवश्यकता को बुद्धि सिद्ध करती है परन्तु यह बात नहीं कि बुद्धि स्वयं ही चक्की बन जाए और आटा पीसने लगे। इसी प्रकार आज तक बुद्धि ने सैकड़ों साधनों का मार्ग-दर्शन किया है परन्तु कार्य वही सम्पन्न हुआ है जिसे साधन ने सम्पन्न किया है तथा जिस कार्य का साधन उपलब्ध नहीं हुआ वहां बुद्धि परेशान रही है। अत: संसार की समस्त व्यवस्था पर दृष्टि डालकर देख लो कि बुद्धि का

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

उदाहरणतया समस्त लोग जानते हैं कि मनुष्य की दो आंखें, दो कान, एक नाक और दो पैर इत्यादि अंग हैं। ये तो वे बातें हैं जो सरसरी दृष्टि से ज्ञात होती हैं। द्वितीय वे

शेष हाशिया नं. (11)

नितान्त प्रयास यही है कि उसे किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए हृदय में किसी साधन का विचार उत्पन्न हो जाए। उदाहरणतया बुद्धि ने यह सोचा कि दरिया पार करने के लिए कोई साधन चाहिए तो नौका का रूप हृदय में जाग गया फिर नौका बनाने का एक तत्व प्राप्त हो गया जो दरिया पर चलता है और डूबता नहीं। अत: इस तत्व के प्राप्त होने से नौका बन गई। इसी प्रकार सहस्त्रों अन्य साधन हैं जिनसे संसार का कार्य चलता है तथा प्रत्येक स्थान पर बुद्धि का केवल इतना अधिकार है कि वह साधन की आवश्यकता को सिद्ध करती है तथा यह वर्णन कर देती है कि इस प्रकार का साधन होना चाहिए, यही नहीं कि वह स्वयं वांछित साधन का काम दे सकती है। अब समझना चाहिए कि सद्बुद्धि इस बात को स्पष्ट तौर पर समझती है कि दूसरे संसार (परलोक) की घटनाएं और संसार के रचयिता का अस्तित्व तथा उस रचयिता (स्रष्टा) की इच्छाओं, अनिच्छाओं, प्रतिफल-दण्ड के विवरण और मात्राएं, आत्माओं की नित्यता (हमेशा रहना) तथा अनश्वरता की विश्वसनीय परिस्थितियां ज्ञात करना यह एक ऐसा सूक्ष्म और बारीक मामला है कि एक आकाशीय साधन के अभाव में उचित और निश्चित तौर पर कदापि ज्ञात नहीं हो सकता और जिस प्रकार बुद्धि ने संसार की उचित व्यवस्था के लिए सहस्त्रों साधनों की आवश्यकता सिद्ध की है। इसी प्रकार यहां भी सद्बुद्धि अदृश्य संसार का निश्चित तौर पर पता ज्ञात करने के लिए एक आकाशीय साधन की आवश्यकता बताती है ताकि उस सर्वशक्तिमान ख़ुदा की हस्ती जिसे समझने में लाखों बुद्धिमानों ने धोखे खाए हैं निश्चित और ®अटल तौर पर ज्ञात हो जाए। इसी प्रकार प्रतिफल और दण्ड का ®327
संसार भी निश्चित तौर पर ज्ञात हो ताकि सत्याभिलाषी कल्पनाओं से उन्नति करके इसी संसार में ख़ुदा तआला, उसकी पूर्ण विशेषता और परलोक को विश्वास की आंख से देख ले और वह साधन जो विश्वास की इस उच्चतम

बातें हैं जिनमें सूक्ष्म दृष्टि की आवश्यकता है। उदाहरणतया आंख की वह तरकीब
Ⓟ383 जिसके Ⓟद्वारा दोनों आंखें एक वस्तु की भांति होकर कार्य करती हैं तथा प्रत्येक

शेष हाशिया नं. (11)

श्रेणी तक पहुंचाता है ख़ुदा का कलाम है जिसके द्वारा मनुष्य पूर्ण विश्वास के साथ ख़ुदा तआला के अस्तित्व, उसकी पूर्ण विशेषताओं तथा प्रतिफल और दण्ड के संसार को समझ लेता है। ख़ुदा तआला ने लाखों मनुष्यों को मारिफ़त की इस श्रेणी तक पहुंचा कर सिद्ध कर दिखाया है कि ख़ुदा की पहचान का यह साधन वास्तविक संसार में विद्यमान है। जो व्यक्ति इस आकाशीय साधन से प्रकाश प्राप्त नहीं करता वह उस अंधे के समान है जो एक ऐसे मार्ग पर चलता है जिसमें स्थान-स्थान पर गड्ढे हैं तथा हर ओर खाइयां हैं उसे कुछ ज्ञात नहीं कि शान्ति का मार्ग किधर है, कुछ पता नहीं कि सुरक्षा का कौन सा किनारा है, कुछ ख़बर नहीं कि पग उठाने का परिणाम क्या है, न स्वयं देख सकता है और न किसी पथ-प्रदर्शक का दामन पकड़ा हुआ है और न यह जानता है कि अन्ततः किस स्थान का मुख देखना भाग्य में है और न यह विश्वास है कि जिस उद्देश्य के लिए उसने पग उठाया है वह उद्देश्य अवश्य प्राप्त हो जाएगा अपितु आँखें भी अंधी हैं और हृदय भी अंधा है।

फिर एक और भ्रम जो पंडित साहिब के हृदय को पकड़ता है यह है कि इल्हामी किताब किसी मनुष्य के लिए उसके ईमान का आधार नहीं हो सकती, क्यों आधार नहीं हो सकती। उसका तर्क आप यह लिखते हैं कि इल्हामी किताब के स्वीकार करने से पूर्व आवश्यक है कि ख़ुदा पर ईमान क़ायम कर लिया जाए। प्रत्येक पैग़म्बर या ऋषि जिस पर ख़ुदा का कलाम उतरा उसने कलाम पर ईमान लाने से पूर्व कलाम करने वाले के अस्तित्व को स्वीकार किया है क्योंकि किसी कलाम पर ईमान लाने से पूर्व स्वयं कलाम करने वाले को स्वीकार कर लेना अनिवार्य है। अतः स्पष्ट है कि पैग़म्बरों ने कलाम के उतारने वाले के अस्तित्व का विश्वास उसी कलाम के द्वारा प्राप्त नहीं किया अपितु उस कलाम के उतरने से पूर्व ही उनको अपने आन्तरिक स्वभाव की

छोटी-बड़ी वस्तु को देख सकते हैं अथवा कानों की बनावट का वह ढंग जिस से वह भिन्न-भिन्न आवाज़ों को भिन्नता की दृष्टि से सुन सकते हैं। ये वे बातें हैं जो

शेष हाशिया नं. 11

साक्ष्य से यह विश्वास प्राप्त था यह तर्क पंडित साहिब ने ख़ुदा के कलाम के अनावश्यक होने पर, जैसे अपनी बुद्धि का समस्त रस निचोड़ कर प्रस्तुत किया है परन्तु प्रत्येक बुद्धिमान पर विचार करने पर प्रकट होगा कि यह पंडित साहिब का सरासर भ्रम है जो उनके हृदय में एक सच्चाई की कुधारणा से उत्पन्न हुआ है और वह यह है कि पंडित साहिब निम्नलिखित दोनों बातों को दो विपरीतार्थक बातें ठहराते हैं अर्थात् यह कि एक अज्ञानी व्यक्ति पर जो ख़ुदा के अस्तित्व और उसकी विशेषताओं से अज्ञान है ख़ुदा का कलाम उतरे और साथ ही वह सर्वशक्तिमान ख़ुदा अपने उस पवित्र कलाम द्वारा अपने अस्तित्व से स्वयं सूचित करे। ये दोनों बातें पंडित साहिब की दृष्टि में दो परस्पर विरोधी बातें हैं जो एक स्थान पर एकत्र नहीं हो सकतीं, हालांकि इन दोनों बातों का एकत्र होना किसी बुद्धिमान के निकट ®दो विरोधी बातों ®328 की एकत्रता में सम्मिलित नहीं। जिस स्थिति में मनुष्य भी अपने कलाम द्वारा दूसरे व्यक्ति को अपने अस्तित्व से सूचित कर सकता है। तो फिर वह सूचना देना ख़ुदा तआला से क्यों असंभव है। क्या वह पंडित साहिब के निकट इस बात की शक्ति नहीं रखता कि अपने पूर्ण और शक्तिशाली कलाम के द्वारा जो ख़ुदावन्दी की आभाओं पर आधारित है अपने अस्तित्व से सूचित करे और यदि पंडित साहिब के हृदय में यह भ्रम उत्पन्न होता है कि जितने नबी आए वे निसन्देह ख़ुदा के कलाम के उतरने से पूर्व ख़ुदा पर विश्वास रखते थे। अतः इस से सिद्ध है कि उन्हें वह विश्वास उन्हीं के स्वभाव और बुद्धि से प्राप्त हुआ था परन्तु स्पष्ट हो कि यह भ्रम विचार की कमी से उत्पन्न हुआ है क्योंकि विश्वास का कारण किसी प्रकार से अकेली बुद्धि और स्वभाव नहीं हो सकते। नबी किसी जंगल में अकेले उत्पन्न नहीं हुए थे ताकि यह कहा जाए कि उन्होंने इल्हाम पाने से पूर्व सुनने के सिलसिले द्वारा भी जिसकी बुनियाद ख़ुदा के कलाम से चली आती

सरसरी दृष्टि से ज्ञात नहीं हो सकतीं अपितु जो लोग भौतिकी और चिकित्सा विज्ञान
Ⓟ384 के विशेषज्ञ हैं उन्होंने दीर्घ अवधि तक चिन्तन और विचार करके उन Ⓟसच्चाइयों

शेष हाशिया नं. (11)

है ख़ुदा का नाम नहीं सुना था और केवल अपनी बुद्धि तथा स्वभाव से ख़ुदा के अस्तित्व पर विश्वास रखते थे अपितु स्पष्ट तौर पर सिद्ध है कि ख़ुदा के अस्तित्व की प्रसिद्धि संसार में उस ख़ुदा के कलाम के माध्यम से हुई है कि जो प्रारंभिक युग में हज़रत आदम पर उतरा था। फिर आदम के पश्चात् युग के सुधार हेतु समय-समय पर जितने नबी आते रहे उन्हें वह्यी से पूर्व ख़ुदा के अस्तित्व से अवगत कराने वाली वही सुनी हुई प्रसिद्धि थी जिसकी बुनियाद हज़रत आदम के धर्म-ग्रन्थ से पड़ी थी। अतः वही सुनी हुई प्रसिद्धि थी जिसे नबियों के अभिलाषी और उत्साहित स्वभाव ने तुरन्त स्वीकार कर लिया था, तत्पश्चात् ख़ुदा ने अपने विशेष कलाम द्वारा उन्हें श्रेष्ठतम विश्वास और मारिफ़त तक पहुंचा दिया था तथा उस क्षति और हानि को पूर्ण कर दिया था कि जो मात्र सुनी हुई प्रसिद्धि के अनुसरण से प्राप्त थी। हम पहले भी उल्लेख कर चुके हैं कि ख़ुदा तआला के अस्तित्व की प्रसिद्धि सुनने के माध्यम से चली आई है तथा सुनी हुई बातों के सिलसिले की बुनियाद वह इल्हाम है जो सर्वप्रथम ख़ुदा तआला की ओर से मानव-पिता हज़रत आदम को हुआ था। इस पर यही तर्क पर्याप्त है कि यह बात नितान्त स्पष्ट है कि प्रारंभ में सर्वशक्तिमान ख़ुदा की हस्ती का पता उसी वस्तु द्वारा लगा है जिसे अब भी पता लगाने की स्थायी शक्ति प्राप्त है। अतः वह स्थायी शक्ति केवल ख़ुदा के कलाम में पाई जाती है क्योंकि अब भी ख़ुदा के कलाम में यह शक्ति मौजूद और विद्यमान है कि वह गुप्त बातों पर यथोचित सही-सही सूचना दे सकता है और पूर्वकालीन सूचनाएं भी प्रकट कर सकता है तथा ख़ुदा तआला की परोक्ष हस्ती का उचित और सही निशान भी दे सकता है तथा अपने अद्‌भुत चमत्कार से उस पर विश्वास भी प्रदान कर सकता है और दूसरे संसार (परलोक) की सच्चाइयों और विवरणों पर भी विस्तारपूर्वक सूचित कर सकता है जैसा कि

को ज्ञात किया है तथा अभी मनुष्य की तरकीब (विधि) की ऐसी सैकड़ों सूक्ष्मताएं और सच्चाइयां गुप्त हैं जिन्हें आज तक किसी दार्शनिक की बुद्धि अपनी परिधि में

शेष हाशिया नं. (11)

वर्तमान युग में इल्हाम वालों (जिन पर इल्हाम होता हो) के उचित अनुभव इस बात का सत्यापन कर रहे हैं ℗परन्तु यह जौहर बुद्धि में मौजूद नहीं है।℗327 अतः यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि जिस नवजात शिशु को छोड़ा जाए तो वह ख़ुदा की हस्ती, उसकी पूर्ण विशेषताओं तथा प्रतिफल और दण्ड से पूर्णतया अज्ञान रहता है। अतः चूंकि सच्ची मारिफ़त की शिक्षा का अधिकार केवल ख़ुदा के कलाम में सिद्ध है बुद्धि में सिद्ध नहीं। इसलिए प्रत्येक बुद्धिमान को स्वीकार करना पड़ता है कि ईमान और धर्म का आधार ख़ुदा का कलाम है बुद्धिगत विचार कदापि आधार नहीं हैं, यद्यपि बौद्धिक योग्यता मनुष्य में विद्यमान है परन्तु वह योग्यता ख़ुदा के कलाम के पथ-प्रदर्शन के अभाव में व्यर्थ है। जैसे देखने की योग्यता आंखों में मौजूद तो है परन्तु सूर्य के अभाव में कुछ वस्तु नहीं। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश अपने अस्तित्व को भी सिद्ध करता है तथा सूर्य के अस्तित्व की ओर भी पथ-प्रदर्शक है, इसी प्रकार ख़ुदा का कलाम अपने व्यक्तिगत प्रकाश, सत्य और अद्वितीय होने के कारण अपना ख़ुदा की ओर से होना भी सिद्ध करता है और ख़ुदा तआला की हस्ती की ओर भी निश्चित और अटल तौर पर पथ-प्रदर्शक है।

पंडित साहिब ने पर्चा 'धर्म जीवन' जनवरी 1883 ई. में यह दावा कर दिया है कि बुद्धिमान मनुष्य ऐसी किताब लिख सकता है जो विशेषताओं में क़ुर्आन के सदृश या उस से श्रेष्ठ हो। अब चूंकि पंडित साहिब भी बुद्धिमान ही हैं अपितु अपनी जाति के रिफारमर और सुधारक होने का दम भरते हैं इसलिए यह सबूत प्रस्तुत करना उन्हीं के दायित्व में है कि वह ऐसी किताब लिख कर दिखाएं। जिस प्रकार क़ुर्आन करीम बावजूद पूर्ण संक्षेप के समस्त सच्चाई और बारीकियों का संकलनकर्ता है तथा जिस प्रकार क़ुर्आन करीम यथार्थ, नीति, और सच्चाई की अनिवार्यता के बावजूद श्रेष्ठ श्रेणी की सुगम और सरल शैली पर है, जिस प्रकार क़ुर्आन करीम श्रेष्ठ श्रेणी की भविष्यवाणियों, परोक्ष की बातों से ओत-प्रोत है, जिस प्रकार क़ुर्आन करीम

नहीं ले सकी तथा कुछ सन्देह नहीं कि उन बारीकियों और सच्चाइयों का महान उद्देश्य यह है कि मनुष्य उस आदेश जारी करने वाले विवेकशील की महान शक्ति

शेष हाशिया नं. (11)

अपने पवित्र प्रभावों के कारण सत्याभिलाषियों के हृदयों को पवित्र कर के आकाशीय प्रकाश से प्रकाशित करता है तथा उनमें वह विशेष बरकतें उत्पन्न करता है जो दूसरे धर्मों में नहीं पाई जातीं जैसा कि हमने इन समस्त बातों को अपनी पुस्तक में सिद्ध कर दिया है तथा पूर्ण प्रमाण दे दिया है, इसी प्रकार और शान की कोई और पुस्तक लिख कर प्रस्तुत करें।

ندارد کسے باتو ناگفتہ کار   ولیکن جو گفتی دلیلش بیار

(अनुवाद :- अकथनीय बात पर कोई पकड़ नहीं परन्तु जब तू कुछ कह रहा है तो उसका सबूत प्रस्तुत कर।*)

परन्तु हम पंडित साहिब पर प्रकट करते हैं कि किसी मनुष्य के लिए कदापि संभव नहीं कि वह उपर्युक्त बातों को जो मानव शक्ति से श्रेष्ठतर हैं अपने कलाम में उत्पन्न कर सके, परन्तु ख़ुदा के कलाम में उन बातों का एकत्र होना न केवल वैध अपितु आवश्यक है क्योंकि जैसा कि ख़ुदा अद्वितीय और अनुपम है उसी प्रकार जो वस्तु उसी की ओर से जारी है वह अद्वितीय और अनुपम होना चाहिए। जिस के सदृश बनाने पर मनुष्य समर्थ न हो सके। अत:
Ⓟ330 क़ुर्आन करीम ने Ⓟअपने अद्वितीय और अनुपम होने का जो दावा किया है यह कोई अनुचित दावा नहीं। यह वही प्रकृति के नियम का मामला है जिस पर चलना मनुष्य की बुद्धिमत्ता है जिस से विमुख होना मूर्खता की निशानी है। तनिक अपने ही हृदय में विचार करके न्याय की दृष्टि से कहिए कि ख़ुदा के कलाम का अद्वितीय और अनुपम होना प्रकृति के नियम के अनुसार अनिवार्य है या नहीं। यदि आप के निकट अनिवार्य नहीं तथा ख़ुदा के कार्यों में किसी अन्य की भागीदारी भी वैध है तो फिर स्पष्टतया यही क्यों नहीं कहते कि हमें ख़ुदा के एक, और भागीदार रहित होने में ही आपत्ति है। क्या आप इस स्पष्ट बात को समझ नहीं सकते कि ख़ुदा का एकेश्वरवाद उसी समय तक है जब तक उसकी समस्त विशेषताएं किसी अन्य की भागीदारी से पवित्र हैं। यदि

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

को स्वीकार करे जिसने उसकी उत्पत्ति में ऐसे आश्चर्यजनक कार्य किए हैं, परन्तु इस स्थान पर कोई ®मूर्ख व्यक्ति यह ऐतिराज़ कर सकता है कि ख़ुदा ने इस कार्य ®385

शेष हाशिया नं. (11)

ख़ुदा के कलाम की यह हैसियत हो कि मनुष्य भी ऐसा ही कलाम बना सके तो मानो ख़ुदा की पूर्ण हैसियत ज्ञात हो गई, जैसे उसकी ख़ुदाई का समस्त रहस्य ही प्रकट हो गया। ★

®अब हम यहां प्रजा की भलाई हेतु यह बात बतौर नियम वर्णन करते हैं ®321 कि कलाम की वह कौन सी श्रेणी है जिस पर कोई कलाम चरितार्थ होने से उस विशेषता से विशेष्य हो जाता है कि उसे अद्वितीय और ख़ुदा की ओर से कहा जाए, फिर बतौर नमूना क़ुर्आन करीम की कोई सूरह लिख कर उसमें यह सिद्ध करके दिखाएंगे कि अद्वितीय के समस्त कारण जो नियम में ठहराए गए हैं इस सूरह में पूर्ण रूपेण पाए जाते हैं और यदि किसी को इस अद्वितीयता के कारणों को स्वीकार करने में फिर भी इन्कार होगा तो यह प्रमाण का भार उसी का दायित्व होगा कि कोई दूसरा कलाम प्रस्तुत करके दिखाए जिसमें अद्वितीयता के समस्त कारण पाए जाएं।

अत: स्पष्ट हो कि यदि कोई कलाम इन समस्त वस्तुओं में से जो ख़ुदा तआला की ओर से जारी और उसकी शक्ति की कारीगरी हैं किसी वस्तु से समरूपता रखता हो अर्थात् उसमें बाह्य और आन्तरिक विचित्रताएं इस

★ हाशिए का हाशिया नं. (3)

®इस बात पर ईसाइयों को भी नितान्त ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए कि ®330 अद्वितीय और अनुपम और पूर्ण ख़ुदा के कलाम में किन-किन निशानियों का होना आवश्यक है, क्योंकि उनकी इन्जील अक्षरांतरित और परिवर्तित होने के कारण उन निशानियों से अनभिज्ञ और अभागी है अपितु ख़ुदाई निशान तो एक ओर रहे, साधारण मार्ग और सच्चाई भी जो एक न्यायकर्ता विद्वान वार्ताकार के कलाम में होना चाहिए इन्जील को प्राप्त नहीं। दुर्भाग्यशाली सृष्टि पूजकों ने ख़ुदा के कलाम को, ख़ुदा की हिदायत को, ख़ुदा के प्रकाश को अपने अंधकारमय विचारों से ऐसा मिला दिया कि अब वह किताब पथ-प्रदर्शन के

को जिस का उद्देश्य ख़ुदा की मारिफ़त था ऐसा सूक्ष्म और बारीक क्यों बनाया जिसे समझने के लिए एक दीर्घ समय तक विचार और चिन्तन के अभ्यास की आवश्यकता

शेष हाशिया नं. (11)

प्रकार एकत्र हों कि जो ख़ुदा की रचनाओं में से किसी वस्तु में एकत्र हैं तो इस स्थिति में कहा जाएगा कि वह कलाम ऐसी श्रेणी पर है कि जिसके सदृश बनाने से मानव शक्तियां असमर्थ हैं क्योंकि जिस वस्तु के सन्दर्भ में अद्वितीय और ख़ुदा की ओर से होना सामान्य और विशेष लोगों के निकट एक निर्विवाद और मान्य बात है जिसमें किसी को मतभेद और आपत्ति नहीं इसकी अद्वितीयता के कारणों में किसी वस्तु की पूर्ण भागीदारी का सिद्ध होना निसन्देह इस बात को सिद्ध करता है कि वह वस्तु भी अद्वितीय ही है। उदाहरणतया यदि कोई वस्तु उस वस्तु से पूर्ण रूप से अनुकूल आ जाए जो अपनी मात्रा में दस गज़ है तो उसके सन्दर्भ में भी यह सही ज्ञान निश्चित, लाभप्रद अटूट विश्वसनीय होगा कि वह भी दस गज़ है।

अब हम उन ख़ुदाई रचनाओं में से एक बारीक रचना को उदाहरणतया गुलाब के फूल को बतौर नमूना ठहराकर उसकी वे बाह्य और आन्तरिक विचित्रताएं लिखते हैं जिनकी दृष्टि से वह ऐसी उच्च स्थिति पर स्वीकार

ⓟ332 किया गया है कि उसके सदृश बनाने से ⓟमानव शक्तियां असमर्थ हैं। फिर इस बात को सिद्ध करके दिखाएंगे कि इन समस्त विचित्रताओं से सूरह:

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

स्थान पर बाटमारी का एक पक्का साधन है। एक विद्वान को एकेश्वरवाद से किस ने विमुख किया? इसी बनावटी इंजील ने। एक संसार का ख़ून किसने किया? उन्हीं चार किताबों ने जिन आस्थाओं की ओर सृष्टि-उपासकों की तामसिक वृति झुकती गई उसी ओर अनुवाद करते समय उनके शब्द भी झुकते गए, क्योंकि मनुष्य के शब्द हमेशा उन के विचारों के अधीन होते हैं। अत: इंजील की हमेशा काया-कल्प करते रहने से अब वह कुछ और ही वस्तु है और ख़ुदा अभी उसकी वर्तमान शिक्षा की दृष्टि से वह असली ख़ुदा नहीं कि जो हमेशा उद्भव, उत्पत्ति, शरीर धारण करने तथा मृत्यु से स्वतंत्र था अपितु

है तथा फिर भी यह आशा नहीं कि समस्त विज्ञान संबंधी रहस्य पूर्णरूपेण प्राप्त हो जाएंगे तथा इसी कठिनाई के कारण आज तक मनुष्य को जैसे दरिया में से एक बूंद

शेष हाशिया नं. (11)

फ़ातिहा की विचित्रताएं और पूर्णताएं समान हैं अपितु उन विचित्रताओं का पलड़ा भारी है तथा इस उदाहरण को लेने का कारण यह हुआ कि एक बार इस ख़ाकसार ने अपनी कश्फ़ी दृष्टि में सूरह फ़ातिहा को देखा कि एक कागज़ पर लिखित इस ख़ाकसार के हाथ में है और एक ऐसे सुन्दर और मनमोहक रूप में है कि जैसे वह काग़ज़ जिस पर वह सूरह-फ़ातिहा लिखी हुई है लाल-लाल और मृदुल गुलाब के फूलों से इतना लदा हुआ है कि जिसकी कोई सीमा नहीं तथा जब यह ख़ाकसार उस सूरह की कोई आयत पढ़ता है तो उसमें से बहुत से गुलाब के फूल एक मधुर आवाज़ के साथ उड़कर ऊपर की ओर जाते हैं और वे फूल अत्यन्त कोमल, बड़े-बड़े, सुन्दर, ताज़ा और ख़ुशबूदार हैं जिनके ऊपर चढ़ने के समय हृदय और मस्तिष्क अत्यन्त सुगंधित हो जाता है तथा मस्ती का ऐसा संसार पैदा करते हैं कि जो अपने अद्वितीय आनन्दों के आकर्षण से संसार तथा उसमें विद्यमान वस्तुओं से अत्यधिक घृणा दिलाते हैं। इस कश्फ़ से ज्ञात हुआ कि गुलाब के फूल को सूरह फ़ातिहा के साथ एक अध्यात्मिक अनुकूलता है। अतः ऐसी अनुकूलता की दृष्टि से इस उदाहरण को लिया गया और उचित

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

इन्जील की शिक्षा की दृष्टि से ईसाइयों का ख़ुदा एक नया ख़ुदा है या वही ख़ुदा है जिस पर दुर्भाग्य से बहुत सी कठिनाइयां आईं तथा उसकी अन्तिम दशा पूर्व दशा से जो अनश्वर और अनादि थी बिल्कुल परिवर्तित हो गई तथा हमेशा क़ायम रहने तथा अपरिवर्तनीय रह कर अन्ततः उसकी समस्त अनश्वरता मिट्टी में मिल गई सिवाए इसके कि ईसाइयों के अन्वेषकों को स्वयं इक़रार है कि सारी इन्जील इल्हामी तौर पर नहीं लिखी गई अपितु 'मती' इत्यादि ने अधिकांश बातें लोगों से सुनकर लिखी हैं तथा 'लूक़ा' की इन्जील में तो स्वयं लूक़ा इक़रार करता है कि जिन लोगों ने मसीह को देखा था ®मैंने उनसे पूछ®331

ⓟ386 भी प्राप्त ⓟनहीं हुई। चाहिए था कि समस्त अद्‌भुत और आश्चर्यजनक बातें स्पष्ट होतीं ताकि जिस उद्देश्य के लिए ख़ुदा तआला ने मनुष्य के शरीर में रखी थीं वह

शेष हाशिया नं. (11)

मालूम हुआ कि प्रथम बतौर उदाहरण गुलाब के फूल की विचित्रताओं को कि जो उसके बाह्य और आन्तरिक में पाई जाती हैं लिखा जाए और फिर उसकी विचित्रताओं के मुक़ाबले पर सूरह फ़ातिहा की बाह्य और आन्तरिक विचित्रताओं का उल्लेख किया जाए ताकि न्यायप्रिय सज्जनों को ज्ञात हो कि जो विशेषताएं गुलाब के फूल में बाह्य और आन्तरिक विचित्रताओं का उल्लेख किया जाए ताकि न्यायप्रिय सज्जनों को ज्ञात हो कि जो विशेषताएं गुलाब के फूल में बाह्य और आन्तरिक तौर पर पाई जाती हैं जिन की दृष्टि से उसके सदृश बनाना स्वभाविक तौर पर दुर्लभ समझा गया है। इसी प्रकार इससे उत्तम विशेषताएं सूरह फातिहा में मौजूद हैं और ताकि इस उदाहरण के लिखने से कश्फ़ी संकेत पर भी कार्यवाही हो जाए। अतः ज्ञात होना चाहिए कि यह बात प्रत्येक बुद्धिमान के निकट बिना किसी असमंजस और विलम्ब के प्रमाणित है कि गुलाब का फूल भी ख़ुदा की रचनाओं की भांति अपने अन्दर ऐसी उत्तम विशेषताएं एकत्र रखता है जिनके समरूप बनाने
ⓟ333 पर ⓟमनुष्य समर्थ नहीं। ये दो प्रकार की विशेषताएं हैं। प्रथम वे जो उसके बाहरी रूप में पाई जाती हैं और वे यह हैं कि उसका रंग अत्यन्त मनोहर

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

कर लिखा है। अतः इस भाषण में स्वयं लूक़ा इक़रारी है कि उसकी इन्जील इल्हामी नहीं, क्योंकि इल्हाम के बाद लोगों से पूछने की क्या आवश्यकता थी। इसी प्रकार 'मरक़ुश' का मसीह के शिष्यों में से होना प्रमाणित नहीं। फिर वह नबी क्योंकर हुआ। बहरहाल चारों इन्जीलें न अपनी वास्तविकता पर क़ायम हैं और न अपने सब वर्णनों की दृष्टि से
ⓟ332 ⓟइल्हामी हैं और इसी कारण इन्जीलों की घटनाओं में भिन्न-भिन्न प्रकार के दोष आ गए और कुछ का कुछ लिखा गया। अतः इस बात पर ईसाइयों के प्रकाण्ड अन्वेषकों की सहमति हो चुकी है कि इन्जील शुद्ध रूप से ख़ुदा

उद्देश्य प्राप्त हो जाता। अत: इस भ्रम का उत्तर तथा इसी प्रकार के अन्य भ्रमों का उत्तर जो ख़ुदा के द्वारा निर्मित वस्तुओं के चमत्कार तथा सूक्ष्म और गुप्त विशेषताओं

शेष हाशिया नं. (11)

और उत्तम है, उसकी सुगन्ध नितान्त प्रिय तथा मनोरम है उसके बाहरी शरीर में नितान्त कोमलता, स्निगधता और स्वच्छता है। द्वितीय वे विशेषताएं हैं जो आन्तरिक तौर पर मर्मज्ञ स्वच्छन्द ख़ुदा ने उसमें पैदा कर रखी हैं अर्थात वे विशेषताएं जो उसके जौहर में गुप्त हैं और वे ये हैं कि वह हर्षवर्धक, हृदय के लिए बल-वर्धक, पित्त के लिए आराम वर्धक, समस्त शक्तियों और रूहों को शक्ति प्रदान करता है, पित्तयुक्त तरल कफ़ का नाशक भी है तथा इसी प्रकार आमाशय, और यकृत, गुर्दे, आंतों, गर्भाशय और फेफड़ों के लिए भी शक्तिवर्धक है तथा हृदय का अधिक धड़कना, बेहोशी, और हृदय की कमज़ोरी के लिए अत्यन्त लाभदायक है, इसी प्रकार अन्य कई शारीरिक रोगों के लिए लाभप्रद है। अत: इन्हीं दोनों प्रकार की विशेषताओं के कारण उसके सन्दर्भ में यह धारणा की गई है कि वह ऐसी पूर्णता की श्रेणी पर स्थापित है कि किसी मनुष्य के लिए कदापि संभव नहीं कि अपनी ओर से कोई ऐसा फूल बना दे कि जो रंग में सुन्दर और सुगन्ध में मनोहर तथा रचना में अत्यन्त स्निग्ध, कोमल और स्वच्छ फूल की भांति हो तथा इसके बावजूद आन्तरिक तौर पर समस्त वे

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

का कलाम नहीं है अपितु गांव की पहरेदारी की तरह कुछ ख़ुदा का कुछ मनुष्य का है। हां कुछ अज्ञान ईसाई अपने नितान्त सरल स्वभाव के कारण ℗कभी-कभी यह दावा कर बैठते हैं कि इन्जील भी अपनी शिक्षा की दृष्टि ℗333 से अद्वितीय और अनुपम है अर्थात् मनुष्य उसके सदृश बनाने पर समर्थ नहीं रखता। अत: इससे सिद्ध होता है कि उसकी शिक्षा ख़ुदा की वाणी है तथा इन्जील की शिक्षा का अनुपम और अद्वितीय होना इस प्रकार वर्णन करते हैं कि इसमें क्षमा, नेकी और उपकार पर अत्यधिक बल दिया गया है ℗और ℗334 प्रत्येक अवसर पर उद्दण्डता के मुकाबले से रोका गया है अपितु बुराई के

के सन्दर्भ में किसी के हृदय में झंझट उत्पन्न करें यह है कि निसन्देह ख़ुदा का
Ⓟ387 अपनी समस्त Ⓟरचनाओं में तथा प्रत्येक वस्तु में जो उसकी ओर से आए प्रकृति का

शेष हाशिया नं. (11)

विशेषताएं भी रखता हो जो गुलाब के फूल में पाई जाती हैं और यदि प्रश्न यह किया गया जाए कि गुलाब के फूल के सन्दर्भ में ऐसी धारणा क्यों की गई कि मानव शक्तियां उसका सदृश बनाने से असमर्थ हैं और क्यों वैध नहीं कि कोई मनुष्य उसका सदृश बना सके और जो विशेषताएं उसके बाह्य और आन्तरिक में पाई जाती हैं वे कृत्रिम फूल में उत्पन्न कर सके तो इसका उत्तर यही है कि ऐसा फूल बनाना स्वाभाविक तौर पर निषिद्ध है और आज तक कोई दार्शनिक और फ़्लास्फ़र किसी ऐसे उपाय से किसी प्रकार की औषधियां उपलब्ध नहीं कर सका जिन्हें परस्पर मिलाने से बाह्य और आन्तरिक तौर पर गुलाब के फूल जैसी आकृति और चरित्र पैदा हो जाए। अब समझना चाहिए कि अद्वितीयता के यही कारण सूरह-फ़ातिहा में
Ⓟ334 अपितु क़ुर्आन करीम के प्रत्येक छोटे से छोटे भाग में जो चार आयतों Ⓟसे भी कम हो पाए जाते हैं। पहले बाह्य आकृति पर दृष्टि डाल कर देखो कि इबारत में कैसी मनोहरता, वर्णन में मृदुलता, शब्दों में तीव्रता, कलाम में पूर्ण सुगमता-सरलता, धारा-प्रवाह, चमक-दमक और नवीनता इत्यादि कलाम की सुन्दरता की वस्तुएं अपनी पूर्ण चमत्कार प्रदर्शित कर रही हैं, ऐसा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

बदले नेकी करने का उल्लेख है और एक गाल पर थप्पड़ खा कर दूसरा गाल भी फेर देने का आदेश है। अतः इस तर्क से सिद्ध हो गया कि वह अद्वितीय और अनुपम तथा मानव शक्तियों से श्रेष्ठतम है। ला हौला वला क़ुव्वता। (لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ) हे सज्जनो! यह नवीन तर्कशास्त्र आप कहां
Ⓟ335 से लाए जिस से आप यह Ⓟसमझ बैठे कि जिन नसीहतों में शील और क्षमा का आग्रह अधिक हो वे अद्वितीय हो जाया करती हैं और मानव शक्तियां ऐसे उपदेशों के वर्णन करने से असमर्थ होती हैं। यही तो समझ का फेर है कि अब तक आपको यह भी ख़बर नहीं कि अद्वितीय और अनुपम का शब्द

नियम यही है कि उस ने असंदिग्ध चमत्कारों पर ही सन्तुष्टि नहीं की अपितु प्रत्येक वस्तु में (जो उसकी क़ुदरत के हाथ से प्रकट हो रहे हैं) सूक्ष्म चमत्कार भी (जो

शेष हाशिया नं. (11)

जल्वा (प्रदर्शन) कि उससे अधिक की कल्पना भी नहीं तथा अरुचिकर वाक्यों तथा शब्दों के संमिश्रण में शब्दों का यथा-स्थान प्रयोग न करने से पूर्णतया सुरक्षित और मुक्त है, उसका प्रत्येक वाक्य नितान्त सुगम और सरल है, उसका प्रत्येक संमिश्रण (शब्दों की तरकीब) यथास्थान है, प्रत्येक प्रकार की अनिवार्यता जिस से कलाम की सुन्दरता अधिक होती है तथा इबारत की नवीनता स्पष्ट होती है उसमें सभी पाई जाती हैं तथा भाषण की सुन्दरता के लिए जितनी सुगमता और वर्णन की मधुरता की श्रेष्ठ श्रेणी मस्तिष्क में आ सकती है वह पूर्ण रूप से इसमें मौजूद और विद्यमान है, अर्थ को मनमोहक करने के लिए जितनी वर्णन की सुन्दरता की आवश्यकता है वह सब इसमें उपलब्ध और मौजूद है और बावजूद इसके अर्थों की सुगम और सुन्दर वर्णन के गुण विशेषता की अनिवार्यता के बावजूद सत्य और ईमानदारी की सुगन्ध से भरपूर है, कोई अतिश्योक्ति ऐसी नहीं जिसमें झूठ की थोड़ी सी भी मिलावट हो, इबारत की कोई मनोहरता इस प्रकार की नहीं जिसमें कवियों की भांति झूठ, अश्लीलता और अनर्गलता की अपवित्रता तथा दुर्गन्ध से सहायता ली गई हो। अत: जैसे कवियों का कलाम झूठ,

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

किसी वस्तु के सन्दर्भ में केवल उन्हीं परिस्थितियों में बोला जाता है जब
वह वस्तु स्वयं में ऐसी श्रेणी पर ℗हो कि जिसका सदृश प्रस्तुत करने से मानव ℗336
शक्तियां विवश रह जाएं। आप अपने दावे में बार-बार इसी बात पर बल देते हैं कि इन्जील में प्रत्येक स्थान पर और प्रत्येक अवसर में क्षमा, माफ़ी के लिए आग्रह है और ऐसा आग्रह किसी अन्य किताब में नहीं। भला अति सुन्दर, यों ही सही, परन्तु क्या इससे यह सिद्ध हो गया कि इतना आग्रह
मनुष्य नहीं कर सकता ℗तथा मानव शक्तियां इन आग्रहों का वर्णन करने से ℗333
असमर्थ हैं, क्या दया और क्षमा का आग्रह मूर्तियों के उपासकों की पुस्तकों

अत्यन्त गंभीर और गहरे हैं) गुप्त रखे हैं परन्तु ख़ुदा के इस कार्य को व्यर्थ और
Ⓟ388 बेकार समझना सरासर मूर्खता है। जानना चाहिए कि ख़ुदा ने Ⓟमनुष्य को दूसरे

शेष हाशिया नं. (11)

अश्लीलता, तथा अनर्गलता से ओत-प्रोत होता है, यह कलाम सच्चाई और ईमानदारी की उत्तम सुगन्ध से भरा हुआ है, फिर उस सुगन्ध के साथ वर्णन की मनोहरता, शब्दों की तीव्रता, मृदुलता और इबारत की स्पष्टता को इस प्रकार एकत्र किया गया है कि जैसे गुलाब के फूल में सुगन्ध के साथ उसके रंग की सुन्दरता और स्वच्छता भी एकत्र होती है। ये विशेषताएं तो बाह्य रूप से हैं, आन्तरिक रूप से उसमें अर्थात् सूरह फ़ातिहा में ये विशेषताएं हैं कि वह बड़े-बड़े अध्यात्मिक रोगों के उपचार को सम्मिलित किए हुए है तथा ज्ञान और व्यवहार संबंधी शक्ति की पूर्णता के लिए उसमें बहुत सा सामान मौजूद है तथा बहुत बड़ी-बड़ी बुराइयों का सुधार करती है और बड़े-बड़े अध्यात्म ज्ञान, सूक्ष्मताएं और बारीकियां जो नीतिज्ञों और दार्शनिकों की दृष्टि से गुप्त रहीं उसमें उनकी चर्चा है। ख़ुदा के सानिध्य के अभिलाषी के
Ⓟ335 हृदय को Ⓟउसके अध्ययन से विश्वास की शक्ति बढ़ती है तथा सन्देह, आशंका तथा पथ-भ्रष्टता के रोग से स्वास्थ्य प्राप्त होता है तथा बहुत सी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

से कुछ कम है अपितु सच पूछो तो आर्य क़ौम के मूर्ति पूजकों ने दया के आग्रह को उस श्रेष्ठता तक पहुंचा दिया है कि बस अन्त ही कर दिया। उनके एक शास्त्र का श्लोक इस समय हमें स्मरण हो आया है, जिस पर
Ⓟ338 लगभग समस्त हिन्दू कार्यरत हैं Ⓟऔर वह यह है "अहिंसा परमोधर्म" अर्थात् इससे बड़ा धर्म और कोई नहीं कि किसी प्राणी को कष्ट न दिया जाए। इसी श्लोक की दृष्टि से हिन्दू लोग किसी प्राणी को कष्ट देना पसन्द नहीं करते, यहां तक कि सांपों की दुष्टता का भी मुक़ाबला नहीं करते अपितु बजाए उनकी दुष्टता के उन्हें दूध पिलाते हैं और उनकी पूजा करते हैं। इस पूजा
Ⓟ339 Ⓟका नाम उनके धर्म में 'नाग-पूजा' है। कुछ हिन्दू इतने दयालु होते हैं कि बालों में पड़ने वाले जुएं भी अपने बालों से नहीं निकालते अपितु उनके

जानवरों की तरह उस स्वभाव की प्रकृति पर उत्पन्न नहीं किया कि उसका ज्ञान कुछ व्यापक और महसूस बातों में संयत और सीमित रहे अपितु उसे यह योग्यता प्रदान

शेष हाशिया नं. (11)

श्रेष्ठ श्रेणी की सच्चाइयां और नितान्त बारीक वास्तविकताएं जो मनुष्य की आत्मा के लिए आवश्यक हैं उस के मुबारक लेख में भरी हुई हैं तथा स्पष्ट है कि ये विशेषताएं भी ऐसी हैं कि गुलाब के फूल की विशेषताओं की तरह इन में भी स्वभाविक तौर पर निषिद्ध ज्ञात होता है कि वह किसी मनुष्य के कलाम में एकत्र हो सकें और यह निषेध न काल्पनिक अपितु असंदिग्ध है क्योंकि ख़ुदा तआला ने जिन बारीकियों तथा श्रेष्ठ आध्यात्म ज्ञानों को बिल्कुल वास्तविक आवश्यकता के समय अपने सुगम और सरल कलाम में वर्णन करके बाह्य और आन्तरिक विशेषता का कमाल दिखाया है तथा बड़ी सूक्ष्म शर्तों के साथ बाह्य और आन्तरिक दोनों पहलुओं को कमाल की श्रेष्ठ श्रेणी तक पहुंचाया है अर्थात् प्रथम तो ऐसे श्रेष्ठ आवश्यक आध्यात्म ज्ञानों का उल्लेख किया है कि जिन के लक्षण पूर्वकालीन शिक्षाओं से नष्ट और विस्मृत हो गए थे तथा किसी युक्तिवान या दार्शनिक ने भी उन श्रेष्ठ अध्यात्म ज्ञानों पर क़दम नहीं रखा था और फिर उन अध्यात्म ज्ञानों को

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

आराम की दृष्टि से अपने समस्त शरीर के बाल नहीं कटवाते और स्वयं कष्ट सहन करते हैं ताकि उनके स्थान में बिखराव की स्थिति उत्पन्न न हो तथा कुछ हिन्दू अपने मुख पर थैली चढ़ाकर रखते हैं ®तथा पानी छान कर®340 पीते हैं ताकि कोई जीव उनके मुख के अन्दर न चला जाए और इस प्रकार वे किसी जीव-हत्या के कारण न ठहरें। अब देखिए इस श्रेणी की दया और क्षमा इन्जील में कहां है, परन्तु बावजूद इसके कोई ईसाई यह राय प्रकट नहीं करता कि हिन्दू शास्त्र की वह शिक्षा अद्वितीय और मानव शक्तियों से बाहर है। फिर इन्जील की शिक्षा ®कि जो शील, क्षमा और दया के आग्रह®341 में इससे कुछ अधिक नहीं, क्योंकर अद्वितीय हो सकती है। खेद ईसाई सज्जन तनिक नहीं सोचते कि सदाचार की बातों को कुछ अधिक धूम-धाम

की है कि वह विचार और चिन्तन द्वारा असीमित ज्ञानों में उन्नति करता रहे तथा इसी उद्देश्य से उसे बुद्धि का ऐसा दीपक जो अंधकार को दूर करने वाला मोती जो दूसरे

शेष हाशिया नं. (11)

अनावश्यक और व्यर्थ तौर पर नहीं लिखा अपितु उचित तौर पर उस समय और उस युग में उनका वर्णन किया जिस समय वर्तमान युग की दशा को सुधारने के लिए उनका वर्णन करना सामर्थ्य के अनुसार आवश्यक था और उनके वर्णन के बिना युग की तबाही और विनाश की कल्पना की जा रही थी। फिर वे श्रेष्ठ आध्यात्म ज्ञान अपूर्ण और अधूरे तौर पर नहीं लिखे गए अपितु 'कितने और कैसे' (अर्थात मात्रा और गुणवत्ता) पूर्णता की श्रेणी पर हैं तथा किसी बुद्धिमान की बुद्धि कोई ऐसी धार्मिक सच्चाई प्रस्तुत नहीं कर सकती जो उन से बाहर रह गई हो और किसी असत्य के उपासक का कोई ऐसा युग नहीं जिसका निवारण उस कलाम में न हो। इन समस्त सच्चाइयों और बारीकियों की अनिवार्यता से कि जो दूसरी ओर वास्तविक आवश्यकताओं की अनिवार्यता के साथ सम्बद्ध हैं सुगमता और सरलता की उन श्रेष्ठ विशेषताओं को अदा करना जिन से अधिक की कल्पना न हो सके यह तो नितान्त बड़ा कार्य है कि जो मानव शक्तियों से असंदिग्धता की दृष्टि से श्रेष्ठतम है, परन्तु मनुष्य तो ऐसा निर्गुण है कि यदि अधम और व्यर्थ मामलों को जो श्रेष्ठतम सच्चाइयों से कुछ सम्बन्ध नहीं रखते किसी सुन्दर और सुगम इबारत में ईमानदारी और सत्यवादिता की अनिवार्यता के साथ

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

से वर्णन करना इस बात को अनिवार्य नहीं कि मनुष्य ऐसी धूम-धाम से वर्णन नहीं कर सकता और यदि अनिवार्य है तो इस पर कोई तार्किक सबूत

Ⓟ342 क़ायम करना चाहिए ताकि उस सबूत के Ⓟद्वारा इन्जील की शिक्षा तथा हिन्दुओं की पुस्तक अद्वितीय बन जाएं, परन्तु जब तक कोई बुद्धिसंगत तर्क प्रस्तुत न हो तब तक हम ऐसी शिक्षाओं का अद्वितीय होना क्योंकर स्वीकार करें जिन्हें निकालने की शक्ति मनुष्य में है। क्या हम मात्र दावा किसी सबूत के बिना स्वीकार कर लें अथवा एक स्पष्ट तौर पर खंडनीय

प्राणियों को नहीं मिला प्रदान हुआ। स्पष्ट है यदि ख़ुदा की ये समस्त अद्‌भुत और ®आश्चर्यजनक बातें नितान्त स्पष्ट और व्यक्त होतीं जिनमें विचार और चिन्तन की®389

शेष हाशिया नं. (11)

लिखना चाहे तो उसके ®लिए यह भी संभव नहीं, जिस प्रकार कि यह बात®336 प्रत्येक बुद्धिमान के निकट स्पष्ट है कि यदि उदाहरणतया एक दुकानदार जो पूर्ण स्तर का कवि और साहित्यकार है यह चाहे कि अपने उस वार्तालाप को जो प्रतिदिन उसे अपने ग्राहकों और कारोबारियों के साथ करना पड़ता है पूर्ण सुगमता और इबारत की सुन्दरता के साथ किया करे फिर यह भी अनिवार्यता रखे कि प्रत्येक स्थान और प्रत्येक अवसर पर जिस प्रकार की बातचीत आवश्यक है वही करे अर्थात् जहां कम बोलना आवश्यक है वहां कम बोले और जहां अत्यधिक सरखपाई हित में है वहां अधिक बातचीत करे। जब उसमें और उसके खरीदार में कोई विवाद आ पड़े तो बातचीत में वह शैली धारण करे जिस से उस विवाद को अपनी उद्देश्यपूर्ति के अनुसार तय कर सके या उदाहरणतया एक न्यायकर्ता जिस का कार्य यह है कि दोनों सदस्यों और गवाहों के बयान को उचित तौर पर लिखे तथा प्रत्येक बयान पर जो-जो निश्चित और आवश्यक तौर पर प्रतिप्रश्न और आरोप-प्रत्यारोप करना चाहिए वही करे और जैसा कि मुक़द्दमे की जांच-पड़ताल के लिए शर्त है और विवादित मामले के लिए अनुसंधान नीतिगत है। प्रश्न के अवसर पर प्रश्न और उत्तर के अवसर पर उत्तर लिखे और जहां कानूनी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

बात को शुद्ध सत्य मात्र मान लें, क्या करें ? ®तो अब स्पष्ट है कि यह कैसा®343 व्यर्थ विवाद और कितनी मूर्खता है कि एक अवास्तविक और अप्रमाणित बात पर आग्रह करते रहें और जो मार्ग स्वच्छ और सीधा दिखाई देता है उस पर क़दम रखना नहीं चाहते तथा मज़ेदार बात यह कि इन्जील की शिक्षा पूर्ण भी नहीं, कहां यह कि उसे अद्वितीय कहा जाए। समस्त अन्वेषकों की इस बात पर सहमति हो चुकी है कि सदाचार की पराकाष्ठा ®केवल इस बात पर निर्भर नहीं हो सकती कि प्रत्येक स्थान और प्रत्येक®344

कुछ भी आवश्यकता न होती तो फिर मनुष्य जिसकी पूर्णता उसकी शक्ति की पूर्णता के दृष्टिकोण पर निर्भर है, किन वस्तुओं में सोच-विचार करता और यदि सोच-

शेष हाशिया नं. (11)

कारणों का वर्णन करना अनिवार्य हो उन्हें उचित तौर पर कानून के अनुसार वर्णन करे और जहां घटनाओं का पूर्ण क्रम की पाबन्दी के साथ प्रकट करना अनिवार्य हो उन्हें उचित क्रम की पाबन्दी और पूर्ण शुद्धता के साथ प्रकट कर दे, तत्पश्चात जो कुछ वास्तव में अपनी राय तथा उस राय के समर्थन के कारणों को उचित और सही तौर पर वर्णन करे। फिर इन समस्त अनिवार्यताओं के वर्णन करने के साथ उसका कलाम सुगमता और सरलता की उस उच्च श्रेणी पर हो कि किसी भी मनुष्य के लिए उससे उत्तम संभव न हो तो इस प्रकार की सुगमता को परिणाम तक पहुंचाना उनके लिए स्पष्टतया दुर्लभ है। अत: मानवीय सुगमताओं का यही हाल है कि निरर्थक और अनावश्यक तथा व्यर्थ बातों के अतिरिक्त पग ही नहीं उठ सकता तथा झूठ और उपहासपूर्ण बेहूदा बातों के बिना कुछ बोल ही नहीं सकते और यदि कुछ बोले भी तो अधूरा। नाक है तो कान नहीं, कान हैं तो आंख नहीं, सच बोले तो सुगमता गई, सुगमता का ध्यान रखा तो झूठ और निरर्थक बातों के भण्डार के भण्डार एकत्र कर लिए प्याज की भांति कि सब छिलका ही छिलका अन्दर कुछ भी नहीं। अत: जिस स्थिति में
ⓟ337 सद्बुद्धि स्पष्ट आदेश देती है ⓟकि व्यर्थ और तिरस्कृत मामले तथा सीधी-

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

अवसर पर क्षमा और माफ़ी को अपनाया जाए। यदि मनुष्य को केवल क्षमा और माफ़ी का ही आदेश दिया जाता तो सैकड़ों कार्य जो क्रोध और प्रतिशोध पर निर्भर हैं समाप्त हो जाते। मनुष्य की ईश्वरप्रदत्त प्रकृति जिस पर स्थिर हो जाने से वह मनुष्य कहलाता है यह है कि ख़ुदा ने उसके स्वभाव
ⓟ345 में ⓟजिस प्रकार क्षमा और माफ़ करने का मनोभाव रखा है उसी प्रकार क्रोध और प्रतिशोध की इच्छा भी रखी है और इन समस्त शक्तियों पर बुद्धि को बतौर शासक नियुक्त किया है। अत: मनुष्य अपनी वास्तविक मानवता तक

विचार न करता तो फिर क्योंकर अपनी पूर्णता को पहुंचता। अत: समस्त मानवता मनुष्य के दृष्टिकोण की शक्ति के प्रयोग से सम्बद्ध है, इसलिए उस स्वच्छन्द

शेष हाशिया नं. (11)

सादी घटनाओं को भी वास्तविक आवश्यकता और सत्य की अनिवार्यता के साथ सुन्दर और सुगम इबारत में अदा करना संभव नहीं तो फिर इस बात का समझना कितना सरल है कि श्रेष्ठ आध्यात्म ज्ञानों को वास्तविक आवश्यकता की अनिवार्यता के साथ नितान्त सुन्दर और सुगम इबारत में कि जिससे श्रेष्ठ और पावन की कल्पना न हो वर्णन करना बिल्कुल चमत्कार और मानव शक्तियों से दूर है। जैसा कि गुलाब के फूल की तरह कोई फूल जो बाहरी और आन्तरिक तौर पर उसके समरूप हो बनाना स्वाभाविक तौर पर दुर्लभ है इसी प्रकार यह भी दुर्लभ है क्योंकि जब छोटी-छोटी बातों में उचित अनुभव साक्ष्य देता है तथा सरल स्वभाव स्वीकार करता है कि मनुष्य अपनी किसी आवश्यक और सत्य बात को चाहे वह बात किसी क्रय-विक्रय के मामले से सम्बद्ध हो या अदालत की जांच-पड़ताल इत्यादि से संबंध रखती हो जब उसे सही और उचित तौर पर सम्पन्न करना चाहे तो यह बात असंभव हो जाती है कि उसकी इबारत प्रत्येक स्थान में उचित, अलंकृत, सरल, सुगम अपितु श्रेष्ठ श्रेणी की सुगमता और सरलता पर हो

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

तब पहुंचता है जब स्वाभाविक प्रकृति के अनुसार ये दोनों प्रकार की शक्तियां बुद्धि के अधीन होकर चलती रहें अर्थात ये शक्तियां प्रजा के समान हों तथा बुद्धि ®बादशाह के समान उनके पालन-पोषण, कल्याण, विवादों- ®346
झगड़ों का निस्तारण तथा कष्ट दूर करने में व्यस्त रहे। उदाहरणतया एक समय क्रोध प्रकट होता है और वास्तव में उस समय सहिष्णुता के प्रकट होने का अवसर होता है। अत: ऐसे समय में बुद्धि अपनी इच्छा से क्रोध को दूर करती है और सहिष्णुता को गति देती है और किसी समय क्रोध करने का समय होता है ®और सहिष्णुता उन्पन्न हो जाती है। ऐसे समय में बुद्धि क्रोध ®347
को उत्तेजित करती है और सहिष्णुता को मध्य से उठा लेती है। सारांश यह

℗390 नीतिवान (ख़ुदा) ने अधिकांश सूक्ष्मताओं और ℗सच्चाइयों को इस प्रकार से गुप्त रखा है कि जब तक मनुष्य अपनी ईश्वर-प्रदत्त शक्ति को पूर्ण परिश्रम और पराक्रम

शेष हाशिया नं. 11

तो फिर ऐसा भाषण जो सत्य और सत्य के अध्यात्म ज्ञान तथा श्रेष्ठतम वास्तविकताओं से भरपूर तथा वास्तविक आवश्यकताओं की दृष्टि से जारी है तथा सम्पूर्ण ख़ुदाई सच्चाइयों को अपनी परिधि में लिए हो और अपनी वर्तमान दशा के सुधार हेतु अपना कर्तव्य, वाद-विवाद का अन्त करने, इन्कार करने वालों को दोषी सिद्ध करने में थोड़ी सी भी भूल न करती हो तथा शास्त्रार्थ और मुबाहसे के समस्त पहलुओं का यथोचित ध्यान रखती हो तथा समस्त आवश्यक प्रश्न तथा आवश्यक उत्तर पर आधारित हो क्योंकर इन जटिल से जटिल कठिनाइयों के बावजूद जो पूर्व स्थिति से सैकड़ों गुना अधिक हैं, ऐसी सरलता और सुगमता के साथ किसी मनुष्य के लेख में एकत्र हो सकती है कि वह सुगमता भी अद्वितीय और अनुपम हो और उस लेख को उस से अधिक सुगम इबारत में वर्णन करना संभव न हो।

ये तो वे कारण हैं जो सूरह फ़ातिहा और क़ुर्आन करीम में इस प्रकार से
℗338 पाए जाते हैं जिन्हें गुलाब के फूल ℗के अद्वितीय कारणों से पूर्णतया अनुकूलता है, परन्तु सूरह फ़ातिहा और क़ुर्आन करीम में एक और महान

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

कि गहन जांच-पड़ताल से सिद्ध हुआ है कि मनुष्य इस संसार में बहुत सी विभिन्न शक्तियों के साथ भेजा गया है और उसका स्वाभाविक कमाल यह है कि प्रत्येक शक्ति को यथास्थान प्रयोग में लाए। क्रोध के स्थान पर
℗348 क्रोध, ℗दया के स्थान पर दया। यह नहीं कि बिल्कुल सहिष्णुता ही सहिष्णुता हो और अन्य समस्त शक्तियों को निलंबित और व्यर्थ छोड़ दे। हां उन समस्त आन्तरिक शक्तियों की सहिष्णुता की शक्ति को भी यथास्थान प्रकट करना एक मनुष्य की विशेषता है, परन्तु मनुष्य के स्वभाव का वृक्ष जिसे ख़ुदा ने कई शाखाओं में जो उसकी भिन्न-भिन्न शक्तियां हैं
℗349 विभाजित किया है। केवल एक शाखा के हरे-भरे होने से पूर्ण ℗नहीं कहला

के साथ प्रयोग में न लाए उन सूक्ष्मताओं का प्रकटन नहीं होता। इससे स्वच्छन्द नीतिवान (ख़ुदा) का यह इरादा है कि उन्नति करने का मार्ग खुला रहे तथा जिस

शेष हाशिया नं. (11)

विशेषता पाई जाती है जो उसी पवित्र कलाम से विशेष्य है और वह यह है कि उसे ध्यानपूर्वक और नि:स्वार्थता से पढ़ना हृदय को स्वच्छ करता है तथा अंधकारमय पर्दों को उठाता है, सीने को प्रफुल्लित करता है तथा सत्याभिलाषी को ख़ुदा तआला की ओर आकर्षित करके ऐसे प्रकाश और निशानों का पात्र बनाता है जो ख़ुदा के सानिध्य प्राप्त लोगों में होना चाहिए, जिन्हें मनुष्य किसी अन्य बहाने या युक्ति से कदापि प्राप्त नहीं कर सकता। इस अध्यात्मिक प्रभाव का सबूत भी हम इस पुस्तक में दे चुके हैं। यदि कोई सत्याभिलाषी हो तो आमने सामने हम उसकी सन्तुष्टि कर सकते हैं और इस समय ताज़ा तथा नूतन सबूत देने को तैयार हैं। अतएव इस बात को भली-भांति स्मरण रखना चाहिए कि क़ुर्आन करीम का अपने कलाम में अद्वितीय और अनुपम होना केवल बुद्धि-संगत सबूतों में सीमित नहीं अपितु एक लम्बे समय का सही अनुभव भी उसका समर्थक और सत्यापनकर्ता है, क्योंकि बावजूद इसके कि क़ुर्आन करीम तेरह सौ वर्ष से निरन्तर अपनी समस्त विशेषताएं प्रस्तुत करके هَلْ مِنْ معارض है कोई प्रतिद्वन्द्वी ? का नगाड़ा बजा रहा है और समस्त संसार को उच्च स्वर में कह रहा है कि वह अपने बाह्य रूप और आन्तरिक विशेषताओं में अद्वितीय और अनुपम है तथा किसी जिन्न अथवा इन्सान को उससे मुक़ाबला या झगड़ने

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

सकता अपितु वह उसी स्थिति में पूर्ण कहलाएगा जब उसकी समस्त शाखाएं हरी-भरी और सींची हुई हों तथा कोई शाखा अनुकूलता की सीमा से न्यूनाधिक न हो। यह बात बौद्धिक तौर से प्रमाणित है कि हमेशा और हर स्थान पर यही सदाचार उचित नहीं हो सकता कि दुष्ट की दुष्टता को अनदेखा किया जाए अपितु स्वयं प्रकृति का नियम ही इस विचार का दोषपूर्ण ®होना प्रकट करता है क्योंकि हम देखते हैं वास्तविक युक्तिवान ने ®350

सौभाग्य के लिए मनुष्य उत्पन्न किया गया है उस सौभाग्य तक वह पहुंच जाए।
Ⓟ391 अत: ख़ुदा के जितने मार्ग हैं वे केवल साधारण कारीगरी पर समाप्त Ⓟनहीं हो सकते

शेष हाशिया नं. (11)

की शक्ति नहीं, परन्तु फिर भी किसी प्राणी ने उसके मुकाबले पर दम नहीं मारा अपितु उसकी कम से कम किसी सूरह उदाहरणतया सूरह 'फ़ातिहा' की बाह्य और आन्तरिक विशेषताओं का भी मुक़ाबला नहीं कर सका। अत: देखो कि इससे अधिक स्पष्ट तथा खुला-खुला चमत्कार और क्या होगा कि बौद्धिक तौर पर भी इस पवित्र कलाम का मानव शक्तियों से श्रेष्ठतम होना सिद्ध होता है तथा दीर्घ समय का अनुभव भी उसकी चमत्कारिक श्रेणी पर साक्ष्य प्रस्तुत करता है और यदि किसी को ये दोनों प्रकार की साक्ष्य जो बुद्धि तथा दीर्घ समय के अनुभव की दृष्टि से प्रमाणित हो चुकी है अस्वीकार हो तथा अपने ज्ञान और कला पर गर्व हो या संसार में किसी ऐसे मनुष्य की गद्य-रचना को स्वीकार करना हो कि जो क़ुर्आन करीम की तरह कोई कलाम बना सकता है तो हम जैसा कि वादा कर चुके हैं सूरह फ़ातिहा की कुछ सच्चाइयां और बारीकियां बतौर नमूना लिखते हैं उसे चाहिए कि सूरह
Ⓟ339 Ⓟफ़ातिहा की इन बाह्य और आन्तरिक विशेषताओं के मुक़ाबले पर कोई अपना कलाम प्रस्तुत करे, परन्तु सूरह फ़ातिहा की श्रेष्ठ सच्चाइयों के विवरण से पूर्व हम कलाम के विस्तृत हो जाने की चिन्ता न करते हुए पुन:

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

संसार की व्यवस्था इसी में रखी है जो कभी नम्रता और कभी सख़्ती की जाए और कभी क्षमा और कभी दण्ड दिया जाए और यदि केवल नम्रता ही हो या केवल कठोरता ही हो तो फिर संसार के अनुशासन का रूप ही बिगड़ जाता है। अत: इस से सिद्ध है कि हमेशा और हर स्थान में क्षमा करना
Ⓟ351 वास्तविक नेकी नहीं है अपितु ऐसी Ⓟशिक्षा को पूर्ण शिक्षा समझना एक गलती है जो उन लोगों को लगी हुई है जिनकी निगाहें मानव स्वभाव की पूरी गहराई तक नहीं पहुंचतीं और जिन की दृष्टि उन समस्त शक्तियों को देखने से बन्द रहती है जो मनुष्य को अपने-अपने स्थान पर उपयोग करने

अपितु उन में जितना खोदते जाओ अधिक से अधिक बारीकियां निकलती हैं। अतः जबकि उन समस्त वस्तुओं के सन्दर्भ में जो ख़ुदा की ओर से हैं यह सामान्य नियम

शेष हाशिया नं. (11)

वर्णन करते हैं कि प्रतिद्वन्द्वी व्यक्ति इस बात को ख़ूब स्मरण रखे कि जैसा अभी हम लिख चुके हैं सूरह फ़ातिहा में सम्पूर्ण क़ुर्आन करीम की तरह दो प्रकार की विशेषताएं कि जो अद्वितीय और अनुपम हैं पाई जाती हैं अर्थात् एक बाह्य रूप में विशेषता तथा एक आन्तरिक विशेषता। बाह्य विशेषता यह कि जैसा कि अनेक बार चर्चा की गई है उसकी इबारत ऐसी सुमधुर, सुसज्जित, सुगम, मृदुल, लयात्मक, उत्तम वर्णन और क्रम में है कि उन अर्थों को इस से उत्तम या इस के समान किसी अन्य सुगम इबारत में व्यक्त करना संभव नहीं और यदि समस्त विश्व के गद्य-लेखक और कवि सहमत हो कर यह चाहें उसी विषय को लेकर अपने तौर पर किसी अन्य सुगम इबारत में लिखें कि जो सूरह फ़ातिहा की इबारत के समान या उससे उत्तम हो तो यह बात बिल्कुल दुर्लभ और निषिद्ध है कि ऐसी इबारत लिख सकें, क्योंकि तेरह सौ वर्ष से क़ुर्आन करीम समस्त विश्व के सामने अपनी अद्वितीयता का दावा प्रस्तुत कर रहा है, यदि संभव होता तो कोई विरोधी उसका मुक़ाबला करके दिखाता, हालांकि ऐसे दावे का मुकाबला न करने में समस्त विरोधियों की बदनामी और अपमान तथा क़ुर्आन करीम की

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

हेतु प्रदान की गई हैं। जो व्यक्ति निरन्तर स्थान-स्थान पर एक ही शक्ति को उपयोग ®किए जाता है और दूसरी समस्त सदाचार संबंधी शक्तियों को बेकार®352 छोड़ देता है वह जैसे उस स्वभाव को जो ख़ुदा ने प्रदान किया है परिवर्तित करना चाहता है तथा सर्वशक्तिमान ख़ुदा के कर्म को अपनी मूर्खता से आरोप-योग्य ठहराता है। क्या यह कुछ अच्छी बात है कि हम प्रत्येक समय अवसर और हित को ध्यान में न रखते हुए अपने पापियों के पापों को क्षमा ®किया करें और कभी इस प्रकार की हमदर्दी न करें जिसमें दुष्ट की दुष्टता®353 का उपचार हो कर भविष्य के लिए उसकी तबियत सुधर जाए। स्पष्ट है

सिद्ध हो चुका है कि वे समस्त सूक्ष्म मर्म तथा जटिल रहस्यों से युक्त हैं, तो उसे प्रकृति के नियम के अनुसरण से यह भी प्रत्येक बुद्धिमान को स्वीकार करना पड़ा

शेष हाशिया नं. (11)

प्रतिष्ठा और सम्मान सिद्ध होता है। चूंकि तेरह सौ वर्ष से अब तक किसी विरोधी ने क़ुर्आन करीम के सदृश प्रस्तुत नहीं किया। फिर इतने लम्बे समय तक समस्त विरोधियों का सदृश प्रस्तुत करने से असमर्थ रहना और अपने लिए इन समस्त अपमानों, निर्ल्लज्जताओं और लानतों को उचित समझना कि जो झूठों और निरुत्तर रहने वालों की ओर लागू होती हैं इस बात पर स्पष्ट सबूत है कि वास्तव में उनकी ज्ञान संबंधी शक्ति मुक़ाबले से असमर्थ रही है और यदि कोई इस बात को स्वीकार न करे तो प्रमाण प्रस्तुत करने का दायित्व उसी की गर्दन पर है कि वह स्वयं अथवा अपने किसी सहायक से क़ुर्आन के सदृश इबारत बनवाकर प्रस्तुत करे। उदाहरणतया सूरह फ़ातिहा के विषय को लेकर कोई अन्य सुगम इबारत बना कर दिखाए जो पूर्ण सुगमता और सरलता में उसके समान हो सके तथा जब तक ऐसा न करे तब तक
Ⓟ340 वह सबूत Ⓟजो विरोधियों के तेरह सौ वर्ष ख़ामोश और निरुत्तर रहने से सदात्मा लोगों के हाथ में है किसी प्रकार से कम विश्वसनीय नहीं हो सकता अपितु विरोधियों की सैकड़ों वर्ष की खामोशी तथा निरुत्तर रहने से उसे सबूत की वह पूर्ण श्रेणी प्रदान की है कि जो गुलाब के फूल इत्यादि

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

कि जैसे बात-बात में दण्ड देना और प्रतिशोध लेना निन्दनीय और सदाचार के विरुद्ध है। इसी प्रकार यह भी वास्तविक सहानुभूति के विपरीत है कि
Ⓟ354 हमेशा यही नियम अपनाया जाए कि जब कभी किसी से कोई Ⓟअपराधिक गतिविधि सामने आए तो तुरन्त उसके अपराध को क्षमा किया जाए। जो व्यक्ति हमेशा अपराधी को दण्ड दिए बिना छोड़ देता है वह संसार के अनुशासन का ऐसा ही शत्रु है जैसा वह व्यक्ति जो हमेशा और हर परिस्थिति में प्रतिशोध और द्वेष निकालने पर तैयार रहता है। मूर्ख लोग प्रत्येक स्थान
Ⓟ355 में क्षमा और माफ़ करना पसन्द करते हैं यह नहीं सोचते कि हमेशा Ⓟक्षमा

कि ख़ुदा का कलाम भी सूक्ष्म रहस्यों से रिक्त नहीं रहना ®चाहिए अपितु उसमें ®392
सर्वाधिक आश्चर्यजनक बातें होनी चाहिएं, क्योंकि वह ख़ुदा का कलाम है तथा

शेष हाशिया नं. (11)

को वह अद्वितीयता का सबूत प्राप्त नहीं क्योंकि संसार के वैज्ञानिकों और उद्यमियों को किसी अन्य वस्तु में इस तौर पर मुक़ाबले के लिए कभी प्रेरणा नहीं दी गई और न उसके सदृश बनाने से असमर्थ रहने की स्थिति में कभी उन्हें यह भय दिलाया गया कि वे भिन्न-भिन्न प्रकार के विनाश और तबाही में डाले जाएंगे। अतः स्पष्ट है कि जिस असंदिग्धता और चमक-दमक से क़ुर्आन करीम की सरल और सुबोध का मानव शक्तियों से श्रेष्ठतम होना सिद्ध है उस प्रकार पर गुलाब की मृदुलता, मनोहरता इत्यादि का अद्वितीय होना कदापि सिद्ध नहीं। अतः यह तो सूरह फ़ातिहा और समस्त क़ुर्आन की बाह्य विशेषता का वर्णन है जिसमें उसका अद्वितीय और अनुपम होना तथा मानव शक्तियों से श्रेष्ठतम होना विरोधियों के असमर्थ रहने से प्रमाणित हो गया है। अब हम आन्तरिक विशेषताओं की भी पुनरावृति करते हुए चर्चा करते हैं ताकि उचित प्रकार से विचार करने वालों के मस्तिष्क में आ जाएं। अतः ज्ञात होना चाहिए कि जैसा सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने मानव शरीर के लिए गुलाब के फूल में भिन्न-भिन्न प्रकार के लाभ रखे हैं कि वह हृदय को शक्ति देता है, शक्तियों और आत्माओं (रूहों) को मज़बूती प्रदान करता

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

करने से संसार के अनुशासन में उथल-पुथल उत्पन्न हो जाती है और यह कृत्य स्वयं अपराधी के पक्ष में भी हानिकर है, क्योंकि इस से उस की बुराई की आदत परिपक्व होती जाती है तथा दुष्टता का कौशल दृढ़ होता जाता है। एक चोर को दण्ड के बिना छोड़ दो फिर देखो कि दूसरी बार क्या रंग दिखाता है, इसी दृष्टि से ख़ुदा तआला ने अपनी इस किताब में ®जो नीति ®356
और युक्ति से परिपूर्ण है फ़रमाया -

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰاُولِي الْاَلْبَابِ [1]

---

[1] अलबक़रह : 180

स्वच्छन्द नीतिवान के अनादि ज्ञानों का भण्डार है जिसे ख़ुदा ने इस बात का साधन बनाया है कि प्रकृति के समस्त नियम जो आकाशों और पृथ्वी में पाए जाते हैं उनके

शेष हाशिया नं. (11)

है तथा कई अन्य रोगों के लिए लाभप्रद है ऐसा ही ख़ुदा तआला ने सूरह फ़ातिहा में सम्पूर्ण क़ुर्आन की तरह अध्यात्मिक रोगों का निदान रखा है तथा इसमें आन्तरिक रोगों का वह उपचार मौजूद है जो इसके अतिरिक्त में कदापि नहीं पाया गया, क्योंकि इसमें वे पूर्ण सच्चाइयां भरी हुई हैं कि जो पृथ्वी पर से मिट गई थीं और संसार में उनका कोई लक्षण शेष नहीं रहा था। अत: वह पवित्र कलाम व्यर्थ और बेकार तौर पर संसार में नहीं आया अपितु वह आकाशीय प्रकाश उस समय आभामय हुआ जब कि संसार को उसकी नितान्त आवश्यकता थी और उन शिक्षाओं को लाया कि संसार में जिनका प्रसारण संसार के सुधार हेतु अत्यन्त आवश्यक था। अत: जिन
Ⓟ341 पवित्र Ⓟशिक्षाओं की नितान्त आवश्यकता थी तथा जिन अध्यात्म ज्ञानों और सच्चाइयों को प्रकाशित करने की अत्यधिक आवश्यकता थी उन्हीं आवश्यक, अनिवार्य और ख़ुदाई सच्चाइयों को यथासमय और यथाअवसर में एक अद्वितीय सुगमता और सरलता की शैली में वर्णन किया तथा उपर्युक्त अनिवार्यताओं के साथ जो कुछ पथ-भ्रष्ट लोगों के मार्ग-दर्शन के लिए और वर्तमान स्थिति के सुधार हेतु वर्णन करना अनिवार्य था उस में

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ①

अर्थात हे बुद्धिमानो ! हत्यारे की हत्या करने और दुष्ट को उतना ही कष्ट
Ⓟ357 देने में तुम्हारा जीवन है जिसने एक मनुष्य की अकारण व्यर्थ में हत्या Ⓟकर दी तो उसने जैसे समस्त मनुष्यों की हत्या कर डाली। इसी प्रकार फ़रमाया -

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى ②

अर्थात् ख़ुदा आदेश देता है कि तुम न्याय, उपकार और परिजनों को दान

---

① अलमाइदह : 33 ② अन्नहल : 91

सुधार के लिए इसमें साधन मौजूद हों। अतः यदि वह अपूर्ण हो तो उस से इतने बड़े कार्य क्योंकर सम्पन्न हो सकें। यदि वह ®मनुष्य को समस्त दोषों से पवित्र न कर ®393

शेष हाशिया नं. (11)

थोड़ी सी भी कमी नहीं की तथा जो कुछ अनावश्यक, व्यर्थ और बेहूदा था उसका किसी वाक्य में समावेश न होने पाया। अतः वे प्रकाश और पवित्र सच्चाइयां उपर्युक्त उस प्रतिष्ठा के जो उन्हें श्रेष्ठ श्रेणी के अध्यात्म ज्ञान होने के कारण प्राप्त हैं एक अत्यन्त महानता और बरकत यह रखती हैं कि वे व्यर्थ और बेकार तौर पर प्रकट नहीं की गईं अपितु संसार में जो भिन्न-भिन्न प्रकार का अंधकार फैला हुआ था ज्ञान, कर्म तथा आस्थागत मामलों में युग की दशा पर जिस-जिस प्रकार की अज्ञानता, और विकार का प्रभुत्व हो गया था, उस हर प्रकार के विकार के मुकाबले पर पूर्ण शक्ति से उन समस्त अंधकारों के निवारण तथा प्रकाश के प्रसारण हेतु उचित समय पर दया-वृष्टि की भांति संसार में उन सच्चाइयों को प्रकट किया गया तथा वास्तव में वह दया-वृष्टि ही थी जो अत्यन्त प्यासों के प्राणों की रक्षा हेतु

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

देने के समान अन्य को भी यथाअवसर दो। अतः जानना चाहिए कि इंजील की शिक्षा इस पूर्णता की श्रेणी से जिस से संसार का अनुशासन व्यवस्थित और सुदृढ़ है नितान्त निचले स्तर पर है ®तथा इस शिक्षा को ®358 पूर्ण समझना भी भारी भूल है। ऐसी शिक्षा कदापि पूर्ण नहीं हो सकती, अपितु यह उन दिनों की युक्ति है कि जब बनी इस्राईल की क़ौम की आन्तरिक दया बहुत कम हो गई थी तथा निर्दयता, अशिष्टता, निष्ठुरता, हृदय की कठोरता और द्वेष भाव अत्यधिक बढ़ गया था। ख़ुदा चाहता था कि जिस प्रकार वे लोग द्वेष-भाव की ओर अत्यधिक ®झुके हुए थे, ®359 ठीक उसी प्रकार दया और क्षमा की ओर प्रवृत्त किया जाए, परन्तु यह दया और क्षमा की शिक्षा ऐसी शिक्षा न थी जो हमेशा के लिए स्थापित रह सकती क्योंकि उसका आधार वास्तविक केन्द्र पर न था अपितु उस नियम की तरह जो किसी स्थान के साथ विशेष्य होता है, केवल उपद्रवी

सकता तो फिर केवल कुछ दोषों से पवित्र रहना वास्तव में ऐसा था कि जैसा मंज़िल तक पहुंचाने से पूर्व मार्ग में ही छोड़ देता। अत: जब ख़ुदा का प्रकृति का नियम (जो

शेष हाशिया नं. (11)

आकाश से उतरी, संसार का अध्यात्मिक जीवन इसी बात पर निर्भर था कि वह अमृत उतरे और उसकी कोई बूंद ऐसी न थी कि किसी वर्तमान रोग की औषधि न हो। युग की वर्तमान स्थिति ने सैकड़ों वर्षों तक अपनी साधारण पथ-भ्रष्टता पर रहकर यह सिद्ध कर दिया था कि वह इन रोगों के उपचार को उस प्रकाश के उतरने के बिना स्वयं प्राप्त नहीं कर सकता और न अपने अंधकार का स्वयं निवारण कर सकता है अपितु एक आकाशीय प्रकाश का मुहताज है कि जो अपनी सच्चाई की किरणों से संसार को प्रकाशित करे तथा उन्हें दिखा दे जिन्होंने कभी नहीं देखा और उन्हें समझा दे जिन्होंने कभी नहीं समझा। उस आकाशीय प्रकाश ने संसार में आकर केवल यही कार्य नहीं किया कि ऐसे आवश्यक वास्तविक अध्यात्म ज्ञान
Ⓟ342 प्रस्तुत किए जिनका सम्पूर्ण पृथ्वी पर Ⓟलक्षण शेष नहीं रहा था अपितु अपनी अध्यात्मिक विशेषता के बल पर सत्य और नीति के जौहरों को अनेकों सीनों में भर दिया तथा अनेकों हृदयों को अपने मनोहर चेहरे की ओर आकर्षित किया और अपने शक्तिशाली प्रभाव से अनेकों को ज्ञान और कर्म

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

और उद्दण्ड यहूदियों के सुधार हेतु एक विशेष नीति थी और मात्र कुछ
Ⓟ360 समय का प्रबन्ध था Ⓟतथा मसीह को भलीभांति ज्ञात था कि ख़ुदा शीघ्र ही इस अस्थायी शिक्षा को नष्ट करके संसार की शिक्षा के लिए उस पूर्ण किताब को भेजेगा जो समस्त संसार को वास्तविक नेकी की ओर बुलाएगी और ख़ुदा की प्रजा पर सत्य और नीति का द्वार खोल देगी। इसलिए उसे कहना पड़ा कि अभी बहुत सी बातें शिक्षा-योग्य शेष हैं जिन्हें तुम अभी
Ⓟ361 सहन नहीं कर सकते परन्तु मेरे Ⓟपश्चात् एक और आने वाला है वह सब बातें खोल देगा तथा धार्मिक ज्ञान को चरम सीमा तक पहुंचाएगा। अत: हज़रत मसीह जो इन्जील को अपूर्ण का अपूर्ण ही छोड़कर आकाशों पर

उसकी ओर से प्रत्येक वस्तु में लागू है) यही सिद्ध हुआ कि उन सब में ख़ुदा तआला ने जटिल रहस्य भी अवश्य रखे हैं, केवल मोटी बातों पर अन्त नहीं किया।

शेष हाशिया नं. (11)

के उच्च शिखर पर पहुंचाया। अब ये दोनों प्रकार की विशेषताएं जो सूरह फ़ातिहा और सम्पूर्ण क़ुर्आन करीम में पाई जाती हैं, क़ुर्आन करीम की अद्वितीयता सिद्ध करने के लिए ऐसे प्रकाशमान सबूत हैं कि जैसे वे विशेषताएं जो गुलाब के फूल में सब के निकट मानव शक्तियों से श्रेष्ठ स्वीकार की गई हैं, अपितु सत्य तो यह है कि ये विशेषताएं स्पष्ट तौर पर जितनी स्वभाव से हटकर तथा मानव शक्ति से बाहर हैं उस की विशेषताएं गुलाब के फूल में कदापि नहीं पाई जातीं। इन विशेषताओं की श्रेष्ठता, प्रतिष्ठा और अद्वितीयता उस समय प्रकट होती है जब मनुष्य सामूहिक तौर पर सब को अपने विचार में लाए तथा उस पर दूरदर्शिता से दृष्टि डाले। उदाहरणतया प्रथम इस बात की कल्पना करने से कि एक कलाम की इबारत ऐसी श्रेष्ठ श्रेणी की सुगम, सरल, सुललित, सुमधुर, आसान, उत्तम तथा सुसज्जित शैली हो कि यदि कोई मनुष्य अपनी ओर से कोई ऐसी इबारत बनाना चाहे जो पूर्णरूपेण उन्हीं अर्थों पर आधारित हो जो उस सुगम कलाम में पाए

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

जा बैठे और एक लम्बे समय तक वही अपूर्ण किताब लोगों के हाथ में रही और फिर उस मासूम नबी की भविष्यवाणी के अनुसार ख़ुदा ने क़ुर्आन करीम को उतारा और ®ऐसी पूर्ण शरीअत प्रदान की जिसमें न तो तौरात की ®362
तरह अकारण प्रत्येक स्थान और अवसर पर दांत के बदले दांत निकालना अनिवार्य लिखा और न इन्जील की भांति यह आदेश दिया कि हमेशा और हर स्थिति में अन्यायी के थप्पड़ खाने चाहिएं अपितु वह पूर्ण कलाम अस्थायी विचारों से हटा कर वास्तविक नेकी की ओर प्रोत्साहन देता है तथा जिस ®बात में वास्तविक तौर पर भलाई उत्पन्न हो चाहे वह बात कठोर ®363
हो अथवा नम्र उसी को करने का आग्रह करता है। जैसा कि फ़रमाता है -

Ⓟ394 अत: इस जांच-पड़ताल Ⓟसे उन लोगों का झूठ खुल गया जिनका यह दावा है कि ख़ुदा के कलाम में केवल कुछ आदेश शीघ्र समझ में आने वाले होना चाहिए तथा

शेष हाशिया नं. (11)

जाते हैं तो कदापि संभव न हो कि वह मानव इबारत उस स्तर की सरसता और सुन्दरता को पहुंच सके। फिर साथ ही यह दूसरी कल्पना करने से कि उस इबारत के विषय ऐसी सच्चाइयों और बारीकियों पर आधारित हों जो वास्तव में श्रेष्ठ श्रेणी की सच्चाइयां हों तथा कोई वाक्य और कोई शब्द और कोई अक्षर ऐसा न हो जो विद्वतापूर्ण वर्णन पर आधारित न हो, फिर साथ ही यह तीसरी कल्पना करने से कि वे सच्चाइयां ऐसी हों कि वर्तमान युग की परिस्थिति को उनकी नितान्त आश्यकता हो, फिर साथ ही यह चौथी कल्पना करने से कि वे सच्चाइयां ऐसी अद्वितीय और अनुपम हों कि किसी विद्वान अथवा दार्शनिक का पता न मिल सकता हो कि उन सच्चाइयों को अपने सोच-विचार द्वारा ज्ञात करने वाला हो चुका हो, फिर साथ ही यह पांचवीं कल्पना करने से कि जिस युग में वे सच्चाइयां प्रकट हुई हों एक नूतन ने'मत की तरह प्रकट हुई हों और उस युग के लोग उनके
Ⓟ343 प्रकट होने से पूर्व उस सदमार्ग से पूर्णतया अपरिचित हों, Ⓟफिर साथ ही यह छठी कल्पना करने से कि उस कलाम में एक आकाशीय बरकत भी सिद्ध हो कि सत्याभिलाषी को उसके अनुसरण से ख़ुदा तआला के साथ एक सच्चा संबंध तथा एक वास्तविक प्रेम उत्पन्न हो जाए तथा उसमें वे प्रकाश

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ① (भाग - 25)

अर्थात बुराई के दण्ड में न्याय का नियम तो यही है कि बुराई करने वाला
Ⓟ364 व्यक्ति उतनी ही बुराई का पात्र है जितनी बुराई उसने Ⓟकी है, परन्तु जो व्यक्ति क्षमा करके कोई सुधार का काम करे अर्थात् ऐसी क्षमा न हो जिसका परिणाम कोई बुराई हो। अत: उसका प्रतिफल ख़ुदा पर है, इसी प्रकार शरीअत की सार्वभौमिकता तथा पूर्णता की ओर इस आयत में भी संकेत किया -

---

① अश्शूरा : 41

उसमें सूक्ष्म आश्चर्यजनक बातें नहीं चाहिएं और न हैं। इस स्थान पर उन्होंने अपने इस भ्रम को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से एक तर्क बनाया हुआ है। और वह यह है कि

शेष हाशिया नं. (11)

चमकने लगें जो ख़ुदा के सदात्मा लोगों पर चमकने चाहिएं। यह समस्त समाहार एक ऐसी परिस्थिति में मालूम होता है कि सद्बुद्धि बिना विलम्ब और असमंजस के आदेश देती है कि मानव कलाम का इन समस्त पूर्ण श्रेणियों पर आधारित होना निषेध, असंभव और सामर्थ्य से बढ़कर है तथा निसन्देह इन समस्त बाह्य और आन्तरिक श्रेष्ठताओं पर इकट्ठी दृष्टि डालने से उन में एक रोबदार स्थिति पाई जाती है जो बुद्धिमान को इस बात का विश्वास दिलाती है कि इस समस्त समाहार का मानव शक्तियों से सम्पन्न होना बुद्धि और कल्पना से बाहर है और ऐसी रोबदार स्थिति गुलाब के फूल में कदापि नहीं पाई जाती, क्योंकि क़ुर्आन में यह विशेषता अधिक है कि उसकी उपर्युक्त विशेषताओं को जो अद्वितीयता का आधार हैं नितान्त स्पष्ट हैं। इसी कारण जब प्रतिद्वन्द्वी को ज्ञात होता है कि उसका एक अक्षर भी ऐसे स्थान पर नहीं रखा गया कि जो नीति और हित से दूर हो, उसका एक वाक्य भी ऐसा नहीं जो युग के सुधार हेतु आवश्यक न हो, फिर सुगमता की यह कला कि कदापि संभव ही नहीं कि उसकी एक पंक्ति की इबारत परिवर्तित करके उसके स्थान पर कोई अन्य इबारत लिख सकें। अतः इन स्पष्ट कलाओं के अवलोकन से प्रतिद्वन्द्वी के हृदय पर एक अत्यधिक रोब

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ (1)

अर्थात आज मैंने धार्मिक ज्ञान को पूर्णता की श्रेणी तक पहुंचाया और Ⓟउम्मते Ⓟ365 मुहम्मदिया पर अपनी ने'मत को पूर्ण किया। अब इस समस्त जांच-पड़ताल से स्पष्ट है कि इन्जील की शिक्षा पूर्ण भी नहीं कहां यह कि उसे अद्वितीय और अनुपम कहा जाए। हां यदि इंजील शब्द और अर्थ की दृष्टि से ख़ुदा का कलाम होती और उसमें ऐसी विशेषताएं पाई जातीं जिन का मनुष्य के

(1) अलमाइदह : 4

इल्हामी किताबें अज्ञानियों, मन्द बुद्धि वालों, अनपढ़ों और ख़ानाबदोशों
Ⓟ395 (यायावरों) के लिए उतरी हैं। Ⓟअत: उन की शिक्षा वैसी ही चाहिए जो उन लोगों

शेष हाशिया नं. 11

(दबदबा) पड़ जाता है। हां कोई मूर्ख जिसने इन बातों पर कभी विचार नहीं किया कदाचित अपनी मूर्खतावश प्रश्न करे कि इस बात का सबूत क्या है कि ये समस्त विशेषताएं सूरह फ़ातिहा और समस्त क़ुर्आन करीम में मौजूद और प्रमाणित हैं। अत: स्पष्ट हो कि इस बात का यही सबूत है कि जिन्होंने क़ुर्आन करीम की अद्वितीय विशेषताओं पर विचार किया तथा उसकी इबारत को ऐसी उच्च स्तर की सुगमता और सरलता पर पाया कि उसके सदृश बनाने से असमर्थ रह गए, फिर उसकी बारीकियों और सच्चाइयों को ऐसे उच्च स्तर पर देखा कि समस्त युगों में उसका सदृश न आया तथा उसमें ऐसे अद्‌भुत प्रभावों को देखा जो मानव वाक्यों में कदापि
Ⓟ344 नहीं Ⓟहुआ करते, फिर उसमें यह पवित्र विशेषता देखी कि वह ऐसी हास्यास्पद बातों, जिनमें अश्लीलता का अंश हो तथा निरर्थक बातों के तौर पर नहीं उतरा अपितु वास्तविक आवश्यकता के समय उतरा तो उन्होंने उन समस्त विशेषताओं को देखकर सहसा उसकी अद्वितीय श्रेष्ठता को स्वीकार कर लिया तथा उनमें से जो लोग हमेशा के दुर्भाग्यवश ईमान की ने'मत से वंचित रहे उनके हृदयों पर भी इस अद्वितीय कलाम का इतना भय और रोब पड़ा कि उन्होंने भी स्तब्ध और हैरान होकर यह कहा कि यह तो खुला-खुला जादू है फिर न्यायकर्ता को इस बात से भी क़ुर्आन करीम के अद्वितीय

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

कलाम में पाया जाना निषिद्ध और दुर्लभ है तब वह नि:सन्देह अद्वितीय
Ⓟ366 ठहरती परन्तु वे विशेषताएं तो इन्जील Ⓟमें से उसी युग में समाप्त हो गईं जब ईसाई सज्जनों ने स्वार्थपरता से उसमें हस्तक्षेप करना प्रारंभ कर दिया। न वे शब्द रहे, न वे अर्थ रहे, न वह नीति, न वह ख़ुदा की पहचान का ज्ञान। अब हे सज्जनो! आप लोग तनिक होश संभाल कर उत्तर दें कि जब
Ⓟ367 एक ओर ईमान की पूर्णता अद्वितीय किताब पर निर्भर है और दूसरी Ⓟओर

की बुद्धि के अनुकूल हो, क्योंकि अनपढ़ और निरक्षर मनुष्य बारीक रहस्यों से लाभान्वित नहीं हो सकते और न उन से परिचित हो सकते हैं, परन्तु स्पष्ट

शेष हाशिया नं. (11)

और अनुपम होने पर एक ठोस सबूत मिलता है तथा स्पष्ट प्रमाण हाथ में आता है कि बावजूद इसके कि विरोधियों को तेरह सौ वर्ष से स्वयं क़ुर्आन करीम मुक़ाबला करने की सख़्त चुनौती देता है और निरुत्तर रहकर विरोध और इन्कार करने वालों का नाम दुष्ट, अधम, ला'नती और नारकी रखता है परन्तु फिर भी विरोधियों ने नामर्दों और नपुंसकों की भांति नितान्त निर्लज्जता और बेशर्मी से इस समस्त अपमान, अपयश और अनादर को अपने लिए स्वीकार किया और यह उचित समझा कि उनका नाम झूठा, अपमानित, निर्लज्ज, दुष्ट, अपवित्र, बेईमान और नारकी रखा जाए, परन्तु एक छोटी सी सूरह का मुकाबला न कर सके और न उन गुणों, विशेषताओं, श्रेष्ठताओं और सच्चाइयों में कुछ दोष या कमी निकाल सके कि जिन्हें ख़ुदा के कलाम ने प्रस्तुत किया है, हालांकि हमारे विरोधियों पर इन्कार की स्थिति में अनिवार्य था और अब भी अनिवार्य है कि यदि वे अपने कुफ्र और बेईमानी को त्यागना नहीं चाहते तो वे क़ुर्आन करीम की किसी सूरह का सदृश प्रस्तुत करें तथा कोई ऐसा कलाम बतौर मुक़ाबला हमारे समक्ष लाएं जिसमें ये बाह्य और आन्तरिक समस्त विशेषताएं पाई जाती हों जो क़ुर्आन करीम की प्रत्येक छोटी से छोटी सूरह में पाई जाती हैं अर्थात् उसकी इबारत ऐसी उच्च स्तर की सुगमता पर उपर्युक्त ईमानदारी, सच्चाई तथा वास्तविक आवश्यकता की अनिवार्यता के साथ आधारित हो कि किसी मनुष्य के लिए कदापि

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

आप लोगों की यह दशा कि न क़ुर्आन करीम को मानें और न ऐसी कोई दूसरी किताब निकालकर दिखाएं जो अद्वितीय हो तो फिर आप लोग ईमान और विश्वास की पूर्णता की श्रेणी तक क्योंकर पहुंच सकते हैं और क्यों निश्चिन्त बैठे हैं। क्या किसी और किताब के उतरने की प्रतीक्षा है अथवा **ब्रह्म समाजी** बनने की इच्छा है तथा ईमान और ख़ुदा की ®कुछ परवाह नहीं।®368
अब देखिए कि क़ुरआन करीम की अद्वितीयता के इन्कार ने आपको कहां से

हो कि यह भ्रम उनके हृदयों को मात्र अदूरदर्शिता के कारण पकड़ता है। इस अधम और तुच्छ विचार से अत्यन्त मूर्खता और धूर्तता की दुर्गन्ध आती है। काश कि वे ख़ुदा

शेष हाशिया नं. 11

संभव न हो कि वे अर्थ ऐसी ही किसी अन्य सुगम इबारत में ला सके तथा
Ⓟ345 उसका विषय Ⓟउच्च स्तरीय सच्चाइयों पर आधारित हो तथा वे सच्चाइयाँ भी ऐसी हों जो व्यर्थ तौर पर न लिखी गई हों अपितु अत्यधिक आवश्यकता ने उनका लिखना अनिवार्य किया हो और वे सच्चाइयां ऐसी हों कि उनके प्रकटन से पूर्व समस्त संसार उन से अज्ञान हो तथा उनका प्रकटीकरण एक नवीन ने'मत की तरह हो, फिर समस्त विशेषताओं के साथ उनमें एक यह अध्यात्मिक विशेषता भी विद्यमान हो कि उनमें क़ुर्आन करीम की तरह वे स्पष्ट प्रभाव भी पाए जाएं जिन का प्रमाण हम ने इस पुस्तक में दे दिया है और सत्याभिलाषी के लिए हर समय ताज़ा से ताज़ा सबूत देने के लिए तैयार हैं और जब तक कोई प्रतिद्वन्द्वी ऐसा कोई सदृश प्रस्तुत न करे तब तक उसका असमर्थ रहना क़ुर्आन करीम की अद्वितीयता को सिद्ध करता है तथा यहां क़ुर्आन करीम की अद्वितीयता के कारणों का जो उल्लेख किया गया यह तो हम ने नितान्त कमी और संक्षेप के साथ किया है। यदि हम क़ुर्आन करीम की उन अन्य समस्त विशेषताओं को भी जो उसमें पाई जाती हैं का सदृश प्रस्तुत करने के लिए अनिवार्य शर्त ठहराएं उदाहरणतया अपने विरोधियों को यह कहें कि जिस प्रकार क़ुर्आन करीम समस्त धार्मिक सच्चाइयों और

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

कहां पहुंचाया और अभी ठहरिए, इसी पर अन्त नहीं। आपकी इस आस्था से तो ख़ुदा की हस्ती की भी ख़ैर दिखाई नहीं देती, क्योंकि जैसा हम पूर्व में उल्लेख कर चुके हैं कि ख़ुदा की हस्ती का महान निशान यही है कि
Ⓟ369 जो कुछ उसकी ओर से है वह ऐसी अद्वितीयता की स्थिति Ⓟपर प्रकटित है जो उस अद्वितीय स्रष्टा (रचयिता) को सिद्ध कर रहा है। अब जब कि वह अद्वितीयता इन्जील में सिद्ध न हुई और क़ुर्आन करीम को आप लोगों

के कलाम को ध्यानपूर्वक देखते ℗ताकि उन्हें ज्ञात होता कि ख़ुदा के पुनीत और पूर्ण ℗396
कलाम पर ऐसा विचार करना जैसे चन्द्रमा पर धूल डालना है। अब भी ऐसे लोग

शेष हाशिया नं. (11)

अध्यात्म ज्ञानों पर आच्छादित और आधारित है तथा कोई धार्मिक सच्चाई उस से बाहर नहीं और जैसा कि वह सैकड़ों परोक्ष की बातों और भविष्यवाणियों को अपनी परिधि में रखता है तथा भविष्यवाणियां भी ऐसी शक्तिशाली कि जिन में अपना सम्मान और शत्रु का अपमान, अपनी उन्नति और शत्रु की अवनति, अपनी विजय और शत्रु की पराजय पाई जाती है अपने विवादित कलाम में उपर्युक्त विशेषताओं के साथ ये विशेषताएं भी प्रस्तुत करके दिखा दें तो इस शर्त से उन पर तबाही पर तबाही और मौत पर मौत आएगी, परन्तु चूंकि इससे पूर्व क़ुर्आन करीम की जो विशेषताएं लिखी गई हैं वे ही मन्दबुद्धि शत्रु को दोषी, निरुत्तर तथा विवश करने के लिए पर्याप्त हैं तथा उन्हीं से हमारे विरोधियों पर वह स्थिति आएगी जिससे वे मुरदों से भी अधिक निकृष्ट हो जाएंगे। इसलिए क़ुर्आन करीम की समस्त विशेषताओं को सदृश की मांग करने के लिए प्रस्तुत करना अनावश्यक है तथा समस्त विशेषताओं के उल्लेख से पुस्तक में भी अत्यधिक विस्तार हो जाएगा। अतः दुखदायी को मारने के लिए इतना ही
पर्याप्त अस्त्र ℗समझकर प्रस्तुत किया गया। अब इस वर्णन के साथ पूर्ण रूप ℗346
से कमी करते हुए विरोधियों से क़ुर्आन करीम की छोटी से छोटी सूरह के

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

ने स्वीकार न किया तो इस स्थिति में आप लोगों को यह मानना पड़ा कि जो कुछ ख़ुदा की ओर से है उसका अद्वितीय होना आवश्यक नहीं। इस
आस्था से आप लोगों पर अनिवार्य हुआ ℗कि यह इक़रार करें कि जो ℗370
वस्तुएं ख़ुदा की ओर से जारी हैं उन के बनाने में कोई दूसरा भी समर्थ है। अतः इस कथन के अनुसार संसार के स्रष्टा की पहचान पर कोई निशान न रहा। अतः आप के धर्म का सार हुआ कि ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर

यदि इस किताब को थोड़ा आंख खोल कर पढ़ें और ख़ुदा के कलाम की जिन सैकड़ों जटिल बारीकियों तथा सूक्ष्म सच्चाइयों का हमने इस किताब में यथास्थान

शेष हाशिया नं. (11)

सदृश की मांग की जाती है परन्तु फिर भी प्रत्येक ज्ञानवान मनुष्य पर स्पष्ट है कि विरोधी बावजूद नितान्त लोभ, शत्रुता और अत्यधिक विरोध और वैर के मुकाबले और विवाद से हमेशा से असमर्थ रहे हैं और अब भी असमर्थ हैं तथा किसी को दम मारने का स्थान नहीं तथा बावजूद इसके कि इस मुकाबले से उनका असमर्थ रहना उन्हें अपमानित करता है, नारकी ठहराता है, काफ़िर और बेईमान की उपाधि देता है, निर्लज्ज और बेशर्म उन का नाम रखता है, परन्तु मुर्दे की तरह उनके मुख से कोई स्वर नहीं निकलता। अत: निरुत्तर रहने के समस्त अपमानों को स्वीकार करना, समस्त अधम नामों को उचित समझना, समस्त प्रकार की निर्लज्जता और बेशर्मी के कूड़े-करकट को अपने सर पर उठा लेना इस बात पर अत्यंत प्रकाशमान सबूत है कि इन अधम चमगादड़ों का उस सत्य के सूर्य के समक्ष कुछ वश नहीं चलता। अत: जबकि सत्य के सूर्य की इतनी तीव्र किरणें चारों ओर से प्रस्फुटित हो रही हैं कि उनके समक्ष हमारे चमगादड़ चरित्र शत्रु अंधे हो रहे हैं। अत: इस स्थिति में यह बिल्कुल व्यर्थ विवाद और अज्ञानता है कि गुलाब के फूल की विशेषताओं को जो क़ुर्आनी विशेषताओं की तुलना में

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

कोई बौद्धिक तर्क स्थापित नहीं हो सकता तो अब आप ही निर्णय कीजिए
®371 कि आपके नास्तिक बनने में कुछ कमी भी रह गई। क्या ®आप लोगों में से ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं जो इस बारीक मर्म को समझे कि क़ुर्आन का इन्कार करना वास्तव में दयालु ख़ुदा पर आक्रमण है। जिस किताब की दृष्टि से उसकी विशेषताओं का अद्वितीय होना सिद्ध होता है, उसके अस्तित्व का पता लगता है, उसका पवित्र और पुनीत होना स्वीकार किया जाता है, उसका एकेश्वरवाद प्रसारित होता है, उसकी भूली-भटकी तौहीद

पूर्ण स्पष्टता के साथ उल्लेख किया है, ध्यानपूर्वक तथा जागरूकता के साथ अवलोकन करें तो उनकी दुर्भावना इस प्रकार दूर हो जाएगी जैसा कि सूर्य के

शेष हाशिया नं. (11)

कमज़ोर और अशक्त और अप्रमाणित हैं इस अद्वितीयता के स्तर पर समझा जाए कि मानव शक्तियां उनके सदृश बनाने से असमर्थ हैं, परन्तु उन श्रेष्ठ स्तर की विशेषताओं को जो गुलाब के फूल की बाह्य और आन्तरिक विशेषताओं से कई गुना श्रेष्ठ, उत्तम तथा ठोस सबूत रखती हैं ऐसा समझा जाए कि जैसे मनुष्य उन के सदृश बनाने पर सामर्थ्यवान है। हालांकि जिस स्थिति में मनुष्य में यह शक्ति नहीं पाई जाती कि एक गुलाब के फूल की जो केवल कुछ समय तक नूतन, ताज़ा और मनोरम दिखाई देता है तथा दूसरे समय में अत्यन्त मलिन, उदास और कुरूप हो जाता है और उसका यह मनोहर रंग उड़ जाता है तथा उसकी पंखड़ियां एक दूसरे से पृथक होकर गिर पड़ती हैं सदृश बना सके तो फिर ऐसे वास्तविक फूल का मुक़ाबला क्योंकर हो सके जिसके लिए अनादि स्वामी ने अविनाशी शोभा रखी है तथा
जिसे हमेशा ℗पतझड़ की वायु के आघातों से सुरक्षित रखा है तथा जिसकी ℗347
शीतलता, मृदुलता, सुन्दरता और कोमलता में कभी अन्तर नहीं आता तथा उसकी मंगलमय हस्ती में उदासी और मलिनता मार्ग नहीं पाती अपितु जितना पुराना होता जाता है उसकी ताज़गी और शीतलता उतनी ही

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

(एकेश्वरवाद) पुनः स्थापित होती ℗है उसी किताब से आप विमुख होते ℗372
हैं। दुर्भाग्य है या नहीं? सज्जनो! अब कुर्आन की अद्वितीयता और सच्चाई बिल्कुल स्पष्ट हो गई है, तुम्हारे छुपाने से छुप नहीं सकती। जैसे तुम देखते हो कि मौसम के आने से फलों को निकलने और पकने से कोई रोक नहीं
सकता, इसी प्रकार अब क़ुर्आनी सच्चाई के प्रकट होने का ℗समय आ गया ℗373
है और कोई नहीं जो उसे रोक सके। अतः अब तुम चन्द्रमा पर धूल मत डालो ऐसा न हो कि वह पलट कर तुम्हारी ही आंखों पर गिर पड़े।

ⓅP397 Ⓟउदय होने से अंधकार दूर हो जाता है। स्पष्ट है कि महसूस और मौजूद बात के मुक़ाबले पर कोई अनुमान नहीं चलता। जब निरन्तर अनुभव से एक वस्तु की कोई

शेष हाशिया नं. 11

अधिकाधिक स्पष्ट होती जाती है तथा उसके चमत्कार अधिकाधिक प्रकट होते जाते हैं और लोगों पर उसकी सच्चाइयां तथा बारीकियां प्रचुरता के साथ प्रकट होती जाती हैं। अत: ऐसे वास्तविक फूल की उच्च स्तरीय श्रेष्ठताएं और श्रेणियों से इन्कार करना अत्यन्त अज्ञानता है अथवा नहीं। बहरहाल यदि कोई ऐसा ही नेत्रहीन हो जो अपनी इस अज्ञानता से उन विशेषताओं की महान प्रतिष्ठा को न समझता हो तो इसके प्रमाण का भार उसी मूर्ख की गर्दन पर है कि हमने ख़ुदा के कलाम की अद्वितीयता का जो कुछ सबूत दिया है और हमने जितने भिन्न-भिन्न कारणों से इस पवित्र कलाम का मानव शक्तियों से श्रेष्ठतम होना सिद्ध कर दिया है उन सम्पूर्ण क़ुर्आनी विशेषताओं के सदृश प्रस्तुत करे और किसी मनुष्य के कलाम में ऐसी ही बाह्य और आन्तरिक कलाओं को दिखाए जिन का ख़ुदा के कलाम में पाया जाना हम ने सिद्ध कर दिया है। अब समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने हेतु सूरह फ़ातिहा की कुछ बारीकियां और सच्चाइयां निम्नलिखित हैं, परन्तु प्रथम सूरह फ़ातिहा को लिख कर तत्पश्चात उसके श्रेष्ठतम आध्यात्म ज्ञानों का लिखना आरंभ करेंगे। सूरह फ़ातिहा यह है :-

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

कुछ ईसाई इन्जील को बतौर उदाहरण प्रस्तुत करने से निराश होकर फ़ैज़ी (अकबर बादशाह के दरबार का मुख्य कवि) की 'मवारिदुल क़लम'
ⓅP374 प्रस्तुत करते हैं और कहते हैं Ⓟकि "फ़ैज़ी" की यह पुस्तक सारी की सारी बिन्दुरहित है, इसलिए वह भी अपनी सरलता-सुगमता में क़ुर्आन के समान अपितु उससे उत्तम है, परन्तु खेद यह है कि मूर्खों को इतनी भी समझ नहीं कि यह बेहूदा कार्य वास्तविक सरलता-सुगमता की परिधि से बाहर है
ⓅP375 तथा ऐसा कार्य नहीं है जिसकी अनिवार्यता से कोई किताब Ⓟअद्वितीय और अनुपम बन जाए अपितु बिन्दुरहित इबारतों का लिखना अत्यन्त सरल और

विशेषता ज्ञात हो गई तो फिर मात्र अनुमान को अपना प्रलेख बनाकर उस निश्चित बात से जो सिद्ध हो चुकी है, इन्कार करना इसी का नाम उन्माद और पागलपन है।

शेष हाशिया नं. (11)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ - الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ - مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ - اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ - اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ - صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۬ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ [1]

इस सूरह की व्याख्या जिस में इस सूरह के कुछ अध्यात्म ज्ञान और सच्चाइयों की चर्चा है निम्नलिखित हैं بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ प्रशंसनीय सूरह की आयतों में से यह प्रथम आयत है और क़ुर्आन करीम की दूसरी सूरतों पर भी लिखी गई है तथा एक और स्थान पर भी क़ुर्आन करीम में यह आयत आई है। क़ुर्आन करीम में जितनी अधिकता के साथ इस आयत की पुनरावृति पाई जाती है अन्य किसी आयत में इतनी पुनरावृति नहीं पाई जाती। Ⓟचूंकि इस्लाम में यह नियम बन गया है कि प्रत्येक कार्य के प्रारंभ Ⓟ348 में जिसमें भलाई और हित वांछित हो बरकत और सहायता के लिए इस आयत को पढ़ लेते हैं। इसलिए यह आयत दुश्मनों और दोस्तों, छोटों और बड़ों में प्रसिद्धि पा गई है यहां तक कि यदि कोई व्यक्ति समस्त क़ुर्आनी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

आसान है तथा कोई ऐसी कारीगरी नहीं जिसे करना मनुष्य के लिए कठिन और दुष्कर हो। इसी कारण बहुत से मुंशियों ने अपनी अरबी और फ़ारसी के सुलेख में इस प्रकार की बिन्दुरहित इबारतें लिखी हैं और अब भी लिखते हैं अपितु कुछ मुंशियों की ऐसी Ⓟइबारतें भी मौजूद हैं जिनके समस्त अक्षर Ⓟ376 बिन्दुयुक्त हैं तथा कोई बिन्दुरहित अक्षर सम्मिलित नहीं परन्तु क़ुरआन करीम की सरसता-सुबोधता जिन आवश्यक वस्तुओं और विशेषताओं से विशेष्य है वह एक ऐसी बात है जिसे बुद्धिमान मनुष्य विचार करते ही

---

(1) सूरह: अलफ़ातिह: 1 से 7

यदि ये लोग ख़ुदा की दी हुई बुद्धि तनिक कार्य में लाएं तो उन पर प्रकट हो कि
Ⓟ398 Ⓟस्वयं वह अनुमान ही व्यर्थ है और वह बिल्कुल ऐसा कथन है जैसे कोई

शेष हाशिया नं. 11

आयतों से बिल्कुल अज्ञान हो तब भी बड़ी आशा है कि उसे इस आयत से कदापि अज्ञानता नहीं होगी।

अब यह आयत जिन पूर्ण सच्चाइयों पर आधारित है उन्हें भी सुन लेना चाहिए। अत: उन सब में से एक यह है कि इस आयत के उतरने से असल मतलब यह है कि ताकि विवश और बेख़बर बन्दों को इस अध्यात्म ज्ञान के रहस्य की शिक्षा दी जाए कि वह हस्ती जो अपने अस्तित्व में किसी की मुहताज न हो का श्रेष्ठतम नाम जो अल्लाह है कि जो ईश्वर वाणी क़ुर्आन की परिभाषा में ऐसा अस्तित्व जो समस्त पूर्ण विशेषताओं को एकत्र करने वाला, समस्त अधमताओं से पवित्र, सच्चा उपास्य, अकेला, जिसका कोई भागीदार नहीं तथा समस्त हितों का उदगम् हो - पर बोला जाता है। इस श्रेष्ठतम नाम की बहुत सी विशेषताओं में से जो दो विशेषताएं बिस्मिल्लाह में वर्णन की गई हैं अर्थात रहमानियत और रहीमियत की विशेषता। इन्हीं दो विशेषताओं की मांग पर ख़ुदा के कलाम का उतरना तथा उसके प्रकाशों और बरकतों का जारी होना है। उसका विवरण यह है कि संसार में ख़ुदा के पवित्र कलाम का उतरना तथा बन्दों का उससे सूचित किया जाना यह

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

हार्दिक विश्वास के साथ समझ सकता है कि वह पवित्र कलाम मानव
Ⓟ377 शक्तियों की परिधि से बाहर है Ⓟक्योंकि जैसा कि हम उल्लेख कर चुके हैं क़ुर्आन करीम ने अपनी सरस और सुबोध होने को 'हरीरी' (अरब का एक साहित्यकार) और "फ़ैज़ी" इत्यादि साहित्यकारों की भांति व्यर्थ वर्णन की शैली में व्यक्त नहीं किया और न किसी प्रकार के निरर्थकता, अश्लीलता और असत्य का इस पवित्र कलाम में समावेश है अपितु क़ुर्आन करीम ने अपनी सरस और सुबोधता को सत्य, नीति और वास्तविक आवश्यकताओं
Ⓟ378 की Ⓟअनिवार्यता से अदा किया है तथा सम्पूर्ण धार्मिक सच्चाइयों को पूर्ण

वनस्पतियों के सूक्ष्म गुणों से इन्कार करके यह कहे कि यदि ख़ुदा ने इरादा करके प्रजा की भलाई के उद्देश्य से यह कार्य किया है कि मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए

शेष हाशिया नं. (11)

रहमानियत की मांग है क्योंकि रहमानियत की विशेषता का विवरण (जैसा कि आगे भी विस्तार से लिखा जाएगा) यह है कि वह विशेषता किसी कार्यकर्ता के कार्य से पूर्व मात्र दानशीलता और ख़ुदाई दान-पुण्य के जोश से प्रकटन में आती है जैसा ख़ुदा ने लोगों की भलाई के लिए सूर्य, चन्द्रमा, पानी और वायु इत्यादि को उत्पन्न किया है। यह समस्त दानशीलता और दान-पुण्य रहमानियत की विशेषता की दृष्टि से है तथा कोई व्यक्ति दावा नहीं कर सकता कि ये वस्तुएं मेरे किसी कार्य के परिणामस्वरूप बनाई गई हैं, इसी प्रकार ख़ुदा का कलाम भी जो बन्दों के सुधार और मार्ग-दर्शन हेतु उतरा वह भी इसी विशेषता के उपलक्ष्य उतरा है तथा कोई ऐसा प्राणी नहीं कि यह दावा कर सके कि मेरे किसी कार्य, पराक्रम या किसी सच्चरित्रता के प्रतिफल स्वरूप ख़ुदा का पवित्र कलाम जो उसकी शरीअत पर आधारित है
उतरा है। यही Ⓟकारण है कि यद्यपि पवित्रता और सच्चरित्रता का दम भरने Ⓟ349
वाले तथा संयम और उपासना में जीवन व्यतीत करने वाले अब तक सहस्त्रों लोग गुज़रे हैं परन्तु ख़ुदा का पवित्र और पूर्ण कलाम जो उसके कर्तव्यों और आदेशों को संसार में लाया तथा उसके इरादों से प्रजा को सूचित किया

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

संक्षेप से परिधि में लेकर दिखाया है। अत: इसमें प्रत्येक विरोधी और इन्कारी को निरुत्तर करने के लिए प्रदीप्त प्रमाण भरे पड़े हैं तथा मोमिनों के विश्वास की पूर्णता के लिए इसमें सहस्त्रों बारीकियों और सच्चाइयों का एक अथाह और उज्ज्वल
समुद्र बहता हुआ दिखाई दे रहा है। जिन बातों में विकार Ⓟदेखा है उन्हीं में सुधार Ⓟ379
हेतु बल लगाया है, जिस तीव्रता से किसी अधिकता या न्यूनता का प्रभुत्व पाया है उसी प्रचंडता से उसका निवारण भी किया है, जो भिन्न-भिन्न प्रकार की बीमारियां फैली हुई देखी हैं उन सब का उपचार लिखा है, मिथ्या धर्मों के प्रत्येक भ्रम को
दूर किया है, प्रत्येक आरोप का उत्तर दिया है, कोई सच्चाई Ⓟनहीं जिसका वर्णन Ⓟ380

वनस्पतियों और खनिज पदार्थों में तरह-तरह के गुण रखे हैं तो फिर उन गुणों को ©399 इतनी जटिलता से क्यों गुप्त रखा कि उनकी अनभिज्ञता से लोग एक ©दीर्घ युग तक

शेष हाशिया नं. (11)

उन्हीं विशेष समयों में उतरा है जब उसके उतरने की आवश्यकता थी। हां यह अवश्य है कि ख़ुदा का पवित्र कलाम उन्हीं पर उतरे जो पुनीतता और सच्चरित्रता में श्रेष्ठतम श्रेणी रखते हों, क्योंकि पवित्र की अपवित्र से कोई तुलना नहीं परन्तु यह कदापि आवश्यक नहीं कि प्रत्येक स्थान पर पुनीतता और सच्चरित्रता ख़ुदा तआला के कलाम के उतरने के लिए अनिवार्य हो अपितु ख़ुदा तआला की वास्तविक शरीअत और शिक्षा का उतरना वास्तविक आवश्यकता से सम्बद्ध है। अत: जहां वास्तविक आवश्यकताएं उत्पन्न हो गईं तथा युग के सुधार हेतु आवश्यक विदित हुआ कि ख़ुदा का कलाम उतरे ख़ुदा तआला जो स्वच्छन्द युक्तिवान है ने अपने कलाम को उसी युग में उतारा तथा किसी दूसरे युग में यद्यपि लाखों लोग संयम और पवित्रता की विशेषता से विशेष्य हों तथा कैसी ही पुनीतता और सच्चरित्रता रखते हों उन पर ख़ुदा का वह पूर्ण कलाम कदापि नहीं उतरता जो ख़ुदाई शरीअत पर आधारित हो हां ख़ुदा तआला के वार्तालाप और संबोधन कुछ सच्चरित्र लोगों से हो जाते हैं और वह भी उस समय जब ख़ुदा की नीति के अनुसार उन वार्तालापों और सम्बोधनों की कोई वास्तविक आवश्यकता उत्पन्न हो। इन दोनों प्रकार की आवश्यकताओं में अन्तर यह है कि ख़ुदा की शरीअत

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

नहीं किया, कोई पथभ्रष्ट सम्प्रदाय नहीं जिसका खण्डन नहीं लिखा और फिर विशेषता यह कि कोई वाक्य नहीं कि अनावश्यक तौर पर लिखा हो और कोई बात नहीं कि अनुचित वर्णन की हो तथा कोई शब्द नहीं जो व्यर्थ तौर पर लिखा गया हो। इन समस्त बातों के वर्णन के बावजूद भाषा शैली में सरसता का वह पूर्ण स्तर दिखाया जिससे अधिक की कल्पना भी नहीं की जा सकती और उस
©381 सरस और सुबोध भाषा शैली को उस चरमोत्कर्ष ©तक पहुंचाया कि उत्तम क्रम की पूर्णता, संक्षिप्त और तार्किक वर्णन द्वारा पूर्वकालीन तथा बाद में आने वालों

बिना उपचार ही मरते रहे और अब तक सम्पूर्ण गुप्त गुणों को परिधि में नहीं लिया जा सका, परन्तु स्पष्ट है कि ख़ुदा के सामान्य नियम के प्रमाणित हो जाने के पश्चात

शेष हाशिया नं. 11

का उतरना उस आवश्यकता के समय सामने आता है जब संसार के लोग गुमराही और पथ-भ्रष्टता के कारण सद्मार्ग से विमुख हो गए हों तथा उन्हें सद्मार्ग पर लाने के लिए एक नवीन शरीअत की आवश्यकता हो, जो उनकी वर्तमान आपदाओं का भली भांति निवारण कर सके तथा उनके अंधकार को अपने पूर्ण और सन्तोषजनक वर्णन के प्रकाश द्वारा दूर कर सके तथा युग की खराब स्थिति का जिस प्रकार का उपचार आवश्यक है वह उपचार अपने शक्तिशाली वर्णन से कर सके, परन्तु जो वार्तालाप और सम्बोधन ख़ुदा के वलियों (ऋषियों) के साथ होते हैं उनके ®लिए कदाचित ®350 इस महान आवश्यकता का सामने आना आवश्यक नहीं अपितु प्रायः इन वार्तालापों का मात्र इतना ही उद्देश्य होता है ताकि वली (ऋषि) की आत्मा को किसी कष्ट और परिश्रम के समय धैर्य और स्थायित्व के लिबास से

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

के ज्ञान को एक छोटी सी किताब में भर दिया ताकि मनुष्य जिसकी आयु कम और काम अधिक हैं अनन्त परिश्रमों से छूट जाए ताकि इस्लाम की इस वर्णन की सरसता से मामलों के प्रसारण में सहायता प्राप्त हो, कंठस्थ करना और स्मरण रखना आसान हो। अब वर्णन की इस सरस और सुबोध शैली की तुलना में ®मनुष्यों की पुस्तकों को देखना चाहिए कि वे क्योंकर असत्य, ®382 अश्लीलता और निरर्थकता से भरपूर हैं तथा क्योंकर अनावश्यक और व्यर्थ तौर पर उनकी इबारतें लिखी गई हैं और वे कदापि समर्थ नहीं हुए कि शब्दों को वांछित अर्थों के अधीन करें अपितु उनके अर्थ शब्दों के पीछे भटकते फिरते हैं तथा सत्य, नीति, आवश्यकता ®तथा हित की दृष्टि से पूर्ण-रूपेण रिक्त और ®383 ख़ाली हैं। जब उन्होंने सत्य और वास्तविक आवश्यकता की अनिवार्यता को त्याग दिया तथा प्रत्येक शब्द में झूठ बोलना या बेहूदा बोलना अथवा व्यर्थ और अनावश्यक तौर पर शब्दों को मुख से निकालना धारण कर लिया तो फिर क़ुर्आन

(जो कि पृथ्वी और आकाश में एक ही पद्धति पर पाया जाता है) ऐसी-ऐसी शंकाओं में ग्रस्त होना उन्हीं लोगों का कार्य है जो प्रकृति के नियमों में तनिक

शेष हाशिया नं. (11)

सुसज्जित किया जाए या किसी शोक और संताप के प्रभुत्व में उसे कोई शुभ संदेश दिया जाए परन्तु वह ख़ुदा तआला का पूर्ण और पवित्र कलाम जो नबियों और रसूलों पर उतरता है वह जैसा कि हम ने अभी वर्णन किया है उस वास्तविक आवश्यकता के सामने आने पर उतरता है अब प्रजा को उसके उतरने की नितान्त आवश्यकता है। अत: ख़ुदा के कलाम के उतरने का मूल कारण वास्तविक आवश्यकता है। जैसा कि तुम देखते हो कि जब रात का पूर्ण अंधकार हो जाता है और कुछ प्रकाश शेष नहीं रहता तो तुम उसी समय समझ जाते हो कि अब नवीन माह का आगमन निकट है, इसी प्रकार जब पथ-भ्रष्टता का अंधकार संसार पर बड़ी दृढ़ता के साथ अपना प्रभुत्व जमा लेता है तो सद्बुद्धि इस अध्यात्मिक चन्द्रमा के उदय को बहुत निकट समझती है। इसी प्रकार जब अनावृष्टि से लोगों की दशा नष्ट हो जाती है तो उस समय बुद्धिमान लोग दया-वृष्टि का होना बहुत निकट

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

करीम की सरसता से क्या तुलना। यहां यह भी स्मरण रखना चाहिए कि चूंकि
℗384 क़ुर्आनी सुगमता और ℗सुबोध शैली व्यर्थ ढंगों से पूर्णतया पवित्र और पावन है। अत: इस स्थिति में नीतिवान ख़ुदा की पुनीत प्रतिष्ठा के बिल्कुल प्रतिकूल था कि वह व्यर्थ कलाम करने वाले कवियों की तरह बिन्दुरहित या बिन्दुयुक्त इबारत में अपना कलाम उतारता, क्योंकि यह सब व्यर्थ गतिविधियां हैं जिनमें कुछ भी हित नहीं तथा नीतिवान ख़ुदा की प्रतिष्ठा इससे बुलन्द और श्रेष्ठतर है कि कोई
℗385 व्यर्थ ℗कार्य करे। जिस स्थिति में उसने स्वयं ही फ़रमाया -

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ①

अर्थात् ईमानदार वे लोग हैं जो व्यर्थ कार्यों से बचते हैं तथा अपना समय बेहूदा कार्यों में नष्ट नहीं करते, तो फिर स्वयं ही व्यर्थ कार्य क्यों करता। जिस स्थिति में

① अलमोमिनून : 4

Ⓟविचार नहीं करते तथा पूर्व इसके कि ख़ुदा की विशेषताओं और स्वभावों को Ⓟ400
(जिस पद्धति पर वे प्रकृति रूपी दर्पण में प्रकट हो रहे हैं) भली भांति ज्ञात करें

शेष हाशिया नं. (11)

समझते हैं और जैसा कि ख़ुदा ने अपने भौतिक नियम में भी कुछ महीने वर्षा के लिए नियुक्त कर रखे हैं अर्थात वे वे महीने जिन में प्रजा को वास्तव में वर्षा की आवश्यकता होती है और उन महीनों में वर्षा होती है उस से यह परिणाम नहीं निकाला जाता कि लोग उन महीनों में विशेष तौर पर अधिक नेकी करते हैं तथा अन्य महीनों में पाप और दुराचारों में ग्रस्त रहते हैं अपितु यह समझना चाहिए कि ये वे महीने हैं जिनमें किसानों को वर्षा की आवश्यकता है तथा जिनमें वर्षा का हो जाना पूर्ण वर्ष की हरियाली का कारण है। इसी प्रकार ख़ुदा के कलाम का उतरना किसी व्यक्ति की पवित्रता और संयम की दृष्टि से नहीं है अर्थात उस कलाम के उतरने का मूल कारण यह नहीं हो सकता कि कोई व्यक्ति अत्यन्त पुनीत और सच्चरित्र था या सत्य का भूखा-प्यासा था अपितु जैसा कि हम अनेक बार लिख चुके हैं कि आकाशीय किताबों के उतरने का मूल कारण वास्तविक आवश्यकता है अर्थात् वह अंधकार है और अंधेरा जो संसार पर व्याप्त होकर एक
Ⓟआकाशीय प्रकाश को चाहता है ताकि वह प्रकाश उतर कर उस अंधकार Ⓟ351
को दूर करे। उसी की ओर एक सूक्ष्म संकेत है जो ख़ुदा तआला ने अपने पवित्र कलाम में फ़रमाया है -

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

उसने अपनी किताब की यह प्रशंसा की है उसकी शान Ⓟमें फ़रमाया - Ⓟ386

وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ①

لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ②

अर्थात् क़ुर्आन नीति से भरपूर है, असत्य का उसके आगे पीछे से प्रवेश नहीं तो इस स्थिति में वह स्वयं ही उसमें असत्य को क्योंकर भर देता। इस कार्य के लिए तो 'फ़ैज़ी' जैसा ही कोई नासमझ वाचाल चाहिए -

① यासीन : 3 ② हामीम अस्सज्दह : 43

पहले ही उस के अस्तित्व और उसकी विशेषताओं की रूप-रेखा लिखने बैठ जाते हैं अन्यथा यदि मनुष्य तनिक भी आंख खोलकर हर तरफ दृष्टि डाले तो ख़ुदा की

शेष हाशिया नं. (11)

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةِ ٱلْقَدْرِ ①

यह यद्यपि अपने प्रचलित अर्थों की दृष्टि से एक महान रात है परन्तु क़ुर्आनी संकेतों से यह भी ज्ञात होता है कि संसार की अंधकारमय स्थिति भी अपनी गुप्त विशेषताओं में लैलतुल-क़द्र का ही आदेश रखती है तथा इन अंधकारमय स्थिति के दिनों में सत्य, धर्म, संयम और उपासना ख़ुदा के निकट बड़ा महत्व रखती है तथा इस अंधकारमय अवस्था के दिनों में निष्ठा और धैर्य, संयम, उपासना ख़ुदा के निकट नितान्त महत्व रखती है तथा वही अंधकारमय स्थिति थी जो आंहज़रत के अवतीर्ण होने तक अपनी पूर्णता को पहुंच कर एक महान प्रकाश के उतरने की अभिलाषी थी। उसी अंधकारमय स्थिति को देखकर और अंधकारग्रस्त बन्दों पर दया करके रहमानियत (बिना मांगे देना) की विशेषता ने जोश मारा तथा आकाशीय बरकतों का पृथ्वी की ओर ध्यानाकर्षण हुआ। अत: वह अंधकारमय स्थिति संसार के लिए मंगलमय हो गई और संसार ने उस से एक महान दया का भाग प्राप्त किया कि एक कामिल मनुष्य, रसूलों का सरदार कि उस जैसा कोई उत्पन्न न हुआ और न होगा संसार के सुधार हेतु आया तथा संसार के लिए उस प्रकाशमान किताब को लाया जिसका सदृश किसी आंख ने

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

Ⓟ387 Ⓟٱلْخَبِيثَٰتُ لِلْخَبِيثِينَ - وَٱلطَّيِّبَٰتُ لِلطَّيِّبِينَ ②

ख़ुदा के कलाम को इस प्रकार से बिन्दुरहित समझना चाहिए कि वह व्यर्थ, असत्य और बेहूदा बोलने के बिन्दुओं से पवित्र और रिक्त है तथा उसके वर्णन की सुगमता और सरलता वह अनमोल जौहर है जिससे संसार लाभान्वित होता है अध्यात्मिक रोगों से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है,

Ⓟ388 सत्याभिलाषियों को सच्चाइयों और Ⓟबारीकियों का जानना आसान हो जाता

① अलक़द्र : 2 ② अन्नूर : 27

आदत (स्वभाव) किसी ®एक या दो वस्तु में सीमित नहीं और न ऐसा गुप्त है जिस ®401
का समझना कठिन हो अपितु यह बात नितान्त स्पष्ट बातों में से है कि आश्चर्यजनक

शेष हाशिया नं. (11)

नहीं देखा। अतः यह ख़ुदा की पूर्ण आध्यात्मिकता की एक महान झलक थी जो उसने अंधकार और अंधेरे के समय ऐसा महानतम प्रकाश उतारा जिसका नाम 'फ़ुरक़ान' है जो सत्य और असत्य में अन्तर करता है जिसने सत्य को उपस्थित तथा असत्य को ध्वस्त करके दिखा दिया, वह पृथ्वी पर उस समय उतरा जब पृथ्वी पर एक अध्यात्मिक मृत्यु आ चुकी थी तथा जल-थल में एक भयंकर विकार उत्पन्न हो गया था। अतः उस ने उतर कर वह कार्य कर दिखाया जिसकी ओर अल्लाह तआला ने स्वयं संकेत करते हुए फ़रमाया है

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ①

अर्थात् पृथ्वी मर गई थी अब ख़ुदा उसे नए सिरे से जीवित करता है। अब इस बात को भली भांति स्मरण रखना चाहिए कि यह क़ुर्आन करीम का उतरना पृथ्वी को जीवित करने के लिए हुआ, यह रहमानियत (दया) की विशेषता के जोश से हुआ। यह वही विशेषता है जो कभी भौतिक तौर पर जोश मार कर अकालग्रस्तों की सहायता करती है और शुष्क पृथ्वी पर कृपा-वृष्टि करती है और यही विशेषता कभी आध्यात्मिक तौर पर जोश

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

है क्योंकि, ख़ुदा का सुगम कलाम सच्चे अध्यात्म ज्ञानों को पूर्ण संक्षिप्तता से, पूर्ण क्रम से, पूर्ण स्पष्टता और सुवक्तता से लिखता है और वह शैली अपनाता है जिस से हृदयों पर उच्च स्तर का प्रभाव पड़े और थोड़ी इबारत में उन अध्यात्म ज्ञानों का समावेश हो जाए जिन को संसार के प्रारंभ से किसी ®किताब ®389
या रजिस्टर ने अपनी परिधि में नहीं लिया। यही वास्तविक सुगमता और अलंकृत शैली है जो मानव आत्मा की पूर्णता के लिए सहायक और सहयोगी है जिस के

① अलहदीद : 18

जौहर और श्रेष्ठतम रचनाएं तो एक ओर रहीं, एक तुच्छ मक्खी भी (जो अधम और तुच्छ और घृणित जीव है) इस प्रकृति के नियम से बाहर नहीं। तो फिर ख़ुदा की

शेष हाशिया नं. 11

मार कर उन भूखों और प्यासों की हालत पर दया करती है जो पथ-भ्रष्टता और गुमराही की मृत्यु तक पहुंच जाते हैं और सत्य और सच्चाई का आहार
Ⓟ352 जो अध्यात्मिक जीवन का कारण है उनके पास नहीं Ⓟरहता। अत: स्वच्छन्द कृपालु (रहमान) जिस प्रकार शरीर के आहार को आवश्यकतानुसार प्रदान करता है उसी प्रकार वह अपनी पूर्ण रहमत (दया) के उपलक्ष्य अध्यात्मिक आहार को भी वास्तविक आवश्यकता के समय उपलब्ध कर देता है। हां यह बात उचित है कि ख़ुदा का कलाम उन्हीं सदात्मा लोगों पर उतरता है जिन से ख़ुदा प्रसन्न है तथा वह उन्हीं से वार्तालाप और बातचीत करता है जिन से वह संतुष्ट है, परन्तु यह बात कदापि उचित नहीं कि जिस से ख़ुदा प्रसन्न और संतुष्ट हो उस पर व्यर्थ ही बिना किसी वास्तविक आवश्यकता के आकाशीय किताब उतर जाया करे अथवा ख़ुदा तआला यों ही वास्तविक आवश्यकता के बिना किसी की अनिवार्य पवित्रता के कारण अनिवार्य और स्थायी तौर पर उस से हर समय वार्तालाप करता रहे अपितु ख़ुदा की किताब उसी समय उतरती है जब वास्तव में उसके उतरने की आवश्यकता सामने आए। अब कलाम का सार यह है कि ख़ुदा तआला की वह्यी के उतरने का

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

द्वारा सत्याभिलाषी पूर्ण उद्देश्य तक पहुंचते हैं और यही वह ख़ुदाई कारीगरी है जिसका सम्पन्न होना ख़ुदाई शक्ति और विशाल ज्ञान के अभाव में
Ⓟ390 संभव नहीं। ख़ुदा तआला अपने कलाम (वाणी) के Ⓟएक-एक वाक्य की सच्चाई का उत्तरदायी है और जो कुछ उसके भाषण में है चाहे वे समाचार और पूर्वकालीन लक्षण हैं, चाहे भविष्य की ख़बरें और भविष्यवाणियां हैं और चाहे वे ज्ञान संबंधी और धार्मिक सच्चाइयां हैं, वे समस्त असत्य, अश्लीलता तथा बेहूदा बोलने के दोष से पवित्र हैं और यदि उनमें लेशमात्र

शरण ®क्या यह सोचा जा सकता है कि ख़ुदा का कलाम जो उस के अस्तित्व की ®402
भांति पुनीत तथा रंग की पूर्णता से रंगीन चाहिए। ऐसा तुच्छ और अपमानित है कि

शेष हाशिया नं. (11)

मूल कारण ख़ुदा तआला की रहमानियत है किसी कार्यकर्ता का कार्य नहीं तथा यह एक महान सच्चाई है जिस से हमारे विरोधी ब्रह्म समाजी इत्यादि अपिरिचित हैं।

तत्पश्चात् ज्ञात रहे कि किसी मानवीय सदस्य का ख़ुदा के कलाम के वरदान से वास्तव में लाभान्वित हो जाना तथा उसकी बरकतों और प्रकाशों से लाभ प्राप्त करके गन्तव्य तक पहुंचना तथा अपने प्रयास और परिश्रम के प्रतिफल को प्राप्त करना यह रहीमियत (परिश्रम का प्रतिफल देना) की विशेषता के उपलक्ष्य होता है। इसी दृष्टि से ख़ुदा तआला ने रहमानियत की विशेषता की चर्चा करने के उपरान्त रहीमियत की विशेषता का वर्णन किया ताकि ज्ञात हो कि ख़ुदा के कलाम के प्रभाव जो लोगों पर होते हैं यह रहीमियत की विशेषता का प्रभाव है। कोई मनुष्य जितना बाह्य और आन्तरिक विमुखताओं से पवित्र हो जाता है, किसी के हृदय में जितनी निष्कपटता और निष्ठा उत्पन्न होती है, कोई जितना प्रयास और परिश्रम से अनुसरण करता है उसके हृदय पर ख़ुदा के कलाम का प्रभाव उतना ही होता है और उतना ही वह उसके प्रभावों से लाभान्वित होता है तथा उसमें ख़ुदा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

भी असत्य, बेहूदापन और शेखी पाई जाए तो फिर वह ख़ुदा का कलाम ही नहीं रहता। अत: वह स्वयं अपने समस्त वर्णनों को सिद्ध करता है, परन्तु कोई कवि इस बात का उत्तरदायी नहीं हो सकता और न कभी हुआ कि उसका कलाम प्रत्येक प्रकार के असत्य, अश्लीलता तथा अनावश्यक बातों से पवित्र और आवश्यक और अनिवार्य बातों को परिधि में रखता है। फिर जब कि कवियों की बेहूदा बातों को वे श्रेष्ठताएं प्राप्त नहीं हैं जो ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम को प्राप्त हैं और न इस सन्दर्भ में कवि कुछ शक्ति

गुप्त रहस्यों में एक मक्खी के स्तर तक भी नहीं पहुंचता। यहां यह भी स्पष्ट रहे कि ℗403 ख़ुदा ने धार्मिक आवश्यकताओं में से किसी बात को ℗गोपनीय नहीं रखा तथा

शेष हाशिया नं. (11)

के मान्य लोगों के विशेष लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं दूसरी सच्चाई जो بِسۡمِ
℗353 اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ℗में प्रदत्त है यह है कि यह आयत क़ुर्आन करीम को आरंभ करने के लिए उतरी है तथा उसके पढ़ने से उद्देश्य यह है ताकि उस सर्वगुणसम्पन्न हस्ती से सहायता की याचना की जाए, जिसकी विशेषताओं में से एक यह है कि वह रहमान (दयालु) है और सत्याभिलाषी के लिए मात्र कृपा और उपकार से भलाई, बरकत और हिदायत के साधन उत्पन्न कर देता है। दूसरी विशेषता यह है कि वह रहीम (कृपालु) है, अर्थात् परिश्रम और प्रयास करने वालों के प्रयत्नों को व्यर्थ नहीं करता अपितु उनके परिश्रम और प्रयास पर उत्तम प्रतिफल सम्पादित करता है तथा उनके परिश्रम का फल उन्हें प्रदान करता है। ये दोनों विशेषताएं अर्थात् रहमानियत और रहीमियत ऐसी हैं कि इनके अभाव में कोई सांसारिक या धार्मिक कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता और यदि विचार करके देखो तो स्पष्ट होगा कि संसार के समस्त महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए ये दोनों विशेषताएं हर समय और हर पल कार्यरत हैं। ख़ुदा की रहमानियत उस समय से प्रकट हो रही है कि जब मनुष्य अभी उत्पन्न भी नहीं हुआ था।

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

दिखाते हैं और न उत्तरदायी बनते हैं अपितु अपनी असमर्थता के स्वयं ही
℗391 इक़रारी हैं। अत: ख़ुदा के कलाम की ℗तुलना में उनका तुच्छ कलाम प्रस्तुत करना कैसी धूर्तता और मूर्खता है। कवि तो यदि मर भी जाएं तो सत्य और ईमानदारी तथा वास्तविक आवश्यकता को अनिवार्य रूप से अपने कलाम में न ला सकें। वे तो बेहूदा बोलने के बिना बोल ही नहीं सकते तथा उन का समस्त कार्य बेहूदा और असत्य बोलने पर ही चलता है। यदि झूठ नहीं या बेहूदा बोलना नहीं तो फिर कविता भी नहीं। यदि तुम उनका एक-एक

जटिल बारीकियां वे बारीकियां हैं जो मूल आस्थाओं के अतिरिक्त जो ऊपरी मामले हैं तथा उन लोगों के लिए नियुक्त किए गए हैं जिनमें श्रेष्ठ विशेषताओं को प्राप्त

शेष हाशिया नं. (11)

अत: वह रहमानियत मनुष्य के लिए ऐसे-ऐसे साधन उपलब्ध करती है जो उसकी शक्ति से बाहर हैं जिन्हें वह किसी बहाने या युक्ति द्वारा प्राप्त नहीं कर सकता और वे साधन किसी कार्य के उपलक्ष्य प्रदान नहीं किए जाते अपितु कृपा और उपकार स्वरूप प्रदान किए जाते हैं। जैसे नबियों का आना, किताबों का उतारा जाना, वर्षा का होना, सूर्य, चन्द्रमा, वायु और बादल इत्यादि का अपने-अपने कार्यों में कार्यरत रहना और स्वयं मनुष्य का भिन्न-भिन्न प्रकार की शक्तियों और ताक़तों के साथ सम्मानित होकर इस संसार में आना तथा स्वास्थ्य, शांति, अवकाश और पर्याप्त समय तक आयु पाना ये सब वे बातें हैं जो रहमानियत की विशेषता के उपलक्ष्य प्रकटन में आती हैं, इसी प्रकार ख़ुदा की रहीमियत तब प्रकट होती है जब मनुष्य समस्त सामर्थ्यों को प्राप्त करके ईश्वर प्रदत्त शक्तियों को किसी कार्य को सम्पन्न करने हेतु गतिशील करता है तथा जहां तक अपना बल, शक्ति और ताक़त है व्यय करता है तो ®उस समय ख़ुदा तआला का नियम इस प्रकार®354 से जारी है कि वह उसके प्रयत्नों को नष्ट नहीं होने देता अपितु उन प्रयत्नों पर उत्तम परिणाम सम्पादित करता है। अत: यह उसकी सरासर रहीमियत (कृपालता) है जो मनुष्य के निष्प्राण प्रयासों में प्राण फूंकती है। अब

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

वाक्य तलाश करो कि उनमें कितनी सच्चाइयां और बारीकियां एकत्र हैं, कितनी सत्य और ईमानदारी की अनिवार्यता है, कितना सत्य और नीति पर स्थायित्व है, किस वास्तविक आवश्यकता के कारण वे बातें उनके मुख से निकलती हैं, क्या-क्या अद्वितीय और अनुपम रहस्यों का उनमें समावेश है, तो तुम्हें ज्ञात हो कि इन समस्त विशेषताओं में से कोई भी विशेषता उनकी निष्प्राण इबारतों में नहीं पाई जाती, उन की तो यह दशा होती है कि जिस ओर तुकबन्दी मिलती दिखाई दी उसी ओर झुक गए और जो विषय हृदय

करने की योग्यता और पात्रता पाई जाती है तथा जो लोग प्रत्येक कुंठबुद्धि और
℗404 मंदबुद्धि लोगों की तरह उन मामलों पर सन्तोष करना नहीं ℗चाहते, वे उन बारीकियों

शेष हाशिया नं. 11

जानना चाहिए कि प्रशंसनीय आयत की शिक्षा का मतलब यह है कि क़ुर्आन करीम के आरंभ के समय अल्लाह तआला के सर्वगुणसम्पन्न अस्तित्व की रहमानियत और रहीमियत से सहायता और बरकत की याचना की जाए। रहमानियत की विशेषता से बरकत मांगने का उद्देश्य यह है ताकि वह कामिल हस्ती अपनी रहमानियत के कारण इन समस्त साधनों को अपनी कृपा और उपकार मात्र से उपलब्ध कर दे कि जो ख़ुदा के कलाम के अनुसरण में प्रयास और परिश्रम करने से पूर्व आवश्यक हैं। जैसे आयु का वफ़ादारी करना, फुर्सत तथा अवकाश का प्राप्त होना, बेलाग समय का उपलब्ध होना, शक्तियों और ताक़तों का स्थापित होना, किसी ऐसी बात का समक्ष न आना जो समृद्धि और शान्ति में विघ्न डाले, किसी ऐसे बाधक का ना आ जाना कि जो हृदय को ध्यान देने से रोक दे। अतः हर प्रकार से सामर्थ्य प्रदान किया जाना ये सब बातें रहमानियत की विशेषता से प्राप्त होती हैं। रहीमियत की विशेषता से बरकत मांगना इस उद्देश्य से है ताकि वह पूर्ण हस्ती अपनी रहीमियत के कारण मनुष्य के प्रयत्नों पर उत्तम परिणाम सम्पादित करे तथा मनुष्य के परिश्रमों को नष्ट होने से सुरक्षित रखे तथा उसके प्रयासों और पराक्रमों के पश्चात उसके कार्य में बरकत डाले। अतः इस प्रकार ख़ुदा तआला की दोनों विशेषताओं रहमानियत और

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

को प्रिय लगा वहीं झक मारने लगे, न सत्य और नीति की पाबन्दी है, न
℗392 बेहूदा बोलने से परहेज़ है, न यह ख़्याल है कि ℗इस कलाम के बोलने के लिए कौन सी नितान्त आवश्यकता आ पड़ी है तथा उसके त्याग करने में कौन सी बड़ी हानि हो रही है, बिना कारण, बिना लाभ वाक्य से वाक्य मिलाते हैं, सर के स्थान पर पैर, पैर के स्थान पर सर लगाते हैं। मृग-तृष्णा की भांति चमक तो बहुत है परन्तु वास्तविकता देखो तो धूल भी नहीं।

के माध्यम से नीति और अध्यात्म ज्ञान में उन्नति करते हैं तथा वास्तविक विश्वास के उस उच्च शिखर तक पहुंच जाते हैं जो मानवीय योग्यताओं के लिए श्रेष्ठतम श्रेणियों

शेष हाशिया नं. (11)

रहीमियत से ख़ुदाई कलाम आरंभ करने के समय अपितु प्रत्येक प्रतिष्ठित कार्य के आरंभ में बरकत और सहायता चाहना यह असीम श्रेणी की सच्चाई है जिससे मनुष्य को एकेश्वरवाद की वास्तविकता प्राप्त होती है तथा अपनी अज्ञानता, अनभिज्ञता, मूर्खता, पथ-भ्रष्टता, विनम्रता और विनाश पर अटूट विश्वास हो कर दानशीलता के उदगम की श्रेष्ठता और प्रतिष्ठा पर दृष्टि जा ठहरती है और स्वयं को पूर्ण असहाय, दरिद्र, अधम और तुच्छ समझ कर सर्वशक्तिमान ख़ुदा से उसकी रहमानियत और रहीमियत की बरकतें मांगता है। यद्यपि कि ख़ुदा तआला ®की ये विशेषताएं®355 स्वयं अपने कार्य में व्यस्त हैं परन्तु उस नीतिवान ख़ुदा ने अनादिकाल से मनुष्य के लिए प्रकृति का यह नियम नियुक्त कर दिया है कि उसकी दुआ और सहायता मांगने का सफलता में बहुत बड़ा हस्तक्षेप है। जो लोग अपनी जटिल समस्याओं में हार्दिक निष्ठा से दुआ मांगते हैं और उनकी दुआ पूर्ण निष्कपटता तक पहुंच जाती है तो ख़ुदा की दानशीलता उसके कष्ट दूर करने की ओर अवश्य आकर्षित होती है। प्रत्येक मनुष्य जो अपने दोषों पर दृष्टि डालता है तथा अपनी ग़लतियों को देखता है वह किसी कार्य पर आज़ादी और अभिमान के साथ हाथ नहीं डालता अपितु सच्ची बन्दगी उसे

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

बाज़ीगरों की भांति मात्र खेल ही खेल, वास्तविकता देखो तो कुछ भी नहीं, दरिद्र, अशक्त, निर्बल और गए-गुज़रे हैं, आंखें अंधी और उस पर हाव-भाव दिखाना। इनके सन्दर्भ में नितान्त नर्मी कीजिए तो यह कहिए कि वे सब कमज़ोर और अधम होने के कारण मकड़ी की भांति हैं तथा उन की कविता (अश्आर) मकड़ी का जाल है। इनके सन्दर्भ में ख़ुदावन्द दयालु ने ख़ूब फ़रमाया है -

में से है तथा स्पष्ट है कि यदि ज्ञान संबंधी रहस्य सारे के सारे नितान्त स्पष्ट ही होते
Ⓟ405 तो फिर बुद्धिमान और बुद्धिहीन Ⓟमें अन्तर क्या होता। इस प्रकार से तो समस्त ज्ञान

शेष हाशिया नं. (11)

यह समझाती है कि अल्लाह तआला जो सर्वशक्तिमान है उससे सहायता मांगना चाहिए। यह सच्ची बन्दगी का जोश प्रत्येक ऐसे हृदय में पाया जाता है जो अपनी स्वाभाविक सरलता पर स्थापित है और अपनी गलती से अवगत है। अत: सच्चा मनुष्य जिसकी आत्मा में किसी प्रकार के अभिमान और अहंकार ने स्थान नहीं बनाया और जो अपने अशक्त, अधम और अवास्तविक अस्तित्व से भली-भांति परिचित है तथा स्वयं किसी कार्य को सम्पन्न करने योग्य नहीं पाता तथा स्वयं में कुछ बल और शक्ति नहीं देखता। जब किसी कार्य को आरंभ करता है तो बिना आडम्बर के उसकी अशक्त आत्मा आकाशीय शक्ति की इच्छुक होती है तथा उसे हर समय ख़ुदा की शक्तिशाली हस्ती अपने सम्पूर्ण कमाल और प्रताप के साथ दिखाई देती है तथा उस की रहमानियत और रहीमियत प्रत्येक कार्य की सम्पन्नता के लिए आधार दिखाई देती है। अत: वह अनायास अपना अपूर्ण और अयोग्य बल प्रकट करने से पूर्व बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम की दुआ से ख़ुदा की सहायता चाहता है। अत: इस विनम्रता और विनीतता के कारण इस योग्य हो जाता है कि ख़ुदा की शक्ति से शक्ति और ख़ुदा के ज्ञान से ज्ञान

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ - اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِىْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ - وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا
لَا يَفْعَلُوْنَ - اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ
بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَىَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ [1] - (भाग-19)

अर्थात कवियों (शायर) के पीछे वे ही लोग चलते हैं जिन्होंने सत्य और
Ⓟ393 नीति का Ⓟमार्ग छोड़ दिया है। क्या तू नहीं देखता कि कवि (शायर) तो
वे लोग हैं जो क़ाफ़िया रदीफ़ (तुकबन्दी) और विषय की खोज में प्रत्येक

---
① अश्शोअराअ : 225 से 228

ही नष्ट हो जाते तथा योग्यताओं को परखने के लिए जो उत्तम मापदण्ड है और जिस के माध्यम से मनुष्य की विचार शक्ति बढ़ती है तथा व्यक्तित्व की पूर्णता होती है

शेष हाशिया नं. 11

पाए तथा अपनी मनोकामनाओं में सफलता प्राप्त करे। इस बात के प्रमाण हेतु किसी तर्कशास्त्र या दर्शनशास्त्र के आडंबरयुक्त तर्कों की आवश्यकता नहीं अपितु प्रत्येक मनुष्य की आत्मा में उसे समझने की योग्यता विद्यमान है तथा सच्चे आध्यात्म ज्ञानी के अपने व्यक्तिगत अनुभव उस के औचित्य पर निरन्तर साक्ष्य देते हैं। ®बन्दे का ख़ुदा से सहायता चाहना कोई ऐसी बात ®356
नहीं है जो मात्र निरर्थक और आडम्बर हो अथवा जो केवल निर्मूल विचारों पर आधारित हो और उस पर कोई उचित परिणाम सम्पादित न हो अपितु ख़ुदा तआला जो वास्तव में संसार को स्थापित रखने वाला है, जिस के सहारे वास्तव में इस संसार की नौका चल रही है। उसके अनादि स्वभाव की दृष्टि से यह सत्य हमेशा से चला आता है कि जो लोग स्वयं को तुच्छ और तिरस्कृत समझ कर अपने कार्यों में उसका सहारा चाहते हैं तथा उसके नाम से अपने कार्यों को आरंभ करते हैं तो वह उन्हें अपना सहारा प्रदान करता है, जब वे उचित प्रकार से अपनी विनम्रता और बन्दगी से ख़ुदा के सामने हो जाते हैं तो उसके समर्थन उन्हें प्राप्त हो जाते हैं। अत: प्रत्येक महान कार्य के आरंभ में उस वरदानों के उदगम के नाम से सहायता चाहना कि जो रहमान (दयालु) और रहीम (कृपालु) है एक नितान्त सम्मान,

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

जंगल में भटकते फिरते हैं, ख़ुदाई बातों पर उन का पैर नहीं जमता और जो कुछ कहते हैं वह करते नहीं। अत: अन्यायी लोग जो ख़ुदा के सच्चे कलाम को शाइरों (कवियों) के कलाम से उपमा देते हैं उन्हें शीघ्र ही ज्ञात होगा कि किस ओर फिरेंगे। अब मनीषी व्यक्ति को विचार करना चाहिए कि क्या इससे अधिक अन्याय कोई और भी होगा कि सत्य मात्र को व्यर्थ मात्र से उपमा दी जाए अथवा अंधकार को प्रकाश के समान ठहराया जाए। क्या ऐसी पुस्तकें इस पुनीत किताब से कुछ तुलना रखती हैं जिनके मुखमंडल

वह लुप्त हो जाता और जब वह माध्यम ही लुप्त हो जाता तो मनुष्य किन मामलों
Ⓟ406 में Ⓟचिन्तन-मनन करता और यदि वह चिन्तन-मनन न करता तो एक ज्ञात और

शेष हाशिया नं. (11)

बन्दगी, दरिद्रता और कंगाली की पद्धति है तथा ऐसी आवश्यक पद्धति है कि जिस से कर्मों में एकेश्वरवाद की प्रथम श्रेणी आरंभ होती है, जिसकी अनिवार्यता से मनुष्य बच्चों की सी विनम्रता धारण करके उन अहंकारों से पवित्र हो जाता है जो संसार के अभिमानी बुद्धिमानों के हृदयों में भरे होते हैं। अत: अपनी निर्बलता और ख़ुदा की सहायता पर पूर्ण विश्वास करके उस अध्यात्म ज्ञान से भाग प्राप्त कर लेता है जो विशेष सदात्मा लोगों को प्रदान किया जाता है। नि:संदेह मनुष्य इस पद्धति को जितना अनिवार्य रूप से ग्रहण करता है, उस पर कार्यरत होना अपना जितना कर्तव्य समझता है, उसे त्यागने में अपना जितना विनाश देखता है उसका एकेश्वरवाद उतना ही शुद्ध होता है तथा उतना ही अहंकार और अभिमान की मलिनताओं से पवित्र होता जाता है तथा उतना ही आडम्बर और बनावट की कालिमा उसके चेहरे से दूर हो जाती है तथा सादगी और भोलेपन का प्रकाश उसके मुख पर चमकने लगता है। अत: यह वह सत्य है जो शनै: शनै: मनुष्य को अल्लाह में आसक्त होने की श्रेणी तक पहुंचाता है, यहां तक कि वह देखता है कि मेरा कुछ भी अपना नहीं अपितु सब कुछ मैं ख़ुदा से प्राप्त करता हूं। जहां कहीं किसी ने यह पद्धति ग्रहण की उसे वहीं एकेश्वरवाद की सुगंध

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

पर व्यर्थ बोलने का दोष तथा अनर्गल बातों का दाग़ इतना फैल गया है कि जिसे देख कर प्रत्येक पवित्र हृदय व्यक्ति को घृणा और नफ़रत होती है। क्या ऐसी पुस्तकें इन पुनीत धर्म ग्रन्थों के सदृश कहलाएंगी, जिन पुस्तकों की विषय-वस्तु कोढ़ियों के रक्त की तरह दूषित है? नहीं, कदापि नहीं। यद्यपि द्वेष वह भयानक विपत्ति है जो न बुद्धि को छोड़ती है और न बोध
Ⓟ394 को Ⓟऔर न श्रवण-शक्ति उससे सुरक्षित रहती है न देखने की शक्ति, परन्तु मनुष्य को यह भी तो विचार कर लेना चाहिए कि जिन दो वस्तुओं में कुछ

सीमित सीमा पर उसे भी अन्य प्राणियों की भांति ठहरना पड़ता तथा असीमित उन्नति की योग्यता न रखता। अत: ऐसी स्थिति में जिस सौभाग्य के लिए वह उत्पन्न

शेष हाशिया नं. (11)

प्रथम बार में ही पहुंचने ®लगती है तथा हृदय और मस्तिष्क सुगंधित होना®357 आरंभ होता जाता है बशर्ते कि सूंघने की शक्ति में कोई विकार न हो। अत: सत्य की इस अनिवार्यता में सत्याभिलाषी को अपने अधम और तुच्छ होने का इक़रार करना पड़ता है तथा अल्लाह तआला के सर्वशक्तिमान और वरदान के उदगम होने पर साक्ष्य देना पड़ती है। ये दोनों बातें ऐसी हैं जो सत्याभिलाषियों का लक्ष्य है तथा विरक्तता की श्रेणी की प्राप्ति हेतु एक आवश्यक शर्त है। इस आवश्यक शर्त को समझने के लिए यही उदाहरण पर्याप्त है कि वर्षा यद्यपि विश्वव्यापी हो परन्तु उस पर पड़ती है जो वर्षा के अवसर पर आ खड़ा होता है। इसी प्रकार जो लोग मांगते हैं वे ही पाते हैं, जो ढूंढते हैं उन्हीं को मिलता है जो लोग किसी कार्य को आरंभ करते समय अपनी कला, बुद्धि अथवा शक्ति पर भरोसा रखते हैं और ख़ुदा तआला पर भरोसा नहीं रखते वे उस सर्वशक्तिमान की हस्ती का जो अपने क़ायम रहने के साथ समस्त संसार पर आच्छादित है कुछ महत्व नहीं पहचानते। उनका ईमान उस सूखी टहनी के समान होता है जिसका अपने ताज़ा और हरे-भरे वृक्ष से कोई संबंध नहीं रहा और जो ऐसी शुष्क हो गई है कि अपने वृक्ष की ताज़गी तथा फूल और फल से कुछ भाग भी प्राप्त नहीं

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

भी समरूपता और अनुकूलता नहीं उन्हें अकारण एक दूसरे का समरूप ठहराने का अन्तिम परिणाम सदा यही हुआ करता है कि ऐसे व्यक्तियों को बुद्धिमान लोग पागल और मूर्ख कहने लगते हैं। हे ईसाई सज्जनो! आप लोग हिन्दुओं की चाल न चलें। आप लोगों में से क़ुर्आन करीम ही के उतरने के युग में ऐसे नेक स्वभाव पादरी बहुत गुज़रे हैं जिनके आंसू क़ुर्आन करीम सुनकर नहीं थमते थे उन महान ईसाई विद्वानों को स्मरण करो जिनकी गवाहियां क़ुर्आन करीम में लिखी हैं और जो क़ुर्आन करीम

किया गया था उस सौभाग्य से वंचित रह जाता। अत: जिस ख़ुदा ने मनुष्य को
Ⓟ407 Ⓟसोच-विचार करने की शक्यिां प्रदान की हैं और उसे कमाल प्राप्त करने की

शेष हाशिया नं. 11

कर सकती। केवल प्रत्यक्ष जोड़ है जो वायु की तनिक गति से या किसी अन्य व्यक्ति के हिलाने से टूट सकती है। अत: ऐसा ही नीरस दार्शनिकों का ईमान है जो संसार को क़ायम रखने वाले (ख़ुदा) के सहारे पर दृष्टि नहीं रखते और उस वरदानों के उदगम को जिस का नाम अल्लाह है पल भर के लिए तथा प्रत्येक स्थिति में स्वयं को उसका मुहताज नहीं ठहराते। अत: ये लोग वास्तविक एकेश्वरवाद से ऐसे दूर पड़े हुए हैं जैसे प्रकाश से अंधकार दूर है। उन्हें यह समझ ही नहीं कि स्वयं को अधम और तुच्छ समझते हुए सर्वशक्तिमान ख़ुदा की महानतम शक्ति के अधीन आ पड़ना बन्दगी की श्रेणियों की अन्तिम सीमा है तथा एकेश्वरवाद की चरम सीमा है जिससे पूर्ण तल्लीनता का झरना जोश मारता है तथा मनुष्य अपने हृदय और उसके इरादों से पूर्णतया खोया जाता है तथा सच्चे हृदय से ख़ुदा के अधिकार पर ईमान लाता है। यहां उन नीरस दार्शनिकों के इस कथन को
Ⓟ358 भी कुछ Ⓟवस्तु नहीं समझना चाहिए कि जो कहते हैं कि किसी कार्य के आरंभ करने में ख़ुदा की सहायता की क्या आवश्यकता है। ख़ुदा ने हमारे स्वभाव में पहले से शक्तियां डाल रखी हैं। अत: उन शक्तियों के होते हुए फिर पुन: ख़ुदा से शक्ति मांगना प्राप्त को प्राप्त करना है, क्योंकि हम कहते हैं कि नि:सन्देह यह सब बात सत्य है कि ख़ुदा तआला ने कुछ कार्य करने

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

को सुनकर नतमस्तक हो कर रोते थे। क़ुर्आन ही की महान प्रतिष्ठा ने उनसे कलिमा को स्वीकार कराया, समस्त इल्हामी किताबों पर अपनी श्रेष्ठता का इक़रार कराया। अब आप लोगों की दृष्टि में वही क़ुर्आन करीम 'हरीरी'
Ⓟ395 और 'फ़ैज़ी' के व्यर्थ कलाम के बराबर नहीं। Ⓟइतना बड़ा कुफ्र ख़ुदा को नहीं भाता। यदि आप लोग क़ुर्आन करीम के बाह्य और आन्तरिक कमालात का कोई सदृश सिद्ध कर दिखाते तो फिर विवाद ही क्या था, परन्तु आप तो

योग्यता प्रदान की है, उसके संबंध में यह बुरा विचार क्योंकर किया जाए कि वह अपनी किताब उतार कर मनुष्य को किसी कमाल तक पहुंचाना नहीं चाहता अपितु

शेष हाशिया नं. (11)

के लिए हमें कुछ-कुछ शक्तियां भी दी हैं, परन्तु फिर भी उस संसार के स्थापित रखने वाले का शासन हमारे ऊपर से दूर नहीं हुआ तथा वह हम से पृथक नहीं हुआ और हमें अपने सहारे से अलग नहीं करना चाहा, हमें अपने असीम वरदान से वंचित रखना उचित नहीं समझा, उसने हमें जो कुछ दिया है वह एक सीमित बात है और उससे जो कुछ मांगा जाता है उसका अन्त नहीं। इसके अतिरिक्त जो कार्य हमारी शक्ति से बाहर हैं उनकी प्राप्ति के लिए हमें कुछ भी शक्ति प्रदान नहीं की गई। अब यदि विचार करके देखो और तनिक पूर्ण दार्शनिकता को काम में लाओ तो स्पष्ट होगा कि हमें पूर्ण रूप से कोई भी शक्ति प्राप्त नहीं। उदाहरणतया हमारी शारीरिक शक्तियां हमारे स्वास्थ्य पर निर्भर करती हैं और हमारा स्वास्थ्य बहुत से ऐसे साधनों पर निर्भर करता है कि उनमें से कुछ आकाशीय और कुछ पार्थिव हैं और वे समस्त हमारी शक्ति से बिल्कुल बाहर हैं। हमने यह तो सामान्य लोगों की समझ के अनुसार एक मोटी सी बात कही है परन्तु वास्तव में वह संसार को क़ायम रखने वाला कारणों का कारण होने के कारण हमारे बाह्य और हमारे आन्तरिक, हमारे प्रथम और हमारे अन्तिम, हमारे ऊपर और हमारे नीचे, हमारे दाएं और हमारे बाएं, हमारे हृदय और

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

ऐसा सदृश प्रस्तुत करने से पूर्णतया विवश और खामोश हैं फिर मालूम नहीं कि तुम आंखें रखते हुए क्यों नहीं देखते, कान रखते हुए क्यों नहीं सुनते, हृदय रखते हुए क्यों नहीं समझते। यदि 'हरीरी' और 'फ़ैज़ी' तुम्हारी तरह ही बुद्धिमान होते तो वे स्वयं ही दावा करते कि हम ने क़ुर्आन करीम का सदृश बना लिया है ख़ुदा न करे किसी शिक्षित मनुष्य की ऐसी भ्रष्ट बुद्धि हो। भला तुम स्वयं ही बताओ कि तुम्हारे पास वह कौन सा कलाम है जिस में क़ुर्आन करीम की तरह यह दावा मौजूद है

Ⓟ408 कमाल से रोकता है। क्या यह बात सत्य नहीं है कि ख़ुदा ने अपने Ⓟकलाम को इसलिए भेजा है ताकि मनुष्यों को अंधकारों से प्रकाश की ओर निकाले। अत: यदि

शेष हाशिया नं. (11)

हमारे प्राण, तथा हमारी आत्मा की सम्पूर्ण शक्तियों को अपनी परिधि में लिए हुए है। वह एक ऐसी जटिल समस्या है जिस के मर्म तक मानवीय चेतन शक्तियां पहुंच ही नहीं सकतीं और यहां इसके समझाने की आवश्यकता भी नहीं क्योंकि हमने जितना ऊपर उल्लेख किया है विरोधी के आरोप और समझने के लिए पर्याप्त है। अत: संसार को क़ायम रखने वाले के लाभों को प्राप्त करने का यही उपाय है कि अपनी सम्पूर्ण शक्ति,
Ⓟ359 बल और ताक़त से अपनी रक्षा मांगी जाए Ⓟऔर यह उपाय कोई नवीन उपाय नहीं है अपितु यह वही उपाय है जो हमेशा से मनुष्य के स्वभाव के साथ लगा चला आता है। जो व्यक्ति बन्दगी की पद्धति पर चलना चाहता है वह उसी पद्धति को ग्रहण करता है और जो व्यक्ति ख़ुदा के लाभों का अभिलाषी है वह उसी मार्ग पर चलता है, जो व्यक्ति दया का पात्र होना चाहता है वह उन्हीं अनादि नियमों का पालन करता है। ये नियम कुछ नवीन नहीं हैं, यह ईसाइयों के ख़ुदा की तरह कोई नई उत्पन्न हुई बात नहीं अपितु ख़ुदा का यह एक अटल नियम है कि जो अनादिकाल से बंधा चला आता है और अल्लाह का नियम है जो हमेशा से जारी है जिस की सच्चाई अनुभवों की अधिकता से प्रत्येक सच्चे अभिलाषी पर स्पष्ट है और क्योंकर स्पष्ट न हो। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि हम लोग किस कमज़ोरी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ①

وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪ ②

① बनी इस्राईल : 89 ② अलबक़रह : 24

ख़ुदा की किताब अंधकारों से नहीं निकाल सकती अपितु अरस्तू और अफ़्लातून की किताबें निकाल सकती हैं, तो फिर क्या ख़ुदा का यह कहना कि समस्त अंधकारों

शेष हाशिया नं. (11)

और अशक्तता में पड़े हुए हैं तथा ख़ुदा की सहायता के अभाव में कैसे अधम और निरर्थक हैं यदि एक सर्वशक्तिमान हस्ती प्रतिपल और प्रतिक्षण हमारी संरक्षक न हो, फिर उसकी रहमानियत और रहीमियत हमारे काम न करे तो हमारे समस्त कार्य नष्ट हो जाएं अपितु हम स्वयं ही नश्वरता का मार्ग धारण करें। अत: अपने कार्यों को विशेषकर आकाशीय किताब को जो समस्त महान बातों से सूक्ष्मतम तथा अत्यधिक बारीक है। सर्व-शक्तिमान ख़ुदा के नाम से जो रहमान (कृपालु) और रहीम (दयालु) है बरकत और सहायता की नीयत के साथ आरंभ करना एक ऐसा व्यापक सत्य है कि हम सहसा उस की ओर आकर्षित होते हैं, क्योंकि वास्तव में प्रत्येक बरकत उसी मार्ग से आती है और वह सर्वशक्तिमान हस्ती और समस्त कारणों का कारण तथा समस्त दानशीलताओं का उदगम है जिसका नाम क़ुर्आन करीम की परिभाषा में अल्लाह है स्वयं ध्यान देकर प्रथम अपनी रहमानियत (कृपा) की विशेषता को प्रकट करे और परिश्रम से पूर्व आवश्यक है कि उसे मात्र अपनी कृपा और उपकार से कार्य के माध्यम के बिना प्रकटन में लाए, फिर जब वह रहमानियत की विशेषता से अपने कार्य को पूर्ण रूप से सम्पन्न कर चुके और मनुष्य सामर्थ्य पाकर अपनी शक्तियों द्वारा परिश्रम और प्रयास का कर्त्तव्य अदा करे, फिर अल्लाह तआला का दूसरा कार्य यह है कि अपनी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا وَلَنۡ تَفۡعَلُوۡا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیۡ وَقُوۡدُهَا النَّاسُ وَالۡحِجَارَةُ ۚۖ

اُعِدَّتۡ لِلۡکٰفِرِیۡنَ ① (भाग-1) ℗396

अर्थात् उन्हें कह दे कि यदि समस्त जिन्न और मनुष्य इस बात पर सहमत हो जाएं कि क़ुर्आन के सदृश कोई कलाम लाएं तो यह बात उनके लिए संभव

① अलबक़रह : 25

Ⓟ409 से मेरी किताब ही मुक्ति देती है कोरा दावा ही हुआ। जब एक Ⓟबात की सच्चाई अनुभव और अनुमान से बिल्कुल प्रकट हो जाए तो उसके समक्ष किसका वश चल

शेष हाशिया नं. (11)

Ⓟ360 रहीमियत (दया) की विशेषता को प्रकट करे तथा बन्दे ने जो परिश्रम और प्रयास किया है उस पर शुभ प्रतिफल प्रदान करे तथा उसके प्रयासों को Ⓟनष्ट होने से बचा कर प्रत्येक मनोकामना पूर्ण करे। इसी द्वितीय विशेषता की दृष्टि से कहा गया है कि जो ढूंढता है पाता है, जो मांगता है उसे दिया जाता है, जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाता है अर्थात् ख़ुदा तआला अपनी रहीमियत की विशेषता से किसी के परिश्रम और प्रयास को नष्ट नहीं होने देता और अन्तत: जो ढूंढता है पा लेता है। अतएव यह सच्चाइयां ऐसी स्पष्ट हैं कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अनुभव करके उनकी सच्चाई को पहचान सकता है और कोई व्यक्ति ऐसा नहीं कि थोड़ी सी भी बुद्धिमत्ता होते हुए उस पर ये सच्चाइयां गुप्त रहें। हां यह बात उन सामान्य लोगों पर प्रकट नहीं होती जो हृदयों की कठोरता और लापरवाही के कारण उनकी दृष्टि केवल भौतिक संसाधनों पर टिकी रहती है तथा जो हस्ती संसाधनों पर अधिकार रखने वाली है उसके अद्भुत अधिकारों का उन्हें ज्ञान प्राप्त नहीं होता और न उनकी बुद्धि इतनी कुशाग्र होती है कि इस बात को सोच लें कि सहस्त्रों अपितु असंख्य आकाशीय और पृथ्वी से संबंधित संसाधन जो मनुष्य के प्रत्येक शरीर को सुसज्जित करने के लिए आवश्यक हैं जिनकी उपलब्धि

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

नहीं यद्यपि वे परस्पर सहायक भी बन जाएं और यदि तुम्हें क़ुर्आन करीम के ख़ुदा की ओर से उतारे जाने के सन्दर्भ में सन्देह है तो तुम भी कोई एक सूरह उसके सदृश बनाकर दिखाओ और यदि न बनाओ और स्मरण रखो कि कदापि नहीं बना सकोगे, तो उस अग्नि से डरो जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। मैं पुन: कहता हूं कि इससे पूर्व कि तुम लोग इस चिन्ता में पड़ो कि क़ुर्आन करीम के समान और सदृश कोई अन्य वाणी की खोज की जाए। प्रथम तो तुम्हारे लिए इस बात

सकता है। हमने जितनी सच्चाइयां जो कि नितान्त गंभीर और उच्च श्रेणी की हैं क़ुर्आन करीम से निकाल कर इस पुस्तक में लिखी हैं, उसका देखना हमारे इस वर्णन के

शेष हाशिया नं. 11

मनुष्य के अधिकार और शक्ति में कदापि नहीं अपितु एक ही हस्ती है कामिल विशेषताओं से परिपूर्ण है, जो समस्त संसाधनों को आकाश के ऊपर से पृथ्वी के नीचे तक उत्पन्न करती है तथा उन पर हर प्रकार से अधिकार और शक्ति रखती है परन्तु जो लोग बुद्धिमान हैं वे इस बात को बिना असमंजस के अपितु स्पष्ट तौर पर समझते हैं और जो उनसे भी श्रेष्ठ और अनुभवी हैं वे इस मामले में पूर्ण विश्वास की श्रेणी तक पहुंचे हुए हैं परन्तु यह सन्देह करना कि यह सहायता प्राय: क्यों व्यर्थ और अलाभकारी होती है और क्यों ख़ुदा की रहमानियत (दया) और रहीमियत (कृपा) हर एक समय सहायता में झलक नहीं दिखाती। अत: यह सन्देह केवल एक सच्चाई का बोधभ्रम है क्योंकि ख़ुदा तआला उन दुआओं को जो निष्कपट भावना से की जाएं अवश्य सुनता है और जिस प्रकार उचित हो सहायता चाहने वालों के लिए सहायता भी करता है, परन्तु कभी ऐसा भी होता है कि मनुष्य की सहायता और दुआ (प्रार्थना) में निष्कपटता नहीं होती न मनुष्य हार्दिक विनम्रता के साथ ख़ुदा की सहायता चाहता है और न उसकी अध्यात्मिक स्थिति उचित होती है अपितु उस के ®होंठों में छल और उसके ®361

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

को देख लेना नितान्त आवश्यक है कि उस अन्य कलाम ने वह दावा भी किया है या नहीं जिस दावे को उपर्युक्त आयतों में अभी तुम सुन चुके हो, क्योंकि यदि किसी वक्ता ने ऐसा नहीं किया कि मेरा कलाम अद्वितीय और अनुपम है जिसके मुक़ाबले से वास्तव में समस्त जिन्न और मनुष्य असमर्थ और ख़ामोश हैं तो ऐसे वक्ता के कलाम को अकारण अद्वितीय और अनुपम समझ लेना वास्तव में उसी प्रसिद्ध कहावत का चरितार्थ है कि 'मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त' इसके अतिरिक्त किसी कलाम को क़ुर्आन करीम के सदृश और समान ठहराने में इस बात का सबूत भी उत्पन्न कर लेना चाहिए

Ⓟ410 लिए मुंह बोलता साक्षी तथा Ⓟनिर्णायक कथन है और उन समस्त क़ुर्आनी बारीकियों और सच्चाइयों पर सूचित होने से प्रत्येक व्यक्ति को बशर्ते कि बिल्कुल अन्धा न हो

शेष हाशिया नं. (11)

हृदय में लापरवाही अथवा दिखावा होता है या कभी ऐसा भी होता है कि ख़ुदा उसकी दुआ को सुन तो लेता है तथा उसके लिए जो कुछ अपनी पूर्ण नीति की दृष्टि से उचित और उत्तम देखता है प्रदान भी करता है परन्तु मूर्ख मनुष्य ख़ुदा की गुप्त मेहरबानियों को पहचानता नहीं तथा अपनी मूर्खता और अज्ञानता के कारण उपालंभ और उलाहना देना आरंभ कर देता है तथा इस आयत के विषय को नहीं समझता -

وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ①

अर्थात यह संभव है कि तुम एक वस्तु को बुरा समझो और वह वास्तव में तुम्हारे लिए अच्छी हो और संभव है कि एक वस्तु को प्रिय समझो और वह वास्तव में तुम्हारे लिए बुरी हो और ख़ुदा वस्तुओं की मूल वास्तविकता को जानता है तथा तुम नहीं जानते। अब हमारे इस पूर्ण वर्णन से स्पष्ट

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

कि जिन बाह्य और आन्तरिक विशेषताओं पर आधारित है उन्हीं विशेषताओं पर वह कलाम भी आधारित है जिसे बतौर सदृश प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि यदि प्रस्तुत किए गए सदृश को क़ुर्आनी विशेषताओं से कोई भाग
Ⓟ397 Ⓟप्राप्त नहीं तो फिर ऐसा सदृश प्रस्तुत करना अपनी मूर्खता और मूढ़ता दिखाने के अतिरिक्त किस उद्देश्य पर आधारित होगा। यह बात भली भांति स्मरण रखना चाहिए कि जैसे उन समस्त वस्तुओं के सदृश और समान बनाना जो ख़ुदा की ओर से जारी हैं असंभव और निषेधक है। ऐसा ही क़ुर्आन करीम के सदृश बनाना भी संभव की सीमा से बाहर है यही कारण है कि

① अलबक़रह : 217

यह स्वीकार करना पड़ेगा कि सैकड़ों सच्चाइयाँ और ज्ञान और कौशल जो अफ़लातून और अरस्तू इत्यादि के स्वप्न में भी नहीं आए थे इन सब पर क़ुर्आन करीम व्यापत

शेष हाशिया नं. 11

है कि बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कितना महान सत्य है जिसमें वास्तविक एकेश्वरवाद, बन्दगी और निष्कपटता में उन्नति करने का नितान्त उत्तम सामान मौजूद है जिस का सदृश किसी अन्य किताब में नहीं पाया जाता है और यदि किसी के विचार में पाया जाता है तो वह इस सत्य को दूसरे समस्त सत्यों सहित जो निम्नलिखित हैं निकालकर प्रस्तुत करे –

यहां कुछ अदूरदर्शी और मूर्ख शत्रुओं ने बिस्मिल्लाह की सरस और सुबोध पर एक आरोप भी किया है। इन आरोपियों में से एक सज्जन तो पादरी इमादुद्दीन नाम के हैं जिसने अपनी पुस्तक "हिदायतुलमुसलिमीन" में निम्नलिखित आरोप किया है, दूसरे सज्जन बावा नारायन सिंह नाम के वकील अमृतसरी हैं जिन्होंने पादरी के आरोप को सत्य समझ कर अपनी हार्दिक शत्रुता के कारण वही निकृष्ट आरोप अपनी पत्रिका 'विद्या प्रकाशक' में लिख दिया है। अतः हम इस आरोप को उसके उत्तर सहित लिखना उचित समझते हैं ताकि न्यायकर्ताओं को विदित हो कि ईर्ष्या की अधिकता

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

अरब के बड़े-बड़े नामचीन कवियों को अरबी जिनकी मातृभाषा थी तथा जो स्वाभाविक तथा सृजनात्मक (वह ज्ञान जो परिश्रम द्वारा प्राप्त हो) तौर पर कलाम की रसज्ञता से अच्छी तरह परिचित थे मानना पड़ा कि क़ुर्आन करीम मानव शक्तियों से श्रेष्ठतर है तथा कुछ अरब पर निर्भर नहीं अपितु स्वयं तुम में से अनेक अंधे थे जो इस कामिल प्रकाश से दृष्टा हो गए तथा कई बहरे थे कि इस से सुनने लग गए और अब भी वह प्रकाश चारों ओर से अंधकार को दूर करता जाता है तथा क़ुर्आन करीम के सच्चे प्रकाश हृदयों को प्रकाशमान करते जाते हैं। निश्चय ही यह हाल हो रहा है कि लोगों की जितनी आंखें खुलती जाती हैं उतना ही क़ुर्आन करीम की श्रेष्ठता को स्वीकार करते जाते हैं। अतः बड़े-बड़े धर्मान्ध अंग्रेज़ों में से जो विद्वान और

है। अत: क्या इससे यह परिणाम नहीं निकलता कि ख़ुदा का कलाम धार्मिक ®411 ®बारीकियों का संग्रह है। मैं इस बात को पुन: लिखता हूं कि ख़ुदा ने इस पद्धति

शेष हाशिया नं. 11

ने हमारे विरोधियों को किस श्रेणी की आन्तरिक नेत्रहीनता और अंधेपन तक ®362 पहुंचा दिया है ®कि असीम स्तर का प्रकाश उन्हें अंधकार दिखाई देता है, और उच्च श्रेणी की सुगन्ध को वे दुर्गन्ध समझते हैं। अत: अब ज्ञात होना चाहिए कि जो आरोप बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम की सरस और सुबोध पर उपरोक्त लोगों ने किया है, वह यह है कि अर्रहमान अर्रहीम जो बिस्मिल्लाह में है यह सरस और सुबोध शैली पर नहीं यदि रहीम अर्रहमान होता तो यह सुबोध और उचित शैली थी क्योंकि ख़ुदा का नाम रहमान उस रहमत की दृष्टि से है जो अधिकतर और सामान्य तौर पर है तथा रहीम का शब्द रहमान की तुलना में उस रहमत के लिए आता है जो कम और विशेष है और मंझी हुई सुगम शैली का काम यह है कि कम से अधिक की ओर स्थानान्तरण हो न यह कि अधिक से कम की ओर। यह आरोप है जो इन दोनों सज्जनों ने अपनी आंखें बन्द करके उस कलाम (वाणी) पर किया है जिस कलाम की मंझी हुई सुगम शैली को अरब के समस्त अरबी भाषी जिन में बड़े-बड़े कवि भी थे, अत्यधिक विरोध के बावजूद स्वीकार कर चुके हैं अपितु बड़े-बड़े शत्रु इस कलाम की महान प्रतिष्ठा से अत्यन्त आश्चर्य में पड़ गए और उन में से

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

दार्शनिक कहलाते थे स्वयं बोल उठे कि क़ुर्आन करीम अपनी सुगमता और सरलता में अद्वितीय है, यहां तक कि गादफ़्री हैकिन्स[①] साहिब जैसे सचेष्ट ईसाई को अपनी पुस्तक की धारा 221 में लिखना पड़ा कि वास्तव में जैसी उच्च इबारतें क़ुर्आन में पाई जाती हैं उससे अधिक कदाचित विश्व भर में नहीं मिल सकतीं तथा ऐसा ही योट[①] साहिब को विवशतापूर्वक अपनी पुस्तक में यही गवाही देना पड़ी।

---

① लेखन क्रिया की गलती है। सही गॉडफ्रे हिगिन्स (GODFREY HIGGINS) है। सम्पादक

② लेखन क्रिया की गलती है। सही पोर्ट (जान डेविनपोर्ट JOHN DAVENPORT) है। सम्पादक

को अपनाने में मनुष्य पर कोई कष्ट नहीं डाला, परन्तु प्रथम उसी को दृष्टिकोण की शक्ति प्रदान की और फिर देखने का सामान भी प्रदान किया। यही ख़ुदाई अनुदान

शेष हाशिया नं. (11)

अधिकांश जो कलाम की सरस-सुबोध शैली को भली भांति जानने-पहचानने वाले, कलाम की रसज्ञता से परिचित और न्यायवान थे। वे क़ुर्आनी शैली को मानव शक्ति से बाहर देख कर एक महान चमत्कार समझ कर ईमान ले आए, जिनकी साक्ष्यों का क़ुर्आन करीम में भिन्न-भिन्न स्थानों पर उल्लेख है। जो लोग आन्तरिक तौर पर नितान्त अंधे थे यद्यपि वे ईमान न लाए परन्तु स्तब्धता और हैरानी की अवस्था में उन्हें भी कहना पड़ा कि यह बहुत बड़ा जादू है जिसका मुक़ाबला नहीं हो सकता। अत: उनका यह बयान भी क़ुर्आन करीम के कई स्थानों पर मौजूद है। अब इसी चमत्कारिक कलाम पर ऐसे लोग आरोप करने लगे जिनमें एक तो वह व्यक्ति है जिसे अरबी भाषा की दो पंक्तियां भी उचित और सुबोध तौर पर लिखने का भी कौशल नहीं और यदि किसी मातृभाषी से वार्तालाप करने का संयोग हो तो टूटे-फूटे और बेमेल और ग़लत वाक्यों के अतिरिक्त कुछ बोल न सके और किसी को सन्देह हो तो परीक्षा लेकर देख ले और दूसरा वह व्यक्ति है जो अरबी भाषा से पूर्णतया अनभिज्ञ अपितु फ़ारसी भी भली भांति नहीं
℗जानता और खेद कि ईसाई जिनका पहले वर्णन किया गया है को यह ℗363

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

आर्य समाज वाले जो ख़ुदा के इल्हाम और कलाम को वेद पर समाप्त
किए बैठे हैं वे भी ईसाइयों की भांति क़ुर्आन करीम ℗की अद्वितीयता से ℗398
इन्कार करके वेद के सन्दर्भ में सुगमता और सरलता का दावा करते हैं, परन्तु हम इस बात को बार-बार लापरवाह लोगों पर प्रकट करना कर्त्तव्य समझते हैं कि क़ुर्आन की अद्वितीयता से केवल वह व्यक्ति इन्कार कर सकता है जिसमें यह शक्ति हो कि क़ुर्आन करीम की अद्वितीयता के जो कारण इस पुस्तक में बतौर नमूना लिखे गए हैं किसी अन्य पुस्तक से निकाल कर दिखा सके। अत: यदि आर्य समाज वालों को अपने वेदों पर यह आशा

Ⓟ412 है जिनसे मनुष्य के प्रताप का नक्षत्र चमकता Ⓟ है तथा मनुष्य और जानवर में अन्तर होता है। जानवरों को ख़ुदा ने विचार शक्ति नहीं दी और न उन्होंने कुछ सोचा। फिर

शेष हाशिया नं. (11)

भी ज्ञान नहीं कि यूरोप के विद्वान जो उसके बुज़ुर्ग और पेशवा हैं जिनका बोर्ट[1] साहिब इत्यादि अंग्रेज़ों ने वर्णन किया है, वह स्वयं क़ुर्आन करीम की श्रेष्ठ श्रेणी और सुबोध शैली को स्वीकार करते हैं और फिर बुद्धिमान को अधिकतर इस बात पर विचार करना चाहिए कि जब एक किताब जो स्वयं एक मातृभाषी पर उतरी है तथा उसकी सरस और सुबोध होने की कला पर समस्त अपितु 'सब्आ मुअल्लक़ह' जैसे कवि सहमत हो चुके हैं तो क्या ऐसा प्रमाणित कलाम किसी मूर्ख, अज्ञान तथा अस्त-व्यस्त भाषा वाले के इन्कार से जो कलाम की कलात्मक योग्यता से वंचित तथा अरबी ज्ञानों में महारत रखने से बिल्कुल अपरिचित है अपितु किसी साधारण अरबी जानने वाले व्यक्ति के मुक़ाबले पर बोलने से असमर्थ है आरोप योग्य ठहर सकता है अपितु ऐसे लोग जो अपनी सामर्थ्य से बढ़कर बात करते हैं स्वयं अपनी मूर्खता प्रदर्शित करते हैं तथा यह नहीं समझते कि मातृभाषियों की साक्ष्य के विपरीत तथा बड़े-बड़े प्रसिद्ध कवियों की गवाही के विरुद्ध कोई आलोचना करना वास्तव में अपनी मूर्खता और नितान्त धूर्तता प्रदर्शित करना है। भला इमादुद्दीन पादरी किसी अरबी व्यक्ति के मुक़ाबले पर किसी धार्मिक या सांसारिक मामले में कुछ एक-आध घंटे

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

है कि वह क़ुर्आन करीम का मुक़ाबला कर सकेगा, तो उन्हें भी अधिकार है कि वेद की शक्ति प्रदर्शित करें, परन्तु केवल दावा ही दावा करना तथा अधमतापूर्ण बातें मुख पर लाना नेक स्वभाव लोगों का कार्य नहीं। मनुष्य की समस्त सुशीलता और बुद्धिमत्ता इसी में है कि यदि अपने दावे का कोई सबूत हो तो प्रस्तुत करे अन्यथा ऐसा दावा करने से ही मुख बन्द रखे, जिस का आशय बेहूदा बोलने तथा बकवास के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। ज्ञात रहे

---

① लेखन क्रिया की गलती है। सही पोर्ट (जान डेविनपोर्ट JOHN DAVENPORT) है। सम्पादक

देखो कि वे वैसे के वैसे रहे या नहीं। ये भ्रम कि ख़ुदा ने अपनी किताब अनपढ़ों और ख़ानाबदोशों (यायावरों) के लिए भेजी है (उनकी समझ के अनुसार

शेष हाशिया नं. 11

तक बोल कर तो दिखाए ताकि लोगों पर प्रथम यही स्पष्ट हो कि उसे अरब वालों की शैली पर सीधी, सरल और मुहावरे के साथ बात करना आता है या नहीं क्योंकि हमें विश्वास है कि उसे कदापि नहीं आता तथा हम पूर्ण विश्वास के साथ जानते हैं कि यदि हम किसी अरबी व्यक्ति को उसके समक्ष बात करने के लिए प्रस्तुत करें तो वह अरबों की तरह उनकी शैली पर एक छोटा सा किस्सा भी वर्णन न कर सके तथा अज्ञानता के कीचड़ में फंसा रह जाए। यदि सन्देह है तो उसे सौगंध है कि आज़मा कर देख ले तथा हम स्वयं इस बात के उत्तरदायी हैं कि यदि पादरी इमादुद्दीन साहिब हम से विनती करें तो हम कोई अरबी व्यक्ति उपलब्ध करके किसी निर्धारित तिथि पर एक सभा का आयोजन करेंगे जिसमें कुछ योग्य हिन्दू होंगे और कुछ मुसलमान मौलवी भी होंगे तथा इमादुद्दीन साहिब पर अनिवार्य होगा कि वह भी कुछ ईसाई भाई अपने साथ ले आएं फिर समस्त उपस्थित लोगों के समक्ष इमादुद्दीन साहिब प्रथम कोई किस्सा जो उन्हें उसी समय बताया जाएगा अरबी भाषा में वर्णन करें, फिर वही क़िस्सा वह अरबी सज्जन जो मुक़ाबले पर उपस्थित होंगे अपनी भाषा में वर्णन करें फिर यदि न्यायकर्ताओं ने यह राय दे दी कि इमादुद्दीन साहिब ने उचित तौर पर अरबों

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

कि क़ुर्आन करीम की सुगमता एक पवित्र और पुनीत सुगमता है जिसका उच्चतम उद्देश्य यह है कि युक्ति और सत्य के प्रकाश को सरल कलाम में वर्णन करके धार्मिक ज्ञान के समस्त सत्य और बारीकियां एक संक्षिप्त और तर्कपूर्ण इबारत में भर दी जाएं तथा जहां विस्तार की अत्यधिक आवश्यकता हो वहां विस्तार हो और जहां संक्षेप पर्याप्त हो वहां संक्षेप हो तथा कोई धार्मिक सच्चाई ऐसी न हो जिसकी विस्तृत या संक्षिप्त रूप में चर्चा न की जाए। इसके साथ ही वास्तविक आवश्यकता की मांग पर चर्चा हो न कि

Ⓟ413 Ⓟचाहिए) उचित नहीं है। प्रथम तो इसमें यह झूठ है कि वह कलाम बिल्कुल अनपढ़ों की शिक्षा के लिए उतरा है। ख़ुदा ने तो स्वयं ही फ़रमा दिया है कि समस्त

शेष हाशिया नं. (11)

की शैली पर उत्तम और बारीक वर्णन किया है तो हम स्वीकार कर लेंगे कि उनका अरबी मातृ-भाषा के ज्ञाता पर आलोचना करना कुछ आश्चर्य की बात नहीं अपितु उसी समय पचास रुपए नकद बतौर इनाम उन्हें दिए जाएंगे परन्तु यदि उस समय इमादुद्दीन साहिब मंझे हुए और सरस एवं सुबोध शैलीयुक्त भाषण के स्थान पर अपने अस्त-व्यस्त और ग़लत वर्णन की दुर्गन्ध फैलाने लगे या अपनी बदनामी और अयोग्यता से डर कर किसी समाचार पत्र के माध्यम से सूचना भी न दी कि मैं ऐसे मुकाबले के लिए
Ⓟ364 उपस्थित हूं Ⓟतो फिर हम इसके अतिरिक्त कि لعنتُ اللّٰہِ علَی الْکَاذِبِین (झूठों पर ख़ुदा की फटकार हो) कहें और क्या कह सकते हैं और यह भी स्मरण रखना चाहिए कि यदि इमादुद्दीन साहिब दूसरा जन्म भी पाएं तब भी वह किसी अरबी मातृभाषा वाले का मुकाबला नहीं कर सकते फिर जिस स्थिति में वह अरबों के सामने भी बोल नहीं सकते और तुरन्त गूंगा बनने के लिए तैयार हैं तो फिर इन ईसाइयों और आर्यों की ऐसी बुद्धि पर हज़ार अफ़सोस और दो हज़ार लानत है जो ऐसे अज्ञान की पुस्तक पर विश्वास करके इस अद्वितीय किताब की सरस-सुबोध भाषा पर आरोप लगाते हैं कि जिस ने अरब के सरदार पर उतर कर अरब के समस्त मंझी हुई सरस और सुबोध शैली से बात करने वालों से अपनी श्रेष्ठता को स्वीकार करा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

Ⓟ399 अनावश्यक Ⓟतौर पर, फिर कलाम भी ऐसा सुगम और सरल तथा गंभीर हो कि जिस से उत्तम बनाना किसी के लिए कदापि संभव न हो, फिर वह कलाम अपने साथ अध्यात्मिक बरकतें भी रखता हो यही क़ुर्आन करीम का दावा है जिसे उसने स्वयं सिद्ध कर दिया है तथा अनेकों स्थानों पर स्पष्ट भी कर दिया है कि किसी भी प्राणी के लिए संभव नहीं कि उसके सदृश बना सके। अब जो व्यक्ति न्यायपूर्वक बहस करना चाहता है उस पर यह बात

संसार तथा विभिन्न स्वभावों के सुधार के लिए यह किताब उतरी है जैसे अनपढ़ इस किताब में सम्बोधित हैं उसी प्रकार ईसाई, यहूदी, ®अग्निपूजक, नक्षत्र पूजक, ®414

शेष हाशिया नं. (11)

लिया तथा जिसके उतरने से 'सब्आ मुअल्लक़ा' को मक्का के प्रवेश द्वार से उतारा गया तथा उपर्युक्त 'मुअल्लक़ा' के कवियों में से जो कवि उस समय जीवित था वह अविलम्ब उस किताब पर ईमान लाया। फिर दूसरा अफ़सोस यह कि उस अज्ञान ईसाई को अब तक यह भी ज्ञान नहीं कि वास्तविक सुबोध शैली इस बात में सीमित नहीं कि थोड़े को अधिक पर प्रत्येक स्थान और प्रत्येक अवसर पर व्यर्थ में प्रमुख रखा जाए अपितु सुबोध शैली का मूल नियम यह है कि अपने कलाम को वास्तविक स्थिति में अनुकूल समय का दर्पण दिखाने वाला बनाया जाए। अत: यहां भी रहमान (दयालु) को रहीम पर प्राथमिकता देने में कलाम की वास्तविक स्थिति और क्रम का दर्पण दिखाने वाला बनाया गया है। अत: इस स्वाभाविक क्रम की विस्तृत चर्चा अभी सूरह फ़ातिहा की आगामी आयतों में आएगी। अब हम प्रशंसनीय सूरह की दूसरी आयतों को विस्तार पूर्वक लिखते हैं और वह यह है - اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ समस्त उत्तम विशेषताएं उस सच्चे उपास्य के अस्तित्व में प्रमाणित हैं जो सर्वगुणसम्पन्न है जिस का नाम अल्लाह है। हम पहले भी वर्णन कर चुके हैं कि कुर्आन करीम की परिभाषा में अल्लाह उस पूर्ण अस्तित्व का नाम है जो सच्चा उपास्य तथा समस्त कामिल गुणों का

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

गुप्त नहीं कि क़ुर्आन करीम के साथ मुक़ाबला करने के लिए ऐसी किताब का प्रस्तुत करना आवश्यक है जिसमें वही विशेषताएं पाई जाएं जो उसमें पाई जाती हैं। सत्य है कि वेद में काव्यगत अनिवार्यताएं पाई जाती हैं तथा कवियों की तरह भिन्न-भिन्न प्रकार के रूपक भी मौजूद हैं। उदाहरणतया ऋग्वेद में एक स्थान पर अग्नि को एक धनवान मान लिया है जिस के पास बहुत से रत्न हैं तथा उसके प्रकाश को प्रकाशमान रत्न की उपमा दी है, कुछ स्थानों पर इसको एक सेनापति नियुक्त किया है जिस की काली झंडी

अधर्मी और नास्तिक इत्यादि समस्त सम्प्रदाय सम्बोधित हैं तथा इसमें सब के दूषित विचारों का खण्डन मौजूद है। सबको सुनाया गया है -

शेष हाशिया नं. (11)

संग्रहीता और समस्त अधमताओं से पवित्र, अकेला, जिसका कोई भागीदार नहीं तथा सम्पूर्ण हितों का उदगम है क्योंकि ख़ुदा तआला ने अपने पवित्र कलाम क़ुर्आन करीम में अपने नाम अल्लाह को दूसरे समस्त नामों और विशेषताओं का विशेष्य ठहराया है तथा किसी स्थान पर किसी अन्य नाम को यह स्थान नहीं दिया इसलिए अल्लाह का नाम पूर्ण विशेष्य होने के कारण उन समस्त विशेषताओं पर प्रमाण है जिनका वह विशेष्य है। चूंकि वह समस्त नामों और विशेषताओं का विशेष्य है, इसलिए उसका अर्थ यह हुआ कि वह सम्पूर्ण विशेषताओं को सम्मिलित किए हुए है। अत: 'अल्हम्दोलिल्लाह' के अर्थ का सार यह निकला कि प्रशंसा के समस्त प्रकार, क्या बाह्य तौर पर और क्या आन्तरिक तौर पर, क्या व्यक्तिगत विशेषताओं के तौर पर और क्या प्राकृतिक चमत्कारों के तौर पर अल्लाह

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

है, धुएं को जो अग्नि पर उठता है एक काला इल्म ठहरा लिया है, एक स्थान पर इस ताप को जल-वाष्पों से उठाता है चोर नियुक्त किया है तथा उसका नाम भोजन की पाचन-क्रिया हेतु भोजन की आमाशय में रोकने की शक्ति की दृष्टि से वर्त्रा रखा है और वाष्पों को गोयान ठहराया है और इन्द्र जिस से वेद में आकाश का अंतरिक्ष तथा विशेषकर शीत कटिबन्ध अभिप्राय है। उसे इस उदाहरण में क़साई से उपमा दी है और लिखा है कि जिस प्रकार क़साई गाय के मांस के टुकड़े-टुकड़े करता है उसी प्रकार इन्द्र ने वर्त्रा के सर पर ऐसा वज्र मारा कि उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया तथा पानी बूंद-बूंद होकर बहने लगा, परन्तु स्पष्ट है कि इस प्रकार की अनिवार्यताओं की क़ुर्आन
Ⓟ400 करीम से कुछ भी अनुकूलता Ⓟनहीं, केवल काव्यमयी विचारधारा है, फिर भी ऐसी प्रशंसनीय और महत्वपूर्ण नहीं अपितु अधिकांश स्थान आलोचनीय हैं। उदाहरणतया उपर्युक्त रूपक जिसमें इन्द्र को एक क़साई से उपमा दी

قُلۡ یٰۤاَیُّہَا النَّاسُ اِنِّیۡ رَسُوۡلُ اللّٰہِ اِلَیۡکُمۡ جَمِیۡعَا ① (भाग-9)

फिर जब कि सिद्ध है कि क़ुर्आन करीम को समस्त संसार के स्वभावों से काम

शेष हाशिया नं. (11)

के विशेष्य हैं तथा इसमें कोई अन्य भागीदार नहीं तथा जितनी सच्ची प्रशंसाओं और पूर्ण विशेषताओं को किसी बुद्धिमान की बुद्धि सोच सकती Ⓟहै या किसी विचार करने वाले का विचार मस्तिष्क में ला सकता है, वे Ⓟ365
समस्त विशेषताएं अल्लाह तआला में मौजूद हैं तथा कोई ऐसी विशेषता नहीं कि बुद्धि उस विशेषता की संभावना पर साक्ष्य दे परन्तु अल्लाह तआला दुर्भाग्यशाली मनुष्य की भांति उस विशेषता से वंचित हो अपितु किसी बुद्धिमान की बुद्धि ऐसी विशेषता प्रस्तुत ही नहीं कर सकती कि जो ख़ुदा में न पाई जाए। जहां तक मनुष्य अधिक से अधिक विशेषताएं सोच सकता है वे समस्त उस में विद्यमान हैं तथा उसको अपनी हस्ती और विशेषताओं और प्रशंसाओं में पूर्णरूपेण कमाल प्राप्त है तथा अधमताओं से पूर्णतया पवित्र है। अब देखो यह ऐसा सत्य है जिससे सच्चा और झूठा धर्म

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

है जिसका कार्य गौ-मांस बेचना है। यह एक ऐसा विषय है जो कोमल स्वभाव कवियों के कलाम में कदापि नहीं आ सकता क्योंकि कवि को यह भी विचार कर लेना आवश्यक है कि मेरे इस विषय से जन-सामान्य घृणा तो नहीं करेंगे, परन्तु इस श्रुति में यह विचार दृष्टि से ओझल हो गया है क्योंकि स्पष्ट है कि हिन्दू लोग जो वेद के सम्बोधित हैं वे गाय के मांस का नाम सुनते ही घृणा करते हैं तथा उनकी तबियतों पर ऐसी चर्चा अत्यन्त अरुचिकर लगती है। फिर इन्द्र को जो वेद में एक बड़ा देवता नियुक्त हो चुका है क़साई से उपमा देना तथा महान ठहराने के उपरान्त व्याजनिन्दा (ऐसी निन्दा जो देखने में प्रशंसा ज्ञात हो) करना कलाम की शिष्टता से दूर तथा एक प्रकार की असभ्यता है। इसके अतिरिक्त इस उपमा में एक और भी दोष है वह यह है कि उपमा इस बात में चाहिए कि प्रसिद्ध और मशहूर

① अलआराफ़ : 159

Ⓟ415 पड़ा तो Ⓟतुम स्वयं ही सोचो कि इस स्थिति में अनिवार्य था या नहीं कि वह प्रत्येक प्रकार के स्वभाव पर अपनी श्रेष्ठता और सच्चाई को प्रकट करता तथा हर प्रकार

शेष हाशिया नं. (11)

प्रकट हो जाता है क्योंकि समस्त धर्मों पर विचार करने से ज्ञात होगा कि संसार में इस्लाम के अतिरिक्त ऐसा कोई भी धर्म नहीं है जो ख़ुदा तआला को सम्पूर्ण अधमताओं से पवित्र और हर प्रकार की समस्त प्रशंसाओं से विशेष्य समझता हो। सामान्य हिन्दू अपने देवताओं को संसार के प्रतिपालन की व्यवस्था में भागीदार समझते हैं तथा ख़ुदा के कार्यों में उन्हें स्थायी तौर पर हस्तक्षेपक ठहराते हैं अपितु यह समझ रहे हैं कि वे ख़ुदा के इरादों को बदलने वाले तथा उसके प्रारब्ध को अस्त-व्यस्त करने वाले हैं तथा हिन्दू लोग अनेक लोगों और अन्य प्राणियों के सन्दर्भ में अपितु कुछ अपवित्र और मल खाने वाले जानवरों अर्थात सुअर इत्यादि में यह विचार करते हैं कि किसी युग में उनका परमेश्वर ऐसी-ऐसी योनियों में जन्म लेकर इन समस्त गन्दगियों और मलिनताओं में लिप्त होता रहा है जो इन वस्तुओं के साथ

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

हो। अत: यह कहना कि इन्द्र ने वर्त्रा को ऐसा टुकड़े-टुकड़े कर दिया जैसे क़साई गाय के मांस के टुकड़े-टुकड़े करता है। यह उपमा सुगमता की दृष्टि से तब उचित बैठती है जब यह सिद्ध हो कि वेद के युग में सामान्यतया गौ-मांस बाज़ारों में बिकता था तथा क़साई लोग टुकड़े-टुकड़े करके वे मांस आर्य लोगों को देते थे, परन्तु वर्तमान समय के आर्य लोग इसे कदापि स्वीकार नहीं करते। अत: स्पष्ट है कि कलाम में ऐसी उपमा का वर्णन करना जिसका बाहर में अस्तित्व ही नहीं अपितु जिस से लोग घृणा करते हैं सरसता और सुबोधता की परिधि से बिल्कुल बाहर है। यदि एक लड़का भी अपने कलाम में ऐसी उपमा वर्णन करे तो वह बुद्धिमानों के निकट निन्दनीय और सरल स्वभाव ठहरता है क्योंकि उपमा का आनंद तब ही प्रकट होता है जब समरूपता ऐसी प्रकट हो कि जिस वस्तु से उपमा दी गई है श्रोतागण

Ⓟ401 Ⓟउस से भली भांति परिचय रखते हों तथा उनकी दृष्टि में वह वस्तु प्रकटन

के सन्देहों का निवारण करता। इसके अतिरिक्त यदि उस कलाम में अनपढ़ भी सम्मिलित हैं परन्तु यह तो नहीं कि ख़ुदा अनपढ़ों को अनपढ़ ही रखना चाहता था

शेष हाशिया नं. 11

लगी हुई हैं तथा इन्हीं वस्तुओं की भांति भूख, प्यास, दुख, दर्द, भय, शोक, मृत्यु, अपमान, अपयश, विवशता और निर्बलता की विपत्तियों में ग्रस्त होता रहा है। स्पष्ट है कि ये समस्त आस्थाएं ख़ुदा तआला की विशेषताओं को क्षति पहुंचाती हैं तथा उसके अजर-अमर वैभव और प्रताप को घटाती हैं और आर्य समाज वाले जो इनके सभ्य भाई निकले हैं जिन की यह धारणा है कि वे उचित प्रकार से वेद का अनुसरण करते हैं, वे ख़ुदा तआला के स्रष्टा होने से ही इन्कार करते हैं तथा समस्त आत्माओं को उसकी पूर्णतम हस्ती की तरह अनुत्पत्त और अनिवार्य अस्तित्व तथा वास्तविक अस्तित्व के साथ विद्यमान ठहराते हैं, हालांकि ℗ख़ुदा तआला के सन्दर्भ में सद्बुद्धि ℗366 स्पष्ट तौर पर यह दोष समझती है कि वह संसार का स्वामी कहलाकर फिर

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

की दृष्टि से स्पष्ट तथा अस्तित्व की दृष्टि से मान्य हो एवं उनके स्वभाव भी उनकी चर्चा से घृणा न करते हों परन्तु कौन सिद्ध कर सकता है कि वेद के युग में हिन्दुओं में गाय का मांस क्रय, विक्रय, खाना सामान्य परम्परा और प्रचलन था जिससे आर्य जाति को घृणा न थी। यदि यह भी विचार किया जाए कि स्वयं वेद की ही चर्चा करना इस प्रचलन का सबूत है। तो ऐसा विचार करने से भी आरोप पूर्णतया दूर नहीं हो सकता, क्योंकि गाय के रक्त और मांस से जल को उत्तम समरूपता प्राप्त नहीं। हां गाय के दूध को शुद्ध जल से समरूपता प्राप्त है। अत: यदि उदाहरणतया ऋग्वेद संथाश्तिक प्रथम, सूक्त : 61 की यह श्रुति जिसमें ये उल्लेख है - **हे इन्द्र वर्त्रा पर अपना वज्र चला और उसे ऐसा टुकड़े-टुकड़े कर जैसे क़साई गाय के टुकड़े-टुकड़े करता है।** इस प्रकार पर होते कि इन्द्र ने अपने वज्र से वर्त्रा को दबाया तो उसमें से पानी इस प्रकार बह निकला जैसे दूध वाली गाय का थन दबाने से दूध बह निकलता है।

Ⓟ416 अपितु वह यह चाहता था कि Ⓟमानवता और बुद्धि की जो शक्तियाँ उनके स्वभाव में विद्यमान हैं वे अप्रगट शक्तियां प्रगट हो जाएं। यदि अज्ञान को हमेशा के लिए

शेष हाशिया नं. (11)

किसी वस्तु का प्रतिपालक और स्रष्टा न हो तथा संसार का जीवन उसके सहारे से नहीं अपितु अपनी व्यक्तिगत अनिवार्यता की दृष्टि से हो। जब सद्‌बुद्धि के समक्ष ये दोनों प्रश्न प्रस्तुत किए जाएं कि क्या सर्वशक्तिमान ख़ुदा के पूर्ण प्रशंसकों के लिए यह बात अधिक उचित और अनुकूल है कि वह स्वयं ही अपनी पूर्ण शक्ति से समस्त विद्यमान वस्तुओं (काइनात) को प्रकटन-मंच पर लाकर उन सब का प्रतिपालक और स्रष्टा हो और समस्त विश्व का सिलसिला उसी के प्रतिपालन तक समाप्त होता हो और स्रष्टा होने की विशेषता और शक्ति उसके पूर्ण अस्तित्व में विद्यमान हो तथा जन्म-मरण की क्षति से पवित्र हो या ये बातें उसकी प्रतिष्ठा के योग्य हैं कि जितनी सृष्टियां उसके अधिकार में हैं ये वस्तुएं उसकी सृष्टि नहीं हैं और

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

अत: वह अनिवार्यता जिसका वर्णन करना अभीष्ट था वह भी क़ायम रहती तथा उपमा भी नितान्त अनुकूल हो जाती। इसके अतिरिक्त किसी स्वभाव को इस उपमा से घृणा भी नहीं, क्योंकि हिन्दू लोग भी बिना संकोच गाय का दूध पी लेते हैं।

इन समस्त बातों से दृष्टि हटाते हुए ऐसी काव्यगत शैलियों में हमारी बहस ही नहीं तथा क़ुर्आन करीम के मुक़ाबले में इन व्यर्थ बातों की चर्चा करना एक बेहूदा कृत्य और अकारण का परिश्रम है। जिस वास्तविक सुगमता को क़ुर्आन करीम प्रस्तुत करता है वह तो एक अन्य ही संसार है जिस से व्यर्थ, झूठ और निरर्थक बातों का कुछ भी संबंध नहीं अपितु युक्ति और मारिफ़त के असीम समुद्र को नितान्त संक्षिप्त और तर्कपूर्ण
Ⓟ402 इबारत में सरस और सुबोध शैली को क़ायम रखते हुए वर्णन किया Ⓟहै तथा आध्यात्म ज्ञान की सम्पूर्ण बारीकियों को परिधि में लेकर ऐसा कमाल प्रदर्शित किया है जिस से मानव शक्तियां असमर्थ हैं, परन्तु वेद के संदर्भ

अज्ञान ही रखना है तो फिर शिक्षा का क्या लाभ हुआ। ख़ुदा ने तो ज्ञान और दार्शनिकता की ओर स्वयं ही प्रेरणा दी है। देखो इस आयत में ज्ञान और दार्शनिकता का कैसा ®आग्रह है ®417

शेष हाशिया नं. (11)

न उसके सहारे उनका अस्तित्व है और न अपने अस्तित्व और अनश्वरता में उसकी मुहताज हैं और न वह उनका स्रष्टा और प्रतिपालक है और न उसमें उत्पन्न करने की विशेषता और शक्ति पाई जाती है, न जन्म और मरण की क्षति से पवित्र है। अतः बुद्धि कदापि यह फ़त्वा नहीं देती कि वह जो संसार का स्वामी है वह संसार का स्रष्टा नहीं तथा सहस्त्रों युक्ति-संगत विशेषताएं जो आत्माओं और शरीरों में पाई जाती हैं वे स्वयंभू हैं और उनका स्रष्टा कोई नहीं। ख़ुदा जो इन समस्त वस्तुओं का स्वामी कहलाता है वह काल्पनिक तौर पर स्वामी है और न यह फ़त्वा देती है कि उसको उत्पन्न करने से असमर्थ समझा जाए या शक्तिहीन और अपूर्ण ठहराया जाए या गन्दगी और मल खाने के बेहूदा और दूषित स्वभाव को उस से सम्बद्ध किया जाए अथवा मृत्यु, दुख, दर्द, अज्ञानता और जड़ता को उसके लिए

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

में क्या कहें और क्या लिखें जिसमें सत्य और आध्यात्म ज्ञानों के स्थान पर भिन्न-भिन्न प्रकार के पथ-भ्रष्ट करने वाले विषय विद्यमान हैं। करोड़ों लोगों को सृष्टि-पूजन की ओर किस ने झुकाया? वेद ने, आर्यों को सैकड़ों देवताओं का उपासक किसने बनाया? वेद ने। क्या इसमें कोई ऐसी श्रुति भी है जो साफ़-साफ़ और स्पष्ट तौर पर सृष्टि-पूजन से रोके तथा सूर्य, चन्द्रमा इत्यादि की उपासना से मना करे और इन समस्त श्रुतियों को जो सृष्टि-पूजन की शिक्षा पर आधारित हैं आरोप-योग्य समझे। कोई भी नहीं। अतः वह सुगमता जो सत्य और नीतिगत प्रकाश दिखाने पर निर्भर है उसे क्योंकर प्राप्त हो सकती है, क्या हम ऐसे कलाम को सुगम कह सकते हैं जिसके संबंध में दावा तो यह किया जाता है कि जिसका मूल उद्देश्य द्वैतवाद को मिटाना तथा तौहीद (एकेश्वरवाद) को स्थापित करना है परन्तु वह गूंगों की भांति इस दावे की पुष्टि करने से असमर्थ रहा है। प्रत्येक बुद्धिमान जानता है कि सुगमता के

يُؤْتِى الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِىَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ ①

अर्थात ख़ुदा जिसे चाहता है दार्शनिकता प्रदान करता है और जिसे नीति प्रदान की गई

शेष हाशिया नं. 11

उचित रखा जाए अपितु स्पष्ट तौर पर यह साक्ष्य देती है कि ख़ुदा तआला इन समस्त अधमताओं और हानियों से पवित्र होना चाहिए और उसमें प्रत्येक प्रकार की सम्पूर्णता चाहिए और यह पूर्णता पूर्ण शक्ति से आबद्ध है और जब ख़ुदा तआला में पूर्ण शक्ति न रही और न वह किसी अन्य वस्तु को उत्पन्न कर सका और न अपने अस्तित्व को प्रत्येक प्रकार की क्षति और दोष से सुरक्षित रख सका तो उसमें सम्पूर्णता भी न रही और जब प्रत्येक प्रकार की सम्पूर्णता न रही तो हर प्रकार की पूर्ण प्रशंसाओं से भी वंचित रहा।

Ⓟ367 ⓅAयह हिन्दुओं और आर्यों की दशा है और ईसाई लोग जो कुछ ख़ुदा तआला का प्रताप प्रकट कर रहे हैं वह एक ऐसी बात है कि बुद्धिमान व्यक्ति केवल एक ही प्रश्न से समझ सकता है अर्थात् किसी बुद्धिमान से पूछा जाए कि क्या उस पूर्ण हस्ती, अनादि, समृद्ध और स्वच्छन्द के सन्दर्भ

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

कारणों में से एक नितान्त आवश्यक कारण यह है कि जिस बात का प्रकटन और स्पष्टता अभीष्ट हो उसे इस प्रकार विस्तारपूर्वक बताया जाए कि सत्याभिलाषी की संतुष्टि के लिए पर्याप्त हो। सर्वविदित है कि वही व्यक्ति सुगमता से पूर्ण कहलाता है जो अपने उद्देश्य को उसी उत्तम शैली में व्यक्त करे कि जैसे अपने अन्त:करण के नक्शे का चित्रण करके दिखा दे। अब यदि आर्य सज्जनों का दावा यह होता कि वेद का मूल उद्देश्य सृष्टि-पूजन की शिक्षा है तो कदाचित उसके संदर्भ में संभावना हो सकती कि वह सुगमता के स्तर से पूर्णतया गिरा हुआ नहीं, क्योंकि यद्यपि वेद ने वास्तविक सुगमता की रसज्ञता से सृष्टि-पूजन पर कोई तर्क वर्णन नहीं किया न उसे सिद्ध करके दिखाया तथापि स्पष्ट कलाम से कि जो सुबोध
Ⓟ403 शैली Ⓟका एक भाग है देवताओं की पूजा के सन्दर्भ में अपना उद्देश्य

① अलबक़रह : 270

उसे बहुत सा माल प्रदान किया गया। फिर फ़रमाया है -

(भाग-2)[1] وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ

शेष हाशिया नं. (11)

में उचित है कि बावजूद इसके कि वह अपने समस्त महान कार्यों में जो अनादिकाल से वह करता रहा है स्वयं ही पर्याप्त हो, स्वयं ही किसी बाप-बेटे की आवश्यकता के बिना समस्त संसार को उत्पन्न किया हो और स्वयं ही समस्त आत्माओं और शरीरों को वे शक्तियां प्रदान की हों जिनकी उन्हें आवश्यकता है और स्वयं ही समस्त विश्व (काइनात) का संरक्षक, स्थापित करने वाला और व्यवस्थापक हो अपितु उन के अस्तित्व से पूर्व उनके जीवन के लिए जिस-जिस वस्तु की आवश्यकता थी वह सब अपनी रहमानियत (दया) की विशेषता से प्रकटन में लाया तथा किसी कर्ता के कर्म की प्रतीक्षा किए बिना सूर्य, चन्द्रमा, असंख्य नक्षत्र, पृथ्वी तथा सहस्त्रों

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

खोलकर वर्णन कर दिया तथा अग्नि, वायु और इन्द्र इत्यादि की प्रशंसा में सैकड़ों जंत्र-मंत्र बना डाले और उन वस्तुओं से गायें, घोड़े तथा बहुत सा धन भी मांगा, परन्तु यदि यह दावा किया जाए कि वेद ने अपनी वर्णन-शक्ति और सुगमता की विशेषता से एकेश्वरवाद के वर्णन में बल लगाया है तथा द्वैतवादियों के भ्रम और भ्रान्तियों को स्पष्ट सबूतों द्वारा मिटाया है तथा एकेश्वरवाद की स्थापना और द्वैतवाद के निवारण हेतु जो-जो सबूत आवश्यक हैं वे सब वर्णन किए हैं तथा ख़ुदा के एकेश्वरवाद को सिद्ध करके दिखाया है तथा अग्नि इत्यादि की उपासना से मना किया है तो यह दावा किसी प्रकार सफल नहीं हो सकता। कौन इस बात को नहीं जानता कि वेद के निबन्ध इसी की ओर झुके हुए हैं कि तुम अग्नि की उपासना करो, इन्द्र के भजन गाओ, सूर्य के समक्ष हाथ जोड़ो। अत: स्पष्ट है कि जिस स्थिति में तुम्हारे कथनानुसार वेद का यह उद्देश्य था कि एकेश्वरवाद

---

① अलबक़रह : 152

℗418 अर्थात रसूल (स.अ.व.) तुम्हें किताब ℗और दार्शनिकता तथा वे समस्त सच्चाइयों और ख़ुदा के ज्ञानों की शिक्षा देता है जिन्हें स्वयं ज्ञात कर लेना तुम्हारे लिए संभव न था तथा

शेष हाशिया नं. 11

ने 'मतें जो पृथ्वी पर पाई जाती हैं मात्र अपनी दया और कृपा से मनुष्यों के लिए उत्पन्न की हों और उन समस्त कार्यों में किसी बेटे का मुहताज न हुआ हो, परन्तु फिर वही पूर्ण ख़ुदा अन्तिम युग में अपना समस्त प्रताप और प्रभुत्व समाप्त करके क्षमा और मुक्ति प्रदान करने के लिए बेटे का मुहताज हो जाए और फिर बेटा भी ऐसा अपूर्ण बेटा जिसे बाप से कुछ भी अनुकूलता नहीं। जिसने बाप की भांति न कोई कोना आकाश का और न कोई भाग पृथ्वी का उत्पन्न किया जिस से उसकी ख़ुदावन्दी सिद्ध हो अपितु 'मरक़स' के अध्याय 8, आयत 12 में उसकी विवशतापूर्ण स्थिति को इस प्रकार वर्णन किया गया है कि उसने अपने हृदय से आह खींचकर कहा कि इस युग के

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

का वर्णन करे तथा सूर्य-चन्द्रमा इत्यादि की उपासना से रोके तथा द्वैतवादियों को एकेश्वरवाद के स्तर पर पहुंचा दे और बिगड़े हुए लोगों को सुधार पर लाए तथा सृष्टि-पूजकों को ईश्वर-पूजक बनाए और द्वैतवादियों के समस्त भ्रम मिटा दे, परन्तु इसके स्थान पर कि वह अपने उस उद्देश्य को पूर्ण करता अनेकों स्थानों पर उसके वर्णन से सृष्टि-पूजन की शिक्षा जड़ पकड़ गई। जिस शिक्षा ने करोड़ों की नौका को डुबोया, लाखों को द्वैतवाद और कुफ्र के भंवर में निमज्जित किया (डुबोया)। वेद ने एक स्थान पर भी मुख खोलकर वर्णन नहीं किया कि सृष्टि-पूजन से पृथक हो जाओ, अग्नि इत्यादि की उपासना न करो, ख़ुदा के अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु से मनोकामनाएं न मांगो, ख़ुदा को अद्वितीय और अनुपम समझो। इस परिस्थिति में प्रत्येक बुद्धिमान स्वयं ही न्याय करे कि क्या सुगम और सरल कलाम की यह ही निशानियां हुआ करती हैं कि अन्त:करण कुछ है और मुख से कुछ और ही निकलता जाता है। इतनी व्यर्थ वार्ता तो पागलों और दीवानों के कलाम में भी

फिर फ़रमाया है -

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا[1] (भाग-22)

शेष हाशिया नं. (11)

लोग क्यों निशान चाहते हैं मैं तुम से सच कहता हूं कि इस युग के लोगों को कोई निशान न दिया जाएगा। उसके सलीब पर चढ़ाने के समय भी यहूदियों ने कहा कि यदि वह अब हमारे समक्ष जीवित हो जाए तो हम ईमान लाएंगे परन्तु उसने उन्हें जीवित होकर न दिखाया तथा अपनी ख़ुदाई और पूर्ण क़ुदरत का ®लेशमात्र सबूत न दिया। यदि कुछ चमत्कार भी ®365
दिखाए तो वे दिखाए कि इससे पूर्व अन्य नबी बहुतात के साथ दिखा चुके थे अपितु इसी युग में एक हौज़ के पानी से भी ऐसे ही चमत्कार प्रकटन में आते थे (देखो इन्जील यूहन्ना, अध्याय : 5) अत: वह अपने ख़ुदा होने का कोई निशान न दिखा सका जैसा कि उपरोक्त आयत में स्वयं उसका इक़रार मौजूद है अपितु एक कमज़ोर और विवश स्त्री के पेट से जन्म पाकर

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

नहीं होती। वे ®भी इतनी वर्णन-शक्ति रखते हैं कि अपनी हार्दिक इच्छा ®404
प्रकट कर देते हैं। जब पानी की इच्छा हो अग्नि नहीं मांगते और यदि रोटी की इच्छा हो तो पत्थर नहीं मांगते, परन्तु मैं हैरान हूं कि वेद की सुगमता किस प्रकार की सुगमता है जिसका उद्देश्य तो एकेश्वरवाद था परन्तु इसके विपरीत सैकड़ों देवताओं का विवाद आरंभ कर दिया। जो कलाम अपना उद्देश्य प्रकट करने से भी असमर्थ है ख़ुदा न करे कि वह सरल और सुगम हो। सुगम कलाम में ऐसा विकार कब आ सकता है कि जो बात मूल उद्देश्य हो वही स्पष्टता और शिष्टता के साथ वर्णन न हो सके। सुगमता की प्रथम शर्त यही है कि वक्ता अपने अन्त:करण की बात प्रकट करने पर भली भांति समर्थ हो और जिस बात को प्रकट करना चाहिए ऐसी स्पष्टता के साथ प्रकट करे कि कोई भ्रम शेष न रह जाए, गूंगों की तरह संदिग्ध और व्यर्थ बात न कहे। हां जिस बात को गुप्त

[1] फ़ातिर : 29

अर्थात ख़ुदा से वे ही लोग डरते हैं जो ज्ञानवान हैं। फिर फ़रमाया है -

(भाग-16) ①قُل رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا

शेष हाशिया नं. (11)

(ईसाइयों के कथनानुसार) वह अपमान, अपयश, शक्तिहीनता और महत्वहीनता की आयु भी देखी जो मनुष्यों में से ऐसे मनुष्य देखते हैं जो अभागे और दुर्भाग्यशाली कहलाते हैं और फिर एक अवधि तक अंधकारमय गर्भाशय में बन्दी रह कर उस अपवित्र मार्ग से कि जो मूत्र के बाहर जाने का मार्ग है उत्पन्न हो कर हर प्रकार की मलिनता को अपने ऊपर ले लिया और मानव अपवित्रताओं तथा क्षतियों में से ऐसी कोई अपवित्रता शेष न रही जिस से वह बेटा बाप को बदनाम करने में लिप्त न हो और फिर उसने अपनी मूर्खता, अज्ञानता, शक्तिहीनता तथा अपने नेक न होने का अपनी किताब में स्वयं ही इक़रार कर लिया। फिर इस परिस्थिति में वह विवश बन्दा कि व्यर्थ में ख़ुदा का बेटा ठहराया गया कुछ बड़े नबियों से ज्ञान और

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

रखना तथा बतौर रहस्यों के वर्णन करना हित में हो उसे गुप्त तौर पर वर्णन करना ही बलाग़त (सुगमता) है, परन्तु एकेश्वरवाद जिस से मुक्ति का सम्पूर्ण मामला सम्बद्ध है ऐसी बात नहीं कि जिसे गुप्त रखना वैध हो। अतः यह कहना भी उचित नहीं है कि वेद ने जान-बूझ कर एकेश्वरवाद के विषय को पहेली और प्रहेलिकाओं की तरह वर्णन किया है और जान-बूझ कर धोखा देने वाली इबारतें लिखी हैं क्योंकि इस से यह स्वीकार करना पड़ेगा कि वेद ने जान-बूझ कर कुछ करोड़ लोगों को विनाश के भंवर में डालना चाहा तथा जान बूझ कर ऐसी इबारतें लिखी हैं जिनके पढ़ने से सृष्टि-पूजन की शिक्षा का प्रसार होता है अपितु इस दशा में सामान्य हिन्दुओं की यह राय उचित होगी कि वेद की हार्दिक इच्छा यही थी कि आर्य जाति को देवताओं का पुजारी बना दे और यदि वेद की हार्दिक इच्छा सृष्टि पूजन के विपरीत समझें तो फिर यह कहना पड़ेगा कि उसे बात करने का ढंग बिल्कुल स्मरण नहीं और उसमें

① ताहा : 115

अर्थात ℗दुआ कर कि हे ख़ुदा मुझे ज्ञान संबंधी श्रेणियों में उन्नति प्रदान कर और ℗419
फिर फ़रमाता है -

शेष हाशिया नं. (11)

कर्म संबंधी कलाओं और विशेषताओं में कम भी था, उसकी शिक्षा भी एक अपूर्ण शिक्षा थी जो मूसा की शरीअत (धार्मिक विधान) की एक शाखा थी, तो क्योंकर वैध है कि सर्वशक्तिमान, अजर-अमर ख़ुदा पर यह लांछन लगाया जाए कि वह हमेशा अपनी हस्ती में पूर्ण, समृद्ध और सर्वशक्तिमान रह कर अन्ततः ऐसे अपूर्ण बेटे का मुहताज हो गया तथा अपने प्रताप और तेज और महानता को सहसा खो दिया। मैं कदापि उचित नहीं समझता कि कोई बुद्धिमान व्यक्ति उस पूर्ण हस्ती के सन्दर्भ में जो सर्वगुण सम्पन्न है ऐसे ऐसे अपमान वैध रखे। स्पष्ट है कि यदि मरयम के बेटे की घटनाओं को व्यर्थ और बेहूदा प्रशंसाओं से पृथक कर लिया जाए तो इंजीलों से उसकी वास्तविक परिस्थितियों का सही सारांश निकलता है कि वह एक

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

यह योग्यता ही नहीं कि अपनी इच्छा को सम्बोधित लोगों पर उचित तौर पर प्रकट कर सके तो इस स्थिति में वेद का सरस-सुबोध शैली के स्तर से गिरना ऐसा ℗स्पष्ट है कि वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। ऐसे कलाम ℗405
किसी बुद्धिमान के निकट सुगम और सरल नहीं कहला सकते जिस के शब्द अर्थों को सिद्ध नहीं करते अपितु मनोकामना के विपरीत अन्य खराबियों की ओर खींचते हैं, जिस श्रुति पर दृष्टि डाल कर देखो मार्ग-दर्शन के स्थान पर बटमारी कर रही है। यह अच्छी सुबोध शैली है और विचित्र सरसता। अन्तःकरण की बात समझाने का ढंग भी वेद ही पर समाप्त है। यों तो कदाचित किसी सज्जन को विश्वास न हो परन्तु हम बतौर नमूना ॠग्वेद में से जो समस्त वेदों में सर्वश्रेष्ठ गिना जाता है ऐसी श्रुतियां लिखते हैं जिनके संबंध में आर्यों का विचार है कि उनमें एकेश्वरवाद की शिक्षा है। तत्पश्चात् बतौर नमूना वे आयतें लिखेंगे जो क़ुर्आन करीम ने एकेश्वरवाद के संबंध में लिखी हैं। ताकि प्रत्येक को ज्ञात हो कि वेद और

مَنۡ كَانَ فِىۡ هٰذِهٖۤ اَعۡمٰى فَهُوَ فِى الۡاٰخِرَةِ اَعۡمٰى وَاَضَلُّ سَبِيۡلًا ① (भाग-15)

अर्थात जो व्यक्ति इस संसार में अन्धा रहा और अध्यात्म में दक्षता उत्पन्न न की

शेष हाशिया नं. (11)

विवश, निर्बल और अपूर्ण बन्दा अर्थात् जैसे बन्दे हुआ करते हैं तथा मूसा
Ⓟ369 के अधीन नबियों में से एक नबी था और उस बुज़ुर्ग और Ⓟमहान रसूल का एक अनुयायी और पीछे आने वाला था तथा वह स्वयं उस महानता को कदापि नहीं पहुंचा था अर्थात् उसकी शिक्षा एक उच्च शिक्षा की शाखा थी स्थायी शिक्षा न थी तथा वह स्वयं इन्जीलों में इक़रार करता है कि मैं न नेक हूं और न अन्तर्यामी हूं, न शक्तिमान हूं अपितु एक विवश बन्दा हूं। इन्जील के वर्णन से स्पष्ट है कि उसने गिरफ़्तार होने से पूर्व कई बार रात के समय अपनी सुरक्षा हेतु प्रार्थना की, वह चाहता था कि उसकी प्रार्थना स्वीकार हो जाए परन्तु उसकी वह प्रार्थना स्वीकार न हुई और जिस प्रकार विवश, विनम्र बन्दों को आज़माया जाता है वह शैतान से आज़माया गया।

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

फ़ुरक़ान (क़ुर्आन) में से किसने एकेश्वरवाद के मामले को स्पष्टता, शिष्टता, शक्तिशाली बयान और सुगमतापूर्ण वार्तालाप में वर्णन किया है तथा किस का वर्णन निरर्थक और व्यर्थ तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के सन्देहों और शंकाओं में डालता है, क्योंकि जैसा कि हम उल्लेख कर चुके हैं सुबोध और सरस शैली के परीक्षण के लिए यही आसान मार्ग है कि जिन दो कलामों की तुलना और मुक़ाबला स्वीकार हो उनके वार्ता करने की शक्ति को देखा जाए कि किस श्रेणी तक है तथा अपने पद संबंधी कर्तव्य को अदा करने के लिए उन्होंने कैसा-कैसा मुख खोलने और बात की तह तक पहुंचने की कोशिश की है तथा अपने तर्कपूर्ण और संक्षिप्त वर्णन से अज्ञानता के अंधकार को दूर करने के लिए ज्ञान का प्रकाश दिखाया है तथा ख़ुदा के एकेश्वरवाद की विशेषताएं तथा द्वैतवाद के विकार प्रकट किए हैं, परन्तु यदि किसी को यह सन्देह हो कि कदाचित ऋग्वेद में ऐसी श्रुतियां भी होंगी जो एकेश्वरवाद के

---

① बनी इस्राईल : 15

वह उस दूसरे संसार (परलोक) में भी अन्धा ही होगा अपितु अंधों से भी ®अधिक®420
ख़राब होगा और फिर यह दुआ सिखाता है -

शेष हाशिया नं. (11)

अत: इस से स्पष्ट है कि वह हर प्रकार से विवश ही विवश था ज्ञात निष्कासन के मार्ग से जो गन्दगी और अपवित्रता के निष्कासन का मार्ग है से उत्पन्न होकर एक अवधि तक भूख, प्यास, दर्द और रोग का कष्ट उठाता रहा। एक बार का वृत्तान्त है कि वह भूख के कष्ट से एक अंजीर के नीचे गया, परन्तु चूंकि अंजीर का वृक्ष फलों से खाली था इसलिए वंचित रहा और यह भी न हो सका कि दो-चार अंजीर अपने खाने के लिए उत्पन्न कर लेता। अत: एक अवधि तक ऐसी-ऐसी अपवित्रताओं में रह कर और ऐसे-ऐसे कष्ट उठा कर ईसाइयों के मतानुसार मर गया और इस संसार से उठाया गया। अब हम पूछते हैं कि सर्व-शक्तिमान ख़ुदा के अस्तित्व में ऐसी ही

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

वर्णन में क़ुर्आन करीम का मुक़ाबला कर सकें। अत: उसे अधिकार है कि वे ही श्रुतियां उपर्युक्त वेद से वर्णन करे ताकि आर्य लोग जो ऋग्वेद-ऋग्वेद कर रहे हैं समस्त वेदों से पूर्व उसी का निर्णय हो जाए। यहां यह भी स्मरण रहे कि क़ुर्आन करीम की अद्वितीय सरस-सुबोध शैली ®तथा उसके सहस्त्रों®406 सत्य और बारीकियां जिन के मुक़ाबले पर मानव शक्तियां असमर्थ हैं की यथा-स्थान चर्चा की जाएगी। यहां केवल आर्यों के आग्रह से जो क़ुर्आन करीम के मुकाबले में वेद की सुगमता का दावा करते रहे हैं कुछ क़ुर्आनी आयतें इस उद्देश्य से लिखी जाती हैं ताकि उनकी गाली-गलौज को ऐसे आसान तौर पर रोका जाए जिस से लेखकों पर वेद का अधम और तुच्छ होना स्पष्ट हो जाए और यह बात प्रकट हो जाए कि वेद में वार्ता की इतनी शक्ति भी नहीं कि वह अपने वांछित उद्देश्य को स्पष्ट रूप से वर्णन कर सके और कहां यह कि उसे क़ुर्आन करीम की श्रेष्ठतम सुगमताओं के साथ दम मारने की शक्ति हो क्योंकि इस अवसर पर प्रत्येक न्यायकर्ता समझ

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ - صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ① (1-भाग)

अर्थात हे ख़ुदा हम पर वह सदमार्ग प्रकट कर जो तूने उन समस्त गुणवान लोगों

शेष हाशिया नं. (11)

अपूर्ण विशेषताएं होना चाहिएं, क्या वह इसी से पुनीत और प्रतापवान कहलाता है कि वह ऐसे दोषों और कमियों से भरा हुआ है, क्या संभव है कि एक ही मां अर्थात् मरयम के पेट में से पांच बच्चे उत्पन्न होकर एक बच्चा ख़ुदा का बेटा अपितु ख़ुदा बन गया और चार बेचारे जो शेष रहे उन्हें ख़ुदाई से कोई भाग न मिला अपितु कल्पना यह चाहती थी कि जब किसी सृष्टि की हुई वस्तु (मख़लूक) के पेट से ख़ुदा भी उत्पन्न हो सकता है यह नहीं कि हमेशा मनुष्य से मनुष्य और गधी से गधा उत्पन्न हो। अत: जहां कहीं किसी स्त्री के पेट से ख़ुदा उत्पन्न हो तो फिर उस पेट से कोई प्राणी उत्पन्न न हो अपितु जितने बच्चे उत्पन्न होते जाएं वे सब ख़ुदा ही हों ताकि

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

सकता है कि जो किताब अपने उद्देश्य को सफ़ाई के साथ भी वर्णन नहीं कर सकती उस पर अन्य सुगमता और सरलता की श्रेणियों की आशा रखना नितान्त मूर्खता है। यदि वेद इस आसान और सरल शैली में क़ुर्आन करीम का मुक़ाबला कर सकेगा तो फिर शायद उन क़ुर्आनी सूक्ष्मताओं में भी मुक़ाबला कर सके जिन में क़ुर्आन करीम का यह दावा है कि क़ुर्आन करीम के मुक़ाबले से अन्य समस्त किताबें असमर्थ हैं, परन्तु यदि यहां आर्य सज्जनों का वेद मुर्दे की तरह निष्प्राण और निश्चल रह गया और एक थोड़ी सी बात में भी क़ुर्आन करीम के समक्ष दम न मार सका तो फिर ऐसे वेद पर गर्व करके यह विचार करना कि वह क़ुर्आन करीम के श्रेष्ठतम सत्य और सूक्ष्मताओं का मुक़ाबला कर लेगा अत्यन्त मूर्खता है। दर्शकों पर यहां यह भी स्पष्ट किया जाता है कि चूंकि हिन्दुओं के अन्वेषकों ने उपनिषदों को वेद में सम्मिलित नहीं समझा और न उन्हें अपने परमेश्वर का कलाम

① अलफ़ातिह: : 6, 7

पर प्रकट किया जिन पर तेरी कृपा और दया थी चूंकि गुणवान लोगों का सद्मार्ग ℗यही है कि वे पूर्ण दक्षता की दृष्टि से सच्चाइयों को ज्ञात करते हैं न कि अंधों ℗421

शेष हाशिया नं. (11)

वह पवित्र गर्भाशय अन्य उत्पन्न वस्तुओं की भागीदारी से पवित्र रहे तथा ख़ुदाओं ही को उत्पन्न करने वाली एकमात्र खान हो। अतः उपर्युक्त कल्पना के अनुसार अनिवार्य था कि हज़रत मसीह के दूसरे भाई और बहन भी ख़ुदाई में से कुछ न कुछ हिस्सा पाते तथा उन पांचों सज्जनों की मां तो प्रतिपालकों की प्रतिपालक ही कहलाती क्योंकि ये पांचों सज्जन आध्यात्मिक और शारीरिक शक्तियों में उसी से लाभान्वित हैं। ईसाइयों ने मरयम के बेटे की व्यर्थ प्रशंसाओं में बहुत सा झूठ भी घड़ा है, परन्तु फिर ℗भी उस से ℗370
दोषों को गुप्त न रख सके तथा उसकी अपवित्रताओं का स्वयं इक़रार करके फिर व्यर्थ में ही उसे ख़ुदा तआला का बेटा ठहरा दिया। यों तो ईसाई और यहूदी अपनी विचित्र किताबों की दृष्टि से सब ख़ुदा के बेटे ही हैं अपितु एक आयत के अनुसार स्वयं ही ख़ुदा हैं, परन्तु हम देखते हैं कि बुद्धमत

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

ठहराया है अपितु स्पष्ट तौर पर यह राय प्रकट की है कि वे कुछ लोगों के स्वयं के ही विचार हैं जैसा कि पंडित दयानन्द की भी यही राय है तथा समस्त प्रसिद्ध, योग्य और प्रकाण्ड पंडित इस राय पर सहमत हैं। इसीलिए अनावश्यक लगा कि उपनिषदों के विषयों की छान-बीन की जाए, ℗क्योंकि ℗407
जब वे इबारतें वेद में सम्मिलित ही नहीं हैं अपितु पंडित दयानन्द की तथा अन्य अन्वेषकों की स्वीकारोक्ति और वेद की शिक्षानुसार भी नहीं व्यर्थ और असंबंधित हाशिए हैं जो कुछ अज्ञानी ब्रह्मणों ने बाद में चढ़ा दिए हैं। अतः इस स्थिति में यद्यपि उपनिषदों में कैसी ही ग़लतियां क्यों न हों परन्तु यहां उनका वर्णन करना मात्र व्यर्थ में विस्तार करना है। हां केवल वेदों में से जिन्हें आर्य लोग अपने परमेश्वर का कलाम तथा सत्य-विद्वानों की पुस्तक समझ रहे हैं, कुछ श्रुतियां बतौर नमूना वर्णन करना नीति संगत है। अतः हम ऋग्वेद में से कई एक श्रुतियां जिनके सन्दर्भ में आर्यों का विचार है कि

की भांति। अत: इस दुआ का उद्देश्य तो यही हुआ कि ख़ुदा तआला ने समस्त सच्चे ज्ञान, सही मा'रिफ़त और बारीक सच्चाइयां जो संसार के समस्त गुणवान

शेष हाशिया नं. (11)

वाले अपने झूठ और झूठी बातें बनाने में उन से अच्छे रहे क्योंकि उन्होंने बुद्ध को ख़ुदा ठहरा कर फिर उसके लिए यह कदापि प्रस्तावित नहीं किया कि उसने गन्दगी और अपवित्रता के मार्ग से जन्म लिया था या किसी प्रकार से गन्दगी खाई थी अपितु बुद्ध के संबंध में उन की आस्था यह है कि वह मुख के मार्ग से उत्पन्न हुआ था, परन्तु खेद कि ईसाइयों ने अत्यधिक छल-प्रपंच तो किए परन्तु यह प्रपंच न सूझा कि मसीह को भी मुख-मार्ग से उत्पन्न करते तथा अपने ख़ुदा को मूत्र और गन्दगी से सुरक्षित रखते और न यह सूझा कि मृत्यु जो ख़ुदावन्दी की वास्तविकता से पूर्णतया विपरीत है उस पर न लाते और न यह विचार आया कि जहां मरयम के बेटे ने इन्जीलों में इक़रार किया है कि मैं न नेक हूं और न स्वच्छन्द बुद्धिमान हूं, न स्वयं आया हूं, न अन्तर्यामी हूं, न शक्तिमान हूं, न प्रार्थना (दुआ) की स्वीकारिता मेरे

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

एकेश्वरवाद की शिक्षा देती हैं निम्नलिखित हैं और वे ये हैं :-

मैं अग्नि देवता की जो हवन का बड़ा प्रधान कार्यकर्ता और देवताओं को भेंटें पहुंचाने वाला तथा बड़ा धनवान है महिमा करता हूं। ऐसा हो कि अग्नि जिसकी महिमा अनादिकाल तथा वर्तमान के ऋषि करते चले आए हैं इस ओर देवताओं का ध्यानाकर्षण करे। हे अग्नि जो दो लकड़ियों के परस्पर घर्षण से उत्पन्न हुई है इस पवित्र किए हुए कुशा पर देवताओं को ला। तू हमारी ओर से उनका बुलाने वाला है तथा तेरी उपासना होती है। हे अग्नि आज हमारी स्वादिष्ट बलि देवताओं को उनके खाने के लिए प्रस्तुत कर। हे अग्नि, वायु, सूर्य इत्यादि देवताओं को हमारी भेंट प्रस्तुत कर। हे निर्दोष अग्नि तू समस्त अन्य देवताओं में से एक होशियार देवता है तू अपने माता-पिता के पास रहता है तथा हमें सन्तान प्रदान करता है, समस्त दौलतों का तू ही

लोगों को विभिन्न प्रकार से और समय-समय पर प्रदान करता रहा है अब वे समस्त
Ⓟहम में एकत्र कर। अत: देखिए कि इस दुआ में भी ज्ञान और नीति की ही ख़ुदा Ⓟ422

शेष हाशिया नं. 11

अधिकार में है, मैं केवल एक विनीत और दरिद्र मनुष्य हूं जो समस्त संसारों के प्रतिपालक का भेजा हुआ आया हूं इन समस्त स्थानों को इन्जील से निकाल देना चाहिए। अब कथन का तात्पर्य यह है कि जो महान सत्य 'अल्हम्दोलिल्लाह' के अर्थ में है वह पवित्र और पुनीत धर्म इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म में कदापि नहीं पाया जाता, परन्तु यदि ब्रह्म समाजी लोग कहें कि उपरोक्त सत्य तो हम स्वीकार करते हैं तो जानना चाहिए कि वे भी अपने इस कथन में झूठे हैं, क्योंकि हम इसी विषय में उल्लेख कर चुके हैं कि ब्रह्म समाज वाले ख़ुदा तआला के लिए गूंगा और वार्तारहित होना तथा बोलने की शक्ति न रखना तथा अपने ज्ञानों के इल्क़ा और इल्हाम से असमर्थ होना प्रस्तावित करते हैं और वास्तविक और पूर्ण

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

प्रदान करने वाला है अग्नि का शुभ नाम लेकर पुकारो जो सबसे प्रथम देवता है। हे अग्नि लाल घोड़ों के स्वामी हमारी स्तुति से प्रसन्न हो, तेंतीस (करोड़) देवताओं को यहां ला। हे अग्नि जैसा कि तू है लोग अपने घरों में तुझे सुरक्षित स्थान पर सदैव प्रज्ज्वलित Ⓟकरते हैं तू जो Ⓟ408
सब के जीवन का कारण है हमारे लाभ हेतु धनवान हो जा। हे बुद्धिमान अग्नि तू निपापत है अर्थात् अपने शरीर का स्वयं जलाने वाला है आज हमारी स्वादिष्ट बलि देवताओं को उनके खाने के लिए प्रस्तुत कर। अग्नि देवता जो कि सदा जवान रहता है बड़ा बुद्धिमान है तथा यज्ञ करने वाले के घर का रक्षक है तथा भेंटों का ले जाने वाला है जिस का मुख देवताओं तक भेंटें पहुंचाने का माध्यम है तथा घर की आग से प्रदीप्त हुआ है। अविनाशी अग्नि अपनी ख़ुराक को अपनी लाट से मिलाकर तथा उसे शीघ्र खाकर सूखी लकड़ी पर चढ़ गई है, जलाने वाले तत्व की ज्वाला चतुर घोड़े के समान फलती है और बादल के

से अभिलाषा की है और वह ज्ञान मांगा गया है जो समस्त संसार में बिखरा हुआ था। सारांश यह कि यद्यपि ख़ुदा तआला ने मुक्ति के सिद्धान्त को बहुत स्पष्ट और

शेष हाशिया नं. 11

Ⓟ371 पथ-प्रदर्शक में जो Ⓟपूर्ण विशेषताएं होना चाहिएं उन विशेषताओं से उसे रिक्त समझते हैं अपितु उन्हें इतना भी ईमान प्राप्त नहीं कि वे ख़ुदा तआला के संबंध में यह आस्था रखें कि उसने अपने अस्तित्व और ख़ुदावन्दी को संसार में अपने इरादे और अधिकार से प्रकट किया है, इसके विपरीत वे तो यह कहते हैं कि ख़ुदा तआला एक मुर्दा या एक पत्थर की भांति किसी अज्ञात कोने में पड़ा हुआ था, बुद्धिमानों ने स्वयं परिश्रम करके उसके अस्तित्व का पता लगाया और उसकी ख़ुदाई को संसार में प्रसिद्ध किया। अत: स्पष्ट है कि वे भी अपने दूसरे भाइयों के समान ख़ुदा तआला की पूर्ण प्रशंसाओं के इन्कारी हैं अपितु जिन प्रशंसाओं से उसको स्मरण करना

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

समान ऊंची होकर गरजती है। हे अग्नि यज्ञ जिसे कोई नहीं रोक सकता और जिसकी तू हर ओर रक्षा करने वाला है देवताओं को पहुंचता है। हे अग्नि तुझ से जितना हो सके अपनी भेंट देने वाले को लाभ पहुंचा। वह निश्चय ही तेरे पास हे ऐंगिरा वापस आएगा। अग्नि के माध्यम से पुजारी को ऐसी समृद्धि प्राप्त होती है जो दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है और जो प्रसिद्धि का झरना और मनुष्य का वंश बढ़ाने वाला है। हे इन्द्र हे वायु यह अर्घ्य तुम्हारे लिए छिड़का गया है, हमारे लिए भोजन लेकर इधर आओ। हे इन्द्र जिसकी सब स्तुति करते हैं ऐसा हो कि फैलने वाले सोम का रस तुझ में प्रवेश करे और तुझे श्रेष्ठतर विवेक प्राप्त करने के लिए अनुकूल हो। जो कुछ उत्तम प्रशंसाएं अन्य देवताओं की हो सकती हैं उन समस्त का इन्द्र भी पात्र है। जो लोग इन्द्र की स्तुति करते हैं चाहे युद्ध में अथवा सन्तान-प्राप्ति हेतु तथा बुद्धिमान जो विवेक के अभिलाषी हैं सब की अभिलाषा पूर्ण होती है। इन्द्र का पेट सोमरस
Ⓟ409 **पीने के कारण समुद्र की भांति फूलता है और तालू Ⓟकी तरलता के**

सरलतापूर्वक अपनी किताब में वर्णन कर दिया है जिसे ज्ञात करने और ®जानने ®423 में किसी प्रकार की कठिनाई और अस्पष्टता नहीं तथा उसमें समस्त शिक्षित और

शेष हाशिया नं. (11)

चाहिए वे समस्त प्रशंसाएं स्वयं से सम्बद्ध करते हैं

رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ مٰلِکِ یَوْمِ الدِّیْنِ

यहाँ अल्लाह तआला ने सूरह फ़ातिहा में अपनी चार विशेषताएं वर्णन कीं अर्थात् रब्बिल आलमीन, रहमान, रहीम, मालिक यौमिद्दीन। इन चार विशेषताओं में से रब्बिल आलमीन को सर्वप्रथम रखा तत्पश्चात् 'रहमान' की विशेषता को रखा फिर 'रहीम' की विशेषता का वर्णन किया फिर सब के अन्त में 'मालिक यौमिद्दीन' की विशेषता को लाए। अतः समझना चाहिए कि ख़ुदा तआला ने यह अनुक्रम क्यों रखा। इसमें रहस्य यह है कि इन चारों विशेषताओं का स्वाभाविक अनुक्रम यही है और अपनी वास्तविक

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

समान सदा तरल रहता है। इन्द्र समस्त देवताओं से अधिक शक्तिशाली है, समस्त देवताओं पर उसे श्रेष्ठता प्राप्त है। बड़े देवताओं को नमस्कार, छोटे देवताओं को नमस्कार, युवा देवताओं को नमस्कार, वृद्ध देवताओं को नमस्कार। हम यथा-शक्ति समस्त देवताओं की पूजा करते हैं। हे इन्द्र कौसिका ऋषि के पुत्र शीघ्र आ और मुझ ऋषि को बड़ा धनवान बना दे (समस्त पुराणों की श्रृंखला में लिखा है कि कौसिका पुत्र विश्वामित्र था तथा सयाना वेद का भाष्यकार उसका कारण वर्णन करने को कि इन्द्र कौसिका पुत्र क्योंकर हो गया। यह क़िस्सा वर्णन करता है जो 'अनुक्रामितिका परिशिष्ट' में लिखा है कि कौसिका अश्राथा के पुत्र ने हृदय में यह इच्छा करके कि इन्द्र के ध्यान से मेरा पुत्र हो तपस्या धारण की थी, जिस तपस्या के परिणाम स्वरूप स्वयं इन्द्र ही ने उसके घर जन्म ले लिया और स्वयं ही उसका बेटा बन गया।) इन्द्र ने जिसकी अधिकांश लोग प्रशंसा करते हैं गतिशील हवाओं के साथ दस्युओं और सम्मियों पर अर्थात् राक्षसों पर आक्रमणकारी होकर अपने वज्र से उन का

अशिक्षित समान हैं, परन्तु उस स्वच्छन्द नीतिवान (ख़ुदा) ने आध्यात्म ज्ञान की बारीकियों और श्रेष्ठतम रहस्यों में यह चाहा है कि मनुष्य परिश्रम करके उन्हें ज्ञात

शेष हाशिया नं. (11)

स्थिति में ये विशेषताएं इसी अनुक्रम से प्रकटित होती हैं। इस का विवरण यह है कि ख़ुदा का संसार पर चार प्रकार का वरदान पाया जाता है, जिसे प्रत्येक बुद्धिमान विचार करके समझ सकता है। प्रथम वरदान **'फ़ैज़ान अ'म'** (فیضان اعم) है। यह वह स्वच्छन्द वरदान है जो बिना भेद-भाव, जड़-चेतन, पृथ्वी से लेकर आकाश तक समस्त वस्तुओं पर निरन्तर जारी है तथा प्रत्येक वस्तु का नास्ति से अस्तित्व का रूप धारण करना फिर अस्तित्व को चरमोत्कर्ष तक पहुंचना उस वरदान के द्वारा है तथा कोई वस्तु जड़ हो या
Ⓟ372 Ⓟचेतन इस से बाहर नहीं, इसी से समस्त आत्माओं और शरीरों के अस्तित्व का प्रकटन हुआ और होता है तथा प्रत्येक वस्तु ने पोषण पाया और पाती

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

वध किया। तत्पश्चात उसने अपने गोरे साथियों पर खेत बांट दिया तथा सूर्य और जल को मुक्त किया। (इस स्थान पर गोरे साथियों से अभिप्राय जैसी कि वेद की शैली का अनिवार्यता है पानी की बूंदें हैं) तथा इस श्रुति का अर्थ यह है कि शीत कटिबन्ध के प्रभाव से पानी की बूंदें जो शक्ल में गोरी-गोरी मालूम होती हैं बादल से टपक कर खेतों पर गिर पड़ीं। कुछ किसी खेत पर और कुछ किसी खेत पर और सब पानी बह गया तथा सूर्य उदय हो गया। अंग्रेज़ व्याख्याकारों ने ये अर्थ किए हैं कि **इन्द्र** ने आर्यों के विचारानुसार आर्य जाति पर जो प्राचीन लोगों की तुलना में गोरे रंग के थे खेत उन प्राचीन लोगों का वितरित कर दिया, परन्तु यह अर्थ उचित नहीं हैं।
Ⓟ410 वेद के विषय की निरन्तरता और क्रम सरासर इसके Ⓟविपरीत है। हे **इन्द्र** तेरे ही कारण से आहार की प्रत्येक स्थान पर प्रचुरता है और वह सरलतापूर्वक उपलब्ध हो सकता है; हे वज्र के घुमाने वाले चरागाहों को हरा-भरा कर दे तथा बहुत धन दे। हम इन्द्र की ओर उसकी सहानुभूति, दौलत और पूर्ण शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रवृत्त होते हैं, क्योंकि वह शक्तिशाली इन्द्र धन

करे ताकि यही परिश्रम उसके लिए आत्मा की पूर्णता का कारण हो जाए क्योंकि
Ⓟसमस्त मानव शक्तियों की स्थापना और अनश्वरता परिश्रम और पराक्रम पर हीⓅ424

शेष हाशिया नं. 11

है, यही वरदान सम्पूर्ण सृष्टि (काइनात) का प्राण है यदि एक पल के लिए खंडित हो जाए तो समस्त संसार नष्ट हो जाए और यदि न होता तो सृष्टि में से कुछ भी न होता। इसका नाम क़ुर्आन करीम में 'रबूबियत' (प्रतिपालन करना) है और इसी के अनुसार ख़ुदा का नाम 'रब्बुलआलमीन' (समस्त संसारों का पालन-पोषण करने वाला) है। जैसा कि उसने दूसरे स्थान में भी फ़रमाया है -

وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ① (भाग : 8)

अर्थात ख़ुदा प्रत्येक वस्तु का प्रतिपालन करने वाला (प्रतिपालक) है

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

प्रदान करके हमारी रक्षा करने के योग्य है। हे **सूर्य और चन्द्रमा** हमारे यज्ञ को सफल करो तथा हमारी शक्ति को अधिक करो, तुम बहुत लोगों के लाभ के लिए उत्पन्न हो, बहुतों को तुम्हारा ही आश्रय है, **सूर्य** के उदय होने पर नक्षत्र रात्रि सहित चोरों की भांति भाग जाते हैं। हम सूर्य देवता के पास जाते हैं जो **देवताओं** के मध्य नितान्त उत्तम देवता है। हे **चन्द्रमा** हमें मिथ्यारोप से बचा, पाप से सुरक्षित रख, हमारे भरोसे से प्रसन्न होकर हमारा मित्र हो जा, ऐसा हो कि तेरी शक्ति अधिक हो। हे **चन्द्रमा** तू दौलत का देने वाला है और कष्टों से मुक्त करने वाला, हमारे घर पर निर्भीक बहादुरों के साथ आ। हे **चन्द्रमा** और **अग्नि** तुम पद में समान हो, हमारी प्रशंसाओं को परस्पर बांट लो, क्योंकि तुम सदैव **देवताओं** के सरदार ही हो, मैं **जल देवता** को जिसमें हमारे जानवर पानी पीते हैं बुलाता हूं, दरिया जो बह रहे हैं उन्हें भेंटें चढ़ानी चाहिएं, ऐसा हो कि वे जल जो सूर्य के निकट हैं और वे जो सूर्य के भागीदार रहते हैं हमारे इस रीति पर मेहरबान हों। हे **धरती**

① अलअन्आम : 165

निर्भर है यदि मनुष्य हमेशा आंख बन्द रखे और उससे कभी देखने का कार्य न ले (तो जैसा कि चिकित्सकीय अनुभवों से सिद्ध हो गया है) कुछ ही दिनों के पश्चात्

शेष हाशिया नं. 11

तथा संसार की वस्तुओं में से कोई वस्तु उसके प्रतिपालन से बाहर नहीं। अतः ख़ुदा तआला ने सूरह फ़ातिहा में समस्त वरदानी विशेषताओं में से प्रथम 'रब्बुलआलमीन' की विशेषता को वर्णन किया और कहा – اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ यह इसलिए कहा कि समस्त वरदानी विशेषताओं में से स्वाभाविक प्राथमिकता 'रबूबियत' (प्रतिपालन) को प्राप्त है अर्थात प्रकटन की दृष्टि से भी प्रकटन में प्राथमिक विशेषता तथा समस्त वरदानी विशेषताओं से आ'म है क्योंकि प्रत्येक वस्तु पर चाहे जड़ हो या चेतन सम्मिलित है। वरदान का दूसरा प्रकार जो दूसरे स्थान पर है "فیضان عام" (सामान्य वरदान) है। इसमें और आ'म वरदान में यह अन्तर है कि आ'म

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

देवता ऐसा न हो कि तू बहुत विशाल हो जाए, तुझ पर कांटे न रहें और तू हमारा निवास-स्थान हो जाए और हमें बहुत प्रसन्नता दे, ऐसा हो कि **द्रोण देवता** हमारा विशेष मेहरबान हो जाए, ऐसा हो कि **मैत्रा देवता** हमारा संरक्षण करे, ऐसा हो कि ये दोनों मिलकर हमें अत्यन्त धनवान कर दें। हे
®411 **कुन्तिका देवता** तू और तेरी पत्नी यज्ञ के देवताओं ®से हमारी सिफ़ारिश करो, हे **अग्नि देवताओं** को यहां ला, उन्हें तीन स्थानों पर बैठा और उन्हें सुसज्जित कर और तू **ऋतु देवता** का घनिष्ठ मित्र हो, **हे अग्नि** लाल घोड़ों के स्वामी, लाल लाटों वाले हम से प्रसन्न कर **तेतीस देवताओं** को यहां ला, हम अग्नि की जो धार्मिक परंपराओं में प्रज्ज्वलित की जाती है उपासना करते हैं, बुद्धिमानों ने हे अग्नि तुझे देवताओं का बुलाने वाला कार्यकर्ता पुरोहित, बड़ा धन प्रदान करने वाला, शीघ्र सुनने वाला और बहुत प्रसिद्ध पाकर अपने यज्ञों में रखा है। **अग्नि** वायु से भड़क कर और उत्तेजित होकर बड़ी-बड़ी लकड़ियों में सरलतापूर्वक प्रवेश कर जाती है। हे अग्नि जब तू सांड की तरह बन में घुस जाती है तब तू जिस ओर जाए तेरा मार्ग काला

अन्धा हो जाएगा और यदि कान बन्द रखे तो बहरा हो जाएगा और ℗यदि हाथ-पैर ℗425 की गति को रोक दे तो अन्ततः परिणाम यह होगा कि उनमें न इन्द्रियों द्वारा महसूस

शेष हाशिया नं. (11)

वरदान तो एक सामान्य प्रतिपालन है जिसके द्वारा समस्त सृष्टि का प्रकटन और अस्तित्व है और यह वरदान जिसका नाम सामान्य वरदान है यह एक विशेष अनादि कृपा है जो प्राणियों की स्थिति पर निर्भर है अर्थात् चेतन वस्तुओं (प्राणी) की ओर ख़ुदा तआला का एक विशेष ध्यान है उसका नाम सामान्य वरदान है। इस वरदान की परिभाषा यह है कि यह बिना पात्रता और बिना इसके कि किसी का कुछ अधिकार हो समस्त प्राणियों पर उनकी आवश्यकतानुसार जारी है, किसी के कार्य का प्रतिफल नहीं तथा इसी वरदान की बरकत से प्रत्येक प्राणी जीवित रहता, जागता, ℗खाता-पीता, ℗373 आपदाओं से सुरक्षित तथा आवश्यकताओं से लाभान्वित दिखाई देता है तथा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

हो जाता है अर्थात् लकड़ियों को जला कर भस्म करती जाती है और समस्त वस्तुओं को जो आगे आती हैं चाहे स्थिर हों या गतिशील जला देती है। मैं अग्नि की जो हर प्रकार की दौलत का देने वाला है पूजा करता हूं। **अग्नि** जिसमें ऐसा प्रकाश है जो कि अन्य को प्राप्त नहीं हो सकता, वह यज्ञ के मकान में सब की शोभा है जैसे घर की शोभा स्त्री से होती है, **अग्नि** जो बन में उत्पन्न हुआ है और मनुष्य का मित्र है, अपने पुजारी की इस प्रकार सुरक्षा करता है जैसे योग्य राजा मनुष्य पर मेहरबानी करता है, ऐसा हो कि वह हम पर मेहरबान हो जब हे अग्नि देवता तू सूखी लकड़ी के घर्षण से उत्पन्न होती है तब तेरे समस्त पुजारी पवित्र परम्परा अदा करते हैं, ऐसा हो कि जो **अग्नि** जो रंग-बिरंगे प्रकाश की स्वामी है अपने इस पुजारी की इच्छाओं को ध्यान से सुने, हमेशा उंगलियां प्रिय अग्नि से ऐसा प्रेम करती हैं जैसा स्त्रियां अपने पतियों से करती हैं। हे अग्नि जब कि पुजारी तुझे अपने घर में प्रज्वलित करता है और तुझे भूख लगाता है जिसकी वह प्रतिदिन इच्छा रखता है। ℗तू हे अग्नि दो प्रकार से अधिक होकर उसके ℗412

करने की शक्ति रहेगी और न गति। इसी प्रकार यदि कंठस्थ करने की शक्ति से कभी काम न ले तो उस शक्ति में विकार आ जाएगा और यदि विचार-शक्ति

शेष हाशिया नं. (11)

प्रत्येक प्राणी के लिए जीवन के समस्त संसाधन जो उसके लिए अथवा उसकी जाति के अस्तित्व को क़ायम रखने के लिए आवश्यक हैं उपलब्ध दिखाई देते हैं। ये समस्त लक्षण उसी वरदान के हैं कि जो कुछ आत्माओं को शरीरिक प्रशिक्षण के लिए आवश्यक है वह सब कुछ दिया गया है और ऐसा ही जिन आत्माओं को शरीरिक प्रशिक्षण के अतिरिक्त अध्यात्मिक प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है अर्थात् अध्यात्मिक उन्नति की योग्यता रखते हैं, उनके लिए हमेशा से आवश्यकताओं के अनुसार ख़ुदा का कलाम उतरता रहा है। अतः इसी रहमानियत के वरदान के द्वारा मनुष्य अपनी करोड़ों आवश्यकताओं पर सफल है। निवास हेतु धरातल, प्रकाश हेतु चन्द्रमा और

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

गुज़ारे के साधनों को अधिक करती है, ऐसा हो कि पाचन-शक्ति की अग्नि जो आहार से संबंध रखती है भक्तों और प्रसिद्ध पुरोहितों की सेवा करने वाले को कामशक्ति को उत्तेजित करने के तौर पर दी जाए और ऐसा हो कि **अग्नि** से उसका शक्तिशाली, निर्दोष, जवान और नितान्त बुद्धिमान लड़का उत्पन्न हो, ऐसा हो कि हे **अग्नि** तेरे धनवान पुजारी बहुत आहार प्राप्त करें, ऐसा हो कि वे ज्ञानवान जो तेरी प्रशंसा करते हैं और तुझे प्रज्वलित करते हैं उनकी आयु दीर्घ हो, ऐसा हो कि हम युद्धों में अपने शत्रुओं से लूट प्राप्त करें, जल में बूटियां हैं, इसलिए हे ब्रह्मचारी जल की प्रशंसा करने में तत्पर हो। **हे जल** समस्त रोगों के निदान वाली बूटियां मेरे शरीर के लाभार्थ पका, इन्द्र का अस्त्र उसके विरोधियों पर पड़ा, अपने तेज और उत्तम वाण से उसने उनके नगर ध्वस्त किए तब इन्द्र अपना वज्र लेकर वर्त्रा की ओर प्रेरित हुआ तथा उसे मारकर अपने हृदय को प्रसन्न किया। हे जंगल के स्वामियों, सुन्दर रूप वालो तुम दोनों हमारा मधुर सोमरस रुचिकर अर्घ्यों सहित इन्द्र के लिए तैयार करो, सोमरस का शेष करछियों में लाओ और उस कोक्षा की

को बेकार छोड़ दे तो वह भी घटते-घटते समाप्त हो जाएगी। अतः यह उसकी कृपा और दया है कि उसने ®बन्दों को इस मार्ग पर चलाना चाहा जिस पर उनके®426

शेष हाशिया नं. (11)

सूर्य, श्वास लेने हेतु वायु, पीने हेतु जल, भोजन हेतु नाना प्रकार के अन्न, रोगों की चिकित्सा हेतु लाखों प्रकार की औषधियां, पहनने हेतु भांति-भांति के लिबास तथा पथ-प्रदर्शन हेतु ख़ुदा के धर्म-ग्रन्थ मौजूद हैं। कोई यह दावा नहीं कर सकता कि ये समस्त वस्तुएं मेरे कर्मों की बरकरत से उत्पन्न हो गई हैं और मैंने ही किसी पूर्व जन्म में कोई शुभ कर्म किया था जिसके फलस्वरूप ख़ुदा ने यह असंख्य ने'मतें मनुष्य को प्रदान कीं। अतः सिद्ध है कि ये वरदान जो सहस्त्रों प्रकार के प्राणियों के आराम हेतु प्रकट हो रहा है, यह अनुदान बिना पात्रता के है जो किसी कर्म के प्रतिफल स्वरूप नहीं, मात्र ख़ुदा की कृपा का एक जोश है ताकि प्रत्येक प्राणी अपने स्वाभाविक उद्देश्य को प्राप्त करके तथा उसके स्वभाव में जो आवश्यकताएं डाली गईं वे पूर्ण हो जाएं। अतः इस वरदान में अनादि कृपा का कार्य यह है कि मनुष्य तथा समस्त प्राणियों की आवश्यकताओं का वादा करे तथा उनके होने और न होने की जानकारी रखे ताकि वे नष्ट न हो जाएं तथा उनकी योग्यताएं ®छुपी®374

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

पतरियों पर परोसो और जो शेष बचे उसे गाय की खाल पर रख दो अर्थात् हथेली पर जो कि गाय की खाल का बना हुआ होता है। हे सोमरस पीने वाले इन्द्र यद्यपि हम पात्र न हों परन्तु तू हमें सहस्त्रों उत्तम गायें और घोड़े देकर धनवान कर दे। हे सुन्दर और शक्तिशाली इन्द्र अन्नदाता तेरी मेहरबानी सदैव क़ायम रहती है, हमें सहस्त्रों उत्तम घोड़े और गायें दे, प्रत्येक को जो हमें गाली देता है नष्ट कर, प्रत्येक जो हमें हानि पहुंचाता है वध कर तथा हमें सहस्त्रों घोड़े और गायें दे। हे **इन्द्र** जो हमारी अच्छाई में प्रसन्न होता है ऐसा कर कि हमें आजीविका प्रचुर मात्रा में प्राप्त हो तथा स्वस्थ और ®अधिक दूध®413 देने वाली गायें हमारे अधिकार में आएं, जिनके कारण से हम भोग-विलास में व्यस्त रहें। हे **इन्द्र** और **अग्नि** मैं जो धन का अभिलाषी हूं तुम दोनों को

दृष्टिकोण की शक्ति का कमाल निर्भर है। यदि ख़ुदा तआला परिश्रम करने से पूर्ण रूप से स्वतंत्र रखना चाहता तो फिर यह भी उचित न था कि अपनी अन्तिम किताब

शेष हाशिया नं. (11)

न रहें तथा उस वरदानी विशेषता का ख़ुदा तआला की हस्ती में पाया जाना प्रकृति के नियम को देखने से नितान्त स्पष्ट रूप से सिद्ध हो रहा है क्योंकि किसी बुद्धिमान को इसमें कोई आपत्ति नहीं चन्द्रमा, सूर्य, पृथ्वी और तत्व इत्यादि संसार में जो भी आवश्यकताएं पाई जाती हैं जिन पर समस्त प्राणियों का जीवन निर्भर है इसी वरदान के प्रभाव से प्रकट हैं और प्रत्येक प्राणी मनुष्य और जानवर, मौमिन तथा काफ़िर, सदाचारी-दुराचारी बिना भेदभाव अपनी आवश्यकतानुसार इन्हीं उपर्युक्त वरदानों से लाभान्वित हो रहा है तथा कोई प्राणी इस से वंचित नहीं। इस वरदान का नाम क़ुर्आन करीम में **रहमानियत** (कृपालता) है और इसी के अनुसार सूरह फ़ातिहा में ख़ुदा का

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

अपने हृदय में परिजन और निकट संबंधी समझता हूं, विवेक जो तुमने मुझे प्रदान किया है किसी अन्य ने कभी नहीं दिया और इस प्रकार लाभान्वित होकर मैंने यह मंत्र जिसमें मैंने अपने अन्न की इच्छा प्रकट की है तुम्हारी प्रशंसा में बनाया है। हे इन्द्र और अग्नि ने'मतों के प्रदान करने वालो चाहे पाताल लोक, मृत्यु लोक अथवा स्वर्ग लोक जहां कहीं तुम हो वहां से यहां आओ और अर्घ्य पियो। हे **इन्द्र** और **अग्नि** ने'मतों के प्रदान करने वालो चाहे स्वर्ग-लोक, पाताल-लोक अथवा मृत्यु-लोक जहां कहीं तुम हो वहां से तुम यहां आओ और कुचला हुआ अर्घ्य पियो। हे **इन्द्र** और **अग्नि** वज्र घुमाने वालो, नगरों को नष्ट करने वालो हमें धन प्रदान करो, युद्धों में हमारी सहायता करो। ऐसा हो कि **मैत्रा देवता**, **वरुण देवता**, **आदित्य देवी**, **समुद्र देवता**, **धरती देवी**, **आकाश देवता** ये समस्त मिल कर हमारी इस प्रार्थना पर ध्यान दें। हे मनुष्यों पर महरबानी करने वाले इन्द्र तू भी सृष्टि (मख़लूक़) ही है परन्तु जन्म के समय से आज तक कोई तेरा सदृश नहीं हुआ, तू तीनों लोक और तीनों अग्निमंडल तथा समस्त इस संसार का जो

को समस्त लोगों के लिए (जो भिन्न-भिन्न भाषाएं रखते हैं) एक ही भाषा में जिस से ®वे अपरिचित हैं भेजता क्योंकि अन्य भाषा का ज्ञात करना भी बिना परिश्रम के ®427

शेष हाशिया नं. (11)

नाम रब्बुल आलमीन की विशेषता के पश्चात् **रहमान** आया है जैसा कि फ़रमाया है - अल्हम्दोलिल्लाहे रब्बिल आलमीन अर्रहमान। इसी विशेषता की ओर क़ुर्आन करीम के कई अन्य स्थानों में संकेत किया गया है तथा उन समस्त में से एक यह है -

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۚ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ
نُفُورًا- تَبٰرَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَّجَعَلَ فِيهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا
مُّنِيرًا- وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ أَرَادَ أَنْ يَّذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

सृष्टियों से भरा हुआ है सहारा देने वाला है। हे **इन्द्र** जो समस्त देवताओं में प्रथम श्रेणी का देवता है हम तुझे बुलाते हैं, तूने युद्धों में विजयें प्राप्त की हैं। ऐसा हो कि इन्द्र जो कार्य बनाने वाला तथा समस्त निषेधक वस्तुओं का समूल उखाड़ने वाला है हमारे पदों को युद्धों में सबसे अग्रसर रख, तू **इन्द्र** विजय प्राप्त करता है परन्तु लूट को नहीं रोकता, छोटी-छोटी लड़ाइयों में तथा घमासान युद्धों में हम तुझे हे निर्दय मेघवाहन अपनी रक्षा के लिए उत्तेजित करते हैं। ऐसा हो कि ®**इन्द्र** हमारा सहयोगी हो और ऐसा हो कि हम ®414
सदमार्ग से प्रचुर मात्रा में अन्न प्राप्त करें और ऐसा हो कि **मैत्रा देवता**, **वरुण देवता**, **आदित्य देवी**, **समुद्र देवता**, **धरती देवी**, **आकाश देवता** हमारे लिए अन्न की सुरक्षा करें। हम सोम का अर्घ्य उसको जो बहुत से युद्धों का विजय प्राप्त करने वाला, समस्त देवताओं से उत्तम देवता, ने'मतों को प्रदान करने वाला, सच्ची शक्ति वाला शूरवीर **इन्द्र** है, जो धन का मान रखता है तथा उस व्यक्ति से धन छीन लेता है जो यज्ञ नहीं करता जैसे बटमार यात्री से छीन लेता है तथा उसे यज्ञ करने वाले को देता है छुड़ाते

यद्यपि थोड़ा ही हो संभव नहीं।

Ⓟ428 Ⓟ**पांचवीं भूमिका** :- जिस चमत्कार को बुद्धि पहचान कर उसके ख़ुदा की

शेष हाशिया नं. (11)

شُكُوْرًا-وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا-①

अर्थात् जब काफ़िरों और अधर्मियों तथा नास्तिकों को कहा जाता है कि तुम रहमान को सज्दह करो, तो वे रहमान के नाम से घृणा करते हुए बतौर इन्कार प्रश्न करते हैं कि रहमान क्या वस्तु है (फिर बतौर उत्तर फ़रमाया) रहमान वह हस्ती है जो बहुत बरकतों वाली तथा अनादि दान-पुण्य का उदगम है जिस ने आकाश में बुर्ज (राशियां) बनाए (आकाश में नक्षत्रों के ठहरने के स्थान बनाए) बुर्जों में सूर्य और चन्द्रमा को रखा जो सामान्य

Ⓟ375 सृष्टि को काफ़िर और मोमिन में भेदभाव किए बिना Ⓟप्रकाश पहुंचाते हैं।

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

हैं। हे **इन्द्र** तेरी सब प्रशंसा करते हैं ऐसी कृपा कर कि अन्य लोगों से हमें हानि न पहुंचे, तू महा शक्तिशाली है, अत्याचार और अन्याय से हमें सुरक्षित रख। हे मनुष्यो तुम्हारे प्रतिदिन के जीवन का कारण वह इन्द्र है जो प्रात:काल की किरणों के साथ निर्बुद्ध को बुद्धि देता है तथा निराकार को आकार प्रदान करता है। तूने हे **इन्द्र मरूत देवता** के साथ अर्थात् वायु जो प्रत्येक वस्तु को उड़ा ले जाती है और दुर्गम स्थानों में पहुंच सकती है गऊओं का खोज लगाया जो गुफा में चोरों ने छुपा रखी हैं और ऐसा हो कि हे **मरुत** देवता तुम निर्भीक इन्द्र के साथ दोनों खुशी मनाते हुए और समान वैभव और प्रतिष्ठा के साथ प्रकट हो। हे **अजीत इन्द्र** ऐसी लड़ाइयों में हमारी रक्षा कर जहां बहुत लूट हमारे हाथ आए। हम इन्द्र को जो हमारे शत्रुओं के मुक़ाबले में वज्र को घुमाता है और जो हमारा सहायक है बहुत समृद्धि और अकूत धन-प्राप्ति हेतु बुलाते हैं। हे वर्षा के बरसाने वाले, समस्त इच्छाओं के पूर्ण करने वाले इस बादल को खोल दे, तू हमेशा हमारी

① अलफ़ुरक़ान : 61 से 64

ओर से होने पर साक्ष्य दे वह उन चमत्कारों से सहस्त्रों गुना श्रेष्ठतम होता है, जो केवल बतौर कथा या कहानी ®उद्धृत बातों में वर्णन किए जाते हैं। इस प्रमुखता ®429

शेष हाशिया नं. (11)

उसी रहमान ने तुम्हारे लिए अर्थात् समस्त मनुष्यों के लिए दिन-रात बनाए जो एक दूसरे के बाद परिक्रमा करते रहते हैं ताकि जो व्यक्ति ख़ुदा को पहचानने के ज्ञान का अभिलाषी हो वह इन नीतियों की बारीकियों से लाभ अर्जित करे और मूर्खता तथा असावधानी के पर्दे से मुक्ति पाए और जो व्यक्ति ने'मत का धन्यवाद करने पर तत्पर हो वह धन्यवाद करे। रहमान के वास्तविक उपासक वे लोग हैं जो पृथ्वी पर आराम से चलते हैं और जब असभ्य लोग उनसे कठोरता के साथ वार्तालाप करें तो सुरक्षा और कृपा के शब्दों से उनका बदला देते हैं अर्थात कठोरता के स्थान पर नम्रता तथा गाली के स्थान पर दुआ देते हैं और रहमान के सदाचारों के सदृश स्वयं को ढालते हैं, क्योंकि रहमान भी अच्छे और बुरे में बिना भेदभाव अपने समस्त बन्दों को सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी तथा अपनी असंख्य ने'मतों से लाभ पहुंचाता

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

याचनाएं स्वीकार करता है, वर्षा के बरसाने वाले शक्तिशाली स्वामी **इन्द्र** हमेशा याचनाएं स्वीकार करने वाला, मनुष्यों को ®अपनी शक्ति देता है जैसी ®415 सांड गऊओं के रेवड़ की रक्षा करता है। हम हे **इन्द्र** जो कि प्रत्येक स्थान पर मनुष्यों में मौजूद है तुझे बुलाते हैं। ऐसा हो कि तू केवल हमारा ही हो जाए। हे **इन्द्र** तेरी सहायता का हमारे पास एक व्यक्तिगत अस्त्र है जिसके द्वारा हम अपने विरोधियों पर विजयी हो सकते हैं। **इन्द्र** देवता बड़ा शक्तिमान और उच्च पद वाला है। ऐसा हो कि प्रताप और प्रतिष्ठा हमेशा बिजली उठाने वाले के अधिकार में रहे, उसकी विशाल सेनाएं आकाश के समान सदैव महान हों, वास्तव में **इन्द्र** के गाने योग्य अथवा पढ़ने योग्य प्रशंसा बारम्बार करना चाहिए ताकि वह सोम का रस पिए। हे **इन्द्र देवता** यहां आओ तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के अर्घ्यों तथा व्यंजनों से तृप्त होकर और शक्ति प्राप्त करके अपने शत्रुओं पर विजयी हो। हे **इन्द्र** ने'मतों के प्रदान

के दो कारण हैं। एक तो उद्धृत चमत्कार जो इस युग से सैकड़ों वर्ष पूर्व जब
Ⓟ430 चमत्कार Ⓟदिखाए गए थे, हमारे लिए मौजूद और महसूस का आदेश नहीं रखते तथा

शेष हाशिया नं. (11)

है। अत: इन आयतों में ख़ुदा तआला ने पूर्ण रूप से स्पष्ट कर दिया कि रहमान का शब्द ख़ुदा पर इन अर्थों में बोला जाता है कि उसकी विशाल रहमत (कृपा) जो प्रत्येक अच्छे बुरे को सामन्य रूप से लाभ पहुंचा रही है जैसा कि एक अन्य स्थान पर भी इसी सामान्य रहमत (दया) की ओर संकेत किया है -

عَذَابِیٓ اُصِیۡبُ بِہٖ مَنۡ اَشَآءُ ۚ وَرَحۡمَتِیۡ وَسِعَتۡ کُلَّ شَیۡءٍ ①

अर्थात् मैं अपना प्रकोप जिसके योग्य देखता हूं पहुंचाता हूं और मेरी रहमत ने प्रत्येक वस्तु को अपनी परिधि में ले रखा है। फिर एक और स्थान पर फ़रमाया -

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

करने वाले तथा अपने पुजारियों की रक्षा करने वाले मैंने तेरी प्रशंसा की है जो तुझ तक पहुंच गई है और जिसे तूने स्वीकार किया है। हे धनाढ्य **इन्द्र** इस परम्परा में हमें धन प्राप्ति के लिए निर्भीक कर क्योंकि हम पराक्रमी और प्रसिद्ध हैं। हे **इन्द्र** हमें अनुमानरहित और असंख्य तथा विनाशरहित सम्पत्ति प्रदान कर जो पशु, आहार और जीवन का झरना है। हे **इन्द्र** हमें यशस्वी कर और ऐसी सम्पत्ति दे जो सहस्त्रों उपायों से प्राप्त हो और वे खाने की वस्तुएं जो खेतों से छकड़ों में आती हैं प्रदान कर। हम **इन्द्र** को अपने धन की सुरक्षा हेतु प्रशंसा कर करके बुलाते हैं, ऐसा इन्द्र जो सम्पत्ति का स्वामी है और जिसकी लोग प्रशंसा करते हैं और जो यज्ञ के स्थान पर आना-जाना रखता है। हे सत्य कर्त्तव्य **इन्द्र** सामवेद के अध्ययनकर्ता तेरी स्तुति करते हैं, ऋग्वेद के पढ़ने वाले तेरी प्रशंसा करते हैं जो कि प्रशंसनीय है और ब्राह्मण तुझे बांस के समान ऊंचा करते हैं, इन्द्र ने 'मतें प्रदान करने
Ⓟ416 वाला अपने पुजारी के उद्देश्य से परिचित है, जिसने Ⓟपर्वत की चोटियों पर

① अलआराफ़ : 157

उद्धृत समाचार होने के कारण उन्हें वह श्रेणी प्राप्त भी नहीं हो सकती जो अवलोकनों और दृष्टिगोचर वस्तुओं को प्राप्त होती है। ®द्वितीय यह कि जिन लोगों ®431

शेष हाशिया नं. 11

قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ①

अर्थात् उन काफ़िरों और अवज्ञाकारियों को कह कि यदि ख़ुदा में रहमानियत की विशेषता न होती तो संभव न था कि तुम उसके प्रकोप से सुरक्षित रह सकते अर्थात् उसी की रहमानियत का प्रभाव है कि वह काफ़िरों और बेईमानों को छूट देता है और शीघ्र नहीं पकड़ता। फिर एक अन्य स्थान पर इसी रहमानियत की ओर संकेत किया है -

®376 اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ ® صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ ②

(भाग - 29)

अर्थात् क्या उन लोगों ने अपने सरों पर पक्षियों को उड़ते हुए नहीं

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

सोम का पौधा लगाकर बहुत उपासना की है इसलिए **इन्द्र मरुत** की सेना के साथ आता है। हे सोमरस पीने वाले **इन्द्र** अपने बड़े बालों वाले स्वस्थ और सुन्दर घोड़ों को जोत कर हमारी प्रशंसाएं सुनने के लिए यहां आ। हे **बासु देवता** हमारी इस पूजा में आकर सम्मिलित हो, हमारे मंत्र, प्रशंसा और प्रार्थनाओं को स्वीकार कर, हमारे यज्ञ पर महरबान हो और बहुत अन्न दे। मंत्र जो कि उन्नति का कारण है **इन्द्र** की महिमा में बारम्बार पढ़ना चाहिए जो कि बहुत से शत्रुओं को अस्त-व्यस्त करने वाला है ताकि यह शक्तिशाली देवता हम और हमारी सन्तान और हमारे मित्रों से हमदर्दी से बोले, हम इन्द्र की ओर उसकी सहानुभूति, सम्पत्ति और पूर्ण शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रवृत्त होते हैं क्योंकि वह शक्तिशाली इन्द्र सम्पत्ति देकर हमारी रक्षा करने योग्य है। हे **इन्द्र** जबकि तू अपने शत्रुओं का संहार करता है उस समय आकाश और पृथ्वी तुझे सहारा नहीं दे सकते, वर्षा बरसाना तेरे अधिकार में है, हमें बड़ी दानशीलता से गायें प्रदान कर। हे प्रशंसनीय

① अलअंबिया : 43 ② अल्मुल्क : 20

ने उद्धृत चमत्कारों को जो बुद्धि के हस्तक्षेप से श्रेष्ठतर हैं देखा है उनके लिए भी
Ⓟ432 वह पूर्ण सन्तुष्टि का कारण नहीं हो सकते, क्योंकि बहुत से ऐसे चमत्कार Ⓟभी हैं

शेष हाशिया नं. (11)

देखा कि कभी वे बाज़ू खोल देते हैं और कभी समेट लेते हैं। रहमान ही है जो उन्हें गिरने से रोके रखता है अर्थात् रहमानियत का वरदान समस्त प्राणियों को इस प्रकार से अपनी परिधि में लिए हुए है कि पक्षी भी जो एक पैसे के दो-तीन मिल सकते हैं वे भी उस वरदान की विशाल सरिता में प्रसन्नता में मग्न तैर रहे हैं। चूंकि रबूबियत (प्रतिपालन) के पश्चात् इसी वरदान का स्थान है। इस दृष्टि से अल्लाह तआला ने सूरह फ़ातिहा में 'रब्बुलआलमीन' की विशेषता का वर्णन करके फिर उसके 'रहमान' होने की विशेषता का उल्लेख किया ताकि उनका स्वाभाविक अनुक्रम सुरक्षित रहे। वरदान का तीसरा प्रकार **फ़ैज़ाने ख़ास** (विशेष वरदान) है इस में और

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

इन्द्र ऐसा हो कि हम सदैव तेरी प्रशंसा करते रहें, ऐसा हो कि उस प्रशंसा से हे दीर्घ आयु वाले तेरी शक्ति अधिक हो तथा ऐसा हो कि यह हमारी प्रशंसा तुझे रुचिकर लगे ताकि हमें प्रसन्नता प्राप्त हो। हम अग्नि को जो देवताओं का संदेशवाहक और उनको बुलाने वाला और बहुत धनवान और इस यज्ञ का सम्पूर्ण करने वाला है चयन करते हैं। हे प्रज्वलित **अग्नि** हमने तुझे कभी का हवन करके बुलाया है हमारे शत्रुओं को जला दे जिनकी रक्षक अपवित्र आत्माएं हैं। इस अग्नि के यज्ञ में प्रशंसा करो कि जो बड़ा बुद्धिमान, सच्चा और प्रकाशमान है तथा रोग का निवारण करने वाला है। हे प्रज्वलित
Ⓟ417 अग्नि देवताओं के पैग़म्बर उस भेंटें प्रस्तुत करने वाले की Ⓟरक्षा कर जो कि तेरी पूजा करता है। हे शुद्ध करने वाले उस व्यक्ति पर मेहरबान हो जो देवताओं को प्रसन्न करने के लिए अग्नि की सेवा में उपस्थित होता है। हे प्रकाशमान और शुद्ध करने वाले **अग्नि** हमारे यज्ञ और हमारे भोग में **देवताओं** को बुला, हमने तेरी प्रशंसा वह मंत्र पढ़कर की है जो सबसे अन्त में लिखा गया है, हमें अन्न प्रदान कर और सम्पत्ति जो सन्तान का झरना है

कि बाज़ीगर उन्हें दिखाते फिरते हैं, यद्यपि वे धोखा और कपट ही हैं, परन्तु अब विरोधी शुभचिन्तक पर क्योंकर सिद्ध करके दिखाएं कि नबियों से जो इस प्रकार के

शेष हाशिया नं. (11)

सामान्य वरदान में यह अन्तर है कि लाभान्वित पर अनिवार्य नहीं कि वरदान प्राप्ति हेतु अपनी स्थिति को नेक बनाए तथा अपनी आत्मा को तामसिक वृतियों से बाहर निकाले या किसी प्रकार का पराक्रम और प्रयास करे अपितु उस वरदान में जैसा कि अभी हम वर्णन कर चुके हैं ख़ुदा तआला स्वयं ही प्रत्येक प्राणी को उसकी आवश्यकताओं को जिनका वह स्वभाव के अनुसार मुहताज है प्रदान करता है और बिना मांगे तथा बिना किसी प्रयास के उपलब्ध कर देता है, परन्तु विशेष वरदान में परिश्रम और प्रयास, हृदय की पवित्रता, दुआ, विनीतता, ख़ुदा से ध्यान तथा अन्य हर प्रकार का पराक्रम यथास्थान शर्त है और उस वरदान को वही प्राप्त करता है जो ढूंढता है तथा उसी पर आता है जो उसके लिए परिश्रम करता है। इस वरदान का

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

प्रदान कर। हे **अग्नि देवता** हमारा भोग **देवताओं** को चढ़ा और ऐसा हो कि भेंटें देने वाले को अर्थात् अग्नि को उसके बदले में ज्ञान प्राप्त हुआ। हे **अग्नि** समस्त देवताओं के साथ सोमरस पीने के लिए हमारी पूजा में आ और भेंट प्रस्ततु कर। हे विवेकशील अग्नि कानवा अर्थात ऋषि लोग तुझे बुलाते हैं और तेरे गुण गाते हैं। हे अग्नि शुभ कर्मों को उन्नति देने वालों को अर्थात् देवताओं को जिनकी हम उपासना करते हैं इस भेंट में उनकी पत्नियों सहित सम्मिलित कर। हे प्रकाशमान जिह्वा वाले उन्हें सोमरस पीने को दे। उन देवताओं को जिनकी हम उपासना और प्रशंसा करते हैं सोम का रस अर्घ्य लेपन के समय पिला। हे अग्नि देवता अपनी चतुर और स्वस्थ घोड़ियां जिन्हें रोहित नाम से पुकारते हैं अपने रथ में जोत और उसके माध्यम से देवताओं को यहां ला। हे **अग्नि** इनाम देने वाले ऋतु देवता के साथ यज्ञ में भाग लेने वाले घर की आग होकर पुजारी देवताओं की उपासना कर। तुझे हे अग्नि तुझे सोमरस पीने के लिए शौक़ से बुलाया है **मरुत** को

℗433 चमत्कार ℗प्रकट हैं कि किसी ने सांप बनाकर दिखा दिया तथा किसी ने मुर्दे को जीवित करके दिखा दिया। ये इस प्रकार की चालाकियों से पवित्र हैं जो बाज़ीगर

शेष हाशिया नं. (11)

अस्तित्व भी प्रकृति के नियम के अवलोकन से प्रमाणित है क्योंकि यह बात नितान्त स्पष्ट है कि ख़ुदा के मार्ग में परिश्रम करने वाले और असावधानी करने वाले दोनों समान नहीं हो सकते। निसन्देह जो लोग हार्दिक सच्चाई से
℗377 ख़ुदा के मार्ग में प्रयास करते ℗तथा प्रत्येक अंधकार और उपद्रव से पृथक हो जाते हैं उनके लिए एक विशेष रहमत साथ हो जाती है। इस वरदान की दृष्टि से ख़ुदा तआला का नाम क़ुर्आन करीम में 'रहीम' है और रहीमियत (कृपालता) की विशेषता का यह पद विशेष होने तथा शर्तों द्वारा निर्धारित होने के कारण रहमानियत की विशेषता के बाद है क्योंकि ख़ुदा तआला की ओर से पहले रहमानियत की विशेषता प्रकटन में आई है तत्पश्चात् रहीमियत की विशेषता का प्रकटन हुआ अत: इसी स्वाभाविक अनुक्रम की दृष्टि से सूरह फ़ातिहा में रहीमियत की विशेषता का रहमानियत की

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

साथ लेकर आ, न किसी देवता को न किसी मनुष्य को इस यज्ञ में कुछ अधिकार प्राप्त है जो तेरे लिए हे शक्तिमान प्राप्त हुआ है। हे **अग्नि** मरुत को साथ लेकर आ। हे **अग्नि** देवताओं की सुन्दर रानियों को और नवाश्त्री
℗418 को सोमरस पीने ℗हेतु यहां ला, हे अग्नि हमारे इस भोग की और इन नवीन मंत्रों के देवताओं को सूचना दे, हे **अग्नि** तू सर्वप्रथम एन्गिरा ऋषि था, तू देवता अन्य देवताओं का सहायक मित्र था, तेरे ही युग में बुद्धिमान, विवेकशील और प्रकाशमान अस्त्र वाली मरूत उत्पन्न हुई थी। हे **अग्नि** तू जो सर्वप्रथम और समस्त एन्गिराओं का सरदार है देवताओं की पूजा को तेरे ही उपलक्ष्य बरकत प्राप्त होती है तू बद्धिमान है, अनेकों रूपों वाला है। समस्त संसार के हित के लिए ही विवेकशील है विद्याओं की सन्तान है और मनुष्य के लाभार्थ नेक रूप धारण कर रखे हैं। हे वायु पर श्रेष्ठता रखने वाले **अग्नि** अपने पुजारी को दर्शन दे ताकि उसे ज्ञात हो कि मेरी पूजा स्वीकार हुई, तेरे

लोग किया करते हैं। ये कठिनाइयां ®कुछ हमारे ही युग में उत्पन्न नहीं हुईं अपितु ®434 संभव है कि उन्हीं युगों में ये कठिनाइयां उत्पन्न हो गई हों। उदाहरणतया जब हम

शेष हाशिया नं. (11)

विशेषता के पश्चात् वर्णन किया और कहा अर्रहमान अर्रहीम और क़ुर्आन करीम में रहीमियत की विशेषता के वर्णन में कई स्थानों पर चर्चा विद्यमान है। जैसा एक स्थान पर फ़रमाया है ① وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا अर्थात् ख़ुदा की रहीमियत केवल ईमानदारों से विशेष्य है जिस से काफ़िर को अर्थात् बेईमान और उपद्रवी का कोई भाग प्राप्त नहीं हो सकता।

यहां देखना चाहिए कि ख़ुदा ने रहीमियत की विशेषता को मौमिन के साथ कैसा विशेष्य कर दिया परन्तु रहमानियत को कहीं भी मौमिनों के साथ विशेष्य नहीं किया और किसी स्थान पर यह नहीं फ़रमाया कि كَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحْمَانًا अपितु मौमिनों से जो प्रजा की रहमत (कृपा) संबंधित है प्रत्येक स्थान पर उसकी चर्चा रहीमियत की विशेषता से की है। फिर दूसरे स्थान पर फ़रमाया है ② اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ अर्थात्

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

बल से आकाश और धरती कंपायमान हैं, तूने उस भार को उठाया है जिसके लिए पुरोहित नियुक्त किया गया था, तू ने महान देवताओं की उपासना की है, तू हे **अग्नि** इच्छाओं को पूर्ण करने वाली है, अपने पुजारियों की दौलत को बढ़ाने वाली है। हे अग्नि दौलत के लिए हम तेरी पूजा करते हैं, इस हवन के करने वाले का नाम कर दे। ऐसा हो कि तेरी कृपा से जो हमारी सन्तान हो तो फिर हम यह परम्परा पूर्ण करें, धरती, आकाश तथा समस्त देवताओं सहित हमें बचा। हे अग्नि हमारी इस ग़लती को और उस मार्ग को जिसमें हम पथ-भ्रष्ट हो गए क्षमा कर, तेरी प्रशंसा करना चाहिए क्योंकि तू उन लोगों की जो तुझे तेरे योग्य अर्घ्य देते हैं रक्षा करने वाली है। हे पवित्र **अग्नि** जो भोग लेने हर ओर जाती है यज्ञ के कमरे में जो तेरे सामने है जो जैसे पूर्वकालीन युग में मनुष्य ऐंग्रार और त्याती अर्थात् पूर्वकालीन राजा

① अलअहज़ाब : 44 ② अलआराफ़ : 57

Ⓟ435 यूहन्ना की इंजील के पांचवें बाब की दूसरी आयत से Ⓟपांचवीं आयत तक देखते हैं तो उसमें यह लिखा हुआ पाते हैं और शलीम में बाबुज़्ज़ान के समीप एक हौज़ है

शेष हाशिया नं. 11

अल्लाह तआला की रहीमियत उन्हीं लोगों से निकट है जो सदाचारी हैं। फिर एक और स्थान पर फ़रमाया –

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ - ①

अर्थात जो लोग ईमान लाए और ख़ुदा के लिए जन्म भूमि या काम वासनाओं का परित्याग किया तथा ख़ुदा के मार्ग में प्रयासरत रहे वे ख़ुदा की रहीमियत (कृपालता) के प्रत्याशी हैं और ख़ुदा क्षमा करने वाला और कृपा करने वाला है। अर्थात् उसका रहीमियत का वरदान उन लोगों के साथ

Ⓟ378 अवश्य हो जाता है Ⓟजो उसके पात्र हैं, कोई ऐसा नहीं जिसने उसे मांगा और न पाया

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

लोग जाते थे, और देवताओं को यहां ला और उन्हें पवित्र कुशा पर बैठा

Ⓟ419 और उनमें ऐसा बलिदान प्रस्तुत कर जिस से वे कृतज्ञ हों। Ⓟहे **अग्नि** तू हमारे इस मंत्र से जो हम अपनी योग्यता और सूचनानुसार पढ़ते हैं उन्नति पा और हमें धनवान कर और हमें अच्छी समझ दे और बहुत अन्न दे, हम मंत्र पढ़कर शक्तिशाली अग्नि को जिसकी अन्य ऋषि भी प्रशंसा करते हैं, अधिकांश लोगों के लाभ के लिए जो देवताओं के पुजारी हैं मनाते हैं, लोग उस अग्नि की ओर लौटते हैं जो बल को बढ़ाने वाली है। हम हे **अग्नि** भेंटें चढ़ाकर तेरी उपासना करते हैं। हे बहुत अन्न देने वाले हम पर आज मेहरबान हो। हे अग्नि तू प्रसन्नता को देने वाली, देवताओं को बुलाने वाली तथा उनके संदेशवाहक और मनुष्य की रक्षक है, वह शुभ और स्थायी कार्य जो देवता करते हैं सब तुझ में एकत्र हैं। हे युवा और सौभाग्यशाली **अग्नि** हम जो कुछ

---

① अलबक़रह : 219

जो इबरानी भाषा में बैत हुदा कहलाता है उस के पांच उसारे हैं, उनमें ®कमज़ोरों, ®436
अन्धों, लंगड़ों और उदास लोगों की एक बड़ी भीड़ पड़ी थी जो पानी के हिलने की

शेष हाशिया नं. 11

عاشق کہ شد کہ یار بحالش نظر نہ کرد   اے خواجہ درد نیست وگرنہ طبیب ہست

अनुवाद :- जो कोई प्रेमी बन गया उसने अपने प्रियतम पर दृष्टि नहीं डाली। हे मेरे स्वामी मुझे कोई कष्ट नहीं अन्यथा उपचारक मौजूद है।*

वरदान का चौथा प्रकार '**फ़ैज़ाने अख़स**' (अति विशेष वरदान) है। यह वह वरदान है जो केवल परिश्रम और प्रयास पर सम्पादित नहीं हो सकता अपितु उसके प्रकटन और प्रगटन के लिए प्रथम शर्त यह है कि यह संसार जो एक संकीर्ण और अंधकारमय स्थान है पूर्णतया दुर्लभ और समाप्त हो जाए तथा ख़ुदा तआला की पूर्ण शक्ति के अभाव में प्राकृतिक संसाधनों के सहयोग से स्पष्ट तौर पर अपनी पूर्ण झलक दिखाए, क्योंकि इस अन्तिम वरदान में जो सम्पूर्ण वरदानों का अन्त है बुद्धि के निकट पूर्व वरदानों के सन्दर्भ में जो कुछ अधिकता और पूर्णता की कल्पना हो सकती है वह यही है कि यह वरदान नितान्त प्रकट और स्पष्ट हो तथा कोई सन्देह, गोपनीयता और दोष शेष न रहे अर्थात् न लाभान्वित की इच्छानुसार वरदान में कोई सन्देह रह जाए और न वरदान अपितु वास्तविक वरदान तथा निष्कपटता

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

कि तुझे प्रस्तुत करें तू हम पर मेहरबान हो कर या तो अब अथवा किसी अन्य समय शक्तिशाली देवताओं के पास ले जा। हे **अग्नि** इस प्रकार तेरा पुजारी तेरी पूजा करता है और तू अपने प्रकाश से स्वयं प्रकाशमान है, मनुष्य कारोबार करने वाले सात पुरोहितों के सहयोग से हवन करा कर उस अग्नि को जो उनके शत्रुओं पर विजयी है प्रकाशित करते हैं। हे अग्नि जो विनाश करने वाली है तूने और दूसरे देवताओं ने मिलकर वर्त्रा की हत्या की है, देवताओं ने धरती, स्वर्ग और आकाश को सृष्टियों के लिए रहने का विशाल स्थान बनाया है। ऐसा हो कि धनवान अग्नि यथासमय कानवा पर इस प्रकार

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

प्रतीक्षक थी, क्योंकि एक फ़रिश्ता कभी-कभी उस हौज़ में उतर कर पानी को
Ⓟ437 हिलाता था और Ⓟपानी हिलने के पश्चात जो कोई उसमें पहले उतरता कैसे ही रोग

शेष हाशिया नं. (11)

और पूर्ण रहमत (कृपा) होने में कुछ आपत्ति हो अपितु जिस अनादि स्वामी की ओर से वरदान प्रदान किया गया है उसकी वदान्यता और प्रतिफल प्रदान करना प्रकाशमान दिवस की भांति स्पष्ट हो जाए तथा वरदान-प्राप्त व्यक्ति को वास्तविक विश्वास के तौर पर यह बात मौजूद और महसूस हो कि वास्तव में वह संसार का स्वामी ही अपनी इच्छा, ध्यान और शक्ति विशेष द्वारा एक महान ने'मत और आनंद प्रदान कर रहा है तथा वास्तव में उसे अपने शुभ कर्मों का एक पूर्ण और अनश्वर प्रतिफल जो नितान्त पवित्र नितान्त श्रेष्ठ, नितान्त रुचिकर तथा नितान्त प्रिय है प्राप्त हो रहा है, किसी प्रकार की परीक्षा और आज़मायश नहीं है तथा ऐसे पूर्णतम, सर्वांगपूर्ण, स्थायी, उच्चतम और उज्ज्वल वरदान से लाभान्वित होना इस बात पर निर्भर है कि बन्दा इस अपूर्ण, अपवित्र, मलिन, संकीर्ण, संकुचित, अस्थायी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

मेहरबान हो जैसा कि लड़ाई में घोड़ा पशु के लिए हिनहिनाता है, उस **अग्नि** की किरणें जिसे कानवा ने सूर्य से अधिक प्रकाशमान कर दिया है सम्मानपूर्वक चमकते हैं, हम उसकी प्रशंसाएं करते हैं, हम उसे ऊंचा करते हैं। हे **अग्नि** आजीविका प्रदान करने वाली हमारे ख़ज़ाने भर दे क्योंकि
Ⓟ420 देवताओं की मित्रता तेरे माध्यम से Ⓟप्राप्त हो सकती है, तू भिन्न-भिन्न प्रकार के अन्नों का स्वामी है हमें प्रसन्न कर क्योंकि तू महान है। हे **अग्नि** हमारी सुरक्षा के लिए सूर्य देवता के समान हो, सीधी खड़ी हो जा, तू अन्न को देने वाली है जिसके कारण हम तुझे भेंटें चढ़ाते हैं। हे जवान और **चमत्कार अग्नि** हमें अपवित्र आत्माओं से और द्वेषी मनुष्य जो दान नहीं करता और दुष्ट जानवरों से तथा उन लोगों से जो हमारे मारने की चिन्ता में हैं बचा। हे **अग्नि** तुझे मनु ने बहुत सी नस्लों पर प्रकाश करने के लिए रोका था, तू जो यज्ञ के लिए उत्पन्न हुई है और भेंटों से तृप्त होती है तू जिसे सब लोग नमस्कार

में क्यों न हो उससे चंगा (स्वस्थ) हो जाता था तथा वहां एक व्यक्ति था जो अड़तीस वर्ष से रोगी था। यीशू ने जब उसे ®पड़े हुए देखा और जाना कि वह बड़े®438

शेष हाशिया नं. (11)

और संदिग्धतापूर्ण संसार से दूसरे संसार (लोक) की ओर स्थानांतरण ®करे क्योंकि यह वरदान है कि सच्चे उपकारी का सौन्दर्य स्पष्ट तौर पर®379 वास्तविक विश्वास की श्रेणी के साथ मौजूद हो और मौजूद, प्रकटन और विश्वास का शेष न रह जाए तथा प्राकृतिक संसाधनों का कोई आवरण मध्य में न हो तथा पूर्ण मारिफ़त का प्रत्येक रहस्य, अप्रगट से प्रगट रूप में आ जाए तथा वरदान भी ऐसा प्रकट और जिसकी वास्तविकता ज्ञात हो कि जिसके सन्दर्भ में ख़ुदा ने स्वयं यह प्रकट किया हो कि वह प्रत्येक परीक्षा और आज़मायश की मलिनता से पवित्र है तथा उस वरदान में वह उच्चतम और सर्वांगपूर्ण आनन्द हों जिन का पवित्र और पूर्ण विवरण मनुष्य के हृदय, आत्मा, बाह्य और आन्तरिक, शरीर और प्राण तथा प्रत्येक आध्यात्मिक और शारीरिक शक्ति पर ऐसा पूर्ण और आधिपत्य हो कि जिस पर बुद्धि,

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

करते हैं प्रकाशित हो गई है, **अग्नि** की लपटें प्रकाशमान, शक्तिशाली और भयानक हैं उन का भरोसा नहीं करना चाहिए, वे शक्तिशाली, अपवित्र आत्माओं को तथा हमारे अन्य विरोधियों को हमेशा अवश्य और बिल्कुल जला देती हैं। हे **अग्नि** जो धनवान है और जो समस्त सृष्टियों को न्याय दिलाने वाली है, प्रात: से भेंटें देने वाले के पास कई प्रकार की दौलत उत्तम घर सहित ला। आज यहां देवताओं को उठते ही ला, आज हम **अग्नि** के जो संदेशवाहक मकानों के देने वाली, सर्वप्रिय धुएं के झण्डे वाली, प्रकाश देने वाली और प्रात:काल जो पुजारी पूजा करता उसकी सुरक्षा करने वाली है निर्वाचित करते हैं, मैं **अग्नि** के जो समस्त देवताओं से श्रेष्ठ और कम आयु का देवता है मनुष्य का मेहमान है जिसे सब बुलाते हैं और जो चढ़ावा चढ़ाने वाले का मित्र है सब सृष्टियों को जानता है, प्रात:काल महिमा करता

① बनी इस्राईल : 57

समय से इस दशा में है तो उससे कहा कि क्या तू चाहता है कि चंगा (स्वस्थ) हो
Ⓟ439 जाए। रोगी ने उसे उत्तर दिया कि हे ख़ुदावन्द मेरे पास आदमी नहीं Ⓟकि जब पानी

शेष हाशिया नं. (11)

विचार और भ्रम की दृष्टि से अधिकता की कल्पना न हो सके और यह संसार जिसकी वास्तविकता अपूर्ण, रूप मलिन, अस्तित्व हिंसक, स्थिति संदिग्ध, साहस संकुचित (कमी) है इन महान झलकियों, स्वच्छ प्रकाशों और स्थायी अनुदानों को सहन नहीं कर सकता तथा इन सर्वांगपूर्ण स्थायी रश्मियों का इसमें समावेश नहीं हो सकता अपितु उसके प्रकटन के लिए एक अन्य संसार की आवश्यकता है जो भौतिक संसाधनों के अन्धकार से पूर्णतया पवित्र, पुनीत तथा अपने अस्तित्व में अकेला महाप्रकोपी (ख़ुदा) के पूर्ण और विशुद्ध प्रभुत्व का द्योतक है। हां इस विशिष्ट वरदान से उन सदात्मा लोगों को इसी जीवन में कुछ आनंद मिलता है, जो सदमार्ग का पूर्ण रूप से अनुसरण करते हैं तथा अपनी हार्दिक इच्छाओं और कामभावनाओं से पृथक होकर पूर्ण रूप से ख़ुदा की ओर झुक जाते हैं क्योंकि वे मरने से

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

हूं ताकि वह अन्य देवताओं को लेने जाए। हे यज्ञ करने वाली और सर्वज्ञ अग्नि समस्त लोग तुझे प्रकाशित करते हैं, अधिकांश लोग बुलाते हैं,
Ⓟ421 बुद्धिमान देवताओं को शीघ्र यहां ला। Ⓟतू हे **अग्नि** मनुष्य के यज्ञों की रक्षा करने वाली है और देवताओं की संदेशवाहक है, आज यहां देवताओं को जो प्रातः उठते हैं और सूर्य का ध्यान करते हैं ला। हे **अश्विन देवताओ** तुम प्रातः के यज्ञ हेतु जागो। ऐसा हो वे दोनों देवता सोमरस पीने के लिए यहां आएं, हम दोनों अश्विनों को जो दोनों देवता हैं और अत्यन्त अच्छे रथवान हैं और एक उत्तम गाड़ी में सवार होते हैं तथा स्वर्ग तक पहुंचते हैं बुलाते हैं। हे अश्विन देवताओ अपने चाबुक से जो तुम्हारे घोड़ों की झागों से भीगी है और उसकी मार से बड़ी आवाज़ आती है, सोम के अर्घ्य को हिला दो। हे **अश्विन देवताओ** अर्घ्य लेपन करने वाले निवास स्थान पर जहां तुम अपने रथ में सवार होकर जाते हो तुम से दूर नहीं है, मैं स्वर्ण के हाथ वाले

हिले तो मुझे उसमें डाल दे और जब तक मैं स्वयं से आऊं दूसरा मुझ से पूर्व उतर पड़ता है। अब स्पष्ट है कि वह व्यक्ति जो हज़रत ईसा की नुबुव्वत का इन्कारी है

शेष हाशिया नं. (11)

पहले मरते हैं और यद्यपि प्रत्यक्ष तौर पर इस संसार में हैं परन्तु वास्तव में वे दूसरे संसार में निवास करते हैं। चूंकि वे अपने हृदय को इस संसार के संसाधनों से पृथक कर लेते हैं तथा मानव ®प्रकृति से नाता तोड़कर और ®380
तुरन्त अल्लाह के अलावा वस्तुओं से विमुख होकर वह मार्ग जो स्वभाव से हटकर चमत्कारिक है धारण कर लेते हैं इसलिए ख़ुदा तआला भी उनके साथ वैसा ही व्यवहार करता है और चमत्कारिक तौर पर उन पर अपने वे विशेष प्रकाश प्रकट करता है जो दूसरों पर मृत्यु के अतिरिक्त प्रकट नहीं हो सकते। अत: उपर्युक्त बातों के कारण वह इस संसार में भी विशिष्ट वरदान के प्रकाश से कुछ भाग प्राप्त कर लेते हैं। यह वरदान प्रत्येक वरदान से विशेषतम तथा समस्त वरदानों का अन्त है। इसे प्राप्त करने वाला महान सौभाग्य को पहुंच जाता है तथा अनश्वर समृद्धि को प्राप्त कर लेता है जो

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

सूर्य को अपनी रक्षा के लिए बुलाता हूं, वह पुजारियों की श्रेणी नियुक्त करता है। **सूर्य की** जो पानी का सहायक नहीं है हमारी सुरक्षा के लिए प्रशंसा करो, हम उसकी पूजा करने के लिए इच्छा रखते हैं। मित्रो बैठ जाओ, वास्तव में हम सूर्य की प्रशंसा करेंगे क्योंकि वह वास्तव में दौलत का प्रदान करने वाला है, बुद्धिमान सदैव सूर्य की उस महान श्रेणी का ध्यान करते हैं जब से आंख आकाश का भ्रमण करती है, दक्ष व्यक्ति जो कि होशियार रहते हैं और प्रशंसा करने में बड़े सचेष्ट रहते हैं। **सूर्य** की श्रेष्ठ श्रेणी की हम प्रशंसा करते हैं, सर्वज्ञानी सूर्य देवता को उसके घोड़े ऊंचाई पर ले जाते हैं ताकि वह समस्त संसार को दिखाई दे। तू हे **सूर्य** सब से अधिक चलता है, तू सब को दिखाई देता है, तू झरना प्रकाश का है, तू सम्पूर्ण आकाश पर चमकता है। तू हे **सूर्य** मार्त देवता के सामने निकलता है, तू मनुष्य के सामने निकलता है और तू इस प्रकार निकलता है कि सम्पूर्ण

Ⓟ440 तथा Ⓟउनके चमत्कारों का इन्कारी है। जब यूहन्ना की यह इबारत पढ़ेगा और ऐसे हौज़ के अस्तित्व पर सूचना पाएगा कि जो हज़रत ईसा के देश में हमेशा से चला

शेष हाशिया नं. (11)

समस्त प्रसन्नताओं का उदगम है। जो व्यक्ति इससे वंचित रहा वह हमेशा के नर्क में जा पड़ा। इस वरदान के अनुसार ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन करीम में अपना नाम 'मालिके यौमिद्दीन' वर्णन किया है। दीन के शब्द पर अलिफ लाम लाने से अभिप्राय यह है ताकि ये अर्थ स्पष्ट हों कि प्रतिफल से अभिप्राय वह पूर्ण प्रतिफल है जिसके विवरण का क़ुर्आन करीम में उल्लेख है। वह पूर्ण प्रतिफल पूर्ण प्रभुता के तेज के बिना - जहां भौतिक संसाधनों के आश्रय का सर्वथा ह्रास अनिवार्य है प्रदर्शित नहीं हो सकता। अत: इसी की ओर अन्य स्थान पर संकेत करते हुए कहा है -

لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ [1]

अर्थात् उस दिन ख़ुदा की परवरदिगारी (प्रतिपालन) भौतिक संसाधनों के माध्यम के बिना अपनी झलक स्वयं दिखाएगी तथा यही मौजूद और

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

Ⓟ422 देवलोक तुझे देख सके, तू उस Ⓟप्रकाश के साथ प्रकट होता है जिसके साथ तू स्वच्छ करने वाला, बुराई से बचाने वाला है, तू विशाल आकाश को दिन और रात का अनुमान करता हुआ और समस्त सृष्टियों को देखता हुआ तय करता है। तू हे **सूर्य** आरामदायक, प्रकाश से चमकता हुआ उदय होकर और सबसे उच्च आकाश पर चढ़कर मेरे हृदय के रोग और मेरे शरीर के पीले पन को दूर कर, प्रकाश को अंधकार के परे देखकर हम सूर्य देवता के पास जाते हैं जो देवताओं के मध्य एक श्रेष्ठ देवता है। हे **चन्द्र देवता** तू हर समय के काम करने से नेकी का करने वाला है, तू अपनी शक्तियों के कारण शक्तिमान और सर्वव्यापी है, तू अपने अनुदानों के कारण ने'मतों का देने वाला तथा अपनी महानता से महान है, तूने हे मनुष्य के पथ-प्रदर्शक यज्ञ के चढ़ावों से ख़ूब पोषण पाया है, तेरे कार्य वरुण राजा के समान हैं,

① अलमौमिन : 17

आता था तथा जिसमें हमेशा से Ⓟयह विशेषता थी कि इसमें एक ही डुबकी लगाना Ⓟ441
प्रत्येक प्रकार के रोग को यद्यपि वह कैसा ही गंभीर क्यों न हो दूर कर देता था,

शेष हाशिया नं. (11)

महसूस होगा कि ख़ुदा तआला की महान शक्ति तथा पूर्ण क़ुदरत के अतिरिक्त अन्य सब तुच्छ है, तब समस्त आराम और आनन्द और समस्त प्रतिफल और प्रतिकार स्वच्छ और स्पष्ट दृष्टि के साथ ख़ुदा ही की ओर से दिखाई देगा तथा मध्य में कोई आवरण या पर्दा नहीं रहेगा और किसी प्रकार के सन्देह का स्थान भी नहीं रहेगा, उस समय जिन्होंने इसके लिए स्वयं को पृथक कर लिया था वे स्वयं को एक पूर्ण सौभाग्य में देखेंगे, जो उनके शरीर प्राण, बाह्य और आन्तरिक पर व्याप्त हो जाएगा, उनके अस्तित्व का कोई भाग ऐसा नहीं होगा जो उस महान सौभाग्य की प्राप्ति से वंचित रहा हो। यहां 'मालिके यौमिद्दीन' के शब्द में यह भी संकेत है कि उस दिन मनुष्यों को आराम अथवा अज़ाब (प्रकोप), Ⓟआनन्द अथवा कष्ट पहुंचेगा, Ⓟ381
उसका मूल कारण ख़ुदा तआला की हस्ती होगी तथा वास्तविक तौर पर

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

तेरी वाणी हे **चन्द्र** महान है, तू प्रिय मित्रा देवता के समान सब का शुद्ध करने वाला है, तू अरीमान देवता के समान सब का बढ़ाने वाला है, चूंकि तेरे में वे सब कलाएं हैं जो तेरे कारण आकाश, धरती, पर्वतों और पानी सब में प्रकट हैं इसलिए हे चन्द्र राजा हमसे अच्छी तरह व्यवहार कर तथा बिना क्रोध हमारी भेंटें स्वीकार कर। तू हे **चन्द्र** जो प्रशंसा का अभिलाषी और पौधों का गौरव है, हमारा प्राण है, यदि तू चाहे तो हम नहीं मरेंगे, तू हे **चन्द्र** उस व्यक्ति को जो तेरी पूजा करता है चाहे वह युवा हो या बूढ़ा धन देता है ताकि वह उस से आनन्द उठाए और जीवित रहे। हे चन्द्र राजा हमें उस से जो हमें हानि पहुंचाने की चिन्ता में है सुरक्षित रख। तुझ जैसे देवता का मित्र कभी नहीं मर सकता। हे **चन्द्र देवता** हमारी ऐसी सहायता करके रक्षा कर जिससे भोग लगाने वाले को Ⓟप्रसन्नता प्राप्त होती है, हमारे इस Ⓟ423
बलिदान को और प्रशंसा को स्वीकार करके हे **चन्द्र देवता** हमारे पास आ

Ⓟ442 उसके हृदय में व्यर्थ ही एक दृढ़ विचार उत्पन्न होगा कि यदि हज़रत Ⓟईसा ने कुछ अद्‌भुत चमत्कार दिखाए हैं तो निसन्देह उनका यही कारण होगा कि मान्यवर उसी

शेष हाशिया नं. (11)

अधिकार संबंधी बातों का स्वामी वही होगा, अर्थात उसका मिलन या वियोग, अनश्वर सौभाग्य या अनश्वर दुर्भाग्य का कारण ठहरेगा। इस प्रकार जो लोग उसके अस्तित्व पर ईमान लाए थे और एकेश्वरवाद ग्रहण किया था और उसके विशुद्ध प्रेम से हृदयों को रंगीन कर लिया था, उन पर उस पूर्ण हस्ती की कृपा के प्रकाश स्पष्ट और प्रकट तौर पर उतरेंगे, जिन्हें ईमान और ख़ुदा का प्रेम प्राप्त नहीं हुआ वे उस आनन्द और आराम से वंचित रहेंगे तथा महाप्रकोप में ग्रस्त हो जाएंगे। यह चार वरदान हैं जिन्हें हम ने क्रमानुसार विवरण सहित लिख दिया है। अब स्पष्ट है कि रहमान की विशेषता को रहीम की विशेषता पर प्राथमिकता देना नितान्त आवश्यक तथा पूर्ण सरस सुबोध शैली की मांग है क्योंकि जब प्रकृति के ग्रन्थ पर दृष्टि डाली जाए तो सर्वप्रथम ख़ुदा तआला की सामान्य प्रतिपालन पर दृष्टि पड़ती है

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

और हमारी परम्परा का उन्नति देने वाला हो। चूंकि हम मंत्रों से परिचित हैं, इस कारण तेरी प्रशंसा करके तेरा पद बढ़ाते हैं। हे कृपा-निधान **चन्द्र** इधर आ, हे दौलत प्रदान करने वाले हमारी खोने वाली दौलत से अवगत, अन्न के बढ़ाने वाले **चन्द्र देवता** हमारा एक योग्य सहायक हो। हे **चन्द्र देवता** हमारे हृदयों में ऐसा प्रसन्न रह जैसे पशु चरागाहों में या मनुष्य अपने घरों में प्रसन्न रहता है। हे **चन्द्र देवता** ऐसा हो तुझ में हर ओर से शक्ति आए, हमारे लिए अन्न उपलब्ध करने में सचेष्ट हो। हे प्रसन्न **चन्द्र देवता** सब बलों के साथ बढ़ता जा, हमारा मित्र हो, अन्न की ओर से समृद्धता प्रदान कर ताकि हम फूलें-फलें, चन्द्र देवता उस व्यक्ति को जो भेंटे चढ़ाता है दूध वाली गाय, चतुर घोड़ा और एक बेटा जो कारोबार में होशियार, घरेलू सम्बन्धों में कलापूर्ण, पूजा में प्रयत्नशील, सभा में योग्य तथा जो अपने पिता कि सम्मान का कारण हो देता है। हम हे **चन्द्र देवता** हम रण में अटल,

हौज़ के पानी में कुछ परिवर्तन करके ऐसे-ऐसे चमत्कार दिखाते होंगे क्योंकि संसार में इस ℗प्रकार की इबारतों के सदैव बहुत से उदाहरण पाए गए हैं और अब भी हैं ℗443

शेष हाशिया नं. (11)

तत्पश्चात उसकी 'रहमानियत' पर, फिर उसकी 'रहीमियत' पर तदोपरान्त उसके 'मालिक यौमिद्दीन' होने पर, पूर्ण सुबोध-सरस इसी का नाम है कि प्रकृति के नियम में जो अनुक्रम हो वही अनुक्रम इल्हाम के नियम में भी दृष्टिगत रहे क्योंकि कलाम में प्राकृतिक अनुक्रम का परिवर्तित करना जैसे प्रकृति के नियम को परिवर्तित करना है तथा भौतिक वयवस्था को परिवर्तित करना ही सरस-सुबोध कलाम के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि कलाम की व्यवस्था भौतिक व्यवस्था से ऐसी अनुकूल हो कि जैसे उसी का प्रतिबिम्बित चित्र हो, जो बात स्वभाविक और घटनानुसार प्राथमिकता रखती हो उसे शैली में भी प्राथमिकता दी जाए। अत: उपर्युक्त आयत में यह उच्च कोटि की सुबोध शैली है कि पूर्ण सरस-सुबोध शैली तथा सुमधुर वर्णन के बावजूद वास्तविक अनुक्रम की रूप-रेखा चित्रित करके

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

सहस्त्रों लोगों के गिरोहों में लड़कर विजयी होने वाला, शक्ति नष्ट न होने देने वाला, यज्ञों के मध्य उत्पन्न और प्रकाशमान मकान में रहने वाला प्रसिद्ध और शूरवीर समझ कर प्रसन्न होते हैं, तूने हे **चन्द्र देवता** ये पानी के पौधे और गायें उत्पन्न की हैं, तूने विशाल आकाश को फैलाया है, तूने अंधकार को प्रकाश से अस्त-व्यस्त कर दिया है। हे शक्तिशाली **चन्द्र देवता** अपनी श्रेष्ठ बुद्धि के साथ अपनी दौलत का एक भाग दे। ऐसा हो कि कोई विरोधी तुझे परेशान न कर सके, तू किसी दो समान विरोधियों की बहादुरी पर श्रेष्ठता रखता है, हमें रण में हमारे शत्रुओं से ℗रक्षा कर, **सूर्य** ℗422 प्रकाशमान प्रात: काल के साथ इस प्रकार आता है जैसे युवा पुरुष सुन्दर स्त्री के पीछे चलता है। इस समय धर्मात्मा लोग निर्धारित समय की परम्पराओं को करते हैं और मंगलमय सूर्य को अच्छे इनाम के लिए पूजते हैं अर्थात् उसकी उपासना करते हैं, **सूर्य** की तीव्र गति, मंगलमय शकुन,

तथा बुद्धि के निकट यह बात नितान्त उचित और अनुमान-संगत है कि यदि हज़रत
Ⓟ444 ईसा के हाथ से Ⓟअंधों-लंगड़ों इत्यादि को स्वास्थ्य प्राप्त हुआ है तो यह औषधि का

शेष हाशिया नं. (11)

प्रदर्शित कर दी है तथा वही वर्णन-शैली धारण की है जो प्रत्येक दृष्टि वाले को संसार की व्यवस्था में स्पष्ट तौर पर दिखाई दे रही है। क्या यह सद्मार्ग नहीं है कि जिस अनुक्रम से प्राकृतिक नियम में ख़ुदा की ने'मतें हुई हैं उसी अनुक्रम से इल्हाम के नियम में भी हों। अत: ऐसे उत्तम और नीति-संगत अनुक्रम पर आरोप करना वास्तव में उन्हीं अन्धों का कार्य है जिनके विवेक और दृष्टि दोनों अकस्मात् जाते रहे हैं।

چشم بد اندیش کہ برکندہ باد عیب نماید ہنرش در نظر

अनुवाद :- ईर्ष्यालू की दृष्टि जो खुली होती है उसकी दृष्टि में विशेषता दोष दिखाई देती है। *

अब हम फिर लेख की पुनरावृति करते हुए इस बात की चर्चा करते

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

हाथ-पांव के दृढ़ मार्ग तय करने वाले घोड़े जिन की हम ने उपासना की है और जो प्रशंसा के पात्र हैं आकाश की चोटी पर पहुंच गए हैं और शीघ्र धरती और आकाश के गिर्द घूम आए हैं ऐसा देवतापन और प्रताप **सूर्य** का है जब वह अस्त हो जाता है वह फैले हुए प्रकाश को जो अपूर्ण कार्य पर फैला हुआ था अपने में छुपा लेता है, जब वह अपने घोड़ों को खोल देता है उस समय रात्रि का अन्धकार सब पर छा जाता है, सूर्य, मित्रा और वरुण देवता के सामने अपने प्रकाशमान रूप आकाश के मध्य प्रकट करता है और उसकी किरणें एक तो उसकी असीम प्रकाशमान शक्ति को प्रसारित करती हैं और दूसरे जब वे चली जाती हैं तब रात्रि का अन्धकार लाती हैं। आज देवताओ **सूर्य** के निकलते ही हमें व्यर्थ बातों से बचाओ और ऐसा हो कि मित्रा देवता, वरुण देवता, अद्वितीय देवी, समुद्र देवता, धरती देवी, आकाश देवता हमारी प्रार्थना को ध्यानपूर्वक सुनें।

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

पर्चा निश्चय ही हज़रत मसीह ने उसी हौज़ से उड़ाया होगा और फिर मूर्खों और सरल स्वभाव लोगों में जो बात की तह तक नहीं पहुंचते ®तथा सरल वास्तविकता ®445

शेष हाशिया नं. (11)

हैं कि ख़ुदा तआला ने जो कुछ प्रशंसित सूरह में रब्बिल आलमीन की विशेषता से लेकर 'मालिके यौमिद्दीन' तक वर्णन किया है। ये क़ुर्आन करीम की व्याख्यानुसार चार महान सच्चाइयां हैं जिनका यहां अत्यन्त स्पष्टता के साथ वर्णन करना हित में है। प्रथम सच्चाई यह कि ख़ुदा तआला 'रब्बिल आलमीन' (समस्त संसारों का प्रतिपालक) है। अर्थात संसार की वस्तुओं में से जो कुछ विद्यमान है सब का प्रतिपालक और स्वामी ख़ुदा है तथा संसार में जो कुछ प्रकट हो चुका है और देखा जाता है या टटोला जाता है या बुद्धि जिसे अपनी परिधि में ले सकती है वे समस्त वस्तुएं सृष्टि ही हैं तथा वास्तविक अस्तित्व ख़ुदा तआला की एक हस्ती के अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु को प्राप्त नहीं। अतः संसार अपने समस्त भागों के साथ ख़ुदा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

अब इस पुस्तक के दर्शक गण स्वयं विचार करें कि इतनी श्रुतियों से जिनका एक बड़ा भण्डार यहां लिखकर कई पृष्ठ हमने काले किए हैं क्या कुछ ख़ुदा का भी पता मिल सकता है। आर्य समाज वाले सज्जन न्यायपूर्वक हमें बताएं कि ऋग्वेद ने इन श्रुतियों में अपना उद्देश्य प्रकट करने में कौन सी बलाग़त दिखाई है। आप ही बताएं कि क्या उसकी बातचीत सरस-सुबोध वार्तालापों की भांति शक्तिशाली और तर्क पूर्ण है अथवा निरर्थक और बेतुकी है। न्यायकर्ताओं ®पर गुप्त नहीं कि इन ®425 श्रुतियों में बजाय इसके कि वस्तु स्थिति को अपनी मृदुल वार्ता द्वारा व्यक्त किया जाता और सत्य के प्रसारण हेतु प्रयास किया जाता, स्वयं श्रुतियों का निबन्ध ऐसा बेतुका और निरर्थक है जिस से उसका श्रोता एक असमंजस में पड़ जाता है। कभी एक वस्तु को स्रष्टा ठहराता है और उससे मनोकामनाएं मांगता है, कभी उसे सृष्टि बनाता है और दूसरे को मुहताज ठहराता है, कभी किसी के लिए ख़ुदा की विशेषताएं स्थापित करता है

को नहीं पहचान सकते, यह प्रसिद्ध कर दिया कि एक आत्मा की सहायता से ऐसे-ऐसे काम करता हूं विशेषकर जबकि यह भी सिद्ध है कि हज़रत मसीह उसी हौज़

शेष हाशिया नं. (11)

की सृष्टि है और संसार के भागों में से कोई वस्तु ऐसी नहीं जो ख़ुदा की सृष्टि न हो तथा ख़ुदा तआला अपने पूर्ण प्रतिपालन के साथ संसार के कण-कण पर अधिकार रखने वाला और शासक है तथा उसका प्रतिपालन हर समय कार्यरत है, यह नहीं कि ख़ुदा तआला संसार को बना कर उसकी व्यवस्था से पृथक हो बैठा है और उसे प्रकृति के नियम के ऐसा सुपुर्द किया है कि स्वयं किसी कार्य में हस्तक्षेप ही नहीं करता जैसे कोई मशीन बनाए जाने के पश्चात निर्माण कर्ता से असंबंधित हो जाती है, उसी प्रकार उत्पाद वास्तविक रचयिता से असंबंधित हैं अपितु वह प्रतिपालक प्रतिपल
Ⓟ383 समस्त संसार का निरन्तर पोषण कर रहा है तथा उसके प्रतिपालन की Ⓟवर्षा समस्त संसार पर निरन्तर बरस रही है, कोई ऐसा समय नहीं जो उसके

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

और फिर उसी की ओर नश्वर वस्तुओं की विशेषताएं सम्बद्ध करता है। स्पष्ट है कि जिसने बातचीत को इतना लम्बा किया फिर उद्देश्य उसका कुछ भी नहीं। न एकेश्वरवाद का दावेदार हो कर एकेश्वरवाद का वर्णन किया है न सृष्टि-उपासना का दावेदार होकर सृष्टि-उपासना को सिद्ध किया है अपितु परेशान और पागल व्यक्ति की भांति ऐसी निराधार और परस्पर विरोधी बातचीत की है कि जिस से हिन्दू धर्म में विचित्र प्रकार की गड़बड़ी पड़ गई है। कोई किसी देवता का पुजारी तो कोई किसी देवता का भजन गा रहा है। क्या ऐसी वार्ता पूर्ण रूप से व्यर्थ और निरर्थक इस योग्य हो सकती है कि कोई बुद्धिमान व्यक्ति उसे सरस और सुबोध कहे। कदाचित् कुछ हिन्दू सज्जन जिन्होंने मात्र वेद का नाम सुन रखा है और कभी उस पुनीत किताब के दर्शन नहीं किए वे हृदय में यह भ्रम करें कि ये श्रुतियां जो ऋग्वेद में लिखी गई हैं वे उचित प्रकार से नहीं लिखी गई हैं या शायद उन से उत्तम उपर्युक्त वेद में और श्रुतियां होंगी जिनमें वेद ने ख़ुदा के एकेश्वरवाद के

पर अधिकतर जाते भी ®थे तो इस विचार को और भी शक्ति प्राप्त होती है। अत: ®446
विरोधी की दृष्टि में ऐसे चमत्कारों से जो हमेशा से हौज़ दिखाता रहा है, हज़रत ईसा

शेष हाशिया नं. (11)

कृपा-दृष्टि से रिक्त हो अपितु संसार के निर्माण के पश्चात् भी वास्तव में उस वरदानों के उदगम की लेशमात्र अन्तर के बिना ऐसी ही आवश्यकता है कि जैसे अभी तक उसने कुछ भी नहीं बनाया और संसार जिस प्रकार अपने अस्तित्व और आविर्भाव के लिए उसकी पोषकता का मुहताज था। इसी प्रकार उसे अपनी नित्यता और स्थायित्व के लिए उसकी पोषकता की आवश्यकता है। वही है जो प्रतिपल संसार को संभाले हुए है तथा संसार का प्रत्येक कण उसी से हरा-भरा है, वह अपनी इच्छा और इरादे के अनुसार प्रत्येक वस्तु का पोषण कर रहा है यह नहीं कि बिना इरादे के किसी वस्तु की पोषकता का कारण हो। अत: क़ुर्आनी आयतों के अनुसार जिनका सारांश हम वर्णन कर रहे हैं। उस सच्चाई का उद्देश्य यह है कि प्रत्येक वस्तु जो संसार में पाई जाती है वह सृष्टि है और समस्त विशेषताओं

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

वर्णन में सरस और सुबोध शैली के साथ न्याय किया होगा या सृष्टि-पूजन को मंझी हुई और तर्कपूर्ण वार्ता में जो मंझी हुई सरस और सुबोध शैली का मेल है अदा किया होगा। अत: ऐसे भ्रमी लोगों के उत्तर में प्रस्तुत किया जाता है कि हमने ये समस्त श्रुतियां **ऋग्वेद संथास्तिक प्रथम सूक्त से** ®**115** तक ®426
बतौर नमूना चुन कर लिखी हैं, यदि किसी को यह दावा हो कि वे श्रुतियां सही नहीं हैं तो उसका कर्त्तव्य है कि उसकी समझ में जो उचित अनुवाद हो वह प्रस्तुत करे ताकि न्यायप्रिय लोग स्वयं देख लें कि ये श्रुतियां उचित हैं या उसकी प्रस्तुत की हुई उचित हैं और यदि किसी को यह दावा हो कि यद्यपि ये श्रुतियां निरर्थक और व्यर्थ हैं परन्तु उसी ऋग्वेद में ऐसी श्रुतियां भी पाई जाती हैं जिन में ख़ुदा के एकेश्वरवाद का वर्णन नितान्त स्पष्टता और शिष्टता के साथ मौजूद है तो ऐसे व्यक्ति पर अनिवार्य है कि इन श्रुतियों के साथ उन श्रुतियों को भी प्रस्तुत करे ताकि यदि किसी प्रकार हाथ-पैर

Ⓟ447के सन्दर्भ में बहुत से सन्देह और शंकाएं Ⓟउत्पन्न होती हैं तथा इस बात के सबूत में बहुत सी कठिनाइयां आती हैं कि यहूदियों के मतानुसार मसीह मक्कार और बाज़ीगर

शेष हाशिया नं. (11)

और अपनी सम्पूर्ण परिस्थितियों और अपने समस्त समयों में ख़ुदा तआला की पोषकता की मुहताज है और कोई आध्यात्मिक अथवा भौतिक ऐसी विशेषता नहीं है जिसे कोई सृष्टि स्वयं उस स्वच्छन्द अधिकार रखने वाले की विशेष इच्छा के बिना प्राप्त कर सकती हो तथा उस पवित्र कलाम की व्याख्यानुसार उस सच्चाई और इसी प्रकार दूसरी सच्चाइयों में ये अर्थ भी दृष्टिगत हैं कि 'रब्बुल आलमीन' इत्यादि विशेषताएं जो ख़ुदा तआला में पाई जाती हैं। ये उसी की हस्ती जो एक है जिसका कोई भागीदार नहीं से विशेष्य हैं अन्य कोई उनमें भागीदार नहीं, जैसा कि इस सूरह के प्रथम वाक्य में अर्थात 'अल्हम्दो लिल्लाह' में यह वर्णन हो चुका है कि समस्त प्रशंसाएं ख़ुदा ही से विशेष हैं। दूसरी सच्चाई 'रहमान' है जिसे 'रब्बिल

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

मार कर वेद की अलंकारित शैली और वार्ता की मधुरता सिद्ध हो सके तो सिद्ध हो जाए। हमें किसी सज्जन से अनुचित हठ नहीं है। हम अपने सच्चे हृदय से कहते हैं कि हमने बहुत ध्यानपूर्वक वेद पर दृष्टि डाल कर उसे वार्ता की शिष्ट शैली से बिल्कुल दूर और पृथक पाया है। हम बड़े खेद से लिखते हैं कि ऐसी व्यर्थ बातें क्योंकर आर्य समाज वालों के हृदय पर भार ही हैं और क्यों वे ऐसे अपरिपक्व और अधम विचारों पर आसक्त हो रहे हैं। यदि वेद की वाणी (कलाम) बावजूद इस व्यर्थ विस्तार और वार्ता की निरर्थकता और अनर्गल लेख के फिर भी सरस और सुबोध ही है तो फिर संसार में सुबोध रहित कलाम किसे कहा जाए। यदि आर्य समाज वालों को यह ज्ञात नहीं कि सरस-सुबोध वाणी किसे कहते हैं तो अनिवार्य है कि वे थोड़ा आंख खोलकर वेद की विस्तृत वाणी के मुक़ाबले पर जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है क़ुर्आन करीम की कुछ आयतों पर दृष्टि डालें

नहीं था सच्चरित्र व्यक्ति था जिसने ®अपने चमत्कार दिखाने में उस ने उस अनादि ®448
हौज़ से कुछ सहायता नहीं ली और वास्तव में चमत्कार ही दिखाए हैं यद्यपि क़ुर्आन

शेष हाशिया नं. (11)

आलमीन' के पश्चात् वर्णन किया गया और 'रहमान' के अर्थ जैसा कि हम पहले भी वर्णन कर चुके हैं ये हैं कि जितने भी प्राणी हैं चाहे समझ रखते हों या न रखते हों, चाहे शुभकर्मी हों या दुष्कर्मी ®उन सब के स्थायित्व ®384
तथा अस्तित्व की अनश्वरता और नस्ल की नित्यता और उनकी पूर्णता के लिए ख़ुदा तआला ने अपनी सामान्य कृपा के अनुसार हर प्रकार के वांछित संसाधन उपलब्ध कर दिए हैं और सदैव उपलब्ध करता रहता है और यह दान मात्र है कि जो किसी कर्मी के कर्म पर निर्भर नहीं। तीसरी सच्चाई रहीम है जो रहमान के पश्चात रखी गई है, जिसके अर्थ ये हैं कि ख़ुदा तआला परिश्रम करने वालों के परिश्रम पर रहमत विशेष की मांग पर शुभ परिणाम प्रदान करता है, क्षमा याचकों के पाप क्षमा करता है, मांगने वालों

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

कि किस मृदुलता और संक्षिप्तता से एकेश्वरवाद की अत्यधिक बातों को संक्षिप्त और सारगर्भित इबारत में वर्णन करता है और किस परिश्रम और प्रयास से एकेश्वरवाद के मामले को हृदय में बैठाता है और कैसे मंझे हुए और तर्कपूर्ण निबन्ध से ख़ुदा के एकेश्वरवाद को पवित्र हृदयों में ®चित्रित करता ®427
है। यदि उसके समान उपर्युक्त वेद इत्यादि में श्रुतियां मौजूद हों तो प्रस्तुत करना चाहिए अन्यथा व्यर्थ तौर पर बोलना और निरुत्तर रह कर फिर नीचता तथा अधमता से न हटना उन लोगों का कार्य है जिन लोगों को ख़ुदा और ईमानदारी से कोई भी मतलब नहीं और न लज्जा तथा शर्म से कोई प्रयोजन है। अब यहां हम बतौर नमूना वेद की श्रुतियों की तुलना में कुछ क़ुर्आन करीम की आयतें जो ख़ुदा की तौहीद (एकेश्वरवाद) को वर्णन करती हैं लिखते हैं ताकि प्रत्येक को ज्ञात हो जाए कि वेद और क़ुर्आन करीम में से किस की इबारत में मृदुलता, संक्षेप और वार्ता में कितनी शक्ति पाई जाती है और किस की इबारत भिन्न-भिन्न प्रकार के सन्देह और भ्रमों में डालती

करीम पर ईमान लाने के उपरान्त उन भ्रमों से मुक्ति प्राप्त हो जाती है, परन्तु जो
Ⓟ449 व्यक्ति अभी Ⓟक़ुर्आन करीम पर ईमान नहीं लाया तथा यहूदी, हिन्दू या ईसाई है वह

शेष हाशिया नं. 11

को देता है, खटखटाने वालों के लिए खोलता है। चौथी सच्चाई जिसका सूरह फ़ातिहा में वर्णन किया गया है 'मालिके यौमिद्दीन' है अर्थात पूर्ण प्रतिफल और दण्ड देने में पूर्णतम है जो प्रत्येक प्रकार के परीक्षण और परीक्षा तथा कृत्रिम भौतिक संसाधनों के माध्यम से पवित्र है और प्रत्येक मलिनता, गन्दगी, सन्देह, शंका तथा क्षति से पवित्र है तथा महान झलकियों का द्योतक है, उसका स्वामी भी वही सर्वशक्तिमान ख़ुदा है तथा वह इस बात से कदापि असमर्थ नहीं कि अपने पूर्ण प्रतिफल को जो दिन की भांति प्रकाशमान है प्रकटन में लाए। इस महान सच्चाई को प्रकट करने से ख़ुदा तआला

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

है तथा व्यर्थ और विस्तृत है। प्रशंसनीय आयतें ये हैं :-

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ لَا تَاۡخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوۡمٌ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ [1] (भाग 3) قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ اَللّٰهُ الصَّمَدُ لَمۡ یَلِدۡ وَلَمۡ یُوۡلَدۡ وَلَمۡ یَکُنۡ لَّهٗ کُفُوًا اَحَدٌ [2] (भाग 30) لَوۡ کَانَ فِیۡهِمَاۤ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا [3] مَا کَانَ مَعَهٗ مِنۡ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ کُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعۡضُهُمۡ عَلٰی بَعۡضٍ [4] قُلِ ادۡعُوا الَّذِیۡنَ زَعَمۡتُمۡ مِّنۡ دُوۡنِهٖ فَلَا یَمۡلِکُوۡنَ کَشۡفَ الضُّرِّ عَنۡکُمۡ وَلَا تَحۡوِیۡلًا (भाग 15) [5] قُلِ ادۡعُوۡا شُرَکَآءَکُمۡ ثُمَّ کِیۡدُوۡنِ فَلَا تُنۡظِرُوۡنِ اِنَّ وَلِیِّ‌ۧ اللّٰهُ الَّذِیۡ نَزَّلَ الۡکِتٰبَ وَهُوَ یَتَوَلَّی الصّٰلِحِیۡنَ وَالَّذِیۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ لَا یَسۡتَطِیۡعُوۡنَ نَصۡرَکُمۡ وَلَاۤ اَنۡفُسَهُمۡ یَنۡصُرُوۡنَ [6] (भाग 9) تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبۡعُ وَالۡاَرۡضُ وَمَنۡ فِیۡهِنَّ وَاِنۡ مِّنۡ شَیۡءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمۡدِهٖ وَلٰکِنۡ لَّا تَفۡقَهُوۡنَ تَسۡبِیۡحَهُمۡ [7] (भाग 15) قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبۡحٰنَهٗ هُوَ الۡغَنِیُّ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی

---

① अलबक़रह : 256, ② अलइख़्लास : 2 से 5, ③ अलअंबिया : 23, ④ अलमौमिनून : 92
⑤ बनी इस्राईल : 57, ⑥ अलआराफ़ : 196 से 198, ⑦ बनी इस्राईल : 45

ऐसे भ्रमों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है तथा उस का हृदय क्योंकर संतोष प्राप्त कर सकता है कि ऐसे अद्भुत हौज़ के बावजूद ⓟजिसमें सहस्त्रों लंगड़े और ⓟ450

शेष हाशिया नं. (11)

का उद्देश्य यह है ताकि प्रत्येक मनुष्य पर वास्तविक विश्वास के तौर पर निम्नलिखित बातें स्पष्ट हो जाएं। प्रथम यह बात कि प्रतिफल और दण्ड एक वास्तविक और निश्चित बात है जो वास्तविक स्वामी की ओर से तथा उसी की विशेष इच्छा से बन्दों पर आती है और संसार में इस प्रकार की स्पष्टता संभव नहीं क्योंकि इस संसार में यह बात जन-साधारण पर प्रकट नहीं होती कि जो कुछ भला-बुरा, आराम और कष्ट पहुंच रहा है वह क्यों पहुंच रहा है तथा किस की आज्ञा और अधिकार से पहुंच रहा है और उनमें से किसी को यह आवाज़ नहीं आती कि वह अपना प्रतिफल पा रहा है और किसी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

الْاَرْضِ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ① (भाग 11)
اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا ⓟفِي ⓟ428
الْاَرْضِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ② (भाग 6) وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ
وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ③ (भाग 14) اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى تِلْكَ اِذًا
قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ④ (भाग 27) يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّاَنْزَلَ
مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا
وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ⑤ وَهُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّفِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ⑥ (भाग 25)
هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ⑦ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ
يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ⑧ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ⑨
خَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ⑩ (भाग 18) لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى

---

① यूनुस : 69, ② अलनिसाअ : 172, ③ अन्नहल : 58, ④ अन्नज्म : 22, 23, ⑤ अलबक़रह : 22, 23, ⑥ अज़्ज़ुख़रुफ़ : 85, ⑦ अलहदीद : 4, ⑧ अलअन्आम : 104, ⑨ अश्शूरा : 12, ⑩ अलफ़ुर्क़ान : 3

लूले तथा जन्मजात अन्धे एक ही डुबकी लगा कर स्वस्थ हो जाते थे तथा जो
℗451 सैकड़ों वर्षों से अपनी विचित्र विशेषताओं के साथ यहूदियों और उस ℗देश के

शेष हाशिया नं. 11

पर बतौर मौजूद और महसूस दृष्टिगोचर नहीं होता कि वह जो कुछ भुगत
℗385 रहा है वास्तव में ℗वह उसके कर्मों का फल है। दूसरे इस सच्चाई में इस
बात का स्पष्ट होना वांछित है कि भौतिक संसाधन कुछ वस्तु नहीं हैं और
वास्तविक कर्ता ख़ुदा है और वही एक महानतम हस्ती है जो सम्पूर्ण वरदानों
का उद्गम तथा प्रत्येक प्रतिफल और दण्ड का अधिकार रखने वाला है।
तीसरे इस सच्चाई में इस बात का प्रकट करना वांछित है कि महान सौभाग्य
और दुर्भाग्य क्या वस्तु है अर्थात महान सौभाग्य वह महान सफलता की

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

وَالْاٰخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ① (भाग 20) اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ
يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ② فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا
لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ③ (भाग 16)
لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ④ (भाग 21) وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا
اٰخَرَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ
⑤ (भाग 20) وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ⑥ (भाग
15) وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰٓى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ⑦
(भाग 21) وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ
فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ - وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ⑧ (भाग 7)
لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ
كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ⑨
(भाग 13) مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا

---

① अलक़सस : 71, ② अन्निसाअ : 49, ③ अलकहफ़ : 111, ④ लुक़मान : 14, ⑤ अलक़सस : 89,
⑥ बनी इस्राईल : 24, ⑦ लुक़मान : 16, ⑧ अलअन्आम : 18, 19 ⑨ अर्रअद : 15

समस्त लोगों में प्रसिद्ध और मशहूर हो रहा था तथा असंख्य लोग उसमें डुबकी लगाने से स्वस्थ हो चुके थे तथा प्रतिदिन स्वस्थ होते थे और हर समय एक मेला लगा रहता ⓟथा और मसीह भी अधिकतर उस हौज़ पर जाता था और उसकी उन ⓟ452

शेष हाशिया नं. (11)

अवस्था है कि जब प्रकाश, हर्ष, उल्लास और आनन्द मनुष्य के समस्त बाह्य, आन्तरिक, शरीर और प्राण पर छा जाए तथा कोई अंग और शक्ति उससे बाहर न रहे। महा दुर्भाग्य वह कष्टदायक प्रकोप है जिसे अवज्ञा, अपवित्रता और दूरी के कारण हृदयों से उत्तेजित होकर शरीरों पर प्रभुत्व प्राप्त हो जाए और समस्त अस्तित्व का अग्नि और नरक में होना ज्ञात हो। ये महान झलकियां इस संसार में प्रकट नहीं हो सकतीं क्योंकि इस संकुचित, संकीर्ण और मलिन संसार को जो संसाधनों के लुप्त होने से एक अपूर्ण अवस्था में पड़ा है उनके प्रकटन हेतु सहनशीलता नहीं अपितु इस संसार

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ① (भाग 3) وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ
مُشْفِقُوْنَ ② وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ⓟفَادْعُوْهُ بِهَا وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ ⓟ429
اَسْمَآئِهٖ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ③ (भाग 9) اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ④ (भाग 20) فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا
قَوْلَ الزُّوْرِ ⑤ (भाग 17) اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ اَمْ
لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ⑥ (भाग 9) لَا تَسْجُدُوْا
لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ⑦
(भाग 24) لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ
فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ⑧ (भाग 22) اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ
اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ⑨ (भाग 16) وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ

---

① अलबक़रह : 256, ② अलअंबिया : 29, ③ अलआराफ़ : 181, ④ अलअन्कबूत : 18, ⑤ अलहज्ज : 31, ⑥ अलआराफ़ : 196, ⑦ हामीम अस्सज्दह : 38, ⑧ यासीन : 41, ⑨ मरयम : 94

आश्चर्यजनक विशेषताओं से परिचित था परन्तु फिर भी मसीह ने उन चमत्कारों के
ⓟ453 दिखाने में जिन्हें हमेशा से हौज़ दिखा रहा ⓟथा, उसी हौज़ की मिट्टी या पानी से
कुछ सहायता नहीं ली तथा उसी में कुछ परिवर्तन करके अपना नया नुस्ख़ा (औषधि

शेष हाशिया नं. (11)

पर विपत्ति और आज़मायश का प्रभुत्व है तथा उसका सुख और संताप दोनों अस्थायी और अपूर्ण हैं तथा इस संसार में मनुष्य पर जो कुछ आता है वह गुप्त कारणों से है जिस से प्रतिफल के स्वामी का चेहरा गुप्त और लुप्त हो रहा है। इसलिए यह विशुद्ध, पूर्ण तथा स्पष्ट तौर पर प्रतिफल और दण्ड का दिन नहीं हो सकता। अपितु शुद्ध, कामिल और स्पष्ट तौर पर यौमिद्दीन अर्थात् प्रतिफल और दण्ड का दिन वह संसार होगा जो इस संसार के समाप्त होने के पश्चात आएगा और वही संसार झलकियों का महान द्योतक तथा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ① (भाग 17) فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ
وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ② (भाग 2) يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ
ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ
اجْتَمَعُوْا لَهٗ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ضَعُفَ الطَّالِبُ
وَالْمَطْلُوْبُ- مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ. ③ (भाग 17) اَنَّ
الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا- ④ (भाग 2) وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ
وَبَنٰتٍۭ بِغَيْرِ عِلْمٍ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ⑤ (भाग 7) وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ِۨابْنُ
اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ- اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ
اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ⑥ (भाग 10) مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ

---

① अलअंबिया : 30, ② अन्निसा : 172, ③ अलहज्ज : 74, 75, ④ अलबक़रह : 166, ⑤ अलअन्आम : 101,
⑥ अत्तौबह : 18, 19

का पर्चा) नहीं निकाला। नि:सन्देह ऐसा विचार तर्करहित है कि जो विरोधी के समक्ष प्रभावकारी Ⓟनहीं और नि:सन्देह उस अद्‌भुत विशेषताओं वाले हौज़ के अस्तित्व पर Ⓟ454

शेष हाशिया नं. (11)

प्रताप और सौन्दर्य के पूर्ण प्रदर्शन का मंच है। चूंकि यह भौतिक संसार अपनी मूल प्रकृति के अनुसार प्रतिफल-गृह नहीं अपितु परीक्षा-गृह है। इसलिए लोगों पर इस संसार में जो कुछ दरिद्रता और समृद्धि, सुख और दुख प्रसन्नता और अप्रसन्नता आती है उसे ख़ुदा तआला की Ⓟकृपा या Ⓟ386 प्रकोप का सबूत निश्चित नहीं। उदाहरणतया किसी का धनाढ्‌य हो जाना इस बात को कदापि सिद्ध नहीं करता कि ख़ुदा तआला उस पर प्रसन्न है तथा न किसी का दरिद्र और दीन हो जाना इस बात को सिद्ध करता है कि ख़ुदा तआला उस पर रुष्ट है अपितु ये दोनों प्रकार की परीक्षाएं हैं ताकि धनवान को उसके धन में और दरिद्र को उसकी दरिद्रता में परखा जाए। ये चार सच्चाइयां हैं जिनका क़ुर्आन करीम में विस्तारपूर्वक वर्णन विद्यमान है। क़ुर्आन करीम के अध्ययन से ज्ञात होगा कि इन सच्चाइयों की व्याख्या

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

وَّلَدٍ سُبْحٰنَهٗ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ. (1) (भाग 16) اِنَّ الَّذِيْنَ Ⓟاٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ Ⓟ430 يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ - اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ- (2) (भाग 17)

अनुवाद :- अल्लाह जो पूर्ण विशेषताओं का संकलनकर्ता और उपासना का अधिकारी है उसका अस्तित्व स्पष्ट तौर पर प्रमाणित है क्योंकि वह स्वयं सदैव से है और सदैव रहेगा, उसके अतिरिक्त कोई वस्तु व्यक्तिगत तौर पर सदैव से नहीं और न सदैव रहने वाली है अर्थात् उसके अतिरिक्त किसी वस्तु में यह विशेषता नहीं पाई जाती कि बिना किसी कारण की

(1) मरयम : 36, (2) अलहज्ज : 18, 19

विचार करने से मसीह की स्थिति पर बहुत से आरोप लागू होते हैं जो किसी ℗455 प्रकार दूर नहीं हो सकते और जितना विचार ℗करो उतनी ही पकड़-धकड़ बढ़ती

शेष हाशिया नं. (11)

में क़ुर्आनी आयतें एक सरिता की भांति बहती चली जाती हैं और यदि हम यहां उन आयतों को विस्तारपूर्वक लिखते तो किताब के कई भाग अधिक हो जाते। अतः हम ने इस दृष्टि से कि यदि ख़ुदा ने चाहा तो शीघ्र क़ुर्आनी तर्कों के अवसर पर वे समस्त आयतें विस्तारपूर्वक लिखते जाएंगे। इन भूमिका के प्रसंगों में केवल सूरह फ़ातिहा के संक्षिप्त परन्तु तार्किक वाक्यों पर सन्तोष किया।

तत्पश्चात् हम वर्णन करना चाहते हैं कि ये चारों सच्चाइयां जो स्पष्ट तौर पर प्रमाणित तथा स्पष्ट तौर पर सत्यापित हैं ऐसी अद्वितीय और श्रेष्ठतम हैं कि यह बात ठोस तर्कों द्वारा प्रमाणित है कि हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव के समय ये चारों सच्चाइयां संसार से लुप्त हो चुकीं थीं तथा पृथ्वी पर ऐसी कोई जाति मौजूद नहीं थी जो अधिकता या कमी की मिलावट के बिना इन सच्चाइयों की पाबन्द हो। फिर जब क़ुर्आन करीम उतरा तो उस पुनीत कलाम ने नए सिरे से उन लुप्त हो चुकी सच्चाइयों को लुप्तता के कोने से बाहर निकाला तथा पथ-भ्रष्ट लोगों को उनके ईश्वर प्रदत्त अस्तित्व से अवगत किया तथा संसार में उन्हें

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

उपस्थिति के स्वयं ही मौजूद और सदैव रह सके अथवा इस संसार को जो पूर्ण हित, सुदृढ़ क्रम और समुपयुक्त बनाया गया है अनिवार्य कारण हो सके तथा यह बात उस समस्त विशेषताओं से सम्पन्न सृष्टि के रचयिता (स्रष्टा) के अस्तित्व को सिद्ध करने वाली है। इस सूक्ष्म प्रमाण का विवरण यह है कि वस्तुओं में से प्रत्येक मौजूद जो दिखाई देती है उसके अस्तित्व और स्थायित्व पर दृष्टि डालते हुए आवश्यक नहीं। उदाहरणतया पृथ्वी गोलाकार है तथा उसका व्यास कुछ लोगों के मतानुसार लगभग चार हज़ार पक्के कोस है परन्तु इस बात पर कोई तर्क स्थापित नहीं हो सकता कि क्यों यही

है तथा ईसाई जमाअत के लिए मुक्ति का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता क्योंकि संसार की वर्तमान स्थिति को देखकर ये भ्रम और भी अधिक शक्ति पकड़ते ℗हैं तथा ऐसे ℗456

शेष हाशिया नं. (11)

प्रसारित किया और एक संसार को उनके ℗प्रकाश से प्रकाशित किया, परन्तु ℗387
इस बात के प्रमाण के लिए कि समस्त जातियां इन सच्चाइयों से अज्ञान और अनभिज्ञ मात्र क्योंकर थीं। यही एक तर्क पर्याप्त है कि संसार में अब भी सत्य धर्म इस्लाम के अतिरिक्त कोई जाति ठीक ठीक और पूर्ण रूप से इन सच्चाइयों पर क़ायम नहीं। जो व्यक्ति किसी ऐसी जाति के अस्तित्व का दावा करे तो सबूत का भार उसी का दायित्व है, इसके अतिरिक्त क़ुर्आनी साक्ष्य, जो प्रत्येक मित्र और शत्रु में प्रचारित होने के कारण प्रत्येक प्रतिद्वन्द्वी पर हुज्जत है, इस बात का पर्याप्त सबूत है और वे साक्ष्य क़ुर्आन करीम में अनेकों स्थान में अत्यधिक मौजूद हैं और स्वयं किसी इतिहासकार और वास्तविकता के ज्ञाता को इससे अनभिज्ञता नहीं होगी कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव के समय तक प्रत्येक जाति की पथ-भ्रष्टता और गुमराही चरम सीमा तक पहुंच चुकी थी तथा उनका किसी सच्चाई पर पूर्ण तौर पर स्थायित्व नहीं रहा था। अतः यदि प्रथम यहूदियों ही की स्थिति पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होगा कि उन्हें ख़ुदा तआला के पूर्ण प्रतिपालन में बहुत से सन्देह और शंकाएं उत्पन्न हो गई थीं तथा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

आकार और यह मात्रा उसके लिए आवश्यक है तथा क्यों उचित नहीं कि उससे अधिक अथवा उस से कम हो या प्रत्यक्ष आकार के विपरीत किसी अन्य आकार से साकार हो। जब इस पर कोई तर्क स्थापित न हुआ तथा इसी प्रकार संसार की समस्त वस्तुओं का अस्तित्व और स्थायित्व अनावश्यक ठहरा। फिर यही बात नहीं कि प्रत्येक संभव वस्तु का अस्तित्व उसकी हस्ती पर दृष्टि डालते हुए अनावश्यक है अपितु कुछ परिस्थितियां ऐसी दिखाई देती हैं कि अधिकांश वस्तुओं के दुर्लभ होने के कारण भी स्थापित हो जाते हैं, फिर वे वस्तुएं दुर्लभ नहीं होतीं। उदाहरणतया बावजूद इसके

छल और कपटों के बहुत से उदाहरण अपनी ही कंठस्थ करने की शक्ति प्रस्तुत करती है अपितु प्रत्येक मनुष्य इन 'छल-कपटों' के संदर्भ में चश्मदीद बातों का एक

शेष हाशिया नं. (11)

उन्होंने समस्त संसारों के प्रतिपालक के अस्तित्व पर सन्तुष्ट न होकर अपने लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के सैकड़ों प्रतिपालक बना रखे थे अर्थात् सृष्टि की उपासना और देवताओं की उपासना का बोलबाला था, जैसा कि स्वयं अल्लाह तआला ने उनका यह हाल क़ुर्आन करीम में वर्णन करके फ़रमाया है -

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ[1]

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

कि अत्यन्त भीषण अकाल और संक्रामक रोग आते हैं परन्तु फिर भी हमेशा
Ⓟ431 से प्रत्येक वस्तु का बीज सुरक्षित चला आया है, Ⓟहालांकि बुद्धि की दृष्टि से उचित अपितु अनिवार्य था कि सहस्त्रों कष्टों और दुर्घटनाओं में से जो प्रारंभ से संसार पर आती रहीं कभी किसी बार ऐसा भी होता कि अकाल की भयंकरता के समय अनाज जो कि मनुष्य का आहार है बिल्कुल समाप्त हो जाता अथवा अनाज का कोई प्रकार समाप्त हो जाता या कभी संक्रामक रोग की प्रचंडता के समय मनुष्य का नामोनिशान शेष न रहता अथवा जानवरों की कोई प्रजाति समाप्त हो जाती या कभी संयोगवश सूर्य या चन्द्रमा की कोई मशीन बिगड़ जाती अथवा अन्य असंख्य वस्तुओं से जो संसार की व्यवस्था को उचित रखने के लिए आवश्यक हैं किसी वस्तु के अस्तित्व में विघ्न पड़ जाता क्योंकि करोड़ों वस्तुओं का विघ्न और विकार से सुरक्षित रहना तथा उन पर कभी विपत्ति का न आना कल्पना से दूर है। अत: जो वस्तुएं जिनका न अस्तित्व आवश्यक है न ही स्थायित्व आवश्यक है अपितु उनका कभी न बिगड़ जाना उन के स्थापित रहने से अधिक नीति संगत है उन पर कभी पतन का न आना तथा उत्तम तौर पर सुदृढ़ अनुक्रम और श्रेष्ठतम विधि द्वारा उन का अस्तित्व और स्थायित्व का पाया जाना तथा

[1] अत्तौबह : 31

भंडार रखता है और ©स्वयं इस प्रकार के छल जैसे सरल स्वभाव लोगों तथा मूर्खों ©457 के सामने चल जाते हैं तथा छुपे रहते हैं। यह एक ऐसी बात है जो मक्कारों (कपट

शेष हाशिया नं. (11)

अर्थात् यहूदियों ने अपने मौलवियों और भिक्षुओं को जो सृष्टि (उत्पत्त) हैं और ख़ुदा नहीं हैं अपने प्रतिपालक और आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाले बना रखे हैं तथा अधिकांश यहूदियों की कुछ नेचरियों की तरह यह आस्था हो गई थी कि संसार का प्रबंध व्यवस्थित और सुनिश्चित नियमों

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

संसार की करोड़ों आवश्यकताओं में से कभी किसी वस्तु का लुप्त न होना इस बात का स्पष्ट प्रतीक है कि इन सब के लिए एक जीवित करने वाला, रक्षक और क़ायम रखने वाला है जो समस्त विशेषताओं से परिपूर्ण अर्थात् नीतिवान, सूक्ष्मदर्शी, कृपालु और दयालु तथा अपने अस्तित्व में अजर-अमर तथा प्रत्येक क्षति से पवित्र, जिस पर कभी मृत्यु और विनाश नहीं आता अपितु ऊंघ और निद्रा से भी जो सामूहिक तौर पर मृत्यु के समरूप है पवित्र है। अत: वही हस्ती सम्पूर्ण विशेषताओं से परिपूर्ण है जिसने इस संभावित संसार को अत्यन्त युक्ति और संतुलन को दृष्टिगत रखते हुए अस्तित्व प्रदान किया और अस्ति को नास्ति पर प्रमुखता प्रदान की और वही अपनी सम्पूर्णता, सृजन करने, प्रतिपालन और स्थायित्व की विशेषताओं के उपलक्ष्य उपासना के योग्य है। यहां तक तो अनुवाद इस आयत का - اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ لَا تَاۡخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوۡمٌ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ[1] अब न्याय की दृष्टि से देखना चाहिए कि किस सुगमता, मृदुलता, गंभीरता और युक्ति से इस आयत में सृष्टि के रचयिता के अस्तित्व का तर्क प्रस्तुत किया है और कितने संक्षिप्त शब्दों में अत्यधिक अर्थों तथा युक्ति-संगत सूक्ष्मताओं को पूर्णरूपेण भर दिया है और مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ के लिए ऐसे ठोस सबूत ©द्वारा समस्त विशेषताओं से परिपूर्ण स्रष्टा ©432 का अस्तित्व सिद्ध कर दिखाया है जिसके सर्वपक्षीय वर्णन के समान किसी

---

(1) अलबक़रह : 256

Ⓟ458करने वाले) को उनकी इन धोखेबाज़ियों पर निर्भीक करता है। Ⓟजन सामान्य को जो प्राय: चौपायों की भांति होते हैं इस ओर ध्यान भी नहीं होता कि लम्बी-चौड़ी

शेष हाशिया नं. (11)

पर चल रहा है और उस नियम में ख़ुदा तआला अधिकृत तौर पर हस्तक्षेप करने से असमर्थ और विवश है जैसे उसके दोनों हाथ बंधे हुए हैं, न इस नियम के विपरीत कुछ आविष्कार कर सकता है और न नष्ट कर सकता है अपितु जब से उसने इस संसार की बिखरी हुई वस्तुओं को विशेष तौर

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

मनीषी ने आज तक कुछ नहीं बताया अपितु अपूर्ण बोध रखने वाले दार्शनिकों ने आत्मा और शरीरों को उत्पन्न होने वाला भी नहीं समझा और उस सूक्ष्म रहस्य से अज्ञान रहे कि वास्तविक जीवन, वास्तविक अस्तित्व तथा वास्तविक स्थायित्व केवल ख़ुदा ही के लिए मान्य है। यह बारीक मारिफ़त मनुष्य को उसी आयत से प्राप्त होती है जिस में ख़ुदा ने फ़रमाया कि यथार्थ तौर पर जीवन तथा जीवन की अनश्वरता केवल ख़ुदा को प्राप्त है जो समस्त विशेषताओं से परिपूर्ण है, उस के बिना किसी अन्य वस्तु को वास्तविक अस्तित्व तथा वास्तविक स्थायित्व प्राप्त नहीं और इसी बात को संसार के रचयिता के लिए सबूत ठहराया और फ़रमाया لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ① अर्थात जबकि संसार के लिए न वास्तविक जीवन प्राप्त है न वास्तविक स्थायित्व। अत: अवश्य ही उसे एक अनिवार्य कारण की आवश्यकता है जिसके द्वारा उसे जीवन और स्थायित्व प्राप्त हो तथा आवश्यक है कि ऐसा अनिवार्य कारण जो पूर्ण विशेषताओं से परिपूर्ण, इच्छानुसार युक्तियां करने वाला, नीतिवान और अन्तर्यामी हो वही अल्लाह है क्योंकि क़ुर्आन की परिभाषा के अनुसार उस हस्ती का नाम है जो पूर्ण विशेषताओं से परिपूर्ण है। इसी कारण क़ुर्आन करीम में अल्लाह के नाम को सम्पूर्ण कामिल विशेषताओं का विशेष्य ठहराया है तथा भिन्न-भिन्न स्थानों पर फ़रमाया है कि अल्लाह वह है जो कि समस्त संसारों का

① अलबक़रह : 256

छान-बीन करें तथा बात की तह तक पहुंच जाएं और ऐसे तमाशे दिखाने की
®अवधि भी बहुत कम होती है जिसमें सोच-विचार करने के लिए पर्याप्त फुर्सत ®459

शेष हाशिया नं. (11)

पर संगठित करके उनकी उत्पत्ति से अवकाश प्राप्त कर लिया है तब से यह मशीन अपने ही पुर्ज़ों की उत्तमता के कारण स्वयं चल रही है तथा रब्बुल आलमीन (समस्त संसारों का प्रतिपालक) उस मशीन के चलने
में ®किसी प्रकार का अधिकार और हस्तक्षेप नहीं रखता और न उसे ®388
अधिकार है कि अपनी इच्छानुसार तथा अपनी प्रसन्नता-अप्रसन्नता की दृष्टि से अपनी प्रतिपालन की श्रेणियों की भिन्नता के अनुसार प्रकट करे

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

प्रतिपालक है, दयालु है, कृपालु है, इच्छा से व्यवस्था करने वाला है, युक्तिवान है, अन्तर्यामी है, सर्वशक्तिमान है, अजर-अमर है इत्यादि-इत्यादि। अतः यह क़ुर्आन करीम की एक परिभाषा ठहर गई कि अल्लाह एक ऐसी हस्ती का नाम है जो सम्पूर्ण विशेषताओं से परिपूर्ण है। इसी दृष्टि से इस आयत के प्रारंभ में भी अल्लाह का नाम लाए और फ़रमाया - اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ अर्थात इस अस्थायी संसार की स्थापित रहने वाली हस्ती समस्त विशेषताओं से परिपूर्ण है। यह इस बात की ओर संकेत किया कि यह संसार जिस सुदृढ़ अनुक्रम तथा उत्तम विधि से मौजूद और सम्पादित है उसके लिए यह विचार करना व्यर्थ है कि उन्हीं वस्तुओं में से कुछ वस्तुएं कुछ के लिए अनिवार्य कारण हो सकती हैं अपितु इस युक्ति-संगत कार्य के लिए जो सरासर युक्ति से भरपूर है एक ऐसे रचयिता (स्रष्टा)की आवश्यकता है जो अपने अस्तित्व में इच्छा मात्र से व्यवस्था करने वाला, नीतिवान, अत्यन्त ज्ञानी, कृपालु, अनश्वर और सम्पूर्ण
विशेषताओं से ®विशेष्य हो, अतः वही अल्लाह है जिसे अपनी हस्ती में ®433
सम्पूर्ण सम्पन्नता प्राप्त है। फिर सृष्टि के रचयिता के अस्तित्व के प्रमाण के पश्चात सत्याभिलाषी को इस बात का समझाना आवश्यक था कि वह

नहीं मिल सकती। अतः मक्कारों के लिए चालाकी की बहुत गुंजाइश रहती है तथा
Ⓟ460 उनके Ⓟगुप्त रहस्यों पर सूचित होने का कम अवसर मिलता है। इसके अतिरिक्त

शेष हाशिया नं. 11

या अपनी विशेष इच्छा से किसी प्रकार का परिवर्तन करे अपितु यहूदी लोग ख़ुदा तआला को भौतिक और साकार ठहरा कर भौतिक संसार की भांति उसका एक भाग समझते हैं। उनकी अपूर्ण दृष्टि में यह समाया हुआ है कि अधिकांश बातें जो सृष्टि पर वैध हैं वे ख़ुदा पर भी वैध हैं तथा उन्हें पूर्ण रूप से पवित्र नहीं समझते। उनकी तौरात में जो अक्षरांतरित और परिवर्तित है ख़ुदा तआला के सन्दर्भ में कई प्रकार का निरादर पाया जाता है। अतः पैदायश अध्याय : 32 में उल्लेख है कि ख़ुदा तआला याक़ूब से रात भर प्रातः काल तक कुश्ती लड़ता गया तथा उस पर विजयी न हुआ। इसी

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

रचयिता प्रत्येक प्रकार की भागीदारी से पवित्र है। अतः उस की ओर संकेत फ़रमाया - قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ اَللّٰهُ الصَّمَدُ① لَمْ يَلِدْ② وَلَمْ يُوْلَدْ③ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ④ इस थोड़ी सी इबारत को जो एक पंक्ति के बराबर भी नहीं। देखना चाहिए कि मृदुलता और उत्तमता से प्रत्येक प्रकार की भागीदारी से ख़ुदा तआला के अस्तित्व का पवित्र होना वर्णन किया है। उसका विवरण यह है कि बौद्धिक अवलंबन की दृष्टि से भागीदारी के चार प्रकार हैं। कभी भागीदारी संख्या में होती है, कभी पद में, कभी वंश में, कभी कर्म और प्रभाव में। अतः इस सूरह में इन चारों प्रकार की भागीदारी से ख़ुदा का पवित्र होना वर्णन किया और स्पष्ट तौर पर बता दिया कि वह अपनी संख्या में एक है दो या तीन नहीं और वह 'समद' है अर्थात पद की अनिवार्यता तथा लोगों को उसका मुहताज होने में अद्वितीय और अनुपम है तथा उसके अतिरिक्त समस्त वस्तुएं संभावित अस्तित्व और व्यक्तिगत तौर पर नष्ट होने वाली हैं जो प्रतिपल उसकी मुहताज हैं और वह ⑤لَمْ يَلِدْ (लम यलिद) है अर्थात् उस का कोई बेटा नहीं ताकि बेटा होने के कारण उस का भागीदार

① ② ③ ④ अलइख़लास : 2 से 5 ⑤ अलइख़लास : 4

बेचारे जन सामान्य भौतिक विज्ञान इत्यादि दर्शनशास्त्र संबंधी ज्ञानों की कुछ ख़बर नहीं रखते तथा स्वच्छन्द नीतिवान ने जो ®नाना प्रकार की विचित्र विशेषताएं रखीं ®461

शेष हाशिया नं. (11)

प्रकार इस नियम के विपरीत कि ख़ुदा तआला संसार की समस्त वस्तुओं का प्रतिपालक है। कुछ पुरुषों को उन्होंने ख़ुदा के बेटे बना रखा है, स्त्रियों को ख़ुदा की बेटियां लिखा गया है और बाइबल में किसी स्थान पर यह भी फरमा दिया है कि तुम सब ख़ुदा ही हो और सत्य तो यह है कि ईसाइयों ने भी उन्हीं शिक्षाओं से सृष्टि-पूजा का पाठ सीखा है, क्योंकि जब ईसाइयों

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

बन जाए और वह لَمْ يُوْلَدْ[1] (लम यूलद) है अर्थात् उस का कोई बाप नहीं ताकि बाप होने के कारण उसका भागीदार बन जाए और वह لَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا[2] (लम यकुनलहू कुफ़्वन) है अर्थात् उसके कार्यों में कोई उससे बराबरी करने वाला नहीं ताकि कार्य की दृष्टि से उसका भागीदार ठहरे। अतः इस प्रकार से स्पष्ट कर दिया कि ख़ुदा तआला चारों प्रकार की भागीदारी से पवित्र और सुरक्षित है तथा अकेला है उसका कोई भागीदार नहीं है। तत्पश्चात् उसके भागीदार रहित अकेला होने पर एक बुद्धि-संगत तर्क वर्णन किया और कहा

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا[3] وَمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ[4]

अर्थात् यदि पृथ्वी और आकाश में उस समस्त विशेषताओं से परिपूर्ण एक हस्ती के अतिरिक्त कोई अन्य ख़ुदा भी होता तो वे दोनों बिगड़ जाते क्योंकि आवश्यक था कि कभी वह ख़ुदाओं की जमाअत एक दूसरे के विपरीत कार्य करते। अतः इसी फूट और मतभेद से संसार में बिगाड़ उत्पन्न हो जाता तथा यदि पृथक-पृथक स्रष्टा होते तो उनमें से प्रत्येक अपनी सृष्टि की भलाई चाहता तथा उनके आराम के लिए दूसरों के आराम बरबाद

---

① अलइख़लास : 4, ② अलइख़लास : 5, ③ अलअंबिया : 23 ④ अलमौमिनून : 92

हैं उन विशेषताओं का उन्हें बिल्कुल ज्ञान नहीं होता। अत: वे हर समय और हर
Ⓟ462 युग में धोखा खाने को उद्यत हैं तथा क्योंकर धोखा न खाएं, Ⓟवस्तुओं की विशेषताएं

शेष हाशिया नं. (11)

ने ज्ञात किया कि बाइबल की शिक्षा अधिकांश लोगों को ख़ुदा के बेटे और ख़ुदा की बेटियां अपितु ख़ुदा ही बनाती है तो उन्होंने कहा कि आओ हम भी अपने मरयम के बेटे को उन्हीं में सम्मिलित करें ताकि वह दूसरे बेटों से कम न रह जाए। इसी दृष्टि से ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन करीम में फ़रमाया है कि ईसाइयों ने मरयम के बेटे को अल्लाह का बेटा बनाकर कोई नई बात

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

करना उचित समझता। अत: संसार में यह भी उपद्रव का कारण बनता। यहां तक तो लिम्मी तर्क से ख़ुदा का भागीदार रहित अकेला होना सिद्ध
Ⓟ434 किया, तत्पश्चात् ख़ुदा के भागीदार रहित अकेला होने पर Ⓟइन्नी तर्क वर्णन किया और कहा

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ①

अर्थात द्वैतवादी और ख़ुदा के अस्तित्व का इन्कार करने वालों को कह कि यदि ख़ुदा की व्यवस्था में कोई अन्य लोग भी भागीदार हैं या वर्तमान संसाधन ही पर्याप्त हैं तो उस समय की तुम इस्लाम की सच्चाई के सबूत और उसकी प्रतिष्ठा तथा शक्ति के मुक़ाबले पर प्रकोप ग्रस्त (ख़ुदा के प्रकोप का भाजन) हो रहे हो अपने उन भागीदारों को सहायता के लिए बुलाओ तथा स्मरण रखो कि वे कदापि तुम्हारे कष्टों का निवारण नहीं करेंगे और न विपत्ति को तुम्हारे सर से टाल सकेंगे। हे रसूल उन द्वैतवादियों को कह कि तुम अपने भागीदारों को जिनकी उपासना करते हो मेरे मुक़ाबले पर बुलाओ और मुझे पराजित करने के लिए जो उपाय कर सकते हो वे सब उपाय करो और मुझे थोड़ी सी भी छूट न दो तथा यह बात याद रखो कि मेरा समर्थक, सहायक और कार्य बनाने वाला वह ख़ुदा है जिसने क़ुर्आन को उतारा है और वह अपने सच्चे और नेक रसूलों के कार्य स्वयं बनाता

① बनी इस्राईल : 57

ऐसी ही आश्चर्यजनक हैं तथा अज्ञानता की स्थिति में और अधिक आश्चर्य का कारण होती हैं। उदाहरणतया मक्खी तथा कुछ अन्य प्राणियों में यह विशेषता है कि

शेष हाशिया नं. 11

नहीं ®निकाली अपितु पहले बेईमानों और द्वैतवादियों के पद-चिन्हों पर चले ®389 हैं। अतः हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग में यहूदियों की यह दशा थी कि उन पर सृष्टि-पूजा पूर्ण रूप से प्रभुत्व जमा चुकी थी तथा सच्ची आस्थाओं से बहुत दूर जा पड़ी थी, यहां तक कि उनमें से कुछ हिन्दुओं की भांति आवागमन को भी मानते थे और कुछ प्रतिफल-

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

है परन्तु जिन वस्तुओं को तुम लोग अपनी सहायता के लिए बुलाते हो तो संभव नहीं कि वे तुम्हारी सहायता कर सकें और न अपनी कुछ सहायता कर सकते हैं। तत्पश्चात ख़ुदा का प्रत्येक क्षति और दोष से पवित्र होना प्रकृति के नियमानुसार सिद्ध किया तथा फ़रमाया

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبۡعُ وَالۡاَرۡضُ وَمَنۡ فِيۡهِنَّ وَاِنۡ مِّنۡ شَىۡءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمۡدِهٖ وَلٰـكِنۡ لَّا تَفۡقَهُوۡنَ تَسۡبِيۡحَهُمۡ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيۡمًا غَفُوۡرًا ①

अर्थात् सातों आकाश और पृथ्वी और जो कुछ उन में है ख़ुदा की पवित्रता का बखान करते हैं तथा कोई वस्तु नहीं जो उसकी पवित्रता का बखान नहीं करती परन्तु तुम उनके इन बखानों को समझते नहीं अर्थात् पृथ्वी और आकाश पर विचार करके ख़ुदा का पूर्ण और पूनीत होना बेटों और भागीदारों से पवित्र होना सिद्ध हो रहा है परन्तु उनके लिए जो बोध रखते हैं। तत्पश्चात सृष्टि के उपासकों को आंशिक तौर पर दोषी ठहराया और उनका दोषों पर होना प्रकट किया और कहा -

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبۡحٰنَهٗ هُوَ الۡغَنِىُّ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ اِنۡ عِنۡدَكُمۡ مِّنۡ سُلۡطٰنٍۢ بِهٰذَا اَتَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ②

① बनी इस्राईल : 45 ② यूनुस : 69

Ⓟ463 यदि इस प्रकार मर जाएं Ⓟकि उनके अंगों के मिलने में कुछ अधिक भिन्नता न हो तथा अंग अपने मूल रूप और प्रकृति पर सुरक्षित रहें तथा दुर्गन्धयुक्त भी न होने

शेष हाशिया नं. (11)

दण्ड के बिल्कुल इन्कारी थे तथा कुछ अधिकारों को केवल संसार में सीमित समझते थे तथा प्रलय को स्वीकार नहीं करते थे और कुछ यूनानियों के पद-चिन्हों पर चलकर तत्त्व और आत्माओं को अनादि और अनुत्पत्त विचार करते थे और कुछ नास्तिकों की भांति आत्मा को नश्वर समझते थे और कुछ दार्शनिकों की

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

अर्थात् कुछ लोग कहते हैं कि ख़ुदा बेटा रखता है हालांकि बेटे का मुहताज होना एक क्षति है और ख़ुदा प्रत्येक क्षति से पवित्र है, वह तो समृद्ध और स्वच्छन्द है जिसे किसी की आवश्यकता नहीं। जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है सब उसी का है। क्या तुम ख़ुदा पर ऐसा दोषारोपण करते हो
Ⓟ435 जिसके समर्थन में तुम्हारे पास किसी Ⓟप्रकार का ज्ञान नहीं। ख़ुदा क्यों बेटों का मुहताज होने लगा, वह पूर्ण है तथा ख़ुदावन्दी के कर्त्तव्यों को अदा करने के लिए वह ही अकेला पर्याप्त है किसी और योजना की आवश्यकता नहीं। कुछ लोग कहते हैं कि ख़ुदा बेटियाँ रखता है, हालांकि वह इन सब कमियों से पवित्र है। क्या तुम्हारे लिए बेटे और उसके लिए बेटियां यह तो उचित वितरण न हुआ। हे लोगो! तुम भागीदार रहित एक ख़ुदा की उपासना करो जिसने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को उत्पन्न किया। चाहिए कि तुम उस शक्तिशाली और सामर्थ्यवान से डरो जिसने पृथ्वी को तुम्हारे लिए बिछौना, आकाश को तुम्हारे लिए छत बनाया तथा आकाश से पानी उतार कर तुम्हारे लिए नाना प्रकार के फलों में से भिन्न भिन्न प्रकार की आजीविका उत्पन्न की। अत: तुम जान-बूझ कर उन्हीं वस्तुओं को ख़ुदा का भागीदार मत बनाओ जो तुम्हारे लाभार्थ बनाई गई हैं। ख़ुदा एक है जिसका कोई भागीदार नहीं, वही आकाश में ख़ुदा है और वही पृथ्वी में ख़ुदा, वही प्रथम है और वही अन्तिम, वही प्रत्यक्ष है वही आन्तरिक, आंखें उसके मर्म को ज्ञात करने से असमर्थ हैं तथा उसे आंखों का मर्म ज्ञात है, वह सब का स्रष्टा है

पाएं अपितु अभी ताज़ा ही हों और मृत्यु पर दो-तीन घण्टे से अधिक समय न गुज़रा हो जैसे पानी में मरी हुई मक्खियां होती हैं तो इस स्थिति में यदि नमक बारीक पीस

शेष हाशिया नं. (11)

भांति यह धारणा रखते थे कि ख़ुदा तआला रब्बुल आलमीन (समस्त संसारों का प्रतिपालक) और इच्छानुसार नीतिवान नहीं है। अत: कोढ़ी के शरीर की तरह उनके समस्त विचार विकारग्रस्त हो गए थे और ख़ुदा तआला की 'परवरदिगारी' (प्रतिपालन), 'रहमानियत' (कृपा), 'रहीमियत' (दया) और

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

और कोई वस्तु उसके सदृश नहीं। उसके सृष्टा होने पर यह सबूत स्पष्ट है कि प्रत्येक वस्तु को एक निर्धारित अनुमान में परिवेष्टित और सीमित उत्पन्न किया है जिस से उस परिधि में नियंत्रित करने वाले तथा परिसीमन करने वाले का अस्तित्व सिद्ध होता है, उस के लिए समस्त प्रशंसाएं सिद्ध हैं तथा इस लोक और परलोक में वही वास्तविक ने'मतें प्रदान करने वाला है तथा उसी के अधिकार में प्रत्येक आदेश है तथा वही समस्त वस्तुओं की शरण स्थली और लौटकर जाने का स्थान है, ख़ुदा जिसके लिए चाहेगा उसके प्रत्येक पाप को क्षमा कर देगा, परन्तु द्वैतवाद को कदापि क्षमा नहीं करेगा। अत: जो व्यक्ति ख़ुदा से भेंट का अभिलाषी है उस पर अनिवार्य है कि ऐसे कार्य करे जिसमें किसी प्रकार का विकार न हो तथा ख़ुदा की उपासना में किसी वस्तु को भागीदार न बनाए। अत: ख़ुदा के साथ किसी अन्य वस्तु को कदापि भागीदार न बनाओ, ख़ुदा का भागीदार बनाना अत्यन्त अन्याय है, ख़ुदा के अतिरिक्त किसी अन्य से मनोकामनाएं मत Ⓟमांग कि सब नष्टⓅ436 हो जाएंगे एक उसी की हस्ती शेष रह जाएगी, उसी के अधिकार में आदेश है और वही तुम्हारी शरण-स्थली है, तेरे ख़ुदा ने यह चाहा है कि तू मात्र उसी की उपासना कर और अपने माता-पिता से उपकार करता रह और यदि वे तुझे इस बात की ओर बहकाएं कि तू मेरे साथ किसी अन्य को भागीदार बनाए तो उनकी आज्ञा का पालन न कर, यदि तुझे कोई कष्ट पहुंचे तो ख़ुदा के अतिरिक्त तेरा कोई मित्र नहीं कि उस कष्ट का निवारण करे और यदि

कर उस मक्खी इत्यादि को उसके नीचे दबाया जाए और फिर उस पर उतनी ही मिट्टी भी डाली जाए तो वह मक्खी जीवित होकर उड़ जाती है और यह मशहूर और

शेष हाशिया नं. (11)

'मालिक यौमिद्दीन' होने की पूर्ण विशेषताओं पर आस्था नहीं रखते थे और न उन विशेषताओं को उसके अस्तित्व से विशेष्य समझते थे और न उन विशेषताओं के पूर्ण रूप से ख़ुदा तआला में पाए जाने पर विश्वास रखते थे अपितु बहुत सी कुधारणाएं, बेईमानियां और मलिनताएं उनकी आस्थाओं

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

तुझे कुछ भलाई पहुंचे तो प्रत्येक भलाई के पहुंचाने पर ख़ुदा ही सामर्थ्यवान है कोई अन्य नहीं। समस्त लोगों पर उसी का आधिपत्य और अधिकार है और वही पूर्ण नीतिवान और प्रत्येक वस्तु की वास्तविकता से अवगत है, समस्त आवश्यकताओं को उसी से मांगना चाहिए। जो लोग उसके अतिरिक्त अन्य-अन्य वस्तुओं से अपनी आवश्यकता मांगते हैं वे वस्तुएं उनकी प्रार्थनाओं का कुछ उत्तर नहीं देतीं। ऐसे लोगों का उदाहरण यह है कि जैसे कोई पानी की ओर हाथ फैलाकर यह कहे कि हे पानी मेरे मुंह में आ जा, अतः स्पष्ट है कि पानी में यह शक्ति नहीं कि किसी की आवाज़ सुने और स्वतः उसके मुख में पहुंच जाए। इसी प्रकार द्वैतवादी लोग भी अपने उपास्यों से व्यर्थ तौर पर सहायता मांगते हैं जिस पर कोई लाभ प्राप्त नहीं हो सकता यद्यपि कोई ख़ुदा से सानिध्य प्राप्त हो परन्तु किसी को यह साहस नहीं कि अकारण सिफ़ारिश करके किसी अपराधी को मुक्त करा दे। ख़ुदा का ज्ञान उनकी समस्त वस्तुओं पर व्याप्त हो रहा है तथा उन्हें ख़ुदा के ज्ञानों से केवल इतनी ही सूचना होती है कि जिन बातों पर वह स्वयं सूचित करना चाहे इससे अधिक नहीं, और वे ख़ुदा तआला से भयभीत रहते हैं, ख़ुदा के सम्पूर्ण नाम उसी से विशेष्य हैं तथा उनमें किसी अन्य की भागीदारी वैध नहीं। अतः ख़ुदा को उन्हीं नामों से पुकारो जिन में किसी की भागीदारी नहीं है अर्थात् पृथ्वी और आकाशीय सृष्टियों के नाम ख़ुदा के लिए न बनाओ और न ख़ुदा के नाम सृजन की हुई वस्तुओं पर चरितार्थ करो, उन लोगों से

Ⓟजानी-पहचानी है जिसे प्राय: लड़के भी जानते हैं, परन्तु यदि किसी सरल स्वभाव Ⓟ464 व्यक्ति को इस बात का ज्ञान न हो तथा कोई धोखेबाज़ उस मूर्ख और अज्ञान के

शेष हाशिया नं. (11)

में भर गई थीं। उन्होंने तौरात की शिक्षा को अत्यन्त कुरूप वस्तु की भांति बनाकर द्वैतवाद और दुष्कृत्य की दुर्गन्ध का प्रसार आरंभ कर रखा था। अत: वे लोग ख़ुदा तआला को भौतिक और साकार ठहराने में तथा उसकी परवरदिगारी, रहमानियत और रहीमियत इत्यादि विशेषताओं के निलंबित

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

अलग रहो जो ख़ुदा के नामों में अन्य की भागीदारी वैध रखते हैं। शीघ्र ही वे Ⓟअपने कार्य का फल पाएंगे। हे द्वैतवादियो! तुम ख़ुदा को छोड़कर केवल Ⓟ437 निष्प्राण मूर्तियों की उपासना करते हो और सरासर झूठ पर दृढ़ हो रहे हो। अत: तुम मूर्तियों की अपवित्रता से बचो और झूठ बोलने को त्याग दो। क्या उनके पैर हैं जिन से वे चलती हैं, क्या उन के हाथ हैं जिनसे वे पकड़ती हैं, क्या उनकी आंखें हैं जिन से वे देखती हैं, क्या उनके कान हैं जिन से वे सुनती हैं। तुम सूर्य और चन्द्रमा को भी सज्दह न करो तथा उस ख़ुदा को सज्दह करो जिस ने इन समस्त वस्तुओं को उत्पन्न किया है। यदि वास्तव में ख़ुदा के उपासक हो तो उसी स्रष्टा की उपासना करो न कि सृष्टि की। सूर्य में यह शक्ति नहीं कि चन्द्रमा के स्थान पर पहुंच जाए और न रात दिन से आगे जा सकती है, कोई नक्षत्र अपने निर्धारित मार्ग से इधर-उधर नहीं हो सकता। पृथ्वी और आकाश कोई भी ऐसी वस्तु नहीं जो सृष्टि और ख़ुदा का बन्दा होने से बाहर हो और यदि कोई कहे कि मैं भी ख़ुदा के मुक़ाबले पर एक ख़ुदा हूं तो ऐसे व्यक्ति को नरक में दाखिल कर दें और अत्याचारियों को हम यही दण्ड दिया करते हैं। अत: तुम ख़ुदा और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और यह न कहो कि तीन हैं। इस से पृथक हो जाओ कि यही तुम्हारे लिए उचित है। हे लोगो! एक उदाहरण है तुम ध्यान से सुनो जिन वस्तुओं से तुम मनोकामनाएं मांगते हो वे वस्तुएं तो एक मक्खी भी उत्पन्न नहीं कर सकतीं और यदि मक्खी उन से कुछ छीन ले तो उससे छुड़ा नहीं

समक्ष मक्खी मसीह होने का दावा करे तथा उसी कूटनीति से मक्खियों को जीवित करे और प्रत्यक्ष तौर पर कोई मंत्र इत्यादि पढ़ता रहे जिससे यह बताना चाहता हो

शेष हाशिया नं. (11)

जानने में तथा उन विशेषताओं में अन्य वस्तुओं को भागीदार समझने में अधिकांश द्वैतवादियों के पेशवा प्राथमिक पूर्वजों में से हैं।

Ⓟ390 ⓅयI तो यहूदियों का हाल हुआ परन्तु खेद कि ईसाइयों ने थोड़े ही समय में अपनी दशा इन से अधिक निकृष्ट बना ली और उपर्युक्त सच्चाइयों में

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

सकतीं। इच्छुक भी कमज़ोर हैं और वांछित भी कमज़ोर अर्थात् सृष्टि वस्तुओं से मनोकामनाएं मांगने वाले मंद बुद्धि है और सृष्टि वस्तुएं जो उपास्य ठहराई गईं वे शक्ति की दृष्टि से निर्बल हैं। द्वैतवादी लोगों ने ख़ुदा को यथा-योग्य नहीं पहचाना, वे ऐसा समझते हैं कि जैसे ख़ुदा का कारख़ाना दूसरे भागीदारों के बिना चल नहीं सकता, हालांकि ख़ुदा अपनी हस्ती में सर्वशक्तिमान तथा प्रभुत्व रखने वाला है, समस्त शक्तियां उसी के लिए विशेष हैं तथा द्वैतवादी लोग ऐसे मूर्ख हैं कि जिन्नों को ख़ुदा का भागीदार
Ⓟ438 बना रखा है तथा उसके लिए किसी ज्ञान और Ⓟवास्तविकता पर अवगत हुए बिना बेटे और बेटियां बना रखी हैं और यहूदी कहते हैं कि 'उज़ैर' ख़ुदा का बेटा है और ईसाई मसीह को ख़ुदा का बेटा बनाते हैं। ये सब उनकी मौखिक बातें हैं जिनकी सच्चाई पर कोई सबूत प्रस्तुत नहीं कर सकते अपितु केवल पूर्वकालीन द्वैतवादियों की बराबरी कर रहे हैं, धिक्कृत लोगों ने सदमार्ग कैसा त्याग दिया, अपने पादरियों, भिक्षुओं और मरयम के बेटे को ख़ुदा बना लिया है, हालांकि आदेश यह था कि केवल एक ख़ुदा की उपासना करो, ख़ुदा अपने अस्तित्व में पूर्ण है उसे कोई आवश्यकता नहीं कि बेटा बनाए। उसकी हस्ती में कौन सी कमी रह गई थी जो बेटे के अस्तित्व से पूर्ण हो गई और यदि कोई कमी नहीं थी तो फिर क्या बेटा बनाने में ख़ुदा एक व्यर्थ कार्य करता जिसकी उसे कुछ आवश्यकता न थी, वह तो प्रत्येक निरर्थक कार्य और प्रत्येक अपूर्ण स्थिति से पवित्र है, जब

कि जैसे वह उसी मंत्र द्वारा मक्खियों को जीवित करता है तो फिर उस मूर्ख को इतनी बुद्धि और फ़ुर्सत कहां है कि जांच-पड़ताल करता फिरे। क्या तुम देखते नहीं

शेष हाशिया नं. (11)

से किसी सच्चाई पर स्थापित न रहे और जो ख़ुदा की पूर्ण विशेषताएं थीं वे सब मरयम के बेटे पर थोप दीं। उनके धर्म का सार यह है कि ख़ुदा तआला संसार की समस्त वस्तुओं का प्रतिपालक नहीं है अपितु मसीह उसके प्रतिपालन से बाहर है और मसीह स्वयं ही प्रतिपालक (रब्ब) है। संसार

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

किसी कार्य को कहता है कि हो जा तो वह हो जाता है। मुसलमान जो ईमान लाए हैं जिन्होंने शुद्ध एकेश्वरवाद धारण किया और यहूदी जिन्होंने वलियों (ऋषियों) और नबियों को अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाला बना दिया और सृष्टि वस्तुओं को ख़ुदा की व्यवस्था में भागीदार नियुक्त किया और पारसी जो नक्षत्रों की उपासना करते हैं और ईसाई जिन्होंने मसीह को ख़ुदा का बेटा ठहराया है और मजूस जो अग्नि और सूर्य के उपासक हैं, शेष समस्त द्वैतवादी जो विभिन्न प्रकार के द्वैतवाद में लिप्त हैं ख़ुदा उन सब में प्रलय के दिन निर्णय कर देगा, ख़ुदा प्रत्येक बात पर सामर्थ्यवान है तथा सृष्टि के उपासकों का असत्य पर होना कुछ गुप्त बात नहीं। यह बात अत्यन्त स्पष्ट है और प्रत्येक व्यक्ति विचारशील बुद्धि से देख सकता है कि जो कुछ पृथ्वी और आकाश में आकाशीय ग्रहों, पृथ्वी का कण-कण, वनस्पति, अनेकों जड़ पदार्थ, अनेकों जीव-जन्तु, भूतत्व, चन्द्र, सूर्य, तारे पर्वत, वृक्ष तथा नाना प्रकार के अनेकों जीव और मनुष्य हैं जिनकी द्वैतवादी लोग उपासना करते हैं। यह समस्त वस्तुएं ख़ुदा को सज्दह कर रही हैं अर्थात् अपनी हस्ती, स्थायित्व और अस्तित्व में उसकी मुहताज हैं तथा पूर्ण विनम्रता के साथ उसकी ओर झुकी हुई हैं तथा उससे निस्पृह नहीं। अतएव उन्हीं वस्तुओं से जो स्वयं ही मुहताज हैं आवश्यकताओं को मांगना स्पष्ट पथ-भ्रष्टता है तथा कुछ लोग जो उपद्रवी हो जाते ®हैं वे भी विनय से रिक्त ®439 नहीं क्योंकि इसी संसार में भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्टों, बुराइयों, चिन्ताओं

465 कि धोखेबाज़ लोग इसी युग में संसार को नष्ट कर रहे हैं। कोई सोना बना कर दिखाता है तथा रसायनज्ञता का दावा करता है, कोई स्वयं ही पृथ्वी के नीचे पत्थर

शेष हाशिया नं. 11

में जो कुछ उत्पन्न हुआ वह उनके मिथ्या विचारानुसार बतौर व्यापक नियम सृष्टि और नश्वर नहीं अपितु मरयम का बेटा संसार में जन्म लेकर तथा स्पष्ट सृष्टि होकर फिर अनश्वर और ख़ुदा के समान अपितु स्वयं ही ख़ुदा है। उसकी अद्‌भुत हस्ती में एक ऐसी विचित्रता है कि बावजूद नश्वर होने

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

और संतापों का अज़ाब (यातना) उन पर आता रहता है और प्रलय की यातना भी उनके लिए तैयार है। अतः ख़ुदा के अतिरिक्त कौन सी वस्तु है जिस के अस्तित्व पर दृष्टि डालने से समृद्ध और स्वच्छंद होने की विशेषता उसमें पाई जाती है ताकि कोई उसे अपना उपास्य ठहराए तथा जबकि कोई वस्तु ख़ुदा के अतिरिक्त समृद्ध और स्वच्छंद नहीं तो समस्त सृष्टि-उपासकों का असत्य पर होना सिद्ध है। यह क़ुर्आन करीम की कुछ आयते हैं जिन्हें ऋग्वेद की लम्बी-चौड़ी श्रुतियों की तुलना में हमने यहां वर्णन किया है। अतः वेद की श्रुतियों में जितना व्यर्थ विस्तार और निरर्थक वक्तव्य तथा निराधार और धोखा देने वाला वक्तव्य और अनुचित बातें हैं इसकी तुलना में देखना चाहिए कि क़ुर्आन करीम की आयतों में क्योंकर पूर्ण संक्षेप और एकेश्वरवाद रूपी दरिया को युक्ति-संगत सबूतों तथा दर्शनयुक्त तर्कों सहित बहुत अल्प शब्दों में भर दिया है तथा क्योंकर प्रमाणित और संक्षिप्त इबारत में एकेश्वरवाद की समस्त आवश्यकताओं का प्रमाण देकर सत्य-के अभिलाषियों पर आध्यात्म ज्ञान का द्वार खोल दिया है और क्योंकर आयत अपने शक्तिशाली वर्णन द्वारा अभिलाषी हृदयों पर पूरा-पूरा प्रभाव डाल रही है तथा आन्तरिक अंधकारों को दूर करने के लिए श्रेष्ट स्तर का प्रकाश दिखा रही है। इसी से मनीषी व्यक्ति समझ सकता है कि किताब में वर्णन की सरस और सुबोध शैली तथा वक्तव्य की प्रबलता पाई जाती है तथा कौन सी किताब सरस तथा सुबोध वर्णन से वंचित है। नेक हृदय और न्यायकर्ता

दबा कर फिर हिन्दुओं के सामने देवी निकालता है, कुछ ने ऐसा भी किया है कि जमालगोटे का तेल अपनी दवात की स्याही में मिलाकर उस स्याही से किसी मूर्ख को तावीज़ लिखकर दिया ताकि दस्त आने पर तावीज़ का प्रभाव प्रकट हो। ऐसे ही

शेष हाशिया नं. (11)

के अनादि है और बावजूद इसके कि स्वयं अपने इक़रार से एक अनिवार्य अस्तित्व के अधीन तथा उसका नौकर है परन्तु फिर भी स्वयं ही अनिवार्य अस्तित्व, स्वच्छन्द तथा किसी के अधीन नहीं तथा बावजूद इसके कि स्वयं अपने इक़रार से असमर्थ और अशक्त है परन्तु फिर भी ईसाइयों के

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

मनुष्य जब मुकाबला और तुलना की नीयत से वेद और क़ुर्आन करीम की इबारत पर दृष्टि डालेगा तो उसे तुरन्त दिखाई देगा कि वेद अपनी इबारत में ऐसा अपरिपक्व और अपूर्ण है कि पाठक के हृदय में भिन्न-भिन्न प्रकार के सन्देहों को जन्म देता है तथा ख़ुदा तआला के संबंध में नाना प्रकार की कुधारणाओं में डालता है और किसी स्थान पर भी अपने दावे को शक्तिशाली ढंग से स्पष्ट करके नहीं दिखाता और न प्रमाण तक पहुंचाता है अपितु स्वयं यह ज्ञात ®ही नहीं होता कि उसका दावा क्या है और यदि कुछ ज्ञात भी ®440 होता है तो केवल यही कि वह अग्नि और सूर्य तथा इन्द्र इत्यादि की उपासना कराना चाहता है तथा उस पर तर्क और सबूत प्रस्तुत नहीं करता कि कब से और क्योंकर उन वस्तुओं को ख़ुदाई का पद प्राप्त हो गया और फिर बावजूद इस निरर्थक वर्णन में चारों वेद इतनी लम्बी-चौड़ी इबारत में लिखे गए हैं कि जिनका अध्ययन शायद कोई बहुत परिश्रमी मनुष्य ही बशर्ते कि उसकी आयु भी अधिक हो कर सके। इसकी तुलना में जब न्याय-प्रिय व्यक्ति क़ुर्आन करीम को देखे तो उसे तुरन्त ज्ञात होगा कि क़ुर्आन करीम में संक्षिप्त, अल्प और तार्किक शब्दों द्वारा वर्णन में सुबोध शैली की आवश्यक विशेषता की कला का वह प्रदर्शन किया है कि वह बावजूद सम्पूर्ण धार्मिक आवश्यकताओं तथा समस्त सबूतों और तर्कों के इतनी मोटाई में जो बहुत कम है कि मनुष्य केवल तीन-चार पहर

अन्य सहस्त्रों धोखे और छल हैं कि जो इसी युग में हो रहे हैं तथा कुछ कपट ऐसे
Ⓟ466 गहरे हैं कि जिन से बड़े-बड़े बुद्धिमान Ⓟधोखा खा जाते हैं और भौतिकी की जटिल

शेष हाशिया नं. (11)

Ⓟ391 निराधार विचार में सर्वशक्तिमान है और असमर्थ Ⓟनहीं और बावजूद इसके कि स्वयं अपने इक़रार से परोक्ष की बातों के सन्दर्भ में अज्ञानी मात्र है यहां तक कि प्रलय की भी ख़बर नहीं कि कब आएगी परन्तु फिर भी ईसाइयों की सुधारणा के अनुसार अन्तर्यामी है और बावजूद इसके कि स्वयं अपने

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

के समय में आरंभ से अन्त तक एकाग्रचित्त होकर उसे पढ़ सकता है। अत: देखना चाहिए कि क़ुर्आन करीम की यह अदभुत सुबोध शैली कितना बड़ा चमत्कार है कि ज्ञान के एक अथाह समुद्र को तीन-चार छोटे-छोटे भागों में समेट कर दिखा दिया है और युक्ति तथा नीति के एक संसार को कुछ पृष्ठों में भर दिया है। क्या कभी किसी ने देखा या सुना है कि इतनी छोटी किताब जिसमें समस्त युग की सच्चाइयों का समावेश हो क्या किसी बुद्धिमान की बुद्धि मनुष्य के लिए यह उच्च पद प्रस्तावित कर सकती है कि वह गागर में सागर भर दे, थोड़े से शब्दों का प्रयोग करके युक्ति और नीतियों का वर्णन इस प्रकार कि धार्मिक ज्ञान की कोई सच्चाई बाहर न रहे। ये वास्तविक और सच्ची बातें हैं जिन्हें हम लिखते हैं जिसे इन्कार हो वह हमारे मुक़ाबले पर आकर परीक्षा कर ले। यहां यह भी स्मरणीय है कि वेद की वाणी एक अन्य आवश्यक लक्षण से कि जो ईशवाणी के लिए नितान्त आवश्यक है रिक्त है और वह यह है कि वेद में भविष्यवाणियों का नामोनिशान नहीं तथा वेद में परोक्ष के समाचारों का कदापि समावेश नहीं है, हालांकि जो किताब ख़ुदा की वाणी कहलाती है उसके लिए यह
Ⓟ441 आवश्यक बात Ⓟहै कि उसमें ख़ुदा के प्रकाश प्रकट हों अर्थात् ख़ुदा तआला जैसे अन्तर्यामी, सर्वशक्तिमान, अद्वितीय और अनुपम है उसी प्रकार अनिवार्य है कि उसकी वाणी जो उसकी विशेषताओं की पूर्णता का दर्पण है उपर्युक्त विशेषताओं को अपनी वर्तमान स्थिति में सिद्ध करता हो। स्पष्ट

बारीकियां और शारीरिक तरकीबें तथा शक्तियों की अद्‌भुत विशेषताएं जो वर्तमान युग में नवीन अनुभवों द्वारा दिन-प्रतिदिन फैलती जाती हैं। ये नवीन बातें हैं जिनसे

शेष हाशिया नं. (11)

इक़रार से तथा नबियों के धर्म-ग्रन्थों की साक्ष्य से एक असहाय बन्दा है परन्तु फिर भी ईसाई सज्जनों की दृष्टि में ख़ुदा है और बावजूद इसके कि स्वयं अपने इक़रार से नेक और निष्पाप नहीं है परन्तु फिर भी ईसाइयों के विचार में नेक और निष्पाप है। अत: ईसाई जाति भी एक विचित्र जाति है

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

है कि ख़ुदा की वाणी का मूल उद्देश्य यही है ताकि उसके माध्यम से ख़ुदा के अस्तित्व और उसकी विशेषताओं का पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त हो और ताकि मनुष्य काल्पनिक कारणों से उन्नति करके चश्मदीद तौर पर देखकर विश्वास अपितु वास्तविक विश्वास के स्तर पर पहुंच जाए। स्पष्ट है कि ज्ञान का यह स्तर और श्रेणी तब ही प्राप्त हो सकती है कि जब ख़ुदा की वाणी सत्याभिलाषी को केवल बुद्धि के सुपुर्द न करे अपितु अपनी व्यक्तिगत आभा से प्रत्येक आस्था को प्रकट कर दे। उदाहरणतया अधिकांश भविष्यवाणियां और परोक्ष के समाचार वर्णन करके फिर उनका पूर्ण होना प्रदर्शित करके अन्तर्यामी होने की विशेषता जो ख़ुदा तआला में पाई जाती है सत्याभिलाषी पर सिद्ध करे। इसी प्रकार अपने अनुयायियों को पूर्ण रूप से सहायता का आश्वासन देकर फिर उन आश्वासनों को पूर्ण करके अपना सामर्थ्यवान, सच्चा और सहायक होना प्रमाणित कर दे, परन्तु इन बातों में से वेद में कोई भी नहीं बशर्ते कि कोई न्याय-प्रिय हो और ध्यानपूर्वक दृष्टि डाले तो उस पर स्पष्ट होगा कि वेद में इन निशानियों में से कोई निशानी नहीं पाई जाती तथा ईशवाणी जिस ज्ञान की पूर्णता हेतु उतरती है वेद के पास उस पूर्णता के साधक उपलब्ध नहीं अपितु सत्य तो यह है कि एक मनीषी व्यक्ति आध्यात्म ज्ञान की प्राप्ति के लिए जितने साधन तैयार करता है तथा यथाशक्ति और यथासामर्थ्य अपने क़दम को ग़लती और भूल से सुरक्षित रखता है वेद को वह श्रेणी भी प्राप्त नहीं। वेद के नियम ऐसे

झूठे चमत्कार दिखाने वाले नए-नए छल-कपट दिखा सकते हैं अतः इस जांच-पड़ताल से स्पष्ट है कि जो चमत्कार प्रत्यक्षतया इन छल-कपट से समरूपता रखते

शेष हाशिया नं. (11)

जिन्होंने दो विपरीत बातों को एकत्र कर दिखाया तथा परस्पर विपरीत को उचित समझ लिया और यद्यपि उनकी आस्था के स्थापित होने से मसीह का झूठा होना अनिवार्य हुआ, परन्तु उन्होंने अपनी आस्था का परित्याग न किया, एक अपमानित, असहाय और तुच्छ बन्दे को समस्त संसारों का

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

निरर्थक और स्पष्ट तौर पर खण्डनीय हैं कि दस वर्ष का बालक भी बशर्ते कि द्वेष और हठ से काम न ले उनकी ग़लती और कुमार्ग पर साक्ष्य दे सकता है फिर भी ज्ञात होना चाहिए कि जिन अध्यात्मिक प्रभावों पर
Ⓟ442 क़ुर्आन करीम आधारित है वेद उन से भी पूर्णतया वंचित और Ⓟरिक्त हैं। विवरण इसका यह है कि क़ुर्आन करीम बावजूद सरस और सुबोध शैली की उन समस्त विशेषताओं, नीति और ज्ञान से भरपूर होने के अपने मुबारक अस्तित्व में एक ऐसा अध्यात्मिक प्रभाव रखता है कि उसका सच्चा अनुसरण मनुष्य को सुदृढ़ स्थायित्व, प्रकाशमान और प्रफुल्ल अन्तःकरण, ख़ुदा का मान्य तथा उससे वार्तालाप का पात्र बना देता है तथा उसमें वे प्रकाश उत्पन्न करता है तथा परोक्ष की कृपाएं और निश्चित समर्थन उसे प्रदान कर देता है जो दूसरों में कदापि नहीं पाए जाते और ख़ुदा तआला की ओर से वह मनोहर और रमणीक वाणी (कलाम) उस पर उतरती है जिस से उस पर पल-प्रतिपल स्पष्ट होता जाता है कि वह क़ुर्आन करीम के सच्चे अनुसरण तथा हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आज्ञापालन से उन श्रेणियों तक पहुंचाया गया है जो ख़ुदा के प्रियतमों के लिए विशेष हैं और उन ख़ुदाई प्रसन्नताओं तथा सहानुभूतियों से भाग्यशाली हो गया है जिनसे वे पूर्ण ईमानदार लाभान्वित थे जो इससे पूर्व गुज़र चुके हैं न केवल कथन के तौर पर अपितु वर्तमान परिस्थिति के तौर पर भी उन

हैं यद्यपि कि वे सच्चे भी हों तब भी उनकी वास्तविकता गुप्त है तथा उनके सबूत के संदर्भ में बड़ी-बड़ी कठिनाइयां हैं।

शेष हाशिया नं. (11)

प्रतिपालक बना लिया तथा उस पर हर प्रकार का अपमान, मृत्यु, दुख, दर्द, साकार होना, आवागमन, परिवर्तन, स्थानांतरण, नश्वरता और जन्म को वैध रखा है। मूर्खों ने ख़ुदा को भी एक खेल बना लिया है, ईसाइयों की ही क्या बात है उन से पूर्व कई असहाय बन्दे ख़ुदा बनाए ℗गए हैं। कोई℗392

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

समस्त अनुरागों का एक स्वच्छ झरना अपने निष्ठावान हृदय में प्रवाहित देखता है तथा अल्लाह से संबंध की अपने खुले सीने में एक ऐसी अवस्था देखता है जिसे न शब्दों द्वारा और न किसी उदाहरण द्वारा वर्णन कर सकता है तथा ख़ुदा के प्रकाशों को अपने ऊपर वर्षा की भांति बरसते हुए देखता है। वे प्रकाश कभी परोक्ष के समाचारों के रूप में, कभी ज्ञान और आध्यात्म ज्ञानों के रंग में, कभी उत्तम सदाचारों की शैली में उस पर अपनी छाया डालते रहते हैं। क़ुर्आन करीम के प्रभाव श्रृंखलाबद्ध चले आते हैं तथा जब से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुबारक हस्ती के सत्य का सूर्य संसार में उदय हुआ उस समय से आज तक सहस्त्रों लोग जो पात्रता और योग्यता रखते थे ख़ुदा की वाणी और मान्य रसूल (स.अ.व.) के अनुसरण से उपर्युक्त श्रेष्ठ श्रेणियों तक पहुंच चुके हैं और पहुंचते जाते हैं और ख़ुदा तआला उन पर अत्यधिक और लगातार मेहरबानियां तथा ℗कृपाएं℗443 करता है और अपने समर्थन तथा अनुकम्पाएं दिखाता है कि तत्वदर्शियों की दृष्टि में सिद्ध हो जाता है कि वे लोग ख़ुदा तआला की कृपा की एक विशाल छाया, ख़ुदाई अनुकम्पा की एक प्रतिष्ठित पद्धति है तथा देखने वालों को स्पष्ट दिखाई देता है कि वे चमत्कारिक इनामों से सम्मानित हैं और विचित्र तथा अद्भुत चमत्कारों से प्रतिष्ठत हैं और प्रेम की सुगंध से सुगंधित हैं, मान्यता के गौरवों से गौरवान्वित हैं, सर्वशक्तिमान का प्रकाश

Ⓟ467 Ⓟ**छठी भूमिका** :- जिस प्रकार गुप्त वास्तविकता वाले चमत्कार बौद्धिक चमत्कारों से समानता नहीं कर सकते, इसी प्रकार भविष्यवाणियां तथा प्राचीन काल

शेष हाशिया नं. (11)

कहता है रामचन्द्र ख़ुदा है, कोई कहता है कि नहीं कृष्ण की ख़ुदाई उससे अधिक शक्तिशाली है। इसी प्रकार कोई बुद्ध को, कोई किसी को तो कोई किसी को ख़ुदा बनाता है। ऐसा ही अन्तिम युग के इन विवेकहीन लोगों ने भी प्रथम द्वैतवादियों के पद चिन्हों पर चलते हुए मरयम के बेटे को भी ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा बना लिया। अतः ईसाई लोग न वास्तविक

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

उनकी संगति में, उनके ध्यान में, उनके साहस में, उनकी दुआ में, उनकी दृष्टि में, उनके सदाचार में उनके रहन-सहन के ढंग में, उनकी प्रसन्नता में, उनके क्रोध में, उनकी प्रेरणा में, उनकी घृणा में, उनकी गति में, उनकी स्थिरता में, उनके बोलने में, उनकी ख़ामोशी में, उनके प्रत्यक्ष में, उनके आन्तरिक में ऐसा भरा हुआ विदित होता है कि जैसे बारीक और स्वच्छ बोतल एक अत्यन्त उत्तम इत्र से भरी होती है तथा उनकी संगत की कृपा, सम्बन्ध और प्रेम से वे बातें प्राप्त हो जाती हैं कि जो कठिन तपस्याओं से प्राप्त नहीं हो सकतीं तथा उनके सन्दर्भ में श्रद्धा और आस्था उन्पन्न करने से ईमान की अवस्था एक अन्य रूप धारण कर लेती है तथा उत्तम सदाचारों को प्रकट करने में एक शक्ति जन्म ले लेती है तथा हैरानी-पागलपन और तामसिकता की वृति कम होने लगती है तथा सन्तोष और मृदुलता उत्पन्न होती जाती है तथा योग्यता, पात्रता, सामर्थ्य और ईमानी अभिरुचि के अनुसार जोश मारती है तथा प्रेम और लगाव प्रकट होता है, ख़ुदा के स्मरण का आनन्द बढ़ता है, उनकी लम्बी संगत से आवश्यक तौर पर यह इक़रार करना पड़ता है कि वे अपनी ईमानी शक्तियों और नैतिक परिस्थितियों में, संसार से विरक्तता में, ख़ुदा से ध्यान लगाने में, ख़ुदा से अनुराग में, प्रजा से सहानुभूति, वफ़ा, श्रद्धा, भक्ति सहमति और स्थायित्व में उस उच्च पद पर
Ⓟ444 हैं जिसका उदाहरण संसार में उपलब्ध नहीं और सदबुद्धि तुरन्त ज्ञात Ⓟकर

की बातें जो नुजूमियों, ज्योतिषियों, जादूगरों तथा इतिहासकारों की वर्णन-शैली से समरूप हैं उन भविष्यवाणियों और परोक्ष की सूचनाओं के समरूप नहीं हो सकतीं

शेष हाशिया नं. (11)

ख़ुदा को रब्बुल आलमीन समझते हैं न उसे रहमान और रहीम समझते हैं और न प्रतिफल और दण्ड पर उसका अधिकार होने पर विश्वास रखते हैं अपितु उनके विचार में वास्तविक ख़ुदा के अस्तित्व से पृथ्वी और आकाश खाली पड़ा हुआ है और जो कुछ है मरयम का बेटा ही है। यदि प्रतिपालक है तो वही है, यदि रहमान है तो वही है, यदि रहीम है तो वही है, यदि

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

लेती है कि वे जंजीरें और बंधन उनके पैरों से निकाले गए हैं जिनमें दूसरे लोग गिरफ्तार हैं, वह संकीर्णता और संकोच उनके सीने से दूर किया गया है जिसके कारण अन्य लोगों के हृदय संकीर्णता और संताप में हैं, इसी प्रकार वे लोग ख़ुदा से बातचीत और वार्तालाप से अधिकतर सम्मानित होते हैं तथा निरन्तर और स्थायी वार्तालाप के योग्य ठहर जाते हैं और अल्लाह तआला तथा उसके तत्पर बन्दों के मध्य आदेश और पथ-प्रदर्शन के लिए माध्यम गिने जाते हैं, उन का प्रकाश अन्य हृदयों को प्रकाशित कर देता है और जैसे बसन्त ऋतु के आने से वनस्पति शक्तियां जोश मारने लगती हैं, इसी प्रकार उनके प्रकटन से स्वाभाविक प्रकाश सद्स्वभावों में उत्तेजना उत्पन्न करते हैं तथा प्रत्येक भाग्यशाली व्यक्ति का हृदय स्वयं यही चाहता है कि अपने सौभाग्य की योग्यताओं को पूर्ण प्रयास के साथ प्रकटन-मंच पर लाए तथा अचेतना के पर्दों से मुक्त हो, पाप, दुराचार और दुष्चरित्रता के धब्बों, अज्ञानता तथा अनभिज्ञता के अन्धकारों से मुक्ति प्राप्त करे। अत: उनके मुबारक युग में कुछ ऐसी विशेषता होती है और प्रकाश कुछ इस प्रकार से अस्त-व्यस्त हो जाता है कि प्रत्येक मोमिन और सत्याभिलाषी ईमानी शक्ति के अनुसार अपने हृदय में किसी प्रत्यक्ष कारण के बिना धार्मिकता का प्रकटन और रुचि पाता है तथा साहस में बढ़ोतरी और शक्ति देखता है। अत: उनके इस उत्तम इत्र से जो उन्हें पूर्ण अनुसरण की बरकत

कि जो मात्र सूचनाएं नहीं हैं अपितु उनके साथ ख़ुदा की शक्ति भी सम्मिलित है क्योंकि संसार में नबियों के अतिरिक्त और भी ऐसे बहुत से लोग दिखाई देते हैं कि

शेष हाशिया नं. (11)

'मालिके यौमिद्दीन' है तो वही है। इसी प्रकार सामान्य हिन्दू और आर्य भी इन सच्चाइयों से विमुख हैं, क्योंकि उनमें से आर्य लोग तो ख़ुदा तआला को स्रष्टा ही नहीं समझते तथा अपनी आत्माओं का प्रतिपालक उसे नहीं ठहराते तथा उनमें से मूर्ति-पूजक प्रतिपालन की विशेषता को इस समस्त संसारों के प्रतिपालक से विशेष्य नहीं समझते और तेतीस करोड़ देवताओं
Ⓟ393 को प्रतिपालन के कारोबार में Ⓟख़ुदा तआला का भागीदार ठहराते हैं और उन से मनोकामनाएं मांगते हैं ये दोनों ही ख़ुदा तआला की रहमानियत के भी इन्कारी हैं तथा अपने वेद के अनुसार यह आस्था रखते हैं कि रहमानियत की विशेषता ख़ुदा तआला में कदापि नहीं पाई जाती और ख़ुदा तआला ने जो कुछ संसार के लिए बनाया है यह स्वयं संसार के शुभ कर्मों के कारण ख़ुदा को बनाना पड़ा अन्यथा परमेश्वर स्वेच्छा से किसी से नेकी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

से प्राप्त हुआ है प्रत्येक सदभावक को अपनी सदभावना के अनुसार भाग पहुंचता है। हां जो लोग हमेशा के दुर्भाग्यशाली हैं वे इस से कुछ भाग नहीं पाते अपितु और भी शत्रुता, द्वेष और दुर्भाग्य में बढ़ कर भयंकर नर्क में गिरते हैं। इसी की ओर संकेत है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है - خَتَمَ اللّٰہُ عَلٰی قُلُوۡبِہِمۡ[1]। फिर हम इसी वक्तव्य को भली भांति समझाने के उद्देश्य
Ⓟ445 से दूसरे शब्दों में पुनरावृत्ति करते हुए इस के विवरण का Ⓟउल्लेख करते हैं कि क़ुर्आन करीम का अनुसरण करने वालों को जो इनाम प्राप्त होते हैं और जो अनुदान विशेष उन्हें मिलते हैं यद्यपि कि वे वर्णन और व्यक्त करने से बाहर हैं परन्तु उनमें से अनेक ऐसे महान इनाम हैं जिन्हें यहां विस्तारपूर्वक सत्याभिलाषियों के मार्ग-दर्शन के उद्देश्य से बतौर नमूना उल्लेख करना हित में हैं। अत: वे निम्नलिखित हैं :-

① अलबक़रह : 8

ऐसी-ऐसी सूचनाएं घटना से पूर्व बताया करते हैं कि भूकम्प आएंगे, ®संक्रामक®468 रोग पड़ेगा, युद्ध होंगे, अकाल पड़ेगा, एक जाति दूसरी जाति पर चढ़ाई करेगी,

शेष हाशिया नं. 11

नहीं कर सकता और न कभी की। इसी प्रकार ख़ुदा तआला को पूर्ण तौर पर रहीम (कृपालु) भी नहीं समझते क्योंकि उन लोगों की आस्था है कि कोई पापी चाहे कैसा ही सच्चे हृदय से पश्चाताप करे तथा चाहे वह वर्षों तक विनय, विलाप और शुभकर्मों में व्यस्त रहे, ख़ुदा उसके पापों को जो उस से हो चुके हैं कदापि क्षमा नहीं करेगा जब तक वह कई लाख योनियों को भुगत कर अपना दण्ड न पा चुके। किसी ने ज्यों ही एक पाप किया फिर न वहां पश्चाताप काम आएगा, न उपासना, न ख़ुदा का भय, न ख़ुदा से प्रेम, न अन्य कोई शुभ कर्म जैसे वह जीवित रहते हुए ही मर गया तथा ख़ुदा तआला की कृपालता से पूर्णरूपेण निराश हो गया। इसी प्रकार ये लोग प्रतिफल के दिन पर जिस के अनुसार ख़ुदा तआला ®'मालिके यौमिद्दीन'®394 कहलाता है उचित तौर पर ईमान नहीं रखते तथा जिन उपर्युक्त ढंगों के

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

इन्हीं सब में ज्ञान और मआरिफ़ हैं जो पूर्ण अनुयायियों को क़ुर्आनी ने'मत के थाल से प्राप्त होते हैं। जब मनुष्य उनका सच्चा अनुसरण करता है तथा स्वयं को पूर्णतया उसके आदेश और निषेध के सुपुर्द कर देता है तथा पूर्ण प्रेम और निष्कपट भाव से उस के आदेशों पर विचार करता है तथा कोई बाह्य या आन्तरिक उपेक्षा शेष नहीं रहती, तब उसके विचार और बुद्धि को दानशील ख़ुदा की ओर से एक प्रकाश प्रदान किया जाता है और एक दूरदर्शी बुद्धि प्रदान की जाती है जिससे आध्यात्म ज्ञान की अदभुत बारीकियां और रहस्य जो उसमें गुप्त हैं उस पर प्रकट होते हैं और स्वाति[1] नक्षत्र की वर्षा के रूप में सूक्ष्म आध्यात्म ज्ञान उसके हृदय पर बरसते हैं ये वही

---

[1] अब्रे नीसां - सूर्य की दृष्टि से नीसां माह अर्थात स्वाति नक्षत्र में होने वाली वर्षा जिसके बारे में एक किंवदंती प्रसिद्ध है कि समुद्र की सीप में जब इसकी बूंद गिर जाती है तो उसमें मोती बनते हैं। (अनुवादक)

यह होगा, वह होगा और कई बार उनकी कोई न कोई सूचना सच्ची भी निकल आती है। अत: इन भ्रमों के निवारण हेतु वे भविष्यवाणियां और परोक्ष की सूचनाएं

शेष हाशिया नं. (11)

अनुसार मनुष्य अपने महान सौभाग्य को प्राप्त करता है या महान दुर्भाग्य में पड़ता है इस पूर्ण सौभाग्य या दुर्भाग्य के प्रकटन से इन्कारी हैं तथा आख़िरत की मुक्ति को एक कल्पना समझ रहे हैं अपितु वे अनश्वर मुक्ति को मानते ही नहीं हैं। उनका कथन है कि मनुष्य को सदा के लिए न यहां सुख है

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

सूक्ष्म ज्ञान हैं जिन्हें क़ुर्आन करीम में 'हिकमत' का नाम दिया गया है जैसा कि फ़रमाया है - يُؤۡتِی الۡحِکۡمَۃَ مَنۡ یَّشَآءُ ۚ وَ مَنۡ یُّؤۡتَ الۡحِکۡمَۃَ فَقَدۡ اُوۡتِیَ خَیۡرًا کَثِیۡرًا ① अर्थात् ख़ुदा जिसे चाहता है दार्शनिकता (हिकमत) देता है और जिसे दार्शनिकता प्रदान की गई उसे अत्यधिक भलाई प्रदान की गई है अर्थात् दार्शनिकता अत्यधिक भलाई पर आधारित है तथा जिसने दार्शनिकता प्राप्त की उसने अत्यधिक भलाई को प्राप्त कर लिया। अतएव ये विभिन्न ज्ञान जो दूसरे शब्दों में दार्शनिकता की संज्ञा दी जाती है ये अत्यधिक भलाई पर आधारित होने के कारण ऐसे समुद्र के रूप में हैं जिसने सब को परिधि में लिया हुआ है जो ईश्वरीय वाणी के आज्ञाकारियों को प्रदान किए जाते हैं तथा उनके विवेक में ऐसी बरकत रखी जाती है जो उच्च कोटि की सच्चाइयां उनके दर्पण रूपी हृदय पर चित्रित होती रहती हैं और
Ⓟ446 उन पर पूर्ण सत्य प्रकट होते रहते हैं तथा उनके लिए Ⓟईश्वरीय समर्थन प्रत्येक अन्वेषण और खोज के समय कुछ ऐसे साधन उपलब्ध कर देते हैं जिससे उनका वर्णन अधूरा और अपूर्ण नहीं रहता और न कुछ ग़लती होती है। अत: जो-जो ज्ञान और अध्यात्मिक ज्ञान, बारीकियां, सच्चाइयां, मेहरबानियां, मर्म, प्रमाण और तर्क उन्हें सूझते हैं वे अपनी मात्रा और गुणवत्ता में ऐसे पूर्ण श्रेणी प्राप्त होते हैं कि जो चमत्कार है, जिसकी तुलना और मुकाबला अन्य लोगों से संभव नहीं, क्योंकि वे स्वयं ही नहीं अपितु

---
① अलबक़रह : 270

ज़बरदस्त और पूर्ण समझी जाएंगी जिनके साथ ख़ुदा की क़ुदरत के ऐसे निशान हों जिनमें ज्योतिषियों, स्वप्न देखने वालों और नुजूमियों इत्यादि का भागीदार होना

शेष हाशिया नं. (11)

और न वहां तथा उनके मिथ्या विचार में संसार भी आख़िरत (परलोक) की भांति एक पूर्ण प्रतिफल-ग्रह है जिसे संसार में अत्यधिक दौलत दी गई वह उसके शुभ कर्मों के प्रतिफल स्वरूप जो उसने किसी पूर्व जन्म में किए होंगे और वह इस बात का पात्र है कि इसी संसार (लोक) में अपनी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

परोक्ष से उसका बोध कराना तथा ख़ुदा तआला का समर्थन उन का अग्रगामी होता है, इसी बोध की शक्ति से वे क़ुर्आनी रहस्य और प्रकार उन पर प्रकट होते हैं जो केवल बुद्धि के धूमिल प्रकाश से प्रकट नहीं हो सकते। ये ज्ञान और आध्यात्म ज्ञान जो उन्हें प्रदान किए जाते हैं जिन से ख़ुदा के अस्तित्व और उसकी विशेषता तथा आख़िरत के संसार के संबंध में उत्तम और बारीक बातें तथा उन पर नितान्त जटिल सच्चाइयां प्रकट होती हैं ये अध्यात्मिक चमत्कार हैं जो अनुभवी लोगों की दृष्टि में भौतिक चमत्कारों से उच्च और श्रेष्ठ हैं, अपितु विचार करने पर ज्ञात होगा कि बुद्धिमानों की दृष्टि में वलियों (ऋषियों) और अल्लाह वालों (धार्मिक बुज़ुर्गों) का महत्व उन्हीं चमत्कारों से मालूम होता है और वे ही चमत्कार उनके श्रेष्ठ पद की शोभा और सौन्दर्य तथा उनके योग्यता रूपी मुखमण्डल की सुन्दरता और ख़ूबसूरती हैं क्योंकि मनुष्य का स्वभाव है कि ज्ञान और आध्यात्म ज्ञानों का भय सर्वाधिक उस पर प्रभाव डालता है तथा उसे सत्य और मारिफ़त सर्वप्रिय है और यदि एक ऐसा संयमी उपासक मान लिया जाए कि वह दिव्य दृष्टि का ज्ञान रखने वाला है तथा उसे परोक्ष की ख़बरें भी मालूम होती हैं तथा कठिन तपस्याएं भी करता है और उससे कई अन्य प्रकार के चमत्कार भी प्रकटन में आते हैं, परन्तु आध्यात्म ज्ञान के सन्दर्भ में अत्यन्त मूर्ख है यहां तक कि सत्य और असत्य में अन्तर ही नहीं कर सकता अपितु व्यर्थ विचारों में ग्रसित तथा अनुचित आस्थाओं में लिप्त है, प्रत्येक बात में

निषिद्ध और दुर्लभ हो अर्थात् उनमें ख़ुदा तआला के पूर्ण प्रताप का जोश और उसके
Ⓟ469 समर्थन की ऐसी महान झलक दिखाई देती हो जो Ⓟव्यापक तौर पर उसके विशेष

शेष हाशिया नं. 11

तामसिक वृत्ति की इच्छाओं की पूर्ति में उस दौलत को व्यय करे, परन्तु स्पष्ट है कि इसी लोक में ख़ुदा तआला का किसी को इस उद्देश्य से दौलत देना कि वह इस दौलत को वास्तव में अपने कर्मों का प्रतिफल समझ कर खाने-पीने तथा हर प्रकार के भोग-विलास का साधन बनाए, यह एक ऐसा
Ⓟ395 अवैध कार्य है जिसे ख़ुदा Ⓟसे सम्बद्ध करना अत्यन्त निरादर और असभ्यता

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

Ⓟ447 अपरिपक्व तथा प्रत्येक राय Ⓟमें स्पष्ट ग़लती करता है तो ऐसा व्यक्ति दूरदर्शियों की दृष्टि में नितान्त तिरस्कृत और अधम मालूम होगा। इसका यही कारण है कि जिस व्यक्ति से मनीषी व्यक्ति को अज्ञानता की दुर्गन्ध आती है तथा उसके मुख से कोई मूर्खतापूर्ण वाक्य सुन लेता है तो उसकी ओर से उसी समय हृदय घृणा करने लगता है और फिर वह व्यक्ति एक मनीषी व्यक्ति की दृष्टि में किसी प्रकार से भी सम्माननीय नहीं हो सकता यद्यपि कैसा ही संयमी और उपासक क्यों न हो कुछ तिरस्कृत सा मालूम होता है। अतः मनुष्य के स्वभाव की इस प्रवृति से स्पष्ट है कि अध्यात्मिक चमत्कार अर्थात् उस की दृष्टि में ज्ञान और आध्यात्म ज्ञान वलियों (ऋषियों) के लिए अनिवार्य शर्त तथा धार्मिक बुज़ुर्गों की पहचान के लिए आवश्यक और विशेष लक्षण हैं। अतएव ये लक्षण क़ुर्आन करीम के पूर्ण अनुसरणकर्ताओं को पूर्ण रूप से प्रदान किए जाते हैं। इसके बावजूद कि इनमें से अधिकांश के स्वभाव पर अनपढ़ता का प्रभुत्व होता है तथा प्रचलित ज्ञानों को पूर्णतया प्राप्त नहीं किया होता, परन्तु अध्यात्मिक ज्ञान रूपी बारीकियों और विशेषताओं में अपने समकालीन लोगों से इतने अग्रसर हो जाते हैं कि कभी-कभी बड़े-बड़े विरोधी उनके भाषणों को सुनकर अथवा उनके लेखों को पढ़कर हैरानी से सहसा बोल उठते हैं कि इनके ज्ञान और आध्यात्म ज्ञान एक अन्य संसार से हैं जो ख़ुदाई समर्थनों के विशेष रंग से रंगीन हैं। उसका

ध्यान रखने को सिद्ध करती हो तथा वे एक ऐसी सहायता की सूचना पर आधारित हों जिसमें अपनी विजय और विरोधी की पराजय, अपना सम्मान तथा विरोधी का

शेष हाशिया नं. (11)

है, क्योंकि इससे यह परिणाम निकलता है कि जैसे हिन्दुओं का परमेश्वर स्वयं ही लोगों को दुराचार और व्यभिचार में डालना चाहता है तथा इससे पूर्व कि उनकी आत्मा शुद्ध हो उन पर कामानन्दों के विशाल द्वार खोलता है तथा पूर्व जन्मों के शुभ कर्मों का प्रतिफल उन्हें यह देता है कि पिछले जन्म

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

एक प्रमाण यह भी है कि यदि कोई इन्कारी तुलनात्मक तौर पर आध्यात्म ज्ञान रूपी विवादों में से किसी विवाद में उनके अनुसंधानीय और विवेकपूर्ण भाषणों के साथ किसी भाषण की तुलना करना चाहे तो अन्ततः उसे न्याय और ईमानदारी की प्रतिबद्धता पर इक़रार करना पड़ेगा कि वास्तविक सत्य उसी भाषण में था जो उनके मुख से निकला था तथा जैसे-जैसे बहस गहरी होती जाएगी, बहुत से सूक्ष्म और बारीक तर्क ऐसे निकलते आएंगे जिनसे प्रकाशमान दिवस की भांति उनका सत्य होना प्रकट होता जाएगा। अतः प्रत्येक सत्याभिलाषी पर इसका सबूत प्रकट करने के लिए हम स्वयं ही उत्तरदायी Ⓟहैं। इन सब में से एक 'अस्मत' भी है जिसे ख़ुदा की सुरक्षा का Ⓟ448 नाम दिया जाता है और यह 'अस्मत' भी क़ुर्आन करीम के पूर्ण अनुकरणकर्ताओं को चमत्कार स्वरूप प्रदान की जाती है। यहां अस्मत से हमारा अभिप्राय यह है कि वे ऐसी अनुचित और निन्दनीय आदतें, विचार, सदाचार और कार्यों से सुरक्षित रखे जाते हैं जिनमें अन्य लोग दिन-रात लिप्त और ग्रसित दिखाई देते हैं और यदि कोई भूल भी हो जाए तो ख़ुदा तआला की दया शीघ्रतर उनका निवारण कर लेती है। यह बात स्पष्ट है कि 'अस्मत' का स्थान अत्यन्त कोमल और तामसिक वृति के कारणों से अत्यन्त दूर है जिस की प्राप्ति ख़ुदा तआला के ध्यान विशेष के अभाव में संभव नहीं। उदाहरणतया यदि किसी को यह कहा जाए कि वह केवल एक झूठ और झूठ बोलने की आदत से अपनी समस्त समस्याओं, वर्णनों,

अपमान, अपना प्रताप तथा विरोधी का पतन पूर्ण विस्तार के साथ प्रकट किया गया हो। हम यथासमय वर्णन करेंगे और कुछ वर्णन भी कर चुके हैं कि ये श्रेष्ठ श्रेणी

शेष हाशिया नं. (11)

में वे हर प्रकार के भोग-विलास के संसाधन पाकर तथा तामसिक वृत्ति के पूर्ण रूप से अधीन होकर फिर पाताल में जा पड़े। स्पष्ट है कि जिस व्यक्ति के विचार में यह समाया हुआ है कि मेरे अधिकार में जितना धन-दौलत वैभव और शासन है यह मेरे ही पिछले कर्मों का फल है वह क्यों न तामसिक वृत्ति का अनुसरण करेगा, परन्तु यदि वह यह समझता कि संसार

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

व्यवसायों, उद्यमों में निश्चित तौर पर दूर रहे, तो यह उसके लिए कठिन और वर्जित हो जाता है अपितु उस कार्य को करने के लिए प्रयास और प्रयत्न भी करे तो उसके समक्ष इतने विघ्न और बाधाएं आती हैं कि अन्ततः उसका स्वयं यह नियम हो जाता है कि सांसारिक कार्यों में झूठ और झूठ बोलने से सुरक्षित रहना असंभव है, परन्तु उन भाग्यशाली लोगों के लिए कि जो सच्चे प्रेम तथा पूर्ण श्रद्धा से क़ुर्आन करीम के आदेशों पर चलने के इच्छुक हैं केवल यही बात आसान नहीं की जाती कि वे झूठ बोलने की बुरी आदत से हट जाएं अपितु वे प्रत्येक अकरणीय और अकथनीय के त्यागने पर सर्वशक्तिमान ख़ुदा से सामर्थ्य पाते हैं तथा उन्हें ख़ुदा तआला अपनी पूर्ण दया से ऐसे बुरे अवसरों से सुरक्षित रखता है जिनसे वे विनाश के भंवर में पड़ें, क्योंकि वे संसार का प्रकाश होते हैं तथा उनकी सुरक्षा में संसार की सुरक्षा तथा उनके विनाश में संसार का विनाश होता है। इसी दृष्टि से वे अपने विचार, ज्ञान, क्रोध, काम, भय, लोभ, दरिद्रता, सम्पन्नता, प्रसन्नता, शोक, समृद्धि, असमृद्धि में समस्त अनुचित बातों, दूषित विचारों,
ⓟ449 गलत ज्ञानों, ⓟअवैध कार्यों, बेतुके विवेकों तथा कामवासनाओं में कमी-बेशी से सुरक्षित किए जाते हैं तथा किसी निन्दनीय बात पर नहीं ठहर पाते क्योंकि ख़ुदा तआला उनके प्रशिक्षण का अभिभावक होता है तथा उनके पवित्रता रूपी वृक्ष में जिस शाखा को शुष्क देखता है उसे उसी समय अपने

की भविष्यवाणियां केवल क़ुर्आन करीम से विशेष हैं कि जिन के पढ़ने से ख़ुदा के प्रताप और तेज का एक संसार दृष्टिगोचर होता है।

शेष हाशिया नं. 11

प्रतिफल-ग्रह नहीं है अपितु परीक्षा-ग्रह है और मुझे जो कुछ दिया गया है वह बतौर परीक्षा और परीक्षण के दिया गया है ताकि यह प्रकट किया जाए कि मैं किस प्रकार से इसमें परिवर्तन करता हूं, कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो मेरा स्वामित्व या मेरा अधिकार हो। अत: ऐसा समझने से वह अपनी मुक्ति इस बात में देखता है कि अपना समस्त धन शुभ कार्यों में व्यय करे एवं वह

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

सुरक्षित रखने वाले हाथ से काट डालता है तथा ख़ुदा की सहायता प्रतिपल, प्रतिक्षण उनका संरक्षण करती रहती है। यह भी बिना सबूत नहीं अपितु दक्ष व्यक्ति कुछ संगति से तथा अपनी पूर्ण सन्तुष्टि से उसे ज्ञात कर सकता है। इसके अतिरिक्त एक पद **'काल तुष्टि'** (भरोसा) का है जिस पर उन्हें दृढ़तापूर्वक स्थापित किया जाता है, उनके अतिरिक्त लोगों को वह स्वच्छ झरना कदापि प्राप्त नहीं हो सकता अपितु उन्हीं के लिए उसे मनोहर और अनुकूल किया जाता है तथा आध्यात्म ज्ञान का प्रकाश उन्हें इस प्रकार थामे रहता है कि प्रात: भिन्न-भिन्न प्रकार की विवशता में ग्रसित होकर तथा भौतिक संसाधनों से स्वयं को पूर्णतया दूर देखकर फिर भी हर्षोल्लास के साथ जीवन व्यतीत करते हैं और ऐसी समृद्धि से समय गुज़ारते हैं कि जैसे उनके पास सहस्त्रों ख़ज़ाने हैं, उनके चेहरों पर सम्पन्नता की ताज़गी दिखाई देती है तथा स्वभाव में धनवान होने का स्थायित्व दिखाई देता है और दरिद्रता की स्थिति में हार्दिक विशालता और पूर्ण विश्वास के साथ अपने दयालु स्वामी (ख़ुदा) पर भरोसा रखते हैं, स्वार्थ-त्याग का स्वभाव उन का नियम होता है, प्रजा की सेवा उनकी प्रकृति होती है, उनकी स्थिति में संकोच कभी प्रवेश नहीं पाता, यद्यपि समस्त संसार उनका परिवार हो जाए। वास्तव में ख़ुदा तआला के दोष को गुप्त रखने की विशेषता सराहनीय है जो प्रत्येक स्थान और अवसर पर उनके दोषों को गुप्त रखती है तथा पूर्व

℗470 ℗**सातवीं भूमिका :-** क़ुर्आन करीम में धार्मिक ज्ञान, आध्यात्म के सूक्ष्म ज्ञान, सत्य सिद्धान्तों के ठोस तर्क तथा अन्य रहस्यों और ज्ञानों के साथ जितनी बारीक

शेष हाशिया नं. (11)

℗396 ℗नितान्त कृतज्ञ भी होता, क्योंकि वही व्यक्ति हार्दिक नि:स्वार्थता और प्रेम से आभारी हो सकता है कि जो समझता है कि मैंने मुफ़्त पाया तथा बिना किसी पात्रता के मुझे प्राप्त हुआ है। अत: आर्य लोगों के निकट ख़ुदा तआला न समस्त संसारों का प्रतिपालक है, न रहमान (दयालु) न रहीम (कृपालु)

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

इसके कि सामर्थ्य से उच्च कोई आपदा आए उन्हें महरबानी की परिधि में ले लेती है, क्योंकि उनके समस्त कार्यों का अभिभावक ख़ुदा होता है। जैसा कि उसने स्वयं ही फ़रमाया है - وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ[1] परन्तु दूसरों को संसार के दुखदायक कारणों में छोड़ दिया जाता है और वह चमत्कारिक विशेषता जो विशेष तौर पर उन लोगों के साथ प्रकट की जाती है किसी
℗450 अन्य के साथ प्रकट नहीं की जाती। उन की यह विशेषता ℗भी संगति से अति शीघ्र सिद्ध हो सकती है। इन्हीं में से एक स्थान '**व्यक्तिगत प्रेम**' का है जिस पर क़ुर्आन करीम के पूर्ण अनुसरणकर्ताओं को स्थापित किया जाता है तथा उनके रोम-रोम में ख़ुदा का प्रेम इतना प्रभाव कर जाता है कि उनके अस्तित्व की वास्तविकता अपितु उनके प्राण का प्राण हो जाता है और उनके हृदय में वास्तविक प्रियतम से एक विचित्र प्रकार का प्रेम जोश मारता है और एक चमत्कारिक अनुराग और रुचि उनके स्वच्छ हृदयों पर प्रभुत्व जमा लेती है जो अन्य से पूर्णतया पृथक और अलग कर देती है तथा ख़ुदा की प्रेमाग्नि ऐसी भड़कती है जो साथियों को विशेष समयों में स्पष्ट और व्यापक तौर पर मौजूद और महसूस होती है अपितु यदि सच्चे प्रेमी इस प्रेमरूपी उत्तेजना को किसी युक्ति और उपाय से गुप्त रखना भी चाहें तो यह उनके लिए असंभव हो जाता है। जैसे अवास्तविक प्रेमियों के लिए भी यह बात असंभव है कि वे अपने प्रियतम के प्रेम को जिसे देखने के लिए दिन-

---

(1) अलआराफ़ : 197

सच्चाइयां लिखी हैं, यद्यपि वे समस्त स्वयं में ऐसी हैं कि मानव शक्तियां उन्हें सामूहिक रूप में ज्ञात करने से असमर्थ हैं तथा किसी बुद्धिमान की बुद्धि उन्हें ज्ञात

शेष हाशिया नं. (11)

और न अजर, न अमर और न पूर्ण प्रतिफल प्रदान करने पर सामर्थ्यवान है।

अब हम यह भी स्पष्ट करते हैं कि ब्रह्म समाज वालों का उपरोक्त आध्यात्म ज्ञानों के सन्दर्भ में क्या विचार है अर्थात वे चारों सच्चाइयां जिनका अभी वर्णन किया जा चुका है ब्रह्म समाजी उन पर दृढ़ हैं या नहीं।

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

रात लीन रहते हैं अपने मित्रों और साथियों से गुप्त रखें अपितु वह प्रेम जो उनके कलाम, उनकी आकृति, उनकी आंख, उनकी प्रकृति तथा उनके स्वभाव में प्रवेश कर गया है तथा उनके रोम-रोम से टपक रहा है वह उनके गुप्त रखने से कदापि गुप्त ही नहीं रह सकता और हज़ार गुप्त रखें उसका कोई न कोई निशान प्रकट हो जाता है तथा उनकी सच्चाई का सबसे बड़ा निशान यह है कि वे अपने वास्तविक प्रियतम को प्रत्येक वस्तु पर प्राथमिकता देते हैं और यदि उसकी ओर से कष्ट पहुंचे तो व्यक्तिगत प्रेम के आवेग से उन्हें पुरस्कार के रूप में देखते हैं और यातना को मधुर शरबत की तरह समझते हैं, किसी तलवार की तेज़धार उनमें और उनके प्रियतम में वियोग नहीं डाल सकती तथा कोई बड़ी विपत्ति उन्हें उनके उस प्रियतम का स्मरण करने से रोक नहीं सकती, उसी को अपना प्राण समझते हैं, उसी के प्रेम में आनंद पाते और उसी की हस्ती को मौजूद समझते हैं तथा हार्दिक तौर पर उसी के स्मरण को अपने जीवन का लक्ष्य ठहराते हैं। यदि चाहते हैं तो उसी को, Ⓟयदि आराम पाते हैं तो उसी से, समस्त संसार में उसी को अपना Ⓟ451 बनाते हैं तथा उसी के हो रहते हैं, उसी के लिए जीवित रहते हैं उसी के लिए मरते हैं, संसार में रह कर फिर संसार से विरक्त हैं, बुद्धिमान होकर फिर बेसुध हैं, न मान से काम रखते हैं न नाम से, न अपने प्राण से, न अपने आराम से अपितु सब कुछ एक के लिए खो बैठते हैं, एक को पाने के लिए सर्वस्व दे डालते हैं, अनदेखी अग्नि से जलते जाते हैं परन्तु कुछ वर्णन नहीं

करने के लिए स्वयं आगे नहीं बढ़ सकती, क्योंकि पूर्व युगों पर गहरी दृष्टि डालने से सिद्ध हो गया है कि कोई वैज्ञानिक या दार्शनिक उन विद्याओं और ज्ञानों को ज्ञात

शेष हाशिया नं. (11)

®397 अतः स्पष्ट हो कि ब्रह्म समाज वाले इन ®चारों सच्चाइयों पर यथायोग्य दृढ़ता और स्थायित्व नहीं रखते अपितु उन श्रेष्ठ आध्यात्म ज्ञानों के पूर्णतया वे परिचित ही नहीं। प्रथम ख़ुदा का समस्त संसारों का प्रतिपालक होना कि जिससे अभिप्राय पूर्ण प्रतिपालन है ब्रह्म लोगों की समझ और बुद्धि से अब

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

कर सकते कि क्यों जलते हैं, सोचने-समझने से बहरे और गूंगे होते हैं तथा प्रत्येक कष्ट और अपमान को सहन करने के लिए तैयार रहते हैं तथा उस से आनन्द पाते हैं।

عشق است کہ بر خاک مذلّت غلطاند
عشق است کہ بر آتش سوزاں بنشاند

अनुवाद :- प्रेम ही है जो व्यक्ति को अपमान की मिट्टी पर तड़पाता है प्रेम ही है जो उसे जलती हुई अग्नि पर बैठाता है।*

کس بہر کسے سر ندہد جان نہ فشاند
عشق است کہ ایں کار بصد صدق کناند

अनुवाद :- कोई किसी के लिए सर नहीं देता न प्राण न्यौछावर करता है, प्रेम ही है कि यह काम पूरी वफ़ादारी से कराता है।*

इन सब में से एक **'उत्तम सदाचार'** हैं, दानशीलता, वीरता, स्वार्थ, त्याग, उच्च साहस, आधिक्य सहानुभूति, शील, लज्जा, मैत्री ये समस्त सदाचार भी उत्तम और उचित तौर पर उन्हीं से प्रकट होते हैं तथा वे ही लोग क़ुर्आन करीम के अनुसरण के सौजन्य से वफादारी के साथ जीवन-पर्यन्त प्रत्येक परिस्थिति में उन्हें भली भांति और सभ्यता के साथ सम्पन्न करते हैं तथा उनके समक्ष कोई हार्दिक संकोच नहीं आता कि जो उत्तम सदाचार को यथोचित प्रकट होने से उन्हें रोक सके। मूल बात यह है कि

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

करने वाला नहीं गुज़रा, परन्तु यहां अत्यधिक Ⓟआश्चर्यजनक और बात है अर्थात् यह Ⓟ471
कि वे विद्याएं और ज्ञान एक ऐसे अनपढ़ को प्रदान किए गए कि जो लिखने पढ़ने

शेष हाशिया नं. (11)

तक गुप्त रहा है और वे लोग संसार पर ख़ुदा के प्रतिपालन का प्रभाव इस
से अधिक नहीं समझते कि उसने किसी समय Ⓟयह समस्त संसार उसकी Ⓟ398
समस्त शक्तियों और ताकतों सहित उत्पन्न किया है परन्तु अब वे समस्त शक्तियां स्थायी तौर पर अपने-अपने कार्य में कार्यरत हैं तथा ख़ुदा तआला

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

ज्ञान, कर्म या सदाचार संबंधी जो कुछ विशेषता मनुष्य से प्रकट हो सकती है वह केवल मानव शक्तियों द्वारा प्रकट नहीं हो सकती अपितु उसके प्रकट होने का मूल कारण ख़ुदा की कृपा है। अतएव चूंकि ये लोग ख़ुदा की अनुकम्पा के सर्वाधिक पात्र होते हैं। इसलिए ख़ुदा तआला स्वयं अपने असीम अनुदानों तथा विशेषताओं से उन्हें लाभान्वित करता है अथवा दूसरे शब्दों में यों समझो कि वास्तविक तौर पर ख़ुदा तआला के अतिरिक्त अन्य कोई नेक नहीं। समस्त उत्तम सदाचार तथा समस्त शुभकर्म उसके लिए प्रमाणित हैं, फिर कोई जितना अपनी आत्मा और श्रद्धा से विरक्त हो कर
साक्षात भलाई की हस्ती का Ⓟसानिध्य प्राप्त करता है उतने ही ख़ुदाई सदाचार Ⓟ452
उसकी आत्मा पर चित्रित होते हैं। अतः मनुष्य को जो-जो विशेषताएं और सच्ची सभ्यता प्राप्त होती है वह ख़ुदा ही के सानिध्य से प्राप्त होती है तथा यही यथोचित था क्योंकि सृष्टि अपने मूलरूप में कुछ भी नहीं है, अतएव ख़ुदा तआला के उच्च कोटि के शिष्टाचार उन्हीं के हृदयों पर प्रतिबिम्बित होते हैं जो क़ुर्आन करीम का पूर्ण रूप से अनुकरण करते हैं और उचित अनुभव बता सकता है कि जिस स्वच्छ घाट तथा अध्यात्मिक रुचि और प्रेम पूर्ण आवेग से उन से उच्चकोटि के शिष्टाचार प्रकट होते हैं उसका उदाहरण संसार में उपलब्ध नहीं, यद्यपि मुख से प्रत्येक व्यक्ति दावा कर सकता है तथा शेख़ी बघारने के लिए प्रत्येक का मुख खुल सकता है परन्तु जो उचित अनुभव का संकीर्ण द्वार है उस द्वार से सुरक्षित निकलने वाले यही लोग हैं।

से अपरिचित मात्र था जिसने जीवन-पर्यन्त किसी विद्यालय की शक्ल नहीं देखी थी और न किसी किताब का कोई अक्षर पढ़ा था और न किसी ज्ञानी या दार्शनिक की

शेष हाशिया नं. (11)

में शक्ति नहीं है कि उन में कुछ हस्तक्षेप करे कुछ परिवर्तन या तब्दीली प्रकटन में लाए। उनके मिथ्या विचार में नेचरी नियमों के सुदृढ़ और स्थायी आधार ने सर्वशक्तिमान को निलंबित और बेकार की भांति कर दिया है तथा उसके लिए उनमें हस्तक्षेप करने का कोई मार्ग खुला नहीं तथा ऐसा कोई

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

अन्य लोग यदि कुछ उच्चकोटि के शिष्टाचार प्रकट करते भी हैं तो बनावट और दिखावे के तौर पर प्रकट करते हैं तथा अपनी अपवित्रताओं को गुप्त रख कर तथा अपने रोगों को छुपा कर अपनी झूठी सभ्यता दिखाते हैं, तुच्छ और अधम परीक्षाओं में उनकी वास्तविकता प्रकट हो जाती है तथा वे उच्चकोटि के शिष्टाचार प्रकट करने में बनावट और दिखावा इसलिए करते हैं कि वे अपने संसार और सामाजिक कार्यों की उत्तम व्यवस्था इसी में देखते हैं और यदि अपनी आन्तरिक अपवित्रताओं का प्रत्येक अवसर पर अनुकरण करें तो फिर समाजी जटिल समस्याओं में विघ्न पड़ता है और यद्यपि स्वाभाविक योग्यतानुसार शिष्टाचार का कुछ अंश उनमें भी होता है, परन्तु वह प्राय: कामभावनाओं के कांटों के नीचे दबा रहता है तथा स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों के मिश्रण के बिना शुद्ध रूप से ख़ुदा के लिए प्रकट नहीं होता, कहां यह कि अपनी पूर्णता को प्राप्त करे। अल्लाह के लिए वह अंश शुद्ध रूप से उन्हीं में पूर्णता को पहुंचता है जो ख़ुदा के हो जाते हैं तथा जिनके हृदयों को ख़ुदा तआला अजनबियत के मिश्रण से पूर्णतया रिक्त पाकर अपने पवित्र शिष्टचारों से स्वयं परिपूर्ण कर देता है तथा उनके हृदयों में वे शिष्टाचार ऐसे प्रिय कर देता है जैसे उसे वे स्वयं प्रिय हैं। अतएव वे लोग विरक्तता के कारण ख़ुदा के शिष्टाचारों में रंगीन होने का ऐसा पद प्राप्त कर लेते हैं कि जैसे वे ख़ुदा का एक उपकरण हो जाते हैं जिसके माध्यम से वह
ⓟ453 अपने शिष्टाचार प्रकट करता है, उन्हें भूखा और प्यासा पाकर ⓟउन्हें वह

संगत प्राप्त हुई थी अपितु जीवन पर्यन्त अनपढ़ों और असभ्यों में निवास रहा, उन्हीं में पालन-पोषण हुआ तथा उन्हीं में उत्पन्न हुए तथा उन्हीं के साथ मेल-जोल रहा।

शेष हाशिया नं. (11)

उपाय उसे स्मरण नहीं जिस से वह उदाहरणतया किसी गर्म तत्व को उसके ताप के प्रभाव से रोक सके ®अथवा किसी ठण्डे तत्त्व को उसकी ठंड ®399 के प्रभावों से बन्द कर सके या अग्नि में उसके भस्मीकरण की विशेषता को प्रकट न होने दे। यदि उसे कोई उपाय स्मरण भी है तो केवल उन्हीं सीमाओं

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

शीतल और मधुर पानी अपने उस विशेष झरने से पिलाता है जिसमें मूल रूप से किसी सृष्टि की उसके साथ भागीदारी नहीं तथा इन समस्त अनुदानों की एक महान विशेषता जो क़ुर्आन करीम के पूर्ण अनुसरणकर्ताओं को प्रदान की जाती है वह बन्दगी है अर्थात् वे बावजूद अत्यधिक विशेषताओं के हर समय अपनी व्यक्तिगत क्षति दृष्टिगत रखते हैं तथा ख़ुदा तआला को सामने उपस्थित समझते हुए विनम्रता नास्ति और विनय में रहते हैं तथा अपनी मूल वास्तविकता अपमान, दरिद्रता, कंगाली, दोष और ग़लती समझते हैं और समस्त विशेषताओं को जो उन्हें प्रदान की गई हैं उस अस्थायी प्रकाश के समान समझते हैं जो किसी समय सूर्य की ओर से दीवार पर पड़ता है जिसका वास्तविक तौर पर दीवार से कुछ संबंध नहीं होता तथा जो अस्थायी तौर पर मांगे हुए लिबास की भांति पतन की अवस्था में होता है। अतएव वह समस्त भलाई और विशेषताएं ख़ुदा ही में सीमित रखते हैं तथा सम्पूर्ण नेकियों का उदगम उसी की पूर्ण हस्ती को ठहराते हैं और ख़ुदाई विशेषताओं के पूर्ण प्रदर्शन से उनके हृदय में अटल विश्वास के तौर पर यह बात समा जाती है कि हम कुछ वस्तु नहीं हैं यहां तक वे अपने अस्तित्व, इच्छा और अभिलाषा से पूर्णतया विरक्त हो जाते हैं तथा ख़ुदा की प्रतिष्ठा का उत्तेजित दरिया उनके हृदयों पर ऐसा आच्छादित हो जाता है कि उन पर सहस्त्रों प्रकार की नास्ति छा जाती है तथा गुप्त द्वैतवाद की प्रत्येक बारीकी से पूर्णतया पवित्र और उज्ज्वल हो जाते हैं और इन समस्त

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनपढ़ और अशिक्षित होना एक ऐसी
Ⓟ472 व्यापक बात है कि कोई इस्लामी इतिहासकार उससे Ⓟअनभिज्ञ नहीं परन्तु चूंकि

शेष हाशिया नं. (11)

तक जिन पर मनुष्य के ज्ञान की परिधि है इससे अधिक नहीं अर्थात् संसार के संदर्भ में जो विवरण और विशेषताएं सीमित तौर पर मनुष्य ने ज्ञात की
Ⓟ400 हैं और Ⓟअब तक जो कुछ मानव अनुभवों की परिधि में आ चुका है ख़ुदा की शक्तियों की सीमा है इससे अधिक उसकी पूर्ण शक्ति और सामान्य

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

अनुकम्पाओं में से एक यह है कि उनकी मारिफ़त और ख़ुदा को पहचानना सच्चे कश्फ़ों, परमेश्वर प्रदत्त ज्ञानों, स्पष्ट इल्हामों, ख़ुदा से वार्तालाप और संवादों तथा अन्य चमत्कारों के माध्यम से पूर्ण रूप से पहुंचाई जाती है यहां तक कि उनमें और परलोक में एक नितान्त बारीक और स्वच्छ पर्दा शेष रह जाता है, जिसमें से उनकी दृष्टि पार करके आख़िरत की घटनाओं को इसी लोक में देख लेती है अन्य लोगों के विपरीत कि अपनी धार्मिक पुस्तकों के अंधकारमय होने के कारण इस पूर्ण पद तक कदापि नहीं पहुंच सकते
Ⓟ454 अपितु उनकी उल्टी शिक्षा देने वाली किताबें उन के Ⓟपर्दों पर और भी सैकड़ों पर्दे डालती हैं तथा रोग को अत्यधिक बढ़ाकर मृत्यु तक पहुंचाती हैं तथा दार्शनिक, जिनके पद-चिन्हों पर आजकल ब्रह्म समाज वाले चलते हैं, जिन के धर्म का समस्त आधार बौद्धिक विचारों पर है, वे स्वयं अपने मार्ग में अपूर्ण हैं तथा उनकी अपूर्णता पर यही सबूत पर्याप्त है कि उनका आध्यात्म ज्ञान बावजूद सहस्त्रों प्रकार की गलतियों के काल्पनिक कारणों का सीमोल्लंघन नहीं करता तथा अनुमानित अटकलों से आगे नहीं बढ़ता। स्पष्ट है कि जिस व्यक्ति का आध्यात्म ज्ञान केवल कल्पना तक ही सीमित है और वह भी कई प्रकार के दोषों की अपवित्रता से लिप्त। वह व्यक्ति उस व्यक्ति की तुलना में जिसका आध्यात्म ज्ञान स्पष्टता की श्रेणी तक पहुंच गया है, अपनी ज्ञान संबंधी स्थिति में नितान्त पतन और अवनति पर है। स्पष्ट है कि काल्पनिक और बौद्धिक स्तर से आगे एक पद **"नितान्त स्पष्ट**

यह बात भविष्य के अध्यायों के लिए बहुत काम आने वाली है, इसलिए हम कुछ क़ुर्आनी आयतें लिखकर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अनपढ़ता सिद्ध

शेष हाशिया नं. (11)

प्रतिपालन कोई काम नहीं कर सकते जैसे ख़ुदा की शक्तियां और युक्तियां
सब की सब यही हैं जिन्हें मनुष्य ज्ञात कर चुका है। स्पष्ट है कि यह आस्था
पूर्ण प्रतिपालन और पूर्ण क़ुदरत के तात्पर्य से पूर्णतया ℗विपरीत है क्योंकि ℗401
पूर्ण प्रतिपालन और पूर्ण क़ुदरत वह है जो उस असीमित अस्तित्व की भांति

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

और मौजूद" का शेष है अर्थात् जो बातें काल्पनिक और वैचारिक तौर पर
ज्ञात होती हैं वे संभव है कि किसी अन्य साधन से असंदिग्ध और मौजूद
तौर पर ज्ञात हों। अतएव बुद्धि की दृष्टि से इस निर्विवाद पद के अस्तित्व
के मौजूद होने की संभावना है, यद्यपि ब्रह्म समाज वाले इस पद के बाह्य
अस्तित्व से इन्कार ही करें परन्तु उन्हें इस बात से इन्कार नहीं कि यदि वह
पद बाह्य तौर पर पाया जाए तो निसन्देह पूर्ण और उच्चकोटि का है तथा जो
सोच-विचार में गुप्त या शेष रह जाते हैं उनका प्रकट होना और निकलना
उसी पद पर आधारित है तथा इस बात को स्वयं कौन नहीं समझ सकता
कि एक बात का स्पष्ट तौर पर प्रकट हो जाना काल्पनिक तौर पर पूर्ण और
उच्चकोटि का है। उदाहरणतया यद्यपि उत्पादों को देखकर कुशल और
दूरदर्शी व्यक्ति को यह विचार आ सकता है कि इन उत्पादों का कोई निर्माता
होगा, परन्तु ख़ुदा की मारिफ़त (अध्यात्म ज्ञान) का नितान्त प्रकाशमान और
स्पष्ट मार्ग जो उसके अस्तित्व पर बड़ा ही ठोस तर्क है यह है कि उसके
बन्दों को इल्हाम प्राप्त होता है और पूर्व इसके कि वस्तुओं की वास्तविकता
प्रकट हो उन पर प्रकट किया जाता है और वे अल्लाह तआला से अपनी
याचनाओं के उत्तर पाते हैं, उनसे वार्तालाप ℗और संवाद होते हैं, उन्हें ℗455
कश्फ़ी तौर पर परलोक (आख़िरत) की घटनाएं दिखाई जाती हैं तथा
प्रतिफल और दण्ड की वास्तविकता से अवगत किया जाता है तथा उन पर
अन्य कई प्रकार के प्रलय के रहस्य प्रकट किए जाते हैं और इसमें कोई

करते हैं। अतः स्पष्ट हो कि वे आयतें विस्तारपूर्वक निम्नलिखित हैं :-

अल्लाह तआला फ़रमाता है -

शेष हाशिया नं. (11)

असीमित है और कोई मानव नियम और क़ानून इसे अपनी परिधि में नहीं ले सकता।

नहीं महसूर हरगिज़ रास्ता क़ुदरत नुमाई का
ख़ुदा की क़ुदरतों का हस्र दावा है ख़ुदाई का

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

सन्देह नहीं कि ये समस्त बातें ज्ञान द्वारा प्राप्त विश्वास को पूर्णता के पद तक पहुंचाती हैं तथा काल्पनिक होने की अथाह गहराई से स्पष्टता के उच्च शिखर तक ले जाती हैं, विशेषकर ख़ुदा तआला से वार्तालाप और संवाद उन समस्त प्रकारों से श्रेष्ठतम हैं क्योंकि उनके माध्यम से न केवल परोक्ष के समाचार ही ज्ञात होते हैं अपितु विनीत बन्दे पर अल्लाह तआला की जो-जो अनुकम्पाएं हैं उन से भी सूचित किया जाता है और एक आनंदमय और शुभ कलाम से उसे ऐसी सांत्वना और संतुष्टि प्रदान की जाती है और अल्लाह तआला की प्रसन्नता से सूचित किया जाता है जिस से मनुष्य सांसारिक झंझटों का मुक़ाबला करने के लिए बड़ी शक्ति पाता है मानो धैर्य और दृढ़ता के पर्वत उसे प्रदान किए जाते हैं, उसी प्रकार कलाम द्वारा बन्दे को उच्च कोटि के ज्ञान और आध्यात्म ज्ञानों की भी शिक्षा दी जाती है और वे गुप्त रहस्य और जटिल बारीकियां बताई जाती हैं कि जो ख़ुदा की विशेष शिक्षा के अभाव में किसी प्रकार ज्ञात नहीं हो सकतीं और यदि कोई यह आशंका जताए कि समस्त बातें जिनका उल्लेख किया गया है कि क़ुर्आन करीम के पूर्ण अनुसरण द्वारा प्राप्त होती हैं इस्लाम में उनका बाह्य तौर पर मौजूद होना क्योंकर प्रमाणित हो सकता है। इस भ्रम का उत्तर यह है कि संगति से। यद्यपि हम कई बार उल्लेख कर चुके हैं परन्तु लम्बाई की आशंका के बिना पुनः प्रत्येक विरोधी पर स्पष्ट करते हैं कि यह महान दौलत केवल इस्लाम में पाई जाती है किसी अन्य धर्म में कदापि नहीं पाई

هُوَالَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡهِمۡ اٰیٰتِهٖ وَیُزَکِّیۡهِمۡ وَیُعَلِّمُهُمُ الۡکِتٰبَ وَالۡحِکۡمَةَ وَاِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ[1] (भाग - 28)

शेष हाशिया नं. 11

ज्ञात होना चाहिए कि जो बात असीमित ®और असीम है वह किसी नियम®402 के अन्दर आ ही नहीं सकती क्योंकि जो वस्तु आरंभ से अन्त तक निर्धारित नियमों की श्रृंखला से बाहर न हो और न अज्ञात तथा अविदित हो तो वह वस्तु सीमित होती है। अब यदि ख़ुदा तआला की पूर्ण क़ुदरत और पूर्ण

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

जाती। सत्याभिलाषी के लिए इसके सबूत के सन्दर्भ में हम स्वयं ही उत्तरदायी हैं इस शर्त पर कि संगति और नेक इच्छा, विश्वास की अनुकूलता, धैर्य और दृढ़ता की शर्त पर ये बातें प्रत्येक अभिलाषी पर उसकी व्यक्तिगत योग्यता और पात्रता के अनुसार प्रकट हो सकती हैं तथा इन बातों में ®से जो®456 परोक्ष के समाचार हैं उनके सन्दर्भ में यह सन्देह कदापि नहीं करना चाहिए कि इस कार्य में ज्योतिषी और नुजूमी भी भागीदार हैं क्योंकि वह वर्ग किसी विशेष कलाम या नियमों के द्वारा परोक्ष के समाचारों को नहीं बताता और न अन्तर्यामी होने का दावा करता है अपितु ख़ुदा तआला जो उन पर महरबान है तथा उनकी स्थिति पर एक विशेष कृपा करता और ध्यान रखता है वह कुछ हितों की दृष्टि से कुछ बातें घटना से पूर्व उन्हें बता देता है ताकि उसने जिस कार्य का इरादा किया है वह उचित तौर पर सम्पन्न हो जाए। उदाहरणतया वह अपनी प्रजा पर यह प्रकट करना चाहता है कि अमुक बन्दा ख़ुदा की ओर से समर्थित है तथा जो पुरस्कार और मान-सम्मान वह पाता है वे साधारण और संयोगवश नहीं अपितु ख़ुदा की विशेष इच्छा और ध्यान से प्रकट होते हैं। इसी प्रकार जो कुछ विजय और सहायता, प्रतिष्ठा और सम्मान उसे प्राप्त होता है वह किसी युक्ति और उपाय से नहीं अपितु ख़ुदा ही ने चाहा है कि उसे विजय प्रदान करे और अपने समर्थन उसके साथ संलग्न करे। अतएव वह दयालु और कृपालु उस लक्ष्य को सिद्ध करने

① सूरह जुमा : 3

"वह ख़ुदा है जिसने अनपढ़ों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, उन पर वह उसकी आयतें पढ़ता है और उन्हें पवित्र करता है तथा उन्हें किताब और हिकमत सिखाता

शेष हाशिया नं. (11)

Ⓟ403 प्रतिपालन को सीमित नियमों पर ही निर्भर Ⓟसमझा जाए तो जिस वस्तु को असीमित समझा गया है उसका सीमित होना अनिवार्य हो जाएगा। अत: ब्रह्म समाजियों की यही बड़ी ग़लती है कि वे ख़ुदा तआला की असीमित क़ुदरतों और प्रतिपालन को अपने संकुचित और संकीर्ण अनुभवों की परिधि

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

के उद्देश्य से उन पुरुस्कारों और विजयों से पूर्व बतौर भविष्यवाणी उन ने'मतों को प्रदान करने का शुभ संदेश दे देता है। अत: इन भविष्यवाणियों का मूल उद्देश्य परोक्ष की ख़बरें नहीं होतीं अपितु मूल उद्देश्य यह होता है कि ताकि निश्चित और अटल तौर पर सिद्ध हो जाए कि वह व्यक्ति अल्लाह से समर्थित तथा उन विशेष लोगों में से है जिनके समर्थन हेतु ख़ुदा तआला की अनुकम्पाएं विशेष तौर पर आभामय होती हैं। अब इस वर्णन से स्पष्ट है कि इसी ख़ुदा से समर्थित व्यक्ति की ज्योतिषी इत्यादि से कुछ भी तुलना नहीं तथा उसकी भविष्यवाणियां मूल उद्देश्य नहीं है अपितु मूल उद्देश्य की पहचान के लिए लक्षण और प्रतीक हैं इसके अतिरिक्त कि ख़ुदा तआला जिन लोगों को चुन लेता है तथा अपने हाथ से पवित्र करता है तथा अपने दल में सम्मिलित करता है, उनमें केवल यही लक्षण नहीं कि वे गुप्त बातें बताते हैं कि उनकी स्थिति, नुजूमियों, ज्योतिषियों, रमल विद्या जानने वालों, तथा जादू-प्रदर्शित करने वालों की स्थिति से संदिग्ध हो जाए तथा कुछ अन्तर न रहे अपितु उनसे संलग्न एक विशाल प्रकाश होता है जिसके
Ⓟ457 अवलोकन के कारण Ⓟसच्चा अभिलाषी स्पष्ट तौर पर उन्हें पहचान सकता है। वास्तव में वही एक प्रकाश है जो उनके प्रत्येक कथन, कर्म, वर्तमान, बहस, बुद्धि, विवेक, बाह्य और आन्तरिक पर छा जाता है तथा उसकी सैकड़ों शाखाएं प्रकट हो जाती हैं तथा भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकटन करता है, वही प्रकाश कठिनाइयों और कष्टों के अवसरों में धैर्य के रूप में प्रकट

है यद्यपि वे लोग इससे पूर्व स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में ग्रस्त थे।"

Ⓟ473 Ⓟعَذَابِیْٓ اُصِیْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ وَرَحْمَتِیْ وَسِعَتْ کُلَّ شَیْءٍ فَسَاَکْتُبُهَا لِلَّذِیْنَ یَتَّقُوْنَ وَیُؤْتُوْنَ

शेष हाशिया नं. 11

में लेना चाहते हैं और नहीं जानते कि जो बातें एक सुनियोजित नियम के अधीन आ जाएं उनके अर्थ का सीमित होना Ⓟअनिवार्य हो जाएगा और Ⓟ404 जो युक्तियां और क़ुदरतें असीमित हस्ती में पाई जाती हैं उन का असीमित होना अनिवार्य है। क्या कोई मनीषी कह सकता है कि उस सर्वशक्तिमान

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

होता है, दृढ़ता और ख़ुदा की प्रसन्नता के रंग में अपना चेहरा दिखाता है, तब ये लोग जो इस प्रकाश के केन्द्र हैं बड़ी आपदाओं के मुकाबले पर अटल पर्वतों की भांति दिखाई देते हैं तथा जिन आघातों के तुच्छ स्पर्श से अपरिचित लोग रोते और चिल्लाते हैं अपितु मृत्यु के निकट हो जाते हैं इन आघातों के भीषण आक्रमणों को ये लोग कुछ वस्तु नहीं समझते तथा उसी पल ख़ुदा तआला की सहायता उन्हें अपनी दया और महरबानी की गोद में खींच लेती है तथा कोई दोष और अधीरता उन से प्रकट नहीं होती अपितु वास्तविक प्रियतम के कष्टों को पुरस्कार के रूप में देखते हैं तथा हृदय और सीने की विशालता के साथ उसे स्वीकार करते हैं अपितु उस से आनंदित होते हैं, क्योंकि उनकी ओर शक्तियों, ताकतों और धैर्यों के पर्वत चलाए जाते हैं तथा ख़ुदा के प्रेम की उत्तेजित लहरें अन्य लोगों के स्मरण से उन्हें रोक लेती हैं। अत: उनसे एक ऐसी सहनशीलता प्रकटन में आती है जो स्वभाव से हटकर है, जो किसी मानव से ख़ुदाई सहायता के अभाव में संभव नहीं, इसी प्रकार वह प्रकाश आवश्यकताओं के अवसरों में उन पर भाग्यतुष्टि के रूप में प्रकट होता है, अत: सांसारिक इच्छाओं से उनके हृदयों में एक विचित्र प्रकार की शिथिलता उत्पन्न हो जाती है कि संसार को एक दुर्गन्धयुक्त वस्तु की भांति समझते हैं तथा ये ही सांसारिक आनन्द जिन पर सांसारिक लोग मुग्ध हैं तथा पूर्ण रूचि के साथ

الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ - اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ
مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ ®فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ ®474

शेष हाशिया नं. 11

हस्ती को इस-इस प्रकार से बनाना स्मरण है और उस से अधिक नहीं। क्या उसकी असीमित क़ुदरतें मानव अनुमान के मापदण्ड से तोली जा
®405 सकती हैं अथवा उस की अधिकारपूर्ण और असीमित ®युक्तियां संसार में परिवर्तन और अधिकार से किसी समय असमर्थ हो सकती हैं। निसन्देह

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

उनके जिज्ञासु और उनके पतन से नितान्त त्रस्त हैं, ये उनकी दृष्टि में अत्यन्त अधम हो जाते हैं तथा अपना समस्त हर्ष इसी में पाते हैं कि वास्तविक स्वामी की वफ़ा, प्रेम और प्रसन्नता से हृदय भरा रहे तथा उसी की
®458 अभिरुचि, अभिलाषा और अनुराग से समय आबाद हैं, ®उस समृद्धि से असन्तुष्ट हैं जो उसकी इच्छा के विरुद्ध है, उस सम्मान पर मिट्टी डालते हैं जिसमें दयालु स्वामी (ख़ुदा) की श्रद्धा नहीं, इसी प्रकार वह प्रकाश कभी प्रतिभा के लिबास में प्रकट होता है, कभी दृष्टिकोण की शक्ति की उच्च विचारधारा में, कभी व्यवहारिक शक्ति की आश्चर्यजनक कार्यकुशलता में, कभी शील और मैत्री के लिबास में, कभी दानशीलता और स्वार्थ त्याग के लिबास में, कभी वीरता और दृढ़ता के लिबास में, कभी किसी सदाचार के लिबास में और कभी किसी सदाचार के लिबास में, कभी ख़ुदा से वार्तालाप के रूप में, कभी सच्चे कश्फ़ और स्पष्ट घोषणाओं के रूप में अर्थात् यथायोग्य वह प्रकाश मंगल-दाता (ख़ुदा) की ओर से जोश मारता है, प्रकाश एक ही है ये समस्त उसकी शाखाएं हैं। जो व्यक्ति मात्र एक शाखा को देखता है और केवल एक शाखा पर दृष्टि रखता है उसकी दृष्टि सीमित रहती है। इसलिए प्रायः वह धोखा खा लेता है परन्तु जो व्यक्ति सामूहिक तौर पर उस पवित्र वृक्ष की समस्त शाखाओं पर दृष्टि डालता है तथा उनके भिन्न-भिन्न प्रकार के फलों और फूलों की स्थिति मालूम करता है वह प्रकाशमान दिवस की भांति उन

لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ ℗ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ℗475

शेष हाशिया नं. (11)

उसका शक्तिशाली हाथ कण-कण पर अधिकार रखता है तथा किसी सृष्टि का स्थायित्व और अनश्वरता अपनी सुदृढ़ उत्पत्ति के कारण नहीं अपितु उस के सहारे और आश्रय से है तथा उसकी प्रतिपालन की शक्तियों के आगे क़ुदरतों के असंख्य मैदान पड़े हैं, न आन्तरिक तौर पर किसी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

प्रकाशों को देख लेता है और आभामय प्रताप की नंगी तलवारें उसके समस्त अहंकारों का विखंडन कर देती हैं। कदाचित यहां कुछ स्वभावों के सामने यह कठिनाई आए कि उन विशेषताओं को वे लोग भी क्योंकर प्राप्त कर लेते हैं जो न नबी हैं न रसूल परन्तु जैसा कि हम पहले भी उल्लेख कर चुके हैं यह मुश्किल एक तुच्छ भ्रम है जो उन लोगों के हृदयों को पकड़ता है जो इस्लाम की मूल वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं तथा नबियों के अनुयायियों को उन की विशेषताओं, ज्ञानों और अध्यात्म ज्ञानों में आज्ञापालन की दृष्टि से भागीदारी न हो तो उत्तराधिकार का द्वार बन्द हो जाता है तथा बहुत ही संकीर्ण और संकुचित रह जाता है क्योंकि यह अर्थ पूर्णतया उत्तराधिकार के विपरीत है कि उस वदान्य उदगम (ख़ुदा) से जो कुछ दान उसके रसूलों और नबियों को ℗प्राप्त होते हैं तथा उन पुनीतात्मा लोगों को जिस विश्वास ℗459 और अध्यात्म ज्ञान के प्रकाश तक पहुंचाया जाता है उस शरबत से उनके अनुयायियों के कंठ अपरिचित मात्र रहें और केवल नीरस और प्रत्यक्ष बातों से ही उनके आंसू पोंछे जाएं। ऐसे प्रस्ताव से यह भी अनिवार्य हो जाता है कि निस्पृह, दानशील के अस्तित्व में भी एक प्रकार की कृपणता हो एवं उस से ख़ुदा के कलाम और रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की प्रतिष्ठा और वैभव का अपमान होता है क्योंकि ख़ुदा के कलाम के उच्चकोटि के प्रभाव और मासूम नबी की पुनीत शक्ति की विशेषताएं इसी में हैं कि ख़ुदा के कलाम के स्थायी प्रकाश स्वच्छ और जिज्ञासु हृदयों को हमेशा प्रकाशित करते रहें

قُلۡ یٰۤاَیُّہَا النَّاسُ اِنِّیۡ رَسُوۡلُ اللّٰہِ اِلَیۡکُمۡ جَمِیۡعَۨا الَّذِیۡ لَہٗ مُلۡکُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ لَاۤ اِلٰہَ
اِلَّا ہُوَ ®یُحۡیٖ وَیُمِیۡتُ فَاٰمِنُوۡا بِاللّٰہِ وَرَسُوۡلِہِ النَّبِیِّ الۡاُمِّیِّ الَّذِیۡ یُؤۡمِنُ بِاللّٰہِ وَکَلِمٰتِہٖ وَاتَّبِعُوۡہُ ®476

शेष हाशिया नं. (11)

®406 स्थान पर ®अन्त है और न बाह्य तौर पर कोई किनारा है। जिस प्रकार यह संभव है कि ख़ुदा तआला उस अग्नि की भस्मीकरण की विशेषता को कम करने के लिए बाह्य तौर पर कोई ऐसे संसाधन उत्पन्न करे जिनसे उस अग्नि की तीव्रता जाती रहे, इसी प्रकार यह भी संभव है कि ख़ुदा तआला उस

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

न यह कि उनका प्रभाव पूर्णतया निलंबित हो अथवा कुछ एक तक होकर फिर सदा के लिए मिथ्या हो जाए और निर्धारित गुणवत्ता समाप्त औषधि की भांति प्रभाव का नाम ही रह जाए सिवाए इस के कि एक वास्तविकता निश्चित तौर पर प्रत्येक युग और समय में प्रत्यक्ष में मौजूद चली आई है और अब भी मौजूद है तथा अधिकांश साक्ष्यों से उसका प्रमाण स्पष्ट तौर पर मिल सकता है, तो फिर ऐसी स्पष्ट सच्चाई से कोई न्यायप्रिय क्योंकर इन्कार कर सकता है और ऐसी स्पष्ट सच्चाई क्योंकर और कहां छुप सकती है, हालांकि अनुमान भी यही चाहता है कि जब तक वृक्ष स्थापित हो उसे फल भी लगते रहें। हां जो वृक्ष सूख जाए या जड़ से काटा जाए उसके फलों की आशा रखना मात्र मूर्खता है। अत: जिस स्थिति में क़ुर्आन करीम वह हरा-भरा वृक्ष है जिसकी जड़ें पृथ्वी के नीचे तक पहुंची हुई हैं तो फिर ऐसे पवित्र वृक्ष के फलों से क्योंकर इन्कार हो सकता है। उसके फल स्पष्ट तौर पर प्रकटित हैं जिन्हें लोग हमेशा खाते रहे हैं और अब भी खाते हैं और भविष्य में भी खाएंगे और कुछ अज्ञानी लोगों की यह बात बिल्कुल निरर्थक और अनुचित है कि इस युग में उन फलों तक किसी की पहुंच ही नहीं
®460 अपितु उन का खाना पूर्वकाल के लोगों के ही ®भाग में था और वे ही सौभाग्यशाली लोग थे जिन्होंने वे फल खाए और उन से लाभान्वित हुए, तत्पश्चात दुर्भाग्यशाली लोगों ने जन्म लिया जिन्हें स्वामी ने उद्यान के अन्दर

لَعَلَّكُمۡ تَہۡتَدُوۡنَ[1] (भाग-9)

मैं जिसे चाहता हूं प्रकोप पहुंचाता हूं और मेरी दया ने प्रत्येक वस्तु को परिधि

शेष हाशिया नं. (11)

अग्नि की ®भस्मीकरण की विशेषता दूर करने के लिए उसी के अस्तित्व ®407 में कोई ऐसे संसाधन उत्पन्न कर दे जिनसे भस्मीकरण की विशेषता दूर हो जाए क्योंकि उसकी असीमित युक्तियों और क़ुदरतों के आगे कोई बात अनहोनी नहीं और जब हम उसकी युक्तियों और क़ुदरतों को असीमित

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

आने से रोक दिया। ख़ुदा किसी योग्य की योग्यता को नष्ट नहीं करता तथा किसी सच्चे अभिलाषी पर उसके दान का द्वार बन्द नहीं होता और यदि किसी के मिथ्याविचार में यह बात समाई हुई है कि किसी समय किसी युग में ख़ुदा की अनुकम्पाओं का द्वार बन्द हो जाता है और योग्य लोगों के प्रयास और परिश्रम व्यर्थ हो जाते हैं तो उसने अब तक ख़ुदा तआला का महत्व नहीं पहचाना। ऐसा व्यक्ति उन्हीं लोगों में सम्मिलित है, जिनके सन्दर्भ में ख़ुदा तआला ने स्वयं फ़रमाया है [2]-وَمَا قَدَرُوا اللّٰہَ حَقَّ قَدۡرِہٖ परन्तु यदि यह बहाना प्रस्तुत किया जाए कि ख़ुदा तआला के जिन ज्ञानों, अध्यात्म ज्ञानों, सच्चे कश्फ़ों तथा वार्तालापों की उपस्थिति के सत्यापन की चर्चा की जाती है वे अब कहां हैं और क्योंकर प्रमाणित हो सकते हैं, तो इसका उत्तर यह है कि ये समस्त समस्याएं इसी पुस्तक में सिद्ध की गई हैं और सत्याभिलाषी के लिए उन की परीक्षा का नितान्त सीधा और सरल मार्ग खुला है क्योंकि वे ज्ञान और आध्यात्म ज्ञानों को स्वयं इस पुस्तक में देख सकता है और जो सच्चे कश्फ़ और परोक्ष की बातें तथा अन्य चमत्कार अन्य धर्मावलम्बियों की साक्ष्य से सिद्ध हो सकते हैं अथवा वह स्वयं ही एक समय तक संगति में रहकर पूर्ण विश्वास की श्रेणी तक पहुंच सकता है तथा इस्लाम की अन्य बातें और समस्त विशेषताएं भी संगति द्वारा स्पष्ट हो सकती हैं, परन्तु यहां यह भी स्मरण रखना चाहिए कि जो अद्भुत और

---

① अलआराफ़ : 157-159 ② अलअन्आम : 92

में लिया हुआ है। अतः मैं उनके लिए जो प्रत्येक प्रकार के द्वैतवाद और कुफ्र और अश्लीलता से बचते हैं, ज़कात* देते हैं तथा उनके लिए जो हमारी निशानियों पर

शेष हाशिया नं. (11)

स्वीकार कर चुके तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम इस बात को भी स्वीकार कर लें कि उसकी समस्त युक्तियों और क़ुदरतों पर हमें ज्ञान प्राप्त होना निषिद्ध
Ⓟ408 और दुर्लभ है। अतः हम उसकी असीम युक्तियों और क़ुदरतों Ⓟके लिए कोई नियम नहीं बना सकते तथा जिस वस्तु की सीमाएं हमें ज्ञात ही नहीं

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

विचित्र बातें सदात्मा लोगों पर प्रकट होती हैं और उन में जो बरकतें पाई जाती हैं वे किसी जिज्ञासु पर उस समय प्रकट की जाती हैं जब वह जिज्ञासु पूर्ण निष्ठा और निष्कपटता से मार्ग-दर्शन प्राप्ति की नीयत से आता है और जब वह ऐसे तौर पर लौटता है तब जितना और जिस प्रकार से प्रकटन
Ⓟ461 प्रारब्ध Ⓟहोता है तो वह ख़ुदा की विशेष इच्छा से प्रकटन में आता है, परन्तु जहां जिज्ञासु की निष्ठा और नीयत में कुछ विकार होता है तथा हृदय निष्कपट भावना से रिक्त होता है तो फिर ऐसे जिज्ञासु को कोई निशान नहीं दिखाया जाता। ख़ुदा का यही स्वभाव नबियों से है। जैसा कि यह बात इन्जील के अध्ययन से नितान्त स्पष्ट होती है कि यहूदियों ने मसीह से कई बार चमत्कार देखना चाहा तो उसने चमत्कार दिखाने से बिल्कुल इन्कार कर दिया तथा किसी पूर्व चमत्कार का भी उद्धरण नहीं दिया। अतएव मरक़ुस की इन्जील के अध्याय-8, आयत : 12 में भी इसका विवरण है तथा इबारत यह है - "तब फरीसी (यहूदी विद्वान) निकले और उससे (अर्थात मसीह से) वाद-विवाद करके उसकी परीक्षा हेतु आकाश से कोई निशान चाहा, उसने अपने हृदय में आह खींच कर कहा - इस युग के लोग क्यों निशान चाहते हैं। मैं तुम से सत्य कहता हूं कि इस युग के लोगों को कोई निशान न दिया जाएगा।" अतः यद्यपि प्रत्यक्षतया इबारत का सबूत इसी पर है कि मसीह से कोई चमत्कार प्रकट नहीं हुआ, परन्तु मूल अर्थ इसका यही है कि उस समय तक मसीह से कोई चमत्कार प्रकटन में नहीं

* धन में से एक वर्ष के पश्चात चालीसवां भाग गरीबों के लिए देते हैं। इस्लाम का चौथा स्तम्भ - (अनुवादक)

पूर्ण ईमान लाते हैं अपनी दया लिखूंगा। ये वही लोग हैं जो उस रसूल नबी पर ईमान लाते हैं कि जिसमें हमारी पूर्ण क़ुदरत की दो निशानियां हैं। एक तो बाह्य

शेष हाशिया नं. (11)

हम उस का क्षेत्रफल निकालने से असमर्थ हैं। हम मनुष्यों के संसार का अत्यन्त सूक्ष्म और संकीर्ण वृत्त हैं और फिर इस वृत्त का भी हमें पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त नहीं। अत: इस स्थिति में हमारी अत्यन्त अधमता और मूर्खता है कि हम इस नितान्त लघु पैमाने से ख़ुदा तआला की ®असीमित युक्तियों®409

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

आया था तब ही उस ने किसी पूर्व चमत्कार का उद्धरण नहीं दिया, क्योंकि यहूद में निष्ठा और निष्कपटता रखने वाले लोग बहुत कम थे तथा किसी की शुभ आस्था की दृष्टि से कोई चमत्कार प्रकट होता, परन्तु इसके पश्चात जब निष्ठा और निष्कपटता रखने वाले लोग उत्पन्न हो गए और सत्याभिलाषी बन कर मसीह के पास आए तो वे चमत्कार देखने से वंचित नहीं रहे अत: यहूदा इस्क्रयूती की बुरी नीयत पर मसीह का अवगत हो जाना यह उसका एक चमत्कार ही था जो उसने अपने शिष्यों तथा सच्ची आस्था रखने वाले लोगों को दिखाया, यद्यपि उसके अन्य समस्त विचित्र कार्य हौज़ की कहानी के कारण तथा उपर्युक्त आयत के कारण विरोधी की दृष्टि में इन्कार योग्य तथा आरोप का कारण ठहर गए और अब बतौर सबूत व्यवहृत नहीं हो सकते, परन्तु उपर्युक्त चमत्कार न्यायप्रिय विरोधी की दृष्टि में भी संभव है कि प्रकटन में आया हो। अतएव चमत्कार और प्रकृति के नियम को तोड़ने वाले विशेष चमत्कारों के प्रकटन के लिए अभिलाषी की निष्ठा और नि:स्वार्थता शर्त है। ®निष्ठा और नि:स्वार्थता के यही लक्षण और निशानियां®462 हैं कि कपट और अहंकार मध्य में न हो तथा धैर्य, दृढ़ता, बेचारगी, विनम्रता से पथ-प्रदर्शन पाने की नीयत से किसी निशान की इच्छा की जाए फिर उस निशान के प्रकटन तक धैर्य और सभ्यता के साथ प्रतीक्षा की जाए ताकि ख़ुदा तआला वह बात प्रकट करे जिस से सच्चा अभिलाषी पूर्ण विश्वास के पद तक पहुंच जाए। अत: सभ्यता, निष्ठा और धैर्य ख़ुदा की बरकतों के

निशानी कि तौरात और इंजील में उसके संदर्भ में भविष्यवाणियां विद्यमान हैं जिन्हें वे स्वयं भी अपनी किताबों में मौजूद पाते हैं। दूसरी वह निशानी कि स्वयं उस नबी

शेष हाशिया नं. (11)

और क़ुदरतों को नापने लगें। अतः ख़ुदा तआला का पूर्ण प्रतिपालन तथा पूर्ण क़ुदरत, जो कण-कण के अस्तित्व और अनश्वरता के लिए प्रति पल, प्रति क्षण पोषण कर रही है तथा जिसके बारीक से बारीक अधिकार संख्या और गणना से बाहर हैं। उस पूर्ण प्रतिपालन से ब्रह्म समाज वाले इन्कारी हैं

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

प्रकटन के लिए महान शर्त है। जो व्यक्ति ख़ुदा के वरदान से लाभान्वित होना चाहता है उसके लिए यही उचित है कि वह पूर्णरूपेण सभ्य हो कर पूर्ण विवशता और धैर्य के साथ उस ने'मत को उसके पात्र के द्वार से मांगे और जहां आध्यात्म ज्ञान का झरना देखे स्वयं गिरता-पड़ता उस झरने की ओर दौड़े फिर धैर्य और सभ्यता से कुछ दिनों तक ठहरा रहे, परन्तु जो लोग ख़ुदा तआला की ओर से चमत्कार दिखाने वाले हैं उन का यह कार्य नहीं है कि वे बाज़ीगरों की भांति बाज़ारों और जन समूहों में तमाशा दिखाते फिरें तथा न ये बातें उनके अधिकार में हैं अपितु मूल वास्तविकता यह है कि उनके पत्थर में अग्नि तो निसन्देह है परन्तु सदात्माओं, धैर्यवानों तथा निष्कपट भावना रखने वालों की निष्ठापूर्ण चोट पर उस अग्नि का प्रकटन और प्रतिबिम्ब निर्भर है। एक अन्य बात भी स्मरण रखना चाहिए और वह यह है कि सदात्मा लोगों के कश्फ़ और इल्हामों को मात्र परोक्ष की ख़बरों की ही उपाधि देना गलती है अपितु वे कश्फ़ और इल्हाम ख़ुदा के समर्थनों के उद्यान की सुगन्धें हैं जो दूर से ही उस उद्यान के होने का पता देती हैं तथा उन कश्फ़ों और इल्हामों की प्रतिष्ठा और वैभव उस व्यक्ति पर यथोचित प्रकट होते हैं, जिसकी दृष्टि ख़ुदा के समर्थनों की खोज में हो अर्थात् वह ख़ुदा के समर्थनों को मूल निशान समझ कर भविष्यवाणियों को उन समर्थनों के आवश्यक साधन समझता हो जो समर्थनों को सिद्ध करने
Ⓟ463 के उद्देश्य से प्रयोग में लाए गए Ⓟहैं। अतएव ख़ुदा का सानिध्य प्राप्त होने का

की हस्ती में विद्यमान है और वह यह है कि वह बावजूद अनपढ़ और अशिक्षित होने के ऐसी पूर्ण हिदायत (पथ-प्रदर्शन) लाया है कि हर प्रकार की वास्तविक

शेष हाशिया नं. (11)

इसके अतिरिक्त ब्रह्म समाज वाले ख़ुदा के प्रतिपालन को आध्यात्मिक ⓟतौर पर भी पूर्ण और कामिल नहीं समझते, ख़ुदा तआला को इस क़ुदरत से ⓟ409 असमर्थ और असहाय विचार करते हैं कि वह अपनी पूर्ण प्रतिपालन की मांग पर मनुष्यों के लिए अपना प्रकाशमान और सन्देह-रहित कलाम उतारता।

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

आधार ख़ुदा के समर्थन हैं तथा भविष्यवाणियां उन समर्थनों का स्पष्ट सबूतों द्वारा पाया जाना प्रत्येक सामान्य और विशेष को दिखाती हैं। अत: समर्थन मूल हैं तथा भविष्यवाणियां उन की शाखा और समर्थन सूर्य के गोले की भांति हैं तथा भविष्यवाणियां उस सूर्य की रश्मियां और किरणें हैं। समर्थनों को भविष्यवाणियों के अस्तित्व से यह लाभ है कि ताकि प्रत्येक को विदित हो कि वे वास्तव में विशेष समर्थन हैं साधारण संयोगों से नहीं तथा भाग्य और संयोग पर ही चरितार्थ नहीं हो सकते तथा भविष्यवाणियों को समर्थनों के अस्तित्व से यह लाभ है कि इस महान संबंध से उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती है और उनमें एक अद्वितीय विशेषता उत्पन्न हो जाती है जो ख़ुदा से समर्थित लोगों के अलावा अन्य लोगों में नहीं पाई जाती। अत: यही विशेषता सामान्य भविष्यवाणियों तथा उन महान भविष्यवाणियों में अन्तर का कारण हो जाती है। कथन का सारांश यह कि इन लोगों की प्रतिष्ठा और महानता को समझने के लिए भविष्यवाणियों तथा पूर्ण समर्थनों के मध्य जो संबंध है उसे ध्यान में रखना चाहिए क्योंकि यह सम्बन्ध अन्य लोगों की भविष्यवाणियों में असम्भव और निषिद्ध है एवं उनकी भविष्यवाणियों में ऐसी स्पष्ट गलतियां निकल आती हैं ⓟजिस से उनका प्रत्येक अपमान प्रकट ⓟ464 होता है, परन्तु सदात्मा लोगों की प्रकाशमान भविष्यवाणियां हमेशा से सत्य के प्रकाश से प्रकाशित होती हैं। इसके अतिरिक्त वे शुभ भविष्यवाणियां एक विचित्र प्रकार के अदभुत समर्थन से परस्पर सम्बद्ध होती हैं, ख़ुदा

सच्चाइयां जिनकी सच्चाई को बुद्धि और शरीअत पहचानती है और जो समस्त संसार में शेष नहीं रही थीं, लोगों के पथ-प्रदर्शन हेतु वर्णन करता है तथा उन्हें

शेष हाशिया नं. 11

इसी प्रकार वे ख़ुदा तआला की रहमानियत पर भी पूर्ण रूप से ईमान
℗411 नहीं लाते क्योंकि पूर्ण रहमानियत यह है कि जिस ℗प्रकार ख़ुदा तआला ने शरीरों की पूर्णता और प्रशिक्षण हेतु अपनी विशेष शक्ति के हाथ से समस्त संसाधन प्रकट किए हैं तथा इस अस्थायी भौतिक समृद्धि के लिए सूर्य और

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

अपने बन्दों के कार्यों का स्वयं संरक्षक होकर आश्चर्यजनक तौर पर उनका समर्थन करता है तथा क्या प्रत्यक्ष तौर पर क्या आन्तरिक तौर पर प्रतिक्षण, प्रतिपल उन की सहायता में रहता है तथा उन से उसका यही स्वभाव है कि उन्हें अपने समर्थनों की सूचनाएं घटना पूर्व बताता है और उनके असमंजस और चिन्ता के अवसर पर अपने प्रकाश से भरपूर कलाम द्वारा उन्हें सन्तोष और सन्तुष्टि प्रदान करता है फिर ऐसे अदभुत रंग में उनकी सहायता करता है जो कल्पना और विचार में नहीं होती। जो व्यक्ति उनकी संगति में रहकर इन बातों को सूक्ष्म दृष्टि से देखता रहता है तथा शुद्ध और पवित्र दृष्टि से उन की प्रतिष्ठा और महानता पर विचार करता है तो उसे सहसा एक आवश्यक और अटल विश्वास के साथ इक़रार करना पड़ता है कि ये लोग ख़ुदा से समर्थित हैं तथा उनकी ओर ख़ुदा का एक विशेष ध्यान है क्योंकि यह बात स्पष्ट है कि जब एक आधी बार नहीं अपितु बीसियों बार किसी मनुष्य को संयोग हो कि वह किसी समर्थन का वादा घटना पूर्व सुन कर फिर उस समर्थन को प्रकट होते हुए स्वयं अपनी आंखों से देख ले तो कोई
℗465 मनुष्य ऐसा ℗पागल और मूर्ख नहीं कि फिर भी उन सही भविष्यवाणियों और ठोस समर्थनों पर पूर्ण विश्वास न कर सके। हां यदि द्वेष की अधिकता और बेईमानी से उसकी चश्मदीद घटना का जानबूझ कर इन्कार करे तो यह और बात है परन्तु फिर भी उस का हृदय इन्कार नहीं कर सकता तथा उस समय उसे दोषी बनाता है कि तू दुष्ट और उपद्रवी व्यक्ति है। अब कुछ ताज़ा

उसके पालन करने का आदेश देता है और प्रत्येक अनुचित बात से कि जिसकी सच्चाई से बुद्धि और शरीअत इन्कार करती है रोकता है तथा पवित्र वस्तुओं का

शेष हाशिया नं. (11)

चन्द्रमा, वायु और बादल इत्यादि सैकड़ों वस्तुएं अपने हाथ से बना दी हैं। इसी प्रकार उसने अध्यात्मिक पूर्णता और प्रशिक्षण हेतु तथा उस लोक की समृद्धि ®के लिए जिसका दुर्भाग्य और सौभाग्य अजर-अमर है। ®412
अध्यात्मिक प्रकाश अर्थात् अपना पवित्र और प्रकाशमान कलाम संसार के

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

इल्हाम सत्याभिलाषियों के हितार्थ लिखे जाते हैं और इसी प्रकार समय समय पर यदि ख़ुदा ने चाहा तो ख़ुदा की प्रदत्त अनुकम्पाओं से जो कुछ इस ख़ाकसार पर प्रकट किया जाएगा वह इस पुस्तक में लिखा जाता रहेगा परन्तु वह जो ख़ुदा चाहे। इस से उद्देश्य यह है कि ताकि विश्वास और आध्यात्म ज्ञान के सच्चे अभिलाषी लाभ प्राप्त करें और अपनी स्थिति में बरकत पाएं और उनके हृदय से वे पर्दे उठें जिनसे उनका साहस नितान्त पतित तथा विचार नितान्त अंधकारमय हो रहे हैं। यहां हम पुनः यह भी प्रकट करते हैं कि ये बातें ऐसी नहीं हैं जिनका सबूत प्रस्तुत करने से यह ख़ाकसार असमर्थ हो या जिनके सबूत में अपने ही सहधर्मियों को प्रस्तुत किया जाए। ये वे व्यापक सत्य की बातें हैं जिनकी सच्चाई पर विपरीत धर्म वाले लोग साक्षी हैं तथा जिनकी सच्चाई पर वे लोग गवाही दे सकते हैं ®जो हमारे ®466
धार्मिक शत्रु हैं। यह सब आयोजन इसलिए किया गया ताकि जो लोग वास्तव में सदमार्ग के इच्छुक और जिज्ञासु हैं उन पर पूर्ण स्पष्टता के साथ प्रकट हो जाए कि इस्लाम में समस्त बरकतें और प्रकाश सीमित और परिवेष्टित हैं ताकि इस युग की नास्तिक नस्ल पर समझाने के अन्तिम प्रयास अटल प्रमाणों द्वारा पूर्ण हों और ताकि उन लोगों के स्वभाव में भरी दुष्टता प्रत्येक न्यायकर्ता पर प्रकट हो कि जो अंधकार से मित्रता और प्रकाश से शत्रुता रखते हुए हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्चकोटि के पदों से इन्कार करके उस मान्य की प्रतिष्ठा के सन्दर्भ में

पवित्र और दूषित वस्तुओं को दूषित ठहराता है तथा यहूदियों और ईसाइयों के सर से वह भार उतारता है जो उन पर पड़ा हुआ था तथा जिन बुराइयों में वे लिप्त थे

शेष हाशिया नं. (11)

परिणाम के लिए भेजा हो तथा अभिलाषी आत्माओं को जिस ज्ञान की आवश्यकता है वह समस्त ज्ञान स्वयं प्रदान किया हो तथा जिन सन्देहों और शंकाओं में उनका विनाश है उन समस्त सन्देहों से स्वयं मुक्त किया हो
Ⓟ413 परन्तु इस पूर्ण रहमानियत को ब्रह्म समाज वाले स्वीकार Ⓟनहीं करते तथा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

दुष्टतापूर्ण वाक्य मुख पर लाते हैं, उस मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ इन्सान पर अनुचित आरोप लगाते हैं, नितान्त अदूरदर्शिता के कारण और नितान्त बेईमानी के कारण इस बात से अपरिचित हो रहे हैं कि संसार में वही एक पूर्ण इन्सान आया है जिसका प्रकाश सूर्य की भांति संसार पर हमेशा अपनी रश्मियां डालता रहा है और सदैव डालता रहेगा ताकि उन सच्चे लेखों से इस्लाम की प्रतिष्ठा और प्रताप स्वयं विरोधियों के इक़रार द्वारा सिद्ध हो जाए और ताकि जो व्यक्ति सत्य की अभिलाषा रखता हो उसके लिए प्रमाण का मार्ग खुल जाए और जो स्वयं में कुछ अहंकार रखता हो उसका अहंकार
Ⓟ467 टूट जाए एवं उन कश्फ़ों और इल्हामों Ⓟके लिखने का यह भी एक कारण है ताकि उसके द्वारा मौमिनों के ईमान की शक्ति बढ़े तथा उनके हृदयों को दृढ़ता और सन्तोष प्राप्त हो तथा वे इस सच्चाई को पूर्ण विश्वास के साथ समझ लें कि सदमार्ग केवल इस्लाम धर्म है और अब आकाश के नीचे केवल एक ही नबी और एक ही किताब है अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो समस्त नबियों से उच्चतम, श्रेष्ठतम और समस्त रसूलों से सर्वांगपूर्ण तथा ख़ातमुल अंबिया और मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ हैं जिन के अनुकरण से ख़ुदा प्राप्त होता है, अंधकारमय पर्दे उठते हैं, इसी लोक में वास्तविक मुक्ति के लक्षण प्रकट होते हैं, कुर्आन करीम जो सत्य और पूर्ण आदेशों और प्रभावों पर आधारित है जिसके माध्यम से आध्यात्म ज्ञान प्राप्त होते हैं, मानवीय अपवित्रताओं से हृदय पवित्र होता है, मनुष्य

उनसे मुक्ति प्रदान करता है। अत: जो लोग उस पर ईमान लाएं और पूर्ण रूप से अनुसरण करें जो उसके साथ उतरा है वे ही लोग मुक्ति प्राप्त हैं। लोगों को कह

शेष हाशिया नं. 11

उनके विचार में यद्यपि ख़ुदा ने मनुष्य के पेट भरने के लिए प्रत्येक प्रकार की सहायता की तथा समर्थन में कोई कमी नहीं रखी परन्तु अध्यात्मिक प्रशिक्षण में वह सहायता न कर सका, जैसे ख़ुदा ने अध्यात्मिक प्रशिक्षण के सन्दर्भ में जो मूल और वास्तविक प्रशिक्षण था जानबूझ कर संकोच

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

असभ्यता, असावधानी और आशंकाओं के पर्दों से मुक्त होकर वास्तविक विश्वास के पद तक पहुंच जाता है। एक कारण इन कश्फ़ और इल्हामों के लेख पर फिर अन्य धर्मावलम्बियों की साक्ष्यों द्वारा उसके सिद्ध करने पर यह भी है ताकि मुसलमानों के हाथ में हमेशा के लिए एक शक्तिशाली सबूत रहे और जो अधम, निष्ठुर और निर्दयी लोग मुसलमानों से व्यर्थ का मुकाबला ®और झगड़ा करते हैं उनका पराजित और निरुत्तर होना लोगों पर ®468
हमेशा प्रमाणित और प्रकट होता रहे, आजकल जो पथ-भ्रष्टता और गुमराही की एक विषाक्त वायु चल रही है उसके विष से वर्तमान युग के सत्याभिलाषी एवं भविष्य की नस्लें सुरक्षित रहें क्योंकि उन इल्हामों में ऐसी बहुत सी बातें आएंगी जिनका प्रकटन भविष्य के युगों पर निर्भर है। अत: जब यह युग समाप्त होगा और एक नवीन संसार का अनावरण होगा और इस किताब में वर्णित सत्य को चश्मदीद तौर पर देखेगा तो ये भविष्यवाणियां उनके ईमान की दृढ़ता के लिए बहुत लाभ देंगी यदि ख़ुदा ने चाहा। अतएव इस समय जो भविष्यवाणियां ख़ुदा तआला की ओर से प्रकट हुई हैं, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :- उन समस्त में से एक यह है कि कुछ समय गुज़रा है एक बार रुपयों की नितान्त आवश्यकता हुई जिसका हमारे यहां के साथ उठने बैठने वाले आर्यों को भली भांति ज्ञान था तथा उन्हें यह भी अच्छी तरह मालूम था कि प्रत्यक्षतया ऐसा कोई आयोजन नहीं है कि जिससे आशा रखी जा सके अपितु इस सन्दर्भ में उन्हें व्यक्तिगत तौर पर ज्ञान था जिसकी

दे कि मैं ख़ुदा की ओर से तुम सब की ओर भेजा गया हूं। वह ख़ुदा जो बिना किसी की भागीदारी के आकाश और पृथ्वी का स्वामी है जिसके अतिरिक्त और

शेष हाशिया नं. (11)

Ⓟ414 किया तथा उसके लिए ऐसे सुदृढ़, शक्तिशाली तथा विशेष संसाधन उत्पन्न न किए जैसे Ⓟउसने शारीरिक प्रशिक्षण के लिए उत्पन्न किए अपितु मनुष्य को केवल उसी की अपूर्ण बुद्धि के अधिकार में छोड़ दिया और अपनी ओर से उसकी बुद्धि की सहायता हेतु ऐसा कोई पूर्ण प्रकाश उत्पन्न न किया

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

Ⓟ469 वे साक्ष्य दे सकते हैं। अत: जबकि वे ऐसे कठिन और कठिनाई के समाधान संबंधी संसाधनों के अभाव से Ⓟपूर्ण रूप से अवगत थे, इसलिए हृदय में सहसा इस इच्छा ने जोश मारा कि कठिनाई के समाधान हेतु ख़ुदा के समक्ष दुआ की जाए ताकि उस दुआ की स्वीकारिता से प्रथम तो अपनी कठिनाई का समाधान हो जाए, द्वितीय विरोधियों के लिए ख़ुदाई समर्थन का निशान उत्पन्न हो, ऐसा निशान जो उसकी सच्चाई पर वे लोग साक्षी हो जाएं। अत: उसी दिन दुआ की गई और ख़ुदा तआला से यह मांगा गया कि वह निशान के तौर पर आर्थिक सहायता से सूचित करे, तब यह इल्हाम हुआ – दस दिन पश्चात् मैं मौज दिखाता हूं –

اَلَا اِنَّ نَصْرَ اللّٰہِ قَرِیْبٌ- فی شائل مقیاس

دن وِل یُو گوٹو امرتسر ①

अर्थात् दस दिन के उपरान्त रुपया आएगा, ख़ुदा की सहायता निकट है तथा जैसे ऊंटनी जब जनने के लिए पूंछ उठाती है तब उसका बच्चे को जन्म देने का समय निकट होता है, ऐसा ही ख़ुदा की मदद भी निकट है, फिर अंग्रेज़ी वाक्य में यह फ़रमाया कि दस दिन के उपरान्त जब रुपया आएगा तब तुम अमृतसर भी जाओगे। अत: जैसा कि भविष्यवाणी में कहा गया था वैसा ही हिन्दुओं अर्थात् उपर्युक्त आर्यों के समक्ष घटित हुआ अर्थात् भविष्यवाणी के अनुसार दस दिन तक एक कौड़ी न आई और दस दिन के उपरान्त

① Then will you go to Amritsar (अनुवादक)

कोई ख़ुदा और उपास्य नहीं जीवित करता है और मृत्यु देता है। अतः ख़ुदा और उसके रसूल पर जो कि अनपढ़ नबी है ईमान लाओ। वह नबी जो अल्लाह और उसके आदेशों

शेष हाशिया नं. (11)

जिससे बुद्धि की वैमनस्ययुक्त आंख प्रकाशमान होकर सद्मार्ग धारण करती तथा भूल और ग़लती के विनाशकारी खतरों से सुरक्षित हो जाती। इसी प्रकार ब्रह्म समाज वाले ख़ुदा तआला Ⓟकी रहीमियत पर भी पूर्णतया ईमान Ⓟ415
नहीं रखते क्योंकि पूर्ण रहीमियत यह है कि ख़ुदा तआला अभिलाषी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

अर्थात ग्यारहवें दिन मुहम्मद अफ़ज़ल ख़ान साहिब सुपरिन्टेन्डेण्ट प्रबन्ध रावलपिण्डी ने एक सौ दस रुपए भेजे तथा बीस रुपए एक अन्य स्थान से आए फिर निरन्तर रुपया आने का क्रम ऐसा प्रारंभ Ⓟहो गया जिसकी आशा Ⓟ470
न थी और उसी दिन कि जब दस दिन गुज़रने के उपरान्त मुहम्मद अफ़ज़ल इत्यादि का रुपया आया तो अमृतसर भी जाना पड़ा, क्योंकि निचली अदालत अमृतसर से एक साक्ष्य हेतु उसी दिन इस ख़ाकसार के नाम एक नोटिस आ गया। यह वह महान भविष्यवाणी है जिसकी विस्तृत वास्तविकता पर यहां के कुछ आर्यों को भली भांति सूचना है और वे उचित तौर पर जानते हैं कि इस भविष्यवाणी से पूर्व नितान्त आवश्यकता पड़ने के कारण दुआ की गई, फिर उस दुआ का स्वीकार होना, फिर दस दिन के उपरान्त ही रुपया आने के शुभ सन्देश का दिया जाना, साथ ही रुपया आने के पश्चात् अमृतसर जाने की सूचना का दिया जाना, ये समस्त सत्य और उचित घटनाएं हैं, फिर उन्हीं के समक्ष उस भविष्यवाणी का पूर्ण होना भी उन्हें मालूम है यद्यपि वे लोग कुफ्र के अंधकार में पड़े होने के कारण दुष्टता और शत्रुता से ख़ाली नहीं हैं तथा अपने अन्य बन्धुओं की तरह इस्लाम से द्वेष और द्रोह रखने पर तत्पर तथा मृत संसार पर गिरे हुए और सत्य और ईमानदारी से पूर्णतया लापरवाह हैं, परन्तु यदि साक्ष्य के समय उन्हें शपथ दी जाए तो शपथ की अवस्था में वे सत्य बोलने से किसी प्रकार विमुख नहीं हो सकते और यदि ख़ुदा से नहीं तो अपमान तथा शपथ के दैवी-कष्ट से भयभीत होकर सच्ची

पर ईमान लाता है उसका अनुसरण करो ताकि तुम हिदायत पाओ।

Ⓟوَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ Ⓟ477

शेष हाशिया नं. (11)

आत्माओं को उनके स्वाभाविक आवेगों के अनुसार उनके निष्कपट जोश से भरे अनुमान पर तथा उनके निष्ठापूर्ण प्रयासों की मात्रा पर उन्हें स्पष्ट शुद्ध आध्यात्म ज्ञानों से परिपूर्ण करे और वे जितना अपने हृदयों को खोलें उनके लिए उतने ही आकाशीय द्वार खोले जाएं तथा उनकी जितनी प्यास

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

साक्ष्य अवश्य देंगे।

इसके अतिरिक्त एक यह है कि मौलवी अबू अब्दुल्लाह ग़ुलाम अली साहिब क़सूरी जिन की चर्चा का हाशिए का हाशिया नं. 2 में उल्लेख है कि ख़ुदा के वलियों (ऋषियों) के इल्हाम की प्रतिष्ठा में कुछ सन्देह रखते थे, यह सन्देह उनके आमने-सामने के भाषण से नहीं अपितु उनकी पत्रिका की कुछ इबारतों से प्रतीत होता था। अतएव कुछ समय हुआ उनके शिष्यों में से एक सज्जन नूर अहमद नाम के जो हाफ़िज़ और हाजी भी हैं अपितु कदाचित कुछ अरबी भी जानते हैं तथा क़ुर्आन के उपदेशक भी हैं और अमृतसर में रहते हैं, संयोग से अपनी भिक्षु जैसी स्थिति में भ्रमण करते-करते यहां भी आ गए। इल्हाम से इन्कार के सन्दर्भ में वह मौलवी साहिब से कुछ बढ़कर ही मालूम होते थे तथा ब्रह्म समाज वालों की तरह केवल मानव विचारों का नाम इल्हाम रखते थे। चूंकि वह हमारे ही पास ठहरे और उन्होंने इस ख़ाकसार पर स्वयं ही इल्हाम के संबंध में ग़लत राय जो उनके हृदय में थी वादी के रूप में प्रकट भी कर दी, इसलिए हृदय को बहुत दुख हुआ। यद्यपि तार्किक तौर पर समझाया गया कुछ प्रभाव न हुआ। अन्ततः ख़ुदा की ओर ध्यान तक नौबत पहुंची तथा उन्हें भविष्यवाणी के प्रकटन से पूर्व सूचित किया गया कि ख़ुदा तआला के समक्ष दुआ की जाएगी।

Ⓟ472 Ⓟआश्चर्य नहीं कि वह दुआ स्वीकारिता तक पहुंचकर ख़ुदा तआला कोई ऐसी भविष्यवाणी प्रकट करे जिसे तुम चश्मदीद तौर पर देख सको। अतः

نُوۡرًا نَّہۡدِیۡ بِہٖ مَنۡ نَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِنَا ؕ وَ اِنَّکَ لَتَہۡدِیۡۤ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسۡتَقِیۡمٍ ‐ ① (भाग-25)

और इसी प्रकार हमने अपने अम्र (आदेश) से तेरी ओर एक रूह उतारी है। तुझे ज्ञात

शेष हाशिया नं. (11)

बढ़ती जाए उतना ही उन्हें पानी भी दिया जाए, यहां तक कि वे पूर्ण विश्वास के स्वादिष्ट शरबत से तृप्त हो जाएं तथा संदेह और शंका की मृत्यु से उन्हें पूर्ण रूपेण मुक्ति प्राप्त हो। ब्रह्म समाज वाले इस सच्चाई के इन्कारी हैं तथा उनके कथनानुसार मनुष्य कुछ ®ऐसा दुर्भाग्यशाली है कि यद्यपि वास्तविक ®417

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

उस रात इस उद्देश्य हेतु सर्वशक्तिमान ख़ुदा के दरबार में दुआ की गई। प्रात:काल कश्फ़ की अवस्था में एक पत्र दिखाया गया जिसे एक व्यक्ति ने डाक में भेजा है, उस पत्र पर अंग्रेज़ी में लिखा हुआ है "आई एम कौरलर" और अरबी में यह लिखा हुआ है "هٰذَا شَاهِدٌ نَزَّاغٌ"। और यही इल्हाम लिपिक के वर्णन के अनुसार इल्क़ा किया गया और फिर वह अवस्था जाती रही। चूंकि यह ख़ाकसार अंग्रेज़ी भाषा का कुछ ज्ञान नहीं रखता। अत: प्रात: होते ही प्रथम मियां नूर अहमद साहिब को इस कश्फ़ और इल्हाम की सूचना देकर तथा अपने वाले पत्र से सूचित करके उसी समय एक अंग्रेज़ी जानने वाले से उस अंग्रेज़ी वाक्य का अर्थ मालूम किया गया तो ज्ञात हुआ कि उस का अर्थ यह है कि "मैं झगड़ने वाला हूं।" अतएव इस संक्षिप्त वाक्य से निश्चय ही यह ज्ञात हो गया कि किसी झगड़े से संबंधित कोई पत्र आने वाला है और هٰذَا شَاهِدٌ نَزَّاغٌ कि जो लिपिक की ओर से दूसरा वाक्य लिखा हुआ देखा था उसका यह ®अर्थ प्रकट हुआ कि पत्र के ®473 लेखक ने किसी मुक़द्दमे की साक्ष्य के संबंध में वह पत्र लिखा है। उस दिन हाफ़िज़ नूर अहमद साहिब सख़्त वर्षा के कारण अमृतसर जाने से रोके गए और वास्तव में एक आकाशीय कारण से उन का रोका जाना भी दुआ की स्वीकारिता की एक सूचना थी ताकि उनके लिए ख़ुदा तआला से जो याचना

① सूरह-अश्शूरा : 53

न था कि किताब और ईमान किसे कहते हैं, परन्तु हमने उसे एक प्रकाश बनाया है, जिसे हम चाहते हैं इसके द्वारा हिदायत देते हैं और निश्चय ही तू सदमार्ग की ओर पथ-प्रदर्शन करता है।

शेष हाशिया नं. 11

प्रियतम से मिलन हेतु तड़पा करे और यद्यपि उसकी आंखों से सरिता बह निकले और यद्यपि उस प्रिय मित्र हेतु मिट्टी में मिल जाए परन्तु वह कदापि न मिले तथा उनके निकट वह कुछ ऐसा कठोर हृदय है कि जिसे अपने अभिलाषियों पर दया ही नहीं तथा जिज्ञासुओं को अपने विशेष निशानों द्वारा

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

की गई थी भविष्यवाणी के प्रकटन को चश्मदीद देख लें। अतएव उन्हें इस समस्त भविष्यवाणी का विषय सुना दिया गया। शाम को उनके समक्ष पादरी रजब अली साहिब प्रबन्धक, मालिक 'सफ़ीर हिन्द प्रेस' का एक रजिस्टर्ड पत्र अमृतसर से आया, जिस से मालूम हुआ कि पादरी साहिब ने अपने लिपिक पर जो इसी पुस्तक का लिपिक है निचली अदालत में दावा किया है तथा इस ख़ाकसार को एक घटना का साक्षी बनाया है, इसके साथ ही एक सरकारी सम्मन भी आया। तत्पश्चात वह इल्हामी वाक्य अर्थात هٰذَا شَاهِدٌ نَزَّاغٌ जिसका अर्थ यह है कि वह साक्षी तबाही डालने वाला है। इस अर्थ पर चरितार्थ ज्ञात हुआ कि सफ़ीर हिन्द प्रेस के प्रबन्धक के हृदय में पूर्ण विश्वास के साथ यह धारणा थी कि इस ख़ाकसार की साक्ष्य जो उचित और वस्तु स्थिति के अनुसार होगी तथा दृढ़ता और सच्चाई के कारण तथा विश्वसनीय और महत्वपूर्ण होने के कारण प्रतिद्वन्द्वी सदस्य पर तबाही डालेगी, इसी नीयत से उपर्युक्त प्रबन्धक ने इस ख़ाकसार को साक्ष्य
Ⓟ474 हेतु कष्ट दिया तथा सम्मन Ⓟजारी कराया। संयोग से ऐसा हुआ कि जिस दिन यह भविष्यवाणी पूरी हुई और अमृतसर जाने का सफ़र करना पड़ा वही दिन भविष्यवाणी के पूर्ण होने का दिन था। अत: वह पहली भविष्यवाणी भी मियां नूर अहमद साहिब के समक्ष पूरी हो गई अर्थात् उसी दिन जो दस दिन के उपरान्त का दिन था रुपया आ गया और अमृतसर भी जाना पड़ा। इस पर ख़ुदा का धन्यवाद।

Ⓟوَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّا رْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ - بَلْ Ⓟ478
هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ - ①(21-भाग)

शेष हाशिया नं. (11)

सांत्वना प्रदान नहीं करता तथा Ⓟअपनी प्रेमयुक्त झलकियों से दुख में पड़े Ⓟ418 लोगों का कुछ उपचार नहीं करता अपितु उन्हें उन्हीं के विचारों में भटकता हुआ छोड़ता है तथा इससे अधिक उन्हें कोई भी मारिफ़त प्रदान नहीं करता कि केवल अपनी अटकलों से काम लें तथा उन्हीं अटकलों में ही जीवनपर्यन्त भटक कर अपनी अंधकारमय स्थिति में ही मर जाएं, परन्तु क्या यह सत्य

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

इन सब में से एक यह है कि एक बार फ़ज्र के समय इल्हाम हुआ कि आज हाजी अरबाब मुहम्मद लश्कर ख़ान के परिजन का रुपया आता है। यह भविष्यवाणी भी नियमानुसार उसी समय कुछ आर्यों को बताई गई और यह तय पाया कि डाक के समय उन्हीं में से कोई डाकखाने जाए। अत: एक आर्य मलावा मल नाम का डाकखाने गया और यह सूचना लाया कि हूती मरदान से दस रुपए आए हैं तथा एक पत्र लाया जिसमें लिखा था कि यह दस रुपए अरबाब सरवर ख़ान ने भेजे हैं। चूंकि अरबाब के नाम से "सामूहिक एकता" अर्थ होता था, इसलिए उन आर्यों को कहा गया कि अरबाब के शब्द में दोनों सज्जनों की भागीदारी का होना भविष्यवाणी की सच्चाई के लिए Ⓟपर्याप्त है परन्तु कुछ लोगों ने इस बात को स्वीकार न Ⓟ475 किया और कहा कि "सामूहिक एकता" अलग बात है और निकटता बात पृथक तथा इस इन्कार पर बहुत विवाद किया। विवश हो कर उनके हठ पर पत्र लिखना पड़ा और वहां से अर्थात् हूती मरदान से कई दिन के पश्चात् एक मित्र मुन्शी इलाही बख़्श ने जो उन दिनों हूती मरदान में एकाउन्टेन्ट थे पत्र के उत्तर में लिखा कि अरबाब सरवर ख़ान अरबाब मुहम्मद लश्कर ख़ान का बेटा है अतएव उस पत्र के आने पर समस्त विरोधी जन निरुत्तर

① सूरह अलअन्कबूत - 49, 50

और इससे पूर्व तू किसी किताब को नहीं पढ़ता था और न अपने हाथ से लिखता था कि असत्य के पुजारियों को सन्देह करने का कोई कारण भी होता अपितु वे स्पष्ट

शेष हाशिया नं. (11)

Ⓟ419 है कि ख़ुदा तआला ऐसा ही Ⓟकठोर हृदय है अथवा ऐसा ही निर्दयी और कृपण है या ऐसा ही निर्बल और अशक्त है कि जिज्ञासुओं को विस्मय और असमंजस में डालता है तथा खटकाने वालों पर अपना द्वार बन्द रखता है और जो निष्ठापूर्वक उसकी ओर दौड़ते हैं उनकी गलती पर दया नहीं करता

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

और असमर्थ रह गए। इस पर ख़ुदा की भूरि-भूरि प्रशंसा।

उनमें से एक यह है कि एक बार अप्रैल 1883 ई. में प्रात: काल जागने की स्थिति में जेहलम से रुपया रवाना होने की सूचना दी गई। इस बात से यहां आर्यों को जिनमें से कुछ स्वयं डाकखाने जाकर सूचना लेते थे। भली भांति सूचना थी कि इस रुपये के रवाना होने के सन्दर्भ में जेहलम से कोई पत्र नहीं आया था, क्योंकि इस ख़ाकसार ने यह प्रबन्ध पहले ही कर रखा था कि डाकखाने से जो भी डाक आती थी उसे कुछ आर्य लोग स्वयं ही
Ⓟ476 डाकखाने से Ⓟले आते थे तथा प्रतिदिन प्रत्येक बात से भली भांति सूचित रहते थे और अब तक डाकख़ाने का डाक मुन्शी भी हिन्दू ही है। अतएव जब यह इल्हाम हुआ तो उन दिनों में एक पंडित का शाम लाल नाम का बेटा जो देवनागरी और फ़ारसी दोनों में लिख सकता था दैनिक लिपिक बतौर नौकर रखा हुआ था और जो परोक्ष की बातें प्रकट होती थीं उसी के हाथ से देवनागरी और फ़ारसी में घटनापूर्व लिखाई जाती थीं फिर उपर्युक्त शामलाल के उस पर हस्ताक्षर कराए जाते थे। अत: यह भविष्यवाणी भी नियमानुसार उस से लिखाई गई तथा उस समय कई आर्यों को भी सूचना दी गई। अभी पांच दिन नहीं गुज़रे थे कि पैंतालीस रुपए का मनीआर्डर जेहलम से आ गया। जब हिसाब किया गया तो ठीक उसी दिन मनी आर्डर रवाना हुआ था जिस दिन अन्तर्यामी ख़ुदा ने उसके रवाना होने की सूचना

और खुले-खुले निशान हैं जो बुद्धिमान लोगों के सीनों में हैं तथा उनसे इन्कार वही लोग करते हैं जो अन्यायी हैं।

शेष हाशिया नं. (11)

तथा उनका हाथ नहीं पकड़ता और उन सत्याभिलाषियों को गढ़े में गिरने देता है Ⓟऔर स्वयं कृपा करके कुछ पग आगे नहीं आता तथा अपने दर्शन Ⓟ420 विशेष से कठिनाइयों की लम्बी कहानी को संक्षिप्त नहीं करता। سُبۡحَانَہٗ وَ تَعَالٰی عَمَّا یَصِفُوۡنَ । इसी प्रकार ब्रह्म समाज वाले ख़ुदा तआला के समस्त

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

दी थी। यह भविष्यवाणी भी उसी प्रकार से प्रकट हुई जिस से पूर्ण स्पष्टता के साथ Ⓟविरोधियों पर उसकी सच्चाई प्रकट हो गई और स्वीकार करने Ⓟ477 के अतिरिक्त कोई चारा न रहा, क्योंकि उन्हें अपने व्यक्तिगत ज्ञान से भली भांति मालूम था कि इस रुपये का इस माह में जेहलम से रवाना होना सूचना के अभाव में था कि इस से पूर्व सूचनार्थ कोई पत्र नहीं आया था। इस पर ख़ुदा की भूरि-भूरि प्रशंसा।

इनमें से एक यह है कि कुछ समय हुआ है कि स्वप्न में देखा था कि हैदराबाद से नवाब इक़्बालुद्दौला साहिब की ओर से पत्र आया है, उसमें कुछ रुपए देने का वादा लिखा है। स्वप्न भी नियमानुसार उपर्युक्त दैनिक कार्यों के लेखन में उसी हिन्दू के हाथ से लिखाया गया और कई आर्यों को सूचित किया गया। कुछ दिनों के पश्चात हैदराबाद से पत्र आ गया और आदरणीय नवाब साहिब ने सौ रुपया भेजा। इस पर ख़ुदा की भूरि-भूरि प्रशंसा।

उनमें से एक यह है कि एक मित्र ने बड़ी कठिन परिस्थिति में लिखा कि उसका एक परिजन किसी संगीन मुकद्दमे में गिरफ्तार है तथा Ⓟमुक्त होने Ⓟ478 का कोई उपाय दिखाई नहीं देता तथा छूटने का कोई मार्ग दृष्टिगोचर नहीं होता। अत: उस मित्र ने कष्टप्रद वृत्तान्त लिख कर दुआ का निवेदन किया। चूंकि उसका हित प्रारब्ध था और प्रारब्ध लंबित था, इसलिए उसी रात शुद्ध समय प्राप्त हो गया जो काफी समय से प्राप्त नहीं हुआ था दुआ की गई और

इन समस्त आयतों से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनपढ़ होना पूर्ण स्पष्टता के साथ सिद्ध होता है, क्योंकि स्पष्ट है कि यदि आंहज़रत वास्तव में

शेष हाशिया नं. (11)

संसारों के प्रतिपालक होने से भी अपरिचित हैं क्योंकि प्रतिफल-दिवस के मालिक होने की वास्तविकता यह है कि ख़ुदा तआला का पूर्ण स्वामित्व जो
Ⓟ421 महानतम आभाओं पर निर्भर है Ⓟप्रकट होकर फिर उस स्वामित्व की प्रतिष्ठानुसार बन्दों को पूरा-पूरा प्रतिफल प्रदान किया जाए अर्थात् प्रथम

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

वह शुद्ध समय स्वीकारिता की आशा देता है। अत: स्वीकारिता के लक्षणों से एक आर्य को सूचित किया गया। कुछ दिनों के पश्चात् सूचना प्राप्त हुई कि वादी एक अकस्मात मृत्यु का शिकार हो गया और इस प्रकार गिरफ़्तार व्यक्ति मुक्त हो गया। इस पर ख़ुदा की भूरि-भूरि प्रशंसा।

इसके अतिरिक्त कभी-कभी अन्य भाषा में इल्हाम होना जिस से यह ख़ाकसार अनभिज्ञ मात्र है फिर उस इल्हाम का किसी भविष्यवाणी पर आधारित होना अदभुत चमत्कारों में से है जो सर्वशक्तिमान की विशाल
Ⓟ479 क़ुदरतों को सिद्ध करता है, Ⓟयद्यपि अपरिचित भाषा के समस्त शब्द सुरक्षित नहीं रहते तथा उनके उच्चारण में प्राय: इल्हाम के तेज़ी के साथ आने के कारण तथा उच्चारण और भाषा से अनभिज्ञता के कारण कुछ अन्तर आ जाता है, परन्तु अधिकतर साफ-साफ और हल्के और सरल वाक्यों में कम अन्तर आता है और यह भी होता है कि इल्क़ा की शीघ्रता और तेज़ी के कारण कुछ शब्द स्मरण से बाहर रह जाते हैं, परन्तु जब किसी वाक्य के इल्क़ा की पुनरावृति दो तीन बार हो तो वे शब्द भली भांति स्मरण रहते हैं। इल्हाम के समय सर्वशक्तिमान ख़ुदा अपने उस बहस के अधिकार से कार्य करता है जिसमें बाह्य या आन्तरिक संसाधनों की कुछ मिलावट नहीं होती। उस समय भाषा ख़ुदा के हाथ में एक उपकरण होता है, जिस प्रकार और जिस ओर चाहता है उस उपकरण को अर्थात भाषा को फेरता है और प्राय: ऐसा ही होता है कि शब्द ज़ोर के साथ एक तेज़ी से निकलते आते हैं

अनपढ़ और अशिक्षित न होते तो बहुत से लोग इस अनपढ़ता के दावे को झुठलाने वाले उत्पन्न हो जाते, क्योंकि आंहज़रत ने किसी ऐसे देश में दावा नहीं किया था कि

शेष हाशिया नं. (11)

उस सच्चे स्वामी के पूर्ण स्वामित्व का सबूत प्रकटन के ऐसे पूर्ण स्तर पर हो जाए कि समस्त भौतिक संसाधन मध्य से पूर्ण रूप से दूर हो जाएं तथा मध्य में 'ज़ैद' तथा 'उमर' (काल्पनिक नाम हैं) का हस्तक्षेप न रहे तथा एकांकी महाप्रकोपी स्वामी का अस्तित्व स्पष्ट तौर पर दृष्टिगोचर हो। जब यह पूर्ण मारिफ़त अपनी झलक दिखा चुकी तो प्रतिफल ℗भी सम्पूर्ण तौर ℗422

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

और प्रायः ऐसा ℗भी होता है कि जैसे कोई आनन्द और नाज़ो अदा से क़दम ℗480 रखता है और एक कदम पर रुक कर फिर दूसरा क़दम उठाता है और चलने में अपनी सुन्दर प्रकृति का प्रदर्शन करता है तथा इन दोनों प्रकृतियों के धारण करने में नीति यह है ताकि ख़ुदाई इल्हाम को कामुक और दुष्टतापूर्ण विचारों से पूर्ण अन्तर प्राप्त रहे और सर्वशक्तिमान ख़ुदा का इल्हाम अपनी प्रतापी और अप्रतापी बरकत से तुरन्त पहचाना जाए। एक बार की परिस्थिति याद आई है कि अंग्रेज़ी में प्रथम यह इल्हाम हुआ – **"आई लव यू"**[1] अर्थात मैं तुम से प्रेम करता हूं फिर यह इल्हाम हुआ – **"आई एम विद यू"**[2] अर्थात मैं तुम्हारे साथ हूं। फिर इल्हाम हुआ – **"आई शैल हैल्प यू"**[3] अर्थात् मैं तुम्हारी सहायता करूंगा। फिर इल्हाम हुआ – **आई कैन व्हाट आई विल डू**[4] अर्थात् मैं कर सकता हूं जो चाहूंगा तत्पश्चात बहुत ज़ोर से शरीर कांप गया यह ℗इल्हाम हुआ **"वी कैन व्हाट वी विल डू"**[5] अर्थात हम कर ℗481 सकते हैं जो चाहेंगे। उस समय एक ऐसी उच्चारण शैली और उच्चारण मालूम हुआ कि जैसे एक अंग्रेज़ है जो सर पर खड़ा हुआ बोल रहा है और बावजूद भयंकर होने के उसमें एक आनन्द था जिससे आत्मा को अर्थ मालूम करने से पूर्व ही एक सन्तोष और सन्तुष्टि प्राप्त होती थी। यह

[1] I LOVE YOU. (अनुवादक) [2] I AM WITH YOU. (अनुवादक)

[3] I SHALL HELP YOU. (अनुवादक) [4] I CAN WHAT I WILL DO. (अनुवादक)

[5] WE CAN WHAT WE WILL DO. (अनुवादक)

जिस देश के लोगों को आंहज़रत की परिस्थितियों और घटनाओं से अपरिचित और अनभिज्ञ ठहरा सकें अपितु वे समस्त लोग ऐसे थे जिन में आंहज़रत सल्लल्लाहो

शेष हाशिया नं. (11)

पर प्रकटन में आए अर्थात आगमन की दृष्टि से भी पूर्ण हो और अस्तित्व की दृष्टि से भी। आगमन की दृष्टि से इस प्रकार से कि प्रत्येक प्रतिफल प्राप्त होने के साथ ही यह बात ज्ञात और उचित हो कि यह वास्तव में उसके कर्मों का प्रतिफल है तथा यह भी विदित हो कि उस प्रतिफल को प्रदान

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

अंग्रेज़ी भाषा का इल्हाम प्राय: होता रहा है। एक बार अंग्रेज़ी जानने वाला एक विद्यार्थी मिलने आया। उसके सामने ही यह इल्हाम हुआ – **"दिस इज़ माई एनीमी"**① अर्थात यह मेरा शत्रु है। यद्यपि मालूम हो गया था कि यह इल्हाम उसी से सम्बद्ध है परन्तु उसी से यह अर्थ भी मालूम किए गए और अन्ततः वह ऐसा ही व्यक्ति निकला तथा उसके अन्त:करण में भिन्न-
Ⓟ482 भिन्न प्रकार की मलिनताएं पाई गईं। एक बार Ⓟप्रात:काल कश्फ़ में छपे हुए कुछ काग़ज़ दिखाए गए जो डाकखाने से आए हैं उनके अन्त में लिखा था – **"आई एम बाई ईसा"**② अर्थात् मैं ईसा के साथ हूं। अत: यह वाक्य किसी अंग्रेज़ी जानने वाले से मालूम करके दो हिन्दू आर्यों को बताया गया, जिससे यह समझा गया था कि कोई ईसाई व्यक्ति या ईसाइयों की शैली पर इस्लाम धर्म के सन्दर्भ में कुछ आरोप छपवा कर भेजेगा। अत: उसी दिन एक आर्य को डाक आने के समय डाकखाने में भेजा गया तो वह कुछ छपे हुए काग़ज़ लाया, जिसमें ईसाइयों की शैली पर एक बेकार व्यक्ति ने आरोप लिखे थे। एक बार किसी ज्ञात करने योग्य मामले में स्वप्न में एक चांदी का
Ⓟ483 सिक्का जो बादामी रंग का था इस ख़ाकसार के Ⓟहाथ में दिया गया, उसमें दो पंक्तियां थीं प्रथम पंक्ति में यह अंग्रेज़ी वाक्य लिखा था – **"यस आई एम हैपी"**③ और द्वितीय पंक्ति जो पृथक करने वाली रेखा डाल कर नीचे

① THIS IS MY ENEMY. (अनुवादक) ② I AM BY ISA (अनुवादक)
③ YES I AM HAPPY. (अनुवादक)

अलैहि वसल्लम ने प्रारंभिक आयु से पालन-पोषण पाया था और अपनी ®आयु का®480
एक लम्बा समय उनके साथ और संगत में व्यतीत किया था। अत: यदि वास्तव

शेष हाशिया नं. (11)

करने वाला वास्तव में कृपालु ही है ®जो समस्त संसारों का प्रतिपालक है®423 कोई अन्य नहीं। इन दोनों बातों में ऐसी सच्चाई हो कि मध्य में कोई सन्देह न रह जाए तथा अस्तित्व की दृष्टि से इस प्रकार पूर्ण हो कि हृदय और आत्मा, बाह्य और आन्तरिक, शरीर और प्राण प्रत्येक आध्यात्मिक और शारीरिक

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

लिखी हुई थी वह इसी प्रथम पंक्ति का अनुवाद था, अर्थात यह लिखा था कि हां मैं प्रसन्न हूं। एक बार कुछ शोक और संताप के दिन आने वाले थे कि एक कागज़ पर कश्फ़ में अंग्रेज़ी का यह वाक्य दिखाया गया **'लाइफ़ आफ पेन'**① अर्थात 'दुख का जीवन' एक बार कुछ विरोधियों के संबंध में जिन्होंने अकारण ®हार्दिक शत्रुता से कुर्आन करीम का अपमान किया®484 था तथा व्यक्तिगत शत्रुता से जिसका कोई उपचार नहीं सुदृढ़ धर्म इस्लाम पर अनुचित आरोप तथा निरर्थक हस्तक्षेप किए थे। ये दो वाक्य अंग्रेज़ी में इल्हाम हुए - **"गौड़ इज कमिंग बाई हिज़ आरमी"** - **"ही इज़ विद यू टू किल ऐनीमी"**② अर्थात् ख़ुदा तआला सबूतों और तर्कों की सेना लेकर चला आता है तथा शत्रु को पराजित और नष्ट करने के लिए तुम्हारे साथ है। इसी प्रकार और भी ®बहुत से वाक्य थे जिन में से कुछ तो स्मरण हैं और®485 कुछ भूल गए, परन्तु सर्वाधिक अरबी भाषा में इल्हाम होता है, विशेषकर कुर्आनी आयतों में अधिकतर और निरन्तर होता है। अतएव कुछ अरबी इल्हाम जो कुछ महान भविष्यवाणियों और ख़ुदा के उपकारों पर आधारित हैं अनुवाद सहित निम्नलिखित हैं ताकि यदि ख़ुदा चाहे तो उनसे सच्चे अभिलाषी को लाभ हो और विरोधियों को भी ज्ञात हो कि जिस क़ौम पर ख़ुदा तआला की कृपा-दृष्टि होती है और जो लोग ®सदमार्ग पर होते हैं®486

① LIFE OF PAIN. (अनुवादक) ② GOD IS COMING BY HIS ARMY - HE IS WITH YOU TO KILL ENEMY (अनुवादक)

में आंजनाब अनपढ़ न होते तो संभव न था कि उनके सामने अपने अनपढ़ होने का नाम भी ले सकते जिन पर आप की कोई स्थिति गुप्त न थी तथा जो हर समय

शेष हाशिया नं. 11

शक्ति पर एक वृत्त की भांति व्याप्त हो जाए एवं अजर, अमर और कभी समाप्त होने वाला न हो ताकि वह व्यक्ति जो शुभ कर्मों में अग्रसर हो चुका है

Ⓟ424 अपने उस महान सौभाग्य को जो सम्पूर्ण Ⓟसौभाग्यों की अन्तिम श्रेणी है और वह व्यक्ति जो दुष्कर्मों में बढ़ गया है अपने उस महान दुर्भाग्य को जो सम्पूर्ण

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

उन से ख़ुदा तआला अपने वार्तालापों और संवादों में कैसे सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करता है और उन अनुकम्पाओं के बारे में कैसे घटनापूर्व सूचना देता है जिन्हें उसने अपनी कृपा मात्र से अपने अवसरों पर तैयार रखा है और वे इल्हाम ये हैं -

بُورِکْتَ یَا اَحْمَدُ وَکَانَ مَا بَارَکَ اللّٰہُ فِیْکَ حَقًّا فِیْکَ

Ⓟ487 हे अहमद तू मुबारक किया गया और ख़ुदा ने Ⓟतुझ में जो बरकत रखी है वह यथार्थ तौर पर रखी है। شَانُکَ عَجِیْبٌ وَاَجْرُکَ قَرِیْبٌ तेरी शान अदभुत है और तेरा प्रतिफल निकट है।

اِنِّیْ رَاضٍ مِّنْکَ - اِنِّیْ رَافِعُکَ اِلَیَّ - اَلْاَرْضُ وَالسَّمَاءُ مَعَکَ کَمَا ھُوَ مَعِیْ -

मैं तुझ से प्रसन्न हूं, मैं तुझे अपनी ओर उठाने वाला हूं, पृथ्वी और आकाश तेरे साथ हैं जैसे वे मेरे साथ हैं। هو का सर्वनाम مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ की व्याख्या में एकवचन है तथा इन वाक्यों का सारांश अनुकम्पाएं

Ⓟ488 Ⓟऔर ख़ुदा की बरकतें हैं जो रसूलों में सर्वोत्तम हस्ती के अनुसरण की बरकत से प्रत्येक पूर्ण मौमिन के साथ संलग्न हो जाती हैं और वास्तविक तौर पर उन समस्त उपकारों का चरितार्थ आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं तथा अन्य समस्त आश्रित हैं। इस बात को प्रत्येक स्थान पर स्मरण रखना आवश्यक है कि प्रत्येक प्रशंसा और स्तुति जो किसी मौमिन के इल्हामों में की जाए वह यथार्थ तौर पर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा

इस घात में लगे हुए थे कि कोई झूठ सिद्ध करें और उसे प्रसिद्ध कर दें। जिनकी शत्रुता इस सीमा तक पहुंच चुकी थी कि यदि वश चल सकता तो कुछ झूठे सबूत

शेष हाशिया नं. (11)

दुर्भाग्यों की अन्तिम सीमा है पहुंच जाए ताकि प्रत्येक सदस्य उस उच्चतम श्रेणी के प्रत्यपकार तथा कर्मदण्ड को प्राप्त कर ले जो उसके लिए संभव है अर्थात् उस पूर्ण और स्थायी प्रत्यपकार को प्राप्त कर ले जो इस नश्वर और अस्थायी संसार में जिसका समस्त सुख-दुख मृत्यु के साथ समाप्त हो जाता

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

होती है और वह मौमिन अपने अनुसरण के अनुसार उस प्रशंसा से भाग प्राप्त करता है Ⓟऔर वह भी ख़ुदा तआला की मात्र कृपा और उपकार से न कि Ⓟ489
अपनी योग्यता और विशेषता से। तत्पश्चात फ़रमाया-

اَنْتَ وَجِيْهٌ فِيْ حَضْرَتِيْ اِخْتَرْتُكَ لِنَفْسِيْ

तू मेरे दरबार में प्रतापवान हैं मैं ने तुझे अपने लिए चुना।

اَنْتَ مِنِّيْ بِمَنْزِلَةِ تَوْحِيْدِيْ وَتَفْرِيْدِيْ فَحَانَ اَنْ تُعَانَ وَتُعْرَفَ بَيْنَ النَّاسِ-

तू मुझ से ऐसा है जैसे मेरा एकेश्वरवाद और एकत्व। अत: वह समय आ गया कि तेरी सहायता की जाए और तुझे लोगों में प्रसिद्ध और मशहूर किया जाए।

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُوْرًا ①

क्या मनुष्य पर अर्थात् तुझ पर वह समय नहीं गुज़रा कि संसार में तेरा कोई नाम और चर्चा न थी अर्थात् तुझे कोई नहीं जानता था कि तू कौन है और क्या वस्तु है तथा किसी गिनती में न था Ⓟअर्थात कुछ भी न था। यह Ⓟ490
पूर्व अनुकम्पाओं और उपकारों का उद्धरण है ताकि भविष्य में वास्तविक उपकारी की कृपाओं के लिए एक आदर्श ठहरे।

سُبْحَانَ اللّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى زَادَ مَجْدَكَ- يَنْقَطِعُ اٰبَاءُكَ

① अद्दहर - 2

बनाकर प्रस्तुत कर देते तथा इसी दृष्टि से उन्हें उनकी प्रत्येक कुधारणा पर ऐसा
Ⓟ481 निरुत्तर कर देने वाला उत्तर दिया जाता था कि वे Ⓟखामोश और निरुत्तर रह जाते

शेष हाशिया नं. (11)

है प्रकटन-मंच पर नहीं आ सकता अपितु उसके पूर्ण प्रकटन के लिए वास्तविक स्वामी ने अपनी पूर्ण कृपा और महा प्रकोप को दिखाने के उद्देश्य
Ⓟ425 से अर्थात् कृपा और महाप्रकोप सम्बन्धी Ⓟविशेषताओं की पूर्ण आभा प्रदर्शित करने के उद्देश्य से एक अन्य लोक जो अजर-अमर है नियुक्त कर रखा है

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

وَيُبْدَءُ مِنْكَ

समस्त पवित्रताएं ख़ुदा के लिए हैं जो नितान्त बरकत वाला और श्रेष्ठ अस्तित्व वाला है। उसने तेरी प्रतिष्ठा को बढ़ाया, तेरे बाप-दादा का नाम और प्रतिष्ठा समाप्त हो जाएगी अर्थात् उनका स्थायी तौर पर नाम नहीं रहेगा और ख़ुदा प्रतिष्ठा और सम्मान का तुझ से आरंभ करेगा

نُصِرْتَ بِالرُّعْبِ وَاُحْيِيْتَ بِالصِّدْقِ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ - نُصِرْتَ وَقَالُوْا لَاتَ حِيْنَ مَنَاص

तू बड़ी धाक के साथ सहायता किया गया और सत्य के साथ जीवित किया
Ⓟ491 गया। हे सत्यनिष्ठ (सिद्दीक) तू सहायता किया गया। विरोधियों ने Ⓟकहा अब पलायन का स्थान नहीं अर्थात् ख़ुदा की सहायता उस सीमा तक पहुंच जाएगी कि विरोधियों के हृदय टूट जाएंगे तथा उनके हृदयों पर निराशा प्रभुत्व स्थापित कर लेगी और सत्य प्रकट हो जाएगा।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَتْرُكَكَ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ-

और ख़ुदा ऐसा नहीं है जो तुझे छोड़ दे जब तक वह अपवित्र और पवित्र में स्पष्ट अन्तर न कर ले।

وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ

और ख़ुदा अपनी बात (को पूर्ण करने) पर (पूर्ण) प्रभुत्व रखता है परन्तु

थे। उदाहरणतया जब मक्का के कुछ मूर्खों ने यह कहना आरंभ किया कि क़ुर्आन की तौहीद (ऐकेश्वरवाद) हमें पसन्द नहीं आती। कोई ऐसा क़ुर्आन लाओ जिसमें

शेष हाशिया नं. 11

ताकि ख़ुदा तआला के अधिकारों की विशेषता जिसका इस नश्वर और संकीर्ण संसार में पूर्ण रूप से प्रकटन नहीं हो सकता वह इस विशाल संसार में प्रकटित हो जाए और ताकि मनुष्य उन पूर्ण आभाओं से उस उच्च श्रेणी की पूर्ण दर्शन तक पहुंच जाए जो उसकी मानव शक्तियों हेतु संभावना की

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

अधिकतर लोग नहीं जानते।

إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ هٰذَا الَّذِيْ
كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ

जब ख़ुदा की सहायता और विजय आएगी तथा तेरे प्रतिपालक (रब्ब) की बात पूर्ण हो जाएगी तो काफ़िर इस सम्बोधन के पात्र होंगे कि यह वही बात है जिसके लिए तुम जल्दी करते थे। أَرَدْتُّ ℗أَنْ أَسْتَخْلِفَ فَخَلَقْتُ ℗492
آدَمَ إِنِّيْ جَاعِلٌ فِي الْاَرْضِ अर्थात् मैंने अपनी ओर से ख़लीफ़ा बनाने का इरादा किया। अत: मैंने आदम को पैदा किया, मैं पृथ्वी पर बनाने वाला हूं। यह संक्षिप्त वाक्य है अर्थात् उसे स्थापित करने वाला हूं। यहां ख़लीफ़ा के शब्द से अभिप्राय ऐसा व्यक्ति जो ख़ुदा के आदेश और हिदायत के लिए ख़ुदा और सृष्टि के मध्य माध्यम हो। भौतिक ख़िलाफ़त जो सत्ता और शासन पर चरितार्थ होती है अभिप्राय नहीं है और न वह ख़ुदा की ओर से क़ुरैश के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए इस्लामी शरीअत (विधान) में मान्य हो सकती है अपितु यह मात्र अध्यात्मिक पदों और अध्यात्मिक प्रतिनिधित्व की चर्चा है तथा आदम शब्द से भी वह आदम जो मानव का पिता है ℗अभिप्राय नहीं, अपितु ऐसा व्यक्ति अभिप्राय है जिस के ℗493
द्वारा आदेश और हिदायत (मार्ग-दर्शन) का सिलसिला स्थापित होकर अध्यात्मिक उत्पत्ति की बुनियाद डाली जाए, जैसे वह अध्यात्मिक जीवन

मूर्तियों के सम्मान और उपासना की चर्चा हो या उसी में कुछ परिवर्तन करके तौहीद के स्थान पर द्वैतवाद भर दो, तब हम स्वीकार कर लेंगे और ईमान ले आएंगे। तो

शेष हाशिया नं. (11)

सीमा में सम्मिलित है और चूंकि बुद्धि के लिए श्रेष्ठ श्रेणी का कर्मदण्ड इसी पर निर्भर है कि जो बात प्रतिफलस्वरूप प्राप्त है वह मनुष्य के प्रत्यक्ष और आन्तरिक, शरीर और प्राण पर पूर्ण रूप से स्थायी और अनिवार्य तौर पर छा जाए एवं वास्तविक स्वामी के अस्तित्व के सन्दर्भ में श्रेष्ठ श्रेणी का

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

की दृष्टि से सत्याभिलाषियों का पिता है। यह एक महान भविष्यवाणी है जिसमें अध्यात्मिक सिलसिले के स्थापित होने की ओर संकेत दिया गया है ऐसे समय में जबकि इस सिलसिले का पता-ठिकाना नहीं। तत्पश्चात् इस अध्यात्मिक आदम के अध्यात्मिक पद का वर्णन किया और कहा دَنَا فَتَدَلّٰی فَکَانَ قَابَ قَوۡسَیۡنِ اَوۡ اَدۡنٰی[1] जब यह श्रेष्ठ आयत जो क़ुर्आन करीम की आयत है इल्हाम हुई तो उसके अर्थ के निर्णय और निश्चय में संकोच था और इसी संकोच में कुछ हल्का सा स्वप्न आ गया और उस स्वप्न में उसके अर्थ हल किए गए। इस का विवरण यह है कि **'दुनुव्व'** से अभिप्राय ख़ुदा का सानिध्य है और सानिध्य किसी स्थान की गति का नाम नहीं अपितु मनुष्य को उस समय ख़ुदा का सानिध्य प्राप्त कहा जाता है जब वह स्वयं से, अस्तित्व, सृष्टि, प्रतिद्वन्दियों तथा ग़ैर लोगों, अस्वजनों से पूर्ण रूप से पृथक होकर आज्ञाकारिता तथा ख़ुदा के प्रेम के दरिया में ऐसा डूबे कि अस्तित्व और अहंकार का कुछ प्रभाव शेष न रहे और जब तक अपनी हस्ती से लगाव से पवित्र नहीं और अल्लाह के साथ अनश्वरता की पद्धति से विभूषित नहीं, तब तक इस सानिध्य की योग्यता नहीं रखता तथा ख़ुदा के साथ अनश्वरता का पद तब प्राप्त होता है जब ख़ुदा से प्रेम ही मनुष्य का भोजन हो जाए और ऐसी स्थिति हो जाए कि उसके स्मरण के अभाव में जीवित ही नहीं रह सकता,
Ⓟ494 तथा उसके अतिरिक्त का Ⓟहृदय में समावेश मृत्यु की भांति दिखाई दे और स्पष्ट तौर पर दृष्टिगोचर हो कि वह इसी के साथ जीवित है, ख़ुदा की ओर

[1] सूरह अन्नज्म - 9, 10

ख़ुदा ने उनके प्रश्न के उत्तर हेतु अपने नबी को वह शिक्षा दी जो आंहज़रत के जीवन की घटनाओं पर दृष्टि डालने से विदित होती है और वह यह है :-

शेष हाशिया नं. 11

विश्वास इसी बात पर आधारित है कि वह वास्तविक स्वामी भौतिक संसाधनों को पूर्णतया नष्ट करके स्पष्ट तौर पर आभा का प्रदर्शन करे। इसलिए यह असीम सत्य जिस से अभिप्राय असीम आध्यात्म ज्ञान और कर्मदण्ड है तब ही प्रमाणित होगा जब वे उपरोक्त समस्त बातें प्रमाणित हो जाएं कि जो

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

ऐसा आकर्षित हो कि उसका हृदय प्रतिपल ख़ुदा के स्मरण में लीन तथा उसके दुख से दुखी रहे, उसके अतिरिक्त से इतनी घृणा उत्पन्न हो जाए कि जैसे ख़ुदा के अतिरिक्त से उसकी व्यक्तिगत शत्रुता है जिन की ओर झुकाव से स्वाभाविक तौर पर दुख उठाता है। जब यह स्थिति उत्पन्न होगी तो हृदय जो ख़ुदा के प्रकाशों के उतरने का केन्द्र है अत्यन्त साफ़ होगा तथा ख़ुदा के नाम और विशेषताएं उसमें प्रतिबिम्बित होकर एक दूसरी विशेषता जो '**तदल्ला**' है आध्यात्म ज्ञानी के समक्ष आएगी। **तदल्ला** से अभिप्राय वह नीचे उतरना है जब मनुष्य अल्लाह तआला के सदाचार में स्वयं को ढालकर उस दयालु और कृपालु हस्ती की भांति मनुष्यों पर सहानुभूतिपूर्वक सृष्टि लोक की ओर प्रवृत्त हो और चूंकि **दुनुव्व** की विशेषताएं **तदल्ला** की विशेषताओं से परस्पर सम्बद्ध हैं। अत: तदल्ला उसी सीमा तक होगा जिस सीमा तक दुनुव्व है तथा दुनुव्व की विशेषता इस में है कि साधक के हृदय में ख़ुदा के नाम और विशेषताओं के प्रतिबिम्बों का प्रकटन हो और वास्तविक प्रियतम सन्देहरहित छाया, भ्रम रहित पद अपनी सम्पूर्ण कामिल विशेषताओं के साथ उसमें प्रकटन करे और यही ख़िलाफ़त (उत्तराधिकार) की वास्तविकता और अल्लाह के रूह फूंकने का मर्म है और यही ख़ुदा के सदाचारों में स्वयं को ढालने का मूल आधार है और जबकि तदल्ला की वास्तविकता को अल्लाह के सदाचारों में ढालना अनिवार्य हो तथा सदाचारों

Ⓟ482 قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ Ⓟ
Ⓟ483 نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ Ⓟ قُلْ لَّوْ

शेष हाशिया नं. (11)

बुद्धि के निकट उसकी परिभाषा में सम्मिलित हैं, क्योंकि असीम मारिफ़त बुद्धि के निकट इसके अभाव में संभव नहीं कि वास्तविक स्वामी का
Ⓟ427 सौन्दर्य Ⓟबतौर पूर्ण विश्वास के साथ दृष्टिगोचर हो अर्थात् प्रकटन और पूर्ण प्रतिबिम्बन हो जिस पर अधिकता की कल्पना न की जा सके। इसी प्रकार

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

में ढालने की विशेषता इस बात को चाहती है कि प्रजा की सहानुभूति और उनके लिए उपदेशक के पद पर खड़े होना तथा उन की भलाई के लिए
Ⓟ495 तन-मन से व्यस्त हो जाना उस Ⓟसीमा तक पहुंच जाए जिस पर अधिक की कल्पना न की जा सके और एकता पैदा करने वाले को अनेकता का रूप धारण करना पड़ा कि वह पूर्ण तौर पर ख़ुदा के सामने भी हो फिर पूर्णतया सृष्टि के सामने भी हो। अतएव वह दोनों धनुषों, शाने-ख़ुदावन्दी और मानवता में एक प्रत्यंचा स्वरूप है जो दोनों से पूर्ण संबंध रखती है। अब कथन का सारांश यह है कि पूर्ण मिलाप के लिए दुनुव्व और तदल्ला दोनों अनिवार्य हैं। 'दुनुव्व' उस पूर्ण सानिध्य का नाम है कि जब पूर्ण पवित्रता के द्वारा मनुष्य अल्लाह की ओर ध्यानस्थ होकर पूर्ण रूप से अल्लाह ही में आसक्त होकर उसी का प्रारूप हो जाए तथा अपनी तुच्छ हस्ती से बिल्कुल लुप्त होकर तथा अद्वितीय और अनुपम दरिया (ख़ुदा) में डूबकर एक नवीन हस्ती उत्पन्न करे, जिसमें परायापन, जुदाई, अज्ञानता और मूर्खता नहीं है, अल्लाह तआला के पवित्र रंगों से पूर्ण शोभा उपलब्ध है तथा तदल्ला मनुष्य की उस अवस्था का नाम है कि जब वह स्वयं को ख़ुदा के सदाचारों में ढालने के पश्चात् ख़ुदाई सहानुभूतियों और दयाओं से रंगीन होकर ख़ुदा के बन्दों की ओर सुधार और लाभ पहुंचाने के लिए झुकाव हो। अत: जानना चाहिए कि यहां एक ही हृदय में एक ही स्थिति ओर नीयत के साथ दो प्रकार

شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ- اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ-
فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْكَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ-[1] (भाग-11)

शेष हाशिया नं. 11

अत्यधिक कर्मदण्ड भी इसके अभाव में बुद्धि के निकट असम्भव है कि जैसे शरीर और प्राण दोनों परस्पर इस जीवन में आज्ञाकारी या अवज्ञाकारी अथवा उपद्रवी थे, इसी प्रकार कर्मदण्ड के समय वे दोनों पुरस्कार प्राप्त करने वाले Ⓟहों या दोनों दण्ड स्वरूप पकड़े जाएं तथा पूर्ण कर्मदण्ड काⓅ428

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

का झुकाव पाया गया। प्रथम ख़ुदा तआला की ओर जो अनादि अस्तित्व है और एक उसके बन्दों की ओर जो भौतिक अस्तित्व है और दोनों प्रकार का अस्तित्व अर्थात् अनादि और भौतिक एक वृत्त की भांति है जिसकी ऊपरी ओर '**अनिवार्य**' और नीचे की ओर '**संभव**' है। अब इस वृत्त के मध्य में '**पूर्ण इन्सान**' दुनुव्व और तदल्ला के दोनों ओर से दृढ़ सम्मिलन करके आदर्श तौर पर ऐसी स्थिति उत्पन्न कर लेता है जैसे एक Ⓟवृत्त केⓅ496 दो धनुषों (गोलार्द्धों)के मध्य एक व्यास होता है अर्थात सत्य और सृष्टि में माध्यम ठहर जाता है। प्रथम उसे **दुनुव्व** और ख़ुदा के **सानिध्य** का विशेष लिबास दिया जाता है तथा सानिध्य के उच्चतम पद तक ऊपर जाता है और फिर उसे प्रजा की ओर लाया जाता है। अतएव उसका वह ऊपर की ओर चढ़ना और नीचे की ओर आना दो धनुषों के रूप में प्रकट हो जाता है तथा दोनों संबंधों को मिलाने वाले पूर्ण इन्सान का हृदय उन दोनों धनुषों में '**क़ाब क़ौसेन**' की तरह होता है। क़ाब अरबी मुहावरे में धनुष की प्रत्यंचा (डोरी) पर चरितार्थ होता है। अत: आयत के अक्षरश: यह अर्थ हुए कि **निकट** हुआ अर्थात **ख़ुदा के निकट** हुआ, फिर **उतरा** अर्थात् **सृष्टि पर**। अत: अपने इस ऊपर की ओर चढ़ने और उतरने के कारण दो धनुषों के लिए एक ही प्रत्यंचा (धनुष के दोनों सिरों के मध्य बांधी जाने वाली डोरी)

[1] सूरह यूनुस : 16 से 18

वे लोग जो हमारी मुलाक़ात (भेंट) से निराश हैं अर्थात हमारी ओर से पूर्ण रूप से नाता तोड़ चुके हैं वे कहते हैं कि इस क़ुर्आन के विपरीत कोई अन्य क़ुर्आन ला

शेष हाशिया नं. (11)

लहरें मारता समुद्र प्रत्यक्ष और आन्तरिक पर पूर्ण परिधि से आच्छादित और सम्मिलित हो जाए, परन्तु ब्रह्म समाज वाले इस सच्चाई के भी इन्कारी हैं
Ⓟ429 अपितु इस Ⓟअसीम सत्य का अस्तित्व उनके निकट प्रमाणित ही नहीं तथा उनके विचारानुसार मनुष्य के भाग्य में असीम मारिफ़त तथा कर्मदण्ड की

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

हो गई। चूंकि उस का सृष्टि के सामने होना उज्ज्वल झरना स्वयं को ख़ुदा के सदाचारों में ढालना है। अतः उसका सृष्टि की ओर ध्यान स्रष्टा की ओर ध्यान के सदृश है अथवा यों समझो कि चूंकि वास्तविक स्वामी (ख़ुदा) लोगों पर अपनी अत्यन्त सहानुभूति के कारण अपने बन्दों की ओर इतना झुकाव रखता है कि जैसे वह बन्दों के पास ही तम्बू लगाए हुए है। अतः जबकि साधक ख़ुदा की ओर ध्यान करते करते अपने ध्यान की पराकाष्ठा को पहुंच गया तो जहां ख़ुदा था वहीं उसे लौट कर आना पड़ा। अतः इस कारण **दुनुव्व** की पराकाष्ठा अर्थात् पूर्ण सानिध्य उसका **तदल्ला** अर्थात नीचे उतने का कारण हो गया يُحْيِ الدِّيْنَ وَيُقِيمُ الشَّرِيْعَةَ अर्थात् धर्म को जीवित करेगा और शरीअत को स्थापित करेगा

يَا اٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ - يَا مَرْيَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ
- يَا اَحْمَدُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الجنة - نفخت فيك من لدنى روح الصدق

हे आदम, हे मरयम, हे अहमद तू और जो व्यक्ति तेरा अनुयायी और
Ⓟ497 सहयोगी है स्वर्ग में अर्थात् Ⓟवास्तविक मुक्ति के माध्यमों में सम्मिलित हो जाओ, मैंने अपनी ओर से सत्य की रूह तुझ में फूंक दी है। इस आयत में भी अध्यात्मिक आदम के नामकरण का कारण वर्णन किया गया अर्थात् जैसा कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदायश संसाधनों के माध्यम के अभाव में है इसी प्रकार अध्यात्मिक आदम में भौतिक संसाधनों के माध्यम

जिसकी शिक्षा इसकी शिक्षा से विपरीत और विरुद्ध हो या उसी में परिवर्तन कर। उन्हें उत्तर दे कि मुझे यह शक्ति नहीं और न वैध है कि मैं ख़ुदा के कलाम में अपनी

शेष हाशिया नं. (11)

प्राप्ति प्रारब्ध है। उनके निकट कर्मदण्ड मात्र एक ख़्याली पुलाव है ®जो ®430 केवल अपनी ही निराधार कल्पनाओं से पकाया जाएगा न कि वास्तविक तौर पर ख़ुदा तआला की ओर से बन्दों पर कोई प्रतिफल प्राप्त होगा न कोई दण्ड अपितु स्वनिर्मित विचार ही समृद्धि या दरिद्रता के कारण हो जाएंगे

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

के अभाव में आत्मा को फूंका जाता है और वह आत्मा का फूंका जाना वास्तविक तौर पर नबियों से विशेष्य है, फिर अनुसरण और उत्तराधिकार के तौर पर उम्मते मुहम्मदिया के कुछ विशेष लोगों को यह ने'मत प्रदान की जाती है तथा इन वाक्यों में भी जो भविष्यवाणियां हैं वे प्रकट हैं। तत्पश्चात् फ़रमाया - نصرت وقالوا لات حين مناص तू सहायता दिया गया तथा उन्होंने कहा कि अब कोई पलायन करने का स्थान नहीं। ان الذین کفروا و صدوا عن سبیل اللہ رد علیھم رجل من فارس شکر اللہ سعیہ जिन लोगों ने कुफ़्र धारण किया और ख़ुदा के मार्ग में बाधक बने उनका एक फ़ारसी वंश के एक व्यक्ति ने खण्डन लिखा है, उसके प्रयास का ख़ुदा कृतज्ञ है। کتاب الولی ذوالفقار علی वली (ऋषि) की पुस्तक अली की तलवार की भांति है अर्थात् विरोधी का सर्वनाश करने वाली है और जैसे अली की तलवार ने बड़े-बड़े भयंकर आक्रमणों में बड़े श्रेष्ठ पराक्रम दिखाए थे ऐसी ही यह भी दिखाएगी। यह भी एक भविष्यवाणी है जो किताब के महान प्रभावों तथा सार्वजनिक बरकतों को सिद्ध करती है। तत्पश्चात् फ़रमाया - ولو کان الایمان معلقا بالثریا لنا له यदि ईमान सुरय्या (नक्षत्र) से लटका होता अर्थात् पृथ्वी से बिल्कुल उठ जाता तब भी उपर्युक्त व्यक्ति उसे प्राप्त कर लेता یکاد زیته یضیء ®ولو لم تمسسه نار निकट है कि उसका तैल स्वयं ®498 प्रकाशित हो जाए यद्यपि अग्नि उसे स्पर्श भी न करे।

ام یقولون نحن جمیع منتصر سیھزم الجمع و یولون الدبر- وان یروا اٰیۃ

ओर से कुछ परिवर्तन करूं। मैं तो केवल उस वह्यी का आज्ञापालक हूं जो मुझ पर उतरती है और अपने ख़ुदावन्द की अवज्ञा से डरता हूं। यदि ख़ुदा चाहता तो मैं

शेष हाशिया नं. (11)

Ⓟ431 Ⓟतथा प्रत्यक्ष अथवा आन्तरिक ऐसी कोई बात नहीं होगी जो ख़ुदा तआला की विशेष इच्छा से नेक लोगों पर ने'मत के रूप में और दुष्ट लोगों पर प्रकोप के रूप में उतरेगी। अत: उनकी यह आस्था नहीं है कि अधिकारिक बातों
Ⓟ432 का स्वामी ख़ुदा है Ⓟऔर वही अपने नेक लोगों पर अपनी विशेष इच्छा से

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

يعرضوا ويقولوا سحر مستمر واستيقنتها انفسهم وقالوا لات حين مناص فبما رحمة من الله لنت عليهم ولوكنت فظا غليظ القلب لا نفضوا من حولك- ولوان قرانا سيرت به الجبال-

क्या कहते हैं कि हम एक शक्तिशाली समूह हैं जो उत्तर देने पर सामर्थ्यवान हैं, शीघ्र ही यह सारा समूह भाग जाएगा और पीठ फेर लेंगे और जब ये लोग कोई निशान देखते हैं तो कहते हैं कि यह एक साधारण और पुराना जादू है, यद्यपि उनके हृदय उन निशानों पर विश्वास कर चुके हैं तथा हृदयों में उन्होंने समझ लिया है कि अब पलायन का कोई स्थान नहीं और यह ख़ुदा की दया है कि तू उन पर विनम्र हुआ, अन्यथा यदि तू कठोर हृदय होता तो ये लोग तेरे निकट न आते तथा तुझ से पृथक हो जाते, यद्यपि ऐसे क़ुर्आनी चमत्कार देखते जिस से पर्वत गतिशील हो जाते। ये आयतें उन कुछ लोगों के पक्ष में इल्हाम के तौर पर इल्क़ा हुईं जिनका विचार और हाल ऐसा ही था। कदाचित ऐसे अन्य लोग भी निकल आएं जो इस प्रकार की बातें करें तथा पूर्ण विश्वास के स्तर पर पहुंचने के पश्चात् भी इन्कारी रहें। तत्पश्चात् फ़रमाया :-

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنَاہُ قَرِیۡبًا مِّنَ الۡقَادِیَانِ- وَ بِالۡحَقِّ اَنۡزَلۡنَاہُ وَ بِالۡحَقِّ نَزَلَ- صَدَقَ اللّٰہُ وَ رَسُوۡلُہٗ وَکَانَ اَمۡرُ اللّٰہِ مَفۡعُوۡلًا-

अर्थात् हमने उन निशानों और चमत्कारों को एवं आध्यात्म ज्ञानों और

तुम्हें यह कलाम न सुनाता और ख़ुदा तुम्हें उस पर सूचित भी न करता। इससे पूर्व इतनी आयु अर्थात् चालीस वर्ष तक तुम में ही रहता रहा हूं फिर क्या तुम्हें बुद्धि

शेष हाशिया नं. (11)

समृद्धि तथा स्थायी आनन्द से लाभान्वित करेगा, जिस पूर्ण आनन्द का सौभाग्यशाली लोग न केवल आन्तरिक तौर पर अपितु मौजूद तथा महसूस रूपों में भी अवलोकन करेंगे और मानव शक्तियों में से कोई ⓟशक्ति प्रत्यक्ष ⓟ433
या आन्तरिक अपनी परिस्थिति के अनुसार आनन्द प्राप्त करने से वंचित

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

सच्चाइयों से भरपूर उस इल्हाम को क़ादियान के समीप उतारा है तथा वास्तविक आवश्यकता के साथ उतारा है और सच्ची आवश्यकतानुसार उतरा है, ख़ुदा और उसके रसूल ने सूचना दी थी जो यथासमय पूर्ण हुई और ख़ुदा ने जो कुछ चाहा था वह पूर्ण होना ही था। ये अन्तिम वाक्य इस बात की ओर संकेत है कि उस व्यक्ति के प्रादुर्भाव के लिए हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी उपर्युक्त हदीस में संकेत कर चुके हैं तथा ख़ुदा तआला अपने पवित्र कलाम में संकेत कर चुका है। अतः संकेत तृतीय भाग के इल्हामों में लिखा जा चुका है तथा क़ुर्आनी संकेत इस आयत में है :-

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَہٗ بِالۡہُدٰی وَ دِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡہِرَہٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّہٖ ①

यह आयत भौतिक तथा अन्तर्देशीय राजनीति के तौर पर हज़रत मसीह के पक्ष में भविष्यवाणी है तथा इस्लाम धर्म की जिस पूर्ण विजय का वायदा दिया गया है, वह विजय हज़रत मसीह के द्वारा प्रकटन में आएगी जब हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पुनः ⓟइस संसार में पधारेंगे तो उनके हाथ से ⓟ499
इस्लाम धर्म समस्त विश्व और उसके भूभागों में फैल जाएगा, परन्तु इस ख़ाकसार पर प्रकट किया गया है कि यह ख़ाकसार अपनी निर्धनता, विनम्रता, भरोसा, स्वार्थत्याग, आयतों और प्रकाशों की दृष्टि से मसीह के पूर्व जीवन का आदर्श है तथा इस ख़ाकसार का स्वभाव और मसीह का स्वभाव परस्पर नितान्त समरूपता लिए हुए है जैसे एक ही जौहर (रत्न)

① सूरह अस्सफ़ : 16 से 18

नहीं अर्थात क्या तुम्हें भली भांति ज्ञात नहीं कि ख़ुदा पर झूठ बनाना मेरा कार्य नहीं और झूठ बोलना मेरे स्वभाव में नहीं। फिर आगे फ़रमाया - उस व्यक्ति से अधिक

शेष हाशिया नं. (11)

नहीं रहेगी तथा शरीर और प्राण सुख अथवा परलोक के प्रकोप में अर्थात् यथास्थिति सम्मिलित हो जाएंगे। अत: ब्रह्म समाज वालों की आस्था इस
Ⓟ434 सत्य Ⓟके बिल्कुल विपरीत तथा उसके पूर्ण आशय के विरुद्ध है यहां तक कि वे अपनी आन्तरिक नेत्रहीनता के कारण आख़िरत की मुक्ति के भौतिक

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

के दो भाग अथवा एक ही वृक्ष के दो फल हैं तथा इस सीमा तक समानता है कि कश्फ़ी दृष्टि में बहुत ही बारीक अन्तर है तथा प्रत्यक्ष तौर पर भी एक समानता है और वह यों कि मसीह एक कामिल और महान नबी अर्थात् मूसा का अनुयायी और धर्म-सेवक था तथा उसकी इंजील तैरात की एक शाखा है और यह ख़ाकसार भी उस महान प्रतापी नबी के तुच्छ सेवकों में से है जो समस्त रसूलों का सरदार तथा सम्पूर्ण नबियों का मुकुट है। यदि वे प्रशंसक हैं तो वह अत्यधिक प्रशंसक है (यदि वे हामिद हैं तो वह अहमद है) यदि वे प्रशंसित हैं तो वह नितान्त प्रशंसित है (अर्थात यदि वे महमूद हैं तो वह मुहम्मद है स.अ.व.) अतएव चूंकि इस ख़ाकसार को हज़रत मसीह से पूर्ण समानता है इसलिए ख़ुदा तआला ने इस ख़ाकसार को मसीह की भविष्यवाणी में आरंभ से सम्मिलित कर रखा है अर्थात् हज़रत मसीह उपर्युक्त भविष्यवाणी का भौतिक तौर पर चरितार्थ है और यह ख़ाकसार आध्यात्मिक और बौद्धिक तौर पर उसका पात्र है अर्थात् आध्यात्मिक तौर पर इस्लाम की विजय जो अटल सबूतों तथा प्रकाशमान तर्कों पर आधारित है इस ख़ाकसार द्वारा निर्धारित है, यद्यपि उसके जीवन में या मृत्योपरांत हो और यद्यपि इस्लाम अपने वास्तविक सबूतों की दृष्टि से हमेशा से विजयी चला आया है और आरंभ से इसके विरोधी अपमानित और तिरस्कृत होते चले आए हैं परन्तु इस विजय का विभिन्न वर्गों और क़ौमों पर प्रकट होना एक ऐसे युग के आने पर आधारित था जो मार्गों के

और कौन अन्यायी होगा जो ख़ुदा पर झूठ बांधे या ख़ुदा के कलाम को कहे कि यह मनुष्य का बनाया हुआ झूठ है। निसन्देह अपराधी मुक्ति नहीं पाएंगे।

शेष हाशिया नं. (11)

संसाधनों को जो बाह्य शक्तियों के यथायोग्य महा सौभाग्य की पूर्णता हेतु
क़ुर्आन करीम में वर्णन ℗किया गया है तथा इसी प्रकार आख़िरत (प्रलय) ℗435
के प्रकोप के भौतिक संसाधनों का जो बाह्य शक्तियों के यथायोग्य महा दुर्भाग्य की पूर्णता हेतु क़ुर्आन करीम में उल्लेख है आरोप योग्य समझते हैं,

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

खुल जाने के कारण समस्त संसार को संयुक्त राष्ट्रों की तरह बनाता हो और एक ही क़ौम के अन्तर्गत समझता हो तथा शिक्षा के प्रसार के समस्त संसाधन, धर्म के प्रचार के समस्त माध्यम सुविधा तथा सरलता के साथ
प्रस्तुत करता हो ℗और आन्तरिक तथा बाह्य तौर पर ख़ुदाई शिक्षा के लिए ℗500
नितान्त उचित और संतुलित हो। अतएव अब वही युग है क्योंकि मार्गों के खुल जाने, क़ौमों के परस्पर परिचित होने, प्रचार सामग्री का एक देश से दूसरे देश तक उत्तम व्यवस्था के साथ पहुंचना उपलब्ध हो गया है तथा डाक, रेल, तार, जहाज़, भिन्न-भिन्न प्रकार के समाचार पत्रों इत्यादि के कारण धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन हेतु बहुत सी सुविधाएं हो गई हैं। अत: निसन्देह अब वह समय आ गया है जिसमें समस्त विश्व एक ही देश के समान होता जा रहा है तथा अनेकों भाषाओं के प्रचार, प्रचलन तथा समझने-समझाने के बहुत से साधन निकल आए हैं और परायापन तथा अपरिचित होने की कठिनाइयों से पर्याप्त भारमुक्ति हो गई है और स्थायी मेल-जोल तथा दिन-रात के सम्मिलन का भय और घृणा भी जो स्वाभाविक तौर पर एक क़ौम को दूसरी क़ौम से भी बहुत कम हो गई है। अतएव अब हिन्दू भी जिनका संसार हमेशा हिमालय पर्वत के अन्दर ही अन्दर था और जिन्हें समुद्रीय यात्रा धर्म से पृथक कर देती थी लन्दन और अमरीका तक भ्रमण कर आते हैं। सारांश यह कि इस युग में धर्म-प्रचार का प्रत्येक माध्यम अपनी पूर्ण विशालता को

Ⓟ484 Ⓟअत: आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनपढ़ होना अरबों, ईसाइयों और यहूदियों की दृष्टि में ऐसा स्पष्ट और निश्चित मामला था कि उसके इन्कार में

शेष हाशिया नं. (11)

परन्तु ऐसी बुद्धि पर पत्थर पड़ें कि एक व्यापक और पूर्ण सच्चाई की दोष
Ⓟ436 के रूप में कल्पना की जाए। खेद ये लोग क्यों नहीं समझते कि Ⓟमहा सौभाग्य अथवा महा दुर्भाग्य के प्राप्त करने के लिए यह एक मार्ग है कि ख़ुदा तआला विशेष ध्यान देकर कर्मदण्ड और प्रत्यपकार की क्रिया को पूर्ण

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

पहुंच गया है और यद्यपि संसार पर बहुत अंधकार और अंधेरा छा रहा है, परन्तु फिर भी गुमराही का चक्र अन्त पर पहुंचा हुआ प्रतीत होता है तथा गुमराही की अधिकता अवनति की ओर अग्रसर है, कुछ ख़ुदा की ओर से ही शान्तिप्रिय स्वभाव रखने वाले लोग सद्मार्ग की खोज में लग गए हैं तथा नेक और पवित्र प्रकृतियां सद्मार्ग के यथायोग्य होती जाती हैं और एकेश्वरवाद के स्वाभाविक जोश ने अभिलाषी हृदयों को एकेश्वरवाद के उज्जवल झरने की ओर झुका दिया है और सृष्टि-पूजा की इमारत का जीर्ण होना मनीषी लोगों पर प्रकट होता जा रहा है और कृत्रिम ख़ुदा पुन: बुद्धिमानों की दृष्टि में मानवता का लिबास पहनते जाते हैं। इन समस्त बातों के साथ आकाशीय सहायता सत्य के धर्म के समर्थन हेतु आवेग में है कि वे निशान और चमत्कार जिन के सुनने से असमर्थ और विवश बन्दे ख़ुदा बनाए गए थे अब वे समस्त रसूलों के स्वामी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे
Ⓟ501 वसल्लम के तुच्छ सेवकों और कर्मचारियों जैसे Ⓟप्रतीत हो रहे हैं तथा पूर्वकालीन युग के कुछ नबी केवल अपने हवारियों को छुप-छुप कर कुछ निशान दिखाते थे, अब वे निशान समस्त नबियों के सरदार के तुच्छ अनुयायियों से शत्रुओं के सामने प्रकट होते हैं तथा उन्हीं शत्रुओं की साक्ष्यों से इस्लाम की सच्चाई का सूर्य समस्त संसार के लिए उदय होता जा रहा है। इसके अतिरिक्त यह युग धर्म-प्रचार के लिए ऐसा सहायक है कि जो बात पूर्वकालीन युगों में सौ वर्ष तक संसार में प्रचारित नहीं हो सकती थी अब

दम नहीं मार सकते थे अपितु इसी दृष्टि से वे तौरात के अधिकांश क़िस्से जो किसी शिक्षित मनुष्य पर गुप्त नहीं रह सकते आंहज़रत की नुबुव्वत की परीक्षा हेतु पूछते

शेष हाशिया नं. (11)

रूप से उतारे। पूर्ण रूप से उतरने का अर्थ यही है कि वह कर्मदण्ड समस्त प्रत्यक्ष और आन्तरिक पर प्रभुत्व स्थापित कर ले तथा कोई ऐसी प्रत्यक्ष अथवा आन्तरिक शक्ति शेष न रहे जिसे इस कर्मदण्ड से भाग न पहुंचा हो। ®यह वही कर्मदण्ड की असीम श्रेणी है जिसे क़ुर्आन करीम ने दूसरे शब्दों में®437

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

इस युग में वह केवल एक वर्ष में समस्त देशों में प्रसारित हो सकती है। अत: इस्लामी पथ-प्रदर्शन और ख़ुदाई निशानों का नगाड़ा बजाने के लिए इस युग में इतनी शक्ति और बल पाया जाता है कि किसी युग में उसका उदाहरण नहीं पाया जाता। सैकड़ों माध्यम जैसे रेल, तार और समाचार पत्र इत्यादि इसी सेवा के लिए हर समय तैयार हैं ताकि एक देश की परिस्थितियों से दूसरे देश को अवगत कराएं। अत: निसन्देह बौद्धिक और आध्यात्मिक तौर पर समस्त संसार में इस्लाम धर्म के वास्तविक सबूतों का प्रसार ऐसे ही युग पर निर्भर था तथा यही संसाधनों से भरपूर युग उस प्रिय मेहमान की सेवा के लिए पूर्णतया संसाधन उपलब्ध रखता है। अतएव ख़ुदा तआला ने बन्दों में सबसे अधिक क्षुद्र (ख़ाकसार) को इस युग में पैदा करके सैकड़ों आकाशीय निशान, परोक्ष संबंधी अदभुत चमत्कार, आध्यात्म ज्ञान और सच्चाइयां प्रदान कर तथा सैकड़ों अटल बौद्धिक सबूतों का ज्ञान देकर इरादा किया है ताकि क़ुर्आन की वास्तविक शिक्षाओं को प्रत्येक जाति और प्रत्येक देश में प्रकाशित और प्रचलित करे तथा उन पर अपने समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करे। इसी इच्छा के कारण ख़ुदा तआला ने इस ख़ाकसार को यह सामर्थ्य प्रदान की कि विवाद को पूर्ण करने के अन्तिम प्रयास करने हेतु दस हज़ार रुपये का विज्ञापन पुस्तक के साथ संलग्न किया गया तथा शत्रुओं और विरोधियों की साक्ष्य से आकाशीय निशानी प्रस्तुत की गई तथा उनके मुक़ाबले और बहस के लिए समस्त विरोधियों को सम्बोधित किया गया ताकि विवाद का अन्त करने

थे और सही और उचित उत्तर पाकर उन स्पष्ट दोषों से पवित्र पाकर जो तौरात के क़िस्सों में पड़ गए हैं, वे लोग जो उनमें ज्ञान में प्रकाण्ड थे हार्दिक निष्ठा के साथ

शेष हाशिया नं. (11)

स्वर्ग और नरक का नाम दिया है तथा अपनी पूर्ण प्रकाशमान किताब में बता दिया है कि वह स्वर्ग और नरक आध्यात्मिक और शारीरिक दोनों प्रकार के कर्मदण्डों पर पूर्ण रूप से आधारित है तथा इन दोनों प्रकारों को प्रशंसित
Ⓟ438 किताब Ⓟमें विस्तारपूर्वक वर्णन कर दिया है तथा महा सौभाग्य और महा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

में कोई कमी शेष न रहे तथा प्रत्येक विरोधी अपनी पराजय और निरुत्तर होने का स्वयं साक्षी हो जाए। अतः दयालु ख़ुदा ने धर्म-प्रचार के जो संसाधन और माध्यम तथा समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के सबूत और तर्क इस ख़ाकसार को मात्र अपनी कृपा और दया से प्रदान किए हैं वे पूर्वकालीन धर्म-समुदायों में से आज तक किसी को प्रदान नहीं किए
Ⓟ502 और इस संबंध में जितनी परोक्ष की शक्तियां इस ख़ाकसार को Ⓟदी गई हैं वे उनमें से किसी को नहीं दी गईं। यह अल्लाह की कृपा है जिसे चाहता है देता है। अतः चूंकि ख़ुदा तआला ने ख़ाकसार को विशेष संसाधनों से विशेष्य किया है तथा इस ख़ाकसार को ऐसे युग में अवतरित किया है जो प्रचार संबंधी सेवा को पूर्ण करने के लिए नितान्त सहयोगी और सहायक है। अतः उसने अपनी कृपाओं और मेहरबानियों से यह शुभ संदेश भी दिया है कि अनादि दिवस से यही प्रस्ताव पारित है कि उपर्युक्त आयत एवं आयत ① وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ का आध्यात्मिक तौर पर चरितार्थ यह ख़ाकसार है। ख़ुदा तआला इन सबूतों और तर्कों को तथा उन समस्त बातों को जो इस ख़ाकसार ने विरोधियों के लिए लिखी हैं स्वयं विरोधियों तक पहुंचा देगा तथा उनका असमर्थ, निरुत्तर और पराजित होना संसार में प्रकट करके उपर्युक्त आयत का उद्देश्य पूर्ण कर देगा। इस पर ख़ुदा का आभार। तत्पश्चात जो इल्हाम है वह यह है صل علی محمد وآل محمد سید ولد آدم وخاتم النبیین और दरूद भेज मुहम्मद तथा मुहम्मद की सन्तान पर जो सरदार है आदम

① सूरह अस्सफ़ : 9

ईमान ले आए थे जिनकी चर्चा का क़ुर्आन करीम में इस प्रकार उल्लेख है :-

ⓟ485 وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ

शेष हाशिया नं. (11)

दुर्भाग्य की वास्तविकता को भलीभांति प्रकट कर दिया है, परन्तु जैसा कि अभी हम वर्णन कर चुके हैं इस असीम सच्चाई एवं दूसरी उपरोक्त सच्चाइयों से ब्रह्मसमाजी अज्ञान मात्र हैं।

ⓟ**छठी सच्चाई** जिस का सूरह फ़ातिहा में उल्लेख है اِيَّاكَ نَعْبُدُ ⓟ439

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

के बेटों का (लोगों का) और ख़ातमुल अंबिया है स.अ.व. यह इस बात की ओर संकेत है कि यह समस्त पद, कृपाएं और महरबानियां उसी के कारण से हैं तथा उसी से प्रेम करने का यह प्रतिफल है। सुब्हानल्लाह उस समस्त विश्व के सरदार ख़ुदा के दरबार में क्या ही श्रेष्ठ पद हैं तथा किस प्रकार का सानिध्य है कि उसका प्रेमी ख़ुदा का प्रियतम बन जाता है और उसका सेवक एक संसार का स्वामी बनाया जाता है।

ہیچ محبوبے نماند ہمچو یار دلبرم   مہر و مہ را نیست قدرے در دیارِ دلبرم

मेरे यार को कोई प्रियतम नहीं पहुंचता, मेरे प्रियतम के शहर में सूर्य और चन्द्रमा का कोई महत्व नहीं। *

آں کجا روئے کہ دارد ہمچو رویش آب وتاب   واں کجا باغے کہ مے دارد بہار دلبرم

ऐसा चेहरा कहां है जो उसके मुख के समान चमक-दमक रखता हो और ऐसा उद्यान कहां है जो मेरे प्रियतम का सा बसन्त रखता हो। *

यहाँ मुझे याद आया कि इस ख़ाकसार ने एक रात इतना अधिक दरूद शरीफ़ पढ़ा कि उससे तन-मन सुगंधित हो गया। उसी रात स्पप्न में देखा कि स्वच्छ और शीतल पानी के तौर पर प्रकाश की मश्कें* इस ख़ाकसार के मकान में लिए आते हैं। उनमें से एक ने कहा कि ये वही बरकतें हैं जो तूने मुहम्मद की ओर भेजी थीं स.अ.व.। ऐसा ही विचित्र एक और क़िस्सा याद

① पानी भर कर रखने के लिए चमड़े द्वारा बनाया गया डोल। (अनुवादक)

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ - وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰۤى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ
الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ - وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا

शेष हाशिया नं. (11)

وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ है जिसका अर्थ यह है कि हे पूर्ण विशेषताओं वाले तथा चारों वरदानों के उद्गम हम तेरी ही उपासना करते हैं तथा उपासना इत्यादि आवश्यकताओं में सहायता भी तुझ से ही चाहते हैं अर्थात शुद्ध रूप से तू
Ⓟ440 ही हमारा उपास्य है और तुझ तक पहुंचने के लिए Ⓟकिसी अन्य देवता को

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

आया है कि एक बार इल्हाम हुआ जिस के अर्थ यह थे कि फ़रिश्ते झगड़े में हैं अर्थात् धर्म को जीवित करने के लिए ख़ुदा का इरादा जोश में है परन्तु
Ⓟ503 फ़रिश्तों पर जीवित करने वाले व्यक्ति की नियुक्ति प्रकट नहीं Ⓟहुई, इसलिए वे असमंजस में हैं, इसी मध्य स्पप्न में देखा कि वे लोग एक जीवित करने वाले को खोजते फिर रहे हैं, एक व्यक्ति इस ख़ाकसार के सामने आया और संकेत द्वारा उसने कहा – هٰذَا رَجُلٌ يُّحِبُّ رَسُوْلَ اللّٰهِ अर्थात यह वह व्यक्ति है जो रसूलुल्लाह से प्रेम रखता है। इस कथन का अभिप्राय यह था कि इस पद की मुख्य शर्त रसूल से प्रेम है जो इस व्यक्ति में प्रमाणित है और इसी प्रकार उपर्युक्त इल्हाम में जो रसूल की सन्तान पर दरूद भेजने का आदेश है, इसमें भी यही रहस्य है कि ख़ुदा के प्रकाशों से लाभान्वित करने में अहले बैत (घर वाले) से प्रेम का भी अत्यन्त हस्तक्षेप है। जो जो व्यक्ति ख़ुदा के सानिध्य प्राप्त लोगों में सम्मिलित होता है वह उन्हीं पवित्रात्माओं का उत्तराधिकार पाता है तथा समस्त ज्ञान और आध्यात्म ज्ञानों में उनका उत्तराधिकारी ठहरता है। यहां एक अत्यन्त प्रकाशमान कश्फ़ याद आया और वह यह है कि एक बार मग़रिब की नमाज़ के पश्चात् बिल्कुल जागने की अवस्था में थोड़ी सी अचेतना से जो हल्के से नशे से समरूप थी एक विचित्र सा दृश्य प्रकट हुआ कि प्रथम कुछ लोगों के जल्दी-जल्दी आने की आवाज़ आई जैसे तेज़ चलने की स्थिति में पैरों की जूती और मोज़ों की आवाज़ आती है फिर तत्काल ही पांच लोग अत्यन्त प्रतिभावान, मान्य तथा सुन्दर

جَآءَنَا مِنَ الۡحَقِّ ۙ وَنَطۡمَعُ اَنۡ یُّدۡخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الۡقَوۡمِ الصّٰلِحِیۡنَ-[1] (भाग-7)

समस्त सम्प्रदायों में से मुसलमानों की ओर अधिकतर प्रेरित होने वाले ईसाई हैं

शेष हाशिया नं. 11

हम अपना माध्यम नहीं बनाते न किसी मनुष्य को न किसी मूर्ति को, न अपनी बुद्धि और ज्ञान को कुछ वस्तु समझते हैं और प्रत्येक बात में तेरी सर्वशक्तिमान हस्ती से सहायता चाहते हैं। यह सच्चाई भी हमारे विरोधियों की दृष्टि से ओझल है। अतः स्पष्ट है मूर्ति-पूजक लोग एक ख़ुदा की हस्ती

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

सामने आ गए अर्थात् जनाब पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम, हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो, हसन-हुसैन रज़ियल्लाहो अन्हुम और फ़ातिमा ज़ुहरा रज़ियल्लाहो अन्हुम अजमईन। उनमें से एक ने और ऐसा मालूम होता है कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि. ने नितान्त प्रेम और सहानुभूति से एक मेहरबान मां की भांति इस ख़ाकसार का सर अपनी रान पर रख लिया, तत्पश्चात मुझे एक पुस्तक दी गई, जिसके सन्दर्भ में यह बताया गया कि यह क़ुर्आन की व्याख्या है जिसे अली ने लिखा है और अब अली यह व्याख्या तुझे देता है। इस पर ख़ुदा की कृतज्ञता। तत्पश्चात् यह इल्हाम हुआ

اِنَّکَ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسۡتَقِیۡمٍ - فَاصۡدَعۡ بِمَا تُؤۡمَرُ وَاَعۡرِضۡ عَنِ الۡجَاہِلِیۡنَ - तू सदमार्ग पर है। अतः जो आदेश दिया जाता है उसे स्पष्ट करके सुना और असभ्य लोगों से अलग रह।

وَقَالُوۡا لَوۡلَا نُزِّلَ عَلٰی رَجُلٍ مِّنَ قَرۡیَتَیۡنِ عَظِیۡمٍ - وَقَالُوۡا اَنّٰی لَکَ ھٰذَا - اِنَّ ھٰذَا لَمَکۡرٌ مَّکَرۡتُمُوۡہُ فِی الۡمَدِیۡنَۃِ - یَنۡظُرُوۡنَ اِلَیۡکَ وَھُمۡ لَا یُبۡصِرُوۡنَ - 504

और कहेंगे कि यह क्यों नहीं उतरा किसी बड़े प्रकाण्ड विद्वान पर दो शहरों में से, और कहेंगे कि यह पद तुझे कहां से मिला यह तो एक धोखा है जो तुम ने शहर में परस्पर मिलकर बना लिया है। तेरी ओर देखते हैं और

---

[1] अलमाइदह : 83-85

क्योंकि उनमें से कुछ कुछ ज्ञानी और वैरागी भी हैं जो अभिमान नहीं करते और जब ख़ुदा के कलाम को जो उसके रसूल पर उतरा सुनते हैं। तब तू देखता है कि उनकी

शेष हाशिया नं. (11)

Ⓟ441 के अतिरिक्त अन्य-अन्य वस्तुओं Ⓟकी उपासना करते हैं। आर्य समाज वाले अपनी अध्यात्मिक शक्तियों को अनुत्पत्त समझ कर उनके बल पर मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं, ब्रह्म समाज वाले इल्हाम के प्रकाश से विमुख होकर अपनी बुद्धि को एक देवी बना बैठे हैं जो उनके मिथ्या विचार के अनुसार

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

नहीं देखते अर्थात् तू उन्हें दिखाई नहीं देता। تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَا اِلٰی اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِکَ فَزَیَّنَ لَهُمُ الشَّیْطَانُ हमें अपनी हस्ती की सौगंध है कि हम ने तुझ से पूर्व मुहम्मद की उम्मत में अनेक कामिल वली (ऋषि) भेजे, परन्तु शैतान ने उनके अनुयायियों के मार्ग को ख़राब कर दिया अर्थात् भिन्न-भिन्न प्रकार की बिदअतें (नई बातों का समावेश जो शरीअत में नहीं। अनुवादक) सम्मिलित हो गईं तथा उनमें क़ुर्आन का सदमार्ग सुरक्षित न रहा

قُلْ اِنْ کُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْکُمُ اللّٰهُ- وَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ یُحْیِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا- وَمَنْ کَانَ لِلّٰهِ کَانَ اللّٰهُ لَهٗ- قُلْ اِنِ افْتَرَیْتُهٗ فَعَلَیَّ اِجْرَامٌ شَدِیْدٌ

कह यदि तुम ख़ुदा से प्रेम रखते हो तो मेरा अनुकरण करो अर्थात् मान्य रसूल की आज्ञा का पालन करो ताकि ख़ुदा भी तुम से प्रेम करे और यह बात समझ लो कि अल्लाह तआला पृथ्वी को नए सिरे से जीवित करता है। और जो व्यक्ति ख़ुदा के लिए हो जाए ख़ुदा उसके लिए हो जाता है। कह यदि मैं ने यह झूठ घड़ लिया है तो मुझ पर बहुत बड़ा अपराध है

اِنَّکَ الْیَوْمَ لَدَیْنَا مَکِیْنٌ اَمِیْنٌ- وَاِنَّ عَلَیْکَ رَحْمَتِیْ فِی الدُّنْیَا وَالدِّیْنِ- وَاِنَّکَ مِنَ الْمَنْصُوْرِیْنَ-

आज तू मेरे यहां सम्माननीय पद वाला और विश्वस्त है और तुझ पर धर्म

आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं। इस कारण कि वे ख़ुदा के कलाम की सच्चाई को पहचानते हैं तथा कहते हैं कि हे ख़ुदा हम ईमान लाए। हमें उन लोगों में लिख ले

शेष हाशिया नं. (11)

ख़ुदा तक पहुचाने में पूर्ण अधिकार रखती है तथा समस्त ख़ुदाई रहस्यों
Ⓟपर छाई हुई और हस्तक्षेपक है। अतः वे लोग ख़ुदा की उपासना और Ⓟ442
सहायता की अभियाचना करने के स्थान पर उसी से 'इय्याका नस्तईन' का सम्बोधन कर रहे हैं तथा सूक्ष्म द्वैतवाद में ग्रस्त और लिप्त हैं तथा जब

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

और संसार में मेरी दया है तथा तुझे सहायता दी गई है। يَحْمَدُكَ اللّٰهُ وَيَمْشِيْ اِلَيْكَ ख़ुदा तेरी प्रशंसा करता है और तेरी ओर चला आता है। اَلَا اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ खबरदार हो, ख़ुदा की सहायता क़रीब है। سُبْحَانَ الَّذِيْ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا पवित्र है वह हस्ती जिसने अपने बन्दे को रात के समय भ्रमण कराया अर्थात् पथ भ्रष्टता और गुमराही के युग में जो रात के समान है आध्यात्म ज्ञान और विश्वास तक ख़ुदा ने स्वयं पहुंचा दिया। خَلَقَ اٰدَمَ فَاَكْرَمَهٗ पैदा किया आदम को अतः उसका सम्मान किया جَرِيُّ اللّٰهِ فِيْ حُلَلِ الْاَنْبِيَاءِ ख़ुदा का शूरवीर नबियों के लिबासों में। इस इल्हामी वाक्य के अर्थ ये हैं कि उपदेश, हिदायत और ख़ुदा की वह्यी का पात्र होने का मूल नबियों का लिबास है तथा उनके अतिरिक्त को अस्थायी तौर पर मिलता है और यह नबियों का लिबास उम्मते मुहम्मदिया के कुछ लोगों को अपूर्णों को पूर्ण करने के उद्देश्य से प्रदान किया जाता है और उसी की ओर संकेत है जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया - عُلَمَاءُ اُمَّتِيْ كَاَنْبِيَاءِ بَنِيْ اِسْرَائِيْلَ अतएव ये लोग यद्यपि नबी नहीं परन्तु नबियों का कार्य उनके सुपुर्द किया जाता है وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا और तुम एक गढ़े के किनारे पर थे, तुम्हें उस से मुक्त किया अर्थात् मुक्त होने का
साधन प्रदान किया عَسٰى رَبُّكُمْ Ⓟاَنْ يَّرْحَمَ عَلَيْكُمْ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا Ⓟ505
وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِيْنَ حَصِيْرًا ख़ुदा तआला का इरादा इस ओर है कि

जो तेरे धर्म की सच्चाई के साक्षी हैं और क्यों हम ख़ुदा और ख़ुदा के सच्चे कलाम पर ईमान न लाएं, हालांकि हमारी इच्छा है कि ख़ुदा हमें उन बन्दों में शामिल करे

शेष हाशिया नं. 11

रोका जाए तो कहते हैं कि बुद्धि ख़ुदा के अनुदान में से है और इसी उद्देश्य के लिए प्रदान की गई है कि ताकि मनुष्य अपनी जीविका और जटिलता में उसे उपयोग में लाए। अत: ख़ुदा के अनुदान का उपयोग में लाना द्वैतवाद नहीं बन सकता। अत: स्पष्ट हो कि यह उनकी भूल है तथा अधिकांश बार

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

तुम पर दया करे और यदि तुम पाप और उपद्रव की ओर लौटे तो हमने काफ़िरों के लिए नरक का कारावास बना रखा है। यह आयत यहां हज़रत मसीह के प्रतापी तौर पर आगमन की ओर संकेत करती है अर्थात् वे कोमलता, विनम्रता, कृपालुता और उपकार को स्वीकार नहीं करेंगे तथा शुद्ध सत्य जो स्पष्ट सबूतों और नितान्त व्यापक आयतों से प्रकट हो गया है उस से विद्रोही रहेंगे तो वह युग भी आने वाला है कि जब ख़ुदा तआला अपराधियों के लिए कठोरता, भयंकरता, रुद्रता और सख़्ती से काम लेगा और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम नितान्त प्रताप के साथ संसार में आएंगे और समस्त मार्गों और सड़कों को कूड़ा-करकट से साफ़ कर देंगे तथा टेढ़ेपन और असमतल होने का नामोनिशान न रहेगा (अर्थात् असत्य और बुराइयों का सर्वनाश कर दिया जाएगा) तथा ख़ुदा का प्रताप पथ-भ्रष्टता के बीज का अपनी प्रतापी आभा से सर्वनाश कर देगा और यह युग उस युग के लिए बतौर इरहास (सूत्रधार) के हैं। अर्थात् उस समय ख़ुदा तआला प्रतापी तौर पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण करेगा, अब उसके स्थान पर जमाली तौर पर अर्थात् विनम्रता और उपकार से समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण कर रहा है تُوبُوا وَاَصْلِحُوا وَاِلَى اللّٰهِ تَوَجَّهُوا وَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلُوا وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ तौबा (पश्चाताप) करो, दुराचार, पाप और कुफ़्र से अलग हो जाओ, अपना सुधार करो, ख़ुदा की ओर ध्यान दो तथा उस पर भरोसा

जो सदात्मा हैं।

Ⓟاِنَّ الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ مِنۡ قَبۡلِہٖۤ اِذَا یُتۡلٰی عَلَیۡہِمۡ یَخِرُّوۡنَ لِلۡاَذۡقَانِ سُجَّدًا- وَّیَقُوۡلُوۡنَ سُبۡحٰنَ Ⓟ486

शेष हाशिया नं. (11)

यह बात प्रकट हो चुकी है कि जिस पूर्ण विश्वास तथा जिन सच्चे आध्यात्म ज्ञानों पर हमारी मुक्ति निर्भर है, Ⓟउन उच्च उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बुद्धि Ⓟ443
माध्यम नहीं बन सकती, हां उन आध्यात्म ज्ञानों की प्राप्ति के पश्चात् उनकी सच्चाई और उनमें सत्य को समझ सकती है, परन्तु वह प्रकटन उचित और

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

करो, धैर्य और नमाज़ के साथ उसकी सहायता चाहो, क्योंकि नेकियों से बुराइयां दूर हो जाती हैं بُشۡرٰی لک یَا اَحۡمَدِی اَنۡتَ مُرَادِیۡ وَمَعِیۡ - غَرَسۡتُ کَرَامَتَکَ بِیَدِیۡ ख़ुशख़बरी हो तुझे हे मेरे अहमद, तू मेरी अभिलाषा है और मेरे साथ है, मैंने तेरे चमत्कार को अपने हाथ से लगाया है قُلۡ لِّلۡمُؤۡمِنِیۡنَ یَغُضُّوۡا مِنۡ اَبۡصَارِہِمۡ وَیَحۡفَظُوۡا فُرُوۡجَہُمۡ ذٰلِکَ اَزۡکٰی لَہُمۡ मौमिनों को कह दे कि उन परिजनों से जिन से निकाह वैध है से अपनी आंखों को बन्द रखें तथा अपने गुप्तांगों और कानों को बेहूदा बातों से सुरक्षित रखें उनकी पवित्रता के लिए यही आवश्यक और अनिवार्य है। यह इस बात की ओर संकेत है कि प्रत्येक मौमिन के लिए निषिद्ध बातों से पृथक रहना तथा अपने अंगों को अवैध कार्यों से सुरक्षित रखना अनिवार्य है, और यही उपाय उसकी पवित्रता का आधार है।

Ⓟچشم گوش و دیده بند اے حق گزں   یاد کن فرمان قل للمومنین Ⓟ506

अनुवाद :- हे सत्य के पुजारी! आंख और कान बन्द कर ले और "मौमिनों से कह" का ख़ुदाई आदेश स्मरण कर।

خاطر خود زین و آن یکسر برآر   تاشود بر خاطرت حق آشکار

अपना हृदय इधर-उधर की वस्तुओं से पृथक कर ले ताकि तेरे हृदय पर सत्य प्रकट हो जाए।

زیر پا کن دلبرانِ اس جہان   تا نماید چہرہ آں محبوب جان

इस संसार के प्रियतमों को लात मार ताकि तेरे प्राण का प्रियतम तुझे अपना मुख दिखाए।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

رَبِّنَآاِنْ کَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا - وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا - [1] (भाग-15)

जो लोग ईसाइयों और यहूदियों में से ज्ञानवान हैं जब उन पर क़ुर्आन पढ़ा जाता

शेष हाशिया नं. (11)

पूर्ण केवल उस पवित्र और स्वच्छ प्रकाश से होता है जो ख़ुदा तआला की हस्ती में मौजूद है तथा बुद्धि का धुंधला और अपूर्ण प्रकाश जो मनुष्य में विद्यमान है इस स्थान पर असमर्थ है। अत: द्वैतवाद इस प्रकार अनिवार्य आता है कि ब्रह्म समाज वाले ख़ुदा के इस प्रकाशमान कलाम से जो

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

کاملان حی اند ہم زیر زمس   تو بگوری باحیاتِ اس چنیں

सदात्मा लोग तो पृथ्वी के नीचे भी जीवित हैं और तू इस जीवन के बावजूद क़ब्र में पड़ा है।*

سالہا باید کہ خون دل خوری   تا بکوئے دلستانے رہبری

बहुत वर्षों की आवश्यकता है कि तू हृदय का रक्त पीता रहे तब कहीं उस प्रियतम तक पहुंचेगा।*

کے بآسانی رہے بکشائیدت   صد جنوں باید کہ تا ہوش آیدت

आसानी पूर्वक मार्ग कहां खुल सकता है सैकड़ों विक्षिप्तताएं चाहिएं ताकि तुझे होश आए।*

وَاِذَا سَاَلَکَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ- اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ- وَمَآ اَرْسَلْنٰکَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ और जब तुझ से मेरे बन्दे मेरे बारे में प्रश्न करें तो मैं निकट हूं, दुआ करने वाले की दुआ स्वीकार करता हूं। मैंने तुझे इसलिए भेजा है ताकि समस्त लोगों के लिए दया का सामान प्रस्तुत करूं लَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ- وَكَانَ كَيْدُهُمْ عَظِيْمًا और जो लोग अहले किताब

[1] सूरह बनी इस्राईल : 108-110

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

है तो सज्दह करते हुए ठोढ़ियों पर गिर पड़ते हैं तथा कहते हैं कि हमारा ख़ुदा वादा भंग करने से पवित्र है। एक दिन हमारे ख़ुदावन्द का वादा पूर्ण होना ही था और

शेष हाशिया नं. 11

उचित और पूर्ण प्रकटन का आधार है विमुख होकर तथा उस से पूर्णतया लापरवाही प्रकट करके अपनी ही अपूर्ण बुद्धि को स्वच्छन्द पथ-प्रदर्शक ठहराते हैं और कार्य का आधार बनाते हैं। अतः उनका रोगी हृदय इस धोखे में पड़ा हुआ है कि जिस श्रेष्ठ उद्देश्य तक ख़ुदाई शक्तियां ⓟऔर ⓟ444

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

(यहूदी, ईसाई) और द्वैतवादियों में से काफ़िर हो गए हैं अर्थात कुफ्र पर दृढ़ता में हठधर्मी पर हैं वे अपने कुफ्र से हटने वाले नहीं थे सिवाए इसके कि उन्हें स्पष्ट निशान दिखाया जाता तथा उनका छल बहुत भारी छल था। यह इस बात की ओर संकेत है कि ख़ुदा तआला ने आकाशीय निशानों और बौद्धिक तर्कों द्वारा जो कुछ इस ख़ाकसार के हाथ से प्रकट किया है वह समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए पर्याप्त था। इस युग के कपटी लोग जिन्हें असभ्यता और अपवित्रता के कीटाणु ने अन्दर ही अन्दर खा लिया है ऐसे नहीं थे कि स्पष्ट निशानों और ठोस तर्कों के बिना अपने अपने कुफ्र से रुक जाते अपितु वे इस छल में लगे हुए थे कि ताकि किसी प्रकार इस्लाम के बाग़ को पृथ्वी से सर्वथा मिटा दें। **यदि ख़ुदा ऐसा न करता तो संसार में अन्याय और अत्याचार फैल जाता।** यह इस बात की ओर संकेत है कि संसार को इन स्पष्ट निशानों की नितान्त आवश्यकता थी और संसार के लोग जो अपने कुफ्र और अपवित्रता के रोग से कोढ़ी की तरह गल गए हैं वह इस आकाशीय औषधि के अतिरिक्त जो वास्तव में सत्याभिलाषियों के लिए अमृत थी, स्वस्थ नहीं रह सकते थे।

ⓟ507 وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ لَا تُفۡسِدُوۡا ⓟفِى الۡاَرۡضِ قَالُوۡۤا اِنَّمَا نَحۡنُ مُصۡلِحُوۡنَ - اَلَاۤ اِنَّهُمۡ هُمُ الۡمُفۡسِدُوۡنَ - قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ وَمِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ

रोते हुए मुंह पर गिर पड़ते हैं तथा ख़ुदा का कलाम उनमें विनम्रता और विनीतता को बढ़ाता है।

शेष हाशिया नं. 11

ख़ुदाई आभाएं पहुंचा सकती हैं उस उद्देश्य तक उनकी अपनी ही बुद्धि पहुंचा देगी। अतः स्पष्ट है कि इससे बढ़कर और क्या द्वैतवाद होगा कि अपनी बुद्धि की शक्ति को ख़ुदाई शक्ति के समान अपितु उससे उत्तम विचार कर रहे हैं। अतः देखिए वही बात सत्य निकली या नहीं कि वे ख़ुदा

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

और जब उन्हें कहा जाए कि तुम पृथ्वी पर उपद्रव न करो तथा द्वैतवाद, कुधारणा और कुफ्र को मत फैलाओ तो वे कहते हैं कि हमारा ही मार्ग उचित है और हम उपद्रवी नहीं हैं अपितु सुधारक और रिफ़ारमर हैं। सतर्क रहो यह ही लोग उपद्रवी हैं जो पृथ्वी पर उपद्रव कर रहे हैं। कह कि मैं उपद्रवी सृष्टियों के षडयंत्रों से ख़ुदा की शरण चाहता हूं तथा अन्धकारमय रात से ख़ुदा की शरण में आता हूं अर्थात् यह युग अपने अत्यधिक उपद्रव की दृष्टि से अन्धकारमय रात के समान है। अतः ख़ुदाई बल और शक्तियां इस युग को प्रकाशित करने के लिए आवश्यक हैं, मानव शक्तियों से यह कार्य सम्पन्न होना असंभव है।

اِنِّیْ نَاصِرُکَ - اِنِّیْ حَافِظُکَ - اِنِّیْ جَاعِلُکَ لِلنَّاسِ اِمَامًا - اَکَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا - قُلْ هُوَ اللّٰهُ عَجِیْبٌ - یَجْتَبِیْ مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِہٖ - لَا یُسْئَلُ عَمَّا یَفْعَلُ وَهُمْ یُسْئَلُوْنَ - وَتِلْکَ الْاَیَّامُ نُدَاوِلُهَا بَیْنَ النَّاسِ

मैं तेरी सहायता करूंगा, मैं तेरी सुरक्षा करूंगा, मैं तुझे लोगों का पेशवा बनाऊंगा, क्या लोगों को आश्चर्य हुआ कि ख़ुदा तआला अद्भुत बातों वाला है, हमेशा अद्भुत कार्य प्रकट करता है, अपने बन्दों में से जिसे चाहता है चुन लेता है, वह अपने कार्यों के लिए पूछा नहीं जाता कि ऐसा क्यों किया तथा लोग पूछे जाते हैं। हम ये दिन लोगों में फेरते रहते हैं अर्थात् कभी किसी की बारी आती है और कभी किसी की तथा ख़ुदा की अनुकम्पाएं उम्मते

अत: यह तो उन लोगों का हाल था जो ईसाइयों और यहूदियों में ज्ञानी और न्याय-प्रिय थे कि जब वे एक ओर आंहज़रत की स्थिति पर दृष्टि डालकर देखते

शेष हाशिया नं. (11)

के स्थान पर बुद्धि से **'इय्याका नस्तईन'** पुकार रहे हैं। ईसाइयों की स्थिति का वर्णन करने की कुछ आवश्यकता ही नहीं। सब लोग जानते हैं कि ईसाई सज्जन बजाए इसके कि ख़ुदा तआला की शुद्ध तौर पर उपासना करें मसीह की उपासना में व्यस्त हैं और बजाए इसके कि अपने कारोबार में

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

मुहम्मदिया के भिन्न-भिन्न लोगों पर बारी-बारी होती रहती हैं। وَقَالُوْٓا اَنّٰى لَكَ هٰذَا- وَقَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ- اِذَا نَصَرُ اللّٰهُ الْمُؤْمِنَ جَعَلَ لَهٗ الْحَاسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ- فَالنَّارُ مَوْعِدُهُمْ- قُلِ اللّٰهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ और कहेंगे कि यह तुझे कहां से - और यह तो एक बनावट है, ख़ुदा तआला जब मौमिन की सहायता करता है तो पृथ्वी पर उसके कई ईर्ष्यालु बना देता है अत: जो लोग ईर्ष्या पर हठधर्मी से काम लें और ईर्ष्या से न हटें तो नर्क ही उनके वादे का स्थान है। कह ये समस्त कारोबार ख़ुदा की ओर से हैं फिर उन्हें छोड़ दे ताकि अपने अनुचित चिन्तन-मनन में खेलते रहें तَلَطَّفْ بِالنَّاسِ وَتَرَحَّمْ عَلَيْهِمْ اَنْتَ فِيْهِمْ Ⓟ بِمَنْزِلَةِ مُوْسٰى وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ Ⓟ508 लोगों के साथ हमदर्दी और विनम्रता का व्यवहार कर तथा उन पर दया कर - तू उनमें मूसा के स्थान पर है, और उनकी बातों पर धैर्य से काम ले, हज़रत मूसा सहनशीलता और सहिष्णुता में बनी इस्राईल के समस्त नबियों से अग्रसर थे और बनी इस्राईल में न मसीह न कोई दूसरा नबी ऐसा नहीं हुआ जो हज़रत मूसा के श्रेष्ठ स्तर पर पहुंच सके। तौरात से सिद्ध है कि हज़रत मूसा सहानुभूति और सहिष्णुता और उत्तम शिष्टाचारों में समस्त इस्राईली नबियों से उत्तम और श्रेष्ठतर थे। जैसा कि 'गिनती' अध्याय : 12, आयत : 3 तौरात में लिखा है कि मूसा समस्त लोगों से जो पृथ्वी पर थे अधिक सहनशील था। अत: ख़ुदा ने तौरात में मूसा की सहनशीलता की ऐसी प्रशंसा की कि बनी इस्राईल के समस्त नबियों में से किसी की प्रशंसा

थे कि मात्र अनपढ़ हैं कि शिक्षा-दीक्षा का एक बिन्दु भी नहीं सीखा और न किसी सभ्य क़ौम में रहन-सहन रहा और न ज्ञान संबंधी सभाएं देखने का संयोग हुआ

शेष हाशिया नं. 11

ख़ुदा से सहायता चाहें मसीह से सहायता मांगते रहते हैं तथा उनके मुख पर हर समय رَبَّنَا الْمَسِيحُ رَبَّنَا الْمَسِيحُ हमारा रब्ब मसीह है, हमारा रब्ब मसीह है
Ⓟ445 जारी है। Ⓟअतः वे लोग اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ पर कार्यरत होने से वंचित और ख़ुदा के दरबार से बहिष्कृत हैं। सातवीं सच्चाई जिसका सूरह

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

में ये वाक्य वर्णन नहीं किए। हां जो उत्तम शिष्टाचार हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जिनकी क़ुर्आन करीम में चर्चा है वह हज़रत मूसा से सहस्त्रों गुना बढ़कर है क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया है कि हजरत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उन समस्त उत्तम सदाचारों का संग्रहीता है जो नबियों में पृथक-पृथक तौर पर पाए जाते थे एवं आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पक्ष में फ़रमाया है - ① اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ तू ख़ुलुक़े अज़ीम पर है तथा अज़ीम शब्द के साथ जिस वस्तु की प्रशंसा की जाए वह अरब के मुहावरे में उस वस्तु के अन्तिम विशेषता की ओर संकेत होता है उदाहरणतया यदि यह कहा जाए कि यह वृक्ष अज़ीम है तो इससे तात्पर्य यह होगा कि जहां तक वृक्षों के लिए लम्बाई-चौड़ाई और तने की दृढ़ता संभ है वह सब उस वृक्ष को प्राप्त है, इसी प्रकार इस आयत का भाव है कि जहां तक मानवीय आत्मा को उत्तम शिष्टाचार और सुशील सदाचार प्राप्त हो सकते हैं वे पूर्णतया शिष्टाचार मुहम्मदी आत्मा में विद्यमान हैं। अतः यह प्रशंसा ऐसी उच्च स्तर की है कि इससे अधिक संभव नहीं। इसी की ओर संकेत है कि एक अन्य स्थान पर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम के पक्ष में फ़रमाया ② وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا। अर्थात् तुझ पर ख़ुदा की सर्वाधिक कृपा है तथा कोई नबी तेरे स्तर तक नहीं पहुंच सकता। यही प्रशंसा और भविष्यवाणी ज़बूर,

① अलक़लम : 5 ② अन्निसाअ : 114

℗तथा दूसरी ओर वे क़ुर्आन करीम में केवल पूर्व किताबों के क़िस्से नहीं अपितु℗487 सैकड़ों बारीक सच्चाइयां देखते थे जो पहली किताबों को पूर्ण करने वाली थीं,

शेष हाशिया नं. (11)

फ़ातिहा में उल्लेख है اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ है जिसके अर्थ ये हैं कि हमें वह मार्ग दिखा उस मार्ग पर हमें दृढ़ और स्थापित कर जो सीधा है जिसमें किसी प्रकार की वक्रता नहीं। इस सच्चाई का विवरण यह है कि मनुष्य की वास्तविक दुआ यही है कि वह ख़ुदा तक पहुंचने के सीधे मार्ग की याचना

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

अध्याय : 45 में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम की प्रतिष्ठा में मौजूद है जैसा कि ख़ुशी के तैल से तेरे साथियों से अधिक तुझे सुगंधित किया। चूंकि उम्मते मुहम्मदिया के विद्वान बनी इस्राईल के नबियों की भांति हैं इसलिए उपर्युक्त इल्हाम में इस ख़ाकसार की उपमा हज़रत मूसा से दी गई और ये समस्त बरकतें हज़रत सय्यिदुर्रुसुल (हज़रत मुहम्मद स.अ.व.) की हैं कि ℗ख़ुदा तआला उसकी विवश उम्मत को अपनी कृपा और उपकार℗509 द्वारा ऐसे-ऐसे सम्मानपूर्ण वार्तालापों से स्मरण करता है – اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ तत्पश्चात यह इल्हामी इबारत है –

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ
وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ- وَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تُدْهِنُوْنَ- قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ-
قِيْلَ ارْجِعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ فَلَا تُرْجِعُوْنَ- وَقِيْلَ اسْتَحْوَذُوْا فَلَا تَسْتَحْوِذُوْنَ- اَمْ
تَسْئَلُهُمْ مِّنْ خَرْجٍ فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ- بَلْ اٰتَيْنَاهُمْ بِالْحَقِّ فَهُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُوْنَ-
سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ- اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا
يُفْتَنُوْنَ- يُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا- وَلَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ خَافِيَةٌ- وَلَا يَصْلُحُ
شَیْءٌ قَبْلَ اِصْلَاحِهٖ- وَمَنْ رُّدَّ مِنْ مَّطْبَعِهٖ فَلَا مَرَدَّ لَهٗ

और जब उन्हें कहा जाए कि ईमान लाओ जैसे लोग ईमान लाते हैं तो वे कहते हैं कि क्या हम ऐसा ही ईमान लाएं जैसे मूर्ख लोग ईमान लाए हैं। ख़बरदार हो वे ही मूर्ख है परन्तु जानते नहीं और यह चाहते हैं कि तुम

तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अनपढ़ता की स्थिति को सोचने से और फिर उस अंधकार के युग में उन ज्ञान संबंधी कमालात को देखने से

शेष हाशिया नं. (11)

करे क्योंकि प्रत्येक मनोकामना की प्राप्ति के लिए भौतिक नियम यह है कि उन संसाधनों को प्राप्त किया जाए जिनके द्वारा वह मनोकामना पूर्ण होती है तथा ख़ुदा तआला ने प्रत्येक बात की प्राप्ति हेतु यही प्रकृति का नियम
ⓟ446 निर्धारित कर रखा है कि उसकी प्राप्ति के संसाधनों को प्राप्त ⓟकिया जाए

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

उनकी चाटुकारिता करो। कह हे काफ़िरो! मैं उस वस्तु की उपासना नहीं करता जिसकी तुम करते हो, तुम्हें कहा गया कि ख़ुदा की ओर लौटो परन्तु तुम नहीं लौटते और तुम्हें कहा गया कि तुम अपनी तामसिक प्रवृतियों पर विजय प्राप्त कर लो परन्तु तुम विजयी नहीं होते। क्या तू इन लोगों से कुछ मज़दूरी मांगता है कि वे इस क्षतिपूर्ति (दण्ड) के कारण सत्य को स्वीकार करना एक पर्वत समझते हैं अपितु उन्हें मुफ़्त अधिकार दिया जाता है और वे सत्य से घृणा कर रहे हैं। ख़ुदा तआला उन दोषों से पवित्र और श्रेष्ठतर है जो वे लोग उसकी हस्ती पर आरोपित करते हैं। क्या ये लोग यह समझते हैं कि परीक्षा लिए बिना मात्र मौखिक ईमान के दावे से छूट जाएंगे। चाहते हैं कि ऐसे कार्यों से प्रशंसित हों जिन्हें उन्होंने किया नहीं, ख़ुदा तआला से कोई बात गुप्त नहीं और जब तक वह किसी वस्तु का सुधार न करे सुधार नहीं
ⓟ510 हो सकता और जो व्यक्ति उसके स्वभाव से अस्वीकार किया जाए ⓟउसे कोई वापस नहीं ला सकता لَعَلَّکَ بَاخِعٌ نَفْسَکَ اَلَّا یَکُوْنُوْا مُؤْمِنِیْنَ - لَا تَقْفُ مَا لَیْسَ لَکَ بِہٖ عِلْمٌ - وَلَا تُخَاطِبْنِیْ فِی الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا اِنَّھُمْ مُغْرَقُوْنَ - یَا اِبْرَاھِیْمُ اَعْرِضْ عَنْ ھٰذَا اِنَّہٗ عَبْدٌ غَیْرُ صَالِحٍ - اِنَّمَا اَنْتَ مُذَکِّرٌ وَمَا اَنْتَ عَلَیْھِمْ بِمُسَیْطِرٍ क्या तुम इसी शोक में स्वयं को नष्ट करोगे कि ये लोग क्यों ईमान नहीं लाते, जिस बात का तुझे ज्ञान नहीं उसके पीछे मत पड़ तथा उन लोगों के सन्दर्भ में जो अत्याचारी हैं मेरे साथ बात मत कर, वे नष्ट किए जाएंगे। हे इब्राहीम! इस से पृथक रह यह सदात्मा व्यक्ति नहीं है, तू केवल परामर्शदाता है उन

तथा बाह्य और आन्तरिक प्रकाशों के अवलोकन से उन्हें आंहज़रत की नुबुव्वत से भी अधिक प्रकाशमान मालूम होती थीं। स्पष्ट है कि यदि उन ईसाई विद्वानों को

शेष हाशिया नं. (11)

और जिन मार्गों पर चलने से वह उद्देश्य प्राप्त हो सकता है वे मार्ग धारण किए जाएं। जब मनुष्य सदमार्ग पर उचित तौर पर क़दम मारे तथा जो मार्ग उद्देश्य प्राप्ति के मार्ग हैं उन पर चले तो फिर उद्देश्य स्वयं प्राप्त हो जाता है, परन्तु ऐसा कदापि नहीं हो सकता कि उन मार्गों का परित्याग करने से जो

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

पर संरक्षक नहीं।

यह कुछ आयतें जो बतौर इल्हाम इल्क़ा हुई हैं कुछ विशिष्ट लोगों के संबंध में हैं। फिर इसके आगे यह इल्हाम है وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرَاهِيْمَ مُصَلًّى और धैर्य और नमाज़ के साथ सहायता मांगो तथा इब्राहीम के स्थान पर नमाज़ का स्थान बनाओ। यहां इब्राहीम के स्थान से अभिप्राय अर्थात् ख़ुदा से प्रेम, समर्पण, सहमति और स्वामिभक्ति यही है इब्राहीम का वास्तविक स्थान, जो उम्मते मुहम्मदिया को बतौर अनुसरण और उत्तराधिकार प्रदान होता है और जो व्यक्ति इब्राहीम की प्रकृति पर पैदा हुआ है उसका अनुसरण भी इसी में है يظل ربک علیک و یغیثک و یرحمک- وان لم یعصمک الناس فیعصمک اللہ من عندہ- یعصمک اللہ من عندہ وان لم یعصمک الناس ख़ुदा तआला तुझ पर अपनी रहमत की छाया करेगा एवं तेरी दुहाई सुनेगा और तुझ पर दया करेगा और यदि समस्त लोग तेरी रक्षा से संकोच करें परन्तु ख़ुदा तेरी रक्षा करेगा और ख़ुदा तुझे अवश्य अपनी सहायता द्वारा सुरक्षित करेगा यद्यपि कि समस्त लोग तेरी सुरक्षा में संकोच करें अर्थात् ख़ुदा तआला स्वयं तुझे सहायता देगा तथा तेरे प्रयास के व्यर्थ जाने से तुझे सुरक्षित रखेगा और उसके समर्थन तेरे साथ रहेंगे। اِذْ یَمْکُرُ بِکَ الَّذِیْ کَفَرَ - اَوْقِدْ لِیْ یَا هَامَانُ لَعَلِّیْ اَطَّلِعُ اِلٰی اِلٰهِ مُوْسٰی وَاِنِّیْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْکَاذِبِیْنَ स्मरण कर जब इन्कारी ने किसी छल के उद्देश्य से अपने सहयोगी से कहा कि किसी उपद्रव या

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनपढ़ और ख़ुदा के समर्थित होने पर पूर्ण विश्वास न होता तो संभव न था कि वे एक ऐसे धर्म से जिसके समर्थन में रोम

शेष हाशिया नं. (11)

किसी उद्देश्य-प्राप्ति के लिए माध्यम के तौर पर हैं यों ही उद्देश्य प्राप्त हो जाए अपितु अनादि काल से प्रकृति का यही नियम सुनियोजित चला आ
℗447 रहा है कि ℗प्रत्येक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए एक मार्ग निर्धारित है, मनुष्य जब तक उस निर्धारित मार्ग पर नहीं चलता तब तक उसे वह उद्देश्य प्राप्त नहीं होता। अत: वह वस्तु जिसे परिश्रम, प्रयास, दुआ और विनय से प्राप्त करना चाहिए सदमार्ग है। जो व्यक्ति सदमार्ग को प्राप्त करने के लिए

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

परीक्षण की अग्नि को भड़का ताकि मैं मूसा के ख़ुदा पर सूचना पाऊं कि वह क्योंकर उसकी सहायता करता है, और उसके साथ है या नहीं, क्योंकि मैं समझता हूं कि यह झूठा है। यह किसी भविष्य की घटना की ओर संकेत है जिसे पूर्व घटना के रूप में वर्णन किया गया है। تبت یدا ابی لهب وتب- ما کان له ان ید خل فیها الا خائفا وما اصابک فمن الله अबूलहब के दोनों हाथ नष्ट हो गए और वह भी नष्ट (तबाह) हुआ तथा उसके लिए उचित
℗511 न था कि इस काम में बिना ℗भयभीत हुए और डरते हुए यों ही निर्भीकता से प्रवेश करता और तुझे जो कुछ पहुंचे वह तो ख़ुदा की ओर से है। यह किसी व्यक्ति के उपद्रव की ओर संकेत है जो किसी लेख अथवा किसी अन्य कृत्य द्वारा उस से प्रकटन में आए والله اعلم بالصواب- الفتنة ھٰھنا فاصبر کما صبر اولوالعزم- الا انها فتنة من الله لیحب حبا جما- حبا من الله العزیز الاکرم عطاءً غیر مجذوذ यहां परीक्षा है अत: धैर्य धारण कर जैसा कि दृढ़ प्रतिज्ञ लोगों ने धैर्य किया है। सतर्क हो, यह परीक्षा ख़ुदा की तरफ से है ताकि वह ऐसा प्रेम करे जो पूर्ण प्रेम है। उस ख़ुदा का प्रेम जो नितान्त सम्माननीय और अत्यन्त महान है, वह अनुकम्पा जिस का कभी अन्त नहीं। شاتان تذبحان- وکل من علیها فان दो बकरियां आलंभन (ज़िब्ह) की जाएंगी और पृथ्वी पर कोई ऐसा नहीं जो मरने से बच जाएगा अर्थात् प्रत्येक

के क़ैसर (बादशाह की उपाधि) का महान शासन स्थापित था और जो न केवल एशिया में अपितु यूरोप के कुछ भागों में भी फैल चुका था तथा संसार के पुजारियों

शेष हाशिया नं. (11)

प्रयासरत नहीं रहता और न ®उसका कुछ ध्यान रखता है वह ख़ुदा के निकट®448 एक टेढ़ा चलने वाला मनुष्य है। यदि वह ख़ुदा से स्वर्ग और परलोक के सुखों का अभियाचक हो तो ख़ुदा की नीति उसे यही उत्तर देती है कि हे मूर्ख प्रथम सदमार्ग की याचना कर फिर तुझे ये सब कुछ सरलतापूर्वक प्राप्त

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

के लिए मृत्यु और प्रारब्ध निश्चित है तथा मृत्यु से किसी को छुटकारा नहीं। कोई चार दिन पूर्व इस संसार को छोड़ गया कोई बाद में उसे जा मिला।

ہمیں مرگ است کز یاران بپوشد روئے یاراں را بیکدم می کند وقت خزاں فصل بہاراں را

अनुवाद :- यही मृत्यु है कि यार के चेहरे को छुपा देती है जैसे क्षणों में पतझड़ बसन्त ऋतु को परिवर्तित कर देती है। (अनुवादक)

ولا تھنوا ولا تحزنوا - الیس اللّٰہ بکاف عبدہ - الم تعلم ان اللّٰہ علی کل شیء قدیر - وجئنا بک علی ھؤلاء شھیدا

और आलस्य मत करो तथा शोक न करो। क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं है। क्या तू नहीं जानता कि ख़ुदा प्रत्येक बात पर सामर्थ्यवान है और ख़ुदा उन लोगों पर तुझे साक्षी के तौर पर लाएगा।

اوفی اللّٰہ اجرک ویرضی عنک ربک و یتم اسمک وعسی ان تحبوا شیئا وھو شر لکم وعسی ان تکرھوا شیئا وھو خیر لکم واللّٰہ یعلم وانتم لا تعلمون

ख़ुदा तेरा पूरा प्रतिफल देगा तथा तुझ से प्रसन्न होगा और तेरे नाम को पूर्ण करेगा और संभव है कि एक वस्तु को प्रिय समझो और वास्तव में वह तुम्हारे लिए बुरी हो और संभव है कि तुम एक वस्तु को बुरा समझो और वास्तव में वह तुम्हारे लिए अच्छी हो और ख़ुदा तआला समस्याओं के परिणामों को जानता है और तुम नहीं जानते।

كُنْتُ كَنْزًا مَخْفِيًّا فَاَحْبَبْتُ اَنْ اُعْرَفَ - اِنَّ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا - وَاِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا - اَهٰذَا الَّذِىْ بَعَثَ اللّٰهُ - قُلْ اِنَّمَا اَنَا

को अपनी द्वैतवादी शिक्षा के कारण स्वजन और प्रिय मालूम होता था, केवल सन्देह और शंका की स्थिति में पृथक होकर ऐसे धर्म को स्वीकार कर लेते जो एकेश्वरवाद

शेष हाशिया नं. (11)

हो जाएगा। अत: समस्त दुआओं से प्रथम दुआ जिसकी सत्य के अभिलाषी
℗449 को ℗नितान्त आवश्यकता है सद्मार्ग की अभिलाषा है। अत: स्पष्ट है कि हमारे विरोधी इस सच्चाई पर चलने से भी वंचित हैं। ईसाई लोग तो अपनी प्रत्येक दुआ में रोटी ही मांगा करते हैं और यदि खा-पीकर तथा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰى اِلَىَّ اَنَّمَا اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَالْخَيْرُ كُلُّهٗ فِى الْقُرْاٰنِ لَا
℗512 ℗يَمَسُّهٗ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ - فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ

मैं एक गुप्त ख़ज़ाना था, अत: मैंने चाहा कि पहचाना जाऊं। आकाश और पृथ्वी दोनों बन्द थे हमने उन दोनों को खोल दिया और वे मेरे साथ हंसी-उपहास का ही बर्ताव करेंगे और ठट्ठा करते हुए कहेंगे - क्या यही है जिसे ख़ुदा ने सृष्टि के सुधार हेतु नियुक्त किया अर्थात् जिनका मूल ही अपवित्रता है उनसे सुधार की आशा मत रख और फिर फ़रमाया - कह कि मैं केवल तुम जैसा व्यक्ति हूं मुझे यह वह्यी होती है कि ख़ुदा के अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा उपास्य नहीं वही अकेला उपास्य है जिसके साथ किसी
℗513 को भागीदार नहीं बनाना चाहिए और समस्त हित और भलाई ℗क़ुर्आन में है, उसके अतिरिक्त अन्य किसी स्थान से भलाई प्राप्त नहीं हो सकती तथा क़ुर्आनी सच्चाइयां केवल उन्हीं लोगों पर प्रकट होती हैं जिन्हें ख़ुदा तआला अपने हाथ से शुद्ध और पवित्र करता है। मैं एक आयु तक तुम्हारे मध्य ही रहता रहा हूं क्या तुम्हें बुद्धि नहीं।

ہست فرقانِ مبارک از خدا طیب شجر — نونہال و نیک بوء و سایہ دار و پُرزبر

पवित्र क़ुर्आन ख़ुदा की ओर से एक पवित्र वृक्ष है जो नया और उत्तम मूल वाला, छायादार और फलों से लदा हुआ है। (अनुवादक)

میوہ گر خواہی بیا زیر درخت میوہ دار — گر خردمندی مجنباں بید را بہر ثمر

यदि तू मेवा चाहता है तो मेवादार वृक्ष के नीचे आ, यदि बुद्धिमान है तो वेद को फलों के लिए न हिला। (अनुवादक)

की शिक्षा के कारण समस्त द्वैतवादियों को बुरा मालूम होता था और उसके स्वीकार करने वाले हर समय चारों ओर से तबाही और Ⓟविपत्ति में थे। अत: जिस वस्तु ने Ⓟ488

शेष हाशिया नं. (11)

पेट भर कर भी गिरजा में आएं फिर भी स्वयं को बनावटी भूखा प्रकट करके रोटी मांगते रहते हैं जैसे उनका मुख्य उद्देश्य रोटी Ⓟही है और कुछ नहीं। Ⓟ450 आर्य समाज वाले तथा उनके अन्य मूर्तिपूजक बंधु अपनी प्रार्थनाओं में जन्म-मरण से बचने के लिए अर्थात् आवागमन से जो उनके मिथ्या विचार

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

ور نیاید باورت دروصف فرقان مجید   حسن آں شاہد بپرس از شاہدان یاخود نگر

यदि तुझे क़ुर्आन करीम की विशेषताओं पर विश्वास नहीं है तो उस प्रियतम की सुन्दरता देखने वालों से मालूम कर या स्वयं पड़ताल कर। (अनुवादक)

وانکہ اونامد پئے تحقیق ودرکیں مبتلاست   آدمی ہرگز نباشد ہست او بدتر زِ خر

परन्तु जो व्यक्ति जांच-पड़ताल हेतु नहीं आया और शत्रुता में अग्रसर है वह कदापि इन्सान नहीं अपितु गधे से भी निकृष्ट है। *

قُلْ اِنَّ ہُدَی اللّٰہِ ہُوَالْہُدٰی وَاِنَّ مَعِیْ رَبِّیْ سَیَہْدِیْنِ- رَبِّ اغْفِرْوَارْحَمْ مِّنَ
السَّمَآءِ- رَبِّ اِنِّیْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ- اِیْلِیْ اِیْلِیْ لِمَا سَبَقْتَنِیْ اِیلِی آوْس

कह हिदायत (मार्ग-दर्शन) वही है जो ख़ुदा की हिदायत है, मेरे साथ मेरा रब्ब है, शीघ्र ही वह मेरा मार्ग खोल देगा। हे मेरे ख़ुदा! आकाश से दया और क्षमा कर, मैं पराजित हूं, मेरी ओर से मुक़ाबला कर, हे मेरे ख़ुदा, हे मेरे ख़ुदा! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया। इस इल्हाम का अन्तिम वाक्य अर्थात् 'ईली आउस' इल्हाम की तीव्रता के कारण संदिग्ध रहा और न इसके कुछ अर्थ स्पष्ट हुए सही बात अल्लाह ही अधिक जानता है।

Ⓟ514 Ⓟاے خالق ارض وسما بر من در رحمت کشا   دانی تو آں دردِ مرا کز دیگراں پنہاں کنم

हे धरती और आकाश के स्रष्टा! मुझ पर दया-द्वार खोल तू मेरी उस पीड़ा को जानता है जिसे मैं दूसरों से छुपाता हूं।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

उनके हृदयों को इस्लाम की ओर फेरा वह यही बात थी जो उन्होंने आंहज़रत के मात्र अनपढ़ और पूर्ण रूप से ख़ुदा की ओर समर्थित पाया तथा क़ुर्आन करीम को मानव

शेष हाशिया नं. (11)

में उचित और ठीक है भिन्न-भिन्न प्रकार के श्लोक पढ़ा करते हैं परन्तु परमेश्वर से सद्मार्ग की याचना नहीं करते। इसके अतिरिक्त अल्लाह
Ⓟ451 तआला ने तो यहां बहुवचन का शब्द वर्णन Ⓟकरके इस बात की ओर संकेत किया है कि कोई व्यक्ति मार्ग-दर्शन की याचना करने और ख़ुदा का इनाम

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

از بس لطیفی دلبرا در ہر رگ و تارم درا   تا چوں بخود یابم ترا دل خوشتر از بستاں کنم

हे प्रियतम! तू नितान्त सूक्ष्म है तू मेरे रोम-रोम में समा जा ताकि जब तुझे अपने अन्दर पाऊं तो अपना हृदय चमन से अधिक अच्छा करूं।*

در سرکشی اے پاک خو جاں بر کنم در ہجر تو   زانساں ہمی گریم کزو یک عالمے گریاں کنم

और हे शुभ गुण सम्पन्न यदि तू इन्कार करे तो तेरे वियोग में प्राण दे दूंगा और इतना रुदन करूंगा कि एक संसार को रुला दूंगा।*

خواہی بقہرم کن جدا خواہی بلطفم رو نما   خواہی بکش یا کن رہا کے ترک آں داماں کنم

चाहे तू मुझे नाराज़ होकर पृथक कर दे चाहे कृपा करके अपना चेहरा दिखा दे, चाहे मार या छोड़, मैं तेरे दामन को नहीं छोड़ सकता।*

ये समस्त संकेत स्थानों से सम्बद्ध और विशेष्य हैं, यहां जिनकी व्याख्या आवश्यक नहीं। يَا عَبْدَ الْقَادِرِ اِنِّیْ مَعَکَ اَسْمَعُ وَاَرٰی غَرَسْتُ لَکَ بِیَدِیْ رَحْمَتِیْ وَقُدْرَتِیْ وَنَجَّیْنَاکَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاکَ فُتُوْنًا - لَیَاْتِیَنَّکُمْ مِّنِّیْ هُدًی - اَلَا اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغَالِبُوْنَ - وَمَاکَانَ اللّٰهُ لِیُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِیْهِمْ وَمَاکَانَ اللّٰهُ لِیُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ یَسْتَغْفِرُوْنَ
हे अब्दुल क़ादिर! मैं तेरे साथ हूं, सुनता हूं और देखता हूं, तेरे लिए मैंने दया और क़ुदरत को अपने हाथ से लगाया और तुझे शोक और चिन्ता से मुक्त किया, और तुझे निष्कपट किया ओर तुम्हें मेरी और से सहायता पहुंचेगी। ख़बरदार हो दल ख़ुदा का ही विजयी होता है तथा ख़ुदा ऐसा नहीं कि उन्हें

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

शक्तियों से श्रेष्ठतम देखा और इस आख़िरी नबी के आगमन हेतु पूर्वकालीन किताबों में स्वयं शुभ संदेश पढ़ते थे। अतः ख़ुदा ने उनके सीनों को ईमान लाने के लिए खोल

शेष हाशिया नं. 11

पाने से वर्जित नहीं है, परन्तु आर्य समाज के नियमानुसार मार्ग-दर्शन की याचना करना पापी के लिए अवैध है तथा ख़ुदा उसे अवश्य दण्ड देगा और उसके लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन) पाना अथवा न पाना समान है। ब्रह्म समाज वालों की दुआओं पर कुछ ऐसी ®आस्था ही नहीं। वे हर समय®452

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

यातना पहुंचाए जब तक तू उनके मध्य है या जब वे क्षमा-याचना करें। اَنَا بُدُّکَ اللاّزم اَنَا مُحْیِیکَ نَفَخْتُ فِیْکَ مِنْ لَّدُنِّیْ رُوحَ الصِّدْقِ وَاَلْقَیْتُ عَلَیْکَ مُحَبَّۃً مِّنِّی وَلِتُصْنَعَ عَلٰی عَیْنِی کَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْأَہٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰی عَلٰی سُوْقِہٖ मैं तेरा अनिवार्य उपचार हूं, मैं तेरा जीवित करने वाला हूं, मैंने तुझ में सत्य की रूह फूंकी है और अपनी ओर से तुझ में प्रेम डाल दिया है ताकि मेरे समक्ष तुझ से नेकी की जाए, तू उस बीज की तरह है जिसने अपनी हरियाली निकाली फिर मोटा होता गया यहां तक कि अपने तनों पर खड़ा हो गया। इन आयतों में ख़ुदा तआला के उन समर्थनों और उपकारों की ओर संकेत है तथा उस उत्थान, प्रताप, सम्मान और श्रेष्ठता की सूचना दी गई है कि जो धीरे-धीरे अपने कमाल को पहुंचेगी اِنَّا فَتَحْنَا لَکَ فَتْحًا مُّبِیْنًا لِّیَغْفِرَ لَکَ اللّٰہُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِکَ وَمَا تَأَخَّرَ हमने तुझे खुली, खुली विजय प्रदान की है अर्थात् प्रदान करेंगे और मध्य में कुछ घृणित बातें और कठिनाइयां हैं वे इसलिए हैं ताकि ख़ुदा तआला तेरे पहले और पिछले गुनाह क्षमा करे अर्थात् यदि ख़ुदा तआला चाहता तो सामर्थ्यवान था कि जो कार्य दृष्टिगत है वह किसी प्रकार के कष्ट आने के बिना अपने परिणाम (अन्त) को पहुंच जाता और सरलतापूर्वक महान विजय प्राप्त हो जाती, परन्तु कष्ट इस दृष्टि से हैं ताकि वे कष्ट पदों की उन्नति और दोषों से क्षमा का कारण हों। आज इस अवसर के मध्य जबकि यह ख़ाकसार कापी को गलतियों के सुधार हेतु देख रहा था कश्फ़ की अवस्था में कुछ कागज़ हाथ में दिए गए और उन पर लिखा हुआ था कि विजय का

दिया। वे ऐसे ईमानदार निकले कि ख़ुदा के मार्ग में अपने रक्त बहाए और जो लोग ईसाइयों, यहूदियों और अरबों में से नितान्त मूर्ख और उपद्रवी और द्वेष रखने वाले

शेष हाशिया नं. (11)

अपनी बुद्धि के घमण्ड में रहते हैं एवं उनका यह भी कथन है कि किसी विशेष दुआ को बन्दगी और उपासना के लिए विशेष करना आवश्यक नहीं। मनुष्य को अधिकार है जो चाहे दुआ मांगे परन्तु उनकी यह सरासर मूर्खता है तथा स्पष्ट है कि यद्यपि मनुष्य को सैकड़ों आंशिक आवश्यकताएं लगी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

डंका बजे, फिर एक ने मुस्कराकर उन कागज़ों की दूसरी ओर एक तस्वीर दिखाई और कहा कि देखो क्या कहती है तस्वीर तुम्हारी। जब इस ख़ाकसार ने देखा तो वह इसी ख़ाकसार की तस्वीर थी और हरे रंग का लिबास था परन्तु अत्यन्त तेजस्वी, जैसे हथियारबन्द सेनापति विजयी होते हैं और तस्वीर के
℗516 दाएं और बाएं ℗'हुज्जतुल्लाहुल क़ादिर व सुल्तान अहमद मुख़्तार' लिखा था। यह सोमवार का दिन उन्नीसवीं ज़ुलहज्ज 1300 हिज्री, अनुसार 22 अक्टूबर सन 1883 ई. और कार्तिक की तिथि 6, 1940 विक्रमी है।

اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبْدَہٗ فَبَرَّأَہُ اللّٰہُ مِمَّا قَالُوْا وَکَانَ عِنْدَ اللّٰہِ وَجِیْھًا ۔ اَلَیْسَ اللّٰہُ
بِکَافٍ عَبْدَہٗ فَلَمَّا تَجَلّٰی رَبُّہٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَہٗ دَکًّا ۔ وَاللّٰہُ مُوْھِنُ کَیْدِ الْکَافِرِیْنَ بَعْدَ
الْعُسْرِ یُسْرٌ وَلِلّٰہِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ ۔ اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبْدَہٗ ۔ وَلِنَجْعَلَہٗ اٰیَۃً
لِّلنَّاسِ وَرَحْمَۃً مِّنَّا وَکَانَ اَمْرًا مَّقْضِیًّا قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِیْ فِیْہِ تَمْتَرُوْنَ

क्या ख़ुदा अपने बन्दे को पर्याप्त नहीं। अत: ख़ुदा ने उसे उन आरोपों से मुक्त किया जो उस पर लगाए गए थे तथा ख़ुदा के निकट वह प्रतापवान है, क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं। अत: जबकि ख़ुदा ने पर्वत पर अपनी झलक प्रकट की तो उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया अर्थात् कठिनाइयों के पर्वत आसान हुए और ख़ुदा तआला काफ़िरों के कपट को कम कर देगा और उन्हें पराजित और अपमानित करके दिखाएगा, दरिद्रता के पश्चात् समृद्धि है, पहले भी ख़ुदा का आदेश है और पीछे (बाद को) भी ख़ुदा का

थे उनकी परिस्थितियों पर भी दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि वे भी पूर्ण विश्वास के साथ आंहज़रत (स.अ.व.) को अनपढ़ समझते थे और इसीलिए जब वे बाइबल

शेष हाशिया नं. (11)

हुई हैं परन्तु मुख्य आवश्यकता जिसकी ⓟदिन-रात, प्रति पल चिन्ता करना ⓟ453
चाहिए केवल एक ही है अर्थात् यह कि मनुष्य इन भिन्न-भिन्न प्रकार के अंधकारमय आवरणों से मुक्त होकर पूर्ण मारिफ़त की श्रेणी तक पहुंच जाए तथा किसी प्रकार की नेत्रहीनता, आन्तरिक द्वेष, निर्दयता और कृतघ्नता शेष

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

आदेश है, क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं और हम उसे लोगों के लिए दया का प्रतीक बनाएंगे और यह आदेश पहले ही से निश्चित हो चुका था, यह वह सच्ची बात है जिसमें तुम सन्देह करते हो।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ- رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ- مَتَّعَ اللّٰهُ الْمُسْلِمِيْنَ بِبَرَكَاتِهِمْ- فَانْظُرُوْا اِلٰۤى اٰثَارِ رَحْمَةِ اللّٰهِ- وَاَنْبِئُوْنِيْ مِنْ مِّثْلِ هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صَادِقِيْنَ- وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِيْنَ

ⓟमुहम्मद स.अ.व. ख़ुदा का रसूल है और जो लोग उसके साथ हैं वे काफ़िरों पर ⓟ517
कठोर हैं अर्थात काफ़िर उन के सामने निरुत्तर और असमर्थ हैं तथा उनकी सच्चाई की धाक काफ़िरों के हृदयों पर व्याप्त है और वे लोग परस्पर दया करते हैं और ऐसे लोग हैं कि उन्हें ख़ुदा के स्मरण से न व्यापार रोक सकता है, न विक्रय बाधक होता है अर्थात् ख़ुदाई प्रेम में ऐसी पूर्ण विशेषता रखते हैं कि सांसारिक व्यस्तताएं यद्यपि अधिक क्यों न हों उन की स्थिति में विघ्न नहीं डाल सकतीं। ख़ुदा तआला उन की बरकतों से मुसलमानों को लाभान्वित करेगा अत: उनका प्रकटन ख़ुदा की दया के लक्षण हैं। अत: उन लक्षणों और निशानियों को देखो। यदि उन लोगों का कोई उदाहरण तुम्हारे पास है अर्थात् यदि तुम्हारे सहपंथी और सहधर्मियों में से ऐसे लोग पाए जाते हैं कि जो इसी प्रकार ख़ुदाई समर्थनों से समर्थित हों। अतएव यदि तुम सच्चे हो तो ऐसे लोगों

की कुछ कहानियां आंहज़रत (स.अ.व.) से नुबुव्वत की परीक्षा की दृष्टि से पूछ कर उनका उचित प्रकार से उत्तर पाते थे तो उन्हें मुख पर यह बात लाने का साहस

शेष हाशिया नं. (11)

न रहे अपितु ख़ुदा को पूर्ण रूप से पहचान कर उसके शुद्ध प्रेम से प्रेमासक्त
℗454 हो कर ख़ुदा से मिलन की श्रेणी ℗जिसमें उसका पूर्ण सौभाग्य है प्राप्त कर ले। यही एक दुआ है मनुष्य को जिसकी नितान्त आवश्यकता है जिस पर उसका समस्त सौभाग्य निर्भर है। अत: उसे प्राप्त करने का सदमार्ग यही है

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

को प्रस्तुत करो। जो व्यक्ति इस्लाम धर्म के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म का इच्छुक और जिज्ञासु होगा वह धर्म उससे कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और आख़िरत (परलोक) में वह हानि उठाने वालों में होगा।

يَا اَحْمَدُ فَاضَتِ الرَّحْمَةُ عَلٰى شَفَتَيْكَ اِنَّا اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ - وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ - اَنْتَ مَعِيْ وَاَنَا مَعَكَ - سِرُّكَ سِرِّيْ - وَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ الَّذِيْ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ - اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ - وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ

हे अहमद! तेरे होठों पर दया जारी हुई है, हमने तुझे आध्यात्म ज्ञान बड़ी बुहतात के साथ प्रदान किए हैं। अत: उसके धन्यवाद स्वरूप नमाज़ पढ़ और क़ुरबानी (बलिदान) दे और मेरे स्मरण हेतु नमाज़ को क़ायम कर। तू मेरे साथ और मैं तेरे साथ हूं। तेरा रहस्य मेरा रहस्य है, हमने तेरा भार जिसने तेरी कमर तोड़ दी, उतार दिया है और तेरी प्रसिद्धि और नाम को ऊंचा कर दिया है, तू सदमार्ग पर है, संसार और आख़िरत में प्रतापवान
℗518 और सानिध्य प्राप्त लोगों में से है। ℗حَمَاكَ اللّٰهُ - نَصَرَكَ اللّٰهُ - رَفَعَ اللّٰهُ حُجَّتَ الْاِسْلَامِ جَمَالٌ - هُوَ الَّذِيْ اَمْشَاكُمْ فِيْ كُلِّ حَالٍ - لَا تُحَاطُ اَسْرَارُ الْاَوْلِيَآءِ - ख़ुदा तेरा समर्थन करेगा, ख़ुदा तुझे सहायता देगा, ख़ुदा इस्लाम की हुज्जत को ऊंचा करेगा, ख़ुदा का सौन्दर्य है जिसने प्रत्येक स्थिति में तुम्हारा शुद्धिकरण किया है, ख़ुदा तआला के अपने वलियों (ऋषियों) में जो रहस्य हैं, वे

* लिपिक की भूल मालूम होती है, कदाचित शब्द 'यूसुफ़' है واللہ اعلم بالصواب

न था कि आंहज़रत (स.अ.व.) कुछ पढ़े-लिखे हैं, स्वयं ही किताबों को देखकर उत्तर बता देते हैं अपितु जैसे कोई निरुत्तर रह कर तथा लज्जित हो कर कच्चे बहाने

शेष हाशिया नं. 11

कि इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम कहे, क्योंकि मनुष्य के लिए प्रत्येक उद्देश्य को प्राप्त करने का यही एक मार्ग है कि जिन मार्गों पर चलने से वह उद्देश्य प्राप्त होता है उन मार्गों का दृढ़तापूर्वक अनुसरण करे और वही मार्ग धारण करे जो सीधा ®लक्ष्य तक पहुंचता है तथा कुमार्गों को त्याग दे तथा यह बात®455

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

परिधि से बाहर हैं, कोई किसी मार्ग से उसकी ओर खींचा जाता है और कोई किसी मार्ग से, याक़ूब* ने यह पद दो बार गिरफ़्तार होकर प्राप्त किया जो अन्य ख़ुदा के अतिरिक्त का परित्याग करके प्राप्त करते हैं। यह इस बात की ओर संकेत है कि ख़ुदा तआला में दो विशेषताएं हैं जो बन्दों के प्रशिक्षण में कार्यरत हैं। एक विशेषता, नम्रता, कृपा और उपकार है। इसका नाम जमाल है और दूसरी विशेषता प्रकोप और कठोरता है इसका नाम जलाल है। अत: ख़ुदा की आदत इसी तौर पर जारी है कि जो लोग उस के उच्च दरबार में बुलाए जाते हैं उनका प्रशिक्षण कभी जमाली विशेषता से और कभी जलाली विशेषता से होता है और जहां ख़ुदा तआला की महा अनुकम्पाएं आकर्षित होती हैं वहां सदैव जमाली विशेषता की झलकियों का प्रभुत्व रहता है, परन्तु कभी-कभी ख़ुदा के विशेष बन्दों की शिक्षा-दीक्षा जलाली विशेषता द्वारा भी अभीष्ट होती है जैसे नबियों के साथ भी ख़ुदा तआला का यही व्यवहार रहा है कि उनके प्रशिक्षण में ख़ुदा तआला की जमाली विशेषताएं सदैव व्यस्त रही हैं, परन्तु कभी-कभी उनकी दृढ़ता और उत्तम शिष्टाचार प्रकट करने के लिए जलाली विशेषताएं भी प्रकट होती रही हैं तथा उन्हें उपद्रवी लोगों द्वारा नाना प्रकार के कष्ट मिलते रहे हैं ताकि उनके वे उत्तम शिष्टाचार जो नितान्त कष्टों के आए बिना प्रकट नहीं हो सकते वे समस्त प्रकट हो जाएं तथा संसार के लोगों को ज्ञात हो जाए कि वे कच्चे नहीं हैं अपितु सच्चे वफ़ादार हैं وَقَالُوْٓا اَنّٰی لَکَ هٰذَا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ یُّؤْثَرُ - لَنْ نُّؤْمِنَ لَکَ

प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार लज्जा से यह कहते थे कि शायद परिप्रेक्ष्य में किसी ईसाई या बाइबल के यहूदी विद्वान ने ये कहानियां बता दी होंगी। अत: स्पष्ट है यदि

शेष हाशिया नं. (11)

नितान्त स्पष्ट है कि प्रत्येक वस्तु को प्राप्त करने के लिए ख़ुदा ने अपने प्रकृति के नियम में केवल एक ही मार्ग ऐसा रखा है जिसे सीधा कहना चाहिए और जब तक उचित तौर पर वही मार्ग न अपनाया जाए संभव नहीं
℗456 कि वह वस्तु प्राप्त हो सके। जिस प्रकार ℗ख़ुदा के समस्त नियम अनादि

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

℗519 حَتّٰی نَرَی اللّٰہَ جَھْرَۃً- لَا یُصَدِّقُ السَّفِیْہُ اِلَّا سَیْفَۃَ ℗ الْھَلَاکِ- عَدُوٌّ لِّیْ وَعَدُوٌّ
لَّکَ قُلْ اَتٰی اَمْرُ اللّٰہِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْہُ- اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰہِ اَلَسْتُ بِرَبِّکُمْ قَالُوْا بَلٰی और
कहेंगे यह तुझे कहां से प्राप्त हुआ। यह तो एक जादू है जो धारण किया जाता है। हम कदापि स्वीकार नहीं करेंगे जब तक ख़ुदा को चश्मदीद तौर पर देख न लें। मूर्ख विनाश के प्रहार के अतिरिक्त किसी बात को स्वीकार नहीं करता, मेरा और तेरा शत्रु है। वह ख़ुदा का अम्र (आदेश) आया है अत: तुम जल्दी मत करो, जब ख़ुदा की सहायता आएगी तो कहा जाएगा कि क्या मैं तुम्हारा ख़ुदा नहीं, कहेंगे कि क्यों नहीं।

اِنِّیْ مُتَوَفِّیْکَ وَرَافِعُکَ اِلَیَّ وَجَاعِلُ الَّذِیْنَ اتَّبَعُوْکَ فَوْقَ الَّذِیْنَ کَفَرُوْٓا اِلٰی یَوْمِ
الْقِیَامَۃِ وَلَا تَھِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَکَانَ اللّٰہُ بِکُمْ رَءُوْفًا رَّحِیْمًا- اَلَا اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰہِ لَا خَوْفٌ
عَلَیْھِمْ وَلَا ھُمْ یَحْزَنُوْنَ- تَمُوْتُ وَاَنَا رَاضٍ مِّنْکَ فَادْخُلُوا الْجَنَّۃَ اِنْ شَآءَ اللّٰہُ
اٰمِنِیْنَ- سَلَامٌ عَلَیْکُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْھَا اٰمِنِیْنَ- سَلَامٌ عَلَیْکَ جُعِلْتَ مُبَارَکًا-
سَمِعَ اللّٰہُ اِنَّہٗ سَمِیْعُ الدُّعَآءِ اَنْتَ مُبَارَکٌ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ- اَمْرَاضُ النَّاسِ
وَبَرَکَاتُہٗ اِنَّ رَبَّکَ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ- اُذْکُرْ نِعْمَتِیَ الَّتِیْٓ اَنْعَمْتُ عَلَیْکَ وَاِنِّیْ فَضَّلْتُکَ
عَلَی الْعٰلَمِیْنَ- یٰٓاَیَّتُھَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّۃُ ارْجِعِیْٓ اِلٰی رَبِّکِ رَاضِیَۃً مَّرْضِیَّۃً فَادْخُلِیْ
فِیْ عِبَادِیْ وَادْخُلِیْ جَنَّتِیْ- مَنَّ رَبُّکُمْ عَلَیْکُمْ وَاَحْسَنَ اِلٰٓی اَحْبَابِکُمْ وَعَلَّمَکُمْ مَا لَمْ

आंहज़रत (स.अ.व.) का अनपढ़ होना उनके हृदयों में पूर्ण-विश्वास के साथ न बैठा होता तो इसी बात को सिद्ध करने के लिए भरसक प्रयत्न करते कि आंहज़रत

शेष हाशिया नं. (11)

काल से नियुक्त और सुनियोजित हैं इसी प्रकार मुक्ति और आख़िरत के सौभाग्य की प्राप्ति के लिए एक विशेष ढंग निर्धारित है जो बिल्कुल सीधा है। अतः दुआ में स्थायित्व की प्रकृति यही है कि उसी सदमार्ग को ख़ुदा से मांगा जाए। **आठवीं, नौवीं और दसवीं** सच्चाई जिसका सूरह फ़ातिहा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ - وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا -

मैं तुझे पूर्ण ने'मत दूंगा और अपनी ओर उठाऊंगा और जो लोग तेरा अनुसरण करेंगे अर्थात् वास्तविक तौर पर अल्लाह और रसूल के अनुयायियों में सम्मिलित हों जाएं उन्हें उनके विरोधियों पर कि जो इन्कारी हैं प्रलय तक प्रभुत्व प्रदान करूंगा अर्थात् वे लोग सबूत और तर्क की दृष्टि से अपने विरोधियों पर विजयी रहेंगे तथा सत्य और ईमानदारी के आभामय प्रकाश उन के साथ रहेंगे, सुस्त न हो और चिन्ता न करो, ख़ुदा तुम पर नितान्त दयावान है। सतर्क हो निश्चय ही जो लोग ख़ुदा के सानिध्य प्राप्त Ⓟहोते हैं Ⓟ520 उन पर न कुछ भय है और न वे कुछ चिन्ता करते हैं। तू इस अवस्था में मृत्यु पाएगा कि जब ख़ुदा तुझ पर प्रसन्न होगा। अतः स्वर्ग में प्रवेश कर इन्शाअल्लाह शान्ति के साथ सलाम, तुम द्वैतवाद से पवित्र हो गए इसलिए तुम शान्ति के साथ स्वर्ग में प्रवेश करो, तुझ पर सलाम, तू मुबारक किया गया, ख़ुदा ने दुआ सुन ली, वह दुआओं को सुनता है, तू संसार और आख़िरत में मुबारक है। यह इस ओर संकेत किया कि इससे पूर्व कुछ बार इल्हामी तौर पर ख़ुदा तआला ने इस ख़ाकसार की जीभ पर यह दुआ जारी की थी - رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُبَارَكًا حَيْثُ مَا كُنْتُ अर्थात हे मेरे रब्ब! मुझे ऐसा मुबारक कर कि मैं सर्वथा निवास करूं, बरकत मेरे साथ रहे। फिर ख़ुदा ने अपनी कृपा और उपकार से वही दुआ कि जो स्वयं ही की थी स्वीकार

(स.अ.व.) अनपढ़ नहीं हैं। उन्होंने अमुक पाठशाला या विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की है। व्यर्थ बातें करना, जिनसे उनकी मूर्खता सिद्ध होती थी क्या आवश्यकता थी,

शेष हाशिया नं. (11)

में उल्लेख है

Ⓟ457 صِرَاطَ الَّذِيْنَ Ⓟاَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जिसके अर्थ ये हैं कि हमें उन साधकों का मार्ग बता जिन्होंने ऐसे मार्ग

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

की। यह अपने सेवकों पर अदभुत कृपा-दृष्टि है कि प्रथम स्वयं ही इल्हाम स्वरूप जीभ पर प्रश्न जारी करना और फिर यह कहना कि यह तेरा प्रश्न स्वीकार किया गया है और इस बरकत के संबंध में 1868 या 1869 ई. में भी एक विचित्र इल्हाम उर्दू में हुआ था जिसे इसी स्थान पर लिखना उचित है तथा इस इल्हाम का कारण यह बना था कि मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी कि जो किसी समय इस ख़ाकसार के सहपाठी भी थे। जब नए-नए मौलवी होकर बटाला में आए तथा बटालवियों को उनके विचार बुरे लगे तब एक व्यक्ति ने आदरणीय मौलवी साहिब से किसी विवादित समस्या में बहस करने के लिए इस ख़ाकसार को बहुत विवश किया। अत: उसके अत्यधिक कहने के कारण यह ख़ाकसार शाम के समय उस व्यक्ति के साथ आदरणीय मौलवी साहिब के मकान पर गया और मौलवी साहिब को उनके पिता समेत मस्जिद में पाया। फिर सारांश यह कि इस ख़ाकसार ने जनाब मौलवी साहिब के भाषण को सुनकर मालूम कर लिया कि उनके भाषण में कोई ऐसी अति नहीं जो आपत्तिजनक हो, इसलिए विशेषकर अल्लाह तआला के लिए बहस को छोड़ दिया गया। रात को ख़ुदा तआला ने अपने इल्हाम ओर वार्तालाप में इसी बहस के परित्याग की ओर संकेत करके फ़रमाया कि तेरा ख़ुदा तेरे
Ⓟ521 इस Ⓟकृत्य से प्रसन्न हुआ और वह तुझे बहुत बरकत देगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे। तत्पश्चात कश्फ़ की अवस्था में वे

क्योंकि यह आरोप लगाना कि कुछ यहूदी विद्वान और ईसाई परिप्रेक्ष्य में आंहज़रत (स.अ.व.) के मित्र और सहायक हैं व्यापक तौर पर असत्य था। इस कारण से कि

शेष हाशिया नं. (11)

का अनुसरण किया कि जिससे उन पर तेरा इनाम हुआ तथा उन लोगों के मार्गों से सुरक्षित रख जिन्होंने लापरवाही से सदमार्ग का अनुसरण करने का प्रयास न किया तथा इस कारण तेरे सहयोग ⓟसे वंचित रहकर पथ-भ्रष्ट रहे।ⓟ458 ये तीन सच्चाइयां हैं जिनका विवरण यह है कि लोग अपने कथनों, कर्मों,

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

बादशाह दिखाए गए जो घोड़ों पर सवार थे। अतः शुद्ध रूप से ख़ुदा और उसके रसूल के लिए विनय और ख़ाकसारी धारण की गई। इसलिए उस स्वच्छंद उपकार करने वाले ने न चाहा कि उसे बिना प्रतिफल के छोड़े। अतः चिन्तन-मनन करो।

तत्पश्चात् फ़रमाया कि लोगों की बीमारियां और ख़ुदा की बरकतें अर्थात् मुबारक करने का लाभ यह है कि इस से लोगों की अध्यात्मिक बीमारियां दूर होंगी तथा जिनकी आत्माएं भाग्यशाली हैं वे तेरी बातों के द्वारा हिदायत और मार्गदर्शन पा जाएंगे और इसी प्रकार शारीरिक बीमारियाँ और कष्ट जिनमें अटल प्रारब्ध नहीं। फिर फ़रमाया कि तेरा प्रतिपालक बड़ा ही शक्तिमान है, वह जो चाहता है करता है। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा की नै'मत को स्मरण रख और मैंने तुझे तेरे समय के समस्त विद्वानों पर श्रेष्ठता प्रदान की है। यहां विदित होना चाहिए कि यह श्रेष्ठता आश्रित तथा आंशिक है अर्थात् जो व्यक्ति हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पूर्ण रूप से अनुसरण करता है उसका पद ख़ुदा के निकट उसके समस्त समकालीनों से श्रेष्ठतर और उच्चतम है। अतः वास्तविक और पूर्ण तौर पर समस्त श्रेष्ठताएं हज़रत ख़ातमुल अंबिया को ख़ुदा की ओर से सिद्ध हैं और दूसरे समस्त लोग उस के अनुसरण और उसके प्रेम के माध्यम से अपने अनुसरण और प्रेम के अनुसार पद पाते हैं فما اعظم شانك اللّٰهم صل عليه وآله तत्पश्चात् इल्हाम का शेष अनुवाद यह है। हे सात्विक वृत्ति

क़ुर्आन करीम तो अनेकों स्थान पर अहले किताब (यहूदी और ईसाई) की वह्यी को अपूर्ण और उनकी किताबों को अक्षरांतरित और परिवर्तित तथा उनकी आस्थाओं को

शेष हाशिया नं. (11)

कार्यों तथा नीयतों के अनुसार तीन प्रकार के होते हैं। कुछ सच्चे हृदय से ख़ुदा के अभिलाषी होते हैं तथा निष्ठा और विनय से ख़ुदा की ओर झुकते हैं। अत: ख़ुदा भी उन का अभिलाषी हो जाता है तथा कृपा और इनाम के साथ उन की ओर ध्यान देता है। इस अवस्था का नाम ख़ुदा का इनाम है।

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

अपने प्रतिपालक की ओर वापस चली आ। वह तुझ पर प्रसन्न और तू उस पर प्रसन्न। फिर मेरे बन्दों में शामिल हो और मेरे स्वर्ग के अन्दर आ जा, ख़ुदा ने तुझ पर उपकार किया और तेरे मित्रों से नेकी की और तुझे वह ज्ञान प्रदान किया जिसे तू स्वयं नहीं जान सकती थी और यदि तू ख़ुदा की ने'मतों की गणना करना चाहे तो यह तेरे लिए असंभव है, फिर इन इल्हामों के पश्चात् कुछ इल्हाम फ़ारसी और उर्दू में और एक अंग्रेज़ी में हुआ। वे
Ⓟ522 भी अभिलाषियों के हितार्थ लिखे जाते हैं और Ⓟवह ये हैं :-

بخرام کہ وقت تو نزدیک رسید و پائے محمدیاں برمنار بلند تر محکم افتاد

अनुवाद :- गर्व से चल क्योंकि तेरा समय निकट आ चुका है तथा मुहम्मद स.अ.व. की उम्मत के पैर ऊंचे मीनार पर दृढ़तापूर्वक स्थापित हो चुके हैं। (अनुवादक)

पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा नबियों का सरदार, ख़ुदा तेरे समस्त कार्य ठीक कर देगा और तेरी सारी मनोकामनाएं तुझे देगा। सेनाओं का स्वामी इस ओर ध्यान देगा। इस निशान का उद्देश्य यह है कि क़ुर्आन करीम ख़ुदा की किताब और मेरे मुख की बातें हैं, ख़ुदा तआला के उपकारों का द्वार खुला है और उसकी पवित्र कृपाएं इस ओर ध्यान दे रही हैं। दी ड़ेज़ शैल कम ह्वैन गौड शैल हैल्प यू ग्लोरी बी टू दिस लार्ड गौड मेकर आफ़ अर्थ एण्ड हैविन।* वे दिन आते हैं कि ख़ुदा तुम्हारी सहायता करेगा। प्रतापवान ख़ुदा जो पृथ्वी और आकाश का स्रष्टा

* The days shall come when God shall help you glory be to this Lord God maker of earth and heaven. (अनुवादक)

दूषित और मिथ्या और स्वयं उन्हें बशर्ते कि बेईमान मरें, फटकारे हुए और नारकी बताता है ®तथा उनके बनाए हुए नियमों का ठोस तर्कों द्वारा खण्डन करता है तो®490

शेष हाशिया नं. 11

प्रशंसित आयत में इसी की ओर संकेत किया और कहा صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ अर्थात वे लोग ऐसा स्वच्छ और सीधा मार्ग धारण करते हैं जिस से ख़ुदा की कृपा के वरदान के पात्र बन जाते हैं और इस कारण कि उनमें और ख़ुदा में कोई पर्दा शेष ®नहीं रहता तथा ख़ुदा की कृपा के बिल्कुल सामने®460

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

है इन इल्हामों के पश्चात् एक ऐसी भविष्यवाणी कुछ आर्यों के समक्ष जो पंडित दयानन्द के अनुयायी हैं पूरी हुई कि जिस के विवरण से परिचित होना दर्शकों के लिए लाभ से ख़ाली नहीं। अत: यद्यपि उसके लिखने से कुछ विस्तार ही हो परन्तु सहानुभूति की दृष्टि से उन लोगों के लिए जो इस्लाम की महानता से अपरिचित हैं लिखी जाती है और इस भविष्यवाणी के पूर्ण होने से पूर्व एक अदभुत प्रकार की कठिनाइयाँ और घृणित बातें सामने आईं अन्तत: ख़ुदा तआला ने इन समस्त कठिनाइयों का निवारण करके दिनांक 10 दिसम्बर 1883 ई. दिन सोमवार इस भविष्यवाणी को पूर्ण किया। विवरण इस का यह है कि दिनांक 6 सितम्बर 1883 ई. दिन वीरवार ख़ुदा तआला ने बिल्कुल आवश्यकतानुसार इस ख़ाकसार की सन्तुष्टि के ®लिए अपने शुभ कलाम के माध्यम से यह शुभ-सन्देश दिया कि इक्कीस®523 रुपए आने वाले हैं। अत: इस शुभ सन्देश में एक विचित्र बात यह थी कि आने वाले रुपयों की संख्या की सूचना दी गई तथा किसी विशेष संख्या से सूचित करना अन्तर्यामी हस्ती की विशेषता है किसी अन्य का कार्य नहीं है। दूसरी अद्भुत से अदभुत यह बात थी कि यह संख्या वादे के बिना थी क्योंकि किताब के निर्धारित मूल्य से इस संख्या का कोई सम्बन्ध नहीं। अत: इन्हीं अदभुत बातों के कारण यह इल्हाम घटनापूर्व कुछ आर्यों को बताया गया। फिर 10 सितम्बर 1883 ई. को आग्रह के तौर पर तीसरी बार इल्हाम हुआ कि इक्कीस रुपए आए हैं जिस इल्हाम से समझा गया

फिर किस प्रकार संभव था कि वे लोग क़ुर्आन करीम से अपने धर्म की स्वयं ही निन्दा करवाते तथा अपनी किताबों का स्वयं ही खण्डन लिखवाते और अपने धर्म

शेष हाशिया नं. (11)

आ जाते हैं। इस दृष्टि से उन्हें ख़ुदाई वरदान के प्रकाश प्राप्त होते हैं। दूसरा प्रकार - वे लोग हैं जो जान-बूझ कर विरोध का मार्ग अपना लेते हैं, शत्रुओं की भांति ख़ुदा से विमुख हो जाते हैं, ख़ुदा भी उन से विमुख हो जाता है
Ⓟ461 और उन पर Ⓟदया-दृष्टि नहीं करता। इसका कारण यही होता है कि वह

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

कि आज इस भविष्यवाणी का प्रकटन हो जाएगा। अत: अभी इल्हाम पर कदाचित तीन मिनट से कुछ अधिक समय नहीं गुज़रा होगा कि वज़ीर सिंह नाम का एक व्यक्ति बीमारी की स्थिति में आया और उसने आते ही एक रुपया भेंट किया। यद्यपि कि उपचार करना इस ख़ाकसार का व्यवसाय नहीं और यदि संयोग से कोई रोगी आ जाए तो यदि उस की औषधि याद हो तो मात्र पुण्य की नीयत से ख़ुदा के लिए उसी के मार्ग में दी जाती है, परन्तु वह रुपया उस से लिया गया, क्योंकि तुरन्त विचार आया कि यह उस भविष्यवाणी का एक भाग है। तत्पश्चात् डाकख़ाने में अपना एक विश्वासपात्र भेजा गया इस विचार से कि कदाचित दूसरा भाग डाकख़ाने द्वारा पूर्ण हो। डाकख़ाने से डाक मुंशी ने जो एक हिन्दू है उत्तर में यह कहा कि मेरे पास केवल एक मनीआर्डर पांच रुपए का जिसके साथ एक कार्ड भी संलग्न है डेरा ग़ाज़ीख़ान से आया है, परन्तु अभी तक मेरे पास रुपया मौजूद नहीं, जब आएगा तो दूंगा। इस
Ⓟ524 सूचना के सुनने से बहुत आश्चर्य हुआ और वह व्याकुलता Ⓟहुई कि वर्णन नहीं हो सकती। अतएव यह ख़ाकसार इसी असमंजस में सर को घुटनों पर रखे हुए था और इस विचार में था कि पांच और एक मिलकर छ: हुए, अब इक्कीस क्योंकर होंगे। हे मेरे ख़ुदा यह क्या हुआ। मैं इसी में खोया हुआ था कि अचानक यह इल्हाम हुआ कि इक्कीस आए हैं इसमें सन्देह नहीं। इस इल्हाम पर दोपहर नहीं गुज़रा होगा कि उसी दिन एक आर्य जो डाक मुन्शी के पहले बयान की सूचना सुन चुका था डाकख़ाने में गया और उसे डाक मुन्शी ने किसी वृत्तान्त के सन्दर्भ में सूचना दी कि वास्तव में बीस रुपए आए हैं और पहले यों ही मुख से निकल गया था, मैंने पांच रुपए कह दिया। अत: वही

के समूल विनाश के स्वयं ही कारण बन जाते। अत: ये कमज़ोर और अनुचित बातें संसार के उपासकों को मुख से इसलिए निकालना पड़ीं कि उन्हें बुद्धिमत्तापूर्वक

शेष हाशिया नं. (11)

शत्रुता, विमुखता, प्रकोप, आक्रोश और अप्रसन्नता जो ख़ुदा के सन्दर्भ में उनके हृदयों में गुप्त रहती है वही उनमें और ख़ुदा में बाधा हो जाती है। इस अवस्था का नाम ख़ुदा का प्रकोप है। इसी की ओर ख़ुदा तआला ने संकेत करते हुए कहा غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ। **तीसरा प्रकार** – ®वे लोग हैं जो ख़ुदा®462

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

आर्य बीस रुपए एक कार्ड सहित जो मुन्शी इलाही बख़्श साहिब एकाउन्टेण्ट की ओर से था ले आया और ज्ञात हुआ कि वह कार्ड भी मनीआर्डर के कागज़ से संलग्न न था एवं यह भी ज्ञात हुआ कि रुपया आया हुआ था तथा मुन्शी इलाही बख़्श साहिब के पत्र से जो रसीद डाकख़ाने के सुपुर्द की थी यह भी ज्ञात हुआ कि मनी आर्डर 6 सितम्बर 1883 ई. को अर्थात् उसी दिन जब इल्हाम हुआ क़ादियान में पहुंच गया था। अत: डाकमुन्शी का समस्त बयान ग़लत निकला और हज़रते अन्तर्यामी का पूर्ण बयान उचित सिद्ध हुआ। अतएव इस शुभ दिन की याद के लिए एक रुपए की मिठाई लेकर कुछ आर्यों को भी दी गई। فالحمد لله على آلائه ونعمائه ظاهرها و باطنها

اے خدا اے چارۂ آزار ما　　اے علاج گریہ ہائے زار ما

हे परमेश्वर ! हे हमारे कष्टों की दवा! और हे हमारे क्रन्दन के उपचार *

اے تو مرہم بخش جانِ ریش ما　　اے تو دلدارِ دلِ غم کیش ما

तू हमारे घायल प्राण पर मरहम रखने वाला है और तू हमारे
शोकग्रस्त हृदय को ढारस बंधाने वाला है। *

از کرم برداشتی ہر بار ما　　واز تو ہر بار و برِ اشجار ما

तू ने अपनी महरबानी से हमारे सब भार उठा लिए हैं और हमारे
वृक्षों पर मेवा और फल तेरी कृपा से है। *

حافظ و ستاری از جود و کرم　　بیکساں را یاری از لُطفِ اتم

तू ही अपनी सहानुभूति और कृपा से हमारा संरक्षक और दोषों पर पर्दा
डालने वाला है और अत्यधिक महरबानी से असहायों का हमदर्द है। *

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

पग उठाने का किसी भी ओर मार्ग दिखाई नहीं देता था और सत्य के सूर्य के ऐसे तीव्र प्रकाश से जो अपनी किरणें चारों ओर फैला रहा था कि वे इससे चमगादड़ की

शेष हाशिया नं. (11)

से विमुख रहते हैं तथा परिश्रम और प्रयास द्वारा उसकी अभिलाषा नहीं करते, ख़ुदा भी उनके साथ लापरवाही का व्यवहार करता है तथा उन्हें अपना मार्ग नहीं दिखाता क्योंकि वे लोग मार्ग की याचना करने में स्वयं आलस्य से काम लेते हैं और स्वयं को इस लाभ का पात्र नहीं बनाते कि

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

Ⓟ525 Ⓟبندۂ درمانده باشد دل طپاں　　ناگہاں درماں براری ازمیاں

जब बन्दा शोकाकुल और लाचार हो जाता है तो तू ही वहीं से उसका उपचार पैदा कर देता है *

عاجزی را ظلمتے گیرد براہ　　ناگہاں آری برو صد مہر و ماہ

जब किसी असहाय को मार्ग में अंधकार घेर लेता है तो तू सहसा उसके लिए सैकड़ों सूर्य और चन्द्रमा पैदा कर देता है। *

حسن و خلق و دلبری بر تو تمام　　صحبتے بعد از لقائے تو حرام

सुन्दरता, शिष्टाचार और प्रेम तुझ पर समाप्त हैं तुझ से भेंट करने के पश्चात् फिर किसी से संबंध रखना अवैध है। *

آں خرد مندی کہ او دیوانہ ات　　شمع بزم است آنکہ او پروانہ ات

बुद्धिमान है वह जो तेरा दीवाना है तथा वह सभा का दीपक है जो तेरा परवाना है। *

ہر کہ عشقت در دل و جانش فتد　　ناگہاں جانے در ایمانش فتد

प्रत्येक वह व्यक्ति जिसके तन-मन में तेरा प्रेम समा जाए तो उसके ईमान में तुरन्त प्राण पड़ जाते हैं। *

عشق تو گردد عیاں بر روئے او　　بوئے تو آید زبام و کوئے او

तेरा प्रेम उसके चेहरे पर प्रकट हो जाता है और द्वार और दीवार से तेरी सुगन्ध आती है। *

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

भांति छुपते फिरते थे तथा उन्हें किसी एक बात पर कदापि स्थायित्व और दृढ़ता न थी अपितु द्वेष और शत्रुता की अधिकता ने उन्हें दीवानों और पागलों की भांति

शेष हाशिया नं. (11)

जो ख़ुदा के अनादि नियम ®में परिश्रम और प्रयास करने वालों के लिए®463 नियुक्त है। इस अवस्था का नाम اضلال الٰہی **(इज़्लाले इलाही)** है जिसके ये अर्थ हैं कि ख़ुदा ने उन्हें पथभ्रष्ट किया अर्थात् जबकि उन्होंने हिदायत पाने के मार्गों को अपने परिश्रमों और प्रयासों द्वारा न मांगा तो ख़ुदा ने अनादि

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

صد ہزاراں نعمتش بخشی ز جود   مہر ومہ را پیشش آری در سجود

तू अपनी कृपा से उसे लाखों नेमतें प्रदान करता है, सूर्य और चन्द्रमा को उसके सामने सज्दह कराता है। *

خود نشینی از پئے تائید او   روئے تُو یاد اوفتد از دید او

तू उसकी सहायता हेतु स्वयं तत्पर हो जाता है और उसके दर्शन से तेरा चेहरा याद आता है। *

بس نمایاں کارہا کاندر جہاں   می نمائی بہر اکرامش عیاں

इस संसार में बहुत से विशेष कार्य तू उसके सम्मान हेतु प्रकट करता है। *

خود کنی و خود کنانی کار را   خود دہی رونق تو آں بازار را

तू स्वयं ही कार्य करता है और स्वयं ही करवाता है और स्वयं ही उस बाज़ार को शोभा प्रदान करता है। *

خاک را در یکدمے چیزے کنی   کز ظہورش خلق گیرد روشنی

मिट्टी को तू सहसा एक (मूल्यवान) वस्तु बना देता है ताकि उसके प्रकटन से सृष्टि प्रकाश प्राप्त करे। *

بر کسی چوں مہربانی میکنی   از زمینی آسمانی میکنی

जब तू किसी पर महरबानी करता है तो उसे पार्थिव से आकाशीय बना देता है। *

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

बना रखा था। पहले तो क़ुर्आन के क़िस्सों को सुनकर जिनमें बनी इस्राईल के पैग़म्बरों की चर्चा थी इस भ्रम में पड़े कि कदाचित 'अहले किताब' में से एक

शेष हाशिया नं. 11

नियम के अनुसार उन्हें हिदायत भी न दी तथा अपने समर्थन से वंचित रखा। इसी की ओर संकेत करते हुए फ़रमाया - وَلَا الضَّآلِّیْنَ अत: इन तीनों सच्चाइयों का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार ख़ुदा भी प्रत्येक अवस्था के
Ⓟ464 अनुसार उनके साथ भिन्न-भिन्न व्यवहार करता है। Ⓟजो लोग उस पर प्रसन्न

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

صد شعاعش می دہی چوں آفتاب تا نماند طالبِ دیں در حجاب

उसे सूर्य के समान सैकड़ों रश्मियां (किरणें) प्रदान करता है ताकि धर्माभिलाषी अंधकार में न रहे। *

تاز تاریکی برآید عالمے تا نشاں یابند از کویت ہمے

ताकि एक संसार अंधकार से निकल आए ताकि लोग तेरे इस कूचे का पता लगा लें। *

زیں نشانہا بدرگان کور و کراند صد نشاں بینند و غافل بگذرند

परन्तु उपद्रवी लोग इन निशानों से अन्धे और बहरे हैं, सैकड़ों निशान देखते हैं परन्तु लापरवाही से गुज़र जाते हैं। *

عشق ظلمت دشمنی باآفتاب شب پرانِ سرمدی جان در حجاب

उन्हें अंधकार से प्रेम है और सूर्य से शत्रुता, ये अनादि चमगादड़ है इनके प्राण अंधकार के पर्दे में हैं। *

آں شہِ عالم کہ نامش مصطفیٰ سیدِ عشاق حق شمس الضحیٰ

जगत का बादशाह जिसका नाम मुस्तफ़ा है जो सत्य के प्रेमियों का सरदार और दोपहर का सूर्य है। *

آنکہ ہر نورے طفیل نور اوست آنکہ منظور خدا منظور اوست

वह, वह है कि हर प्रकाश उस के कारण है और वह वह है कि जिसका स्वीकार किया हुआ ख़ुदा का मान्य है। *

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

व्यक्ति गुप्त तौर पर ये क़िस्से लिखाता होगा जैसा उन का यह कथन क़ुर्आन करीम
Ⓟमें लिखा है - Ⓟ491

शेष हाशिया नं. (11)

होते हैं तथा हार्दिक प्रेम और निष्ठा के साथ उसके अभिलाषी हो जाते हैं ख़ुदा भी उन पर प्रसन्न हो जाता है तथा उन पर अपनी प्रसन्नता के प्रकाश उतारता है और जो लोग उससे विमुख हो जाते हैं और जान-बूझ कर विरोध करते हैं ख़ुदा भी विरोधी की भांति उन से व्यवहार करता है तथा जो लोग

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

آنکہ بہرِ زندگی آبِ رواں — در معارف ہمچو بحرِ بیکراں

उसका अस्तित्व जीवन के लिए बहता हुआ पानी है तथा सच्चाइयों और आध्यात्म ज्ञानों का अपार समुद्र है। *

آنکہ بر صدق و کمالش در جہاں — صد دلیل و حجت روشن عیاں

वह कि जिसकी सच्चाई और विशेषता पर संसार में सैकड़ों सबूत और तर्क प्रकट हैं। *

آنکہ انوارِ خدا بر روئے او — مظہرِ کارِ خدائے کوئے او

जिसके मुख पर ख़ुदाई प्रकाश बरसते हैं और जिसका कूचा ख़ुदा के निशानों के प्रकट होने का स्थान। *

آنکہ جملہ انبیا و راستاں — خادمانش ہمچو خاکِ آستاں

वह कि समस्त नबी और सदात्मा लोग उसकी चौखट की धूल के समान उसके सेवक हैं। *

آنکہ مہرش میرساند تا سما — میکند چوں ماہِ تاباں درصفا

वह कि जिसका प्रेम मनुष्य को आकाश तक पहुंचाता है और स्वच्छता में चमकते हुए चन्द्रमा के समान बना देता है। *

میدہد فرعونیاں را ہر زماں — چوں ید بیضائے موسیٰ صد نشاں

वह नबी फ़िरऔनी (विशेषता रखने वाले) लोगों को दिखाता है मूसा के यदे बैज़ा (चमकता हुआ हाथ) की भांति सैकड़ों निशान।*

Ⓟآں نبی در چشمِ ایں کوران زار — ہست یک شہوت پرست و کیں شعار Ⓟ526

यह नबी इन अभागे अन्धों की दृष्टि में कामुक और ईर्ष्यालु व्यक्ति है।*

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ ①(भाग-14)

और फिर जब देखा कि क़ुर्आन करीम में केवल क़िस्से ही नहीं अपितु बड़ी-

शेष हाशिया नं. (11)

उसकी अभिलाषा में आलस्य और लापरवाही करते हैं ख़ुदा भी उनसे लापरवाही करता है और उन्हें पथभ्रष्टता में छोड़ देता है। अत: जिस प्रकार मनुष्य को दर्पण में वही आकृति दिखाई देती है जो वास्तव में आकृति है
Ⓟ465 इसी प्रकार ख़ुदा तआला जो Ⓟप्रत्येक अपवित्रता से उज्ज्वल और पवित्र है, प्रेम करने वालों के साथ प्रेम करता है, आक्रोश वालों पर महाप्रकोपी है,

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

شرمت آید اے سگ ناچیز وپست　　می نہی نامِ یلاں شہوت پرست

हे नीच और निर्लज्ज कुत्ते शर्म कर, तू योद्धाओं का नाम कामुक रखता है।*

ایں نشانِ شہوتی ہست اے لئیم　　کز رخش رخشاں بود نور قدم

हे दुर्भाग्यशाली! क्या यह एक कामुक का लक्षण है कि उसके चेहरे से अनादि प्रकाश चमकता है। *

در شبی پیدا شود روزش کند　　درخزاں آید دل افروزش کند

रात के समय आए तो उसे दिन बना दे, पतझड़ की ऋतु में आए तो उसे बसन्त बना दे। *

مظہر انوارِ آں بیچوں بود　　در خرد از ہر بشر افزوں بود

उस अद्वितीय ख़ुदा के प्रकाशों का प्रकटन मंच हो बुद्धि में प्रत्येक मनुष्य से अधिक हो *

اتباعش آں دہد دل را کشاد　　کش نہ بیند کس بصد سالہ جہاد

उसका अनुसरण हृदय को इतना प्रफुल्लित कर दे कि कोई सौ वर्ष जिहाद करके भी न पाए। *

اتباعش دل فروزد جاں دہد　　جلوۂ از طاقتِ یزداں دہد

उसका अनुसरण हृदय को प्रकाशित कर दे और नए प्राण प्रदान करे तथा ख़ुदा की शक्तियों की झलक दिखाए। *

① अन्नहल : 104

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

बड़ी सच्चाइयां हैं तो फिर दूसरी राय प्रकट की -

शेष हाशिया नं. (11)

लापरवाहों के साथ लापरवाही, रुकने वालों से रुक जाता है तथा झुकने वालों की ओर झुकता है, चाहने वालों को चाहता है तथा घृणा करने वालों से घृणा करता है और जिस प्रकार दर्पण के सामने अपना जो हाव-भाव बनाओगे वही हाव-भाव दर्पण में भी दृष्टिगोचर होगा, इसी प्रकार ख़ुदा तआला के सामने जिस हाव-भाव से कोई चलता है वही हाव-भाव ख़ुदा

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

اتباعش سینہ نورانی کند باخبر از یار پنہانی کند

उसका अनुसरण सीने को प्रकाशमान करे और नए प्राण प्रदान करे और उस गुप्त यार से परिचित करे। *

منطق او از معارف پُر بود ہر بیانِ او سراسر دُر بود

उसका कलाम सत्य और आध्यात्म ज्ञानों से भरपूर हो और उसका हर वर्णन बिल्कुल मोती हो। *

از کمالِ حکمت و تکمیل دِس پا نہد بر اوّلین و آخرس

अपनी हिकमत की विशेषताएं और शरीअत के पूर्ण हो जाने के कारण पूर्वजों और बाद में आने वालों का सरदार हो। *

و از کمال صورت و احسن اتم جملہ خوباں را کند زیر قدم

सौन्दर्य और विशेषता में पूर्णता के कारण समस्त प्रियतमों का स्थान उसके चरणों में हो *

تابعش چوں انبیا گردد ز نور نورش افتد برہمہ نزدیک و دور

उसका अनुयायी प्रकाश के कारण नबियों की तरह हो जाए उसका प्रकाश दूर और निकट सब पर पड़े। *

شیر حق پُر ہیبت از ربّ حلل دشمنان پیشش چو روباہ ذلیل

ख़ुदा तआला की ओर से सत्य का भयभीत करने वाला शेर हो, शत्रु उसके सामने तुच्छ लोमड़ी की तरह हों। *

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ① (भाग-18)

अर्थात एक बड़ी जमाअत ने एकमत होकर क़ुर्आन करीम को लिखा है, एक

शेष हाशिया नं. 11

की ओर से उसके लिए मौजूद है और जिस वेश-भूषा को मनुष्य अपने
℗466 लिए ℗धारण करता है उस का बोया हुआ वही बीज उसे दिया जाता है। जब मनुष्य प्रत्येक प्रकार की बाधाओं और अपवित्रताओं और गन्दगियों से अपने हृदय को शुद्ध कर लेता है तथा उसके अन्त:करण का विकृत तत्व सिवाए ख़ुदा के खाली हो जाता है तो उसका उदाहरण ऐसा होता है जैसे

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

ایں چنیں شیری بود شہوت پرست   ہوش کن اے رو بہی ناچیز وپست

क्या ऐसा शेर कामुक हुआ करता है। हे अधम और तुच्छ लोमड़ी होश में आ। *

چیستی اے کورکِ فطرت تباہ   طعنہ بر خوباں بدیں روئے سیاہ

हे निर्ल्लज्ज और दुष्ट अन्धे! तू क्या है? इस काले मुख के साथ रूपवानों पर कटाक्ष करता है। *

شہوتِ شاں از سر آزادی است   نے اسیرِ آں چو تو آں قوم مست

उन ख़ुदा के प्रेमियों की कामुकता आज़ादी की बुनियाद पर है तेरी तरह कामुकता के कैदी नहीं हैं। *

خود نگہ کن آں یکے زندانی است   واں دگر داروغۂ سلطانی است

तू स्वयं विचार कर ले कि एक व्यक्ति तो क़ैदी है और दूसरा व्यक्ति बंदीगृह का राजकीय कोतवाल है। *

گرچہ در یکجاست ہر دو را قرار   لیک فرقی ہست دوری آشکار

यद्यपि उन दोनों का निवास एक ही स्थान पर है परन्तु दोनों का अन्तर स्पष्ट है। *

کار پاکاں بر بداں کردن قیاس   کارِ ناپاکاں بود اے بدحواس

अच्छों की बातों की बुरों पर कल्पना करना, हे हैरान-परेशान यह अपवित्रों का कार्य है। *

---

① अलफ़ुरक़ान : 5

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

व्यक्ति का कार्य नहीं। फिर जब क़ुर्आन करीम में उन्हें यह उत्तर दिया गया कि यदि क़ुर्आन को प्रकाण्ड विद्वानों और कवियों की किसी जमाअत ने एकत्र होकर बनाया

शेष हाशिया नं. (11)

कोई अपने मकान का द्वार जो सूर्य की ओर है खोल देता है और सूर्य की किरणें उसके घर के अन्दर चली आती हैं, परन्तु जब मनुष्य असत्य, झूठ तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की अपवित्रताओं को स्वयं धारण कर लेता है तथा ख़ुदा को एक तिरस्कृत वस्तु की तरह समझ कर छोड़ देता है तो उसका उदाहरण ऐसा है जैसे कोई ®प्रकाश को अरुचिकर समझते हुए उससे द्वेष रख कर ®467

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

کاملاں کز شوق دلبر می روند   باد و صد بارے سبکتر می روند

महात्मा लोग जो प्रियतम की अभिलाषा में चले जा रहे हैं, वे दो सौ बोझ उठाकर भी हल्के-फुलके चलते हैं। *

ایں کمال آمد کہ با فرزند و زن   ازہمہ فرزند و زن یکسو شدن

खूबी तो यह है कि बावजूद सन्तान और पत्नी के फिर भी घर परिवार से पृथक हैं। *

در جہان و باز بیرون از جہان   بس ہمیں آمد نشانِ کا ملاں

संसार में रहें परन्तु वास्तव में संसार से बाहर हों। सदात्मा लोगों की यही निशानी है। *

چوں ستوری زیر بار افتد بسر   در تہی رفتن سریع و تیز تر

जब कोई घोड़ा बोझ लादने से सर के बल गिर पड़े परन्तु खाली चलने में चतुर और तीव्र गति वाला हो। *

ایں چنیں اسپی کجا آید بکار   نابکارست ایں در اسپانش مدار

तो ऐसा घोड़ा किस काम आ सकता है वह तो बेकार है उसकी गिनती घोड़ों में न कर। *

®اسپ آں اسپ است کو بارِ گران   می کشد ہم میرود بس خوش عنان ®527

घोड़ा तो वह है जो कि भारी बोझ को भी ले जाता है और स्वयं भी अच्छी चाल ही चलता है। *

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

है तो तुम भी किसी ऐसी जमाअत से सहायता लेकर क़ुर्आन के सदृश बनाकर दिखाओ ताकि तुम्हारा सच्चा होना सिद्ध हो। अत: फिर निरुत्तर होकर इस राय को

शेष हाशिया नं. (11)

अपने घर के समस्त द्वार बन्द कर दे ताकि ऐसा न हो कि किसी ओर से सूर्य की किरणें उसके घर के अन्दर आ जाएं। मनुष्य जब काम भावनाओं, मर्यादाओं अथवा क़ौम (इत्यादि) का अनुसरण भिन्न-भिन्न प्रकार के दोषों और अपवित्रताओं में लिप्त हो तथा आलस्य, सुस्ती और लापरवाही से उन अपवित्रताओं से पवित्र होने के लिए कुछ प्रयास और परिश्रम न करे तो

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

کاملے گر زن بدارد صد ہزار   صد کنیزک صد ہزاراں کاروبار

यदि कोई सदात्मा व्यक्ति लाखों स्त्रियां रखता हो एवं उसकी सैकड़ों दासियां और लाखों व्यवसाय हों। *

پس گر افتد در حضورِ او فتور   نیست آں کامل ز قربت ہست دور

फिर यदि उसकी उपस्थिति में अन्तर पड़े तो वह सदात्मा नहीं अपितु परमेश्वर के सानिध्य से दूर है। *

نیست آں کامل نہ مردے زندہ جان   گر خرد مندی ز مردانش مخواں

न तो वह सदात्मा है न वह ज़िन्दा दिल है यदि तू बुद्धिमान है तो उसे मर्दों में से न समझ। *

کامل آں باشد کہ بافرزند و زن   باعیال و جملہ مشغولی تن

सदात्मा वह होता है जो बावजूद पत्नी और सन्तान के और बावजूद पारिवारिक और शारीरिक कार्यों के *

باتجارت باہمہ بیع و شرا   یک زماں غافل نگردد از خدا

और बावजूद व्यापार और क्रय-विक्रय के किसी समय भी ख़ुदा से लापरवाह नहीं होता। *

ایں نشانِ قوّتِ مردانہ است   کاملاں را بس ہمیں پیمانہ است

यह तो पुरुषों वाली शक्ति का लक्षण सदात्माओं के लिए केवल यही मापदण्ड है। *

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

भी जाने दिया और एक तीसरी राय प्रकट की और वह यह कि क़ुर्आन को जिन्नों की सहायता से बनाया है यह मनुष्य का कार्य नहीं। फिर ख़ुदा ने इसका भी ऐसा

शेष हाशिया नं. (11)

उसका उदाहरण ऐसा है जैसे कोई अपने घर के द्वारों को बन्द पाए और सम्पूर्ण घर में अन्धकार भरा हुआ देखे और ®फिर उठ कर द्वारों को न खोले ®468 और हाथ-पांव छोड़कर बैठा रहे तथा हृदय में यह कहे कि अब इस समय कौन उठे और कौन इतना कष्ट उठाए। ये तीनों उदाहरण उन तीनों अवस्थाओं के हैं जो मनुष्य के अपने ही कर्म या अपने ही आलस्य से उत्पन्न हो जाती

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

سوختہ جانے ز عشقِ دلبرے کے فراموشش کند با دیگرے

जिस के प्राण प्रियतम के प्रेम में जले हुए हों वह उसे भूलकर दूसरे की ओर कब ध्यान कर सकता है। *

او نظر دارد بغیر و دل بہ یار دست درکار و خیال اندر نگار

वह प्रत्यक्षतया ग़ैर की ओर दृष्टि रखता है परन्तु हृदय यार की ओर होता है, हाथ कार्य में होता है परन्तु ध्यान प्रियतम की ओर *

دل طپاں در فرقتِ محبوب خویش سینہ از ہجران یاری ریش ریش

अपने प्रियतम के वियोग में उसका हृदय तड़पता है और प्रियतम की जुदाई में सीना घायल रहता है। *

اوفتادہ دور از روئے کسے دل دواں ہر لحظہ در کوئے کسے

वह प्रियतम के चेहरे से दूर पड़ा हुआ है परन्तु हृदय हर समय प्रियतम के कूचे में दौड़ रहा होता है। *

خم شدہ از غم چو ابروئے کسے ہر زماں پیچاں چو گیسوئے کسے

किसी की भृकुटी की तरह शोक के कारण टेढ़ा हो गया है और किसी के बालों की तरह हर समय बेचैनी में है। *

دلبرش در شد بجان و مغز و پوست راحت جانش بیاد رُوئے اوست

उस का प्रियतम प्राण, मस्तिष्क और खाल में रच गया, उसके हृदय तथा चैन उसके मुखमंडल की याद में है। *

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

उत्तर दिया कि जिसके सामने वे अगर-मगर करने से असमर्थ हो गए जैसा कि फ़रमाया है :-

शेष हाशिया नं. (11)

हैं जिनमें से प्रथम अवस्था का उपर्युक्त व्याख्यानुसार (انعام الٰہی) **'ख़ुदा का इनाम'** तथा दूसरी अवस्था का नाम غضب الٰہی **ख़ुदा का प्रकोप** तथा तीसरी अवस्था का नाम اضلال الٰہی **ख़ुदा का पथ भ्रष्टता की अवस्था में छोड़ना**। इन तीनों सच्चाइयों से भी हमारे विरोधी अपरिचित हैं क्योंकि ब्रह्म समाज
Ⓟ469 वालों को उस सच्चाई का बिल्कुल ज्ञान नहीं है जिसके अनुसार Ⓟख़ुदा तआला

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

جاں شد او کے جان فراموشش شود　　ہر زماں آید ہم آغوشش شود

वह उसकी जान बन गया और जान को कब भुलाया जा सकता है,
वह हर समय आता है और उससे गले मिलता है। *

دیدہ چوں بر دلبرِ مست اوفتد　　ہرچہ غیرِ اوست از دست اوفتد

जब मस्त प्रियतम पर दृष्टि पड़ती है जो प्रत्येक वस्तु जो हाथ में
होती है गिर पड़ती है। *

غیر گو در بر بود دور است دور　　یارِ دور افتادہ ہر دم در حضور

ग़ैर (अन्य) यदि पहलू में हो फिर भी दूर है परन्तु यार यदि दूर भी
हो तो हर समय पास ही है। *

کاروبار عاشقاں کارِ جداست　　برتر از فکر و قیاسات شماست

प्रेमियों का व्यवसाय ही भिन्न है और तुम लोगों के विचार और
कल्पना से श्रेष्ठतर है। *

قوم عیارست دل در دلبری　　چشمِ ظاہر بین بدیوار و دری

ये क़ौम बहुत चतुर है। उनका हृदय तो प्रियतम में होता है और
भौतिक आंखें द्वार और दीवार की ओर। *

جاں خروشاں از پئے مہ پیکرے　　بر زباں صد قصہا از دیگرے

उनकी जान तो एक रूपवान के लिए तड़पती है और उनके मुख पर
दूसरों की चर्चा होती है। *

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

Ⓟ492 Ⓟوَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ - وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ . فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ - ① قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ
الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ

शेष हाशिया नं. (11)

उपद्रवी और रौद्ररूप रखने वाले मनुष्यों के साथ रौद्ररूपी व्यवहार करता है। अत: ब्रह्म समाजी सज्जनों में से एक सज्जन ने उन्हीं दिनों में एक पत्रिका भी लिखी है जिसमें आदरणीय सज्जन ख़ुदा की किताबों पर यह आरोप लगाते हैं कि उनमें क्रोध की विशेषता ख़ुदा तआला की ओर क्योंकर

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

فانیاں را مانعے از یار نیست　　　بچہ او زن برسر شان بارِ نیست

नश्वर लोगों के लिए कोई वस्तु भी प्रियतम से बाधक नहीं, पत्नी
और बच्चे उनके सर पर बोझ नहीं होते। *

باد و صد زنجیر ہر دم پیش یار　　　خار با او گل گل اندر ہجر خار

सैकड़ों बन्धनों के बावजूद हर पल प्रियतम के दरबार में रहते हैं उसके
साथ उन्हें कांटे फूल और उसके बिना फूल कांटे मालूम होते हैं। *

تو بیک خارے براری صد فغان　　　عاشقاں خنداں بپائے جاں فشاں

तू तो एक कांटे के कारण सैकड़ों चीखें मारता है और प्रेमी अपने
प्राण बलिदान करके भी हंसते रहते हैं। *

عاشقاں در عظمتِ مولیٰ فنا　　　غرقہ دریائے توحید از وفا

प्रेमी ख़ुदा की श्रेष्ठता में आसक्त हैं और वफ़ादारी के कारण
एकेश्वरवाद के दरिया में डूबे हुए हैं। *

کین و مہر شان ہمہ بہر خداست　　　قہر شان گرہست آں قہر خداست

उनकी शत्रुता और मित्रता सब ख़ुदा के लिए है। यदि उन्हें क्रोध भी
आता है तो वह ख़ुदा ही का क्रोध है। *

Ⓟ528 Ⓟآں کہ در عشقِ احد محو وفناست　　　ہرچہ زو آید ز ذات کبریاست

जो ख़ुदा के प्रेम में आसक्त और तन्मय है, उससे जो कुछ भी प्रकट
होता है वह श्रेष्ठतम हस्ती (ख़ुदा) ही की ओर से है। *

① अत्तक्वीर : 25-27

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

ظَهِيْرًا - ①(भाग-15)

अर्थात् क़ुर्आन हर प्रकार की परोक्ष की बातों को समेटे हुए है तथा इतनी सीमा

शेष हाशिया नं. 11

सम्बद्ध की गई है, क्या ख़ुदा हमारी ग़लतियों से खिन्न होता है। स्पष्ट है कि यदि लेखक को इस सच्चाई का कुछ भी ज्ञान होता तो वह क्यों व्यर्थ में अपना समय नष्ट करके एक ऐसी पत्रिका प्रकाशित कराते जिससे उनकी
℗470 अज्ञानता प्रत्येक पर स्पष्ट हो गई है और उन्हें बुद्धि के दावे के बावजूद ℗यह

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

فانی است و تیر اُو تیر حق است　　　صید او دراصل نخچیرِ حق است

वह नश्वर है, उसका तीर ख़ुदा का तीर है उसका शिकार वास्तव में ख़ुदा का शिकार है। *

آنچہ می باشد خدا را از صفات　　　خود دمد در فانیاں آں پاک ذات

जो विशेषताएं ख़ुदा तआला की हैं वह पवित्र हस्ती उन विशेषताओं को ख़ुदा में आसक्त लोगों में स्वयं फूंक देती है। *

خوئے حق گردد در ایشان آشکار　　　از جمال و از جلال کردگار

उनसे ख़ुदा की विशेषताएं प्रकट होने लगती हैं चाहे वे जमाली (जिसमें रहमत की झलक हो) हो या प्रताप वाली। *

لطفِ شاں لطفِ خدا ہم قہر شاں　　　قہر حق گردد نہ ہمچو دیگراں

उनका आनन्द ख़ुदा का आनन्द है और उनका प्रकोप ख़ुदा का प्रकोप हो जाता है दूसरों की तरह उनका मामला नहीं है। *

فانیاں ہستند از خود دور تر　　　چوں ملائک کارکن از دادگر

ये ख़ुदा के आसक्त लोग अपने अहंकार से निश्चय ही दूर हैं वे फ़रिश्तों की तरह न्यायवान ख़ुदा के कर्मचारी हैं। *

گر فرشتہ قبض جانے میکند　　　یا کرم بر ناتوانے میکند

यदि फ़रिश्ता किसी के प्राण निकालता है अथवा किसी निर्बल पर मेहरबानी करता है। *

① बनी इस्राईल : 89

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

तक बताना जिन्नों का कार्य नहीं। उन्हें कह दे कि यदि समस्त जिन्न एकमत हो जाएं और साथ ही मनुष्य भी एकमत हो जाएं तथा सब मिलकर यह चाहें कि इस

शेष हाशिया नं. 11

बात समझ न आई कि ख़ुदा का रौद्ररूप मनुष्य की स्थिति का एक प्रतिबिम्ब है। जब मनुष्य किसी विरोधात्मक उपद्रव से ग्रस्त हो जाए और ख़ुदा से दूसरी ओर मुख फेर ले तो क्या वह इस योग्य रह सकता है कि कृपा का जो वरदान सच्चे प्रेमियों और सदात्मा लोगों पर होता है उस पर भी वही

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

ایں ہمہ سختی و نرمی از خداست　　او زِ خواہشہائے نفسِ خود جداست

तो यह कठोरता और नम्रता ख़ुदा ही की तरफ से होती है फ़रिश्ता तो अपनी काम भावनाओं से निश्चय ही अलग है। *

ہم چنیں میدان مقامِ انبیاء　　واصلان و فاصلاں از ماسواء

नबियों के स्थान का भी यही उदाहरण समझ। वे अल्लाह से मिलने वाले हैं और उस के (ग़ैर) अलावा से बिल्कुल अलग। *

فانی اند و آلۂ ربانی اند　　نور حق در جامۂ انسانی اند

वे ख़ुदा में तल्लीन हैं और ख़ुदा का हथियार हैं, मानव रूप में ख़ुदा का प्रकाश हैं। *

سخت پنہاں در قبابِ حضرت اند　　گم زِ خود در رنگ و آبِ حضرت اند

ख़ुदा के गुम्बद में बिल्कुल गुप्त हैं, अहंकार से पृथक होकर ख़ुदा के रंग-रूप में जीवन व्यतीत करते हैं। *

اخترانِ آسمانِ زیب و فر　　رفتہ از چشمِ خلائق دور تر

सुन्दरता और दबदबा रूपी आकाश के सितारे हैं और लोगों की आंखों से दूर चले गए हैं। *

کس ز قدر نور شاں آگاہ نیست　　زانکہ ادنیٰ را با علیٰ راہ نیست

कोई उनके प्रकाश के महत्व से परिचित नहीं है क्योंकि निम्न को उच्च तक पहुंच नहीं हो सकती। *

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

क़ुर्आन के सदृश कोई अन्य क़ुर्आन बना दें तो उनके लिए कदापि संभव नहीं होगा यद्यपि परस्पर सहायक बन जाएं।

शेष हाशिया नं. (11)

वरदान हो जाए। कदापि नहीं। अपितु ख़ुदा का अनादि नियम जो आरंभ से प्रचलित है जिस का ईमानदार और सच्चे लोग अनुभव करते रहे हैं और अब भी उचित अनुभवों से उसकी सच्चाइयों का अवलोकन करते हैं वह यही नियम है कि जो व्यक्ति अन्धकारमय बाधाओं से निकल कर सीधा
Ⓟ471 ख़ुदा तआला की ओर अपनी आत्मा का मुख फेर कर Ⓟउसकी चौखट पर

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

کور کورانہ زند رائے دنی   چشمِ کورش بے خبر زاں روشنی

अन्धा अन्धेपन के कारण अधम राय देता है क्योंकि उसकी अंधी आंखें उस प्रकाश से अनभिज्ञ हैं। *

ہم چنیں تو اے عدوِّ مصطفیٰ   مے نمائی کوریٔ خود را بما

इस प्रकार तू भी हे मुस्तफ़ा (स.अ.व.) के शत्रु अपने अंधेपन को हम पर प्रकट करता है। *

بر قمر عوعو کُنی از سگ رگے   نور مہ کمتر نہ گردد زیں سگے

जिस प्रकार कि कुत्ते का स्वभाव होता है चन्द्रमा पर भोंकता है परन्तु उस कुत्तेपन से चन्द्रमा का प्रकाश कम नहीं हो सकता। *

مصطفیٰ آئینۂ روئے خداست   منعکس دروے ہماں خوئے خداست

मुस्तफ़ा (स.अ.व.) तो ख़ुदा के चेहरे का दर्पण हैं उनमें ख़ुदा तआला की समस्त विशेषताएं प्रतिबिम्बित हैं। *

گر ندیدستی خدا او را بہ بیں   من رآنی قد رأی الحق ایں یقیں

यदि तूने परमेश्वर को नहीं देखा तो इन्हें देख। यह हदीस निश्चित है कि "जिसने मुझे देखा उसने सत्य (ख़ुदा) को देखा।" *

آنکہ آویزد بمستانِ خدا   خصم او گردد جنابِ کبریا

जो व्यक्ति परमेश्वर के प्रेमियों से उलझता है तो परमेश्वर स्वयं उसका शत्रु हो जाता है। *

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

फिर जब उन दुर्भाग्यशाली लोगों पर अपने समस्त विचारों का झूठा होना प्रकट हो गया तथा कोई बात बनती दिखाई न दी तो अन्ततः बड़ी निर्लज्जता से नीच

शेष हाशिया नं. (11)

गिर पड़ता है उसी पर ख़ुदा तआला अपनी विशेष कृपा दृष्टि करता है और जो व्यक्ति इस मार्ग के विपरीत कोई अन्य मार्ग धारण कर लेता है तो जो बात उसकी कृपा के विपरीत है तो उस पर ख़ुदा तआला का प्रकोप अनिवार्य तौर पर आता है तथा प्रकोप की मूल वास्तविकता यही है कि एक व्यक्ति जब उस सद्मार्ग को छोड़ देता है जो ख़ुदाई नियम में ख़ुदा तआला की कृपा से लाभान्वित होने का मार्ग है तो वह ख़ुदा की कृपा से लाभान्वित

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

دست حق تائید ایں مستان کند   چوں کسی بادست حق دستاں کند

ख़ुदा का हाथ उन प्रेमियों की सहायता करता है जब कोई उनके साथ छल-कपट करता है। *

منزلِ شاں برتر از صد آسماں   بس نہاں اندر نہاں اندر نہاں

उन का स्थान सैकड़ों आकाशों से भी ऊंचा है और वे तो गुप्त से गुप्त से गुप्त हैं। *

پا فشردہ در وفائے دلبرے   وازسرش برخاک افتادہ سرے

अपने प्रियतम की वफ़ादारी में पैर तोड़कर बैठ गए हैं और उसके प्रेम में उनका सर मिट्टी पर पड़ा है। *

جانِ خود را سوختہ بہر نگار   زندہ گشتہ بعد مرگ صد ہزار

उस चित्र (प्रियतम) के लिए उन्होंने अपने प्राणों को जला दिया और लाखों मौतों के उपरान्त जीवित हुए हैं। *

صاحب چشم اندر آنجا بے تمیز   چشمِ کوراں خود نباشد ہیچ چیز

उस स्थान पर तो समीक्षकों को भी विवेक नहीं रहता, आंख के अन्धों की वहां क्या वास्तविकता है। *

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

लोगों की भांति इस बात पर आ गए कि इस शिक्षा को हर प्रकार से प्रकाशित होने से रोकना चाहिए जैसा कि क़ुर्आन करीम में इसकी चर्चा करते हुए फ़रमाया है :-

शेष हाशिया नं. (11)

होने से वंचित रह जाता है। इसी वंचित होने की अवस्था का नाम ख़ुदा का
ⓅⓅ472 प्रकोप है और चूंकि मनुष्य का जीवन और सुख-चैन ख़ुदा की कृपा से Ⓟही है अत: जो लोग उसकी कृपा-दृष्टि के मार्ग का परित्याग कर देते हैं वे ख़ुदा की ओर से इसी संसार में अथवा परलोक में नाना प्रकार की यातनाओं में ग्रस्त हो जाते हैं क्योंकि जिस के साथ ख़ुदा की कृपा नहीं है आवश्यक है कि भिन्न-भिन्न प्रकार के आध्यात्मिक और शारीरिक अज़ाब उसकी ओर

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

Ⓟ529 Ⓟروئے شان آں آفتابے کانداراں چشم مرداں خیرہ ہم چوں شپراں

उनका चेहरा ऐसा सूर्य है कि उसके प्रकाश में पुरुषों की आंखें भी
चमगादड़ की भांति चुंधिया जाती हैं। *

تو خودی زن رائے تو ہمچوں زناں ناقص ابنِ ناقص ابنِ ناقصاں

तू तो स्वयं स्त्री है और तेरी राय भी स्त्रियों जैसी है। तू अपूर्ण तेरा
बाप अपूर्ण तेरा दादा सब अपूर्ण। *

خوب گر نزدِ تو زِشت است و تباہ پس چہ خوانم نام تو اے روسیاہ

यदि रूपवान तेरे निकट कुरूप और दुर्दशाग्रस्त है तो हे कलंकित!
बता मैं तेरा क्या नाम रखूं। *

کوریت صد پردہ ہا بر تو فگند واں تعصبہائے تو بیخت بکند

तेरी नेत्रहीनता ने तुझ पर सैकड़ों पर्दे डाल रखे हैं और तेरी द्वेषपूर्ण
भावनाओं ने तेरी जड़ उखाड़ दी है। *

Ⓟ530 Ⓟاے بسا محبوبِ آں ربِّ جلل پشت از کوری حقیر است و ذلیل

प्रतापवान ख़ुदा के बहुत से प्रियतम तेरी नेत्रहीनता के कारण तेरे
निकट तुच्छ और तिरस्कृत हैं। *

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

493 ®وَقَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَا تَسۡمَعُوۡا لِهٰذَا الۡقُرۡاٰنِ وَالۡغَوۡا فِيۡهِ لَعَلَّكُمۡ تَغۡلِبُوۡنَ① وَقَالَتۡ
طَّآئِفَةٌ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اٰمِنُوۡا بِالَّذِىۡۤ اُنۡزِلَ عَلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَجۡهَ النَّهَارِ

शेष हाशिया नं. 11

मुख करें। चूंकि ख़ुदा के नियम में यही व्यवस्था सुनियोजित है कि विशेष कृपा उन्हीं की स्थिति से संलग्न होती है जो कृपा के मार्ग को अर्थात दुआ और एकेश्वरवाद को धारण करते हैं। अत: जो लोग इस मार्ग का त्याग कर देते हैं वे नाना प्रकार की आपदाओं में ग्रस्त हो ®जाते हैं इसी की ओर 473
अल्लाह तआला ने संकेत किया है-

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

اے بسا کس خوردہ صد جامِ فنا   پیش ایں چشمت پُر از حرص و ہوا

ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने आसक्त होने के सैकड़ों प्याले पिए हैं
तेरी इन आंखों को लोलुप और लालची दिखाई देते हैं। *

گر نماندے از وجودِ تو نشاں   نیک بودے زیں حیاتِ چوں سگاں

यदि तेरे अस्तित्व का नामो-निशान मिट जाता है तो इस कुत्तों वाले
जीवन से अच्छा होता। *

زاغ گر زادی بجایت مادرت   نیک بود از فطرت بد گوہرت

तेरी मां यदि तेरे स्थान पर कौवे को जन्म देती तो तेरी तुलना में
अच्छा था। *

531 ®زانکہ کذب وفسق وکفرت در سراست   وایں نجاست خواریت زاں بدتر است

चूंकि झूठ, दुराचार और कुफ़्र तेरे मस्तिष्क में है और तेरा या गन्दगी
को खाना इसकी तुलना में अधिक बुरा है। *

تو ہلاکی اے شقی سرمدی   زانکہ از جانِ جہاں سرکش شدی

हे हमेशा के अभागे तू तबाह हो चुका है क्योंकि तू सारे संसार के
प्राणाधार से उपद्रवी हो रहा है। *

① हा मीम अस्सज्दह : 27,

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ①

Ⓟاَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ Ⓟ494

शेष हाशिया नं. (11)

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ② فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ③

अर्थात उन्हें कह दे कि मेरा ख़ुदा तम्हारी क्या परवाह रखता है यदि तुम दुआ न करो तथा उसकी कृपा-दृष्टि के अभिलाषी न हो, ख़ुदा को तो किसी के जीवन और अस्तित्व की आवश्यकता नहीं वह तो नितान्त नि:स्पृह है। आर्य समाज वाले तथा ईसाई भी इन तीनों सच्चाइयों में से प्रथम और तृतीय

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

اے در انکار و شکّے از شاہِ دیں   خادمان و چاکرانش ر ابہ ں

हे वह व्यक्ति कि तू धर्म के बादशाह से इन्कार और सन्देह में है
उसके सेवकों और कर्मचारियों को ही देख। *

کس ندیدہ از بزرگانت نشاں   نیست در دستِ تو بیش از داستاں

तेरे बुज़ुर्गों से किसी ने भी कोई निशान नहीं देखा, तेरे हाथ में
कहानियों से अधिक और कुछ नहीं। *

Ⓟلیک گر خواہی بیابنگر زِما   صد نشانِ صدق شانِ مصطفٰی Ⓟ532

परन्तु यदि तू चाहे तो आ, हम तुझे मुस्तफ़ा की सत्य की प्रतिष्ठा के
सैकड़ों निशान दिखा देंगे। *

ہاں بیا اے دیدہ بستہ از حسد   تا شعاعش پردۂ تو بر درد

हे वह जिसने द्वेषभाव के कारण आंखें बन्द कर ली हैं आ ताकि
उसका प्रकाश तेरे पर्दों को फाड़ डाले। *

صادقاں را نور حق تابد مدام   کاذباں مردند و شد تُر کی تمام

सदात्मा लोगों के लिए सत्य का प्रकाश सदा चमकता रहता है, झूठे
मर गए तथा उनके घमण्ड का अन्त हो गया। *

مصطفٰی مہرِ درخشانِ خداست   بر عدوش لعنتِ ارض و سماست

मुस्तफ़ा (स.अ.व.) ख़ुदा तआला का चमकता हुआ सूर्य है उसके
शत्रु पर धरती और आकाश की फटकार है। *

---

① आले इमरान : 73 ② अलफ़ुरक़ान : 78 ③ आले इमरान : 98

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

كَفَرُوْا هٰٓؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا - اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا -[1] (भाग-5)

शेष हाशिया नं. 11

सच्चाई से अनभिज्ञ हैं। उनमें से कोई यह आरोप लगाता है कि ख़ुदा तआला सब लोगों को क्यों हिदायत नहीं देता, कोई यह आरोप ℗लगाता है कि ख़ुदा ℗474 में पथभ्रष्ट करने की विशेषता क्योंकर पाई जाती है कि लोग ख़ुदा तआला की हिदायत (मार्ग-दर्शन) के सन्दर्भ में आपत्तिकर्ता हैं। उन्हें यह विचार नहीं आता कि ख़ुदा तआला अपने निर्धारित नियमों के अनुसार प्रत्येक से

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

℗533 ℗ایں نشان لعنت آمد کایں خساں ماندہ اندر ظلمتی چوں شپراں

फटकार का यही तो लक्षण है कि ये निर्लज्ज लोग चमगादड़ों की तरह अंधकार में पड़े हैं। *

نے دلِ صافی نہ عقلے راہ ‌بیں راندۂ درگاہِ رب العالمیں

न उन का हृदय पवित्र है, न उनकी बुद्धि मार्ग देखने वाली है, वे समस्त लोकों के प्रतिपालक के दरबार से धिक्कारे हुए हैं। *

جاں کنی صد کن بکینِ مصطفی رہ نہ بینی جز بدینِ مصطفی

मुस्तफ़ा (स.अ.व.) की शत्रुता में सैकड़ों बार भी तेरी नौबत दम तोड़ने तक पहुंच जाए फिर भी तू मुस्तफ़ा के धर्म के अतिरिक्त सदमार्ग न पाएगा। *

تانہ نورِ احمد آید چارہ گر کس نمی گیرد ز تاریکی بدر

जब तब अहमद का प्रकाश उपचारक न होगा तब तक कोई अंधकार से बाहर नहीं निकल सकता। *

℗534 ℗از طفیلِ اوست نور ہر نبی نام ہر مرسل بنام او جلی

हर नबी के प्रकाश उसी के कारण हैं और हर रसूल का नाम उस के नाम के कारण प्रकाशित है। *

[1] अन्निसा : 52-53,

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

अर्थात काफ़िरों ने यह कहा कि इस क़ुर्आन को न सुनो और जब तुम्हारे सामने पढ़ा जाए तो तुम शोर डाल दिया करो ताकि कदाचित इसी प्रकार विजयी हो जाओ

शेष हाशिया नं. 11

Ⓟ475 यथायोग्य व्यवहार करता है और जो व्यक्ति सुस्ती और आलस्य से उसके लिए प्रयास करना त्याग देता है, ऐसे Ⓟलोगों के संबंध में हमेशा से उसका यही नियम निर्धारित है कि वह उन्हें अपने सहयोग से वंचित रखता है तथा उन्हीं को अपने मार्ग दिखाता है जो उन मार्गों के लिए अपने तन-मन से

शेष हाशिए का हाशिया नं. 3

آں کتابے ہمچو خور دادش خدا   کز رخش روشن شد ایں ظلمت سرا

ख़ुदा ने उसे सूर्य के समान ऐसी किताब प्रदान की कि उसके
चमकदार चेहरे से यह अंधकारमय संसार चमक उठा। *

ہست فرقاں طیب و طاہر شجر   از نشانہا میدہد ہردم ثمر

क़ुर्आन एक पवित्र और शुद्ध वृक्ष है और प्रत्येक युग में निशानों के
फल देता है। *

صد نشانِ راستی دروے پدید   نے چو دینِ تو بنایش برشنید

उसमें सत्य के सैकड़ों निशान प्रकट हैं, तेरे धर्म के समान उसका
आधार सुनी हुई बातों पर नहीं है। *

Ⓟ535 Ⓟپُر ز اعجاز است آں عالی کلام   نور یزدانی دَرُو رخشد تمام

वह महान किताब चमत्कारों से भरपूर है उसमें ख़ुदाई प्रकाश पूर्ण
रूप से चमकता है। *

از خدائی ہا نمودہ کار را   بر دریدہ پردۂ کفار را

उसने परमेश्वरीय शक्तियों के साथ कार्य किया है और काफ़िरों के
पर्दे फाड़कर दिखाए हैं। *

آفتاب است و کند چوں آفتاب   گرنہ کوری بیابنگر شتاب

वह स्वयं सूर्य है और दूसरों को भी सूर्य के समान बना देता है, यदि
तू अन्धा नहीं है तो शीघ्र आ और देख। *

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

और ईसाइयों और यहूदियों में से कुछ ने यह कहा कि यों करो कि प्रथम प्रात:काल जाकर क़ुर्आन पर ईमान ले आओ फिर सायंकाल अपना ही धर्म अपना लो ताकि

शेष हाशिया नं. (11)

प्रयास करते हैं। भला यह क्योंकर हो सके कि जो व्यक्ति नितान्त लापरवाही से आलस्य कर रहा है वह उसी प्रकार ख़ुदा की कृपा से लाभान्वित हो जाए जैसे वह व्यक्ति जो पूर्ण बुद्धि और पूर्ण बल और पूर्ण निष्कपटता से उसे ढूंढता है। इसी की ओर एक अन्य स्थान में भी अल्लाह तआला ने संकेत दिया है और वह यह है –

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

اے مزوّر گر بیائی سوئے ما واز وفا رخت افگنی در کوئے ما

हे झूठे! यदि तू हमारी ओर आए और हमारे कूचे में वफ़ादारी के साथ डेरे डाल दे। *

Ⓟوا از سر صدق و ثبات و غم خوری روزگارے در حضور ما بری Ⓟ536

और सत्य, स्थायित्व और हृदय की पीड़ा के साथ हमारे पास कुछ समय तक ठहरे। *

عالمے بینی زِ ربانی نشاں سوئے رحماں خلق و عالم راکشاں

तू ख़ुदा के निशानों का एक संसार देख लेगा जो सम्पूर्ण विश्व को दयालु ख़ुदा की ओर खींचता होगा। *

گر خلافِ واقعہ گفتم سخن راضیم گر تو سرم بُری زِ تن

यदि मैंने यह बात वास्तविकता के विरुद्ध कही है तो मैं राज़ी हूं कि तू मेरा सर तन से अलग कर दे। *

راضیم گر خلق بردارم کشند از سرِ کیں با صد آزارم کشند

मैं इस पर भी सहमत हूं कि लोग मुझे फांसी पर चढ़ा दें और सैकड़ों कष्ट देकर क्रोध से मुझे मार डालें। *

Ⓟراضیم گر باشدم ایں کیفرے خوں رواں برخاک افتادہ سرے Ⓟ537

मैं सहमत हूं कि मुझे यह दण्ड मिले कि मिट्टी पर रक्त रंजित सर पड़ा हो। *

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

कदाचित इस प्रकार से लोग सन्देह में पड़ जाएं तथा इस्लाम धर्म को त्याग दें। क्या तूने देखा नहीं कि ये ईसाई और यहूदी जिन्होंने इन्जील और तौरात को कुछ

शेष हाशिया नं. (11)

وَالَّذِيۡنَ جَاهَدُوۡا فِيۡنَا لَنَهۡدِيَنَّهُمۡ سُبُلَنَا①

अर्थात् जो लोग हमारे मार्ग में प्रयास करते हैं हम उन्हें अवश्य ही अपने मार्ग
ⓅP476 दिखा दिया Ⓟकरते हैं। अतः देखना चाहिए कि ये दस सच्चाइयां जिनका सूरह फ़ातिहा में उल्लेख है कितनी उच्च और अनुपम सच्चाइयां हैं जिन्हें

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

راضیم گر مال و جان و تن رود   و آنچہ از قسمِ بلا برمن رود

मैं सहमत हूं कि मेरे प्राण, धन और शरीर समाप्त हो जाएं, और भी नाना प्रकार के कष्ट मुझ पर आ जाएं। *

گردرُو غم رفتہ باشد بر زباں   راضیم بر ہر سزائے کاذباں

यदि मेरे मुख से झूठ निकला है तो मैं झूठों के प्रत्येक दण्ड पर प्रसन्न हूं। *

لیک گر توزیں سخن پیچی سرے   بر تو ہم نفرین ربِّ اکبرے

परन्तु यदि तू भी इस बात से इन्कार करे तो तुझ पर भी ख़ुदा की फटकार की मार पड़े। *

Ⓟ538 Ⓟزیں سخنہا ہر کہ روگرداں بود   آں نہ مردے رہزن مرداں بود

जो भी इन बातों से विमुख है वह मर्द नहीं अपितु लोगों को मार्ग में लूटने वाला है। *

اے خدا بیخ خبیثانے برار   کز جفا باحق نمیدارند کار

हे परमेश्वर! दुष्प्रकृति लोगों को समूल नष्ट कर दे जो अकारण सत्य को छोड़ते हैं। *

دل نمیدارند و چشم و گوش ہم   باز سر پیچاں ازاں بدرِ اتم

न तो हृदय रखते हैं, न आंखें, न कान इस पर भी उस चौदहवीं के चन्द्रमा से उपद्रव करते हैं। *

① अन्कबूत : 70

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

अधूरा सा पढ़ लिया है, उनका ईमान देवताओं और मूर्तियों पर है और द्वैतवादियों को कहते हैं कि उन का धर्म जो मूर्ति पूजा है वह बहुत अच्छा है और तौहीद

शेष हाशिया नं. (11)

ज्ञात करने से हमारे समस्त विरोधी असमर्थ रहे, फिर देखना चाहिए कि ख़ुदा तआला ने उन्हें किस संक्षेप और उत्तमता से अत्यन्त संक्षिप्त इबारत में भर दिया है, फिर इस ओर ध्यान देना चाहिए कि इन सच्चाइयों तथा श्रेष्ठ संक्षेप के अतिरिक्त अन्य क्या-क्या सूक्ष्मताएं हैं जो इस शुभ सूरह

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

دین شان بر قصہ ہا دارد مدار　　گفتگوہا بر زباں دل بے قرار

उनके धर्म का आधार केवल कहानियों पर है, मुख पर तो बातें हैं
परन्तु हृदय असन्तुष्ट *

فرق بسیار است در دید و شنید　　خاک بر فرقِ کسے کیں را ندید

देखने ओर सुनने में बड़ा अन्तर है, उस व्यक्ति पर अफ़सोस जिसने
इस बात को नहीं समझा। *

دید را کُن جستجو اے ناتمام　　ورنہ درکار خودی بس سردو خام

हे अपूर्ण मनुष्य! आध्यात्म ज्ञान को तलाश कर अन्यथा तू अपने
लक्ष्य में अपूर्ण और असफल रहेगा, *

بر سماعت چوں ہمہ باشد بنا　　آں نیفزاید جوئے صدق و صفا

जबकि समस्त आधार सुनी हुई बातों पर हो तो वह जौ के दाने के
बराबर भी श्रद्धा और निष्ठा को अधिक नहीं कर सकता। *

صد ہزاراں قصہ از روئے شنید　　نیست یکساں باجوئے کاں ہست دید

लाखों सुनी हुई कथाएं एक जौ के बराबर भी नहीं होतीं जो
चश्मदीद हो। *

Ⓟدیں ہمان باشد کہ نورش باقی است　　و از شراب دید ہر دم ساقی است　　Ⓟ540

धर्म वही है जिसका प्रकाश स्थायी हो और हर समय आध्यात्म ज्ञान
की मदिरा का प्याला पिलाता हो। *

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

(एकेश्वरवाद) का धर्म जो मुसलमान रखते हैं यह कुछ नहीं। ये वही लोग हैं जिन पर ख़ुदा ने लानत की है और जिस पर ख़ुदा लानत करे उसके लिए कोई

शेष हाशिया नं. (11)

में भरी हुई हैं। यदि हम यहां उन समस्त बारीकियों का वर्णन करें तो यह विषय एक रजिस्टर बन जाएगा, केवल कुछ सूक्ष्म बातें बतौर नमूना वर्णन की जाती हैं। प्रथम यह है कि ख़ुदा तआला ने इस सूरह में दुआ करने का ऐसा उत्तम ढंग बताया है जिस से उत्तमतर ढंग उत्पन्न होना संभव नहीं
℗477 तथा जिसमें वे समस्त बातें ℗एकत्र हैं जो दुआ में हार्दिक उत्तेजना उत्पन्न करने के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। विवरण इसका यह है कि दुआ की

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

دل مده الّا بخوبی کز جمال　　و انماید بر تو آیاتِ کمال

उस रूपवान के अतिरिक्त अन्य किसी को दिल न दे जो अपने सौन्दर्य के कारण तुझे उच्च श्रेणी के निशान दिखाता है। *

کوریٔ خود ترک کن ماہے بہ بیں　　اے گدا برخیز واں شاہے بہ بیں

अपनी नेत्रहीनता को छोड़ और चन्द्रमा को देख हे भिक्षु! उठा और उस बादशाह पर दृष्टि डाल। *

رو بہ بیں و قد بہ بیں و خد بہ بیں　　واز محاسنہائے خوباں صد بہ بیں

चेहरा देख, आकार देख, शक्ल और आकृति देख और रूपवानों जैसे सैकड़ों गुण देख। *

℗541 ℗یکدم از خود دور شو بہر خدا　　تا مگر نوشی تو کاساتِ لقا

ख़ुदा के लिए स्वयं से पूर्णतया पृथक हो जा ताकि तू मिलन के प्याले पिए। *

دین حق شہر خدائے امجد است　　داخلِ او در امانِ ایزد است

सच्चा धर्म तो महान और श्रेष्ठतम ख़ुदा का शहर है जिसने उसमें प्रवेश किया वह ख़ुदा की सुरक्षा में आ गया। *

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

सहायक नहीं।

℗अब इस भाषण का सारांश यह है कि यदि आंहज़रत अनपढ़ न होते तो इस्लाम ℗495

शेष हाशिया नं. (11)

स्वीकारिता के लिए आवश्यक है कि उसमें एक उत्तेजना हो क्योंकि जिस दुआ में उत्तेजना का अभाव हो वह केवल शाब्दिक शेखी है वास्तविक दुआ नहीं, परन्तु यह भी स्पष्ट है कि दुआ में उत्तेजना का उत्पन्न होना प्रत्येक समय मनुष्य के अधिकार में नहीं अपितु मनुष्य के लिए नितान्त आवश्यक है कि दुआ करते समय जो बातें हार्दिक जोश और उत्तेजना की प्रेरक हैं

शेष हाशिए का हाशिया नं. (3)

در دمے نیک و خوش اسلوبی کند ہم چو خود زیبا و محبوبی کند

वह तो एक पल में नेक और समृद्ध बना देता है और अपने समान रूपवान और प्रिय बना देता है। *

جانبِ اہلِ سعادت پے بزن تا شوی روزے سعید اے جانِ من

भाग्यशाली लोगों की ओर क़दम उठा ताकि हे मेरी जान ! एक दिन तू भी भाग्यशाली हो जाए। *

℗اے بصد انکاروکیں از کودنی رو درِ حق زن چرا سر می زنی ℗542

हे वह व्यक्ति जो मूर्खतावश अत्यन्त इन्कारी और शत्रु है क्यों झक मारता है जा और परमेश्वर का द्वार खटखटा। *

نالہا کُن کے خداوندِ یگاں بگسلاں از پائے من بند گراں

फरियाद कर कि हे भागीदार रहित एक ख़ुदा मेरे पैरों की भारी ज़ंजीरें खोल दे। *

تا مگر زاں نالہائے درد ناک دست غیبی گیردت ناگہہ زِ خاک

कदाचित इस पीड़ादायक आर्तनाद से एक परोक्ष का हाथ तुझे धरती पर से उठा ले। *

بے عنایاتِ خدا کار است خام پُختہ داند ایں سخن را والسلام

ख़ुदा की कृपा के अभाव में कार्य अपूर्ण रहता है। मनीषी ही इस बात को भलीभांति समझता है। *

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

के विरोधी विशेषकर यहूदी और ईसाई जिन्हें आस्थागत विरोध के अतिरिक्त यह भी और शत्रुता भी साथ लगी हुई थी कि बनी इस्राईल में से रसूल नहीं आया अपितु

शेष हाशिया नं. (11)

वे उसके विचार में मौजूद हों। यह बात प्रत्येक बुद्धिमान पर स्पष्ट है कि हार्दिक उत्तेजना उत्पन्न करने वाली केवल दो ही बातें हैं। **प्रथम** ख़ुदा को पूर्ण, शक्तिमान, पूर्ण विशेषताओं का अधिष्ठाता समझकर उसकी कृपा और दया को प्रारंभ से अंत तक अपने अस्तित्व और स्थायित्व के लिए आवश्यक समझना, समस्त लाभों और कृपाओं का उदगम उसी को विचार
Ⓟ478 करना। **द्वितीय** – स्वयं को तथा सहजाति को Ⓟविनीत, असहाय तथा ख़ुदा की सहायता का मुहताज विश्वास करना। यही दो बातें हैं जिन से दुआओं में जोश उत्पन्न होता है तथा जोश उत्पन्न करने का पूर्ण माध्यम हैं। कारण यह है कि मनुष्य की दुआ में तब ही जोश उत्पन्न होता है जब वह स्वयं को सरासर असहाय, अशक्त तथा ख़ुदा की सहायता का मुहताज देखता है तथा ख़ुदा के संबंध में नितान्त दृढ़तापूर्वक यह विश्वास रखता है कि वह नितान्त शक्तिमान, समस्त संसारों का प्रतिपालक, दयालु, कृपालु तथा भौतिक बातों का स्वामी है तथा जो कुछ मानव आवश्यकताएं हैं का पूर्ण करना उसी के अधिकार में है। अत: सूरह फ़ातिहा के प्रारंभ में अल्लाह तआला के सन्दर्भ जो वर्णन किया गया है कि वही एक हस्ती है जो सम्पूर्ण कीर्तियों से सरस-सुबोध तथा समस्त विशेषताओं की संग्रहीता है और वही एक हस्ती है जो समस्त लोगों की प्रतिपालक, समस्त कृपाओं का उद्गम और सभी को उनके कार्यों का प्रतिफल देने वाली है। अत: इन विशेषताओं
Ⓟ479 का वर्णन करके अल्लाह तआला ने भली भांति स्पष्ट कर दिया कि Ⓟसब शक्तियों पर उसी का अधिकार है तथा प्रत्येक लाभ उसी की ओर से है तथा इतनी श्रेष्ठता वर्णन की कि इस लोक और परलोक के कार्यों संबंधी आवश्यकताओं का पूर्ण करने वाला और प्रत्येक वस्तु का प्रमुख कारण तथा प्रत्येक लाभ का उदगम् अपनी हस्ती को ठहराया, जिसमें यह भी संकेत किया है कि उसकी हस्ती तथा उसकी कृपा के अभाव में किसी

उनके भाइयों में से जो बनी इस्माईल हैं आया। वे घटना के विपरीत एक स्पष्ट बात देखकर क्योंकर चुप रहते। नि:सन्देह उन पर यह बात पूर्ण रूप से सिद्ध हो चुकी

शेष हाशिया नं. 11

प्राणी का जीवन और सुख-चैन संभव नहीं। फिर मनुष्य को विनीतता और ख़ाकसारी की शिक्षा दी और फ़रमाया -

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

इसके अर्थ ये हैं कि समस्त अनुदानों के उद्गम हम तेरी ही उपासना करते हैं और तुझ से ही सहायता मांगते हैं अर्थात हम निर्बल हैं स्वयं से कुछ भी नहीं कर सकते जब तक तेरी दी हुई सामर्थ्य और सहयोग न हो। अत: ख़ुदा तआला ने दुआ में जोश दिलाने के लिए दो प्रेरक वर्णन किए। एक अपनी श्रेष्ठता तथा साथ रहने वाली कृपा दूसरे मनुष्यों का असहाय और अपमानित होना। अत: जानना चाहिए कि यही दो प्रेरक हैं जिनका दुआ के Ⓟसमय विचार में लाना दुआ करने वालों के लिए नितान्त आवश्यक है।Ⓟ480
जो लोग दुआ की अवस्था से किसी सीमा तक अनुभव रखते हैं उन्हें भली भांति ज्ञात है कि इन दोनों प्रेरकों के सामने आए बिना दुआ हो ही नहीं सकती तथा इनके अभाव में ख़ुदा की अभिलाषा की अग्नि दुआ में अपने शोलों को नहीं भड़काती। यह बात नितान्त स्पष्ट है कि जो व्यक्ति ख़ुदा की श्रेष्ठता, कृपा और पूर्ण क़ुदरत को स्मरण नहीं रखता वह किसी प्रकार से ख़ुदा की ओर नहीं लौट सकता और जो व्यक्ति विनीतता, विवशता और दरिद्रता का इक़रार नहीं करता उसकी आत्मा उस दयालु स्वामी (ख़ुदा) की ओर कदापि झुक नहीं सकती। अत: यह ऐसी सच्चाई है जिसे समझने के लिए कोई बारीक दर्शन आवश्यक नहीं अपितु जब ख़ुदा की श्रेष्ठता और अपना अपमान और विवशता हृदय में प्रमाणित तौर पर चित्रित हो तो वह विशेष अवस्था मनुष्य को स्वयं समझा देती है कि शुद्ध रूप से दुआ करने का वही माध्यम है। सच्चे उपासक भली भांति समझते हैं कि वास्तव में उन्हें Ⓟदुआ के लिए इन्हीं दो बातों की कल्पना आवश्यक है अर्थात प्रथमⓅ481

थी कि जो कुछ आंहज़रत (स.अ.व.) के मुख से निकलता है वह किसी अनपढ़ और अशिक्षित का कार्य नहीं और न दस-बीस व्यक्तियों का कार्य है। तब ही तो

शेष हाशिया नं. 11

इस बात की कल्पना कि ख़ुदा तआला प्रत्येक प्रकार के प्रतिपालन और पोषकता, कृपा और प्रतिफल देने पर समर्थ है और उसकी ये पूर्ण विशेषताएं हमेशा अपने कार्य में कार्यरत हैं। दूसरे इस बात की कल्पना कि मनुष्य ख़ुदा की दी हुई सामर्थ्य और ख़ुदा के सहयोग के बिना किसी वस्तु को प्राप्त नहीं कर सकता। निसन्देह ये दोनों कल्पनाएं ऐसी हैं कि जब दुआ करते समय हृदय में दृढ़ हो जाती हैं तो सहसा मनुष्य की दशा को ऐसा परिवर्तित कर देती हैं कि एक अभिमानी उनसे प्रभावित होकर रोता हुआ पृथ्वी पर गिर पड़ता है और एक उद्दण्ड निष्ठुर के आंसू जारी हो जाते हैं, यही उपाय है जिससे एक संज्ञाहीन रूपी मुरदे में जान पड़ जाती है। इन्हीं दो बातें की कल्पना से प्रत्येक हृदय दुआ करने की ओर आकर्षित हो जाता है। अतः यही वह अध्यात्मिक माध्यम है जिससे मनुष्य की आत्मा ख़ुदा के सामने होती है तथा अपनी कमज़ोरी और ख़ुदा की सहायता पर दृष्टि पड़ती है उसी के द्वारा मनुष्य एक ऐसी आसक्तता की अवस्था में पहुंच जाता है जहां अपनी अपवित्र हस्ती का निशान शेष नहीं रहता, केवल एक महान हस्ती का चमकता हुआ प्रताप दिखाई देता है, वही हस्ती पूर्ण दया तथा प्रत्येक हित का उद्देश्य दिखाई देती है, अन्ततः उससे एक ख़ुदा में
Ⓟ482 लीन होने की Ⓟअवस्था प्रकटित हो जाती है जिस के प्रकटन से न मनुष्य सृष्टि की ओर झुका रहता है और न अपने प्राण की ओर, न अपनी इच्छा की ओर केवल ख़ुदा के प्रेम में खो जाता है तथा उस वास्तविक हस्ती के दर्शन से अपनी और अन्य सृष्ट वस्तुओं का अस्तित्व दुर्लभ मालूम होता है। इस अवस्था का नाम ख़ुदा ने सदमार्ग रखा है जिसकी अभिलाषा हेतु मनुष्य को शिक्षा दी और कहा اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ अर्थात् हमें वह आसक्तता, एकेश्वरवाद और ख़ुदा के प्रेम का मार्ग जो उपर्युक्त आयतों से विदित हो रहा है हमें प्रदान कर तथा अपने अतिरिक्त से पूर्णतया पृथक कर। तात्पर्य यह कि ख़ुदा तआला ने दुआ में जोश उत्पन्न करने के लिए वे

वे अपनी मूर्खता से اَعَانَهٗ ℗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ[1] कहते थे तथा जो उनमें से निपुण और ℗496
वास्तव में ज्ञानी थे वे भली भांति ज्ञात कर चुके थे कि क़ुर्आन मानव शक्तियों से

शेष हाशिया नं. 11

वास्तविक संसाधन प्रदान किए जो इतनी हार्दिक उत्तेजना उत्पन्न करते हैं कि दुआ करने वाले को अहंकार की अवस्था से तल्लीनता और नास्ति की अवस्था में पहुंचा देते हैं। यहां यह भी स्मरण रखना चाहिए कि यह बात कदापि नहीं कि दुआ के कई उपायों में से हिदायत मांगने का एक उपाय सूरह फ़ातिहा है अपितु जैसा कि उपर्युक्त तर्कों द्वारा सिद्ध हो चुका है कि वास्तव में यही एक उपाय है जिस पर हार्दिक जोश के साथ दुआ का होना निर्भर है और जिस पर मानव स्वभाव अपनी स्वाभाविक ℗मांग के कारण ℗483
चलना चाहता है। वास्तविकता यह है कि जिस प्रकार ख़ुदा ने अन्य बातों में नियमों को सुनियोजित किया है इसी प्रकार दुआ के लिए भी एक नियम विशेष है और वह नियम वही दो प्रेरक हैं जिनका सूरह फ़ातिहा में उल्लेख है तथा संभव नहीं कि जब तक वे दोनों प्रेरक किसी के विचार में न हों तब तक उसकी दुआ में जोश उत्पन्न हो सके। अतः दुआ मांगने का स्वाभाविक मार्ग वही है जिसका सूरह फ़ातिहा में उल्लेख किया गया है। सूरह फ़ातिहा की सूक्ष्मताओं में से यह एक नितान्त उत्तम सूक्ष्मता है कि दुआ को उसके प्रेरकों सहित वर्णन किया है। अतः विचार कर।

फिर इस सूरह में एक **दूसरा रहस्य** यह है कि हिदायत की स्वीकारिता के लिए प्रेरणा के सम्पूर्ण संसाधन वर्णन किए हैं क्योंकि पूर्ण प्रेरणा जो उचित तौर पर दी जाए एक शक्तिशाली आकर्षण है तथा बौद्धिक निर्भरता की दृष्टि से पूर्ण प्रेरणा उस प्रेरणा का नाम है जिसमें तीन भाग विद्यमान हों। प्रथम यह कि जिस वस्तु की ओर प्रेरणा देना निहित हो उसकी व्यक्तिगत विशेषता का वर्णन किया जाए। अतः इस बात का इस आयत में वर्णन किया है - اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ अर्थात हमें वह मार्ग बता जो अपनी हस्ती में स्थायित्व और सच्चाई की विशेषता से सुसज्जित है ℗जिसमें थोड़ी सी वक्रता नहीं। अतः इस आयत में उस मार्ग की व्यक्तिगत ℗484

① अलफ़ुरक़ान : 5

बाहर है तथा उन पर विश्वास का द्वार ऐसा खुल गया था कि उनके पक्ष में ख़ुदा ने फ़रमाया [1] يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ अर्थात उस नबी को ऐसा पहचानते

शेष हाशिया नं. (11)

विशेषता का वर्णन करके उसकी प्राप्ति की प्रेरणा दी। प्रेरणा का द्वितीय भाग यह है कि जिस वस्तु की ओर प्रेरणा देना निहित हो उस वस्तु के लाभ वर्णन किए जाएं। अतः इस भाग का इस आयत में वर्णन किया صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ अर्थात हमें उस मार्ग पर चला जिस पर चलने से पूर्व ख़ुदा के मार्ग के साधकों पर दया और इनाम हो चुका है। अतएव इस आयत में मार्ग पर चलने वालों का सफल होना वर्णन करके इस मार्ग की जिज्ञासा उत्पन्न की। प्रेरणा का तृतीय भाग यह है कि जिस वस्तु की ओर प्रेरणा देना निहित हो उस वस्तु के छोड़ने वालों की खराबी और दुर्दशा का वर्णन किया जाए। अतएव इस भाग का इस आयत में वर्णन किया – غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ अर्थात् उन लोगों के मार्गों से बचा जिन्होंने सदमार्ग को छोड़ा तथा अन्य मार्गों का अनुसरण किया तथा ख़ुदा के प्रकोप-भाजन बने और पथभ्रष्ट हुए। अतः इस आयत में उस सदमार्ग के छोड़ने पर जो हानि पहुंचती है उससे अवगत किया। अतः सूरह फ़ातिहा में प्रेरणा के तीनों भागों का उत्तम शैली में वर्णन किया, व्यक्तिगत विशेषता भी वर्णन की, लाभों का भी वर्णन किया फिर उस मार्ग का त्याग करने
Ⓟ485 वालों की असफलता और दुर्दशा का Ⓟभी वर्णन किया ताकि व्यक्तिगत विशेषता को सुनकर दूरदर्शी लोग उसकी ओर आकर्षित हों और लाभों से अवगत होकर जो लोग लाभों के इच्छुक हैं उनके हृदयों में जिज्ञासा उत्पन्न हो तथा त्याग करने की बुराइयां ज्ञात करके उस दैवी-कष्ट से भयभीत हों जो त्याग करने पर लागू होगा। अतः यह भी एक पूर्ण सूक्ष्मता है जिसे इस स्थिति में अनिवार्य किया गया। फिर इस सूरह में **तीसरा रहस्य** यह है कि बावजूद सुसज्जित और अलंकृत शैली की निरन्तरता के यह विशेषता प्रदर्शित की है कि ख़ुदा की कीर्तियों और प्रशंसाओं की चर्चा

---

[1] अलबक़रह : 147

हैं कि जैसा अपने बेटों को पहचानते हैं और वास्तव में यह विश्वास और ख़ुदा को पहचानने के ज्ञान का द्वार कुछ उनके लिए ही नहीं खुला अपितु इस युग में भी

शेष हाशिया नं. (11)

करने के पश्चात दुआ इत्यादि के सन्दर्भ में जो वाक्य लिखे हैं उन्हें ऐसी उत्तम शैली पर क्रमबद्ध उपमेय और उपमान बतौर वर्णन किया है जिसका स्पष्टता के साथ वर्णन करना सरस-सुबोध शैली की समस्त श्रेणियों को ध्यान में रखने के बावजूद बहुत कठिन होता है और जो लोग Ⓟवार्ता में Ⓟ486
दक्ष हैं भली भांति समझते हैं कि इस प्रकार का उपमेय और उपमान कैसा कोमल और बारीक कार्य है। इसका विवरण यह है कि ख़ुदा तआला ने प्रथम ख़ुदाई कीर्तियों में चार वरदानों की चर्चा की कि वह समस्त संसारों का प्रतिपालक है, कृपालु है, दयालु है, प्रतिफल और दण्ड दिवस का स्वामी है। तत्पश्चात् उसके वाक्य उपासना, सहायता, दुआ तथा प्रतिफल की याचना को उन्हीं के अन्तर्गत इस उत्तमता से लिखा है कि जिस वाक्य को किसी प्रकार के वरदान से नितान्त अनुकूलता थी उसी के अन्तर्गत यह वाक्य लिखा। अतः 'रब्बुल आलमीन' के मुकाबले पर 'इय्याका ना'बुदो' लिखा क्योंकि रबूबियत (प्रतिपालन) से उपासना की पात्रता आरंभ हो जाती है। अतः इसी के अन्तर्गत और इसी के मुकाबले में 'इय्याका नाबुदो' का लिखना नितान्त उचित और अनुकूल है तथा रहमान के मुक़ाबले पर 'इय्याका नस्तईन' लिखा क्योंकि मनुष्य के लिए ख़ुदाई सहायता जो उपासना की सामर्थ्य और उसके प्रत्येक उद्देश्य में Ⓟहोती है जिस पर उस Ⓟ487
की इस लोक (संसार) और परलोक की योग्यता निर्भर है। यह उसके किसी कर्म का कर्मफल नहीं अपितु केवल दयालुता की विशेषता का प्रभाव है। अतः सहायता को दयालुता की विशेषता से अत्यन्त अनुकूलता है तथा रहीम (कृपालु) के मुकाबले पर 'इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम' लिखा क्योंकि दुआ एक पराक्रम और प्रयास है और प्रयासों पर जो फल प्राप्त होता है वह 'रहीमियत' (कृपालुता) का प्रभाव है तथा 'मालिके यौमिद्दीन' के मुकाबले पर 'सिरातल्लज़ीना अनअम्ता अलैहिम ग़ैरिल मग़ज़ूबे अलैहिम

Ⓟ497 सब के लिए खुला है क्योंकि क़ुर्आन करीम की सच्चाई ज्ञात करने के Ⓟलिए अब भी वे ही क़ुर्आनी चमत्कार और वे ही प्रभाव और वे ही समर्थन और वे ही सन्देह

शेष हाशिया नं. (11)

वलद्दाल्लीन' लिखा क्योंकि प्रभुत्व की बात मालिके यौमिद्दीन के संबंध में है। अतः ऐसा वाक्य जिसमें इनाम की इच्छा और अज़ाब से सुरक्षा का निवेदन है इसी के अन्तर्गत रखना उचित है।

चौथा रहस्य यह है कि सूरह फ़ातिहा संक्षिप्त तौर पर क़ुर्आन करीम
Ⓟ488 के समस्त उद्देश्यों पर आधारित है जैसे यह सूरह Ⓟक़ुर्आनी उद्देश्यों का एक उत्तम संक्षेप है। इसी की ओर अल्लाह तआला ने संकेत किया है। وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ[1] अर्थात हमने तुझे हे रसूल सूरह फ़ातिहा की सात आयतें प्रदान की हैं जो संक्षिप्त तौर पर समस्त क़ुर्आनी उद्देश्यों पर आधारित हैं तथा उनके मुक़ाबले पर क़ुर्आन करीम भी प्रदान किया है जो धार्मिक उद्देश्यों को विस्तारपूर्वक प्रकट करता है तथा इसी दृष्टि से इस सूरह का नाम **'उम्मुल किताब'** और **'सूरह अलजामिअ'** है। 'उम्मुल किताब' इस दृष्टि से कि समस्त क़ुर्आनी उद्देश्य उससे निकाले जा सकते हैं और 'सूरह अलजामिअ' इस दृष्टि से कि इसमें क़ुर्आनी ज्ञानों के समस्त प्रकारों का संक्षिप्त रूप में समावेश है। इसी दृष्टि से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाया है कि जिसने सूरह फ़ातिहा को पढ़ा जैसे उसने सम्पूर्ण क़ुर्आन को पढ़ लिया। अतएव क़ुर्आन करीम
Ⓟ489 तथा नबी करीम (स.अ.व.) की हदीसों से प्रमाणित है Ⓟकि प्रशंसित सूरह फ़ातिहा क़ुर्आन को दिखाने वाला एक दर्पण है। इसकी व्याख्या यह है कि क़ुर्आन करीम के उद्देश्यों में से एक यह है कि वह ख़ुदा तआला की सम्पूर्ण कीर्तियों और प्रशंसाओं का वर्णन करता है तथा उसकी हस्ती के लिए जो पूर्ण विशेषता प्राप्त है उसे व्याख्या सहित वर्णन करता है। अतः यह **उद्देश्य** सूरह फ़ातिहा में اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ में बतौर संक्षेप आ गया क्योंकि उसके अर्थ ये हैं कि सम्पूर्ण प्रशंसाएं ख़ुदा के लिए प्रमाणित हैं जो सम्पूर्ण विशेषताओं

[1] अलहजर : 88

रहित निशान विद्यमान हैं जो उस युग में मौजूद थे। ख़ुदा तआला ने इस दृढ़ धर्म को स्थापित रखना था, इसलिए उसकी समस्त बरकतें और सब निशान स्थापित

शेष हाशिया नं. (11)

का संग्रहीता और सम्पूर्ण उपासनाओं के योग्य है। **दूसरा उद्देश्य** क़ुर्आन करीम का यह है कि वह ख़ुदा का पूर्ण स्रष्टा होना तथा समस्त लोकों का स्रष्टा होना प्रकट करता है तथा संसार के प्रारंभ का हाल वर्णन करता है और जो संसार की परिधि में ®प्रवेश कर चुका उसे सृष्टि ठहराता है और ®490 जो लोग इन बातों के विरोधी हैं उनका झूठ सिद्ध करता है। अतः यह **उद्देश्य रब्बुल-आलमीन** (समस्त संसारों के प्रतिपालक) में बतौर संक्षेप आ गया। क़ुर्आन करीम का **तीसरा उद्देश्य** ख़ुदा के वरदान को बिना पात्रता के सिद्ध करना तथा उसकी सामान्य दया का वर्णन करना है। अतः यह **उद्देश्य** शब्द **'रहमान'** में बतौर संक्षेप आ गया। क़ुर्आन करीम का **चौथा उद्देश्य** ख़ुदा का वह वरदान सिद्ध करना है जो परिश्रम और प्रयास के परिणामस्वरूप होता है। अतः यह उद्देश्य शब्द **'रहीम'** में आ गया। क़ुर्आन करीम का **पांचवां उद्देश्य** परलोक की वास्तविकता का वर्णन करना है, अतः यह **उद्देश्य 'मालिके यौमिद्दीन'** में आ गया। क़ुर्आन करीम का **छठा उद्देश्य** निश्छलता, बन्दगी, अल्लाह के अलावा से आत्मा को पवित्र करना, अध्यात्मिक रोगों का निदान, अधमतापूर्ण नैतिकता का सुधार तथा उपासना में एकेश्वरवाद का वर्णन करना है। अतः यह **उद्देश्य 'इय्याका ना'बुदो'** में बतौर संक्षेप आ गया। क़ुर्आन करीम का **सातवां उद्देश्य**-प्रत्येक कार्य में वास्तविक कर्ता ख़ुदा को ठहराना और समस्त सामर्थ्य, आनन्द, सहायता, आज्ञाकारिता में दृढ़ता, पाप से पवित्रता, नेकी के सम्पूर्ण संसाधनों की प्राप्ति तथा दीन (धर्म) और दुनिया की योग्यता का उसी की ओर से ठहराना तथा उन समस्त बातों में उसी के सहयोग की इच्छा हेतु सतर्क करना। अतः यह उद्देश्य **'इय्याका नस्तईन'** में बतौर संक्षेप आ गया। क़ुर्आन करीम का **आठवां** उद्देश्य सदमार्ग की बारीकियों का वर्णन करना है तत्पश्चात उसकी इच्छा हेतु चेतावनी देना कि दुआ और गिड़गिड़ाने से उसे मांगें। अतः यह

रखे तथा ईसाइयों, यहूदियों और हिन्दुओं के अक्षरांतरित, मिथ्या और अपूर्ण धर्मों को समूल उखाड़ना था, इस दृष्टि से उनके पास केवल क़िस्से ही क़िस्से रह गए

शेष हाशिया नं. (11)

उद्देश्य '**इह्दिनस्सिरातल मुस्तक़ीम**' में बतौर संक्षेप के आ गया। क़ुर्आन करीम का **नौवां** उद्देश्य उन लोगों के मार्ग और आचरण का वर्णन करना है जिन पर ख़ुदा की कृपा और इनाम हुआ ताकि सत्याभिलाषियों के हृदय सन्तोष धारण करें। अत: यह उद्देश्य '**सिरातल्लज़ीना अनअम्ता अलैहिम**' में आ गया। क़ुर्आन करीम का **दसवां उद्देश्य** उन लोगों के सदाचार और मार्ग का वर्णन करना है जिन पर ख़ुदा का प्रकोप हुआ अथवा जो मार्ग से भटक कर नाना प्रकार की बिदअतों (धर्म में नई बातों का समावेश करना) में पड़ गए ताकि सत्याभिलाषी उनके मार्गों से भयभीत हों। अत: यह उद्देश्य 'ग़ैरिल मग़्दूबे अलैहिम वलद्वाल्लीन' में बतौर संक्षेप आ गया है। ये दस उद्देश्य हैं जिनका क़ुर्आन करीम में उल्लेख है जो समस्त सच्चाइयों का मूल आधार हैं। अत: ये समस्त उद्देश्य सूरह फ़ातिहा में संक्षिप्त तौर पर आ गए।

Ⓟ493 Ⓟ**पांचवां रहस्य** सूरह फ़ातिहा में यह है कि इस पूर्णतम शिक्षा पर आधारित है जो सत्याभिलाषी के लिए आवश्यक है तथा सानिध्य और आध्यात्म ज्ञान की उन्नति के लिए पूर्ण कार्यक्रम है क्योंकि सानिध्य की उन्नति का प्रारंभ उस अध्यात्मिक प्रगति से है कि जब साधक अपने प्राण पर एक मृत्यु स्वीकार करके तथा कठोरता और कष्टों को उचित समझ कर
Ⓟ494 Ⓟउन समस्त काम-भावनाओं से शुद्ध रूप से ख़ुदा के लिए पृथक हो जाए कि जो उसमें और उसके दयालु स्वामी (ख़ुदा) में अलगाव डालती हैं तथा उसे ख़ुदा से विमुख करके अपनी कामवासनाओं के आनन्द, भावनाओं, आदतों, विचारों, इच्छाओं तथा सृष्टि की ओर फेरती हैं तथा उनके भय
Ⓟ495 तथा आशाओं में ग्रस्त करती हैं। उन्नति की संतुलित श्रेणी Ⓟवह है कि जो प्रारंभिक स्तर पर भोग-विलास की इच्छा के दमन के लिए कष्ट उठाए जाते हैं और भौतिक अवस्था को छोड़कर भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्ट सहन करने पड़ते हैं वे समस्त कष्ट इनाम के रूप में प्रकट हो जाएं तथा परिश्रम

तथा ख़ुदाई बरकत और आकाशीय समर्थनों का नामो-निशान न रहा, उनकी किताबें ऐसे निशान बता रही हैं जिनके सबूत का एक ℗थोड़ा सा निशान उनके हाथ में नहीं℗498

शेष हाशिया नं. (11)

के स्थान पर आनन्द और दुख के स्थान पर सुख और संकीर्णता के स्थान पर प्रफुल्लता और उल्लास प्रकट हो। उन्नति की उच्च श्रेणी वह है ℗कि℗496 साधक ख़ुदा और उसके इरादों, इच्छाओं से इतनी एकता, प्रेम और परस्पर सहमति उत्पन्न कर ले कि उसका स्वयं का समस्त यथार्थ और प्रभाव जाता रहे तथा ख़ुदा की हस्ती और उसकी विशेषताएं अंधकार की मिलावट और आशंका के बिना उसके दर्पणरूपी अस्तित्व में प्रतिबिम्बित हो जाएं और पूर्ण विलीनता के दर्पण द्वारा जिस ने साधक और उसकी काम भावनाओं के ℗मध्य नितान्त दूरी डाल दी है ख़ुदा के अस्तित्व और विशेषताओं का℗497 प्रतिबिम्बित होना स्पष्ट तौर पर दृष्टिगोचर हो। इस वक्तव्य में कोई ऐसा शब्द नहीं है जिसमें वुजूदी या वेदान्तियों के मिथ्या विचार का समर्थन हो क्योंकि उन्होंने स्रष्टा और सृष्टि के अनादि अन्तर को नहीं पहचाना तथा अपने संदिग्ध कश्फ़ों के धोखे से जो अपूर्ण साधना ℗की अवस्था में प्रायः सामने℗498 आ जाते हैं या जो मूर्खतापूर्ण तपस्याओं का एक परिणाम होता है नितान्त भ्रान्तियों में पड़ गए या किसी ने निश्चेष्टता और अचेतना की अवस्था में जो एक प्रकार का पागलपन है इस अन्तर को दृष्टि से ओझल कर दिया कि जो ख़ुदा की रूह और मनुष्य की रूह में ताक़तों और शक्तियों, विशेषताओं और पवित्रताओं की दृष्टि से है अन्यथा स्पष्ट है ℗कि सर्वशक्तिमान जिस℗499 के अनादि ज्ञान से एक कण भी गुप्त नहीं तथा जिसकी ओर कोई क्षति और हानि नहीं आ सकती और जो हर प्रकार की असभ्यता, अपवित्रता, अशक्तता, चिन्ता और शोक, दुख-दर्द और लिप्तता से पवित्र है वह उस वस्तु का सदृश क्योंकर हो सकता है जो उन समस्त विपत्तियों से ग्रस्त है। क्या मनुष्य ℗जिसकी अध्यात्मिक उन्नति के लिए परिस्थितियां इतनी℗500 अधिक अभिलाषी हैं जिनका कोई अन्त दृष्टिगोचर नहीं होता। वह उस सम्पूर्ण विशेषताओं से सम्पन्न हस्ती से समान या उसका सदृश हो सकता

केवल पूर्वकालीन क़िस्सों का हवाला दिया जाता है, परन्तु क़ुर्आन करीम ऐसे निशान प्रस्तुत करता है जिन्हें प्रत्येक देख सकता है।

शेष हाशिया नं. (11)

है जिस के लिए कोई अभिलाषी परिस्थिति शेष नहीं ? क्या जिसकी नश्वर और जिस की आत्मा में मख़लूक होने का स्पष्ट दोष और अपूर्णताएं पाई

Ⓟ501 जाती हैं वह बावजूद अपनी समस्त अपवित्रताओं, अपूर्णताओं, Ⓟगन्दगियों, दोषों और हानियों के उस प्रतापी और तेजस्वी हस्ती के समान हो सकता है जो अपनी विशेषताओं, और पवित्र गुणों में अजर-अमर तौर पर पूर्ण एवं सर्वांगपूर्ण है سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ अपितु इस तीसरे प्रकार की उन्नति से हमारा तात्पर्य यह है कि साधक ख़ुदा के प्रेम में ऐसा विरक्त

Ⓟ502 और विलीन हो जाता है और अनुपम तथा Ⓟअद्वितीय हस्ती अपनी समस्त कामिल विशेषताओं के साथ उस से निकट हो जाती है कि ख़ुदावन्दी की झलकियां उसकी कामवासनाओं पर ऐसे प्रभुत्व जमा लेती हैं तथा उसे इस प्रकार अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं कि उसे अपनी कामभावनाओं से अपितु प्रत्येक से जो काम भावनाओं के अधीन हो पूर्ण पृथकता तथा

Ⓟ503 व्यक्तिगत शत्रुता उत्पन्न हो जाती है तथा इसमें और Ⓟदूसरे प्रकार की उन्नति में अन्तर यह है कि यद्यपि दूसरे प्रकार में भी अपने प्रतिपालक (ख़ुदा) की इच्छा से पूर्ण अनुकूलता उत्पन्न हो जाती है तथा उसका कष्ट देना भी इनाम के रूप में दिखाई देता है परन्तु अभी उसकां अल्लाह से ऐसा संबंध नहीं होता कि ख़ुदा के अतिरिक्त के साथ व्यक्तिगत शत्रुता उत्पन्न हो जाने का कारण हो जिसे ख़ुदा से प्रेम केवल हार्दिक उद्देश्य से ही न रहे अपितु हार्दिक स्वभाव भी हो जाए। अतएव दूसरे प्रकार की उन्नति में ख़ुदा से पूर्ण

Ⓟ504 अनुकूलता तथा उसके अलावा से शत्रुता Ⓟरखना साधक का उद्देश्य होता है तथा उस उद्देश्य की प्राप्ति से वह आनन्द पाता है परन्तु तीसरे प्रकार की उन्नति में ख़ुदा से पूर्ण अनुकूलता का उसके अलावा से शत्रुता स्वयं साधक का स्वभाव हो जाता है जिस स्वभाव को वह किसी भी परिस्थिति में छोड़

Ⓟ**आठवीं भूमिका** :- जो अद्भुत चमत्कार किसी वली (ऋषि) से प्रकट होता Ⓟ499
है वह वास्तव में उस अनुसरणीय व्यक्ति का चमत्कार है जिसकी वह उम्मत है तथा

शेष हाशिया नं. (11)

नहीं सकता, क्योंकि किसी वस्तु का अपने अस्तित्व से मुक्त होना दुर्लभ है (اِنۡفِکَاکُ الشَّیۡءِ عَنۡ نَفۡسِہٖ) दूसरे प्रकार के विपरीत कि उस में पृथक और मुक्त होना वैध है और जब तक किसी वली की अभिभावकता (सरपरस्ती) तीसरे प्रकार तक नहीं पहुंचती अस्थायी है तथा ख़तरों से शान्ति में नहीं, Ⓟकारण यह है कि जब तक मनुष्य के स्वभाव में ख़ुदा का Ⓟ505
प्रेम तथा उसके अतिरिक्त शत्रुता का समावेश नहीं तब तक उसमें अन्याय का कुछ अंश शेष है, क्योंकि उसने प्रतिपालन के कर्त्तव्य को यथायोग्य अदा नहीं किया तथा पूर्ण भेंट प्राप्त करने से अभी असमर्थ है, परन्तु जब उसके स्वभाव में ख़ुदा के प्रेम और ख़ुदा से सहमति भली भांति प्रवेश कर गई, यहां तक कि ख़ुदा उसके कान हो गया जिन से वह सुनता है और उसकी आंखें हो गया, जिन से वह देखता है, उसका Ⓟहाथ हो गया, जिससे Ⓟ506
वह पकड़ता है, उस का पैर हो गया जिस से वह चलता है तो फिर उसमें कोई अत्याचार शेष न रहा और प्रत्येक ख़तरे से शान्ति में आ गया। इसी श्रेणी की ओर संकेत है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है -

اَلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَلَمۡ یَلۡبِسُوۡۤا اِیۡمَانَہُمۡ بِظُلۡمٍ اُولٰٓئِکَ لَہُمُ الۡاَمۡنُ وَہُمۡ مُّہۡتَدُوۡنَ①

अब समझना चाहिए कि यह तीनों तरक़्क़ियां कि जो समस्त ज्ञानों और आध्यात्म ज्ञानों का मुख्य आधार अपितु धर्म का समस्त Ⓟसार है, सूरह Ⓟ507
फ़ातिहा में सम्पूर्ण उत्तमता, संक्षेप और उचित शैली की दृष्टि से वर्णन किए गए हैं। अतः प्रथम उन्नति के सानिध्य के मैदानों में चलने के लिए पहला क़दम है। इस आयत में शिक्षा दी गई है फिर फ़रमाया है - اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ क्योंकि प्रत्येक प्रकार की वक्रता और कुमार्ग से पृथक होकर और बिल्कुल ख़ुदा के सामने होकर सदमार्ग का धारण करना है यह वही सख़्त घाटी है जिसे दूसरे शब्दों में विरक्तता से चरितार्थ किया

① अलअन्आम : 83

Ⓟ500 व्यापक और स्पष्ट है, क्योंकि जब किसी बात का प्रकट होना Ⓟकिसी व्यक्ति और
किसी विशेष पुस्तक के अनुसरण से सम्बद्ध है तथा अनुसरण के बिना वह प्रकटन

शेष हाशिया नं. 11

गया है क्योंकि अपनी प्रिय और वे बातें जिनका वह अभ्यस्त हो चुका हो
Ⓟ508 को Ⓟसर्वथा छोड़ देना और कामभावनाएं जो एक आयु से उसका स्वभाव
बन चुकी हैं बिल्कुल त्याग देना और प्रत्येक मान-मर्यादा और अहंकार
तथा दिखावे से विमुख होकर और अल्लाह के अतिरिक्त को नास्ति समझ
कर सीधा ख़ुदा की ओर ध्यान देना वास्तव में एक ऐसा कार्य है जो मृत्यु
के समान है और यह मृत्यु अध्यात्मिक उत्पत्ति का आधार है और बीज
जब तक मिट्टी में नहीं मिलता और अपने रूप का त्याग नहीं करता तब
तक नए दाने का अस्तित्व में आना असंभव है। इसी प्रकार अध्यात्मिक
Ⓟ509 उत्पत्ति Ⓟका शरीर उस विरक्तता से तैयार होता है। बन्दे की आत्मा ज्यों,
ज्यों परास्त होती जाती है और उसका कर्म, इच्छा तथा प्रजा के समक्ष आना
समाप्त होता जाता है त्यों, त्यों अध्यात्मिक उत्पत्ति के अंग बनते जाते हैं
यहां तक कि जब पूर्ण रूप से विरक्तता प्राप्त हो जाती है तो दूसरे अस्तित्व
का लिबास प्रदान किया जाता है और ثُمَّ اَنْشَاْنَاهُ خَلْقًا اٰخَرَ का समय आ
जाता है अत: यह पूर्ण विरक्तता सर्वशक्तिमान ख़ुदा की सहायता, सामर्थ्य
और विशेष ध्यान के अभाव में संभव नहीं। इसलिए इस दुआ की शिक्षा
Ⓟ510 दी अर्थात اِهْدِنَاⓅ الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ जिसके अर्थ ये हैं कि हे ख़ुदा हमें
सीधे मार्ग पर स्थापित कर और प्रत्येक प्रकार के टेढ़ेपन और भटकने से
मुक्त कर और यह पूर्ण स्थायित्व तथा सदमार्ग का आचरण जिसे मांगने का
आदेश है नितान्त कठिन कार्य है तथा साधक पर प्रथम बार उसका प्रहार
एक बब्बर शेर की भांति है जिसके सामने मृत्यु दृष्टिगोचर होती है। अत:
यदि साधक ठहर गया और उस मृत्यु को गले लगा लिया तो फिर इसके
पश्चात् उसके लिए कोई मृत्यु कठिन नहीं और ख़ुदा इससे अधिकतम दयालु
Ⓟ511 है कि फिर उसे Ⓟयह भड़कता हुआ नरक दिखाए। अस्त यह सम्पूर्ण तप-
त्याग की निश्चलता वह आत्मविश्वास है जिससे पार्थिव मनुष्य को पूर्णतया

में ℗आ ही नहीं सकता तो व्यापक रूप से प्रमाणित है कि यद्यपि वह बात℗501
प्रत्यक्षतया किसी अनुयायी से प्रकटन में आई हो, ℗परन्तु वास्तव में उस बात का℗502

शेष हाशिया नं. (11)

पराजित होना पड़ता है और तामसिक वृत्तियों, वासनाओं, महत्वाकांक्षाओं तथा सभी अहं भावों की प्रक्रियाओं को सर्वथा तिलांजलि देना पड़ती है और यह स्थान साधना का वह स्थान है जिनमें मानवीय संघर्षों का यथेष्ट योगदान है तथा मानवीय तपस्याओं की बड़ी प्रेरणा है और यहीं तक महान
आत्माओं (वली और ऋषि) के प्रयत्न तथा ℗साधकों के त्यागमय संघर्ष℗512
समाप्त हो जाते हैं तत्पश्चात विशेष रूप से ईश्वरीय वदान्यताएं हैं जिनमें मानवीय प्रयत्न पीछे रह जाते हैं अपितु स्वयं परमेश्वर अपने अद्भुत लोकों का भ्रमण कराने के लिए बुर्राक़* जैसा अलौकिक वाहन प्रदान करता है।

दूसरी उन्नति जो सानिध्य के मैदानों में चलने के लिए दूसरा पग है। इस
आयत में शिक्षा ℗दी गई है जो फ़रमाया है صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ℗513
अर्थात हमें उन लोगों का मार्ग दिखा जिन पर तेरा इनाम और कृपा-दृष्टि है। यहां स्पष्ट रहे कि जो लोग इनाम प्राप्त हैं तथा ख़ुदा से प्रत्यक्ष और आन्तरिक ने'मतें पाते हैं विपत्तियों से ख़ाली नहीं हैं अपितु इस परीक्षा-गृह में उन्हें ऐसे-ऐसे कष्ट और विपत्तियां पहुंचती हैं कि यदि वे किसी अन्य को पहुंचतीं तो उसकी ईमानी सहायता समाप्त हो जाती परन्तु उन का नाम منعم علیہم इनाम प्राप्त लोग इस दृष्टि से रखा गया है कि वे प्रेम के प्रभुत्व के कारण आलाम (कष्टों) को इनाम के रूप में देखते हैं और
प्रत्येक शोक या आराम को जो उन्हें परम मित्र की ओर से पहुंचता है ℗प्रेम℗514
में तल्लीनता के कारण उस से आनंदित होते हैं। अतः सानिध्य में उन्नति का यह दूसरा प्रकार है जिस में अपने प्रियतम के समस्त कार्यों से आनन्द प्राप्त होता है और उसकी ओर से जो कुछ प्राप्त हो इनाम ही इनाम दिखाई देता है तथा इस स्थिति का कारण एक पूर्ण प्रेम और सच्चा संबंध होता है जो अपने प्रियतम से हो जाता है और यह एक विशेष अनुकम्पा होती है जिस में युक्ति और बहाने का कुछ योगदान नहीं अपितु ख़ुदा ही की ओर

* मान्यतानुसार मे'राज के समय अध्यात्मिक ऊंचाइयों के दर्शनार्थ भ्रमण के लिए परमेश्वर की ओर से दिए गए अलौकिक घोड़े का नाम है। (अनुवादक)

द्योतक वह नबी है जिसका अनुसरण किया गया है, जिसके अनुसरण पर उसका
Ⓟ503 प्रकटन आधारित है और इस Ⓟबात का रहस्य कि नबी का चमत्कार दूसरे के माध्यम

शेष हाशिया नं. (11)

से आती है और जब आती है तो फिर साधक एक दूसरा रूप धारण कर लेता है और उसके सर से समस्त भार उतारे जाते हैं और प्रत्येक कष्ट इनाम
Ⓟ515 ही मालूम Ⓟहोता है तथा उलाहना और उपालंभ का अन्त हो जाता है। अत: यह स्थिति ऐसी होती है कि मानो मनुष्य मृत्योपरांत जीवित किया गया है, क्योंकि इन वैमनस्य और कटुताओं से पूर्णतया बाहर आ जाता है जो पूर्व अवस्था में थीं जिनके कारण हर समय मृत्यु से सामना प्रतीत होता था, परन्तु अब चारों ओर से इनाम ही इनाम पाता है तथा इसी दृष्टि से उसकी अवस्थानुसार यथोचित यही था कि उस का नाम مُنْعَمْ عَلَيْه इनाम प्राप्त
Ⓟ516 रखा जाता तथा दूसरे शब्दों में इस अवस्था Ⓟका नाम अनश्वरता है क्योंकि साधक इस अवस्था में स्वयं को ऐसा पाता है कि वह मृतप्राय: था और अब जीवित हो गया और अपने हृदय में बड़ी समृद्धि और सीने में उल्लास पाता है और मानव होने के समस्त संकोच दूर हो जाते हैं तथा शाने ख़ुदावन्दी के प्रतिपालन संबंधी प्रकाश ने'मत रूपी वर्षा के समान बरसते हुए दिखाई देते हैं। इसी अवस्था में साधक पर प्रत्येक ने'मत का द्वार खोला जाता है तथा ख़ुदाई अनुकम्पाएं पूर्णतया ध्यान देती हैं। इस अवस्था का नाम अल्लाह में
Ⓟ517 भ्रमण करना है, Ⓟक्योंकि इस अवस्था में साधक को प्रतिपालन के चमत्कार प्रकट किए जाते हैं तथा जो ख़ुदा की ने'मतें दूसरों से गुप्त हैं इसे उनका भ्रमण कराया जाता है, सच्चे कश्फ़ों से लाभान्वित होता है तथा ख़ुदा से वार्तालाप के माध्यम से उन्नति पाता है तथा परलोक के बारीक रहस्यों से अवगत किया जाता है तथा ज्ञानों तथा आध्यात्म ज्ञानों से अत्यधिक भाग प्रदान किया जाता है। अतएव उसे बाह्य और आन्तरिक नै'मतों से बहुत सा भाग प्रदान किया
Ⓟ518 जाता है यहां तक कि Ⓟवह पूर्ण विश्वास के उस स्तर तक पहुंचता है कि मानो वास्तविक व्यवस्थापक (परमेश्वर) को स्वयं अपनी आंखों से देखता है। अत: उसे इस प्रकार ईश्वरीय रहस्यों के पूर्ण ज्ञान प्रदान किए जाते हैं

से प्रकटित होता जाता है यह है कि जब एक व्यक्ति ℗उसी बात का पालन करता है℗504 कि जिसे उसके शरीअत लाने वाले ने कहा है तथा उस बात से बचता है जिसे उसके

शेष हाशिया नं. (11)

इसका नाम अल्लाह में भ्रमण करना है, परन्तु यह वह अवस्था है जिस में ख़ुदा तआला का प्रेम मनुष्य को दिया तो जाता है परन्तु स्वाभाविक तौर पर उसमें स्थापित नहीं किया जाता अर्थात् उसकी प्रकृति ℗का भाग नहीं बनती℗519 अपितु उसमें सुरक्षित होती है।

तीसरी उन्नति जो सानिध्य प्राप्ति के मार्गों में चलने के लिए अन्तिम पग है। इस आयत में शिक्षा दी गई है जैसा ℗कि फ़रमाया है - غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ℗520 عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ यह वह पद है जिसमें मनुष्य को ख़ुदा के प्रेम और उस के अतिरिक्त की शत्रुता स्वभाव में प्रविष्ट हो जाती है और उस में स्वाभाविक तौर पर स्थायित्व धारण करती है ℗तथा इस पद का पात्र ख़ुदा℗521 के शिष्टाचारों से स्वाभाविक रूप से ऐसा ही प्रेम करता है कि जैसे वे शिष्टाचार ख़ुदा तआला के निकट प्रिय हैं तथा ख़ुदा तआला का व्यक्तिगत प्रेम उसके हृदय में इस सीमा तक घर कर जाता ℗है कि उसके हृदय से℗522 ख़ुदा के प्रेम का पृथक होना दुर्लभ और असंभव होता है और यदि उसके हृदय को और उसके प्राण को बड़ी-बड़ी परीक्षाओं और परीक्षणों के कठिन आघातों के मध्य रखकर कूटा जाए और निचोड़ा जाए तो ख़ुदा के प्रेम के अतिरिक्त उसके हृदय और प्राण से कुछ नहीं निकलता, उसी की पीड़ा से आनन्द पाता है ℗तथा उसी को निश्चित और वास्तविक तौर पर अपने हृदय℗523 की शान्ति समझता है। यह वह पद है जिस में सानिध्य की समस्त प्रगतियां समाप्त हो जाती हैं और मनुष्य अपने कमाल की उस चरम सीमा को पहुंच जाता है जो मानव स्वभाव के लिए निश्चित है।

ये **पांच** रहस्य हैं जिनका हम ने बतौर नमूना उल्लेख किया है मानो पूरे खलियान में से एक मुट्ठी भर लिया है परन्तु इस स्थिति में वास्तविक चमत्कार ℗एवं दूसरी सच्चाइयां और ईश्वरीय ज्ञान इतने हैं कि यदि उनके ℗524

Ⓟ505 Ⓟशरीअत लाने वाले ने रोका है तथा उसी किताब का पाबन्द रहता है जो उसके
Ⓟ506 शरीअत लाने वाले ने दी है, तो वह इस स्थिति Ⓟमें अपनी आत्मा से विस्मृत होकर

शेष हाशिया नं. (11)

सौवें भाग का भी (1/100) उल्लेख किया जाए तो उसके लिए एक बड़ी पुस्तक चाहिए। इस मुबारक सूरह में जो अध्यात्मिक विशेषताएं हैं वे भी ऐसी उच्च और आश्चर्यजनक हैं जिन्हें देख कर एक सत्याभिलाषी इस बात के इक़रार के लिए विवश हो जाता है कि निःसन्देह वह सर्वशक्तिमान की
Ⓟ525 वाणी है। अतएव इन समस्त उच्च कोटि की विशेषताओं में Ⓟसूरह फ़ातिहा में एक अध्यात्मिक विशेषता यह है कि एकाग्रचित होकर अपनी नमाज़ में इसे नित्यकर्म (विर्द) बना लेना तथा उसकी शिक्षा को वास्तव में सत्य समझ कर अपने हृदय में स्थापित कर लेने का अन्तःकरण को प्रकाशित करने में अत्यन्त योगदान है अर्थात् इससे हृदय में उल्लास पैदा होता है और मानव अंधकार दूर होता है तथा मनुष्य पर वदान्य (ख़ुदा) के वरदान
Ⓟ526 होने आरंभ हो जाते हैं और अल्लाह तआला की मान्यता Ⓟके प्रकाश उसे अपनी परिधि में ले लेते हैं, यहां तक कि वह उन्नति करता-करता ख़ुदा के वार्तालाप और संवादों से सम्मानित हो जाता है, सच्चे कश्फ़ और स्पष्ट इल्हामों से पूर्ण रूप से लाभान्वित होता है तथा ख़ुदा तआला के सानिध्य प्राप्त लोगों में पैठ (अधिकार) पा लेता है और उस से वह वह चमत्कार परोक्ष से इल्का, असंदिग्ध कलाम, दुआओं की स्वीकारिता, गुप्त रहस्यों का प्रकटन, तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले (ख़ुदा) के समर्थन
Ⓟ527 उस Ⓟके द्वारा प्रकट होते हैं कि जिसका उदाहरण उसके अतिरिक्त किसी में नहीं पाया जाता। यदि विरोधी जन इस से इन्कार करें और कदाचित इन्कार ही करेंगे तो इसका प्रमाण इस पुस्तक में दिया गया है और यह ख़ाकसार प्रत्येक सत्याभिलाषी को सन्तुष्ट करने के लिए तत्पर है और न केवल विरोधियों को अपितु पारंपरिक अनुयायियों को भी कि जो प्रत्यक्षतया मुसलमान हैं परन्तु लज्जित मुसलमान तथा निष्प्राण पंजर हैं जिन्हें इस
Ⓟ528 Ⓟअंधकारमय युग में ईश्वरीय निशानों पर विश्वास नहीं रहा तथा उसके इल्हामों को दुर्लभ विचार करते हैं तथा उन्हें भ्रमों और भ्रान्तियों के प्रकार ठहराते हैं, जिन्होंने मानव प्रगतियों का क्षेत्र नितान्त संकुचित और संकीर्ण

अपने शरीअत लाने वाले के उत्तरदायित्व में जा पड़ता है। यदि शरीअत लाने वाला ®निपुण चिकित्सक की तरह सदमार्ग का ठीक और उचित मार्ग-दर्शक है और वह ®507

शेष हाशिया नं. 11

बना रखा है जिसका मात्र बौद्धिक अटकलों और अनुमानित ढकोसलों पर अन्त होता है और दूसरी ओर ख़ुदा तआला को भी नितान्त ®अशक्त और ®529 निर्बल सा विचार कर रहे हैं। अतः यह विनीत इन समस्त सज्जनों की सेवा में पूर्ण सम्मान के साथ विनती करता है कि यदि अब तक क़ुर्आनी प्रभावों से इन्कार है और अपनी पुरानी मूर्खता पर आग्रह है तो अब नितान्त शुभ अवसर है कि यह तुच्छ सेवक अपने व्यक्तिगत अनुभवों से प्रत्येक इन्कारी की पूर्णरूप से सन्तुष्टि कर सकता है। अतः उचित होगा कि सत्याभिलाषी बन कर इस विनीत के पास आएं और ख़ुदा की वाणी की जिन-जिन विशेषताओं का ऊपर उल्लेख किया गया है उन्हें स्वयं अपनी आंखों से देख लें तथा अंधकार से निकलकर वास्तविक प्रकाश में प्रवेश करें। अब तक तो यह ख़ाकसार जीवित है परन्तु मिट्टी के अस्तित्व का क्या आधार और नश्वर शरीर का क्या विश्वास। अतः उचित है कि इस सार्वजनिक विज्ञापन को सुनते ही सत्य की प्रमाणिकता और असत्य के खण्डन की ओर ध्यान दें ताकि इस ख़ाकसार का दावा सिद्ध न हो सके तो इन्कारी और विमुख रहने के लिए सामने एक कारण उत्पन्न हो जाए, परन्तु यदि इस ख़ाकसार के कथन की सच्चाई यथायोग्य प्रमाणित हो जाए तो ख़ुदा से भयभीत होकर अपने मिथ्या विचारों से पृथक हो जाएं और इस्लाम के सच्चे मार्ग पर क़दम जमाएं ताकि इस लोक में अपमान और अपयश से और परलोक में यातना और ®दण्ड से मुक्ति पाएं। अतः देखो हे भाइयो! हे प्रिय जनो, ®530 हे दार्शनिको, हे पण्डितो, हे पादरियो, हे आर्यो, हे नेचरियो, हे ब्रह्म धर्म वालो! कि मैं इस समय स्पष्ट तौर पर और घोषणा करते हुए कह रहा हूं कि यदि किसी को सन्देह हो और उपरोक्त विशिष्टता को मानने में कुछ संकोच हो तो वे अविलम्ब इस विनीत के पास आएं तथा सच्चे हृदय से कुछ समय तक संगति में रह कर उपरोक्त वर्णनों की सच्चाई को स्वयं

Ⓟ508 मुबारक किताब लाया है जिसमें अनुयायी व्यक्ति Ⓟके अध्यात्मिक रोगों का निदान है तथा उसकी ज्ञान और कार्य संबंधी पूर्णता के लिए पूरा सामान मौजूद है और फिर

शेष हाशिया नं. (11)

अपनी आंखों से देख लें। ऐसा न हो कि इस ख़ाकसार के गुज़रने के बाद कोई अन्यायी कहे कि मुझे कब स्पष्ट तौर पर कहा गया ताकि मैं इस जिज्ञासा में पड़ता, कब किसी ने अपने दायित्व से दावा किया ताकि मैं ऐसे दावे का सबूत उस से मांगता। अतः हे भाइयो, हे सत्याभिलाषियो! इधर देखो कि यह ख़ाकसार स्पष्ट तौर पर कहता है तथा अपने ख़ुदा पर भरोसा करके जिसके प्रकाश दिन-रात देख रहा है, इस बात का उत्तरदायी बनता है कि यदि तुम हार्दिक श्रद्धा और निष्ठा से सत्य के अभिलाषी और इच्छुक होकर धैर्य और निष्ठा से कुछ समय तक इस ख़ाकसार की संगत में जीवन व्यतीत करोगे तो यह बात तुम पर असंदिग्ध तौर पर प्रकट हो जाएगी कि वास्तव में वे कथित अध्यात्मिक विशेषताएं
Ⓟ531 जो कि सूरह फ़ातिहा और क़ुर्आन करीम में पाई Ⓟजाती हैं। अतः क्या ही सौभाग्यशाली वह व्यक्ति है जो अपने हृदय को द्वेष और शत्रुता से ख़ाली करके और इस्लाम स्वीकार करने पर उद्यत हो कर इस उद्देश्य-प्राप्ति हेतु श्रद्धा और आस्था के साथ प्रयासरत हो तथा कितना दुर्भाग्यशाली वह व्यक्ति है जो इतनी स्पष्ट बातें सुनकर फिर भी दृष्टि डालकर न देखे और जान-बूझ कर ख़ुदा तआला की फटकार और प्रकोप का पात्र बन जाए। मृत्यु नितान्त निकट है और मौत की लीला सर पर है यदि शीघ्र ही ख़ुदा से डरते हुए इस विनीत की बातों की ओर ध्यान नहीं दोगे और अपने सन्तोष और सन्तुष्टि प्राप्त करने के लिए श्रद्धा और आस्था के साथ प्रयासरत नहीं होगे तो मुझे भय है कि आप लोगों का ऐसा ही परिणाम न हो जैसा आर्यों के नेता पंडित दयानन्द का हुआ, क्योंकि इस विनीत ने उन्हें उनकी मृत्यु से पर्याप्त समय पूर्व सद्मार्ग की ओर निमंत्रण दिया और आख़िरत (परलोक) का अपमान स्मरण कराया तथा उनके धर्म और आस्था का असत्य होना उन पर ठोस तर्कों द्वारा प्रकट किया तथा नितान्त

उसके ℗अनुयायी ने किसी प्रत्यक्ष या आन्तरिक उपेक्षा के उन शिक्षाओं को हार्दिक ℗509
निष्ठा के साथ स्वीकार कर लिया है, तो पूर्ण ℗अनुसरण के उपरान्त जो कुछ प्रकाश ℗510

शेष हाशिया नं. (11)

उत्तम और पूर्ण सबूतों से पूर्ण द्वारा सभ्यतापूर्वक उन पर सिद्ध कर दिया
कि समस्त संसारों में नास्तिकों ℗के पश्चात् आर्यों से निकृष्ट अन्य कोई ℗532
धर्म नहीं क्योंकि ये लोग ख़ुदा तआला का घोर तिरस्कार करते हैं कि उसे
स्रष्टा और समस्त लोकों का प्रतिपालक नहीं समझते तथा समस्त संसार
को, यहाँ तक कि संसार के कण-कण को उसका भागीदार बनाते हैं तथा
अनादि होने की विशेषता और यथार्थ अस्तित्व में उसके समान समझते हैं।
यदि उन्हें कहो कि क्या तुम्हारा परेमश्वर कोई आत्मा उत्पन्न कर सकता
है या शरीर का कोई कण अस्तित्व में ला सकता है अथवा ऐसा ही कोई
अन्य धरती और आकाश भी बना सकता है या अपने किसी सच्चे प्रेमी
को स्थायी मुक्ति प्रदान कर सकता है और बारम्बार कुत्ता-बिल्ला बनने से
बचा सकता है या अपने किसी निश्छल अनुरागी की तौबा (क्षमा-याचना)
स्वीकार कर सकता है। तो इन समस्त बातों का यही उत्तर है कि कदापि
नहीं। उसे यह शक्ति ही नहीं कि अपनी ओर से एक कण भी उत्पन्न कर
सके और न उसमें यह दया है कि किसी अवतार, किसी ऋषि या मुनि को
या किसी ऐसे पुरुष को भी कि जिस पर वेद उतरा हो हमेशा के लिए मुक्ति
दे फिर उस के पद का ध्यान रख कर मुक्ति-गृह से बाहर न निकाले तथा
अपने उस प्रिय ℗को जिसके हृदय में परमेश्वर की प्रीत और प्रेम समा चुका ℗533
है बार-बार कुत्ता, बिल्ला बनने से बचाए।

परन्तु खेद कि पंडित साहिब ने इस नितान्त अधम आस्था का परित्याग न किया तथा अपने समस्त पूर्वजों और अवतारों इत्यादि की निन्दा और अपमान वैध रखा, परन्तु इस अपवित्र आस्था को न छोड़ा और मरते समय तक उन की यही धारणा रही कि यद्यपि कैसा ही अवतार हो, रामचन्द्र हो या कृष्ण हो या स्वयं वही हो जिस पर वेद उतरा है, परमेश्वर को कदापि स्वीकार ही नहीं कि उस पर स्थायी कृपा करे अपितु वह अवतार बना कर

और लक्षण सम्पादित होंगे वे वास्तव में अनुकरण किए गए नबी की दानशीलताएं ℗511 हैं। ℗अत: इसी दृष्टि से यदि वली (ऋषि) से कोई अद्भुत चमत्कार प्रकट हो तो

शेष हाशिया नं. 11

फिर भी उन्हीं को कीड़े मकोड़े ही बनाता रहेगा। वह कुछ ऐसा निष्ठुर है कि प्रेम और अनुराग का उसे लेशमात्र मान नहीं और ऐसा सामर्थ्यहीन है कि उसमें स्वयं से बनाने की थोड़ी सी भी शक्ति नहीं। यह पंडित साहिब की शुभ आस्था थी कि जिसका दृढ़ सबूतों द्वारा खण्डन करके पंडित साहिब पर यह सिद्ध किया गया था कि ख़ुदा तआला कदापि अधूरा और अपूर्ण नहीं अपितु उदगम है समस्त वरदानों का, और संग्रहीता है समस्त ख़ूबियों का और संकलनकर्ता है समस्त पूर्ण विशेषताओं का, भागीदार रहित अकेला है अपने
℗534 अस्तित्व में, ℗विशेषताओं और उपास्य होने में। तत्पश्चात् दो बार रजिस्टर्ड पत्र द्वारा इस्लाम धर्म की सच्चाई के संबंध में स्पष्ट सबूतों के माध्यम से उन्हें सतर्क किया गया तथा दूसरे पत्र में यह भी लिखा गया कि इस्लाम वह धर्म है जो अपनी सच्चाई पर दोहरा सबूत हर समय मौजूद रखता है। प्रथम बौद्धिक (मा'क़ूली) सबूत जिन के द्वारा इस्लाम के वास्तविक सबूतों की दीवार धातु की भांति दृढ़ और मज़बूत सिद्ध होती है।

द्वितीय – आकाशीय निशान, ख़ुदाई समर्थन, परोक्ष संबंधी कश्फ़, ख़ुदाई इल्हाम और वार्तालाप तथा अन्य अदभुत चमत्कार जो इस्लाम से प्रकटन में आते हैं, जिन से इस संसार में सच्चे ईमानदार को वास्तविक मुक्ति मिलती है। ये दोनों प्रकार के सबूत इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म में कदापि नहीं पाए जाते और न उन्हें शक्ति है कि इस के मुक़ाबले पर कुछ दम मार सकें परन्तु इस्लाम में इसका अस्तित्व प्रमाणित है। अत: यदि इन
℗535 दोनों प्रकार के सबूतों में से किसी प्रकार के सबूत में सन्देह हो तो ℗यहां क़ादियान में आकर अपनी सन्तुष्टि कर लेना चाहिए। पंडित साहिब को यह भी लिखा गया कि आपके आने-जाने का साधारण ख़र्च एवं भोजन इत्यादि का उचित ख़र्च हमारा दायित्व होगा और वह पत्र उनके कुछ आर्यों को भी दिखाया गया तथा दोनों रजिस्ट्रियों की उनके हस्ताक्षर की हुई प्राप्ति रसीद

उस अनुकरण किए गए नबी का चमत्कार होगा। अब Ⓟइन भूमिकाओं के पश्चात् Ⓟ512
क़ुर्आन करीम की सच्चाई के तर्कों का उल्लेख किया जाता है। ونسئل اللّٰہ التوفیق

शेष हाशिया नं. (11)

भी आ गई, परन्तु उन्होंने संसार प्रेम और सांसारिक प्रतिष्ठा के कारण इस ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया यहां तक कि जिस संसार से उन्होंने प्रेम किया और मेल-जोल बढ़ाया था अन्ततः सैकड़ों खेदों के साथ उसे त्याग कर और समस्त धन-दौलत से विवशतापूर्वक पृथक हो कर इस मृत्यु-गृह से कूच कर गए तथा बहुत सी लापरवाही, अंधकार, पथ-भ्रष्टता और कुफ्र के पर्वत अपने सर पर लेकर गए तथा उनकी इस परलोक-यात्रा की सूचना भी, जो उन्हें 30 अक्तूबर 1883 ई. को करना पड़ी लगभग तीन माह पूर्व ख़ुदा तआला ने इस विनीत को इसकी सूचना दे दी थी। अतः यह सूचना कुछ आर्यों को बताई भी गई थी। जो भी हो यह यात्रा तो प्रत्येक के लिए अनिवार्य ही है तथा कोई पहले कोई बाद में इस यात्री-निवास को छोड़ने वाला है, परन्तु यह खेद बहुत बड़ा खेद है कि पंडित साहिब को ख़ुदा ने
Ⓟहिदायत का ऐसा अवसर प्रदान किया कि इस विनीत को उनके युग में Ⓟ536
जन्म दिया, परन्तु वह हर प्रकार की घोषणा के बावजूद हिदायत पाने से वंचित गए। उन्हें प्रकाश की ओर बुलाया गया परन्तु उन्होंने अभागे संसार से प्रेम के कारण उस प्रकाश को स्वीकार न किया और सर से पांव तक अंधकारग्रस्त रहे। एक ख़ुदा के बन्दे ने बारम्बार उन्हें उनकी भलाई के लिए अपनी ओर बुलाया, परन्तु उन्होंने उस ओर पग भी न उठाया और आयु को यों ही अनुचित द्वेषों और अहंकारों में नष्ट करके बुलबुलों की भांति लुप्त हो गए। यद्यपि विनीत के दस हज़ार रुपए के विज्ञापन का प्रथम लक्ष्य वही थे तथा इस कारण एक बार पत्रिका 'बिरादर हिन्द' में भी उन के लिए विज्ञापन छपवाया गया परन्तु उनकी ओर से कभी आवाज़ न उठी यहां तक
कि मिट्टी में या राख में जा मिले। Ⓟअतः हे भाइयो! उन्हीं पंडित साहिब Ⓟ537
की दशा से शिक्षा ग्रहण करो तथा स्वयं पर अत्याचार न करो, सच्ची मुक्ति को तलाश करो ताकि इसी संसार में उसकी बरकतें पाओ, सच्ची और

والنصرة هو نعم المولى و نعم النصير (हम अल्लाह से सामर्थ्य और सहायता मांगते हैं। वह अच्छा स्वामी और अच्छा सहायक है।)

शेष हाशिया नं. (11)

वास्तविक मुक्ति वही है जिसकी बरकतें इसी लोक (संसार) में प्रकट होती हैं और शक्तिमान तथा शक्तिशाली की वही पवित्र वाणी है जो इसी स्थान पर अभिलाषियों पर आकाशीय मार्ग खोलती है अत: स्वयं को धोखा मत दो और जिस धर्म की सच्चाई इसी संसार में दृष्टिगोचर हो रही है उस पवित्र धर्म से विमुख होकर अपने हृदय पर अंधकार का धब्बा मत लगाओ। हां यदि मुक़ाबला और वाद-विवाद करने की शक्ति है तो इसी सूरह फ़ातिहा की विशेषताओं के समान कोई अन्य ईशवाणी प्रस्तुत करो। इस विनीत ने सूरह फ़ातिहा की अध्यात्मिक विशेषताओं के सन्दर्भ में जो कुछ लिखा है
Ⓟ538 वह कोई सुनी हुई बात नहीं है अपितु Ⓟयह विनीत अपने व्यक्तिगत अनुभव से वर्णन करता है कि वास्तव में सूरह फ़ातिहा ख़ुदा तआला के प्रकाशों के प्रकट होने का स्थान है। इस सूरह के पढ़ने के समय इतने चमत्कार देखे गए हैं कि जिनसे ख़ुदा की पवित्र वाणी का महत्व ज्ञात होता है। इस शुभ सूरह की बरकत से तथा उसकी तिलावत (उच्च स्वर में पढ़ना) अनिवार्य रूप से करने से परोक्ष की बातों का कश्फ़ उस स्तर तक पहुंच गया कि सैकड़ों परोक्ष के समाचार घटनापूर्व प्रकटित हुए तथा प्रत्येक कठिनाई के समय उसके पढ़ने की स्थिति में अदभुत तौर पर पर्दे को हटाया गया और तीन हज़ार के लगभग सही कश्फ़ और सच्चे स्वप्न याद हैं कि जो अब तक इस विनीत द्वारा प्रकट हो चुके तथा पौ फटने की भांति पूरे भी हो चुके हैं
Ⓟ539 और दो सौ स्थानों से अधिक दुआ की स्वीकारिता के स्पष्ट लक्षण Ⓟऐसे जटिल अवसरों पर देखे गए जिन में प्रत्यक्ष तौर पर कठिनाई निवारण होने का कोई उपाय दिखाई नहीं देता था और इसी प्रकार कश्फ़े क़ुबूर[1] तथा दूसरे नाना प्रकार के चमत्कार इसी सूरह के नित्यकर्म और जाप से ऐसे

① सूफ़ियों की वह श्रेणी जिसे मुरदे की क़ब्र से उसका हाल ज्ञात हो जाता है। (अनुवादक)

प्रथम अध्याय

क़ुर्आन करीम की सच्चाई एवं श्रेष्ठता पर बाह्य साक्ष्यों से संबंधित तर्कों का वर्णन

प्रथम तर्क - अल्लाह तआला फ़रमाता है -

تَاللّٰهِ لَقَدۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰۤی اُمَمٍ مِّنۡ قَبۡلِکَ فَزَیَّنَ لَهُمُ الشَّیۡطٰنُ اَعۡمَالَهُمۡ فَهُوَ وَلِیُّهُمُ الۡیَوۡمَ وَلَهُمۡ

शेष हाशिया नं. 11

प्रकट होते गए कि यदि उनका एक तुच्छ प्रतिबिम्ब किसी पादरी या पंडित के हृदय पर पड़ जाए तो सहसा संसार प्रेम को तिलांजलि देकर इस्लाम स्वीकार करने के लिए मरने पर तत्पर हो जाए। इसी प्रकार सच्चे इल्हामों द्वारा जो भविष्यवाणियां इस विनीत पर प्रकट होती रही हैं जिन में से कुछ भविष्यवाणियां विरोधियों के सामने पूर्ण हो गई हैं और पूरी होती जाती हैं इतनी हैं कि इस विनीत के विचार में दो इन्जीलों की मोटाई से कम नहीं और यह विनीत हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण के माध्यम के कारण Ⓟख़ुदा तआला से वार्तालाप में इस सीमा तक Ⓟ540
अनुकम्पाएं पाता है कि जिसका कुछ थोड़ा सा नमूना हाशिए का हाशिया नम्बर 3 के अरबी इल्हामों इत्यादि में लिखा गया है। दयालु ख़ुदा ने उसी मान्य रसूल के अनुसरण और प्रेम की बरकत से और अपने पवित्र कलाम के अनुसरण के प्रभाव से इस विनीत को अपने सम्बोधनों और संवादों से विशेष्य किया है तथा ईश्वर-प्रदत्त ज्ञानों से सम्मानित किया है और बहुत से गुप्त रहस्यों से सूचित किया है और बहुत सी सच्चाइयां और आध्यात्म ज्ञानों से इस ख़ाकसार के सीने को परिपूर्ण कर दिया है और अनेकों बार बता दिया है कि ये समस्त अनुदान और अनुकम्पाएं और ये सब कृपाएं तथा उपकार और ये सब मेहरबानियां तथा ध्यान रखना और ये सब इनाम, समर्थन, सब वार्तालाप तथा सम्बोधन हज़रत ख़ातमुलअंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण और प्रेम की बरकत Ⓟसे हैं। Ⓟ541

عَذَابٌ اَلِيۡمٌ - وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا ®عَلَيۡكَ الۡكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخۡتَلَفُوۡا فِيۡهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحۡمَةً ®513
لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ - وَاللّٰهُ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحۡيَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً

शेष हाशिया नं. 11

جمال ہمنشیں در من اثر کرد
وگرنہ من ہماں خاکم کہ ہستم

अनुवाद :- प्रियतम की सुन्दरता का प्रभाव मेरे अन्दर है अन्यथा मैं वही मिट्टी हूं जो कि मैं अभी हूं।*

अब वे इन्जील के उपदेशक तथा सद्मार्ग से भटके हुए पादरी कहां और किधर हैं कि जो पहले स्तर की हठधर्मी धारण करके मात्र द्वेष, ईर्ष्या और शत्रुता तथा शैतानी चरित्र के मार्ग से चौपायों के समान लोगों को यह कह कर बहकाते थे कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कोई भविष्यवाणी प्रकटन में नहीं आई। अतः अब न्यायप्रिय लोग स्वयं विचार कर सकते हैं कि जिस स्थिति में हज़रत ख़ातमुलअंबिया के तुच्छ सेवकों और निम्न स्तरीय नौकरों से सहस्त्रों भविष्यवाणियां प्रकटन में आती हैं तथा अदभुत चमत्कार प्रकट होते हैं, तो कितनी निर्लज्जता और बेशर्मी है कि कोई
®542 मन्द बुद्धि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ®की भविष्यवाणियों से इन्कार करे। पादरियों को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के सम्बन्ध में इस कारण चिन्ता हुई कि 'तौरात' किताब इस्तिस्ना, अध्याय : 18, आयत : 22 में सच्चे नबी की यह निशानी लिखी है कि उसकी भविष्यवाणी पूर्ण हो जाए। अतः जब पादरियों ने देखा कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहस्त्रों ख़बरें घटनापूर्व बतौर भविष्यवाणी बताई हैं तथा अधिकांश भविष्यवाणियों से क़ुर्आन करीम भी भरा हुआ है और वे समस्त भविष्यवाणियां यथासमय पूर्ण भी हो गईं तो उनके हृदय में यह धड़का आरंभ हुआ कि इन भविष्यवाणियों पर दृष्टि डालने से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत स्पष्ट

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

لِّقَوۡمٍ يَّسۡمَعُوۡنَ ۔[1] (भाग-15)

وَهُوَ الَّذِيۡ يُرۡسِلُ الرِّيٰحَ بُشۡرًاۢ بَيۡنَ يَدَيۡ رَحۡمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَقَلَّتۡ سَحَابًا ثِقَالًا سُقۡنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ

शेष हाशिया नं. 11

तौर पर सिद्ध होती है और या यह कहना पड़ता है कि जो कुछ तौरात अर्थात् किताब 'इस्तिस्ना' अध्याय : 18, आयत : 21, 22 में सच्चे नबी की निशानी का उल्लेख है वह निशानी उचित नहीं है। अत: इस गुत्थी में फंस कर नितान्त हठधर्मी से उन्हें यह कहना पड़ा कि वे भविष्यवाणियां वास्तव में दूरदर्शिताएं हैं जो संयोगवश पूर्ण हो गई हैं, परन्तु चूंकि जिस वृक्ष की जड़ सुदृढ़ और शक्तियां स्थापित हैं वह हमेशा फल लाता है। इस दृष्टि से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियां और अन्य चमत्कार केवल उसी युग तक सीमित नहीं थे अपितु अब भी उन का क्रम निरन्तर जारी है। ®यदि किसी पादरी इत्यादि को सन्देह और ®543
शंका हो तो उस पर अनिवार्य तथा उसका कर्त्तव्य है कि वह श्रद्धा और निष्ठा से इस ओर ध्यान दे फिर देखे कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियां अब तक किस क़दर वर्षा की भांति बरस रही हैं परन्तु इस युग के ईर्ष्यालु पादरी यदि आत्महत्या का इरादा करें तो करें परन्तु उन से यह आशा बहुत ही कम है कि वे सत्याभिलाषी बन कर पूर्ण आस्था और श्रद्धा से उस निशान के जिज्ञासु हों। बहरहाल दूसरे लोगों पर यह बात स्पष्ट रहे कि जिस स्थिति में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बरकतें अब भी सूर्य की भांति प्रकाशमान हैं तथा दूसरे किसी नबी की बरकतों का निशान नहीं मिलता। अत: ऐसी स्थिति में अनिवार्य है कि यदि द्वेष रखने वाले और संसार के पुजारी पादरी किसी बाज़ार किसी शहर या गांव में इस सच्चाई के विपरीत लोगों को बहकाते हुए दिखाई दें तो इस पुस्तक का यही स्थान उनके समक्ष खोल कर रख दिया जाए, क्योंकि यह पुस्तक दस हज़ार रुपये विज्ञापन के साथ लिखी गई है

---

[1] अन्नहल : 64-66

فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ Ⓟنُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ - Ⓟ514
وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِىْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ

शेष हाशिया नं. (11)

और इससे मुक़ाबला करने वाला दस हज़ार रुपए पा सकता है। अत: यह नितान्त निर्लज्जता है कि जो लोग आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत से इन्कारी हैं वे पंडित हों या पादरी, आर्य हों या ब्रह्म समाजी वे केवल मुख से व्यर्थ बोलने का ढंग अपनाएं तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत और रिसालत के ठोस और अकाट्य तर्कों का उत्तर देने की कुछ चिन्ता न करें। यह विनीत व्यर्थ में उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए विवश नहीं करता, परन्तु यदि मुकाबला और बहस से असमर्थ रहें और जो आकाशीय निशान और बौद्धिक तर्क इस्लाम
Ⓟ544 की सच्चाई को सिद्ध कर रहे हैं उसका उदाहरण अपने धर्म Ⓟसे प्रस्तुत न कर सकें तो फिर यही अनिवार्य है कि झूठ का त्याग करके सच्चे धर्म को स्वीकार कर लें।

अब हम पुन: अपने मूल वर्णन की ओर लौटते हुए लिखते हैं कि मैंने अब तक सूरह फ़ातिहा की जितनी अदभुत बातें, अध्यात्म ज्ञान और विशेषताओं का उल्लेख किया है वे स्पष्ट तौर पर अद्वितीय और अनुपम हैं। उदाहरणतया जो व्यक्ति तनिक न्यायकर्ता बन कर प्रथम उन उच्च स्तरीय सच्चाइयों पर विचार करे जो कि सूरह फ़ातिहा में संकलित हैं और फिर उन मर्म और रहस्यों पर दृष्टि डाले जिन पर शुभ सूरह आधारित है तत्पश्चात वर्णन की सुन्दरता तथा वाणी की संक्षिप्तता का अवलोकन करे कि किस प्रकार अत्यधिक अर्थों को थोड़े से शब्दों में भर दिया है, फिर इबारत को देखे कि कैसी चमक-दमक रखती है और उसमें कितना प्रवाह, स्पष्टता और नम्रता पाई जाती है कि जैसे एक नितान्त स्वच्छ और शुद्ध पानी है कि बहता हुआ चला जाता है और फिर उसके अध्यात्मिक प्रभावों को हृदय में विचार करे कि जो बतौर अदभुत चमत्कार हृदयों को तामसिक अंधकारों से संघर्ष करके ख़ुदा तआला के प्रकाशों का पात्र बनाते हैं, जिन्हें हम इस

(भाग-8)[1] الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّشْکُرُوْنَ۔

اَللّٰہُ الَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیٰحَ فَتُثِیْرُ سَحَابًا فَیَبْسُطُہٗ فِی السَّمَآءِ کَیْفَ یَشَآءُ وَیَجْعَلُہٗ کِسَفًا فَتَرَی

शेष हाशिया नं. 11

पुस्तक के प्रत्येक अवसर पर सिद्ध करते चले जाते हैं★ अत: उस पर क़ुर्आन करीम की महान प्रतिष्ठा, जिस का मानव शक्तियां मुक़ाबला नहीं कर सकतीं ऐसी Ⓟस्पष्टता के साथ प्रकट हो सकती हैं जिस पर अधिकता Ⓟ545
की कल्पना नहीं की जा सकती और यदि इन विशेषताओं का अवलोकन करने के बावजूद फिर भी किसी मन्दबुद्धि रखने वाले व्यक्ति पर उस पवित्र वाणी की अद्वितीयता संदिग्ध रहे तो क़ुर्आन करीम ने स्वयं ही उसका ऐसा उपचार किया है कि Ⓟइन्कारियों पर अपने समझाने के प्रयास को पूर्ण कर Ⓟ546
दिया है और वह यह है -

وَاِنْ کُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰی عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَۃٍ مِّنْ مِّثْلِہٖ ص وَادْعُوْا شُھَدَآءَکُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰہِ اِنْ کُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ۔ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْ وَقُوْدُھَا النَّاسُ وَالْحِجَارَۃُ ج اُعِدَّتْ لِلْکٰفِرِیْنَ۔[2]

★ हाशिए का हाशिया नं. 4

Ⓟयह विनीत यहां तक लिख चुका था कि **शहाबुद्दीन** नाम के एक Ⓟ544
एकेश्वरवादी व्यक्ति निवासी 'थह ग़ुलाम नबी' ने आकर कहा कि मौलवी ग़ुलाम अली साहिब, मौलवी अहमदुल्लाह साहिब अमृतसरी, मौलवी अब्दुल अज़ीज़ साहिब तथा कुछ अन्य सज्जन इस प्रकार के इल्हाम से कि जो रसूलों की वह्यी से सदृश है पूर्ण आग्रह से इन्कार कर रहे हैं अपितु उन में से कुछ मौलवी Ⓟलोग उसे पागलों के विचारों से सम्बद्ध करते हैं। इस Ⓟ545
सन्दर्भ में उन का तर्क यह है कि यदि यह इल्हाम सत्य और उचित है तो जनाब पैग़म्बर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा इसे प्राप्त

[1] अल-अ'राफ़ : 58-59 [2] अलबक़रह : 24-25

الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ - وَاِنْ
كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ ℗عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ - فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ ℗515

शेष हाशिया नं. (11)

अर्थात् यदि तुम्हें इस वाणी के ख़ुदा की ओर से होने में कुछ सन्देह है तो तुम उसकी किसी सूरह की सदृश कोई वाणी बना कर दिखाओ और यदि तुम न बना सको और स्मरण रखो कि कदापि नहीं बना सकोगे तो उस
℗548 अग्नि से डरो जो काफ़िरों ℗के लिए तैयार है, जिसका ईंधन काफ़िर लोग

शेष हाशिए का हाशिया नं. (4)

करने के अधिक पात्र थे जब कि उन का पाना सिद्ध नहीं। अब यह तुच्छ बन्दा कहता है कि यदि यह आरोप जो शहाबुद्दीन मुवह्हिद ने मौलवियों की ओर से वर्णन किया है वास्तव में उन्हीं के मुख से निकला है तो इसके उत्तर के साथ प्रत्येक सच्चे अभिलाषी को एवं उपर्युक्त सज्जनों को स्मरण रखना चाहिए कि किसी वस्तु की अज्ञानता उस वस्तु का दुर्लभ होना सिद्ध नहीं करती। क्या संभव नहीं कि आदरणीय सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम ने इस प्रकार के इल्हाम पाए हों, परन्तु समय के हिताय सार्वजनिक तौर पर उन्हें प्रकाशित नहीं किया और ख़ुदा तआला की दृष्टि में प्रत्येक नवीन युग में नए-नए हित हैं। अत: नुबुव्वत के युग में ख़ुदा की नीति यही चाहती थी कि जो नबी नहीं है उसके इल्हाम नबी की वह्यी की भांति न लिखे जाएं ताकि जो नबी नहीं है उसके कलाम से मिश्रित न हो जाए परन्तु उस युग के पश्चात जितने वली (ऋषि) और पवित्रात्मा पुरुष गुज़रे हैं उन सब के इल्हाम प्रसिद्ध और सर्वविदित हैं कि जो प्रत्येक युग में लिपिबद्ध होते चले आए हैं। इसकी पुष्टि के लिए **शैख़ अब्दुल क़ादिर** जैलानी और मुजद्दिद
℗546 बारहवीं शताब्दी हिज्री ℗के पत्र तथा ख़ुदा के अन्य वलियों की पुस्तकें देखना चाहिएं कि किस प्रचुरता के साथ उनके इल्हाम पाए जाते हैं अपितु इमाम रब्बानी साहिब अपने पत्रों की द्वितीय जिल्द में पत्र संख्या 51 में स्पष्ट

الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِکَ لَمُحۡیِ الْمَوْتٰی ۚ وَھُوَعَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ - ①(भाग-21)

اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتۡ اَوۡدِیَۃٌۢ بِقَدَرِھَا - ②(भाग-13)

शेष हाशिया नं. 11

और उनकी मूर्तियां हैं जो नरक की अग्नि को अपने पापों और उपद्रवों से भड़का रहे हैं। यह निर्णायक कथन है कि ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन करीम के चमत्कार का इन्कार करने वालों को दोषी ठहराने के लिए स्वयं फ़रमाया है। अब यदि कोई दोषी निरुत्तर रह कर फिर भी क़ुर्आन करीम की अद्वितीय

शेष हाशिए का हाशिया नं. 4

तौर पर लिखते हैं कि ग़ैर नबी भी ख़ुदा के वार्तालाप और सम्बोधन से सम्मानित हो जाता है और ऐसा व्यक्ति मुहद्दस कहलाता है और उसका पद नबियों के पद के निकट होता है। इसी प्रकार शैख़ अब्दुल क़ादिर जैलानी साहिब ने 'फ़ुतूहुल ग़ैब' के कई स्थानों पर इसकी व्याख्या की है। यदि ख़ुदा के वलियों की प्रवचनावली और पत्रों की खोज की जाए तो उन के वाक्यों में इस प्रकार के बहुत से वर्णन पाए जाएंगे और उम्मते मुहम्मदिया में मुहद्दस का पद इतनी अधिकता के साथ सिद्ध होता है कि जिस से इन्कार करना बड़े लापरवाह और अज्ञानी का काम है। इस उम्मत में आज तक सहस्त्रों अल्लाह के वली विद्वान हुए हैं जिनके चमत्कार और स्वभाव के विपरीत चमत्कार की इस्राईल के नबियों की तरह प्रमाणित और सिद्ध हो चुके हैं। जो व्यक्ति जांच-पड़ताल करे उसे ज्ञात होगा कि ख़ुदा तआला ने जैसा कि इस उम्मत का नाम सर्वोत्तम उम्मत रखा है इसी प्रकार इस उम्मत के बुज़ुर्गों को सर्वाधिक विशेषताएं भी प्रदान की हैं जो किसी प्रकार गुप्त नहीं रह सकतीं तथा उन का इन्कार करना सत्य छुपाने का बहुत बड़ा प्रयास है और हम यह भी कहते हैं कि यह आरोप कि आदरणीय सहाबा से ऐसे इल्हाम सिद्ध नहीं हुए बिल्कुल अनुचित और ग़लत है क्योंकि सही हदीसों की दृष्टि से आदरणीय सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम के इल्हाम और

① अल-रोम : 49-51 ② अल-रअ'द : 18

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِى النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِىْ عَمِلُوْا
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ - قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا ⓟ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ط ⓟ516

शेष हाशिया नं. 11

सुगम और सुललित शैली का इन्कारी रहे तथा बेहूदा और निरर्थक बोलने
ⓟ549 से न हटे ⓟतो ऐसे निर्लज्ज, रंग बदलने वाला स्वभाव रखने वाले का इस संसार में उपचार नहीं हो सकता। इस के लिए वही उपचार है जिसका अल्लाह तआला ने अपने निर्णायक कथन में वायदा किया है। कुछ उपद्रवी

शेष हाशिए का हाशिया नं. 4

चमत्कार बहुतात के साथ सिद्ध हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो का सारिया की सेना की भयानक स्थिति अल्लाह तआला के ज्ञान देने से परिचित हो जाना जिसे 'बैहक़ी' ने इब्ने उमर से वर्णन किया है। यदि इल्हाम नहीं था तो और क्या था और फिर उनकी यह आवाज़ कि يَاسَارِيَةَ الْجَبَلَ الْجَبَل (या सारियातल जबल अलजबल) मदीना में बैठे हुए मुख से निकलना और वही आवाज़ परोक्ष की शक्ति से सारिया और उसकी सेना को इतनी दूरी के बावजूद सुनाई देना यदि स्वभाव के प्रतिकूल अदभुत चमत्कार नहीं था तो और क्या था। इसी प्रकार जनाब अली मुर्तजा कर्रमल्लाहो वज्हहू के कुछ इल्हाम और कश्फ़ प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित हैं। इसके अतिरिक्त मैं पूछता हूं कि क्या इस सन्दर्भ में ख़ुदा तआला का क़ुर्आन करीम में साक्ष्य देना संतोषजनक बात नहीं है, क्या उसने आदरणीय सहाबा के पक्ष में नहीं फ़रमाया –

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ[1]

फिर जिस स्थिति में ख़ुदा तआला अपने नबी करीम के सहाबा को पूर्वकालीन उम्मतों की तुलना में सम्पूर्ण विशेषताओं में श्रेष्ठ और महानतम ठहराता है तथा दूसरी ओर "पूर्ण खलियान में से मुट्ठी भर लेना" बतौर पूर्व कालीन उम्मतों के अध्यात्म ज्ञानियों का हाल वर्णन करते हुए कहता है कि मरयम सिद्दीक़ा ईसा की मां और ऐसा ही हज़रत मूसा की मां एवं हज़रत मसीह

① आले इमरान : 111

كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ - ①(भाग-13)

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ

शेष हाशिया नं. 11

और ईर्ष्यालु लोग जिन्होंने हठधर्मी और अहंवाद पर दृढ़ता से क़दम मार रखा है तथा जिन्हें द्वेष की तीव्र ®आंधी ने बिल्कुल अंधा कर दिया है और ®550 लोगों को यह कह कर बहकाते हैं कि मुसलमान लोग क़ुर्आन करीम के जितने रहस्य और सूक्ष्मताएं वर्णन करते हैं तथा उसके जितने अदभुत गुण

शेष हाशिए का हाशिया नं. 4

के हवारी और ख़िज़्र इन में से कोई भी नबी नहीं था। ये जब ख़ुदा से इल्हाम पाने वाले थे और वह्यी के माध्यम से परोक्ष के ज्ञान और रहस्यों से अवगत किए जाते थे। अतः अब सोचना चाहिए कि इस से क्या परिणाम निकलता है, क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि उम्मते मुहम्मदिया के पूर्ण अनुसरणकर्ता उन लोगों की तुलना में सर्वप्रथम इल्हाम पाने वाले और मुहद्दस होने चाहिएं, क्योंकि वे क़ुर्आन करीम की व्याख्यानुसार सर्वोत्तम उम्मत हैं। आप लोग क़ुर्आन करीम में विचार क्यों नहीं करते और क्यों विचार करते समय ग़लती कर जाते हैं, क्या आप लोगों को ज्ञान नहीं कि सहीहैन (हदीस की पुस्तकें बुख़ारी और मुस्लिम) से सिद्ध है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस उम्मत के लिए ख़ुशख़बरी दे चुके हैं कि इस उम्मत में भी पूर्वकालीन उम्मतों की तरह मुहद्दस पैदा होंगे और मुहद्दस 'द' की फ़तह के साथ वे लोग हैं जिन से ख़ुदा तआला के वार्तालाप और सम्बोधन होते हैं। आप को ज्ञात है कि इब्ने अब्बास की क़ुर्आन की पठन शैली में आया है -

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ وَّلَا مُحَدَّثٍ إِلَّا إِذَا تَمَنَّىٰ أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ فَيَنسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ آيَاتِهِ②

① अल-रोम : 42 ② अल-हज्ज : 53

وَاَنۡفُسُهُمۡ ؕ اَفَلَا یُبۡصِرُوۡنَ -[1] (भाग-21)

وَجَعَلۡنَا الَّیۡلَ وَالنَّهَارَ اٰیَتَیۡنِ فَمَحَوۡنَاۤ اٰیَةَ الَّیۡلِ وَجَعَلۡنَاۤ اٰیَةَ النَّهَارِ مُبۡصِرَةً -[2]

शेष हाशिया नं. (11)

मुसलमानों की किताबों में लिखित हैं यह सब उन्हीं के बोध की तीव्रता है और उन्हीं के स्वभावों के आविष्कार हैं अन्यथा क़ुर्आन रहस्यों, सूक्ष्मताओं
Ⓟ551 और अद्‌भुत गुणों से ख़ाली है, Ⓟपरन्तु ऐसे लोग सिवाए इसके कि अपनी ही मूर्खता और अपवित्रता प्रकट करें, क़ुर्आनी प्रकाशों पर पर्दा नहीं डाल सकते। उनके उत्तर में यही कहना पर्याप्त है कि यदि मुसलमानों ने स्वयं अपने ही कौशल से क़ुर्आन करीम में नाना प्रकार की बारीकियां, रहस्य और गुण आविष्कृत कर लिए हैं और वास्तव में मौजूद नहीं तो तुम भी
Ⓟ552 उनके मुक़ाबले पर किसी अपनी इल्हामी किताब या Ⓟकिसी अन्य किताब से इतनी ही बारीकियां, रहस्य और गुण आविष्कृत करके दिखाओ और

शेष हाशिए का हाशिया नं. (4)

अतः इस आयत की दृष्टि से भी जिसे बुख़ारी ने भी लिखा है मुहद्दस का इल्हाम निश्चित और यक़ीनी सिद्ध होता है, जिसमें शैतान का हस्तक्षेप क़ायम नहीं रह सकता और स्वयं स्पष्ट है कि यदि ख़िज़्र और मूसा की मां
Ⓟ549 का इल्हाम केवल Ⓟसन्देहों और आशंकाओं का भंडार था और निश्चित और यक़ीनी न था तो उनके लिए कब वैध था कि वे किसी निर्दोष के प्राण को ख़तरे में डालते या विनाश तक पहुंचाते या कोई अन्य ऐसा कार्य करते जो शरीयत और बुद्धि की दृष्टि से वैध नहीं है। अन्ततः असंदिग्ध ज्ञान ही था जिसके कारण उन पर वह कार्य करना अनिवार्य हो गया था और वे बातें उनके लिए उचित हो गईं कि जो दूसरों के लिए कदापि उचित नहीं। इसके अतिरिक्त तनिक न्याय की दृष्टि से विचार करना चाहिए कि कोई बात विद्यमान और मौजूद, जो सत्य सिद्ध हो चुकी हो तथा उचित अनुभवों द्वारा सत्य सिद्ध होती हो केवल काल्पनिक विचारों से डगमगा नहीं सकती

---

① सूरह सज्दा : 28 ② सूरह बनी इस्राईल : 13

إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ - وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ - لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ ®شَهْرٍ - ®517
تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ - سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ - ①

शेष हाशिया नं. (11)

यदि सम्पूर्ण क़ुर्आन के मुक़ाबले पर नहीं तो केवल नमूने के तौर पर सूरह फ़ातिहा के मुकाबले पर जिसकी विशेषताओं का एक सीमा तक इसी हाशिए में उल्लेख किया गया है किसी अन्य किताब से निकाल कर प्रस्तुत करो। अफ़सोस यह जन्मजात अंधे कहां से पैदा हो गए जो इतने प्रकाश को देखकर ®फिर भी उनका अंधकार दूर नहीं होता। उन के आन्तरिक रोगों के ®553
पीप (दूषित तत्व) कितने ख़राब और दुर्गन्धियुक्त हो रहे हैं जिन्होंने उनके समस्त बाह्य और आन्तरिक चेतनाओं को बेकार कर दिया है। तनिक नहीं सोचते कि क़ुर्आन करीम वह किताब है जिसने अपनी श्रेष्ठताओं, अपनी

शेष हाशिए का हाशिया नं. (4)

وَالظَّنُّ لَا يُغْنِيْ عَنِ الْحَقِّ شَيْئًا अतः इस ख़ाकसार के इल्हामों में कोई ऐसी बात नहीं है जो गुप्त और छुपी हुई हो अपितु यह वह वस्तु है जो सैकड़ों परीक्षाओं के घरिये में पड़कर सुरक्षित निकली है और ख़ुदा तआला ने बड़े-बड़े विवादों में स्पष्ट विजय प्रदान की है। यहां याद आया कि जो सच्चा स्वप्न भाग तृतीय में एक हिन्दू के मुकद्दमे के सन्दर्भ में लिखा गया है उसमें भी एक विचित्र विवाद और इन्कार के अवसर पर इल्हाम हुआ था, जिससे एक बड़ा दुख और वेदना दूर हुई। विवरण इस का यह है कि उस सच्चे स्वप्न में जो एक स्पष्ट ®कश्फ़ का रूप था यह विदित कराया गया था कि ®550
एक खत्री हिन्दू विशम्भर दास नामक जो अब तक क़ादियान में जीवित मौजूद है, मुकद्दमा फौजदारी से मुक्त नहीं होगा परन्तु आधा दण्ड कम हो जाएगा परन्तु उसका दूसरा सहबन्धक ख़ुशहाल नामक कि वह भी अब तक क़ादियान में जीवित मौजूद है पूर्ण दण्ड भुगतेगा। अतः इस कश्फ़ के भाग के सन्दर्भ में इस विपत्ति का सामना करना पड़ा कि जब चीफ कोर्ट से इस

① सूरह अलक़दर : 2-6

اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَیۡکُمۡ رَسُوۡلًا ۬ۙ شَاہِدًا عَلَیۡکُمۡ کَمَاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰی فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا ۔ ①

Ⓟ518 وَبِالۡحَقِّ اَنۡزَلۡنٰہُ وَ Ⓟ بِالۡحَقِّ نَزَلَ ۔ ②

शेष हाशिया नं. (11)

नीतियों, अपनी सच्चाइयों, अपनी सुललित और सुगम शैलियों, अपनी सूक्ष्मताओं और रहस्यों तथा अपने अध्यात्मिक प्रकाशों का स्वयं दावा
Ⓟ554 किया है और अपना अद्वितीय Ⓟहोना स्वयं प्रकट कर दिया है। यह बात कदापि नहीं कि केवल मुसलमानों ने अपने विचार में उसकी विशेषताओं को ठहरा दिया है अपितु वह तो स्वयं अपनी विशेषताओं और अपने गुणों

शेष हाशिए का हाशिया नं. (4)

विनीत की भविष्यवाणी के अनुसार उपर्युक्त मुकद्दमे की मिस्ल वापस आई तो मुक़द्दमे से संबंधित लोगों ने इस वापसी को रिहाई पर चरितार्थ करते हुए गांव में प्रसिद्ध कर दिया कि दोनों अपराधी अपराध से बरी हो गए हैं। मुझे याद है कि रात्रि के समय यह ख़बर प्रसिद्ध हुई उस समय यह विनीत मस्जिद में इशा की नमाज़ पढ़ने के लिए तैयार था कि नमाज़ियों में से एक ने वर्णन किया कि बाज़ार में यह ख़बर फैल रही है और अपराधी गांव में आ गए हैं। चूंकि यह विनीत सार्वजनिक तौर पर लोगों में कह चुका था कि दोनों अपराधी अपराध से कदापि बरी नहीं होंगे। इसलिए उस समय जो कुछ शोक, वेदना और बेचैनी हुई वह हुई तब ख़ुदा ने जो इस असहाय बन्दे का हर हाल में सहायक है, नमाज़ के आरंभ अथवा नमाज़ के मध्य
Ⓟ551 इल्हाम के माध्यम से यह Ⓟशुभ सन्देश दिया – لَا تَخَفۡ اِنَّکَ اَنۡتَ الۡاَعۡلٰی
फिर फज्र के समय स्पष्ट हो गया कि वह बरी होने की सूचना सरासर झूठी थी और परिणाम स्वरूप वही प्रकटन में आया जो इस विनीत को सूचना दी गई थी जिसे शरमपत नामक आर्य तथा कुछ अन्य लोगों के पास घटनापूर्व वर्णन किया गया था जो अब तक **क़ादियान** में मौजूद हैं। तत्पश्चात ऐसा ही एक अन्य भयानक वृतान्त गुज़रा, जिस का क़िस्सा इस से भी अनोखा है,

① सूरह अलमुज़म्मिल : 16 ② सूरह बनी इस्राईल : 105

يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ قَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُوۡلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمۡ عَلٰى فَتۡرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنۡ تَقُوۡلُوۡا مَا جَآءَنَا مِنۡۢ بَشِيۡرٍ وَّلَا
نَذِيۡرٍ فَقَدۡ جَآءَكُمۡ بَشِيۡرٌ وَّنَذِيۡرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ ®قَدِيۡرٌ - ① (भाग-6) ®519

शेष हाशिया नं. (11)

का वर्णन करता है तथा समस्त सृष्टि के मुक़ाबले पर अपना अद्वितीय और अनुपम होना प्रस्तुत कर रहा है और उच्च स्तर से هَلۡ مِنۡ مُّعَارِضٍ का
नगाड़ा बजा रहा है तथा उसकी बारीकियां और ®सच्चाइयां मात्र दो-तीन ®555
नहीं जिसमें कोई नादान सन्देह भी करे अपितु उसकी बारीकियां तो अपार समुद्र की भांति जोश मार रही हैं तथा आकाश के नक्षत्रों की भांति जहां

शेष हाशिए का हाशिया नं. (4)

विवरण उसका यह है कि एक मुक़द्दमे में कि इस विनीत के पिता श्री की ओर से अपनी ज़मीदारी के अधिकारों के संबंध में किसी खेतिहर पर किया गया था। इस विनीत पर स्वप्न में यह प्रकट किया गया कि इस मुक़द्दमे में डिग्री हो जाएगी। अत: इस विनीत ने वह स्वप्न एक आर्य को जो क़ादियान में मौजूद है बता दिया, तत्पश्चात संयोग ऐसा हुआ कि अन्तिम तारीख पर
केवल प्रतिवादी अपने कुछ गवाहों के साथ ®अदालत में उपस्थित हुआ ®552
और इस ओर से कोई अधिकार प्राप्त व्यक्ति इत्यादि उपस्थित न हुआ। सायंकाल को प्रतिवादी और समस्त गवाहों ने वापस आकर वर्णन किया कि मुक़द्दमा ख़ारिज हो गया। इस सूचना को सुनते ही उस आर्य ने झुठलाने और हंसी-ठट्ठे का व्यवहार किया। उस समय जितना कष्ट और वेदना हुई वर्णन नहीं की जा सकती, क्योंकि अनुमान से ऐसा नहीं लगता था कि अधिकांश लोगों का बयान जिन में असंबंधित लोग भी थे घटना के विपरीत हो। इस नितान्त शोक और संताप की स्थिति में बड़ी तीव्रता से इल्हाम हुआ जो लोहे के खूंटे की भांति हृदय के अन्दर प्रवेश कर गया और वह यह था **डिग्री हो गई है मुसलमान है** अर्थात क्या तू विश्वास नहीं करता और बावजूद मुसलमान होने के सन्देह को हस्तक्षेप करने देता है। अत: जांच करने पर

① सूरह अल-माइदा : 20

وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۔[1] (भाग-4)

शेष हाशिया नं. 11

दृष्टि डालो चमकती दिखाई देती हैं। कोई सच्चाई नहीं जो उससे बाहर हो कोई नीति नहीं जो उसके वर्णन की परिधि से बाहर रह गई हो, कोई प्रकाश
Ⓟ556 नहीं जो उसके अनुसरण से न मिलता हो। Ⓟये बातें बिना सबूत नहीं। कोई ऐसी बात नहीं जिसे केवल मुख से कहा जाता है अपितु यह वह प्रमाणित और स्पष्ट सबूत रूपी सच्चाई है जो तेरह सौ वर्ष से निरन्तर अपना प्रकाश

शेष हाशिए का हाशिया नं. 4

विदित हुआ कि वास्तव में डिग्री ही हुई थी और प्रतिवादी ने आदेश सुनने में धोखा खाया था। इसी प्रकार वास्तव में बिना अतिश्योक्ति सैकड़ों इल्हाम
Ⓟ553 हैं जो प्राय:काल उदय होने की भांति पूरे हो गए और अधिकांश Ⓟइल्हाम बतौर रहस्यों के हैं जिन्हें यह विनीत वर्णन नहीं कर सकता। अनेक बार ठीक विरोधियों की उपस्थिति में ऐसा खुला-खुला इल्हाम हुआ है जिसके पूर्ण होने से विरोधियों को इक़रार करने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग दिखाई नहीं दिया। अभी कुछ दिन पूर्व की घटना है कि एक बार कुछ बातों में तीन प्रकार की चिन्ता सामने आ गई थी जिसके निवारण का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता था तथा क्षति और हानि सहन करने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं था, उसी दिन शाम के निकट यह विनीत अपनी दिनचर्या के अनुसार जंगल में सैर करने के लिए गया, उस समय मेरे साथ मलावामल नामक एक आर्य था। जब वापस आया तो गांव के द्वार के निकट यह इल्हाम हुआ نُنَجِّيْكَ مِنَ الْغَمِّ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ فिर पुन: हुआ نُنَجِّيْكَ مِنَ الْغَمِّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ अर्थात् हम तुझे इस चिन्ता से मुक्त करेंगे, अवश्य मुक्ति देंगे। क्या तू नहीं जानता कि ख़ुदा हर वस्तु पर सामर्थ्यवान है। अत:
Ⓟ554 उसी समय Ⓟजहां इल्हाम हुआ था उस आर्य को इस इल्हाम के संदर्भ में सूचना

[1] सूरह आले इमरान : 104

وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ - ①

शेष हाशिया नं. (11)

दिखाती चली आई है और हमने भी इस सच्चाई को अपनी इस पुस्तक में नितान्त विस्तारपूर्वक लिखा है तथा क़ुर्आनी बारीकियों और अध्यात्म ज्ञानों का इस सीमा तक वर्णन किया है कि जो एक सच्चे अभिलाषी के सन्तोष और सन्तुष्टि के लिए महासागर की तरह जोश मार रहे हैं। अब यह क्योंकर हो सके कि कोई व्यक्ति केवल मुख की निरर्थक बातों से उस

शेष हाशिए का हाशिया नं. (4)

दी गई थी और फिर ख़ुदा ने वह तीनों प्रकार की चिन्ताओं को दूर कर दिया। इस पर परमेश्वर का धन्यवाद और प्रशंसा। इसी प्रकार के विचित्र संयोगों में से एक यह बात है कि जिस समय शहाबुद्दीन मुवह्हिद ने आदरणीय मौलवियों की राय वर्णन की उसी रात अंग्रेज़ी में एक इल्हाम हुआ जो शहाबुद्दीन को सुनाया गया और वह यह है - **दो आल मैन शुड बी ऐन्ग्री बट गौड इज़ विद यू, ही शैल हैल्प यू, वर्ड्स आफ गौड कैन नाट एक्सचेन्ज*** अर्थात् यदि समस्त लोग नाराज़ होंगे परन्तु ख़ुदा तुम्हारे साथ है वह तुम्हारी सहायता करेगा, ख़ुदा की बातें परिवर्तित नहीं हो सकतीं। फिर इसके अतिरिक्त और भी कुछ इल्हाम हुए जो निम्नलिखित हैं -

اَلْخَيْرُ كُلُّهٗ فِي الْقُرْاٰنِ كِتَابُ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ - اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ अर्थात् सम्पूर्ण भलाई ℗क़ुर्आन करीम में है जो अल्लाह तआला की किताब है वही℗555 अल्लाह जो रहमान (दयालु) है उसी रहमान की ओर पवित्र बातें जाती हैं هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَ يَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ - अल्लाह वह दयालु हस्ती है जो निराशा के बाद मेंह बरसाता है और अपनी दया को संसार में फैलाता है अर्थात यथासमय धर्म के नवीनीकरण की ओर ध्यान देता

① सूरह अल-क़सस : 48

* Though all men should be angry but God is with you, He shall help you. Words of God can not exchange. (अनुवादक)

®520 وَلَوۡ لَا دَفۡعُ اللّٰہِ®النَّاسَ بَعۡضَہُمۡ بِبَعۡضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الۡاَرۡضُ وَلٰکِنَّ اللّٰہَ ذُوۡ فَضۡلٍ عَلَی

الۡعٰلَمِیۡنَ - تِلۡکَ اٰیٰتُ اللّٰہِ نَتۡلُوۡہَا عَلَیۡکَ بِالۡحَقِّ ؕ وَاِنَّکَ لَمِنَ الۡمُرۡسَلِیۡنَ - ①

शेष हाशिया नं. 11

महान प्रकाश की प्रतिष्ठा को खंडित करे हां यदि किसी के हृदय को यह
®558 भ्रम लगा हुआ है कि ये समस्त बारीकियां, अध्यात्म ज्ञान, रहस्य ®और
विशेषताएं जिन्हें क़ुर्आन करीम में सिद्ध करके दिखाया गया है किसी अन्य
®559 किताब से भी निकल सकती हैं। ®अत: शास्त्रार्थ का सीधा मार्ग यह है
कि वह उपर्युक्त नियमों के अनुसार उस किताब के रहस्य, बारीकियां और

शेष हाशिए का हाशिया नं. 4

है یَجۡتَبِیۡ اِلَیۡہِ مَنۡ یَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِہٖ जिसे चाहता है बन्दों में से चुन लेता है وَکَذٰلِکَ مُنَنَّا عَلٰی یُوۡسُفَ لِنَصۡرِفَ عَنۡہُ السُّوۡٓءَ وَالۡفَحۡشَآءَ وَلِتُنۡذِرَ قَوۡمًا مَّا اُنۡذِرَ اٰبَآءُہُمۡ فَہُمۡ غٰفِلُوۡنَ- और इसी प्रकार हमने यूसुफ पर उपकार किया ताकि हम उससे बुराई और अश्लीलता को रोक दें और ताकि तू उन लोगों को डराए जिन के बाप-दादों को किसी ने नहीं डराया। अत: वे लापरवाही में पड़े हुए हैं। यहां यूसुफ़ के शब्द से यही ख़ाकसार अभिप्राय है कि जो किसी अध्यात्मिक अनुकूलता के चरितार्थ हुआ। وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ بِالصَّوَاب

तत्पश्चात फ़रमाया -

قُلۡ عِنۡدِیۡ شَہَادَۃٌ مِّنَ اللّٰہِ فَہَلۡ اَنۡتُمۡ مُّؤۡمِنُوۡنَ اِنَّ مَعِیَ رَبِّیۡ سَیَہۡدِیۡنِ - رَبِّ اغۡفِرۡ وَارۡحَمۡ مِّنَ السَّمَآءِ رَبَّنَا عَاجٍ - رَبِّ السِّجۡنُ اَحَبُّ اِلَیَّ مِمَّا یَدۡعُوۡنَنِیۡۤ اِلَیۡہِ - رَبِّ نَجِّنِیۡ مِنۡ غَمِّیۡ - اِیۡلِیۡ اِیۡلِیۡ لِمَا سَبَقۡتَنِیۡ - کرمہائے تو مارا کرد گستاخ

कह मेरे पास ख़ुदा की गवाही है। अत: क्या तुम ईमान नहीं लाते अर्थात् ख़ुदा तआला के समर्थनों तथा परोक्ष के रहस्यों से सूचित करना और घटनापूर्व गुप्त ख़बरें बताना, दुआओं को स्वीकार करना और भिन्न-भिन्न भाषाओं में इल्हाम देना, ख़ुदाई ज्ञानों और सच्चाइयों से अवगत करना यह सब ख़ुदा की गवाही है जिसे स्वीकार करना ईमानदार का कर्तव्य है। शेष

① सूरह अल-बक़रह 252-253

وَمَاأَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ۔ ①

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّا أُنْذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ۔ ②

शेष हाशिया नं. (11)

विशेषताएं प्रस्तुत करे और जिस प्रकार क़ुर्आन समस्त मिथ्या आस्थाओं के खंडन पर आधारित है और जिस प्रकार वह पवित्र कलाम प्रत्येक उचित आस्था को बौद्धिक तर्कों द्वारा सिद्ध करता है और जिस प्रकार उन पवित्र ग्रन्थों में अध्यात्म ज्ञान और ख़ुदाई रहस्यों का उल्लेख है और जिस प्रकार

शेष हाशिए का हाशिया नं. (4)

उपर्युक्त इल्हामों का अनुवाद यह है - कि निश्चय ही मेरा रब्ब मेरे साथ है वह मेरा मार्ग-दर्शन करेगा। हे मेरे रब्ब! मेरे पाप क्षमा कर और आकाश से दया कर, हमारा रब्ब आजी है (इसके अर्थ अभी तक मालूम नहीं हुए) जिन बेहूदा बातों की ओर मुझे बुलाते हैं हे मेरे रब्ब उन से मुझे कारावास अच्छा है। हे मेरे ख़ुदा मुझे मेरी चिन्ता से मुक्त कर, हे मेरे ख़ुदा, हे मेरे ख़ुदा तूने मुझे क्यों छोड़ दिया, तेरी अनुकम्पाओं ने हमें धृष्ट कर दिया। ये सब रहस्य हैं जो अपने-अपने समय पर चरितार्थ हैं जिन का ज्ञान हज़रत अन्तर्यामी को है। तत्पश्चात फ़रमाया - **هوشعنا نعسا** ये दोनों शब्द शायद इबरानी हैं और इनके कार्य अभी तक इस ख़ाकसार पर प्रकट नहीं हुए। तत्पश्चात् दो वाक्य अंग्रेज़ी के हैं जिसके शब्दों का यथोचित होना इल्हाम की तीव्रता के कारण अभी तक ज्ञात नहीं और वे यह हैं - **"आई लव यू, आई शैल गिव यू अ लार्ज पार्टी आफ़ इस्लाम"*** अत: इस समय अर्थात आज के दिन यहां कोई अंग्रेज़ी जानने वाला नहीं और न इसके पूरे-पूरे अर्थ प्रकट हुए हैं, इसलिए बिना अर्थों के लिखा गया। तत्पश्चात यह इल्हाम है -

يَا عِيْسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ (وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا③) وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ

① सूरह अल-अम्बिया : 108 ② सूरह यासीन : 7

* I love you, I shall give you a large party of Islam. (अनुवादक)

③ यह वाक्य लिपिक की भूल से बराहीन में रह गया है (बराहीन अहमदिया भाग-पंचम, पृष्ठ : 73 हाशिया)

Ⓟ521 أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ Ⓟأَوْ يَعْقِلُونَ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا - ①
وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِن دَابَّةٍ - ②

शेष हाशिया नं. (11)

Ⓟ560 उनमें हृदय Ⓟको प्रकाशित करने के सन्दर्भ में विचित्र गुण और अदभुत प्रभाव पाए जाते हैं जिन्हें हमने इस पुस्तक में सिद्ध कर दिया है वह सब अपनी किताब से प्रस्तुत करके दिखाए और जब तक ऐसा न करे तब तक
Ⓟ561 किसी के भों-भों करने से Ⓟचन्द्रमा के प्रकाश में कुछ अन्तर नहीं आ सकता अपितु ऐसे व्यक्ति की दशा नितान्त खेदजनक है कि अब तक नितान्त स्पष्ट

शेष हाशिए का हाशिया नं. (4)

Ⓟ558 اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ وَ Ⓟثُلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ -
हे ईसा मैं तुझे पूर्ण प्रतिफल प्रदान करूंगा या मृत्यु दूंगा और अपनी ओर उठाऊंगा अर्थात् पदों में उन्नत करूंगा या संसार से अपनी ओर उठाऊंगा और तेरे अनुयायियों को इन्कार करने वालों पर प्रलय तक प्रभुत्व प्रदान करूंगा अर्थात् तेरे मानने वालों और तेरे अनुयायियों को सबूत और तर्कों तथा बरकतों की दृष्टि से दूसरे लोगों पर प्रलय तक श्रेष्ठ रखूंगा। पहलों में से भी एक वर्ग है और बाद में आने वालों में से भी एक वर्ग है। यहां ईसा के नाम से भी अभिप्राय यही ख़ाकसार है। तत्पश्चात् उर्दू में इल्हाम हुआ **मैं अपनी चमक दिखाऊंगा। अपनी शक्ति के प्रदर्शन द्वारा तुझे उठाऊंगा। संसार में एक डराने वाला आया, परन्तु संसार ने उसे स्वीकार न किया परन्तु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।** اَلْفِتْنَةُ هٰهُنَا فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُوا الْعَزْمِ यहां एक फितना (उपद्रव) है। अत: दृढ़ संकल्प नबियों की भांति धैर्य से काम ले فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا जब ख़ुदा कठिनाइयों के पर्वत पर अपनी झलक दिखाएगा तो उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर देगा। قُوَّةُ الرَّحْمٰنِ لِعُبَيْدِ اللّٰهِ الصَّمَدِ यह ख़ुदा की शक्ति है जो अपने बन्दे के लिए वह स्वच्छन्द समृद्धिशाली प्रकट करेगा।

① सूरह अल-फ़ुरक़ान : 45 ② सूरह फातिर : 46

وَهُوَالَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ الرِّیٰحَ بُشۡرًۢا بَیۡنَ یَدَیۡ رَحۡمَتِہٖ ۚ وَاَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَہُوۡرًا-

Ⓟ522 لِّنُحۡیِۦَ بِہٖ بَلۡدَۃً مَّیۡتًا وَّنُسۡقِیَہٗ مِمَّا خَلَقۡنَاۤ اَنۡعَامًا وَّاَنَاسِیَّ Ⓟ كَثِيْرًا-①

शेष हाशिया नं. 11

सच्चाई से अभागा और वंचित रहने के लिए जान-बूझ कर पथ-भ्रष्टता के मार्गों में क़दम रखता है। हमारे प्रतिद्वन्द्वियों में से अनेक सज्जन प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित हैं और जहां तक हम विचार करते हैं, उनके ज्ञान और बोध के सन्दर्भ में हमारा यही विश्वास है कि यदि न्याय से काम लें तो उन सच्चाइयों को नितान्त स्पष्ट तौर पर समझ सकते हैं। हमारी नीयत में स्वार्थ

शेष हाशिए का हाशिया नं. 4

مَقَامٌ لَا تَتَرَقَّى الْعَبْدُ فِيْهِ بِسَعْيِ الْاَعْمَالِ अर्थात अब्दुल्लाह अस्समद होना एक पद है जो प्रदत्तता की विशेष शैली के तौर पर प्रदान किया जाता है प्रयासों से प्राप्त नहीं हो सकता।

Ⓟ558 يَا Ⓟ دَاوُدُ عَامِلْ بِالنَّاسِ رِفْقًا وَّ اِحْسَانًا وَّ اِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَا- وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ-

यू मस्ट डू व्हाट आई टोल्ड यू तुम्हें वह करना चाहिए जो मैंने कहा है - اُشْكُرْ نِعْمَتِيْ رَاَيْتَ خَدِيْجَتِيْ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ - اَنْتَ مُحَدَّثُ اللّٰهِ فِيْكَ مَادَّةٌ فَارُوْقِيَّةٌ हे दाऊद ख़ुदा की प्रजा के साथ नर्मी और उपकार का व्यवहार कर और सलाम का उत्तर उत्तम तौर पर दे, और अपने रब्ब की नै'मत की लोगों से चर्चा कर, मेरी नै'मत का धन्यवाद कर कि तूने उसे समय से पूर्व पाया, आज तुझे महान आनन्द है। तू अल्लाह का मुहद्दिस है तुझ में फारूक़ी तत्त्व है।

سَلَامٌ عَلَيْكَ يَا اِبْرَاهِيْمُ - اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ - ذُوْ عَقْلٍ مَّتِيْنٍ - حِبُّ اللّٰهِ خَلِيْلُ اللّٰهِ اَسَدُ اللّٰهِ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ - مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى - اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ - اَلَمْ نَجْعَلْ لَّكَ سُهُوْلَةً فِيْ كُلِّ اَمْرٍ بَيْتُ الْفِكْرِ وَ بَيْتُ الذِّكْرِ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا-

① सूरह अल-फ़ुरक़ान : 49-50

وَلَوْشِئْنَا لَبَعَثْنَا فِیْ كُلِّ قَرْیَةٍ نَّذِیْرًا - فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِیْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِیْرًا - ①

وَهُوَ الَّذِیْ جَعَلَ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ یَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا - ②

शेष हाशिया नं. (11)

और अहंकार का कदापि झगड़ा नहीं और अतिरिक्त इसके कि संसार में सच्चाई और नेकी फैलाई जाए अन्य कोई उद्देश्य नहीं। अतः न्यायप्रिय विद्वान लोगों से यही विनती है कि वे भी क्षणभर के लिए सच्ची नीयत को प्रयोग में लाएं। जिस स्थिति में उन की दानशीलता और उत्तर स्वभाव क़ौम में मान्य हैं तो हम क्योंकर निराश हो सकते हैं या क्योंकर सोच सकते हैं

शेष हाशिए का हाशिया नं. (4)

तुझ पर सलाम है हे इब्राहीम तू आज हमारे निकट पद वाला, अमानतदार और कुशाग्र बुद्धि है और ख़ुदा का मित्र है, ख़लीलुल्लाह है, असदुल्लाह (ख़ुदा का शेर) है तथा मुहम्मद (स.अ.व.) पर दरूद भेज अर्थात् यह उस नबी करीम के अनुसरण का परिणाम है। शेष अनुवाद यह है - ख़ुदा ने तुझे नहीं छोड़ा और न तुझ पर क्रोधित है, क्या हमने तेरा सीना नहीं खोला, क्या हम ने प्रत्येक बात में तेरे लिए आसानी नहीं की कि तुझे बैतुल फ़िक्र और बैतुज़्ज़िक्र प्रदान किया और जो व्यक्ति बैतुज़्ज़िक्र में निष्कपटता, इबादत (उपासना) के इरादे, उचित नीयत और उत्तम ईमान के साथ प्रवेश करेगा वह अशुभ अन्त से सुरक्षा में आ जाएगा। बैतुलफ़िक्र से अभिप्राय यहां वह चौबारा है जिसमें यह ख़ाकसार पुस्तक लिखने के लिए व्यस्त रहा है और
Ⓟ559 रहता है और बैतुज़्ज़िक्र से अभिप्राय वह मस्जिद है Ⓟकि जो इस चौबारे के साथ निर्मित की गई है और अन्तिम उपर्युक्त वाक्य इसी मस्जिद की विशेषता के सन्दर्भ में वर्णन किया गया है जिसके अक्षरों से मस्जिद की बुनियाद की तिथि भी निकलती है और वह यह है -

مُبَارِکٌ وَّمُبَارَکٌ وَّكُلُّ اَمْرٍ مُّبَارَکٍ یُّجْعَلُ فِیْهِ

अर्थात यह मस्जिद बरकत देने वाली और बरकत प्राप्त है और इसमें प्रत्येक

① सूरह अल-फ़ुरक़ान : 52-53 ② सूरह अल-फ़ुरक़ान : 63

وَھُوَالَّذِیْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَہٗ نَسَبًا وَّصِھْرًا ؕ وَکَانَ رَبُّکَ قَدِیْرًا۔ ①

523 اَلَمْ تَرَ اِلٰی رَبِّکَ کَیْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْشَآءَ لَجَعَلَہٗ سَاکِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَیْہِ

शेष हाशिया नं. (11)

कि उसे उत्तम स्वभाव व्यक्ति का इस से अधिक विशाल होना संभव नहीं। इसलिए यद्यपि मैंने अब तक किसी विरोधी को न्यायोचित क़दम उठाते हुए नहीं पाया परन्तु अभी तक मेरी राय ठोस विश्वास पर स्थापित है और अत्यन्त ठोस आशा से मैं विचार करता हूं कि जब हमारे न्याय-प्रिय विरोधी अत्यन्त गहरी दृष्टि से इस ओर ध्यान देंगे तो स्वयं उनकी अपनी निगाहें

शेष हाशिए का हाशिया नं. (4)

बात मुबारक की जाएगी तत्पश्चात इस ख़ाकसार के संदर्भ में फ़रमाया - رُفِعْتَ وَجُعِلْتَ مُبَارَکًا तू ऊंचा किया गया और मुबारक बनाया गया।

وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ یَلْبِسُوْا اِیْمَانَھُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِکَ لَھُمُ الْاَمْنُ وَھُمْ مُّھْتَدُوْنَ

अर्थात जो लोग इन बरकतों और प्रकाशों पर ईमान लाएंगे जो तुझे ख़ुदा तआला ने प्रदान किए हैं तथा उन का ईमान शुद्ध और वफ़ादारी से होगा तो पथ-भ्रष्टता के मार्गों से शान्ति में आ जाएंगे और वे ही हैं जो ख़ुदा की दृष्टि में पथ-प्रदर्शन प्राप्त हैं

یُرِیْدُوْنَ اَنْ یُّطْفِؤُا نُوْرَ اللّٰہِ۔ قُلِ اللّٰہُ حَافِظُہٗ۔ عِنَایَۃُ اللّٰہِ حَافِظُکَ۔ نَحْنُ نَزَّلْنَاہُ وَاِنَّا لَہٗ لَحَافِظُوْنَ۔ اَللّٰہُ خَیْرٌ حَافِظًا وَّھُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ۔ وَیُخَوِّفُوْنَکَ مِنْ دُوْنِہٖ۔ اَئِمَّۃَ الْکُفْرِ۔ لَا تَخَفْ اِنَّکَ اَنْتَ الْاَعْلٰی یَنْصُرُکَ اللّٰہُ فِیْ مَوَاطِنَ۔ اِنَّ یَوْمِیْ لَفَصْلٌ عَظِیْمٌ۔ کَتَبَ اللّٰہُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیْ لَا مُبَدِّلَ لِکَلِمَاتِہٖ بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ۔ نَصَرْتُکَ مِنْ لَّدُنِّیْ۔ اِنِّیْ مُنَجِّیْکَ مِنَ الْغَمِّ۔ وَکَانَ رَبُّکَ قَدِیْرًا۔ اَنْتَ مَعِیْ وَاَنَا مَعَکَ۔ خَلَقْتُ لَکَ لَیْلًا وَّنَھَارًا۔ اِعْمَلْ مَاشِئْتَ فَاِنِّیْ قَدْ غَفَرْتُ لَکَ۔ اَنْتَ مِنِّیْ بِمَنْزِلَۃٍ لَا یَعْلَمُھَا الْخَلْقُ۔

विरोधीगण इरादा करेंगे कि ख़ुदा के प्रकाश को बुझा दें। वह ख़ुदा इस

① सूरह अल-फ़ुरक़ान : 55

دَلِیۡلًا ۔ ثُمَّ قَبَضۡنٰہُ اِلَیۡنَا قَبۡضًا یَّسِیۡرًا ۔ وَ ھُوَ الَّذِیۡ جَعَلَ لَکُمُ الَّیۡلَ لِبَاسًا وَّ النَّوۡمَ سُبَاتًا وَّ جَعَلَ النَّھَارَ نُشُوۡرًا ۔①

शेष हाशिया नं. (11)

उनके भ्रमों का निवारण करने के लिए पर्याप्त होंगी। मुझे आशा थी कि इस
Ⓟ562 पुस्तक के तृतीय भाग के प्रकाशित होने से Ⓟब्रह्म समाज और आर्य समाज के विद्वान अपनी ग़लती से अवगत होकर वास्तविक सच्चाई की ओर एक प्यासे की भांति दौड़ेंगे परन्तु खेद कि अब मैं देखता हूं कि मेरे विवेक ने ग़लती की और मुझे इस बात के सुनने से मेरे हृदय को बहुत ही दुख हुआ

शेष हाशिए का हाशिया नं. (4)

प्रकाश का स्वयं रक्षक है। ख़ुदा की कृपा तेरी संरक्षक है। हमने उतारा है और हम ही रक्षक हैं, ख़ुदा समस्त रक्षकों से उत्तम रक्षक है और वह समस्त दया करने वालों से उत्तम दयालु है। तुझे और वस्तुओं से भयभीत करेंगे, ये ही कुफ्र के पेशवा हैं। भय न कर प्रभुत्व तुझे ही है अर्थात् सबूत और तर्क, स्वीकारिता और बरकत की दृष्टि से तू ही विजयी है। ख़ुदा अनेकों मैदानों में तेरी सहायता करेगा अर्थात् शास्त्रार्थ, मुबाहसे और विवादों में तेरा प्रभुत्व रहेगा। फिर फ़रमाया - कि मेरा दिन सत्य और असत्य में स्पष्ट अन्तर करेगा। ख़ुदा लिख चुका है कि विजय मुझे और मेरे रसूलों को है। कोई नहीं कि जो ख़ुदा की बातों को टाल दे। ये ख़ुदा के काम धर्म की सच्चाई के लिए सबूत हैं। मैं अपनी ओर से तुझे सहायता दूंगा, मैं स्वयं तेरी चिन्ता दूर करूंगा और तेरा ख़ुदा सामर्थ्यवान है, तू मेरे साथ और मैं तेरे साथ हूं। मैंने तेरे लिए रात और दिन को उत्पन्न किया। तू जो कुछ चाहे कर कि मैंने तुझे क्षमा किया। तू मुझ से वह सानिध्य रखता है जिसकी लोगों को सूचना नहीं। इस अन्तिम वाक्य का अर्थ यह नहीं कि शरीअत की ओर से निषिद्ध बातें तुझे वैध हैं अपितु इसका अभिप्राय यह है कि तेरी दृष्टि में निषिद्ध बातें घृणास्पद की गई हैं तथा शुभ कार्यों का प्रेम तेरे स्वभाव में डाला गया

① सूरह अल-फ़ुरक़ान : 46-48

اِعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰہَ یُحۡیِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِہَا ؕ قَدۡ بَیَّنَّا لَکُمُ الۡاٰیٰتِ لَعَلَّکُمۡ تَعۡقِلُوۡنَ ۔ ①

अर्थात हमें अपनी ख़ुदावन्दी की हस्ती की सौगन्ध है जो पर्थ-प्रदर्शन और

शेष हाशिया नं. (11)

कि ब्रह्म समाज वालों तथा आर्यों ने मेरी पुस्तक का ध्यानपूर्वक अध्ययन नहीं किया, विशेषकर मुझे पंडित शिवनारायन साहिब की समीक्षा देखने से ब्रह्म समाज वालों के स्वभाव में द्वेष का एक संसार दिखाई दिया (परमेश्वर दया करे) खेद कि पंडित साहिब ने उन ख़ुदाई सच्चाइयों से जो सूर्य की भांति चमक रही हैं कुछ भी लाभ प्राप्त न किया और इतने शक्तिशाली और

शेष हाशिए का हाशिया नं. (4)

है। अर्थात् जो ख़ुदा की इच्छा है वह बन्दे की इच्छा बनाई गई और उसकी दृष्टि में ईमान संबंधी समस्त बातें स्वाभाविक तौर पर प्रिय की गईं।

وَذَالِکَ فَضۡلُ اللّٰہِ یُؤۡتِیۡہِ مَنۡ یَّشَآءُ وَقَالُوۡۤا اِنۡ ھُوَ اِفۡکُ ۨ افۡتَرٰی - وَمَا سَمِعۡنَا
بِھٰذَا فِیۡۤ اٰبَآئِنَا الۡاَوَّلِیۡنَ وَلَقَدۡ کَرَّمۡنَا بَنِیۡۤ اٰدَمَ وَفَضَّلۡنَا بَعۡضَھُمۡ عَلٰی بَعۡضٍ -
اِجۡتَبَیۡنَاھُمۡ وَ اصۡطَفَیۡنَاھُمۡ کَذَالِکَ لِیَکُوۡنَ اٰیَةً لِّلۡمُؤۡمِنِیۡنَ - اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنَّ
اَصۡحٰبَ الۡکَھۡفِ وَالرَّقِیۡمِ کَانُوۡا مِنۡ اٰیٰتِنَا عَجَبًا - قُلۡ ھُوَ اللّٰہُ عَجِیۡبٌ - کُلَّ یَوۡمٍ
ھُوَ فِیۡ شَاۡنٍ - فَفَھَّمۡنَاھَا سُلَیۡمٰنَ وَ جَحَدُوۡا بِھَا وَ اسۡتَیۡقَنَتۡھَاۤ اَنۡفُسُھُمۡ ظُلۡمًا
وَّعُلُوًّا - سَنُلۡقِیۡ فِیۡ قُلُوۡبِھِمُ الرُّعۡبَ - قُلۡ جَآءَکُمۡ نُوۡرٌ مِّنَ اللّٰہِ فَلَا تَکۡفُرُوۡا
اِنۡ کُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ - سَلَامٌ عَلٰۤی اِبۡرَاھِیۡمَ صَافَیۡنَاہُ وَنَجَّیۡنَاہُ مِنَ الۡغَمِّ تَفَرَّدۡنَا
بِذَالِکَ - فَاتَّخِذُوۡا مِنۡ مَّقَامِ Ⓟ اِبۡرَاھِیۡمَ مُصَلًّی - Ⓟ562

और कहेंगे कि यह झूठ बना लिया है। हमने अपने पूर्वजों में अर्थात् पूर्वकालीन वलियों में यह नहीं सुना, यद्यपि कि लोग एक समान पैदा नहीं किए गए। कुछ को कुछ पर ख़ुदा ने श्रेष्ठता दी है और उन्हें दूसरों में से चुन लिया है। यही सत्य है ताकि मौमिनों के लिए निशान हो। क्या तुम सोचते हो कि हमारे अदभुत कार्य केवल अस्हाबे कहफ़ पर ही समाप्त हैं। नहीं अपितु ख़ुदा तो हमेशा चमत्कारों वाला है उसके चमत्कार कभी

① सूरह अल-हदीद : 18, भाग-27

पालन-पोषण की दानशीलता का उद्‌गम तथा समस्त पूर्ण विशेषताओं का संकलन है कि हमने तुझ से पूर्व संसार के कई सम्प्रदायों और क़ौमों में पैग़म्बर भेजे। वे लोग

शेष हाशिया नं. 11

दृढ़ सबूतों के प्रकाश से पंडित साहिब के द्वेषरूपी अंधकार में कुछ भी कमी नहीं आई। यह बात निश्चय ही अत्यन्त आश्चर्यजनक है कि ऐसे बुद्धिमान और विद्वान लोग ऐसे पूर्ण सबूत को देखकर उसे स्वीकार करने में विलम्ब करें। पंडित साहिब ने इस इन्कार से न केवल न्याय-सीमा का उल्लंघन किया है अपितु सच्चाई को छुपा कर अपनी क़ौम की सहानुभूति से अपितु

शेष हाशिए का हाशिया नं. 4

समाप्त नहीं होते। प्रत्येक दिन में वह एक शान में है। अत: हमने वे निशान सुलैमान को समझाए अर्थात इस ख़ाकसार को अन्य लोगों ने मात्र अन्याय के मार्ग से अस्वीकार किया हालांकि उन के हृदय ने विश्वास कर लिया था। अत: शीघ्र ही हम उनके हृदयों में भय डाल देंगे। वह ख़ुदा की ओर से प्रकाश उतरा है इसलिए यदि तुम मौमिन हो तो अस्वीकार मत करो। इब्राहीम पर सलाम, हमने उसे शुद्ध किया और चिन्ता से मुक्त किया। हमने ही यह काम किया। अतएव तुम इब्राहीम के पद-चिन्हों पर चलो अर्थात् रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सदमार्ग जो वर्तमान युग में अधिकांश लोगों पर संदिग्ध हो गया है और कुछ यहूदियों की भांति केवल सृष्टि पूजकों और कुछ द्वैतवादियों की तरह सृष्टि उपासना तक पहुंच गए हैं यह मार्ग ख़ुदा तआला के इस विनीत बन्दे से ज्ञात कर लें और उस का पालन करें।

(۱) ترسم آں قوم کہ بر دُرد کشاں مے خندند
در سرکار خرابات کنند ایماں را

मुझे आशंका है कि वे लोग जो गाद पीने वालों पर उपहास करते थे उन्होंने बुरी परम्परा में पड़कर अपना ईमान ख़राब कर लिया।*

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ-

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

®शैतान के धोखा देने से बिगड़ गए और दुष्कर्म उन्हें शुभ कर्म दिखाई देने लगे। ®524 अत: वही शैतान आज उन सब का मित्र है जो उन्हें सद्मार्ग से विमुख कर रहा है। यह किताब इसलिए उतारी गई है ताकि उन लोगों के मतभेदों का निवारण किया जाए और मौमिनों के लिए वे हिदायतें जो पूर्वकालीन किताबों में अपूर्ण रह गई थीं पूर्ण रूप से वर्णन की जाएं ताकि वह पूर्ण दया का कारण हो और वस्तु स्थिति यह है कि सम्पूर्ण पृथ्वी मर गई थी ख़ुदा ने आकाश से पानी उतारा और नए सिरे से उस ®मुर्दा पृथ्वी को जीवित किया। यह इस किताब की सच्चाई का एक प्रतीक है, परन्तु ®525 उन लोगों के लिए जो सुनते हैं अर्थात् सत्य के अभिलाषी हैं तथा फिर फ़रमाया कि ख़ुदा तआला वह दयालु और कृपालु हस्ती है जिसका अनादिकाल से यह प्रकृति का नियम है कि वह हवाओं को दया से पूर्व अर्थात् वर्षा से पूर्व चलाता है, यहां

शेष हाशिया नं. (11)

ख़ुदा से भी अवकाश प्राप्त कर बैठे हैं और मुझे इस बात के प्रकट करने की आवश्यकता नहीं कि पंडित साहिब का इन्कार कितना अन्यायपूर्ण है। यह बात स्वयं उस व्यक्ति पर प्रकट हो सकती है जो प्रथम मेरी पुस्तक को देखे कि मैंने क्योंकर अल्लाह की वह्यी की आवश्यकता एवं उसके अस्तित्व का प्रमाण प्रस्तुत किया है और फिर पंडित साहिब के लेख पर दृष्टि डालें कि उन्होंने मेरे मुक़ाबले पर क्या लिखा है और मेरे तर्कों का क्या उत्तर दिया

शेष हाशिए का हाशिया नं. (4)

(۲) دوستاں عیب کنندم کہ چرا دل بتو دادم
باید اوّل بتو گفن کہ چنیں خوب چرائی

मित्र मेरी निन्दा करते हैं कि मैंने तुझे अपना दिल क्यों दे दिया, सर्वप्रथम चाहिए था कि मैं तुझे बता देता कि तू इतना रूपवान क्यों है।*

والفضل من اللہ ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم -

इसी से

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

तक कि हवाएं जब भारी बादलों को उठा लाती हैं तो हम किसी मुरदा शहर की ओर
अर्थात जिस ज़िले में अनावृष्टि के कारण पृथ्वी मुरदे की भांति शुष्क हो गई हो उन
Ⓟ526हवाओं को हांक देते हैं फिर उससे पानी उतारते हैं तथा उसके Ⓟद्वारा भिन्न-भिन्न
प्रकार के मेवे उत्पन्न कर देते हैं। इसी प्रकार अध्यात्मिक मुरदों को मौत के गढ़े
से निकाला करते हैं। यह उदाहरण इसलिए वर्णन किया गया ताकि तुम ध्यान करो
और इस बात को समझ जाओ कि जैसे हम अनावृष्टि की भयंकरता के समय मुरदा
पृथ्वी को जीवित कर दिया करते हैं। ऐसा ही हमारा नियम है कि जब पथ-भ्रष्टता
अत्यधिक फैल जाती है और हृदय जो पृथ्वी के समरूप है मर जाते हैं तो हम उनमें
जीवन की रूह (आत्मा) डाल देते हैं तथा जो पावन पृथ्वी है उसकी खेती तो ख़ुदा
Ⓟ527की आज्ञा से जैसी चाहिए निकलती है और जो Ⓟपृथ्वी ख़राब है उससे केवल थोड़ी
सी खेती निकलती है तथा उत्तम खेती नहीं निकलती। इसी प्रकार से हम फेर-फेर
कर बताते हैं ताकि जो धन्यवाद करने वाले हैं धन्यवाद करें। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा
तआला वह दयालु और कृपालु अस्तित्व है जो आवश्यकता के समय ऐसी हवाएं
चलाता है जो बादलों को उभारती हैं फिर ख़ुदा तआला उस बादल को जिस प्रकार
चाहता है आकाश में फैला देता है और उसे क्रमशः कई परतों में रखता है। फिर
तू देखता है कि उसके मध्य से वर्षा निकलती है, फिर अपने बन्दों में से जिन बन्दों
Ⓟ528को उस वर्षा का पानी पहुंचाता है तो वे ख़ुशहाल हो जाते हैं और Ⓟअचानक ख़ुदा
उनके शोक को प्रसन्नता में परिवर्तित कर देता है तथा वर्षा के उतरने से पूर्व उन्हें
नितान्त सख़्ती के कारण कुछ आशा शेष नहीं रहती फिर अचानक ख़ुदा तआला
उनकी सहायता करता है अर्थात् ऐसे समय में कृपा-वृष्टि होती है जब लोगों के
हृदय टूट जाते हैं और वर्षा होने की कोई आशा शेष नहीं रहती और फ़रमाया कि
तू ख़ुदा की दया की ओर दृष्टि डाल कर देख तथा उसकी दया की निशानियों पर
विचार कर कि वह क्योंकर पृथ्वी को उसके मरने के पश्चात जीवित करता है।

शेष हाशिया नं. (11)

है। जो लोग पंडित साहिब की क़ौम में से इस पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे, उनकी आत्माओं पर पंडित साहिब कदापि पर्दा नहीं डाल सकते इस शर्त पर कि कोई स्वाभाविक पर्दा न हो।

नि:सन्देह वही ख़ुदा है जिसका यह भी ®स्वभाव है कि जब लोग आध्यात्मिक तौर®529 पर मर जाते हैं और सख़्ती अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाती है तो उसी प्रकार वह उन्हें भी जीवित करता है तथा वह प्रत्येक बात पर समर्थ और शक्तिमान है, उसी ने आकाश से पानी उतारा, फिर प्रत्येक घाटी अपने अपने अनुमान और क्षमता के अनुसार बह निकली अर्थात प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी पात्रता के अनुसार लाभ प्राप्त किया और फिर फ़रमाया – कि वह रसूल उस समय आया, जब जंगल और दरिया में खराबी प्रकट हो गई अर्थात् समस्त पृथ्वी पर अंधकार और पथ-भ्रष्टता फैल गई और क्या अनपढ़ लोग और क्या अहले किताब और अहले इल्म (ज्ञानवान) सबके सब बिगड़ गए तथा कोई सत्य पर स्थापित न रहा और यह सब ख़राबी इसलिए हुई कि लोगों के हृदयों से निष्कपटता और निष्ठा जाती रही उनके कर्म ख़ुदा के लिए न रहे अपितु उन में बहुत सा विघ्न उत्पन्न हो गया और वे सब संसार की ओर झुक गए तथा सत्य की ओर न रहे। अतः उनसे ख़ुदा की सहायता समाप्त हो गई। अतः ख़ुदा ने समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने हेतु उनमें अपना रसूल भेजा ताकि उन्हें उनके कुछ कर्मों ®का स्वाद चखाए और ताकि ऐसा हो कि वे लौटें। कह®530 पृथ्वी में भ्रमण करो फिर देखो कि तुम से पूर्व जो काफ़िर और उपद्रवी गुज़र चुके हैं उनका क्या परिणाम हुआ और उनमें से अधिकांश द्वैतवादी ही थे। क्या उन्होंने कभी नहीं देखा कि हमारा यही नियम और ढंग है कि हम शुष्क पृथ्वी की ओर पानी भेज दिया करते हैं फिर उस से खेती निकालते हैं ताकि उनके चौपाए और वे स्वयं खेती को खाएं तथा मरने से सुरक्षित हो जाएं। अतः तुम क्यों ध्यानपूर्वक निरीक्षण नहीं करते ताकि तुम इस बात को समझ जाओ कि वह कृपालु और दयालु ख़ुदा जो तुम्हें शारीरिक मृत्यु से बचाने के लिए भयंकर अकाल और अनावृष्टि के समय कृपा-वृष्टि उतारता है। वह पथ-भ्रष्टता की अधिकता के समय जो अध्यात्मिक अकाल है जीवन का पानी उतारने से जो उसका कलाम है तुम से संकोच करे। फिर फ़रमाया कि हमने रात और दिन दो निशानियां बनाई हैं अर्थात् पथ-भ्रष्टता का प्रसार जो रात के समरूप है और पथ-प्रदर्शन का प्रसार जो दिन के ®समरूप®531 है, रात जो अपनी पूर्णता को पहुंच जाती है तो दिन चढ़ने को सिद्ध करती है और जब दिन अपनी पूर्णता को पहुंच जाता है तो रात के आने की सूचना देता है। अतः हमने रात का निशान विस्मृत करके दिन का निशान मार्ग-दर्शक बनाया अर्थात् जब

दिन चढ़ता है तो ज्ञात होता है कि इससे पूर्व अंधकार था। अत: दिन का निशान ऐसा प्रकाशमान है कि रात की वास्तविकता भी उसी से प्रकट होती है और रात का निशान अर्थात् पथ-भ्रष्टता का युग इसलिए लाया गया कि दिन का निशान अर्थात हिदायत के प्रसार की विशेषता और औचित्य इसी से प्रकट होता है क्योंकि सुन्दरता का महत्व और स्थान कुरूपता से ही ज्ञात होता है। इसलिए ख़ुदा की नीति ने यही चाहा कि अंधकार और प्रकाश परिवर्तन के मार्ग पर संसार में चक्र लगाते रहें। जब प्रकाश अपनी पूर्णता को पहुंच जाए तो अंधकार पग बढ़ाए और जब अंधकार अपनी अन्तिम सीढ़ी तक पहुंच जाए तो फिर प्रकाश अपना प्रिय मुखमंडल दिखाए। अत: अंधकार का प्रभुत्व प्रकाश के प्रकटन पर एक तर्क है तथा प्रकाश का प्रभुत्व अंधकार के आने का एक मार्ग है। 'हर कमाले रा ज़वाल' कहावत प्रसिद्ध है। अत:
Ⓟ532Ⓟइस आयत में इस बात की ओर संकेत है कि जब अंधकार अपनी पूर्णता को पहुंच गया तो जल-थल अंधकार से भर गए तो हम ने अपने अनादि नियामानुसार प्रकाश के निशान को प्रकट किया ताकि बुद्धिमान लोग सर्वशक्तिमान की स्पष्ट क़ुदरत को देखकर अपने विश्वास और मारिफ़त में बढ़ोतरी करें। तत्पश्चात् फ़रमाया -

اِنَّآ اَنۡزَلۡنٰہُ فِیۡ لَیۡلَۃِ الۡقَدۡرِ अन्त तक

इस सूरह का वास्तविक अर्थ जो एक भारी सच्चाई पर आधारित जैसा कि हम पहले भी उल्लेख कर चुके हैं इस व्यापक नियम का वर्णन करना है कि संसार में कब और किस समय कोई किताब और पैग़म्बर भेजा जाता है। अत: वह नियम यह है कि जब हृदयों पर एक ऐसा घोर अंधकार छा जाता है कि अचानक समस्त हृदय संसार की ओर आकर्षित हो जाते हैं फिर संसार के साथ होने के दण्ड से उनकी समस्त आस्थाएं, कर्म, कृत्य, शिष्टाचार, सभ्यता, नीयतों और हिम्मतों में पूर्ण विघ्न प्रवेश कर जाता है तथा ख़ुदा से प्रेम हृदयों से पूर्ण रूप से उठ जाता है और यह रोग सामान्यता ऐसा फैलता है कि समस्त युग पर रात की तरह अंधकार छा जाता है तो
Ⓟ533Ⓟऐसे समय में अर्थात जब वह अंधकार अपनी चरम सीमा को पहुंच जाता है तो ख़ुदा की कृपा उस ओर ध्यान देती है कि लोगों को उस अन्धकार से मुक्ति प्रदान करे और जिन उपायों से उनका सुधार युक्ति संगत उन उपायों को अपने कलाम में वर्णन कर दे। अत: इसी की ओर अल्लाह तआला ने प्रशंसनीय आयत में संकेत

किया कि हमने क़ुर्आन को एक ऐसी रात में उतारा है जिसमें बन्दों के सुधार और हित के लिए सद्मार्ग का विवरण वर्णन करना तथा शरीअत और धर्म की सीमाओं को बताना यथाशक्ति आवश्यक था अर्थात् जब पथ-भ्रष्टता का अंधकार इस सीमा तक पहुंच चुका था कि जैसे घोर अंधेरी रात होती है तो उस समय ख़ुदा की रहमत (कृपा) इस ओर आकर्षित हुई कि इस घोर अंधकार को दूर करने के लिए ऐसा शक्तिशाली प्रकाश उतारा जाए जो उस अंधकार का निवारण कर सके। अत: ख़ुदा ने क़ुर्आन करीम उतार कर अपने बन्दों को वह महान प्रकाश प्रदान किया जो सन्देहों और शंकाओं के अन्धकार को दूर करता है तथा प्रकाश को फैलाता है। इस स्थान पर
जानना चाहिए कि इस आन्तरिक ℗लैलतुल क़द्र ((महान)तक़दीरों वाली रात) को℗534
प्रत्यक्ष लैलतुल क़द्र से कि जो जन सामान्य में प्रसिद्ध है कुछ अनुकूलता नहीं अपितु अल्लाह तआला का स्वभाव इसी प्रकार जारी है कि वह प्रत्येक कार्य अनुकूलता के साथ करता है और आन्तरिक वास्तविकता के लिए जो प्रत्यक्ष स्थिति अनुकूल हो वह उसे प्रदान करता है। अत: चूंकि लैलतुल क़द्र की आन्तरिक वास्तविकता वह पथ-भ्रष्टता की चरम सीमा का समय है जिसमें ख़ुदा की कृपा संसार के सुधार की ओर ध्यान देती है। अत: ख़ुदा तआला ने अनुकूलता के सिद्ध होने के उद्देश्य से इस युग की पथ-भ्रष्टता के अन्तिम भाग को जिसमें पथ-भ्रष्टता अपनी चरम सीमा तक पहुंच गई थी बाह्य तौर पर एक रात में नियुक्त किया और यह रात वह रात थी जिसमें ख़ुदा तआला ने संसार को पूर्ण पथ-भ्रष्टता में देखकर अपने पवित्र कलाम को अपने नबी पर उतारने का इरादा किया। अत: इस दृष्टि से उस रात में असीम श्रेणी की बरकतें उत्पन्न हो गईं या यों कहो कि अनादि काल से उसी अनादि इरादे की दृष्टि से उत्पन्न थी और फिर उस विशेष रात में वह स्वीकारिता और बरकत सदा के लिए शेष रही तत्पश्चात फ़रमाया कि वह अंधकार का समय कि जो अंधकारमय रात से समरूप था जिसको प्रकाशित करने के लिए ख़ुदा के कलाम का प्रकाश
उतरा। ℗उसमें क़ुर्आन करीम के उतरने के कारण एक रात हज़ार माह से उत्तम℗535
बनाई गई और यदि उचित तौर पर दृष्टि डालें तब भी स्पष्ट है कि पथ-भ्रष्टता का युग उपासना और ख़ुदा के अनुसरण हेतु दूसरे युग से अधिकतर निकटता और पुण्य का कारण है। अत: वह अन्य युगों से अधिक श्रेष्ठ और उसकी उपासनाएं कठिन परिश्रम और कष्ट के कारण अपनी स्वीकारिता से निकट हैं तथा इस युग के उपासक

ख़ुदा के अधिक कृपा-पात्र हैं क्योंकि सच्चे उपासकों और ईमानदारों का पद ऐसे ही समय में ख़ुदा के निकट सिद्ध होता है कि जब समस्त संसार पर सांसारिक उपासना का अंधकार छा जाए और सत्य की ओर दृष्टि करने से प्राण जाने की आशंका हो। अत: यह बात स्वयं स्पष्ट है कि जब हृदय शोकग्रस्त और मुरदा हो जाएं और प्रत्येक को मुरदा संसार ही प्रिय लगता हो और हर तरफ अध्यात्मिक मृत्यु की विषाक्त वायु चल रही हो और ख़ुदा का प्रेम हृदयों से बिल्कुल समाप्त हो गया हो तथा सत्य का सामना करने में और वफ़ादार बन्दा बनने में अनेक प्रकार की हानियों की कल्पना
Ⓟ536 की जाए, उस मार्ग का न कोई साथी Ⓟदिखाई दे और न कोई उस रास्ते का सखा मिले अपितु उस मार्ग के अभिलाषी पर मृत्यु तक पहुंचाने वाली कठिनाइयां दिखाई दें और लोगों की दृष्टि में अपमानित और तिरस्कृत ठहरता हो तो ऐसे समय में दृढ़ रह कर अपने वास्तविक प्रियतम की तरफ ध्यान देना तथा अशिष्ट परिजनों, मित्रों, स्वजनों और निकट संबंधियों का साथ छोड़ देना तथा निर्धनता, निराश्रयता और एकान्त के कष्टों को अपने सर पर स्वीकार कर लेना तथा दुख पाने, अपमानित होने और मरने की कुछ परवाह न करना वास्तव में ऐसा कार्य है कि दृढ़ संकल्प रसूलों नबियों और सदात्माओं के अतिरिक्त कि जिन पर ख़ुदा की कृपा-दृष्टियां होती हैं तथा जो अपने प्रियतम की ओर सहसा खींचे जाते हैं अन्य किसी से सम्पन्न नहीं हो सकता तथा वास्तव में ऐसे समय की दृढ़ता, धैर्य और ख़ुदा की उपासना का पुण्य भी वह मिलता है कि जो किसी अन्य समय में कदापि नहीं मिल सकता। अत: इसी दृष्टि से लैलतुल क़द्र की बुनियाद ऐसे ही युग में डाली गई कि जिसमें घोर पथ-भ्रष्टता के कारण नेकी पर स्थापित होना किसी साहसी पुरुष का कार्य था। यही युग
Ⓟ537 है कि जिसमें साहसी पुरुषों का महत्व और स्थान प्रकट होता है तथा Ⓟनपुंसकों का अपमान पूर्ण रूप से सिद्ध होता है। यही अंधकारयुक्त युग है जो अंधकारमय रात की भांति एक भयानक रूप में प्रकट होता है। अत: इस बाढ़ की स्थिति में कि जो बड़ी परीक्षा का समय है वे ही लोग तबाही से सुरक्षित रहते हैं जिन पर ख़ुदा की कृपाओं की एक विशेष छाया रहती है। अत: ख़ुदा तआला ने इन्हीं कारणों से इसी युग के एक भाग को जिस में पथ-भ्रष्टता का अंधकार असीम श्रेणी तक पहुंच चुका था लैलतुल क़द्र को नियुक्त किया तत्पश्चात् जिन आकाशीय बरकतों से इस पथ-

भ्रष्टता का निवारण किया जाता है उसका विवरण प्रकट किया और वर्णन किया कि उस सर्वाधिक दया करने वाले का स्वभाव यों है कि जब अंधकार अपनी चरम सीमा को पहुंच जाता है और अंधकार की रेखा अपने अन्तिम बिन्दु पर जा ठहरती है अर्थात उस अन्तिम श्रेणी पर जिस का नाम आन्तरिक तौर पर लैलतुल क़द्र है। तब ख़ुदा तआला रात के समय में कि जिसका अंधकार आन्तरिक अंधकार से समरूप है अंधकारमय संसार की ओर ध्यान देता है तथा उसकी विशेष आज्ञा से फ़रिश्ते और रूहुलक़ुदुस पृथ्वी पर उतरते हैं और प्रजा के सुधार के लिए ख़ुदा तआला का नबी प्रकटन करता है, तब वह नबी आकाशीय प्रकाश पाकर ख़ुदा की प्रजा को अंधकार से बाहर निकालता है और ⓟजब तक वह प्रकाश अपनी पूर्णता तक न पहुंच जाए ⓟ538
तब तक उन्नति करता जाता है और उसी नियम के अनुसार वे वली भी उत्पन्न होते हैं जो प्रजा के मार्ग दर्शन और हिदायत के लिए भेजे जाते हैं क्योंकि वे नबियों के उत्तराधिकारी हैं। अत: उनके पद-चिह्नों पर चलाए जाते हैं। अब जानना चाहिए कि ख़ुदा तआला ने इस बात को बड़े जोश भरे शब्दों से क़ुर्आन करीम में वर्णन किया है कि संसार की स्थिति में अनादि काल से ज्वार-भाटा विद्यमान है तथा उसी की ओर संकेत करते हुए फ़रमाता है -

تُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ -①

अर्थात हे ख़ुदा ! कभी तू रात को दिन में और कभी दिन को रात में प्रविष्ट करता है अर्थात पथ-भ्रष्टता के प्रभुत्व पर मार्ग दर्शन और मार्ग-दर्शन के प्रभुत्व पर पथ-भ्रष्टता को उन्पन्न करता है तथा इस ज्वार-भाटे की वास्तविकता यह है कि कभी ख़ुदा तआला के आदेश से मनुष्यों के हृदयों में संकोच और शर्मिन्दगी की एक स्थिति उत्पन्न हो जाती है तथा संसार की सजावटें उन्हें प्रिय मालूम होने लगती हैं तथा उनके समस्त साहस अपने संसार का सुधार करने में और उसके भोग-विलास प्राप्त करने की ओर व्यस्त हो जाते हैं। ⓟयह अंधकार का युग है जिसके अन्तिम ⓟ539
बिन्दु की रात लैलतुल क़द्र कहलाती है और वह लैलतुल क़द्र हमेशा आती है परन्तु पूर्ण रूप से उस समय आई थी जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रकटन का दिन आ पहुंचा था क्योंकि उस समय समस्त संसार पर पूर्ण पथ-भ्रष्टता

---

① अलक़द्र : 2

का ऐसा अंधकार फैल चुका था जिसके समान कभी नहीं फैला था और न भविष्य में कभी फैलेगा जब तक कि प्रलय न आए। अत: जब यह अंधकार अपने उस अन्तिम बिन्दु तक पहुंच जाता है कि जो उसके लिए प्रारब्ध है तो ख़ुदा की कृपा संसार को प्रकाशित करने की ओर ध्यान देती है और किसी व्यक्ति को संसार के प्रकाश के सुधार के लिए भेजा जाता है और जब वह आता है तो उसकी ओर तैयार रूहें खिंची चली जाती हैं और पवित्र स्वभाव स्वत: सत्य के सामने होते चले जाते हैं और जैसा कि कदापि संभव नहीं कि शमां के रौशन होने से परवाना उस ओर मुख न करे। ऐसा ही यह भी असंभव है कि किसी प्रकाशवान के यथासमय प्रकटन पर सदस्वभाव व्यक्ति उसकी ओर निष्ठा के साथ आकर्षित न हो। इन आयतों में ख़ुदा तआला ने जो वर्णन किया है जो दावे की बुनियाद है उसका सारांश यही है
Ⓟ540 कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रकटन के समय Ⓟयुग एक ऐसी अंधकारमय स्थिति पर आ चुका था कि जो सत्य के सूर्य के प्रकट होने को चाहता था। इसी दृष्टि से ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन करीम में अपने रसूल का बार-बार यही कार्य वर्णन किया है कि उसने युग को घोर अंधकार में पाया और फिर उन्हें अंधकार से बाहर निकाला, जैसा कि वह फ़रमाता है -

كِتٰبٌ اَنۡزَلۡنٰهُ اِلَيۡكَ لِتُخۡرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ① (भाग-13)

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ۙ يُخۡرِجُهُمۡ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ② (भाग-3)

هُوَ الَّذِيۡ يُصَلِّيۡ عَلَيۡكُمۡ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخۡرِجَكُمۡ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ③ (भाग-2)

قَدۡ جَآءَكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ نُوۡرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيۡنٌ - يَّهۡدِيۡ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضۡوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخۡرِجُهُمۡ
مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ بِاِذۡنِهٖ وَيَهۡدِيۡهِمۡ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ -④ (भाग-6)

قَدۡ اَنۡزَلَ اللّٰهُ اِلَيۡكُمۡ ذِكۡرًا - رَّسُوۡلًا يَّتۡلُوۡا عَلَيۡكُمۡ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخۡرِجَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ⑤ (भाग-28)

---

① इब्राहीम : 2, ② अलबक़रह : 258, ③ अलअहज़ाब : 44, ④ अलमाइदह : 16,17
⑤ अत्तलाक़ : 11,12

अर्थात यह हमारी किताब है जिसे हमने तुझ पर इस उद्देश्य से उतारा है ताकि तू लोगों को जो अंधकार में पड़े हुए हैं प्रकाश की ओर ℗निकाले। अतः ख़ुदा ने ℗541 उस युग का नाम अंधकारमय युग रखा और फिर फ़रमाया कि ख़ुदा मौमिनों का काम बनाने वाला है उन्हें अंधकारों से प्रकाश की ओर निकाल रहा है और फिर फ़रमाया कि ख़ुदा और उसके फ़रिश्ते मौमिनों पर दरूद भेजते हैं ताकि ख़ुदा उन्हें अन्धकार से प्रकाश की ओर निकाले तथा फ़रमाया कि अंधकारमय युग के निवारण के लिए ख़ुदा तआला की ओर से प्रकाश आता है। वह प्रकाश उस का रसूल और उसकी किताब है, ख़ुदा उस प्रकाश से उन लोगों का मार्ग-दर्शन करता है जो उसकी प्रसन्नता के अभिलाषी हैं। अतः ख़ुदा उन्हें अंधकारों से प्रकाश की ओर निकालता है और सद्मार्ग की ओर मार्ग-दर्शन करता है। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा ने अपनी किताब और अपना रसूल भेजा वह तुम पर ख़ुदा का कलाम पढ़ता है ताकि वह ईमानदारों और सदाचारी लोगों को अंधकारों से प्रकाश की ओर निकाले। अतः ख़ुदा तआला ने इन समस्त आयतों में स्पष्ट तौर पर वर्णन कर दिया कि जिस युग में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भेजे गए और क़ुर्आन करीम उतारा गया उस युग पर पथ-भ्रष्टता और गुमराही का अन्धकार छा रहा था तथा कोई ऐसी जाति नहीं थी कि जो इस अंधकार से सुरक्षित हो। उपर्युक्त आयतों का शेष अनुवाद यह है कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि हमने तुम्हारी ओर एक ℗रसूल भेजा है कि जो ℗542 तुम्हारे पाप और पथ-भ्रष्टता पर साक्षी है तथा यह रसूल उसी रसूल का सदृश है जो फ़िरऔन की ओर भेजा गया था और हमने इस कलाम को वास्तविक आवश्यकता के साथ उतारा है तथा यह वास्तविक आवश्यकता के साथ उतरा है अर्थात् यह कलाम अपने अस्तित्व में सत्य है तथा उसका आना भी सत्य और यथोचित है यह नहीं कि बेकार, व्यर्थ और असमय उतरा है। हे अहले किताब (यहूदी, ईसाई) तुम्हारे पास हमारा रसूल ऐसे समय पर आया है जबकि एक लम्बे अन्तराल से रसूलों का आना बन्द हो रहा था। अतः वह रसूल रसूलों के मध्य की अवधि में आकर तुम्हें वह सद्मार्ग बताता है जिसे तुम भूल गए थे ताकि तुम यह न कहो कि हम यों ही पथ-भ्रष्ट रहे तथा ख़ुदा की ओर से कोई शुभ संदेश देने वाला और डराने वाला न आया जो हमें सचेत करता। अतः अब समझो कि वह शुभ सन्देश देने वाला तथा डराने वाला जिसकी आवश्यकता थी आ गया और ख़ुदा जो प्रत्येक बात

पर समर्थ है उसने तुम्हें पथ-भ्रष्ट देख कर अपना कलाम और रसूल भेज दिया।
Ⓟ543 तुम अग्नि के Ⓟगढ़े के किनारे तक पहुंच चुके थे। अतः ख़ुदा ने तुम्हें हे ईमानदारो मुक्ति प्रदान की। वह इसी प्रकार निशानों का वर्णन करता है ताकि तुम मार्ग-दर्शन पा जाओ और ताकि प्रकोप के उतरने पर पथ-भ्रष्ट लोग यह न कहें कि हे ख़ुदा तूने प्रकोप से पूर्व अपना रसूल क्यों न भेजा ताकि हम तेरी आयतों का अनुसरण करते और मौमिन बन जाते तथा ख़ुदा यदि सदात्मा लोगों के द्वारा पथ-भ्रष्टों का निवारण न करता और कुछ लोगों की कुछ लोगों के द्वारा सुरक्षा न करता तो पृथ्वी बिगड़ जाती, परन्तु यह ख़ुदा की कृपा है कि वह पथ-भ्रष्टता के फैलने के समय अपनी ओर से पथ-प्रदर्शक भेजता है क्योंकि कृपा और उपकार उसका स्वभाव है और तुझे हमने इसलिए भेजा है कि सम्पूर्ण संसार पर दया-दृष्टि करें तथा मुक्ति का मार्ग उन पर खोल दें और ताकि तू लोगों को जो लापरवाही की अवस्था में पड़े हुए हैं सत्य की ओर ध्यान दिलाए तथा उन्हें सतर्क करे। क्या तू यह विचार करता है
Ⓟ544 कि अधिकांश लोग उनमें से सुनते और समझते हैं। Ⓟनहीं ये तो चौपायों की भांति है अपितु उनसे भी अधिक निकृष्ट। यदि ख़ुदा उन लोगों से उनके पापों पर गिरफ्त करता तो पृथ्वी पर एक भी जीवित न छोड़ता और ख़ुदा वह कृपालु और दयालु हस्ती है कि जो वर्षा से पूर्व हवाओं को चलाता है फिर हम एक पानी आकाश से उतारते हैं ताकि उस से मरी हुई बस्ती को जीवित करें और फिर बहुत से लोगों और उनके चौपायों को पानी पिलाएं और हम फेर-फेर कर उदाहरण बताते हैं ताकि लोग स्मरण कर लें कि नबियों के भेजने का यही नियम है। यदि हम चाहते तो प्रत्येक बस्ती के लिए पृथक-पृथक रसूल भेजते परन्तु यह इसलिए किया गया ताकि तुझ से भारी प्रयास प्रकटन में आएं अर्थात् जब एक व्यक्ति सहस्त्रों का कार्य करेगा तो निःसन्देह वह बड़ा प्रतिफल पाएगा और यह बात उसकी श्रेष्ठता का कारण होगी।
Ⓟ545 चूंकि Ⓟआंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नबियों में सर्वश्रेष्ठ और सब रसूलों से उत्तम और महान थे तथा ख़ुदा तआला चाहता था कि जैसे आंहज़रत अपने व्यक्तिगत जौहर की दृष्टि से वास्तव में समस्त नबियों के सरदार हैं ऐसा ही बाह्य सेवाओं की दृष्टि से भी उनका सब से उच्चतम और श्रेष्ठतम होना संसार पर प्रकट और प्रकाशित हो जाए। इसलिए ख़ुदा तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम की रिसालत को समस्त लोगों के लिए सामान्य रखा ताकि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के परिश्रम और प्रयास सामान्यतया प्रकटन में आएं। मूसा और इब्ने मरयम की भांति एक विशेष क़ौम से विशेष न हों और ताकि चारों ओर से तथा प्रत्येक वर्ग और जाति से अत्यन्त कष्ट उठा कर उस महान प्रतिफल के पात्र बन जाएं जो दूसरे नबियों को नहीं मिलेगा। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा वह है कि जो ℗रात के बाद दिन और दिन के बाद रात लाता है जिसने याद करना हो वह ℗546
याद करे या धन्यवाद करना हो तो धन्यवाद करे अर्थात् दिन के बाद रात का आना और रात के बाद दिन का आना इस बात पर एक निशान है कि जैसे हिदायत के पश्चात् गुमराही और प्रमाद (लापरवाही) का युग आ जाता है ऐसा ही ख़ुदा की ओर से यह भी निर्धारित है कि गुमराही और प्रमाद के बाद हिदायत का युग आता है। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा वह सर्वशक्तिमान हस्ती है जिसने मनुष्य को अपनी पूर्ण क़ुदरत से उत्पन्न किया फिर उसके लिए वंश और नाता निर्धारित कर दिया। इसी प्रकार वह मनुष्य की अध्यात्मिक उत्पत्ति पर भी समर्थ था अर्थात् उसका प्रकृति का नियम अध्यात्मिक उत्पत्ति में बिल्कुल शारीरिक उत्पत्ति की तरह है कि प्रथम वह गुमराही के समय जो दुर्लभ का आदेश रखता है किसी मनुष्य को आध्यात्मिक तौर पर अपने हाथ से ℗उत्पन्न करता है फिर उसके अनुयायियों को जो उसकी सन्तान ℗547
का आदेश रखते हैं उसके अनुसरण की बरकत से अध्यात्मिक जीवन प्रदान करता है। अतः समस्त रसूल अध्यात्मिक आदम हैं तथा उनकी उम्मत के नेक लोग उनके अध्यात्मिक वंश हैं तथा आध्यात्मिक और शारीरिक सिलसिला परस्पर बिल्कुल अनुकूलता रखता है और ख़ुदा के बाह्य और आन्तरिक नियमों में किसी प्रकार का मतभेद नहीं। फिर फ़रमाया - क्या तू ख़ुदा की ओर देखता नहीं कि वह छाया को क्योंकर लम्बा खींचता है यहां तक कि समस्त पृथ्वी पर अंधकार ही दिखाई देता है, यदि वह चाहता तो हमेशा अंधकार रखता और कभी प्रकाश न होता, परन्तु हम सूर्य को इसलिए उदय करते हैं ताकि इस बात पर तर्क स्थापित हो कि उस से पूर्व अंधकार था ताकि प्रकाश द्वारा अंधकार का अस्तित्व पहचाना जाए क्योंकि विपरीत के द्वारा विपरीत का ℗पहचानना अत्यन्त सरल हो जाता है तथा प्रकाश का ℗548
महत्व और महत्ता उसी पर खुलती है जो अंधकार के अस्तित्व पर ज्ञान रखता हो।

फिर फ़रमाया - हम अंधकार को प्रकाश द्वारा थोड़ा-थोड़ा दूर करते जाते हैं ताकि अंधकार में बैठने वाले उस प्रकाश से धीरे-धीरे लाभान्वित हो जाएं और अचानक परिवर्तन में जो स्तब्धता और घबराहट की कल्पना है वह भी न हो। अतः इसी प्रकार जब संसार पर अध्यात्मिक अंधकार छा जाता है तो प्रजा को प्रकाश से लाभान्वित करने के लिए तथा प्रकाश और अंधकार के अन्तर को प्रकट करने के लिए ख़ुदा तआला की ओर से सत्य का सूर्य उदय होता है फिर वह धीरे-धीरे संसार पर उदय होता चला जाता है। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा तआला का यह प्रकृति का नियम है कि
℗549 जब पृथ्वी मर जाती है तो वह नए सिरे से पृथ्वी को जीवित करता है। ℗हमने यह निशान स्पष्ट तौर पर बताए हैं ताकि लोग सोच-विचार करें।

इन आयतों में ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन करीम के उतरने की आवश्यकता और उसके ख़ुदा की ओर से होने का यह तर्क प्रस्तुत किया है कि क़ुर्आन करीम ऐसे समय में आया है कि जब समस्त उम्मतों ने वास्तविक नियम को त्याग दिया था तथा पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्म न था कि जो ख़ुदा को पहचानने और आस्थागत पवित्रता तथा सच्चरित्रता पर स्थापित और पूर्ववत होता अपितु समस्त धर्म बिगड़ गए थे तथा प्रत्येक धर्म में भिन्न-भिन्न प्रकार के विकार प्रवेश कर गए थे तथा स्वयं लोगों के स्वभाव में सृष्टि-पूजा का प्रेम इतना भर गया था कि संसार, संसार के नामों, संसार के आरामों, संसार के सम्मानों, संसार के सुख-चैनों तथा संसार की धन-दौलत
℗550 के अतिरिक्त उन का अन्य कोई उद्देश्य नहीं ℗रहा था तथा ख़ुदा का प्रेम, उसकी जिज्ञासा और शौक़ से पूर्णतया अज्ञान और वंचित हो गए थे तथा रीति-रिवाजों को धर्म समझ लिया था। अतः ख़ुदा ने जिसका यह प्रकृति का नियम है कि वह दुखों और कष्टों के समय अपने असहाय बन्दों का ध्यान रखता है और जब किसी विपत्ति से जैसे अनावृष्टि इत्यादि से उसके बन्दे विनाश के निकट हो जाते हैं दया की वर्षा से उनकी विपत्ति का निवारण करता है। न चाहा कि ख़ुदा की प्रजा ऐसी विपत्तिग्रस्त रहे जिसका परिणाम हमेशा रहने वाली तबाही है। अतः उसने अपने अनादि नियमानुसार जो शारीरिक और आध्यात्मिक तौर पर जारी है क़ुर्आन करीम को प्रजा के सुधार के लिए उतारा और आवश्यक था कि ऐसे समय में क़ुर्आन करीम उतरता क्योंकि उस पर युग के अंधकार की वर्तमान परिस्थिति [551]को ऐसी महान

किताब और ऐसे महान रसूल की आवश्यकता थी और वास्तविक आवश्यकता इस बात को चाहती थी कि इस अंधकार के समय में जो सम्पूर्ण संसार पर छा गया था तथा अपनी चरम-सीमा तक पहुंच गया था सत्य का सूर्य उदय करे, क्योंकि उस सूर्य के उदय करने के अतिरिक्त कदापि संभव न था कि ऐसी अंधकारमय रात स्वत: प्रकाशमान दिवस का रूप धारण कर ले। इसी की ओर एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया है और वह यह है -

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنفَكِّينَ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ - رَسُولٌ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُّطَهَّرَةً - فِيهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ [1]

अर्थात् जो लोग अहले किताब द्वैतवादियों में से काफ़िर हो गए उनका सद्मार्ग पर आना इसके अतिरिक्त कदापि संभव न था कि उनकी ओर ऐसा महान नबी भेजा जाए जो ऐसी महान किताब लाया है जो समस्त ख़ुदाई किताबों के मआरिफ़ (ज्ञान) सच्चाइयों को अपनी परिधि में लिए हुए प्रत्येक भूल-चूक से पवित्र और पावन है। ®अब इस तर्क का सबूत दो विवादों के सबूत पर निर्भर है। प्रथम यह कि ख़ुदा ®552
तआला का यही अनादि नियम है कि वह शरीरिक या अध्यात्मिक आवश्यकताओं के समय सहायता करता है अर्थात् शारीरिक कष्टों के समय वर्षा इत्यादि से और अध्यात्मिक कष्टों के समय अपना स्वास्थ्यवर्धक कलाम उतारने से असहाय बन्दों की सहायता करता है। अत: इस विवाद कर सत्य व्यापक है क्योंकि किसी बुद्धिमान को इस से इन्कार नहीं कि यह दोनों सिलसिले शरीरिक और आध्यात्मिक अब तक इसी कारण से सही और सुरक्षित चले आते हैं कि ख़ुदा तआला उन्हें विनाश से सुरक्षित रखता है। उदाहरणतया यदि ख़ुदा तआला शारीरिक सिलसिले की रक्षा न करता और भीषण से भीषण अकालों के समय में दया-वृष्टि द्वारा सहायता न करता तो अन्तत: उसका परिणाम यही होता कि लोग पहली फ़सलों की समस्त पैदावार खा लेते और फिर भविष्य में अनाज ®के अभाव में तड़प-तड़प कर मर जाते तथा ®553
मनुष्यों का अन्त हो जाता या यदि ख़ुदा तआला यथासमय रात, दिन, सूर्य, चन्द्रमा वायु और बादल को निर्धारित सेवाओं में न लगाता तो संसार की समस्त व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती। इसी की ओर अल्लाह तआला ने स्वयं संकेत करते हुए

[1] अलबय्यिन: 2-4,

फ़रमाया है -

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۔[1]

وَهُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ الْوَلِىُّ الْحَمِيْدُ ۔[2] (भाग : 25)

अर्थात क्या इन्कारी लोग कहते हैं कि यह ख़ुदा का कलाम नहीं तथा ख़ुदा पर
झूठ बांधा है। यदि ख़ुदा चाहे तो उसका उतरना बन्द कर दे परन्तु वह बन्द नहीं
करता क्योंकि उसका स्वभाव इसी प्रकार जारी है कि वह अपने वाक्यों द्वारा सत्य का
Ⓟ554 सत्यापन और असत्य का खंडन करता है और यह पद Ⓟउसी को पहुंचता है क्योंकि
अध्यात्मिक रोगों पर उसी को ज्ञान है और रोग के निदान और स्वास्थ्य-लाभ पर
वह समर्थ है। तत्पश्चात तर्क के तौर पर फ़रमाया कि अल्लाह वह पूर्ण दया वाला
अस्तित्व है कि अनादिकाल से उसका प्रकृति का नियम है कि इस कठिन परिस्थिति
में वह अवश्य वर्षा बरसाता है कि जब लोग निराश हो चुके होते हैं फिर पृथ्वी पर
अपनी दया का प्रसार करता है और वही वास्तविक तौर पर काम बनाने वाला बाह्य
और आन्तरिक तौर पर प्रशंसनीय है अर्थात जब कठिनाई चरम सीमा को पहुंच
जाती है तथा मुक्ति का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता, तो ऐसी स्थिति में उसका
यही अनादि नियम है कि वह असहाय बन्दों का अवश्य ध्यान रखता है और उन्हें
विनाश से बचाता है और जिस प्रकार वह शारीरिक कष्ट के समय दया करता है
उसी प्रकार जब अध्यात्मिक कष्ट अर्थात् पथ-भ्रष्टता और गुमराही अपनी सीमा
को पहुंच जाती है और लोग सदमार्ग पर स्थापित नहीं रहते तो इस स्थिति में भी
वे अपनी ओर से अवश्य किसी को वह्यी से सम्मानित करके तथा अपना विशेष
Ⓟ555 प्रकाश प्रदान करके पथ-भ्रष्टता के Ⓟविनाशकारी अंधकार को उसके द्वारा दूर
करता है और चूंकि शारीरिक कृपाएं सामान्य लोगों की दृष्टि में एक स्पष्ट बात
है। इसलिए अल्लाह तआला ने वर्णित आयत में प्रथम क़ुर्आन करीम के उतरने की
आवश्यकता का वर्णन करके बतौर व्याख्या शारीरिक नियम को उद्धृत किया ताकि
बुद्धिमान व्यक्ति शारीरिक नियम को देखकर कि एक स्पष्ट और व्यापक बात है

---

① अश्शूरा : 25, ② अश्शूरा : 29

ख़ुदा तआला के अध्यात्मिक नियम को सरलतापूर्वक समझ सके। इस स्थान पर यह भी स्पष्ट रहे कि जो लोग कुछ किताबों का ख़ुदा की ओर से उतरना स्वीकार करते हैं, उन्हें तो स्वयं इक़रार करना पड़ता है कि ℗वे किताबें ऐसे समयों पर उतरी हैं ℗556
कि जब उनके उतारे जाने की आवश्यकता थी। अत: इसी इक़रार के सन्दर्भ में उन्हें यह दूसरा इक़रार करना भी अनिवार्य हुआ कि आवश्यकता के समयों में किताबों का उतारना ख़ुदा तआला का स्वभाव है, परन्तु ऐसे लोग जो ख़ुदा की किताबों की आवश्यकता के इन्कारी हैं, जैसे ब्रह्म समाज वाले। अत: उन्हें दोषी ठहराने के लिए यद्यपि हम बहुत कुछ लिख चुके हैं परन्तु यदि उन में तनिक सा भी न्याय हो तो उन के लिए वही एक तर्क पर्याप्त है जो अल्लाह तआला ने पूर्व वर्णित आयतों में स्वयं वर्णन किया है, क्योंकि जिस स्थिति में ℗वे लोग मानते हैं प्रत्यक्ष जीवन की सम्पूर्ण ℗557
व्यवस्था ख़ुदा तआला की ओर से है और वही अपने आकाशीय प्रकाश तथा वर्षा के पानी के द्वारा संसार को अंधकार और विनाश से बचाता है तो फिर वह इस इक़रार से कहां भाग सकते हैं कि आन्तरिक जीवन के साधन भी आकाश ही से उतरते हैं और स्वयं यह अत्यन्त अदूरदर्शिता और अज्ञानता है कि अस्थिर और अस्थायी जीवन की व्यवस्था को ख़ुदा के विशेष अधिकार से स्वीकार कर लिया जाए परन्तु जो वास्तविक और अनश्वर जीवन है अर्थात ख़ुदा की मारिफ़त और आन्तरिक प्रकाश में केवल अपनी ही बुद्धि का परिणाम ठहराया जाए। क्या वह ख़ुदा जिसने शारीरिक व्यवस्था के जारी रखने के लिए अपनी ख़ुदावन्दी की शक्तिशाली ताक़तों को प्रकट ℗किया है तथा मानवीय हाथों के माध्यम के बिना ज़बरदस्त क़ुदरतें दिखाई ℗558
हैं वह आध्यात्मिक तौर पर अपनी शक्ति प्रकट करने के समय निर्बल और असहाय समझा जा सकता है। क्या ऐसा विचार करने से वह कामिल रह सकता है अथवा उसकी अध्यात्मिक शक्तियों का प्रमाण उपलब्ध हो सकता है। वास्तविक सन्तोष जिसका आधार एक दृढ़ विश्वास पर होना चाहिए केवल काल्पनिक विचारों से संभव नहीं अपितु काल्पनिक विचारों की बड़ी से बड़ी उन्नति दृढ़ अनुमान तक है तथा वह भी इस स्थिति में कि जब अनुमान इन्कार की ओर न झुक जाए। अत: बौद्धिक कारण बिल्कुल असंतोषजनक तथा अध्यात्म की अन्तिम सीमा से पीछे रहे हुए हैं तथा उनकी उच्च से उच्च पहुंच केवल प्रत्यक्ष अटकलों ℗तक है जिन से ℗559

आत्मा (रूह) को वास्तविक प्रफुल्लता और इरफ़ान (ख़ुदा की पहचान का ज्ञान) प्राप्त नहीं होता तथा आन्तरिक मलिनताओं से पवित्रता प्राप्त नहीं होती अपितु ऐसा व्यक्ति मात्र अधम विचारों का दास बनकर "मक़ामाते हरीरी" (पुस्तक का नाम) के अबू ज़ैद की तरह अपने ज्ञान और कलाओं को छल-कपट का साधन बनाता है तथा उसकी समस्त वाचालता तथा भाषा की मृदुलता कपट का जाल ही होती है। क्या मनुष्य की कमज़ोर बुद्धि अपने एकान्त की स्थिति में उसे इस सभा से निकाल सकती है कि जो काम-भावनाओं, मूर्खता और आलोचना के कारण उसे प्राप्त हो रही है, क्या मानव विचारों में कोई ऐसी शक्ति भी विद्यमान है जो ख़ुदा तआला के ज्ञान और शक्ति से समान हो सके, क्या ख़ुदा के पवित्र प्रकाश आत्मा पर जो-जो प्रभाव डाल सकते हैं तथा जटिल संदेहों से मुक्ति प्रदान कर सकते हैं यह बात ख़ुदा के अतिरिक्त को भी प्राप्त है। कदापि नहीं, कदापि नहीं, अपितु ऐसे धोखे उन्हें लगे हुए हैं जिन्होंने कभी यह विचार नहीं किया कि हमारी वास्तविक मुक्ति इरफ़ान की किस श्रेणी पर निर्भर है और ख़ुदा की शक्ति हमारी आत्मा पर कहां तक काम कर
℗560 सकती है और ख़ुदा की असीम कृपा से हम ℗सानिध्य और पहचान की किस श्रेणी पर पहुंच सकते हैं और वह किस श्रेणी तक हमारे सामने से परदे उठा सकती है। उनकी मारिफ़त केवल बेकार भ्रमों तक समाप्त है तथा जो वास्तविक और निश्चित मारिफ़त तथा मनुष्य की मुक्ति के लिए यथाशक्ति आवश्यक है वह उनकी विचित्र बुद्धि के लिए दुर्लभ और निषिद्ध है, परन्तु जानना चाहिए कि यह उनकी बहुत बड़ी भूल है जो बौद्धिक विचारों को पर्याप्त समझ रहे हैं। ख़ुदाई मारिफ़त के मार्ग में असंख्य रहस्य हैं जिन्हें मनुष्य की कमज़ोर और धूमिल बुद्धि ज्ञात नहीं कर सकती तथा काल्पनिक शक्ति अपनी अत्यन्त कमज़ोरी के कारण ख़ुदावन्दी के उच्च रहस्यों तक कदापि नहीं पहुंच सकती। अत: उस उच्चता तक पहुंचने के लिए ख़ुदा के श्रेष्ठ कलाम के अतिरिक्त अन्य कोई सीढ़ी नहीं। जो व्यक्ति हार्दिक सच्चाई के साथ ख़ुदा का अभिलाषी है उसे उसी सीढ़ी की आवश्यकता होती है उस समय तक
℗561 कि वह सुदृढ़ और उच्च सीढ़ी को अपनी उन्नति का माध्यम न ठहराया ℗जाए, तब तक मनुष्य ख़ुदाई मारिफ़त के उच्च मीनार तक कदापि पहुंच नहीं सकता अपितु ऐसे अंधकारयुक्त विचारों में ग्रस्त रहता है कि जो असन्तोषजनक और वास्तविकता

से परे हैं तथा उस ख़ुदाई मारिफ़त के अभाव में उसकी समस्त जानकारियां भी अपूर्ण और अधूरी रहती हैं। जैसे सुई धागे के अभाव में व्यर्थ और बेकार है तथा उससे ℗सिलाई का कोई कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता। इसी प्रकार बुद्धिसंगत दर्शन ℗562 ख़ुदा के कलाम के समर्थन के अभाव में अत्यन्त कंपायमान, कमज़ोर अस्थिर और निराधार है।

پائے استدلالیاں چوبین بود   پائے چوبین سخت بے تمکین بود

अनुवाद - सिद्ध करने वाले का पैर लकड़ी का होता है और लकड़ी का पैर नितान्त कमज़ोर होता है।*

---

* डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब द्वारा किए गए उर्दू अनुवाद को हिन्दी में रूपान्तरित किया गया है (अनुवादक)

हम और हमारी पुस्तक

प्रारंभ में जब यह पुस्तक लिखी गई थी उस समय इसकी कोई और स्थिति थी, तत्पश्चात ख़ुदा की क़ुदरत की अचानक झलक ने इस तुच्छ बन्दे को मूसा की तरह एक ऐसे संसार से परिचित किया जिससे पूर्व परिचय न था अर्थात् यह ख़ाकसार भी हज़रत इब्ने इमरान की तरह अपनी ही अंधकारमय रात में यात्रा कर रहा था कि एक बार परोक्ष के पर्दे से إِنِّيْ أَنَا رَبُّكَ (नि:सन्देह मैं तेरा पालनहार हूं) की आवाज़ आई तथा ऐसे रहस्य प्रकट हुए कि जिन तक बुद्धि और विचार की पहुंच न थी। अत: अब इस पुस्तक का प्रन्यासी (TRUSTEE) व्यवस्थापक बाह्य और आन्तरिक तौर पर हज़रत रब्बुल आलमीन (समस्त संसारों का प्रतिपालक) है तथा कुछ ज्ञात नहीं कि किस अनुमान और मात्रा तक इसे पहुंचाने का इरादा है और सत्य तो यह है कि उसने जितना इस जिल्द चतुर्थ तक इस्लाम की सच्चाई के प्रकाश प्रकट किए हैं ये भी समझाने के अन्तिम प्रयास की पूर्णता के लिए पर्याप्त हैं तथा उसकी कृपा और दया से आशा की जाती है कि वह जब तक सन्देह और आशंकाओं के अंधकार को पूर्ण रूप से दूर न करे अपने परोक्ष के समर्थनों से सहायक रहेगा। यद्यपि इस ख़ाकसार को अपने जीवन का कुछ विश्वास नहीं परन्तु इससे नितान्त प्रसन्नता है कि वह **हय्य तथा क़य्यूम** (पूर्ण जीवन वाला तथा अपने अस्तित्व में क़ायम तथा सबको क़ायम रखने वाला) कि जो नश्वरता और मृत्यु से पवित्र है। प्रलय तक हमेशा इस्लाम धर्म का सहायक है और जनाब **ख़ातमुलअंबिया** - सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उसकी कुछ ऐसी कृपा है कि जो इस से पूर्व किसी नबी पर नहीं हुई। यहां उन सदाचारी एवं ईमानदारों का धन्यवाद करना अनिवार्य है जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए आज तक सहायता की है। ख़ुदा तआला उन सब पर कृपा करे और जैसा उन्होंने उसके धर्म के समर्थन में अपने हार्दिक प्रेम से प्रति पल प्रयास करने में ज़ोर लगाया है ख़ुदा तआला उन पर ऐसी ही कृपा करे। कुछ सज्जनों ने इस पुस्तक को मात्र क्रय-विक्रय का एक मामला समझा है और ख़ुदा ने कुछ के सीनों को खोल दिया तथा सत्य और निष्ठा को उनके हृदयों में स्थापित कर

दिया है परन्तु पूर्व वर्णित वही लोग हैं जिनकी आर्थिक स्थिति बहुत कमज़ोर है। ख़ुदा का अपने पवित्र नबियों से भी यही ढंग रहा है कि शुरू-शुरू में कमज़ोर और दरिद्र ही आकृष्ट होते रहे हैं। यदि ख़ुदा तआला का इरादा है तो किसी सामर्थ्यवान के हृदय को भी इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए खोल देगा और अल्लाह तआला हर बात पर सामर्थ्यवान है।